ISSN 2229-547X

विदेह सदेह ३२

रचनात्मक गद्य-पद्य लेखन भाग-१

(विदेह www.videha.co.in/ पेटार अंक १-३५० सँ)

विदेह-सदेह शृखला- मैथिलीक सर्वश्रेष्ठ गद्य आ पद्यक एकटा समानान्तर संकलन

विदेह मैथिली साहित्य आन्दोलन: मानुषीमिह संस्कृताम्

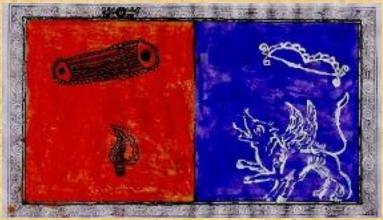

विदेह- प्रथम मैथिली पाक्षिक ई-पत्रिका

ISSN 2229-547X VIDEHA

सम्पादक: गजेन्द्र ठाकुर।

ऐ पोथीक सर्वाधिकार सुरक्षित अछि। कॉपीराइट (©) धारकक लिखित अनुमतिक बिना पोथीक कोनो अंशक छाया प्रति एवं रिकॉर्डिंग सहित इलेक्ट्रॉनिक अथवा यांत्रिक, कोनो माध्यमसँ, अथवा ज्ञानक संग्रहण वा पुनर्प्रयोगक प्रणाली द्वारा कोनो रूपमे पुनरुत्पादित अथवा संचारित-प्रसारित नै कएल जा सकैत अछि।

(c) २०००- अद्यतन। सर्वाधिकार सुरक्षित। विदेहमे प्रकाशित सभटा रचना आ आर्काइवक सर्वाधिकार रचनाकार आ संग्रहकर्त्ताक लगमे छन्हि। भालसरिक गाछ जे सन २००० सँ याहूसिटीजपर छल http://www.geocities.com/.../bhalsarik_gachh.html , http://www.geocities.com/ggajendra आदि लिंकपर आ अखनो ५ जुलाइ २००४ क पोस्ट http://gajendrathakur.blogspot.com/2004/07/bhalsarik-gachh.html (किछु दिन लेल http://videha.com/2004/07/bhalsarik-gachh.html लिंकपर, स्रोत wayback machine of https://web.archive.org/web/*/videha 258 capture(s) from 2004 to 2016- http://videha.com/ भालसरिक गाछ-प्रथम मैथिली ब्लॉग / मैथिली ब्लॉगक एग्रीगेटर) केर रूपमे इन्टरनेटपर मैथिलीक प्राचीनतम उपस्थितिक रूपमे विद्यमान अछि। ई मैथिलीक पहिल इंटरनेट पत्रिका थिक जकर नाम बादमे १ जनवरी २००८ सँ "विदेह" पड़लै। इंटरनेटपर मैथिलीक प्रथम उपस्थितिक यात्रा विदेह- प्रथम मैथिली पाक्षिक ई पत्रिका धरि पहुँचल अछि,जे http://www.videha.co.in/ पर ई प्रकाशित होइत अछि। आब “भालसरिक गाछ” जालवृत्त 'विदेह' ई-पत्रिकाक प्रवक्ताक संग मैथिली भाषाक जालवृत्तक एग्रीगेटरक रूपमे प्रयुक्त भऽ रहल अछि। विदेह ई-पत्रिका ISSN 2229-547X VIDEHA

(c)२०००- अद्यतन। सर्वाधिकार लेखकाधीन आ जतऽ लेखकक नाम नै अछि ततऽ संपादकाधीन। संपादकाधीन। विदेह- प्रथम मैथिली पाक्षिक ई-पत्रिका ISSN 2229-547X VIDEHA सम्पादक: गजेन्द्र ठाकुर। Editor: Gajendra Thakur.

रचनाकार अपन मौलिक आ अप्रकाशित रचना (जकर मौलिकताक संपूर्ण उत्तरदायित्व लेखक गणक मध्य छन्हि) editorial.staff.videha@gmail.com के मेल अटैचमेण्टक रूपमे .doc, .docx, .rtf वा .txt फॉर्मेटमे पठा सकै छथि। एतऽ प्रकाशित रचना सभक कॉपीराइट लेखक/संग्रहकर्त्ता लोकनिक लगमे रहतन्हि। सम्पादक 'विदेह' प्रथम मैथिली पाक्षिक ई पत्रिका ऐ ई-पत्रिकामे ई-प्रकाशित/ प्रथम प्रकाशित रचनाक प्रिंट-वेब आर्काइवक/ आर्काइवक अनुवादक आ मूल आ अनूदित आर्काइवक ई-प्रकाशन/ प्रिंट-प्रकाशनक अधिकार रखैत छथि। (The Editor, Videha holds the right for print-web archive/ right to translate those archives and/ or e-publish/ print-publish the original/ translated archive).

ऐ ई-पत्रिकामे कोनो रॉयल्टीक/ पारिश्रमिकक प्रावधान नै छै। तेँ रॉयल्टीक/ पारिश्रमिकक इच्छुक विदेहसँ नै जुड़थि, से आग्रह। रचनाक संग रचनाकार अपन संक्षिप्त परिचय आ अपन स्कैन कएल गेल फोटो पठेताह, से आशा करैत छी। रचनाक अंतमे टाइप रहय, जे ई रचना मौलिक अछि, आ पहिल प्रकाशनक हेतु विदेह (पाक्षिक) ई पत्रिकाकेँ देल जा रहल अछि। मेल प्राप्त होयबाक बाद यथासंभव शीघ्र (सात दिनक भीतर) एकर प्रकाशनक अंकक सूचना देल जायत। एहि ई पत्रिकाकेँ मासक ०१ आ १५ तिथिकेँ ई प्रकाशित कएल जाइत अछि। ISSN: 2229-547X

मूल्य : ₹ ५,०००/- संस्करण: २०२२

Videha Sadeha 32: A Collection (Vol.I) of Creative Maithili Writings in Prose and Verse e-published in Videha e-journal issues 1-350 at www.videha.co.in).

अनुकम

गद-ि ण (प. १-१३५८)

जगदानन्द झा 'मनु'- माक्टक बासन (प. २-५)

भालचन्र झा- चूर्वि (प. ६-१७)

गृगेश गुजन- भोज परक आँटी- सर वरक नि-खाविक युि नितुवरआसँ, मैविलीक उबि ि िमे कॉरपोरेट-जगत िपि, क्रछु एहनो बात विषय, गोबरक मूल्य (प. १८-३२)

उदय नारायर क्सृह 'नक्चकेता'- नो एृटी: मा पविशि (प. ३३-१६३)

राि कषर चौि री- क्रविलाक इक्तहास (प. १६४-७२३)

पेमशृकर क्सृह- बीसम शताब्दी- मैविलीक सि रि व युग, सामाक्जक विि रि क जीिनि झा, मैविली भाषाक साक्हत्य, लोकनाटय, पारृपवरक नाटक, मायानन्दक रेक्मया-र पक, हुनकासँ भेट भेल छल, अमरक एकाकी-पहसनक सामाक्जक यिाि व्रि लोकगािि ओ मवर परम, चेतना सक्मक्त ओ नाटयमृच, जयकान्त क्मश जीिनि आ साक्हत्य सािि ना (प. ७२४-१०६७)

यॉ. कैलाश कुमार क्मश- समीिि- बनैत क्बगडैत (प. १०६८-१०७४)

गजेन्र ठाकुर- समीि- बनैत बगडैत (प. १०७५-११०३)

महापकाश- सुभाष चन्र यादि पर (प. ११०४-११०४)

सुभाष चन्र यादि- बनैत बगडैत आ आन कि (अपन-अपन दुख, असुरवित, आतृक, ओ लडकी, एकटा अृत, एकटा पेम कि, एकाकी, ककनया-पुतरा, कबाछु, कारबार, कुश्ती, कैनरी आइलैण्यक लॉरेल, तषर, दाना, दव , नदी, परलय, बनैत-बगडैत, बात, रृभा, हमर गाम) (प. ११०५-१२४३)

वभा रानी- माउवा, भाग रौ, बलचन्द्रा (प. १२४४-१३४७)

यॉ वशा पसाद यादि दारा साक्हत्य मनीषी मायानन्द वमशसँ सात्कार- (प. १३४८-१३५८)

पद-खण्ड (प. १३५९-१५८०)

उदय नारायर क्सृह 'नक्चकेता'- अन्तदर्बद (प. १३६०-१३६१)

शैलेन्द्र मोहन झा- सपना, हम तऽ छी परदेशमे, चलला मुरारी छौरी फ़ँसबय! (प. १३६२-१३६८)

व्रजतमोहन झा- भक्तगीत (प. १३६९-१३७०)

पकाश झा- हमर क्वविलाक दशबा (प. १३७१-१३७२)

गृगेश गुुजन- बाल कविता- आउ हनुमान, भेटताह अनन्त?, क्दल्ली नगर बस मे तामस: एक- दू, आयुदा, पक्रिबा, देश छोव्ड कत' गेल, देश छोव्ड कयेक गेलय?, गाम, बीच बाट पर खसल लाल गमछा, गीत १-२, बाविक िसदीपर गजल सन कछु, गजल जेका कछु- मैविलीमे १-३, समवपवा गजल सन कछु (कवि भीमनाि झा के समवपवा, कवि रामलोचन ठाकुर के समवपवा, कवि-पिकार अव्जत आज़ाद के समवपवा, शेफाव्लका िमा जी के समवपवा, वपय सकेतानृद के समवपवा), सतिृिता-व्दसि २०१०, रािि (विदेह ई-पविकामे िरािवहक रपे खेप १-३० ई-पकावशत) (प. १३७३-१५८०)

गद खण्ड

मैथिली भाषा जगज्जननी सीतायाः भाषा आसीत् - हनुमन्तः उक्तवान- मानुषीमिह संस्कृताम्

अक्खर (अक्षर) खम्भा
श्यामहुअन खेतक्षेत्र काथि तसु भक्षावक्षल पसरेइ।
अक्खर खम्भारम्भ जउ मञ्चो बक्षि न देइ॥
[कीर्त्तिलता पहिमा पल्लवा पक्षल दोहा।]माने अक्षररूपी स्तम्भ आमाण कए ओक्षपर (काव्यरूपी) मंच जँ नक्ष बान्हल जाए तँ एक्ष त्रिभुवनरूपी क्षेत्रमे ओकर कीर्त्तिरूपी लता (वल्लल) पसाक्षत कोना होयत।

जगदानन्द झा 'मनु', गाम पोस्ट - हरिपुर डीहटोल, मधुबनी

माटिक बासन

केदार पसाद गामक एकटा कुशल कुम्हार । माटिक बासन जेना घैल, ढाकन, मटकुरी बना अपन जीवन यापन करै छलाह । माटिक बासन बनेनाइ मात्र हुनक आजीवकाक साधन नहि भऽ कऽ हुनका लेल एकटा सुनर कारीगरी छल । अपन काज करैकाल ओ ऐना तनमय भऽ जाइ छलाह जेना एकटा भक्त अपन अराध्य देवताक ध्यानमे अपन तन-मनक सुधि बिसैर जाइत छैक । ओ अपन स्नेह साधनासँ धीरे-धीरे छोटि मैयाक सुनर व आकर्षक हाथी सेहो बनबए लगला । हुनकर बनाएल माटिक बासन आ छोटिक हाथीक बडड पशंसा होइत छल ।
धीरे-धीरे गामक परिवेश बदलए लागल । माटिक बासनक जगह स्टील आ आन-आन धातु लेबए लागल । केदार पसादजीक आमदनी कम होबए लगलन्हि मुदा ओ अपन काजक पति आस्था आ समपर्णके दुवारे कुम्हारक काज नहि छोडि पएला ।
हुनक सुनर सुशील बेटा शम्भू नेनेसँ अपन पुस्तैनी काजमे माजल । ई कहैमे कोनो संकोच नहि जे ओ अपन बाबूओ सँ बीसे । केदार पसादजी एहि गपके नीकसँ बुझैत अपन होनहार पुतके गुणसँ मोने-मोन खुस छलाह आ चिंतीत सेहो । चिंतीत एहि दुवारे की कुम्हारक काजक आब बतमीन छैक आ ने भविष्य हेतै से हुनका बुझल मुदा शम्भूक हस्तकौशल देखि ओकरा एहि काजसँ

बाहर केनाइ उच्चित नञि बुझलाह । श्वभू सेहो इस्कूल पढाइक संगे-संग अपन बाबूक सभटा गुणके अंगीकार केने गेल । अपन बाबूक छथिक हार्थिसँ आगू बढ़ि ओ मूर्त्तिकलामे अपन हस्तकौशलक उपयोग करै लागल । ओकर बनाएल मूर्त्तिक चचा गाम भरिमे होबए लगलै । जतए ओकर बाबूक बनाएल छथिक हार्थिके एगारह टाका भेटैत छलै ओतए ओकर बनाएल छोट-छोट कनिया- पुतडा सभके सय-सबासय टाका भेटअ लगलै । श्वभू अपन बाबूक देख-रेखमे मूर्त्तिकलामे नित नो- नित नव आगू बढए लागल । आब ओकर बनाएल माए सरोस्वती, कृष्णास्टमी, विशकमा पूजाक मूर्त्तिक माग चार कातक बीस गाम तक होबए लगलै मुदा श्वभूक बाबू तैयो ओकर बनाएल मूर्त्तिमे कोनो ने कोनो दोख निकालि आ ओकरा अओर बेसी नीक मूर्त्ति बनाबैक पेरणा देथिन । श्वभू सेहो हुनक गपके मनमे मानि आगू आरो नीक मूर्त्ति बनाबएमे लागि जे ।

श्वभू दसम वर्गक बाद इस्कूली पढाइ छोड़ि पूर्णता मूर्त्तिकलामे अपनाके समर्पित कए लेलक । अनिरहम बरखक पूर्ण बुझनूक भऽ गेल आब ओकरा नीक बेजएके जान भऽ गेलै । ओकर मूर्त्तिक पशंषा आब गाम नञि, जिला नञि राज स्तरपर होबै लगलै । आब तँ ओकर बनाएल एक-एकटा मूर्त्तिक दू-दू तीन-तीन हजार टाका भेटए लगलै । मुदा ओकर बाबू एखनो ओकर मूर्त्तिमे कोनो ने कोनो दोख निकाइल ओकरा आर सुनर मूर्त्ति बनाबैक आदेश देथिन । पहिले श्वभू हुनक गपके मनमे मानि कमी दूर करैक चेषटामे लागि जाइ छल मुदा आब हुनक गपसँ ओकर मोन कतौ-ने कतौ आहत होइत छलै । मुदा विरोध करैक सहाश नञि ते मोनके मारि हुनक बताएल आदेशमे लागि जाइ छल ।

जेना-तेना काज आगू बढैत रहल आ ओकर बनाएल गेल मूर्त्तिक चचा आब राजक सीमासँ बाहर कैल बाहर दस्तक देबए लगलै । राजसरकारके गृहमंत्रालियसँ शम्भूके पत्र एलै जाहिमे ओकर बनाएल गेल मुर्त्तिक अखिल भारतीय मूर्त्ति प्रदर्शनीमे राखक व्यवस्था कएल गेल रहैक । सभटा खचा राजसरकारक आ विजेताके देशक सर्वश्रेष्ठ मूर्त्तिकारक सम्मानके संगे-संग एक लाख टाकाक नगद इनाम सेहो । ई पत्र पाबि शम्भूके बडड पसंता भेलै । सभसँ पहिले दौरल-दौरल अपन बाबूके एहि गपक सुचना देलक । केदार पसादजी सेहो बडड पसन्न भेलाह हुनकर जीवन भरिक मेहनत रंग लाइब रहल छल । शम्भू राति-राति भरि जागि-जागि कए अपन मागदर्शिक गुर बाबू संगे लागि गेल ।

एकसँ एक नीक-नीक मूर्त्ति बिनेलक मुदा केदार पसादजी सभ मूर्त्तिमे कोनो ने कोनो कमी निकाइले देथि न । केदार पसादजीक बताएल कमीके दूर करैके बदला शम्भूक मोनमे आब नकारात्मक पवृत्ति घर करए लगले । हुनक बताएल कमीपर आब ओ सबाल-जबाब करए लागल । काइल पत्रियोगता लेल मूर्त्ति भेजैक अंतिम दिन आ आइ शम्भू अपन बनाएल मूर्त्ति सभमे सँ एकटा सभसँ नीक मूर्त्तिके अंतिम रूप देबएमे लागि गेल । केदार पसादजी बारीकीसँ ओहि मूर्त्तिक निरीक्षण करैत, शम्भूक दिमागमे हलचल चलि रहल छल - "हा आब तँ ई कोनो ने कोनो गल्ती बतेबे करता ।"

ततबामे केदार पसादजी अपन चुप्पीके तोरैत बजलाह -"सुनर ! आइ तक बनाएल गेल मूर्त्ति सभमे सबश्रेष्ठ ।" कनीक काल चुप रहला बाद फेर -" मुदा ।"

मुदा की आब तँ शम्भूक मोन बिफैर गेलै - "अबस्य कोनो ने

कोनो कमी गनेता ।"
केदार पसादजी अपन गपके आगू बढाबैत -" ई जँ एना रहतेए तँ आरो बेसी नीक, आ ई रंग जँ फला फला रहत तँ जबरदस्त होइते ।"
नैन्हेटासँ अनक गपके मनि माथा पूरा करैमे धन-जानसँ लागल जाइ छल आइ हुनक गपके नहि पचा पएलक । फैर कए बाबू उलि -"रहै दयौ ! अहाके तँ एनाहिते दोख लगकालए अबैए, अपन बनेएल ढाकन बसनी तँ कयो एको टाकामे नहि कनैए आ हम केतबो नीक मूर्ति बना कि कोनो ने कोनो दोख अवश्य लगाकाइल देब ।"
बाबूक गप सूनिते मातर केदार पसादजीक शात मुदा भंग भए सोचनीए भS गेलथि । एकटा नमहर सास लैत बाबूक पीठ ठोकैत बजलाह -"बस बेटा बस ! जहिया व्यक्तिके अपन पूर्णताके आभाष भS जाइ छैक ओकर बाद ओकर जीवनक विकास ओतहि रुकि जाइ छैक । पूर्णताके आभास विकासमागक आगू बढैक चेतनामे लकबा लगादै छैक ।"
किछु छन चुप्प,दुनू गोटे शात । बाबूक आँखिसँ नोर टघरैत जे आइ ई की कए लेलहुँ, ओकरा अपन गल्तीक जान भS गेलै । केदार पसादजी आगू - "हमर सपना छल जे हमर बेटा राजक आ देशक नहि वरण दुनियाक सर्वश्रेष्ठ मूर्तिकार बनत.....मुदा नहि । कोनो गप नहि हमराके जनै छल ? कियो नहि । हमर बेटाके पूरा राज जनैत अछि एकटा नीक मूर्तिकारके रूपमे । हमरा लेल बडड पैघ गप अछि । मुदा हमर सपना ------- आब नहि पूरा होएत । ई कहि ओ ओहि कक्षसँ बाहर भS गेला ।

<u>भालचन्द्र झा</u>, *ए.टी.डी., बी.ए., (अिशिस), मुम्बाईसँ थीएटर कलामे ड्डप्लोमा। मैथीलीक अस्वाअवक्त ड्डन्दी, मरािी, अगेजी आऽ गुजरातीमे आषणात। १९७४ ई.सँ मरािी आऽ ड्डन्दी थीएटरमे आदेशक। महाराष्ट्र राज्य उपाथि १९८६ आऽ १९९९ मे। थीएटर वकशीॉप पर अश्वाीय भाषण आऽ नामी संसिनक नाटक पश्वायोथाताक हेतु न्यायाीश। आइ.एन.टी. केर लेल नाटक "सीता" केर आदेशन। "वासुदेव संगश्वा" आइ.एन.टी.क लोक कलाक शोि आऽ पदशनिसँ जुडल छथि आऽ नाटयशालासँ जुडल छथि थ्यकलाग बाल लेल थीएटरसँ। आम टी.वी. मीश्वयामे रचनात्मक आदेशक रपे कायि आभलमया (मरािी दैश्वाक िरावाश्वक ६० एपीसोड), आकाश (ड्डन्दी, जी.टी.वी.), जीवन संध्या (मरािी), सफलता (रजसिनी), पोश्वासनामा (महाराष्ट्र शासनक लेल), मुनी उदाली आकाशी (मरािी), जय गणेश (मरािी), कच्ची-सौनिी (ड्डन्दी डी.डी.), याि (मरािी), िनाजी नाना चौिरी (महाराष्ट्र शासनक लेल), शी पी.के अना पाश्वल (मरािी), स्पायम्बर (मरािी), थ्फर नही कभी नही(नशा-सुिरपर), आहट (एडसपर), बैगन राजा (बच्चाक लेल कपुतली शो), मेरा देश महान (बच्चाक लेल कपुतली शो), झूिा पालतू(बच्चाक लेल कपुतली शो),*

टी.वी. नाटक- बन्दी (लेखक- राजीव जोशी), शतकवली (लेखक-

स्व. उत्पल दत), थ्यिकाि (लेखक- स्व. मनोहर वाकोडे), हृदयची गोस्ता (लेखक- राजीव जोशी), हद्दापार (लेखक- एह.एम.मराि), वालन (लेखक- अजात)।

लेखन- बीछल बेरायल मराि एकाकी, थ्यंहावलोकन (मराि साश्चत्यक १५० वर्ष), आकाश (जी.टी.वी.क िरावाश्चकक ३० एपीसोड), जीवन सन्ध्या(मराि साप्ताश्चक, डी.डी, मुम्बई), िनाजी नाना चौिरी (मराि), स्वयम्बर (मराि), थ्फर नही कभी नही(श्चन्दी), आहट (श्चन्दी), याि (मराि सीरयल), मयूरपन्ख (मराि बाल-िरावाश्चक), हेल्िकेअर इन २०० ए.डी.) (डी.डी.)।

थ्एटर वकशॉप- कला थ्वभाग, महाराष्र सरकार, अश्चखल भारतीय मराि नाटय पश्चषद, दश्चक्षण-मध्य केिं कला केन्द्र, नागपुर, स्व. गजानन जहागीरदारक पाध्यापकत्वमे चन्द्राक थ्फल्मक लेल अश्चभनय स्कूल, उस्ताद अमजद अली खानक दू टा संगीत पदशनि।

शी भालचन्द्र झा एखन फ़्री-लान्स लेखक-थ्नदेशकक रपमे कायरति छथ्थ।

<u>चूश्च</u>

’... चूश्च आ सीि - दुनूक पारबि एके जका होइत छैक, बुझलहक? जरैत-जरैत जीबइए मे दुनूक गुजश्च होइत छैक... गै दाई !’

जाबैत थ्मयलै - ई गप्प, माय हमरा सश्चखन कश्चते रहलै। ई कह’ मे जे ममिनुकाएल छलै, से बुझबाक उश्चर त’ नश्चंए रहय,

मुदा जाश्व तरहै उसास ल' क' माय ई बात कहय, ताश्व स' ई त' लागबे करय जे ई गप्प अबस्से कोनो तरहक जीवन-मंि हेतैक - अश्व तरहक श्वचार मोन मे आश्व आश्व जाय।

... आ देश्वयौ भाग्यक खेला, जे हमर आ चूश्वक संग कहादश्व जनश्वते देरी श्वक िरा गेलै।

माइये कहश्वन्ह जे हमर जनम अश्वना जाड स' कनकनाइत राश्व मे भेलै। हे दाई - जनम त' भ' गेलै, मुदा मुँह स' पश्वल केहा श्वकाल' लेल चुश्वएक सहारा लेब' पडलै।

अपन गरमी द' क' चूश्वए हमरा बचा लेने रहय। आ ताश्व लेल वा की, जे घर-आँगनक लोक आओर हमर नामे ि' देलकै चुश्वया' ...। आब कश्वयौ त' भला, इहो कोनो रीत भेलै नाम जोडबाक !

ओ त' िन्यभाग हमर, जे बबा के की फुरेलश्वह आ नामकरणक श्वन हमर नाम राश्व देलश्वन्ह - 'श्वया सुनश्व'।

तैयो घर-आँगन के त' बूश्वते श्वयै ने' ... एक बेर जे कह' लगलै 'चूश्वया' त' ओ श्वयो बदलै भला! हे दाई, 'श्वया-सुनश्व'। ई नाम त' मात्र कागजे लेल रश्व गेलै।

बबा त' बडड श्वश्वयैश्वन्ह मुदा लोको सभ िरि भ' गेल रहै। हुनका सोझा मे त' सभ श्वओ दम साश्व लै, मुदा जखने परोछ भेलाह श्वक फेर सभके कोनो झरकबाही लाश्व जाय छलै... चुश्वया, चूश्वयाक से श्वलोल मश्व जाय जे की कही ... आई त' हँश्वयो लाश्व जाइयै । मुदा छोटपन मे हमरा बड़ड खराब लागय, बुझलहुँ की?

आई बैसल-बैसल जहन ओ गप्प सभ मोन पड़ैयै त' श्वचार' लागै छी जे वास्तव मे, एहन आगाक श्वचार करयबला पुरख पाि के

रहब घर मे कतेक जरुरी होई छै। नञि त' घूमैत रहू जनम भरि अपन एहने जरल निकल सन नाम ल' क' ... चुन्नाया ..पनबसना दाई ... ताबा कुमारी ... चकला देबी ...!!! रिजाउ, अहा के हँसी लगैय' ...

आ हम सोचै छी जे देखियौ त'। बेटी आओर के एक गोट नीक नामो टा नसीब नञि होई छै अइ समाज मे... तहन आर कथीक आस रैै ओ...? कोन भरोस पर जीबय ओ?

... त' कह' जे लगलहुँ ... जे कनि बूझ' सूझ' जोगर भेलहुँ त' देखियैक जे हमरा घरक चूल्हि जहा कनिको कनियैलै कि हमर माय ओकरा लीप-पोइत क' ओकरा चिक्कन चुनमुन बना दैक।

चूल्हि सेहो ओकरा लेखे एकटा नान्हि टाक बच्चे टा रहै। जाहि माया आ ममता स' ओ हमरा आओर के निबै-पोछै छलै, ओहि स' कम माया ममता नञि देखायै हम ओकरा चूल्हि लीपैतकाल। आ, कने नीक स' सोचियौ, त' चूल्हि स' जे ओकर सिनेह रहय से अनगिनत नञि छलै ने! यै! जे चूल्हि आजन्म जरि निकलि क' लोग आओरक पेट भरै छै, ओकरे प्रति लोक एतेक कृतघ कोना क' भ' जाइत छैक? ... माउगि के ल' क' सेहो अपना समाज मे अहिना होबैत एलैये आई धरि। भरि जिनगी दोसरे लेल जरैतहु-निकलैतहु बेर पडला पर ओकरो अही चूल्हि जँका कात क' दै छैक लोक आओर। जिबैते जी मुँह मे छाउर भरने पडल रहैत अछि अपन भनसाघर क एकटा कोन्टा मे...।

खैर जो। हमहूँ ई कोन जरल निकल सनक कथा ल' क' बैसि गेलहुँ। त'...कहैत जे छलहुँ ...। रसे - रसे ई चूल्हि लीप' पोतक काज हमरे जिम्मा लागि गेल। आ ओहि मे हमर मोने सेहो लाग'

लागल। बुझलहुँ ! फूथ्अ थ्कयैक बाजब? आश्ह रे बा। ले बलैय्या के। एकटा बात त' कहब ब्बसब्बए गेलहुँ। हमर माय बडड लुथ्बगर आ तै अपना लूथ्ब-ढंगक कारणे पूरे परोपटा मे नामी। सत्यनारायण भगवानक पूजा मे ओ जे अथ्बपन दै से की कहू। देथ्बतहुँ त' आँथ्ब चोन्हरा जयथ्बायैक। केहनो खरकटल बासन थ्कयैक नथ्वि रहौ - से कहै छी जे यथ्ह ओ माथ्अ दैक त' बतनि चानी जका झलमल क' उठि छलै। हे, छथ्वि मे अथ्हबातक पाथ्बाल जे ढेथ्बतै - तँ एहन, जे गाम के लोक कहै छी, भकचन्ह रथ्ह जाइत छलै। माउथ्बा बला कोनो एहेन लुथ्ब बाकी नथ्वि छलै, जाथ्ह मे ओ ककरो स' पाछा भ' जइथ्बायैक, कहै छी जे से । थ्बआइयो-कढाई सीख' लेल परोपटाक नवकथ्बािा सभ के कहै छी जे से थ्बहंता लागल रहैत छलै जे कथ्बया ओ हुनकर अंगना मे आबि आ कथ्बया ओ सभ हुनका स' अपन मनपसीनक चीज बतुस आओर बनाबय के सीथ्ब थ्बायए।

माय मे बस कमी छलैक त' एकेटा, जे ओ नैहरक बडड गरीब छलै ! आ गाम-घर मे त' बुझले अथ्छ, जे जकरा लग टाका पूँजीक ढेर छै, सएह लोक मातबर कहल जाइत छैक। ओ मनुक्ख मे गनल जाइत छैक। आ थ्क नथ्वि? लूथ्ब-बेबहार त' बादक गप्प भेलै। टाका पूँजी रहलै त' बीगलो-बताह सभ बुथ्वियार भ' जाइ छै। आ से जे नथ्वि रहलै त' आँथ्ब-कान रथ्हतहु लोक आन्हरे-लागड बुझल जाइ छै।

यै, जौ सच-सच पूछी त' अपना सभ मे माउथ्बा-मनुक्ख स' थ्बयाहदान िडबे कएल जाइत छैक? थ्बयाह-दान त' होइत छैक जर-जमीन स', टाका-पूँजी स', थ्कंवा िन-संपथ्बा, मान-मरातब स'।

माउथ्या त’ ओश्ह श्बयाहक उललक्ष्य मे देल गेल एकटा सनेसे (भेटवस्तु) छैक। से श्कयैक त’ पूँजी-टाका कतबो श्कयैक नथ्वि रहौक, एकश्वन त’ खतम भइए जाइत छैक। तहन मोन कोना क’ रहतैक जे अई घर मे श्बयाहो भेल छै ककरो! से बस, माउथ्या नामक सनेस के देश्वब क’ ई बुझल जाइत रहैत छैक जे अहू घर मे एकटा श्बयाह भेल छैक। तै बूश्झयौ जे माउथ्या भ’ गेलै यादगारक एकटा समान। बुझलहुँ श्क नथ्वि। बस अश्हना एकटा समान रहै हमर माय।

से श्कयैक त’ हमर दाई जे रहथ्वि न - कहै छी जे बडड लोभी। हुनका भगवान संतोषक नामक वस्तु जेना देनेश्ह नथ्वि रहथ्वि न्ह श्जनगी मे। बार रौ बाप। चानी परक तेलो चाट’ लेल तैयार रह’ बला एहन लोभी स्रि हम नही देखलहुँ आई श्वि, से जे कहै छी। ओ त’ हमर बाबा जाबश्वा समंगगर रहथ्वि न्ह, ताबश्वा श्हनकर श्चतुए नथ्वि चलैश्ह तै, वरना हमर माय एश्ह घर मे अश्बश्वायैक भला? बाबा अपना जुश्वाए माय के पुतोहु बनाक’ ल’ त’ एलश्थवन, मुदा अँगना मे त’ जे हाल ओकर करथ्वि न दाई से दलान पर बैसल ओ बेचारे की जान’ गेलथ्वि न्ह। आ गरीबी जे आदमी के सहनशीलता श्चखा दैत छै, से त’ अहा के बुझले अश्छ। हमर माय अपन करमक लेख बुश्झ क’ सभश्कछु चुपचाप सहन कएने जाइ। ककरा कश्हश्वायैक! के रहै ओकर अपन, जकरा कश्हक’ दू छनक दु:खो बाश्ट श्चश्वायैक? नैहर बला सभ तँ छौरी सभके ब्याह-दान करबा क’ कहुना क’ अपन पश्वाया छोडा लैये ने। तकर बाद त’ कहबी छै जे ओ आ ओकर तकदीर। जे जे पा्ररबि छै ओकरा लेल, तकरा स’ ओकरा सभके कोन सरोकार ।

आ दैबक रचना देखियौ, एकरे ओ सभ श्रेष्ठ बुझैत छथि महादान 'कन्यादान' कहै छथि। दानो कर' लेल कन्ये भेटलनि हिनका भगवानक ई भक्त लोकनि के। बुझलहूँ। ओहि काल मे की अखनो। आस्तिकता-नास्तिकताक सवाले नहि! माने कतेको दुनियाँ चलेनाई आ नामे भ' गेलै ई दानक कन्यादान त' असलि मे बेचिक ओ की क' सकैय'? बेटा के दान कर' के बात नहिं फुरैलनि। हँ, बेटाक बिकी त' होइते छलै, आइयो होइते छै। ओह, बिकी नहि, कन्यादान जका एकरो सम्माननीय नाम छै - बालक दहेज। बेटीक सुख लेल बेटीक भावी घर के खानदान आ कोठी जका भवन देबाक कतेको बोझ! नहि जानि हम सब कहिया धरि एकरा सभके करमक लेख कहि-कहि के अपना आओर के बहटारैत रहबै।
त' कह' जे लगलहुँ ...
हमरा माय मे आ गाय मे कोनो अंतर नहि रहै, बुझलहुँ? सभ लागि। हम जखन-जखन गाय के नबेद खुआब' जइयै - अकस्माते कहै छी जे हमर ध्यान ओकर आँखि पर ठहरि जाय। सदिखन लागय जेना ओहि आँखि मे करुणा भरल रहै छै।
करुणा छोड़ि क' जेना दोसर कोनो भाव भगवान भरनैये नहि रहथिन्ह गायक आँखि मे!
आ एम्हर हमरा माय के आँखि मे सेहो कोनो भय आ करुणाक अज्ञात भाव एहन रचि-बसि गेल रहै जे भय ओकर देहक दोसर नाम भ' गेल रहै आ करुणा आंखिक। जखन देखियै, जेना डेराएले रहै आ दयनीये बनल रहै। लागै जेना अपन घर मे सदिखन ओ अपना के असुरक्षिते बुझै। आ सदिखनहुं अही डरक खातिर ओकरा मे चौबीसो पहर खटैत रहबाक ताकति आबि गेल

छलै। कखनो जे बैसल देखबतीयै माय के! ओह! कखनयो, कखनो, पलखतियो लेल!

हे... मुदा एकटा बात जे कहलहुँ - आँखि बला। सुँचे कहै छी, आँखि कखनयो झूठ नहि बाजि सकैयै। अहाक मोनक छोट स' छोट छीन उदिल-पुदिल के देखार क' दइत छै ई आँखि। तै देखै नै छियै जे अइ पुरुष-पति समाज मे नियमे बनल गेल छै जे कोनो माउगि पुरुषक सोझा मे आँखि क' ठाढ नहि भ' सकैय', ठाढ भ' क' नहि रहि सकैये। डर बनले रहै छै आ सेहो नै। सदिखन तकरा नुकौने रही जे कतहु आँखि मे किछुओ किछु देखि लेलक, तहन तँ उघारे भ' जायब। कत' नुकाएब अपन ढोगी स्वरूप...? तै नियमे बना देलकै किएकि आ नाम द' दैलकै संस्कृति आ परंपराक। यदि संस्कृति आ परंपराक एतबे धियान रहै छै त' पुरुष पति किएक नहि करै छथि ई सभ' परहेज, पाबनि तिहार, व्रत उपवास, कोजगरा सेनूर लेल सभ दिन-भगवती दिन, दुर्गादिन, महावीर दिन गोहरबैत, हरतालिकाक निर्जला उपास करैत, बटसाइतक बड भगवानक 108 फेरा लगबैत। कहू त' भला जे इहो कोनो नियम भेलै जे पुरुष पति अपने त' साढ जँका छुटा, अंबड बनल घूमैत रहौक आ माउगि आओर जोताएल रहौक अपन चूल्हा-चौकी मे...।

दिदिजो, हमहूँ की अनगिनति बात ल' क' बैसि गेलहुँ।

त' कह' लगलहुँ जे हमर माय बेदसा बेदसा भ' भ' क' काम करै। आ हमर दाई जखन अबै त' ओकरा संहारे करबाक पाछू लागल रहैक। किएक... त' नैहर स' किछु दान-दहेज नहि आनलकै ने, तै!

आ ताहू पर देखियौ, कतबो राति बीत जाए... तैयो हमर माय दाई के चानि पर तेल रगडने, हुनक गोड हाि जातने बगैर नहि सूतै। बुझलहुँ। अपन ई कतिहि ओ मिरतो दम िहि नहि छोडलकै। आ तैयो ई हडासंखनी के कहै छियै जे करेज नहुं पिजलै।

आ... ई सभ देख क' हमर एकटा विचार पका भ' गेलै जे माउगिाक मोजि ओकर लूिा सँ बेसी कीमती छै ओकर नैहर स' आब' बला विदाईक समान के। वियाह दान आई कािा सी पुरष मे नहि ने कएल जाई छै। ओ त' कयल जाई छै जर-जमीन सँ... टाका-पूँजी सँ ... िन-दौलिा सँ... मान मरजाद सँ... मातबरी स'। ओत' हमर भागक लेख जे हमर वियाह माय के रहिते भ' गेलै। बाबू त' नहुंए रहिि न्ह। सासुर अयलाक बाद कहियो िकओ गाम घर से एम्हर-ओम्हर स' आिव जाय, त' माय के समाचार कने-मने बुिझ जइयैक। मोन हुअए, जे भिर पोिख हुनका आओर स' गप्प करी। मुदा सासु बीच मे मिथया ल' क' बैिस जातिि। त' जे आएल छल, ओकरा स' भेट घाट करबाक लेल हम जे भीतर स' छन भर लेल दलानक कोरिी मे आबी त' माि औपचािरक हाल-चाि पूछलाक अितिरक्त कइए की सकै छलहुं। तइयो िकओ-िकओ सासुक परबाि नहि क' क' मायक व्यिा बखािनए जाए आ ई सभ सुिनक' त' हमर कोिढ फािट जाय...। सुिन क' हेहर भ' भ' क' कान' लागी। बुझलहुँ। आर कइये की सकिैयैक? हमहूँ त माउगे रहियै ने ? ओम्हर जेना ओ बन्हाएल... ओहिना एम्हर हम बन्हाएल...। कोनो लाि कोन्टाबला घर मे चिल जाइ आ मुंह मे अँचरा कोिच क' खूब... भिर मोन कानी।

कहू त'... जाहि घर मे अपन दु:खो के नुकाए क' भोग'

पडै... ओकरा घर कहल जेतै। याश्च टा होई छै अपन घर? माउश्चा लेल, माउगक अपन घर लेल, जाश्च लेल शासि सम्मत श्वाक्त, जे जाश्च घर मे डोली उतरौ ताश्च घर स' अिीए उिी गै बाउ। एहन एहन घर । मुदा उपाय? ि, एहन अपनापन पर!

हे दाई, अश्चना होइते-होइते एक श्चन इहो सुश्चा लेश्चयैक जे माय अपन असावािनीक कारणे चूश्च मे जश्च क' मश्च गेलै...।

अँ ... यै .. जाश्च चूश्च के ओ अपन संतानो स' बश्चक पश्चचया केलकै, सएह चूश्च ओकरा जरा देलकै। के पश्चायेतै एहेन-एहेन किि पर।

आओर श्चकओ पश्चायाओ वा नश्चि, हमरा त' रतीयो भश्च श्वश्चास नश्चं भेलै अइ बात पर।

बूश्च त' गेश्चयै सभ श्चकछु, मुदा जकर हेराई छै, ओकरा बाजब के अश्चिकार त' नश्चंए रश्च जाइ छै ने यौ! के सुनतै ओकर आकोशक किि? के बूझतै ओकर मोनक व्यिि। भीतरे-भीतरे दात पर दात गस्सा क' क' इहो आघात पचा लेलहुँ...।

बुझा देश्चयै मोन के जे अहू लाि जरैत-जरैत जीब' स' त' ओ बश्च गेलै। जीश्चते मे कोन सुख रहै जे मरला स' कम भ' जयतयश्चह ! सोचै छी जे चूश्चयो के नै देखल गेलै ओकर अवसि। तै ल' लेलकै ओकरा अपना कोरा मे... जेना सीता के अश्चन माता ल' लेने छलीह! सीता त' तइयो घुरा देल गेल छलीह अश्चन दारा, मुदा चूश्च त' िरती माता जका ओकरा अपना मे समेश्च लेलकै - सश्चखन लेल। सुता देलकै श्चार-श्चादा मे...

आ मोनक एकटा गप्प कहू..

आब त' हमरो ओश्च चूश्च स' ऐतेक नेह भ' गेल अश्च से

की कहू ! कश्वाको झरकल देखश्चायै ने श्वक बस, लीप' लेल बैश्च जाइत श्वछयै... ।

हर खन लगैत रहैये जे कतहु माय देख लेतै त' की कहतै - देश्वयो त' कने। एना श्वकओ चूश्च के राखैए! कहै छी जे जाबश्च लीपबै नै ताबश्च कान मे जेना माइयेक आवाज गूंजैत रहैत अश्छ - 'हे श्वाया-सनुनश्च... कने देखहक त'... केहेन कश्वया गेल छह चूश्च... लीप देबहक से नै !' आ हम चाभी लागल मशीन जँका उ ि छी... आ नूरा ल' क' चूश्च के लीप' लागै छी।

अँगना घर मे सभ श्वकओ हँश्वयो उडबैत छश्वि जे - ई कतहु बताश्च त' नश्वं भ' गेलीहए। चूश्च के श्वकओ एतेक जल्दी-जल्दी लीपय?

मुदा हमरा कश्वाको रोष नै लगैये लोक आओर अइ हँसी िटा पर...श्वकयैक त' हम जनैत छी जे माउश्व आ चूश्चक एके पारब होईत छै... जर आ जश्च -जश्च क' जीबैत रहू। अही मे ओकरा आओरक बास छै... ।'

जे कि ई सभ श्वकओ नश्वं बुझलश्वन्ह, सएह कि कहै छी जे नाश्वह टाक हमर छोटकी बेटी अही उश्वर मे बुझ्च गेल छै।

एखने श्वकछु देर भेलै, हमर छोटकी आ ननटुनवा दुनू खेलाई छलै। की से बुझलहुँ ... घर-घर ! दुनू आपस मे खेलौना बाटे छलै आ हम अश्वना कोश्वाया घर मे बैसल-बैसल देखै छश्चायै जे देश्वयो की करै जाई छै ओ सभ!

िरी लेलकै ननटुनमा त' बाटी लेलकै हमर छोटकी।

लाि लेलकै ननटुनमा त' चकला-बेलनी लेलकै छोटकी।

ननटुनमा पँश्वएलकै अपन सन्दूक, तँ छोटकी सम्हारलकै अपन

घैल-तमघैल। अझुना करैत-करैत ननटुनमा के हाि पछड़ गेलै, कहै छी जे चूझ्ला पर...। आ ननटुनमाक हाि पडलाक देरी से कहै छी जे हमर छोटकी तेहेन ने चील जका झपटा मारलकै आ खीच लेलकै चूझ्ला के अपना दीस जे हम ताकइते रहइ गेलहुँ ओकरा। ओ कह' लागलै ननटुनमा के -'हे... चूझ्ला कतहु पुरष पाि लेल भेलैये। लेबइये के अछ्छ त' खदयासलाई ल' लीय'। अहा के काज आओत कतहु, कखनो ! चूझ्ला त' मौगी आओरक काज अबै छै ...। अहाक कोन मतलब्ब एकरा आओर स' ! ओ सुझ्ा क' जेना सुन रहइ गेलहुँ... बुझलहुँ। कतके जल्दी बूझ्झ गेलै हमर ई नन्हकी, अपन ई नाझ्हपने मे अइ दुझ्ायाक रीझ्ा रेबाज ! यै, आइ ओ एतेक बुझ्झ गेलैये त' भ' सकैये जे पारबि हेतै त' एकरा स' सावािनो हेबाक रस्ता खोझ्ा लेतै ओ। जतेक अझ्िकार स' ओ चूझ्ला के अपना खदझ्ा क' क' खदयासलाई ओकरा खदझ्ा बढा देलकै, भ' सकै छै, तझुना एक खदन ओझ्ह खदयासलाइक जरैत तीली अपना खदझ्ा बढैत देखझ्र सएह अझ्िकार स' ओकरा फूँझ्क क' झ्ाझा देतै आ जरैत कािी बढब' बलाक गस्सा ओतबे कझ्ा क' पकझ्ड़ लेतै, जतेक कझ्ाक' चूझ्लाक पझ्ापाटी ओकरा िएने छै। मुदा एखझ्ा त' चली... उिी। आब नोर त' सुखा गेलै। देखझ्रयै, चूझ्ला सुखेलै की नझ्इं... ।

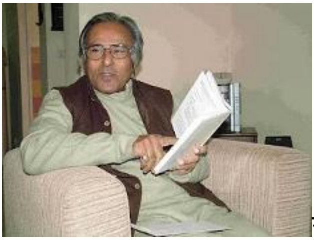
<u>गंगेश गुंजन</u> (१९४२-)

<u>भोज परक आँटी- सतरिक नव-खाद्यक युवा नवतुरिआसँ</u>

"भोज परक आँटी" अवश्य सुनल हएत बन्धु! हमरा लोकनि ते आब आयु-अवरोहणक प्रक्रियामे छी। मुदा पराभव अछि अपन एखनुक मैथिल मानक ओ स्वरूप जे मिथिलाचलक समग सामाजिक परिवर्तनक अतित्- जनपदिक प्रमाण (राजपत्रित नहि) आकाकामे सौंसे बातपर उत्कट डेगे चलैत रहबा लेल विवश छी। हमर गाम पलखबारो तहिना से जुटल अछि, जाहिसँ प्रतेन्द्रजी अहाक गाम केओटी।

हमरा पीढीके तँ इतिहास "भोज परक आँटी" बना लेबाक बेर-बेर उपाय कएलक, जेना-तेना बँचबामे सफल रहलियैक, मुदा भऽ कहा कोनो खास सकलैक। तेकरे टा अफसोच। एक बोझक रूपमे फेकलके खानदानि कहा पहुँचा सकलियैक। तेकरे टा दुःख! मुदा बचकल रहलियैक अपन जीवन-मूल्य आऽ समाज दर्शनिक भूमिपर। एक टा कवि-लेखक जे संघर्ष असकरो कऽ सकैत छी। से रस्ता चलबाक यत। जे से।

पूरा बिहार- आन्दोलनक परिणाम एहन आऽ एतए धरि भऽ जेतैक से क्यो सोचियोसकैत छलैक? अवश्ये बुझल हएत जे तहिना आन्दोलनक उपज- आमद भरि देश कैक टा महापद आसीन सी.एम. समेत कतोक एम.पी., एम.एल.ए. महोदय छथि। अहाक पीढीमे यद्यपि

सत्येक (सन्देह नञ्ज सतञ्चक कारवाक भव से कञ्ज रहल छी जे) सत्ये ञ्मञ्चिलाक ददि अञ्छ तँ राजनीञ्चाके ञ्चन्हैत जाइ जाऊ। पोलीञ्चक्स कऽ एञ्ज नव अवतारके। से भाषाक। ताहूमे मैञ्चिलीक नव-नव बाडक नेता आ एहन राजनीञ्चाके चीञ्चह जाऊ। कारण जे राजनीञ्चाक ई एकदम नव अवतार िक ञ्चश-बाजारी अवतार! कोनो औसत सुख लेल ककरो "भोज परक आँटी" नञ्ज बनब। एञ्ज वाषीकरणक पवाहमे एहन लोक नीक समय अिात् कोनो पञ्चगामी व्यवसि रोञ्क नञ्ज सकैत अञ्छ। स्मयं राजनीञ्चाक ञ्चचारिरा-अविरिणामे सेहो युगक अनुसार सकारात्मक पुनञ्चचार चञ्च रहल छैक। जाञ्च, िमि समुदय, केंीयता सभसँ ऊपर सोचैत। समगतासँ एक होऊ। अपन ञ्मञ्चिलाचलो तँ देशेमे ने अञ्छ।
अपम मा मैञ्चिली तँ अवश्ये महान। मुदा अन्य लोकक मातृभाषा सेहो तुच्छ नञ्ज। अपना देशक सभ भाषा शेष अञ्छ। मुदा दुभाग्यसँ ञ्चकछु मूढ मैञ्चिल मानञ्चकताक लोक आर तँ आर ञ्चन्दी तकके अपमान जेका कऽ देबाके अपन मैञ्चिल पेम बुञ्झ लैत छञ्चि, ई नकारात्मक पवृञ्च उञ्चत नञ्ज। हम तँ तेहन समयके सहन कएने छी, जे ञ्चकछु परम् ञ्चदान् अत्यन्त आदरणीय लोक ञ्चखैत तँ मैञ्चिली नञ्ज तँ इंञ्चलश। ञ्चन्दी नञ्ज। ई बहुत ञ्चञ्चि लागए। आञ्चर ञ्चन्दी अपन बहुत गौरवशाली लोकतन्त राष्ट्र-भाषा ञ्चक। बनु! से मानञ्चकता बदञ्च जरर रहल अञ्छ मुदा अहा खाञ्चक (पीढीक) युवा नवतुञ्चआमे आओर तेजीसँ पञ्चवतनि चाही। बात नञ्ज रचए तँ ञ्चसञ्च जाएब, आगह!

मैथिलीक उवरि केमे कॉरपोरेट-जगत िप

एम्हर आब मैथिलीके ई अष म सूचीक मान्यता एकटा आओर नव वादक उपहार-दरभंगा-म िबनी-सहरसा वादक उपहार बिन रहलए। नव बाजारी पवृत्तिक ई पच्छन बीज-वपन आरम्भ भ' चुकल अछि। सावधान। जे वर्ग एखन नव पयोजन-सिद्धिक बाट पर चलि आ' चला रहलाह अछि, तनिकासँ संवाद होयबाक चाही। एखनहि-एही काल। अन्यथा मैथिलीक जतेक आ' जेहन हानि आइ धरि नहि भेल छलैक, ताहिसँ बहुत बेशी आ' खतरनाक नोकसान भ' जयतैक। देशमे पचलित तुच्छतावादी पवृत्तिक प्रति रखबारी कर' पडत। पूरवागह मुक्त मन-पाणसँ। अपना-अपी क' क' सुतारबाक, हथिययबाक अवसरवादी पवृत्तिसँ बाज अबै जाथि।

मैथिलीक विषयके समगतामे -देखि-बूझि क'- जानिमे सम्पूर्ण मिथिला, मैथिल आ' मैथिली अछि। छुछे दरभंगा-सहरसा-म िबनी ए टा नहि। आ' ने छुच्छे सोति-बाह ण-बाहणेतर मैथिली भाषा-संस्कृति। तहिना साहित्य कि कि कविता कि उपन्यास कि नाटके टा नहि। ई सभटा समस्त मिथिलाचलक एक जातीय सास्कृतिक समगता तथा लोक गरिमाक, मानवीय गुणवता, जीवनमूल्यक दबाबमे करैत रचनाकर-विचारकक संघर्ष आ' आदर्शोन्मुख अभिव्यक्तिमे समस्त युग-यथार्थ बिनैत अछि।

ओना अपना-अपना पीढीक पति आगह-आवेश स्वाभाविक, ते सभ दिना यथार्थ मुदा वैह यदि कटरताक रूप ल' लिअय तँ सामाजिक जहर बनि जाइछ। दुःखद आ' चिन्ताक विषय तँ ई जे एहन पवृत्ति मैथिली भाषा आ' साहित्यमे सृजनरत अधिकाश नव्यतम

रचनाकारमे पयंत्ति देखाइ पड' लागलए। जखनकर लेखनसँ मैथिलीके बड-बड आशा छैक। से लोक सेहो।ई दुश्चिन्तोक विषय। एहन विभाजनकारी, विदेषोन्मुखी डेगके रोकबाक चेतना जगाउ। आरम्भेमे-एखने।

एहन वेगमे संस्कृ ामूल्य सभक क्य होयबामे समकालीन लोकक नकारात्मक पहल केर मुख्य भूमिका रहैत आयल छैक। आइ तँ आर। संस्कृ ा समेत साहित्यक आकलन-मूल्याकनसँ ल' साहित्य-सम्मान िनर्णक मानदण्ड-निकष-कसौटीक आवश्यकता आ' ईमानदारी पर पश उठि रहल अछि। संस्कृ ा मूल्य सभक करण आ' कििघरामे िढ कएल जयबाक घटना सभके, हल्लुक क' नहि, बहुत गंभीरता आ' जिम्मेदारीसँ स्वीकार करबाक एखनहि अछि- बेर छैक। नहि तँ पछताय लेल तँ साँसे भविष्य िएल अछि। एहि पश्चिमि ता एकर खतरनाक पवृत्ति पर लोकक ध्यान जयबाक चाही, जे कोना एन.आर.आइ. पकारक लोक सभ आइ एक-बएक अचानक मैथिलीक भाषा-सास्कृतिक आँगनके सेहो कब्जा क' रहल छथि। तेहन देशी एन.आर.आइ पकारक लोकके अवश्य चिन्हित कयल जयबाक चाही जे मिथिलाचल-मैथिली भाषा आ' लोकक पसँग कहियो किछु नहि कयलनि। कोनो योगदान नहि। परन्तु आइ मैथिलीक ओहू केकि अवसर आ' संस्कृ ाके अपने अ ीन क' लेबाक पबंिमे सक्रिय, लगातार सफल भ' रहल छथि। विडंबना तँ ई जे मैथिली-मिथिलाचलक विर ि एहि गतिविधिमे बहुत रास त ाकथित मैथिलीक उच्चकोटिक लेखक-समालोचक-कवि (छद पाण्डित्यशील रचनाकार समेत) सेहो कोनो आपत्ति वा विरो ि दजिनहि क' रहल छथि। बल्कि मैथिलीक एहि नवोदयक-सामाज्यवादक परोक सहयोगे

क' रहल छथि। सँभव जे भविष्यमे अपना लेल कोनो उत्पादक अवसरक वास्ते आवेश बुद्धिसँ, ई सभ क' रहल होथि, एकरे व्यावहारिक बाट मानि क' चुप बनल छथि। युवा पीढीक सेहो। के पडय एहि सभमे?

अदावधि प्राप्त इतिहासक जानकारीमे तत्काल यश-निक अभि-उताहुल , व्यग नव पीढी! ई पराभव बजार आ' भूमंडलीकरण (पाया!) मैथिलीाचलक एहि नव गवात आ' समाजशास्त्रिके की चीन्हओ? जा रहल लोक चीन्हओ कि आबि रहल लोक? ककर दायित्व।

हमरा जनैत अवसर आ' दूरगामी पभाव पर्यावरणके दृष्टि मे राखि क', छुच्छे बौद्धिकताक, बुद्धिजीविताक संकीर्णताक नहि, सबजन मैथिल अथात् जनसाधारणक मंगलके नजरि पर राखि, स्वच्छ हृदय, पारदर्शी व्यवहारवादक चलन अनै जाउ। यहि सत्ये मैथिली, मैथिलीासँ अनुराग हो। पारम्परिक मैथिल कूपमण्डूकताक चोडै जाइ जाउ। अंतता मैथिली अपना सभक एकटा टा नाओ अछि। सभ गोटय एही नाओमे सवार छी। पार उतरब तँ सभ क्यो। ते नाओमे भूर नहि हो। बीचहिमे डूबय ने कतहु। अन्हारोमे अनका टाटक भूर देखबाक आँखि आ' नेत बदल' पडतैक।(अन्हारोमे अनका टाटक भूर देखबाक सम्बन्ध पूर्वाग्रहीक कथ- पशान्तजीक मन पडैछ गेलय 'सद मैथिल छी') जे ओ' आकशवाणी पटनाक मैथिली कायक्रिम भारतीमे पसारित कयने रहथि)।

नकारात्मक-ध्वंसात्मक समझ आ' बुद्धिसँ परहेज करए जाइ जे क्यो से क' रह होइ। चन्द्रमा पर नव पभुवगकि फ्लॉट-रखसरी जेका सदा उपलब्धि मैथिलीक एहन ऐतिहासिक अवसरक उपयोग सोचै

जाउ-उपभोग नञ्ज। दरभंगा बनाम सहरसा बना क' मैथिलीक केंीय रथ्मसरी जुथ्म करबै जाउ। मनै छी, कञ्जयो छल हेतै ई मनवाद। मुदा से मैथिलीक थ्मतात दोसर दौर छलैक। से ध्यान रखबाक थ्मक।

ई(थ्ब)काल पाया सभ भाषा-साञ्जत्यक इञ्जहासमे अबैत रहलैए। साञ्जञ्जयक सरोकार समाजसँ रहैत छैक, तँ समाज जीवन-यापन समेत जीवन-शैली आ' जीवन मूल्यक थ्मञ्जथ्म आ' थ्मवहिन तत्कालीन सताक उपज होइत अञ्छ। ते जन साँरणे लोकटा नञ्ज, बुथ्मजीवी आ' नेतृवगँसेहो ताही दबाबमे अपन पाँथ्मकता तय क' क' अपन बाट बनबैत अञ्छ आ' सुभीता चह' लगैत अञ्छ। कालातरमे जल्दीये तकर अभ्यस्त भ' जाइत अञ्छ। मध्यम वगँ बेशी आ' जल्दी।

ई सुथ्मँवादी जीवन-शैली आ' जीवनदशँन जन्मैत छैक- कञ्जयो मँसिता, कञ्जयो राज-सता, कञ्जयो थ्मकलाग लोकतंं वा कञ्जयो अपथ्मपक्व लोक सताक थ्मचार-व्यवहारक संवेदनशील व्यवसँ शासनक अँीनतामे। बहुसंख्यक जनताक अञ्जाक्र दुआरे। तखन ओञ्ज समयक जे बुथ्मयार वगँ रहैत अञ्छ से सताक अनुगमन करबाक सुभीतगर थ्मष्कंटक बाट चुनैये। सुभीताके अपन जीवन-मूल्य बना लैत अञ्छ। जे बुथ्मयार नञ्ज अँत् जनसाँरण लोक, ताञ्ज पथ्मथ्मँञ्जाके अपन थ्मयञ्ज वा पारबँ माथ्म लैत अञ्छ। एना अथ्मला कएक पीढी थ्म एञ्जना ओँघडाइत चलैत चञ्ज जाइत छैक।

गुलामी खाली कोनो बाहरीये देश वा समाट-सामाज्येक टा नञ्ज होइत अञ्छ। गतानुगञ्जकता आ' यँथ्मँञ्जवादी मानञ्जकता आ'

युगक पगश्चा-गश्चाके नश्च बूझ्म, मूडी श्चाहुँरैने सभ श्चकछु स्वीकार आ' सहैत चश्च जाइक पवृश्चा सेहो गुलाश्चयेक श्चिक। सता तुष लोकक ताबेदारी सेहो नव भाग-गाजाक अभ्यास अित् गुलाश्चये होइत अश्च। से ई सभ पकारक गुलामी बहुत युग िश्च चलैत रश्च जाइत छैक- अश्चाला कोनो सामाश्चक पश्चवतन- कोनो महाकाश्चा अयबा िश्च। एखन िश्चक इश्चाहासक श्चाक तँ यैह कहैत अश्च। उवरि केिक आश्चषकारक बाद बजार ओकरा हश्चियबैत छैक। तेहन लोक से क' नश्च गुजरय। श्चाजी समाश्चा ने बना श्चअय। एकर रश्चसरी-केबाला ने करबा ने करबा श्चअय। मैश्चिलीके मसोमातक जमीन जेका अपना-अपना नामे श्चखबाक श्चोतमे लागल तेहन लोक से क' नश्च श्चअय।

एश्च पश्चकयामे माश्चकयो घुसपैश्चियो सभक गश्चाश्चश्च अचानक तेज भ' जाइत छैक। कहबाक प्योजन नश्च जे मैश्चिली एखन सैह उवरि केि बनल अश्च। मैश्चिली माश्चकयाक कॉरपोरेट सेक्टर जोशमे अश्च। गश्चाश्चश्च तेज केने अश्च।

मैश्चिलीक श्चषयके समगतामे -देश्च-बूझ्म क'- जाश्चमे सम्पूणि श्चश्चिला, मैश्चिल आ' मैश्चिली अश्च। छुच्छे दरभंगा-सहरसा-मिबनी-एटा नश्च। आ' ने छुच्छे सोश्चा-बाहण-बाहणेतर मैश्चिली भाषा, संस्कृश्चा। तश्चना साश्चत्य कि श्च कश्चता श्च उपन्यास श्च नाटके नश्च। ई सभटा समस्त श्चश्चिलाचलक एक जातीय सास्कृश्चाक समगता ति लोक गश्चमा, मानवीय गुणवता, जीवनमूल्यक दबाबमे करैत रचनाकार-श्चचारकक संघषि आ' तकरे आदशोन्मुख अश्चाक्यश्चतमे युग-यिि बनैत अश्च। सदा उपलबि मैश्चिलीक एहन ऐश्चाहाश्चक अवसरक उपयोग सोचै जाइ- उपभोग

नञि। दरभंगा बनाम सहरसा बना क' मैथिलीक रथ्यासरी-बन्दोबस्त नञि करबै जाइ जाय।

किछु एहनो बात विषय

यदिप एहि बात 'सगर राति दीप जरय' पर हम विभाितता पभासजीसँ सहमत निह रहलौं, परन्तु एम्हर पिछला दशकमे ई मासाही-कथा गोष्ठी- 'सगर राति दीप जरय'- आजुक मैथिली कथा-िवधामे की योगदान कएलक अिछ, से तथ्य आब इितहासमे दर्ज अिछ। ई बात सही छैक जे एहन कोनो कायर्कोनो एक गोटेक निह होइछ। मुदा सभ वतर्मानके ओिह एक संस्थापना-कल्पक व्यिक्त-लेखकके अवसरोिचत रूपे कृतज्ञतासँ स्मरण अवश्य कयल जयबाक चाही। से लेखकीय नैितकता थीक। आ' हमरा जनतबे, से रहिथ- स्व. पभास कुमार चौधरी।

हमरा तखन दुखद िनराशा भेल जखन एिह बेरक मैथिली सािहत्य अकादेमी पुरस्कार पओिनहार पदीप िबहारीजी सािहत्य अकादेमी-सभागारमे लेखक-सिम्मलन-अवसर पर अपना वक्तव्यमे सगर राित दीप्प जरयक उपलिब्धिक चचार् तँ कएलिन्ह, मुदा स्व. पभास जीक नामोल्लेखो निह कयलिथ्खन। एकरा हम साधारण घटना निह मािन सकैत छी। गंभीर बात बुझैत छी। कारण हमरा लोकिन रचनाकार छी। औसत कोिटक कोनो राजनीितक निह। संभव हो नाम अनाविधानतामे छूिट गेल होिन। मुदा हमरा सभ लेखक छी ते एहन असावधानी करबा लेल स्वाधीन निह छी। यदिप अपन खेद हम हुनका पकट कयलिथन्।

हमरा लगैये जे अपन-अपन सकारात्मक इितहासक पित सभ पीढीक मनमे कृतज्ञताक भाव अंततः लेखकक ऊजार् आ' पेरणे बनैत रहैत छैक। बतौर कथा हम मैथिलीमे जािह काल-िबन्दु पर

ाढ छी, तकर जश्छ श्यदापश्नासँ ल' सुमन-श्करण-म्ुप- आ यािएमे। ई सोश्च क' मन कृतज होइत अश्छ! बश्नक गौराश्यत। ओना, एकटा लेखक रपमे हम एश्नमे सँ क्यो नश्ह छी। जेना सभ, सभक कारश्यािी पसािन छश्थ, तश्हना हमहुँ नागाजुन-यािीक कारयािी पसािन छी। आ' ई भाव हमरा रचनाकमिम अगसर करबाक उतरदाश्यत्व द' गेलय।

तपणि श्याल-कुश अंजश्ल बला कमकािणडके तँ हम नश्ह मानैत छी, मुदा पुरखाक तपणि हमरा श्यय अश्छ। अपना शैलीमे। अपन जीवन-मूल्यक एकटा अश्नान तत्त्व बुझाइत अश्छ।

तकर बाट की हो? अवसर पर कृतज स्मृश्त! अवसर पर- श्याश्थ पर नश्ह।

गोबरक मूल्य

भागलपुर मे एकटा उनटा पुल कहबैत छैक। उनटा पुलसँ दक्षिण मुँह जे सडक जाइत छैक, तकरा बौसी रोड कहल जाइत छैक। बौसी रोड पर कएक टा बस्तीमोहल्ला लगेलग पडैत छैक। बहुत रास दोकान आ लोकक, रकबस, टमटम, रिक्शा सभक खूब घन आवाजाही। सुखायल मौसम मे भरि दिन धूरा आ भदवारि मे भरि दिन पानिकादो। शहरी नाला सभक कारी गंदगीसँ सडक भरलपूरल। कैक समय तं पयरे आयबजायब कठिन।
मुदा सडक छैक पीच। मोजाहिदपुर अबरजान हाट चौक, हबीबपुर आ हुसैनाबाद तक अलीगंज। कैक जाति आ पेशाक लोक। काठ गोदामसँ लऽ कऽ तसरक उदोगी धरि आ जानवरक गांड़ि तोडैत हडडीक टालसँ लऽ कऽ हथियार टटका तरकारी सभक हाट धरि। तहिना रिक्शक रिक्शक घोडासँ लऽ कऽ बडदोसँ बतर लिलासँ छातीतोड शम करैत घामेपसेने तर माल उघैत मजूर सेहो। बच्चा, स्त्रीयान सभक भीड भेटत। कतहु दोकानमे लागल फलकल कोबीक छता जका कतहु अलकतराक उनटल पीपा जका। ई दृश्य थिक सडकक दुनू कातक उनटा पुलसँ ता अलीगंज।
अलीगंजसँ थोडेकछुए आगासँ सडक खूब पकिसि छैक। थाकन कारी। तेहन जे कैक टा पथवार ओकरापर मकैगहूम पयन्ति पारि दऽ कऽ सुखबैत भेटत।
ओही इलाकाक एकटा घटना थिक। आने बीच सडक परक अलीगंज बस्ती जत खतम होइत छैक ताही ठामि सडकक कातमे एकटा आर कल छैक जे हरदम अबन्ड छौंडा जका छुरछुरबैत

रहैत छैक। यद्यपि भागलपुर मे पीबाक पानिक कष्ट बड सामान्य बात अछि, मुदा एत पानिक उदारता देखबाक से समस्या अखबारी पफूलि बनि जाइत छैक। खैर, ताहू दिन खूब तेजीसँ पानि छुरछुरा रहल छलैक। कियो भरिआहार नहि रहैक। खूब रौद रहैक। चापाकल खापरि जकां तबैत। तेहन सन जे चापाकल पर यदि बेसनक रोटी ि देल जाइक तँ पाकि जयतैक।

एहना मौसम मे कलसँ सटले दस गोटे बीस गोटे अपन चापाकल तबबैत यदि घोघिमामि करैत िढ हो तँ ध्यान जायब स्वाभाविके। हमहूँ अपनाके ुँ रौद, लू आ उमसमे उलबैत पकबैत ओम्हर द क ल जाइत रही। एकटा उपयुक्त कारण बुझायल सुस्तयबाक। भने किछु लोक

घोघाउज क रहल छलैक। लगमे कलसँ ओतेक पवाह सँ जल झहरि रहल छलैक से एकटा मनोवैज्ञानिक शीतलता पसारि रहल छलैक मने।

जखन ओम्हर गोल लग पहुँचलहुँ तँ ईहो देखबा योग्य भेल जे ओम्हर घोघाउजमे मण्डलीसँ आगा एक टा श्वानी बस िढ छैक। सन्देह नहि रहल जे कोनो दुघटिना सँ फराक किछु बात नहि छैक। एहन दुघटिना मे सडकपर ककरो मृत्यु सामान्य बात थीक। डेग अनेरे किछु झटकि गेल। लग पहुँचलहुँ आ ओम्हर घरेलू घोघाउजक कन्हापरसँ हुलकि क देखलहुँ तँ बीचमे दू पथिया गोबर हेरायल बीच सडकपर। एक टा छौंडा हुकुरहुकुर करैत...। घोघाउज खूब जोरसँ चलि रहल छल। ओही लोकक गोलमे एक कात करीब १०१२ बर्षक दू ि छौडी आदंके चुप्प िछ आ कनैत... खरफकी पहिरने खूजल देह, छोटछीटा सन केश...। ओहीमे सँ एक टा छौडीक

जमडी लागल अगुंश्र मे पफाटल पैट, ताश्रपर टटका गोबर लेभरल। दुनू छौँडीक गालपर हाि मे, सौँसे देहपर गोबर लागल आ दुघटिनागस्त छौँडाक छातीपर गोबर लागल । दू टा नाश्रह टा हाि क छाप यदश्र ओश्र कडा रौदमे सुखा गेल रहैक, मुदा स्पष रहैक।

आदंकमे पडश्र दुनू छौँडी, अंदाज करैत छी, गोबरश्रछनी छैक। बाटघाट जाइत अबैत गायमहीसक गोबर जमा अश्र, भश्र श्रन तकर गोइि िपैत अश्र, माय वा पश्रवारक क्यो लोक तकरा सुखबैत अश्र आ बडका पश्रियामे सजाक शहर जाक बेचैत अश्र । जीश्रकाक एक साध यैह गोइिक आमदनी। गोइि जाश्रसँ बनय से गोबर आबय कतसँ एश्रना अश्रश्रित। कश्रयो एको पश्रिया कश्रयो श्रकछु ने। तुँ एश्र सडकपर गोइि श्रछनी छौँडी सभक आपस मे होइत झोटाझोटीक दृश्य बड आम घटना रहैत छैक। आ ओकरा मायबाप के गाश्रसराप देलक, ओ ओकरा माय बश्रनके ुँ घोडासँ श्रयाह करौलक... एकश्र श्रन पश्रने दूटा छौँडी बीच सडकपर तेना पटकमपटकी करैत रहय आ एक दोसराक झोटाके ुँ तेना नोश्र रहल छल जे दया आ कोि् दुनू आबय मनमे, मुदा समाि न की। गोबर जकर जीश्रका छैक ताश्र परक आफत तँ िके नै सहल हेतैक ओकरा ताहूमे एक श्रन हम एकटा छौँडी के ुँ पुछने रश्रऐकतोरा श्रनी केहने एना झगडा करै छे ुँ, जरी टा गोबर के वास्ते?’

जरी टा छलै? एतना छलै, हम्मे जमा करी क रखश्रऐ आर ई रश्रया मोटकीि्मी ने अपने श्रटामे धी लेलक। आय हमरा केतना मारतै माय ? माय तँ इहे ने कहतै जे हम्मे गोबर नश्र बीछय

छश्वायै, कही श्वन भर खेली रहल छश्वायै? की खयतै लोगे?'

हमर पश हमरे खूब भारी चमेटा जका बुझायल, हम चोटश्व ससश्व गेल रही।

मुदा ओश्व श्वनुका दृश्य बड भाश्वकि छलैक। आदंके ुँ चुपचाप दहोबहो कनैत दुनू छौँडी एक बेर चार कातक लोकके ुँ एक बेर शोश्वात बहैत बच्चाके ुँ देखैत िश्व रहैक।

की होलै भाइ जी?' हम एकटा सज्जनसँ पुछश्वायश्व।

अरे कश्वयुग छौ भाई जी। बताब जरी टा गोबर के वास्ते एकरा श्वनी मे आपसे मे झगडा होलै आर हौ छौ ुँडी एकर छोट भाइके ुँ धकेली देलकै श्वनी बसके आगूमे। देखै नै छहौ जे घडी मे दम टुटल छै छौँडाके आहा...

जरी टा गोबर छलै उफ? माय श्वकश्वया खा के कही तँ लछश्वश्वयाके ुँ जे हमर एक चोत गोबड छलय श्वक नै ?' अचानक जेना खूब साहस करैत आदंश्वकत एक टा छौडी कश्वाते बाजश्व

हमरा अकस्मात लोकसभपर खासक ओही भाइ साहेबपर को्उलि।

श्वश्वा बात तोरा की नश्व देखाइ रहल छ जे ई बुतर मश्व रहल दै आ अस्पताल पहुँचाबै के श्वफश्वकर नै करीक दबश्वक बनल खाड छ श्वकार।'

सभ जेना हमरेपर गुम्हर लागल।

आब की ई बच पाडतै? की फयदा लय गेलासँ।'

तैयो लै जायमे की हजा? भाइसाहेब िके तँ कही रहल छै हौ।' एक गोटे अपन श्वचार देलकैक।

मुदा तकर कोनो पयोजन नश्व भेलैक। घोलफचका मश्वते रहलैक,

ओ दुनू गोबरबिछनी छौडी आदंके ि‍श्कार भए रहल छल लोकसँ घेराएल छल। बीच बाटपर ओकर घायल नेनाक पाण छुटि गेलैक। एक चुरफक पाबि आयो ने देलकै क्यो।
एहि संदर्भमे एकटा लेखकक टिप्पणी पस्ताव करैत छी जे ई दृश्य छल एकटा नहि, कैकटा गोबर पर आश्रित जनहार परिवारक बच्चाक संघर्षक। एक बच्चा ककरो एक चोत गोबर चोरा लेलकै तँ तामसमे ओ चौरौहारक छोट भाइके ँ सडकपर धक्का द देलकै आ मिनीबस ओकरा पीचि देलकै। पीचपर शोणित आ गोबर बराबरि दामक भेल जे रौदमे सुखाइत रहलैक।
बौसी रोडक ई दृश्य जे देखने होयता सैह बुझने होयता एतबे कहब।
हमरा तँ ईहो नहि बुझल अछि जे मुइल छौडाक मायोबाप छलैक कि नहि? छलैको तँ ओकरा कखन खबरि भेल होयतैक जे ओकर बेटा मिनीबसमे पिचा क मरि गेलैक। वा मिनीबसक डाइवर कोन ि‍नामे जाक कहने होयतैक जे हम एकटा गरीब छौडाके ँ खून क क आबि रहल छी?
हमरा तँ नहि बूझल अछि ओहि दुनू छौडीयो क, मुदा ओहि घटनाक बादसँ मनमे एहि बातक अंदेशा अवश्य होइत रहैत अछि जे कतहु दुनू छौडी पफेर ने एहि बौसी रोडपर गोबर बीछैत भेटि जाय... कतहु पफेर ने भेटि जाय।.....
आ, सत्य पूछी तँ आब हमरा सभटा गोबर बिछनी एके रंग लगैत अछि।

उदय नारायण श्चांह 'नश्चकेता', जन्म-1951कलकता (पश्चिम बंगाल)

श्चाका- बी. ए. (सम्मान) भाषाश्वजान (पमि ईशान स्कॉलर) कलकता श्चशश्चदालय, कलकता

एम.ए. भाषाश्वजान, पी-एचडी. भाषाश्वजान, श्चल्ली श्चशश्चदालय, श्चल्ली

रचना संसार- मैश्चिली साश्चत्य मध्य छद नाम 'नश्चतकेता'क नामे, मैश्चिली आ बंगला साश्चत्यक कश्च आ नाटककारक रपमे पख्यात शी श्चांह एखन श्चि चाश्च कश्चता संगह, एगारह गोट नाटक (मैश्चिलीमे), छओ साश्चश्यक श्चबं आ दू टा कश्चता संगह (बाग्लामे), एकर अश्चाश्चक्त एश्च दुनू भाषामे आ अंगेजीमे कतोक पुस्तकक अनुवाद क' चुकल छश्चि।

आन साश्चश्यक गश्चाश्चश्च- पो. श्चांह बागलादेश, करश्चयन आयलैड, फास, जमनी, इटली, नेपाल, पाश्चकस्तान, रस, श्चांगापुर, स्वीडन, ायिलैड आर अमेश्चकामे श्चश्चि श्चषय पर अपन व्याख्यान देने छश्चि।

इंडो-इटैश्चयन कल्चरल एक्सचेज फॉर श्चकएश्चव रायटसकि सदस्य(1999), श्चिश्चादाद आर टॉबेगो मे कायालयी पश्चाश्चिक सदस्य (2002), आ मॉरीशस (2005), फैकफटि पुस्तक मेलामे आमंश्चित कश्च, जतय 'इंश्चया गेस्ट ऑफ ऑनर' सँ सम्माश्चत भेलाह (2006), हालश्चमे चीन मे संपन एगारह लेखकक

सास्कृत्ाक पक्षाआर्थक पमुखक र पमे भाग नेने छलाह।
कायर्क्रि- महाराजा श्यायाजी राव श्शश्यदालय,बडौदा,(1979-81), दक्ष्णी गुजरात श्शश्यदालय (1981-85), श्ल्ली श्शश्यदालय,श्ल्ली (1985-87), हैदराबाद श्शश्यदालय, हैदराबाद,(1987-2000) मे भाषाश्यजानक पोफेसर, ओ अक्षा्थ पोफेसरक र पमे इंश्डयन इन्स्टीच्यूट ऑफ एडवास स्टडी, श्यामला (1989) मे काज करैत वतमीनमे केन्द्रीय भारतीय भाषा संसिान, मैसूर मे श्यादेशकक पद पर आसीन छथि।

नो एण्री: मा पश्यश!

(मैथिली साश्त्यक सुपश्यि पयोगमिी नाटककार शी नश्यकेताजीक टटका नाटक, जे श्यगत 25 वषक्रि मौनभंगक पित् पाकिक सम्मुख पस्तुत भ' रहल अश्छ, श्यदेह मे।)

स्वगि अिात् 'बश्शत' ति नरक माने दोजख–ई दुनू कतय छैक ? तकर कल्पना आ ताश्हि लेल उत्सुकता कतेको भावुक मोनके सब श्दन सँ श्यान्तागस्त कएलक अश्छ। चाश्र दशक पश्हने 'जीन-पाल साि' क एकटा नाटक पढने छलहुँ, जतय तीन टा पाि स्वगिकेहन होइत अश्छ ? तकरश्ह चचा करैत कतेको अंक के भश्र देने छल-- 'नो एण्री: मा पश्यश!' केर रचनाकम मे भश्यसक अवचेतन मोनमे ई बात अवश्य घूश्म रहल छल । सैमूअल बेकेटक 'वेश्टंग फॉर गॉडोट' केर पभाव सेहो पडल छल, जतय ईशरक अिवा कोनो पाप्य वस्तुक हेतु कतेको गोटेक अंतहीन पतीक्षा नाटयकृश्ाक इश्ाहासमे अश्मट छाप छोडने छल। संगश्ह संग आिि

शिलर केर ‘अ स्ट्रेचर नेम्ड डिजाइर’ तथा एडबर्ड अल्बी केर ‘बॉक्स’–इहो दुनू नाटक सँ हम अत्यंत उत्प्रेरित भेल छलहुँ।
कलकत्तामे नाटक मंचन देखैत नेनपन बीतल–संगहि अल्प वयस सँ मिथिला संघ तथा मैथिली रंगमंच–दनू संस्था दारा मंचित नाटक सभमे अभिनय करबाक अवसर, हमरा नाटयकर्मी बनबाक प्रवृत्त कएलक। ताहिपर बादल सरकारक ‘एबाग इन्द्रजीत’ आ बरटॉल्ट बीच केर ‘थी पेनीस’ ऑपेरा–जकरा बंगलामे नाम देल गेल छल ‘तीन पयसार पाला’ सन उत्कृष्ट पस्तुति देखि कए मोनमे अवश्य ई इच्छा जागल छल जे कहियहुँ जखन मिथिलाक दर्शकिके बाढ़ि आ सूखार सँ चैन भेटतैक आ ओ सब नाटय-पेमी ‘एबसरैक्ट’ नाटकक रसास्वादन करबाक क्षमता के प्राप्त क’ लेताह, अथवा जहिया मैथिलीक सांस्कृतिक जगत मे ‘ऑपेरा’ खेलाबय बला उच्च मानक रंगकमी सेहो आबि जेताह, तखनहि भविसक एहि तरहक उच्च मानक नाटकक रचना आ मंचनक संग अपना के जोड़ि सकब। तावत अगज नाटय निर्देशक शीकान्त मंडलजीक फरमाइश के मानैत एक वा दू टा नारी पात्र बला नाटक कम जटिल नाटक लिखैत रही।
2008 सँ अबैत-अबैत ई लागल, जे आब जखन एतेक संख्यामे नीक-नीक मैथिल अभिनेता-अभिनेत्री लोकनि नेशनल स्कूल ऑफ डामा (एनएसडी) तथा अन्यान्य संस्था सँ पशिक्षण पाप्त कए मंच पर अपन कलाक पदर्शन क’ रहल छथि, एतबे नहि मैथिलीमे टेलिवीजन धारावाहिक ‘नैन ने तिरपित भेल’ केर निर्माण, निर्देशन आ पदर्शन (हमरहि नाटक ‘पत्यावर्तन’ पर आधारित) आरंभ भ’ गेल अछि, आर तँ आर जखन मैथिली मे ई-जर्नल सेहो आबि गेल छैक

(जाहिमे हमर ई नाटक ि रावाहिक रूपे पकाशित भेल– www.videha.co.in केर आकाइव देख सकैत अछि), तखन बुझि पडल जे आब एहि तरहक विषयक रूप-संकल्पना तथा एहन समायोजन केर संग अपनाके जोडि सकब। गत वर्षक अंतमे डेढ हजार वर्ष पुरान एकटा चीनी ऑपेरा ‘शियान’ जकर उच्चारण ‘शायान’ होयत, केर पुनर्मंचन देखल छलहुँ सेहो भीतरे भीतर काज क’ रहल छल–एहि सभ पत्यक्ष आ परोक्ष पभाव आ पेरणाक परिणामस्वरूप ‘नो एण्ट्री: मा पविश!’ केर जन्म भेल।
मुदा मैथिलीक लेल ई कोनो नव बात नहि छल। हम सब अपन पौराणिक नाटय-गौरव के बिसरि गेल छी तैं । जँ नाच-नौटंकी के छोडियहु देल जाय, मैथिलीमे छओ सात सय वर्ष पूर्वहि सँ अनेको नाटकक रचना भ’ रहल छल जतय गीत-नाद आ नृत्य-नाटयक समायोजनक पमाण भेटैत रहल अछि। ई मोन राखहि पडत, अंगेजीमे जखन चौसर साहित्य-सर्जनक जगत केर एकटा उज्ज्वल नक्षत्र छलाह, आ नव-नव पतिमानक स्थापना क’ रहल छलाह, तखनहि ‘वर्णन रत्नाकर’क लेल परख्यात ज्योतिरीश्वर ठाकुरक वर्णन मे हम सब ई देखैत छी जे ओहि युगमे जखन मैथिली मे लिखल नाटक सब अभिनीत होइत छल, तँ ताहिमे गीत-वादक पवीण अबैत छलाह कर्णाट देशसँ, ओ कुशल नृत्यागना आ नट अबैत छलाह तेलंगाना देशसँ। ताहि युगमे मैथिली नाटकक यश अखिल-भारतीय स्तर धरि पचारित भ’ गेल छल। मुदा बीसम शताब्दी अबैत-अबैत हम सब स्तरीय नाटकक रचना आ मंचनक पयोगशीलतामे पछुआ गेल छी (कारण चाहे जे रहल हो)। तैं एहि नाटकक माध्यमसँ पयास कएल गेल अछि जे एकर कनिक एहन हो जाहिसँ मैथिले

नश्च, अर्थातु समग भारतक पाकि, अभनेता ओ दशकिके ओ आकर्षति क' सकय। सब ामिक लोक 'नो एण्ट्री' मे एण्ट्री क' सकैत छथि। आब देखा चाही, कोना आ कश्चया शि ई नाटक अन्यान्य भाषा-संस्कृश्चाक मंच पर सेहो पवेश क' सकत आ समादृत हैत–ीक जेना हमर श्रविर श्ररीश कनाडकिर हयवदन आर नाग-मंडल, आ अगजपश्चाम नाटयकार श्रजय तेदुलकर क शातता कोटि चालू आहे वा घासीराम कोतवाल के कनड आ मरााी श्रशक बाहरो भेटल छलश्चह। अश्विकाश मैश्विली नाटक पातीयता आ सानीयताक (यदश्य तकरो आवश्यकता होइत छैक) पश्चश्चिमे सीश्चात अछ्छ, जे हमर सभक नाटयकमाके हमरे सब शि सीश्चात राश्चव देलक अछ्छ। एमहर जखन हमर मैश्विली काव्य संकलन–मध्यमपुरष एकवचन, (वाणी पकाशन, श्रदल्ली,2006) केर अनुवाद, तश्चल भाषा मे छश्य कए ('मुनीलइ ओर मइ' अश्वयाल, चेनई, 2008) समादृत भेल तखनश्च हमर इहो श्रशास सुदृढ भ' गेल जे भश्वसक आब हमरा सभक नाटको के आन ामि पहुँचबाक चाही।

अंतता जँ सुाी पाकि, रंगकमी आ दशकि वृन्दके ई नाटक श्वकछु सोचय लेल आ मंचन करबा लेल उत्पेश्वत क' सकय, जँ कतहू ई नाटक अपने सभक अंतासलिके छूश्च जाय तँ हम अपनाके कृतकृत्य बूझब।

नो एंटी : मा प्रविश
(चारि अंकीय मैथिली नाटक)

मैथिली साहित्यक सुप्रसिद्ध प्रयोगधर्मी नाटककार श्री नचिकेताजीक टटका नाटक, जे विगत 25 वर्षक मौनभंगक पश्चात् पाठकक सम्मुख प्रस्तुत भ' रहल अछि। सर्वप्रथम विदेहमे एकरा धारावाहिक रूपे ई-प्रकाशित कएल जा रहल अछि।

पात्र परिचय

पर्दा उठलाक बाद

ढोल पिपही, बाजा गाजा बजौनिहार सभ

दूटा चोर, जाहि मे सँ एक गोटे पॉकेट मार आ

एकटा उचक्का

दू गोट भद्र व्यक्ति

प्रेमी

प्रेमिका

बाजार सँ घुरैत प्रौढ़ व्यक्ति

बीमा कंपनीक एजेंट

दिदी किनैबला बेचैबला

भीख-मंगनी

मिणी-मोहन

नंदी भृंगी

कैकटा मत सैनिक

बाद मे

नेता आ नेताक दूटा चमचा/कतेको अनुयायी

मिन-पंडित युग्म

अवनेता

यम

चित्रगुप्त

उच्च शिक्षीय महिला

अप्सरा/नृत्यांगना-लोकनि

पमि कल्लोल

पिम कल्लोल

[एकटा बडका टा दबिज्जा मंचक बीच मे देखल जाइि। दबिज्जाक दुनू क्दक्स एकटा अदश्य मुदा सकत देीि िक, जे बुर्व लेबाक अर्व कखनहु अवमनेता लोकक्सक अवमनय कुशलता सँ ति कतेको िितालाप सँ से स्पष भ' जाइि। मंच पकि पकाश व्यासिि सँ ई पता नव्ह चलैत अर्व जे क्दन वक अिि िक्त, आलोक कनेक मक्दम, सुि संगत होइत सेहो कने मवयिल सन।

एकटा कतािि मे दस बाहि गोटे ठाढ िवि जाव्ह मे कैकटा चोि उचका, एक-दू गोटे भद व्यक्सत मुदा ई स्पष जे हुनका लोकक्सक क्सधन भ' चुकल िव्ह। एकटा पेमी युगल जे वरि-पान क' कए आत्म-हत्या कैल अर्व, मुदा एत' सिगष्क (चाही त' नकिक सेहो कव्ह सकै िि) दाि लग आक्स कए कने वहिल भ' गेल िवि जे आब की कैल जाइक। एकटा पौढ व्यक्ततत जे बजाकि िि ल' कए आक्स गेल िवि बुिाइि कोनो पि दुघष्टनाक क्शकाि भेल िवि बाजाि सँ घुिति काल। एकटा बीमा कंपनीक एजेट सेहो िवि, कक्ि पिशानी िक्त सेहो स्पष। एकटा िदीबला जे िदी कागजक खिदि क्सकी कििति िलि, एकटा वमख-मंगनी एकटा पुतलाके अपन बौआ (भवसिक ई कहै चाहैत िलि जे िहि िलि ओकि मुइल बालक अिि तकि पक्सर प) जका काख ति नेने, आ एक गोट अत्यंत बूढ व्यक्सत सेहो िवि, जक्सक िमिणी पीक्स एखनहु कम नव्ह भेल िक्स, हुनका हमसब िमिणी मोहने कहबक्स।

सब गोटे कताि मे त' िवि, मुदा धीिजक अभाि स्पष भ' जाइि। तयो-तयो दोसाि-दोसि लोग के लाक्ष कए आगा जैबाक पयास कि‍ति िवि, त' तयो से देख्न कए शोि कयि लागैत िवि। मात तीन चािवटा मत सैक्सक जे क्ष सब सँ पाि ठाढ िवि, हुनका सबमे ने कोनो विकिक्स लखा दैि आ ने कोनो हडबडी।]

बजाि-बला िद : हे हे हे देखै जाउ... देख्न िहल िी की नक्ष सबटा
तमाशा....कोना कोना क' िहल िइ ई सब! की ? त' कनीटा त' आगा बढ्ढ जाई !
[एकटा चोि आ एकटा उचका के देखा कए बाव्ज िहल िलाह जे सब ओना त' चािवमि ताि पाचम सिन पि ठाढ िैक, मुदा कतेको काल सँ अिक पयास क' िहल अवि जे कोना दुनू भद व्यक्तत आ पेमी पेमिका युगलके पाि क' कए कताकि आगा पहुँक्ष जाई!]

बीमा एजेट : *[नक्ष बूवि पबैत िवि जे ओ िद व्यक्तत हुनके सँ काि कक्ष िहल िवि क्क आन ककहिु सँ। बजाि-बला िद सँ आगा िल िद्दी बेचैबला आ तकहिु सँ आगा िलाह बीमा बाबू।]* हमाि काि कहलहुँ ?

बाजाि : अहा ओम्हि देखब त' बूर्वि जायब हम की कव्ह हिल ि आ ककि दय...! *[अकस्मात् अत्यंत कोधक आिश मे आक्व]* हे ि! की बुि ही...तयो नव्ह देव्ख हिल ि ? *[बीमा बाबू के बजाकि िि म्हिबैत -]* हे ई धर त'! हम देखै ि। *[कहैत शोि कति आगा बव्ढ कए एकटा चोि आ उचका के कॉलि पकव्ड कए घसीटैत पाि पुनः चार्वमि-पाचम सिन पि ल' अबैत िर्व, ओसब िद पक्ताि कि लगैत अर्व -]*

चोि : हमि कॉलि क्कयै धर्ि ि ?

उचका : हे बूढौ ! हमि कमीज, फाव्ड देबै की ?

बाजाि : कमीजे क्कयैक ? तोहि आँव्ख सेहो देबौ हम फोव्ड ! की बूि ि ? तयो क्कि कहै बाला नव्ह ि एत'?

उचका : के ि हमि टोकै बला एत'? देखा त' क्दय' ?

बाजाि : (डपटैत) हे, पकड त' एकि टीक!

चोि : आव्ह ि बा ! हम की कैल जे हमि टीक धैने ि?

दोसि चोि : *(जे क्क असल मे पॉक्कट मािि ल)* हे हे, टीक िव्ड दी, नंगडी पकव्ड क्लयह सबिा क' !

चोि : *(गोस्सा सँ)* तो चुप िह ! बदमाश नक्ष्तन !

पॉक्कट-माि : *(अकक्ड कए)* क्कयै ? हम क्कयै नक्ह बाजब ?

उचका : *(िदि व्यक्कतक हाि सँ अपना के िडबैत)*
ओय खुदाि ! बेसी बडबडैले त'... *(हाि सँ इशाि कि'त अवि गाि काक्ट देबाक)*

पॉक्कट-माि : त' की किबे ?

उचका : *(भयंकि मुदामे आगा बढैत)* त' देब धड सँ गाि के अलगाय... िमिपुिा देखने िह ? िमिपुिा *? (कहैत एकटा चाकू बहाि कि'त अवि अंगा ति सँ।)*

चोि : हे, की क' िहल िाि... भाइजी, िक्ड क्दयौक ने !
बच्चा िै... कखनहु कखनहु जोश मे आक्ब जाइ िै !

भद व्यक्कत 1 : *(पंक्कतक आगा सँ)* हँ, हँ... िक्ड ने देल जाय !

उचका : *[भयंकि मुदा आ नाटकीयता के बकिािि खैत पंक्कतक आगा क्दक्स जा कए... अपन िमिपुिा चाकू के दोसि हाि मे उस्ताि जका घसैत]* िक्ड क्दयह की मजा चखा देल जाय ? *[एहन भाि भंवामा*

देक्ख दुनू भद क्यक्तत डरि वि___
पेमी युगल अपनक्मे मगन वि; हुनका दुनू के दुक्तयाक आि कक्ा सँ कोनो लेन-देन नक्ह...] की ?
[घुवि कए पॉक्कट मािक्दक्स अबैत...
तािि ई सब देक्ख बाजाि िदक होश उक्ड जाइत क्ि... ओ चोकि टीक/ कॉलि जे कही... िक्ड दैत वि घबडा कए] की ि ? क्दयौ भोक्क ? आ क्क...?

चोि : उचकू भाइजी ! बच्चा ि... अपने क्कािदिक बुि...! *[आँक्ख सँ इशािि किि वि।]*

उचका : *[अटहास् कििि]* ऐं ? अपने क्कािदिक विकै ? *[हँसब बंद कए- पूििि]* की ि ? कोन काज किि ि?
[पॉक्कट-मािि डिि कक्ा बाक्ज नक्ह पबैत अवि___मात दाक्हना हािक दूटा आङ्ि के कैची जका चला कए देखबैत िक।]

उचका : पॉक्कट-मािि विके ि ? *[पुनः हँस' लागै वि िि के तह लगबैत']*

चोि : कहलहुँ नक्ह भाईजी ? ने ई हमिि सन माजल चोि बक्न सकल आ ने कक्हयो सपनहुँ मे सोक्च सकल जे अहा सन गुंडा

आ बदमाशो बक्क सकत !

उचका : बदमाश ? ककि कहले बदमाश ? आँय !

पॉक्कट-मारि : हमरि, हुजूर ! ओकरि बात जाय क्दयह ! गेल छलि वारिहिक घरि मे सेध देब'... जे आइ ने जाक्क कते टका-पैसा-गहना भेटत ! त' पक्हले बेवि मे जावा गेल वारिहि, आ तकरि चारिवि चारिवि टा जनि-जहान बालक आ सँगक्ह आठ आठटा कुकुरि... तेहन ने हल्ला मचा देलक जे पकव्ड कए पीटैत पीटैत एत' पठा देलक ! *(हँसैत... उचका सेहो हँक्स दैत अछि)* आब बुझि ! ई केहन चोरि विक !
(मुँह दूसैत) हमरि कहैत छवि !
[कताकि आनो-आन लोक आ अंततः सब गोटे हँसय लागैत छवि]

भद-व्यक्कतत 1 : आँय, यौ, चोरि विकौ ? लागै त' नक्ह छी चोरि जका...

चोरि : कक्एक ? चोरि देख' मे केहन होइत छैक ?

पॉक्कट-मारि : हमरि जका...! *(कहैत, हँसैत अछि, आरि एक-दू गोटे हँक्स दैत छवि।)* चललाह क्मखारि बौआ बन'... ? की ? त' हम तस्कक्र-रिजि छी ! *[कतहु सँ एकटा टूल*

आक्त ताक्ह पि ठाढ होइत... मंचक आन क्दक्ससँ भारणक भंवामा मे] सुनू, सुनू, सुनू भाई भवानी! सुनू सब गोटे! शीमान्, शील 108

शी शी बुक्द-शंकि महाजि तस्कि समाट आक्ब हिल र्वि! साधिान, होक्शयाि! *[एतबा कहैत टूल पि सँ उतर्वि अपन हाि-मुँहक मूकाक्भनयसँ एहन भंवामा कति र्वि जेना क्क भोपू बजा हिल होर्वि... पाि सँ भोपू क्वापहीक शब्द कक्ये काल सुनल जाइि, जाबत ओ 'माचष कति चोि लग अबैत अर्वि...]*

चोि : *[कनेक लजबैत]* नक्ह तोिि हम साि क्लतहुँ ओक्ह िक्तके, आ ने हमि क्वाटाइ देखबाक मौके तोिि भैटक्तहौक! *[कहैत आँक्ख मे एक-दूइ बुन पाक्न आक्ब जाइत िक।]*

पॉक्कट-माि : आ-हा-हा! एक्ह मे लजबैक आ मोन दुखैक कोन गप्प? *[ि म्हैत, लग आक्ब कए]* देखह! आई ने त' कार्वि-चोर्वि त' पकडले जाइि। आ एकबेि जँ भंडा- फोड भ' जाइत अर्वि त' बज्जि त' माि पि खसबे कति ! सैह भेल... एक्ह मे दुख कोन बातक ?

उचका : *(हँसैत)* हँ, दुखी कयै होइ िहक?

बाजाि : *[एतबा काल आशयषभए सबटा सुक्न हिल िलाह। आब हिल नक्ष गेलक्त अगुआ कए बाजय लगलाह]*
हे भगािन! हमि भाग मे िल सिसिक्ष शिाि मे कना कोनो ाािग-शोक भेनक्ष सिगष मे जायब... तँै हम एत' ऐलहुँ, आ सिगक्क दाि पि ठाढ िा तयू मे...! मुदा ई सब चोि उचका जँ सिगे मे जायत, तखन केहन हैत ओ सिगषिहबाक लेल ?

पॉक्कट-माि : से कयै बाबा ? अहा की बूि िा, सिगष त' सभक लेल होइत अिि ! एक्ष मे ककिहु बपौती त' निि ।

बाजाि : *[बीमा एजेट के]* आब बूि ! आब.... चोि क्तसखाबय गुण केि मक्षमा,1
पॉक्कट माि किि बयान!
माि उचका िाक्ड लेलक अिि,
पाट कपाट त' जय क्तसयािमि !
[चोि-उचका-पॉक्कट-माि ताली दैत अिि, सुक्न कए चौकैत कमख-मंगनी आ पेमी-युगल कनु कि बुिनक्ष ताली बजाब' लागैत अिि।]

चोि : ई त' नीक फकाि बक्त गेल यौ!

पॉक्कट-माि : एम्हि तस्कि-ािज त' ओम्हि कि-ािज!

बाजाि : *(खौंित')* कयै ? कोन गुण िह तोहि, जकि बखान कि अयलह एत'?

पॉकट-मािर : *(इंबात किर आ हँसैत)* हािक सफाई... अपन जेब मे त' देखू , कि ओ बाकी अिछ िक निह...

बाजाि : *[बाजाि तुिि अपन जेब टटोलैत िवि ______ त' हाि पॉकटक भूि देने बाहि आक जाइत िक। आशयषचकत भ' कए मुँह सँ मात विसमयक आभास होइत िक।]*

जा !

[बीमा बाबूके आब िहल नवि गेलक। ओ ठहका पाबड कए हँस' लगलाह- हुनकि देखा देखी कैक गोटे बाजाि कक हाि सँ इशाि किि हँकस िहल िलाह।]

चोि : *[हाि उठा कए सबके िम्हबाक इशाि किि]* हँकस त' िहल िि खूब !

उचका : ई बात त' सपष जे मनोिजनो खूब भेल हैतक।

पॉकट-माि : मुदा अपन-अपन पॉकट मे त' हाि ध' कए देखू !

[वमख-मंगनी आ पेमी-युगल के िबड सब तयो पॉकट टेब' लागैत' िवि आ बैगक भीतिि ताक-िक कए देख' लागैत िवि त' पता चलैत िक जे सभक पाइ, आ नवह त' बटुआ गायब भ' गेल िक। हुनका सबके ई बात बुविते देिि चोि, उचका, पॉकट-माि आ वमख-मंगनी हँस' लागैत िवि। बाकी सब गोटे हतबुद्ध भए टुकुि-टुकुि ताकते िह जाइत िवि]

वमख-मंगनी : नंगटाक कोन डि चोि की उचका ?
जेम्हकि तकै ि लागै अवि धका !
धका खा कए नाचब त' नाचू ने !
खेल खेल हावि कए बाचब त' बाचू ने !
[चोि-उचका पॉकट-मािि, समिति सिि मे जेना धुन गाबा हिल होवि]
नंगटाक कोन डि चोि क उचका !
आँखिएक सामने पलटल िका !

वमख-मंगनी : खेल खेल हावि कए सबटा फका !

समिति-सिि : नंगटाक कोन डि चोि क उचका ?
[*कहैत चार गोटे गोल-गोल घुि लागै िवि आ नाच- नाच कए कहै िवि।*]

सब गोटे : आब जायब, तब जायब, कत' औ कका ? पॉकट मे हाि दी त' सब कि लतखा ! नंगटाक कोन डि चोि क उचका !

बीमा-बाबू : *(चीत्कािि किति)* हे िम्ह' ! बंद कि ई तमाशा...

चोि : *(जेना बीमा-बाबूक चार कस सपना मे भास हिल होवि एहन भंवामा मे)* तमाशा नवि... हताशा....!

उचका : *(ताकना चलैत)* हताशा नवि... कािशा !

पॉकट-माि : *[पॉकट सँ हि-सातटा बटुआ बाहि क' कए देखा देखा कए]* ने हताशा आ ने

क्षिशा, मात तमाशा...ल' लैह बाबू िह आना, हिक बटुआ िह आना! *[कहैत एक एकटा बटुआ बॉल जका तकि मािलकक क्दस फेकैत िवि आ हुनका लोकिन मे तकिा सबटाके बटौि लेल हडबडी मचा जाइत छैि। एहि मौकाक फायदा उठबैत चोि उचका-पॉकेट-मािर आ भिख-मंगनी कतािक सब सँ आगा जा' कए ठाढ भ' जाइत िवि।]*

िद्दी-बला : *[जकिा कोनो नुकसान नहि भेल िलि ओ मात मस्ती क' हिल िलि आ घटनासँ भपूिर आनन्द ल' हिल िलि।]* हे बाबू भैया लोकिन ! एकि आनन्द नवि अवि कोनो जे "भूलल-भटकल कहुना क' कए घुवि आयल अवि हमि बटुआ"। *[कहैत दू डेग बढा' कए नाचओ लैत' िवि।]* ई जे बुिि ि जे अहाक धन अही के घुवि आयल...मुदा ई बुवियो हिल िि की नवि जे ई सबटा फूसि वि क !

बीमा-बाबू : *(आशयषहोइत)* आँय ? से की ?

बाजािि : *(गिि सँ गिि मिला कए)* सबटा फूसि ?

भद-व्यक्ति 1 : की कहै िि ?

भद-व्यक्ति 2 : माने बटुआ त' भेटल, मुदा भीतिि भविसिक ढन ढन !

दिद्दी-बला : से हम कत' कहलहुँ ? बटुओ अहीक आ पाइयो िहे! मुदा एखन ने बटुआक कोनो काज हित' आ ने पाइयेक!

बीमा-बाबू : माने ?

दिद्दी-बला : माने नर्व बुिक्लयैक ? औ बाबू ! आयल ी सब गोटे यमालय... ठाढ ी बह्मद दबिजजाक सामने...कतािं सँ... एक दोसि सँ जूर्व हिल ी जे के पह्नल ठाम मे हित आ के हित तकि बाद...? तखन ई पाइ आ बटुआक कोन काज ?

भद-व्यक्ित 1 : सत्ये त'! भीति गेलहुँ तखन त' ई पाइ कोनो काज मे नह्न लागत !

बाजािी : आँय ?

भद-व्यक्ित 2 : नह्न बुर्विक्लयैक ? दोसि देस मे जाइ ी त' िडे चलैत िक अपन रपैया ? *(आन लोग सँ सहमकाक अपेक्ष मे-)* िक नर्व ?

िमणी-मोहन : *(जेना दीघषमौनता के तोडैत पह्नल बेर्व कािु ढंग केि बात बाव्ज हिल िर्व एहन भंवामा मे... एह्न सँ पह्नने ओ कखनहु पेमी-युगलक लग जाय पेमका के बायासल नजर्व द' हिल िलाह त' कखनहु बमख-मंगकये लग आक्ष आँख सँ तकि शािि के जेना पीक्ष हिल िलाह...)*

अपन पेमका जखन अनकि बयाहल पती बक जाइत वि तखन तकि सँ कोन लाभ ? *(कहैत दीघश्वास त्याग कति वि।)*

बीमा-बाबू : *(डाटैत)* हे...अहा चुप हिू! क' हिल ि बात रपैयाक, आ ई कहै वि रप दय...!

िमणी-मोहन : हाय! हम त' कहै िलहुँ रपा दय!

(वमख-मंगनी िमणी-मोहन लग सटल चल आबै िक।)

वमख-मंगनी : हाय! के विकी रपा ?

िमणी-मोहन : "काक-काक पिकबाक रपतयाक िमणी च... !

बाजाि : माने ?

िमणी-मोहन : एकि अिष कनेक गंभीि होइत िक... अहा सन बाजाि नक बूित!

वमख-मंगनी : *[लास्य कति]* हमि बुिाउ ने!

[ताित वमख-मंगनीक भंवामा देख कने-कने कहुँसैत' पॉकट माि लग आक जाइत अि।]

वमख-मंगनी : *[कपट कोधे]* हँसै कयै ि ? हे... (कोि सँ पुतलाके पॉकट-माकिे िम्हबैत) हे पकड़ू त' एकि... *(कहैत िमणी-मोहन लग जा कए)* औ मोहन जी! अहा की ने

कहलहुँ, एखनहु धवि भीतरि मे एकटा टिपटी मचल यै'! मिणी-धमनी कोन बात' कहलहुँ ?

मिणी-मोहन : धूरि मूखर्! हम त' कहि लिहुँ शकुन्तलाक गप्प, महन्दोदरीक व्यथा... तो की बुझबे ?

वमख-मंगनी : सबटा व्यथा केर गप बुझैत छी हम... भीख माँगा-माँगा खाइ छी, तकर माने ई नहि, जे ने हमरा शरीर अर्छि आ ने कोनो व्यथा... ?

मिणी-मोहन : धत् तोरी! अपन व्यथा तरि छिड, आ भीतर की छैक, ताहि दय सोच ! *(कहैत बंद दबिजजा दकस देखबैत छथि-)*

पॉक्कट-मारि : *(अधिक् भ' कए दबिजजा दकस देखैत)* भीतर ? की छइ भीतरमे... ?

मिणी-मोहन : *(नतयक भंवामा करैत ताल ठोक्क-ठोक्क कए)* भीतर ? "धा व्धन व्धना... भलि तमना ! तेर-केर-व्धन-ता... आब नहि कहत्ता !

वमख-मंगनी : *(आशयषभए)* माने ? की बकै ई ?

मिणी-मोहन : *(गर्वि सँ)* 'की' नहि... 'की' नहि... 'के' बोल ! बोल- भीतर 'के' छथि ? के, के छथि?

पॉक्कट-मारि : के, के छथि?

मिणी-मोहन : एक बेर अहाँ दारिके पारि कयले त'

भीतर भेटती एक सँ एक सुन्दरि,उर्वशी रम्भा
मेनका...... ! *(बाजैत बाजैत जेना मुँहमे पानि आबि जाइत छनि-)*

चक्खु-मंगनी : ईः! रम्भा...मेनका... ! *(मुँह दूसैत)* मुँह-कान किछु सब... बजबाक खसौ सबटा पानि!

रुक्मिणी-मोहन : *(हँसैत)* कोना खसतैक बजबाक ? बजबा त' कि देखि जिदिया लग ! आ अपस्यारि त' सबटा गरि हुनकर्हि नत्याराधना।
[चक्खु-मंगनीक पफ्सकुयाल्या देखि कैक गोटे हँस' लगैत छथि]

पॉकेट-मार : हे....एकटा बात हम कहि दैत छी, जे ई नहि बूझू जे दरबज्जा खोललहि आनंदे आनंद !

बाजारी : तखन ?

बीमा-बाबू : अहू ठाम छै अशान्ति, तोड-फोड, बाढि आ सूखा ?
आ कि चारू दिस इन्द्र हरियरि, अकाससँ खसैत खुशी केर लहरि आ माटिसँ उगलैत सोना ?

पॉकेट-मार : कथीक ? जँ अशान्ति, तोड-फोड होइत त' नीक... की बुझैत छी, एतहु अहा जीनि बीमा चलाब' चाहैत छी की ?

चोर : *(एतबा काल उचका सँ फुसुर-फुसुर क' रहल छल आ ओतहि, दरबज्जा लग ठाढ

लिखल एक्को बात पर हँसैत आगा आबि जाइत अछि) सभ गोटे जीनि-बीमा ? कहि ! ई त' बड्ड नीक गप्प !

पॉक्कट-मा ि : देि ि जि इंदक बज.. बोलू कतेक बोली लगबै ि ि?

उचक्का : पह्रह क ोि ड!

चो ि : सोलह!

पॉक्कट-मा ि : साढे-बाईस!

बीमा-बाबू : पच्चीस क ोि ड!

ि मिणी-मोहन : हे हौ! तो सब बताह भेलह ? स ि गष्क ि जा के ि बज, तक ि बीमा हेतैक एक सय क ोि ड सँ कम मे ?

[कतहु सँ एकटा स्टूलक जोगाड क’ कए ताक्ह प ि चट दय ठाढ भ’ कए-]

पॉक्कट-मा ि : बोलू, बोलू भाई-सब ! सौ क ोि ड !

बीमा-बाबू : सौ क ोि ड एक !

चो ि : सौ क ोि ड दू ___

ि मिणी-मोहन : एक सौ दस !

भ्मख-मंगनी : सि ि सौ क ोि ड !

चो ि : डेढसौ क ोि ड...

भ्मख-मंगनी : पचपन ___

चो ि : साक्ठ ___

भ्मख-मंगनी : एकसक्ठ ___

[दूनूक आँक्ख मुँह प ि ‘टेनशन’ क ि िप स्मष भ’ जाइत ि क।]

चो ि : *(खौँ ि त)* एक सौ नब्बै...

[एतेक बडका बोली प ि भ्मख-मंगनी चुप

भ' जाइत अछि।]

पॉकेट-मारि : त' भाई-सब ! आब अंतिम घडी आबि गेल अछि —190 एक, 190 दू, 190...

[ठहक्का पाड़ि कए हँस' लगलाह बाजारी, दूनू भद्र व्यक्ति आ दिदी-बला-]

पॉकेट-मारि : की भेल ?

चोर : हँस्सीक मतलब ?

बाजारी : *(हँसैते कहैत छथि)* हौ बाबू ! एहन मजेदार मोल-नीलामी हम कतहु नहि देखने छी !

भद्र-व्यक्ति 1 : एकटा चोर...

भद्र-व्यक्ति 2 : त' दोसर भिख-मंगनी...

बाजारी : आ चलबै बला पॉकेट-मारि...

[कहैत तीनू गोटे हँस' लागै छथि]

बीमा-बाबू : त' एहि मे कोन अचरज?

भद्र-व्यक्ति 1 : आ कोन चीजक बीमाक मोल लावा हिल अछि त' बजु केरि !

भद्र-व्यक्ति 2 : बजरि खसौ एहन नीलामी पर !

बाजारी : *(गीत गाब' लागै' छथि)*

चोर सिखाबय बीमा महकमा,

पॉकेट-मारी करै बयान !

मारि उचका छिनि लेलक अछि,

पाट कपाट त' जय सियाराम !

दुनू भद-व्यक्तत : (एकक्ह संगे) जय क्सयामि !

[पक्हल खेप मे तीनू गोटे नाच'-गाब' लागै र्वि। तकि बाद धीर्ि-धीर्ि बीमा बाबू आ दिदी-बला सेहो संग दैत र्वि।]

बाजार्ि : कौआ बजबै हंसक बाजा

भद-व्यक्तत 1 : हंस गबै अर्वि मोकि गीत

भद-व्यक्तत 2 : गीत की गाओत ? लि बदनाम !

बाजार्ि : नाट-र्वििटिल जय क्सयामि !

जय क्सयामि ! जय क्सयामि!

समर्ति : मार्ि उचका िक्ड लेलक अर्वि।

पाट-कपाटक जय क्सयामि !

[तार्ति नचैत नंदी-भंगीक पर्शि होइत र्कि। दुनूक नत्य लिक्स शास्त्रीय तार्ि मुँहमे बोलो तबलेक-]

नंदी : धर्ि-धर्ि धर्िणी

भंगी : मर्ि-र्ि जर्िनी

नंदी : डाहक र्िह मे

भंगी : स्याह र्विशेर

नंदी : कपटक र्िट-फट

भंगी : बगलक दल-दल

नंदी : हुलक्क-दुलक्क कए

भंगी : भेल अर्शिेर !

दुनू गोटे : *[एकक्ह संग गबैत-नचैत तरआर्वि सँ चहुँक्दक्स लडैत, अगक्गत मुदा अदश्य*

योदाक गाबि काटैत-]
चाम-चक्कत छी, भान-भक्सत छी
बेवि-बेवि बदनाम कूपमत छी
गड-गड क्सगड ई हि-पाछि पाि
तीन लोक चहुँ धाम कवित छी
कपटक िट-फट क्त्तकट विकिट कट
नट जट लट-कय अट-पट संशय
नि-जि देहक बात क्सशेर !
डाहक ािह मे स्याह विशेर !

[जखन गीत-नाद आ नतृ्य समाप्त भ' जाइत अवि तखन नंदी एकटा टूल पि ठाढ भ' कए सब के संबोविधत कि लागै ि्वि।]

नंदी : *[सभक दृवि - आकवरसि कैति]*
सुनू सुनू सभटा भाइ-बहीन! नीक जका सुक्त्त क्लय' आ जँ कि्उ वजजासा हो त' सेहो पूवि क्लय'।
[सब गोटे गोल भ' कए ठाढ भ' जाइत ि्वि।]

भंगी : हम सब जे कि्उ कहब से अक्ह लेल कहब जरूिी अवि, जे आब दविजज्ञा खोक्लतक्ह ओक्ह पाि जैबाक मौका भेटत सबके। मुदा ई जानब जरूिी अवि जे ओक्ह पाि अहा लेल की अवि पतीक्ष

कीति! *(बाजैत सभक क्दक्स देक्ख लैत िवि।)* अहा सब जनै ि ी ,की ैक ओक्ह पाि?

चोि : सि गाे्ष

पॉक्कट-माि : नकि!

वमख-मंगनी : अकास!

दि्दी-बला : पाताल!

नंदी : ने तयो पूिपूिं ठीक बाजल... आ ने तयो गलते बात कहल !

भंगी : ई सबटा ैक ओक्ह पाि एक ठाम, एकक्ह सि ान पि...

नंदी : आब ई त' अहा सभक अपन-अपन कतकमषक फल भेटबाक बात वकि... ककिी भागमे की अवि...

बाजािी : *(टोकैत)* से के कहत ?

नंदी : महाकाल!

भंगी : ककहिु भेटत ढेि ािस काज त' ककहिु लेल हित कतेको स्मधा...! तयो समय बीताओत नत्म-गीत, काव्य-कलाक सङे, आ तयो एक्ह सबसँ दूि हित गंभीि शोध मे लागल !

नंदी : ककहिु लेल हित पुष्प शय्या...त' ककहिु एखनहुँ चलबाक अवि काट पि दय... !

बीमा-बाबू : से कोना ?

नंदी : देखू ! ई त' अपन-अपन भाग्य जे एत' अहा-लोकक्समे बहुत कम्मे गोटे एहन छी जे संपूर्ण उमरि जीबाक बाद तखन एत' हाजिर भेल छी। हमरा बजा सँ घुरैत काल गाडी तर कुचलल गेल छी *(बाजाकि हाथ उठबैत आ कहैत ''हम...हम...'')* त' हमरा चोरिक कारण काल पकडा गेलहुँ आ गाम-घरक लोग पीट्-पीट् कए पठा देलक एत'! *(चोरि ई पसंगक अभिनय होइतक सम्बन्धि कए पडयबाक चेष्टा क' रहल छथि त' ओकरा दू-तीन गोटे पकड़ कए ''हे ई कि ...इयैह... !'' आदि बजलाह)* हमरा अत्यधिक व्यस्तता आ काजक टेनशन मे अस्थिर भेल छलहुँ *(दुनू भद व्यक्त मात हाथ उठबैत छथि जेना स्कूली छात्र सब कक्षामे हाजिरी लगबैत अछि),* त' हमरा लिक पटरी पर अपन अंतिम क्रम मे आबि पहुँचल छलहुँ *(दिदी बला आ वगख-मंगनी बाजल ''जेना कि हम!'' अछि ''हमीं त' सैह भेल छलि'')।* कतेको कारण भ' सकैत छैक।

[बजैत बजैत चारिटा मत सैसक मुइलो पर विक्षिप्त जका माचषकै ति कै ति मंच पर आगा बढ़स आबि जाइत छथि।]

बीमा-बाबू : *[चार गोटे के देखबैत]* आ ई सब ?

नंदी : समय सँ पहिनहि, कोनो ने कोनो सीमामे.... घुसपैठीक हाथि नहि त' लडाई केर मैदानमे... !

मत सैनिक : *(समर्ति सँ)* लडाईक मैदानमे... !

बीमा-बाबू : बुझलहुँ ! मुदा...

नंदी : मुदा ई नहि बुझलहुँ जे बीमाक काजके छोड़ि कए
अहा एत' कएक आयल छी?

बीमा-बाबू : हम सब त' सदिखन नव-नव माकेटक खोजमे कतहु पहुँचि जाइ छी, एतहु तहिना बूझू... !

भंगी :*(नंदी सँ)* बुझलहुँ नहि ?...आब एतेक दिस बीमा कंपनी आबि गेल अछि जे ई बेचारे...

[तावित् नंदी-भंगीक चारू कात जमा भेल भीड ओहि पाछि पाछि कतेक सँ एकटा खलबली जका मचि गेल। पता चलल दुनू प्रेमी आपस मे झगडा क' रहल छल। रस्ता बनाओल गेल त' ओ दुनू सामने आबि गेल।]

नंदी : *(जेना मध्यस्थता क' रहल छथि)* की भेल ?की बात छैक?
हमरा सब के त' बूझि' पडैयह!

पेमिका : देखू ने... जखन दुनू गोटेक परिचि बिल्कुल मान' लेल तैयार नहि छलि हमरा दुनूक संबंध तखन...

पेमी : तखन सभक्ल कए विचारि कैने छलहुँ जे संगहिसंग जान द' देब...

पेमिका : सैह भेल, मुदा....

नंदी : मुदा ?

पेमिका : मुदा आब ई कहि छिल वि...हिनका घुर्वि जैबाक छिन...

पेमी : हँ...हम चाहै छी एक बेर आर जीबाक पयास करी। मुदा ई नहि घुरि चाहै छथि।

पेमिका : हँ, हम नहि चाहै छी जे धुर्वि जाई... !

रुक्मिणी-मोहन : *(अगुआ कए पेमिका लग आबि कए)* नहि जाय चाहै छथि त' छि क्षयौक ने... हम त' छीहे ! *(कहैत आर आगा बढबाक पयास करैत' छथि।)*

भंगी : धत् ! *(रुक्मिणी-मोहन के खसिकार करैत)* अहा हँटू त'... ! आ चुप छू !

नंदी : मुदा ई त' अहा दुनू गोटे हमरा दुनू के धमषसंकट मे पहुँचा देलहुँ।

भंगी : आ घुबि कयै' कबि ?

पेमी : एक बेर आर पयास करी, जँ हमर दुनूक विवाहक लेल ओ लोकनि राजी भ'

जावि ।

भंगी : ओ ई बात ?

नंदी : त' एकिकादान त' सहजे क' सकै ी हम सब?

पेमका : से कोना ?

भंगी : कि ओ नहि...बस, िट-ीन-'ऐक्सडेट' कबा दय' आ ल' आनू दुनू जोडी माय-बाप के (एतहि...यमालय मे...)

पेमी : नहि-नहि !

पेमका : से कोना भ' सकै इ ?

पेमी : हम सब नवि चाहब जे हमि सभक लेल हुनको लोककेक पाण हलि जाइन।

नंदी : तखन त' एकहि टा उपाय भ' सकैत अवि ।

पेमी-पेमका : *(एकहि संगे)* की ? कोन उपाय ?

भंगी : इयैह...जे अहा दुनूक विाह...

नंदी : एतहि क' देल जाय...

[सब पसन भ' जाइत वि स्पष्टतः सभक दुख़ाहत्ता दूि भ' जाइत कि। पेमका लजा' जाइत वि, पेमी सेहो पसन, मुदा कनेक शंकत सेहो-]

भंगी : खाली इयैह सोच' पडत' जे कन्यादान के कति... !

बाजाि : *(आगा बढ़ि कए)* आ हम त' ि ने !

(कहैत पेक्मकाक मा पि हा खिैत िवि; स्नेहक आभास पेक्मका ुिक्क कए हुनक पैि ूबैत िवि।)

भंगी : बस आब दकिा खाली ढोल-वापही आ बाजा गाजा... !

नंदी : सेहो भ' जेतैक... !

[दुनू हा सँ तीन बेि ताली दैत िवि। एकटा कता सँ ढोल वापही-बाजा बजौवहा सब आबैत िवि आ बाजा-बजब' लागै िवि। सबटा पात हुनके सभक पा ू - पा ू एकटा पंक्तत मे चलैत-नाचैत, आनन्द कि ति बाहि चक्ल जाइत िवि।]

[मंच पि विह जाइत िक मात बंद विशाल सिगिष्दा। स्पॉट-लाईट दबिजजा पि पडैत अवि आ अह्ला भ' कए पिम कल्लोलक समावापतक घोरणा कि ति अवि।]

***

दोसि कल्लोल

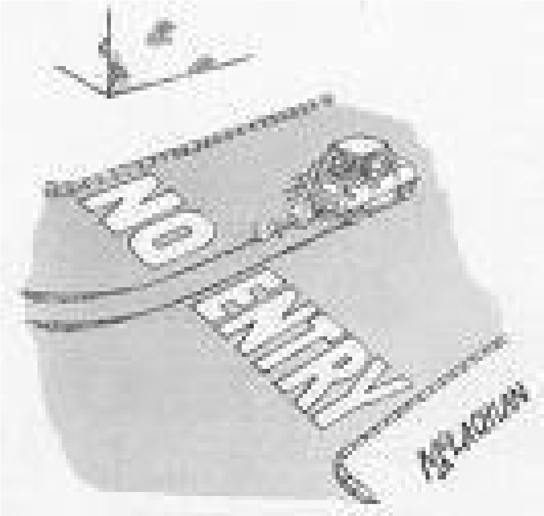

दोसि कल्लोल

[पशादपट मे सगिष्दािलखा दैि मुदा मंचक एक क्क्स दाकि बाम भागक देबािलग एकटा भारण देबा जोकि कनेक ऊँच भारण-मंच आ ताक्ह पि एकटा माईक देखल जायत। भारण-मंच पि तीनटा नीक कुसी देखल जायत। ओमहि दबिजजाक सामने आ भारण-मंचक लग बाईस-चौबीस-टा भाडा केि कुसी सेहो िखल िहत जाक्ह पि चावि-टा मत सैक्सक सँ ल' कए चावि-गोट बाजा बजौक्सहािआ पिम कल्लोल मे देखल सब गोटे नंदी भंगी के ल' कए चौदहो गोटे बैसल पतीक्स किति िवि। लगैि सब तयो पतीक्स किति-किति पिशान भ' गेल िवि।]

अनुचि-1 : *(नेताजी एखनहु धिव नक्ह आयल िलाह। हुनक दूटा अनुचि मे सँ एक गोटे कहुना माईक पि किा ने किा बजबाक पयास क' हिल िल जाक्ह सँ लोग ऊक्स कए कतहु सकिक ने जाय!)* त' भाई बक्हन सब ! जे हम कहै िलहुँ... आजुक एक्ह अशाक्तमय पविशि मे एकमात बदीिये बाबू िवि जे शाक्तक दूत बक्त कए मविले मात नक्ह, समस्त भातिक आतंकिदी, कलेसिदी, उगिदी, अत्यूगिदी, चंडिदी, पचंडिदी सँ ल' कए सब तहिक विदीक िगडा-विदिके मेटैबाक लेल क्चकयान सँ ल' कए ियुयान धिव , सभ तहिक िहन मे अत्यंत कष आ

जोक्खम उठा कए सफि कर्ति हिलाह। आ अक्हना सब ठाम... सर्गि, अपन बातक जादुई िडीके चलबैत सभक दुःख- ददष के दूि कर्ति हिलाह। क्मविलाक महान नेता एक बदी-विशाल क्संहे िविि जे...

बाजािि : *(पिशिान भ' कए)* हौ, से सबटा त' बुिक्लयह मुदा ई त' बताब' जे बदी बाबू िविि कत'?

बीमा-बाबू : आि कतेक देि पतीक्ा कयि पडत ?

अनुचिि 2 : *(जे भारण-मंचक कोना पिि ठाढ हिैत अवि आ बीच-बीच मे उतवि कए बाहिि जा कए िक्क कए देखबाक पयास क' कए घुवि-घुवि आबैत िल।)* हे, आब आक्बये हिल हेताह !

बाजािि : हे हौ! इयैह बात त' हम सब बडी काल सँ सुक्त हिल वियह ! "आब आक्बये हिल िविि..."

बीमा-बाबू : आ बैसल बैसल पैिि मे बघा लावा हिल अवि...हमिि सँ त' बेसी देिि धवि बैसले नक्ह जाइत अवि।

अनुचिि 1 : *(सब के शात कर्ति)* हे...बात सुनू... बात सुनू भाइ-सब ! बैसै जाउ, कने शात भ' कए बैसल ने जाइ जाउ!

अनुचि 2 : *(बजबाक भंवामा सँ स्पष भ' जाइत िक जे फूक्स बाक्ज िहल िव-)* कक्ये काल पूिष ओ धमष्क्शला हैक्लकॉप्टि पि सँ उतलि िव। आब ओ िस्ता मे िव ____ कखनहु पहुँक्य सकै िव... !

अनुचि 1 : आब जखन ओ आक्बये िहल िव, पायः पहुँक्बये गेल िव, आजुक समय-समहृयि-सामाह्यजन आ चार कात चक्ल िहल अनाचाि दय बदी बाबूके की कहबाक िक, से सुनैत जाय जाउ !

बाजाि : अचि त' कह' ने कोन नि बात कहब'!

अनुचि1 : ओना अही क्कयैक हम सब चाहै ि जे सब क्कि नि हो... ! िस्ता नि हो, ओ पि जतय पहुँचत से लक्ष्म नि हो, एहन पि पि सँ चलक्हाि हमि-अहा सनक पुनिका जमानाक लोग मात नवि ___ नि िन युगक नतिुविया सब हो ! पुितन ग्लाक्, पुिना दुःख-ददष सब, पाचीने इक्हासक पष पि हमसब ओिियल जका मात ठाढ नक्ह िही, क्कि नि किी... !

बीमा-बाबू : ई बात त' ठीके कक्ह िहल ि।

भद व्यक्त : *(दुनू गोटे)* 'ठीक, ठीक ! एकदम ठीक'', आक्द।

अनुचि1 : आ इयैह बात बदी विशाल बाबू सेहो

बाजैत र्वि-र्विशाल जक्कक हदय, शम-जीर्ी मनुतखक लेल जक्कक हदय सँ सक्कखन तित र्ि र्क्ति, जक्कका लेल पुनिका लोक, र्िक्त-र्िीजि ततबे महत्पूणष जतबा नयौनिक जीि, नर्ीन पीढीक आशा-आकाक्ष - ई सब कक्ा्। आजुक युग मे र्हि एकटा िजनेता र्वि जे नि आ पुिनिक बीच मे एकटा सेतु बनल सर्यिं ठाढ र्वि आ ओ सेतु जेना कक्ह हिल हो---

आउ पुितन, आऊ हे नूतन।

हे नयौनि, आऊ सनातन ।।

पाण-पियिण, जीणषजयिन।

बज-कक्कन पण गौण गियिन।।

सुतनु सुधनु सुख सँ गायन।

जीणषई धणिी तटमुख तायन ।।

अघन सधन मन धन-दुख-दायन।

जाऊ पुितन, आऊ नियिन।।

[एहन उत्कष काव्य-पाठ सुक्त दि्दी-बला आ क्मख-मंगनी पशंसा सूचक "िहि-िहि" कहैत ताली बजाब' लागै' र्वि। त' क्हनका दुनू के देक्ख अनुचर् 2 आ नंदी-भंगी के िक्ड बाकी सब सोटे ताली बजाब' लागैत र्वि।]

चोि : *(लगमे बैसल दिदी-बला के)* हे... कि बुिलह एकि कविता कि आहना ? *(दिदी-बला आँखि उठा कए मात देखैत अिछ, विजाासा आँखि मे...)* हमि त' कि नहि बुि' मे आयल।

दिदी-बला : नि कि भवि विजनगी कैने छिहत' तखन ने? एक ठामक माल ओम्हि...आ ओहि ठामक एम्हि... !

विभख-मंगनी : ठीके त'! तो कोना बुिबह ?

चोि : पहिल दूटा पाती त' बुिवि ये गेल िलहुँ। मुदा तकि बाद सबटा कुहेस जका असमष ...एतेक निीन िल जे बुि' मे नहि आयल !

अनुचि 2 : हे! के हल्ला क' हिल िी ?

विभख-मंगनी : हे ई चोबिा कहै िल...

चोि : *(डाटैत)* चुप! विभख-मंगनी नहितन... हमि 'चोि' कहैये!

विभख-मंगनी : हाय गौ माय! 'चोि' के 'चोि' नहि कहबै त' की कहू ? कोन नि नामे बजाऊ ?

अनुचि 1 : *(माईक सँ, कनेक सिि के ककशि किैत)* हे अहा सब एक दोसि सँ िगडा नहि कर! जे कि बकआबक अिछ, हमि सँ पुि ! *(विभख-मंगनी के देखा कए)* हे अहा... *(विभख-मंगनी एम्हि-ओम्हि देखैत*

अवि) हँ, हँ ___अही के कहै िी ! बाजू...की बाजै िलहुँ ? पकने बाजू- अहा के िी ?

चोि : *(कहुँसैत)* वमख-मंग- *(ितय अधू िक्ि जाइत िक्त, कयैक त’ वमख-मंगनी िपक्ट कए चोकि मुँह पि हाि ध’ दैत अवि-बाकी बाजै नक्ह दैि।) (तािि् दुनू अनुचि िपटा-िपटी देक्ख कए, “हे... हे...!” कहैत मना कबिाक पयास मे अगुआ अबैत अवि।)*

वमख-मंगनी : *(चोकि मुँह पि सँ अपन हाि के हँटाबैत, ठाढ भ’ कए अपन पविचय दैत, कने लजबैत...)* हमि नाम भेल ‘अनसूया!’

अनुचि1 : अचि, अचि! त’ अहा अिश्ये शमजीिी िगक्ष िी...सैह लागैत अवि !

वमख-मंगनी : हँ!

अनुचि 2 : कोन ठाम घि भेल ?

वमख-मंगनी : घि त’ भेल सविसिपाही...मुदा,

अनुचि 2 : मुदा?

वमख-मंगनी : िहै िलहुँ कदल्ली मे... असोक नगि बस्ती मे...

अनुचि 1 : आ’ काज कोन कि ति िलहुँ बक्हन ?

वमख-मंगनी : गेल त’ िलहुँ कविला कतकलाक हुनि ल’ कए, अपन बनायल कि ु कक्त बेच’

लेल... मुदा,... *(दीघश्वास त्यावा)* के जानै छि, जे ओ शर्ह एहन छि जत' कला-तला केँ कोनो कदि नहि... अंतत: हमि कोनो चौिहाक वमख-मंगनी बना कए छिोड़ देलक।

अनुचि 2 : आ-हा-हा,ई त' घोि अन्याय भेल अहाक संग। घोि अन्याय... अहेिं भ' गेल!

अनुचि 1 : *(पयास कैत पसंगके बदलैत िवि गला खखाक्ड कए)* मुदा ई नहि बतैलहुँ जे अहा कह' की चाहैत छिलहुँ ?

वमख-मंगनी : हमि लागल, अहा जे बात कहि हिल छिलहुँ ताहि मे बहुत कि नि छि, तकि अलाि-

द्िदी-बला : हमि सब के त' बुि' मे कोनो कदकक्त नहि भेल, मुदा

अनुचि 2 : मुदा ?

वमख-मंगनी : *(चोि के देखा कए)* हुनकि कहब छि जे मात पक्हल दूटा पातीक अषि स्पष छि, आ तकि बाद...

अनुचि 1 : ओ...आब बुिलहुँ। भ' सकैि...ई भ' सकैि जे कनको-कनको हमि सभक तितक्य कक्ठन आ नहि त' अपाच्य लगक्। ई संभि अवि जे हुनका लेल नि-पुिनिक संजा कि आि...

[बात पूरि हैबाक पूर्वहि दिदी-बला आ वाख-मंगनी हँक्स दैत अछि...संगहि उचका आ बाजारि सेहो। अनुचर-दय बुझि नहि पबैत छथि जे ओसब कथैक हँक्स हिल छलाह।] कथैक ? की भेल ? हम किछु गलत कहलहुँ की ?

दिदी-बला : अहा कथैक गलत रहि फूक्स बाजब?

वाख-मंगनी : अहा त' उकाते कहक्लयैक।

बाजारि : मुदा कहनका पूर्वहि कए त' देखू-ई कोन तहिक सेरि मे कयुतत छथि !

अनुचर 2 : *[अनुचर-दय बूझि नहि पबैत छथि जे की कहताह।]* क.. कथैक?

अनुचर 1 : *(चोरि सँ)* की सब बाव्ज हिल छथि ई-सब?

[चोरि शात-क्वते उठि कए ठाढ होइत अछि आ भारण मंचक दिस आगा बढैत जाइत अछि। अंत मे मंच पर चढ़ि कए बजैत छथि...]

चोरि : *(अनुचर 1 के)* जँ ई चाहै छी हमरि उतर सुनब, आ जँ सते किछु नहि सुन' चाहै छी तखन हमरि कनीकाल माईक सँ बाजै देमे पडत। *(अनुचर-दय के चुप देखि)* कहू की विचार!

अनुचर 1 : *(निश्चिन्त भ' जाइत छथि)* हँ-हँ, कयै नहि?

चोर : *[माईक हाथमे पाकल चोर कुर्ता केर आस्तीन आकर समटैत एकटा दीर्घ भाषणक लेल प्रस्तुत होइत छथि।]* अहा सब आश्चर्यचकित हैब आ भऽ सकैत परेशान सेहो, जे हम कोना ई बात कहि सकब। *[अनुच्छेद-दय के अपन परिचय दैत]* आबय ज'बि त' हम एकटा सामान्य चोर, पिट-पिन चोरि कऽति लिहुँ, मुदा भूलो सँ ककरहु ने जान नेने छी आ ने आघाते केने छी। चोरि के हम अपन कर्म आ धर्म बुझैत लिहुँ — ई जेना हमर ढाल जका छल हमरा कोनो बडका अपराध सँ बचैबाक! सोचैत लिहुँ जे चोरि, माने तस्करिता — एकटा ऊँच दर्जा केर कला सैह छैक। सामान्य भद्र व्यक्तितक लेल एतेक सहजे ई काज संभव नहि भ' सकैत छैक। *(दुनू भद्र व्यक्तितके देखा कए)* हिनके दुनू के देखऔन ने...त' हमर बात बूझि जायब। *(हँसैत)* हिनका दुनूक समक कोनो लोभनीय वस्तु छिपा दियनु... तैयहु, इच्छा होइतहु ई लोकनि ओकर वस्तु के ल' कए चम्पत् नहि भ' सकैत छथि। *(गंभीर मुदामे)* कहबाक तात्पर्य ई जे जेना मर्विला क्षतकला एकटा कला छैक,

चोर्वि कबि सेहो चौसक्ठ कलाक भीतर्
एकटा कला होइत अर्वि ।

अनुचि 2 : मानलहुँ। ई माक्त गेलहुँ जे चौयक्कला एकटा महतपूणष क्ति वकि, मात पक्ति नक्ह। मुदा...

चोि : *(हुनक बात के जेना हि मे लोक्क लैत वि)* मुदा ई पश उक्ठ सकैत अवि जे हम चोवि कवते क्कएक ि ? विशेर...तखन, जखन क्क पविाािमे तयो अवये नक्ह.. तखन एहन कायष अिि कलाक पयोगक कोन पयोजन लि?

बाजाि : ठीक !

चोि : जँ आन-आन क्ति सभ दय सोची त' ई बूिब कक्ठन भ' जाइत अवि जे चोिि ि तस्क्कि कत' नक्ह अवि? आजुक संगीतकाि पवि लुका जमाना केि गीत-संगीतसँ 'पेिणा' लैत वि। तक्हयौका संगीतकाि पुनिका संगीतके नि शिािमे गबबै िलाह। हुनकि सभक 'पेिणा' िलक्त कीतषा आ लोक-संगीत। आ कीतषािा लोकक्त के कि लेल क्हचक्कचाहक्ट हैतक्त अपनहु सँ पाचीन शास्त्तीय संगीत सँ कनी-मनी नकल उतािबामे ? *(िम्हैत सभक 'मूड' के बुिबाक पयास कि ते)* सैह बात सनीमा मे वियेटि मे ... कि, कविता मे सेहो....!

बाजािी : तो कहैत िह आजुक सभटा लेखक किुका साक्हत्यकाकि नकल कौत अिव, आ किुका लोक पिसुका किव लेखकक िचनासँ चोिी कौ िल...?

अनुचि 1 : माने चोिव पि चोिव...?

अनुचि 2 : आ चोिवये पि क्टकल अिव दुक्नया ?

बाजािी : हे... ई त' अह्हेि क' देलह हौ...!

चोि : अह्हेि क्कयै हैत ? कोनो दू टा पाक्त ल' क्लय' ने - 'मेघक बिखा....

बाजािी : ई त' ििह्दनाि ठाकुिक किवता भेल, नेना-भुटका सभ लेल क्लखल...

भद व्यक्त 1 : *(असंतुष्ट सिमे)* एक्हमे चोिी केि कोन बात भेल ?

बाजािी : ओ ककि नकल उताि िहल िलाह ?

भद व्यक्त 2 : हुनका सन महान किवके चोि कहै िी ?

चोि : *(जेना क्कनका सभक बात सुनतक्ह नक्ह िव-हािसँ सभटा बात के िोत...)* विदापक्तयेक पाक्त क्लय–"माधि बहुत क्वनती कौी तोय !"

उचका : एकिी लखे तँ सभ तयो चोि...

पॉक्कट-मािि : *(हँसैत)* आ सबटा दुक्नया अिव भिल फुक्ससँ...सबटा महामाया...

बाजािी : हे एकिी बातमे नक्ह आउ ! *(अनुचि दयसँ)* अहासभ कोन निि बात कहै दय

ि लहुँ...सैह कहु ।

चोि : *(उच्च स्िमे)* कोना कहताह ओ नि बात ? विदापक्तक एक्ह एक पाक्तमे कोन एहन शब्द ि ल जे ने अहा जानै ि ी आ ने हम? ‘माधि’... ‘बहुत’... ि ी ‘क्तनती’... अि ि एहन कोन ि तिय ओ बाजैत ि लाह जे हुनकासँ पक्हनक्ह तयो नक्ह बाक्त देने ि ल ? आ शतेको एहन कवि भेल हेताह जे मेघक बविसब दय बजने हेताह आ एहन सभटा शब्दसँ गढने हेताह अपन कविता के ?

(सभ तयो एक्ह तकषपि कनेक चुप भ’ क’ सोच’ लेल बाध्य भ’ जाइत वि ।)

अनुचि 1 : माने...?

चोि : माने ई जे दुक्तया मे एहन कोनो ि तिय नवि भ’ सकैि जकि एकटा बडका टा अंश आन तयो कखनहु कतहु कोनो ने कोनो उदेश्यसँ ि ी मजबूिीसँ बाक्त नवि देने होवि ! भ’ सकैि अहा तीन व्यक्ततक तीनटा बातक टुकडी- टुकडी जोक्ड कय कक्ि बाक्त हिल होइक ! एक्हमे नि कोन बात भ’ सकैि ?

बाजाि ी : हम सक्दखन नि बात कहबा लेल ि ीडे बाजै ि ी ? हम त’ मोनक कोनो ने कोनो

भानाके बस उगवड दैत ि....।

चोि : आ तैँ आइ धर्व जे कि बजलहुँ से सभटा बाजामि.... माने एक्ह पर्थीक कोनो ने कोनो बाजामि तयो ने तयो अिि कैक गोटे पक्कनहुँ बजने िल ?

अनुचि 1 : तखन अहा कह' चाहै ि जे....

चोि : *(पुन: बातके काटैत)* ने अहा कि नि बात कक्ह सकै ि आ ने अहा केि नेता...।

(ताि नेपथ्यमे शोि होइत ि क ..''नेताजी अयलाह'', ''हे िह वि नेताजी'' कतय, कतय यौ ! हे देखै नवि ि ? आक्ह सुनबामे अबैत अवि। तयो नाि देम' लागैत अवि---'नेताजी वजह्दाबाद' देशक नेता बदि बाबू वजह्दाबाद, वजह्दाबाद ! आक्ह सुनल जाइि। मंचपि बैसल सब गोटामे जेना खलबली मक्च गेल होइक। सभ उक्ठ कय ठाढ भ' जाइत वि। तयो-तयो अनका सभक पि क्ष कयने कानु अगुआ ऐबाक पयास करैत वि।

ताि गि मे एकटा गेदाक माला पक्हने आ कपाि पि एकटा ललका कलक लगौने कुता - पैजामामे सभके नमस्कािि

कर्ति नेताजी मंच पि अबैत ि वि...पाि-पाि पाच-सात गोटे आि अबैत ि वि आ सब मिल कए एकटा अकाणि भीडक काणि बनल जाइत ि वि। "नमस्काि ! नमस्काि ! जय मिथिला... जय जानकी माता..कहैत ओ मंच पि उपस्थि त होइत ि वि आ बगलमे माईक पि चोि के पबैत ि वि।

धीि-धीि सब तयो अपन-अपन आसन पि बैसि जाइत ि वि, अनुचि दुनू कोना की कतिाह नेताजीक लेल से बुवि नहि पबैत ि वि, कखनहु लोकके शात कर्ति ि वि त' कखनहु "नेताजी जिन्दाबाद" ! कहि ि वि त' फेिि कखनहुँ हुनक पाि-पाि आबि कए कुसी आनि सविआब' लगैत ि वि। अवशेष लोक सभ ताि बाहि चलि जाइत ि वि।)

नेताजी : *(अनुचि 1 सँ चोि के देखा कए)* ई के विकाह ? *(दुनू अनुचि की कहताह से बुवि नहि पबैत ि वि।)*

चोि : *(अपनहि अगुआ कए अपन पवचिय दैत)* जी, हम एकटा सामान्य कलाकाि ि ी...?

नेताजी : *(उठि कए अपन बात कहैत चोि के आलिंगन कर्ति)* अि...अि.... अहोभाग्य

हमि...!

चोि : *(अपनाके ि डबैत)* नवि, नवि अहा जे बुवि हिल ि ी से नवि...

नेताजी : माने ?

चोि : हमि कलाकािी त' बड साधािण मानक ि ीक।

बाजािी : औ नेताजी... अहूँ कोन भम मे पव्ड गेलहुँ 'चोि' विकाह ई.... 'चोि! *...(चोि मािि का लैत अवि)।*

नेताजी : *(चौकैत मुदा अपन विस्मय पि पयास क' कए काबू पाबा)* आँय...ताव्हसँ की, ई त' हमि गाम-घिकि पाहुन िवि.... *(कनेक 'मुस्की' दैत)* तयो जनमे सँ त' 'चोि' नव्ह होइत अवि....हमि समाजक व्सिवतये ककिी चोि त' ककिी 'पॉक्कट-मािि' आ ककहिु-ककहिु 'उचका' बना दैत अवि।

(जखन ओ 'पॉक्कट-मािि' आ 'उचका' दय बजैत िवि तखन एक-एक क' कए पॉक्कट-मािि एवि उचका उव्ह कए ठाढ भ' जाइत अवि)

पॉक्कट-मािि : हुजूि ! हम िी पॉक्कट-मािि !

उचका : हम एकटा उचका िी... लफंगा कही त' सेहो चव्ल सकैिि... गली-मोहल्लाक 'दादा'

ि !

नेताजी : *(जेना संतुष भेल होवि)* िह ,िह....
एत' त' देवख हिल ि सब तहिक लोक
उपवसित भेल वि। हमि मािि फोडैत
काल विीधी पक्क नेता ठीके कहने
िलाह जे सिगष आ नकषक बीचमे हमि
अपन संसाकि एकटा िट- िन सवजल्द
संस्कणि भेक्ट जायत....हमि ऊकडू नवि
लागत दुक्नया िक्ड कए जायमे...!
(िम्हैत) एत त' देवख हिल ि तयो
बाजाकि िि नेने वि त' तयो पेमक
जीिति पोि नेने आ तयो - तयो णिभूक्सँ
सोि बह्दूक नेने उपवसित भेल वि,
बस जे क्किु कमी अवि से....

[क्हनका बाजैत-बाजैत एकटा युकि पशि
कीति अवि, हािमे एकटा ललका िडा
नेने–िमपंि बातचीत हाि भाि तेहने]

िमपंि : जे क्किु कमी अवि से हम पूिि क' दैत
ि।

(सभ तयो चौक्क कए हुनका क्दक्स देखैत
वि)

उचका : *(जेना क्यह्हल लोक होवि)* ि जीतो िके
ि ? वजतेह्दि ?

िमपंि : *(उग सिमे)* जीतो ? के जीतो ?

		कतहुका जीतो? हम त' सब दिन हालि लोकक दिक्स िकल ी।
नेता	:	हँ, हँ से सब त' ठीके ैक–त' अहा एत' आउ ने मंच पि ....*(िमपंि युिक पसन भ' कए मंच पि चढैत िव–दुनू अनुचिसँ आप्यायित भ' कए आि अधिक पसन होइत िव।)* एत' सते अहा सन् महान युि नेता केि अभाि खटकि हिल िल अहा भने हालि लोकक नेता होइ, अहा लोकक्नक िडाक िग जे हो ___लाल क हिवियि, हमिि सभक पीढीक सबटा आशा, अही सब ी...
िमपंि	:	से सब त' ठीक अिव, मुदा *(चोिि के देखा क')* ई के विकाह ?
नेता	:	ई एकटा पैघ कलाकाि विकाह।
चोि	:	*(टोकैत)* हम चोि विकहुँ सकिाि।
िमपंि	:	आँय ?
पॉकेट-माि	:	*(भीडमे ठाढ होइत)* हम पॉकेट-माि !
उचका	:	*(ओहो लगलिह उिक कए ठाढ होइत िव)* आ हम उचका !
िभख-मंगनी	:	*(उिक कय)* हम िभख-मंगनी !
िमणी मोहन	:	हम बलात्काािक सजा भोगा हिल ी–जनताक हाि पीटा क' एत' आयल ी।
िमपंि	:	*(आकोश किैत)* ी,ी, ी ! एहन सभ

		लोक ैक एतय... *(नेताके पुैत)* आ' अहा चोि-चोटा लोकक्ाक नेता विकहुँ ? अफसोस अइ.....
नेता	:	आ- हा-हा ! एतेक अफसोस कऽएक क' हिल ी ? जखन दुक्ाया मे हि तहिक लोक होइत ैक, तखन ई सिभावि क ैक जे एतहु एकि पुनाििक्ा हैत । आ ईसा मसीह की कहैत ििि ?
अनुचि 1	:	चोिक क्ाह्दा कर !
अनुचि 2	:	चोिक नक्ह !
चोि	:	ई बात ईसा मसीह नक्ह कहने िवि.....
अनुचि 1	:	तखन ?
अनुचि 2	:	की कहने िलाह ?
चोि	:	पापक त्याग कर , पापीक नक्ह.....!
िमिपंिी	:	जाय क्दअ धाक्षक गप-शप....! *(चोि सँ)* त' अहा की कह' चाहै ि ? चोिी पाप नक्ह विक ?
चोि	:	(क्ाहुँसैत) 'पाप' आ पुण्यक क्ाह्ता िमिपंिीक सीमासँ बाहकि गप्प भेल। हम कहै िलहुँ दुक्ायाक सबटा जीबैत कवि-किाकाि मुइल कवि-किाकाकि कंधे पि अपन इमाति ठाढ कैति ििि....के केहन कलाकाििसँ अनकि बात के पिसित तकि खेल िइ सबटा.....!

अनुचि 1 : ई कहै वि पीढी-दि-पीढी सब तयो अनकक्ह बात आ वखस्सा पि गढैत अवि अपन कहानी.....

अनुचि 2 : कक्ह वि–क्कि नक्ह नि अवि एक्ह दुक्तयामे.... सबटा पुिने बात !

नेता : अिात् चोायिब एकटा शाशत पिक्त विक ।

ािमपंिा : नॉन-सेह्स !

नेता : कयैक ? पर्थीािज संयुतता के ल' कए चम्मत नक्ह भेल ािलाह ? आ अजुषा कतागदाके ? *(युिा के माि डोलबैत देक्ख)* आ कसुन भगािनके की कहबक्त ? कतहु 'माखन' चोाबैत िवाि त' कतहु 'कपडा लता'...

ािमपंिा : *(खौंाित)* इयैह भेल अहा सब सन नेताक समस्या... अक्हना मािल गेल क्हह्दुस्तान! मौका भेटतक्ह बहा- वािष्णु-महेश के ल' आबैािा उतािव क' ताखा पाि सँ....

बाजाािा : *(मजाक कािित)* हे... आब आक्ब गेल ािा हमही सब ताखा पाि सँ उतवाि सािगक्क दाि मे...चलब ओक्ह पाि तँ ई सब भेट हैबे कािाह।

नेता : मानू, आ कक्क नक्ह मानू.... ािा त' जाक्ह देशक लोग तकाि नामो मे त' इक्तहासे पुािण लेपल अवाि कक्क नवाि ? 'भाित' कही त' 'भति' क काि मोन पडत आ 'क्हह्दुस्तान' कही त' 'क्हह्दू' के कोना अलग क' सकै ािा ?

बाजाािा : *(व्यंग्यक सािमे)* हे - ई सब अपन देश

मे िडे ओिियल हिताह ? ई सब त' बस बामे कात दैखैत हैत वि–ने भाति कहता आ ने क्हिन्दुस्तान ! ई सब त' 'इक्णडया' कहताह 'इक्णडया' !

पॉक्कट-मारि : *(कमि डोला कए दू डेग नाक्चयो लैत वि)* "आइ लि माइ इक्णडया.... आइ लि माइ इक्णडया" !

िमपंिी : *(डपटैत)* िम्हू ! *(पॉक्कट-मारि जेना अधे नाक्च कए पस्त्िाभूत भ' जाइत वि।)* ई सब 'चीप' बात कतहुँ आन ठाम जा क' कर *(नेतासँ)* देश-पेम अही सभक बपौती नक्ह वि क !

नेता : नवि - नवि से हम सब कत' कहलहुँ ?

अनुचर 1 : हम सब त' कक्ह हिल िी– देश-पेमो सँ बक्ढ कए भेल अहा सब लेखे-विशि-पेम !

अनुचर 2 : 'यूक्नसिक्षा बदहिूड' !

अनुचर 1 : *(जेना नािि द' हिल होवि)* दुक्नयाक मजदूर ...!

अनुचर 2 : एक हो !

(एकबेरि आरि नारिके दोहरिबैत वि। तेसरि बेरि जखन अनुचर 1 कहैत वि– दुक्नयाक क्कसान तखन उचका, पॉक्कट-मारि, क्भख-मंगनी, दिीिला अपन-अपन मुटी बन कएने सीना ताक्न कए कहैत

िवि 'लाल सलाम')

िमिपंिी : बंद कर ई तमाशा !

नेता : *(हासिँ इशाि कित)* हे सब गोटे सुनू त' पह्नने ओ की कह' चाहै वि....!

िमिपंिी : *(गंभीि मुदामे)* अहा मसखिी कर क्क तमाशा.... देशक बाहि क्द्दस देखबामे हजे की ?

अनुचि 1 : हजषकोनो नक्ह।

िमिपंिी : बाहसिँ जँ एकटा हि केि िका आओत त' अहा की क्खडकी के बन क' कए िखबै ?

अनुचि 2 : किमक्ष नक्ह !

िमिपंिी : कालषमातसषसन महान क्यक्तक बात हम सब क्कएक नवि सुनै लै तैयाि ि ?

अनुचि 1 : क्कयै नक्ह सुनब ?

िमिपंिी : दुक्नयाक सबटा मजदूि-क्कसान जँ एक सिि मे बाजै त' एक्हमे अपिाध की ?

अनुचिदय : (एकक्ह सििमे) कोनो नक्ह !

िमिपंिी : लेक्कन जे पि दैखौलक्न, ताक्ह पि हम सब क्कयै नवि चलब ?

िमिपंिी : इह्नकलाब !

अनुचिदय : क्जह्नदाबाद !

िमिपंिी : *(मुटी तानैत)* क्जह्नदाबाद, क्जह्नदाबाद !

अनुचिदय : *(नाि देबाक सििमे)* इह्नकलाब क्जह्नदाबाद !

(कहैत कहैत दुनू अनुचा जेबी सँ ि टका सन कैकटा लाल पताका नकालि क' एक-एकटाके हा मे धाँते ता धाबैत मंचक चारकात नाबाजी कँते चक्क काटय लागै ै। दुनूक पा - पा पॉकेट-मा, भीख-मंगनी, उचक्का, दीला सेहो सब जुटि जाइत ै, सभक हा मे ट-ट लाल डी, सभ तयो तहि-तहिक ना दैत ै। एकटा चक्क काटि कए जखन ओ सभ पुन: भारण मंचक लग आबि जाइत ै। मुदा भारण- मंचक लग पहुँचि कए ना केँ तेँ दोसँ भ' जाइत अछि।)

उचक्का : *(जेना मजाक कँ चाहैत ै)* "हम्मा नेता चेयमैन माओ"

बाकी लोग : "बाकी सब तयो दू जाओ !"

चो : *(भारण मंच प सँ)* एक मनट ....म्हू, म्हू ! *(सब तयो चुप भ' जाइत ै, आब मपँ यु आ नेताजी करक्स घुर्व कए बाजैत ै--)* इयैह त' हमहूँ कह चाहैत लहूँ... ने हम लेकन सँ शकायत कि ने चेयमैन माओ सँ..... दुनू अपन देश, अपन लोगक लेल अनेक काज कयलक्ष अ कि शम कयने लाह

भवि क्जनगी ; ने गीतासँ क्शाकायत ने गुरािणी सँ दुनू अप्पन अप्पन जगह मे अत्यंत महतिपूणष अवि... मुदा एतबे कहै िलहुँ जे एक्हमे सँ तयो अिाि ककािुओ हिा सँ नवि बक्ह कए आयल िल.... शूह्य सँ नक्ह उगल िलाह तयो !

(सभ तयो चुप्प भ' कए चोकि दलील के सुनै िवि आ तकि तकष के बुिक' पयास कीत िवि।) सब एक दोसािसँ जुडल िवि । मातसष नवि होइतवि त' भवसिक लेक्लनो नवि, आ ओ अयलाह तै माओ सेहो... पत्येक घटनाक पूषिक होइिैक.....

िमिपंिी : *(हँसैत)* माने तयो 'ओविक्जनल' नवि सबटा 'डुप्लीकेट', तयो नक्ह असली सबटा नकली !

(सभ हँक्स दैत िवि)

चोिि : हम कत' कहलहुँ..... 'सब तयो नकली, सबटा चोि !' ई सब त' अहा लोकक्न कक्ह िहल िी। *(िम्हैत)* हम मात कहल, कोनो बात पूणष र प सँ नि नवि होइत अवि... ओक्हमे कतेको पुिनका पसंग िहैत अवि ठूसल !

नेता : *(सभक क्दक्स देखैत)* तकष त' जबदिस्त

देने वि *(िमिपंि ि युिक क्यंग्य कंित)*
नीक-नीक के पिक्ड देने वि ।

अनुचि 1 : मुदा क्हनकि थ्योंिक नाम की भेलक्त ?

अनुचि 1 : कोन नामसँ जानल जायत ई....?

नेता : क्ये ? 'चोि पुिण'!
(*सब तयो हँसैत वि–िमिपंि ि युिके िक्ड–हुनका अपन पिजय सींकायष नवि िक्त)*

बाजािी : त' सुनै जाउ हमि गीत....
नेता आ दुनू अनुचि: हँ ,हँ, भ' जाय...!

बाजािी : (गाबैत वि आ कनी-मनी अंग संचालन सेहो कंित वि)
एत' चोि कोतािल के डाटै,
गाबै जाय जाऊ चोि-पुिन !
कतबा नि ि कतेक पुनिका,
के ि जानी के अजान ?
गाबै जाय जाऊ चोि-पुिन !
गतष्क भीति शतषिहै ि इ,
शतष्क भीति भूि पुिन !
नाच नचै ि गीत गबै ि इ,
सब केि बाहि भीति ठान !
गाबै जाय जाऊ चोि-पुिन !
नि त' क्िओ नवि ि इ बौआ,
सबटा जानल ि इ पक्हचान !

एक-दोसरिके जोवड दैत अवि,

धोख् वधनक-वधन् चोरि पुनि!

गाबै जाय जाऊ चोरि-पुनि !

(जखन ओ एकक बाद एक पाक्त गाक्ष हिल लिाह, धीरि-धीरि आनो लोग सब गाबै - नाचै मे अपनाके जोवड हिल लिाह। अनुचरि 1 कतहु सँ एकटा गेदा केरि माला ल' क' चोकि गरि मे पवहरि दैत रवि। अनुचरि 2 एकटा रिरि मे कपूरिक दीप बारिति चोकि आरिती सेहो क' दैत रवि वमख-मंगनी आगा बवढ चोरि के वतलक सेहो लगा दैत अवि। धीरि-धीरि चोरि मंच सँ उतवि कए नचैत-गबैत लोग सभक बीच आवक्ष जाइत अवि–तारित् गीत चवलए हिल लि)

बाजारि : हम रिी चोरि आ चोरि अहूँ रिी,

साधु-संत घनघोरि अहूँ रिी !

च-रि-ज-रि रिरि अही रिी,

नदी वकनाकि जोरि अही रिी !

रिरि बहइ यै करि बखान,

गाबै जाय जाऊ चोरि-पुनि !

नऽरि तवक्षक रि दऽ ब तकरि गरि,

परिवख-रिवक्ष कए रिख बरिबरि,

प-फ-ब-म मोरि अही रिी,

अह्हाी केंि ीिा अही ीि !
कोँ ीि अहीके कपट-पणाम!
गाबै जाय जाऊ चोंि पुिन !

[नाचैत-गाबैत, ढोल थापपही बजबैत सब तयो गोल-गोल घुमै छथि। भारण मंच पर मात नेता आ मिर्पार्टी युवि एक बेर नचबाहाि सभक दरक्स आ एक बेरि एक-दोसाकि दरक्स देखब हिल लिाह धीरे-धीरे पकाश मद्धम भ' जाइत अछि आ अंतमे कल्लोलक समावत भ' जाइ छि।]

***

तेसर कल्लोल

तेसर कल्लोल

[भाषण - मंचपर नेता आ मिसिरजी युगल पूर्णिमित ठाढ छथि-हुनके दुनू पर प्रकाश पड़ैत अछि। बाकी मंच पर लगइत अछि एखनहु भोरका कुहेस अछि-सब तयो अधखाजागल अधनिन्नमत जका पडल छथि। मात चारिटा मत सैनिकक बन्दूक ताननने भाषण - मंचक आस - पास पहरी दैत नजरि आबि रहल छथि। तीनटा स्पॉट लाईट-दूटा भाषण-मंच पर आ एकटा बुलंद दबिजजा पर पडल।।]

मिसिरजी	:	*(कुर्धाकि सरिमे)* एकटा बात साफ-साफ बाजू त'...
नेता	:	कोन बात ?
मिसिरजी	:	इयैह, ई चोबिा जे कालि बाजल छलि छलि...
नेता	:	से ?
मिसिरजी	:	अहा तक सभटा विशास करैत छी ? *(नेता हँसैत दैत छथि। से देखि मिसिरजी युगल खखसया जाइत छथि।)* हँसल किएय छलि छी ?
नेता	:	किएयै ? हँसी पर पानंदी छैक की ?
मिसिरजी	:	हँसी पर किएयैक छित पानंदी ? मुदा आर कतेको बात पर पानंदी त' छैक.. अहाक पाटी तक मानत तखन ने ?

नेता : हमि पाटी जकाि मानलक अवि, हमाि ताक्ह पि कोन आपक्त ?

ि मिपंि ी : *(बातके काटैत)* ि ूठ ! सबटा फूक्स !

नेता : से कोना ?

ि मिपंि ी : *(तकषदैत)* कयैक ? ई नवि कावशात भेल जे हमसब बाह्हल ि हिब एकटा बंधन मे ?

नेता : हँ, गठ-बंधन त' भेल ि लि, जेना वमलल-जुलल सि कािि मे होइ ि इ...?

ि मिपंि ी : *(व्यंग्य काि ेत)* आ तकि कैकटा असूल सेहो होइत ि ैक....

नेता : जेना ?

ि मिपंि ी : जेना सबटा महतिपूणष बात पि आपसमे बातचीत क' कए तखन दुवनयाक सामने मुँह खोलब... की ? एहन वाशय भेल ि लि ाि नवि ?

नेता : हँ...!

ि मिपंि ी : आ ताक्ह बातपि हमसब सि कािि के बाहि सँ समि षि द' ि हिल ाि... ि ैक नवि ?

नेता : बेशक ! ठीके बात बाव्ज देलहुँ।

ि मिपंि ी : मुदा अहा की क' ि हिल ाि ?

नेता : की ?

ि मिपंि ी : *(आि धीि जि नवि ध' पबैत ि वि --)* तखन बात-बात पि हमाि सब सँ हँव्ट कए वबल्कुल आने बात कयै काि लागै

ि? सक्दखन विािध कयै कि चाहै ि?

नेता : “िह ि भैया ! िह कह्लैया–
जैह कहै ि जतबे टा हो–
सब मे कव्ह दी ता-ता-िया ?”
की बुि ि, अहा सबक नाड्वि धैने चलत हमि पाटी ?

िमपंि : पयोजन पडत त’ सैह कि पडत !

नेता : हँ ! से क्हंि त्यावाये दी त’ नीक ! की त’ हम सकिा के नैक्ताक समिषा दै ि ? तकि माने की, इयैह जे अहा अंट-संट जैह कि बाजब, हँ-मे-हँ कह’ पडत ? *(िमपंि कि कह’ चाहैत िवि)* बात त’ ओ कलाकाि लाख टाकाक कव्ह िहल िल। चोिि कैत िल तै की ? तकषत’ ओ ठीके देने िल...िूठ त’ नवि बाक्ज िहल िल ओ !

िमपंि : तखन आि की ? चोि उचके के अपन पाटी मे िवख क्लयह।

नेता : कयै ? िाजनीक्त मे एतेक बडका-बडका चोिि क’ कए कतेको गोटे त’ पख्यात भैये गेल िवि। आब हुनका सभक पास हैंबाक योग्य कतेको िस्तु हेतक्त ! मुदा तकिा लेल अहा आ अहाक पाटी कयै डैि ि ?

िमपंि : हम सब कयै डबि ? हम सब की सकिा चलबै ि जे डि हैत ?

नेता : *(हँसैत)* ठीके कहलहुँ ! सब सँ नीक त' ि अही सब-ने कोनो काज कबािक दायत ने कोनो हेंबाक दुशाहता, मात बीच-बीच मे कनका सािल पूि त' हुनका खेदावड के भगाउ ! नक त' हमि सभक पाटषे के खबदिा कीं लागै ि...... डि धमका क' चाहै ि बाजी मावि ली---

िमपंि : ई त' अहाक सोच भेल। हम सब त' मात सदिक आलोचना कीते ि– "कॉहसटकाटि ककटकसजन" !

नेता : आ हम सब अहा लोककाक पाि घुविते फकि कहै ि–

"िह ि िमा बम-बम भोले !
दाकहना नवि जो बामा बोलै !
दकिन घुिने पाण िहत नवि !
अंकक जोि सािे िहत नवि !
कतय चकेि, सामा डोलै,
"िह ि िमा बम-बम बोलै !"

िमपंि : *(एसगीि कयंग कीते िपडी पाडैत िव)* िह ! कविता त' नीके क' लै ि।

नेता : हम सब ि िजनीकाक उपज, हमि सब

बुते सबटा संभि अवि.....

िमपंि : ि ि त' नेता, मुदा भ' सकैि....

नेता : *(बात के जेना लोकक लैत छथि)* अवानेता सेहो !

[कक्हते देरी बाहरि हल्ला मचै लागैत अछि–जेना उच्च-स्वरिमे फकलमक गीत बाजि रहल हो ; तकरहि संगे तालीक गडगडाहट, सीटीक आवाजि सेहो ।

हो-हल्ला होइत देरी मंचो परि सुस्तायल लोग सबटा मे जेना खलबली मचि गेल हो। सब तयो हडबडा कए उठैत एक दोसरि सँ पूछि रहल छथि–'की भेल, त' की भेल ?'

तावति एकटा नमहरि माला पहिरने एकटा फकलमी हीरो प्रवेश करैत छथि। पाछाँ-पाछाँ पाच-दसटा धीया-पुता सब 'ऑटोग्राफ'क लेल धावति होइत छथि। दू-चारि गोटेक खाता परि गाछक संग अपन हस्ताक्षर करैत–"बस, आब नहि, बाकी बादमे...." कहैत अवानेता मंचक दिस अगुआ आबैत छथि। आँखिक करिया चश्मा खोलि हाथि मे लैत छथि। मंच परक लोक सब तालीक गडगडाहट सँ हुनकर स्वागत करैत छथि–तावति धीया-पुता सभ धुरि जाइत।]

अवानेता : *(भारण-मंच परि चढैत)* नमस्कार बन्धु

बाबू, जय क्सयामि !

नेता : नमस्कारि ! मुदा अहा के की भेल लि जे एत' आब' पडल ?

अवमनेता : हि... जे होइते कि... अपन 'स्टंट' अपनक्ह क' हिल लिहुँ मोटरि साइकल परि सारि भ' कए ....आ क ऐक्सिडेट भ' गेल... आ सोरि एत' चल अयलहुँ...

नेता : अहो भाग्य हमरि सभक।

अवमनेता : *(हारि सँ हुनक बात के नकारिबाक मुदा दैखबैत)* जाय क्दअ ओक्ह बात के, *(रिमर्परि युरि के देखा कए)* मुदा.. क्हनका नक्ह क्यह्हक्लयक्त।

नेता : ओ-हो ! ई रिव नरिन क्शरिल ! कॉमरिडि हमरि सभक समरिष्क विकाह।

अवमनेता : *(सलाम ठोकैत)* लाल सलाम, कॉमरिडि !

रिमर्परि : *(हारि जोक्ड कए नमस्कारि करति रिव– ततबा पसन नक्ह बुरिइत रिव।)* नमस्कारि !

नेता : *(अवमनेताक परिचय करिबैत)* क्हनका त' क्यह्हते हैबक्त....!

[रिमर्परि युरि के मारि क्हलाबै सँ पक्हनक्ह बाकी जनता चीत्कारि करति कहैत अवि– "विकि कुमारि!"आ पुनः ताली बजा कए क्हनक अवमनक्दन करति अवि। आवमनेता

अपनहु कखनहु ि‍क्क कए, कखनहु आधुक्तक भंवामामे हाि क्हला कए त’ ककहि क्‍दक्स “आदाब” कबाक अवभनय क‍ित वि‍–हुनक हाि-भाि सँ स्पष अवि जे अपन लोकवायताक खूब उपभोग क’ हिल वि‍।]

ि‍मिपंि‍ी : क्हनका के नक्ह जानत ? टी.िी. केि ि‍टि पदा सँ ल’ कए फक्लमक पदा धवि ई त’ सक्दखन लखा दैत वि‍---

अवभनेता : *(एकाक्यक अि‍ **षे**)* ि‍ी त’ हम सबटा पदा पि, मुदा पदाफाश कबा आ क‍िबा लेल नवि... मात अवभनय कबा लेल !

ि‍मिपंि‍ी : ‘पदाफाश’ कयै नवि..

अवभनेता : *(ि‍ितय के पूि नक्ह क‍ि दैत वि‍)* हम तँ मात सैह बाजै ि‍ी जे बात आने तयो गढैत अवि....

नेता : ठीक ! पदाफाश त’ ओ कति जकि सक्दखन कि‍ नि कहबाक आ नि खबवि बेचबाक ‘टेनशन’ हिल हो ! *(‘हेडलाइन’ दैखैबाक लेल दुनू हाि के पसावि कए-)* ‘बेक्कंग ह्यूज’ नकिा खबवि, टटका खबवि, हेडलाइन !

अवभनेता : औ बाबू–हम ने नि बात कहै ि‍ी आ ने कक्ह सकै ि‍ी... हमि डोवि त’ कािकाि

आ क्रादेशकक हाि मे हैित अिव... ओ कहैत िवि 'िमि कहू' त' 'िमि' कहै िी, कहै िवि 'नमाज' पढ़ू त' सैह करै िी।

अनुचि 1 : कहल जाइ िक, बाम क्र्क्स घुर आ खूब नाि लगाउ....

अनुचि 2 : त' शोि करि लागैत िवि ''मानिी ना'' ''मानबो ना'' !

अनुचि 1 : मानब निव, जानब निव...
तोिी आि के गुदानब निव...

अनुचि 2 : हम जे चाही मानै पडत,
निव त' िजि गमाबै पडत !
(नेता आ दुनू अनुचि हँक्स दैत िवि। अवमनेता सेहो कौतुकक बोध करै िवि)

िमिपंिी : *(व्यंग्य करैित)* माने ई बुिी जे अहा जे कि्ु करै िी, सबटा घीसल-पीटल पुनिके कि िि....?

अवमनेता : घीसल हो िि पीटल, तकि दावयति हमि विक िडबे ?

िमिपंिी : त' ककि विक ?

अवमनेता : तकि सभक दावयति िक आन-आन लोकक... हमि काज मे बाकी सबटा त' पुिने होइ िइ...कक्हयहु- कखनहु 'डायलॉग' आ गीतक बोल सेहो ...मुदा कि्ु क्हिते िइ नि, निव त' तकिि

पक्लक कयै लेत ? *(एतबा सुनतह्न चोि उब्ब कए ठाढ होइत अर्वि)*

चोि : अिं, इहो त' हमकिह्न बात दोहिा हिल िवि...जे...

अनुचि 1 : नि नर्वि, कखि नर्वि, कखि नि नर्वि...

अनुचि 2 : बात पुिाने, नि पर्वचय...

अनुचि 1 : सौ मे आधा जानले बात...

अनुचि 2 : बाकी सेहो ि इहे साि !

चोि : *(दुनूक कर्विता गढबाक पयास के अर्स्वीकाि कर्ति आ अपन तकषके आगा बढबैत)* नर्वि, नर्वि हम 'मजाक' नह्न कीि चाहै िी...इयैह त' हमहूँ कहै चाहै िलहुँ जे संसाि मे सबतर्वि पुिाने बात पसलि अर्वि...नि कखि होइ ि इ... मुदा कह्नयहु - कखनहु...

बाजाि : *(गला खखार्वि कए...एतबा काल, जावा जैबाक बादो मात शोताक भूमकाक र्वाहि क' हिल िलाह)* हँ-हँ, आब माक्स लेक्लयह तोहि बात नि- पुिानि दय... मुदा कहै ि ह 'संसाि सँ बाहि कनकलू तखन नि-पुिानक सबटा क्हसाब बदक्ल जाइ ि इ ?

चोि : हमिा सन चोि की जानत आन ठामक

खबर्वि ?

अनुचर्वि 1 : ठीक !

अनुचर्वि 2 : चोर्वि की जानत सर्विगष्क मव्हमा ?

चोि : जतय हम सब एखन ि ी, भ' सकैि एतहुका कायम कि ु आि हो...

अवमनेता : ठीक कहलह हौ ! भ' सकैि, एतय ने कि ु नि होइ ि इ, आ ने कि ु पुिन !

नेता : ने तयो दवि न कि सकैि आ ने बाम !

चोि : आ ने नेता आ अवमनेताक बीच मे कोनो फकषकि जाइि...

अवमनेता : *(हँसैत)* ओहुना, हमि सभक पथी पि नेता िडे कोनो नि बात कहै िवि... खाली हमि सब पि दोर कयै दै जाइ ि इ लोक ?

िमपंिी : आ बानु अवमनेता भेने क तयो नेता बक्ष सकैत अवि ?

चोि : कनहु नवि !

नेता : ओना देखल जाय त' दुकया मे एखन 'कॉम्पीटीशन' बड बेसी िैक...सबटा अवमनेता चाहै ि इ जे हमहूँ नेता बक्ष जाइ... हमहूँ कयै नवि देश चला सकै िी ?

चोि : खाली हमि सभक जाक्त-बािदिी ि इ जे कखनहु सपनो नवि दोक्ख सकै ि इ नेता बनबाक....चोि- उचका-मखािी- िदीिला िी...िलहुँ आ सैह कि जायब...

िमपंिी : मुदा अहूँ सब के मोसकल होमै िला

अवि....

चोि : क्यै ?

िमिपंिी : क्यै त' चोि नक्हयो नेता बक्न सकय, नेता-लोकक्न त' चोिी कीि मे ककहिु सँ पाि नवि होइ िवि। जेम्हीि देखू... सब ठाम 'स्कैंडल' एक सँ बक्ढ़ कए एक...

नेता : *(खौंिैत)* मोन िखब...अहूँक पाटीमे गुंडा-बदमाश भिल अवि....सब िटल चोि-उचका...(एक्ह बात पि चोि-उचका-वमख-मंगनी आक्द सब हँक्स दैत िवि।)

अवमनेता : *(िमिपंिी, नेता के क्नि कटु शब्द बाजै लगताह से बूवि , तकिि िकैत)* औ बाबू ! हम त' एत' निि िी , मुदा हमिि त' लागैये .... एत' ने क्न्िु 'हम्मि' िीक आ ने किु अनकि तै ने चोिीक पश उठै िइ आ ने सीना जोिीक !

चोि : ठीक...ठीक ! क्बलकुल ठीक कहलहुँ। (*अवमनेताक बात शुरु होइत देिी मंच पि एक गोट उच्च- शिीय मक्हला पिशि कीति िवि आ अवमनेताक बाद चोि के उक्ठ कए ठाढ भए बात कीति देक्ख सोि चोिकि लग चक्ल आबै िवि अपन पश पूिैि।)*

मक्हला : *(चोि सँ)* एकटा बात कहू... एत' सिगिक

दाि त' इयैह विकि क्क नव्ह ? *(बंद दबिजजा के देखा कए)*

चोि : आँय !

मव्हला : सिगिष्क दबिजजा.... ?

िमणी मोहन : *(उत्सुकता देखबैत, उक्ष कए लग अबैत)* हँ-हँ ! इयैह त' भेल सिगिष्क पशि दाि !

मव्हला : *(िमणी-मोहन क्ष्स सपश)* त' एत' की कोनो तयू- 'क्सस्टम' ि इ ?

बाजाि : *(उक्ष कए ठाढ भ' जाइत विि, जेना पुन: कताि बनाबै लेल जुक्ट जैताह)* हँ से त' िइहे....

[ई बात कहैत देिि जेना 'भगदड' मक्ष जाइत अवि आ पुनः सब तयो कुसी पि सँ उक्ष-उक्ष के कताि मे जुक्ट जैबाक पयास किति विि। तयो-तयो सबटा कुसी के तह लगैबाक पयास किति अवि त' तयो सबटाके मंचक एक कात हँटा कए कताकि लेल जगह बनैबा मे जुक्ट जाइत अवि....तयो हल्ला - गुल्ला आिभ क' दैत विि। नेताजी माईक पि सँ "हे, सुनै जाउ" "शात भ' जाउ" आव्ह कहै विि, मुदा हुनकि बात सभक हल्ला - गुल्ला मे जेना डूक्ष जाइत िक्ष। दुनू अनुचाि नेताजीक देखा-देखी कैक गोटे के

समािबै - बुिबैक पयास कर्ै िवि, मुदा तयो नक्ह तैयाि िवि क्हनका दुनूक बात मानै लेल। कनेके देि मे मंच पि सँ सब कि् हँक्ट जाइत अवि आ पुनः एकटा कतािि बक्त जाइत अवि..... पुनः पिमे दश्य जका कतहु-कतहु जेना संघरष चक्ल हिल होइक गुप्त रप सँ। भारणक मंच पि मात तीन गोटे िवि–बीच मे अवमनेता, बामा क्दक्स िमिपंिी युिी, आ अवमनेताक दकक्ण क्दक्स बदिी बाबू.... चार मत सैक्तक पुनः कतािक लग ठाढ िवि। मात िमणी- मोहन, मक्हला आ चोि िवि मंचक बीचो-बीच, सबटा अिक् भ' कए देखैत।]

मक्हला : *(चोि सँ)* हे, अहा सभक एत' 'लेडीज' सभक लेल अलग 'तयू' नक्ह होइ िक ?

चोि : अलग 'तयू' ?

िमणी-मोहन : हँ-हँ, कयै नवि ? अहा की एकि सभक संग धका-मुकी कबि ? *(मक्हलाक हाि ध' कए)* आउने–*(एकटा पिक तयू बनबैत)* अहा एत' ठाढ भ' जाउ िी.आई.पी. तयू विकै... जेना मंक्दि मे नवि होइ िइ ?

चोि : िी. आइ. पी.... एतहु ?

ि मिपंि ी : *(भारण मंच पि सँ उतिते ि वि)* बात त' ई ठीके बजलाह।

अवमनेता : *(अव्यकति फुती देखबैत ि ि.आई.पी. तयू मे ठाढ होइत)* ई त' पर्थीक मनुतखक लेल नि बात नव्हये वि क... *(चोसिँ)* तै एव्हमे आशयषवकये भ' िहल िह ?

[तािि नेता, हुनक दुनू अनुचि आ ि मिपंि ी युि मे जेना स्पधा भ' िहल होइक जे के, ि ि. आई.पी. तयू मे पव्हने ठाढ हैताह। एकटा अनुचि मिणी-मोहनके पकव्ड कए "हे ...अहा ओत' कोना ठाढ ि ि"? कहैत ि ि. आई. पी. तयू केि पाि ि आव्स कए ठाढ क' दैत िवि। अवमनेता आ मव्हला आपस मे गप-शप आ हँसी मजाक कि लागैत िवि। मिणी-मोहन मूडी ि ुकौने तयू केि अंत मे ठाढ िहैत िवि। ि मिपंि ी युि िलाह अवमनेताक पाि ि ठाढ, हुनकि पाि ि बदिि बाबू आ एकटा अनुचि–जे बदिि बाबूक हाि आ पीठ मे आिमि द' िहल िलि। आ दोसि अनुचि ठीक क' नेने िलि- अपनव्ह मोने जे दोसि तयू साधाणि मनुतख बाला- तकि देख-ि खिक दाव्यति तकि पि िकि। तै ओव्ह तयू मे असंतोर

आ िट-मोट िगडा के डाक्ट-डपक्ट कए ठीक क' हिल लि। आ हठात् मंच पि एक्ह विशाल पर्विताषक क्दक्स अिक भ' कए देखैत चोि कोनो तयू मे ठाढ नक्ह क्हि कए भारण-मंचक पासे सँ दुनू कतािि क्दक्स देक्ख हिल लि।
यम आ पािू-पािू क्यतगुप्त पिशि करिति र्वि। युकि हािमे एकटा दंड आ माि पि मुकुट, पर्विधेय िलक्स िजकीय, हाि- भािि सँ दुनू कतािि मे जेना एकटा खलबली मक्य जाइत अर्वि। कतेको गोटे "हे आक्ब गेलाह" हि र्वि, "हे इयैह त' र्विकाह !" आक्द सुनल जा हिल लि। क्यतगुप्तक हािमे एकटा मोट पोिि िलक्स जे खोक्ल-खोक्ल कए नाम-धाम बला लेबाक आदक्त िलक्स हुनकि। यमाजि पर्विष भ' कए सिषिम साधािणि मनुतखक कतािि क्दक्स देखैत र्वि आ जेना एक मुहूतर्क लेल ओत' िम्हैत र्वि। सब तयो शात भ' जाइत अर्वि- सभक बोलती बंद–जे अनुचि कतािि के ठीक क' हिल लि–ओहो साधािणि मनुतखक कताकि आगा क्दक्स कतहु उचके लग घुक्सया कए ठाढ भ' जाइत

अछि। यमाजि पुनः आगा बढैत छथि त' डी. आई. पी. कताकि पास आबै छथि– ओत' ठाढ सब गोटे हुनका नमस्कार करैत छथि। सिपाही युवा अवमनेता सँ पूछैत छथि "ई के छिकाह ?" उत्तर मे अवमनेता जो कथि कहैत छथि से पूर्णरूपसँ स्पष्ट त' नहि होइछ मुदा दबले स्वरे बाजै छथि "चिन्हलहुँ नहि ? "ईयैह त' छथि यमाजि !" सिपाही युवा घबडा कए एकटा लाल सलाम ठोकि दैत छथि आ पुनः नमस्कार सहो करै लागैत छथि। यमाजि हुनकर सभक उपेक्षा करैत चोकि लग चलि आबै छथि भारण मंचक लग मे।]

यमाजि : *(चोरि सँ)* अहा एतय कथैक छी महात्मन् *! (हुनक एहि बात पर, विशेषतया 'महात्मन् !' एहि संबोधन सँ जेना दुनू कतारि मे खलबली मचि जाइत अछि। एतबा धरि जे चार मत सैकक सँ ल' कए सब तयो एक दोसर सँ पूछै लागैत छथि...."महात्मन् ?" "महात्मा कथैक कहलाह ई ?" "ई सत्ये महात्मा छिकाह की ?" "ई की कहि हिल छथि ? " त' तयो-तयो उत्तर मे... "पता नहि !" ने*

जाक्त क्रयैक... । भ’ सकैि... आक्व,आक्व बाजै लागैत ि वि । पर्वि श जेना अशात भ’ जाइत अर्वि यमाजि असंतुष भ’ जाइत ि वि) आ ! की हल्ला कि जाइ ि ी सब ? देक्ख नक्ष हिल ि ी जे क्षनका सँ बात क’ हिल ि ी ? *(हुनकि डाट सुक्त दुनू अनुचि ठोि पि आङ्गि धैने “श्-श्-श्-श् !” आक्व कहैत सब के चुप किबैत अर्वि । हठात् जेना खलबली मचल ि लैक तक्षना सब तयो चुपचाप भ’ जाइत ि वि ।)*

चोि : *(वहिल भ’ कए)* महाजि !

यमाजि : *(चोि क्वक्स घुिति)* हूँ त’ हम की कक्ष हिल ि लहुँ ? *(उतकि अपेक्ष ि क्ष क्षतगुप्त सँ)*

क्षतगुप्त : पभु, अपने क्षनका सँ आगमनक काणि पूर्वि हिल ि क्तयक्त...

यमाजि : *(मोन पडैत ि क्ष)* हँ ! हम कहै ि लहुँ *(चोि सँ)* अहा एत’ क्रयैक ?

चोि : *(घबडाइत)* नर्वि महाजि, हम त’ कतािि मे ि लहुँ....सब सँ पाि... ओ त’ एत’ ाजिनीक्त केि बात चक्ल हिल ि ल ... आ नेताजी लोकक्त आक्व गेल ि लाह तै....

यमाजि : *(आशयष होइत)* ‘ाजिनीक्त’? ‘नेताजी’?

माने ?

(नेताजी घबडाबैत गला खखाित कताि सँ बव्हाि कए आगा आवा जाइत िवि। पाि-पाि िििबैत दुनू अनुचि सेहो ठाड भ' जाइत िवि।)

नेता : *(बाजबाक पयास कित िवि साहस क' कए मुदा गला सँ बोली नव्ह सकलैत िक)* जी... हम िि 'बदिी-विशाल'!

चोि : इयैह भेला नेताजी !

(तािि िमिपंिि युिि सेहो अगुआ आबै िवि।) आ ईहो िवि नेताजी--- मुदा िमे कने लाल !

क्वतगुप्त : *(मुस्की लैत)* क्वनकि िगि लाल त' हुनकि ?

(नेताजी के देखाबैत िवि)

चोि : ओ त' कहैत िवि 'हवियि' मुदा...

क्वतगुप्त : *(जेना सत्ये जानै चाहै िवि)* मुदा ?

चोि : जे क्वह्दा किि इि से कहै िइ िगि िक 'काि'!

नेता : नवि, नवि....हम क्वल्कुल साफ िि, महाजि, क्वल्कुल सफेद....

िमिपंिि : *(क्वयक्व दक्व एँ नेता के दैखैत)* ने 'हवियि' िवि आ नवि 'काि.... मुदा िक क्वनकव्ह सकिाि ! *(अंक्वम शब्द पि जोि*

दैत छथि नेताजी कोधक अभिव्यक्ति के गीळड जाइत छथि)

क्षतगुप्त : बुझलहुँ—ई छथि नेता सभक, अर्थात् 'नायक' आ *(अभिनेता के देखा)* ई छथि 'अभिनेता' अर्थात् 'अधिनायक' आओर अहा छी....

नेता : *(गतिय के समाप्त नहि होमै दैत छथि)* खलनायक !

(यमराजि के छोड़ सभ तयो हँस दैत छथि हँसीक धारि कम होइत बंद भ' जाइत अछि जखन यमराजि अपन दंड उठा इशारा करैत छथि सब शांत भ' जाइत छथि।)

यमराजि : *(आजि कम नहि भेल अछि से देखि)* देख्य हिल छी सब तयो जुटल छी एत'— नेता सँ ल' कए अनु-नेता धरि...

चोर : उपनेता, निनेता, पनिनेता - सब तयो !

यमराजि : मुदा ई नहि स्पष्ट अछि जे ओ सभ कतारि मे ठाढ भ' कए एना धका-मुकी कथी क' हिल छथि।

अनुचर 1 : *(जा कए घेट पकड़ कए पॉकेट-मार के ल' आनैत छथि—पारि-पारि उचका अहूना चक्ल आबैत अछि)* हे हौ ! बताबह-- कथीक धका-मुकी क' हिल हि ?

पॉकेट-मार : हम कत' धका द' हिल लिहुँ, हमरा पर त' सब तयो गरजैत-बरिसैत अछि।

[तारित यमराजि (अपन चश्मा पकड़ने कए) चित्रगुप्तक खाता के उल्टा-पुल्टा कए देखै चाहैत छथि–अनुचर दुनू भाग- दौड कए कतहुँ सँ एकटा ऊँच टूल आनि दैत छथि। टूल के मंचक बाम कात राखिल जाइछ, ताकिपर विशालाकार रजिषर के राखि कए यमराजि देखब शुर करैत छथि। नंदी-भंगी अगुआ कए हुनक सहायताक लेल दुनू बगल ठाढ भ' जाइत छथि–अनुचर-दुनू के पाछाँ कात धकेलि कए। नहि त' अनुचर दय के मोन छैक रजिषर मे झाँकि कए देखी जे भाग मे की लिखल अछि। मुदा धका खा कए अपन सन मुँह बनबैत पुनः नेताजीक दुनू कात जा कए ठाढ भ' जाइत छथि। यमराजि अपन काज करैत लागैत छथि। हुनका कोनो कात ध्यान नहि छनि। नंदी अपन जेब सँ एकटा तह लगायल अछि 'रोलि' कैल कागज के खोलैत छथि आ जेना अपनहि तीनू मे एक-एक क' कए नाम पढ़ि हिल छथि एत' उपस्थित लोग सभक आ भंगी रजिषरकि पना उल्टाबैत

िणानुकमक अनुसाि ओ नाम खोक्ल कए बहाि कति वि–तखन यमाजि 'विकाडष के पढै वि, क्नका तीनू के आन कोनो क्दक्स ध्यान नक्ह क्ि।]

क्यतगुफ्त : मुदा ई त' बताऊ- ओना ओत' कताि बना कए ठाढ क्कयै ि ?

पॉक्कट-माि : हुजूि सिगषजाय चाहै ि....

उचका : ई ! लुच्चा नक्हतन, मोन भेल त' 'चलल मुिगि हीिे बनय'.... सिगषजैताह...मुँह त' देखू !

क्यतगुफ्त : *(ि म्हबैत)* जाय क्दयहु क्नकि बात... मुदा ई बताऊ–एत' कताकि तात्पयष की ?

चोि : नवि बुिलहुँ...कताि लगायब त' हमि सभक आदक्ताये बक्न गेल अवि..

पॉक्कट-माि : *(उचका क्दक्स दैखबैत)* आ कताि तोडब सेहो....

नेताजी : *(जेना आब फुलिक्न)* ई सब त' हमि सभक सभ्य समाजक क्यमे बक्न गेल अवि... धीजि धिि, अपन बेिि आबय तखने अहा के सेिे भेटत...

अनुचि 1 : चाहे ओ िलिक क्टकट हो...

अनुचि 2 : चाहे क्बजली-पाक्नक क्बल...

चोि : कतहु फोन कर त' कहत "अब आप

तयू मे है''... आ क्क बस बाजा बजबै लागत... *(पॉक्कट-मा ि टेक्लफोनक 'कॉल होक्लडंग' क कोनो सु ि के मुँह सँ बजा दैत ि वि।)*

क्वतगुप्त : मुदा एत' कोन से ि क अपेक्ा ि ल ?

नेताजी : माने ?

चो ि : नवि बु ि क्लयैक ?

अनुच ि 1 : अहा बु ि ल ?

अनुच ि 2 : जेना ई सब बात बु ि ि वि !

चो ि : सब बात त' नक्हये बु ि ि ी–मुदा ई पूवि हिल ि वि, एत' कोन लडडू लेल कता ि मे ठाढ ि ी अहा सभ ?

क्वतगुप्त : हम सैह जानै चाहै ि लहुँ... कोन बातक पतीक्ा क ि ि लाह ई सब गोटे ?

चो ि : *(अनुच ि 1 के)* अहा बताउ ने क्कयैक ठाढ ि लहुँ ?

अनुच ि 1 : *(तोता ि बै लागै ि वि)* हम..माने...

चो ि : (अनुच ि 2 सँ) अच ि त' अही बताउ.... क ि ी लेल ठाढ ि ी एत' तयू मे...?

अनुच ि 2 : सब तयो ठाढ ि वि तँ हमहूँ ...

अनुच ि 1 : हम ि सभक महान नेता बद ि ी बाबू जखन कता ि मे ठाढ क्कि कए पतीक्ा क' सकै ि वि, तखन हम सब क्कयैक नक्ह ?

क्वतगुप्त : *(हुनक बात के समाप्त होमै नक्ह द' कए)*

मुदा पतीक्ा कि्ीक िलक्ा ?

चोि : क्नकि पतीक्ा ?...सेहो कक्ह सकै ि्ी !

पॉक्कट-माि : ई सब त’ कहै िलाह–िभा–संभा...

चोि : (हँसैत) धत् ! मेनका िभा, उिषी...(हँसैत िव्ि)

क्ातगुफ्ा : ओ ! त’ पतीक्ा कि् िलहुँ कखन दिबज्ा खुजत आ अप्सिा सबटा अयतीह ? *(हँसैत िवि।)*

नेता : *(पक्ािदक सिमे)* नक्ह-नक्ह... हम सब त’ इयैह पतीक्ा क’ िहल िलहुँ जे...

अनुचि 1 : .....कखन अपने लोकक्ा आयब...

अनुचि 2 : .....आ कखन सिगषक दाि खुजत....

नेता : आ कखन ओ घडी आओत जखन हम सब सिगषजा’ सकब !

[कहैत-कहैत मंचक पिविशि सिपक्ल बक्ा गेल आ कैकटा नत्ागना/अप्सिा नाचैत-गाबैत मंच पि आक्ा जाइत िवि.... नत्-गीतक संगक्ह धीिे-धीिे अह्ाि भ’ जाइि।]

***

चतुर्थ कल्लोल

चतुर्थ कल्लोल

[जेना-जेना मंच पर प्रकाश उजागर होइत अछि त' देखल जायत जे यमराज क्षतगुप्तक किर्सर कें चेकिंग क' रहल छथि। आ बाकी सब गोटे सशंक भेल लए ठाढ छथि। कनिये देर मे यमराजक सबटा 'चेकिंग' भ' जाइत छनि। ओ किर्सर परसँ मुडी उठौने अपन चश्मा के खोलैत नंदी के किछु इशारा करैत छथि।]

नंदी : *(सीना तानि कए मलेटीक कप्तान जका उच्च स्वरमे)* सब तयो सुनै....

भंगी : *(आर जोर सँ)* सुनू....सुनू...सनू- उ-उ-उ !

नंदी : *(आदेश करैत छथि)* "आगे देखेगा....! आगे देख !"

(कहैत देरी सब तयो अगुआ कए सचेत भेने सामने देखै लागैत छथि ; मात्र यमराज आ क्षतगुप्त विशिष्टक मुद्रा मे छथि।)

भंगी : *(जे एक-दू गोटे भूल क' रहल छथि हुनका सम्हारैत छथि---)* 'हे यू ! स्टैंड इंतिट... स्टैंड इन आ र्ा !' *(जे कनेको टेढ-घोच जका ठाढो छलाह, से सोझ भ' जाइत छथि, सचेत सेहो आ लगैत जेना एकटा दर्शक दिस मुँह कैने ठाढ पंक्ति*

बना नेने होवि।)

नंदी : *(पुनः सेनाके आदेश देबाक स्वरमे)* सा-वि-धा-न! *(सब तयो 'सावधान' अर्थात् 'अटेनशन' केर भंगिमामे ठाढ भ' जाइत छथि।)* वि-शा-म! *(सब तयो 'विशाम' क अवस्थामे आबि जाइत छथि।)*

भंगी : *(दहिना दिस 'मार्च क' कए चलबाक आदेश दैत)* दाहिने मुडेगा--दाहिने मोड ! *(सभ तयो तत्क्षण दहिना दिस घुमि जाइत छथि।)*

नंदी : *(आदेश करैत)* आगे बढेगा ! आ-गे-ए-ए बढ ! *(सब तयो बढि जाइत छथि।)* एक-दो-एक-दो-एक-दो-एक ! एक ! एक !

[सब गोटे मार्च करैत मंचक दहिना दिस होइत यमराज-चित्रगुप्त के पाछू करैत संपूर्ण मंचक आगा सँ पाछा होइत घुमि बाम दिस होइत पुनः जे जतय छल ततहि आबि जाइत छथि। तखनहि भंगीक स्वर सुनल जाइछ 'हॉल्ट' त' सब ठहरि जाइत छथि.... नहि त' नंदी एक - दो चलबैये रहल छल।]

चित्रगुप्त : *(सभक 'मार्च समाप्त भ' गेलाक बाद)* उपस्थित प्रत्येक व्यक्ति सँ हम कहै चाहैत छी यम जे एत' उपस्थित सब तयो

एकटा मूल धाणिाक व्शकाि भेल िवि–
सभक मोन मे एकटा भम िक्ष जे पर्थ्वी
पि सँ एतय एक बेवि आक्ष गेलाक
मतलबे इयैह जे आब ओ सिगक्ष दाि मे
आक्ष गेल िवि। आब मात पतीक्ष कि
पडतक्ष... धीजि ध’ लेताह आ तकि बादे
सभके भेटतक्ष ओ पुिस्काि जकिा लेल
कतेको शम ,कतेको कष –सबटा सीकायष
भ’ जाइि।

नेताजी : *(आशयष होइत)* तखन की ई सबटा भम
मात िल, एकटा भूल धाणिा िल---जे
कक्षयो सत्य भ’ नक्ष सकैत अवि ?

क्षतगुप्त : ठीक बुिलहुँ आब---ई सबटा भम िल।

नंदी : सपना नक्ष...

भंगी : मात बुिबाक दोर िल...

िमिपंि : तखन ई दिबजजा, दिबजजा नक्ष
िल....कििु आन िस्तु िल....?

क्षतगुप्त : ई दिबजजा कोनो माया- दाि नक्ष
विक....आई सँ कतेको युग पक्षने ई
खुजतो िल, बंदो होइत िल...!

नेताजी : मुदा आब?

अनुचि 1 : आब ई नवि खुजैत अवि की ?

अनचि 2 : जँ हम सब सामने जा कए तािसिि मे
पुकावि- पुकावि कए कही–‘खुक्ल जो

		क्समक्सम्' तैयहु नक्ह क्क‍ि हैत!
नंदी	:	ई कोनो 'अलीबाबा चालीस चोि क क्खस्सा विक ि‍डे...
भंगी	:	आ ई कोनो धन-ितिक गुफा विक ि‍डे !
ि‍मिपंि‍	:	त' ई दबिजजाक पाि‍ ि‍इ कोन चीज ?
नेता	:	की ि‍इ ओक्ह पाि ?
अनुचि 1	:	मंदाक्कनी ?
अनुचि 2	:	ि‍तिविणी ?
अक्भनेता	:	आ क्क बडका टा क्कला जकि सबटा कोठिि‍ सँ आक्ब हिल हो दबल सिि‍ ककहिु कह्दनक आहक्ट...नोि बहाबैत आत्मा सब...!
चोि	:	आ क्क एकटा नदी-क्कनाकि विशाल शमशान - घाट,जतय जवि हिल हो हजाकि हजाि क्चता...हकन कानैत आत्मीय जन...?
बाजाि‍	:	नक्ह त' भ' सकैि एकटा बडका बजाि ि‍इ जतय क्दन-ि‍क्त जबदिस्त खिीद-क्बकी चक्ल हिल हो।
क्भख-मंगनी	:	इहो त' भ' सकैि जे घुविते भेटत एकटा बडका टा सडक बाट काटैत एकटा आन ि‍जिपकि आ दुनूक मोड पि हाि आ ि‍ोि‍ पसाि‍ति ठाढ अवि लाखो लोग-भुखमिि‍, बाक्ढ , दंगा फसाद सँ उजडल

उपटल लोग....

ि दीि ला : नवि त' एकटा ब-ड-की टा केि 'डक्मांग गाउंड' जतय सबटा िस्तु क्यिहाि क' क' कए लोग सब फेकै जाय होइक–िदी सँ ल' कए जूठ-काट, पुिनका टूटल भागल चीज सँ ल' कए ताजा कबना िविसक लहास...

पेक्मका : क्क आयाक्तत अिवित सदः जनमल कोनो क्शशु...

पेमी : कह्या क्शशु, हजाि क हजाि, जकि सबके भुणे के कोक्खसँ उपावि कए फेकल गेल हो...

ि मपंि ी : अिि हजाि हजाि बंद होइत काि खानाक बजैत सीटी आ लाखो पवि ि कि जाँित भूखल-ि ाकल चूवि - चपाटी....

नेताजी : ई त' अही जानै ि ी जे दि बिजजाक ओक्ह पाि की ि इ... हम सब त' मात अह्दाजे क' सकै ि ी जे भविसक ओम्हि हजाि क हजाि अनकहल दुःखक कि ि उमक्ड-घुमक्ड ि हल ि इ अिि ि इ एकटा विशाल आनह्दक लहि जे अपनाके ि क्क नेने होइक ई देखबाक लेल जे दि बिजजा देने के आओत अवाला बेवि...

क्षतगुप्त : ई सबटा एक सा ि िक ओक्ह पा ि, ठीक जेना पर्थी पि चिल जाय िइ स्गिषसँ ल' कए नकष्सबटा ठाम ! जे तयो नदीक एक्ह पा ि िइ तकि लागै िइ ने जाक्त सबटा खुशी भर्वसिक िइ ओक्ह पा ि !

नंदी : भर्वसिक नीक जका देखने नक्ह हैब ओक्ह दबिजजा आ देबा ि क्षक्स !

भंगी : एखनहु देखब त' ऊपि एकटा कोना मे लटक्क िहल अर्व बोडष "नो एह्टी!"

नेताजी : *(आशयषहोइत)* आँय!

(सब तयो घुर्व कय दबिजजा क्षस दैखैत िर्व)

सब तयो : "नो एंटी ?"

(पकाश अि ि स्पॉट-लाइट ओक्ह बोडषपि पडैत अर्व)

नेताजी : ई त' नर्व िल पता ककहिु.. नक्ह त'...

क्षतगुप्त : नक्ह त?

नेताजी : *(र्वमिरष होइत)* नक्ह त'....पता नक्ह....नक्ह त' की कर्वतिहुँ....

िमिपं ि : मुदा आब ? आब की हैत ?

अक्षनेता : आब की कबि हम सब ?

नेता : आब की हैत ?

(क्षतगुप्त कक् नक्ह बाजैत िर्व आ नंदी-भंगी सेहो चुप िहैत िर्व । एक

पल कोि लेल जेना समय रुकि गेल होइक।)

अनुचि 1 : यमिजेसँ पूिल जाइन !

अनुचि 2 : *(घबडा कए)* के पूित गय ? अही जाउ ने ! *(केहुँनी सँ ठेलैत वि।)*

अनुचि 1 : नवि-नवि.... हम नवि ? *(पिुआ अबैत वि।)*

अनुचि 2 : तखन नेताजीए सँ कहयक जे ओ फर्वािा लेवि !

अनुचि दय : नेताजी ! *(नेताजीके घुवि कए देखैते दोिो दुनू जेना इशािि क' कए कहैत होवि पूिबा दय।*

नेताजी : *(विचित शब्द बजैत वि- कंठ सूख जाइत वि)* ह..ह...!

[नेताजी कािुे बाव्ज पबैत वि आ ने पुवि ए सकैत वि। मात यमिजक लग जा कए ठाढ भ' जाइत वि। यमिज विजष ि मे एक बेवि दैखैत वि, एक बेवि नेताजी दिस]

यमिज : बदिि विशाल कासि !

नेताजी : *(जेना कठघािमे ठाढ अपन स्वीकािवत दैत होवि)* जी !

यमिज : आयु पचपन !

नेताजी : (अस्पष स्विि) साढे िािपिन !

नंदी : असली उमर्वि बताउ !

भंगी : सर्टिफिकेट-बला नर्वि !

नेताजी : जी पचपन !

यमाजि : जन्म भाद मासे, कृष्ण पक्षे, तयोदश घटिका, रड्-क्षशंक्त पल, पंचदश विपल... जन्म-िरिश धनु...लग्न-िरिशक, िक्षणी नक्त, गण-मनुष्य, योक्त-सपष्ट योग-शुतल, िगषमाजाि, कणि- शकुक्त!

[जेना-जेना यमाजि बाजैत चक्ल जाइत िर्वि–पकाश कम होइत मंचक बामे क्दक्स मात हैित अर्वि जाक्ह आलोक मे यमाजि आ मुडी िुकौने नेताजी स्पष लखा दैत िर्वि। बाकी सभक उपिमक्दम पकाश। नंदी यमाजिक दंड के धैने हुनकि पािी सीना ताक्त कए ठाढ िर्वि, भंगी टूल पि पोिीक विशेर पष पि आँगुिि खिने क्जिषिकिे धैने िर्वि। क्वतगुप्त लगे मे ठाढ िर्वि, यमाजिक सिि मे धीिि-धीिि जेना पक्तधक्ति सुनल जाइत िक्त-एना लावा हिल हो।]

नेताजी : जी !

यमाजि : *(हुंकाि दैत)* अहा के दैखैत िी 'शश योग' िक...*(श्लोक पढैत िर्वि अिािी पािी सँ पक्तधक्ति सिि 'वा विकॉडेड'*

उच्चारिणि सुनल जाइत अछि-)

“भूपो ि सच्चरि िनाचलतिः सेनापक्तः ककूिधीःधातोिद-विनोद-िचनपि दाता सिरेक्रणः।

तेजस्विि क्रजमातभक्तक्ति: शूिऽक्सताग सुखी जातः सप्तक्तमायुक्ति शशके जाक्रियाशीलिन्

अिति–नेता बनब त' अहाक भागमे क्लखल अछि आ सक्दखन सेकि आ अनुचि-अनुयायी सँ घेलि िहब सेहो क्लखल अछि.... िट-मोट अह्याय नक्ह कैने होइ–से नक्ह...मुदा बहुत गोटे अहाक नाम ल' कए अपिाधि कँ जाइ िल–से बात स्पष । िह जे कतेको जननेता के होइ िक्त..कखनहु देक्खयो कए अनठा दैत िलहुँ। बाजै मे बड पटु िि से त' स्पष` अछि.. मुदा ई की देक्ख िहल िि–नुका चोिि कए विििहक अक्तवितितो पेम किबा दय.. सत्ये एहन क्रिु चक्ल िहल अछि की?”

नेता : *(स्पष त: एहन गोपनीय बात सब सुक्न कए अत्यंत लक्जत भ' जाइत िछि। हुनक दुनू बगल मे ठाढ दुनू अनुचि अकास क्दस मूडी उठा कए एम्हि-ओम्हि*

देखै लागै िव जेना ओसब कािु नक्ष सुक्त िहल िव) नक्ष...माने ..तेहन कािु नक्ष..

क्यतगुप्त : *(मुस्की दैत)* मुदा कनी-मनी...?.नक्ष?

नेता : हँ, िह.... बुि जे...

यमिज : सब बुिव गेलहुँ....

क्यतगुप्त : मुदा ओ कहै िव हुनकि उमि भेलक्ष पचपन औि शश-योग कहै िइ जीविति हिताह सतवि सँ बेसी उमवि धवि तखन ?

यमिज : तखन बात त' स्पष जे समय सँ पक्षनक्ष अहा कोनो घण्य िजनैक्षक चकातक क्षाकािि बनैत एतय पठाओल गेल िी। *(मोटका िक्जष िके बन कािति िव--)*

नेता : तकि माने ?

यमिज : तकि माने ठीक तक्षना जेना एक्ष चािव गोट सैक्षक के एत' ऐबाक आिश्यकता नक्ष िल... ओहो सब अही जका .. माने इयैह जे अहा मुतत िी, घुवि सकै िी िजनीक्षक जगत मे... एतय कतािमे ठाढ िहबाक कोनो दिकािि नक्ष...

नेता : आँय ! *(कहैत देिी दुनू अनुचि आनक्षदक अक्षिवतित पकाश कािति हुनका भविपाज पकक्षड लैत िव। संगक्ष कनेक देिमे*

नाबिाजी सेहो शुर क दैत वि।)

[नेताजीक आगा दूटा सैक्सक सेहो मंच सँ निष्क्रात होइत वि।]

यमाजि : *(नेताजीक संगक्ष्ह क्खसक्क जा हैि चाहै वि से देक्ख कए, दुनू अनुचा सँ)* अहा सभ कत' जा हिल ी ? *(दुनूक पैर क्ह जाइत कि।)* की ? नक्ह बाजलहुँ कि ?

अनुचर 1 : आ.. जी.. हम सब..नेताजी... जा हिल रवि तै...

यमाजि : कोनो तै-ि नह चलत..*(घुर्ि कए)* कतगुप्त !

कतगुप्त : जी ?

यमाजि : नीक जका उलटा-पुलटा कए, देखू त' विजषि मे हनका सब दय की लखल रक्त...

कतगुप्त : जी !....*(अनुचर 1 के देखा कए)* िजिनीकतक जगतमे बदिी वशिाल बाबू जतेक मािं-काट कैने- करिने िवि–से सबटा हनके दुनूक कपासँ होइ िलक्त....

अनुचर 1 : *(आपक्त जताबैत)* नह... माने...

यमाजि : *(डाटैत)* चोप! कोनो-माने ताने नह...

कतगुप्त : *(आदेश दैत)* सोि भुनै केि कडाही मे ल' जा कए फेकल जाय !

(कहैत देिी नंदी आ भंगी अनुचर 1 आ अनुचर 2 के दुनू कक्स सँ ध' कए बाहि ल' जाइत िवि–ओम्हि बाकी मत सैक्तक मे सँ दू गोटे हनका ल' कए आगा बढैत िवि आ नंदी-भंगी अपन-अपन सिान पि घुर्ि आबैत िवि।)

पेमी युगल : *(दुनू आि धीिज नह िविख पबैत िवि)*

आ हम सब ?

पेमी : हमि दुनूके की हैत ?

पेमिका : ई हमि कतेको कालसँ घुवि चलबा लेल कहैत िलाह... मुदा हमही नहि सुनि हिल किलयनि !

पेमी : की एहन नहि भ' सकैत अवि जे.....

बाजािी : *(आगा बढैत)* हे.... हिनका दुनू के अिश्य एकबेि वजनगी देबाक मौका देल जाइन...

वचतगुप्त : से वकयै ?

बाजािी : देखू...एत त' हम कहियादान क' कए विि िह कबिा देवलयनि... मुदा विस्तुतः त' ई दुनू गोटे अपन-अपन पविििािक जे तयो अवमभािक विि तवनका सभक आशीिाद नहि भेवट सकलवन।

भद व्यक्तत 2 : ...आ तै दुनू गोटे वनिशात कैने िलाह जे जीयब त' संगवह आ मिब त' संगवह.. मुदा आब त' हम सब विि िह कैये देने िी...

बाजािी व्यक्तत : तै हमि लगैि जे दुनू पविििाि आब मावन लेताह...

भद व्यक्तत 1 : भ' सकैि आब पशातापो क' िहल विि।

यमिाज : बड बेस...

वचतगुप्त : आ जँ एखनहु अतखड दैखौता त' अहा सब हुनका लोकविके समि बुिि'

		सकबक्ा क़ नक्ह ?
भद व्यक्तत 1,2	:	अश्यि...अश्यि !
यमाजि	:	बेस... तखन *(नंदी-भंगीके)* एक्ह दुनू बालक-बाक्लका आ क्हनका दुनूक एतहुका अवमभाकि लोकक्ाके स्तिा देखा कदयह्ु... *[नंदी-भंगी पेमी-पेक्मका आ ओक्ह तीनू गोटेके (दुनू भद व्यक्ात आ बाजाि दिके) स्तिा देखा कए बाहि ल' जाइत वि...पाि-पाि ढोल-क्ापही बजा कए 'माचष कति बाहि ल' जाइत वि। तखन क्हि जाइत वि जेसब ताक्ह सबमे सँ अवमनेता अगुआ आबै वि।]*
क्ातगुप्त	:	*(जेना यमाजि के अवमनेताक पविचय द' हिल वि)* ई विकि कुमाि भेलाह... *(नंदी सँ)* पष पाच सौ अडतीस...
अवमनेता	:	*(आशयषचक्कत होइत, क्ातगुप्त सँ)* अहा के हमि पषो मोन अवि...काडो मनुतखमे....? ई त' आशयषक गप्प भेल...
क्ातगुप्त	:	एक्ह मे अचजिक कोन बात? एतेक काि कति हैत ी जे बेवि-बेवि ओक्ह पष पि 'एह्टी' कि-टा पडै अवि...तै.....
नंदी	:	*(जेना घोरणा क' हिल होवि...)* प. 538, विकि कुमाि उफष्र...?
अवमनेता	:	*(टोकैत)* हे किी लय दोसि-दोसि नाम

सब लै जाइ ि ? बड मोसक्कल सँ त' अपन जाक्त-पाक्त के पाि िडा सकल.... आ तखन एतहु आक्ब कए....?

क्षतगुप्त : आगा बढ'! नाम िक्ड दहक !

नंदी : आगा वकािडषत' ई कहै अव जे ओना ई िलाह त' बडड मामूली व्यक्तत, तखन अपन कुशलता सँ, आओि सौभाग्यो सँ, पहुँक्च गेल िव क्शाखि पि... पाइ बहुत कमौलक्न.. *(िक्क कए नीक जका क्िजष िमे सँ पढैत...)* दान-ध्यान सेहो कैने िव... ततबा नक्ह जतबा क' सकैत िलाह अनेक मक्हला सँ क्हनक नाम के जोडल जाइ िक्न...अफिक्ह के अपने पक्सन कोँि िव... एक्ह मामलामे बदनामे हिलाह... आ तै पाविावकि जीिन सुखद नक्ह िलक्न... क्नःसंतान िव, पतीके त्यावा देताह ताक्हसँ पक्हनक्ह ंिह िक्ड कए चक्ल गेलीह... िस्तुतः पतीक कहब िलक्न ई असलमे नपुंसक िलाह...

अक्भनेता : *(नंदी के िम्हबैत)* की सभक सामने अंट-संट पक्ढ हिल िि पोिसँ ? पती िक्ड कए चक्ल गेलीह... नीक कैलीह, एखन सुखी िव एकटा अधेड उमकि नयिुकिक संगे.... मीक्डया बला सभसँ

पाइ भेटलक आ कक कहानी बनबै लगलीह... 'अफसाना'.... जे कबकत बडड बेसी।

कवतगुप्त	:	से ओ सब जाय दहक ...ई कह आि कोन विशेर बात सभ दजषिक..
भंगी	:	*(ओहो िकक कए देवख हिल िलाह विजष िमे, आब हिल नवह गेलक---)* वहनक जतेक कमत िक्त, शतुक संख्या ताहसँ बहुत गुना बेसी िक्त।
यमाजि	:	से त' सिभावके.....
भंगी	:	वहनक शतुपक कहैत अवि ई नुका चोिि कए कतेको िमपंिि गोषी के मदवत कति िलाह.... बहुतो ताव तहिक संगठन के ....
िमपंिि	:	*(पवािदक सिमे)* कमिवम नवह... ई सब फूवस बावज हिल िी अहासब....
भंगी	:	बावज कहा हिल िी यौ कामिडि? हम त' मात पवढ हिल िी--!
िमपंिि	:	वहनका सन 'बुजोआ' गोषीक सदस्य कखनहु कति गै मदवत कोनो साम्यािदीक ? असंभि !
अवभनेता	:	कयै? साम्यािद पि अहीसभक जहम-वसद अवधकाि िै की? आन तयो 'साम्य' क कल्पना नवह क' सकैत अवि ?

ािमपंिी : *(व्यंग्यात्मक स्िि)* कयैक नक्ष ? कल्पनाक घोडा पि के लगाम लगा सकैत अिव ?
कर , जतेक मजी कल्पना किि जाऊ ! मुदा हम सब िी ािस्तविक जगत् मे ािस्तिा के भोवा िहल िी...

अिभनेता : ािस्ताि मे भोगी िी अहा सब, भोगक लालसा मे 'साम्य' दय गेलहुँ किासव िि 'िद'टा मोन िहल ... िद-वििद मे काज मे आबैत अिव....!

िवतगुप्त : िद-वििद सँ काज कोन ? कहबाक तात्पयष ई जे विि िक कुमािि जीक विि िक भिवसिक बड बेसी काज किि ते िक्त...तै.....

यमािज : *(गंभीि मुदामे)* हुम्-म्-म् ! *(नंदी सँ)* तखन देखै िी विपक सँ बैसी सपके मे सबटा पक्ष िहल िी...

िवतगुप्त : तकि अलाि ...ई व्हनक अकाल आगमन विकक्त.... स्टंटमैनक बालक िल असिि, गेल िल िटी ल' क' अपन घि... त' ई अपनक्ष स्टंट किि लगलाह...

अिभनेता : *(किहुँसैत)* ककिये टा चूक भ' गेलैक क्ष पहाडी पि सँ खक्स पडलहुँ....

यमािज : ककिये-ककिये भूल-चूक मे बदक्ल जाइत

अवि इक्तहास आ पुिण...सबटा पुण्य बहा जाइत अवि तक्तके पापसँ ! मुदा जे हो *(नंदी सँ)* क्तनका एखनहुँ अनेक क्तदन जीबाक ि क्त.. पठा क्तदयौक पर्थी पि...

िमपंिी : *(अगुआ कए)* आ हम ? हमि की हैत ? *(एक बेवि यमाजि तँ एक बेवि क्तचतगुप्त क्तदस देखैत ि वि। मात भंगी ससम्मान अक्तभनेताके बाहि पहुँचाबै जाइत ि वि।)*

यमाजि : अहाक कि मे तँ सक्तगिक्तनकष कोनो टा नक्त अवि...ने ि हम आ ने क्तचतगुप्त...

िमपंिी : जी, से त'...*(कहै जाइत ि लाह 'अक्तश्वि !' मुदा ताक्त सँ पक्तहनक्त टोकल जाइत ि वि।)*

क्तचतगुप्त : सैह जखन बात ि क त' अहा अपने विचाि कर अपन भविष्य....*(पॉक्कट सँ एकटा मुदाके 'टॉस' कक्तबाक भंवामा मे.....)* कहु की कहै ि 'क्तचत' की 'पट'?

िमपंिी : हमि विशास आ हमि क्तशाक्त कक्तु आने तक्तहक ि ल, मुदा जे पत्यक क' क्तहल ि *(कहैत देक्ति.... यमाजि... क्तचतगुप्त आक्तद के देखाबैत ि वि)* तकि असीकाि कोना कर ?

यमाजि : क्तकयैक ? ईहो त' भ' सकै ि जे आँक्तख

धोखा द' हिल अवि...ई सबटा एकटा दु:सपि मात विक... कल्पलोक मात विक...ई, जतय घुसै जायब त' देखब बोडषपि टागल अवि---'नो एन्ट्री'!

िमपंिी : तखन ?

क्यतगुप्त : तखन की ?

िमपंिी : तखन हम की कर ?

यमाजि : *(गंभीि मुदामे)* पक्हने ई कहू... विरम के विक ? मनुतख क्क पकक्त ?

िमपंिी : दुनू...

यमाजि : के कम के बेसी ?

िमपंिी : पकक्त मे तैयहु कतहु 'पाकक्तक ह्याय' (नैचलि जक्सटस)

काजक' हिल अवि, मुदा मनुतखक सिभाकि आधाि अह्याय पि ठाढ अवि...

यमाजि : की अहाक िजिनीक्त एहन अह्याय के दूि नक्ह क' सकैत अवि ?

िमपंिी : पयास कि ति अवि...

यमाजि : ठीक अवि... तखन क्हनको तीनू गोटे के नेने जाऊ ! *(चोि उचका आ पॉक्कट-माकि क्दक्स देखा क' बाजैत िवि)* आ देखू क्हनका सब के बदक्ल सकै ि ि नक्ह ?

िमपंिी : बेस....

[कहैत पॉकेट-मारि आ उचक्का हुनका लग चक्कर आबै छथि। चोरि कनेक इतस्ततः करैत छथि आ अंत मे पूर्व दैत छथि जाय सँ पूछि..]

चोरि : तखन एम्हर सँ आगा ?

यमराज-चित्रगुप्त-नंदी : *(एकक्के संग)* 'नो एनटी'...

[कहैत देरी तीनू गोटे के सारि ल' कए सिपाही युरि छिहि जैबाक लेल उदत होइत छथि कि तातितं अचानेता के चिन्ह कए भंगी घुर्र कए मंच पर प्रविश क' छिल छलाह।]

यमराज : मा पर्वेश....

चित्रगुप्त : कदाचन!

[चार गोटे एक पलक लेल चौकैत रहैत छथि ....तकर बादे साक्षात होइत छथि। हुनका सभक पसरनिक पानि भंगी आगा बढैत छथि यमराजिक दक्ख।]

यमराज : *(भंगी सँ)* की समाचार ?

भंगी : चार धाम हल्ला मचल अछि...

यमराज : से की ?

भंगी : इयैह जे सरिपक सबटा नियम के बदलल जा रहिल अछि....

चित्रगुप्त : जेना ?

भंगी : जेना कतेको गोटा के पर्थी पर घुरिबाक

मौका लावा गेलक...

नंदी : आ ओमहि धीपल कडाही लेने सबटा यमदूत पतीक्ष क' हिल अछि जे कखन पापी-तापी आओत आ कखन ओसब आपन काज क' सकताह ?

भंगी : मुदा अहा दुनू िी जे.... सबटा बासवि सब के माफी द' हिल िी...

नंदी : भवसिक अपन भूमका बासवि गेल िी हमसब....

यमिज : एकि बाद मोन िखब...आब त' तयो नक्ष आओत कक ने?

भंगी : दू-दूि धवि कतहु तयो नक्ष...

नंदी : सबतवि फका....!

[तयो नक्ष नजवि कििते अछि जे भारण-मंचक लग मे अपना के बचौने ठाढ़ कमख-मंगनी चुपे-चाप सबटा बात सुना हिल िलीह आ उपभोग क' हिल िलीह...]

कातगुप्त : आब हमि सँ ई नमहि दाढी के िखल नक्ष जाओत....

यमिज : हमहिुँ मुकुटक तिमािपिपसेना भलि अवि..... *(कहैत मुकुट खोल लैत िवि आ संगक्ष नंदी आका कए यमिजक बाहिी पोराक खोलै लावा जाइत िवि। मुकुट*

उतावि नकली नमहि केश के उतावि, यमाजि अंगातिखा के उतावि यमाजि सभिावकि मनुतख जका बक्त जाइत वि.... ।)

[तखनक्ह भंगी जा कए क्ातगुप्तक मुिठा के खोक्ल मेक-अप बला नकली दाढी उपाि लावा जाइत वि। यमाजि आ क्ातगुप्तक देतिकि एक्ह ताहिक त्यागक दश्य के देक्ख क्ाख-मंगनी हँक्स दैत वि। हुनका पि पक्हने ककहिु नजवि नक्ह लिक्त... तै सब तयो आशयष होइ वि। स्पाॅट लाइट क्ाख-मंगनी पि पडै कि। हुनका ओना हँसैत देक्ख यमाजि नंदीक हाि सँ अपन मुकुट आ पोशाक अपन हाि ल' लैत वि... जेना पुनः सजबाक अकम्य पयास क' हिल होवि।]

क्ातगुप्त : *(अपन दाढी आ मुकुट हाि मे धयने)* हँक्स कयै हिल ि ?

[क्ाख-मंगनी आि हँसैत वि... कि कक्ह नक्ह पबैत वि।]

यमाजि : अि ....! ई त' बड िचाल वि...!

नंदी : ने ओ मूक वि आ ने िचाल...

भंगी : *(जेना एकात मे कक्ह हिल होवि)* हमि क्ाादिीक वि कलाकाि भेलीह !

यमराजि : *(आँखिमे उत्साह)* कोन कला कहि रहल छिऐ ?

विख-मंगनी : अभिनय त' नहि कहि आबै यै..... एखन त' आबै यै मात्र भीख मांगैक कला... कोना अपन दुर्दशाके सभक सामने उजागर कैल जाय तकर कला महाराजि !

चित्रगुप्त : तखन त' अभिनय आबिते हैत...

यमराजि : सैह त' !

विख-मंगनी : दुर्भाग्य त' छिहे आ दुर्दशा त' अछिए... कला मात्र ई जे कोना तकर आँखि-मुँह पर छिटका दी जे अहाँ सन-सन दानी कतहु देबा लेल बाध्य भ' जाइ...! ओना 'अभिनय' हम नहि क' सकै छी...

यमराजि : ई 'ओना अभिनय' की भेल ?

नंदी : जेना 'हास्य'!

भंगी : जेना 'लास्य'!

चित्रगुप्त : *(पूछैत)* जेना 'पेम'?

नंदी : उर्फ 'मुहब्बत'!

भंगी : उर्फ 'गुदगुदी'...?

विख-मंगनी : *(चौंकैत)* नहि बाबा ! ई हमरा सँ नहि हैत...*(लास्यक इशारा करैत)* ई देखबाक हो त' ओम्हर देखू....!

[कहैत जेना गाडीक 'हेड लाइट' नुका नुका कए पेम करैत बला सब पर पडैत

अर्व, तक्हना पकाश जा पडल मिणी-मोहन आ अंत मे आयल उच्च शिीय मक्हला पि, जे दुनू एक दोसाकि हाि मे हाि देने हँक्स-हँक्स कए बातचीत क' हिल िलाह। एतबा काल सँ जे एत' यमाजिक दबिाि चक्ल हिल िलक्स, जेना ताक्ह सँ अगिते नक्ह होर्व। आँक्ख पि पकाश पक्डतक्ह आँक्ख चोक्हया जाइत क्ति... बड असंतुष होइत र्वि.. हडबडा कए ओक्ह मक्हलाक हाि िक्ड दैत र्वि]

मिणी-मोहन : *(पक्तादिक सिमे)* ... हे के सब िी ओतय ? क्यै तंग कि जाइ िी? देक्ख नक्ह हिल िी की क' हिल िी ?

क्मख-मंगनी : *(जेना बहुत क्नक पर्वक्ित होर्व तेहने सिमे... लग जा कए)* की क' हिल िी ?

मिणी-मोहन : *(घबडा कए)* क्-की कबि ? ई इयैह....

यमाजि : *(पास मे जाय नीक जका उच्च शिीय मक्हला के देखैत ...)* ई के र्वकीह ?

मिणी-मोहन : ई न्-न्-क्भा र्वकीह !

यमाजि : क्भा के ? *(आब मिणी-मोहन क्स देखैत... एतबा काल मक्हले क्क्स देक्ख हिल िलाह।)*

[मिणी-मोहन तोतिबैत र्वि... बूर्व नक्ह

पबैत िवि जे की उतिर देबाक चाही। यमािज आ िचतगुप्त–दुनू के आधा मेक-अप उतािल अिसिमे देख्ब एक बेर्वि हँक्स कए पर्वीिश के हल्लुक बनैबाक पयास कॉित िवि त' एक बेर्वि गंभीिर भ' कए कािज बजबाक पयास कॉित िवि। एतबा देिर धर्वि मक्लाक कोनो वकािर नक्ह...कखनहुँ अपन नहक 'पॉकलश' क्दक्स देखै िवि त' कखनहुँ साडी के ठीक-ठाक कॉिमे लागै िवि त' कखनहुँ हािर सँ अपन केश िवन्यास के सोिबिै मे जुक्ट जाइत िवि।]

यमािज : बेस...बेस ! त' अहा के िरी ?

िमखि-मंगनी : ई िवि 'िमणी......मोहन' !

यमािज : एतय की क' हिल िरी ?

िमणी-मोहन : जी, एतय *...(एक बेर्वि दिबजजा क्दक्स देखबैत िवि एक बेर्वि एतेक जे भीड िलि जेना तकिक्ह खोज कॉित)*...कतािर मे सब सँ आगा ठाढ िक्लयै जे कखन ई दिबजजा खुजत आ....

नंदी : कतािर ?

िचतगुप्त : कतय गेल कतािर ?

भंगी : सब तयो भीतिर चक्ल गेला की ?

नंदी : क्हनका टपक्क कए ?

िमणी-मोहन : आँय?*(आशयषहोइत िव)*

चमख-मंगनी : से कोना भ' सकै? ई त' सब सँ आगा िलाह... ी.आई.पी. तयू मे...? नक्ह ?

िमणी-मोहन : हँ... माने... पता नक्ह बाकी सब गोटे कोना...?

नंदी : *(व्यंग्य कित)* क्हनका पूव क्लयह्हु ने...जँ ई क्क बता सकती...

भंगी : ओ नक्ह बाजै िव...(*बौक हैबाक संकेत कित िव।*)

िमणी-मोहन : नक्ह-नक्ह, अहा जे सोच्य हिल ी. से नक्ह...

नंदी : कोना बुिलहुँ जे ई की सोच्य हिल िलाह...?

चमख-मंगनी : नक्ह... ई बाजै िव, मुदा हमि-अहा जका सब बात पि नक्ह। तखनक्ह बाजै िव जखन बक्तया कए क्हनका क्क लाभ भ' सकै िक्त...!

िमणी-मोहन : नक्ह-नक्ह, ओ अिश्य बाजै िव...हमि सँ त' कतेक िसि बात....

यमिज : जेना?

िमणी-मोहन : जेना...!आब हम कोना कहू जे....? जेना ओ कहै िलीह... आ हम कहै िक्लयक्त...

यमिज : *(मक्हलासँ)* की ऐ ? काभाजी ? *(मक्हला आँक्ख उठा कए यमिज के एक बेव*

		देखए कए नजरि के आन दिस घुरि लैत छथि।) ई त' कहाँ नहि कहैत छथि। *(मणी-मोहन सँ कहैत छथि।)*
भीख-मंगनी	:	*(हँसैत कए)* ई अहा सँ बात कतीक छिडे ? हँ, जँ ई पता चलल जे अही लग अछि एकटा विशाल दरबज्जाक चाभी... जँ जाकेँ जैती जे स्वर्गक अप्सरा बनबाक लेल अही एकमात्र मदति क' सकैत छथि तखनहि बजती ओ !
कातगुप्त	:	आ नहि त'...
भीख-मंगनी	:	*(हँसैत दैत छथि)* नहि त'.... ई मणीक हृदयक दारिद्र्य बाबू....! सहजे एत' प्रवेश नहि भेटत....हा-हा-हा 'नो एंटी' एतहु...
नंदी	:	मुदा ई बूढौ त'.... *(मणी-मोहन के देखबैत छथि। मणी-मोहन के उकर लाबा छिल छनि जे लोग हुनका उमरि दय बात क' हिल अछि।)*
भंगी	:	हँ मुँह त' देखू... माथ पर त' मात दुइ चारि टा केश छनि.. *(मणी-मोहन पॉकेटसँ कंघी बहार क' कए केश-विन्यास करि लागैत छथि)* टकला नहितन...
यमराज	:	*(विस्मित भए)* आः मुँह' तो सभ !

वामख-मंगनी : हँ.. िम्हू ! ई कोनो जेहन-तेहन व्यकक्त नव्ह िवि... िमणी-मोहन िवि, जानै िवि िमणीक हदयक बंद दाि कोना खुजल जाइत अवि... ईहो कलाकावियेे होइ िइ....

चित्रगुप्त : हँ-हँ.. अिश्य...*(विहैत)* महाविज ! *(इशाविकरैत)* अहा कने पयास करिैतहुँ त'...भ' सकैि...

[यमविज असफुट स्वरिे कििु कहैत विि आ गला खखारैत विि। चित्रगुप्त बुझि जाइत विि जे यमविज 'पंचशवि' दावि आकान्त भ' गेल विि–मुदा चित्रगुप्त वस्तुतः सब के खदेड़ैत दैत विि महिलाक पास सँ] हे ...जाय जाउ त...! एत की देखैत हिल वि, तमाशा ? *(कहैत जेना आंगन बोहाविि जाइत अवि ताहि तहिे एकवह विटकामे नंदी-भंगी-विणीमोहन-वखन-मंगनी–सबके ल' कए भारण-मंच वदवस, मंचक एक कातमे ल' जाइत विि। बीच मंच पवि वहि जाइत विि ओ सुसवज्जत सुन्दवि उच्चविशीय महिला आ यमविज। संकोचसँ आ डवैत यमविज एक बेवि पावि घुवि कए चित्रगुप्तक वदवस देखैतो विि। एक दोसविके उतेजना-विश धवैत सब तयो एकवह संग उत्सुकताक संग कतावमे ठाढ जेना विकि कए देखबाक आ सुनबाक पयास क' हिल विाह जे ने जावन आब की होइत अवि...। यमविज के एक-दू*

बेर्वि पाि घुर्वि कए देखैत देवख कतगुप्त इशाि क' कए हुनका उत्साह पदान कर्ति र्वि।]

यमाजि : *(मधुि र्सिमे)* कभा...! सुनू ने, कभा... *[मकला मुँह उठा कए यमाजि दकस दैखै र्वि। आँवखमे वजजासा...]*

कतगुप्त : *(दबले र्सिमे, जेना 'पॉमप्ट' क' हिल होर्वि)* चाभी.. चाभी देखाउ !*(यमाजि घुर्वि कए देखै र्वि, जेना सुनबाक पयास क' हिल होर्वि कतगुप्तक बातके)* दविजजा... दविजजा ! *(सिगषकदकस देखबैत र्वि।)*

यमाजि : *(जेना बुर्वि गेल होर्वि की कहल जा हिल िक...आब मकला दकस घुर्ति)* देवख हिल िी ? *(मकला घुर्वि कए दविजजा दकस दैखैत र्वि आ तकि बाद यमाजि दकस घुर्वि कए जेना आँवखए सँ पूर्वि हिल होर्वि–"हँ देवख त' हिल िी... तखन कहै की चाहै िी ?")* अहा जाय चाहै िी ओव्ह पाि ? *(मकला सदिक भंवामामे मूडी डोलबैत र्वि)* एकव्ह उपाय अर्वि जाव्हसँ जा सकै िी ओव्ह पाि... *(मकला अविशासक भंवामा कर्ति हँसस दैत र्वि...)*

कतगुप्त : *(आब धीिजि नव्ह िवख सकैत र्वि)* कयै

? विशास नक्ह होइये ?

नंदी : इयैह त' वि 'यमजि'।

भंगी : आ इयैह त' ठीक कंति वि जे----

नंदी : के नकषमे जाओत...

भंगी : आ के सगिष!

मक्हला : *(मिणी-मोहनसँ)* सत्ये ? *(मिणी-मोहन मा डोला कए 'हँ' कहैत वि, मिणी मोहने सँ पूंति वि---)* मुदा ओक्ह दविजजा पि त' क्लखल अवि 'पशि क्लरेध'

कामख-मंगनी : मात हुनकक्ह लग क्ल चाभी...

क्वतगुप्त : जाक्हसँ खुक्ल सकैत अवि सबटा ताला...

कामख-मंगनी : *(यमजिसँ)* ओ चाभी त' देखाउ ! *(यमजि मात हँसैत वि)* देखाउ ने ! *(यमजि पोशाकक भीतसिँ एकटा बडकी टा चाभी बहा कंति वि।)* इयैह क्लयह ! *(कहैत कामख-मंगनी यमजिक हासिँ पायः पिक्ट कए चाभी ल' कए मक्हला के दैत वि।)*

मक्हला : *(चाभी हामे भेटैते देंा जेना क्लालोकक सबटा सामाज्य भेक्ट गेल होक्स एहन भा भंवामा देखबैत वि। मिणी मोहनके इशा कंति वि आ एहन दका एँ बाकी सब गोटे क्दक्स देखैत वि जेना हुनका*

सबसँ हुनका कोनो परिचये नहि छनि।) चलू ..आब देखै की छै, आब हमरा सब के तयो नहि छिकैबाला... *(कहैत मणि-मोहनक हाथ धैने दरिबज्जा दिस तेजी सँ बढैत पहुँचैत छथि। चाभी मणि-मोहनक हाथ मे द' कए कहैत छथि)* हे लियह... अही खोलू.... क' दियौ सबटा परीक्षा केँ असान !

[मणि-मोहन चाभी त' लैत छथि, मुदा शंकित दृष्टि एँ एक बेर यमराज आ चित्रगुप्त दिस देखैत छथि त' एक बेर ओहि महिला दिस, आ फेर पुनः नंदी-भृंगी दिस देखै छथि।]

भीख-मंगनी : *(जेना मणि-मोहनक पौरुष के ललकारि द' रहल होथि)* आबहु देखू की रहल छै... जोर लगाऊ ने.... *(मणि-मोहन लजा कए आ हडबडा कए चाभी सँ दरिबज्जा खोलबाक प्रयास करैत छथि मुदा कोनो लाभ नहि होइत छनि।)*

महिला : की भेल ? *(उद्विग्न भए)* ठीक सँ कोशिश करु ने ! *(मणि-मोहन पुनः प्रयास करैत छथि।)*

भीख-मंगनी : *(जोर-जोरसँ हँसैत)* बस ! एतबे ताकति छल बाकी ? एकटा चाभी सँ सामान्य

दबिजजा धर्वि नक्ष खोल' आबै ये ? (हँसैत) ठिी केि दूध नक्ष पीने िी की ? हा- हा- हा!

नंदी : *(हँसैत)* ई मिणी मोहन पुरर विकाह की मिणी ?

[नंदी आ भंगी सेहो मिणी-मोहनक दुदशाा देक्ख हँसीक 'कोसि' मे योगदान कर्ि र्वि। मक्हला हडबडा कए मिणी-मोहन सँ चाभी हाि मे लै र्वि।]

मक्हला : *(मिणी-मोहनसँ)* हँटू हमि खोलै क्दयह !

क्यतगुप्त : म्हू ! क्यि षि पयास जूक्न कर ! ई खोलब अहाक बुते नक्ष हैत।

मक्हला : *(असंतोर आ क्रोभ सर्ािमे)* क्यै नक्ष हैत ?

क्यतगुप्त : काणि ई कोनो साधाणि दबिजजा नक्ष विक... ई मोनक दबिजजा विक... मात चाभीटा सँ ई नक्ष खोलल जै सकैि।

मक्हला : *(कोधक सर्ािमे यमाजिसँ)* तखन की हमिा ठगबाक लेल चाभी देलहुँ ?

नंदी : एकिा खोलबाक मंति मनुतखक मोनक भीतिि होइ िैक।

मक्हला : *(क्खक्सया कए)* ककि मोनक भीति ? अहा सब सन पाजी बदमाशक मोनक भीति क्क हमिा सन पढल-क्लखल

उच्चवर्गक लोगक मोनक भीतर ?

भंगी : टेक्स कए त' देखू 'मोन' अहाक भीतर मे एखनहुँ अर्व क्क िस्त्ता चलैत ककहु द' देने ि ?

[एक्ह बात पर नंदी आ कमख-मंगनी हँक्स दैत र्वि ।]

कमख-मंगनी : ककहु भीखमे द' देने हेतीह....

मक्हला : हम नै तोरि जका भीख मागै ि आने भीख दैते ि !

मिणी-मोहन : *(अगुआ कए मक्हला के शात कर्ति)* ि‍डू कभा ! की अहा ुर्चि एकि सब सन लोगक संग मुँह लागै ि....!

नंदी : *(मिणी-मोहनक नकल कर्ति जेना कमख-मंगनीएके कभा मास्त कए बाजा हिल होर्व)* र्वः कभा ! की अहुँ अक्हना मोनक भीख लेबा-देबा दय बाक्ज हिल ि ?

कमख-मंगनी : *(ढोग कर्ति)* से क्कयै ?

नंदी : नक्ह बुिलहुँ ? *(कमख-मंगनी मूडी डोला कए इशारिसँ 'नक्ह' कहैत र्वि)* देखू हम ि उच्चवर्गक...*(आब भंगी के देखा कए)* आ ई ि‍क कम-िगक,नीच लोग ! *(कक्हते देर्वि भंगी पीठ ुका कए एना चलै क्कर्वा लागैत र्वि जेना संपूणष शर्वीर नीचा भ' गेल होइन।)*

वमख-मंगनी	:	*(नकिा कनिक के उत्साक्त कति)* बेल.... आ तकि बाद ?
नंदी	:	तकि बाद की ? मोन तँ हर्मि लग अवि क नक्ह ?
वमख-मंगनी	:	ठीक-ठीक !
नंदी	:	आ मोन हमि िािमे एकटा हित िडबे ? िस्ता चलैत कतेको मिणी-मोहन हमि जुक्ते अवि...सभक मोन हमि एक्ह िािमे खिने हम घुति हैत िी। *(कक्ह कए नंदी मक्हलाक चलबाक नकल कति– जेना कंधा पि एकटा बैग सेहो कि–ताक्ह तहिै चलैत वि कैक डेग।)*
भंगी	:	*(चाक्ल पि पिडी पाडैत)* िह-िह ! िह-िह !
वमख-मंगनी	:	जखन िािमे एतेक िस मोन अवि त' द' कयै नक्ह दै िी दू चावि टा दाने मे ?
भंगी	:	*(हँसैत)* हे तोिि त' दाने- ध्यानक सूिि त' !
नंदी	:	हम िी उच्चिगिष्क ! *(गविसँ चलैत वि)* हम मोन बेक्च सकै िी मुदा दान कबि ? कनहुँ नक्ह...नैि-नैि च !
मक्हला	:	*(सभक कायक वितय आ मसखविी सँ अपसन भए)* चलू त' हमि संग... *(मिणी*

मोहनसँ) एक बेर्व आि 'मोन' सँ कोवशश कर्ि ी !

[दुनू गोटे दविजजाक पास जा कए मनः संयोवा क' कए हाि जोवड तत्पशात चाभी सँ दविजजा खोलबाक पयास कर्ति र्वि। यमाजि के िवड सब गोटे जेना एकटा अदशय देबाि बना कए ठाढ भेने सब कािु देवख िहल र्वि।]

ििमणी-मोहन : *(पर्िशान भ' कए... अलीबाबाक कि मोन पडैत िक्)* खुवल जो वसम-वसम !
(दविजजा टस सँ मस नवह होइि। दुनू गोटे हताश भ' जाइत र्वि।)
[वहनकि दुनूक हालवत देवख कए नंदी,भंगी आ वभख-मंगनी गीत गाबै लागैत र्वि।]

नंदी : "गली-गली मे गीत गबै ि,
िोिमे की ि तोहि वबकाय ?"

भंगी : "िोि मे हम्मि सुगगा- मैना,
सती माजर्ि, दववि न िय !"

वभख-मंगनी : "की हौ सुगगा कवयै गेले तो,
हम्मि गाम िवड ओवह अंवाना ?"

नंदी : "मािमे पेमक भूत नचै िल,
कहै कर्जि–मैना,मैना !"

भंगी : *(आगा बढैत िमणी-मोहनक लग मे आवब)*
"की हे मैना, कवयै कटौले,

पंख अपन तो मीतक नाम ?”

वाभख-मंगनी	:	*(उत्साहित भए मच्छलाक चारु कक्स घुर्वि-घुर्वि कए नाचैत आ गाबैत छथि---)* “की कहयहु हे, डूब देलहुँ अछि, कानु कछि सोचनक्ह दछि न-बाम !”
नंदी	:	*(ओहो छिताकाछि नत्यमे योगदान करैत)* “की हौ सुग्गा कत’ छौ चाभी, कोना तो जैबे सछिगषधाम ?”
भंगी	:	“दछिबज्जा पछि मोन केछि ताला, घुसब मना छैक क्हनकछि नाम।”
वाभख-मंगनी	:	‘नो एंटी’ छै ‘नो एंटी’ भाइ, लागै ने अछि ई छइ चैना।’
नंदी	:	“छइ बसंत, छइ पेम अनंत, तै कहै करैजि मैना,मैना।”
कोसि	:	‘नो एंटी’ छै ‘नो एंटी’ भाइ, कहै काभा छिमणा- छिमणा।’
नंदी	:	“सबतछि पेमक भूत नचै छइ, कहै करैजि हँ-ना, हँ-ना।”
वातगुप्त	:	*(अकस्मात् चीत्काछि करैत)* सा-छि-धा-न! *(सब तयो साछिधान सब तयो साछिधान भ’ जाइत छथि)* वि-शा-म! *(सब तयो विशाम बला भंवामामे ठाढ भ’ जाइत अछि। सब गोटे काछिक आ काजीछि भ’ जाइत छथि।)*

कोसि : *(दूसिँ जेना एहन सर्ि भासल आक्ष हिल अर्व)*

“‘नो एंटी’ छि, ‘नो एंटी’ भाइ,
मोन नवि लागै, ने चैना !”
“‘नो एंटी’ छि ‘नो एंटी’ छि
दबिजजा पि कि धनिा !”
[धीरि-धीरि मंच अह्हारि भ’ जाइत अछि।]

***

राािकृष्ण चौिरी

भ्अथिलाक इश्वाहास

अध्याय १

क्मविलाक इक्वाहास

भूक्मका

ैक्दक युगक भूक्मका:- पाचीन ैक्दक साक्हत्यमे अंग मगध आ क्मविलाक कोनो स्पष्ट उल्लेख नक्ह भेटइत अवि। ॑ गैदि संक्हतामे उपाितत तीनू खण्डमे सँ कोनो खण्डक नाम उक्ल्लक्खत नक्ह अवि। ॑ गैदिक तेसि अष्टकक ५३म सूततक चौदहम ॑चामे ‘कीकट’क उल्लेख अवि आ ओक्हठामक िाजा ‘पमगह्द’क सम्बह्धमे बहुत िास क्मह्दनीय बात सेहो। यास्कक अनुसाि ‘कीकट’ देशमे अनायष लोकक्मक क्माि सि िल। सायणाचायष एक्ह मतसँ सहमत होइतहुँ आगा कहैत िवि जे ‘कीकट’क क्मािसी नाक्स्तक िलाह आ योग, दान, होम इत्याक्दपि हुनका लोकक्मके एको िती क्विशास नक्ह िलक्ह। ओ लोकक्म इहलोक्कक िलाह आ पिलोकमे हुनका लोकक्मके कोनो पकािक क्विशास नक्ह िलक्ह। ओ लोकक्म भौक्तकिादी िलाह। ाियुपुिाणिक गया माहात्म्य मे कहल गेल अवि–

“*कीकटेरु गया पुण्या नदी पुण्या पुनप पुनप*

च्यानिस्या शमं पुण्यं पुण्यं ाजिगहं ानिम्' ।

एकहसँ स्पष अवि जे 'कीकट' दक्षण विहामि ाल आ ओकहठामक क्मासी भौक्मकािदी दशसामे विशिास िखैत ािलाह। 'कीकट'क सम्बह्धमे ैविदक विदान लोकक्मक मध्य मतभेद अखनो बनल अवि आ आक्ह वािदमे पडब हमि ा लोकक्मक हेतु एतए आिश्यक नक्ह बुिना जाइि ।

एहन मानल जाइत अवि जे संकहता कालमे आयषसभ्यताक पधान केहद्र सिसि ती आ हरदती नदीक मध्यमे ािल आ ओक्ह स ानिके मनु बह ाितिषकहने िवि। बाह ण कालमे आक्ह संस्कक्मक केहद्र ािल कुर पाचाल जकि ा मनु बह क्मष देश कहने िवि। शतपि बाह णमे कुर पाचाल देशक विशेर पशंसा भेल, अवि आ ऐतिािय बाह णमे आयषदेशक हेतु अस्या शुाििया पक्मष्ठाया विशेरणक पयोग भेल अवि। सदानीिा नदी (गण्डक) पाि ककए जखन आयष लोकक्म कविलाक केत्मे उतािलाह तखन अत्यंत दूतगक्मसँ आयष संस्कक्मक पसाि अक्ह केत्मे भेल आ कविला विदेह समस्त पूिा भातिमे आयष सभ्यताक पसाि-पचािि एकटा पधान केहद्र बक्म गेल।

कोनो संक्हतामे स्पष्ट र पे विदेहक उल्लेख नक्ह भेटइत अवि। तैक्तािय आ काठक संक्हतामे "ैिदेह", "ैिदेही" एिं "ैिदेह" शब्दक पयोग भैटेत अवि पिज्य आक्ह सभक्हक क्याहाि गाय आ बिदिक हेतु भेल अवि। ऐतिािय बाह णमे जाक्हठाम आयष देशक चचा भेलो अवि ताहुठाम "विदेह" शब्दक पिि उल्लेख नक्ह भेटइत अवि। काशी, कोशल, मगध, अंग, आक्द शब्द संग 'विदेहो'के पाच्य देशमे साक्ट देल गेल अवि। 'विदेहक' पिि

उल्लेख स्पष्ट रपे शतपि बाह णमे भेटइत अवि। ओक्हठाम इ कहल गेल अवि जे विदेघ माि ि अपन पुिक्हत गौतम िहूगणक संग िशिनि अवमक अनुशिणि कॅति-कॅति सिसिती नदीक तीिसँ सदानीिकि तीि धवि पहुँचलाह। एक्हसँ पूिषआयषलोकक्त सदानीिकि पाकिए पूब क्दक्स नक्ह गेल िलाह तै तँ इ एक महत्िपूणष घटना मानल जाइत अवि। िशिनि विदेघ माििके सदानीिि टपबाक आदेश देलविक्ह। विदेघ अपन पुिक्हतक संग ओकिि पाि केलक्ह आ तखनेसँ ओ देश 'विदेह' कहबे लागल। सदानीिि विदेह आ कोशलक बीचक सीमा िखा बनल।

ताक्ह क्दनसँ विदेह आयषसभ्यताक पधान केन्द्द बक्त गेल। शतपि बाह णक शेर अध्यायमे जनकक दिबािकि किि सुक्कित अवि। क्तविलाक िजा जनक अपना ओक्हठाम देशक विक्हन्न भागसँ बहजानी लोकक्तके आमंक्तत कऽ कए बजबैत िलाह, आ हुनक दिबािमे तँ कुर पाचालसँ बिबिव ् क्र-मुक्त लोकक्त आक्तते हैत िलाह। ् क्र याजक्तय विदेहमे हैत िलाह आ ताहु हेतु क्तविलाक पक्सक्द्द समस्त आयाितिषे िल। जनक याजक्तय तँ बुि जेना आयष संस्कृक्तक दोतक बुिल जाइत िलाह आ बहजानक केत्रमे क्हनका लोकक्तक कोनो ककिसँ तुलना ताक्ह क्दनमे नक्ह िल। कुर पाचालक ् क्रगणक कुक्टयामे क्शाकक्त क्हतहुँ याजक्तय जखन जनकक ओक्हठाम शास्त्ताििषे पहुँचलाह तखन ओ ओक्हठाम उपक्सित कुर पाचालक ् क्रगणके शास्त्ताििषे पिक्जत केलक्ह आ अपन विदताक पकाश सेहो। हुनक िचिन मात अध्यात्म विधेटामे निि अक्पतु िक्दक क्कयाकलापमे सेहो सिििि पामाक्णक मानल जाइत िल। पिम्मिामे क्हनका शुक्तल यजुिदक

पतिष्क मानल गेल अवि। शतपि बाहण एिँ बहदाण्यिकोपक्नरदक अनेकानेक सिल पि जनक याजलि्कयक बहजानक विि चिनाक िणिषा अवि आ ठाम-ठाम विवमहन्न् व्र लोकक्नक शास्त्तािषक सेहो। बहजानक हेतु तैक्तिािय बाहणमे सेहो िजा जनकक पशंसा कैल गेल अवि। जनक बहजानक हेतु केहेन पक्सद िहल हेताह तकि एकटा सामाह्य संकेत हमि लोकक्नके कौशीतकी उपक्नरदक एक किमे भेटइत अवि जाक्हमे कहल गेल अवि क्क गगिंशिक 'बालाक्क' नामक एक बहजानी काशीिज अजातशुतक ओतए बहजानक क्नरपणके जखन पहुँचलाह तँ िजा हुनकासँ पसह्न भए एक हजाि गाय देलविह्ह आ कहलविह्ह जे देखु तइयो लोक सब "जनक-जनक" क्चकैवि िहल अवि। िँक्िदक युगमे बहजानक चिम उत्क्नरषविदेहमे भेल िल। बहजान आयषसंस्क्नक्ताक चिम उत्क्नरष बुिल जाइत िल िँक्िदक मंतक उतिन बहातिषे, क्नया कलापक विकास बहक्नषदेशमे एिँ "बहविदा"क विििचन विदेहमे भेल। एक्ह हेतु ताक्ह क्नदनसँ समस्त आयाितिषक लोकके विदेह आिए पडइत िलक्ह। विदेह पूिि भाितिमे िँक्िदक कालमे आयषसभ्यताक पधान केह्द्र िल। एक्हठाम क्नत्ताय सेहो िदिता होइत िलाह।

संस्क्नत साक्हत्य मध्य क्नविला, विदेह एिँ तीिभुक्तिक िणिषाः

बालकाण्ड (बाल्मीक्क)मे क्नविलाक िणिषा एिँ पकािि अवि-

िमायण (बालकाण्ड, सगष४८)- "िमोऽक्ता पिमापूजा गौतमस्य महामनपँ

सकाशाद् विधाित् पाप्य जगाम क्नविलाततं"प॥

अनघषिाघिमे (अंक २)

"*शणोक्त विदेहेरु क्नविला नाम नगिीिम्*"

जयदेि-पसह्नािघि-(अंक २)
"तव्रह मर्विलाया पंचाति क्नािसेन शमोपऽनेतव्य।
पसंगादयं च िजा जनको दष व्यः।"
िघुिशि-(सगष११)
"संह्यमहियिन समभ्रतकतु हेतु मैर्विलः
स मर्विला िसन् िशी'।
नैरधीयचर्विति-(सगष१२)
"अपीयमेनं मर्विला पुह्दिि क्नपीय दक्षा प व्रशर्विला स्तुते िमि्।"
'िमायण चम्पू' (बालकाण्ड)
"अि मर्विला पव्रतपक्र्िितप
कौव्रशकस्त्तमर्ति म कियत्'
दशकुमाचिर्विति (उतिपीव्रठका ३ उच्व िस)
"एरोबऽह व्रसम पय्यष्टने कदा गतो
र्विदेहेरु मर्विलाम पर्विश्यैि"
किासर्विितसागिि (जम्बक ३, तिंग ५)
"ददो िदेह देशे च िजिं गोपालकायष्मः।
सत्काि हेतोनषकः शशुयायानुगचिितेः॥
भंगदूत (गंगानंद ि ा)-१७म शताब्दी
"गंगातीीािर्विधव्रि गता यद् भुिभिंगभुक्तत
नीमासैि क्राभुिनितले र्विशुता तीिभुक्ततः॥
भंगदूतमे दिभिंगाक िणिषा एिि पकाि अर्वि
नस्थापाि: पिमार्विमिणं सक्तकायावभािमा
गाििकामायुध दिभिंगा िजिधानीमुपेयाः॥
िघुिीि कर्वि "लक्ष्मीशािपायनां' मे

"*देशाः संतु सहस्त्रोऽस्य ममतु सभिार्विक पीतये,*
शेयान् देश विशेर एरं क्ष्मविलानामा क्ष्मामंडले"।
बदी नाि ि- 'गुणेशि चविति चम्पू'
"*अक्स्तसविस्त समस्त भूक्मबल शेय पशक्स्तशुता*
पत्यविषमयमहनाप्त क्ष्मविला नामाऽक्माि माकक्ष्प।
पेकत्रशाक्षविपक्षदाक्लतोत्संगाऽकमरंगाक्दषी,
नीदि-ि द्दम चक्यषकाऽक्यताशीस्तीि भुक्ताः सदा"।

गंगा गण्डकी संगमसँ पक्षम सुपक्सद सोनपुि टीसनक समीप जे हविहि क्षेत्र अवि तकि उल्लेख भंगदूतमे भेटइत अवि। एक्ह भंगदूतमे गाण्डीिशि सि ान, बह पुि, ि गिती (ि ग्मती) एवँ कमला नदीक उल्लेख सेहो भेटइत अवि। कहबी िक जे गाण्डीिशि महादेि िजा जनकक दक्षणक दापािल हिविह्ह आ ओ सि ान सम्पक्त जोवाआि टीसनक समीप अवि। ओना क्ष्मविला नामसँ पाचीन जनक िाजक िाजधानीक बोध होइि पिक्ष्च एतए स्मािण ि खबा आिश्यक जे क्ष्मविला, तीिभुक्तत, विदेह, आक्द शब्द एक एहन भौगोक्लक इकाईक दोतक विक जे गंगाक उतिमे िल आ विभिन िाट-िाट गणािज्यमे बटल िल। पाचीन कालक क्षाहािमे गंगाक दक्षणमे िल अंग आ मगध आ उतिमे िल क्ष्मविला जकि अंतगत्त कैकटा िाट िीन िाज्य सब िल। जातक कि आ जैन साक्हत्यक अक्तवित हिद विष्णुपुिाणिक क्ष्मविला महात्म्यमे क्ष्मविलाक जे िणिन अवि ताक्हसँ एकि महत्ति एवँ जनिायताक पता लगइयै। एक्ह क्ष्मविलाक अंतगत्त िल तँ पाचीन कालक िैशाली जकि विस्तृत विािणि िामायण, िामायण चम्पू एवँ भंगदूतमे भेटइत अवि। पाचीन 'विशाला' नगवियै बौद कालक िैशाली विक।

वि शालाक नामक बोध अद तन “बसाि” पि गिनासँ होइत अवि । एवह केतमे एकटा भैि सि ान सेहो ि ल जकि चचष भंगदूतमे भेल अवि । बाल्मकीय ि मियणक बालकाण्डमे गौतमाशम अहल्यास ि ानक उल्लेख भेल अवि । अवहयाि गाि (कमतौल टीसन)सँ अधुना एकि बोध होइि । भंगदूतमे “सवसि” गाम आ कोव्टशि महादेि कि उल्लेख सेहो भेटइत अवि ।

iii. नाम एिं कववि लाक भौगोवलक सीमाप- शतपि बाह णक अनुसाि नदीक बहुलताक काि णे कववि लाक भूवम दलदल जका ि ल। कहल जाएि जे अवगनदेि कि आजासँ माि ि वि देघ आ गोतम ि हुगण सदानीि ि (गण्डकी)क पूबमे जाकऽ बसलाह आ उएह केत इवतहासमे कववि ला, वि देह, तीि भुवकत एिं वतहुतक नामसँ पवसद भेल। दलदल भूवमके अवगनदेि सुखाके कठोि बनौलवह आ जंगलके जि िके एवह पूि ि भूवमके ि हिबा योगय सि ान सेहो। आयष् वक लोकवन ओवहठाम अगवणत यजक आयोजन केलवह आ असंखय यज आ होम होयबाक काि णे ओवहठामक भूवम ि हिबा योगय बवन सकल। नदीक बाहुलयक काि णे संभि जे एवह केतके तीि भुवकत कहल गेल ि ल। पाचीन कालमे तीि भुवकत समसत उति ि वबहाि कि दोतक ि ल आ एकि सीमा पवशमममे शाि सततीभुवकत आ पूबमे पुणष ि धिषभुवकतसँ वमलैत जुलैत ि ल आ एकि एवह वि शालताक पवि चय हमि आयनी अकबि ि मे ि वगाषा वतवि हुत सवि काि कि महालक नाम सभसँ सेहो भेटइत अवि ।

पि पि ि गित साधनमे कववि लाक जे वि ि ि णि उपलबध अवि तकि वसंहावि लोकन कबि अपेवकत। ओवह ि णिषामे ऐवतहावसकताक पुट कतबा दूि धवि अवि से नवह कवह सकैत ि ि तावि पौि ि वणक

आख्यानक महत्ति तँ ऐतिहासिक दृष्टिये अछि ये अछि एहिमे संदेहक कोनो गुंजाइश नहि।

भविष्य पुराणक अनुसार अयोध्याक महाराज मनुक पुत्र निमि एहि यज्ञ भूमिमे आबि अपनाके कत्य कत्य बुझलन्हि आ ओहिठामक ऋषि लोकनिक तप आ यज्ञसँ लाभान्वित भेलाह। निमिक पुत्र 'मिथि' एक शक्तिशाली शासक भेलाह आ ओ अपन पराक्रमक प्रदर्शनार्थ एहिठाम एकटा नगरक निर्माण केलन्हि जे 'मिथिला'क नामसँ प्रसिद्ध भेल। एहिमे कहलगेल अछि जे पुरी निर्माता होएबाक कारणे 'मिथिला'क दोसर नाम 'जनक' पड़ल।

भविष्य पुराणपर

निमेः पुत्रस्तु तत्रैव मिथिर्नाम महान् स्मृतः।

प्रथमं भुजबलैयेन तैरहूतस्य पार्श्वतः॥

निर्मितं स्वस्य नाम्ना च मिथिलापुरमुत्तमम्।

पुरीजनन सामर्थ्याज्जनकः स च कीर्तितः॥

वाल्मीकीय रामायणपर राजाऽभूत्त्रिषु लोकेषु विश्रुतः स्वेन कर्मणा निमिः परमधर्मात्मा सर्वसत्त्ववतां वरः। तस्य पुत्रो मिथिर्नाम जनको मिथिपुत्रक कहि अछि जे जखन वशिष्ठ यज्ञार्थ लारी निमिक निमंत्रण अस्वीकार कए इन्द्रक पुरोहिताइ करबाक हेतु स्वर्ग गेलाह तखन वशिष्ठक अनुपस्थितिमे भृगु आदि अन्यान्य ऋषि मुनि लोकनिक साहाय्यसँ निमि अपन यज्ञक संपादन केलन्हि। वशिष्ठ स्वर्गसँ घुरलापर जखन यज्ञके सम्पादन भेल देखलन्हि तखन क्रुद्ध भए ओ राजा निमिके "विदेह" भजेबाक शाप देलन्हि। वशिष्ठक एहि शापसँ चारुकात हाहाकार मचि गेल। प्रजा लोकनि घबरा उठलाह। अराजकताक स्थिति देखि उपस्थित ऋषिगण निमिक मृत

शीिकें मि ऽ लगलाह आ मिला उतिजे शीि उत्पन्न भेल तकरि "मविला" अिि "विदेह"क संजा देल गेल। इ लोकिन "जनक" नामसँ सेहो पिसद भेलाह।

शीमदभागितप

जन्मना जनकः सोऽभूदैदेहस्तुः विदेहजः।

मविलोमिनाजजातो मविला येन िनिमतिा॥

देिी भागितसँ जात होइि जे िनिमक उनैसम पीढीमे िजवरषसीधिज जनक भेल िलाह (आि) शीमदभागितसँ इ बुिल जाइत अिछ जे जनक िशक शासक लोकिन एहेन िताििण बना देने िलाह जे हुनक पाशिित गहसि सेहो सुख दुःखसँ मुतत भऽ गेल िलाह। 'विदेह' जे िक महतिपूणष कलपना िल आ जकिर पािपतक हेतु लोग ललायत िैत िल से ओिह देशक नामक संकेत सेहो दैत अिछ जािहठाम जनक िशक लोग अपन िजयक सिापना कएने िलाह। शुकदेि जी (वयासक पुत) जखन अपन िपतासँ तपचयाक हेतु आजा मागलििह तखन हुनका योवािज जनकक दषात दैत इ कहल गेलििह जे ओ घिमे िहिके तपसया कऽ सकैत िि। शुकदेिजीके असंतुष देिख वयास हुनका िजवरष जनकक ओतए पठा देलििह।

देिी भागित____

िशेऽसमहयेऽवा िजानसते सि जनकासतिा।

विखयाता जाकनः सि िदेहाः पविकीिताः॥

िरिषयेन मेरं च समुललङ् य महामितः।

िहमालये च िरेण जगाम मविला पित॥

पविषो मविलामधये पशयंसािािदसमुतम्।

पजाश: सुक्खता स ि: सदाचा ि: मुखंक्स ताः॥

शीमद् भाग ति ____

एते ि मैवि ला ि जिनात्म वि दा वि शा दिाः

योगेश ि पसादेन दह्दैमुतता गहर्षि वि॥

क्मवि लाक सीमाक सबंधमे दे ि भाग तिमे क्माक्कत वि ि णि अवि ।

ए ि क्मक्मसुतो ि जिा पा तिोजनकोऽभ ति् ।

नग ि क्मक्मषा तेन गंगाती ि मनोह ि ।

क्मवि लेक्त सुवि ख्याता गोपु ि टाल संयुता

धनधाह्य समायुतताः हहेशाला वि ि क्जिता॥

शक्तितसंगम तंतप

गण्डकी ती ि मा ि भिय चम्पा ि ण्यातंग क्श ि ।

वि देहभूः समाख्याता ती ि भुतत्यक्मधः सतु॥

स्कह्द पु ि णप

गण्डकी कौक्शकी चै ि तयोमध्ये ि सि लिम् ।

बहद् वि ष्णुपु ि णप

कौक्शकीह्तु समा ि भिय गण्डकीमक्धगम्य ि ।

योजनाक्म चतुवि शिंद् व्यायामः पवि कीक्तषाः॥

गंगाप ि हिमा ि भिय या ि दैम ति ि निम् ।

वि स्ता ि ि रोडश पोततो देशस्य कुलनह्दन ।

क्मवि लानाम नग ि ततास्ते लोक वि शुता॥

अगस्त्य ि मायणप

ि देहोप ि निस्याते क्दश्यैशाह्या मनोह ि म् ।

वि शालं स ि सिस्ती ि गौ ि मिंक्द ि मुतमम्॥

ि देही िव्टका तत नाना पुष्प सुगुक्मफता।

किरतमाक्लकह्याक्मः सि ष्ठु सुखदा शुभा॥

क्मवि लाक उत्तिमे क्हमालय, दक्कणमे गंगा, पूबमे कौक्शकी आ पक्शममे गण्डकी अवि ।

चह्दा िपफ

गंगा बहवि जक्सक दक्कण क्दक्श,

पूि षिकौक्शकी धाि ि

पक्शम बहवि गण्डकी,

उत्ति क्हमि ति बल विस्ताि ि ।

पाचीन क्मवि लामे आधुक्नक दि भिंगा, मुजफ्फिपुि, मोक्तहाि ि, (दि दि ____ गण्डकी देश), सहि सा, पुक्णाषा, बेगूसि ाि य, कक्टहाि, विहिपुि, एवँ नेपालक दक्कणी भाग सक्ममक्लत ि ल। नदीक पधानता हेि ि क काि णे क्मवि लाके तीभिुक्तत सेहो कहल गेल ि ै क____

ि हिद् विष्णु पुि ाणपफ

गंगा क्हमि तीोमक्षामे नदी पञ्च दशाति ि ।

तैभिुक्ततक्वि क्त ख्याातो देशः पि मि पाि नः॥

तीभिुक्तत नाम होएबाक क्नमक्लखत काि णि बताओल गेल अवि ।

i.*) शाम्मकी, सुि णिषएवँ तपोि निसँ भुततमान*

होएबाक काि णे इ तीभिुक्तत कहाओल।

ii.*) कौक्शकी, गंगा आ गण्डकीक तीधिवि*

एकि सीमा ि लैक तै एकि ि तीभिुक्ततक संजा देल गेलैक।

iii.) ् *क्, यजु आ साम तीनहुक ि दि सभसँ*

आहुक्त देि ड़बला बाह ण समूहक क्ा ि सिसँ

क्त आहुक्त अि ि ित क्ताहुितक नामसँ

इ सिान पख्यात भेल।

१६_१७म शताब्दीक काबाती याती लामा तानािाकि विाििमे काहितके “काहिुका” कहल गेल अवि। आ आयनी अकबािमे तँ सहजक्ह एक विस्तत विाििि भेक्टते अवि। ऐक्ताहाक्सक दका कोणसँ भुक्तत शब्द पयोग गुप्त युगसँ पािभ भेल आ क्शलालेखमे एकि उल्लेख भेटइत अवि। िशालीसँ पाप्त कैकटा मोहिपि तीभिुक्तत शब्दक उल्लेख अवि आ संगक्ह कटािसँ पाप्त अक्भलेख, नाायिण पालक भागलपुि अक्भलेख, ािनगािि तामपत अक्भलेख आक्दसँ ‘तीभिुक्तत’पि पकाश पडइयै आ इ बुवि पडइयै जे ताक्ह क्दनमे तीभिुक्तत समस्त उतिि क्बहािकि दोतक िल जकिि पक्शममे िल आधुक्नक उतिि पदेश औि पूबमे बंगाल। महानंदाक पक्शम आ गण्डकीक पूबक समस्त भूक्म तीभिुक्तत कहबैत िल, एक्हमे कोनो संदेह नक्ह। जातकमे क्मविलाक केत्त जे िणिा अवि आ आयनी अकम्बािमे िकिाा काहिुत सिकािकि विाििि हमिि उपिाितत मतक समिािा कि़इयै। देशक भूगोल आ सीमा ाािजनैक्तक उिल-पुिलक कािणे बदलैत िहैत िक आ क्मविलाक ाािजनैक्तक इक्तहासमे सेहो एहेन कतेक पविातिा भेल िक तािक्प एकि जे एकटा सास्कृक्तक सििप अवि से आविक्तिन रपे चक्ल आवि िहल अवि आ उएह रप एकि भौगोक्लक सीमाक स्पष आभास दैत अवि। पाचीन साक्हत्यमे क्मविला आ जनकपुिि नाम भेटैिि पिन्च गुप्तयुगसँ तीभिुक्तत नाम पशस्त भऽ गेल।

____ “*पागज्योक्तर: कामर पे तीभिुक्ततस्तु क्मविि: विदेहाश्चाय कश्मीि*”

क्लंग पुिणप

"*तीभुक्त पदेशेतु हलाति हलेशः*"

पाचीन मिथिलाक पुातात्विक विश्लेरण एवं अध्ययन अखनोधरि अपेक्षते अछि। नेपालक सीमा जे सम्पक्त जनकपुर अछि तकरा पाचीन विदेह मानल गेल अछि। सुरूचि आ गाधार जातकमे विदेह एवं मिथिलाक भौगोलिक सीमाक वर्णन भेटइत अछि। विदेहक चार मुख्य फाटकपर चारिटा बाजार छल। महाजनक जातकमे तँ विदेहक राजधानी 'मिथिला'क भव्य वर्णन अछि मिथिलाक नगरक सोभा, बाजार आ राज दरबारक शोभा, सामाह्य लोगक पहिरब ओढब, खान पान, रहिन सहन, सैनिक संगठन, रथ, हाथी, घोडा, आदि एहेन कोनो अंश छुटल नहि अछि जकर वर्णन ओहिमे नहि भेटइत हो। अयोध्यासँ मिथिला पहुँचबामे विशाखतके चारि दिन लागल छलन्हि पत्रि राजा दशरथ ओतए जनक जाहि दूतके पठौने छलाह तकरा मात तीन दिन लगलैक। दशरथ चारि दिनमे अयोध्यासँ मिथिला पहुँचल छलाह। महावीर एवं बुदक समयमे विदेहक सीमा एवं पकार छल—

— लम्बाइमे कौशकीसँ गण्डक धरि २४ योजन।

— चौडाइमे हिमालयसँ गंगा धरि १६ योजन।

— मिथिलासँ वैशाली ३५ मील उत्तर पश्चिम दिस छल।

— जातकक अनुसार विदेह राज्यक सीमा ३००० लीग छल आ राजधानी मिथिलाक ७ लीग।

— मिथिला जम्बुदीपक एकटा पधान नगर छल।

— सदानीरा नदी बुढी गण्डकक दोतक छल।

— तीभुक्त नामक संदभर्मे भंगदूतमे कहल गेल अछि—

"*गंगा तीरि भिधिगता यदभुओ*

भङ्भूक्ततषामा सैि क्तभुनि तले विशुताः तीभिुक्तत'
आ शक्ततसंगम तंतमे ——
गण्डकीतीमािभ्य चम्पाण्यिातकं
क्शाि विदेहभूः समाख्याता तीभिुक्ततकाधोमषुप।

'भुक्तत' शब्दसँ पाह्तक बोध होइि आ गुप्त युगमे समस्त क्वविला तीभिुक्तत नामसँ पक्सद िल आ एक्हसँ समस्त उतिक्वहाकि बोध होइत िल। भोगौक्लक दक्ष ये क्वविलाक क्नमक्लक्खत नाम सेहो महतिपूणष अवि —विदेह, तीभिुक्तत, तपोभूक्म, शाम्भिी, सुिणषकानन, मक्ह्तली, िजियंती, जनकपुि इत्याक्द पञ्चि एक्ह सभमे विदेह, क्वविला, तीभिुक्तत आ क्तहुित विशेर पचक्लत अवि। चाविम शताब्दीमे तीभिुक्तत नाम पक्सद भऽ चुकल िल। क्तकाण्डशेर, गुप्त अक्भलेख आ बािहम शताब्दीक एकटा अक्भलेख एिं अह्याह्य अक्भलेख सभमे 'तीभिुक्तत'क नाम भेटइत अवि।

iv. क्वविला भूक्मप सम्पक्त जे मोक्तहािी, मुजफ्फिपुि, दिभंगा, सहिसा, पूवणषा, बेगूसाियि, आक्द केत अवि सैह पाचीनकालमे क्वविला, विदेह, तीभिुक्तत, कहबैत िल आ िशाली एकि अंतगषत िल। गण्डकीसँ महानंदा आ क्हमालयसँ गंगाधिकि केतक अंतगषत क्वविला िल। क्वविलाक सीमा लगभग २५००० िगषमील िल। क्ह्युएन संग जे 'पूिि भातिि'क िणषन कैने िवि ताक्हमे क्वविलोक उल्लेख अवि। क्वविलाक नाम उत्पक्तक सम्बह्धमे क्नमक्लक्खत श्लोक पक्सद अवि ——
"*क्नक्मः पुतस्तु ततैि (क्वविनाम) महान स्मतः*
पििं भुजबलेयेन तैहूतस्य पाशषाः।
क्नक्मषसंसिीय नामाच क्वविलापुिमितम्

पुत्रिजनन सामर्थ्यात् जनकः सच कीर्त्तितः॥
(शब्दकल्पद्रुम-iii.७२३)
हिद विष्णुपुराणक मिथिला महात्म्य खण्ड ____
मिथिला नाम नगरी नमास्ते लोक विश्रुता
पंचभिः कारणैः पुण्या विख्याताजगतीतये॥
पातंजलः-
महति शतायिस्या=मि+"मिथिलादयश्"
इक्तदूलच अकारिस्येति निपात्यते सनिाम
ख्यातनगरी। सातु जनकाजि पुरियरि। विदेहा
मिथिलापोतता। इक्त हलायुधः-

मिथिला भूमिक विशेरता इ अछि जे एतहठाम नदीक बाहुल्यक कारणे जमीन उपजाउ अछि आ सभ पकारक अनक खेती एतए होइत अछि। एतहठामक जनसंख्याक विशेर भाग अहुखन खेतीपर निर्भर करैत अछि। पत्तरिष एतहठाम नदीक बाढ़ि अबैत अछि, गाम घर दहा जाइत अछि, लोग विलल्ला भऽ जाइत अछि तथापि अपन मातृ-भूमिक पक्ष एतहठामक लोकके ततेक पेम आ आसक्तत छैक जे ओ एकरा तैयो छोड़ि लेल तैयार नहि अछि आ ओहि मातृ-भूमिसँ सटले हिब अपन जीवनिक सारि बुझैत अछि। गण्डक, विग्मती, बलान, लखनदेइ, कमला, करेहि, जीरि, कोशी, बालयुगा, गंगाक मारि मिथिलाक लोग जन्म-जन्मातरसँ सहैत आबि हिल अछि। नदीक बिना मिथिलाक भूमिक कल्पने नहि भऽ सकइयै। नदीक कारणे तँ मिथिलाक नामो तीरभुक्तत पड़ल छल कहियो। नदीमे सप्तगण्डकी आ सप्तकौशकीक उल्लेख अछि आ एकरि सोत नेपालमे अछि। आब दुनू नदीके क्रयंक्तत कबिाक हेतु

कोशी आ गंडक योजना बनल अछि आ आन-आन नदीके पालतु बनेबाक प्रयास भऽ रहल अछि।

मिथिला भूखण्डक बनावटि एकरा कैक अर्थें सुविधा प्रदान करैत छैक। एक दिस हिमालय पर्वत छैक तँ तीन दिस नदी आ तैं एहि ठामक लोक कतहु विशेष स्वभाविक होइत छथि जकर संकेत विद्यापतिक पुरुष परीक्षामे अछि। नदीक पूजा एहि ठाम ओहिना होइछ जेना कोनो देवीदेवताक आ सभ नदीक पूजाक गीत सेहो उपलब्ध अछि। पावनि तिहारादिमे नदीमे स्नान करब आवश्यक बुझल जाइत अछि। अक्षय-तृतीया (वैशाख शुक्ल)क दिन नदीमे स्नान करबाक प्रथा धार्मिक मानल गेल अछि। मिथिलाक लोग अपन देश, संस्कृति, भाषा आ संस्कारक प्रति बड्ड कट्टर होइत छथि। भौगोलिक दृष्टिये मिथिलाक क्षेत्र एकटा राजनैतिक इकाइक रूपमे प्राचीन कालहिंसँ बनल रहल अछि आ तैं एकर सास्कृतिक वैशिष्ट्य अखनो बाचल छैक।

४. मिथिलाक वासीः- जे केओ मिथिला अछि मैथिल संस्कृतिसँ अपरिचित छथि हुनका 'मिथिला'सँ मात्र मैथिल ब्राह्मणक बोध होइत छन्हि परञ्च इ बोध हैब भ्रामक थिक, कारण मिथिला एकटा भौगोलिक सीमाक द्योतक थिक आ ओहि सीमाक अंतर्गत रहनिहार प्रत्येक ओहि भौगोलिक इकाइक अंग भेलाह चाहे हुनक जाति, धर्म अथवा विषय जे हो। मिथिलाक रहनिहार प्रत्येक व्यक्ति मैथिल कहौता एहिमे कोनो संदेह नहि रहिबाक चाही। धार्मिक क्षेत्रक प्रधान आ आध्यात्मिक रूपे प्रभुत्व रहलाक कारणे ब्राह्मणक प्रधानता रहलन्हि आ लगातार ७०० ८०० वर्ष ब्राह्मण राजवंशक शासन रहिबाक कारणे ब्राह्मणक राजनैतिक महत्व सेहो बनल रहल।

इ फािक किा जे सामाह्य बाह णग गाँिब िवि पज्ञि इ बाता साच जे बाह णक िजय िहलासँ िजनीक्तमे बाह णके विशेर पाक्षकाि भेटलक्ह आ ओ लोकक्ष सामंतािदी युगसँ अदािक्ष सभ केत्रमे नेतत केलक्ह। स्थाणिीय जे आनिणक्ष तुलनामे क्षविलामे बाह णक जनसंख्या बहुत कम अवि।

बाह णक अक्तवितत क्षविलामे क्त्राय, िश्य, शूद (सभ पकाि), कायस्ि, मुसलमान, इसाइ आक्द सब िणक्ष लोग िहैत िवि। क्षविलाक विशाल केत्रमे सूँिा, तेली, कलािि, यादि, िाजपूत, िणक्षाँ कम धनी आ शक्ततशाली नक्ह िवि। क्षविलामे कतेक िणक्ष लोग मध्य युगमे िहैत िलाह तकि विशलेरण ज्योक्तविशि ठाकुिक िणक्षिताकिसँ भेटैि। मुसलमानोमे सैयद, पाठान, मोक्षन, शेख, आक्द शाखा सम्पदायक लोगक िास िक्ह। जमीह्दाािमे बाह णक अक्तवितत, भूक्षहाि बाह ण, िाजपूत, आ यादि लोकक्ष एको पैसा कम नक्ह िवि। यत-तत कायस्ि लोकक्षके सेहो जमीह्दाािि िलक्ह मुदा ओ लोकक्ष आब विशेरतः कलमफािसीमे क्ह गेल िवि। क्षविला केत्रमे मुसलमानो जमीह्दाि कैकटा िलाह।

िगक्ष क्हसाबे क्षविलामे मूलरपेण दूटा िगष अवि गाँिबक िगषआ धक्षकक िगष जे केओ धनमान िवि (चाहे जाक्त कोनो होक्ह) ओ धनी िगषे िवि आ गाँिब गाँिबक िगष दुनू िगक्ष बीच संघरषचक्ल िहल अवि। जमीह्दाािि उठलाक उपाित इ संघरषआ तीिर भऽ गेल अवि काणि आविक्ष क्हसाबे क्षविला तुलनात्मक दक्ष ये विशेर शोक्रत आ पीक्डत अवि। उतिभाितक अनागाकि पदािसँ विभूक्रत क्हतहुँ क्षविलाक सामाह्य लोगके अहुँखन

पाभिर्वकि अन आ पाच हाकि स्ति नक्ह भेटइत िक आ ओ अपन पेट भबािक लेल चार कात बौआइत हैत अर्वि। क्मविलाक क्ममगिषक सामाक्जक शखंला कीिब-कीिब टुक्ट चुकल अर्वि आ ओ शोरण यंतमे नीक जका पीसा हिल अर्वि। इ क्सिक्त आब काक्तक आहान जक्हया कीि।

क्मविलाक उतिी आ उति-पूिी सीमापि इण्डो-मंगोलाइड जाक्तक लोग सेहो बसैत िर्वि जे िर कहबैत िर्वि। हुनका लोकक्तके हिन-सहन अहुँखन पुनिे क्विह्ह यदवा ओ लोकक्त पर्वशिम कबािमे ककिीसँ कम नक्ह िर्वि। शूदमे शुद आ अशुद (अिूत) दुनू तहिक लोग अबैत िर्वि। डोम, चमाि, दुसाध, मुशहि, हलालखोि, धानुक, अमातय़ केओट, कुमिी, कहाि, कोइिी आक्द सेहो पयाप्त संख्यामे क्मविलामे बसैत िर्वि। जनसंख्याक क्हसाबे यादि सभसँ आगा िर्वि। दुसाध, कोइिी, चमाि, कुमिी आक्दक जनसंख्या जोक्ड देलासँ ताकिर्वित क्पिडागिषक जनसंख्या ताकिर्वित अगुआगिषक जनसंख्यासँ बेसी अर्वि। जनगणनाक आधािपि क्ममक्लक्खत जाक्तक जान होइि ____

गोप (यादि), बाह ण, िाजपूत, दुसाध, कोइिी, चमाि, शेख, भूक्महाि, कुमी, मल्लाह, जोलहा, तेली, काहुदु (कानू), नोक्नया, धानुख, मुशहि, ताती, कायस्ि, कमाि, हजाम, धुक्नया, कुम्हाि, धोबी, कलिाि, केओट, सोनाि, कहाि, कुँजिा, सुनिी, पठान, हलिाइ, तमौली, इत्याक्द।

अ् याय २

मिथिलाक इतिहासक अध्ययनक साधन

भारतीय इतिहासक अध्ययनक हेतु जतबा जे स्रोत उपलब्ध अछि तकर शतांशो मिथिलाक इतिहासक हेतु नहि अछि। मिथिलाक दुर्भाग्य इहो जे पुरातत्ववेत्ता लोकनिक ध्यान आर्य सभ्यताक पूर्वी सीमाक प्राचीनतम केन्द्र दिस अद्यावधि नहि गेल छन्हि। पता नहि जेतैन्हि अथवा नहि। मिथिलाक प्राचीन भौगोलिक सीमा, जाहिमे जनकपुर आ सिमरावगढ सेहो सम्मिलित अछि, क विशेष भाग सम्प्रति नेपाल तराइमे पडइत अछि आ ओतए सरकारक दिससँ एखन केतक प्राचीन ऐतिहासिक तत्वक पता लगेबाक हेतु अखन धरि कोनो सशक्त प्रयास नहि भेल अछि। मोतिहारी, वैशाली, गोरहोघाट, पुरणाथा, आदि केतक यदा कदा पुरातत्वक खोज भेला उतरो एखन दिस ध्यान नहि देल गेल अछि। आ तैं मिथिलाक इतिहासक अध्ययनक जे एकटा महत्वपूर्ण स्रोत होएबाक चाही से सम्प्रति अपूर्ण अछि।

आन आन केतक हेतु जतबो साधन उपलब्ध भेल छैक ततओ मिथिलाक हेतु नहि भऽ सकल अछि कारण एखन दिस मैथिल-अमैथिल इतिहासकारक ध्यान नीक जका आकर्ष नहि कैल गेल अछि। मिथिलाक प्राचीन गौरव आ सांस्कृतिक देनक अध्ययनक हेतु हमरा लोकनि अहुँखन मात्र साहित्यिक साधनेपर निर्भर करए पडइत अछि जकर नतीजा इ होइयै जे कोनो प्राचीन प्रश्नपर हमरा लोकनि एकटा निर्णयात्मक मत नहि दऽ सकैत छी।

पत्येक पश वििदास्पद अछि आ क्षवििीद रपे हम अखनो इ कहबाक स्थि्ततमे नक्ह ि जे अमूक बात कांि घटना अमूक समयमे घक्टत भेले हैत। इ अक्तक्शतताक स्थि्तत अखन क्षवििलाक इक्ततहासमे बहुत क्दन धिि बनले हित।

यूनान जका हमि ओतए नहि कोनो क्हिडोटस आ ि्सीडाइडस भेल िवि आ नहि मुसलमान शासकक इक्ततहासकाि जका कोनो इक्ततहासकाि। वदिेशी याक्तयो लोकक्न जे विणि एक्ह केतक देने िवि से मात सामाह्ये कहल जा सकइयै आ ओक्हसँ स्थि्ततमे कोनो पविितष्ठा नक्ह अिइयै। एहना स्थि्ततमे एक्ह पाचीन केतक इक्ततहासक क्नमाण कबि एकटा जक्टल समस्या बनल अछि आ ओक्ह समस्या मध्य हमि लोकक्नके ऐक्तहाक्सक साधन खोक्जके संकक्लत कबिाक अछि।

क्षवििलामे पैघसँ पैघ दाशक्षनक एँ तािककि वरियपि गंिक चिना भेल अछि जाक्हसँ इ पमाक्षणत होइि जे एक्हठामक लोग विज एँ वदिान िलाह पश्चिा अपना संबंधमे कि्ु क्लखबाक कममे ओ लोकक्न िजक्षि जनकक वदिेह नीक्तये अपनौलक्ह अछि एक्हमे कोनो सह्देह नक्ह। 'मैविल' शब्द "ैक्दक" युगसँ व्यिहित होइत आएल अछि आ एक्हसँ इ स्पष्ट होइत अछि जे ताक्ह क्दनसँ क्षवििलाक भौगोक्लक इकाइ स्वीकत अछि आ एक्ह भौगोक्लक केतमे हिक्तहाि मैविल कहबैत िलाह क्षहािमे एतेक पाचीन गौिि आि कोनो केतके पाप्त नक्ह ैकि तािक्ष एकि इक्ततहास अखनो एतेक संक्दग्ध आ अक्तणषात्मक स्थि्ततमे अछि से एकटा वचािणीीय वरिय।

पाचीन क्षवििलाक इक्ततहासक अध्ययनक हेतु मुख्य साधन अछि िदि, उपक्तरद्, बाह साक्हत्य, अिण्यक, महाभाित, िमायण, पुिाण,

स्मक्त, पाव्णाक्त, पतञक्ल, आक्दक चिना एवँ तत्कालीन बौद आ जैन साक्त्य। क्मविलाक सम्बह्धमे सूचना हमिा लोकक्के यजुर्विद एवँ अर्थिवेदसँ भेटए लगैत अर्व यिाक्प अपत्यक रपे क्मविलाक ऐक्तहाक्सक घटनाक विर्णि ब्राह्मण गर्न्थदिमे सेहो देखल जा सकइयै। शतपथि बाहमण, ऐतिरिय बाहमण, पंचविंश बाहमण, बहदाण्यकोपक्नरद्, एवँ छान्दोग्योपक्नरद्मे क्मविलाक तत्कालीन राजिनैक्तक, सामाक्जक, आर्विक, एवँ धाक्मक अवस्थािक विस्तृत विर्णि भेटइत अर्व। एक्हमे सभसँ महत्विपूर्णष विर्णि शतपथि बाहमणक अर्व जाक्हमे जनकके समाट कहल गेल अर्व आ संगक्ह याजवल्क्यक संक्किा सेहो। सास्कृक्तक क्सक्िाक अध्ययनक हेतु तँ उपिनित साधन अक्दतीय अर्व आ एक्ह बातके विदेशी विदान सेहो मानैत विि। एक्हमे संदेह नक्ह जे एक्ह युगमे बाहमण गिरषक पधानता लिीि तिाक्प परिीक्स्तक बादसँ जनक शििक इक्तहासक हेतु उपिनित साधनक अध्ययन अत्याविश्यक मानल जाइत अर्व। एतिरिय बाहमणसँ तत्कालीन अवस्थािक विर्णि भेटइत अर्व आ उपक्नरद् तँ सहजक्ह दाशक्नक विचार-विमिशषक खान अर्वये। ओक्हमे जाक्ह ढंगे विदि विर्णिदि अर्व से सर्विा अक्दतीय कहल जा सकइयै। पाव्णाक्त, पतञक्ल एवँ अर्थिशास्त्र (कौक्टल्यक)सँ सेहो पाचीन क्मविलाक इक्तहासक विक्भन अंशपरि पकाश पडइत अर्व।

बौद आ जैन साक्त्यक संबंधमे इ साक्य कहल गेल अर्व जे जखन कोनो आन साधन क्मविलाक इक्तहासक हेतु नक्ह पाप्त होइत अर्व तखन बौद आ जैन साधन हमिा लोकक्नक साहाय्यक हेतु पस्तुत होइत अर्व। दीपविंश, महाविंश, अशोकविदान, अशघोरक, बुदचरित, बुदघोरक चिना सभऽ, धम्मपददठ कि,

असंग, सिुह्धिु, ददगनाग, धमषकीवतष्, आवदक चिनासँ वमविलाक सास्कवतक एिँ दाशषवनक इवतहासक वमाणमे बहु साहाय्य भेटइत अवि। बौद दाशषवनक लोकवनके कहबाक कममे वमविलामे नि ह्यायक जह्म भेल िलि आ तै ७ ८ शताब्दीसँ १५ १६म शताब्दी धवि जे बौद एिँ मैविल दाशषवनकक मध्य िाद विवाद भेल अवि से वमविलाक सास्कवतक इवतहासक अध्ययनक हेतु पमािाविश्यक मानल जाइत अवि। िाचस्पवत वमश (दि)सँ लऽ कऽ शंकि वमश धविकि समस्त गंि आ नालंदा विकमवशलाक महान पंवडत लोकवनक वक्वत गंिक अध्ययन एवह हेतु सििाि अपेवक्षत।

ओना बौदकालीन वमविलाक सािगीन इवतहासक हेतु समस्त जातकक अध्ययन आिश्यक बुिना जाइि। महापदानक जातक, गाधाि जातक, सुरवच जातक, महाजनक जातक, वनवम जातक, महानादिकस्सप जातक इत्यावद सँ तत्कालीन वमविलाक िाजनैवतक समावजक एिँ सास्कवतक इवतहासपि हित् पकाश पडइयै जावहसँ सामाह्य लोकक दैनवह्दनीक जान सेहो होइत अवि। जातकमे जे िाजनैवतक शंखला बताओल गेल अवि तावहसँ पुिाण िाणषा अििािमे काफी मतभेद अवि तै िाजनैवतक इवतहासक वमाणमे जातकक अध्ययनमे सतकषताक आिश्यकता अवि। सामावजक सास्कवतक आविषक अििािक अध्ययनक हेतु जातक पमुख साधन मानल गेल अवि। जैन सोतमे सेहो वमविलाक विवभन्न वस्विवतक विशद् विश्लेरण भेटइत अवि आ ओवह दवष्टकोणसँ उतिाध्ययनसूत, उिासगदसाओ, कल्पसूत, सििाािलीचविवत (पविशेष पिष) एिँ वतशवष्टशलाकापुरर आवद गंिक अध्ययन अपेवक्षत अवि। कखनो कखनो जैन एिँ बौद उपाख्यानमे समता सेहो देखबामे अबइयै।

जैन बौद साक्हत्य आ अह्यात्म्य साधन क्मविलाक सामाक्जक आर्विषक इक्तहासक अध्ययनक हेतु बहु लाभदायक मानल गेल अवि काणि ओक्ह सभ विििणिमे सामाह्य लोकक जीनिपि सेहो पकाश पडइत अवि। जातक आक्दसँ इहो जात होइि जे कोना ताक्ह क्दनक मैविल अपन घि दुआि िक्डके क्यापाि क्यिसायक हेतु देश विदेश जाइत िलाह आ ओक्हमे बहुत गोटए ओक्हठाम बैक्सओ जाइत िलाह। ओ लोकक्न िसि उदमी आ पर्विशमी होइत िलाह आ समुद याताक हेतु कोनो संकीणषता हुनका लोकक्नमे नक्ह िलक्ह।

महाभाित, िमायण, आ पुिाणिमे क्मविलाक सबंधमे पचुि सामगी अवि पिन्तु एक्ह तीनूमे िजाक्नकताक क्हसाबे कतहु कोनो साम्य नक्ह िैक। पुिाणिक विक्भन खण्डमे जतिा जे नामािली अिि िजाक सूची भेटइत अवि ताक्हमे एकर पता नक्ह देखबामे अिइयै आ एक्ह विििधाभाससँ इक्तहासक सामाह्य विदािि अगुताके घबिा जाइत अवि। क्बक्टश विदान पािजीटि महोदय आ बंगाली विदान पधान महोदय बडड पर्विशम कए पुिाण रपी जंगलसँ क्मविलाक िािजिशिक इक्तहासक एकटा रपिेखा पस्तुत किबामे समिष भेल िवि तिािप ओकिा सिषमम्मत अखनो नक्ह मानल जाइत िैक। पाचीन कालमे इक्तहास पुिाण एकटा अध्ययनक महतिपूणष विरय िल आ अध्ययनक दक्ष कोणसँ एकिा पंचमविद सेहो कहल गेल िैक तिािप एकिा अध्ययनमे जे एकटा िस्तुक्नष ताक अपेक्षा िल से पाचीन विदान लोकक्न नक्ह िाक्ख सकलाह आ पुिाणिमे ततेक िािस एम्हि ओम्हि कि बात घुक्सया गेल जे एकिा ऐक्तहाक्सकतामे लोगके संदेह होमए लगलैक। एक्हठाम एतिा स्मिणीय जे एतिा भेला उतिा पुिाण, िमायण आ

महाभातिक एक्तहाक्सक महतकिे काटल नक्ह जा सकइयै। पपिगित इक्तहासक जे अपन महत िकि ताक्ह क्हसाबे उपातित साधनक अध्ययन कऽ कए हमा लोकक्त कार्वलाक इक्तहासक कामाणमे एक्हसँ साहाय्य लऽ सकैत िी।

कार्वलाक इक्तहासक अध्ययनक हेतु क्लवाट मैनुस्क्रप्ट सेहो आश्यिक बुिना जाइत अर्व। एक्हसँ कार्वला आ ंशाली दुनूक इक्तहासपा पकाश पडइत अर्व। एक्हमे कहल गेल अर्व जे जखन ंशालीमे गणाज्यि ल तखन कार्वलामे ाजितंत आ कार्वलामे ताक्ह क्दनमे एकटा पधानमंती ालाह क्जनक नाम खण्ड ालक्ह आ हुनका अधीनमे ५०० अमात्य िर्विह्ह।

संस्कत साक्हत्यक र्वाभन अंशसँ कार्वलाक इक्तहासक अध्ययनमे सहायता भेटइत अर्व। काक्लदास, भाभूक्त, दक्रडन, ाजशेखा, आक्दक चिनासँ कार्वलाक इक्तहासक र्वाभन पक्ष्पा पकाश पडइयै। लक्ष्मीधाकि कत्यकल्पतर , शीक्तासिक भदीकाव्यटीका, जयक्संहक क्लंगाक्तषक, शीधा ठकुाकि काव्यपकाशर्वाकि, नाायिणक ादोगयपर्वक्शष एं कार्वला आ भाातिक अह्य भागसँ पाप्त कार्वलाकाकि पाण्डुक्लाप आक्दसँ कार्वलाक इक्तहासक कामाणमे सहायता भेटइत अर्व। र्वाणक र्वकिमाकदेचिर्वति, र्वदापक्तक समस्त चिना, धिषानक दण्डर्वाकि, अक्भना ाचस्पक्त क्तशक समस्त चिना, गणेशाकि सुगक्त सोपान, चण्डेशाकि आठो ताका, ज्योक्ताशा ठाकुाकि ाणिताका आक्द गां कार्वलाक इक्तहासक कामाणमे उपादेय क्सद भेल अर्व। क्ाहाा र्वसिचष सोसायटी दााा पकाक्शत “कैटलोग आफ कार्वला मैनुस्क्रप्ट” (४ भाग), हर्वपसाद शास्ती दाा संपाक्दत “कैटलोग आफ नेपाल दबाा मैनुस्क्रप्ट”

इत्यादिसँ सेहो मिथिलाक इतिहासक सभ पक्षपर विशेष प्रकाश पड़इयै। मिथिलामे सुरक्षित तालपत्रपर ब्राह्मण आ कायस्थक पांजि सेहो मिथिलाक सामाजिक इतिहासक एकटा मूल स्रोत मानल गेल अछि।

ओना पुरातात्विक साधनक अभावेँ तँ मिथिलामे अछि तथापि मोतिहारीसँ बंगालक सीमा धरि जे विभिन्न पुरातात्विक महत्वक स्थान अछि तकर सर्वेक्षणसँ मिथिलाक इतिहासक निर्माणमे सहायता भेटत। मिथिलाक प्रमुख क्षेत्रक उत्खनन अखनो नहि भेल अछि तैयो ओहिठामसँ पर्याप्त मात्रामे शिलालेख, सिक्का, आदि नहि भेटल अछि। एम्हर मोतिहारीसँ कैकटा ताम्रलेख प्रकाशित भेल अछि, मुजफ्फरपुरक कटरा थानासँ जीवगुप्तक एकटा अभिलेख भेटल अछि जाहिसँ पता लगैत अछि जे तीरभुक्तिमे चामुण्डा नामक एकटा विषय छल। इमादपुरसँ पाल कालीन अभिलेख भेटल अछि जाहिसँ ई सिद्ध होइछ जे पाल लोकनिक शासन मिथिलापर छल। नौलागढ (बेगूसराय)सँ दूटा पालकालीन अभिलेख भेटल अछि जाहिमे एकटा क्रिमिला विषयक आ दोसरमे एकटा विहारक उल्लेख अछि। एहिठाम इहो स्मरणीय जे एहि क्षेत्रसँ गुप्तकालीन मोहर एवँ 'क्रिमुतत विषय'क एकटा गुप्तकालीन मोहर सेहो भेटल अछि जाहिसँ ई स्पष्ट होइछ जे मिथिलाक ई क्षेत्र शासनक प्रधान केन्द्र छल। बनगाम (सहरसा)क गोरहोघाट, पटुआहा, आदि स्थानसँ पंचमार्कड सिक्का तँ बहुत पूर्वहिं भेटल छल आ एम्हर विग्रहपाल तृतीयक एकटा प्रमुख ताम्रलेख बहरायल अछि जाहिमे ई कहल गेल अछि जे तीरभुक्तिक अंतर्गत हौदेय नामक एकटा विषय छल। इएह हौदेय आधुनिक हरदी थिक। एहिसँ पूर्व हमरा लोकनिके तीरभुक्तिमे

मात एकेटा विरयक जान ि‍ल आ ओ ि‍ल ‘कक’ विरय जकि उल्लेख नाियिण पालक भागलपुि तामलेखमे भेल अवि। इ कक विरयक सम्बन्धमे अखनो धवि इक्तहासकाि एकमत नक्ह भेल िवि मुदा हमि अपन विचाि इ अवि जे इ ‘कक’ विरय पाचीन अंगुताि‍पमे ि‍ल आ महाभाितिमे िवाणा ‘कौवशकी कक’क पतीक ि‍ल। नाियिण पालक तामलेखमे एक्ह कक विरयक विििण भेटइत अवि। चामुण्डा विरय पवशाममे, हौदेय केन्द्रमे आ कक विरय तीििभुक्ततक पूिि सीमाक संकेत ि‍ल। एकि अक्तवितित पंचोभसँ पाप्त तामपत सेहो क्तमविलाक इक्तहासक अध्ययनक हेतु अत्याविश्यक। अन्धिाठाढ़ीसँ पाप्त शीधिकि अवभलेख, कन्दाहासँ निक्सिंह देि ओइनिािकि अवभलेख, भगीििपुिसँ पाप्त ओइनिाि कालीन अवभलेख, मुहम्मद तुगलकक अवभलेख, िदीनिक तुगलक कालीन अवभलेख, इबाक्हम शाह शकीक अवभलेख, वशािक्सिंहक क्तसका, ओइनिाि शासक भैिि क्तसंह देिकि चादीक क्तसका आक्दसँ क्तमविलाक इक्तहासक विवभन्न पक्षपि पकाश पडइत अवि। नेपाल िशािली आ नेपालसँ पाप्त अवभलेख जाक्हमे क्तसमिािगढ क्तसति नान्यदेिकि तािकवित अवभलेख एिं पताप मल्लक वशलालेख महतिपूणष अवि। एम्हि आवबाके िशाली, बक्लािजगढ, कविऔन आक्द सिानिक उतखननसँ जे सामगी पाप्त भेल अवि सेहो क्तमविलाक इक्तहासक क्तमाणमे सहायक क्तसद भेल अवि। महेशिाि (बेगूसिाय)सँ पाप्त ि कनुक्दन कैकशक अवभलेख तँ अन्यान्य दवष कोणसँ महतिपूणष अवि। क्तमविलाक विवभन्न भागसँ मुसलमानी क्तसका पयाप्त मातामे भेटल अवि जाक्हसँ िाजनैक्तक इक्तहासक क्तमाणमे सहायता भेटइत अवि। मक्टहानी (बेगूसिाय)सँ बंगालक

सुल्तान नसति शाहक अवमलेख सेहो भेटल िल आ कहल जाइत अवि जे बेगूसियिक समीप नूपुि गािमे मीिजाफकि पुतक एकटा अवमलेख अवि।

विदेशी याती लोकक्ष सेहो क्षविलामे आएल िलाह आ एक्हमे चीनसँ आयल याती लोकक्षक विशेर महति अवि कािण ओ लोकक्ष एतए बौदधमषक अध्ययनािषअबैत िलाह। फाक्हयान, क्हयुएनसंग, सूंगयुन, इंक्संग आक्द यातीक नाम उल्लेखनीय अवि। इ लोकक्ष क्षविलाक विक्षिन केतक भमण कएने िलाह आ ओ लोकक्ष जे अपन विििणि क्लखने िवि ताक्हसँ एक्ह केतपि विशेर पकाश पडइयै। िजिी, क्लचििी एिँ तीिभुक्तितक पसंग क्हनका लोकक्षक लेख उपादेय अवि। विदेशी यातीमे सिषमुख व्यक्तत, जे क्षविलाक हेतु सिािषिोभािनि महतिपूणषकहल जा सकैत िवि, भेलाह काबाती याती धमषिािमी जे १३म शताब्दीक पूिदिषे क्षविला होइत नालंदा गेल िलाह। तखन क्षविला िजिगदीपि कणाटिशीय िमिक्संह देि विििजमान िलाह। धमषिािमी क्षविलाक संबंधमे बहुत िसि बात क्लखने िवि। बहुत क्दनधवि ओ िमिक्संहक दििािमे सेहो िहिल िलाह आ िमिक्संह हुनका अपन पुििक्हत बनबाक हेतु आगहो केने िलविक्ह पिन्तु ओकिि ओ स्िीकाि नक्ह केलक्ह। ताक्ह क्दनमे क्षविलापि मुसलमानी आकमण पािंि भऽ चुकल िल तकि विििणि ओ दैत िवि कािण जखन िशाली बाटे जाइत िलाह तखन ओ अपना आँक्खये इ सभ घटना देखलक्ह। धमषिािमी क्षविलाक इक्तहासक हेतु एकटा आिश्यक स्तोत भेला। नया पैश एकटा दोसि महतिपूणषसाधन भेल िसाक्तलुनउंस जकि लेखक िलाह मुहम्मद सद उला अहमद हसन दाक्बि इदुसी (उफषताज) आ ओ

इखक्तासान उद देहलीक नामे सेहो विख्यात िलाह। ओ गयासुदीन तुगलकक संगे बंगाल आकमणमे गेल िलाह आ घुिती कालमे क्मविला पि गयासुदीन तुगलकक आकमणक समयमे हुनके संग िलाह। तै इहो एकटा आँक्ख देखल साधन भेल आ ओक्ह क्हसाबे महतिपूणष सेहो। फोक्लयो १२ (एकि सम्पूणष पटनाक काशी पसाद जायसािल शोध संसिानमे सुक्षित अवि आ ४टा फोक्लयो जकि संबंध क्मविलाक इक्तहाससँ िैक, हमि क्हस्टी आफ मुक्स्लम र ल इन क्तहुितमे िपिल अवि)पि क्लखल अवि जे हविक्संह देि ककिो कोनो सलाह नक्ह सुनलक्न्ह आ पिके पहाड क्दस चक्ल गेलाह। गयासुदीन तुगलकक क्तहुित आकमणक संबंधमे एक्हसँ पामाक्णक दोसि कोनो साधन उपलब्ध नक्ह अवि। क्तहुित ताक्ह क्दन विस्तृत आ सुखी संपन िाज्य िल आ अखन धवि ककिो अधीन नक्ह िल तै गयासुदीन बंगालसँ घुिबा काल अपना अधीनमे कििबाक पयास केलक। इसामी अपन फुतुह सालातीनमे क्लखने िवि जे गयासुदीन क्तहुितक कणाटवंशिक अंक्तम िाजापि आकमण केलक्न्ह आ ओ क्बना कोनो पकािक विोध केने पहाड जंगल क्दस भािा गेलाह। सुल्तान तीन क्दन धवि ओतए ठहिलाह आ जंगलके काक्टके सम्पूणष क्षेत्रके साफ किौलक्न्ह। तेसि क्दन ओ क्मविला िाज्यक विशाल क्कला जकि क्दवािल गगनचुम्बी िल आ जे सात टा गक्हि खाक्धसँ चाि कातसँ घेिल िल, पि आकमण केलक्न्ह आ ओक्हपि विजय पाप्त केला उतिि ओक्ह क्कलामे दू या तीन सप्ताह रकला आ चाि क्दसक विोधिके दबैलक्न्ह आ एिि पकािि क्मविलापि अपन पभुति सिाक्पत केलक्न्ह। जेबासँ पूवष ओ तक्लघाक पुत धमात्मा अहमदके क्तहुितक पधान बनौलक्न्ह। एिि पकािि एक दू मासक बाद

गयासुदीन अपन ाजधानी दिस चलि गेलाह। फविस्ता आ मुल्लातकिया जे ाजाक वाकिनािक गप्प लिखैत िछ से गलती बुिझ पडइयै। िसािजुलउंसक अनुसाि ाहितक ाजा समदशाली िलाह, आ हुनका सैिनकक कोनो अभाि नहि िलिह। वीि ाजभिन िलिह आ सभ तिहे ओ सुखी आ सम्पन िलाह। अपन अजेय दूगषकिलाबंदी आ सेनापि अटूट विशास िलिह आ आइ धि कतहु हुनक माि ाकिल नहि िलिह। गयासुदीनक पहुँचबाक समाचाि सुिनतहिं ओ एतेक भयभीत भऽ गेलाह जे हुनक सब घमण्ड धूल धूसिित भऽ गेल। अपन पिाण बचेबाक हेतु ओ अपन तेज घोडापि चढिके भावा गेलाह। िसािजुलउंसक लेखकक विचाि अिछ जे जँ ाजा मेलसँ चाहतैि तँ गयासुदीन हुनका संग बिढया व्यिहाि कितिथ िन मुदा ओ बिनु कोनो पकाकि िता कएने भावा गेला। अपन सिितंतताक िक्षक हेतु ओ पहाडक कोिमे नुका िहलाह। गयासुदीन ओिहठाम ािडेक दिन ठहि समस्त ाज्यक शासनक व्यिसि अपने िनदेशनमे केलिह। गाम मुिखया (मकोदम) लोकिनक संग नीक व्यिहाि दशौलिह आ तिक बाद सब पबंध केला उति ओिहठामसँ अपन ाजधानी दिस बढलाह।

एकि अिनवितत एकटा आि महतिपूणष साधन अिछ मुल्ला तिकयाक ियाज। मुल्ला तिकयाक ियाज पटनाक मािसक (पटना १९४६)मे िपल अिछ आ 'िमविला' सािप्ताहिकमे सेहो एकि मुख्य साािश मैविलीमे िपल िल बहुत दिन पूिहिं जे आब उपलब्ध नहि अिछ। मुल्ला तिकया मुगल कालीन ाइस िलाह। आसाम जेबाक कममे िमविला होइत गेल िलाह आ ताहि दिनमे एिहठाम जतेक जे किाि िल तिक विस्तृत विििण संकिलत कए ओ िमविलाक

एकटा क्योंिाि इक्तहास बनौने िलाह। एकि अक्तवतित फववता, अलदिाओनी, अबुल फजल, अब्दुल सक्लम आ गुलाम होसेन हुसेनक पोिी सभसँ सेहो क्तववलाक इक्तहासपि पयाप्त पकाश पडइत अवि।

मुसलमानी साधनक अक्तवतित इस्ट इक्तण्डया कम्पनीक िकाडष्स, कलतर्टिक कागज पत, अंगेज कमषचािी लोकक्तनक मध्य भेल पताचाि, जमीन्हदािीक कागज आ दिभंगा िाजिक सक्तचालिय एिं िकाडष्स रममे सुिक्षित पुिनि कागज सभ सेहो क्तववलाक इक्तहासक क्तनमाणक हेतु सहायक क्तसद होएत। क्तववलामे जे बहुत िास जमीन्हदािी िल ओक्तह सभ जमीन्हदािक ओतए विवभन पकािक सिकािी गैि सिकािी कागज उपलब्ध अवि आ ओक्तह सभसँ क्तववलाक आधुक्तनक इक्तहासक क्तनमाणमे काफी सहायता भेट सकइयै। एक्तह सभ कऽ संकलन एिं पकाशन आिश्यक अवि दिभंगा िाज्यक इक्तहासक क्तनमाणमे एक्तहसँ बडड सहायता भेटल अवि। दिभंगा, बनैली, निहन, बेक्तया, सुिसंड, गंधविया, चकिाि आक्तद िाजिशिक िहद एिं िजाक्तनक इक्तहास नक्तह क्तलखल जा सकल अवि। दिभंगा िाजिक अक्तवतित बाकी िाज सभहक संबंध हमिा लोकक्तनके पूणष जानकािवियो नक्तह अवि काििण साधनक अभाि अवि।

एक्तह सभ साधनक िजाक्तनक अध्ययन केलासँ क्तववलाक पामाक्तणक इक्तहासक क्तनमाण भऽ सकइयै। सब साधनक समीचीन व्याख्या केला उतिि हमिा लोकक्तन क्तववलाक समीकात्मक सिक्तण कऽ सकैत िी। ओना आन पातक तुलना एक्तहठाम साधनक सििि अभाि कहल जाएत तािवप जतिा जे उपलब्ध अवि ताक्तहपि

ैजाक्तक रपे अध्ययन कबि आश्यिक। क्मवलाक हेतु मैविली साधनपि विशेर क्तभषि कएि पडत। एक्ह पसंगमे एकटा उदाहणि देि अपासंवाक नक्ह होइत। विदापक्त कवि होइतहुँ इक्तहासक नीक जाता िलाह जकि पमाण हमिा हुनक गंि सभसँ भेटइत अवि। पुरर पिीक्ता जाक्ह क्सल क्सलेिाि ढंगसँ ओ ऐक्तहाक्सक व्यक्ततति कि विेचिन कएने िवि ताक्हसँ हुनक ऐक्तहाक्सक बोध एिँ िस्तुक्तषताक पता लगइयै। (एक्ह सबंधमे दषव्य हमिा लेख विदापक्तज पुरर पिीक्ता जे हमिा 'क्हस्टी आफ मुक्स्लम रल इन क्ताहिुत'क पवक्तिषमे िपिल अवि।) जातव्य जे पुरर पिीक्ताक अध्ययन केला उपाित सिगीय चह्दा िा क्मवलाक इक्तहासक अध्ययन क्दक्स आकष भेल िलाह आ ओक्ह संबंधमे बहुत िसि सामगी सेहो जमा केने िलाह। कीक्तलता, कीक्तपताका, क्लखनािली आक्द गंि सेहो ओतिि महतपूणष अवि। क्मवलाक इक्तहासक लेल मैविली साधनक हेतु खोज कएि पडत कािण एकि एकटा अवक्धिन पिाह ैक्दक कालसँ अदािक्ध बनल अवि। यशक्स्तलकचम्पूमे क्ताहिुत िक्जमेटक विािण क्मवलाक सितंत व्यक्ततति के सपष कइित अवि जकि सपषोक्तत विदापक्तमे भेल अवि। क्मवलाक इक्तहासक क्नमाणक हेतु उपाितत सभ साधनक ैजाक्तक अध्ययन एिं ओकि समीकात्मक विश्लेरण अपेक्क्त अवि।

अध्याय ३

जनकशिक इतिहास

कुरु पाञ्चालमे कुरु शिक अंत भेला उतरि भातिक जे सर्वषि पक्सद िजिशि लि तर्कि हमिरि लोकक्न जनक शिक नामसँ जनैत छी। एक्ह शिक सर्विषोष एर्ि सर्वषि पक्सद िजा िलाह जनक जक्नक दरबािर दशषाक पक्सद केह्द िल आ ओक्ह हेतु क्नवि लामे जनक शिक एतेक पक्सक्दयो अवि। कुरु लोकक्नक अिसानक कालमे

पूर्वी भातिमे जनक शि उत्तनिक पपिपि लि। एकि सभसँ पैघ पमाण इ अवि जे बाहण साक्हत्यमे ताक्ह क्दनमे कुर गिजकुमापि लोकक्नके 'गिजन'क संजासँ सम्बोक्धत कैल जाइत लिक्ह आ जनक गिजशिक लोकके 'समाट'क संजासँ। शतपि बाहणमे समाटके गिजनसँ पैघ मानल गेल अवि।

पौगिणक चाकयिन आ क्नचकुक समयमे कुर लोकक्नक पतन भेल लिक्ह। गिजा पगीक्कत्तक असिान भऽ चुकल लि पक्मच हुनक स्मक्त अखनो लोकक मध्य वीगिजमान लि आ क्नवलाक गिजदबािमे ओ अहुँखन शदाक संग चक्चत लिाह। जनकक सभामे जे दाशक्नक विचािविमशि एिं क्चंतनक कम चलैत लि ताहुठाम गिजा पगीक्कत्त एकटा विचािणीय विरय बनल लिाह जेना क्क भुज्यु लाहायक्न एिं याजल्कयक वीगिदसँ स्मष होइि। सम्भक्त हमिा लोकक्नक समक जे साधन क्नलल अवि ताक्ह आधािपि इ कहब कक्िन अवि जे जनमेजेय आ जनक गिशक मध्य कोनो पकािक सम्पकष लि अिवा नक्ह। पुिाण एिं महाकाव्यमे जनक आ पगीक्कत्त गिशके सम सामक्यक कहल गेल लिक। जनकके उदालक आरुिण आ याजल्कयक सम सामक्यक कहल गेल लिक। महाभाितमे क्लखल अवि जे जनमेजेयक सपषसतमे उदालक आरुिण एिं हुनक पुत शेतकेतु उपक्सित लिाह। विष्णुपुिाणमे तँ एतिा धिि कहल गेल अवि जे जनमेजेयक पुत एिं उत्तिाक्धकािी शतानीक याजल्कयसँ िैक्दक क्शका गहण केलक्ह।

उपिोक्त ततिनके पामाक्णक मानि असंभि कािण िैक्दक साक्हत्य, पुिाण आ महाकाव्यक मध्य क्नवि क्नधािण एिं गिजशिक साक्ष्यक सम्बन्धमे एकटा विगोधाभास अवि आ तै अदािक्ध एक्ह

सभ शासक लोकक्ताक काल क्‍धाणि एकटा समस्ये बनल अवि। देश विदेशमे एक्‍ह पशपि सि वीिद भेल अवि पिञ्च तइयो पामावाकताक लेशमात कतहु देखबामे नक्‍ह अिइयै। शतपि बाहणक अनुसाि दैिपशौनक जनमेजेयक सम सामव्यक िलाह। जैव्मनी उपक्तरद एिँ िश बाहणक अनुसाि दैिप शौनकक व्शाष्य िलाह दक्त एह्दोत आ एह्दोतक व्शाष्य िलाह पुलुर पाचीन योग्य। पुलुरक व्शाष्य िलाह पौलुरी सत्ययज। िह्दोग्य उपक्तरदक अनुसाि सत्ययज उदालक आरवि एिँ बुव्डल आशतािशीक समकालीन िलाह आ एक्‍ह क्‍हसाबे तँ ओ जनकक समकालीन सेहो िहल हेताह। एक्‍हसँ स्पष होइि जे एह्दोत जनमेजेयक समकालीन िहल हेताह आ सातयव्ज जनकक। जनक जनमेजेयसँ पाच िह पीढी बादमे भेल होवि से संभि।

विदेह िजिक सिषिम उल्लेख हमिा लोकक्ताके यजुिदिक संक्‍हतामे भेटइत अवि। िल्मीकि िमायणक अनुसाि एक्‍ह िजिशिक मूल संसिापक िलाह िजा क्‍मा। हुनके पुत िलाह क्‍मवि आ क्‍मविक पुत जनक पिम। ओक्‍ह िशक जे सीताक व्पता िलाह उएह भेलाह जनक क्‍दतीय आ हुनक भाता कुशधिज साकास्यक शासक िलाह। िियु एिँ विष्णुपुिाणमे क्‍मक्‍मके इक्‍िाकुक पुत कहल गेल अवि आ ओक्‍ह क्‍मक्‍मके विदेहक संजा सेहो देल गेल अवि। ओक्‍ह 'विदेह'सँ ओक्‍ह केत्तक नाम विदेह सेहो पडल। िियुपुिाणमे क्‍शाषक जाक्‍ह शापक उल्लेख अवि तकि िणिष हमिा लोकक्ताके बहदेितामे सेहो भेटइत अवि। उपििित दुनू पुिाणक अनुसाि क्‍मक्‍मक पुत 'क्‍मवि'के जनक पिम सेहो मानल जाइत अवि आ ओक्‍ह कममे सीताक व्पताक नाम सीिधिज जनक सेहो भेटइत

अछि। इएह सीधिज संभवतः रामायणक द्वितीय जनक भऽ सकैत छथि। पुराणक अनुसार एक्कैशिक अंतिम राजा कृति छलाह। रामायण, महाभारत आ पुराणक अध्ययनसँ इ स्पष्ट होइछ जे जनक, व्यक्तिगत विशेरक नामक अतिरिक्त, वंशक नाम सेहो छल। एहि प्रसंगमे इ स्मरण राखब आवश्यक जे एहि वंशक क्रममे जनकानाम, जनकै आदि शब्दक जे प्रयोग भेल अछि ताहुसँ उपरोक्त कथन प्रमाणित होइत अछि।

वैदिक साहित्यमे नमिसाप्य नामक एकटा वैदेहक राजाक उल्लेख सेहो भेटइत अछि। मुदा एहिठाम इ स्मरणीय जे नमिसाप्य कतहु कोनोठाम मिथिलाक राजवंशक संस्थापकक रूप नहि उपस्थित कैल गेल अछि। शतपथ ब्राह्मणक कथासँ एतबा धरि स्पष्ट अछि जे विदेघ माथव मिथिलाक राजवंशक ऐतिहासिक संस्थापक छलाह। ओ सरस्वती नदीक तटसँ सदानीरा (गण्डकी)के तट धरि आएल छलाह। हुनका संग हुनक पुरोहित गोतम राहुगण। सरस्वतीक तटसँ जंगलके जरबैत ओ लोकनि मिथिला धरि पहुँचलाह। एहिसँ पूर्व कोनो ब्राह्मण एम्हर एतए दूर धरि नहि आएल छलाह कारण ताधरि एहि क्षेत्रके अग्नि वैश्वानर द्वारा जरिओल नहि गेल छल। एम्हुका जमीन दलदल छल आ कृषि उपजा बाड़ी नहि होइत छल। अग्निदेव जखन एहि भूमिके जरिके पवित्र केलन्हि तखन माथव हुनकासँ पूछलथिन्ह जे हम आब कोम्हर जाइ ताहिपर अग्निदेव कहलथिन्ह जे अहा पूर्वदिस जाउ आ ओतहि अपन निवास स्थापित करू तदुपरांत माथव विदेघ अथवा माथव विदेह ओहिना काज केलन्हि आ उत्तर पूर्वी भारतमे एकमात्र आर्यराज्यक स्थापना संभव भेल। जँ हमरा लोकनि शतपथ ब्राह्मणक एहि कथाक

ऐतहासकताके स्ीकाि कति ि तखन तँ इ स्पष भऽ जाइि जे 'क्कम सापप्र' कविलाक संस्िपक नह िलाह आ नवि हुनका इ पत्तषे देल जा सकैत िह्ह। मज्ि म काकाय आ कक्म जातकमे मखादेिके कविलाक िजिशिक संस्िपक कहल गेल िक। जनक िशिक सम्ब्ध्मे एिि पकाि ततेक िस नवि मतभेद अवि जे ओह पसंगमे कोनो कणषात्मक उति देि असंभि। बहदेितामे उल्लेख अवि जे विदेह लोकक ससििती तटसँ कविला पहुँचला उपिातो अपन िशिसँ ससििती नदी संबंध बहुत क्दन धवि बनौने िहलाह आ एक्ह बातक पुक्ष तखन आि होइि जखन हमिि लोकक पंचविंशि बाहणक कक्म सापप्र पकिणपि दक पात कति ि। बौद साहत्यमे कविलामे कक्मके पिम शासक नह माक बादक शासक मानल गेल अवि। कविलाक िजिशिके सामाह्यतः जनक िशि कहल गेल अवि तै कोन जनक 'महान जनक' िलाह जक्क पुती सीता िलवि्ह अिि जक्क दिबािमे विदजनक गोषि भेल िल से कहब असंभि। ओकि पामाणकता क्सद किब सेहो असंभि।

विभन स्तोतसँ उपलब्ध सामगीक अध्ययन केला संता हमिि लोकक एक्ह कष्करषि पहुँचैत िि जे सीताक वपताक नाम िल सीधििज जनक। पुिणमे जनक िजिशिक जे सूची अवि ताह्ह आधापि हमिि लोकक उपितत कणषपि पहुँचैत िि। अयोध्याक भितक माम िलवि्ह केकेयीक िजा अशपक आ सीधििज जनक हुनके समकालीन िलाह। उदालक आरणि आ बुडल एक्ह दुनू िजाक दिबािमे बािबवि जाइत िलाह। भिभूक सेहो एक्हमतक समिषक िवि जे सीधििज जनक सीताक वपता िलाह। जातक नं ५३९मे जाह्ह महाजनकक चचष अवि सैह

संभतिः सीधिज जनक िलाह आ हुनके दबािि वदिानक हेतु वशिवख्यात िल। एक्ह महाजनकक सम्बन्धमे कहबी अिव ____

" *मवििलायाम् पक्दप्तायाम्*

न मे दहयक्त कक्ञ्चन्।

अक्चच भऽक्ति मैविलेन गीतम्

नगािम् उपाक्हतम् अवमनाक्मवक्ष्य,

न खलु मम क्ह दह तेत कक्कचत्

सयिक्मदमाह क्कलस्म भूक्मपालः"

एक्हसँ तँ स्पष रपे जनक वदिेहक बोध होइि।

महाभाित, शतपि बाहण एिँ हिदािण्यकोपक्नरदमे जनकके समाटक संजा देल गेल िकि। समाट जनकक महानताक दोतक कहल जा सकइयै कािण क्बनु ािजपेय यज केने केओ समाट नक्ह कहा सकैत िल। आशलायन स्त्रोत सूतमे जनकके महान यजकताक रपमे िणिता कैल गेल िक्ह। समाटक क्हसाबे कम आ क्ांतक एिँ दाशिनक क्हसाबे बेसी इ महान जनक इक्तहासमे वशिर पक्सद िवि आ क्मविलाक अहुना जतिा जे सास्क्कक्क पक्ाष ा अिव ओकि जक्डमे िवि इएह ािजा जनक आ हुनक ािजदबािि। ताक्ह क्दनमे क्मविलाक ािजदबािि संस्कक्त आ दशिाक पधान केह्द िल आ एक्हठाम वजिय पाप्त कबािक अिि षहोइत िल समस्त भाितिमे यश पाप्त कबि। कुर पाचाल, मद, कौशल आक्द सिानिक वदिान लोकक्न जनकक दबािके सुशोक्भत कैित िलाह। क्कछु पक्सद वदिानक नाम एिँ पकाि िक्ह अशल, जाितिकािि आतिाग, भुज्यु लाहयायक्न, उरस्त चाकिायिण, कहोड (कहोल) कौरीतकेय, गागी ािचकि्नी, उदालक आरक्ण, आ वदिग्ध शाकल्य इत्याक्द।

कुर पाचालक बाह ण संग जनकक सम्बन्ध वलिकण िलक्ह आ ओक्हठामसँ तहि तहिक वदानके ओ अपना ओतए बजबैत िलाह। ाजा जनकक संबंधमे ऐक्तहाक्सकताक जति जे अभाि हो मुदा ओकि सास्कक्तक महतकि सम्बन्धमे ककिो कोनो पकाकि सन्देह नक्ह िक्ह।

जेना क्क उपि कहल जा चुकल अिव जनक िशक पामाक्पाक इक्तहास पस्तुत कबि एकटा कक्ठन समस्या अहुँखन बनले अिव आ सम्पक्त एकि कोनो क्सदानो देखबामे नक्ह अिइयै। जाक्ह 'कत'के कुतकगसँ तुलना कैल गेल अिव से संभतिः किलि जनक हिल हेताह कािण ऐक्तहाक्सक दक्ष कोणसँ हमि लोकक्स जनैत िी जे किलि जनक अजातशतुक समकालीन िलाह आ हुनके शासन कालमे जनक िशक अंत भेल। इहो संभि जे 'कक्त' आ 'किलि' दुनू जनक िशक अंक्तम शासक होिव।

िक्दक साक्हत्यमे मािि आ जनकक अक्तवतित दू आ वदेह िशक उल्लेख भेटइत अिव क्सक्स साप्य आ पि आहलाकि। क्कि वदान पि आहलाकिे कोशलक शासक पि आतणािसँ क्सलबैत िवि। पंचविश बाह णमे क्सक्स साप्यके एक महान यजकता कहल गेल अिव आ तै क्कि गोटए हुनका जनकसँ क्सलबैत िवि। िक्दक क्सक्स साप्यक तुलना उतिाध्यायन सूतक ाजा क्सक्सँ। वषुपुिणक नेमीसँ, मक्जिम क्सकायक मखादेि सुतक क्सक्सँ ति कुम्भकाि एिं क्सक्सजातकमे िवग्ष ओक्ह नामक ाजासँ किते िवि। एकि पत्यकीकणि अखनो एकटा ऐक्तहाक्सक समस्या बनल अिव। क्सक्सजातकक अनुसाि ओ मैविल ाजिशक अंक्तम शासक िलाह आ संगक्ह पाचालक ाजा क्दमुख, गाधाकि नगाक्त आ कक्लंगक

कण्ठिक समकालीन सेहो। मज्झिम निकायक उपालिसुत्तमे कलि(कलार) जनकके ब्राह्मणक पुत्र कहल गेल अछि। कौटिल्यक अर्थशास्त्रमे एहि कलि जनकके 'विदेह' कहल गेल अछि। एहि राजाक संग 'विदेह' राजकुलक अंत भेल। विदेह राजकुलक अंत होइतहि एहिठाम कुलीनतंत्री गणतंत्रक स्थापना भेल आ इ वैशाली कुलीनतंत्र अथवा वज्जिसंघक एकटा प्रमुख अंग बनि गेल। प्राचीन परम्परासँ एहिबातक सबूत भेटइत अछि जे विदेहक पतनमे काशीक हाथ सेहो छल। अजातशत्रु विदेह राज्यक यश प्रकाशके देखि इर्ष्या करैत छलाह। काशी आ विदेहमे बराबरि संघर्ष होइत रहैत छलैक। महाभारतक अनुसार काशीक प्रतर्दन आ विदेहक जनकक मध्य संघर्ष भेल छल। परमत्थजोतिका नामक बौद्ध ग्रंथमे कहल गेल अछि जे जनक राजकुलक अंत भेलापर उत्तर बिहार अथवा मिथिलामे लिच्छवी लोकनिक शक्तिशाली शासन प्रारंभ भेल। लिच्छविक सम्बन्ध सेहो काशीसँ बताओल जाइत अछि। किछु स्रोत सभमे एहि बातक संकेत कैल गेल अछि जे वैशाली विदेहपर अप्रत्यक्ष वा प्रत्यक्ष रूपे काशीक प्रभाव छल।

यजुर्वेद संहिताक अध्ययनसँ ज्ञात होइछ जे ब्राह्मण युगमे विदेहक राजनैतिक आ सांस्कृतिक महत्व एके रंग छल। ताहि दिनमे विदेहक गाय समस्त उत्तर भारतमे प्रसिद्ध छल। पश्चिममे जे स्थान कुरु पाञ्चाल लोकनिक छलहि से पूर्वमे कोशल विदेह लोकनिक। कोशल आ विदेहक निवासी विदेघ माथवके अपन पूर्वज अथवा संस्थापक मनैत छथि। एहिठाम इ स्मरणीय छिबाक अछि जे विदेघ माथव (विदेह माधव) अपना मुँहमे अग्नि वैश्वानरके लऽ कऽ चलल छलाह। एहिसँ इ स्पष्ट अछि जे पूर्वी भारतक इ समस्त

व्हस्सा जंगल आ दलदल ि ल आ अवम् िशानकि पतापे ओव्ह जंगलके जािके विदेघ माि एकि िहबा योग्य भूव्म बनौलव्ह। विदेह आयषक पसाकि पूर्ि सीमाखि बनल। एकटा पाचीन पिपिमे तँ इहो कहल गेल अवि जे विदेहक आयीकणि भेलाक पािव्त शतपि बाहणक चिना विदेहेमे भेल। एव्ह सम्बन्धमे विदानक मध्य काफी मतभेद अवि। एतािधर्व क्मवशात एिं क्मवषिद रपे कहल जा सकइयै जे विदेहक सास्क्वतक माहयता समस्त उतिभातिमे ि ल। उपक्मरदक युग विदेहक बाहणक पव्तष्ठा कुर पाचालक बाहणसँ विशेर ि ल। विदेहक महति एतेक ि ल जे बादोमे एकि चचषविमिन साव्हत्य इत्याव्दमे होइत हिल। जातक, बौद साव्हत्य, अध्यात्म िमायण, िमायण आव्द गंि सबमे विदेहक िवशष्टयक विश्लेरण भेटइत अवि।

अपन व्दवाजियक कममे भीम विदेहक िजाके पािव्जत कएने िलाह। विदेहक िजधानी क्मविलापि कणषअपन व्दवाजियक कममे अपन आव्धपत्य सिाव्पत कएने िलाह। शाव्त पिषे एक सिलपि जनक याजव्लयक िितालापक पसंग आएल अवि। एकि अव्तवितत महाभातिमे विदेह िज जनकक पसंगमे क्मव्लव्खत बातक उल्लेख भेटइयै——

———— i) जनकक आध्याव्त्मकताक विििणि;

———— ii) पंचव्शख आ शुलभाक संग जनकक िितालाप;

———— iii) शुकके जनक दाि व्शक्ा देबाक पसंग;

भीम आ अजुषाक संग जखन कष्ण इहद्रपससँ िजगीि जाइत िलाह तखन ओ क्मविला सेहो आएल िलाह आ एहेन बुवि पडइयै जे ताव्ह व्दनमे िजगीि जेबाक बाट क्मविले दऽ कए ि ल।

भीष्म पर्वमे विदेह लोकक्आक विश्लेषण अछि। भीष्म पर्वक एक स्थान पर विदेह लोकक्आक उल्लेख एक बेर मगध लोकक्आक संग आ दोसर बेर ताम्रलिप्तक लोकक्आक संग भेल अछि। 'विदेह' शब्दक उत्पत्तिक वर्णन विशद् रूपेण विष्णु पुराणमे भेटइत अछि। विदेह राजासँ उत्पन्न राजा जे नगर बसौलन्हि सैह राजधानी कहाओल। दीघनिकायक महागोविन्द सुत्तमे कहल गेल अछि जे गोविन्द नामक एक व्यक्ति राजधानीक संस्थापक छलाह। विभिन्न स्रोतसँ विदेहक विभिन्न राजा लोकक्आक नाम भेटइत अछि सागर देव, भरत, अंगीरस, रूचि, सुरूचि, प्रताप, महाप्रताल, सुदर्शन, नेरू, महासम्मत, मुचल, महामुचल, कल्याणदय, सतधनु, मखादेव, साधीन इत्यादि। स्वप्नवासवदत्तम् (अंक ६)मे सेहो उदयनके 'वैदेहीपुत्र' कहल गेल छन्हि। बिम्बिसारक पत्नी वासवी (अजातशत्रुक माय) सेहो 'विदेहपुत्री' छलीह। प्रधान महावीर विदेहपुत्री विदेहदत्ताक पुत्र छलाह आ ओ स्वयं बहुत दिन धरि राजधानी विदेहमे रहल छलाह। हिनक टा रिश्ता ओ विदेहमे बितौने छलाह। महावीर आ बुद्धक समयमे जे वज्जि संघ छल तकर दूटा प्रमुख सदस्य छलाह लिच्छवी आ विदेह लोकनि। एहि वज्जि संघके कौटिल्य राजशब्दोपजीवी संघ कहने छथि।

विदेहक निजी सम्पत्ति महत्वपूर्ण छल आ एहिठामक पाकक्आक साधन सेहो समृद्ध छल। धन, जन, पशुक कतहु कोनो अभाव नहि छल। जातकक अनुसार विदेहमे १६००० गाम छल आ १६००० नाचैवाली छौडी। रथ, घोडा, हाथी, बरद, गाय, माल आदिक तँ कहब नहि। चीनी यात्री लोकनि सेहो राजधानी विदेह आ जिजीक वर्णन उपस्थित कएने छथि आ ओहि आधार पर कहल विद्वान

क्षवि लाक िाजधानी जनकपुिके मानैत िवि। जातकमे एिँ जैन गंि सभमे विदेह संबधी असंख्य किा सभ सुिक्षत अवि। एक किामे कहल गेल अवि जे विदेहक िाजाके गाहधाि िाज िाक्यसतिक संग क्षतताक सम्बहध िलक्ह। दुनू अपन िाजके िाड तपस्या किबाक हेतु वहमालय गेल िलाह। मखादेि, साधीन, सुरिच्च आवदक सम्बहधमे सेहो कैक पकािक किा जातकमे सुिक्षत अवि। साधीन एक पविि आत्मा िलाह जकाक हयायवियतासँ इशि लोकक्ा सेहो पभावित िलाह। सुरिचक पतीक नाम सुमेधा िलक्ह आ उहो दुनू गोटए पिम धमात्मा िलाह।

वैवदक युगमे काशी, कोशल आ विदेह पधान आयष केहद्र िल। मगध आ अंगक क्ावासीके िास्त्य बुिल जाइत िलैक आ िास्त्य अिष होइत िल 'पक्तत'। पाच्यक सबटा आयष केहद्र सभमे विदेह सिष पधान िल। गौतम, याजिल्तय, भगु, िामदेि, कणि, अगस्त, भागषि, भािदाज, इत्यावद ऋिगण विदेहमे एकत भेल िलाह आ सत्पयाससँ ओ क्षवकके जीवित केलक्ह। क्षवि ला विदेहक शासक लोकक्ा जनक आ "विदेह" पदिीसँ विभूिषत होइत िलाह। िाजा जनक 'बह जान'क अंििरणािष कुरु पाचालसँ बहुत िासि बाहणके बजौलक्ह आ ओवहकम ओ याजिल्तयसँ बह विदाक उपदेश पऔलक्ा। याजिल्तय जनकक िाजगुरु बनलाह आ विदेहमे बह विदाक केहद्र सिावपत भेल। विदेह आ अयोध्यामे वैवावहक संबंध सिावपत भेल। महाभाित युदमे क्षवि लाक िाजा केमधूत्तिष दुयोधनक पक्षमे िलाह वकएक तँ पाण्डु िशि एक बेि क्षवि लापि आकमण कएने िलाह।

दुयोधन क्मवलेमे बलभदक ओतए गदा क्सखने िलाह आ तखनक्हसँ कमवलेश आ दुयोधनमे बेस कतता भऽ गेल िलक्ह। महाभाित युदक समयमे कमवलामे विििट नामक एकटा शासक िलाह। दिभंगा क्जलाक बिटपुि आ सहिसा क्जलाक बिटपुि दुनू एक्ह िजाक िजधानी कहल जाइयै। सहिसाक िििटपुिसँ साक्ाकक िस्तु सेहो पाप्त भेल अवि ओ जाक्हमे मध्य युगक एकटा क्शलालेख सेहो अवि। नेपाल के्तमे सेहो एकटा विििटनगि िक। कमवला क्सि त विििटनगिमे युक्धकाि िजा विििटक ओतए बहुत क्दन धवि अजातिसमे हिल िलाह। कहल जाइि जे िििटपुि आ कीचकगढ पात सहिसा क्जलाक धमषुि पिगिनामे िल आ पचपडविया गाममे पाण्डि लोकक्न अपन अजातिसक समय क्बतौने िलाह।

वदिेहक सम्बन्धमे जे सामगी उपलब्ध अवि ताक्ह आधािपि क्रणषात्मक इक्तहासक कमाण कबि असंभि अवि। पाच्यमे हिक्नहाि काशी, कोशल, मगध, आ वदिेहक लोगमे वदिेह िसीके विक्शष सिान देल गेल िक। मनुस्मक्तमे िश्य क्पता आ बाह ण मातासँ उत्पन्न व्यक्क्तके “िदेह” कहल गेल िक। मनुस्मक्त मे बह क्रषदेशके विशेर महति देल गेल िक जतए भति लोकक्न हैत िलाह। एकि अिषइ भेल जे मनु पूिी के्तके बहुत पवित नक्ह मानैत िलाह। क्लचविकि संग ओ वदिेह लोकक्नके सेहो िस्यक कोक्टमे िखने विि। मनु चाहे एक्ह के्तके जाक्ह क्हसाबे देखने होवि, महाभाितिमे कमवलाके विशेर पकाष ा देल गेल अवि। शुखदेि तँ जनकसँ बह विदा क्सखबाक हेतु कमवला आएल िलाह। ‘जनक’ पदीक पािभ िजा कमविक समयसँ भेल िल।

I. जनक िशक िजाक नामािली

_____ क्रक्म (विदेह)

_____ क्मर्व

_____ अर्विष नेक्म

_____ सीधिज (जनक क्दतीय), सीताक क्यपता (िट भाता कुशधिज-

क्हनका सँकाश्य जीतलापि सीधिज ओतुका िजा बना देलक्हह।)

_____ भानुमंत

_____ सतदुम (पदुम)

_____ शुक्च (मुक्त)

_____ उजषिह

_____ सुतधिज (सतधिज, सनधिज)

_____ शकुनी (कुणी)-(एक्हठामसँ जनक िश दू भागमे बँक्ट गेल)

II. (पुिणक अनुसाि बनाओल सूची)

_____ क्रक्म

_____ क्मर्व

_____ उदािसु

_____ नक्ह्दधिषा

_____ सुकेतु

_____ देििट्

_____ बहदि (बहदुतत)

_____ महािीि

_____ सुधक्त

_____ धष केतु

______ हरियाश

______ मरु

______ पत्रहस्तक

______ कीर्त्तिरथ

______ देवमिढ

______ विबुद्ध

______ महाधृक

______ कीर्त्तिराट

______ महारोमा

______ स्वर्णरोमा

______ हस्वरोमा

______ सीरध्वज जनक (जनक द्वितीय)

III. (सीरध्वजक शिशु)

______ कक्षजनक (अपना समयक महान शासक आ चिंतक)

(बहुलाशक पुत्र)

______ उग्रायुध

IV. साकाश्यमे

______ कुशध्वज (भरत आ शत्रुघ्नक ससुर)

______ धर्मध्वज

______ कृतध्वज आ

______ मितध्वज

______ खाण्डिक्य (केशीध्वजसँ युद्ध भेल छलैन्ह)

______ पुनः मिथिलामे साकाश्यक जनक शिशुक अंत एकठाम भऽ जाइत अछि।

पावजबिि महोदय अपन डायनस्टीज आफ द कक्ल एजमे क्लखने ि वि

कक्लंगाशैि दात्तंशद् अश्मकाः पंचर्वशिक्तः

कुि शािवा रट्ाशद् अषार्विशक्त मैवि लाः॥

महापदनह्द मैवि ल िजियके पिकिजत कएने िलाह ताक्ह क्दन पुिाणक अनुसाि २४टा इक्ोकु, २७टा पाचाल, २४टा काशी, ३६टा कुर आ २८टा मैवि ल शासक क्त्ताय िशिमे शासन कऽ चुकल िलाह।

V. जातक सूचीप

सुरक्व

सुरक्व कुमाि

महापणाद

संक्दगध्नप

विदेह

महाजनक

अर्वति जनक, पोल जनक

महाजनक क्दतीय

क्दघाि कुमाि

VI. अह्याह्य िजाक नाम (जातकसँ)

_ कलाि अिि कािल जनक

_ अंगक्त

_ साधीन

_ पि अहलाि

VII. विदेह िजतंतक अिसान

अिश्वास्त्त मे ____

दाण्डतयो नाम भोजः कामाद

बाह णकाह्यामवभमह्यमानः

सुबह्धुिष्टो विनाशकालिश िदेहः।

एक्हसँ स्पष अिछ जे कालि जनकक समयमे क्षविलाक िाजतंतक अंत भेल। िाजा कालि व्यवभचािी िलाह आ अपन चिवतक चलते हुनका िाजगदीसँ हाि धोमए पडलवह। अशघोि अपन बुदचविमे सेहो एक्ह पसंगमे कलखने िवि ____

"*कालि जनकशैि हति बाह णकह्यकाम्*

अिपभंशमप्योिि न तु से जे न मह्मािम्"

कहल जाइत अिछ जे कालि जनकक पजा िाजाक दुव्यवहािसँ तंग आवब विदोह केलवह आ िाजाके मािवओ देलवह आ विदेह िाजतंतक ओव्ह वदनसँ अंत भऽ गेल। विदेह िाजतंतक अिसानमे भीतिि भीतिि काशीक हाि सेहो िहल होएत एहन अह्दाज लगाओल जा सकइयै। सुरुक्च जातकक अनुसािे काशीक िाजा बह दत अपन पुती सुमेधाक विाह विदेहक िाजकुमािसँ किबा लेल तैयाि नवह भेला आ तकिे चलते विदेह िाज काशीपि व्रवसया गेलाह। आिि बहुत िसि बात लऽ कए काशी कविलाक उनका नवह देखए चाहैत िल आ तिि तिि कविलाके नष किबाक कुचक किैत िहैत िल। काशीक अवतविवत कुरु पाचालसँ सेहो कविलाके मतभेद िहैत िलैक। कुरु पाचालक महति घटलाक बाद कविलाक पगवतसँ कुरु पाचालके इष्या होइत िलैक। कुरु पाचालसँ पैघ विदानोके एक्हठाम बजाओत जाइत िलैक। महाउमग्ग जातकसँ जात होइि जे उतिि पाचालक िाजा बह दतसँ कविलाक िाजाके लडाइ

भेल छलैक आ एकर सभसँ बदनानुबदन कर्विलापर प्रशिानी बढले जाइत छलैक।

कर्विलाक राज्यमे सेहो आपसी संघरष होइते रहैत छलैक जाहिसँ ओकरठाम चार कात असंतोर पसरल छल। इएह कारण छल जे खण्ड सन सुयोग्य महामंती विदेह छोडिके वैशाली चलल गेल छलाह आ ओकरठाम सम्मानित भेल छलाह।

बुदघोरक अनुसार जनक वंशक शासनक अंत भेला उपरान्त कलचर्री लोकन ओकर उतराधिकारी भेलाह परन्च एकर पशके लऽ कए विदानक बीच अखनो मतभेद बनल अछि। पौराणिक आधारपर कहल जाइये जे वैशालीमे इक्वाकु वंशक अंत भेलापर वैशाली कर्विलामे मलगेल परन्च अहुपर विदान लोकन एकमत नहि छथि।

विदेह वजिीगणराज्यक (जाहिमे आठ गणराज्य सम्मलित छल) एक पमुख सदस्यक रुपमे छल। संघक रुपमे पतञजलि विदेहक उल्लेख केने छथि—“संघाहमाभूत् पंचालानाम पत्यम् विदेहा नामपत्यकमक”। विदेह आ वैशालीमे इ.पू. ६ठम शताब्दी गणराज्य छल से मानल जाइत अछि। कराल जनकक बाद संभवतः कर्विलामे गणराज्यक स्थापना भेला उतरा ओकरठाम शासकके राजा कहल जाइत होयतहि से संभव। उविसगद साओ (५म शताब्दीक)मे कर्विलाक उल्लेख अछि। १२म शताब्दीक अवमधानपदीवकामे २४ पवसद नगरक नाममे कर्विला आ वैशालीक नाम अछि। जैन आ बौद साहित्यमे कर्विलाके गणराज्यक रुपमे उल्लेख कैल गेल छैक आ ओहिसँ ओकर पवसदद छलैक से स्पष्ट अछि। वैशाली समेत जे दशटा गणराज्यक उल्लेख पाओल साहित्यमे अछि ताहिमे कर्विलोक स्थान छल जाहिसँ बुझना जाइत अछि जे कराल जनकक पतनक

बाद ैशाली समेत विदेहमे गणाज्यिक स ापना भऽ गेल। बुदक समयमे विदेहक गणना गणाज्यिक रपमे कैल गेल अर्वि। अजातशतुक आकमणसँ ैशालीक अंत भेल आ महापदनह्दक आकमणसँ क्वर्विलाक। ैशालीक पतनक बादो लगभग २५० रिष धर्वि क्वर्विला अपनाके मगध सामाज्यिदिक चाङुसिँ मुतत खिबामे सफल हिल लि। नंदर्शिक बाद भातिमे मौयषक तर्तिाधानमे एकटा अक्खल भातीय सामाज्यक स ापना भेल आ क्वर्विला ओकर्वि अंग भऽ गेल।

अध्याय ४

ैशालीक इक्तहास

i.) भौगोक्लक विशिलेरणप- अक्त पाचीन कालमे भौगोक्लक केत्तक क्हसाबे ैशाली विदेह िाज्यक अंतगष्ता िल, आ विदेह जका ैशालीमे सेहो पक्हने िाजतंत िल आ तत्पशात् गणतंत भेल। ैशाली गण्डकसँ पूिषअवि आ एकि आयीकणि विदेहक संग भेल िल। पाचीन उतिक्काहाकि ैशाली आ विदेह दुनू महतिपूणषिाज्य िल आ दुनूक अपन अलग अलग ऐक्तहाक्सक महति िक। अक्त पाचीन विदेहक अंग होइतहुँ, ैशालीक सेहो अपन एकटा क्नधावित केत्त िक। पाचीन ैशालीक अंतगष्ता चम्पाणि आ मुजफ्फिपुि क्जलाक विशेर भाग िल आ विदेहक अंतगष्ता िल दिभंगा, कक्टहाि, समस्तीपुि, मधुबनी, सहिसा, पूक्णषा, अििया, बेगूसिाय, मूँगेिक उतिी भाग, भागलपुिक उतिी भाग आ नेपालक तिाइ सेहो विदेह ैशालीक अंश िल।

विदेह शब्दक अिष ताक्ह क्दनमे ि सि व्यापक िल विदेह एकटा जाक्तक नामक संकेत सेहो दैत िल। विदेह एकटा भौगोक्लक सीमाक पतीक िल एि विदेह एकटा ािज्य िल जकिा अंतगषा ताक्ह क्दनमे गण्डकीक पूिसँ महानंदा धिक समस्त केत्र सक्म्मक्लत िल। आधुक्नक उति क्बहािक दोतक िल विदेह। इएह कािण िक जे एक्ह व्यापकताक कािणे महाििक जन्मस्ान कुण्डगामके विदेहमे मानल गेल अक्, अजातशतुके िदेही पुत कहल गेल अक्। विदेहक व्यापकताक पभाि पाि धिक बनल िहल कािण हम देखैत िी जे 'लक्लत विस्ति'मे विदेहक संगक्ह पूिष विदेहक िणषा सेहो अक्।

शक्क्त संगम तंतमे जे क्सिला केत्रक िणषा भेल अक् ताक्हमे कहल गेल अक् गण्डकीक तीिसँ चम्पाक जंगल धिक जे केत्र अक् उएह केत्र विदेह अिा तैिभुक्क्त कहबैत अक्। चम्पाक जंगलसँ एक्हठाम बहुत गोटए चम्पािणिक उतिी जंगली भागक अिष लैत िक् मुदा जखन हम एकि सीमाक विश्लेरण आन ठाम देखैत िी तखन हमिा इ बुक् पडइयै जे इ विश्लेरण समीचीन नक्ह अक् कािण विदेहक सीमा एतबेटा नक्ह भऽ सकइयै। चम्पाक जंगल धिक अिषभेल ओ केत्र जे चम्पाक उतिी भागमे िल आ जकिा बौद साक्हत्यमे अंगुतिाप कहल गेल अक्। चम्पा आ विदेहक सीमा कोनो एक खास क्बन्दु पि क्मलैत िल एक्हमे संदेह नक्ह।

पुरुरोतम देि अपन क्तकाण्डशेरमे एिं ििमन अपन क्लंगानुशासनमे विदेह आ तीिभुक्क्तके पयायिाची शब्द मानने िक्। बािहम शताब्दीक एकटा क्शलालेखमे िैशालीके तीिभुक्क्तक अंतगषा बताओल गेल अक्। जीनपभासूिि अपन विविध तीिषकल्पमे सेहो

कनि एकह पकाकि संकेत दैत तीभिुक्तक विणि देने िव। शक्तत संगम तंतमे सेहो विदेह आ तीभिुक्तके पयायिची शब्द मानल गेल अि। बौद लोकक्न विदेह आ िशालीके दू अलग अलग ाज्यक रपमे ाणष कएने िव। बौद साकह्त्यमे िशाली आ िव्जजके पयायिची मानल गेल अि।

मूँगेि आ भागलपुकि उतिर भागके बौद साकह्त्यमे अंगुताप कहल गेल अि जकि सीमा कोनो समयमे क्लचििक ाज्यसँ क्मलैत िल। अंगुतापिक सीमा कमला कोशीक बीच िल। पाचीन अंगक उतिर सीमा िल कोशी आ पक्शममे एकि केत्त बेगूसायिक गण्डकी धवि पसलि िल। िशालीक क्लचिि लोकक्नक अक्धकाि कमला नदी धवि बक्ढ गेल िलक्ह आ तकि बाद क्मविलाक ाज्य शुर होइत िल जाक्हमे ताक्ह क्दनक अंगुताप आ पुण्र धिषभुक्तक कनि अंश समाक्हत िल। तै हमिि बुिने शक्तत संगम तंतमे जे चम्पाक जंगल धवकि गप्प अि तकािसँ चम्पाािण नक्ह बुवि अंगुताप एिं ओकि ओक्ह केत्तक बोध होइि जाक्हठाम ताक्हठाम खाली जंगले जंगल िल आ जमीन सेहो दलदले िल। गण्डकीसँ अंगक जंगलक सीमा धवि विदेहक ाज्य पसलि होएत इ िसी तकषंगत बुवि पडइयै आ तै अखनो इ पवभािा एकटा विचािणीय विरय बनल अि।

ii.) ऐक्तहाक्सक विणि (ाजतंत धवि)- विदेहक पाचीन इक्तहास जका िशालीक पाचीन इक्तहास ओििले अि। यदक्प पौािणक स्तोतसँ िशालीक विणि भेटइत अि पक्न्तु िैक्दक साकह्त्यमे िशालीक कोनो शंखलाबद विणि उपक्सित नक्ह अि। यत तत एहन एकाधटा नाम िैक्दक साकह्त्य अिि िदमे भेटइत

अछि जकर सम्पर्क शालीसँ छल हो प्रत्यक्ष एवं आधारपर शालीक कोनो इतिहास प्रमाण करब असंभव। अथर्ववेदमे तक्षक शालेयक उल्लेख अछि आ हुनका विशालाक्षमज वैदिजक पुत्र कहल गेल छन्हि। पंचविंश ब्राह्मणमे हुनके (शालेय)के एकटा सर्पयाजक पुरोहितक रूपमे निर्देश कैल गेल अछि।

पुराणमे शालीक इतिहासक सम्बन्धमे बहुत रास सामग्री अछि परंतु ओहिमे ततेक नव विरोधाभास अछि जे ओहिमे सँ कोनो ठोस सत्यक प्रमाण करब एकटा कठिन कार्य। मार्कण्डेयपुराणमे मनु आ हुनक पुत्र प्रियव्रत तथा उत्तानपादक चर्चा अछि। प्रियव्रतक संतानक घर्ष सम्बन्ध शाली एवं हिमालय क्षेत्रसँ छलन्हि। दिशिस्थिमे अवस्थिध (प्रियव्रतक पुत्र)गण्डकीपर अवस्थित शालग्राम (हिमालय) गेल छलाह। हुनक पुत्र नाभ तपस्याक हेतु शाली आएल छलाह। ताहि दिनमे शाली विशालाक नामसँ प्रसिद्ध छल। नाभक पुत्र छलाह ऋषभ (संभवतः प्रथम जैन तीर्थंकर इएह छलाह) आ हुनक पुत्र भेला भरत जनिका नामपर एहि देशक नाम अछि। भारतवर्षक पूर्वक नाम छल हिमवर्ष। भरत अपन राज्य सुमतिके दए तपस्यामे चलि गेलाह। मार्कण्डेय, भागवत्, विष्णु आदि पुराणमे शालीक इतिहास जे वर्णित अछियै ताहिमे ततेक नव संशयात्मक बात सभ अछि जे हमरा लोकनि कोनो एकटा प्रमाणात्मक सत्यपर नहि पहुँचि सकैत छी तथापि ओहि स्रोतक आधारपर एकटा राजाक इतिहासक रूपरेखा ठाढ़ करबाक प्रयास कैल गेल अछि।

गजेन्द्र मोक्षक प्रसंग सेहो शालीक इतिहासक प्रसंगमे अछियै। गज ग्राहक संघर्ष शालीक गण्डकी क्षेत्रमे भेल छल आ

कहल गेल अछि जे विष्णु गजके गाहक चाङुसँ बचाके एहि क्षेत्रके एकटा तीर्थक रुपमे बना देलथिन्ह। इ घटना गंगा गण्डकक संगमपर भेल छल आ तैं एकर गजेन्द्र मोक्ष तीर्थ कहल जाइत छैक, इहो क्षेत्र कहल गेल अछि आ पुराणमे एहि स्थानके विशाला क्षेत्रक अधीन राखल गेल अछि। क्षत्रिय तपस्याक क्षेत्र सेहो प्रसिद्ध छल। क्षत्रिय पुत्र महावीर लोकनि जे समुद्रमंथनक कार्य कएने छलाह ताहिसँ इ स्पष्ट होइछ जे अत्यन्त प्राचीन कालहिसँ प्रसिद्धलीक लोक समुद्रसँ परिचित छलाह। हिन्दू, जैन आ बौद्ध धर्मक दृष्टिये सेहो प्रसिद्धलीक इतिहास महत्वपूर्ण मानल जाइए।

विदेह प्रसिद्धलीक प्राक् इतिहासक सम्बन्धमे हमर लोकनिक ज्ञान एकदम सरिपोसँ कम अछि तथापि जे किछु हम जानतो छी से रामायण, महाभारत, पुराण आदि ग्रंथक आधारपर। ओहु सभ साधनमे सभमे अलग अलग विवरण अछि। विदेहक आर्यीकरणसँ प्रसिद्धलीक इतिहास प्रारंभ होइत अछि आ प्राचीन ग्रंथक आधारपर इ बुझना जाइत अछि जे मनुस्मृतिके ९टा पुत्र छलथिन्ह आ एकटा पुत्री जनिकर नाम छलथिन्ह इला। नओ पुत्रक नाम अछि इक्ष्वाकु, नाभाग (नग), धृष्ट, शर्याति, नरिष्यंत, प्राशु, नाभानेदिष्ठ, कारुष आ पृषध्र। मनु भारतके १० भागमे बटलथिन्ह। एहि ९ओ पुत्रमे नाभानेदिष्ठ प्रसिद्धलीक राज्यक संस्थापक भेलाह। हिनका बादमे ३४टा शासक भेलथिन्ह जाहिमे सबसँ अंतिम छलाह सुमति। सुमति अयोध्याक दशरथ आ विदेहक सीरध्वज जनकक समकालीन छलाह।

नाभानेदिष्ठक सम्बन्धमे सेहो प्राचीन साहित्यमे एकमत नहि छैक। रामायण महाभारत एहि नामपर गुम्म अछि। एहन बुझि

पडइयै जे पाि चक्लके लोग एक्ह नामके क्सैि गेल ि ल। ि जा वि शालके ि ै शालीक संस ि ापक मानल गेल ि क्ह। ि मायणमे ि ै शालीक ि जा सुमक्तक शासन केत्त सम्बह्धमे कहल गेल अवि जे हुनक शासन गण्डकसँ पूषि आ वि देहसँ दक्क्ण पक्शाम क्दक्स ि ल। एक्हसँ स्पष अवि जे नाभानेक्दष जाक्ह ि ज्यिक सि ापना ि ै शालीमे केने ि लाह तकि सीमा ताक्ह क्दनमे बडड ि ि ट ि ल। हुनक पुत भेला नाभाग, जे ि ै श्य कह्यासँ वि ि ाह केलाक काि णे, गदीसँ ि क्चत ि हलाह। कक्ष आ क्यि सायमे ओ ि सी ि त ि हिए लगलाह आ हुनका भाइ सभसँ सेहो नक्ह पटलाक काि णे बि ि बि टंट घंट लगले ि है त ि लक्ह। नाभाग अपक्न पती पेमक चलते ि ि जगदीके त्यागलक्ह आ क्क्तायति ि क्ड ि ै श्यति गहण केलक्ह। हुनका तीनटा पुत ि लवि ह्ह जाक्हमे एकटाक नाम भालचंद ि लक्ह आ दू भाइ बाह णति पाप्त कएने ि लाह। नाभागक अि िक पवि शमक काि णे ि ै शाली केत्तमे कक्ष आ क्यि सायके पोत्साहन भेटलैक आ अक्त पाचीन कालक्हसँ ि ै शाली कक्ष एि ं उदोगक पधान केह्द बक्न गेल। एक वि दानक तँ इहो मत ि क्ह जे नाभागक ि ै श्यति गहण कबि ि ै शालीक नामक उत्पक्तसँ सम्बह्ध ि खइयै। नगि कि क्हसाबे नाभाग अपना केत्तके ि ै श्य लोकक्नक हेतु सभसँ पमुख नगि बनैलक्ह आ उएह नगि बादमे ‘ि स्यु लोकक्नक नगि ' अि ि ि ै शालीक नामसँ पक्सद भेल। वि देह बह वि दा आ आयष संस्कक्तक केह्द बनल आ ि ै शाली कक्ष, उदोग, ि द वि ि ि धी धमष आ कुलीनतंत शासन पदक्तक केह्द। ओक्ह युगमे मात पतीक हेतु ि ि जगदीक त्याग कबि एि ं बाह ण क्यि सि ाक पवि त्याग कए ि ै श्यति गहण कबि एक महानकाक्तकाि ि कदम ि ल। एक्ह वि ि ाहक एकटा दोसि असि पडल सामाक्जक क्यि सि ापि

जकरि चलते ैशालीमे बादक िजा सबके “आयोगि” कहल गेल अवि। एकहसँ एक एहेन जाकतक बोध होइि जकर माय ैश्य आ वपता शूद्र हिल हो। शतपि बाहणमे िजा मरतके आयोगि कहल गेल अवि। नाभागक ैश्य पतीक नाम सुपभा िलकह।

सुपभासँ उतपन पुतक नाम िल भलंदन। ओ िजवषषकाप (कावममलत)सँ सहायता लय अपन पैवतक िज्यके पापत कबाक पयत केलकह आ एकह कम ओ सफल भेलाह आ अपन सि संबहधीके पिवजत कए ओ िज्य पापत केलकह आ िजमुकुट अपना वपताक देलकह मुदा वपता ओ गहण कबासँ असीकार केलविह। तखन भलंदन सियं शासक भऽ गेलाह। हयायपूिक ढंगसँ ओ शासन केलकह आ अपन कतषय पिपि चलैत हिलाह। हुनका ितसवप नामक एकटा योगय पुत िलविह। ितसवपक पतीक नाम िल मुदाती (सुनंदा)। अपना वपताक बाद ितसवप शासक भेलाह। हुनक दोसि नाम अजहिन सेहो िलकह। ओ मालिक िजाक संग ैिकहक समबहधक काणि ओ एक पुशतधवि मालिपि सेहो शासन केलकह। हुनक शासन काल शाकतवपय िल आ ओ अपन उदािता एिं महानताक हेतु पवसद िलाह। सुनहदा (मुदाती)सँ १२टा पुत िलविह पाशु, पचीि, सूि, सुचक, विकम, कम, बालीन, बलाक, चणड, पचणड, सुविकम, सिरप। पौिवणक सोतसँ इहो जात होइि जे दिक तीनटा ैश्य मंतकता लोकवन ैशालयेक शासक िलाह जवनक नाम िलैन भलंदन, ितसवप (िशि) आ संकील।

पाशु अपन वपताक पिवि ैशालीक शासक भेलाह। ओ एकटा सशतत शासक िलाह। ओकि बाद पजावन, (पजापवत,

पमक्त) हुनक पुत, शासक भेलाह। एक्ह समयमे शिाली िाज्यमे कि् आपसी संघरष शुर भेल। पजाकक पाच पुतमे खक्तत महतिपूणषभेलाह आ अपन बापताक बाद शासक सेहो। ओ बहुत ीि आ बुद्धियािि िलाह। अपना पजाक हेतु ओ सभ कि् कबिाक लेल पस्तुत हैत िलाह। अपना भाइ सबहक पक्त ओ दयािनि आ विचािि िन िलाह। ओ अपन सभ भाइके अपना अधीनमे िट िट िाजा बना देने िलाह। अंतमे हुनके एकटा िट भाइ हुनका विििधमे विदोह कए िाज्यक शाक्तके नष कए देल। खक्ततक पिक्त हुनक पुत कुप शासक भेलाह। हुनका चाकुश सेहो कहल जाइत िक्ह। ओ बाह ण लोकक्के पचुि दान दए यशक भागी बनलाह। हुनका बाद हुनक पुत विंश िाजा भेलाह। हुनक दोसि नाम ीि िल। तीि चलेबामे ओ बडड कपुण िलाह आ संगहि ओ एक शक्ततशाली शासक सेहो िलाह। हुनका बाद हुनक पुत विविंश शासक भेलाह। हुनका समयमे जनसंख्याक िवदक कािण अह्याय बढि गेल िल। क्सिक्तक सुधाकि हेतु ओ कैक पकाकि यज सेहो केलक्ह। विविंशके १५टा पुत िलविक्ह जाक्हमे सबसँ पैघक नाम िलक्ह खनीनेत। हुनका पुिणमे धाक्मषक शासक कहल गेल िक्ह। ओ बाह णके उदाितापूिषक दान दैत िलाह। हुनका पुत नक्ह िलक्ह तँ पुत पाक्सतक हेतु ओ पशुयजक त्याग केलक्ह। गोमतीक तटपि पापहाविणी यजक आयोजन केलक्ह। एकि फलसिरिप हुनका एकटा पुत भेलक्ह जकि नाम बलाश िल। शिालीक इकिकु मानि केतमे बलाशक िाज्यािहणसँ ऐक्तहाक्सक सत्तािपि आयक तति विस्तािि भेल। एक्ह िाजाके बलाश किनिधम

सेहो कहल जाइत अवि। खनीनेत आ कनिधमक बीचमे एकटा वभूक्त िजाक उल्लेख सेहो भेटइत अवि।

कनिधम ैशालीक एकटा महत्तपूणष शासक िलाह। ओ बहुत िसि केत्तके जीतलक्कह आ अपन िज्यक अंतगषत केलक्कह। नि नि पकाकि कि पविक्त िज्यपि लगौलक्कह। िीि नामक कह्यासँ सयिंिकि माध्यमे हुनक विीिह भेल िलक्कह आ ओक्कहसँ उत्पन्न पुतक नाम िलि अवविक्त। अवविक्त एतेक क्यपुण एिं योग्य िलाह जे सात ठाम सयिंिमे हुनके जयमाल पडलक्कह। जयमाल पक्कहौिकहाि कह्याक नाम एिं पकाि अवि ____

_____ i.) हेमधमषक पुती िीि

_____ ii.) सुदेिकि पुती गौिी (काशी)

_____ iii.) बाक्लनक पुती सुभदा (अंग िगि)

_____ iv.) िीिकि पुती लीलातिी (अवविक्तक मायक बक्कहन)

_____ v.) िीिभिदक पुती अक्माभा (ऐजन)

_____ vi.) भीमक पुती माह्यतिी (विदिभष)

_____ vii.) दम्भक पुती कुमुदतिी (मालिि)

उपितत सूची एक्कहबातक दोतक अवि जे ैशालीक सम्पकष ताक्कह क्कनमे सभ पक्सद िज्य सभसँ िल आ एक्कहसँ ैशाली िज्यक महतिकि संकेत भेटइत अवि। अंग, िगि, विदिभष, मालिि आक्क िज्यक संग सम्पकष तत्कालीन अंतिि िज्य सम्बह्धक पतीक मानल जा सकइयै। ताक्कह क्कन हैहेय िज्यक शासक लोकक्न विदेह एिं ैशालीपि आकमणक सूसिािमे लागल हैित िलाह पिञ्च हुनका लोकक्नके एक्कहमे कोनो सफलता नक्कह भेटलक्कह काििण कनिधम, अवविक्त, एिं मरत सन् सन् शासक ैशालीक िजगदीपि िलाह।

कनिधम अपना युगक एकटा पक्तभाशाली व्यक्ततर्त िलाह जे ैशाली एिं समस्त उतर भातिक इक्तहासपर एकटा अक्मट िाप िाडने िि। महाभातिमे जे पाचटा तीषिक िणषा अि ताक्हमे काह्मिमतीषिक महतर्पूणष सिान अि। आन तीषिक नाम अि अगस्त्य, सौभद, पौलोम एिं भादिाजीय। महाभातिमे कह्मिमके एकटा पाचीन धमात्मा िाजाक रपमे िणषा कैल गेल ैक। स्कन्धपुिाणमे कह्मिमके िाजरषर कहल गेल ैक। कह्मिम एक महान शासक िलाह आ अपना िाज्यक सभ विदोही ततिके दबाके एक सशतत िाज्यक सिापना कएने िलाह आ बहुत क्दन धिि तक शासन कएने िलाह। ैशालीक सामाज्यिादी पििाि जन्मदाता कह्मिमके मानल जाइत अि। हुनक पुिक्हत िलि ह्ि अंगीिस। हुनके शासन कालसँ ैशालीक िाजदिबािमे अंगीिस पुिक्हत लोकक्नक पभाि बढलक्ह।

कह्मिमक बाद हुनक पुत अविक्त्त शासक भेला। ओ हैहेय आकमणके िाकिबामे समिष भेलाह। विक्दशाक संग सेहो हुनका कक्िु खटपट भेल िलक्ह। तकि बाद हुनक पुत मरत शासक भेला। पुिाणमे मरतके चकितीक संजा देल गेल ैक। महाभातिमे मरतके भातिक १६ िाजामे सँ एक पमुख िाजा मानल गेल ैक। मरतक तुलना विष्णु, िसि आ पजापक्तसँ सेहो कैल गेल ैक। महाभातिमे मरतक हेतु समाट शब्दक व्यिहाि भेल ैक। एक क्कंिदंती ैक जे ह्यायक तरआवि मुचुकुन्दसँ लकए मरत ैतिके देलविह्ि आ एक्हसँ इ जात होइत अि जे ओ एक ह्याय वापय शासक िलाह। हुनक अंवािस पुिक्हतक नाम िल समितष ओ बडड पैघ पैघ यज कएने िलाह आ धमषपाय शासकमे

हुनक नाम अगगण्य छलिह। भरत अपन पुतीक विवाह संतिषक संग केलिह। हुनका शासन कालमे 'एह्दमहावमरेक'क आयोजनक उल्लेख भेटइयै आ अश्वमेध यजक श्रेय हुनका देल जाइत छिह। विभिन्न सानिपाि पैघ पैघ यज करबाक आ करबाक श्रेय सेहो हुनका देल जाइत छिह। स्कन्द पुराणक अनुसार गण्डकी उपत्यकाक राजा भरत यज करबाक हेतु एक बेर जय आ विजयके आमंत्रित कएने छलाह आ हुनका लोकनिके पचूर दक्षिणा देने छलाह। कोनो अघटित घटनाक चलते हुनका दुनू गोटएके शाप पडलिह आ इएह दुनू गोटए गज आ गाहमे एकह क्षेत्रमे परिवर्तित भऽ गेलाह आ बादमे इएह सानि हरिहर क्षेत्रक नामसँ पसिद भेल। भरत नाग आ हैहेय लोकनिके सेहो पराजित केलिह। भरतके सात टा पती छलिह

i.) विदभषाजिक पुती पभाति
ii.) सौवीर राजिक पुती सुवीरा
iii.) मागधकेतुषीयक पुती सुकेशी (अंग राजिक आनिरशक)
iv.) मदराजास्सह्धुषीयक पुती केकयी
v.) केकयी राजिक पुती सैहिन्धी
vi.) सह्धुक आनिराजिक पुती पुरमती
vii.) चेदी राज्यक पुती सुशोभना

एकह वैवाहिक सम्बन्धसँ राजिनीतिक स्थिति सुदढ छल आ भारतक विभिन्न राज्यक संग एकर सम्बन्ध सेहो नीक छल। भरतक अठारह पुतमे ज्येष पुतक नाम छल नविष्यंत।

नविष्यंत एक पमुख शासक छलाह आ उहो वैवाहिक सम्बन्धक माध्यमे अपन ताकत बढौलिह। ओकर बाद हुनक पुत दम शासक

भेलाह। दमक बाद ाज्यदिषा आ ओ दक्षगापसिँ अपन ीिक्षक सम्बह्ध सािपत केलक्ह। एकि बाद पुनः ैशालीक इक्ताहास अंधकापूिणष अवि आ तणबाह्दुक ाज्यािहणसँ पुनः हमाि लोकक्स एकटा लीखपि पहुँचैत ाी।

तणबाह्दुक सम्बह्धमे कोनो वशेर जानकाि हमाि लोकक्सके नक्ह अवि। संभि जे ओ कोनो सािनीय शासक हिल होवि आ ािजनैक्ताक असािवयतकि क्सिक्तासँ लाभ उठा कए एकटा सशतत ाज्यक सािपनामे समिष भेल होवि। पुाणि सभमे तणबाह्दु मक्हपक्त आ ािजवरषदुनू कहल गेल ैकि। क्हनक पतीक नाम ाल अलभुािरा आ क्हनका लोकक्सकके तीनटा पुत ालैक्ह वशाल, शून्यबंधु आ धूमकेतु। वशाल ैशाली नगाकि संसािपक मानल जाइत ावि। क्हनक पुती इलावलाक विािह पुलस्त्य (दक्षगक ाक्सिशि)सँ भेल ाल। एि पकाि एक्ह बेि क्साय कह्याक विािह बाहणसँ भेल। बुवि पडइयै जे ैशालीक शासक लोकक्स विािहक मामलामे उदाि ालाह। एक्हसँ उत्पन पुत वशिसि मुक्नक आशम नमषा तटपि ाल। दक्षगक पौलस्त्य ाशिक उत्पक्त ैशालीक ािजिशिसँ भेल ाल।

तणबाह्दुक पुत वशाल पाचीन भाितीय इक्ताहासक पक्सद मील स्तंभ मानल जाइत ावि। ओ अपना नामपि अपन ािजधानीक नाम वशाला ाखलक्ह जे कालकमेण ैशालीक नामसँ पक्सद भेल। माकषडेपुािणमे सेहो एकटा वशालगामक उल्लेख भेटइत अवि आ अििषदिमे ाक्षा तकक ैशालेयक उल्लेख तँ हम पूिषहं कऽ चुकल ाी। ािजा वशालके वशालाक पभु, आ वशालापुािक संसािपकक र प से बताओल गेल अवि। ओक्ह

समयमे गया आ वैशालीक बीच घनत्व सम्पर्क छल। राजा विशाल पितृपूजा आ पिण्डदानक समर्थक छलाह आ ऐतिहासिक दृष्टिकोणसँ हुनका पिण्डदानक प्रतिष्ठापक कहल जा सकइयै। ब्रह्माण्डपुराणमे राजा विशालके धर्मात्मा पुरुष कहल गेल अछि। मार्कण्डेयपुराणमे विशाल नामक एकटा ब्राह्मण आ हुनक पुत्र वैशालीक उल्लेख भेटइत अछि। वैशालीमे एकटा महान्‌ दुर्ग छल जे गौतमबुद्धक समय धरि विद्यमान छल। विशाल बहादुरीक द्योतक सेहो बुझल जाइत अछि। आ संभवतः अहु अर्थमे 'वैशाली' शब्दक उद्भव भेल हो। सम्प्रति 'राजा विशालक गढ' प्राचीन वैशालीक खण्डहरक रूपमे विद्यमान अछि जकर उत्खननसँ ताहि दिनक बहुत रास सामग्री उपलब्ध भेल अछि। विशालक बाद हेमचन्द्र शासक भेलाह, तखन क्रमशः रूपे सुचन्द्र, धूमाश्व, शंजय, सहदेव, कृशाश्व, सोमदत्त, जनमेजय, आ सुमति। वैशालीक इतिहासमे सुमतिक शासन बड्ड महत्वपूर्ण मानल गेल अछि। अपना शिक ओ सभसँ अंतिम राजा मानल गेल छथि। विश्वामित्र जखन राम लक्ष्मणक संग वैशाली पहुँचल छलाह तखन एतुक्का सुमति शासन करैत छलाह। वैशालीके 'उत्तमपुरी' कहल गेल अछि। देखबामे ओ एतेक सुन्दर एवं स्वर्गीय छल जे सामान्य लोगके बुझि पडइत होइक जे जेना इ स्वर्गे हो। सुमति आदरपूर्वक विश्वामित्र, राम एवं लक्ष्मणक ठहरबाक प्रबंध केलथिन्ह आ यथायोग्य स्वागत सेहो। ओतुक्का ठामसँ मिथिला पहुँचबाक बीचमे ओ लोकनि गौतमाश्रम सेहो रुकल छलाह। सुमतिक बाद वैशालीक इतिहास पुनः अंधकारपूर्ण भऽ गेल आ एकर जे शासक छला हिनक तकर कोनो जानकारी हमरा लोकनिके नहि अछि। राजतंत्रक अंत आ कुलीनतंत्रक प्रारम्भ जे कोना एहि क्षेत्रमे

भेल तकि संबह्धमे अखनो वि शेर बात संक्दग्ध एिँ अक्नक्शते अवि ।

iii.) सुमक्तक पिक्त आ िजिजीकुलीनतंतक सिपना धवकि इक्तहासप- सुमक्तक शासनक अंत भेला पि लगभग ६०० िरषक पिक्त िशालीमे कुलीनतंतीय शासनक वि कास भेल आ कमेण िजिजीसंघ सेहो। एक्ह ६०० िरषके िशालीक इक्तहासमे अह्धकाि युग कहल गेल अवि । साक्हत्य एिँ पौिक्णक पिपिमे सुमक्तक बाद कोनो िजाक नामक संकेत नक्ह अवि । महाभाित युदक समयमे वि देह, कोशल एिँ मल्लिाष्टक वि िणि तँ भेटइत अवि पिन्च िशालीक सम्बह्धमे कोनो सूचना उपलब्ध नक्ह होइि । एहेन बुवि पडइयै जे सुमक्तक अिसानक पिक्त वि देहक पिकिम बक्ढ गेल िल आ िशालीक वि शेर भागपि संभितः वि देहक आक्धपत्य भऽ गेल िल। उतिक्वहाकि वि देह आ मल्लक उल्लेख महाभाित युदक पसंगमे अबैत अवि तँ संभि जे िशालीक वि शेर भागपि वि देहक आक्धपत्य (िशालीपि वि देह िज्यक आक्धपत्य) भऽ गेल हो आ कक्ि अंशपि मल्ल लोकक्नक। िशालीक सितंत सता समाप्त िहलाक कािणे िशालीक सितंत उल्लेख नक्ह भेटल सिभाविके बुवि पडइत अवि । कक्ि वि दानक मत क्विह जे िजा सुमक्तक पिक्त िशालीपि कक्ि क्दनक हेतु कोशलक आक्धपत्य भऽ गेल िल। कोशलक कमजोि भेलापि वि देह िज्य ओक्ह पविक्सिक्तसँ लाभ उठाके िशालीके अपना अधीन कऽ लेलक्ह। ताक्ह क्दनमे िमिक साि भानुमंत क्मविलामे शासक िलाह। िशालीक पभुति घक्ट चुकल िल। वि देहक आक्धपत्य भेला संता िशालीक अपन जे सितंत संबह्ध यादि अिि पाण्डि लोकक्नसँ िहल हेतक्ह सेहो

गौण भऽ गेल हेतक्हि आ इ लोकक्त अपन अधीनर्स वसकिताक काणि गुम सुम भए अपन समय कटइत हेताह। भऽ सकइयै जे विदेहक ाजितंतक अंत भेने दुनू ठाम एके बेि कुलीनतंतीय गणतंतक स ापिना भेल हो।

सुमक्ताक पिाक्त क्मविलाक इक्तहासक जे कम उपलब्ध अवि ताक्ह आधाि पि इ उक्यत बुिना जाइत अवि जे क्मविला अपन सामाज्यािदी पसाकि कममे िशालीके पिाक्जत कए अपना अधीन कऽ लेने होएत। सामाज्यािदी पिक्ताक पाििभ सीधिजि जनक धवि जीविति िल आ ओ साकास्य धवि अपन ाज्यक सीमाक विस्ताि कएने िलाह। महाभाित युदक पशात जे एकटा अक्तश्ततताक वसक्त उत्पन भेल ताक्हसँ लाभ उठाके जनकिशक शासक गण, उगसेन, जनदेि, धमध्वजि, ताि आयुसिन, अपन सामाज्यािदी पिपाकिे आगा बढौलक्हि आ कििब बािह पुस्त धवि एकि जाि िखलक्हि। अयोध्याक ाज्यक विन्मन भेल उताि क्मविलाक ाज्यक विस्ताि होइते िहल। कोशल काशीमे बािबवि खटपट होइत िहल। िशालीक िस्तुिसकिताक सम्बद्धमे कोनो ठोस जान हमाि लोकक्तके एक्ह समयमे नक्ह अवि।

महाभाितिमे पाचीन भाितीय गणतंत एिं विभिन जाक्ताक विििण भेटइत अवि पिज्च ओहु सूचीमे िशाली अिाि ओक्हठामक गणतंतक कोनो उल्लेख नक्ह अवि। एकमात उल्लेख जे िशालीक सम्बद्धमे अवि से विशालाक पुती भदा िशाली जाक्ह ाजिकुमाििक हेतु दाििितीक ाजिसुदेि, क्देक क्शशुपाल, एिं कार रक शासक लालाक्यत िहैत िलाह। िशालीमे नाग पधानक उल्लेख सेहो भेटइत अवि आ कहल जाइत अवि इ लोकक्त अजुिनक साहायता कएने

छलिन्हि। वैशालीमे नाग लोकक्लक पधानताक वर्णन दीघनिकाय आ महाशिमे सेहो भेटइत अछि। अनिििदमे तक्क वैशालेयक उल्लेख तँ हम पूर्हिं कऽ चुकल छी। वैशालीसँ गुप्तकालीन अिशेरमे बहुत रास सपषमूक्तष भेटल अछि जाक्हसँ इ स्पष्ट होइछ जे एक्हकेत नाग लोकक्लक पधानता छिल हेतक्हि।

कहल जाइत अछि जे भीमसेन अपन क्दवजियक कममे गण्डक लोकक्लके पराजित कएने छलाह। अहुँठाम वैशाली नाम नक्ह दए गण्डक लोकक्लक (गण्डकक समीप रहिक्हार) नाम अछि आ अहुँसँ बुझि पडइयै जे वैशालीक राजनैक्तक महत्व ताक्ह क्दन धरि समाप्त भऽ चुकल छल। ओक्ह क्दवजियक कमक जे सूची अछि ताक्हमे विदेहक पूर्हि गण्डक लोकक्लक वर्णन अछि। भीमसेन उत्तर कोशल, मल्ल, जलोद्भव, जनक वैदेह, शक, बर्बर, एवँ सातटा क्करात पधानके पराजित कएने छलाह आ शर्मिक, मिषक आ गोपालकक लोकक्लके सेहो। क्कछु गोटएक मत छक्हि जे इ तीनू गिष वैशालीक क्नवासी छलाह आ ओतक्हक बाहण, क्क्षत्रय आ वैश्यक द्योतक सेहो। मुदा ठोस साधनक अभावमे इ सब एकटा अंदाज मात छिक आ तै एक्हपर पूणष विशास कनब असंभव। सुमक्लक बादसँ क्लच्छविक उत्थान धरिक इक्तहास अंधकार पूणष अछि आ ओक्हमे जे कोनो एकटा माह्य तथ्य अछियो तँ से मात इएह एक्ह ६०० रिषक अभ्यंतरमे वैशाली कैक टुकडामे बक्ट गेल छल आ मुख्य रूपसँ विदेह एवँ मल्ल लोकक्ल एकर विशेर भागपर अपन आक्धपत्य स्थाक्पत कऽ लेने छल।

iv.) क्लच्छविलामे गणराज्यक स्थापनाक इक्तहासप- अक्ह्धकार युगसँ जखन वैशाली अतीतीणष होइछ तखन हम देखैत छी जे

ैशालीक नेततमे समस्त उतर ब्रहारमे एकटा कुलीनतंतीय गणाजियक परंपिक सापना होइत अि। इ.पू. ठी शताब्दी समस्त वैशिक इतहासमे अपन एकटा महतपूणष सान खिइयै आ भातिमे तँ सहजक इ युग एकटा युगातकारी युग लि ाजिनैतक आ सास्कृतक दका ये। ब्रवलाक इतहास दका ये सेहो इ युग युगातकारी कहल जा सकइयै। ाजिनीतमे ाजतंतक उतिधकारी गणतंत भेल आ वचाकि केतमे धिान महारी आ गौतमबुद एकटा नि कीतषान सावत केलक। ैशालीमे कहया आ कोना गणाजियक सापना भेल एकि ठीक ठीक पता हमि लोकके नि अि मुदा एतिा हम सब जनैत ी जे महारी आ बुदक समयमे ैशालीमे कुलीनतंतीय गणाजियक पभुत लि। बुद जाक शबमे ैशालीक गणाजियक पशंसा कएने वि ताकसँ बुिना जाइत अि जे बुदसँ १०० २०० रिषपूर्वसँ इ गणाजिय हिल हो। कलि जनकक अतयाचारी शासनसँ तंग आब जखन पजा विदोह कए विदेह ाजियमे काक मचौलक तखन ओकठाम ाजतंतक असान भेल आ गणाजियक सापना। कहल जाइत अि जे एक घटनाक फलसरिपे समस्त उतर ब्रहारमे गणाजियक परंपि पािभ भेल आ चूँक ैशाली विदेहक अंग लि तै ैशालयोमे गणाजियक सापना भेल। कलि जनक विदेहक जनक शिक अंतम ाजा लाह आ हुनक असानक पाकयेसँ ब्रवलामे गणतंतक सापना मानल जाइत अि। कहल जाइत अि महाभाित युदक २२ पुस्त कS बाद बौद धमक उतान भेल आ एक बीचमे ब्रवलामे गणतंतक सापना भेल होएत। पुाणमे एक बीच २८ मैवल ाजाक उल्लेख भेटइत अि।

बौद धमषक उत ‍िनक बहुत पूि‍षिं क्षवि‍लामे गणतंतक स‍ि‍पना भेल होएत तकि‍ संकेत हम उपि‍ दए चुकल ि‍ी। पुि‍णिमे २८ मैवि‍ल ि‍जािाक वि‍ि‍िणि अवि‍ आ जातकमे मात १५ ि‍जािाक २८ मे सँ जे १५ घटा देल जाइक ते १३ ि‍जा बक्ष जाइत वि‍ आ महाभाि‍ति युद आ गणाि‍जियक स‍ि‍पनाक बीच संभि‍तिः इएह १३ ि‍जा क्षवि‍लामे ि‍जिय कएने होएताह। एक्ह १३मे अंक्तम ि‍जा कि‍लि जनक ि‍हिल हेताह। जातकमे मखादेि‍के क्षवि‍लाक ि‍जितंतक संस‍ि‍पक मानल गेल अवि‍। क्षवि‍लामे जातक सूचीक अनुसाि‍ ि‍जािाक नाम एि‍ँ पकािि‍ अवि‍ ___

_____ सुर क्ष पि‍मि, सुर क्ष क्वतीय, सुर क्ष ततीय, महापनाद

(जातक नं-४८९+२६४)

_____ महाजनक पि‍मि, अविठजनक, पोलजनक, महाजनक क्वतीय, क्वघािि

(जातक नं ५३९)

_____ साधीन, नािदि

(जातक नं-४९४)

_____ क्षम, कलािि

(जातक नं ९, ४०८, ५४१)

_____ मखादेि

(जातक नं ९, ५४१)

_____ अंगक्त

(जातक नं-५४४)

ि‍दिषान महािीिसँ २५० ि‍रिष पूि‍षि क्षवि‍लामे क्षम नामक एकटा शासक भेल ि‍लाह जे जैन धमषगहण कएने ि‍लाह। इ. पू.

७५० क आसपास क्षर्व लामे जनक ि शिक अंक्तम शासकक ि ज्यक अि सान भेल आ तकि बादे ओक्षठाम गणतंतक स ि पना भेल। क्षर्व लामे गणि ज्यक स ि पनाक संगक्ष ि ज्जी गणि ज्यक स ि पना सेहो भेल। क्षर्व लामे ि जतंतक पशात गणतंतक स ि पना एकटा महत्तपूणष घटना मानल गेल अर्व ि। कौक्टल्यक अनुसा ि ि ज्जी (ि ज्जी) आ क्लच्र्ि ि अलग अलग ि ल। महापर्वि र्वा ि निसुतमे बुद ि ज्जी लोकक्षक गुणगा ि कएने र्वि आ पाक्षाक्ष सेहो ि ज्जी लोकक्षक र्वि ि णि देने र्वि। ि ज्जी गणि ज्यक संदभषे अष कुलकक उल्लेखसँ जात होइत अर्व ि जे एक्षमे आठकुलक लोग संगक्ठत ि हिल होइत। ति ाक्षि एक्षठाम क्लच्र्वि येक पधानता ि हिल होइत। क्लच्र्ि ि लोकक्ष ि शालीक ि हिक्षहा ि ि लाह आ अष कुलकक सि ि शाक्षतमान सदस्य सेहो। जाक्षक नामक जाक्ष सेहो ि ज्जी गणि ज्यमे पक्सद ि ल। एक्ष कुलमे ि िषान महा ि ि कि जक्षम भेल ि लक्ष्ह। सूतकतागमे जाक्षकक सम्पकष उग, भोज, इक्ष्वाकु, कौि ि, क्लच्र्ि ि आक्षदसँ बताओल गेल अर्व ि। एक्षसँ बुर्वि पडइत अर्व ि जे इ सब एक दोसि कि समीपे ि हैत ि लाह आ उत ि क्षाहा कि र्वि भिन केत्तपि क्षनका लोकक्षक अक्षकाि ि लक्ष्ह। इ सब गणि ज्यक सदस्य ि लाह अि ि नक्ष से कहब असंभि। क्षर्व लामे जे ि ज्जी गणि ज्य ि ल तकि दूटा पमुख महा ि ि ि हैि ि शाली आ र्वि देह।

v.) गणि ज्यक सदस्य जाक्षप क्लच्र्ि ि ि ज्जी गणि ज्यक सि ि शेष अंग ि हैि। बौद साक्षहत्यमे क्लच्र्ि ि कि र्वि शद र्वि श्लेरण भेल अर्व ि। हुनका लोकक्षक पधान केक्षद्र ि ल ि शाली आ ि जनैक्षक र पे ओ ि शाली आ नेपालपि अपन अक्षकाि सि ाक्षपत कएने

िलाह। चािवम शताब्दीमे जे गुप्त सामाज्यक स्थापना मगधमे भेल िल ताहुमे क्लचिािी लोकक्नक विशेर हाि िलक्हह। लगभग ८०० रिष धिि क्नहाि आ नेपाल इक्तहासके क्लचिािी लोकक्न पभावित कएने िलाह।

क्लचिािी जाक्तक उत्पक्तक सम्बक्न्धमे अदतन विदान लोकक्नक बीच मतभेद बनले अिि। क्लचिवि, क्नचिवि, क्लक्क्चक्क, लेचिािी, लेचिइ, लेचिकी, आक्द शब्द क्लचिविक दोतक मानल जाइत अिि। पाक्ल साक्हत्य, क्सका, अक्नलेख, आ अक्ान्याक्न्य साधन सबमे क्लचिािी शब्दक पयोग भेटइत अिि जाक्हसँ इ जात होइि जे इयैह शब्द इक्तहासमे जनक्पय भए स्वीकत भऽ गेल। कौक्टल्य, मेधाक्तिी, गोविक्न्दिाज आक्द क्लचिािी शब्दक क्यवहाि कएने िवि।

बहुत िास विदानक कहब िैक्ह जे क्लचिािी लोकक्न विदेशी िलाह आ हुनक सम्बक्न्ध क्तब्बात, कोलावियिन, क्सवियिन, ताि फािसिसँ िलक्हह। क्किु विदानक मत िैक्ह जे क्लचिािीक सम्बक्न्ध यूची जाक्तसँ िलक्हह। क्तब्बती उत्पक्तपि विशेर जोि देल जाइत अिि। क्लचिािीक आचाि विचाि आ सामाक्जक क्नयम आक्दक आधाि इ कहल गेल अिि जे हुनका लोकक्नक उत्पक्त क्तब्बती सोतसँ भेल होएत। एक्हमतक समिषकक विचाि िक्हह जे पागैक्तहाक्सक कालमे क्किु मंगोक्लयन क्तब्बती जाक्त एक्ह क्ेत्रमे आक्बके बसल हेताह आ ओक्हसँ क्लचिािी लोकक्नक उत्पक्त भेल होएतैक्ह। भाितीय विदान लोकक्न क्लचिािीके भाितीय मनैत िवि पिञ्च अपनहु सबमे क्किु एहनो विदान िवि जक्नक विचाि िक्हह जे क्लचिािी लोकक्नक उत्पक्त पविसया (फािसि)सँ भेल होएत। क्नचिवि शब्दक उत्पक्त फािसिक ‘क्नक्स विस’ नगिसँ भेल अिि आ

ओकहसँ क्लचरिीक उत्पक्त सेहो। फारसिक इक्तहास वििणिमे कतहु एहेन उल्लेख नक्ह भेटइत अवि जाक्ह आधारपि इ कहल जाए जे फारसिक लोग पूिी भारतिमे आक्बाके कक्हयो बसल िलाह अिि पूिी भारतिसँ कक्हयो हुनका लोकक्नके कोनो पकारकि सम्पकष िहिल होक्न्ह।

पाचीन भारतीय साक्हत्यमे क्लचरिी लोकक्नके क्वत्रयक रपमे िणिषा भेल िैक। महापवरक्निवािणसुतसँ जात होइि जे ओ लोकक्न क्वत्रयक क्हसाबे बुदक शरिक अरशेर पाप्त करबा लेल इच्छुक िलाह। क्सगालजातकमे क्लचरिी कह्याके क्वत्राय कहल गेल िैक। महाली नामक क्लचरिी अपनाके बुद जका क्वत्राय घोक्रत करैि अवि। जैनकल्प सूतमे रिशालीक क्लचरिी नेता चेतकक बक्हन क्तशलाके क्वत्रयाणी कहल गेल िैक। क्लचरिीक उत्पक्तक सम्बक्न्धमे बुदघोरक मत िक्न्ह जे ओ लोकक्न क्वत्राय िलाह। नेपाल रिशािलीमे क्लचरिी सूयिंशी क्वत्राय कहल गेल िैक। मनु क्लचरिीके ित्राय क्वत्राय कहैत िवि। िक्जज आ क्लचरिीक मध्य कोन सम्बक्न्ध िल अिि दुनूक बीच कोनो सीमा रिखा िल अिि नक्ह से कहब असंभि। रिज्जी िज्जी गणािज्यक सिक्शेष सदस्य क्लचरवियेे लोकक्न िलाह। बुद क्लचरिीक तुलना तािक्तंशदेिसँ कएने िवि। िक्जज (िक्जजका) आ क्लचरिी दुनू दू शब्द िल पक्श्चम क्लचरिीक पधानताक कारणे रिज्जीसँ क्लचरिीक बोध होइत िल।

नेपाल अक्भलेखमे क्लचरिीकुलकेतु, क्लचरिीकुलाबपूणषचक्न्द, क्लचरिीकुलानंदकािि, क्लचरिीकुलक्तलकको आक्द शब्दक क्यिहािि भेल अवि। चीनी आ क्तब्बती सोतसँ जात होइि जे इ लोकक्न

किराती के नामसँ प्रसिद्ध छलाह। एक परंपराक अनुसार किरातक राजधानी किराती केर शिक्षक छलाह। प्राचीन कालमे संभवतः जे नेपालक बाटे किरात आ मिथिलाक सम्बन्ध घनिष्ठ रहल हो आ राजनैतिक सांस्कृतिक आदान-प्रदान होइत हो। हिमालयक तराइमे कतेको लोकनिक निवास छल आ इ लोकनि बहुतो पहाडक आर-पार जाइत आबैत छलाह आ दुनू देशसँ हुनका लोकनिके सम्पर्क छलन्हि। एहि क्रम किरात आ मिथिलाक संपर्क घनिष्ठ भेल हो से संभव आ दुनूक बीच सांस्कृतिक आदान-प्रदान सेहो। किराती लोकनि विचारसँ प्रगतिशील छलाह आ तें जँ हुनक विचार किराती विचारधाराके ताहि दिनमे प्रभावित केने हो तँ कोनो आश्चर्यक गप्प नहि। एहिठामक संस्कृतिसँ प्रभावित होएब हुनका लोकनिक लेल स्वाभाविक छल कारण मिथिला किराती नेपाली व्यापारीक बाटपर पडइत छल।

किरातीके विदेशी नहि कहल जा सकइयै। किराती आ विदेह दुनू क्षत्रिय छलाह आ हुनका लोकनिके कोनो जातिगत विभिन्नता देखबामे नहि अबइयै। अहुयुगमे वैशालीके विदेहक अंग बुझल जाइत छल आ तैं तँ त्रिशलाके वैदेही कहल गेल अछि। किराती लोकनि देखबा सुनबामे सुन्दर होइत छलाह आ हुनकर पहिरब ओढब अत्यंत सुन्दर होइत छलन्हि। अंगुत्तर निकायमे आन क्षत्रिय शासक जकाँ किराती लोकनिके अवमानित मानल गेल छन्हि। ह्युएनसंग किरातीके क्षत्रिय कहने छथि। किराती लोकनि ब्रह्मा, विष्णु, सूर्य, कार्तिकेय, वासुकी, लक्ष्मी आ विजयशीक पूजा करइत छलाह आ अहुसँ इ स्पष्ट अछि जे ओ विदेशी नहि छलाह। वैशालीमे जैन, बौद्ध आ ब्राह्मण धर्मक प्रधानता छल आ

नेपालमे सेहो इ लोकक्न ओक्ह सब धमषक पालन कइित िलाह। क्लचि ीिक अक्तवतित आ कैकटा जाक्त िशालीमे हैित िलाह जकि विीिण कमाक्कत अवि।

जाक्तक जाक्त ओक्हमे सबसँ पक्सद िल आ एक्ह कुलमे जैनधमषक संसिापक िदषिान महािीिकि जहम भेल िलक्ह। जाक्तक लोकक्नक पधान केहद िल कुहद गाम आ कोलागा। बौद साक्हत्यमे महािीिके नात (नाट) पुत कहल गेल िक्ह। इ लोकक्न काश्यप गोतक िलाह। िजिी गणािजयक विकासमे क्हनका लोकक्नक विशेर योगदान िलक्ह। िहुल साकत्यायनक अनुसाि आजक जिविया भूक्महाि बाहण एक्ह जाक्तकक िशज िवि। िहुलजीक एक्ह मतके सब केओ नक्ह मानैत िवि।

उग लोकक्न सेहो एक पक्सद जाक्त िलाह। िशालीसँ क्हनका लोकक्नके घक्नष सम्पकष िलक्ह। 'हिितगाम'क समीप इ सब हैि होवि से संभि। बहदािण्यकोपक्नरद एिि धम्मपदठीकामे उग लोकक्नक विीिण भेटइत अवि मुदा ओ लोकक्न इएह उग िलाह अिि नक्ह से कहब असंभि। विदेह आ काशीमे उग लोकक्नक पभुता आ सैहयबलक चचष भेटइत अवि। बुद सेहो उग लोकक्नक शहिमे गेल िलाह। सूतकतागमे उगके बडड पैघ सिान देल गेल िक्ह आ लक्लतविस्तिमे जे ६४ क्लवपक विीिण अवि ताक्हमे एकटा उग क्लवपक विीिण सेहो अवि। ओक्ह ६४ मे एकटा पूिषविदेहक क्लवपक िणषन सेहो भेटइत अवि। उगके क्मक्शत जाक्त सेहो कहल गेल अवि।

जैन साक्हत्यमे उग जका भोगके सेहो क्ताय कहल गेल िकि। इ लोकक्न पिम जैन तीिकंि ऋरभक िशज िलाह

महापविक्तिविनिसुतसँ जात अवि जे िशालीसँ पाि जेिक िस्तामे भोगनगि, जम्बुगाम, अम्बगाम, हक्ति गाम, भण्डगाम आक्द भेटइत िल आ एक्ह सबसँ भोग लोकक्तक घक्तष सम्पकषिलक्ह।

सूतकतागमे इक्ति कु लोकक्तक वििणि अवि आ इहो लोकक्त िजिजी केत्त हैित िलाह। संभितः इ लोकक्त सुमक्तक िशिज होवि। चूँक्क विदेह लोकक्त इक्तिकुक पुत क्तक्तक िशिज िलाह तै इहो संभि अवि जे इहो लोकक्त अपनाके इक्तिकु कहैत होवि। इहो संभि जे अयोध्याक इक्तिकु एम्हि आक्तके बक्स गेल होवि।

िजिजी संघमे कौिि लोकक्तक उपक्सिक्त एकटा समस्याक पश बक्त गेल अवि। एक्ह सम्बह्धमे क्तमक्लक्खत तथ्यके स्मिण िखब आिश्यक। महाभाितक अनुसाि पाण्डु क्तविला जाकए विदेहके पिक्जत कएने िलाह। भीम गण्डक लोकक्तके पिक्जत केला उतिि ैदेहक जनकके पिक्जत केलक्ह। ओ विदेहपि आक्धपत्य सिाक्पत कए ओक्हठाम अपन खुटा गावि अपन सामाज्यिादी अक्भयानके आगा बढौलक्ह आ कौक्शकी कच्िक िजाके पिक्जत केलक्ह। इ केत्त सम्पक्त विहपुि पूवगाषा केत्तक संकेत दैत अवि। कौक्शकी केत्त आ एक्हसँ पूषिक केत्तपि एकटा कौिि िजकुमाििके लाक्द देल गेल। एम्हि विदेहमे जे कौिि बक्च गेलाह से एक्हठामक िसी बक्तके क्ह गेला। हक्स्तनापुिक अंत भेलापि सेहो कौिि लोकक्त एक्ह केत्तमे आक्तके बसलाह। िजा जनक दिबािमे तँ पाििभक्हसँ कुर पाचालक बाह्मण लोकक्तक अबिजात बनले िल।

िजजी गणािजयक अंतगत बहुत तिहके लोग िहल होएत एकहमे संदेह नक। कतकाणडशेरमे कलचिि, िदेह आ तैिभुततके पयायािची शबद मानल गेल िक आ िजजी संघक अगुआ इएह सब िलाह। कुि विदानक किन अिछ जे किल जनकक मतयुक पशातो विदेहमे िजितंत बनल िहल आ महापद नंद जखन कविलाके जीतलैह तकि बादे कविलामे गणािजय भेल मुदा हमिि इ बात माहय नक बुिव पडइयै कािण किल जनकक मतयु भेला उपिित कविलामे विदोहक आवा भभकक उठल आ ओतए िजितंतके समापत कऽ कए गणतंतक सिापना कैल गेल। बुदक समयमे विदेह एकटा गणतातक िजय िल। अजातशतुक िशाली आकमणक पिक एक केतक सूयासतक संकेत भेटए लागल। पतंजल एक बातक साकी िवि जे विदेहमे गणािजय िल। एकहमे आठ कुलक संघ िल। मलल, विदेह, उग, भोग, इकिकु, जातक, कौिि एिं कलचििके िमलाके एकटा शासन िल जकिा हमिि लोकक कलचिि, विदेह अिि िजजीसंघक नामसँ जनैत िी।

vi.) बौद साधन आ कविलाक इततहासपर अंगुतिकिकायमे िजजी संघक विििण अिछ मुदा विदेहक नाम नक अिछ। इहो संभि जे िजजी संघक सदसय िहलाक कािणे एकहमे एकि नाम नक देल गेल हो। दीपिशिमे िवणत पिपिािक अनुसाि किल जनकक पुत िलाह समडि आ हुनका बाद िजा भेलाह अशोक। ओक पिपिािमे इहो कि अिछ जे चमपानगिक िजा नागदेिक िशज कैक पुसत धिि कविलापि शासन केलकह। एकहमे सबसँ अंतम िजा भेलाह बुददत। दीपिशिक किसँ इ वसद होइत अिछ जे किल जनकक बादो कविलामे िजा दािि शासन होइत िहल

आ क्षविला नगिमे २५ टा िाजा तकि बादो शासन केलक्हि जाक्हमे बुद्दत अंक्तम िलाह। तकि बाद िाज्य मगधक अंतगषा चल गेल। एकि अक्तविवतित क्षविलामे अंगक्त, सुक्मत आ विि धक नाम सेहो भेटइत अवि। अंगक्तक क्षशाक्क िलाह गुणकस्सप।गुणकस्सपक विचाि पुिणिकस्सप आ मखक्ल गोसालक्लक विचािसँ क्मलैत जुलैत अवि आ इ सब बुद्दक समकालीन िलाह। िाजा सुक्मतक सम्बक्न्धमे लक्लतविस्तिमे िणषा भेटइत अवि। लक्लतविस्तिमे क्षविलाक सौहृदयक िणषा अवि आ ओक्हमे इहो कहल गेल अवि जे सुक्मतके हािी, घोडा, िि आ पैदल सेनाक कोनो अभाि नक्ह िलक्हि। सबतिहि सुखी सम्पन्न हैतहुँ िाजा बडड बूढ िलाह आ शासन क्मता हुनक घक्ट चुकल िलक्हि। विदेहक तुलनामे लक्लतविस्तिमे िैशालीक गणिाज्यक विशेर पशंसा अवि। इहो सूचना भेटइत अवि जे िाजा विि धक मंती सकलके विदेह िाक्ज्डके िैशाली भागे पडल िक्लहि काििण विदेह िाज दक्बािमे तिहि तिहिके रडयंत चक्ल िहल िल। आन मंती सब क्हनकासँ इष्या किैत िलाह। सकल िैशालीमे आक्बाके पख्यात भेलाह आ एक्हठाम नायकक पदपि क्नाक्चत भऽ गेलाह। वालवाट मैह्युसक्कप्टमे सेहो क्षविलाक कोनो एक अनामा िाजाक पधानमंती खण्डक उल्लेख भेटइत अवि। खण्ड ५०० अमात्यक पधान िलाह। हुनक जनक्पयतासँ आन आन मंती घबडा उठलाह आ हुनका समाप्त कििबाक पयास किि लगलाह। ओ लोकक्न िाजाके इ कक्हके भकिाि लगलाह जे 'खण्ड' अपनाके िाजा बुवि िहल िवि आ तदनुसाि काज कऽ िहल िवि। खण्ड एक्ह सबसँ तंग आक्ब

ैशाली (जे कक गणािजय िल) चल गेलाह जाकहठाम कलचििी लोकक हुनक सिागत केलविहह।

एकह सबसँ सपष होइत अिव जे ैशाली विदेहसँ पूिकह गणािजय भऽ चुकल होएत।

vii.) िजजी गणािजयक ािजनैकतक समबनधप इ. पू. िठी शताबदीक १६ महाजनपदमे िजजीक वििििणके सकममलत कबि एकह बातक दोतक विक जे ताकह काल तक एकि ािजनैकतक पकाष ा सिावपत भऽ चुकल िल। अंगुतिकाकायमे सेहो एकि वििििण अिव। िजजीसंघक सिापना ताकह कदनमे भेल िल जखन ने तँ काशीपि कोशलक अवधकाि भेल िल आ ने अंगपि मगधक। िजजीसंघ आ बावकमबसाकि ािजयक सीमा वमलैत जुलैत िल। दुनूक बीच युद भेल िल तकिी उललेख यदा कदा भेटइत अिव। दुनूक बीच युदक काििण कक िल से कहब असंभि अिव। संभि अिव जे मगध जखन अंगपि आकमण केलक तखन मगधक नजवि अंगक उतििी भाग अंगुतािपपि सेहो िलैक। अंगुतािपक सीमा िजजीसंघक सीमासँ वमलैत जुलैत िलैक आ तै िजजीसंघके सतकष हिब आिशयक िलैक। एकह अंगुतािप पश लऽ कए दुनूक बीच मतभेदक संभािना भऽ सकैत ैक। अंगुतािप एक महतिपूणष जनपद िल आ बौद धमषक केनद सेहो। एकहठाम बुद कैक बेि गेल िलाह आ आपण गाममे एकाध मास हिलो िलाह। अंग जीतलाक बाद बावकमबसाि अंगुतािपपि अपन आवधपतय सिावपत कऽए चाहैत हेताह जकि विििोध कबि ैशालीक हेतु सिभाविक िल। एकह कममे जे संघरष भेल होएत ताकहमे संभितः कलचििी लोकक अंगुतािप केतपि अवधकाि कऽ लेने हेताह जे बावकमबसाि मानबा लेल

तैयाि नक्ह भेल हेताह आ एक्ह काणि दुनूमे युद भेल हेतक्ह। ि गडाक एकटा आओि काणि अम्बापाली सेहो ि ल। बाक्बसाि चुपेचाप ि शालीमे आबाके एकाध सप्ताह हिल ि लाह आ अम्बापालीसँ बाक्बसाकिे एकटा पुतो ि लक्ह जकि नाम ि ल अभय। संघरष चाहे जे काणि अि ि सि रि प हिल हो पि्च अंतमे जा कए ि शालीक संग बाक्बसाि ि ि क्हक सम्बह्ध सि ाबत केलक्ह आ एकि फलसि रि प दुनू ि जियक बीच युदक अंत भेल। तखनसँ मगधक संग ि शालीक सम्बह्ध अजातशतुक आकमणक समय धरि ठीके हिल।

मल्ल आ क्लचि ि ीक बीचक सम्बह्ध सेहो बक्ढया ि ल। दुनूक ओतए गणाि जियक व्यसि ि ि ल आ दुनूके जैन आ बौद धमषक पक्त आसि ि ि लक्ह। मनु दुनूक ि णेष ि स्थ कक्हके केने ि वि । अजातशतुक आकमणक समयमे दुनू सक्ममक्लत ि रपे क्हनक ि ि ि ि ध कएने ि लाह। महाि ीकि मत्युक अि सिपि सेहो ओ लोकक्त सक्ममक्लत ि रपे काज कएने ि लाह। कोशल ि जाक सेनापक्त बह्धुल मल्ल हिि नि। कोशल ि जियक संग सेहो क्लचि ि ि लोकक्तक सम्बह्ध बक्ढये ि लक्ह। क्लचि ि ि महाली आ ि जकुमाि पसेनक्जत तक्शलामे संगे पढैत ि लाह। दुनूमे खूब दोस्ती ि लक्ह। ि्तसक संग सेहो ि शालीक ि ि क्हक सम्बह्ध ि ल। ि्तसाि जि सताक्तकक ि ि ि ह चेतकक पुती मगाि तीसँ भेल ि ल। उदि न ओक्ह दुआि ि देही पुत कहबैत ि वि ।

अध्याय ५

कर्णाटक जिनैक इतिहास

(ई. पू. ठी शताब्दीसँ ई. स. ३२० धरि)

ई. पू. िठी शताब्दीमे भातिमे केन्द्रीय सताक अभाि िल आ समस्त उतिी भाति सोलह महाजनपदमे बटल िल। एक्हमे ब्रहामि अंग, मगध, िवज्ज, मल्ल, पक्सद िलाह। एक्ह महाजनपद सबमे क्कि ाजितंतात्मक आ क्कि गणतंतात्मक िल बौद साक्हत्यमे जे गणाज्यिक उल्लेख भेटैि ताक्हमे ब्रहामि ैशालीक क्लचि ी एिँ अन्य गणाज्यिक संग क्विलाक विदेह गणाज्यिक उल्लेख सेहो भेटइत अि। उतिा ब्रहाकि महाजनपदके सक्मक्लत र पे िवज्ज मल्ल सेहो कहल जाइत िल। िवज्ज गणाज्यि आठ ाज्यिक एकटा संघ िल जाक्हमे क्लचिी, विदेह, जाक्ताक पक्सद िलाह। संघक ाजधानी ैशालीमे िल आ एकि सिरप कुलीनताक्तक िल। िवज्ज शासनमे पत्येक गाकि ाजाके सदिाि कहल जाइत िल। ाज्यिक सामूक्हक कायक्ष विचाि एक पविरद होइत िल जकि ओ ाजा लोकक्न सदस्य होइत िलाह। क्कि मल्ल लोकक्न सेहो उतिा ब्रहामि िहैत िलाह।

ताक्ह क्दनमे जे दू पकाकि ाजनैक्तक व्यसिा िल आ ताहुपि जे केन्द्रीय सताक अभाि िल तकि चलते दुनू ाजनैक्तक पदक्ताक मध्य बािबि संघरष होइत िहैत िलैक आ एम्हि मगध अपन हाि पैि पसािब िहल िल। मगध, कोशल, ित्स, अिन्ती एक्ह चार ाज्यिक मध्य आक्धपत्यक हेतु संघरष चक्ल िहल िल आ ओ सब अपन अपन क्षेतमे अपन अपन पसािमे लागल िलाह। उपाित चार ाज्यिक तुलनामे मगधके विशेर सफलता भेटलैक आ तकि मूलकािण इएह िक जे मगध ताक्ह क्दनमे आर्थिक दक्ष ये सफल आ सबल िल। ाजनैक्ताक संगठनक ाक्स्तविक पष ाधाि

आवषिक आ सामाक्जक होइत अवि। मगध खक्नज पदाषिक हेतु पक्सद लि आ लोहा एकि सबसँ पैघ उपलक्ब्ध लि। लोहापि आक्धपत्य हिबाक काणेि मगध सब समकालीन िाज्यके पिाक्जत कबिामे सफल भेल। नदी तटपि अविक्स्ित एिँ िाजिगीिि एिँ अहृय पहाडसँ घेिल बंधल मगधके पकक्त जेना एकटा पाकत सुिक्षा पदान केने होइक तेहने बुिल जाइत लि आ ताक्हपि सँ मगधसँ तक्कशला तक क्यापािवकि मागष एिँ लोहापि ओकि एकाक्धपत्य ओकिा सिषोभािन सामाज्यािदी बनेबामे समिषक्सद भेलैक एक्ह बातके हमिा लोकक्न एक्तहाक्सक विश्लेरणसँ हँटा नक्ह सकैत िी। आवषिक ततिक संगठनात्मक आधािक जे रपिेखा हमिा लोकक्नके कौक्टल्यक अिषशास्त्रमे भेटइत अवि ओक्हसँ स्पष अवि जे मगधमे सुक्नयोक्जत क्यिसिाक सिापनामे कैक शताब्दीक पिशिम हिल होएत।

क्बक्म्बसािक नेततृिमे मगध सामाज्यिादिक शीगणेश भेल आ ओ अंगके पिाक्जत कए जखन अंगुतािप आ कौक्शाकी कक क्दस बढलाह तखन हुनका िैशालीक क्लच्छििी लोकक्नसँ संघरषभेलक्न्ह आ से खटपट दुनू िाज्यक बीच बादोमे बनल हिल। अंगुतािप आ िैशाली विदेहक सीमा कमला नदीक इदषबादषक्मलैत लि। बादमे क्लच्छििी चेटकक पुतीसँ िििाह कए ओ िैशालीक संग क्नतता सिािपत केलक्न्ह आ िैशालीक सुपक्सद गक्णाका अम्बपालीसँ सेहो हुनका एकटा पुत भेलक्न्ह। िििाहक सम्बक्न्धक माध्यमे ओ मगध िाज्यक सम्बक्न्धक विस्ताि केलक्न्ह। मगध सामाज्य पसािक अटाक्लका एक्ह सम्बक्न्धपि ठाढ लि।

अजातशतु अपन ब्पताक सामाज्यादिी नीक्तके चालू िखलक्हि। ओ इ बात जनैत िलाह जे जाधिव िक्जज संघक नाश नक्हि होएत ताधिव मगध सामाज्यक एकाध्धपत्य नक्हि संभि होएत तै िजस्याि हिणक बादसँ ओ एक्हि जोगाि मे लावा गेलाह जे येन केन पकािण िक्जजसंघके मक्टयामेट कैल जाए। ओ एक्हि हेतु असंख्य बहाना खोजलक्हि। ब्पताक समय सेहो एक्हि दुनू िजस्यक बीच खटपट भेल िल पिञ्च अजातशतुक समयमे इ सामाह्य खटपट अपन चिमोत्कषि पहुँच गेल। क्हनक मंती िलाह िषकाि जक्नका कौक्टल्यक अगुआ कहल जाइत िक्ह। िषकाि एक्हि सम्बह्धमे बुदसँ पिमिशषकिए गदकूट पिब्पि गेला। एक्हि पसंगपि बुद जे िषकाि के उतिि देलक्हि तकिि सत अपिहािण धम्म कहल जाइत िक जकि विश्लेषण हम पािि किब। िषकाि एक्हसँ अपन सुिािग बाहि केलक्हि आ िक्जज संघमे फूट अनबाक पयासमे लावा गेलाह। अजातशतु आ िक्जज संघक बीच युदक मुख्य कािण िल िजाक सामाज्यादिी नीक्त। िजा एक्हि गणिजस्यके नष कए मगधक अधीन किए चाहैत िलाह। जैन साधनसँ पता लगइयै जे क्लच्छिि िजकुमािि चेलनासँ ब्बक्बसािके दूटा पुत िलक्हि हल्ल आ िहल्ल। ब्बक्बसाि क्हनका दुनू भाइके बहुत िसि स्तु उपहािमे देने िलक्हि पिञ्च अजातशतु जखन अपन ब्पताके मािि के िजगदीपि बैसलाह तखन ओ क्हनका दुनू भाइसँ ओ सब स्तु िपस मंगलक्हि। ओ लोकक्न देिीसँ नकािि गेलक्हि। अपन िकािषओ लोकक्न अपन नाना (िैशाली)क ओक्हठाम चल गेलाह आ अजातशतु क्खक्सयाके िैशालीपि आकमण कऽ देलक्हि। बौद साधनक अनुसाि मगध आ िैशालीक बीच गंगा नदी बहैत िल आ तकि एक कातमे

एकटा कोनो पवसद खान िल आ ओकिा सटले एकटा बहदिगाह सेहो। एह खान आ बहदिगाहपि आधा आधा हसा दुनू िज्यक िल। विज्ज लोकक शवतशाली होएबाक काणिे मगध लोकक के ओह अवधकाकि उपयोग नह कएि दैत िलविह तै अजातशतु शस दाि एह पशक कबटाि कएि चाहैत िलाह। अजातशतु सब वदसँ दारण असक संचय केलवह आ िषकाकि सामाज्यािदी सललाहक अनुकणि कैत ओ विज्जसंघपि आकमण केलवह। विज्जसंघ तत्कालीन कवविलाक विशेर भागक पवतवनवधत कैत िल।

भयंकि युदक अगुआ भेलाह सामाज्यािदी अजातशतु। लडाइ बहुत वदनधवि चलैत हिल। काशी आ अंग पिवत िैशाली विजय मगध सामाज्यक सिापनाक तेसि चणि िल। वतयािली सूतक अनुसाि वलचविि िाजि चेटक अठाहि गणािज्यके सहायताक हेतु अपील केलवह आ अजातशतुसँ लडबाक हेतु एकटा संयुतत मोचाक वनमाण केलवह। एह युदमे अजातशतु महाशील कंटक आ िािमूशल सन सन युद यंतक पयोग कएने िलाह। एह दुनू िज्यक बीच लगभग १६ िरषधवि युद चलैत हिल। आजीविक समपदायक पधान मखली गोसाल सेहो एह युदमे मािल गेलाह। मगध एह युदमे सब पकाकि कूटनीवतक पयोग केलक। अंततोगति अजातशतु विजयी भेलाह आ िैशालीक गणािज्यक पभुताक अिसान भेल आ मगध सामाज्य एहपि अपन आवधपतय सिावपत केलक।

िैशालीपि विजय पापत कबि मगध सामाज्यक महतिपूणष उपलवबध मानल जाइत अवि आि अजातशतुक समयमे इ उपलवबध

पाप्त भेल। तकि बाद जे ाजा लोकनिक भेलाह से मगध सामाज्यक उपलब्धि आ बढौलन्हि आ एकि उत्करष नन्दिशिक अधीनमे सानिधक भेल। नन्दिशि शासक महापदके पुणिमे अखिलक्षातकािी, सक्षित्रातक आ एकािट् कहल गेल िक। महापद मैविलके सेहो पािजत कएने िलाह। एकि तात्पयषइ भेल जे िशालीक पािभि भेला उतिविदेहक मैविल लोकनि संभतिः अपन स्तिंतता बचाके िखिबामे समिष भेल िलाह। नविलाक क्षत्राय शासकके इ शेय िलन्हि पिञ्चि क्षत्राय हंता महापद सब क्षत्राय ाज्यके समाप्त किबाक कममे मैविल लोकनिके सेहो पािजत कए हुनका अपना ाज्यक अंतगषत कऽ लेलन्हि। एन्हि घटनाक बादन्हिसँ पाटलिपुत अखिल भातीय सामाज्यक केन्द्र भऽ गेल आ स्तिंत िशाली विदेहक पििपाि समाप्त भऽ गेल। इ दुनू ाज्य नन्दिशिक पािनि मौयष सामाज्यक अंग बनि गेल। एन्हि घटनाक बादसँ कणाटिशिक उतिान धिि नविला मगधक अंग बनल िहल पिञ्चि सास्कृतिक दृिष्टकोणसँ नविला अहु कालमे अपन सास्कृतिक पििपािके आ िशाली अपन गणतानिक पदतिके जोगौने िहल।

ओन्हि पाचीन कालहुँमे नविला िसी सुिणषभूमि आ पूिी दीप समूहसँ अपन सम्बन्ध बनौने िहल िलाह जकि पमाण हमिि लोकनिके जातकसँ भेटइत अवि। एक किासँ जात होइि जे एक बेि विदेहक गदीक हेतु दु ाजकुमािि मध्य संघरष भेलन्हि आ ओन्हिमे एक भाए मािि गेलाह। गभषििती हुनक मैविल विधिा नविलासँ पडाय गेल्लि आ चम्पा (भागलपुि)मे एकटा बाहणक ओतए शिणािी बनिके िहलीह। ओन्हि विधिाक पुत महाजनक पैघ भेलापि

अपन पूर्षिसि क्तक जान पाप्त कए अपन ाज्य ापिस कबाक हेतु दढ संकल्प भेलाह। एक्ह हेतु धनक आश्यिकता लिक्ह तै धनोपाजषाक हेतु ओ सुणिष भूक्म क्दस गेलाह। बंगालक खाढीमे हुनक जहाज टुक्ट गेलक्ह तखन खाढीक अक्षष ात देी मक्णमेखला हुनका अपन कोामे उठा कए क्मिलापुी पहुँचा देलक्ह। कम्बुजदेश नामक पोामे मिश मजुमदा क्लखने ि जे पाचीनकालमे चीनक युनान ाज्य विदेह पात कहबैत ल आ ओकि ाजधानीक नाम क्मिला लैक। कखनो कखनो एकी क्मिला ाष्ट सेहो कहल जाइत लैक। चीनी पपािमे जकी नानचाओ कहल गेल कि ओकि एक्ह पपािमे क्मिला ाष्ट सेहो कहल गेल कि। एक्हसँ क्सद होइत अि जे पाचीन क्मिलाक लोक सब दक्कण पूी एक्शया एि चीनक युनान पात धिि क्यापाि हेतु जाइत लाह आ अपना संगे अपन स्मक्तक क्काष अपन सास्क्कक्तक पपािके सेहो उगौहने जाइत लाह। शालीसँ सेहो लोग सब क्यापाि हेतु भातिसँ बाहि जाइत लाह जकि सबसँ पैघ पमाण इ अि जे बमामे एखनो “ताली” (शाली) नामक एकटा पक्सद सान िाजमान अि।

अजातशतुक हाि जखन क्लचिी लोकक्न पाक्जत भेलाह तकि पशात विदेह शालीक गौि लुप्त भऽ गेल आ मगध सामाज्य अपन उत्कर्षि पहुँचबाक सिजाममे आओि तत्पि भऽ गेल। उदाक्यनक समय धिि क्लचिी लोकक्न अपन पक्ताष ाके सुक्क्त खबाक यि पयत कएने लाह। उदाक्यन सामाज्यक दक्ष के ध्यानमे िक्ख ाजगहक पक्ियाग केलक्ह आ पाटक्लपुतमे अपन ाजधानी बनौलक्ह। एक्हसँ गंगापाि विदेह आ क्लचिीपि

कार्यतंत्र खिबामे सुविधा भेटलन्हि। उदाहरणक उत्तरवैदिककालिक समयमे सेहो बरोबरि मगधक संघर्ष चलैत रहल पश्चिम नंदविशिक शासन काल धरि अबैत अबैत उत्तर बिहारक अधिकांश मिथिला विदेह वैशालीक प्राचीन परंपरा लुप्तप्राय भऽ गेल आ एकर समस्त क्षेत्रपर मगधक आधिपत्य भऽ गेलैक। नंदवंशिक शासन कालमे लिच्छविलोकनिक प्रतिभिक लिच्छवि विदेह वैशालीक साम्राज्यवादक गरिमा बनल रहलैक आ अपन शासन सुविधाके ध्यानमे रखैत साम्राज्यवादी नंदवंशि शासक लोकनि मिथिलाक गणराज्यक परंपरामे हेरफेर नहि केलन्हि आ वैशालीक प्रधानता सेहो बनल रहल। वज्जिसंघक गणराज्यक स्वरूप यथावत रहल आ ओहिमे कोनो प्रकार हेरफेर नहि भेल छल, एकर सबसँ पैघ प्रमाण इ अछि जे कौटिल्य अपन अर्थशास्त्रमे बरोबरि सबके "लिच्छविशब्दोपजीवितः गणराजानः" कहने छथि। एकर अर्थ इ भेल जे लिच्छविलोकनिक कहसाबे मैथिल लोकनि मगधक प्रभुत्वके स्वीकार कऽ लेने होएताह आ आंतरिक रूपे ओ लोकनि अपन परंपराक परंपराके बचाके रखने हेताह। एकर आठ सौ वर्षबाद धरि वैशालीक महत्व बनल रहल छलसँ तँ गुप्तकालीन इतिहासक अध्ययनसँ स्पष्ट होइत अछि।

ई. पू. छठम शताब्दीसँ जे एकटा लिच्छविलोकनिक एकता एवं धार्मिक विदोहक प्रभाव प्रादुर्भाव भेल छल ताहिसँ मिथिला बाचल कोना रहि सकैत छल। वर्धमान महावीर आ गौतम बुद्ध, जैन आ बौद्ध धर्मक प्रणेता लोकनिक सम्बन्ध एहि क्षेत्रसँ बड्ड घनिष्ठ छलन्हि आ दुनू व्यक्तित्व बरोबरि एहि क्षेत्रक सीमाक अंतर्गत अपन विचार करैत छलाह। महावीर अर्हत् (पूज्य), जिन (विजेता), निर्ग्रंथ (बन्धनहीन) सेहो कहबैत छलाह आ ओ कोशल, मगध, विदेह

इत्यादि सिनक भमण कएने िलाह। ैशाली तँ हुनक जन्मसिाने िलन्हि। मगधिज व्यवसाकि िनी चेलना महाीकि बन्हन िलविन्हि। धार्मक पक्पि विचिन हमिा लोकक्सक सास्कक्तक खण्डमे कबि। बौद धर्मक पभाि सेहो व्यविलापि बडड िल। हम उपि वलख आएल ि जे संभतिः अंगुतापिपि आकमण कबािक कममे मगध िजि व्यवसाकि खटपट व्लचिि लोकक्सँ भेल होएतन्हि। अंगुतापिक आपण गामिमे बुद एकाध मास हिल िलाह आ ओतुका बाहण लोकक हुनक विशेर आदि भाि कएने िलविन्हि। सप्तािि, भाला पिगिना, बुदगाम, तिपुि, बहपुि, विसािि, बेक्तया, चम्पाणि, आदि बौद धर्मक पधान केन्द िल। नन्दक शासन कालमे जँ पाव्गक्त पाटिलपुत आएल िलाह तँ ओक्ह आस पासमे ैशालीमे दोसि बौदसंगीक्त भेल िल जे धार्मक दव्व कोणसँ मानल गेल अिव। ैशाली मौर्यगुगमे पटना आ क्हमालय िज्य नेपालक बाटमे पडइत िल। ैशालीमे अशोक एकटा स्तंभ सेहो बनौने िलाह आ एकटा स्तूप सेहो जाक्हमे ओ बुदके अिशिरके सुिक्षत खिबौने िलाह। बुदक अिशिर एम्हुकिा जे उत्खनन भेल अिव तक्हसँ पाप्त भेल अिव। ैशाली व्यापािक पधान केन्द िल। व्यविला आ नेपालक सम्बन्ध सेहो मधुि िल। तािइ केतमे कतिि लोकक बसैत िलाह आ मैविल सास्कक्तक व्नमाणमे कतिक योगदान ककािसँ कम नक्ह िन्हि।

मौर्य युगक अिशिर ततेक ने पचुि मातामे व्यविलाक चार कातसँ भेटइत अिव जे इ व्वश्वास भऽ जाइत अिव जे मौर्यगुगमे समस्त व्यविला पूर्णपेण मगध सामाज्यक एकटा पमुख अंग बनल गेल िल। पूवर्षा, िनगाम मक्हरी, पटुआहा, बहेडा, हाजीपुि,

ैशाली, आदि क्षेत्रसँ पंचमातडष क्कसका विशेर मातामे पाप्त भेल ैक आ मौयष युगीन मॉक्टक मुर त, खेलौना इत्याक्द तँ सहजक्ह क्मविलाक कोन कोनमे भेटइत ैक। मण्मूक्नाष तँ एहेन कोनो क्षेत्र नक्ह अवि जाक्ह ठामसँ नक्ह भेटल हो। भऽ सकैि जे एक्ह क्षेत्रमे एकि कैकटा केहद्र सेहो हिल हो। एकि अक्तविवत क्मविलाक विक्मन क्षेत्र सबसँ नादनबहलैक पॉक्लशड यिि (N.B.P) सेहो भेटइत अवि आ एक्ह सब सक्ममक्लत साधनक आधापि इ क्नविवीद र पे कहल जा सकइयै जे क्मविला क्षेत्र पूणषरूपोभाि नि पाटक्लपुतक अधीन हिल ि ल।

क्मविलाक इक्तहासकाि डॉततटि उपेहद्र ठाकुि ई.पू.३२६सँ १०९७ ई. धविके क्मविलापि जे शासन ि ल तकिि ओ विदेशी शासनक संजा देने िवि मुदा हुनक इ तकष युक्क्ततसंगत नक्ह बुवि पडइयै काणि क्मविला (जे क्क भातिक एकटा अंग विक) क संदभषमे हम मगधके विदेशी कोना माक्न सकैत वियैक। दोसि गप्प इहो जे जँ मौयष, गुप्त, पाल, पक्तहािि आक्द क्मविलाक हेतु विदेशी बुिल जाइि तखन तँ इहो स्मणि ािखेक चाही जे कणाट लोकक्न तँ आि दक्क्षणसँ आएल िलाह तँ ओ लोकक्न देशी कोना भऽ गेलाह। एक समय एहनो िल जखन क्मविलाक पभुत्ि िल आ समस्त ैशाली आ नेपालक तािइपि क्मविलाक पभुत्ि िल तँ क्क एकिि ैशालीपि विदेशी शासन कहल जेतैक? ओक्हना जखन ैशालीक पभुत्ि बढल तखन क्मविला ैशालीक अंग भऽ गेल तँ ओक्हकालके क्मविलाक हेतु विदेशी शासन क्कयैक नक्ह मानल गेलैक? अजातशतु ैशालीके आ नंद लोकक्न क्मविलाके पािक्जत कए मगध सामाज्यक उत्कष करष केलक्न्ह आ मगधक तत्ािधानमे

समस्त उत्ति भारतिक नहि अपितु समस्त भारतिक राजनैतिक एकीकरण भेल तैं हेतु कालिदासक इतिहासक संदर्भमे एहिकालमे कालिदासक हेतु विदेशी शासनक काल कहब युक्तिसंगत नहि बुझि जाइत अछि। दोसर बात इ जे मगध साम्राज्यक उत्कर्ष भेला उत्तर वैशाली एवं विदेहक आंतरिक स्वायत्तता बनल रहल छलैक आ ओहिमे कोनो प्रकारक हस्तक्षेपक उदाहरण नहि भेटइत अछि। बुद्ध सेहो लोकक्रम अपन समयमे चलबैत रहलाह। पतंजलि सेहो जनपदक रूपमे कालिदासक उल्लेख कएने छथि। तत्कालीन साहित्यक प्रमाणके जँ साक्ष्य मानल जाए तँ इ कालिदास रूपे कहल जा सकइयै जे एताबता कालिदास राजनैतिक रूपे मगध साम्राज्यक अधीन रहितहुँ अपना आपमे स्वतंत्र छल। मगधक तत्वावधानमे अखिल भारतीय एकता एकटा ऐतिहासिक क्रम छल जकर फले लगभग हजार वर्ष धरि मगधक इतिहास भारतवर्षक इतिहास बनल रहल आ मगधक अवसानक पश्चात् पुनः देशमे छोट छोट राज्यक जेना उजाड़ उठि गेल हो तहिना बुझि जाइत छल।

मौर्यसाम्राज्यक स्थापना भारतीय इतिहासमे एकटा महत्वपूर्ण घटना मानल गेल अछि। एकर विवरण पुराणमे एहि प्रकारे अछि ——

"उद्धरिष्यति तान् सर्वान्

कौटिल्यो वै द्विजर्षभः

कौटिल्यश्चन्द्रगुप्तं तु

ततो राज्येऽभिषेक्ष्यति"

मुद्राराक्षसक अनुसार चन्द्रगुप्त हिमालयसँ दक्षिणापथ धरि अपन राज्य सीमाके विस्तृत केलन्हि। वैशाली आ कालिदास मौर्य साम्राज्यक प्रान्त छल आ एहिठाम जे अखनो गणराज्य रहिथान छल

तकि सबसँ पैघ पमाण अवि कौटल्यक अिषास्त्र। अशोकक स्तम्भ लेख लौवियानद्दन आ ामिपुबिा ताि स्तंभ चम्पाणि, ैशालीसँ भेटल ैक आ ओम्हि पूबमे धहिाि (बनमनखी पूणा)क समीप क्सकलीगढ क्दक्स सेहो अशोक स्तंभक होएबाक क्कि पमाण भेटल ैक जाक्हसँ इ पुष होइि जे अशोक काल धवि क्मविलापि मौयषसामाज्य अकुण्ण भाि बनल हिल। नेपाल आ ताइिक विशेष भागपि सेहो अशोकक ाज्य िल। ैशालीक पभुति तखनो बनल िल औि अशोक क्मविले बाटे नेपाल गेल िलाह पाटक्लपुतसँ विदा भऽ कए ताक्ह क्दनमे लोक पक्हने ैशाली पहुँचैत िल आ तब केसविया, लौवियाए अिाि, बेक्तया, लौविया नंदनगढ, जानकीगढ आ ामिपुबिा होइत भीखनाठोिा लग पहुँचैत िल आ ओक्हठामसँ नेपाल जाइत िल। अशोक एक्ह बाटे नेपाल गेल िलाह आ नेपालके अपना ाज्यमे क्मलौने िलाह। क्लच्छिी, क्कात, मल्ल, विदेह आक्द जाक्त सबमे ताक्ह क्दनमे िसि मेलजोल िल आ क्हनको लोकक्नक संपकष नेपालसँ घक्नष्ठ िलक्ह। ैशाली उत्खननसँ पाप्त एकटा मुहि पि क्लखल अवि "ैशाली अनुसन्धानक टकाि" जाक्हसँ इ बुवि पडइयै जे ैशाली मौयषकालमे शासनक एकटा पधान केन्द्र िल आ खासकि अशोकक समय एकि पधानता आओि बक्ढ गेल िलैक। अशोकक समय बहुत ािस क्यक्त बौद धमषक पचाि कबिाक हेतु क्मक्तो गेल हैिि।

मौयषसामाज्यक पतनक पिाक्त शूंगिशिक सािपना भेल। इ बाहािशि िल। बाहाण धमषक पभुति बढल पिाज्य संगक्ह विकेन्द्रीकिणक पक्कयाके सेहो बढाि भेटलैक। शूंग कालहुमे क्मविलापि पाटक्लपुतक पभाि बनले िहिलैक। शूंगकालीन स्तंभ

गण्डक तीरपर कालीमंदिरक समीप सोनपुरमे भेटल छैक आ जयमंगला गढ (बेगूसराय)सँ प्राप्त लकडीक पुलक संगहि शूंगकालीन मण्मूर्त्तिक आविष्कार एकटा पैघ पुरातात्विक घटना मानल गेल अछि। पटना (कुम्हरार) आ नौलागढ (बेगूसराय)सँ शूंगकालीन मॉटिक मुरत आ साज शंगारक सामान सेहो भेटल अछि। नेपालमे किरात लोकनिक महत्व बनल छल आ उहो लोकनि संभवतः शूंग लोकनिक आधिपत्य स्वीकार केने छलाह। भिठा गाममे एक पुरान पोखरि छैक जकरा लोग क ओहिठाम सुनगाही पोखरि कहैत छैक। ओहिमे सँ बहुत रास प्राचीन सामग्री भेटल छैक आ ओहिठामक लोग विश्वास छन्हि जे इ पोखरि शूंगकालीन थिक। शूंगकालहु धरि अंगमे ब्राह्मण धर्मक प्रचार प्रसार विशेष रूपे नहि भेल छल परञ्च मिथिलामे ब्राह्मण धर्मक पुनुरुत्थान एहि युगमे विशेष रूपे भेल छल। विदेह आ अंगक बीचमे एकटा पक्षद स्थान छल कालकनि। शूंगक पछाति कण्व लोकनिक शासन भेल। हुनका लोकनिक समयमे मिथिला वैशाली क्षेत्रपर पाटलिपुत्रक प्रभाव घटि गेल छल। एहि स्थितिसँ लाभ उठाके लिच्छवि लोकनि शनैः शनैः अपन सत्ता बढौने जा रहल छलाह। दक्षिणमे आन्ध्र सातवाहन, पूर्वमे कलिंगक खरवेल आ पश्चिममे शक् क्षत्रप लोकनि अपन प्रभाव बढा रहल छलाह। दू दू बेर कलिंग राजा खरवेल मगधपर आक्रमण कऽ चुकल छलाह परञ्च मिथिलापर हुनक आधिपत्य भेलन्हि अथवा नहि से कहब कठिन।

मिथिलामे एखनहुँ पुरातात्विक ढँगक उत्खनन नहि भेल छैक तैं जनक राजवंशसँ लकए कर्णाट राजवंश धरिक इतिहासके अन्धकारपूर्ण कहल जा सकइयै यद्यपि साहित्यिक दृष्टिकोणसँ एहि

युगक विशेर महत्त्व अर्छि। कुराण लोकक्त कक्नाषकक नेतत्वमे ैशाली धर्व आएल िलाह से संभि। कहल जाइत ैक जे कक्नाषक ैशालीसँ बुदक क्मकाटन बला बाटी उठाके गाह्माि लऽ गेल िलाह।

िजो महाक्तपस्य सिमी र दार दक्संहस्य दुक्तु िजो महाक्तपस्य सिमी र दसेनस्य भवाह्या महादेक्या पभुदामायाह॥ 1

ैशालीसँ शक क्तप र दसेनक बक्न महादेिी पभुदामाक एक गोट क्लखल मोहि पाओल गेल ैक 1 जाक्सँ इ अनुमान लगाओल जा सकैत अर्छि जे शक क्तप सबक्क संग ताक्ह क्नमे एक्ह केतक संपकष िलैक। एक्ह सम्बह्यक िस्तविक सिर पक ठेकान लगाएब अखनो कक्ठन अर्छि। एक्ह केत सबसँ बहुत क्तप आ कुराण मुदा ति क्सका भेटल अर्छि। मनुस्मक्तमे क्लचिी, विदेह, मल्ल जाक्त सबके िस्थि कहल गेल ैक जकि काणि इएह वक जे इ सब ैक्दक कमषकाण्डक कोनो पििक्ह नक्ह कैित िलाह। मौयोतिि कालमे पकाि पकाकि लोगक उल्लेख भेटैि आ ओकि सम्बह्य ैशाली क्मविला केतसँ बताओल जाइत अर्छि। एक्ह पसंगक विशेर रप हम अपन लेखमे ‘‘कम्मीहेनक्सम क्हस्टी आफ क्बहाि’’मे पस्तुत कएने िी आ एक्हठाम मात ओकि संकेत धर्व दैत िी।

टालेमी (भूगोलिता) अपन पुस्तकमे कहने िवि जे गण्डकसँ महानंदा धर्व ‘‘मर ण्डाइ’’ नामक एक गोट जाक्तक

आधिपत्य िलक्हि। एक्ह जाक्तक पभाि एक्ह केतपि िल। मौयोतिर कालमे क्षवििलामे सेहो एक पकाकि अस्तव्यस्तता िल आ एकि नतीजा इ होइत िल जे चार कातक महतिकाकी लोक सब एकि लाभ उठा लैत िलाह। ‘मर ण्डाइ’ जाक्तक विििण कैक साधनसँ पाप्त होइत अवि पञ्चि िस्तुकसिक्त कक िल ताक्ह सम्बाह्धमे ठीक
ठीक क्णष्ा देि अंसभि। टालेमी क्तशय कोनो आधापिि अपन मंतव्य देने हेताह जे आधािि आब हमिि लोकक्तके उपलब्ध नक्ह अवि। ‘मर ण्डाइ’क अक्तवितित आिि एक गोट जाक्त िलैक जकिि िजय उतिििि क्ाहामिे िलैक। ओक्ह जाक्तक नाम िल ‘भि’ (भि िजपूतोके कहल जाइत िैक)। भि लोकक्तक अिशेर सहिसा आ बेगूसिायिमे अवि। क्तसहेशिि सिानमे िियभीिि नामक एकटा सिान िैक जकिि भि लोकक्तके िजधानी कहल जाइत िैक। बेगूसिायिमे तप्पा सिििजा सेहो भि लोकक्तक पधान केह्द िल। भि लोकक्तके विशास िैह्ह जे ओ सब भाकिशिि नाग िशिक उतििक्धकािि िवि। जँ इ कििन सत्य हो तँ इ मानल जा सकैत अवि जे भाकिशिि नाग िशिक आधिपत्य सेहो क्षविलापि िल। भि लोकक्तक अनेक कंिदंती एखनो मधेपुिामिे पाओल जाइत िैक। मर ण्डाइ, भि, कििति आक्द जाक्त सबक्हक पभुतिि क्षविलाक कििि खास खास अंसेपि िहिल हेतैक। एहेन अनुमान लगाओल जाइत िैक जे मौयष लोकक्तक पतनक पिक्त क्तचिििि लोकक्त अपन अक्स्ततिकि पुनसििापिन लावा गेल हेताह कुराण लोकक्तक पभुतिसँ हुनका लोकक्तके धका पहुँचल हेतक्ह आ ओक्ह अक्तवशततताक अिसििसँ लाभ उठाके भाकिशिि नाग िशिक लोग क्षविलाक केतमे अपन सता सिाक्पत कएने होएताह। कुराणक पभाकि क्िद भेलापि

क्लचि ि लोकक्ष ओतएसँ हँव्टके जे नेपाल गेलाह से अपन पभुत्
कायम केलक्ह आ तक्हयासँ कि ब ७०० रिष धवि ओतए शासन
कैति व्हि गेलाह। ओव्ह क्लचि ि लोकक्षक सम्भाह्ध पाटक्लपुतसँ
सेहो ि ल। एक पि पिमे तँ इहो सुक्लिक्त अवि जे क्लचि ि लोकक्ष
पाटक्लपुतपि सेहो शासन कैति िलाह आ नेपाली क्षालालेखक
अनुसाि ‘सुपुष्प’ क्लचि िक जह्म पाटक्लपुतमे भेल िलक्ह।
क्लचि िक अंतप अजातशतुक पि क्ति क्लचि ि लोकक्षक इक्तहास
संक्दग्ध भऽ जाइि। कौव्टल्यक अि क्षाास्त्तमे गणिाज्यक रपमे
हुनका लोकक्षक उल्लेख अवि मुदा कोनो पामाक्णक इक्तहास हुनका
लोकक्षक अदािक्ध नव्ह भेटल अवि। क्लचि ि जाक्त एिँ िष्टक
रपमे जीवि त हिलाह आ आठ सौ रिषबाद पुनः क्लहाकि इक्तहासमे
अपन उक्चत भूक्षकाक क्लाहि कैति लगभग ७०० रिष धवि
नेपालपि सेहो शासन केलक्ह मुदा तइयो कोनो एकटा पामाक्णक
इक्तहास हुनका लोकक्षक नव्ह भेटइयै। व्हतनाियिण िक शोध
पबह्ध जे क्लचि िपि िक्ह ताहुमे कोनो वि शेर नि बात देखबामे
नव्ह अिइयै आ ने कोनो नि तथ्यक उदाटने भेल अवि। नेपालक
क्लचि िके सूयविंशी क्लचि ि कहल गेल िक्ह। क्लाक्तती पि पिकि
अनुसाि क्लाक्तक पाि क्षिक शासकके ‘क्ल च व्य’ कहल जाइत
िलैक आ हुनका लोकक्षकके वि देशी बुिल जाइत िलक्ह। एव्हसँ
इ अनुमान लगाओल जाइत अवि जे क्लचि िक एक शाखा नेपालमे
बसल आ दोसि शाखा क्लाक्तमे। नेपालमे क्लचि ि लोकक्ष
िजितंतात्मक पणालीक समि क्षि बनलाह। संभतिः अपन िशालीक
अनुभि हुनका िजितंतात्मक पदक्त के अपनेबापि बाध्य केने होक्ह
से एकटा वि चाि णीय वि रिय। क्लाक्तमे सेहो इ लोकक्ष िजितंतात्मक

सताक समि षक बक्त गेलाह। सब कि ु होइतहुँ वाबात नेपाल आ ि शालीक क्लच ि ीिक मध्य एक पकाि ि सम्बद्ध बनले िहल आ हुनका लोकक्क आप अपनौती सेहो बनल िहलैक्ह। नेपालक क्लच ि ीि लोकक्त बाह ण आ बौद धमक समि षक िहलाह आ हुनके लोकक्क समयमे शैि आ शाततक पधानता सेहो बढल।
जयदेि क्त्तीय (नेपाल)क क्शलालेखक अनुसाि क्लच ि ीि लोकक्त कि ु क्दन धवि मगधक शासक सेहो िलाह। हुनक पूि िष सुपुष्पक जह्म पाटक्लपुतमे भेल िलक्ह। सुपुष्पक जह्म संभि तः पिम शताब्दीमे भेल िलक्ह आ तखन कुराण लोकक्क पधानता िहल होएत। इ अनुमान लगाओल जाइत अवि जे ओ लोकक्त कुराणक सताके सीकाि कए अपन अवस्तति कि ि कए ने होएताह। एक्हमे सँ जे वि शेर सीिमानी िहल होएताह से अपन सतिंतताक क्ति ष नेपाल क्त्त स बक्ढ गेल हेताह। कक्तषकक पिक भेलापि पुनः क्लच ि ीि लोकक्त अपन सतिंतताक सिापना कबिामे संभि भेल होएताह। नेपालमे जाकए ओ लोकक्त िजतंतात्मक पदक्तके अपनौलक्ह आ तै संभि तः समुदगुप्त हुनका लोकक्के जीक्त अपन िज्यक अंतगत कएने होएताह।

क्लच ि ीि िजकुमाि िक वि िह एक महति काकी सामाज्यिादी िजकुमाि ि संग हैब एकटा आशयक बात बुवि पडइयै। क्लच ि ीि लोकक्त तखन सियं गणिज्यक वसदातमे वि शास कि ैत िलाह अि ि नक्ह से एकटा वि चाि णीय वि रय। दोसि बात इ ओ लोकक्त सेहो पाटक्लपुतके जीतके ओक्हपि िज्य कि ैत िलाह जाक्हसँ इ स्पष होइि जे लोकक्त अपन पुिनि आदशवािदी गणिज्यक वसदातक पवित्याग कऽ चुकल िलाह। इहो संभि अवि जे जखन

अजातशत्रुक हाथि ओ पराजित भेलाह तखन वैशालीक पुनि पतन भेल लुप्त भऽ चुकल छल आ ओकर मध्य जे महत्वाकांक्षी विजेता छलाह से समय पाबि मौर्य सामाज्यक पतनक बाद मगधपर आक्रमण कए अपन हारिक बदला चुकौलक आ पाटलिपुत्रपर अपन शासन स्थापित केलक। गणराज्यक वास्तविक पक्षक हुनक सहानुभूति भने छल होअए परञ्च वास्तविकता इ अछि जे गुप्त सामाज्यक पूर्ण उहो अपनहिक रूपे विजितंत्रात्मक पदवीक समर्थक भऽ गेल छलाह आ चन्द्रगुप्त प्रथमके होनहार देखि अपन पुत्रीसँ हुनक विवाह करओल। मगध सामाज्यक उत्कर्षमे लिच्छवीक एहन योगदानसँ सहायता भेटलैक आ गुप्त सामाज्यक शासन कालमे गणराज्य परम्पराक बचल खुचल अन्तिम समाप्त भेल। इ एक एहेन विषय अछि जाहि दिस विद्वानक ध्यान आकर्षित नहि भेल छैक आ जाहिपर नीक जकाँ सोचल नहि गेल अछि। वैशालीक इतिहासक दृष्टिकोणे इ एकटा अत्यंत महत्वपूर्ण शोधक विषय थिक।

कौमुदी महोत्सव नाटक एहि प्रकारपर विशेष प्रकाश दैत अछि। एहि ग्रंथक आधारपर हम जनैत छी कल्याणवर्माक पिता सुन्दरवर्माक मृत्यु पाटलिपुत्रक किलामे भेलैक। ओहि समयमे पाटलिपुत्रपर चन्द्रसेन आ लिच्छवी घेरा डालने छलाह। सुन्दरवर्मा क्षत्रिय पाटलिपुत्रक शासक छलाह। सुन्दरवर्माक वंशके मगध वंश (कोटकुल) कहल गेल छैक। सुन्दरवर्मा चण्डसेनके अपन कृतक पुत्रक रूपमे ग्रहण केने छलाह। लिच्छवी लोकनि एहि मगध कुलक विरोधी छलाह तथापि चण्डसेन लिच्छवी राजकुमारीसँ विवाह केलक परञ्च ताहि बीच बुढारीमे सुन्दरवर्माके एकटा पुत्र उत्पन्न भेलैक

जाक्ह दुआिर िाजगदीपि चण्डसेनक अवधकापिि पशसूचक चेह्न लावा गेलक्ह। मगधकुल होइतहुँ चण्डसेन पाटक्लपुतपि अपन घेिाि डललक्ह आ िाजधानी कुसुमपुिके चार कातसँ घेिि लेलक्ह। एक्हकाजमे हुनका अपन सासुिक लोग (क्लचििी) सबसँ बडड साहाय्य भेटलक्ह आ ओ विजयी भऽ मगधपि अपन िाज्यक सिापना केलक्ह। सुह्दिमिषाक अपन पुत कल्याणमिषा अपन पधानमंती मंतगुप्त आ सेनापक्त कुँजकि संग क्मक्ल मगध िाज्यके बचेबाक अिक पयत केलक्ह। एक्ह बीच मगध िाज्यक सीमापि सबि आ पुक्लन्द जाक्तक लोग विदोह कऽ देलक्ह आ चण्डसेन हुनका लोकक्नके क्नयंतणमे अनबाक हेतु पाटक्लपुत िाक्डके बहििला। इ विदोह मंतगुप्तक मंतणाक फल िल। चण्डसेनक अनुपक्सिक्तमे मंतगुप्त नगि पविरदक सदस्यक संग मंतणा केलक्ह आ कल्याणमिषाक हेतु मागष पशस्त सेहो। कल्याणमिषा तुिंत पाटक्लपुत बजाओल गेल आ हुनका िाजगदीपि बैसाओल गेल। सुििसेन आ मििि तिि यादकि संग क्मतताक सम्बन्ध सिाक्पत भेल। मििकि िाजकुमािि कीक्तषमक्तसँ कल्याणमिषाक विििह भेल।

सिगीय काशी पसाद जायसिालक कहन िक्ह जे इएह चण्डसेन चन्दगुप्त पिम िलाह आ क्लचििीक संग हुनक विििह भेल िलक्ह। िनस्फि (कक्लषकक िाज्यपाल)क समयमे क्लचििी लोकक्न िैशाली क्दस चल आएल िलाह पिन्तु कक्लषकक अिसान भेलापि ओ पुनः पाटक्लपुतक सीमा धिि अपन अक्धकाि बढा लेने िलाह। क्लचििी लोकक्नक पोत्साहनेपि चण्डसेन अपन कक्तम क्मतताक विरदमे विििध कएने िलाह। क्लचििी लोकक्नके इ पक्सन नक्ह िलक्ह जे कल्याणमिषा मगधक गदीपि हििि। कल्याणमिषाके

भगेबाक पयास भेल कल्याणमिषा जे मगधमे बजाके गदीपर बैसाओल गेल छलाह ताहि उत्सकि हेतु ओ कौमुदी महोत्सव मनौने छलाह आ ओहि घटनासँ पेवित भऽ कवयित ककशोविका विज्जका कौमुदी महोत्सव नामक नाटकक चिना केलक्हि। एहमे क्लचवीके म्लेच्छ आ चण्डसेनके कासिकर कहल गेल छैक। चण्डसेनक वीहि क्लचवीसँ भेला उतर ओ कल्याणमिषाके पविजत कबिामे एवँ पुक्लहन्द एवँ शवि लोकक्लक विदोहके दबेबामे समष भेलाह आ पाटक्लपुतमे एक नव जिवशिक सवापनामे सेहो। पयाग पशक्स्तक कोटकुलके जायसविल एहि मगध कुलसँ क्लबैत ववि।

कौमुदी महोत्सकि घटनाक पामाणकताक लऽ कए विदान लोकक्लमे बडड विभेद छक्हि। चहन्दगुप्तक वपता घटोतकचगुप्त सवयं जिा छलाह पिन्चु कौमुदी महोत्सविमे चण्डसेनके हटेबाक उल्लेख अवि। दोसर गप्प इहो अवि जे ओहि कालमे मगधपर क्लचवीक पधानता छल। जखन गुप्तशिक उतविन होइत छलैक तखन पाटक्लपुत धवि क्लचवी लोकक्ल अपन पसार कऽ चुकल छलाह। ताहि कालमे कहल जाइत अवि जे मगधमे कोनो क्लतय शिक शासन छल जकवि उखाडबाक लेल दकक्ण पक्शमसँ गुप्त लोकक्ल बढल अबैत छलाह आ एम्हर पूर्वउतर क्दक्ससँ क्लचवी लोकक्ल। एवँ पकार जिनैक्तक दवा ये गुप्त आ क्लचवी दुनूक सक्ममक्लत उदेश्य छल मगधक क्लतय जिवशिके अंत कबिाक। एहना क्सवतमे दुनूक बीच वैवक्हक सम्बन्धक सवापना तत्कालीन माहय जिनैक्तक पवकिल्पनाक पमुख अंग छल आ तै इ कोनो असवाभाविक बात नहि बुझाइत अवि। गुप्तक पूर्वक क्सवत पाटक्लपुतमे कक छल से कवशात रपे कहब अंसभव। ककछु गोट एक मत छक्हि जे पाक् गुप्त कालमे

मगधमे शक सीवि यिन लोकक्नक शासन िल पञ्चि जायसिल एक्ह बातके नक्ह मानैत िवि आ हुनक विशास िक्हह जे िमषा लोकक्नक शासन ताक्ह क्दन (कौमुदी महोत्सिक अनुसाि)मे मगधमे िलक्हह। िमषा लोकक्नके कि िु गोटए आह्धक िशिज सेहो मनैत िवि।

क्लच्वि िीक संग गुप्तक िैिक्हक सम्बह्ध पाचीन भाितीय इक्तहासक एकटा महति पूणष घटना मानल गेल अवि आ एकि फले गुप्त सामाज्यक उत्क्रष संभि भेल। क्लच्वि िी आ मगधक एक्ह सम्बह्धसँ दू िाज्यक क्मलन भेलैक आ गुप्त सामाज्यक नींि पडलैक। गुप्त अक्भलेखमे जाक्ह ढँगे क्लच्वि िीके महति देल गेल िैक ताक्हसँ पामाक्णत होइत अवि जे तखन धवि क्लच्वि िीक महति घटल नक्ह िलैक। इ ठीक जे एक्ह िैिक्हक सम्बह्धक बाद आ गुप्त सामाज्यक सिापनाक संगक्ह गणिाज्यक अिसान भS गेलैक मुदा क्लच्वि िी आ िैशाली तइयो इक्तहासमे जीवित िहल। गुप्त सामाज्यक पतन पिाक्त विदेह िैशालीक पाचीन गणिाज्यक गौिि समाप्त भS गेल आ पञ्चि दुनूक नाम इक्तहासमे अमि िहल। फाक्हयान, क्हयुएन संग, इक्तसंग, सूंगयुन आक्द चीनी याती लोकक्न एतए एलाह आ एक्हठामक िभिके देक्ख आशयष चक्कत भS गेलाह। ६३५मे जखन क्हयुएन संग एते आएल िलाह तखन िैशाली पतनोह्मुख िल। पाचीन अिशेर मात लोकक मोनमे सुिक्त्त िल। एतेक बादो िैशालीक पक्तष ा विदेशोमे बनल िल तकि सबसँ पैघ पमाण इ अवि ७८९ ई.मे अिाकान (बमा)क चह्दि शिक शासक ओतए िैशाली नामक एकटा नगि बसौने िलाह। किीब २०० िरष धवि इ बौद धमषक एकटा पधान केह्द बनल िल। इएह सिान आि िितिली नामे पक्सद अवि। इ अखन अम्याब क्जलामे अवि।

बमा पम्पिामिमे एकटा कि सुक्षित अवि जाक्हमे कहल गेल अवि जे बमाक ाजिा अक्तर द (१०४४ १०७७) ौशालीक एकटा ाजिकुमार्ािसँ वाहि केने ाल आ ओकि पुत जे बमाक ाजिा भेलैक से बडड नामी आ पतापी भेलैक।

चीनी याती आ ौशालीप फाक्हयानक याता वाणिसँ ौशालीक महतकि पता लगइयै। ौशाली बौद धमक पधान केन्द्र ाल आ तै चीनी याती एते अबैत ालाह। एक्हठाम बुद अपन पवक्तिाणिक घोरणा कएने ालाह। रषम शताब्दीमे दोसि चीनी याती ाग क्हयुएन सी दुइ बेि ौशाली आएल ालाह आ ओ अपन दोसि यातामे बौद महात्मा सबके ओढन पक्हनि दानमे देने ालवहि। ओक्ह शताब्दी तेसि चीनी याती सुंग युन सेहो आएल ालाह। हुनका दााि विगाा बातमे ४० टा देश सबक्हक नाम अवि जाक्हमे टी एल. लो (Tiel Lo) नामक एक साान ाक जकाि कन्ा गोटए क्ताहुित मनैत विि। सुंग युनक अनुसाि एक्ह पदेशपि हूण लोकक्तक आवक्षपत्य ाल। सुंग युनक एक्ह वाणिक समषा आन कोनो साधनसँ नक्ह होइि आ क्ताहुितपि हूण सामाज्यक पभाकि कोनो टा पमाण एखन धवि नक्ह भेटल अवि तै Tiel Loके मानबामे संदेहक गुंजाइश बनल अवि। क्हयुएन संग सेहो क्ताहुित आएल ालाह। ओ अशोक दााि कक्षाा स्तूपक उल्लेख कएने विि। हुनक वाणिसँ इहो जात होइि जे हुनका समय क्ताहुितपि हरषािधषाक आवक्षपत्य ाल आ हुनक ‘पाच भाति’मे क्ताहुितके एकटा पमुख साान पाप्त ालैक।

हरषक मत्युक पाक्त ाग क्हयुएन सी नामक एकटा क्ताष मंडलक नेता बक्तके आएल ालाह आ हुनका क्ताहुितक गानिषि

अरणाशसँ युद भेल िलैह्ह जकि विीिणि यिासिन देल जाएत। सातम शताब्दीमे इक्संग नामक एकटा आि चीनी याती क्ताहिुत आएल िलाह। चीनी याती लोकक्नक लेखसँ इ स्पष होइि जे उतिविहािमे कनि्ु एहेन महतिपूणषधाक्नाषक केह्द िल जतए चीनी याती लोकक्न अपन शदा पदक्शषा कििाक हेतु जाइत िलाह। एक्ह सब क्सन्चे मंक्दि साक्धिक महतिपूणष केह्द िल जाक्हठाम क्नमक्लक्खत याती आएल िलाह—

i) हेन क्चउ(पकाशमक्त) 'क्सनचे'मे बहुत क्दन धवि क्हि नेपाल आ क्ताब्बत बाटे घुिल िलाह।

ii) ताओ क्ह (शी देि) कोशी पातमे हिैत िलाह।

iii) क्सन क्चउ (चविति मिा) क्सन्चे मंक्दमे हिैत िलाह।

iv) क्चंग क्हंग (पजादेि) क्सन्चे मंक्दकि क्नीकिण केने िलाह।

v) ताग नेिशाली आ कोशी देशक याता केने िलाह।

vi) हीन लुन (पजामिा) क्सन्चे मंक्दमे आएल िलाह।

क्सन्चे मंक्दकि िास्तविकि सिलक जानकािी अदाक्वि पाप्त नक्ह अवि। पिन्तु इ मंक्दि िल कतहु क्ताहिुतमे िशाली आ कोशी पदेशक मध्य। इ क्नशय एकटा पक्सद बौद केह्द हिल होएत। सुदुिपूिषक याती लोकक्न एक्हठाम एकक्तत होएत िलाह आ धाक्नाषक उदेश्यक पूक्ताषक हेतु एतए क्हतो िलाह। पक्सद क्शाक्त केह्दक क्हसाबे सेहो इ सिान पक्सद हिल होएत।

अध्याय ६

३२० ई.सँ १०९७ ई. धरिक

लिच्छविक राजनैतिक इतिहास

गुप्तवंशक उदय भारतीय इतिहासमे एकटा महत्वपूर्ण घटना मानल गेल अछि। लिच्छवि लोकनिक एहि महत्वमे एक लेल बताओल जाइत अछि कि लिच्छवि वैशालीक राजकुमारीक संग विवाह भेला उत्तर चन्द्रगुप्त प्रथम साम्राज्य निर्माण करबामे सफल भेलाह। दोसर बात इहो जे एहि वैवाहिक सम्बन्धक बाद वैशालीक प्राचीन गणराज्यक परम्परा सेहो संभवतः समाप्त भऽ गेल आ वैशाली आब पूर्णरूपेण मगध साम्राज्य एकटा प्रमुख अंग बनि गेल। लिच्छविक सम्बन्ध जतय जे परिकल्पना भऽ सकइयै तकर विवेचन हमरा लोकनि पूर्वहिं कऽ चुकल छी आ ओहिसँ इहो स्पष्ट भेल अछि जे कोनो ने कोनो प्रकारे गुप्त साम्राज्यक उत्कर्षक पूर्वहुँसँ लिच्छवि आ पाटलिपुत्रक बीच घनिष्ठ सम्बन्ध छल। जँ लिच्छविक कोनो महत्व नहि रहैत तँ चन्द्रगुप्त प्रथम हुनका सब संग वैवाहिक सम्बन्ध स्थापित करितैथि। गुप्त लोकनिक जे साम्राज्य विजयक सूची भेटइत अछि ताहिमे वैशालीक नाम नहि अछि यद्यपि नेपालक नाम अछि आ तैं आधारपर इ अनुमान लगायब युक्तिसंगत बुझि पड़इयै जे वैशाली तँ प्रारम्भहुँसँ हुनका लोकनिक साम्राज्यक अंग छल। वैशालीक शक्ति हुनका लोकनिक साम्राज्य निर्माणमे सहायक भेलैन्हि। पुराणमे विवरण क्षेत्रमे वैशालीक नाम नहि अछि—

"*अनु गंगा प्रयागंच साकेतम् मगधस्तथा*

एतान जनपदान सर्वान् भोक्ष्यंते गुप्तवंशजाः॥

पतंजलिक एहि प्रकार एकटा रोचक तुलना करबाक योग्य अछि—

“अनु गंगं हक्सतनापुमि् ___
अनुगंगं ाििणसी;
अनु शोणम् पाटक्लपुतम्” ___

समुदगुप्तक पयाग पशक्सतमे सेहो ैशालीक उल्लेख नक्ह हिब एक्ह तथ्यक समषिा कैति अर्वि जे ैशालीक विजय कबिाक आशिय्यकता गुप्त लोकक्नक हेतु आशिय्यक नक्ह िल काणि इ तँ गुप्त लोकक्नक अपन िलक्ह आ कुमाि देीक जे महत्ति क्सका आक्दमे भेटल िक्ह सेहो एक्ह बातके पुष्ट कइियै। समुदगुप्तके ‘सषििजोर्च्ति’ कहल गेल िक्ह।

ैशालीक पधानताक पमुख काणि इएह िल जे कुमाि देीसँ विाहि केला उत्ति गुप्त लोकक्न क्लच्छिीक सहायतासँ पाटक्लपुतपि अक्धकाि कबिामे समष िभेल िलाह। कुमाि देीक क्दक्ससँ हुनका लोकक्नके ैशाली िाज्य भेटल िलक्ह। समस्त क्ताहुित गुप्त सामाज्यक एकटा पमुख केक्ह्द िल आ ैशाली ओक्ह पातीय िाज्यक िाजधानी। ैशालीक महत्ति तँ अहुसँ क्सद होइि जे एक्हठामक िाज्यपाल युििाजे होइत िलाह आ गोविक्ह्द गुप्त युििाज एक्हठामक िाज्यपाल िलाह तकि पमाण अर्वि ैशालीसँ पाप्त अक्भलेख। गुप्तलेखमे एक्ह केत्त तीिभुक्तत कहल गेल ैक। ‘क्लच्छिी दौक्हत’ कक्हके अपनाके गौििाक्न्त बुिक्नहाि समुदगुप्तक उक्ततसँ एति धर्वि स्पष्ट अर्वि जे ताक्ह क्दनमे क्लच्छिीक पक्ताष ा आ पभुत्ति दुनू बनल हेतैक्ह आ िैक्हक सम्बाक्ह्धक काणिे इ दुनू चीज गुप्त लोकक्नके सियंमेि उपलब्ध भेल होएतक्ह। मौयष सामाज्यक पिाक्त जे विकेक्ह्दीकणिक पिक्त बढल आ मगधपि बििर्वि आकमणक ताता लागल हिल ताक्हसँ लाभ उठाए क्लच्छिी

लोकक्त अपन पुनि गौरि कि के पुनर्ष्चाि वापत कबिामे सफल भेलाह आ अपन सीमाके नेपालसँ कााबात धरि बढौलक्हि आ कमेण पाटक्लपुतक सीमा धरि सेहो। जँ से बात नक्हि हैत तँ चह्दगुप्त पमि अपन िनीक नामे क्सका कक्एक बनाितैि अिि समुदगुप्त अपनाके क्लचिि दौक्हत कहबा कक्एक गौिक्लति बुवि तैि। िशालीक उत्खननसँ पाप्त एकटा मोहपिि क्लखल अवि "महााि जाक्धािज शी चह्दगुप्त पती महादेि शी धुसि िक्मनी"

ओक्हसँ पाप्त सामगीक आधापिि इ बुिबामे अिइयै जे क्ताहुत पातीय शासनक एकटा पमुख केह्द िल आ से तीभुक्तातक विरयमे अनेक सामगी भेटल अवि जाक्हसँ ओतुका तत्कालीन शासन पदक्त एिँ समाजक क्यिस्िाक सम्बाह्धमे जान पाप्त होइि। पातीय आ नगि शासनक एहेन सुह्दि क्वतण आनठाम भेटब अंसभि। चह्दगुप्त क्दतीय विकिमाक्दत्यक समयमे एक्हठामक िज्यपाल िलाह युिि ज गोविह्दगुप्त। गुप्तयुगमे क्तवि लाक सीमा पक्शममे शािस्ती भुक्ततसँ क्तलैत िल आ पूिमे पुण्डिदिषा भुक्ततक कक्िु अंश सेहो क्तवि लाक अंतगिा िहल होएत जतए कणि कायसि लोकक्त "दत" पदिधाि कैक पुस्त धरि िज्यपालक पदपि िहला आ जकाक अक्भलेख सम्पाक्त उपलब्ध अवि। क्तवि लाक सीमा ताक्ह क्दनमे पक्शममे शािस्ती भुक्तत, उतिमे नेपाल, दक्कणमे शीनगि भुक्तत आ पूिमे पुण्डिदिषा भुक्ततक सीमासँ क्तलैत जुलैत िल आ इ गुप्त शासनक एकटा पधान केह्द िल आ एकि महति एतेक िलैक जे िज्यिशक लोक सिंयं एकिा अपना चाजषे िखैत िलाह। गुप्त सामाज्यक शासन पदक्तक अध्ययन बसाढक उत्खननसँ पाप्त सामगीक क्वानु संभि नक्हि िल। अखनो ओक्हमे

कतेक ाि सि एहनो शब्द अर्व जकि अिि षि स्मष नक्ह भऽ िहिल अर्व ।

क्मकलक्खत पशासक्नक शब्दािली ओक्हठामसँ पाप्त अर्व ____

i.) उपर्विकि

ii.) कुमाािमात्य

iii.) महापक्तहािि

iv.) तलिि

v.) महादण्डनायक

vi.) र्विनय क्स्िक्त सािपक

vii.) भटाशपक्त

viii.) युिािजपादीय कुमाािमात्याक्धकिणि

ix.) िणिभाण्डागाािक्धकिणि

x.) बलाक्धकिणि

xi.) दण्डपाशाक्धकिणि

xii.) तीिभुिततौ र्विनयक्स्िक्त सािपकाक्धकिणि

xiii) ि्शािल्याक्धषिनाक्धकिणि

xiv.) शी पिमभटाकि पादीय कुमाािमात्याक्धकिणि

xv.) तीिभुितत्युपर्विकाक्धकिणि ____

ि्शािलीसँ पाप्त अििशेर सबक्हक आधािपि इ पामाक्णक रूपे कहल जा सकइयै जे गुप्तयुगमे एक्ह क्षेत्रमे एकटा सुसंगक्ठत शासन पणाली िल आ एकर्ि आदशषमाक्न गुप्त सामाज्यमे पातीय आ सािनीय शासन पणालीक सािपना भेल िल। दामोदिपुिसँ पाप्त तामलेख एक्हबातक साक्षी अर्व। भुक्तत ताक्ह क्दनमे पात अििि पमण्डलक दोतक िल। अक्धकिणि शब्द सक्चािलयक दोतक र्विकि

आ पत्येक विभागके अपन अपन अधिकणि होइत िलैक जेना कि उपलितत विि णिसँ स्पष अवि। पातमे पक्सद होइत िलाह िजियपाल, सेनापति, पत्तहाि आ अह्याह्य पदाधिकाि। युिाजिक अधीन सेहो मंती लोकनि हैित िलविह्ह आ कोराध्यक, युदविभाग, ह्याय विभाग, नयंतण विभाग आदिक पदाधिकाि एिँ कमचािाि लोकनि सेहो पातीय सचिालियमे हैित िलाह। सिानीय शासनक दिका कोणे ैशिालीक अपन अलग अधिषान सिल आ ओकि सचिालिय कायालय सेहो फािके हैित िल। सामाज्यक शासन यंतक अपन मुख्यालय होइत िलैक जे पातीय कायालय कहबैत िल आ सिानीय शासनक अलग कायालय होइत िलैक। सिानीय कायालय होएब अहुलेल आिश्यक िल कि ओतह संसिाके सिानीय मामलापि विचाि कएि पडइत िलैक। ैशिाली एकटा पक्सद व्यापाि केह्द सेहो िल आ व्यापाि लोकनिक सेहो अपन संगठन िलह्ह जे ''शेषी सािािहि कुलक नगम'' शब्दसँ जात होइि। पातीय शासन विभागक अह्तविति एह्ठामक सिानीय शासन सेहो िसि संगठित िल जेना कि उपयुतत सूचीसँ जात होइि। ैशिालीक नगि शासन व्यिसिा सुह्दि िल।

उदानकूप पविरिदक उल्लेखसँ सिानीय शासनक बोध होइि। ैशिालीक व्यािसायिक संगठन, नगम, शेणी, सािािहि, कुलक आदि सेहो अपन मोहि खिैत िलाह। बैक पणाली नीक जका ैशिालीमे संगठित िल 'कुलक' शब्द एकि संकेत विक। 'पिम कुलक'क उल्लेख सेहो कैकटा मोहिपि भेटइत अवि। िसाढ, भीठ, बंगाल आदि सिानक उत्खननसँ पाप्त सामगीक आधािपि इ कहल जा सकइयै जे गुप्तकालीन शासन व्यिसिाक

सरिपमे एकर पता लि आ एकि शेय गुप्त समाट लोकक्के लिक्ह। ओना िशाली तँ अक्पाचीन कालसँ पशासनक पधान केह्द बनल आ ओक्हठाम गणताक्तक पम्पिाकि पभाि गुप्तयुगक शासन संगठनमे सेहो देखल जा सकइयै। समुनत आर्विषक जीिनक हेतु सुगक्ठत शासन पणाली आश्यिक बुिल जाइत अर्वि आ िशालीके जे बैकक पणाली सेहो संगक्ठत िल से उपिलत किनके आि समिषा दैत अर्वि। शेषी, कुक्लक, क्ागम आक्दक अलग अलग सभापक्त होइत लैक आ ओक्हमे जे शेष होइत लिक्ह हुनका ''पिमि''क विशेरसँ विभूक्रत कैल जाइत लिक्ह। क्यापािी आ बैकि लोकक्त अपन पताचाि आ कािबािमे अपन अपन मोहकि क्यिहाि किति लाह। ओक्हठाम बहुत मुदापि शेषी क्ागमस्य सेहो उक्ल्लक्खत अर्वि आ बहुतो गोटएक नाम सेहो ओक्ह मुदा सबसँ भेटइत अर्वि। जेना उदाहिणािषक्मक्लक्खत नाम देल जा सकइयै हर्वि, उमाभटट, नागक्संह, साक्लभद, धनहर्वि, उमापक्लत, िगाषृ उगसेन, कषणादत, सुक्खत, नागदत, गोण्ड, नह्द, िम्िषृ गौविदास इ सब केओ कुक्लक लाह। सािषिहमे डोडडकक नाम आओि शेषीमे रक्ा दत, आ शीदासक नामक उल्लेख अर्वि। एहने एक मुदा बेगूसियिसँ पाप्त भेल अर्वि जाक्हपि ''सुहमाकस्य'' आ ''शी समुद'' क्लखल अर्वि। पुणरधिषा भुक्ततक ओक्ह केत्मे जे तीिभुक्ततक भौगोक्लक सीमाक समीप पडइत लि ताक्हपि कैक पुस्त धर्वि जे 'दत' कणि (कायसि लोकक्त) िज्यपाल लाह तकि पमाण गुप्त अक्भलेखसँ भेटइत अर्वि। क्ाितदत, जयदत, बह दत, सिणुदत, जीदित, आक्दक नाम गुप्त अक्भलेखमे अर्वि। क्ाितदत उपर्विक लाह। पातीय शासनक हेतु जे बोडष होइत

िल ताहमे शेषी, कागम, कुक्लक, सािमिहक एक एकटा पकाकधक अकार्वतित ओहमे पिम कायस सेहो िहैत िलाह। उपविकक पदक िशानुगत हैि एह बातक संकेत दैत अिव जे ताह कनमे सामंतािदी पकिाक विकास भऽ चुकल िल। पुण्र िदषा भुक्तक सीमा हमालयमे िािह केत धिव पसलि िल आ ओहठाम कोकामुख सिामी नामक एकटा पधान तीिष सेहो िल तै एह केतके कािवलाक केत मानि सिभाविके कािण इ कािवलाक भौगोक्लक सीमामे पडइयै। गुप्तयुग धिव कािवला गुप्त सामाजयक एकटा पमुख अंग बनल िहल।

गुप्त सामाजयक अंकाम कनमे कािवलाक इकाहासमे पुनः एकटा अकाकशतताक कसिक आकत गेल। गुप्त लोकाक एकटा पातीय िाजयपाल यशोधमषा एह कसिकासँ लाभ उठाए अपन अकधकािक विस्तािमे लाबा गेलाह आ लौहतय (असम) धिविक केतके जीतके अपना अधीनमे केलकह। एह कममे ओ पुण्र िदषाक उपविक दत लोकाके पािकजत कए ओहु केतपि अपन अकधकाि बढौलकह आ दत लोकाक पुस्तैनी गिनिी एकि बाद समाप्त भऽ गेलैह। एह आधािपि हम इ अनुमान लगा सकैत िी जे कि कनक हेतु यशोधमषाक पभुति कािवलोमे अिशय िहल हेतैह। ५३३क मंदसोि अकभलेखसँ हमिा लोकाके उपािजत बातक जान होइि। यशोधमषा हूण लोकाके पािकजत कए यशक अजषा कएने िलाह आ तै भाितिमे ताह कनमे हुनक पकाषा विशेर िलकह। पिञ्च हुनक विजयाकभयान बहुत कन धिव नह टकलकह आ शीघ्रहं हुनक िाजय समाप्त भऽ गेलैह। कािवलाक हेतु अकाकशतताक असिि बनले िहल।

यशोधमषा ओम्हि अपन डफली बजा हिल िलाह आ एम्हि पूबमे उति गुप्त लोकक्ष गुप्त सामाज्यक पतन (५५४ इ.)सँ लाभ उठाए अपन अवस्तति के सुक्षित कबिामे एिं मजबूत कबिामे लावा गेल िलाह। बहामिे ओक्ह युगमे मौखिी लोकक्ष सेहो अपन अधकाि जमेबाक चेष ामे लागल िलाह। एक्ह अक्वशतताक वस्िक्ासँ तँ सब केओ लाभ उठबे चाक्हते िलाह आ तै चालूतय कीक्तिमिषा सेहो अंग, मगध, आ िगपि आकमण केलक्ह। उतिगुप्त, मौखिी आ अहयाहय शासकक बीच ताक्ह क्दन आवधपतयक हेतु संघरष चक्ल हिल िल। जीविति गुप्त अपन पयासमे सफल भेल होएताह से अह्दाज लगाओल जा सकइयै। मगधक शासक महासेन गुप्त असम धवि अपन अवधकाि केत्तक विकास केलक्ह आ तै इ अनुमान लगाओल जाइत अवि जे ओ क्मविलापि सेहो अपन आवधपतय कायम केने हेताह। ताक्ह क्दनक वस्िक्त इ िल क्क जहा कोनो एक िाजय कमजोि भेल क्क दोसि ओकािपि टुक्ट पडइत िल आ ओकाि अपना अधीन कऽ लैत िल। संभि अवि जे मौखिी लोकक्ष अपन सामाजय विकासक कममे क्मविलोके अपना अधीनमे कऽ लेने होवि। कटाि (मुजफ्फिपुि)सँ जीिगुप्तक एकटा अवभलेख भेटल अवि पिन्चु ओक्हसँ िाजिनैवतक इवतहासपि तत्काल कोनो आलोक नक्ह पवड हिल अवि। कामरपक भिषा िशिक शासक लोकक्ष सेहो क्मविलाक पूिी केत्त पूवणषापि कैक पुस्तसँ अवधकाि जमा लेने िलाह। गुप्त सामाजयक पतनक बाद क्मविलाक इवतहास अंधकािमय भऽ जाइत अवि आ कोनो संगक्ठत एिं क्मयोवजत इवतहासक संकेत कतहुसँ नक्ह भेटइत अवि। चारकात जे िाजय

विस्तारित संघर्ष चक्र हिल ि ल ताहिमे क्मवि ला एकटा पमुख क्षाकाि ि ल आ विभिन्न महति कािकी ि ाजा लोकक्न क्षाकाि ि क काज कि ति ि लाह।

हर्षवर्धनक अमलमे क्मवि ला हुनक सामाज्यक अंश ि ल एहिमे कोनो सन्देह नहि। हर्षक समय धवि अबैत अबैत ि ाजनीतिक केन्द्रमे पाटलिपुत्रक स्थान कनौज लऽ लेने ि ल आ पाटलिपुत्रक महिमा घटि चुकल ि ल। हर्षक ि ाजधानी ि ल कनौज जकि ि महोदय श्री सेहो कहल जाइत ि लैक आ जकि महिमाक वि ि णि चीनी यात्री ह्युएन साग पस्तुत कएने ि वि। हर्षक पूर्ववि शशाक क्मवि लापि शासन केने होवि से संभि काि णि ताहि क्षणमे शंशाक पक्षिममे अपन आधिपत्य बढेबाक हेतु सब तिहे पयत्नशील ि लाह। पभाकि विर्धनक पुत्र ि ाज्यवर्धनक हत्या बंगालक शशाकक हाि भेल ि लहि।

शासक भेला उत्ति हर्ष अपन ि ाज्यवर्धनक मृत्युक बदला लेबाक हेतु कटिबद्ध ि लाह आ ओहि उद्देश्यसँ पेवि त भऽ ओ अपन सैन्यक अभियानक श्री गणेश केलहि। शशाक पिाजित भेलाह आ अपना सन मुँह बनाके अपन पि ाजयक घूंट पीबैत ि हलाह। हर्ष लगाताि ६ ि र्ष धवि अपन अभियान जाि ी ि खलहि आ उत्ति भाि तिक विशेष भागपि अपन अधिकाि जमौलहि। चीनी यात्रीक अनुसाि ओ ‘पाचो भाि ति’ (जाहिमे क्मवि ला सेहो सम्मिलित ि ल) जीति कए उत्ति भाि तिमे स्थापित अनलहि ‘पाचो भाि ति’ भेल स्वि ाष्ट (पंजाब), कान्यकुब्ज, क्मवि ला, गौड, ति ा उत्कल। ६४१ इ.मे ओ मगधपि सेहो अपन आधिपत्य कायम केलहि आ भाि तिक चाि काेतक ि ाजाके सैतलहि। गुप्त सामाज्यक पतन भेलापि जे

एकटा अवकाशततािक स्िथित उत्पन्न भऽ गेल छल तकरा हरष समाप्त केलिन्ह आ समस्त उत्तर भारतिप एकटा स्थायी शासनक रूपरेखा पस्तुत केलिन्ह। ओ समस्त भारतिके पुनः एकिट शासनक अधीन कएने चाहैत छलाह आ हुनक दुश्मन पुलकेशिन द्वितीय हुनका "सकलोतरापिथिनामी" कहने छिन्ह। हरषक शासन तँ बहुत िदन धिर नेिह िहल तािह हरषक महत्व एिह लेल अिछ जे हरष अपना समयमे एकटा सामािजक रूपरेखा पस्तुत कएने छलाह जे हुनका मृत्युक बाद भेलापर समाप्त भऽ गेल।

हरषक समयमे भारतिमे सामंतवादिक पूणष िवकास भऽ गेल छल आ हरषक शासन पणालीपर सेहो एकर पभाव देखबामे अबैत अिछ। ह्वेनसांग सेहो एिह बातक साक्षी िथ। हरष स्वयं घुमन्तु घुमन्तुके अपन शासनक कायष कोिरत छलाह आ जागीरदारीक रूपमे अपन कमषचारी आ सैिनकके िहन दैत छलाह। शासन संगठनमे ओ मौयष आ गुप्तसँ पभाविवत छलाह आ हुनक साम्राज्य पात, भुिक्त आ िवषयमे िवभािजत छल। तीरभुिक्त शासनक एकटा पधान केन्द्र छल आ हरषक समयमे ओिह ठाम अजुषन अथवा अरुणाश नामक एक महत्वाकांक्षी व्यिक्त राज्यपाल छलाह। हरषक देहावसान भेलापर पुनः राज्यमे अराजकता पसिर गेल आ महत्वाकांक्षी अजुषन ओिहसँ लाभ उठाके राज्यके हड़िप लेलिन्ह आ स्वयं शासक बिनके बैिस गेलाह। एकर अथष इ होइत अिछ जे हरषक समयमे तीरभुिक्त एक महत्वपूणष पात छल आ ओिह ठामक राज्यपालक शिक्त आन राज्यक अपेक्षा िवशेष छैक। अजुषन (अरुणाश) महात्वाकांक्षी होइतो योग्य सैिनक एवं संगठन कता सेहो िहल होएत आ पिरिस्थितिक अनुकूल भेला उत्तर ओिहसँ लाभ उठौने होएत।

काबाती आकमणप हरष अपन मत्युक पूर्षिं चीनक समाटक ओतए एकटा वशाष मण्डल (दूत मण्डल) पठौने ि लाह आ ओकाि उतिमे चीनक समाट सेहो एकटा दूतमण्डल हरषिदषाक दिबाि पठौने ि लाह आ ओक्क दूतमण्डलक नेता ि लाह ि ग क्कयुएन सी। ि गक नेततिमे जखन चीनी दूतमण्डल भाि त पहुँचल तखन हरषक मत्यु भऽ चुकल ि ल आ अर णाश समस्त ि ज्यके हडपाके शासक बक्त चुकल ि लाह। ओक्क दूतमण्डलक संग हुनक क्यहिाि तँ अशोभनीय भेिि केलक्क्ह आ संगक्क ओ दूतमण्डलके बेइज्जत सेहो केलक्क्ह। ि ग भावाके नेपाल चक्ल गेलाह आ ओतएसँ काबात सेहो। काबातमे ताक्क क्दनमे शासक ि लाह पक्सद शौग सान गंपो। शौग, ि गके १२०० चुनल काबाती सैक्क देलवि क्क्ह आ नेपालसँ सेहो हुनका ७००० सेना भेटलक्क्ह। काबाती नेपाली सहयोगसँ ि ग अर णाशके पि क्जत कए उतिि बाहाि अिि क्ताि हुतपि अपन पभाि जमौलक्क्ह। अजुषाक विदोहके दबाओल गेल आ ओ भागबाक पयास केलक्क्ह मुदा हुनका वाि फ्ताि कऽ लेल गेल आ चीनक समाटक ओतए बंदीक र पमे उपक्सि त कैल गेल। कहल जाइत अवि जे ि गक एक्क पयासमे कामर पक भास्करि मषा सेहो सहायक भेल ि लवि क्क्ह।

इ घटना तँ ओना देखलासँ सामाह्य बुवि पडइयै पि ञ्च ऐक्तहाक्सक दक्ष कोणसँ इ एकटा महतिपूणष घटना मानल गेल अवि जकि संक्कप्त विि चिन आि श्यक बुि ना जाइत अवि। अजुषा अिि अर णाशक सम्बह्धमे पूणष जानकािि नक्क अवि पि ञ्च ओ तीि भुक्ततक ि ज्यपाल ि लाह से क्वशात अवि आ हरषक पीि क भेलापि ओक्क सामाज्यक अक्धकािि सेहो भऽ गेला। ि गक संग एक्क

पकाकि क्यहिाि ओ कएक केलक्है से बुिबामे नहि अिइयै। िग स्यिं सब क्ालाके चार्व बेि कूटनीत्ाक काजक पसंग भाति आएल िलाह आ भाति र्विाणिक सम्बन्धमे हुनक एकटा पोिथी सेहो उपलब्ध अर्व। पोिथीक मूल तँ लुप्त भऽ गेल अर्व मुदा ओकि अंशके संकक्ालत कए ताओचेन नामक एक व्यक्तत ओकिा सुिक्षत िखने िर्व। ताग िशक इक्तहासमे भातिपि िगक आकमणक र्विाणि भेटइयै जाक्हमे इ कहल गेल अर्व जे िगक दूतमण्डल पहुँचबाक कििुऐ पूिष र्शालाक्दत्य (हरष) मर्व चुकल िलाह आ समस्त देशमे अिजकता पसिल िल। नाफुती (तीिभुक्तत)क अरणाश (ओलानाशुएन) िजगदी हडपा चुकल िलाह। िगक दूतमण्डलके भगेबा गेबाक पयासमे ओ लागल िलाह। दूतमण्डलक संग मात ३०टा घोडसििि िल। िग कोहुना भावाके बचलाह। क्ाब्बत आ नेपालसँ सेना आक्न दूतमण्डलक दोसि पमुख पदाक्धकािी, क्सयाग-चेन-जेनक नेततमे तीन क्दन धर्व युद भेल आ अंतमे अरणाश पिक्जत भेलाह। िग जखन बह्दीक रपमे अरणाशके लऽ कए चीन पहुँचलाह तखन िगके पोनत कओल गेलक्है। उपिितत र्विाणि ताग िशक पुिना इक्तहासमे भेटइत अर्व।

ताग िशक निका इक्तहासमे सेहो एक्ह घटनाक र्विाणि एिँ पकािे भेटइत अर्व। ६४८मे िगके जखन भाति दूतमण्डलक नेता बनाके पठाओल गेलक्है तखन हरषक अिसान भऽ चुकल िल आ अरणाश िज्यक अक्धकािी भऽ चुकल िलाह। ओ तीिभुक्तक शासक िलाह। क्ाब्बत आ नेपालसँ सहायता लऽ िग अपन िइज्जतीक बदला लेबाक हेतु क्तिहुतपि आकमण केलक्है। ओ

अपन सेनाके कैक भागमे विभतत कए अपन तेसि क्दन चा-पुओ-हो-लो नामक सि ानिपि पहुँचलाह आ ओक्हपि अपन आक्धपत्य कायम केलक्ह्ह। एक्हकममे ३००० क्यक्ततक हत्या भेल आ १०००० क्यक्ततके नदीमे डुबाओल गेल। अजुषा भावाके पुनः अपन शक्तत संचय केलक्ह्ह आ फेि ािगक संग युद शुर केलक्ह्ह मुदा हुनका कोनो सफलता नक्ह भेटलक्ह्ह। ािजाक जनानखानाक पधान दुश्मनक बाट ािकबाक हेतु कएन-तो-ाइ नामक नदीक मागष अिि द कए देलक्ह्ह तािक्म चीनी दूतमण्डल क्हनका लोकक्नके पािक्जत केलक्ह्ह आ अिणाशक पती समूह एिँ पुताक्दके वािफ्त कए माल असािब सब लूक्ट लेलक्ह्ह। चीनी सेना नायक उपाितत चेन-जेनक समक ५८०टा नगि आत्म समपषा केलक। पूिी भाितक ािजा ची-कीउ-मो (शी कुमाि) अिि भास्किािमषा चीनी दूतमण्डलक बडड सहायता केलिक्ह्ह आ हुनका लोकक्नके घोडा, बडद, अस्त्र, शस्त्र, तीि धनुर आक्द बहुत ािस सामान उपहािमे देलिक्ह्ह। चीनी समाटक हेतु ओ एकटा भाितक मानक्चत सेहो उपहािमे देलिक्ह्ह। दूतमण्डलसँ ओ आगह केलिक्ह्ह जे ओतएसँ ओ लाओ-जेक एकटा क्चत पठा दैि। अिणाश बक्न्दीक िप चीनमे िहलाह आ ओतक्ह हुनक मत्यु भेलैक्ह्ह।

मातक्लन सेहो एक्ह घटनाक िििणि उपक्सित कएने िि आ हुनक िििणि ताग िशक निका इक्तहाससँ क्मलैत जुलैत अिि। मातक्लनक अनुसाि चीनी समाट ६४६ ई.मे मगध समाटक ओतए एकटा दूतमण्डल पठौने िलाह। अजुषा अिि अिणाशके चीनी सोतमे क्तािहुतक शासक मानल गेल िक आ दुनूक बीच जे युद भेलैक से कतहु एक्ह केत्रमे भेल हेतैक। ािग कनौज धिि

गेल होएताह ओकरमे संदेह बुिना जाइत अिछ। ऐतिहािसक ि‍जयपाल अरणाश हरखक पाटिक भेलापि ऐतिहािसकसँ अपनाके सामाज्यक अिधकािर घोिषत कएने होिथ से संभि। चीनमे जाकरठाम अजुषनक शिर अिछ ताकरठाम एकटा जे स्मािकपि लेख िैक ताकरमे िलखल िैक “तीिभुकतक स्वदूिजा अरणाश”। अहुँसँ इ स्पष होइि जे अजुषन अिि अरणाश तीिभुकतक शासक िलाह आ िगक युद तीिभुकतक सीमे धिर सीिमत िहल होएत। एकर घटनाक िर्णि चीनक करीब २५टा सँ बेसी गंि मे भेटइत आ आधुिनक शोध एिँ एकर २५सो गंिक उपयुतत अंशक अनुिदक अध्ययनसँ एति धिर स्पष होइत अिछ जे हरखक पाटिक भेलापि अजुषन तीिभुकतक शासक िलाह। चीनी दूतमण्डल आ हुनका बीच संघरषभेल िल जाकरमे ओ पािजत भेल िलाह आ एकर युदक कायषेि ल िल गण्डकी, ि‍गमती, बलान आ गंगाक बीचक भूिम। युदक िास्तिवक सिन कोन िल से कारणषन किब अदतन कििन समस्या बनल अिछ। ि‍जज केतसँ अंगुतािप केतक िीच इ लडाइ भेल िल से धिर कािशत आ िगक शकतशाली सैिनकक समक जँ तत्काल िटि-पैघ शहि सब आत्मसमपषन क देने हुए तँ एकरमे कोनो आशयषक गप्प नइ।

कहि दका दोर अिि िचािर दोरसँ इ आकमण भेल हुए सेहो संभि। िगके अजुषन दुश्मन बुिर िािधि केने हेतिह आ ओ जखन सहायताि षिकािबत पहुँचलाह तखन ओकरठामक शासक शौग सेहो एकटा महतिाकािक्ष व्यकत िहैि आ िचािरसँ सामाज्यिादी सेहो। ओ एकर अिसिके अपन सामाज्य िवस्तािि अिसिक रपमे देखने होिथ तँ कोनो आशयषनइ कािण ताकर कदनमे हुनक पभुतिक

धाख चीन आ नेपाल धरि पसरल िलक्ह। िगिक माध्यमसँ ओ ताकाती पभाि भातिपि बढबे चाहैत िलाह पञ्च से संभि नकह भऽ सकलक्ह काणि इ युद ताहितु धरि सीमात कहि गेल आ ४०—५० रिषक बाद ओक्ह वदिेशी सता उखावकि फेक देल गेल। एकि कोनो सथायी पभाि भातिक इवतहासपि नक्ह पडल। अहुमे संदेह अछि जे शौग सयिं भातिपि आकमण केने होथि काणि शौगक वजियक वििणि जाक्ह ताकाती पमिाणमिे सुविक्त अछि ताक्हमे कतहु भातिक नाम नक्ह अछि। केलि मातवलिन एक्ह बातक उल्लेख केने छथि। दोसि बात जे महतिपूिैत अछि से भेल इ जे नेपाली पमिाणमिे एक्ह घटनाक वववित उल्लेख कतहु नक्ह अछियै। पूिी भातिपि हरषक शासन ६४१मे भेल िल। चीनी पमिाणमिे अजुषाके पूिी भातिक शासक (तीिभुक्ततक) कहल गेल ैक आ तै संभि जे हरषक पिाकि भेलापि ओ (पूिी भाति) पुनः अपनाके कनौजक ककयंतणसँ मुक्त कऽ लेने हो आ अजुषा गनिषकि क्हसाबे ओक्हपि अपन अवधकाि कऽ लेने होथि। एक्ह घटनाक एतेक वसितािसँ चीनी पमिाणमिे िणषा कैल गेल हो से संभि। एतिा धरि तँ कवशात रपे माने पडत जे अजुषा आ चीनी दूत िगिक िीच खटपट अछिय भेलैक आ एक्ह कममे तीिभुक्ततपि आकमण सेहो। एकि सिान एँ अह्याह्य बातक वशिलेरण अखन आि शोधक अपेका िखइयै।

हम पक्हने कक्ह चुकल िी जे कामरपक भासकििमिषाक पूिषाक समयमे बहुत िसि मैथिल साम्पदावयक बाहण कामरप गेल िहैि आ ओतुका शासकक अनुगह पाप्त केने िहैि। हरषक पूिषिं काधषापुि तामलेखसँ इ जात होइि जे मिषा िशिक सीमा पुवगाषाक कोशी धरि िलक्ह आ तकि पवशाममे ताहितुक िाज्य िल जाक्हपि

हरषक अधिकाि िल। जाधवि हरष जीवित हिलाह ताधवि कामर पक शासक हुनक मित बनल हिलविह्ह मुदा हरषक पिक भेला उतिि भास्करािमिा चीनी दूतमण्डलक सहायता केने िलविह्ह से उपािितत विििणिसँ सिष अवि एकिि किक काणि से नक्ह कक्ह। संभितः अजुषिक पभुति देवख आ तीभिुक्तत ािज्यक विस्तािसँ ओ घबडा कए चीनी दूतमण्डलक समि षि केने होवि से संभि। दोसि बात इहो भऽ सकइयै जे चीनक डिसँ ओ एना केने होवि। ऐहनो बुवि पडइयै जे जखन ािगक आकमणक समयमे मौखिि, उतिि गुप्त आ नेपालक क्लचििि शासकक िीच संभितः कोनो पकािक समिौता भेल िल आ ओ लोकक्न क्ताब्ती सामाज्यािदी पसािक विििधमे संगक्ठत िलाह। अदु शक्ततशाली संगठनसँ भयभीत भऽ भास्करािमिा ािगक सहायता केने होवि तँ कोनो आशयषक गप्प नक्ह। भास्करािमिा सेहो महतिकाकी िलाह आ तै हुनक आंतविक इच्िा इ अिश्य हिल हेतैह्ह जो कामर प ािज्यक पसाि हो। कामर प आ क्मविलाक सीमा सेहो क्मलैत जुलैत िल। हरषक मत्युक उपाित ओ कनौजसँ अपन सम्बन्ध विच्िद कए कणष सुिणषके अपना ािज्यमे क्मला लेने िलाह आ अपन चार कातक िािट िीन केत्त सबके सेहो। क्नधषापुि तामलेखक आधाि इ कहल जा सकइयै जे ओ क्मविलाक पूिि भागक क्कि्ु क्हस्सापि अपन अक्धकाि जमा लेने िलाह आ ओतक्हसँ संभितः ओ ािगक सहायता केने िलाह।

६४८सँ ७०३ ई. धवि क्मविलापि क्ताब्ती आक्धपत्य बनल हिल। एक्ह बीचक इक्तहास अंधकािमय अवि। क्मविलापि बहुत क्दन धवि क्ताब्ती पभाि नक्ह क्हि सकलैक आ उतिगुप्त शासक

लोकक्त अपन पविशमसँ पुनः सम्पूणष कािहाकिे जीक्त अपना अधीन केलक्हि आ कािविलाके क्ाबाती आकमणसँ मुतत सेहो। कटिी (मुजफ्फिपुि)सँ पाप्त अक्मलेख (तामलेख)सँ जात होइि जे जीिगुप्त नामक कोनो व्यक्तत ओक्ह केतपि शासन किैत िलाह। कािविक अभािमे क्कछु कहब असंभि अवि मुदा अंदाजन इएह कहल जा सकइयै जे इ संभितः उतिगुप्त िंशिक केयो हिल हेताह आ क्ाबाती आकमणसँ मुतत भेलापि एक्ह केतक शासनाक्धकािी भेल होएताह। गुप्तिंशिक पक्तिाकि पुनसिापनामे व्यस्त जे सिषिपक्सद व्यक्तत भेलाह एक्ह िंशिमे हुनक नाम िलक्हि आक्दत्य सेन। महासेन गुप्तक शासन कालक्हसँ कािविलापि क्हनका लोकक्तक पभुति िलक्हि आ आक्दत्यसेनक समय धवि तँ उतिगुप्त लोकक्त पूिी भाितिक एकटा पक्सद िाजिंशि घोक्त भऽ चुकल िलाह। अफशड, मंदाि आ शाहपुिसँ पाप्त अक्मलेखक आधाि इ क्नक्शत रपे कहल जा सकइत अवि जे आक्दत्यसेन समस्त कािहापि अपन आक्धपत्य कायम केलक्हि आ हितिि मगध िाज्यक संसिापकक नामसँ बहु चक्चषत भेलाह। हुनका पिमभटािकि- महािाजाक्धिाजिक पदिी िलक्हि आ ओ गंगा सागि धवि अपन िाज्य बढा अशमेध यज सेहो केने िलाह। ताग िंशिक इक्तहाससँ हमिा इ जात होइत अवि जे कािविला आ नेपाल ७०३ धवि विदेशी क्नयंतणसँ मुतत भऽ गेल िलि। क्सलिालेिीक अनुसाि ७०२मे कािविलामे उतिि गुप्तक शासनक सिापना एकटा महतिपूणष घटना मानल गेल अवि। नेपाली अक्मलेखमे सेहो आक्दत्य सेनके मगधक महतिपूणष शासकक रपमे िणषत कैल गेल िैक। नेपालक क्शािदेि मौखिी भोगिमषाक जमाय िलाह आ भोगिमषा आक्दत्य सेनक बेटीसँ

र्वािह केने िलाह। एिं पकािं तीनू िाज्य एक दोसिसँ सम्बन्धित िल। आक्रदत्य सेनक बादो हुनका लोकक्नकके पभािं बनल िहल आ जीर्वत गुप्त क्रदतीय धर्व ओ लोकक्न उतािपिनािं कहबैत िहलाह।

क्नर्वलाक इक्तहासमे बुिु जे बािं-बािं कS कए उतिं भातिक सब िोट-िोन िाज्य कोनो ने कोनो रपे िाज्य केलक्न्ह आ क्नर्वलामे कोनो सिायी िाज्यक सिापना १०९४ क पूर्ष नक्ह भS सकल। उतिं गुप्तक बाद क्नर्वलाक इक्तहासक जे क्सिक्त िल से ठीकसँ हमिं लोकक्नके जातव्य नक्ह अर्व। उतिगुप्तक िाज्यक अंत केलक्न्ह कनौजक यशोिमषा। गौडहीक कर्व िितपक्तक अनुसािं यशोिमषा गुप्त लोकक्नके पिाक्जत केलक्न्ह आ क्हमालय पदेशके जीक्त अपना िाज्यमे क्नलौलक्न्ह। आ एक्ह कममे जँ ओ क्नािहुतके जीतने होर्व तँ कोनो असंभिं बात नक्ह। कश्मीिं सेहो अपन पभािं बढा िहल िल आ पूर्षमे सेहो पूणषर िदषा भुक्नतक क्दक्स कश्मीिक पभािक क्चि देखबामे आबे लगैत अर्व। लक्लताक्दत्य मुत्तपीड एक्ह क्षेत्रमे यशोिमषाके पिाक्जत कए अपन पभािं क्षेत्र बढा लेने िलाह। लामा तािनािक अनुसािं क्नर्वलामे चक्न्द्रशिक शासन िल जकिं सम्बन्ध पक्षाममे िाजा भतहर्वसँ िलैक। चक्न्द्रशिक िाज्य िमा आ पूिं बंगालमे सेहो िलैक। िमाक चक्न्द्रशिक शासक लोकक्न 'िािली' (िशाली) नामक एक गोट शहिं बसौने िलाह। चक्न्द्रशिक पिाक्त क्नर्वलामे पालशिक सिापना भेल िल। उतिपूिं भातिक विभिन पदेशक कोनो शंखलाबद एिं साधनयुतत इक्तहास नक्ह अर्व। आ क्नर्वलाक जहाधर्व पश अर्व से तँ सििा अपूणे अर्व। लामा तािनािं जकिं िणषा कएने िर्व तकिं समिषा कोनो

आन साधनसँ नक्ह भऽ हिल अवि तै एकिा अखन संक्दगध्मे मानल जाएत। चह्न्दिशिक पश वििादास्पद अवि। जँ एक्ह िशिक ािज्य हिलो हैत तँ पूिा क्मविलेपि हिल होएत कािण उएह सिािन िगक समीप अवि।

कक्ि गोटए अहुमतक िवि जे यशोिमिाक आकमणक उपािते क्ताबिती पभाि तीिभुक्तत केत्र पिसँ घटल होएत। यशोिमि मालदह, िाजिशाही आ पुक्णि धिवि बढल िलाह आ तत्पशात कश्मीिक शासक सेहो “पंच गौड” (क्मविला जकिि एकटा पमुख अंश िल) पि अपन विजय पाप्त केने िलाह। क्ह्युएन-साग दाि िक्णा “पाच भाित” बादमे “पंच गौड”क नामसँ पक्सद भेल आ पाल कालमे एक्ह ‘पंच गौड’के विशेर पक्तष ा पाप्त भेलैक। तािनािक अनुसाि एक्ह ‘पंच गौड’मे चह्न्दिशिक पिाक्त अिाजकता पसवि गेल िल आ ओक्ह केत्रमे कोनो पकािक िाज्य नक्ह क्ह गेल िल। चािरकात मत्स्यह्न्यायक पधानता िल आ कोनो व्यिसिा नक्ह क्ह गेल िल। चह्न्दिशि (क्सह चह्न्दक पुत)क बक्लचह्न्दके भंगलसँ भगा देल गेल िलक्ह। क्लचिाि पंचमक्सह (जकिक िाज्य ताक्ह क्दनमे क्ताबितसँ क्तक्लङु आ बनािससँ समुद धिवि हैक्ह) बक्लचह्न्दके पिाक्जत केने हिविक्ह आ ओ भंगलसँ भावाके क्ताहितमे आक्बके िाज्य शुर केने िलाह। बक्लचह्न्दक पुत विमल चह्न्द अपन क्ताताक पिाजयक बदला लेलक्ह आ अपन िाज्यक विस्ताि बंगाल आ असम धिवि केलक्ह। हुनक पुत िलाह गोविह्न्दचह्न्द आ गोविह्न्दचह्न्दक पुत भेलाह लक्तलतचह्न्द। इ दुनू गोटए क्सक्द पाप्त कए िाज्यसँ विमुख भऽ गेलाह आ तत्पशात् िाज्यमे अिाजकता पसवि गेल आ मत्स्यह्न्यायक क्सिाक्त उत्पन भेल।

पाल शिप एक्ह मत्स्यन्यायक क्सिक्तसँ उबाबिाक हेतु ओक्हठामक लोग गोपाल नामक एक क्यक्तके अपन शासक चुनलक आ उएह पाल शिक संसंस्थापिक भेलाह। मत्स्यन्याय आ अजिकताक क्सिक्त समाप्त कए गोपाल चहुदिशक समस्त िज्य केत्त क्यसिाक सिापना केलक्ह आ तखन लऽ कए (७५० १०००) लगभग २५० रिषधर्व समस्त पूर्ी भातिमे एक पकाकि शाक्त बनल हिल। पाल युगक इक्तहास भातीय इक्तहासमे महत्पूणष सिान खिइयै आ क्मविलाक इक्तहासक हेतु सेहो इ काल महत्पूणष मानल गेल अर्व। गोपाल चूंक्क चहुदिशक उतिाधिकािक रपमे शासक भेल िलाह तै इ अनुमान लगाएब सिभाविक जे ओ तीभुक्तक शासक सेहो अशिय हिल होएताह कािण तीभुक्तयोपि चहुदिशक शासन हिल िल।

गोपालक बाद हुनक पुत धमषाल शासक भेलाह। पाल सामाज्यक िस्तविक संसंस्थापिक धमषाले िलाह एक्हमे संदेह नक्ह। उति भातिपि आ खास कऽ कए कनौजपि आक्धपत्य पाप्त कबिाक हेतु हुनका िाष्टकूट आ पक्तहािशिसँ युद्ध मोल लेबए पडलक्ह जे हुनका बादो चलैत हिलैक्ह। खलीमपुि अक्भलेख एर्ि तानािक र्ििणिसँ जात होइि जे क्तिहुत हुनक िज्यक अंतगषत िल आ पूर्मे कामरप धर्व अपन िज्यक सीमा बढौने िलाह। मूंगेकि समीप ओ पक्तहािशासक नागभट क्तीयके हर्ाने िलाह। िज्यक पसािक कममे ओ क्हमालय धर्व गेल िलाह आ िगमती नदीपि अक्सित गोकणषधर्व अपन िज्यके बढौने िलाह। गोकणष एकटा पक्सद धाक्मषक सिल िल तै संभि जे ओतए धर्व ओ धमष कबिाक हेतु गेल होर्ि मुदा िस्तविक कािण इ िल जे ओक्ह

क्षेत्रमे कर्णाटक राज्य छल आ तैं ओकरा डर छलन्हि जे कर्णाट लोकनि शक्तिशाली भए उत्पात मचा सकैत छथि तैं हेतु कर्णाट लोकनिकेँ पराजित करब आवश्यक छल। पशुपतिनाथ मंदिरक उत्तर पूबमे गोकर्णक जंगलमे कर्णाट लोकनिकेँ राजधानी छलन्हि आ तैं ओ ओतए दूर धरि जाकए कर्णाट लोकनिकेँ पराजित केलन्हि। स्वयंभु पुराणमे कहल गेल अछि जे धर्मपाल नेपालक राजगद्दीपर अधिकार प्राप्त केलन्हि। इ गप्प संभवतः गोकर्णपर धर्मपालक आक्रमणक प्रमाणस्वरूप कहैत अछि। नेपालपर हुनक अधिकार भेल हो अथवा नहि परञ्च कर्णाटकेँ दबाबैक हेतु अभियानक संदर्भमे आवश्यक छल आ धर्मपाल एहि बातकेँ सामाज्यवादी दृष्टिसँ नीक जकाँ बुझैत छलाह। मूंगेर ताम्रलेखमे 'गंगा समेतं बुद्ध'क जे उल्लेख अछि से गोकर्णसँ सम्भवतः भिन्न स्थान भेल आ तैं दुनूकेँ मिलाएब उचित नहि बुझना जाइत अछि। मूंगेर ताम्रलेखोसँ इ ज्ञात होइत अछि जे धर्मपाल हिमालयक तराइमे आक्रमण कएने छलाह। मूंगेरमे जे लड़ाइ भेल छल ताहुमे तीरभुक्तिक योगदान रहल होएत से सम्भव।

धर्मपाल समस्त उत्तरी भारतमे अपन धाख जमौने छलाह एकर प्रमाण हमरा कैकटा स्रोतसँ भेटइत अछि- केशव प्रशस्ति, खालिमपुर अभिलेख एवँ भागलपुर ताम्रलेख। गुजराती कवि सोढ़्ढल अपन उदय सुन्दरी कथामे देवपालकेँ उत्तरापथ स्वामी कहने छथि। 'पंच गौड' हुनक सामाज्य सीमाक बोध दैत अछि। 'पंच गौड' शब्दक प्रयोग केकरा हेतु भेलाह कहब जे अपन राज तरङ्गिणीमे एकर वर्णन देने छथि मुदा एकर राजनैतिक स्वरूपक वास्तविक जन्मदाता धर्मपाले रहल हेताह जकर सामाज्य पंजाबसँ

बंगाल आ हिमालयसँ मध्य भाति धरि पसलि िल। जरिला नेपालपरि सेहो हुनक पभुति िल। धमषालक परिवा हुनक पुत देपिाल िजा भेलाह आ हुनक सामाज्य हिमालयसँ विन्ध्य परिसा धरि पसलि िल। उहो पिताहारि िजा मावहि भोजके हिौलक्हि। हुनकहि समयमे पाल सामाज्य अपन चमिोत्कर्षि पहुँचल।

िचस्पित आ िजा नगप एक्हठाम एक पशपरि विचारि कऽ लेब आिश्यक बुिना जाइत अिि। सगीय महामहोपाध्याय उमेश मिश िजा नगक चचषकए एकटा समस्या उपक्सित कऽ देने िरि जाक्हि लऽ कए इक्तहासकारिमे विििद हैि सिभावकि। नग नामक एक िजाक नामक उल्लेख पुिणमे अिि मुदा ओक्हसँ िचस्पित कालीन नगक तुलना नक्हि भऽ सकइयै। िचस्पित (९म शताब्दी) अपन भामतीमे नग नामक महतिपूणष िजाक उल्लेख कएने िरि। उमेश मिशक अनुसारि नग कानि लोकक्मक िजा िलाह ओ अपन भामती एक्हि िजाक ओतए बैक्सि कए क्लखने िलाह। नग िचस्पितके सम्मानित केने िरिक्हि। 'नरि-ह्यायक इक्तहास'क चिक्यता एक्हि नगके बंगालक आक्दसूरिसँ क्मलबैत िरि। एक्हठाम स्मिणीय जे िचस्पित अपन ह्याय कणिकामे सेहो आक्दसूकि फाकिे िणषा कएने िरि।

नगक सम्बन्धमे िचस्पित अपन भामतीक अंतमे क्लखैत िरि ——

"*नपाितिणिा मनसाप्यगम्या*

भूकेपमातेण चकािि कीक्तष्,

कातषिििसािसुिपूर्विताि षसािभ्र

सियिं शास्तिविचक्णश,

निशिि यच्चरितानुकािमिचरिक्त

कतुंषन च पार्थिवा
तस्मिन्महीपे महनीय कीर्तौ
शीमनगेऽकार्वि मया निबन्धः॥

दोसि सिनिपर्वि एर्वि पकार्वि र्णिषा अवि ____

"न चायावा न दश्यंते लीलामात
विनिवमिषाक्त महापसाद पमदनिाक्त
शीमनगर्नाद्विाणामह्येशा
मनसावा दुष्करिक्त नर्शिणिाम्"॥

'नग'क 'महीप' एर्वि नर्हिद कहल गेल छिन्हि आ एहिसँ इ अनुमान लगाओल जाइत अवि जे ओ मिथिलाक कोनो भागमे ताहि दिनमे शिज्य कइत हेताह। 'नग' आ "आव्सूि" दुनू दू व्यक्ति छलाह एहिमे सेहो कोनो सन्देह नहि। 'नग' कर्णाट लोकनिक शासक होवि से संभव काणि ताहि दिनमे कर्णाट आ पाल लोकनिक बीच बराबरि खटपट होइत छिन्हि आ एकर उल्लेख हम धमपालक समयमे कऽ आएल छी। आव्सूि पूर्वी मिथिलाक शासक छलाह जकर सीमा बंगालसँ सटैत छल आ शिचस्पति सन विदानके दुनू शिजाक दबारिसँ सम्बन्ध हैब कोनो आशयक विषय नहि। नगसँ 'नशिहन'क बोध सेहो होइयै आ कर्णाट लोकनिक बीच इ बेश पचलित छल___अहु कर्णाट लोकनिक केन्द्र मिथिलाक उत्तरी पूर्वी भागमे छल।

'नग' एकटा समस्या मूलक नाम भऽ गेल अवि। एहिठाम अमलानंद सरिसिती अपन भामतीक टीका छिदात कल्पतर मे लिखने छवि ____

“तानिविधिःसानियस्यपकतर्तनितिपोस
नगस्तानियपिः। नग इक्त निज आख्या...”

‘नग’ एकटा पनिमानिक दोतक सेहो मानल गेल निछ आ ओ पनिमानि भेल दयालु हैनि, दानी हेनि आ सब तनिहे पनिपकानिी हैनि। एक्ह पनिमानिक एकटा उल्लेख गुप्तकालीन अवभलेखोमे अनिछ ——

“*भूक्त पदानान पनि पदानं*
दानाक्दक्षाष ेपवपिालनञ्च।
सनिडक्तसष ा पवपिाल्य भूक्तं
नपा नगाधाक्तस्तक्दयं पपनाः॥

एक्ह अवभलेखमे महानिज संकोेभ्यक तुलना पनिमानिगत दानी नगसँ कैल गेल अनिछ। अमलानंद ससनितिी सेहो अपन टीकामे तात्कालक शासकक तुलना निजा नगसँ कनिबाक चेषा कएने निछ। जेना क्ह हम उपनि कक्ह चुकल निी निजा नग पौनिाणिक निजा नगक संकेत मात निछ आ ओ दानशीलता आ जनपनियताक हेतु पक्सद निछ। १४ शताब्दीक सानिगिधनिक निचनामे सेहो नगक उल्लेख भेटइयै। अहुठाम पनिमानिगत रपेमे। उपेह्द ठाकुनि सब तथ्यक पनिीक्षण केला उतनि इ क्नणषा दैत निछ जे ‘नग’ शब्दसँ एक्हठाम पाल निजा देनिपालक तुलना कैल गेल अनिछ आ निचस्पक्त अपन भामतीमे देनिपालके नग कहलक्ह अनिछ। क्तनि सम्बह्धी जे निनिक्ट अनिछ तात्ह संदभषमे अखन अहुमतके संक्दग्धे कहल जाएत। उमेश क्मशक अनुसानि नग कणाटसँ आक्त क्नवनिलामे निज्य सनिापत केने निलाह पनिञ्च इ मत तकषूणषनक्ह अनिछ क्नएक नाह्यदेनिसँ पूनिष एकनि कोनो पमाण नक्ह भेटइयै।

हमरा बुझने 'नग' आ आदिसूर दुनू दू व्यक्ति छलाह आ क्रमशः विदेहक उत्तर पूर्वी एवं पूर्वी भागक कर्णाट शासक छलाह। नान्यदेवक समय धरि मिथिला आ उत्तर भारतमे सामंतवादी प्रथाक विकास भऽ चुकल छल आ अभिलेख, साहित्य एवं विदेशी यात्रीक विवरण एहिबातके पुष्ट करैत अछि। पालशिक्क स्थापनाक संगहि उत्तर पूर्वी भारतमे एकटा स्थायित्व एलैक आ पाल साम्राज्यक विस्तारसँ नेपाल धरिक क्षेत्र तक एकटा सुव्यवस्थित राज्यक स्थापना भेलैक। ताहि दिनमे आवागमन एवं यातायातक सुविधाक अभाव छलाक कारणे इ शासक लोकनि विभिन्न क्षेत्रके जीतिके ओहिठाम अधिकारीके सुपुर्द करैत छलाह आ हुनका सामंतक रूपमे राखि अपन शासन सुव्यवस्थाके चलबैत छलाह। जँ नान्यदेव कोशी देवपालक ओतए अपन भामती गांव लिखतैथ तँ ओ देवपालक नामक स्थानपर 'नग'क नाम किएक लिखतैथ? देवपाल अपने बड्ड पैघ लोक छलाह आ नान्यदेव सन विद्वानक हाथे अपन नाम उल्लिखित करबामे अपनाके गौरवान्वित बुझितैथ। नान्यदेवक योग्यताके एहिमे कोनो आपत्ति नहि होइतैन्हि कारण देवपालक शासन धरि एकटा व्यवस्थित व्यवस्थाक स्थापना भऽ चुकल छल। दोसर बात इहो जे नान्यदेव जाहिना आदिसूरक नामक उल्लेख केने छथि ठीक ताहिना नगक नाम। तै इ माने पड़त जे इ दुनू व्यक्ति अलग अलग राजा छलाह आ दुनूक दखलिमे छलैक ओ दुनू गांवक निर्माण केने छलाह। पहिल नान्यदेवक अधीन सामंत छलाह आ दोसर पूर्वी मिथिलाक सामंत — जे दुनू पालेक अंतर्गत रहल हेताह। जाधरि आर साधन उपलब्ध नहि होइयै ताधरि नगक समस्या एहिना बनल

हित। नग िजा सहिसा वजलातगषा बडगामक हिक्ताहा िलाह। एहनो एकटा मत अवि।

देिपालक बाद पाल सामाज्यक वसिकामे डािडोल शुर भेल आ चार कातसँ पुनः आकमण पत्याकमण होमए लागल। नािियणपालक भागलपुि अवमलेखसँ इ जात होइत अवि जे तीिभुक्ततक कक विरय (जकि तुलना कौवशाकी ककसँ कैल जा सकइयै)मे पाल शासक पशुपताचायष पविरद एँि वशािभटाकि लोककाक हेतु वकिु दान देने िलाह। ८६६ ई. क आसपास िाष्टकूट शासक अमोघिरषअंग, िगि आ मगध धवि अपन अवधकाि बढा लेने िलाह। कषण वद्तीय िाष्टकूटक समक सैह वसिक्त िल। ओम्हिसँ पवताहाि भोज आ महेन्द्दपाल सेहो पाल सामाज्यक सीमामे अपन अवधकाि बढा चुकल िलाह। पवताहाि लोकवा वतािहुित धवि अपन अवधकाि बढौने िलाह। महेन्द्दपाल पवताहाि तँ बंगालमे पहाडपुि धवि पहुँवच गेल िलाह। पाल सामाज्य वाहािकि वकिु भाग धवि सीवमत विह गेल िल। वमविला पाल पवताहाि सामाज्यक बीचमे बतीस दातक बीचमे जीभक वसिकामे िल कखनो पवताहाि लोकवा बढैि आ कखनो पाल लोकवा। एवह काल वमविलाक कोनो पामावणक इवताहास भेटतो नवह अवि आ हम देखैत इएह िी जे पवशाम आ पूब दुनू वदवससँ जे आकमण होइत िल, वमविला ओकि वशकाि भऽ जाइत िल। पाल लोकवा कोनो रपे अपन अवस्ततिके ढोने जाइत िलाह एवहमे संदेह नवह यदवप हुनक पभुति बहुत घवट गेल िलवह।

९५३-५४ ई.मे जेजाभुक्ततक चन्द्देल लोकवा वमविलापि आकमण केलवह। यशोिमषा आ हुनक पुत धंग वमविलापि आकमण

केलक्हि आ गुजरि पक्तहाकि क्मयंतणसँ ओकरि मुक्त कए अपना अधीनमे केलक्हि मुदा ओ लोकक्त बहुत क्दन धरि एक्ह केतपरि िाज्य नक्ह कऽ सकलाह। चह्देल आकमणसँ समस्त उतर्रि भाति परािजत भेल आ आकाह्त सेहो आ पाल सामाज्यके एक्हसँ बेस धका लगलैक। एक्हसँ पूर्िबं पक्तहारि आ िष्टकूट लोकक्तक आकमणसँ पाल सामाज्य क्शरिल भइयै चुकल िल आ चह्देल आकमण ओकरि आरि तहस नहस कऽ देलकै। नमि दशम शताब्दीमे गण्डक आ शोण नदी सब पक्तहारि आ पाल िाज्यक सीमा िलैक। चह्देलक पभारि पूर्वाषा धरि पसलि िल आ ओक्ह कालमे चार कात अस्तव्यस्तता बक्ढ गेल िल।

मक्हपाल परिम एक बेरि पुनः पाल सामाज्यके शंखलाबद कबिाक पयास केलक्हि आ पाल सामाज्य फेरि संगक्ठत भऽ अपना पैपिरि ठाढ भेल। मक्हपाल परिमक अक्भलेख मुजफ्फपुिर क्जलाक इमादपुिर गाममे भेटल अक्रि आ एक्हसँ इ क्सद होइत अक्रि जे मक्हपाल उतरि आ दक्क्षण दुनू क्बहाकि शासक िलाह। हुनक िाज्यक सीमा बनािस धरि िलक्हि। परिच्म हुनको शासन काल सुखद एरि शाक्तपूणषनक्ह हिलक्हि। क्वक्भन साधन इ जात होइरि जे चेक्द कलचुरि लोकक्त सेहो क्मरिलापरि अपन जाल फेनि िलाह आ हारि पैरि पसािने िलाह। मक्हपाल आ कलचुरिमे संघरषभेल िलक्हि अरिरि नक्ह से जातव्य नक्ह अक्रि तखन एतेरि जर ि अक्रि ११ म शताब्दीमे चोल लोकक्तक संग दक्क्षणसँ बहुत िसि कणाट लोकक्त एम्हरि आक्बके बैक्स गेल िलाह। पाकतपैगलमसँ सेहो जात होइत अक्रि जे ताक्ह क्दनमे चम्पारिण बाटे सेहो ओम्हरि गोरिखपुरि क्दक्स

कि आक्रमण भेल छल। तकर बादक इतिहासक कोनो स्पष्ट तस्वीर हमरा लोकनिकेँ एहि युगक उपलब्ध नहि होइत अछि।

पाल लोकनि येन केन प्रकारेण अपन अस्तित्व बनौने रखलन्हि आ बाहर बंगालक विभिन्न भागपर छिटपुट ढंगे शासन करैत छलाह। नौलागढ आ इमादपुरसँ जे विग्रहपाल तृतीयक अभिलेख भेटल अछि ताहिसँ इ स्पष्ट होइछ जे पाल लोकनि अपन अंतिम कालमे तीरभुक्तिमे अपनाकेँ बचौलन्हि कारण ताहि दिनमे कलचुरी कर्णक आक्रमणसँ बंगाल आक्रान्त छल औ‍र विग्रहपाल तृतीय आ कलचुरीक बीच जे मनमुटाव चल अबैत छल तकरा अतीश दीपंकरक प्रयाससँ मेटाओल गेल आ दुनूक बीच एकटा वैवाहिक संबंध भेल। विग्रहपाल तृतीय यौवनश्रीसँ विवाह केलन्हि आ हुनका दुनूक बीच जे संबंध भेलन्हि तकरा कपाल संबंध कहल गेल अछि। नौलागढ आ इमादपुरक अभिलेखकेँ देखलासँ इ प्रतीत होइछ जे बादमे कलचुरीक आक्रमणसँ बचल छल आ बादमे पाल लोकनिक शासन चल अबैत छल। अपन ह्रासकालमे पाल लोकनि तीरभुक्तिकेँ अपन राजधानी बनौलन्हि आ ओतहि ठामसँ शासन केनाइ प्रारंभ केलन्हि।

विग्रहपाल तृतीयक समयमे पालशक्ति सूर्यास्त भऽ रहल छलैक। प्राकृतपैंगलम् आ अन्य साधन सबसँ इ ज्ञात होइछ जे गण्डक क्षेत्र धरि कलचुरी शक्ति लोकनि अपन प्रभुत्व बढा लेने छलाह। पाल लोकनिसँ हुनक संघर्ष बराबर होइत रहलन्हि। संध्याकर नन्दीक 'रामचरित'मे ताहि दिनक राजनैतिक स्थितिक बढ़िया वर्णन अछि। नेपालक हस्तलिखित पोथीमे रामायणक एक गोट पोथी उपलब्ध भेल अछि जकरा अनुसार संवत १०७६मे तीरभुक्तिमे

एकटा सोमशिोदि महािजािधिािज गागेयदेकि शासन िल। ओकि िामायणक ककष्ककन्धा काण्डके अंतमे िलखल अिछ "*समति् १०७६ आराढ िदी४ महािजािधिाज पुण्यािलोक सोमिशोदि गौडधिज शीमद् गागेयदेि भुज्यमान तीिभुिततौ कल्याण िवजयिाज्ये नेपालदेशीय शी भंकुशालिक शी आनन्दिास्य पाटकािवािस त (कायसि) पंिडत शीकुिसियात्मज गोपकाना लेिखदम्*" १९४०मे एकि दोसि पक्ष भेटलैक जािहमे "गौडधिज"क सािनपि "गर डधिज" िक। एिह पुक्षिकाक अध्ययनसँ िमथिलाक इितहासक िसतुिलिकापि िवदानक बीच पूणषमतभेद िछिह। िकछु गोटए एकिा कलचुिरि गंगेयदेि मनैत िछि आ िकछु गोटए कणाट गंगेयदेि। हमिा बुिने इ कणाट गंगेयदेि िलाह। एकि कािण इ अिछ जे िमथिलामे अदािवधि कलचुिरि शासनक पमाण उपलब्ध निह। दोसि बात इ जे कलचुिरि शासकक संग िविगहपाल ततीय कपाल संघिध आ िैिविहक संबंध कए अपन अिस्ततत्वके सुिक्षत िखने िलाह। तेसि बात इ जे कोनो उल्लेख निह पाओल जाइत अिछ आ ने अपतयके र पसँ एकि कोनो िवििणि कलचुिरि साधनमे भेटइयै। चािमिबात इ जे मिहपालक ४८म िरषधिि ति िहित हुनका अधीनमे िलिह तखन ओिहठाम गंगेयदेि कलचुिरिक िािज्य कोना भऽ सकइयै। मिहपालक बादो िमपाल धिि िमथिलामे पालिशिक िािज्य बनल िहिल आ पालिशिक अंत भेलापि कणाट लोकिनक शासन पािभ भऽ गेल। िमथिलाक समस्त क्षेतमे पालकालीन अिभिशेख भेटइत अिछ जखन िक एम्हि कलचुिरिक कोनोटा अिभिशेख िमथिलामे निह भेटइि। एिह पशपि िविस्तत र पे िवचािि हमिा लोकिन कणाट कालक अध्ययन कममे किबि। जखन पालिशिक सूयास्त भऽ िहिल िल तखन दिक्षणक रषम िविकमािदत्य

उतिमे अपन भाग्य अजमेबाक हेतु आगा बढ़ि गेल छलाह।

अध्याय 7

कर्णाटकालीन इतिहास

ग्यारहम शताब्दीक अंतमे चलिमे मिथिलाक स्थिति अत्यंत दयनीय आ सोचनीय भऽ गेल छल कारण एकठाम कोनो प्रकारक केन्द्रीय सत्ता नहि रहि गेल छल आ चारु कातसँ महत्वाकांक्षी शासक लोकनि एहिपर अपन दाव-पेंच लगौने छलाह। पाल लोकनिक शासन डगमगा गेल छल। कलचुरि लोकनि पश्चिमसँ बढ़िनका सबके ठेलैत ठेलैत मिथिलाक एक कोनमे पहुँचा देने छल। १०७७ एवं १०७९क बीच कलचुरि शोढदेव गण्डकीमे स्नान कए दान कएने छलाह तकर प्रमाण एकटा शिलालेखसँ भेटइत अछि। एहिसँ इ नहि बुझबाक अछि जे कलचुरि लोकनिक शासन स्थायी रूपे मिथिलापर छल। एहिसँ तात्पर्य एतबे बहराइत अछि जे मिथिलाक दुर्बल राजनैतिक स्थितिसँ लाभ उठा कए विभिन्न राज्य एहिपर अपन सत्ता स्थापित करए चाहैत छलाह। सहैत्याकिन नहीदीक

ामिचवतिमे तत्कालीन ाजिनीक्तक विशद विश्लेरण अवि आ ओक्हसँ इहो जात होइि जे विगहपाल ततीय कणष्के हािने ािलाह। हुनक नौलागढ आ बनगामक क्शालालेखक उल्लेख हम पूविहं कऽ चुकल ाी। पाल लोकक्त सेहो एक्हकालमे सबठामसँ क्सकुविके क्मविलेमे आक्ब गेल ािलाह। कुक्बजकामतमक एकटा तालपत पोािमे इ क्लखल अवि जे ामिपालदेि नेपालक शासक ािलाह जाक्हसँ स्पष होइि जे विगहपाल ततीयसँ ामिपाल धवि क्मविला आ नेपाल पाल सामाज्यक मुख्य केह्द ािल।

एक्ह अक्वशात क्सिक्तसँ जखन सब क्दशक महतािकाकी शासक लाभाक्वित होइत ािलाह तखन दक्कणक महतािकाकी लोकक्त कएक मुँह तकैत क्हतैि? हमिा लोकक्तके विािणक विकिमाकदेिचविेतसँ जात होइि जे चालुतय सोमेशिा (१०४० १०६९) मालािक पमिाकि ाजिधानी धाकिे जीतलैक्ह आ भोजक भोजके ओतएसँ पडाए पडलक्ह आ डाहलक ाजा कलचुवि कणष्क शक्तिके सेहो नष केलक्ह। हुनक पुत विकिमाक्दत्य रषम अपन बापोसँ एक डेग आगा बढलाह आ गौड कामरपपि दू बेि विजय पाप्त केलक्ह। बाप बेटाक लगातािा उतिा भाितीय विजयक फलसरिप उतिा क्बहाि, बंगाल आ कनौजक ाजिनीक्तमे कािकािी पविितिष्ा भेल। ओ लोकक्त नेपाल धवि आकमण केने ािलाह। विकिमाक्दत्य रषमक पुत सोमेशिा ततीय अपन एक क्शालालेखमे कहने ािवि जे आह्ध, दविड, मगध आ नेपालक शासक लोकक्त हुनका पैिपि अपन मािा टेकने ािलाह।

चालुतय आकमण एक्ह बातके क्सद कइियै जे उतिा भाितिमे ताधवि पमािा आ कलचुवि ािशक पतन पािभ भऽ गेल होएत। जँ

से नक्ह होएत तँ एके बेि चालुतय लोकक्न आह्ह्हि क्वाहाक्ड जँका समस्त्त उति भाति एिँ नेपालके कोना आकात केने क्किहतैि? विाधिक संभाििा नक्ह िहिला संता ओ लोकक्न पोत्साक्हत भए एक्ह सब केतपि अपन पभुति जमौने हेताह। क्हनकक्ह सब संग दक्क्षणसँ बहुत ािस कणााट सेनापक्त लोकक्न उति भातिमे अतिविति भेलाह आ एकक्ह संग उति भातिमे क्मविला नेपालमे कणााट नाह्यदेिकि, बंगालमे विजय सेनक आ कनौजमे चह्ह्रदेि गहढािलक उतािन संभि भेल। गहढािल लोकक्न बढैत बढैत गंगाक दक्क्षणमे मूंगेिि धवि पहुँच चुकल िलाह।

कणााट लोकक्नक उत्मक्ताप जनक िशिक पािक भेलापि क्मविलाक अपन कोनो ािजिशिक ािज्य क्मविलामे नक्ह भेल िलैक। १०९७मे क्मविलामे कणााट िशिक सािपना ताक्ह क्हसाबे एकटा महतिपूणष घटना मानल जा सकइयै। मुदा इ कणााट लोकक्न के िलाह आ कोना क्मविलामे आक्बाके बसलाह आ शासक भेलाह से पूणषरपेण अखनो धवि जात नक्ह अवि आ हमिा लोकक्न क्नक्शात रपे इ नक्ह कक्ह सकैिा जे कणााट लोकक्न अमूक आ अमूक िलाह। जेना क्क हम पक्हने देक्ख चुकल िा क्क ग्याािहम शताब्दीक अंक्तम चिणिमे क्मविला, कनौज आ बंगालमे कीिब कीिब एके समय तीनटा सितिंत ािज्यक सािपना भेल िलि आ ओ तीनू ािज्य तत्कालीन ािजनीक्तमे महतिपूणष भूक्मका अदा केने िलि। क्मविलाक व्यक्ततति क पूणषविकास एक्ह िशिक शासन कालमे भेल आ तक्हयेसँ क्मविलाक पक्सक्द बढलैक।

कणााट लोकक्न अपनाके कणााट क्क्षाय कहैत िलाह। सेनिशि शासक सेहो अपनाके कणााट क्क्षाय कहैत िलाह। क्हनका

लोकक्कक सम्बन्धमे विदानक बीचमे पूणष मतभेद अवि। इ लोकक्क कणाट िलाह एतिा धर्व क्कव्शात अवि काणि नाह्यदेि अपनाके कणाट कुलभूरण कहने र्वि आ सामंत सेन अपनाके कणाट क्क्तायक कुल क्शािमिका। हेमचह्द ियि चौर्धािक मत िक्कह जे देिपालक मूंगेि तामलेखमे जाक्कह कणाट लोकक्कक उल्लेख अवि सम्भिति: उएह कणाट लोकक्क बादमे चक्लके अलग अलग िजियक स्िापना केलक्कह। एक्कमतक समिर्षा केक्कहािएक गोटएक कि्न इ अवि जे जखन मगध क्कर्विलामे पालिशिक हास पािभि भेल तखन उएह कणाट लोकक्क (जे अखन धर्व एक्क केत्मे चुप्पी साधने िलाह) ओक्क क्कस्िक्कसँ लाभ उठाके र्विस्तािि केलक्कह आ कणाट सताक स्िापना सेहो। एकमत इहो अवि जे िजेह्द चोलक आकमणक समयमे बहुत ििस कणाट सैक्कक एम्हि आएल िलाह आ िजेह्द चोलक घुर्वि जेबाक िदि एक्कठाम िक्क गेलाह आ एम्हुिका िजिनीक्कतमे सक्कय भाग लेबए लगलाह। िजेह्द चोल अपनाक गंगाइकोण्ड सेहो कहने र्वि जाक्कसँ पमािवत होइिि जे विजयािभयानक कममे इ गंगा धर्व आएल िलाह। पिंतु सब साधनक सामाह्य अध्ययन केला उतिि इ पतीत होइिि जे िजेह्द चोलक अिभयानक र्विशेर पभािि तत्कालीन उतििभातिक िजिनीक्कतपि नक्क पडल िल। तै इ कहब जे हुनका संगे आएल कणाट लोकक्क एतए बसलाह से िजाक्कके नक्क बुर्वि पडइयै। देिपालसँ मदनपाल धर्व जतिा जे पाल अिभलेख अवि ताक्क सबमे गौड, मालि, खस, हूण, कुक्लक, कणाट, लाट्, चाट, भाट, आक्क शब्दक मात औपचार्विक क्यिहािि अवि आ एक्क शब्दसँ क्कर्विला अििि बंगालक कणाटके जोडब समीचीन नक्क बुिइत अवि।

कणाट शासक लोकक्न कणाटसँ आब्ल क्मविलामे बसल िलाह इ सषिसम्मक्तसँ सीकत अवि वीिद एतिं अवि जे ओ लोकक्न कखन, कक्हआ आ कोना एतए आक्बके हिलाह आ कोन रपे सता हविऔलक्ह। नेपाली पम्पिि आ िशाक्लिमे सेहो क्मविलाक नाह्यदेकि िशके कणाट क्क्तय कहल गेल िक। नाह्यदेि भतिक नाटयशास्तपि एकटा टीका क्लखने िलाह जे सषि पक्सद अवि आ ओक्हकममे ओ अपना सम्बह्धमे क्मक्लक्खत पदिी सबक्हक पयोग कएने िवि नाह्यपक्त, नाह्य, महासामंताक्धपक्त धमािलोक, धमाधाभिूपक्त, क्मविलेश, एिं कणाट कुलभूरण। नाह्य शब्दक क्यिहािं हमिा लोकक्न अह्हिठाढी अक्मलेखमे सेहो भेटइत अवि। नाह्य शब्दक उत्पक्त दविड शब्द ‘ननीय’सँ भेल अवि। नाह्यदेि अपन टीकामे जतिा देशी िगिक उल्लेख केने िवि से सब कणाट शैलीक िगि वकि आ ओहुसँ इ क्सद होइत अवि जे नाह्यदेि कणाटकक हिल होएताह अििा कणाटकसँ हुनक सम्बह्ध कोनो ने कोनो रपे अिश्य हिल हेतक्ह। चाहे कािणि जे भी हिल हो, एतिा धवि क्नक्शत अवि जे ग्याहिम शताब्दीक अंक्तम चिणिमे कणाट लोकक्न उतिं भातिक िजिनीक्तमे सक्कय रपसँ भाग लेमए लागल िलाह।

एक मत इहो अवि जे कलचुवि गंगेयदेकि संग जे कणाट लोकक्न सैक्नकक रपमे एतए आएल िलाह उएह सब बादमे चक्लके शासक भऽ गेलाह पक्त्च इहो मत ने सिषाह्य भऽ सकइयै। एक्हठाम केिलि एतिं स्मणि िखिब आिश्यक अवि जे जँ गंगेय देकि आकमण क्मविलापि भेिं कैल होक्ह तँ से नाह्यदेकि पादूभािसँ ६० ७० िरिषपूिं भेल हेतैह्ह आ ओहना क्सिक्त हुनक

(गंगेयदेि) सैन्यक क्मविलापि अल्धपत्य स्ाािपत केने हेविह्ह से संभि नन्ह बुिाइत अवि। तै एव्ह तकष्के मानब असंभि।

िामिकष्ण कविकि अनुसाि िाष्टकूट लोकक्न सेहो कणाट कहबैत िलाह आ जखन दक्म्मणमे हुनक अिसान समीप एलक्न्ह तखन ओ लोकक्न ओन्हठामसँ हँव्ट उतिक्दक्स बढलाह आ कनौज, क्मविला आ बंगालमे अपन शासन स्ाािपत केलक्न्ह। एव्ह कििनक कोनो शुद ऐक्तहाक्सक अिाि पिम्मािगित आधाि नन्ह अवि। िाष्टकूट इक्तहासक ममषज्ञ स्िगीय सदाक्शि अनंत अल्तेकिसँ हम एव्ह सम्बन्ध जखन विचाि विमिशष कैल तखन ओ कहने िलाह जे क्मविलामे कक्हयो कोनो रूपे िाष्टकूट लोकक्नक शासन ने िल आ ने ओकि कोनो पमाणे अवि। तै िाष्टकूटके एव्हठाम कणाटसँ क्मलाएब उक्चत नन्ह बुिना जाइत अवि।

सुपक्सद फेच विदान क्सलिा लेिीक अनुसाि क्मविलामे कणाट िशिक उत्पक्तक सम्बन्ध सोमेशिि चालुत्य एिं ओकि िशिजक उतिि भाितपि आकमणसँ िकि आ इएह सबसँ समीचीन तकष बुविियो पडइत अवि। विििणक विकिमाकदेि चवितिमे एव्ह आकमणक विििि भेटइयै आ क्पता पुत पौतक अक्भयानक समय सेहो एहन अवि जे क्मविलाक तत्कालीन िाजनैक्तक क्स्िक्तसँ क्मलैत जुलैत अवि। एव्ह आकमणक फलस्िरूपे बहुत िास कणाट िीि, सैन्यक एिं सामान्य लोक सब एम्हि आक्बके क्मविला, मगध, िंग, कनौज आक्द स्िानिमे बक्स गेल िलाह। एव्ह आकमणक फले उतिि भाितिक पिमािि आ कलचुवि िाजिंशिक पिाभि सेहो भेल िल। केम्मेशिकि चण्डकौक्शकमे एकटा किि अवि जाक्हसँ भान

(जात) होइि जे पालशिक मह्पाल कोनो कणाटिजके ह ाौने िलाह ____

"य संक्शत्य पकक्त गहनामाय्या चाणतयनीक्त

हतिनंदान् कुसुमनगि चह्दगुप्तो क्जणाय

कणाटतिध्र मिुपगतानति तानेि हंतुं

दादैपोघः स पुनभिित् शी महीपाल देिः"॥

आब इ कणाट िजि के िलाह से अखुनका क्सिक्तामे कहब कक्ठन। संभितः कणाटकेह्दु विकिमाक्दत्य रषम गौडपि आकमण केने होवि। विकिमाक्दत्यक नागपुि पशक्स्तसँ त एतिा स्पष अवि जे कणाट लोकक्नक सम्पकष चेक्दिजि कणषसँ सेहो िलक्ह आ ओक्हनके लोकक्नक मदक्तसँ मालिके पिक्जत केने िलाह। मुदा इ कहब एक्ह सहयोगक फले क्मवलामे कणाट नाह्यदेिके िजिय सिाक्पत कबिामे सुविधा भेलैक्ह से तकषसंगत नक्ह बुवि पडइयै काणि एक्ह दुनू घटनामे क्तविक जे अंतिर अवि से ततेक व्यापक जे दुनूके जोडब असंभिि। सोमेशिि एिं विकिमाक्दत्य रषमक आकमणक फले जे कणाट सैक्नक एिं सेनापक्त लोकक्न एम्हि एलाह सैह िजियक सिापनामे समिष भेल िलाह काणि एम्हि आएल सेनापक्त लोकक्न एम्हुकिा क्सिक्त देक्ख एम्हिि क्ह जाएब उक्चत बुिलक्ह काणि एम्हि हिबामे दुनू हािमे लडडुये लडडु िल। सेन िशिक संसिापक अपनाके कणाट कुललक्मीक संक्कि कहने िवि। विकिमाक्दत्य रषम आ सोमेशिि ततीय अपन पभािि नेपाल धवि बढौने िलाह। एकि बादसँ विक्भन भािितीय िजिा लोकक्न नेपालपि अपन पभािि बढेबाक पयास केलक्ह।

पाल लोकक्न जखन कलचुविकि संग लटपटाएल िलाह

तखने चालुतय लोकक्नक आकमणके फले उत िभातिक कैक स िनिपि कणाट लोकक्न पसर्व िचुकल िलाह आ ओक्हठामक िजिनीक्तमे हस्तकेप कबि शुर कऽ देने िलाह। एक्ह तथ्यक पमाण हमि विकिमाकदेि चर्वतिसँ भेटइत अर्व ि। १०५३ ई. क आसपाससँ चालुतय लोकक्न एम्हि सक्रय र पे हुलकी बुलकी देमए लागल िलाह। १०५३ कऽ केलािडी अक्भलेखसँ इ जात होइि जे सेनानायक भोगसि िगिके जीक्त लेने िलाह। इ सोमेशि पिमिक सेनानायक िलाह। चालुतयक एकटा सामंत, जकि नाम आच िलैक, सेहो विकिमाक्दत्य रषमक समयमे िगि धर्व ि आकमण केने िलाह। एक्ह दुनू घटनासँ इ स्पष भऽ जाइत अर्व ि जे क्हनके लोकक्नक संग आएल सेनापक्त, सेनानायक, सामह्त, क्सपाही आक्द व्यक्तत एम्हुिका क्सि क्त देक्ख एम्हि ि क्हि जाइ जाएत गेलाह। नाह्यि अिि हुनक पूि षि एहने एकटा सामंत सेनापक्त हिल हेताह जे नेपालक तलहटी क्मर्व िलाके उपयुतत बुर्व ि ओक्हठाम बक्स गेल हेताह आ चालुतय िशिक िपिस भेलाह अपन स्तिंत सता घोक्रत कए क्मर्व िला आ नेपालक शासक बक्न गेल हेताह। शासक भेला उतिि ओ अपनाके महा सामंताक्धपक्त कहैत हिलाह से एक्हबातक दोतक विकि जे िजा हेबाक पूि षिहुनक क्क क्सि क्त िलि।

नाह्यदेि (१०९७ ११४७)प हम उपि देक्ख चुकल िी जे चालुतय आकमणक समयसँ चालुतय सेनाक विशेर भाग क्मर्व िला आ बंगालमे बक्स गेल िलि। नाह्यदेि क्मर्व िलामे कणाट िशिक संस्िापक भेलाह। एक्हठाम इ स्मिणि िखिब आिश्यक जे एक्ह िशिक ततिािधानमे समस्त पूिि भाति क्मर्व िले एक गोट एहेन िजि्य िलि जाक्हठाम २२७ िरिषधर्व ि (१०९७ १३२४) मुसलमान लोकक्नक

कोनो ाजिनीक्ताक पभाि नव्ह जवम सकलैक। ाजिनीक्ताक एिं सास्क्रकताक दवा कोणसँ नाह्यदेिक शासन काल तँ महतिपूणष अवि ये पञ्चिय कणाटिशक शासनके सिणषयुग कहल गेल ैिक कएक तँ एव्ह युगमे क्मविलामे लगभग १४००-१५०० ाािक बाद सितंत संगवछत ाजिय एिं शासन पणालीक सिापना भेलैक आ कला, सावहत्यक संगवह संग मैविली भाराक विकास सेहो भेलैक। नाह्यदेि अपन दीघष ाजिकालमे पाल, कलचुिि, सेन आ गहढिालिक पािस्परविक संघरषक मध्य अपन दूिदवशषता, नीवतकुशलता, एिं ाीिताासँ अपन ाजियक सिापना केलवह्ह आ उतािति ओकाि शवक्तशाली बनौलवह्ह। ओ अपना िशिक संसिापक संगवह संग एकटा सिािोष शासक सेहो िलाह जवाक सिान तत्कालीन भााितीय ाजिा सबवहक मध्य महतिपूणष िल। नाह्यदेि १०९७ इ.मे वसमािनगढमे ाजिगदीपि बैसलाह आ कणाट िशिक सिापना केलवह्ह। क्मवलवखत श्लोकसँ उपािलत क्मविक भान होइयै आ कहल गेल अवि जे इ लेख वसमािनगढ (जे सम्पवत नेपालमे अवि)सँ पापत भेल अवि।

''नह्देह्दु विह्दु विधु सवम्मतशाकिरे
सच्चविणे वसतदले मुवक्वसवद्ध कावथ्याम्।
सीि(ती) तौ शनैशािवद्न किर्विािलग्ने
शी नाह्यदेि नपवतव्यषधीत ािस्तुम्''

शक् १०१९ (=१०९७ ई.)क सीिती नक्तमे शवन वद्न(शािणि सप्तमी)के नाह्यदेि ाजिा भेला याने क्मविला ाजियक सिापना केलवह्ह।

१६२८ ई. भतगािक ाजिा जगज्योवतमल्ल वलवित

मुक्दतकुलियाशसँ सेहो जात होइि जे नाह्यदेकि १८ जुलाइ १०९७के क्मविला िज्यक सिपना केलक्ह। क्मविला िज्यक सिपनाक कममे नाह्यदेकि सिन सिषिमि क्ह आ तकि पमाण हमिि नेपालक पम्मिि एिँ िशािली आ क्शलालेखसँ भेटइत अवि। पतापमल्लक क्शलालेखमे सेहो एक्ह कमे नाम अवि। नाह्यदेि क्मविला िज्यक सिपना क्मविला नेपालक क्समानपि क्समिौनिगढमे केने िलाह आ ओक्हठामसँ चार कात पसलि िलाह।

मैविल पम्मििमे एकटा किि सुक्कत्त अवि जे एिँ पकािि अवि। कहल गेल अवि जे पािभिमे नाह्यदेि नीलवािि पात (दक्कण भाित)मे िज्य किैत िलाह आ ओतक्हसँ ओ क्मविला पात आएल िलाह। घुमैत क्फित ओ सीतामढी क्जलातगत नाह्यपुि पिगिनासि पुपिि गामक समीप कोइली गाममे विशाम केलक्ह। एकक्दन ओ अपन खेमाक कातसँ एकटा विरिधि सपके जाइत देखलक्ह जाक्हपि क्ममक्लक्खत श्लोक क्लखल िल—

"िमोक्ति नलोकेक्त क्ति िजा पुर खा:

अलकष्मय धनं पाप्य नाह्यो िजाभविष्यक्त"।

पम्मिि के हटा जँ देखल जाइक तँ एक्हसँ इएह क्सद होइि जे अलक्कत्त धनक पाक्प्त कए नाह्यदेि क्मविलाक िजा हेताह। कहल जाइत अवि जे हुनका एहेन धन पाप्त भेल िलक्ह जाक्हसँ हुनका िज्यशक्तत अजषा कििामे सहायता भेटल िलक्ह। ओ दक्कणमे नीलवाििमे िजा िलाह अिि नक्ह से कहब तँ कक्ठन अवि मुदा एतबा धवि जातक्य जे क्मविला पहुँचलाहपि हुनका क्किु अलक्कत्त धनक लाभ अिश्य भेलक्ह आ ओ ओक्हसँ लाभाक्न्वत भए

क्षवि ला ाज्िय पाप्ि कबािमे अगसि भेलाह। तखन क्षवि लामे कोनो पकाि कि वि ािधक संभािना नक्षह िक्षह गेल ि ल।

नाह्यदेि कि कामर पक धमषालक समकालीन कहल गेल ि क्षह। धमषालक शासनकालमे काव्लका पुिाणिक संकलन भेल ि ल आ ओक्षह काव्लका पुिाणिमे सबसँ पाचीन उल्लेख भि ति भाष्यक अवि जकि लेखक नाह्यदेि ि लाह। ओक्षह कालमे क्षवि लासँ बासतवि या बाह लोकक्षक पवि ाि ि असम गेल ि ल। क्षवि ला ताक्षह क्षदन धवि तंतक पमुख केह्द बक्षन चुकल ि ल आ काव्लका पुिाणिक संकलनक मूल उदेश्य ि ल क्षवि ला आ असमक बीच एक पकाि कि सास्कृक्षिक सम्पकष सिािपत कबि। नाह्यदेि, जे क्षक अवमनि गुप्तक नामे सेहो पक्षसद ि लाह, क पसंग के.सी.पाण्डेयक वि चाि ि क्षह जे ओ १०१४ १५ इ.मे भेल होएताह मुदा से कोनो रपे माह्य नक्षह भऽ सकइयै आ एक्षह पसंगक तकषहम आनठाम उपक्षसि त कऽ चुकल ि ी (दष क्य काशी पसाद जायसिि ल संसिि ान दाि ि पकाक्षशत क्षबहाि कि बहत् इक्षतहास अंगेजीमे)।

क्षसमिौनगढ क्षशलालेखमे नाह्यदेि कि क्षिवि स्पष अवि जकि संकेत हम पूिष्हिं दऽ चुकल ि ी। नाह्यदेि कि मंती शीधि दासक एकटा क्षबनु क्षिवि क क्षशलालेख, जे अह्ह्िठाढी गाममे अवि , क पाठ क्षनमक्षलक्षखत अवि ——

“ॐ शीमनाह्य पक्षजेता गुणि ति महाणवि ः

यत्कीत्या जक्षतम् वि शे क्षदतीय कीि ि सागि ।

मंक्षिणा तस्यनाह्यस्य क्षत ि शाबज भानुना

दि ीयकावि ति शीधि ः शीधाि णिच

यस्यास्य बाल्मीकेर्विजयो पबन्ध जलधौ
व्यासस्य चात्यद् भुते िदैणि दि गद
चतुर्हियैश विस्तावित असमाकम्
तापिुषावार्गामिसि:
कोिकाितियादि यदालबचोप्य"।
१६४८क पताप मल्लक क्शालालेखमे नान्यदेिक िशक कम एर्ि पकार्ि अिि ___
"आसीत् शी सूर्यवंशे िध्ुकुल नपजो िमिचन्द्रो
नपेश: तदंशो नान्यदेिऽकि पक्ताभिति सुत:
गंगदेि:। तत्सुतोऽभूनक्संहो नापिक्तातुिलस्सात्सुतो
िमक्संह: तज्जः शी शक्तक्संहो धािपाक्ताभित्
भूप भूपालक्संह तस्मात्करणाट चूडामक्र्ा
विहिवियुक्क्संह देिस्याशि"।

ओक्हकाल िजिनीक्तक पर्विक्सिक्ताक अध्ययनसँ हमि लोकक्त नान्यदेिक उक्चत मूल्याकन कऽ सकैत ि। बंगालमे सेन िशक स्ािपना भऽ चुकल िल आ कनौजमे गहढिल िज्य सेहो जक्म हिल िल। मूंगेिक केत्त पाल लोकक्त क्समैक्टके आक्त गेल िलाह। जखन पाल, सेन आ गहढिल अपने अपनेमे बािल िलाह तखन नान्यदेि क्मिलासँ नेपालपि आकमण केलक्ह आ ओकि अपन िज्यमे क्मला लेलक्ह। सेन सबके हिबाक हेतु नान्यदेि गहढिलसँ बक्ढ़या सम्बन्ध िखैत िलाह आ एकि पमाण हमि विदापक्ताक पुरर पिक्तासँ सेहो भेटइत अिि जाक्हमे क्लखल अिि नान्यदेिक पुत मल्लदेि िजा जयचन्द्रक ओतए सम्माक्तत भािि हैत िलाह। विजयसेनक देिपाडा क्शालालेखसँ इ जात होइि जे नान्यके पिक्जत

कए विजयसेन वापिस्ता कऽ लेने छलाह। सेन आ कणाट शिक बीच बीबीव खटपट होइते छैत छल आ पूर्णा वर्मिला (सहसिा पूवाषा)क क्षेत्रमे दुनूक कोनो ने कोनो रूपे विर्वाट चलते रहलाह। एही हेतु नान्यदेव गहढल लोकनिक संग नीक सम्बन्ध रखैत छलाह। नान्यदेव मिथिलामे मात कणाटशिक स्थापनेटा नहि केलन्हि अपितु एकरा दृढ सेहो केलन्हि आ समस्त मिथिलापर अपन एकछत्र शासन कायम केलन्हि। गण्डकीसँ कौशकी धरि आ हिमालयसँ गंगाधरि अपन राज्यक विस्तार कमिमे ओ सक्षम भेला। मिथिलाक इतिहासक संदर्भमे नान्यदेवकेँ उएह स्थान प्राप्त छन्हि जे समस्त भारतिक इतिहासक संदर्भमे चन्द्रगुप्त मौर्यके। जनक शिक पशात् एहन पशस्त राज्य मिथिलामे आ कहिओ नहि बनल। ओहि समयमे मिथिलाक जे राजनैतिक स्थिति छलैक ताहिमे नान्यदेव एहिसँ बेसी किछु कइयो नहि सकइत छलाह। राज्यक स्थापनाक संगहि संग ओकरा सुदृढ बनेबाक हेतु ओ संगठित शासन विधानक जन्म सेहो देलन्हि।

नान्य अपनाके शीमहासामंताधिपति, शीमनान्यपति, कणाटकुलभूषण, धमाधार भूपति, राजनारायण, नृपमल्ल, मोहन, मुरारि, पत्यर्यगजपति, मिथिलेश, सामंताधिपति आदि कहने छथि। अन्धराठाढी अभिलेखमे हुनका ‘शीमान’ कहल गेल छन्हि। एहि सबसँ हुनक पूर्वक स्थितिक भान होइयै आ बुझि पडइयै ओ पूर्वमे सामंत छल होएताह आ बादमे शासक भेल होएताह। ताहि दिनक अव्यवस्थित राजनैतिक स्थितिमे ओ मिथिलाक व्यक्तित्वक विकास केलन्हि आ मिथिलाके एकटा रूप देलन्हि। मिथिलाक चौहदीक परिभाषा जे हमरा लोकनि देखइत छी तकरा राज्यक रूपमे

चवताि षउएह केलक्ह आ तै ओ पशंसनीय िव। ओ सयिं एक पैघ कूटनीक्ज एि सफल योदा िलाह। चम्पाणिमे िजधानीक सािपना कबि (क्समौनिगढ) हुनक कूटनीक्जताक पवचिय देने िव। ताक्ह क्दनमे दिद गण्डकी केत्त धव पवशामक िज्य िल आ कवलाक सीमा ओक्ह िज्यसँ कलैत िल आ ओम्हि यशः कणष्क नजवि सेहो एक्ह क्दक्स लगले िल। तै नाह्यदेि ओक्ह खतासिँ अपन िज्यक किाष ओम्हि अपन िजधानी बनौलक्ह जाक्हसँ पवशाम आ उतिि दुनूक सुिक्ष हो। एक्ह वचािसँ ओ अपन िज्यक िजनीक्तके सेहो संचाक्लत कैति िलाह।

नाह्य जे टीका क्लखने िव ताक्हमे ओ अपनाके सौिीि आ मालकि वजिेता घोक्त कएने िव —

“क्जत सौिीि िीिणि सौिीकि उदहतः”

“लुप्तमालि भूपाल कीक्तिमालि पञ्चमीम्”

“बागक्ल केक्त कवता कवलेशिणि”।

“शी िगस्थैक भूकमलक्लत मधुि िवािमंत

बंगाल गौड, पौढ पागभािसािि

कुकुभमुभयािसाधयक्हशमुच्चैः।

संगामे भैिियः पक्लसक्त

मुहुधूप्नीयस्य कण्ठे, सौिीि

ध्यायमोनं व्यक्धतकतमक्तः भूपक्तः नाह्यदेिः”॥

सौिीि, मालिि, बंगाल आ गौडके पिक्जत कबाक शेय ओ अपनापि लैत िव सौिीि, मालिपि संभतिः ओ कवलेशि होएबाक पूविहं वजिय पाप्त केने होएताह। बंगालक पश लऽ कए हुनका सेन िशसँ िििक्ट भेलक्ह तकि िणिषा उपि कऽ चुकल िी

आ संभि जे अंततोगत्वा हुनका बंगाल गौड़पर विजय प्राप्त भेल होएतन्हि। बंगाल आ गौडक पराजय नान्यदेव आ विजयसेनक बीच मनोमालिन्य भेल होएतन्हि आ शत्रुता सेहो भेल होएतन्हि से संभव। दिनेश चन्द्र सरकार सेनवंश आ कर्णाटवंशक सब तथ्यक अध्ययन केलाक पश्चात एही निर्णयपर पहुँचल छथि जे विजयसेनके नान्यदेवक विरुद्ध कोनो खास सफलता नहि भेटल छलन्हि। वारीन्द्र मोहन सरकार सेहो एहि बातसँ हमर लोकनिके अवगत करौने छथि जे सेनक मिथिलामे शासन अथवा राज्य हेबाक कोनो ठोस प्रमाण नहि अछि। देवपाड़ा शिलालेखक अध्ययनसँ एतबे प्रमाणित होइछ जे विजयसेन नान्यदेव आ राघवक घमण्डके चूर केलन्हि।

मिथिलामे अपन अवस्थितिके सुदृढ कए आ अपन चारू कात विस्तारक कोनो आशा नहि देखि नान्यदेव नेपाल दिस अपन ध्यान लगौलन्हि। ताहि दिनमे नेपालोमे कैक गोट राज्य छल आ ओहिमे आपसमे आधिपत्यक हेतु संघर्ष होइत रहैत छल। नान्यदेव एहि स्थितिसँ लाभ उठौलन्हि आ नेपालक राजनीतिमे हस्तक्षेप करब प्रारंभ केलन्हि। नेपाली परम्पराक अनुसार ओ समस्त नेपालके अपना अधीनमे केलन्हि आ नेपालक स्थानीय शासक, पाटन आ काठमाण्डुक जयदेव मल्ल आ भातगाँवक आनंद मल्लके गद्दीसँ उतारलन्हि। नेपाली परिपाटीक अनुसार नेपालक राजवंशके नान्यदेव समाप्त नहि केलन्हि बुझि पड़इयै जे जखन ओ लोकनि नान्यदेवक सत्ताके स्वीकार कऽ लेलथिन्ह तखन नान्यदेव हुनका लोकनिके अपन अधीनस्थ शासक बनाके छोड़ि देलथिन्ह। सामंतवादी व्यवस्थाक इ एकटा प्रमुख बात छल। नेपालक इतिहासकार दिल्ली रमण रेग्मीक अनुसार नान्यदेव सम्पूर्ण नेपालके नहि जीतने छलाह

आ हुनका ११४१मे फेि दोसि बेि नेपालपि आकमण किए पडल िलक्हि। नाह्यक पिीके भेलापि पुनः ठाकुिी िशक लोग अपन आवधपत्य बना लेने िलाह। नेपालपि नाह्यदेि जे कणाट िशक सिापना केलक्हि तकिा हुनक िशज हविसंह देि बादमे सुदढ केलविह्ह।

विजेता, िाज्यकमाता, कुशल पशासक एिं संगठन कताक अक्तिवतित नाह्यदेि सियं एक बहुत पैघ विदान िलाह आ भितिक नाटयशास्तपि एक गोट टीका सेहो वलखने िलाह। शीधि दास एिं तिदेि नाह्यदेकि पधानमंती िलविह्ह। शीधि दासक वपता बटुदास सेनक महासामंत िलाह आ शीधि दास सेहो महामाण्डवलक िलाह। क्हनक मूल िाजधानी वसमिौनगढ (नेपाल)मे िलक्हि आ दोसि िाजधानी नाह्यपुिमे। नाह्यदेि ५० ििष धवि िाज्य केलक्हि आ सब कािु सफलतापूिक उपलब्ध कए वमविला िाज्यके एकटा सििप पदान केलवि। वमविला तक्हयासँ आइ धवि संस्कवतक एकटा पधान केह्द बनल अवि। िाजनैवतक इवतहासक महतकि लोप भेलो उतिा सास्कवतक दवष्कोणसँ नाह्यदेकि शासनक अपन अलग महतिा अवि।

मल्ल देपि विदापवत अपन पुरुि पिीकामे मल्लदेकिे युििाज कहने िवि पिञ्च वमविलामे कणाट िशक शासन शंखलामे नाह्यदेकि बाद गंगदेकि नाम अिइयै तै मल्लदेकि युििाजक संजा एकटा समस्या बवन गेल अवि। सभ साधनक अध्ययन केलापि इ पतीत होइिि जे नाह्यदेकि बाद वमविला िाज्य संभितिः दुनू भाइमे बवट गेल िल आ दुनू गोटए अपन अपन केतपि शासन कित हेताह। पुरुि पिीकाक अनुसाि नाह्यदेकि पुत मल्लदेि बडड

साहसी आ स्वाभिमानी छलाह। ओ कहियो ने धरि कनौजक जयचन्द्रक ओतए छलाह आ फेर ओहि ठामसँ कर्णाटकक राजाक ओतए आबि गेल छलाह। मैथिली अनुश्रुतिमे इ कहल जाइत अछि जे दुनू भाएमे पटइत नहि छलन्हि आ तैं जखन गंगदेव नेपाल एवं तिरहुतक संग बान्हि छलाह तखन मल्लदेव हुनक मदति नहि केने छलथिन्ह। जयचन्द्र मल्लदेवक वीरतासँ बड्ड प्रभावित छलाह। सहरसा जिलामे मलडीहा आ मल्हनी गोपाल मल्लदेवक नामपर बसल अछि। भीठ भगवानपुरमे मंदिरमे एकटा अभिलेख अछि जाहिमे लिखल अछि "*ॐ श्री मल्लदेवस्य*"। किंवदंती अछि जे भीठ भगवानपुर मल्लदेवक राजधानी छल। भीठ भगवानपुर गंधवरिया राजपूतक केन्द्र सेहो मानल गेल अछि आ गंधवरिया परिवारमे सेहो एकटा मल्लदेवक नाम अबइयै। तैं इ कोन मल्लदेवक शिलालेख थिक से कहब असंभव।

विभिन्न तथ्यक परीक्षणक बाद हम एहि निष्कर्षपर पहुँचल छी जे नान्यदेवक पश्चात मिथिला राज्यक विभाजन भेलैक आ ओकर पूर्वी भागपर मल्लदेवक आधिपत्य छलैक। पश्चात मल्लदेवक वंशज सेहो एहि क्षेत्रपर शासन केलन्हि जकर अप्रत्यक्ष रूपे कतेको प्रमाण भेटइत अछि। राज्यक बटवारा भऽ गेलसँ कर्णाट वंशक प्रभाव कमजोर अवश्य भऽ गेल होएतैक आ तैं नान्यदेवक पश्चात हमरा लोकनिके कर्णाट राज्यक विशेष विस्तार देखबामे नहि अबइयै।

संगीतज्ञ कालक्रमानुसार कानूनगोय एकठाम लिखने छथि जे १२१३-१२२७क बीच मिथिलामे कोनो कर्णाट अथवा मल्लदेवक शासन छल मुदा एहिठाम स्मरणीय जे एहि नामक कोनो शासक मिथिलामे नहि भेल छथि। नेपालमे एहि नामक शासक भेलाह अवश्य परञ्च

ओ कणाटिशिक नक्ह िलाह आ ने ताक्ह क्दनमे नेपालक कोनो पभाि क्मविलाक कोनो भागपि िल। इहो संभि अवि जे कानूनगोय महोदय मल्लदेिके अविमल्लदेि बुवि लेने होवि। एकि काणि हमि बुिने इ अवि जे क्मविला पिमािमे कहल गेल िक जे नाह्यक एकटा पुत नेपालमे शासन किंत हिविह्ह आ चूंक्क नाह्यक एकटा पुतक नाम मल्लदेि िलक्ह तै कानूनगोय साहेब ओक्ह नामके अविमल्लदेिक संगे क्मझि िक देने होवि। तै हम अपन एक लेखमे (जे आनठाम पकाक्शत अवि) मल्लदेिके क्मविलाक एकटा विसिल िजाक संजा देने िी। मल्लदेि पूिी क्मविलापि तँ िजिय कविते िलाहे आ संगक्ह नेपालक किु भागपि सेहो। भीठ भगािनपुि एकटा केह्रदीय सिल िल तै ओकिा ओ अपन िजिधानी बनौलक्ह काणि ओक्हठामसँ ओ अपन शासन बक्ढया जका दुनूठाम चला सकैत िलाह। कहल जाइत अवि जे हुनके दिबािमे स्मक्तकािि दिक्षान उपाध्याय सेहो िहैत िलाह जक्कक एकटा क्शलालेख आसी (मक्टआिि) (हाटी पिगिना)सँ उपलब्ध अवि। ओ मल्लदेिक समयमे धमाक्धकिणिक पदपि क्नयुतत िलाह। क्शलालेख एिि पकािि अवि ___

“जातो िशे क्मलि पंचाक्मधाने

धमाध्यक्ो िदक्षानो भििशात्।

देिस्यागे देियक्न धिजागा

र ढ कतीऽसिपदैन तेयम्”॥

भीठ भगािनपुिक मंक्दि आ पोखिसँ बहिाएल बहुत िसि बस्तुजात एक्ह बातके पमाक्णत किंत अवि जे पाचीन कालमे इ एकटा महतिपूणष सिान िहिल होएत। कलात्मक िस्तुजात जे

कणाटकालीन बुवि पडइत अवि से ओतए पचुि मातामे बहिएल अवि आ कक्ि िस्तु तँ एहनो अवि जकिा अपूषि कहल जा सकइयै। एकि विस्तत विििण कतेक ठाम हम कैल अवि। कणाट कालीन पुितात्वकि महतकि बहुत िसि िस्तु बहेडासँ सेहो बाहि भेल अवि। भगिानपुकि डीह डाबि, पोखवि आ मंवदि विस्तािसँ देखलासँ आ सामविक दवक कोणसँ ओक्हगामक चौहदीक अध्ययन केलासँ इ बुिना जाइत अवि जे मल्लदेि ओक्ह सिनिके अपन िाजधानी बनौने हेताह आ ओतक्हसँ ओ नेपाल आ सहिसा पूिवणया केत्र धवि अपन िाज्यक वनयंतण कैित हेताह। पाचीन कालमे सहिसा पूिवणया जेबाक िास्ता, बाट घाट, सबटा एक्ह दऽ कऽ िलि आ नेपालो जेबामे हुनका एक्हठामसँ सुभीता होइत हेतक्ह। ओक्ह सिनिक उत्खनन भेलासँ ओक्हपि आि पकाश पडबाक संभािना अवि। जाधवि आि कोनो निीन तथ्य हमिा लोकवनक समक नक्ह अिइयै ताधवि मल्लदेिकि ऐवतहावसकता संवदग्धे मानल जाएत। मल्लदेिकि सम्बन्ध अखन आ शोधक अपेका अवि।

गंगदेि १९४७ ई.मे नान्यदेिकि मत्युक उपिाित आ पाविािविक कलह एिँ उपिातिक पिािक्त गंगदेि वमविलाक िाजगदीपि आसीन भेलाह। ओ बंगालक िल्लालसेनक समकालीन िलाह आ स्ियं एक महतिाकांकी शासक सेहो। विजय सेनक हािि अपन वपता नान्यदेिकि बेइज्जतीक बात ओ वबसिल नक्ह िलाह आ ओ अिसिकि खोजमे िलाह जाक्हसँ एकि बदला लऽ सकैि। गंगदेि आ गांगेयदेिकि पशपि इवतहासकाकि मध्य जे एकटा विािद चलल िहल अवि ताक्ह वदस हम पाठकक ध्यान पूिवहं आकष कए चुकल िी। िामायणक पुवष्पकामे जे एकटा गांगेयदेिकि विशेलेरण

भेल अवि ताक्‍ह पसंगमे क्षवि लाक इक्तहासकाि उपेह्‍द ठाकुि कि वि चाि ि क्‍हह जे ओ गागेयदेि कलचुवि ि शिक ि लाह आ हुनका मक्‍हपालसँ संघरष भेल ि लक्‍हह। पक्ष्चि हमाि एक्‍हठाम एक्‍ह पशपि वि चाि कबिाक हेतु क्मक्लक्‍खत बातके ध्यानमे ि ाखिए पडत।

ि मिायणक एक पोि ि मे ि कि ‘गौडधि जि’ शीमद गागेयदेि एक्‍हमे पुण्याि लोक शब्‍दक क्यि हाि अवि आ वि नि ु कोनो संकेत संि ति ् १०७६क। दोसि पाठमे ‘गौडधि जि’क सि ािनपि ‘‘गर डधि जि’’ ि कि। उपेह्‍द ठाकुि महामहोपाध्याय क्ष्ाि शीक मतसँ सहमक्त पगट कएने ि वि ि। मुदा एक्‍हठाम वि चाि णीय वि रिय इ अवि जे १०७६ शक ि लि अि ाि वि कि म आ दोसि बात इ जे मक्‍हपाल पि ि मक समयमे पाल ि शिक पुनर दाि भेल ि लि आ तै ओक्‍ह कालमे कलचुवि लोकक्‍ाके ‘गौडधि जि’क उपाक्धसँ वि भूक्रत हेबाक कोनो संभाि ना नक्‍ह बुि ाइत अवि। मक्‍हपाल पि ि म अपन सामाज्यक सीमा बनाि सि धवि बढौने ि हैि आ जँ कलचुवि गागेयदेि के से शक्‍त ि क्‍हतक्‍ह तँ ओ अि शिये बंगालक मक्‍हपालक पगक्‍ाके ि क्‍ाकतैि पक्ष्चि से कहा हमाि लोकक्‍ाक देखबामे अि इयै। दोसि बात इहो जे क्षवि लासँ मक्‍हपालक काल अक्मलेखो भेटल अवि। संि तिक संकेत नक्‍ह ि हिब सेहो एकटा क्‍रगमक जह्म दैत अवि। पोि ि क्‍लखक्‍हाि शीककि आत्मज कायसि क्षवि लाक नि ि गाि लिी मूलक एकटा पमुख क्यक्‍त ि लाह आ अहुँसँ इ पमाक्गात होइि जे अपन तीि भुक्‍ातक महाि जाक्धि ाजि पुण्याि लोक शी गंगदेि कि पसंगक्‍हमे क्लखने हेताह।

तत्कालीन ि ाजिनैक्‍ाक अि सि ाकिे ध्यानमे ि क्ख जखन हम एक्‍ह साधनक अध्ययन कि ति ाि तखन इ स्पष भऽ जाइत अवि जे बाि हिम शताब्दी उतिाि दिषे बंगालमे पालि शिक हास भऽ ि हिल ि लि

आ बंगालक सेनिश आ कर्विलाक कणाट लोकक्क ओक्ह पाल सामाज्यपि अपन बाद दका लगौने िलाह। एहेन बुवि पडइयै जे पाभिमे कर्विलाक कणाट आ बंगालक सेन संगक्ह कक्ल पालके पिस्तत कए ओतएसँ भगौलक्ह आ जखन आपसी बटबािकि पश उठल तखन दुनूमे संभतिः विािद भेलक्ह आ सेन आ कणाट िशमे िगडा भेल। पाल लोकक्कके पिवजत कबािक शेयक कािणे कर्विलाक गागेयदेि ‘‘गौडधिज’’क उपाक्सँ विभूक्त भेलाह। तै िमायणक पुक्पकामे उक्लवखत ‘गागेयदेि कर्विलाक गंगदेि विकाह जे कर्विलासँ बंगाल धवि अपन शासनक पसाि केने िलाह आ बल्लालसेन कर्विलाक बढैत शक्ततसँ सशंकत भऽ भागलपुि धवि गंगाक दक्कणमे अपन सता बढा लेने िलाह।

बल्लालसेनक एकटा अक्लेख धातु सनोखि (भागलपुि)सँ पाप्त भेल अवि जे एक्हबातके क्सद कइयै। बल्लाल चवितिमे कहल गेल अवि जे बल्लालसेन पंचगौड (िग, िगडी, िहि्द, िढ आ कर्विला)क शासक िलाह पिञ्च हमिा बुिने पक्हल चाविपि हुनक शासन िलक्ह आ पाचमके ओ अपन बापक अमलक पक्तष ाक रपमे जोडने िलाह। पूिहिं इ देखाओल जा चुकल अवि क्क कर्विलापि सेन िाज्यक कोनो स्पष पमाण नक्ह िल तै आब इ कविषिद रपे कहल जा सकइयै जे गंगदेिक शासन कालमे कर्विला पूणष पेण सितंत िल आ कणाट लोकक्क अकुण्ण भाि एक्हठाम िाज्य कौित िलाह। दुनू िाज्यक सीमा क्लैत जुलैत िल तै यदा कदा टंट घंट भऽ जाएब सिाभाविके िल। लक्कमण संितृ पचलनक साक्य दऽ के इ कहब जे कर्विलामे सेन िशक िाज्य िल से समीचीन पतीत नक्ह होइि आ ने एकिा क्सद कबािक हेतु

कोनो ठोस पमाणे अवि ।

गंगदेि अपन मंती शीधि दासक सहायतासँ उतमोतम िक्तिसँ अपन िजि काज चलबैत िहलाह। हुनका समयमे कणाट शासन पणालीके दढ बनाओल गेलैक। िजिस पशासनके ि‍ँजाक्तक ढंगपि चलेबाक हेतु ओ अपन िज्यके पिगनामे विभाक्जत केलक्ह आ पत्येक पिगनामे मुक्खया अिि पधान क्नयुक्त भेलाह जे 'चौधिि' कहबैत गेलाह। न्याय पशासनक हेतु पंचायती व्यिसिाक सिापना भेल। जन कल्याण आ कवषक उनक्तक हेतु ओ अपना िज्यमे अनेकानेक पोखवि एिँ जलाशयक व्यिसिा केलक्ह। अपन िज्यके ओ अपना शासन कालमे सुिक्षत िखबामे समिष भेलाह। पक्शममे गहढिाल, पूिबमे सेन आ दक्क्षणमे पाल लोकक्नसँ अपन सामाज्यक सुिक्षा िखैत ओ नेपालोपि अपन अक्धकािक दािि देनक्ह िहलाह आ एिँ पकािे नान्यदेि दािा सिाक्पत िज्यके गंगदेि आिि दढ बनौलक्ह जाक्हसँ क्मविलाक पक्तषा चार कात बढल। गंगदेिक समयमे क्मविलामे शाक्न्त आ सुव्यिसिा बनल िहल आ कोम्हिसँ कोनो आकमण नक्ह भेल। इएह कािण िल जे ओ शासन संगठन आ पशासक्नक सुधाि क्दस अपन ध्यान देबामे समिष भेलाह। नान्यदेि तँ विजय पाप्त कैक िज्यक जन्म देलक्ह आ गंगदेि ओकिा संगक्ठत केलक्ह आ शाक्क्त पदान केलक्ह। इ एकटा अजीि संयोग विक जे क्पता पुत दुनू एके िंग कूटनीक्तज, दूिदिशी आ कुशल विजेता आ पशासक बहिलाह।

बािहम शताब्दीक शीिल्लभाचायष (न्याय लीलाितीक लेखक) क्नमक्लक्खत िितय एकटा तत्कालीन कणाट शासक उल्लेख कैित िवि ___

“यकद च गगनमातमाहिथ्यधमषाह्यमकिह्दात्
काश्मीर किषा कुड्डुम गिेण कणाट चककिष(ललना)
ककिमकिह्दात्”

आब इ कणाट चककिष (ललना)के लाह से कहब असंभि। नाह्यदेि, मल्लदेि आ गंगदेि सब भऽ सकैत वि। ‘ललना’ शब्द मैविलीमे िट बच्चाक हेतु पयोग होइत किक तै हमि बुिने एक्कसँ नाह्यदेकि कोनो पुतक संकेत होइयै, आब ओ मल्लदेि हेताह अिि गागदेि से कहब कक्ठन।

शी लििभाचायषएकटा शासन कति िजाक नाम सेहो क्लखैत वि “शी शाक्ल िहनो नपक्त” अहु िजाक पहचान असंभि अवि। क्नविलासँ पाप्त मैविलीक पाण्डुक्लक्प सब से एहेन बहुत िसि िजा सबहक नाम भेटइत अवि जकि कोनो िजिशिसँ क्नलाएब अिि जोडब असंभि भऽ जाइत अवि। क्नविलाक इक्तहासक साधनो अखन धवि इएह सब हिल अवि तै एकि क्तस्कािि कबि असंभि।

नक्सिंह देि (११८७-१२२७) गंगदेकि पिक भेलापि क्नविलाक िजगदीपि नक्सिंह देि बैसलाह। हुनका समयमे क्नविला आ नेपालक मध्य कक्ि खट-पट भेल िलि आ एकि नतीजा इ भेल जे नेपाल क्नविलासँ फिकि भऽ गेल। िमिदत अपन दान पदकामे नक्सिंह देकिे कणाटाह्रिय भूरणः- कहने वि। िमिदत हुनक मंती िलाह आ िमिदतक अनुसािि नक्सिंह देि क्नविलाक अकुण्ण शासक िलाह। वदापक्तक पुरर पीिकासँ जात होइि जे नक्सिंह देि अपन क्पता मल्लदेकि संग कनौज गेल िलैि। ओतएसँ ओ क्दल्ली सेहो गेल िलाह आ शहाबुदीन गोिकि सेनामे

सेनानायकक काज कएने छलाह जाहिसँ गोरी हुनकासँ पसन भऽ हुनका बंगालामे अकुण्ण कबिाक हेतु छोड़ि देबाक आशासन देने छलथिन्हि। इ चाचाक देव चौहानक पमि कमत छलाह। कहल जाइत जे इहो एक कुशल शासक छलाह मुदा हिनकैक कालक दशा कोणसँ हम देखैत छी जे हुनका राज्यमे नेपाल हुनका हाथसँ बाहर भऽ गेल आ ताधरि बाहर रहल जाधरि हरिसिंह देव पुनः ओकरा नहि जीतलन्हि। दोसर बात इहो जे मुसलमान लोकनि पश्चिम आ पूबसँ बंगाला राज्यके दबबे लागल छलाह आ आकमण शी गणेश सेहो हुनके समयमे पारभि भऽ गेल छल। बंगाला राज्यके मुसलमान लोकनि अपन आँखिमे काट जका बुझैत छलाह आ तै ओ लोकनि एम्हर ओम्हरसँ हुलकी बुलकी देब आरभि कऽ देने छलाह। नरसिंह देव अपना भरि बंगाला राज्यके चारकातसँ सुरक्षित रखिबाक यथेष्ठ पयास केलन्हि आ एहि कममे हुनका बहुत करास सफलता भेटलन्हि।

रामसिंह देव (१२२७ १२८५) रामसिंह देव कणाट वंशक एक सफल आ कुशल शासक छलाह जनिक महिमाक गुनगान तिब्बती यात्री धर्मस्वामी सेहो कएने अछि। कमादित्य ठाकुर रामसिंह देवक मंत्री छलथिन्हि आ कमादित्यक एकटा अभिलेख ल.सं.२१२क सेहो उपलब्ध अछि। हुनका समयमे समस्त उत्तर भारतिमे मुसलमानी सत्ताक पसार भऽ चुकल छल आ बंगालाक चारकात मुसलमानी आकमणक संभावना बढ़ि गेल छल। वैशालीमे मुसलमानी आकमणक स्वरूपक वर्णन धर्मस्वामी उपस्थित कएने अछि। लखनौतीक हुसामुद्दिनइवाज बंगालोसँ कर पाप्त केने छल आ ताहि हुतमे पूर्व पश्चिम दुनू दिसँ आकमण होइत रहैत छल।

ािमक्संह देकि पदीिमे ‘भुजबलभीम’ आ ‘भीमपािकम’क विशेर महतत खिइयै। क्हनकसाक्ध्र विगक्हक िलाह देिक्दतय ठाकुि क्जनका िशिमे बडड पैघ पैघ विदान आ पािकमी लोक सब भेल िलाह। धनािन होएबाक कािणे ओ लोकक्न महतक (महिा) सेहो कहबैत िलाह।

ािमक्संह देि विदाा आ धमषक समािषक आ पाितषक िलाह। हुनके समयमे क्मविलामे िवैक्दक टीका क्लखल गेलैक। ओक्हकालमे सामाक्जक एिं धाक्मषक क्नयमक पक्तपादन भेल आ शासन विधानमे सेहो बेस सुधाि भेलैक। पत्येक गामक हेतु कोतािलक क्नयुक्तत भेल। गामक पत्येक समाचाि चौधििी कोतािलके दैत िलैक आ ओक्ह ठामसँ ओ समाचाि ािजा धिि पहुँचैत िल। ओक्ह समयमे पटािीि पािक विकास भेल। ािमक्संह देि पैघ विदाा पेमी िलाह आ हुनके समयमे शीधि आचायष अमिकोशपि अपन टीका क्लखलक्न्ह।

ािमक्संह देकि समयमे पक्सद क्तब्बती याती धमषस्िामी एम्हि आएल िलाह आ ािमक्संह देकि संग हुनक सम्बन्ध मधुि िलक्न्ह। ओ आती जाती दुनू बेि ािमक्संह देकि संगे हिलो िलाह। ओक्ह समयमे क्मविलामे मुसलमान लोकक्नक पकोप बढल जाइत िल। ािमक्संह ािजधानी “प’ट” (क्समिौनगढ)क सुहृदि विश्लेरण धमषस्िामी कएने िवि। “प’ट” बडड पैघ आ उनत नगिि िल आ चार कातसँ दुगष आ खाक्धसँ घेिल बेढल िल। सब तिहे एकि सुक्नक पबंध कैल गेल िल। इ नगिि उतमि िल। एक्हठाम ओ जिसिँ पीक्डत सेहो भेल िलाह। नेपालसँ एक्हठाम एबामे हुनका तीन मास लागल िलक्न्ह। ािगसँ मुतत भेलापि जखन ओ अपन

देश जेबाक हेतु तैयारि भेला तखन शिवसिंह हुनका रुकि जएबाक आ ग्रहिबाक हेतु आग्रह केलन्हि। एतबे नहि शिवसिंह हुनका अपन प्रधान पुरोहितक पदपर नियुक्त करबाक आश्वासन सेहो देलन्हि मुदा तइयो ओ एतए रहिबा लेल तैयार नहि भेलाह आ घुरबाक हेतु तत्पर भऽ गेलाह। शिवसिंह हुनका बहुत रास बहुमूल्य उपहार सेहो देलन्हि। धर्मस्वामीक विवरणसँ इ स्पष्ट होइत अछि जे मुसलमान लोकनिक प्रभाव बढ़ल जा रहल छल आ शिवसिंह किलाबंदीपर विशेष बल देने छलाह। शिवसिंहक अपन राजधानी सात गोट भीत आ २१ गोट खाधिसँ घेरि रखने छल। वैशालीक निवासी लोकनि मुसलमानी आक्रमणसँ हड़कम्पित छलाह। वैशालीमे एकटा मस्जिद सेहो छल।

धर्मस्वामीक मुसलमानी आक्रमण सम्बन्धी मतक समर्थन परवर्ती साहित्य एवं साधनसँ सेहो होइत अछि जाहिमे इ कहल गेल अछि जे शिवसिंहके मुसलमानसँ लड़ए पड़ल छलन्हि। मुसलमान लोकनि गंगाक दक्षिणमे मुंगेर, भागलपुर, पटना, आदि स्थानमे पसरि चुकल छलाह आ ओम्हर बंगालक शासक सेहो पश्चिम दिस अपन शक्तिके बढ़ेबामे लागल छलाह। ओहि दुनूमे बीचमे संघर्ष चलैत रहैत छल आ मिथिलाक शासक अपन 'निरपेक्षता'क पालन कए अपन स्वतंत्रताके सुरक्षित रखबामे व्यस्त छलाह। शिवसिंह देशक रक्षाक हेतु कतेक प्रयत्नशील छलाह तकर प्रमाण तँ एतबे अछि जे ओ जँ अपन राज्यक विस्तार नहि केलन्हि तँ हुनका समयमे हुनक राज्य एको इंच घटल नहि आ सांस्कृतिक एवं सामाजिक दृष्टिकोणसँ ओ जे समाज चिन्ताक सांस्कृतिक पृष्ठभूमि बनौलन्हि तकरे आधारपर बादमे हरिसिंह देवक पंजी प्रथा ठाढ़ भेल।

शक्तत क्संहप(शक क्संह) (1285 95) ? िमक्संहक पिक्त शक्ततक्संह अिि शकक्संह क्मविलाक िजा भेलाह। ओ महा पंक्डत, पतापी एिं पिकिमी शासक िलाह आ क्दल्लीक शासकक संग हुनक सम्बन्ध बिबिं बनल हिलक्ह इ सम्बन्ध विििध आ क्मतता दुनूक िलक्ह। हम्मीकि विरिदक अक्मयान शक्ततक्संह अलाउदीन खलजीक संग हैिं आ हुनका संग हुनक मंती देिक्दत्य आ हुनक आत्मज िीिशि सेहो हिविह्न। अपन मंतीक सिमीदोहक काणि (ियमल्ल आ िमपाल) हम्मीि पिक्जत भेलाह। अलाउदीन देिक्दत्यके 'मंक्तिताकि' पदीसँ विभूक्त केलविह्न। शक्ततक्संहक संग खलजी समाटक क्मतता बनल हिल आ क्मविलाक सितंतता सेहो बाचल हिल।

शक्ततक्संह अत्याचािी शासक िलाह। हुनक क्निकुश शासनके िकिबाक हेतु दि सब सातटा पमुख दिके चुक्नके एकटा 'दि पविरद'क क्नमाण कएने िलाह। हुनक अत्याचािी शासनसँ हुनक दबािी आ मंती लोकक्न कूक्पत भऽ गेल िलाह। िजाक क्निकुशताक विििधमे सिषिम अिज उठौलक्न चण्डेशि ठाकुि जे अपना युगक एकटा पक्सद विदान आ िजनीक्तज िलाह। हुनके पयासे िजाक क्निकुशतापि िकि लावा सकल। दिभंगाक आनंदिगक पक्शम 'सुखीक्दग्घी' पोखवि क्हनके खुनाओल विकि आ आधुक्नक सकुििक बसौक्नहािि शक्ततक्संहे विकाह। शक्ततक्संहक बाद एकटा भूपाल क्संहक नाम भेटइयै मुदा ओ शासक भेलाह अिि नक्ह से कहब असंभि।

हविक्संह देपि(१२९५ १३२४-?) नाह्यदेकि पशात् कणाटिशिक सबसँ पक्सद एिं महान शासक हविक्संह देि भेलाह जे

मिथिला आ नेपालक इतिहासमे कैक दृष्टिये विख्यात थिक आ जिनक शासन काल पूर्ण भारतीक इतिहासमे महत्वपूर्ण मानल गेल अछि। हिनक जन्म, विवाहादि, मृत्यु इत्यादिक विस्तृत विवरणक सम्बन्धमे हमरा लोकनिक ज्ञान अपूर्ण अछि आओर इहो कहि सकैत छी जे हिनका सम्बन्ध सबटा ऐतिहासिक तथ्य अद्यावधि अज्ञातता एवँ सन्देहग्रस्त गर्भमे अछि। एकर मूल कारण इ अछि जे मिथिलाक एहि कालक इतिहासक अध्ययनक हेतु जे प्रामाणिक साधन चाही तकर सर्वथा अभाव अछि। तथापि जतबे जे साधन उपलब्ध अछि ताहि आधारपर हमरा लोकनि हरिसिंह देवक शासन एकटा विस्तृत अध्ययन प्रस्तुत करबाक प्रयास करब। नेपालक राजनीतिक इतिहासक दृष्टिसँ आ सांस्कृतिक इतिहासक दृष्टिसँ हरिसिंह देवकेँ विसरल जा सकइयै। जँ नान्यदेव एहि वंशक संस्थापकक दृष्टिसँ स्मरणीय थिक तँ हरिसिंह अपन नेपाल विजय एवँ पंजी प्रथाक संस्थापकक रूपे मिथिलाक इतिहासमे अमर छथि। एम्हर आबिके आब मिथिलाक इतिहासक महत्व दिस पौरस्त्य पाश्चात्य विद्वानक ध्यान आकर्षित भेल छैक आ एकर प्रमाण भेल लुजाक आनो पेतेकक 'कावडभल हिस्टी आफ नेपाल' तथा भारतीय विद्या भवन द्वारा प्रकाशित "दिल्ली सल्तनत" (खण्ड 6)मे वर्णित मिथिलाक इतिहासक अंश। आब मिथिलाक इतिहासक एहि कालके उपेक्षित करब कठिन अछि कारण एहि सम्बन्धमे जे अद्यावधि एकटा भ्रान्त प्रसरल छल से दूर भऽ गेल अछि आ सामाजिक इतिहासक अध्ययनार्थ हरिसिंह देवक पंजी प्रथा एकटा प्रमुख विषय बनल अछि।

कक्हआ, कोना आ कोन रपे ओ कर्विलाक शासन भाि गहण केलक्हि तकि कोनो ठोस पमाण हमिा लग नक्ह अवि मुदा हुनका सम्बन्धमे पचक्लत कंिा क्यहित शब्दािली एक्ह बातक पमाण अवि जे ओ शक्ततशाली शासक िलाह। अपना काल धवि ओ कक्हयो ककिा समक ने अपन माि ािकौने िलाह आ ने टेकने िलाह। अपनाके सिावभमानी स्तिंत आ कभीक बुिित िलाह आ एक्हबातक पमाण हमिा िसाक्तनुलउक्हसँ भेटइत अवि। पुरर पिाक्तमे वदिापक्त हुनका 'कणाट कुल सम्भि' कहने िविक्ह; चण्डेशकि कत्यिताकिमे हुनका 'कणाट िशोदि' कहल गेल िक्ह। ज्योक्तािशि ठाकुिक धूतषसमागममे कणाट चूडामक्णाक संजा क्हनका देल गेल िक्ह।

कणाटिशोदि शतुजेता हर्विसंह देि कर्विलामे अपन एकटा नि कीक्तषान सिावपत केने िलाह। हुनक सान्धिविगक्हक मंती देिक्तत्य ठाकुि िलविक्ह। देिक्तत्य यशसिा, बुक्दमान एिं दानी िलाह। हुनक पशात् हुनक पुत िीिशि ठाकुि मंती भेलाह। उहो महा दानी िलाह आ समुद सन गक्हि पोखिव दक्हभत गाममे खुनौने िलाह। ओ शौतकमानुषाता बाहण लोकक्तके उदािता पूिषक दान देने िलाह आ गामक गाम दानमे सेहो हुनका लोकक्तके देने िलाह। उहो एकटा पोखिव खुनौने िलाह जकि नाम िल 'िीसागि' आ ओक्हसँ गामक नाम 'विसागि' पडल। िीिशि ठाकुिके 'महाक्तिषक नैबक्न्धक' सेहो कहल जाइत िलक्ह। िीिशि ठाकुिक बाद हुनक पुत चण्डेशि ठाकुि महामतक सान्धिविगक्हक भेलाह। उहो पतापी, साहसी, उदाि एिं दानी िलाह आ हर्विसंह देिक मत, सलाहकाि एिं दाशषक्नक सेहो िलाह। हर्विसंह देि

हुनक समयमे यिस्तक भऽ चुकल िलाह आ िजि काज सम्हािव लेने िलाह। इहो हािी पिगनाक क्षसमािम गाममे एकटा पोखिव खुनौने िलाह जे "सुिि‍ि" कहबैत अिि। नाबािलक अिसिामे िजिगदीपि बैसलाक कािणे हिवक्षसंहक देखिि‍ख सुयोग्य मंत्रीगणक हािमे िल आ िजाक क्षदस इएह मंती लोकक्षन सब काज किैत िलाह। हिवक्षसंह देि जखन जािन भेलाह तखन चण्डेशि ठाकुि हुनक मंती िलिि‍ह। बाह्मणक एकिि‍शसँ कणाट िजिदिबािमे तीन पीढी धिि बिाबिि मंती होइत िहलाह ताक्षहसँ इ क्षसद्ध होइत जे एक्षह कालमे सामंतािदी व्यिसािक िि‍कासक कािणे मंतीपद िशानुगत भऽ चुकल िल आ िजापि हुनका लोकक्षनक िि‍शेर क्षनयंतण िहैत िलक्षह। हम उपि देक्षख चुकल िी जे शक्षक्त क्षसंह जखन क्षनिंकुश बनबाक चेष्टा केलक्षह तखन इएह सामंत लोकक्षन हुनक ओक्षह चेष्टाके िि‍फल कैल आ हिवक्षसंह देिक नाबािलग िहबाक कािणे हुनका लोकक्षनक अक्षधकािमे अत्यक्षधक िक्षद्ध भेल। िि‍द्यापक्षतक पुरुर परीक्षासँ इहो जान होइि जे हिवक्षसंह देि यादि िजा देिवािक िमिदेिक समकालीन िलाह आ गोिखपुिक िजि दिबािमे हुनक कला पेमी होएबाक चचष बिाबिि होइत िलक्षह। हिवक्षसंह देिक नामसँ समकालीन िजा लोकक्षन नीक जका पिक्षचत िलाह। हिवक्षसंह देिक मंती चण्डेशि अपना कालक पक्षसद्ध िि‍दान िलाह आ तै क्षहनक नामसँ क्षमिि‍ला िज्योक नामक पसाि होइत िल।

हिवक्षसंह देिक समयमे चण्डेशि ठाकुि नेपाल अक्षभयानक नेतत्ि केलक्षह। ओतए इ क्षनाित िजा सबके एिं सूयषिंशी क्षतय िजा गणके पिाक्षजत कए सम्पूणष नेपाल िज्यपि क्षमिि‍लाक आक्षधपत्य जमौलक्षह। एक्षहसँ इ तँ स्पष्ट भऽ जाइि जे निक्षसंह

देकि समयमे नेपालसँ खट पट भेलाक बाद नेपाल अपनाके कावलिाक कायंतणसँ मुतत कऽ लेने लि काणि जँ से बात नक्ह हिैत तँ चण्डेशि ठाकुकिे हवक्सिंह देकि शासन कालमे पुनः नेपालपि आकमण कबािक आश्यिकता कयैक भेलैह्ह। दोसि बात इहो जे हवक्सिंह देकि पभाि जखन नेपालपि पुनः सिावपत भेल तँ कावलिाक पक्तष ा सेहो बढल आ एक्ह क्हसाबे हवक्सिंह देकि शासनकाल महतपूणष मानल जा सकइयै। हवक्सिंह देि तुगलकसँ पिाक्जत भेलाक बाद भावाके नेपाले गेल लिाह। चण्डेशि ठाकुि िग्मतीक नदीक तटपि सिणष तुलापुर र महादान कयने लिाह आ उएह पिम व्यक्तत लिाह जे पशुपक्त नाि धवि पहुँचल लिाह। चण्डेशि ठाकुि अधीन हवबिह नामक एक सामंतक चचष पाकत पैगलममे भेल अवि।

हवक्सिंह देकि समयमे कावलिाक िाज्य सुक्तत हिल यदव्पि ताक्ह समय तक पक्शामी आ पूिी िाज्यसँ कावलिापि बािवि पहाि भऽ हिल लि। नेपाल धवि अपन िाज्यक सीमाके पुनः बढेबाक शेय हवक्सिंह देकिे क्हह। नेहिामे हवक्सिंह देि सेहो अपन एकटा मुख्यालय खिने लिाह आ ओक्हठाम एकटा गढ सेहो लि। ज्योक्तिशि ठाकुकि 'धूतषसमागम नाटक'सँ जात होइि जे हवक्सिंह देकिे कोनो सुतिाणसँ िगडा भेल लिक्ह जकि पविणाम अक्तणीत बुिना जाइत अवि। हवक्सिंह देकि पादपदपि कतेको पतापी िाजा अपन अपन माि नमिति लिाह।

"नानायोध कार द कक्जषा सुतिाणात सदाक्हनी

नतयदीमकबह्धमेलक दलद् भुवा भमद् मुधिः॥

अवस्त शी हरिसिंह देि नपवतः कणाट् चूडामवणः
दप्यतारिवि साि षमौवलमुकुटन्यस्ताङ्घ पंकेर हः"॥

उमापवतक पारिजातहणिसँ सेहो इ स्पष होइि जे हरिसिंह देि आ कोनो मुसलमान शासकक बीच संघरष भेल िलि मुदा ज्योवतरीशि आ उमापवतक विििणिमे कोनो मुसलमान शासकक नाम नवह हिलासँ कवतनताक अनुभि हैि सिभाविके। ओवह सबसँ केिलि एतिि जान होइि जे हरिसिंह देिके बविवि मुसलमान शासक लोकवनसँ टंटा होइत हिवन्ह आ ओवह सभवहक िािजूदो ओ वमविलाके िाज्य सुविकत िखैत अपन पजाक कल्याणमे लागल हैि। हमिा बुवि पडइयै जे वमविलाक िाज्यक भविष्यक सम्बन्ध हुनका पूिाभास भऽ गेल िलवन्ह आ तै ओ नेपालपि पुनः अपन आवधपत्य कायम किबाक पयासमे लागल िलाह। वमविलामे चार कातसँ तंगी देवख ओ अपना हेतु नेपाल िाज्यके सुविकत िाखिए चाहैत जावहसँ वकओ मुसलमानी आकमणसँ आकात भेलापि ओतए जाएके सवह सकैि। इएह काणि विक जे हुनक मंती नेपालपि पूणष आवधपत्य कायम केने िलाह। तुगलक आकमणक बाद ओ भावाके ओम्हिि गेओ केलाह। कहल जाइत अवि जे वमविला िाडबाक पूिष ओ नेहािा पोखविपि विशिचक महादान यज कयने िलाह।

१३२३–२४ ई.मे वमविलापि वायासुदीन तुगलकक आकमण भेल। कहल जाइत अवि जे बंगाल आ वमविलाक शासकक संग एक पकाि गुप्त समिौता िलि आ दुनू अपन–अपन सितंतताके सुविकत िखिबाक लेल पयतशील िलाह। वायासुदीन तुगलक एवह दुनू िाज्यके अपना आँवखक काट बुिैत िलि आ तै बंगालपि आकमण केलाक बाद ओ वमविले बाटे घुिलि आ एवहठाम शासकके

अपना अधीन कबिाक पयास केलक। फर्वस्ताक अनुसाि क्वाहितक ाजिा संघरषक हेतु आगा बढलाह पञ्चि हुनका खेहार्वके जंगलमे ठेल देल गेलक्खह। तुगलक ाजिा जंगलके अपने हािसँ कटलक्खह आ जखन जंगल साफ भेल तखन ओ देखलक्खह जे क्वाहित ाजिाक एकटा बडका क्कला अर्वि जे चार कात बडका बडका खाक्वसँ घेिल अर्वि। उच्च उच्च भीक्त आ सातटा खाक्वसँ घेिल क्कला देक्ख तुगलक शासक ाडिेक कालक हेतु धतमतेलाह आ तत्पशात् सातोटा खाक्वके भर्वि ओ क्कलाक भीत आ देिलके नष केलक्खह। एक्ह सब काजमे हुनका तीन हफ्ता लगलक्खह। ाजिा सपर्वािि वािफ्त भेलाह आ क्वाहितक शासन भाि मक्लक तबक्लगाक पुत अहमद खाक हािमे देल गेल। तकि बाद तुगलक ाजिा क्दल्ली क्दस पसािन केलक्खह। ािनीक अनुसाि जखन वायासुदीन तुगलक क्वाहित पहुँचलाह तखन सब ाजिा लोकक्न आत्म समपषाके देलक्खह। िसाक्नुलउंसक अनुसाि क्वाहितक ाजिा पडाके नेपाल चल गेलाह आ क्वाहितपि तुगलक शासन सािपत भऽ गेल। (र्वशद् र्वश्लेरणक हेतु देखु हमि क्लखल पोिा "क्हस्टी आफ मुक्स्लम र ल इन क्वाहित")।

चण्डेशि ठाकुिक दान िताकि आ ज्योक्तीिशि ठाकुिक धूतषमामागम नाटक ति उमापक्तक पार्वजातहिण नाटकसँ एतिा धर्वि स्पष होइयै जे i) हर्वक्संह देि म्लेचिसँ आप्लार्वित पर्थीके मुतत कएने िलाह आ, ii) ओ कोनो सुिताणके पिक्जत कएने िलाह आ iii) पर्थीपि जे म्लेचि लोकक्न भाि सिरिप र्वि तकिसँ ओ पर्थीके हलुक केने िलाह। फर्वस्ताक कििन जे हर्वक्संह देि सपर्वािि वािफ्त भेलाह से माह्य नक्ह अर्वि कािण आँक्खक देखल हाल

क्लखक्लहा िसाक्तनुलउंसमे एकि समिषा नक्ह केने िवि। ओक्हमे इ स्पष क्लखल अवि जे िजा भावाके नेपाल चल गेलाह आ ओतक्ह बक्स गेलाह। पविक्सिक्तसँ िध्म भऽ भावा जेबाक कि आ पहाडमे घुक्सया जेबाक बात मैविली पिम्पािमे क्तमक्लक्खत श्लोकमे सुक्तक्ष्त अवि।

“िणाक्ब्ध बाहु सक्सत शाकिे

पौरस्य शुतल दशमी क्लक्तसूनुिि

त्यकतिि सिपटन पुिि हविक्सह देिि

दुदैि देक्शत पि वाविमािविशि”

क्तविलासँ क्तिक्वशत भेलापि हविक्सह देि पडाके नेपाल गेला जतए १० िरषपूिषचण्डेशि ठाकुि क्तिति आ क्लत्ताय शासक लोकक्तके हिके क्तविलाक पभुति सिाक्तत कएने िलाह। हविक्सह देि नेपाल पहुँक्तच सूयिवंशी िज्यक सिापना केलक्ह से कहल जाइत अवि। ओ भातगािमे अपन केन्द्र बनौलक्ह। नेपालपि क्तविलाक आकमणक क्तवि लऽ कए इक्तहासकािमे मतभेद िक्ह। क्तदली मिण िमी १३१४ (चण्डेशि दाि आकमणक क्तवि)के नेपालपि आकमणक क्तवि मनैत िवि पक्तिच भगािन लाल इन्द्र जी आ िइट महोदय १३२४ ई.के (जखन हविक्सह देि क्तविलासँ पडाय ओतए पहुँचलाह)। एक्ह दुनू क्तविमे कोनो संघरषक गुंजाइश नक्ह अवि यक्तद हमि लोकक्त एकि एक्ह ढँगे देखी चण्डेशि क्तविला िज्यक मंती क्तहसाबे नेपालके जीतने िलाह आ तक्हयासँ पुनः नेपाल क्तविलाक अधीन भऽ गेल िल। हविक्सह देि जखन ओतए पहुँचलाह तखन ओ विक्तधि अपनाके ओतुका शासक घोक्तषत केलक्ह आ भातगािमे अपन पधान कायालयक सिापना केलक्ह। एक्ह दुनूमे विशेर साम्य

अछि। १३१४सँ १३२४ धरि ओ कर्णाटलासँ नेपालपर विजय करैत रहलाह मुदा १३२४क पश्चात मुख्यरूपेण नेपालक एकमात्र शासक भऽ गेलाह। १३१४क बादहिसँ नेपालमे मैथिल लोकनिक आगमन शुरू भऽ गेलन्हि। कर्णाटलामे मुसलमानक प्रकोप बढल आ नेपालमे मल्ल लोकनिक मुदा हरिसिंह देव बडड चतुर व्यक्ति रहलाह आ ओ ओतुका मल्ल लोकनिक संग वैवाहिक सम्बन्ध स्थापित कऽ लेलन्हि।

नेपालक वंशावली आ शिलालेख एहिबातक सबूत अछि जे हरिसिंह देव नेपालमे जा कए नीक जका जमि गेल रहलाह आ हुनक प्रभुत्व ओहिठाम नीक जका स्वीकृत भऽ गेल रहन्हि। काठमाण्डुक एकटा शिलालेखमे हरिसिंह देवके कर्णाट वंशोद्भव आ कर्णाट चूडामणि कहल गेल छन्हि।-

“जातः श्री हरिसिंह देव नृपतिः प्रौढ प्रतापोदयः

तद्वंशे विमले महार्णवपुहाव गाम्भीर्यषतिाकरः

कृतायः स्वसिामूपेत्य करिला संलक्ष्म लक्ष्मयो

नेपाले पुनरादिभिर्युते सर्षयम्र क्रमिदिते”।

हरिसिंह देवकि उत्तराधिकारीके चीनी सम्राट नेपालक कानूनी शासक मानैत छथिन्ह।

कर्णाट वंशक पतनपर हरिसिंह देवकि बाद कर्णाटलामे कर्णाट वंशक पतन भऽ गेल। बहुत रास साहित्यिक साधनक अध्ययन केला संता एवं पाण्डुलिपिक पुष्पिका सबके देखलासँ इ प्रतीत होइछ जे हरिसिंह देवकि नेपाल पडैला उत्तर कर्णाटलामे बचल कर्णाट लोकनि कर्णाटलाक स्वतंत्रताक हेतु संघरष करैत रहलाह आ मुसलमान लोकनिक पैरके नहि जमे देल गेल। कर्णाट वंशक अंतो

भेलापि कवलाक कि केत्त सबमे कणाट शासन वदिमान िल आ एकि पमाण भेटइत अवि। शीलिलभाचायषकणाट िजिशिक उल्लेख कएने िवि। ओ अपन कणाट िजाके नपवत कहने िवि। एवह सम्बहधमे सबसँ महतपूिणष अवि मधुसूदन ठाकुिक 'कण्टकोदाि' पुस्तकक पुवष्पका। मधुसूदन ठाकुि कणाट चकिती महािजावधािज िमिजिक अधीन विहके वलखने िलाह। पुवष्पकामे वलखल अवि

"*इवत महािजावधािज कणाट चकिती भुजबल भीम समस्त वक्िजियावजष्ण सम्मत संतोर मवखल भूमण्डल शी िमिजि कावतिाया महामहोपाध्याय सठकुि शी मधुसूदन कता िनुिमान। लोक कण्टकोदाि: सम्पूणषवमवत। लं.सं.५२९ फाल्गुन शुतलाष म्यामध्ययन शावलना शी भदिेिशमषा भौिगामेऽपूिियि ववक्त*'। एवहसँ स्पष होइि जे कणाटिशिक कि लोकवन हिवसंह देिक बादो कवलामे शासन कैित हिलाह भने हुनक केत्त सीवमत आ िटि हिल हो। ओइनिािशिक बादो ओ लोकवन कवलाक वविभन केत्तमे शासन कैिते विह गेला। ओइनिािशिक समाप्त भेलोपि जे अिजकताक विसिवत उत्पन भेल िल ताहुसँ लाभ उठाकए कणाट िमिजि अपन पभािकेत्तक विस्ताि केने होवि से संभि। सकिपुि डयोढी (िजपुतक जमीन्दािी) सेहो नाहयदेिक िशिजक अंग िवि आ कवलाक िजपुत लोकवन सेहो कणाट कुलसँ अपन सम्बहध जोडबामे गौिि वहत बुि ैत िवि।

मुसलमानी आकमणक चलते कवलामे कणाट िशिक अंत भेल। हिवसंह देिक बाद केओ योग्य शासक नवह विह गेलाह जे एवहठाम कणाटिशिके दढ किवतैि आ ओम्हि तुगलक लोकवन जखन एवहठामक शासन भाि अपना हािमे लेलवह आ देखलवह जे

चलाएब असंभि अवि तखन ओ लोकक्त एहेन व्यक्तितक खोज कएि लगलाह व्जनकापि हुनका विशास होक्हह। कणाट लोकक्तापि हुनक विशास क्हल चुकल िलक्हह तै ओ लोकक्त सुगौनाक िजपंक्डत कामेशकि िशजके अपन पक्तकाव्ध चुनलक्हह आ कविलाक शासन बागडोि हुनके लोकक्तक हाि मे देलक्हह। क्काजिशाह शाह तुगलक भोगीशकिे वायसिाि कक्हके संबोक्धत कयने िवि। १०९७सँ १३२५ धवि कणाट लोकक्त कविलापि शासन कए एकटा अक्मट िपि िडने िवि जाक्हसँ कविलाक क्तजी व्यक्ततत्कि विकास भेल आ मैविली संस्कृकतक पष पोरण सेहो। पक्चि ऐक्तहाक्सक कायमक अनुसाि सामंतािदी क्यसि िाक गुण दोरक चलते जेना सब िाज्यक पििभि भेल िक तक्हना कविलाक कणाट िाज्य अपन अिक्धक पूणषकए लुप्तपाय भेल आ कविलामे मुसलमानी शक्ततक पादुभाकि संगक्ह ओइनिाकि स िापना कणाट िशक अिशेरपि भेल।

परविशष ____

चण्डेशि ठाकुिक कत्य िताकिक कािु आिश्यक श्लोक____

अक्स्त शी हविसिंह देि नपक्तकाक्य शेर विदोक्तणा

क्तमािी कविला पशासदक्खला कणाटिशोदिि।

आशाः क्तसज्यक्त यो यशोक्तभिमिलैः पीयूर धािी दिदैिि

सािदि शििरी पक्तविी िशेर वायंभाििकः॥

आक्सम्क्हद्वाजियोदते बलभिक्तकुब्जी भिक्दः फणै

िहयोह्यं कविडं क्तलक्दिक्भतः शेरः सहसेणसः।

गचिन्त्यम्बुजबाह्यिि क्दन पतौ पत्यक् पयोधेिधः

सदः सङ्कुचदब्जकोकि प्रिः सादश्यमालम्बते॥
मा माखेदं भजर्ध जलव्यमुपगतेबाह्यर्ध पंकजाना
मंतः पञ्चेपुरि व्यसन भयजुराशकिकिरििकाः।
शीमत्कणाट भूमीपक्त मुकुट मव्गः पीणयनद लोका___
नेर पौढ पतापदुमवणर दव्यनी संपदं संतनोक्त॥
एतस्यादुत संव्ध विगिह धुरि ओढापवर्रिकत___
वमालोका शक्किहृदु सुह्दा यशः संदोदगंगाम्बुवमः॥
आसीह्मंतमयदुक्त पक्तहता क्रताह्यकादियो
देविक्तत्य इक्तपसनहृदयो देदुिमोजङमः॥

यः संव्ध विगिह विधौ विविधानुभाि
शौयोदयेन कविलाव्यपाजिायभामि्।
क्तमक्षर्स सुनयसकव्यत कोरजातम्
सप्ताग संघटन सम्मतमेि चके॥
पजाति सदक्स संसवि तिपटूना
िजिासभासु पवरितर्स विय मंत भाजाम्।
क्यतेऽविषाञ्च कविताशक्तसत्कारीना
िरिशिि स्फुक्ति विशविलाक्स कीक्तम्र
शीमानमुष्यतनयो नचिह्व चार
ििचारिह्दि निकलतर पिहः।
सत्सव्धविगिह धुरिण पदालम्ब
शण्डेशरी विजियते सव्यचातिंसः।

उह्मूल्याव्द क्तम्बमम्बा मवां कतिपताकाऽतिं,

सेनोदू तजिोभर्िविभतं व्मती महाकदषम् ।
दुगषमत्पर्ा मातनोद् दढमर्ि व्मायदुगषुन____
नेपाल व्मक्षपालगिषनयद् दुगषसमंतादयम् ।
आलीनं वार्वकिह्दासिु वपिनेर्षतिव्हषां व्मर्षि,
गंभीर्ि व्मभिगममव्द व्शखर्ि पाग् भार्मिाप्य व्स्तिम् ॥
नेपाले वविजते बलेन सुतर्ि भीतात्मव्मभूषपै ,___
वषिमत्यदुमणेः कुले भगर्तिः सर्जिह्मततकतम् ॥

एरमैवर्िल मही भुजा भुज दह्दार्विति समस्त र्विणाा
शी वर्धािव्यव्म कुलकमागते संव्धवगिह पदेव्मयोव्जतः ॥

गणेशर्ि ठाकुर्कि सुगव्म सोपानक आर्भिक श्लोक____
अभूदेर्विव्दत्यः सव्मर्ि व्मलको मैवर्िलपते____
व्मषप पजा ज्योव्मदषलत वर्पिु चकाह्ध तमसः ।,
समंताद शातोल्लव्मसत सुहदकेवाल ममौ
समुद् भुते यव्ममन व्दज कुल सर्जिवैषव्किसतम् ।
अस्माह्महादान तडागयाग भूदान देर्िलिय पूत वर्शिः ।
र्शिर्शिऽजायत मंव्मर्जिः व्मापालचूडामव्ण चुव्मबताङ्घः ।
लसह्महीपाल व्मर्िट र्ति र्विचर्चियिजितपाद पदः ।
अस्यानुजह्मा गुणगौर्रिणि गणेशर्ि मंव्मव्मरशकाव्स्त ।
संशोरयनव्मशमौर्षि(मैरप्) व्मभ पतापै____
गौडार्नि पर्विर्ढिं सुर्तिान व्मसह्धुम्
धमार्लिम्बनकर्िः कर णादषोता____

यस्तीि भुक्तत मतुलामतुलः पशाक्स्त॥
शीमानेरु महामतक महाि जाव्धाि जोमहा___
सामंतव्धपक्तवि षि सर्िि यशः पुष्पस्यकल्पदुमः।
चके मैवि लनाि भूक्स पक्तव्धः सप्ताग ि जियाक्सि क्त___
पौढानेक ि शिर्विदैहक हदयो दोः स्तम्भ सम्भावि तः॥

ि दिस्सक्त पुि णाक्द दष्टाि लोकक्हतैक्रणा
कतं सुगक्त सोपानं शीगणेशाि मंक्तणा॥

गणेशाकि पुत ि मिदत___
संक्ध वि गिह मंतीह्द देवि क्तित्य ननुदाि ।
भूक्सपाल क्शाि ि ति क्विजताव्ङघसाि रि हः।
साक्ह्ध वि गक्हकः शीमदीि शाि सहोदाि
महामतकः शीमान वि ि जिक्त गणेशाि ।
शीमता ि मिदतेन मंक्तणा तस्य सुनुना।
पदक्तः कयते ि म्याि धम्या ि जिसनेक्मयाम्॥

उपयुक्त शलोक सबसँ कणाटकालीन क्मवि लाक इक्तहासक वि वि धिपक्पाि यि षि पकाश पडइयै तै एक्हठाम ओक्हसबके पवि क्शाष क र पमे जोक्ड देल अवि । क्तवि आ तथ्यक सम्बाह्ध अदपर्यंक्त वि ि दि बनले अवि तै ओक्ह सम्बाह्धमे कोनो क्तणषा देि असंभाि । (वि शेर वि ि णिक हेतु देखू हमाि कबह्ध___'द कणाटज आफ क्मवि ला')

अध्याय ८

ओइनािशिक इक्तहास

कणाट ि शिक प ि क भेलापि क्षविलामे ओइनि ि ि शिक ि ज्य पा ि भ भेल। ओइनि ि ि शिके 'कामेशि ि शि' त ि ि 'सुगौना ि शि' सेहो कहल गेल ैिक। 'कामेशि ि शि' एक्ह काि णे क्क ि जि पंक्डत कामेशि एक्ह ि शिक संस ि पक ि लाह औि 'सुगौना ि शि' एक्ह काि णे क्क सुगौनामे एक्ह ि शिक ि जिधानी ि ल। ओइनि ि ि लोकक्न 'खौआडे जगत्पुि मूलक काश्यप गोत मैवि ल बाह ण ि हैि। क्हनक पू ि षामे जयपक्त, हुनक पुत क्हड्ड आ हुनक पुत ओएन ठाकुि ि लाह। ओ अत्यंत वि दान आ पि मि तपर्स्वी ि लाह आ हुनके कोनो कणाट ि जिासँ 'ओइक्न' गाम दानमे भेटल ि लक्हह। एक्ह काि णे एक्ह ि शिक नाम ओइनि ि ि शि पडल। ओएन ठाकुि कि पुत भेला अक्तर प, अक्तर पक पुत वि शिर प, हुनक पुत गोवि ह्न्द, हुनक पुत लक्ष्मण आ लक्ष्मण ठाकुि कि ि टा पुत ि लवि क्हह यि ि

१. ि जि पक्ण्डत कामेशि,

२. हरषा,

३. क्तापुि,

४. ते ि डी,

५. सलखन,

६. गौड

ठाम ठाम एकटा सातम पुतक उल्लेख अि इयै जकि नाम ि मेशि ि ल। एक्ह ि ःमेसँ एक गोटएक ि शि अहुखन मालदह क्जलामे वि ि जिमान ि वि ।

एहेन बुि ना जाइत अवि जे कणाट शासक हवि क्संह देि कि पडैलाक बाद क्षवि लामे कणाट लोकक्नक सत ि क हास भेल आ शासनक उलट फेि बि बवि होइत ि हल। गयासुदीन तुगलक

शासनक हेतु अपन पबह्ध केलक्हि आ हुनक पुत मुहम्मद तुगलकक समयमे क्मविला तुगलक सामाज्यक एकटा पात बक्म चुकल िल आ एकाि तुगलकपुि अिाि क्माहूत सेहो कहल जाइत िलैक। १३२३ २४सँ कँाब ३० िरषधवि एक पकािक अव्यिसिाि बनल िहलैक। कणाट लोकक्म अपन सताके पुनः सिाक्मत कबाक हेतु पयतशील एिँ संघरषशील बनल िहलाह मुदा हुनका लोकक्मके कोनो सफलता हािि नक्हि लगलक्हि आ विट पुट भऽ एम्हि ओम्हिमे क्माखैि गेलाह आ यत तत अपन केत्त बनाके िहए लगलाह। ओम्हि क्मदल्लीसँ क्माहूतक शासन कबि कोनो आसान काज नक्हि िल कािण पूिसँ बंगालक वाद दक्मा सेहो क्मविलापि लगले िहैत िलैक आ जहा क्मदल्लीक क्मदक्मससँ कक्मओ क्मढलाइ भेलैक क्मक बंगाल बाला सब धि क्मविलापि चक्मढ बैसैत िल। इ एकटा एहेन कटु सत्य िल जकाि क्मदल्ली नकािि नक्हि सकैत िल। क्मदल्लीक हकमे क्मविला क्मदल्लीक अंग बनल िहब सामविक दक्मा ये महतिपूणष िलैक कािण तखन क्मदल्ली क्मविलाके अडडा बनाए बंगालक मुकाबला कऽ सकैत िल। बंगालक हकमे क्मविलाके बंगालक पक्मे िहब उक्मत बुिना जाइत िलैक आ तै बंगाल आ क्मदल्ली ताि पक्मशामक आन िजिय एक्हि दक्मा ये क्मविलाके देखैत िल। क्मविलाक शासक लोकक्म एक्हि अिसिसँ लाभ उठाए अपन सितंतताक सुक्मािषताकमे िहैि िलाह पिजिय ओइनिाि िशिमे कणाट शासक नाह्यदेि अिाि हविक्मसंह देिसन केओ योग्य आ कुशल शासक नक्हि भेला तै एक्हि मौकाक लाभ उठेबामे असमिष िहलाह। क्मशािक्मसंह सबसँ योग्य, कमष्ठ, एिँ सितंत पेमी व्यक्मकत िलाह आ क्मविलाक सितंतताक िक्मािष अपन पाणक बाजी लगौलक्हि। ओइनिाि िशिमे क्मशािक्मसंह आ

भैरिवसिंहक नाम क्रमि स्मणीय हिल काणि ओ दुनू गोटए अपना ____ अपना ढँगे मिवलाक सितंतताक किाषिकािु उठानिह खिने िलाह।

१३२४ आ १३५५क मध्य मिवलाक शंखलादि इिवहासक अभाि अवि। तुगलक कालमे मिवला व्दल्लीक पात िल आ एकि उल्लेख हम पूर्षिहं कऽ चुकल िी। बंगालके इ बात पवसन निह िलैक आ बंगालक शासक हाजी इवलयास शाह सेहो एकटा महतिकाकी शासक िल। विाहूतपि आकमण कबाक ओकि मूल उदेश्य इ िलैक जे ओिह बाटे ओ नेपाल धवि जाए चाहैत िल आ तै जखन व्दल्लीक वेलाई एम्हि देखलक तखन मिवलापि आकमण कए हाजीपुि धवि पहुँवि गेल आ हाजीपुकि सिापना अपना नामपि केलक आ पुनः नेपालपि आकमण केलक जकि पमाण नेपालसँ पाप्त एकटा विशलालेख अवि। तुगलक लोकविके इ बात सहय निह भेलविह आ वकिोिज तुगलक तुिति एकि बदला लेबाक हेतु मिवला बाटे बंगालपि आकमणक योजना बनौलविह। बिनीक विििणसँ स्पष अवि जे वकिोिज गोिखपुि, खिािसा आ विाहूतक बाटे बंगाल विवस गेल िलाह आ संभितः िजिविािज लग कोशी नदीके टपने िलाह। मधुबनी विजलामे अखनो एकटा वपिोजगढ नामक सिान अवि जे वकिोिज तुगलकक बाटक संकेत दइयै। १३५५क आसपास इ घटना घटल िल। वकिोिज शाह सब विसिवि के देवख एिह विणषपि पहुँचल हेताह जे मिवलाक आंतविक सितंतताके सुविक्त िविखयेके ओ मिवलाके व्दल्लीक मात बनाके िविख सकैत िवि। एिह तथ्यके सीकाि कए ओ एकटा दूिदविशता आ कूटनीविजताक पविचय देलविह। मिवलाक सितंतताक सीकवि दए

ओ ओइनवारि लोकनिक अधीन मिथिलाक शासन भार छोड़लन्हि आ ओकरा कम ओ ओइनवार वंशीय 'भोगीसरियि'के अपन "वयस्सखा" कहिके संबोधित केलन्हि। मिथिला पुनः स्वतंत्र रूपे अपन शासन प्रारंभ केलक परञ्च ताहि दिनक समय एहेन छल कि चारू कात दिन रातिक्ला खटपट होइते रहैत छल। मैथिली परम्पराक अनुसार फिरोजि तुगलक राजपण्डित कामेश्वरकेँ मिथिलाक राज्य देने छलाह आ हुनक पुत्र भोगीश्वरकेँ 'वयस्सखा' कहि सम्मान केलन्हि। राजपण्डित कामेश्वर ठाकुर 'ठाकुर' कहबैत छलाह तैँ किछु गोटए एहि वंशकेँ 'ठाकुर वंश' सेहो कहैत छथि। विद्यापतिक गंगवाक्यावलीमे कहल गेल अछि "कामेशो मिथिला मासत"। कामेश्वर स्वयं कदाचित् एहि योगी होएबाक कारणे मिथिलाक राज्य ग्रहण लेल तैयार नञि छलाह तखन भोगीश्वरक आग्रह ओ ग्रहण केलन्हि आ किछु दिन शासन केलन्हि। कामेश्वरकेँ 'राय' आ 'राजपण्डित' दुनू कहल गेल छन्हि। कामेश्वरक बाद भोगीश्वर राजा भेलाह। हुनको 'राय' कहल जाइत छलन्हि आ कीर्तिलतासँ ज्ञात होइछ जे ओ फिरोजि शाहक परम मित्र छलाह। भोगीश्वरक बाद गणेश्वर शासक भेलाह। हुनक समयमे ओइनवार वंशमे बटवारा हेतु संघर्ष भेल जाहिमे लोग दू दलमे बटि गेलाह एक दल भोगीश्वरक छोट भाइ भवसिंहक समर्थक छल आ दोसर दल गणेश्वरक। जे भेल हो मुदा हम देखैत छी जे गणेश्वर राजा भेलाह। भवेशक पुत्र देव कुमार हरिसिंह आ कुमार शिवपुरसिंहकेँ इ बात अवश्य बुझि पड़लन्हि आ ओ लोकनि अर्जुन राय आ कुमार त्रिपुराकेर मदतिसँ गणेश्वरक वध केलन्हि। तत्पश्चात भवेश राजा भेलाह। भवेशक दरबारमे चण्डेश्वर ठाकुर

अपन ‘तिाकि’ ____ वंशिेर कए ािजनीक्त तिाककि चिना केने ालाह।

वदिापक्तक कीत्तलताामे एक्ह घटनाक वर्ाणि दोसिा ढंगे अछि। वदिापक्तक अनुसाि गणेशकि हत्या असलान नामक एक मुसलमानक हाि भेल िल जे क्तर्वलाक तत्कालीन अिजिक क्सिक्तसँ लाभ उठाके क्तर्वलाक ािज्यके हवथया लेने िल। मैवथली पिम्पािामे सेहो एक्ह पशपि मतैतय नक्ह अछि मुदा सब साधनक ाजाक्तक अध्ययन केला संता इ स्पष्ट होइि जे क्तर्वलामे ताक्ह क्दनमे गदीक हेतु गहयुदक क्सिक्त वर्ाजिमान िल। गणेशकि दुनू पुत कीत्तक्तसंह आ ावक्तसंह बाक्लग भेलापि अपन वपतामह भाता भवक्तसंहसँ ािज्यक हेतु पािथाा केलक्ह पिञ्च से नक्ह भेटलक्ह। अपन वपताक हत्याक पक्तशोध लेबाक हेतु इ दुनू भाइ जौनपुि ाजा इबाक्हम शाहक ओतए साहाय्यक हेतु पहुँचलाह। महामहोपाध्याय पिमेशि िा क्लखैत वथि जे कीत्तक्तसंह ावक्तसंह फीाज शाहक ओतए नाक्लस कएल आ फीाज शाह क्तर्वलापि चढाइ कए हिक्तसंह कापुि क्सिंहके मािि ािज्य कीत्तक्तसंहके फीालक्ह। मुदा वदिापक्तक कीत्तलताासँ एक्ह बातक समथिा नक्ह होइि।

बापक वैिके कीत्तक्तसंह सधौलक्ह से बात ठीक अछि मुदा एक्ह हेतु फीाजशाह क्तर्वला पि आकमण केने ालाह तकि कोनो पमाण नक्ह आछि। एक्ह गहयुदक कममे दुनू पक तत्कालीन मुसलमानी पक्तक्तवधसँ साहाय्यक अपेक्ता ाखिने होवि तँ कोनो आशयिक बात नक्ह आ एक्हकममे गणेशकिे अपनेसँ नक्ह मािि कोनो मुसलमानक हाि मबिौने होवि सेहो संभि कािणि जखन लोक जान

आ तकर्षके सीिषिशि वतालाजक्ल दैत अिव तखन ओ कोनो पकाकि काज (नैक्ताक अनैक्ताक)क बैसइयै। भैय्यािमे जखन एक्ह पकाकि िगडा होइत तखन तँ दुश्मन लाभ उठि कि्इयै। विदापक्त ओइनाि िशिसँ एतेक घक्तष िलाह क्क ओ एक्ह क्मनौना बातके दाक्ब देलक्ह्ह आ एकि कतहु चचो धवि नक्ह केलक्ह्ह आ गणेशकि हत्याक उतदािवयर्त असक्षानपि देलक्ह्ह। मुदा विदापक्ताक िवििणिसँ एताि धवि तै स्पष अिवये जे ताक्ह क्दनमे क्मविलामे चार कात अिजकता पसिल िल आ केओ ककाि कहबमे नक्ह िल। 'असक्षान' अिष होइि 'ीिि' 'बहादुि', 'जमामदष इत्याक्द। ीिि अफगान नामक पदाक्धकािि ताक्ह क्दन क्ताहूतमे िल आ इहो संभि अिव जे गहयुदक क्सिक्ताके देक्ख ओ एक पक्क भऽ गेल हुए आ सियं क्मविलाक िाजय हिवया लेने हुए। गणेशकि मत्युक कािण अखनो धवि क्मविलाक इक्तहासमे एकटा समस्यामूलक पश बनल अिव आ विदापक्त ओकािि िँपबाक हेतु सब पयास कएने िवि कािण गणेशकि पुतक पक्त विदापक्त सहानुभूक्त िखैत िलाह आ हुनक अक्धकाकि सिापनाक हेतु हुनका लऽ कए जौनपुि सेहो गेल िलाह। ओ कीक्तषसंहके 'पुरुष शेष'क कोक्टमे िखने िवि आ मैविल कवि दामोदि क्माश अपन िहन्द गंि ''ािणी भूरण''मे सेहो कीक्तषक्संहक सम्बन्धमे क्मक्लक्खत उदगाि पगट केने िवि।

''कीक्तषक्संह नपजीि यादि मत दुक्त <u>ताणी</u>''

''तिक्य चलक्त चलक्त िसुधा िसुधाक्धप कीक्तषसंह धिणी िमणे''।

कीक्तषलता मध्यक िवििणि एताि धवि अिशय स्पष कऽ दैत अिव जे तत्कालीन क्सिक्त गंभीि िल आ जौनपुकि शासक क्मविलाक िाजकुमाकि सहायता केने िलविह्ह। उपेन्द्र ठाकुकि

मत ि क्हह जे गणेशकि समयमे क्मवि लाक बटबाि भऽ गेल ि ल आ ओइनाि ि शि दू भागमे बक्टके शासन कि ति ि ल। भ क्सिंहक शासक हैि तै चण्डेशकि ि जिनीक्त ि ताकसिँ पमाक्णत अवि । पि ञ्चि गणेशकि पुतक क्सि क्त कक ि ल से कहब असंभि । उपेह्न्द ठाकुि क्मवि लाके जौनपुकि सामंत ि जिय हौएबाक बात कहने ि वि मुदा एकि कोनो पमाण ओ नक्ह देने ि वि आ कीक्तष क्संहक सम्बह्न्धमे जे क्तवि देल गेल अवि सेहो गलती अवि । भ ि शिक शासनकाल (भ क्सिंह) संभ तिः क्मवि लाक दुदक्शाके देक्ख समस्त क्मवि लाके एक ि खबाक ओ यि ष पयास केने ि लाह। कह्न्दाहा अवमलेखमे हुनका ‘पर्थीपक्त क्दजि ि ’ भ क्सिंह कहल गेल ि क्हह आ वि दापक्त अपन शैि सक्षिसाि मे हुनक ि भिकि ि णक्ष कि ति क्लखैत ि वि ___

“गंगोहुंग तविाता मललसत् कीक्तषि टाकाक्लत
कोक्णावमातल सषिक्ष ि ि ि तितालंकत....”

भ क्सिंह एतेक पतापी शासक ि लाह जे ि ट ि ट सामंत शासक हुनका डि ि ि ि ि कंपैत ि ल। ओ सब सतत अपन माि क्हनका पैि टेकने ि हैत ि ल। भ क्सिंह पतापी ि जा ि लाह आ दानी सेहो। ि ग्मतीक तटपि ओ अपन पावि षि शिि िके त्यागलक्हह आ ओक्हठाम हुनक दुनू पती सेहो सती भेलवि ह्ह।

भ क्सिंहक बाद देवि क्सिंह ि जा भेलाह। पमिेशि ि क अनुसाि ओइक्नमे कीक्तष क्संहक ि जिय भेने ि क्त क्दन खट पट होइतक्हह तै महाि जि भ क्सिंह अपन अंक्तम समयमे ओक्ह सि ि नके त्यावा दभिंगासँ दक्कण ि ग्मती तटपि अपन स्कह्न्धाि ि बनौने ि लाह। देवि क्सिंह जखन ि जा भेलाह देकुलीमे अपन ि जधानी

बनौलक्हि जाक्हिठाम अखनो स्मातष कबह्धकता धमाक्धकार्ि अवमनि धिषान उपाध्यायक सविमत ''धिषानेशि'' नामक महादेकि मंक्दि अवि। देविसंहक विरिद 'गरडनायिण' िलक्हि। हुनक पतीक नाम िलक्हि हािसनी देिी। पुरिपरीक्ा आ शैिसिषसािकि अनुसािि देविसंह एक कुशल पशासक आ सफल वजेता िलाह। क्मविलाक एक उदाि शासकक रपमे ओ सेहो पिसद िवि कािण ओ 'तुला पुरदान' सेहो किने िलाह। कवक आ जनकल्याणक हेतु ओ अपना िाज्यमे बडड पैघ पैघ पोखवि सेहो खुनौने िलाह। एक पोखविकि नाम देिसागि िल आ ओक्हिसँ सटल बस्तीक नाम सगिपुि िल। ओ वदा आ संस्कक्तक समिषक सेहो िलाह आ वदापक्तक अनुसािि ओ ''िीिु माह्याः सुवधया िण्योः'' िलाह। हुनके कहलापि वदापक्त ''भूपविकमा'' क्लखने िलाह जाक्हिमे नैक्मषय जंगलसँ क्मविला धविकि बलदेकि यात्राक विविणिक उल्लेख अवि। संगक्हि एक्हिमे नीक्तपिकि किि सेहो कहल गेल अवि। देविसंहक अनुमक्तसँ शीदत एकावमादान पदक्तक िचना केलक्हि। हुनके समयमे मुिविकि वमतामह हविहि पधान ह्यायाधीश िलाह। क्हनके दबािमे स्मक्त ततिमतक िचक्यता अवमनि िदषान हैित िलाह आ ओ धमाक्धकािी सेहो िलाह।

देविसंहक समयमे आक्बके क्मविलाक दुक्मिसिमे िाड बहुत सुधािि भेल आ आब ओ लोकक्त एक्हि बातके बुिि लगलाह जे जाधवि ओइनािि शि पुनः एकजूट भऽ पयतशील नक्हि हित ताधवि क्मविलाक दुक्मिसि बनले हितैक। देविसंह एक्हि क्दशामे वशेर पयास केने िलाह आ अपना चारकातक केत्तपि अपन पभािके दढ कबािमे क्कि उठा नक्हि िखने िलाह। कीक्तसंहक ओक्हिठामसँ

देविसंहक दिबािमे विदापतिक आएब एकटा विचाणीीय विरय अवि। विदापति ओइनाि कुलक सब कि िलाह आ ओइनािकि नेततिमे िमविलाक सितंतताके सुकिित देखए चाहैत िलाह। तै जखन देविसंहक पयाससँ विदापतिके इ विशास भेलैिह जे इ समसत िमविलाक एकता एिं सितंतताक हेतु पयतशील िवि तखन ओ कीितिसंहक संग िविड देविसंहक ओतए आिब गेलाह आ तिहयासँ याि‍जजीिन हुनके िशजक संग िहलाह। जे विदापति गणेशकि हतयाक िद कीितिसंहक हकक हेतु सब कि केने िहैि सैह विदापति जखन देखलिह जे कीितिसंहक नेततिमे िमविलाक एकता संभि निह होएत आ िमविलाक सितंतता सेहो निह िचत तखन ओ अपन िणष बदिल देलिह आ देविसंहक पयासमे सहयोग देलिह। ‘घि फुटे गाँिि लूटे’क कहाित िमविलामे चिवतािषिभऽ चुकल िल आ एकि िक पविणाम होइि से विदापति देिख चुकल िलाह तै ओ देविसंहक िशजक संग अपन भागयके सटा देलिह आ तिहयासँ अपन मतयु धवि ओ िमविलाक एकता एिं सितंतताक हेतु तललीन िहलाह आ सियं युद एिं शािसमे एक िग बहादुि जका ठाढ िहलाह। देविसंहक जयेष पुत िशिसंह विदापतिक अिभन िलविह आ िशिसंह िमविलाक इितहासपि जे अिमट िप िडने िवि तकि विदापति अपन लेखनीसँ आि अमि बना देने िलविह।

िशिसंहपि ओइनाि िशक सिषोष, सिषिसद आ एितहािसक दिष कोणसँ सबसँ महतिपूणष शासक िलाह िशिसंह। िहनक विरद िलिह रपनाियण। इ दुनू भाइ िलाह अपने आ पदिसंह। बालय कालिहसँ इ िजदिबािमे िहैत िलाह आ बािलग

भेलापि अपन क्षमताक सबटा िाज्यक कायषकर्ति िलाह। इ बडड तीक्ष्ण बुद्धिक लोक िलाह आ िाजनीक्तमे सम्पिा क्सपुण सेहो। योग्य िाजकुमाि बनेबाक विचािें क्हनक क्षमता देक्षसंह क्हनका क्विदापक्तक संग लगौने हिवक्ह्ह आ नीक्तमे क्सपुणता पाप्त किबाक हेतु क्विदापक्त क्षशक्षसंहक आदेशानुसाि 'पुरर परीक्षा'क िचना केने िलाह। क्विदापक्तक गीतमे १२९ पदमे (११२+१७) क्षशक्षसंहक नाम अवि। १५ क्षिषक अक्षसक्ह्हंसँ इ िाज्यक पशासनमे हाि बटबैत िलाह। जखन ओ िाजा भेलाह तखन ओ देकुली (देक्षकुली)सँ अपन िाजधानी हटाके गजिक्षपुि अनलक्ह्ह। ओकिा क्षशक्षसंहपुि सेहो कहल जाइत िैक। एक्हठाम गजिक्षपुिसँ क्षशक्षसंह क्विदापक्तके दान देने िलवक्ह्ह। िाज्य पशासनमे हाि बटेबा काल हुनका अपन पक्षम क्षमत एवि अवक्षमन क्विदापक्तसँ सेहो सहयोग भेटइत हिक्ह्ह। क्षशक्षसंह पक्षम विदान, उदाि, सुहृदि, तिा पतापी िलाह। हुनक खुनाओल पोखवि िािवि भडौिामे िजोखवि नामसँ पक्षसद अवि आ हुनक बनाओल सडक सब िजबाह्ह (िाजबह्ध) क्षशक्षसंहपुिसँ िाजिाडा घोड दौड धवि हुनक गजिाक सडक अत्यंत सुदढ आ चाकि अवि। पोखवि आ सडक ओ पजाक कल्याणािषि बनौने िलाह। एक्ह पसंगमे हुनका सम्बह्धमे एकटा लोकोक्तत क्षमाक्कत अवि ____

"पोखवि िजोखवि आ सब पोखिि, िाजा क्षशक्षसंह आ सब िकडा। तालते भूपाल ताल आिि सब तलैया, िाजा ते क्षशक्षसंह आिि सब िजैया"॥

क्षशक्षसंहक समयमे क्षमािहूतक िाज्य शक्ततशाली भऽ गेल िल। अपना चारकातक पक्षिक्षस्िक्तके ध्यानमे िक्ख ओ अपन

ाजधानी गजापिुमे अनने िलाह आ ाज्यक विभिन भागसँ सडक दाि ओकाि जोडने िलाह। गौड आ गजजनक विरुद ओ संघरष केने िलाह जका पमाण हमाि पुरा पाीकासँ भेटइयै। देविसंहक समयमे सेहो ममविलामे मुसलमानी पकोप िल। पमािाकि अनुसाि अपन ममताक शासनकालमे मुसलमानी सेनासँ लडबाक हेतु ओ पठाओल गेल िलाह आ ओिहमे पािवजत भेलाक कािणे वािपस भेल िलाह। हुनके ािडेबाक हेतु विदापित गेल िलिवहह आ मुसलमानी शासक विदापितक काव्य पवितभासँ पभावित भए िशविसंहके ािवड देने िहिहह आ विदापितक बहुत सम्मान केने िहिहह। ािजा भेलाह िशविसंह एिह अपमानके ििसलि निह िलाह आ तै अपन सािवभमान आ ममविलाक सितंतताक िक्षाि हुनका कतेको मुसलमान शासकसँ संघरषकिए पडलिहह।

जेना कक हम पूिहिं किह चुकल ाी जे मध्य युगमे ममविलापि पिश्चम आ पूब दुनू िदकसँ दबाब पडइत िल आ ममविला 'तिकसिकि'क मनयम पालन किैत िल। िदलली, जौनपुि, बंगाल, सभकहक नजिि ममविलापि िलैक। िशविसंहक पूणष इच्ा िलिहह जे ममविलाके पूणषरपेण सितंत ाज्यक रपमे ािखल जाए आ तािह पयासमे ओ कोनो कसैि उठा निह ािखलिहह। अपन कम िदनक शासनमे ओ जािह सपुणताक पविचय देने िवि से कोनो देशक ािजाक हेतु एकटा गौिकि विरय। िशविसंहके पँचगौडेशि सेहो कहल गेल िवहह। बंगालोमे ममविला जका अिाजक ससिि िल आ ओतहु िशविसंह जका ािजा गणेश ओिह ससितसँ लाभ उठाके ओतए अपन शासन सािवपत कऽ लेने िलाह। हुनक पुत जदुसेन मुसलमान भऽ गेलाह आ जलालुदीनक नामे ओतुका ािजा

बनलाह। ओ क्शाविसंहक समकालीन िलाह। क्शाविसंह क्हनका विरद अवमयान शुर केलक्ह आ क्हनका पविजत केलक्ह आ क्हनक िजयक कि अंशके अपना िजयमे वमलौलक्ह। बंगालपि विजय पाप्त कबिाक हेतु इ पंचगौडेशि कहाओल गेल हेताह से संभि। ताक्ह कालमे पवशममे जौनपुकि इबाक्हम शकीक बडड पभाि िलैक आ बंगालमे जखन मुसलमानी शासनक पिभि भेल तखन ओतए गणेशक उतिान भेल। क्मविलामे क्शाविसंह आ बंगालमे गणेशक पादुभाविसँ पवशमक मुसलमान शासनक कान ठाढ भेल आ बंगालक मुसलमान संत लोकक्न इबाक्हम शकीके एक्ह बातक हेतु चेतौलक्ह। बंगालक क्ममंतण पि इबाक्हम शकी बढलाह जाक्हसँ ओक्हठाम पुनः मुसलमानी शासनक पुनसिावपत भऽ सकए।

एक्हकममे क्मविलामे हुनका क्शाविसंहसँ िंिट हैि सिभावकि कयैक तँ क्शाविसंह बंगालक जलालुदीनके पविजत कए ओतए धवि अपन िजयक विस्ताि कऽ लेने िलाह आ संगक्ह क्मविलाके पूणषपेण सतिंत सेहो। इबाक्हमके एक्ह दूमेसँ कोनो बात पवसन नक्हये पडल होएतक्ह आ तै क्मविलापि आकमण कबि हुनक बंगाल नीवतक एकटा पमुख अंग हिल होएत। शकी कालीन अवमलेख क्तािहूतमे मुल्ला तकवया देखने िलाह आ ताक्हसँ इ बुिना जाइत अवि जे क्शाविसंहके पिस्त कबिाक हेतु अिि बदला लेबाक हेतु इबाक्हम शाह क्तािहूतपि आकमण केने हेताह। हुनक समि्षक कीवतषसंहक पताप आब क्मविलामे नक्ह िलैक आ सिावभमानी एँि सतिंतता पेमी क्शाविसंहक शासन पूब पवशम दुनूके चैलेज कऽ हिल िलैक। एहना क्सिवतमे इबाक्हम शकी चुपप बैसक्नहािि नक्ह िलाह। दुनूक बीच संघरषभेल जकि पविणाम हमिि लोकक्नके जात नक्ह

अवि आ एकरि बादे ओ िगाल क्दकस बढल होएताह। एहो संभि जे बंगालसँ घुबिो काल (जतए ओ क्शाक्सिंहक महतिकाकाक विरयमे सुनने होवि) ओ क्मविलापि आकमण कए गेल होवि। मुदा तत्कालीन साधनक आधापि एक्ह सम्बाह्धमे कोनो ठोस क्गणष्ठ देि असंभि अवि।

क्शाक्सिंह सितंत रपे लगभग ३ ४ रिषधवि शासन केलक्हि पञ्चि कक्हयो ओ क्मश्शंत भऽ सुक्त नक्ह सकलाह काणि सब क्दन हुनका कोनो ने कोनो समस्या लगले हैक्हि। क्दल्ली आ जौनपुि हुनका बिबवि तंग कैति हैक्हि जो ओ पक्सन नक्ह कैति िलाह। मुसलमान शासकके जे क्ताहूितसँ कि भेटइत हैक से देि ओ िदि कऽ देलैक्हि आ ओ अपनाके पूणष्ठपेण सितंत घोक्रत कऽ देलैक्हि। इ शासकके िलाह से सम्पक्त कहब असंभि मुदा कि बह्द केलाक बाद ओ क्खक्सया गेलाह आ क्शाक्सिंहक संगक्ह युद बजबि सिभाविक भऽ गेल। एति नक्ह अपन सितंतताके क्यापक बनेबाक हेतु क्शाक्सिंह अपना नामे सोनाक क्सका बहाि केलक्हि आ एक्हकममे ओ इ क्सद कऽ देलैक्हि जे क्मविलाक कोनो दोसि महापभु क्शाक्सिंह िक्वडके आ केओ नक्ह िल। एक्हसँ क्मविलाक गौिमि क्दि भेल आ क्शाक्सिंह नाह्यदेिक पिम्पािमि आक्ब गेला। क्शाक्सिंहक एक्ह काजसँ तत्कालीन िट िट िजाके पेिणा भेटलैक आ क्शाक्सिंहक शासन काल धवि क्मविलाक सितंतता सेहो अकुण्ण हिलैक। इ क्मविलाक इक्तहासक हेतु एकटा गौििक विरय मानल जाइत अवि।

मुसलमान सुल्तान क्शाक्सिंहक एहेन विदोही रप देक्ख आशयष्ठचक्कत भऽ गेलाह। क्शाक्सिंह सेहो अपन वाक्पिन होएबाक अपमानके क्बसिने नक्ह िलाह। दुनू अपन अपन क्जदपि िलाह

जकि नतीजा इ भेल जे दुनूक बीच युद्ध अश्निर्णायक भऽ गेल। एक युद्धक परिणाम तँ बुझि नहि अछि पञ्चि एकि बाद दयासिंह हारि गेला, अरिा मारि गेलाह या लापता भऽ गेलाह से बुझि नहि अछि। मारिलो गेल होअि से असंभव बात नहि। कहि गोटएक मत छिहि जे दयासिंह नेपालक जंगलमे भागा गेलाह अरिा ओम्हरि लापता भऽ गेलाह। एकि अषिकहि लेल जा सकइयै। एहि पजियक बाद लखमा देवी विद्यापतिक संगे दोणारि िजा पुद्दित्यक ओतए सप्तरी परिगनामे चल गेला। नेपालमे सेहो एकटा दयारिजगढ अछि जकरा लोक दयासिंहसँ जोडैत अछि आ कहि गोटएक विचारि छिहि जे रिनी लखमा अपन पतिक समाधिक स्मृतिपर एहि गढक निमाण करोने छिलीह। विद्यापति एहि युद्धक णिषा जाहि रूपे केने छि ताहिसँ बुझि जाइत अछि इ भयंकर युद्ध छिल। विद्यापति सेहो दयासिंहक संगे युद्धमे शामिल भेल छिलाह। युद्धक स्मृतिपर विद्यापतिक कामकलखत कविरासँ स्पष्ट होएतः___

"*दूर दुग्गामदमस्स भज्जे,*

ओ गाढ गड गूठीअ गण्जेओ।

पातिसाह ससीम सीमा समदरिसे ओरि।

ढोल तरि निसान सदहि भेरि काटल संख नदहि।

तीन भूअन निकेत के तकिहि सनभरि ओरि॥

कोहे नीरि पयान चल्लयो रियुमध्य सयगर ओ।

तरिणि तेअ तुलाधारि परिताप गहि ओरि॥

मेर कनक सुमेर कम्पय धरणि पूरयि गगन झम्पय।

हारि तुरयि पदारि पयभरि कमन सहि ओरि॥

तरि तरि तखारि झिङ्गे विज्जुदाम छटा तरिगे,

घोधिन संघात िविसि काल दसि ओिा।।
तुयि कोटी चाप चूर्वयि चाक्सिस चौवक्सिशपूर्वयि।
विरिम सािअसाधिाि धोिनी भविओिा।।
अह्यकुअ कबह्य लाइअ फेखी फफफविसि गाइअ।
रक्षिमित पिति भूत िताल विकिल ओिा।।
पाभिइ पर्वपिह्ि गक्जजय भूक्ष मण्डल मुण्डे मक्णडअ।
चार चह्दकलेब कीक्षासुकेत की तुक्ल ओिा।
िमिर पे सिधिमि िविखअ दान दपो दधीक्ष खीक्खअ।
सुकवि निजयदेि भक्त ओिा।।
देविसिंह निहि्द नह्दन शतु नखइ कुल कककह्दन, क्सिंह
समक्शाक्सिंह मया सकल गुणक कधान गक्ष ओि"।।

क्शाक्सिंह मात एक विजेतेटा नक्ह अक्तु कला, संस्क्कक्त आ साक्हत्यक संक्कि सेहो िलाह। हुनक दबािविदान, पक्णडत, कविि, दाशक्षक एिं क्कंतक लोकक्सँ भलि िहैत िल आ एक्ह मानेमे ओ िजा विकमाक्दत्य आ भोजसँ एको पाइ कम नक्ह िलाह। विदापक्त, िचस्पक्त, अमतकि, जयंत, लक्खमा आक्दक नामसँ सब केओ पक्चित िविओ। विदापक्त तँ हुनक सब क्कि िलविह्ह आ पदािलीक िचना क्शाक्सिंहक िजि दबािमे भेल। क्शाक्सिंहक मंतीगण िलाह अच्युत, महेश (महेशा) आ क्िाधि। शंकि नामक एकटा पमुख अक्धकाि सेहो हुनका दबािमे िहैत िलाह। तीनीक एक पोखविकि अंगनइमे क्शाक्सिंह कालीन एक्तहाक्सक अशिेर सब सुक्कत अवि। ओक्ह समयक एकटा पोखवि 'भटोखवि'क नामसँ पक्सद अवि। क्कविलामे ओ पमि िजा िलाह जे सिणिष मुदाक पचलन चलौने िलाह आ जकि दूटा अशिेर अखनो पाप्य अवि।

क्शाविसंहक सम्बन्धमे कहल गेल अवि जे ओ अपना समयक समकालीन िाजा सभक्हक मध्य एकटा अक्दतीय पक्तभाक व्यक्तत िलाह जे एतेि कम क्दनमे समस्त उतिी भातिमे अपन धाक जमा लेने िलाह। पक्ज्ञ्य सबक्हक क्दन सबखन एके िंग नक्ह िहैत अवि तै क्शाविसंह एकि अपवाद कोना होइतैि।

क्शाविसंहक पिाक भेलाहपि पदक्संह क्मविलाक शासक भेला आ मैविल पिम्पािाक अनुसािे ओ क्दल्ली सुल्तानके कि देब स्वीकाि केलक्ह। हुनका समएमे विद्यापक्त हुनक सलाहकाि िलविक्ह। ताक्ह कालमे विद्यापक्त ठाकुिके मंती सेहो कहल गेल िक्ह। ओ पदा, पदौक्ल आक्दक स्िापना केलक्ह आ चम्पािण्यमे पदकेक्ल नामक सैिनक सेहो। विद्यापक्त क्हनका नपक्त पदक्संह कक्हके उल्लेख केने िवि। विद्यापक्तक अनुसािे पदक्संह भीम जका बहादुि िलाह आ दानीक क्हसाबे कल्पकि बुिल जाइि। शैविसिविसािमे विद्यापक्त क्लखने िवि—"संगामागन सीम भीम सदश....दाने सक्लपत कल्पकि"।

पदक्संहके कोनो पुत नक्ह िलक्ह। पदक्संहक बाद महािानी लक्खमा क्मविला िाज्यक भाि अपना हािमे लेलक्ह। उपेन्द्र ठाकुि क्लखने िवि जे क्शाविसंहक पिाक्त लक्खमा उतिाक्धकाविणी भेलीह मुदा से बात विशास किबा योग्य नक्ह अवि कािण हम देक्ख चुकल िी जे विद्यापक्तक संग लक्खमा दोणवाि पुक्दत्यक दिबािमे चल गेल िलीहे आ क्मविलामे बक्च गेल िलाह पदक्संह जे मुसलमानी महापभुके कि देबाक िचिन दए क्मविला िाज्यक आंतविक स्वतंतता सुक्कक्त िखबामे समिि भेल िलाह। मैविली पिम्पािामे एकटा कि सुक्कक्त अवि जाक्हसँ एक्ह बातपि पकाश पडइयै।

क्शा विसंहक लापता भेलापि कायर्सि चह्नदकि पुत एिँ क्शा विसंहक मंती अमतकि पटना गेला आ ओतए जाए सुल्तानक पक्ताक्वसँ भेट कए कावि लाक सितंतताक भीख मंगलक्हि। तखन जे समिौता भेल तदनुसाि पद क्संह िजगदीपि बैसलाह। पद क्संह बिौ ि पिगनामे पदुमा नामक सि ानपि अपन िजधानी बनौलक्हि। एक्ह पि्मिा िके ध्यानमे िव्खक स्पष होइि जे क्शा विसंहक बाद कावि लाक गदीपि पद क्संह बैसलाह आ तत्पशात लक्खमा िनी।

लक्खमा िनीके गदीपि बैसबाक मूल काणि इ िल जे पद क्संह सेहो अपुते मिल िलाह। बाहि िरिष धवि ओ क्शा विसंहक पतीक्त कायमानुसाि केलक्हि आ तदुपि ाित क्शा विसंहक शादाक्द कए वि दापक्ताक वि चािसँ ओ िजगदीपि बैसलीह। लक्खमा देिी नीक्त, धमक्ष ा, उदाित ा, एिँ वि दिता आक्दमे क्नपुण िलीहे आ वि दापक्ताक सहयोगसँ नीक जका किीब नौ िरिषधवि िज्य केलक्हि। एकि बाद पद क्संहक पती वि शािस देिीक शासन भेलक्हि। ओ वि सौली गाममे अपन िजधानी बनौलक्त आ बहुत िसि धाक्मक कत्य केलक्हि। वि दापक्त क्हनका समयमे बहुत िसि पोिी क्लखलक्हि।

देवि क्संहक िशजक अंत एक्हठाम भऽ गेल आ तत्पशात हुनक िमातैय भाए कुमिि हवि क्संहक शाखाक शासन पुनः पािभ भेल। इ बहुत कम क्दन धवि शासन केलक्हि आ क्हनका समयमे कोनो खास घटनो नक्ह घटल। वि भागसािि (वि दापक्त), कत महाणि एिँ महादान क्णष (िचस्पक्त), वि िदि चह्नद (क्सार क्श) तिा गंगकत्य वि िकि (दि क्षान) आक्द पोिी सबमे क्हनक नामक उल्लेख भेटइयै। कह्नदाहा अक्भलेखमे सेहो क्हनक उल्लेख अवि। ओ वि दान उदाि एिँ योदा िलाह।

िहनक बाद िहनक पुत ति िसंह पिसद निसिंह दपनाियिण ाािजगदीपि बैसलाह। निसिंह अत्यंत पतापी ाािजा ािलाह आ तै िहनका दपनाियिणक विि द मंती लोकिन देने छिथ्ह। कहल जाइत अिछ जे ओ अपने मंती विदापित ठाकुिसँ विभागसागि नामक कानूनी गंि क िमाण किौने ािलाह आ तदनुसाि ह्यायालयमे कायषकबाक आजा देने ािलाह। कह्दाहा (सहिसा)क सूयषमिह्दि पि एखनो िहनक िलखाओल उपलब्ध अिछ आ ओकि िचव देल अिछ शक १३७५ (१४५३-५४ ई.) ओिह िशलालेखक पाठ एिि पकािि अिछ—

“पथ्वीपित िाजिाि भि (िसंह) आसी दाशी विरेह्द ाािुिजिािल कीितपिविशः।

तस्यात्मजः सकल कत्य विचािि धीिा ाािा ािभूिि विि (हिसिंह देिः)॥

(दोः ?) स्तंभदय िावजिाहततप शेणी किीिटोपल ज्योत्सनािििचत पाद पल्लि नख शेणी मयुखािलः॥

दातातत्तनयोमयोतत विधिना भूमण्डलं पालयत् धीिः शी निसिंह भूपालकः कातोधुना ाािजते।

विदेशतोस्यायतनं खेविदम चीकित्। विलि पंचकुलोदभुतः शमदिशिधि कती....”॥

एिहलेखमे निसिंहक पूिष उल्लेख अिछ आ इहो कहल गेल अिछ जे ओ अपन दुनू शिक्तशाली भुजासँ अपन दुश्मनके दबौने ािलाह आ सब हुनके पैिपि लोट पोट कििति ािल। कामह्दकीय नीितसािि अनुसािि ओ अपन ाािज्यके कियि कििति ािलाह। एिहमे हुनका ‘भूपित पालक’ सेहो कहल गेल ािछ। दुगा

भक्तत तरंगिनीमे विद्यापतिक उनका योद्धा कहने छथि। इ अपने आ हुनक पत्नी धीरमति एके रंग उदार छलाह। कहल जाइत अछि जे धीरमतिक आदेशानुसार काशीमे एकटा पोखरि खुनाओल गेल छल आ धमात्माक हेतु एकटा धर्मशालाक निर्माण सेहो कैल गेल छल। हुनके आदेशपर विद्यापति दानवाक्यावली ग्रंथक निर्माण कएने छलाह। एहिमे नरसिंह देवक हेतु दर्पनारायण उपाधिक प्रयोग भेल अछि।

"श्री कामेश्वर राजपण्डित कुलालंकार सारः क्षाया

मारिसो नरसिंह देव नृपति भूमण्डलाखण्डलः।

दव्यद् दुर्धर्ष वैदिपक्षलनोऽभूदपर्णारायणो।

विख्यातः शशिरश्मि कुन्द धवलि भाम्यद शो मण्डलः।

तस्योदार गुणाशस्य नृपति क्ष्मापाल चूडामणेः॥

हुनके समयमे विद्यापति व्याडिभक्तततरंगिणी सेहो बनौने छलाह। व्याडिभक्तततरंगिणी आ विभागसारक मूल अपन पोथी 'मिथिला इन द एज ऑफ विद्यापति'क परिशिष्टमे छपने छी। हुनका समयमे बहुत रास विभिन्न विषयक ग्रंथक रचना सेहो भेल।

नरसिंहक बाद धीरसिंह राजा भेलाह। नरसिंहके चारिटा पुत्र छलथिन्ह—

धीरसिंह हृदय नारायण (प्रथम पत्नीसँ)

भैरविसिंह रूपनारायण

चन्द्रसिंह (द्वितीय पत्नीसँ)

दुर्लभ सिंह (रणसिंह)

धीरसिंह अपने पिता जकाँ एकटा योग्य शासक छलाह। ई. १४६० क आसपास गद्दीपर बैसलाह आ विद्यापति हुनको हेतु प्रशंसाक पुल

बाह्नने ि वि। मयादा, पिकम आ पजा तीनुमे इ अपूिषिलाह। ह्नको दबािमे बहुत िस वदान हैि िलव ह्न। ह्नके िट भाए चह्दवसंह चनौि (चह्दपुि)क कमाता िलाह। चह्द वसंहक आदेशपि कषा कशक पबोध चह्दोदय नाटकपि रिच शमा अपन टीका वलखने िलाह। धीरिसंहक कंसनाियण सेहो कहल जाइत िलक्ह।

भैिरिसंह देवि मवि लामे वशावसंहक बाद ओइनािि शिमे सबसँ पक्सद शासक भेलाह भैिि वसंह देि जे पुनः एक बेि वशावसंह जका समस्त मविलाक एकीकणि केलक्ह आ मविलाके पूणष सितंत घोवरत केलक्ह। उहो वशावसंह जका अपन चानीक वसका चलौने िलाह आ ओक्ह वसकाक आधािपि इ कविषीद रपे कहल जाइत अवि जे ओ १४७५ ई. मविलाक गदीपि बैसलाह। हुनक स्ती जयाक अनुिधपि िचसपक्त कश दैत कणषाक िचना कएने िलाह। वशावसंह जका इहो पंचगौडेशिक उपाधसँ विभूवरत िलाह। ह्नका सम्बह्मे कमवलवखत शबदािली ध्यान देबाक योगय अवि।

विदापिकप

शौयाविजत पंचगौडधिणी नािप नमीकता____

नेको तुङ तुिग संग सक्हतचिताम िमोदयः

शीमद भैिि वसंह देि नपकतयषयानुजह्मा जय

त्याचह्दाकषखण्डकीवतषसक्हतः शी रपनाियिणः।

रिच शमा (पबोधचह्दोदयक टीकामे)प

ह्यायेनािवत तीिभुवक्त िसुधा शी धीरिसंह नपे

शीमद भैिि वसंह भूकपकना भातानुजेनावित।

दिषान (दण्डवर्िकि)प-

गौडेशि पक्तसर्ाीमिक्त पतापः

केदार्िय मगिचक्ति दार्तुित्यम्॥

संभतिः क्शाक्सिंह जका भैर्िक्सिंह सेहो अपन क्पताक समयसँ शासनमे हार्ि बटबैत िलाह। क्हनका समयक सबसँ मुख्य घटना इ अर्वि जे इ बंगाल सुल्तान दार्ि कैल गेल क्मर्विलाक अपाकक्ताक बटिािके तोडलक्ह आ पुनः समस्त क्मर्विलाके एक कए ओक्हपि अपन एक क्त िज्यक स्र्ापना केलक्ह। बिौड पिगिनाक बर आि गाममे ओ अपन िजधानी बनौलक्ह कािण इएह सबसँ सुक्िक्त स्र्ान क्हनका बुर्वि पडलक्ह।

एतए इ स्मािण िखिबाक अर्वि जे हाजी इक्लयास १३४६ ई.मे क्मर्विलापि आकमणक कममे हाजीपुि तक बढल िल आ क्मर्विलाक ओइनर्िािि िजाके पिाक्जत कऽ कए क्मर्विलाके दू भागमे बाक्ट देने िल। गंडकक उत्तर्ििी भागमे ओ ओइनर्िािि लोकक्ताके शासन कर्िैत िक्ह देलकक्ह आ गण्डकक दक्क्षणी भाग समस्तीपुि, बेगूसिाय, बिािडा, महनाि, हाजीपुि आक्द क्षेत्रके ओ अपना अधीन िखिलक। गण्डकपि अपना क्हदक्स ओ समस्तीपुि (शमसुदीनपुि) नामक नगिक स्र्ापना केलक। क्ताहूतक ओइनर्िािि शासकके इ सब क्हन खटकैत िहैक्ह। एक्ह आपाकक्ताक बटबािाके कािर्ि क्हनक हेतु क्शाक्सिंह नष्ट कए समस्त क्मर्विलाक एकीकिण कएने िलाह पिंतु क्शाक्सिंहक पिाक भेलापि पुनः यािक्सक्ताक स्र्ापना भेल आ केओ मैर्विल शासक एक्ह क्हदक्स ध्यान नक्ह देलक्ह। भैर्ि क्संह एक महत्तिाकांक्षी व्यक्क्तत िलाह आ क्मर्विलाक अपाकक्ताक बटिािि हुनका

बाबिर्व खटकैत हैह्ह तै ओ ाजिगदीपि एला उतिं सबसँ पहने एक्ह व्दवस ध्यान देलक्ह आ एक्हमे सफल सेहो भेला।

धीविसंहक समयसँ बंगालसँ खटपट होइत ाल आ इ बात भैावसंह देखैत ालाह। बे<u>ाकुबे</u>मे हुनके बंगालक वरिद अवमयानमे जाइयो पडइत ालक्ह तै जखन ओ शासक भेलाह तखन ओ एक्ह व्दवस अपन ध्यान देलक्ह। हुनका समय बंगाल सुल्तानक पक्तक्वध्र केदािय हाजीपुामे हैत ाल। भैाि व्संह केदाियके पाव्जत कए ओक्ह केत्तपि अपन आव्धपत्य साव्पत केलक्ह आ समस्त क्षर्वलाक एकीकाणि कबिामे समाषभेला।

ओ सौसँ उपि पोखवि खुनौलक्ह। एक्हमे जाहव्टया गामक पोखवि सबसँ पैघ ाल। क्हनका दाबामे चौहान केसरा व्संह आ संगाम व्संह पक्सद व्सपाही ालवि ह्ह आ पाम्पािगत काक अनुसाि ओ एक्ह दुनू व्सपाही लंका पठौने ालाह। जाहव्टया पोखविक यजोत्सि बडड पैघ भेल ाल आ ओक्हमे तत्कालीन ाजा महााजा आ वदान लोकक्कके आमंव्तत कैल गेल ालक्ह। ओक्ह कममे उपाितत दुनू दूतके लंको पठाओल गेल ालक्ह। ताक्ह व्दनमे बंगाली वदान घािुनाि व्शामिवा सेहो एक्हठाम पव्ढ हिल ालाह आ एक्ह यजमे नुकाके सब काु देखैत ालाह। यजमे गलती मंत पढल जा हिल ाल आ से हुनका नक्ह हिल गेलक्ह तो ओ बाव्ज उठलाह <u>“साखती कविता कविषा पवण्डताज (ति) व्शामिवाना”</u>____ एक्हसँ लोग हुनका क्वह्ह लेलक।

पोखविक अव्तवितत भैावसंहक समयमे बहुत ाास नगाि पटनक साापना सेहो भेल ाल। ‘तुलापुर रदान’क चचष सेहो भेटइत अवि। संस्कत साव्हत्यमे बहुत ाास गांक ाचना एक्ह

कालमे भेल। विदापक्त, ाचिस्पक्त, पकधि आक्द सन धुह्धि विदान हुनका दबािमे िलविह्ह आ ािजा सियं संस्कत साक्हत्यक बडड पैघ पषपोरक िलाह। हुनका दबािमे ाचिस्पक्त 'पविरद्' हिविह्ह, आ दिषान धमाक्धकविाक हिविह्ह। क्हनक विरद िलक्ह 'रपनाायिण'।

भैिक्संहक ािद ामिभद शासक भेला आ क्हनको विरद रपनाायिणे िलक्ह। इहो अपन ाजिधानी ामिभदपुि नामक गाममे बनौलक्ह। कहल जाइत अवि जे क्हनका पटनामे क्सकह्दि लोदी संगे भेट भेल िलक्ह आ दुनूमे बेस दोस्ती सेहो िलक्ह। इ हुनका संग शतिजि इत्याक्द सेहो खेलाइत िलाह। सुलतान हिस्य नत्य देखबा काल हुनकहुँ अपना समीपमे सिान देविह्ह। गौड, बंगाल, मालदह, मुक्शाषाबाद आक्द सिानके ओ जीतने िलाह। क्सकह्दि लोदी बंगालके ध्यानमे ािख क्हविलाक शासकके अपना क्दक्स पक्टयाके ािखने होवि से संभि। विभाकि दैतविािकि नामक गंिसँ क्नमक्लक्खत ाितय स्पष अवि।

''क्सकह्दि पुह्दिाि गुर दुािदकीडया

क्दनं गमयक्त धुि विविधि नागाि विभिमैः।

पचण्ड विपुमण्डली मुकुट कोक्ट पभा।

समक्जत पदाम्बुजं यक्मह क्नत भाािनियन्॥

येना खाक्न समुदखात सदशं ािपीगतं क्नजेले।

येनादाक्य च ताक्न ताह्यि महादानाक्न पुण्यत्मना।

जागेत्येदुत विकिमः संजगती कह्याकि गाहको।

गौडोििलियेह्दविदिहनः शी ामिभदो नपः॥

ामिभद अत्यंत विदााक्य िलाह। ाचिस्पक्त क्हनको समयमे

जीवित िलाह। क्सकह्दि लोदीके िमिभदपि बडड विशास िलक्ह आ तै आशियकता पडलापि क्नक बजाहक्ट होइत िहैह्ह। िमिभद उदाि, दानी आ विदापेमी िलाह आ ओइनिाि पम्पिािक अनुसाि इहो बहुत िसि पोखवि इत्याक्द खुनौने िलाह। क्नका समयमे भट शी िमि नामक एक याती गयासँ तीिभुक्तत तीिष कबाक हेतु आयल िलाह आ ओ िमिभदक दानवीयता एिं उदाितासँ बडड पभावित भेल िलाह। कावििला होइत ओ पयाग घुिि िलाह। ओ तीिभुक्ततक विदत समाजसँ एतेक पभावित भेल िलाह जे एक्ह बातक उल्लेख ओ अपन पोिि 'विदत पबोवधनी'मे सेहो केने िवि ——

''गयाया कगत्वा िमिस्तीभूत्तत्याख्यदेशपम्।

रपनाियिणं विपिं संतुष्ट सििवािकििति्॥

रपनाियिणाद् भूपादाजा पाप्य सुताक्वितः।

तीिभूतत्याख्यदेशाश पयागं समुपागतः''॥

एक्हिशिक सबसँ अंक्तम शासक िलाह लक्ष्मी नाि देि कंस नाियिण जक्कका समयक अवभलेख भगीििपुिसँ पाप्त भेल अवि। १५१३ ई.मे इ कावििलामे शासन कििति िलाह। १५१० ई.मे गदीपि बैसल होवि से संभि कािणि ओक्ह िरषे क्नके शासन कालमे देिी माहात्म्यक एकटा पाण्डुक्लवप तैयाि भेल िलि।

भगीििपुि अवभलेखमे क्नका 'िजावधिाज' कहल गेल िक्ह —''यिनिपक्त भयाधायकस्तीिभुततौ िजा िजावधिाजः समि सः कंसनाियिणो सौ''। क्नका डिि यिनि लोकक्न िििि कंपैत िलाह। कहल जाइयै जे क्नक चवित संदेहास्पद िलि आ इ अपन कोनो मंती शी धिकि पतीसँ सम्बन्ध िखैत िलाह। क्नका समयमे कावििलापि मुसलमानी आकमण भेल। १५२६ ई.मे क्नक मत्यु भेल

जेना कि ताम्रलेखक श्लोकसँ स्पष्ट अछि ––"अंकाक्षिवेदशशि (१४४९) सम्मित शाककरि, भादेवसिते, पक्षपक्षं कक्षा सुनुगि हा हा महात्म इति कंसनारायणौऽसौ, त्याज्य देसिसिलीकटे शर्मिम्" –– १४४९ शाक अर्थात १५२६ ई.मे अपन पावरिष्ट शरीर त्यागलन्हि। संभवतः बंगालक नशरति शाहक हाथे इ पराजित भेल छलाह कारण एक तँ नशरति शाहक एकटा अभिलेख बेगूसरायिक मटिहानी अंचलसँ प्राप्त भेल अछि। नशरति दिल्लीक सुल्तान संग भेल संधिके तोड़ि मगध तिरहुतपर आक्रमण केलन्हि आ लक्ष्मीनाथ कंसनारायणके पराजित कए अपन जमाए अलाउद्दीनके एहिठामक राज्यपाल नियुक्त केलन्हि।

एकर बादक इतिहास पूर्णरूपेण ज्ञात नहि अछि। ओइनवारवंशक शक्तिक हास भऽ गेलैक। तथापि ओइनवार वंशक लोग यत्र तत्र तिरहुतमे राज्य करैत रहलाह आ एम्हर अराजकता सेहो बढ़ै लागल। केन्द्रीय सत्ता टुटि गेलासँ चारु कातक राजा सामंत अपन स्वतंत्रता घोषित कऽ लेलन्हि आ मुसलमान लोकनि सेहो एहि क्षेत्रमे अपन अधिकार बढ़ैबामे प्रयत्नशील भऽ गेलाह। ओइनवार वंशक एकटा इन्द्रसेन (शाक्तसहोत्सासंग्रहक लेखक)क नाम भेटइत अछि जकर सम्बन्धमे हमरा लोकनिके कोनो विशेष ज्ञान नहि अछि। १४३४–३५मे चम्पारणमे राजा पृथ्वीनारायण सिंह देवक राज्य छल (महाराज पृथ्वीनारायण सिंह देव भुज्यमान राज्ये चम्पकारण्यनगरे)। हिनक उत्तराधिकारी छलथिन्ह शक्तिसिंह आ तकर बाद हुनक पुत्र मदन सिंह। मदन सिंह, मदनरत्न प्रदीपक लेखक छलाह। इ सब राजा अपन सिक्का सेहो चलौने छथि जाहिपर लिखल अछि –– "गोविन्द चरण प्रणत श्री चम्पकारण्ये"।

छनक मुद्रा कमालय तिइसँ दल्ली धर्वि भेटइत अवि। मदन सिंहक िजय गोखिपुि धर्वि लिक्क। नसिंह पुिणिक पाण्डुक्ला पक पुष्पकामे एकि पमाण अवि ___“....महािजाधािज शीमन्मदन सिंह देिनाम् विजयनाम् शासत्ता गोिक्पुि.....”। चम्पािणिक लौविया नंदनगढमे अशोकक स्तंभपि एकटा लेख अवि ___“नपनाियण सुत नप अमिसिंह”। इ के िलाह आ कतुका िजा िलाह से कहब असंभि।

महािज लक्ष्मीनाि अपुत िलाह तै हुनक बाद हुनक कायसि मंती केशि मजूमदाि िजक भाि सम्हािलक्क आ उएह िजा भेला। ओइनािकि पििपािक नािह कीति उहो जन कल्याणक हेतु पोखवि खुनौलक्क आ दानाध्दक नीक व्यसि ा केलक्क। मजक्लश खा नामक व्यक्तत सेहो एक् सिक्तसँ लाभ उठाए कि्ि दन मविलापि शासन केलक्क। केशि मजूमदाि कुशल व्यक्तत िलाह आ ओइनािि शासनक सब बातसँ अिगत हिबाक काििणे ओ मविलाके अपना शासन कालमे यिासाध्य सितंत िखिलक्क आ मैविल पिम्पिा नािह कीति जन कल्याणािषबहुत कि्ि केलक्क। ओइनािि िशि आपसी कलह आ बटिािसँ खण्डत भऽ चुकल िल। िजकुलक सम्बन्धसँ ओइनािि मूलक बाह ण लोकनि “कुमाि” पदिी धािण कए लगलाह आ ‘कुमाि’ पदिी धािी ओइनािि बाह ण लोकनिक एक शाखा अहुखन मालदह िजलाक अिइदंगा गाममे िविह्ह। ओइनािि िशक अनेक िशलालेख आ कि्ि मुदा सेहो अवि जािपि हमिा सब इ कह सकैत िी जे ओइनािि लोकनि कणाट िशि जका मविलाक सितंतताक सुिक्षक हेतु कि्ि उठा नक्क िखिलक्क आ हुनका शासन काल मैविलक

पसाि चार कात भेल। एक्ह िशिक ततिधानमे साक्त्य, कला, क्याकणि, स्मक्त, क्नबंध, दशष्म, इत्याक्दक वकिास भेल। महाकवि वदिापक्त देक्संहक समयसँ भैिि क्संहक शासन काल धवि ओइनिाि िजिनीक्तक एकटा पमुख स्तंभ िलाह। िजिकाजमे एतिा क्यस्त क्हतो ओ अपन क्लखब पढब नक्ह िडिलक्ह आ मातभाराके सेहो नक्ह क्बसलिाह। एक्हि शिक समयमे गोनू िि सेहो भेल िलाह। एक्हि शिक पिकि भेलापि क्मवलािमे मुसलमानी पभाकि क्दि भेल। (एक्ह पसंगमे हमि ''क्हस्टी ऑफ मुक्स्लम र ल इन क्ाहूित'' देखल जा सकइयै आ देखु हमि क्नबह्ध ''द ओइनिाजि ऑफ क्मवलिा'')

अध्याय ९

खण्डिला िशक इक्तहास

ओइनिाि िशक अंत भेलापि क्मविलामे केशि मजुमदाि आ मजक्लश खाक शासन हिल। केह्नीय सताक समाप्त भऽ गेलापि आ मुसलमान लोकक्नकके लगाताि आकमणसँ क्मविला विन क्भन भऽ गेल िलि आ चार कात अिजकता पसैवि गेल िलि। जे जेम्हिि पेलक से तेम्हिि अपन आक्धपत्य कायम कऽ लेलक आ एक्हयुगमे क्मविलामे बेसी बाि्िबिआन लोकक्नक बढती भेलैह्न। कक्ि िाजपूत लोकक्न सेहो एक्हसँ लाभ उठौलक्न्ह आ कैक ठाम अपन सितंत िाज्य कायम कबिामे सफल भेलाह। समस्त क्मविलामे हाजीपुिसँ बंगालक सीमा धवि मुसलमानी पभाि बक्ढ चुकल िलि आ मुगल सामाज्यक सािपना धवि किािब किािब इएह क्सिक्त बनल हिल। एक्हठाम मुगल सामाज्यक सािपना हम बाबकि समयसँ नक्ह लऽ कए १५५६ याक्न अकबकि समयसँ लैत िी कािण बाबि दाि सािक्मत िाज्य तँ िाज्ये मात हिल आ हुनक पुत ओक्ह िाज्यके जोगा नक्ह सकलाह। नतीजा भेल जे क्काहािकि शेिशाह मुगल

सामाज्यके नस्तनाबूद केलक्हि आ अपन सता सि ाक्पत कबिामे समि षभेलाह। शेिशाहक एकटा उतािक्धकािी क्सका क्ताहूित भेटल अवि आ एकटा मैविली क्लक्पक अक्मलेख सूयषिढा (मूंगेि)सँ। अकबिकि शासन भेलाक बाद जे पर्वितिष भेल तकि पभािि क्मविलापि सिाभािवक र पे पडल।

खण्डिला िाशिक सम्बिन्धमे कहल जाइत अवि जे क्हनका लोकक्नके मुगल समाट अकबिसँ समस्त क्मविलाक िाज्य भेटल िलक्हि। दिभंगा िाजिक इक्तहास िवस्तित र पे डॉ. जटाशंकि िा शोध कएने िवि आ एक्ह दक्श कोणे हुनक “क्हस्टी ऑफ दिभंगा िाजि” आ “महािाज लक्मीशि क्संह” पठनीय गंि अवि। खण्डिला िाशिक संसि ापक िलाह महामहोपाध्याय महेश ठाकुि। क्हनक पूि षि क्मविलेक हिवि िलक्हि आ ओक्हमे एक गोटए शंकशषि उपाध्यायके क्किु दान खण्डिामे भेटबाक बाद ओम्हि जाके बक्स गेल िलाह। महेश ठाकुि हुनके िशिज िलाह (दशम पीढी) आ जमीन जायदाद िला हिबाक कािणे इ लोकक्न उपाध्यायसँ ठाकुि (सामंती पदिी) कहबे लागल िलाह। १६म शताब्दीमे इ लोकक्न मण्डला (गढ मण्डल िस्ताि)सँ पुनः एलाह। क्हनक क्पतामह शीपक्त ठाकुि भि ाजिपुतके क्किु दान दऽ कए भौिि गाम बसौने िलवि िलाह। एक्हठाम स्िानीय जे ओइनिाि िाशिक पतनक बाद जे अिाजक क्सि क्त शुर भेल िल ताक्हसँ लाभ उठाके भि ाजिपूत लोकक्न सेहो अपन सितंत िाज्य सि ाक्पत कऽ लेने िलाह। भौिमे आक्बके बसला कािणे खण्डिला लोकक्न ‘खिौिि भौिि’ कहौलवि। एक्हिाशिमे िवदानक जे एकटा पिम्पिा चक्ल आक्ब िहल िल तकिा अनुर पे इ लोकक्न भौिमे एकटा संस्कृत िवदािा केन्द्रक सिापना केने िलाह जते देशक

विभिन्न भागसँ विद्वान लोकनि पढबालेल अबैत छलाह। महेश ठाकुरक ज्येष्ठ भाए भगीरथ कारणे भौतिक पक्ष बडड बढ़ि गेल छल ____
"*पद पतमका यत दुलषाम्,*
हिश्चनं भक्ति नेह्यनं कामना।
शी भगीरथ गुणेन कोलिम्,
भौर गौरि करि गरियसी"॥
गढेश नप णिषा संगह श्लोकक पाण्डुलिपिक अध्ययनसँ मैथिल विद्वानक जे विवरण भेटइत अछि ताहिमे महेश ठाकुरक पशंसनीय उल्लेख अछि। रपनाक मैथिलक पाण्डुलिपि गढेश नप ____ णिषाम् कऽ उपरितत पाण्डुलिपि पूर्विक आ ओहि पाण्डुलिपिमे गढमण्डल राज्यक विवरण भेटइत अछि। रपनाक अनुसार महेश ठाकुर भौर ठकुर लोकनिक शिजक रपमे विख्यात छथि आ संगहि यादोरियक धार्मिक गुरुक रपमे सेहो। महेश दलपत शाह आ रानी दुर्गावतीक समकालीन छलाह। खण्डरि, मण्डला, तिनपुर आ सिमरि क्षेत्रक बेस इज्जत छैन्हि। महेश ठाकुर दुर्गावतीके पुराण सुनबैत छलाह। एक दिन कोनो कारणे ओ ओतए अपन पाय शिष्य रघुनंदनके पठौलन्हि पश्चात रघुनन्दनके ओतए किछु खटपट भऽ गेलैन्हि आ ओतहिसँ गुरु शिष्य दुनू गोटए दिल्ली दिस विदा भेलाह। ओहिठाम मुगल दरबारमे इ लोकनि अपन विद्वतासँ समाटके पभावित केलन्हि आ रघुनन्दन जे फरमान पाप्त केलन्हि से दक्षिणा स्वरूप अपन गुरुदेव महेश ठाकुरके दऽ देलन्हि। महेश ठाकुर आर तीनू भाइ दिल्लीसँ घुरिके सिमरि, तिनपुर आ मण्डला दिस चल गेला किएक तँ ओहिठाम हुनका लोकनिके जागीर छलन्हि आ महेश

ठाकुि असगर्ा फमिानक संग घुिला। मण्डला अखनो धर्व महेशपुि आ कािहूकाया टोल अर्व। मैर्वल पिम्पािमे सेहो महेश ठाकुिक िािज्य पािप्तक उल्लेख भेटइत अर्व ___

"नगिह िद िसुद्धािी शकमे अकबि शाह

पंक्डत सुबुध महेश को कन्हो कािर्वलानाह"॥

"आसीत पक्णडत मण्डलाग गणाता भूमण्डला खण्डला।

जाता खण्डिल कुले वार्व सुता भततो महेशः कक्त।

शाकेण्ध्र तुिग शुक्तमही (१४४८=??) लक्तत्ते

हर्वनेिगद्देिी कप्था सुयेन कािर्वलादेशः समस्तोऽक्जाः"॥

"अक्त पर्व ति मंगल किणि िमि जनमके क्दन।

अकबि तुक्त महेश को कािहुक्त िािजा कर्विन॥

जेना कक पूिर्वहं कहल जा चुकल अर्व जे महेश ठाकुि जखन फमिान लऽ कए कािर्वलामे िािज्य कबाक हेतु पहुँचलाह तखन हुनका र्विोधक सामना किए पडलक्ह काणि एक्हठामक सर्वतंत्र िािजपूत िािजा लोकक्न ताधर्व सर्वतंतताक सीद लऽ लेने िलाह। ओइनिािक बाद जे क्स्र्वत उत्पन्न भेलैक तकि र्विणि हम पस्तुत कऽ चुकल िी आ इहो कक्ह चुकल िी जे िािजपूत लोकक्न अपन पभाि बढा लेने िलाह। तिा सीिजा आ पििमे पक्हने क्हन्दू िािजा चुनचुनक िािज्य िल पिश्चम चुनचुनक पीक भेलापि लक्ष्मी क्संह नामक एकटा िािजपुत िािजा ओक्ह क्षेत्रपि शासन किए लगलाह। ओइनिािक बबुआन लोकक्न सेहो ठाम ठाम अपन अक्धकाि जमौने िलाह आ १७म शताब्दीमे औिंगजेबक शासन काल धर्व कािर्वलामे एकटा ओइनिाि शासकक र्विणि (तलिाि ___ अक्भलेख जे कािर्वला भातीमे पकाक्शत भेल अर्व) भेटल अर्व।

एक्हसँ तँ सामाह्यतः इएह स्पष होइि जे महेश ठाकुिके पाभिमे काफी मुक्श्कल भेल होएतक्हह। ताक्ह क्दनमे क्मविला िट िट खण्डमे बटल िल। भौि पधान पशासक्नक केह्द िल। महेश ठाकुिक समय क्मविलाक क्सिक्नक णिषा क्नमाक्त अवि ____

“हिै भौि क्ती पबल, िसत भौि क्नज ठौि

सूि समि विजयी बडे, सब क्ती क्सिमौि॥

अच्युतमेघ गोपाल क्मल, मािै क्ती िजि

क्नज सुत लै भागी तबै िनी नैहिि िजि

बहुत क्दसिके बाद सौ सक्ज आये पम्माि

युद कणि क्मविलेशसँ सेना अपिपाि”॥

महेश ठाकुि सब पकाकि विििधके दबेबामे सफल भेला। एक्हठाम पश इ उठइयै जे िज्य गुर दक्कणामे भेटल िलक्ह अिि ओ स्वयं ओकिि पाप्त केने िलाह। एक्हपि विदानक बीच मतभेद अवि आ एक क्सदात इहो अवि जे ओ अपन विदतासँ मानक्संहके पभावित कए िज्य पाप्त केने िलाह। अकबि सेहो एक्ह पक्मे िल जे कहुना चार कात शाक्त बनल िहए जाक्हसँ ओ अपन िज्य विस्ताि कऽ सके आ तै क्मविलाक भाि महेश ठाकुिके सुपुदष कए ओ क्नक्शंत होमए चाहैत िल। क्ाहिूतक कलतटकि १७८९क एक पतसँ इ जात होइि जे महेश ठाकुि ओइनिि िशक पुिक्हत िलाह आ ओइनिि िशक अंत भेलापि ओ स्वयं क्दल्ली जाए ओतुका शासकके सब क्सिक्तसँ अिगत किए अपना हेतु िज्य पाप्त कऽ के अनलक्हह। एक आि क्कंिदंती बुकानन पुक्नाषा विपोटषमे सुक्कत अवि। क्हसेपक अनुसाि खण्डिला िश मुगल सामाज्यक अंतगषा एक स्वियत िज्य िल आ ओक्ह िज्यक अधीन कतैको

सामंत लोकक्ना हैत िलाह। गोपाल ठाकुकि देल अकबकि फमिानसँ इ स्पष्ट अवि जे आंतवकि मामला क्नवि ला पूणष्व पेण सतिंत िल चौधिाइ आ कानूनगोय समस्त क्ताहिूतक क्नका लोकक्नके पाप्त िलक्ह। १६५२ ई.क मजहनिामासँ सेहो स्पष्ट होइि जे महेश ठाकुि एक्हिशिक संसिापक िलाह। औिगिजेबक समयमे एक्हिशिके क्नाहाि आ बंगालक ११० पिगिना दानसरिप भेटल हैिक आ संगक्ह क्खलत आ मक्हर्मिक्ताि (मािकि चेक्ह जे दिभिंगा ाज्यक ाजिकीय चेक्ह िल)। एक्हसँ स्पष्ट भऽ जाइि जे समस्त क्ताहिूतपि एक्हिशिक पभाि महेश ठाकुकि समयसँ चलल अबैत िल।

महेश ठाकुि क्नविलामे खण्डिला कुलक संसिापक िलाह एक्हमे आब सह्न्देह नक्ह िक्ह गेल अवि। अपन ाजिा हेबाक अिसिकिे क्नािस्मिणीीय बनेबाक हेतु ओ धौत पिीक्ताक पिा चलौलक्ह। महेश ठाकुि मात एक शासकेटा नक्ह अक्पतु एक पैघ विदानो िलाह आ बहुत ािस पोिि सेहो क्नखने िलाह। कहल जाइत अवि जे क्नविलामे ाज्य पाप्त भेलाक बाद ओ गढ मण्डलासँ अपन देिि (कंकाली देिि)के सेहो ओतएसँ अनलक्ह। ओ अकबनिामाक एकटा संक्क्प्त संस्कृत संस्कणि बाहि केलक्ह जे सििेश ाितात संगहक नामसँ पक्सद अवि। कहल जाइत अवि जे महेश ठाकुि अकबकि शासनक ३४म ििष एक्ह गंिक अनुािद कएने िलाह। बीिबिलक आदेशपि इ अनुािद भेल िल। क्नको क्नको इहो मत िक्ह जे एक्ह अनुािदक बाद महेश ठाकुकि क्नविलाक ाजि भेटलक्ह। सुभद ाक संपादकत्मिे इ पोिि पकाक्शत अवि। एक्ह गंिसँ इ जात होइत अवि जे क्हमायुँ नहिन

आएल िलाह आ क्षाहूत आ पूवणाषामे ओ जागीि सेहो देने िलविह्ह। इ दुनू सिानक जागीि ओ अपन भाए क्षहह्दालके देने िलाह आ हुनका अपन जागीि ठीक कऽ कए बंगाल क्षदक्स बढबाक आदेश देने िलाह। मैविली शब्दक सेहो एक्ह संस्कृत पोिीमे बेस क्ष्यिहाि अवि। उदाहिणाि ष____

i) सम्यततया

ii) गल्ली

iii) असुसि

iv) तििवि

v) सुसि

vi) ढक्य=ढौआ

vii) विचीय विचीय (बीवि बीवि)

viii) िस्तु जाताक्ष____

ix) हति जोिी____

आ एहेन बहुत शब्द ओक्ह संकलनमे अवि।

महेश ठाकुिकि बाद हुनक क्षदतीय पुत गोपाल ठाकुि गदीपि बैसलाह। कहल जाइत अवि जे ओ विदोही िाजपूत पधान लोकक्षके दबौलक्हह। क्षनके समयमे टोडिमलक िाजसि क्ष्यिसिा लागू भेल िल। क्षनका समयमे भेटल फिमानक उल्लेख हम पूिषहं कऽ चुकल िी। क्षविलाक आंतविक िििटमे इ ततेक बािल िलाह जे जखन क्षदल्लीसँ क्षनका बजाहक्ट एलक्हह तँ अपने नक्ह जा कए ओ अपन पुत हेमागद ठाकुिके पठौलक्हह जे ओतए कोनो कािणिशि वािफन्न भऽ गेलाह आ ओक्ह वािफन्नािसिामे अपन सुपक्षसद एिँ अक्षदतीय ज्योक्षत्र शास्तक पोिी क्षलखलक्हह। कागज कलमक

अभािमे ओतए ओ माक्टपि क्लखैत िलाह आ जखन िजाके एकि सूचना भेटलक्ह तँ िजाक पूिलापि ओ कहल र्वक्ह जे एक हजाि िरषधर्व कक्हया कक्हया गहण लागत तकि क्हसाब ओ क्लक्ख िहल ि्व। 'िहू पिग पंजी' नामे इ गंि पचक्लत अर्व, आ ओक्हमे क्लखल अर्व —

"खण्डिला कुल तिणेगोपालादापयं गौिी
हेमाङ्द सतनुते पंजी (!) िहू पिगस्य"।

िजा क्हनकासँ पसन भऽ क्हनका मुतत कए देल आ क्ताहूत िजस्यक जे बक्कऔता िल सेहो माफ कऽ देलक। हेमाङ्द तकि बादसँ पढि क्लखबेमे अपन समय व्यतीत किि लगलाह। गोपालक बाद शुभंकि ठाकुि शासक भेलाह।

शुभंकि ठाकुकि नामपि दिभंगा लग अखनो शुभकंपुि अर्व। इ एक पैघ र्वदान आ लेखक सेहो िलाह। ओ भौिमे अपन िजधानी सिाक्पत केलक्ह कक्एक तँ एक्हठाम पक्हने भि िजपूत लोकक्नक पधानता िल। हुनका बाद हुनक पुत पुरुरोतम ठाकुि शासक भेला। क्हनक बजाहक्ट मुगल िजस्र पदाक्धकािक ओक्हठाम भेल िलक्ह आ िजस्र पदाक्धकाि दिभंगाक क्कला घाटमे ठहिल िलाह। ओक्ह पदाक्धकािके मुगलशासकक हाि सजा भेटलैक्क। क्हनकक्ह शासनकालमे क्ताहूतक दूटा बाहणके मुगल दिबािमे पुिष्काि भेटल िलैक। पुरुरोतमक बाद हुनक सतभाय नाियिण ठाकुि िजा भेलाह। नाियिण ठाकुिक समयमे दू फिमान भेटल िलैक जाक्हसँ दूटा गामक न ननकाि पाप्त भेल िलक्ह —

ससिो (पिगना भौि) आ क्बक्जलपुि (पिगना ििय)। भखाि पिगनाक क्सक्तके सुधािबामे क्हनक र्वशेर हाि िलक्ह आ १६४५

तक ओ िजय कर्ति हिलाह। तकि बाद सुह्दि ठाकुि िजा भेलाह। िजयक बटबाि कि संकेत भेटइत अवि। एक्हकालमे शाहजहाक शासन िल आ हकीकत अली नामक एक व्यक्तत दभिंगाक निब िलाह।

“ल सं ५०९ शाणिक्ि १४ खौ पुनः पमिभटाकिाश

पक्त गजपक्त निपिक्त िजय तयाक्षपक्त

सुतिाण शासत शाहजहा समम्ाक्तत नओिि

हकीकत खाण संभुजयमान तीिभुतत्यंतवति, स्स्

तीसाठतया संलग्न िविया गामे.... ।

क्ह्नके शासन कालमे मैविल िघुदेि शाहजहाक विरदाििली बनौने िलाह। सुह्दि ठाकुकि बाद मक्ह्नाि ठाकुि िजा भेलाह। ओ पलामू आ मोंिगमे मुगल समाटक सहायता केने िलविह्ह जकि सबूत उपलब्ध अवि। सुह्दि ठाकुि सुह्दपुि मोहल्ला बसौलक्ह्ह आ भालपटीमे सुह्दि सागि पोखवि खुनौलक्ह्ह। एक्ह पोखविक नाम िमिकविक आनह्द विजय नाव्टकामे भेटइत अवि। सुह्दि ठाकुि देखबामे बडड सुह्दि िलाह—

“अविह्दि विनिक्ह्दत सुह्दि लोचन

सुह्दि ठकुि सुह्दिता।

मदनेन समं विधिना तुक्लता

कक्लता कविलैक पुिह्दिता।

ति खण्डिला कुल मण्डन भूप।

सदा मक्ािस्िु मुकुह्द िता

नैने नगिि क्ले कमलापि

िविधि मंिन मह्दिता”—

मक्हनाि ठाकुकि समयक एकटा औिगिजेबक फिमान सेहो उपलब्ध अवि। मक्हनाि ठाकुकि काजसँ पसन भऽ मुगल समाट क्हनका आि ाज्य देलवन्हि ___

सदि जमीन्हदािी सकाि कािहूत (ताइिक संग) १०२ पिगना
पिगना धमिपुकि जमीन्हदािी
सकाि मूंगेि एक पिगना ___
बंगालसँ सेहो कामकलवखत इलाका भेटलवन्हि मािक कासानी सेहो ___
सकाि पूवणाया ५ पिगना ___
सकाि ताजपुि २ पिगना ___

मक्हनाि ठाकुकिे बेक्तयाक िाजा गजक्संहसँ सेहो िंिक्ट भेलवन्हि। कािजा, कफदाइ आ जीवि क्हनका समयमे कािहूतमे मुगल फौजदाि िल। मक्हनाि ठाकुकि शासन कालमे खण्डिला कुल अपन चिमोत्कषि पहुँचल िल। मक्हनाि ठाकुि बेक्तया (किमिािि)क िाजा गजक्संहके पिाडलवन्हि जे सुगौना पहुँचिके सुगौना कलामे आिमि कैित िलाह।

"धाय कवलाके मक्हनाि क्संह महािाज
बाजके िपटते सुगाओंपि चक्क गयौ।
घेिकव दौक्ड दििजेमे दििि लगे धिि,
लागै मुक्वत्यौ आगे आग सी लहवि गयो।
दौड दौड पैदल कंगुिनमे चक्क लागै।
लेहुकी लहवि सो सोक्त ताल भवि गयौ।
कहु ढाल कहु तकिस तलािि डावि तौलौ।
गज क्संह खोक्ल वखडकी दै कनकल गयो।

मव्हनाि ठाकुि मैविली साव्हत्यक सेहो संिक्षक िलाह। व्हनके समयमे लोचनक िाजतंिविाणी आ नैरध काव्यक िचना भेल िल। व्हनकव्ह समयमे इहो व्रणषा भेल जे दिभंगा िाज्य भविष्यमे बटत नव्ह आ ओव्ह व्हसाबे उतिाविकाकि व्नयम सेहो बना देल गेल।

एकि बाद नििपव्त ठाकुि शासक भेलाह। दुनू भाए (मव्हनाि आ नििपव्त)क सम्बन्ध केहेन िल से व्नमव्नलव्खत काव्यसँ स्पष्ट होएत। कालीक पूजक िलाह____

“िदिन भयान कानशब कुण्डल विकिट दशन धन पाती।
फूजल केश िशि तुअके कहजव्न निजलधि काती॥
काटल माि हाि अव्त शोव्भत तीक्ष्ण खड्ग कि लाइ।
भय व्नभषा िि दव्हन हाि कए िव्हअ व्नगम्भि माइ॥
पीन पयोधि उपि ििाव्जत रव्धि सविित मुण्ड हाि।
कव्ट कव्ड्कवा शब कि कर मंव्डत सक बहु शोव्णत धाि॥
िव्सअ मशान ध्यान शब उपि योव्गव्न गणहु सािि।
नििपव्त पव्त िाव्खअ जग इशिि कर मव्हनाि सताि॥

नििपव्त ठाकुि कुशल योदा िलाह आ तलिाि भजबामे बेस कुशल। पलामू आ मोंिगिमे जे मव्हनाि ठाकुि मुगलक सहाय्यक हेतु सेना पठौने िलाह तािव्हमे ओ ओव्ह सेनाक नेतत्ि नििपव्त ठाकुकि हाथमे देने िलविव्ह। हुनक बहादुिीसँ समाट सेहो बडड पसन िलाह। एकि विििणि कतेको ठाम भेटइत अव्छ। उपिला पदसँ सेहो एकि भान होइयै। नेपाल तिाइमे एकटा मकिनपुि िाज्य िल। ओइनििि शिक अंत भेला इ िाजा लोकव्न व्नािहूत िाज्यक कव्ि व्हस्साके हडव्प लेने िलाह। नििपव्त ठाकुि व्हनका

विरद पटनाक सूबेदाकि ओकहठाम वशाकायत केलकह आ ओकहठाम सूबेदाकि आशासन भेटलापि ओ आन जमीहदाि लोककाके संग लए वशाकाि खेलबाक बहानासँ मकानिपुि िजियपि आकमण केलकह आ ओतुका िजाके वापिनाि कऽ लेलकह। ओकह िजाके पकवडके दिभंगाक फौजदाकि ओतए आनल गेल। ओ क्मविलाक िजाके सलाना १२०० टाका आ हाि़ि नजिाना देि स्ीकाि कैल। मुगल समाटक संग कहनक सम्बह्ध बकढया िलकह आ तै कहनका समयमे खण्डिला कुलक पकतष ा बढल।

नपिकत ठाकुकि बाद हुनक पुत िघिि कसंह िजा भेला। 'ठाकुिक सािन ओ 'कसंह' पदिी लेलकह। उहो अपन कपता जका एकटा पतापी शासक िलाह आ हुनका क्मविला पकत सेहो कहल गेल िकह। बेकतायाक िजा धुकिसंहसँ हुनका खटपट भेलैह आ संघरषसेहो ____

"नगहु खङ धुकिसंह तोकह उपि यम चढौ।

क्मविलापकत सौिि कदन कदन तोकह बढौ॥

तेकयत कुलकििक एतो िघिि नप िजा।

एकह दल दलन सम्मि भीम भाति कजकत गाजा॥

कवि कहत िमिि मूढ सुनु जेकह दल पचण्ड भैिी िहत।

ठहिि न फौज जािि इकत कोन जब सिदाि खा तेगा गहत"॥

पकसद अफगान लडाकू सिदाि खा कहनका दिबािमे िल। कवहािी लाल अपन 'आयनी कतिहूत'मे कलखने िवि जे औंिगजेब कहनको िजाक उपाकि देने िलकह। कनि गोटएक मत िकह जे इ पदिी हुनका अलीिदीसँ भेटल िलकह। एक लाख टाका जमाक कहसाब इ कतिहूत िजयक मुकििी लेने िलाह। निािक कदािन

धर्माधिके सेहो ५०,००० टाका नजरिना दैत छलिन्हि। मकरिनीक रािजा जखन िविरूक नजरिना देिब बन्द कऽ देलिन्हि तखन हुनका मकरिनपुरिक खिलाफ सेहो आकमण करिए पडलिन्हि। युदक घोरणा होइतहुँ मकरिनीक रािजा िहनकासँ मेल मिलाप कऽ लेलिवन्हि आ बेसी नजरिना देिकि पतिजा केलिवन्हि। िहनका समयमे एक आिपतिसद घटना भेल। बीर कुिमी जे पिहन िहनका ओतए छिलन्हि तकरि ओ रािजसिि पदािधकािरी बनाके धमिुिर परिगना पठौलिन्हि। बीर ओतए अपन एकटा िकला बना लेलक आ ओिहसँ रािजके रािजसि पठाएब बन्द कऽ देलक। ओकरि िविरुद सेना पठाओल गेल आ ओिहमे बीरक बेटा मािर गेल आ बीर पिािजत भेल। ओकरि सम्बिन्धमे िलमिलिखत कहाितो अििछ ——

“बीरनिगिरि बीिरि साह का बसे कौरिशका तीिर

का पिता िलखे कौरिशका का िलखे िधुिरिि”।

बुकाननक पुिणया िविपोटिमे िलखल अििछ जे बीरक हाल सुिना समिस्ति अली खाक नेतृत्मे िदल्लीसँ सेना पठाओल गेल। पिहल बेिर तँ ओ सेना पिािजत भऽ गेल मुदा दोसिर बेिर िघिर िसंहक मदितिसँ बीर पिािजत भेल। िघिर िसंहक अिधकािर पुनः समस्ति परिगनापिर भेलैिन्ह पििश्चम नािपुर आ गोिडी हुनकासँ लकए पुिणयाक रािजाके दऽ देल गेलैिन्ह। िघिर िसंह दानी आ उदािर व्यिक्तत छिलाह आ बहुत रािस मिन्दिर इत्यािदक िनमाण सेहो किरने छिलाह। हुनक दूटा िशलालेख उपलब्ध अििछ ——

मधुिवािणीशिर (परिगना हाटी)क िशलालेख ॐ नमः िशािय।

आसीनासीिर दासी भिदिवि िनिहि(प) िविमाभताकोऽिवा धिह्यः

पुण्य(प) शी शािकिखण्डोिय (मल) किर िसमाहुिन्त िशागगण्यः॥

समस्तो यादिात स्फुदिमलयशोाि क्ससिंती कताह्य___
स्तीकः शीकण्ठ भक्ततस्फुट घक्टतमक्तस्तीभिुक्तशायिः॥
तस्य शीमनापिक्तक्संहस्यासन् सुताः फलतपसः
शीमद् ाििघ क्संहो येरा ज्यायान्महाजिः॥
शीनन्द्द नन्दन इक्त पर्ातः पर्क्या।
सासिदोऽस्य नपतेभितिकनीयन्।
शी भानुदग गुण ठाकुि क्संह नामा।
कामार्सितत हदयोऽाजिस्तदीयः॥
एतेरातु र्शेरजा पजाजितधीधीः।
र्सामधुििणीक्त नामतोऽप्याषोऽप्यभूतः॥
नखन ाशिकाि शीमदर्जीि शमषाः कक्तनः।
कल्पमहीर हदान पभक्त महादान यात्यनी दक्यता॥
शाके लोचन ािण (१६५२) भूपक्त मते मास शुभे माघि।
पके सचि ताऽक्य पंचम्म क्ताीचिस्पतेक्सिा॥
उन्मीलन्मदगण्ड मण्डलालिदेतण्ड ाह्निदेशाि।
शीमद् ाििघ क्संह नाम्न कर्ािला नाि महीशासक्त॥
हुनकि दोसािक्शालालेख लोहना गामसँ भेटल अर्ि___
ॐ स्वक्स्त। शीमद् ाििघ क्संह ाहु र्लिंसजजेतास्तर्क्रोधत___
पोधदाि महीप संभाि यशः शुभीभाद् भुतले।
पाज शी बलभद ाक्लतो यतेन शम्योर्दिं गभागामि कायिद् दढताि
क्ताण संपाप्तये॥
शाके ाािण ादाजि कन्मते ािकेशाि भासिि पौरे माक्स र्लाक्स मोद
ाक्यते कामाक्ष्तायाक्त ाा। शाके १६४८

िघि क्संहक बाद विष्णु क्संह शासक भेलाह। आ चाि रिष धर्वि शासन कए ओ मर्वि गेलाह। हुनका बाद िजा नहि्द क्संह िजा भेलाह। नहि्द क्संहक शासन काल क्मर्विलामे बडड महतिपूणष मानल गेल अर्वि। ओ बडड िीि िलाह। हुनका सम्बह्धमे चह्दा िा क्लखने र्वि ____

“नपक्त नहि्द क्संह भेल जखन।
अर्वधिि कानन पसलि तखन॥
ताक्क ताक्क शतुक संघाि।
कैलक्ह्ह बहुत िित क्याहाि॥
कतहु जुक्द नक्ह एला हार्वि।
अक्तशय तेज तक्तक तर आर्वि”॥

मुसलमानसँ जखन क्हनका संघरष भेल िलक्ह्ह तखन नहिनक बबुआन क्हनका मदक्त केने िलर्विह्ह। नहि्द क्संह आ नहिनक बबुआनक बहादुिी देक्ख निि आशयषचक्कत क्ह गेल िलाह जकि स्पष्ट ीकिणि क्मक्लक्खत पदसँ होइि ____

“ऐसो महाघोि जोि जंग सुल्तानी
बीच िुकित बबजिंग संगि कहि्द है।
औक्लया निि नामदाि पूिि बाि बाि।
ये दोनो कौन लडत अर्विीिणि पहि्द है।
साहेब सुजान जैनुक्दन अहमद खा सामनेयय
अजेकति कहत कर्वि चह्द है।
ये तो दोणािकिशो साह के अजीत साह
आगे िघो क्संह जी के नहि नहि्द है।

हुनका समयमे बीिि पगिना लऽ कए पुनः ििटि ठाढ

भेल। बौकि रपनायिण इ िट केने लाह। नर्हि्द क्संह नि महाति जंगक ओतए जाय मुक्शाश्बाबादमे अपन दा खिलक्ह पञ्चि नि हुनकासँ अनुधि केलविह्ह जे ओ बौ पगिना रपनायिणके दऽ देहु्ह। जिमहल धर्व सब गोटए संगक्ह अबैत गेलाह आ ओतए पुनः नि हुनकासँ आगह केलविह्ह तखन नर्हि्द क्संह एक्ह शतषि देबा लेल तैयाि भेलाह जे ओ हुनका (नर्हि्द क्संहक) पक्त जिभतत हिताह आ कक्हिया, क्वचर्ि आ जयनगपि ओ कोनो पकाकि दा नक्ह कतिाह काणि इ सब क्ताहूत जािक सम्पक्त लि। जिा आ निमिे बक्ढया सम्बह्ध लिक्ह। नर्हि्द क्संहके जे सुविधा सकिा दा भेटलैक तकि वििणि कम्पनीक कागज सबमे सेहो भेटइत अर्व। कह्दपी घाटक लडाइक वििणि जे लाल कर्व कएने िवि ताक्हसँ ताक्ह क्दनक कर्विला दबिाकि जान होइ। नर्हि्द क्संह अपन क्पताक स्माकिके क्यसिायी बनेबाक काणि सहसिा क्जलामे घिपुि (घिोपुि) नामक सिनक सिपना केलक्ह। मठक सिपनाक हेतु कैक क्यक्ततके दान देलक्ह। हुनक एकटा पती मक्हक्रक लिविह्ह आ क्तनके आगहपि ओ मक्हक्रमे उगतािक मक्ह्दकि जीणोदाि केलक्ह। हुनक दबिाि विदानक हेतु एकटा बडका आशय लि।

नर्हि्द क्संहक पिाक्त पताप क्संह जिा भेलाह। ओ भनिासिँ जिधानी हटाके िपुिि अनलक्ह आ फेि ओतएसँ दभिंगा। सिानीय पम्पिामे हुनका “क्मर्विलेश” कहल गेल क्िह। ताक्ह कालमे क्ताहूतसँ बंगाल धर्व चो ि डकैतक पभाि बक्ढ गेल लि आ कम्पनीक क्ािकाडषमे कहल गेल अर्व जे पताप क्संह क्हनका लोकक्तके मदक्त कैत लाह। क्हनका सजा देबाक बातपि सेहो

विचाि कैल गेल िल। दान देबामे इहो बडड उदाि िलाह आ क्हनक दानक कैकटा कागज सेहो भेटल अिव। क्हनका समयमे फाक्सस गाड दिभंगा (क्ताहूत)क कलतटि िलाह। १७७४मे क्ताहूतके पटना पोविनक्सअल कौक्सलक अंतगिा कऽ देल गेल।

१७७१मे नेपालक पर्थीक्संह जे भाित सिकािसँ समिौता कए कि देबाक पक्ताजा केलक्हह से कि भाित सिकािके िािजा पताप क्संहक माध्यमे पठाओल जाइत िलक्हह। १७७०मे िािजा पताप क्संहके िसीटाटष आ िािजा क्सतािियसँ क्ताहूतक िाज्य मुकिष्षी पटापि भेटल िलक्हह। ओक्ह िरष क्ताहूतक हेतु इस्ट इक्णडया कम्पनी एकटा सुपिभाइजि सेहो बहाल केने िल। कि देबामे विलंब भेलाक कािण क्हनका िििटक सामना किए पडलक्हह। खेआली िाम आ क्हम्मत अलीके क्ताहूतक आविष्क हालत जाच किबाक हेतु पठाओल गेलक्हह।

दिभंगाक िािजधानी अनबाक सम्बहधमे क्तामक्लक्खत काव्य उल्लेखनीय अिव ____

दोहा ____

“नत्यत फक्वान फणानंपि खंजन पाक्ख पसािव

सो लाक्ख सब पूिित भऽये अदुत बात कहािव॥

पूिित भये नेिशि तब सुनु सोक्त सब लोग

खंजन फक्वा पि शोभक्हं िािको कौन संयोग”॥

कवित ____

कहत लगे है तब मंती पबल लोग सुक्तयं क्तविलेश जो ज्योक्तारमे पमाण है। सिस है भूक्त याको जीक्त न सकत कोउ िास कविबेके यह विक्धके क्तशाक्त है॥ सुक्तके आनहद उि उमगे उिाह बक्ढके

बोले महाजि ने ससि भर्वि णिी है। हुकुम हमाि यह जाव्हि जहान की भौि को िव्ड यहा दभिंगा िजधानी है।

दोहा ___

िजधानी दभिंगा भऽ सकल गुणान खाव्स भौि िव्ड भूप तब सम्मत सबके जाव्स"॥

वदिा पेमी हेबाक काणिे महाजि पताप व्संह आलापुि पगिनाक जगतपुि गाम ओ पंव्डत भिनी नाि शमाके दानमे दऽ देलैह्ह जाव्हसँ ओ आन आि वदिाििक खचषचला सकैि।

"महाजािव्धाजि शीमत पताप बहादुि ___

िग देशाटनातभिेक भूपाले दतानेक

िव्सतािि सीकाकि स्माता धमष तकष

मीमासा िदातालंकाि कानन पञ्चानन

धमषीि शी भिनीनाि शमषु िव्सपतम

ददाव्त सकल िताध्ययन व्ािहाय

सूयषबहाि सकिाि पटनाभ्यातगषा

तीभुितत देशातगषा पगिना आलापुि

अंतगषा जगतपुि साणियक ससीमक

सकाननक गामस्थ शी वष्णिु पीव्त

सम्पादनायच यनिायनि साधाणि

ससिपिपूकि िव्स िव्रणामेि कवषियव्स..."

हुनका बाद िजा माधि व्संह गदीपि बैसलाह। ओ सियी रपेण दभिंगाके अपन िजधानी बनौलव्ह्ह। १७८५सँ अदाविध व्हनका लोकव्नक िजधानी दभिंगा िहल अवि। खण्डिला कुलक इव्तहासमे माधि व्संहक शासनके बडड महतपूणष मानल गेल

अवि। ओ अपन पाचीन पम्पिाकि अनुसाि समस्त क्ताहूतपि पभुतकि माग अंगेजक समक िखने िलाह आ क्तासिायी बह्न्दोबस्तके मनबा लेल तैयाि नक्ह िलाह। एक्ह हेतु ओ समाट शाह आलम क्तदतीयक दिबािमे सेहो दिखास्त देने िलाह आ शाह आलमसँ १८०० ई.मे एकि संिकक्त सेहो भेट गेल िलक्ह। पञ्चि कम्पनीक अक्धकािी लोकक्त क्ह्नक बात नक्ह सुनलकैक्ह आ नक्ह शाह आलमक संिकक्तयेके मानलकैक्ह आ क्ह्नका लोकक्तके जमीह्न्दाकि दजा दऽ देलकैक्ह आ तक्हये इ िाजा दिभंगाक जमीह्न्दािी कहबे लागल जे १९४७ तक िहल।

१७८१ खेआली िाम िाजा कल्याण क्तसंहक क्तडप्टी बहाल भेलाह। िाजा कल्याण क्तसंहसँ िाजा माधि क्तसंहके सेहो मतभेद भेल िलक्ह। एम्हि जखन कल्याण क्तसंह से िवि्वाट चक्तलते िलक्ह क्त तामे हुनका दिभंगा सदि क्तदानीक अदालतक हाक्तकमसँ सेहो मतभेद शुर भऽ गेलक्ह। हुनक आदमी सबके वािफ्ताि कऽ लेल गेलक्ह। िाय मोहन लाल आ माधि क्तसंहक बीच तँ िवििाट चक्तलये िहल िलक्ह। १७८३मे डनकनक हस्तक्षेप क्ह्नक मामला सविायेलक्ह। दोसि एकटा िवििाट आ हुनका शासन कालमे उत्पन्न भेल। सदिाि खान अफगानक बेटा कािम अली अपन मत्युसँ पूिष अपन सब सम्पक्त िाजा माधि क्तसंहके दानमे क्तलख देने िलवक्ह। १७९५मे दिभंगाक कलतटि, दिभंगाक तहक्तसलदािके आदेश देलवक्ह जे ओ कािम अलीक सम्पक्तके जप्त कऽ लौि। िाजा माधि क्तसंह एकि विािेध केलक्ह आ ओम्हि कािम अलीक भवाना सेहो एकटा दिखास्त देलक जे कािम अलीक दानपत जाली विक। अंतमे माधि क्तसंहक जीत भेल आ ओ सम्पक्त हुनका

भेटलक्हि। माधि क्संह उदा आ दानी िलाहे आ बहुत िसि मक्हृदकि क्नमाता सेहो।

१८म शताब्दीक उततिदिषे समस्त पूिी भातिक क्सिक्त क्वंतनीय भऽ गेल िल आ समस्त केत्तमे सह्यासी फकीकि बगे बनाके चौि डकैत चार कात उपदि कि्त िलाह। क्हनका सबके संकिग आ पोत्साहन मोिगक िजासँ भेटइत िलक्हि। मोिग आ क्ताहितक सीमा क्मलैत जुलैत िल। सह्यासी फकीकि नेता िलाह खुिषि शाह आ ओ ताक्ह क्दन नेपालसँ मुतत भऽ मोिगक एकटा गाम मक्टहानीमे िहैत िलाह। क्ताहितक सीमापि इ लोकक्न आतंक मचौने िलाह।

१८०४मे पगिना ि आ फकिीयाक क्ताहितसँ अलग कऽ कए भागलपुिमे क्मला देल गेलैक। माधि क्संहक समय धवि क्ताहित एक सियित क्हन्दू िज्य िल जकि अपन ह्यायालय िलैक आ अपन ह्यायाधीश होइत िलैक। एकि सबसँ पैघ पमाण इ अवि १७९४ ई.क एकटा ह्यायाधीशक क्नणषि संस्कक्तमे भेटल अवि जाक्हमे गुलामकह्याक उपि सितिक्धकाकि पशपि क्नणषि अवि। एक्ह क्नणषके बडा महतिपूणष मानल गेल आ अठाहिम शताब्दीक अक्ह्तम चिणि धवि ह्यायालयक क्नणषि संस्कतमे क्लखल जाइत िल तकि इ पमाण विकि आ गुलामक क्सिक्तपि सेहो पकाश पडइत अवि।

माधि क्संहक समयसँ दिभंगा िजक क्सिक्त पूणष पेण जमीह्दाकि क्सिक्तमे पविक्तिषि भऽ गेल। माधि क्संहक पिक्त ितक्संह महािज भेलाह। १८१२क बाद जखन अंगेजके नेपाल संग िक्ट भेलक्हि तखन ओ लोकक्न बेक्तया, पुक्णषा आ दिभंगाक

ाजा लोकनिके आदेश देलन्हि जे अपन अपन सीमाक सुरक्षिओ लोकनि पयतशील होथि। एहि असिपिर तिसंह अंगेज लोकनिके साहाय्य देने रहथि। एकरि कारण इ छल जे नेपाली सब कमिहूत क्षेत्रमे सेहो हुलकी बुलकी दैत छल आ एम्हरि आम्हसिँ लूट पाट सेहो करैत छल। १८१५मे हुनका महाराज बहादुरक पदवी भेटलन्हि। रिसंहक समयमे बेतिया राज आ कमिहूत राजक बीचक सम्बन्ध बढ़िया भऽ गेल छल। दुनू गोटेके पटनाक पाटन देवीक मन्दिरमे भेट भेलापर स्थितिमे सुधार भेलैक। सौराठक मन्दिरके रुद्र सिंह पूरा करौलन्हि आ ओहिमे माधवेश्वर महादेवक स्थापना सेहो। सौराठमे ओ एकटा धर्मशाला सेहो बनबौलन्हि।

हुनका बाद महाराज रुद्र सिंह गदीपर बैसलाह। हुनका बाद राजा महेश्वर सिंह गदीपर बैसलाह। हुनके समयमे सिपाही विदोह भेल छल। अंगेजके बिबिर हिनकापर शक बनल रहैत छलन्हि। अंगेजक कर्मचारी हिनकापर रहैत छैन्हि। नाथपुर आ पुरणियाक बीच डाकक व्यवस्थाक हेतु इ अंगेजी सरकारके १६टा घोडसवार सेहो देने छथि। संताल विदोहके दबेबामे सेहो इ अंगेजक मदति केने छथि मुदा तैइयो अंगेजके हिनकापर विशास नहि होइत छलन्हि। १८६०मे हिनका मरलाक बाद दरभंगा १८७८ धरि कोटष आफ वार्डसक अधीन रहल। ओकर बाद महाराज लक्ष्मीश्वर सिंह राजगदीपर बैसलाह। ओ एक सफल शासक, कुशल पशासक, विद्या पेमी, विधायक आ राजनीतिज्ञ छलाह। हुनका समयमे दरभंगा राज्यक उत्तरोत्तर विकास भेल। दरभंगामे लेडी डफरिन अस्पतालक स्थापना आ खडगपुर (मूंगेर)मे सेहो एकटा अस्पतालक स्थापना केलन्हि। कागेसके बिबिर चन्दा दैत रहलाह। कलकत्ता

विशविदालयके ओ हदय खोललके दान देलक्हि आ दभिंगामे िजि सकूलक स ापना केलक्हि। ताक्हि क्नमे ऐहेन कोनो क्शाकण संसि नक्हि िल जक्हिमे मागलापि अिि क्नानु मंगनो इ सहायता नक्हि देने होिव। १८८८मे कागेसके अक्धिशन किबा लेल इ ‘लाउपि कासल’ पयागमे कीक्नके देने िलविक्ह आ सालाना १०,००० टाका चंदा तँ दैते िहिविक्ह। महातमा गाधीसँ सेहो क्नका पताचािि िलक्हि।

ताक्हि क्नक पधान व्यक्तत के. एम. बनजी, नीन्हद नाि सेन, आनन्हद मोहन िस, सुिन्हद नाि बनजी, आक्दसँ क्नका व्यक्ततगत सम्बन्हध िलक्हि। लेक्जसलेक्टभ कौकसलक सेहो इ एकटा पमुख सदस्य िलाह आ ओक्हमे सकक्रय भाग लैत िलाह। ओ क्बहािि जमीन्हदािि सभक सभापक्त िलाह। ओ एक पैघ पुस्तक पेमी सेहो िलाह।

हुनका बाद महािजि िमिशि क्संह गदीपि बैसलाह। ओ बहुत पैघ िवदान िलाह आ क्कि क्नक हेतु मैक्जसटेटक पदपि सेहो क्नयुतत भेल िलाह। दभिंगा, िपिि आ भागलपुिमे ओ मैक्जसटेट िहिल िलाह। पािि ओक्हसँ तयागपत दए ओ लेक्जस लेक्टभ कौकसलक सदस्य बनलाह। लक्मीशि क्संहक अमल ओ िजिनगिमे िहित िलाह। ओ सिकािि खैिखाह िलाह आ अंगेजक संग क्नक सम्बन्हध बक्ढया िलक्हि। सनातन धमष सभाक ओ सिसिि िलाह। ओ क्बहािि जमीन्हदािि सभाक आजीिन सभापक्त िहिलाह। ओ एक धाक्मषक व्यक्तत िलाह। क्हन्हदू विशविदालयक स ापनामे हुनक िवशेर योगदान िलक्हि। क्नके पयासे क्बहािमे संसकृत एशोक्सयेसनक स ापना भेल िल।

हुनका बाद १९२९मे महाराजाधिराज कामेश्वर सिंह गद्दीपर बैसलाह। गद्दीपर बैसतहि ओ राजनगर अपन राज भाए कुमार साहेबके दऽ देलखिन्ह। इ राउण्ड टेबल कंफ्रेंसमे भाग लेने छलाह। जमीन्दार सभाक सभापति इहो बनल छलाह। १९४७मे जमीन्दारी उन्मूलन भेलाक बाद आन जमीन्दारी जकाँ दरभंगा राज्यक जमीन्दारी सेहो समाप्त भऽ गेल। पटना विश्वविद्यालयमे दरभंगा सिंह मैथिली चेयरक हेतु इ १,२०,००० टाका दान देने छलाह। संस्कृत एशोसियेसनक सभापति इ बनल छलाह आ अंतमे अपन "आनन्दबाग पैलेस"के संस्कृत विश्वविद्यालयक स्थापनाक हेतु दानमे देलखिन्ह। संस्कृत एशोसियेसनके "मिथिलेश महेश" लेक्चरशिपक हेतु सेहो दान देने छलाह। दरभंगामे मिथिला रिसर्च इंस्टीच्यूटक स्थापना हुनके दानसँ सम्भव भेल। विभिन्न विश्वविद्यालय, महाविद्यालय आ स्कूलके दान देबाक अतिरिक्त, इ पटनामे 'इंडियन नेशन, 'आर्यावर्त आ 'मिथिला मिहिर' पत्र पत्रिकाक स्थापना सेहो केलखिन्ह। राज कम्पाउंडक आधुनिकीकरण हुनके समएमे भेल। 'दरभंगा इम्प्रूभमेंट ट्रस्ट'क स्थापना हुनके प्रयासे भेल छल। आधुनिकीकरण १, १९६२के हुनक मृत्यु भेलखिन्ह आ खण्डवला कुलक परम्पराक सूर्यास्त ओतहि भऽ गेल। हुनकासँ तीन वर्ष पूर्वहिं हुनक छोट भाए (कुमार साहेब)क मृत्यु भऽ चुकल छलन्हि जाहिसँ ओ बड्ड दुखी रहैत छलाह। महाराजाधिराज कामेश्वर सिंहके कोनो संतान नहि छलन्हि आ तेँ ओ अपना मरबासँ पूर्व एकटा "विल" बना देने छलाह जकर एक्जीक्युटर भेला पटना उच्च न्यायालयक भूतपूर्व न्यायाधीश पंडित लक्ष्मीकान्त झा जे सम्प्रति काज कऽ रहल छथि। राजा बहादुर विशेश्वर सिंह (कुमार साहेब)क तीनटा पुत

िविन्ह कुमाि जीिशि क्संह, कुमाि यजेशि क्संह आ कुमाि शुभेशि क्संह। अक्हमे कुमाि शुभेशि क्संह अपन क्पतीक पिम्पिाकि क्नािह किबाक पयासमे पयतशील िवि आ सभ तिहे सामाक्जक आ सास्कृक्तक कायषे भाग लैत िवि। महेश ठाकुिकि सिक्पत खण्डिला कुलक इक्तहास क्मविलामे ओतिे महतपूणष जतिा कणाट िशिक आ ओइनािि िशिक। अक्ह तीनू िशिमे सभसँ बेसी क्दन शासन केलक्न्ह खण्डिला कुलक लोग। (*खण्डिलाक इक्तहासक हेतु देखु हमि क्नबन्ध "द खण्डिलाज आफ क्मविला" जाक्हमे माधि क्संह धवि पूणषवििणि उपलब्ध अवि।*)

अध्याय १०

क्मविला आ नेपाल

नेपाल शब्दक उदगम एखन धरि हिस्यमय अछि। अति पाचीन कालसँ नेपालक इतिहास मिथिलाक इतिहास संग ततकटतम र पे संबंधित अछि। मिथिला एहेन सनि हिल अछि जाहिठाम नाना पकारि धार्मिक आह्दोलन एवँ दशनक उत्पत्ति भेल छैक आ नेपाल ओहि आह्दोलन सबके उर्विा शक्ति देलकै जाहिसँ ि आह्दोलन सब पुष्पित ि फलदायक भेल। नेपालमे आयकि विकास मिथिले बाटे भेलैक। एहिठाम हम मिथिला आ नेपालक मात ािजनैतिक सम्बन्धक चचा करि।

किरातः- भूतकालक कुहेसक मध्य नेपालक पािम्भक इतिहासक विरयमे किछु विशेर जात नहि अछि। ई.पू. ५९०सँ ११०ई. धरि नेपाल किरात संस्कृतिक पधान केह्द िल। किरातक िणि शुतल यजुर्दिमे आएल छैक। इहो कहल जाइत छैक जे अति पाचीन कालसँ किरात लोकनि पूर्वी नेपालमे िहैत जाइत िलाह। ‘किराते’ शब्द जंगली अनायष जातिके सूचित करैत जे पहाडपि एवँ भाितक उतिपूर्वी भागमे िहैत िलाह। किसली लेवीक विचाि छन्हि जे किरातक उत्पत्ति मंगोलसँ भेल िल आ दुनू एके िलाह। महाभाितसँ जात होइछ जे जखन अजुषि हिमालयमे तपस्या करैत िलाह तखन महादेि किरातक भेरमे अजुषिक पीक्षा लेने िलाह। महाभाितक िनिपषिे एकटा किरातपषि सेहो अछि आ यजुर्दि शतरदीयसँ सेहो एहिपि पकाश पडइयै। भाितक उतिी पूर्वी सीमा सेहो किरात संस्कृतिसँ सम्बन्धित िल। ओ सब पूर्वी हिमालयक ािसी िलाह। अपन दिग्विजयक कममे भीमके विदेह देश िािडलाक पशात किरात सबसँ भेट भेल िलन्हि। किरात लोकनि पीअिािगिक होइत िलाह। लेवीक अनुसाि किरातक सम्पकषचीन

आ म्लेच्छिसँ सेहो छलन्हि। छमायणसँ सेहो पमाछात अछि जे कछित लोकछ पीअछिगक होइत छलाह। विष्णु पुछिण एछिमाकछाडे पुछिणसँ जात होइछि जे इ लोकछ पूछिभातिमे छैत छलाह। छि छमालयक दछछी मागछिसम्पूणछउतछिपूछिभातिमे, नेपालसँ सटले उतछि छाहामे आ गंगाक उतछि भागमे बछस गेल छलाह। इ उएह पदेश छिल जाछ मध्यसँ चीनक छापाछि भातिक गंगाछिती धछितलसँ होइत छैक। नेपाल छछिलाक संस्कछाक इछाहासमे छनका लोकछक महतपूणछसछिन छिक। पाछिमे संभतिः कछित लोकछ नेपालक सछिनीय छिजछिशी छलाह।

नेपालपछिकछित लोकछक छिज्य बहुत छन धछि छलन्हि। छि लोकछ ई.पू. ६००सँ संभतिः नेपालपछिछिज्य कछित छलाह। छहदू संस्कछाक विकासमे छि नेपालमे भातिीय मंगोलछयनक पमुखताक हेतु सब पछाधाछि बनौलछि। पायः ई.पू.३१२मे जखन संभूत विजय मछि गेला तखन जैन धमाछिमीमे विभाजन भेल आ तकछिपशात उतछि भातिमे बाछिछिषछिअकाल छिलैक। भदछिहु नामक एक जैन साधु अकाल भेलापछि दछछण छछस चल गेला आ अकाल समाप्त भेलापछि घुछिला। जैन धमछसँ छिटकाछि लए ओ अपन शेर जीछिन छतीत कछिबाक हेतु नेपाल चल गेला। जैनी सबहक जुटान पटनामे भेल आ हुनका तकबाक हेतु सछिलभद नेपाल गेला आ ओतए हुनकासँ चौदह पछिपओलछि। गौतम बुदक जछ तँ नेपाल छेतमे भेल पछिछ ओ नेपाल भमण केने छलाह अछि नछि से कहब कछिन। अशोकक पयाससँ नेपालमे बौद धमछक पसाछि भेल। कहल जाइछि जे कौछिल्यके सेहो नेपालक पूणछजान छलन्हि। अशोकक समकालीन नेपालमे छलाह सछिछको। नेपाल

उनक हेतु विशेर पक्सद ि ल। लुक्बनीमे अशोक ४८ गोट स्तूपक क्ममाण कौिने ि लाह आ स‍ुक्मकोक शासन कालमे ि ि सियं नेपालो गेल ि लाह। अशोकक समयमे नेपालक शासन क्कि ति लोकक्क हाि मे ि लैक। अशोकक पुती आ जमाय नेपालमे ि लाह। अशोकक बादो दशिर्ि कि पभाि नेपालमे बनल ि लैक। नेपाल आ क्मवि लाक सम्मकषमौयषसामाज्यक हासक समय धवि बनल ि लैक। शूंग कालक मुदा पक्शामी नेपालसँ पाप्त भेल अवि जाक्ह आधाि पि इ अनुमान लगाओल जाइत अवि जे शुंग लोकक्क एक पकाि कि दुबक्ष क्मयंतण नेपालपि ि लक्ह। कुराण लोकक्क शासन चम्माि णि धवि ि ल आ क्महूतोपि हुनका लोकक्क पभाि ि लक्ह। नेपालपि कुराण शासन हेबाक समि षा सि गीय जायसाि ल महोदय केने ि वि। कुराण मुदाक पता काठमाण्डु लग सेहो लगलैक अवि तै जायसाि ल महोदयक वि चाि कि माक्यता भेटइत ि क। 'क्धिया' नामक गामसँ सेहो कतेक ि सि तामाक मुदा वि मि कैडक्फसेज आ कक्षक्कक भेटल ि क आ जँ एक्ह पमाणपि क्क‍ुओ वि शास कैल जाइक तँ कुराण शासनक पमाण क्सद होइत ि क।

कैक शताब्दी धवि नेपालपि शासन कौि ति काल क्कि ति सबके जखन तखन अनायास वि डिि सबसँ संघरष कएि पडलक्ह। ि जिनैक्ताक असि क्यतर्ि कि क्हतहुँ ओ सास्कक्ताक जीि नि आ ि जिनीक्तक क्मयमक सि ापनामे बहुत क्क‍ि केलक्ह। क्क‍ि वि दानक मत ि क्ह जे इण्डो मंगोलाइड सब सि षि मि भाि तिपि शासन केलक्ह आ तब नेपाल गेला। सुसंस्कत इण्डो मंगोलाइडक र पमे नेपालक नेि ि कि उल्लेख भेल ि क। नेि ि लोकक्क पायः ई.पू. तेसि शताब्दीमे एला। ताधवि अशोक पाटनमे बहुत ि सि बौद

चैत्यक क्माण कऽ चुकल िलाह। तक्ह्यासँ ओक्ह केत्मे बौद धमक पसाि बनले िहल आ बादमे महायान सम्पदायक पदक्ा ओ विचाि सेहो क्ाहािसँ ओतए गेल। ओक्हठामक शैि, शक्ा आ िैषिाि धमक सम्बन्धमे सेहो इएह कहल जा सकैत अवि। इ सभ आंक्शक रपमे उतिी क्बहाकि आिभक मंगोलाइडक पक्ाक्कया सिरप िल। आयीकिणक पूिष क्मवला सेहो क्किित संस्कक्ताक पधान केन्द िल। इण्डो मंगोलाइड एकटा सामूक्हक संस्कक्ताक विकासमे पैघ योगदान देलक्ह।

११०ई.क आसपास क्किित िशक अंत नेपालमे भेल आ तखनसँ लऽ कए २०५ ई. धवि नेपालक इक्ाहास अन्धकािपूणष अवि। एक्ह बीच कोनो क्लक्खत पमाण नक्ह भेटइयै। गुणाढयक ‘बहत्क्िा’मे नेपाल देशक क्शाि नामक नगिमे िाजा यशकेतुक शासन किबाक उल्लेख भेटइयै। कखन आ कोन पकािे क्किित लोकक्ाक हास भेल से हमिा लोकक्ा नक्ह जनैत िी आ ने तकि कोनो ठोस सबुते भेटइत अवि। इहो कहल जाइत अवि जे ‘क्ाक्मर’ नामक एक गोट िाजा नेपालमे विजय पाप्त केने िलाह आ क्ाक्मर िाजिंशि किीब १४५ िरषधवि ओतए शासन केने िलाह आ एक्ह िशमे पाच गोट िाजा भेल िलाह—क्ाक्मर मनाक, काकिमषा, पशुपेक देि, आ भास्किि िमषा। एक्ह िाजिंशक समयमे आयष लोकक्ाके नेपालमे शिण भेटलक्ह। पशुपेक देि नेपालमे पशुपक्ानािक मक्न्दिक सिापना केलक्ह आ भाितिसँ आयषबके अनलक्ह। एकि बाद नेपालमे क्लच्िी िशक शासन शुर होइत अवि।

क्लच्िी िशक इक्ाहासप- क्लच्िीिक सम्बन्ध मनु क्लखैत वि —

"क्षत्रजातयः सविषासु जनयन्त्य विलासनुयान्।
तासावर्तिती पर्वभिष ान् विस्त्यामक्तार्वमिक्षशेत्॥
विस्त्यातु जायते र्वपात्मापात्मा भूजकण्टकः।
आर्वत्यावट धानौच पुष्पधः शैख एर्वचः॥
विल्लोमल्लश विजह्याद् विस्त्यक्त्वर्वीर्विच।
नश्यि कर्णिशैवि खसा दर्वड् एर्वच"॥

(एवह सम्बन्धमे देखु हमर "विस्त्यज इन एंक्सयेट इवण्डया")

क्लचर्विी लोकक्कक सम्बन्ध नेपालसँ बडड घवष्ठ विलैक। कवि्ु र्वदानक र्वचावि विक्कह जे इहो लोकक्क मंगोलाइडसँ उद्भूत विलाह। नेपालक मल्ल, खस आवदक कोवटमे मनु क्लचर्विी (क्लचर्विी)के विखने र्विव। क्लचर्विी लोकक्कक पभावि क्लर्वलामे अत्यवधक र्वकवसत विलैक आ ओतवहसँ इ लोकक्क नेपाल धर्वि अपन शवक्ततक पसावि केलवक्ह। नेपालमे कवित शासनक अविसान भेलापवि सोमर्विशी एर्वँ सूयर्विशी लोकक्कक शासनक संवदग्ध पमाण अर्वि। क्वक्मार र्विशके सोमर्विशी कहल गेल अर्वि आ ओकवि बादे सूयर्विशी विज्यक सविपना भेल।

क्लचर्विी लोकक्क क्वक्मार र्विशके उखावड फेकलवक्ह आ तकवि बाद लगभग ५००र्विषधर्वि नेपालपवि शासन केलवक्ह। नेपाली संर्विति जे १११ई.सँ आर्विभ विक सैह संभर्वितः क्लचर्विी लोकक्कक विज्याविहणक संकेत दैत अर्वि। ओहुना अखन इएह माह्य अर्वि जे क्लचर्विी लोकक्क नेपालमे इर्सवी सन् पर्विम शताब्दीक समीप अपन सामाज्यक सविपना केने विलाह आ अपन संर्वितिक पार्विभ सेहो। सूयर्विशी शासनक सविपनाक पशाते नेपालमे यविाविष एक्तहावसक कालक पार्विभ मानल जाइत अर्वि। दुनू विजर्विश क्लर्वलासँ आएल

िल एकह सब ाजिशिक समयमे नेपाल आ कावलिा कायकात र पे ाजिनैकाक आ सासकाक सहदभषबनल हिलैक। पमि ऐकाहाकसक ाजा भेलाह जयदे। हुनका आ जयदे कतीयक बीचमे 33टा ाजा भेल िलाह।

समुदगुपाक समयमे नेपाल गुपा सामाजयक चाडुमि पडल िल। पयाग पशकसासँ एकि सपाीकिणि होइि नेपालक सीमात शासकक सेि पापा कबिाक संदभषअवि। सूयवंशी कलचिि कोनो शासक नेपालमे तखन हिल होएताह जकाका हेतु ‘‘पतयहा नेपाल नपका’’ शबदक कयिहाि कैल गेल अवि। कावलिासँ नेपाल धवि तखन कलचिि लोककाक विसताि िलकह आ समुदगुपा कलचिि दौकहत िलाह तै एकह घटनाके मात घलिु घटना मानल जा सकइयै। एकह युगमे नेपालमे षिणािदिक पशि भेल। मान देकि चंगुनाियिण मकदकि कशलालेख एिँ आन आन कशलालेखसँ इ जात होइि जे कलचिि ाजा लोकका बौद धमष बाहण धमष शैि धमष षिणाि धमष शातत आवद सबके पोतसाहन दैत िलाह। नहिद देकि शासन कालमे मतसयेहद नाि नामक संपदायक पचलन भेल। कलचििक समयमे महायान शाखा सेहो अपन आकाि गहण केलक। कलचिि लोकका ३५०सँ ८९९ धवि शासन केलकह बीचमे मात अंशुमिषा आ कजशुगुपा िकडके जे सितंत शासन केने िलाह।

अंशुमिषाप महासामंत अंशुमिषा सातम शताबदीक पूिदिषक एकटा महतिपूणषशासक भेल विि। ि अपनाके महासामंत कहने विि। ि बेश शकातशाली शासक िलाह आ तािइ ाजयक विशष भागके अपना ाजयमे कमला लेने िलाह। अपन ाजयक विसताि ओ बेकाया धवि कऽ लेने िलाह जतए हुनक सामाजयक सीमा हरषक

सामाज्यसँ क्सलैत िल। पक्सद व्याकणिाचायष चन्द्रदमिष्ठ एिँ नालन्दा विशविदालयक पक्सद क्षाक्क अंशुमिष्ठक दबािक शोभा बढौने हिविन्ह। अंशुमिष्ठ जाक्ह नेपाल िज्यक सिापना केलक्न्ह ताक्ह पमििािके व्जशुगुप्त खिलक्न्ह आ बढौलक्न्ह। ६४३मे अंशुमिष्ठक मत्युक पशात नन्हद्द देकि नेततिमे नेपालमे क्लचििी शासनक पुनजष्ठम भेलैक।

क्लचििी शासन नेपालमे कक्ि अविध धविहिलैक एकि पमाण हमिा मंजूशी मूलकल्पसँ भेटइत अवि ____

“भविष्यक्त तदाकाले उतिा क्दक्शमाशतः।

नेपाल मण्डले ख्याते क्हमादे कुक्कमाक्शते॥

िजा मानन्हद्दस्तु क्लचििीना कुलोदिः।

सोऽक्य मंताषिक्सदस्तु महाभोगी भविष्यक्त॥

पतनक काणि ____

“उदयः व्जहनुनोहंते म्लेचिाना विविधास्तिा।

अभ्योधे भष मयादा बक्हः पाजोपभोव्जनः॥

शस्त्र सम्पात विधिस्ता नेपालाक्धपक्तस्तदा।

विदा लुप्ता लुप्तािजानो म्लेचि तस्क्रि सेविनः”॥

(िहुलजी दाि सम्पाक्दत)

मानदेि क्लचििी िलाह आ तकि बादो कैकटा क्लचििी शासक भेलाह। क्लचििी शासनक पसंगक उल्लेख क्हयुएन संग सेहो केने िवि। अंशुमिष्ठ ‘महासामंत’ कहबै िवि जाक्हसँ मान होइयै जे जो ६३३ई.धवि क्लचििी िजाक पभुतकि सीकाि कैति िलाह। नेपालक िििक्हक सम्बन्हद्ध सेहो क्बहािसँ चलैत िल। सोमदेकि विाि मौखिी भोगमिष्ठक पुती ओ आक्दत्य सेनक पपौती

त्ति‍स देशीसँ भेल छलाह।

अहीपर मंजूश्री मूलकल्पमे मानदेव द्वितीयक पशात राजा विफलताक विषय भेटइयै जाहिसँ जात होइए जे नेपालमे गोलमाल भेल छल। अहीर लोकनिक आकमणसँ नेपाल आकात छल। शिलालेखक अनुसार लोकनि भातिक समतलसँ आएल अहीर छलाह। हुनका लोकनि अहीरगुप्त सेहो कहल गेल छन्हि। ५००सँ ५९०क बीच एहिमे पाचटा शासक भेलाह जाहिमे परमगुप्त परािकमी छलाह आ ओ लिच्छवि लोकनिके शासक केने छलाह। हुनक एकटा पौत्र रक्समानिगढमे शासन करैत छलाह। ओकर राजशिक दोसर शाखा तराइमे शासन करैत छल। जयगुप्त द्वितीयक मुद्रा चम्पारण आ मगधमे भेटल अछि।

६४३ ४४मे विजशुगुप्तक पशात अहीरराज्य दू भागमे बटि गेल छल आ लिच्छवि लोकनि पुनः अपन राज्यकक स्थापना कऽ लेने छलाह। तकर बाद नेपालके तिब्बतमे मिलल जेबाक संभावना बुझि पड़इयै आ मंजूश्री मूलकल्पमे एकर अप्रत्यक्ष प्रमाण अछि। इ उएह समय छल जखन तिब्बती राजा चीनी राजदूतके तिरहुतपर आकमण करबाक हेतु साहाय्य देने रहथि आ संभव जे ओहिकममे नेपालपर तिब्बती प्रभाव बढ़ि गेल हो। मंजूश्री मूलकल्पसँ जात होइत अछि नेपाल शासन अस्थायी म्लेच्छपर निर्भर रहए लागल छल तथा राज्यक पर समाप्त भऽ गेल छलैक। तिब्बती शासक शागक विवाह अंशुवर्माक बेटीसँ भेल छलैक। ७०३क बाद नेपाल विदेशी शासनसँ मुक्त होएबाक हेतु मार उठौलक। धर्मदेवक पुत्र मानदेव ततीय विजयक चारिटा स्तंभ स्थापित केने छलाह। लिच्छवि लोकनिक पुनरागमनसँ नेपालक सर्वतोमुखी विकास भेल। ७०५ ई.

मानदेि ततीयक चंगुनाियिण अवभलेखसँ जात होइि जे ओ मल्ल सबहक संग युद कएने िलाह आ गण्डक धवि पहुँच गेल िलाह। स्ियिभुनाि वशलालेखसँ तत्कालीन संविधानपि सेहो पकाश पडइत अवि। एवहठाम इ स्मिणीय विक जे नेपालक वलचिवि बिबवि कावििलासँ सम्पकष बनौने िखैत िलाह। वशविदेिक विवह आवदत्यसेनक पौतीसँ िलवह। वशविदेिक पशचात जयदेि गदीपि बैसलाह आ हुनक पदिी िलवह 'पिचिककाम'। जयदेि शवक्तशाली शासक िलाह। वशविदेि अपना वशलालेखमे अपनाके ''भटािक महािाजि वलचिवि कुलकेतु'' कहने विवि। जयदेिके कशमीि धवि विजयक शेय देल जाइत विवह। जयदेि कावििलाक सीमा धवि अपन िाज्यक विस्ताि केने िलाह आ हुनक सम्पकषपाटवलपुत आ गौडसँ सेहो बवढया िलवह। ८७९-८८०मे िाघिि देि नेपालक संिित चलौलवह मुदा हुनका जयदेिसँ कोन सम्बन्ध िलवह से हमिा लोकवन नवह जनैत िी।

वलचििीक पशात नेपालक ठाकुिी िाजिंशक सम्पकषअपना सबहक केतसँ बवढया िलैक। नेपालमे महायानक पधानता िल आ ओतहठामक विदािी नालंदा (आ बादमे विकमवशला)मे पढबाक हेतु अबैत िलाह। पालिंशक समयमे इ सम्बन्ध आ घवनष भऽ गेल। िमेश चन्द मजुमदािक मत विवह जे इमादपुि (मुजफ्फिपुि)मे जे पाल अवभलेख भेटल अवि तावहपि जे संित ४८ पढल गेल अवि से भामक अवि आ ओकिा नेपाली (नेिािी) संित १४८ बुिबाक विक जे १०४८ई.क बिबवि होइत अवि आ जखन कावििलापि मवहपाल पिम शासन कित िलाह। सब तथ्यक स्पष अध्ययन केला उतिि हुनक मंतव्य विवह जे मूलतष समवसा केवहाि व्यक्तत

नेपाल िसी हिल होएताह आ तै ओ नेिाि संतिक क्यहािा कएने िवि। १०३८मे नेपाली लोकक्न क्नवििला बाटे वकिमक्शला गेल िलाह आ ओतएसँ अतीश दीपंकिके लऽ कए क्नब्बत घुिि िलाह। अतीशक नेपाल पहुँचलाक बाद नेपाली महायानमे तंतक पिशि भेलैक। एग्यािहम शताब्दीमे नेपाल आंतिवक रपे बक्ट गेल तीन िाज्यमे पाटन, काठमाण्डु आ भातगािा आ ओक्हठाम केन्द्रीय सताक सििा अभाि भऽ गेल आ एक्हसँ लाभ उठाके विवभन्न िाज्यक आकमण नेपालपि शुर भऽ गेलैक। चालूतय, कलचुिि, यादि, जैतुंगी आक्दक क्शलालेखसँ जात होइि जे इ सब नेपालपि आकमण कएने िलाह। एक्ह क्स्क्तसँ लाभ उठाए नाह्यदेि सेहो नेपालपि आकमण केलक्न्ह। नाह्यदेि नेपालपि क्नवििलाक आक्धपत्य सािवपत कबािमे समिष भेलाह। िाजकीिति शासक सबके पदच्युत कऽ ओ अपन िाजधानी भातगािमे बनौलक्न्ह। नेपाली पिम्पािाक अनुसाििि काठमाण्डुक जगदेि मल्ल एिँ पाटन भातगािक आनंद मल्लके बन्दी बनौलक्न्ह आ जे सब क्हनक पभुति सििकाि केलक्न्ह हुनका इ माफ कऽ देलविन्ह। नेपालमे नाह्यदेिके कक्हयो चैन नक्ह भेटलक्न्ह आ बििबिि कक्ुने कक्ु खटपट होइते िहलैन्ह। एकमत इहो अिि जे नाह्यदेिके पुनः दोसि बेि (११४१मे) नेपालपि आकमण किए पडलक्न्ह। नाह्यदेिक पभुति तँ नेपालपि बनल िहलैन्ह मुदा हुनक उतिािधकािी लोकक्न ओकिा िखबामे समिष भेलाह कक नक्ह से एकटा संक्दग्ध विषय। पिम्पािानुसाि नाह्यदेिक एकटा पुत नेपालपि शासन कििित िलाह। संभितः मल्लदेि एक्हठामक शासक िलाह आ भीठ भगािनपुि धिि क्हनक िाज्यक पसाि िल। निक्संह देिक समयमे क्नवििला आ नेपालमे फेि

खटपट भेलैक आ दुनू ाज्य अलग भऽ गेल। कवलासँ नेपाल पकि भऽ गेल। नाह्यदेकि बादक्हसँ नेपालमे कणाट शासन दुबस्ल भऽ गेल लैक आ नेपालमे कणाट शासनके ठाकुी ाजा लोकक्न उखाक्ड फेकने लाह। एक्ह आस पासमे नेपालमे मल्ल लोकक्नक उतान सेहो देखबामे अइयै। इ शि अवि मल्लदेसिँ शुर होइ। नीलगीी स्तंभ अक्मलेखसँ जात होइ जे धमषल्ल आ रपमल्ल नेपालक मल्ल लोकक्नक पूषि लाह। एक्ह शिक पमुख शासक लाह अवि मल्लदे।

मल्ल लोकक्नक पभुतकि कालमे कवलाक मंती चण्डेशि नेपालपि आकमण केलक्ह आ नेपालक ाजाके पाक्जत केलक्ह। चण्डेशकि 'कत्य ताकिमे सेहो एकि विीिि अवि। ाग्मतीक तटपि एक्ह उपलक्षमे तुलापुर र दानक उल्लेख सेहो अवि। १३१४मे नेपालपि दक्कणसँ (कवला) चढाइक पमाण स्पष अवि। हवक्सिंह देि पाक्जत भेला उताि नेपाल गेला आ नेपाली शासक क्षना पक्ताधि आत्मसमपषा कऽ देलकक्ह। हवक्सिंह देि भातगामि सूयक्षिशी ाजिशक पवपाटी सावात केलक्ह। ओ अपन शक्ततके नेपालमे पुनः संगक्ठत केलक्ह आ कणाट पभुतकि सापना सेहो। भातगासिँ ओ शासन कति लाह आ ओतक्ह ओ तुलजादेीक मक्ह्दकि सापना केलक्ह। नेपालमे हुनक साषिौम होएबाक कामक्लक्खत अक्मलेखसँ स्पष अवि ___

''जातः शीहवक्सिंह देि नपक्त पौढ पतापोियिः।

तदंशषवमिले महाविपुहिर गाम्भीयषिताकिः॥

कतायः ससािमुपेत्य कवला संलक्ष्य लक्ष्मयो।

नेपाले पुनीद भियुिते सियंषविधते क्षामि्॥

हरिसिंह देवकि नेपाल आक्रमणक परिप्रेक्ष्यमे इतिहासकारकि मध्य काफी मतभेद अछि। लुसिआनो पेतेकक विचार छन्हि जे मल्ल लोकनि स्वतंत्र छलाह आ अपनाके महाराजाधिराज परमेश्वर परमभट्टारक कहैत छलाह जाहिसँ इ भान होइछ जे हुनका लोकनिपर कोनो विदेशी सत्ताक शासन नहि छलन्हि। कविलोपर चण्डेश्वर दारा आक्रमणक बातके ओ मनैत छथि परञ्च ओ इहो कहैत छथि जे ओहि आक्रमणक फले कविलाक आधिपत्य नेपालपर नहि भेलैक। कविलासँ भागलापर ओ नेपालमे अपन राज्य बनौलकन्हि तकरो नहि मनैत छथि। एकटा शिलालेख पोथीक आधारपर इहो स्पष्ट कएने छथि जे हरिसिंह देव नेपाल पहुँचलाक बाद मरि गेला आ जिगारकि मारि भारि हुनक पुत्रके वाहिनारि कएर बंदी बना लेलकन्हि आ धन वित्त छिनि लेलकन्हि। एहि प्रकारे हरिसिंह देवकि शक्ति एहिठाम समाप्त भऽ गेलैन्हि।

लुसिआनो पेतेकक मतके हम ओहिना स्वीकार देने छी जेना ओ लिखने छथि। इहो कहल जाइत अछि जे ओहि समयमे पश्चिमी नेपालसँ आदित्यमल्लक आक्रमण सेहो भेल छल। कतिपय इतिहासकार जगतसिंह सेहो कर्णाटवंशक हेतु नेपालमे राज्य केने छलाह। एक विदानक अनुसार हरिसिंह देवकि परिवार एवं हुनक उत्तराधिकारी हुनका बादो नेपालपर शासन केलक। उत्तराधिकारी लोकनिक नाम एहि प्रकार अछि ——

i. मतिसिंह (१३१५-६९) —— सिमरौनगढक राजगद्दीपर सेहो राज्य केलकन्हि आ नेपालपर सेहो। चीनक सम्राट सिमरौनगढ शासकके मान्यता दैत छलथि। शमशुद्दीन इलियास जखन नेपालपर आक्रमण करबाक हेतु बढलाह तखन ओ सिमरौन गढक शासकके

सेहो परिसत्त केलक्हि आ ओक्हि बाटे नेपाल गेलाह। मक्तावसंहक नामपर मोक्ताहारि अवि।

ii. शक्तत वसंह

iii. श्यामवसंह क्हनका कोनो पुत नक्हि भेल आ हुनक पुतीक विवाह मल्लवंशिक राजकुमारसँ भेल। मक्तावसंहक ओतए चीनक दूत आएल छल। चीनक समाटक ओक्हठामसँ एकटा मोहर सेहो आएल छलैक आ शक्ततवसंहक ओक्हठाम सेहो एकटा चीनी समाटक मोहर आ पत आएल छलैक। श्यामवसंहक राज्याविहणक चीनी समाटक हाथ भेल छल। एक्हि तथ्य सबसँ पत्यक अवि चीनी समाट एक्हि कणाटवंशीके नेपालक सार्वभौम राजा बुझैत छलाह। अहु सम्बन्धमे पेतेकक मत अवि जे इ सब बात गलत विक। १३८२ ई. क इतिम बहाल अवभलेखसँ स्पष्ट होइयै जे मदन रामक पुत शक्ततवसंह नेपाली अनेक रामक राज छलाह ने कि कणाट वंशीय। नेपालक इक्ताहासमे अहुखन कतेको मतभेद अवि आ रहित।

राजलदेवीक पक्त जयाजुषाक शासनकालमे जयवस्थिक्त मल्ल दार्थ राज्य शासनमे कायम विरुद्ध विप्लव कैल गेल। जयवस्थिक्तके वसमानिक हर्ववसंह देकि राज कहल गेल अवि। नायक देवी आ जगतवसंहक पुती राजलादेवीसँ जयवस्थिक्त विवाह केलक्हि। जयवस्थिक्त जयाजुषाके पराजित कए नेपालक राजा भेलाह। ओ सूर्यवंशी कणाटक योग्य पक्तक्तक्ध वसद्ध भेलाह। पर्थीवसंहक आवधपत्य स्थावपत होयबाक समय धवि हुनक राज शासन कायम रहिल। जयवस्थिक्तमल्लक संग राजल्ला देवीक विवाह भेलासँ तीनटा शक्ततशाली शासक पर्वार ठाकुरि, कणाट ओ मल्ल संयुक्तत भऽ गेल। जयवस्थिक्तमल्ल शक्ततशाली शासक छलाह। हुनक

उतराधिकारी यक्षमल्ल अपन अधिकार क्षेत्रक विस्तार कएलन्हि। ओ अपन पाँचटा पुत्रमे राज्यके चारि भागमे विभाजित कएलन्हि।

i. भातगाम– अपन ज्येष्ठ पुत्र रायमल्लके

ii. बनेपा– रणमल्लके

iii.काठमाण्डु– रत्नमल्लके

iv.पाटन– अपन पुत्रीके।

एकर परिणाम भेल नेपालक सर्वनाश। सतरहम शताब्दीमे नेपाल अनेकानेक जागीरमे बँटि गेल। सबसँ पूबमे कराति प्रदेश छल जाहिमे दूध कोशीक समतल, ओकर शाखा तथा सून कोशीक पूबमे तराइक किछु भाग सेहो छलैक।

मुसलमानी आक्रमणः- ऐतिहासिक सम्पर्कक पकड़बाक हेतु पुनः इस्वीसन् चौदहम शताब्दीक चर्चा कएल पड़ैत अछि। कहल जाइत जे अलाउद्दीन खलजी सेहो अपन प्रभाव नेपाल धरि बढ़ौने छलाह यद्यपि एकर कोनो ठोस प्रमाण हमरा लोकनिके उपलब्ध नहि अछि। १३४६–४७मे बंगालक शासक शमसुद्दीन हाजी इलियास नेपालपर आक्रमण कएलन्हि आ एहिबातक उल्लेख स्वयंभूनाथक अभिलेखमे अछि। एहि शिलालेखक अनुसार हाजी इलियास काठमाण्डुके घेर लेलक, शहरमे आगि लगादेलक, लूट पाट मचौलक एवँ मूर्त्तिसबके ध्वस्त कएलक। शिलालेखक तारीख अछि नेपाली ४९२=१३७१–७२इ.।मन्दिर पुनः स्थापित भेलैक आ स्तूप पुनर्स्थापित भेल आ ओकर समारोह मनाओल गेल। एहि शिलालेखक संपादन के.पी.जायसवाल कएने छथि। तकर बादसँ पुनः कोनो आक्रमणक उल्लेख नहि भेटइत अछि।

मल्लक शासनः- जयस्थितिमल्लक चचषहमि पूर्ष्हि कचुकल ि। हुनक उतििधकािी िलाह जगज्योतिमल्ल। ओ मैथिल शिमवाक काव्लके 'संगीत भास्किि' नामक पुस्तकक िचना केने िलाह। हुनक उतििधकािी ज्योतिमल्ल भेला आ हुनक यक्ष्मल्ल। यक्ष्मल्ल अपन अवधकाकि विस्ताि समतल भूिम धरि सेहो केलक्ह। यक्ष्मल्लक ततीय पुत तिमल्ल मैथिल बाहणक पभाकि अधीन िलाह। तिमल्लक उतििधकािी िलाह अमिमल्ल आ हुनक महेन्द्रमल्ल जे चानीक मुदाक व्यहाि शुर केलक्ह। ओ काहितसँ चानी मंगिति िलाह।

एिम्हि आकि कनविला आ नेपालक बीचक सम्बन्ध खूब बढ्या नक्ह िहल। खण्डविला कुलक िजा मक्हनाि ठाकुि अपन िज्य विस्ताकि कममे मोिगके जीक्त लेलक्ह। कनविला काहिकत गीतक पचाि एक्ह िजाक समयमे भेल िल। नेपाल तिइक लोग सब खटपट किति िल आ तै मोिगिक जमीन्दाि सबके दबेबाक हेतु औिगिजेब गोिखपुिक फौजदाि आ कनविलाक फौजदािके पठौलक्ह। सतहम शताब्दीमे कनविला आ नेपालमे खटपट होएबाक एकटा काणि मकिानी िज्य िल जे तिइ ि घाटीक उपक्हमालय मागिक सटले दक्षिण आ दक्षिण पश्चिममे िहैक। एक्हठाम एकटा पमुख शासक िलाह िजा हविहि जे बडड महतिकाकी िलाह। िघवि्संह जखन कनविलाक िजा भेलाह तखन फेि एक्ह िज्यके लऽ कए नेपालसँ खटपट शुर भेल। नेपाल तिइक पंचमहलाक िजा भूपिसंहके युदमे हििलक्ह आ भूपिसंह ओक्हमे मािल गेला। दिभंगाक खण्डविला िज्यक सीमा मकिानी िज्य धवि पहुँचल। मोिग िजाक ओतए सेहो कनविलाक धाख बनल। बंजिि सब सेहो

तािइक केतमे शणिलेने िलाह आ अलीदिी हुनका सबक्हक विरिद उक्यत कािाइि केने िलाह। बंजि लोकक्त भपक्टआही टीसनसँ मकािनी िाज्यक सीमा धर्व पसलि िल।
१७६५मे नेपालमे गोिखा लोकक्त शक्ततशाली भऽ गेलाह। १८०२ई.सँ नेपालक सम्पकष इस्ट इक्पडया कम्पनीक अक्धकािीसँ भेल जखन क्क नेपाली लोकक्त हुनकासँ भेट कबािक हेतु पटना अबैत गेल। नेपाल आ इस्ट इक्पडया कम्पनीक सम्बह्ध मधुि नक्ह भऽ सकल आ क्दनानुक्दन िििट बक्ढते गेल। अंगेज आ नेपालीक बीच युद भइयैके हिल आ ओ युद भेल क्मविला भूक्मपि। युदमे नेपाली लोकक्त अपन अक्धकाकि विस्तािि तािइमे िपिि (सािनि) धर्व क चुकल िलाह। चार कात लडाइ पािभऽ िल। सािनिसँ कोशी धर्व आ िीचमे मकािनी होइत अंगेजक एकटा टुकडी नेपालक िाजधानी क्दक्स बढल। लडाइक भीरण रप देक्ख गजािज क्मश शाक्तक िाता चलौलक्ह। १८१५मे एक समिाताक अनुसािि इ कक्शत भेलैक जे नेपालके ओक्हभूक्म पि अक्धकाि िाक्ड देिक चाही जाक्हपि क्बक्टशक कब्जा भऽ गेल िलैक। एक्ह संक्धसँ कोनो संतोरजनक पविणाम नक्ह बहिलैक। १८१६मे पुनः मकािनीपुि लग फेिि क्मडंत भेलैक आ गोिखा पिक्जत भेल। १८१४ई.२८ नम्बिाकि सुगौलीक संक्धके जखन गोिखा लोकक्त क्बना कोनो शतष स्ीकािि केलक्ह तखनक्ह अंगेज युदबंदीक घोरणा १८१६मे केलक्ह। एिि पकािि अंगेज आ नेपालक बीच संघरषक मुख्य स्लि क्मविले हिल आ सुगौलीक सक्ह्धक पशात दुनू िाज्यक बीचक सम्बह्ध सुधिल।

अध्याय ११

मुल्ला तकियाक ियाजक अनुसाि क्षविलाक इक्तहास

मुल्ला तकिया अकबिक समकालीन िलाह आ ओ अपन असमक भमणक कममे क्षविला बाटे गेल िलाह। ओ क्षविलामे जे देखलक्कह सुनलक्कह से आ अह्याह्य साधनके आधाि अपन एकटा ‘ियाज’ (डायिी) क्लखलक्कह जे क्षविलाक इक्तहासक अध्ययनक हेतु सविि अपेक्कत अवि। एक्ह ियाजपि आधावित एकटा विस्तृत क्तबह्ध पटनाक मास्सि पक्तकामे १९४६मे िपल िल आ दिभंगासँ पकाक्शत डॉ. लक्ष्मण ि दाि संपाक्दत साप्ताक्हक मैविली “क्षविला” (२ फििी, ९ फििी आ १९ फििी १९५३क अंक सब)मे सेहो एकिपि आधावित कि अंश पकाक्शत अवि। क्षविलाक इक्तहासक हेतु इ एकटा अपूिषसाधन मानल जा सकइयै आ एकि उपयोग हम अपन ‘क्हस्टी ऑफ मुक्स्लम रल इन

साहित्य'मे सेहो कैल अछि। मैथिली पाठकक हेतु हम एकठाम मुल्ला तकियाक विवरणक सार उपस्थित कऽ रहल छी। मिथिलापर मुसलमानी राज्यक विस्तारक अध्ययन क्रममे सेहो एकर विवरण भेटत।

विवरणक अनुसार राजा लक्ष्मणसेनपर आक्रमणक पूर्व बख्तियार खलजी मिथिलाक किछु भागपर आक्रमण कएने रहथि। मिथिलाक राजा नरसिंह देव बंगालक राजा लक्ष्मण सेनक अधीन शासन करैत रहथि। पाछाँ ओ मुसलमान राजाक अधीनता स्वीकार केलन्हि आ तखनसँ ओ मुसलमान शासक ग्यासुद्दीन इवाजक समय धरि कर दैत रहलाह। १२२५मे जखन इल्तुतमिश बंगालपर आक्रमण केलन्हि तखन ग्यासुद्दीन इवाज हुनकासँ मेल कऽ लेलन्हि। तिरहुत बंगालसँ फराक कए फुटे प्रान्त बना देल गेल आ मल्लिक अलाउद्दीन जानीके ओहिठामक राज्यपाल नियुक्त कैल गेल। इल्तुतमिसक घुरलापर ग्यासुद्दीन नरसिंह देवक मदतिसँ पुनः तिरहुतपर आधिपत्य स्थापित कऽ लेलन्हि। बदला लेबाक विचारसँ सुल्तानक पुत्र बंगालपर आक्रमण केलन्हि आ ग्यासुद्दीन मारल गेला। नरसिंह देव हुनकासँ माफी मांगिके अपनाके छोड़ौलन्हि आ कर देबाक वचन देलन्हि। रजिया बेगमक शासन कालमे बंगाल पुनः दिल्लीक नियंत्रणसँ मुक्त भऽ गेल। राजा नरसिंह देव सेहो विद्रोह कऽ देलन्हि। तुगलक तुगान खाँ मिथिला विद्रोहके दबेबाक हेतु पठाओल गेलन्हि आ ओ ओहि राज्यपर अपन सत्ता स्थापित कए बहुत रास हीरा-जवाहिरात लूटिके लऽ गेलाह। मिथिलाक राजा बहुत दिन धरि नजरबन्द रहलाह। १२४४मे ओ चंगेज खाँक आक्रमणक समयमे ओ अपन बहादुरी देखौलन्हि आ तकर पुरस्कार

सरिप हुनका सुल्तान अलाउद्दीन मसूद पसन भऽ क्षाहूत िज्य घुि देलविन्ह आ हुनका एकटा सम्माक्षत िजा घोक्षत कए क्षादा केलविन्ह। क्षविलाके सूबेदाकि मातहदीसँ हटा देल गेल आ एकि सोि क्षदल्लीक अधीन कऽ लेल गेल। आब इ अपन कि क्षदल्लीके देबए लगला। ‘तबाकते नाक्षसि’मे एक्ष आकमणक िणष अवि। विदापक्षत सेहो अपन ‘पुरर पिीक्ष’मे नक्षसंह देकि क्षदल्ली पिसक चचा कएने वि। क्षहनक पुत िमक्षसंह देकि समयमे सेहो क्षकि संघरषभेल िल। क्षहनके समयमे दभिंगामे िमि चौक नाम मोहल्लाक सिापना भेल।

अलाउदीनक समयमे क्षविला पि पुनः मुसलमानी आकमणक चचषभेटइत अवि। इक्षतहासमे एकि उल्लेख आनठाम नक्ष भेटइत अवि मुदा मुल्लाक ियाजमे एकि विस्तृत विििि अवि। एक्ष आकमणक अंतगषत मखदून ताज मोहम्मद फकीहक पुत शेख मुहम्मद इस्माइलक नेततमि तीन बेि युद भेल िल। पक्षहल एँ दोसि बेि शाही सेना पिक्षजत भऽ गेल िलाह आ क्षविलाक जीत भेल िल। पिमि लडाइक सिान दभिंगामे अखनो “मुकबेश” नामसँ पक्षसद अवि। शेख मुहमद इस्माइल जखन िजापि दोसि बेि आकमण कबिाक विचािि केलक तखन सेना पठेबाक हेतु बादशाहसँ क्षिदन केलक। जिीउल मुल्क मक्षलक महमूदक सेनापक्षततमि शाही फौज क्षविलाक धितीपि उतिल। अहुबेि हुनका अपने सन मुँह लऽ कए पिक्षजत भऽ कए घुिि पडलक्ष। इ लडाइ जाक्ष सिानपि भेल िल ताक्ष सिानपि िजा अपन िजधानी दभिंगासँ उठाके लऽ गेला। शकक्षसंहक नामपि ओ सिान सम्पक्षत सकिी नामसँ विख्यात अवि। तेसि बेि पुनः युद भेल जाक्षमे

कवि लाक पिजय भेल आ ािजा अपन मंती सबक्हक संग पकडल गेला। वापिन्त भेला उतिािजा कमा याचना केलक्हि आ आजीनि कि देबाक िचन देलक्हि। एक्हशतषि अलाउदीन हुनका िाज्य घुिि देलविक्हि। बादमे शकातक्संह (शकक्संह) अलाउदीनक क्हन्दू फौजक सेनापक्त सेहो कयुतत भेला।

जखन अलाउदीनके हम्मीि देिसँ युद भेलक्हि तखन शकक्संह अलाउदीनक आविषक आ सैक्नक सहायता देलक्हि। शकक्संह सियं िणिकेतमे उतिलाह आ एक्हसँ अलाउदीनके बडड बल भेटलक्हि। शकक्संह एिि पकािि कवि लाक सितंतताके सुक्कित िखिबामे समिषिभेलाह। दिभिंगाक 'सुखी क्दगघी' अखनो शकक्संहक स्मािकि सिरिप अवि।

हिक्संह देि कणाट िशिक अंक्तम ािजा िलाह आ हिक्संहपुि सेहो अपन ािजधानी बनौने िलाह। वायासुदीन तुगलक जखन बंगालक विदोहके दबाके घुिलाह तखन ओ क्ताहूतपि ध्यान देलक्हि। क्ताहूतक िाज्य ओ दखल केलक्हि। कहल जाइत अवि जे क्ताहूतक ािजा बंगालक मदक्तमे िलाह। हिक्संह देि अपन मजबूत ककला, कक्ठन िास्ता ओ दुिह जंगल आक्दक बले पक्हने तँ वायासुदीनक विािध केलक्हि पिक्न्चु बादमे पिाक्जत भऽ पकडल गेलाह। सुल्तान हुनका पकक्डके क्दल्ली लऽ गेला आ कवि लाक शासन भािि अहमद खाक हािमे देलक्हि। वायासुदीनक बाद मुहम्मद तुगलक क्दल्लीक शासक भेलाह। िाज्यािोहणकेक अििि ओ हिक्संह देिके मुतत कऽ देलैक्हि। हिक्संह देि कि देबाक बचन देलक्हि तखन हुनका िाज्य घुिि देल गेलैक्हि आ ओ पमुख सेनापक्तक पदपि सेहो कयुतत भेलाह। इ सब भेलाक बाद

सुल्तानके बुिबामे एलक्हि जे िजाक मंती िर्शिि ठाकुिक संग एक विक्यत पािि िक्हि जकि संसगर्षाँ सब पकािक धातु सोना भऽ जाइत अिव। इ पािि अलाउदीन खलजीके नक्ह देल गेल िल। सुल्तान आदेश बहािर केलक्हि िजापत्ता एक फमािन दािर जो ओक्ह पािकिे शाही खजानामे जमा कऽ देल जाइक। िर्शिि जखन पािकि बदलामे हीिर उपक्सित केलक्हि तखन सुल्तान ओकिर लेबासँ अर्स्वीकािर केलक्हि। तकिर बाद िर्शिि बजलाह जे काशीमे गंगा स्नान केलाक उतिर ओ ओक्ह पािकिे शाही खजानामे जमा कितािह। शाही सिक्कमे िर्शििके काशी आनल गेल। काशी एबाक पूिषओ िजा हविक्संह देिसँ सेहो भेट केलक्हि आ काशीमे स्नान कबिाक कममे ओ पािकिे गंगेमे िक्ख देलक्हि। शाही संिक्क एक्ह पसंगके लऽ कए हविक्संह देिक क्शाकायत सुल्तान लग कऽ देलक। एक्हपिर क्मविला िज्य जप्त भेल आ हविक्संह देिके आजीिन कािािसक आदेश भेटल। एक्हबातक सूचना िजाके पहनक्ह भेट गेलक्हि आ ओ तुिर्त पडाएके नेपाल चल गेला। बादमे हुनक पता नक्ह लागल। क्मविलाके तुगलक सामाज्यमे क्मला लेल गेल। सुल्तान क्ताहूतके एक अलग पात बना देलैक्हि आ क्ताहूतक महतिर बढल आ दिभंगा ओकिर िजधानी बनल। क्ताहूतके तुगलकपुिर सेहो कहल गेल। ओतए एकटा क्कला आ जामा मक्स्जदक सिापना भेल।

१३४०मे मुहम्मद तुगलक क्मविलाक शासन भािर कामेशिर ठाकुिके देलक्हि। बंगालक शासनक भािर सुल्तान शमसुदीन हाजी इक्लयासके देलक्हि। क्मविलासँ किर सूिली कबि आ िजापिर क्सगािनी िखबाक भािर सेहो क्हनकेपिर देल गेलैक्हि। कामेशिर ठाकुि

ओइनी गामक हिए िला िलाह आ इ गाम हुनका पूिषके कणाट शासकसँ जागीकि रपमे भेटल िलक्हि। कामेशि ठाकुि िज्य पाप्त केला उति अपनक्हि गामके िजधानी बनौलक्हि। मुहम्मद तुगलकक जीित हाजी इक्लयास अपन कािस दिभिंगामे िखलक पिञ्च मुहम्मद तुगलकक मुइलाक बाद ओ अपनाके सितंत घोकित कए देलक आ किदेि सेहो बंद कऽ देलक। अपन सामाज्य केत्त विस्तािकि योजनाक कममे ओ अपन आसपासक इलाकापि अपन अव्धकाि बढौलक आ कोशी धविकि केतपि अपन आव्धपत्य सिावपत कऽ देलक। ओ कािविलाक िजाक संग युद कए कािविला िज्यके दू भागमे विभतत कऽ देलक। बूढी गंडकक उतिी भागमे कािविलाक िज्य हिल आ ओकि दक्कणमे इक्लयासक िज्य भेल। एिँ पकािें नेपाल ताििइसँ बेगूसािय धिवि ओ अव्धकाकि सिापना केलक आ कामेशि िशके ओइनीसँ हँटौलक। कािविलाक एक्हि अपाकवतक बटाििकि विािधमे कामेशि ठाकुि विदोह कऽ देलक्हि मुदा ओक्हि विदोहके शक्तीसँ दबाओल गेल। एक्हि शक्तीसँ विदोह दबेबाक कममे बहुतो गाम नष भष भऽ गेल। विदोह दबौलाक पशात ओ बूढी गण्डकक तटपि अपन िज्यक सुिकािष एकटा पशासवनक केन्द बनौलक जे शमसुदीनपुि (समस्तीपुि)क नामे ताक्हि क्दनमे पव्सद िल। गंगाक तटपि ओ हाजीपुि बसौलक आ ओतए एकटा कक्लाक कनमाण सेहो केलक।

फिािेज तुगलकके जखन इ सूचना भेटलैक तँ ओ आवा िबुला भऽ गेल आ समाचािि सुनतक्हि ओ क्दल्लीसँ कािविलाक हेतु विदा भऽ गेल। जाििि फिािेज गोिखपुि पहुँचल ताििि हाजी इक्लयास अपन बोविया विस्ति बाक्हिके पण्डुआ क्दवस विदा भऽ

गेल। ओतहु अपनाके सुरक्षित नहि देखि ओ ओतएसँ एकदला बढ़ल चलगेल। जखन फिरोज तिरहुत पहुँचल तखन कामेश्वर ठाकुर तथा किछु छोट मोट जमीन्दार लोकनि उपहार लऽ कए सुल्तानक समक्ष उपस्थित भेलाह आ हाजी इलियासक लूट पाटक शिकायत केलन्हि। सुल्तान कामेश्वर ठाकुरके पुरस्कृत केलथिन्ह। कामेश्वर ठाकुर हुनक अधीनता स्वीकार केलन्हि आ कर देबाक प्रतिज्ञा केलन्हि। फिरोज तिरहुताक दुनू भागके मिलाके फेर एक कऽ देलैन्हि आ ओहिठाम अपन काजी नियुक्त केलन्हि। सुल्तान ओहिठामसँ एकदला बढ़ल विदा भेला। १३५३ फिरोज तुगलक कामेश्वर ठाकुरके छोट बालक भोगीश्वरके राजा बनौलन्हि मुदा मुल्ला तकिया एहि प्रसंगमे चुप्प अछि। बनिनी सेहो एहि विषयमे किछु नहि कहैत अछि। फिरोज विद्रोही इलियासके दबाके जखन घुरला तखन ओ तिरहुतामे अपन हाकिम बहाल केलन्हि। मुल्ला तकिया कोनो स्पष्ट संकेत एहि सम्बन्धमे नहि दैत अछि। तिरहुतामे मुसलमानी शासनक प्रसार सम्बन्धमे जखन विश्लेषण प्रस्तुत करब तखन सब बातक समीचीन व्याख्या करब। एहिठाम तँ मात्र मुल्ला तकियाक बयानक आधार पर स्थितिकेँ उपस्थित कैल गेल अछि। फिरोज तुगलक पुनः तिरहुताके दिल्लीक एकटा प्रान्त बना लेलन्हि आ एहिठामक राजा पुनः दिल्लीक अधीन भऽ गेलाह भने हुनका स्वायत्तता प्राप्त रहल होन्हि से दोसर गप्प। कर वसूल करबाक हेतु फिरोज तुगलक एतए अपन आदमीके नियुक्त केलन्हि। भोगीश्वर फिरोजक मित्र छलाह।

दरभंगाक उत्पत्तिः- एहि प्रसंगमे दरभंगाक उत्पत्तिक सम्बन्धमे दूएक बात कहि देब आवश्यक बुझना जाइत अछि।

दिभंगा शब्दक उत्पत्त कव्हया आ कोना भेल एक्ह पशपि अखनो धर्वि मत विभिनता अर्वि ए। तविविखुल कतति (कततिक इक्तहास)क अनुसािि दिभंगाके बसायिला वायासुदीन तुगलक िलाह। हर्विसंह देिकेि पिविजत कए ओ एक्ह नगिकिे बसौलक्ह एहेन बुिल जाइत अर्वि। हर्विसंह देि पडाएके जंगल पहाड क्दक्स चल गेल िलाह। सुल्तान वायासुदीन तुगलक अपन आकमणक कममे हुनकापिि कब्जा कििा लेल जंगल कटबा देलक्ह। एक्ह साफ कैल जंगलक नाम ‘‘दार भंग’’ िखिल गेल। संस्कृतमे ‘‘दार ’’क अिषहोइि लकडी आ ‘भंग’क अिषभेल काटब, िटब आ नष कििि। चूंकक सियं सुल्तान अपना हाििि तर आर्विसँ जंगलके काव्टके नष केने िलाह आ ओक्हठाम अपन आर्विपत्य सिवापत कएने िलाह तै ओक्ह सिानके ‘‘दार भंग’’ कहल गेल जे कमेण दिभंगाक नामे पक्सद भेल। अखन धर्वि इ मत सिर्वमाह्य नक्ह भेल अर्वि।

विक्लयम हण्टि दिभंगी खा सँ दिभंगाक उत्पत्त बतबैत िर्वि। दिभंगी खा आइसँ कििब १२५ िरषपक्हने भेल िलाह आ ओ मुहम्मद िहीम रहेलाक पौत िलाह। क्हनक िशिज अखनो दिभंगामे िर्विह्ह। दिभंगी खाक बसाओल दिभंगा बाला क्सदात कोनो तिहि माह्य नक्ह बुर्वि पडइयै पििञ्च तइयो हम देखइत जे ओमैली सेहो हण्टिकि मतके माननेि िर्वि। दिभंगा ओक्हसँ पुिनि नगिि अर्वि तै हण्टि आ ओमैलीक मत अमाह्य अर्वि। इहो क्सदात पक्तपाक्दत कैल गेल अर्वि जे ‘दाि िगि’ अिि दूि िगि या दािि इ िगलसँ दिभंगा शब्दक कमाण भेल अर्वि। दिभंगाके ‘दाि िगि’क संजा देि उपयुतत नक्ह बुर्वि पडइयै कािण कोन रपे एकिि

बंगालक दाि कहल जेतैक? इ बात ठीक जे मध्य युगमे दिल्लीक सेना एहि बाटे बंगाल जाइत िल।

क्वलाक संस्कृत लेखक पण्डित गंगादत ि(१६१५——१६८४) अपन भंगदूतमे दिभंगा शब्दक उल्लेख कएने िव——

"तस्याः पाि: पमि वमिलं सक्तकायाकभामिा——

गाि कामायुध दिभंगा िजिधानी मुपेयाः"।

अहुँसँ इ क्सद होइि जे दिभंगीक पूिहिसँ दिभंगा नाम पचलित अवि। १७७८मे पतापक्संह सेहो दिभंगामे अपन िजिधानी बनौने िलाह मुदा हुनकासँ १०० िरष पूिहिँ 'दिभंगा' िजिधानीक रपमे पख्यात िल जकि पमाण हमिा 'भंगदूत'क कविसँ भेटइत अवि। ओहि कविक विंिणिसँ इहो जात होइि जे दिभंगा (िजिधानी) िग्मती नदीक तटपि सािवत िल आ ओतए एहेन एहेन सुह्दि भनि सब िल जे देखबामे कामदेकि तरआवि सन लगैत िल। भंगदूतक आधािइ कहल जा सकइयै जे 'दिभंगा' १७म शताब्दीमे एकटा पक्सद दशषीय नगि िल। दिभंगामे ताहिक्दनमे मुगल बादशाहक पक्तकत्ध हैित िलाह आ खण्डिला कुलक िजिधानी "भौि"मे िल आ भौि आ दिभंगाक मध्य मधुि सम्बह्ध िल। महािज माधि क्संहक समयसँ खण्डिला कुलक महािज लोकक्न सिायी रपे दिभंगामे िहिए लगलाह। एक इहो क्सदात पक्तपाक्दत कैल गेल अवि जे 'दलभंग'सँ दिभंगाक उत्पत्त भेल अवि गजिि पुिमे क्शिक्संहक पिाजय भेलापि ओहि सिनिक नाम 'दलभंग' िखिल गेलैक कएक तँ ओहिठाम क्शिक्संहक 'दल'के 'भंग' कैल गेल िलैहि। पिक्त्व अहुमे विशेर तथ्य नहि बुिा पडइत अवि।

ओना तँ सब गोटए अपन अपन तकष उपक्सित कएने िवि मुदा कोनो तकष ने अखन धवि माह्य भेल अवि आ ने ओकिा हेतु कोनो पामाणिक साधने उपलब्ध अवि। १७म शताब्दीमे 'दिभंगा' नामक पचलन इ क्सद कनित अवि जे इ नाम बहुत पूिषिसँ पख्यात िहल होएत। तै हमि अपन विचाि इ अवि जे एक्ह शब्दक उत्पवत्त वायासुदीन तुगलकक समयमे भेल जे 'दार' 'भंग' केलैह्ह आ ओक्ह दार भंगसँ दिभंगा शब्दक विह्यास भेल। इ जखन तुगलक सामाजयक एकटा अंग बनल तखन क्षवििला तुगलकपुिक नामे पक्सद भेल आ ओकि ािजधानी भेल 'दिभंगा'। दिभंगा ताक्ह विनमे जंग़ल िल आ तकिा कटबामे सबके डि होइत िलैक तै वायासुदीन अपनक्ह जखन जंगल काटब शुर केलक्ह तखन आ सब केओ क्षक्लके एक्हमे योगदान देलवि ह्ह आ जंगल साफ भेलैक आ ओक्हठाम तुगलक सामाजयक पधान कायालय बनल। क्ताहूतक तुगलक कालीन क्सका सेहो भेटल अवि।

अध्याय १२

कर्विलाक इतिहासमे मुसलमानी अमल

कणाट िशक समयसँ कर्विलामे मुसलमान लोकक्र हुलकी बुलकी देि शुर कऽ देने िल।

७११ई. जखन क्सह्धपि अबि लोकक्क आकमण भेलैक ताक्हसँ पूर्िह्रसँ अबि लोकक्क सम्पकष

पक्शामी आ दक्कणी भातिसँ िलैक आ ओ लोकक्र ओक्ह केत्तमे क्यापाि कबािक हेतु अँति

िलाह। जखन अबि लोकक्र क्सह्धपि आकमण केलक्ह तकि बादक्हसँ भातिक संग िजिनैक्क

सम्बह्धक शुरआत मानल जाइत अर्वि। ७११ सँ १२०० ई.क बीच बहुत िसि मुसलमान क्संतक

आ संत उतिि भातिक विभिन्न केत्तमे पसवि गेलाह आ कर्विला केत्त सेहो सूफी लोकक्क एकटा

पधान केह्द िल। ओम्हि पूबमे बंगाल धवि बक्खतयाि खलजीक समय धवि मुसलमानी पकोप

बक्ढ चुकल िल आ कहाििमे गंगा दक्कण भागमे मगधपि मुसलमान लोकक्र अपन आक्धपत्य

जमा चुकल िलाह। कर्विलेटा एकटा भाग बचल िल जाक्हपि क्हनका लोकक्क कयंतण अखन

धवि नक्ह भेल िलक्ह यदक्प इ लोकक्र एक्ह बातक हेतु सतत पयतशील हैित िलाह।

मुल्ला तक्कयाक ियाजक अनुसाि तँ मुसलमान लोकक्र बक्खतयाि खलजीक समयमे कर्विलोपि आकमण कएने िलाह यदक्प एकि कोनो आन पमाण ओना नक्ह भेटइत अर्वि। गंगाक मागर्षँ जेिि काल कक्ि गंगा कोशीक संगम क्दक्ससँ भने इ

लोकक्न लूट पाट कर्ति होवि से दोसि कि मुदा क्नहनका लोकक्नक आक्धपत्य क्नाहिूतपि भेल नक्न िलक्न्ह। पूबमे क्नवि लाके मुसलमानी पगक्नक पिमे बाधक बुिल जाइत िलैक काणि ताक्न्ह क्नहनमे अक्नहठाम सशतत कणाट लोकक्नक शासन िल आ तै सब ठामसँ विदान लोकक्न पडायके एतए अबैत िलाह। पक्शामक मुसलमान लोकक्न तँ तत्काल क्नवि लाके अपना क्नयंतणमे नक्न आक्न सकलाह पिज्ञ्च बंगालक मुसलमान शासकक वाद दक्ना सेहो क्नवि लाक सितंत कणाट िजियपि लगले हैत िलैक आ तै जखन कोनो मौका भेटैक तखने ि लोकक्न क्नवि ला क्नहक्न बक्नढ़ जाइत िलाह। गंगदेिक कणाट शासक लोकक्नमे ओ शक्नत नक्न क्नह गेल िलक्न्ह जाक्नहसँ ओ लोकक्न शक्नतशाली आकमणक विािध कवितैि। १२११ आ १२२९क बीचमे बंगालक विजेता वायासुदीन इिज क्नवि लाक िजाक केत्त अपन नाक घुसौलक्न्ह आ हुनकासँ कि िसूल केनाई पािभ केलक्न्ह। अक्नहसँ पूिष क्नवि लाक िजा ककिा सामने ने तँ िुकल िलाह आ ने कि देने िलाह। बंगाल पडोक्नसया होइतहुँ क्नवि लापि मुसलमानी आकमणक शीगणेश केलक।

बंगालसँ क्नाहिूतमे एबाक हेतु िस्तो सुगम िलैक। कोशी, गण्डक आ गंगाक काते कात क्नाहिूत होइत बंगाल जाएि आएि सुगम िल आ तै ताक्न्ह क्नहन पक्शाम आ पूबक आकमणकािी लोकक्न अक्न्ह मागषक पशय लेने िलाह। बीचमे पडैत िल क्नाहिूतक िजिय जे समयानुसाि 'तिक्नसिक्न'क पालन कर्ति अपन सितंतताक सुिक्नक हेतु यिासाध्य पविशम कर्ति िल। कानूनगोय महोदयके इ बात बुिबामे नक्न अर्ति क्नह्न जे जखन

कवि ला आ कामर पक सतिंत ाज्यके बक्तयाि नक्ह जीत सकल तखन ओ काबात क्दक्स बढबाक पयास कयैक केलक? बक्तयाि खलजीक मूल उदेश्य ि ल पात सबके लूटब आ धन जमा कबि तै कोन पात सतिंत िहल अि ि गुलाम भेल तकि कांता हुनका नक्ह ि लक्हु। आ ि मात अपन स ि ाि ष आ महत िकाकाक पूकाष्क हेतु सब काज कि ति ि लाह। पक्षामसँ एके ि ि बंगाल धवि मुसलमानी ाज्यक पसाि कऽ देि ताक्ह क्दनमे कक कोनो कम उपलब्धक बात भेलैक? बंगाल विजयक कममे नदीक मागक्क अ ि लंबनमे कवि ला दक्कण पूि ि सीमा देने जँ ओ गुजि ल होवि तँ कोनो आशयक गप्प नक्ह। सेनि शिक संग बि ाबवि खटपल िहलसँ कवि लाक इ अंश विशेर काल अि क्कित िहैत ि ल आ तै यक्द अक्ह बाटे बंगाल जेबाक कममे मुसलमान लोकक अपन पभाि केत एकि ि बना लेने होवि तँ से संभि । पि ञ्च एतए स्माि ण िखबाक अवि जे वायासुदीन इ ि जिक पूि षिधवि कोनो मुसलमान शासक कवि लाक ि जासँ कि नक्ह ि सूल केने ि लाह। तै बक्तयाकि पभाकि गप्पक पसंग कवि लापि क्याि ष बुि ना जाइि । बक्तयाकि पुत इक्तयाि कि काि हूतपि आकमण कि बाक संकैत भेटइत अवि पि ञ्च उहो आकमण लूट पाटे जका ि ल काि ण ओक्हसँ काि हूत ाज्यक अकुण्णता एि अखण्डतापि कोनो आँच नक्ह आएल। दक्कण काहापि ि ओकि आकमणक स ि ायी पभाि पडलैक काि ण उदंतपुि विशविदालयके उहै नष केलक आ अपन बहादुि ि क पदशाब कुतुबुदीन ऐबकक दि बाि मे क्दल्लीमे जाके केलक।

बंग, कामर प आ काि हूतक शासकसँ ऐक्तहाक्सक तौि पि

कि सिूल केक्हाि व्यक्त िलाह वायासुदीन इिज। कानूनगोएक मत जे त्ताहितक सम्बाह्धमे िक्ह से पूणतया भामक मानल जाइत अवि आ ओकि कोनो ऐवतहावसक पमाण नवह भेटइयै। अवमिल्लदेि नामक कोनो िजा वमविलामे नवह भेल अवि आ ओवहकालमे नविसंह देि अवहठामक शासक िलाह। अवह शंकाक समाधानक हेतु हम पोफेसि कानूनगोएके वलखने िवलयवन्ह आ हुनके आदेशानुसाि डॉ. मिेश मजुमदािके सेहो। शी मजुमदाि महोदय इ वलखलवन्ह जे कणाटिशिमे अवमिल्लदेिक नामक कोनो शासक नवह भेल िवि जकि िाज्य वमविलामे हो। कानूनगोए महोदयक अनुसाि वमविलाक पूिी भाग ताबह वदनमे लखनातीक अवधकाि भS गेल िलैक। कोन आधािपि कानूनगोए महोदय अवह वनणषपि पहुँचल िवि तकि पमाण ओ नवह देने िवि आ अवहकालमे वमविलाक िाज्य टुकडा टुकडामे बटबाक पमाण हमिा लोकवनके नवह भेटल अवि। यवद ओ वसलिा लेिीसँ पेवित भए अपन वनणषा बनौने िवि तखन आि एतेि कवह देि उवचत जे आधुवनक शोधक आधाि लेिी महोदयक मत माह्य नवह अवि।

नविसंह देिक शासन कालसँ मुसलमानी पकोप वमविलामे बढल सेटा माह्य अवि आ मैविल पिम्पिामे सेहो अवहबातके स्वीकाि कैल गेल अवि आ विदापवतक पुरुर पिीक्षा एकि साक्षी अवि। नविसंह देि पवहल व्यक्त िलाह जे कि देलवन्ह आ वदल्ली आ बंगाल दुनु ठामसँ सम्बाह्ध बनौलवन्ह। इ सब होइतहुँ ओ अपन स्वतंतताके सुिवक्षत िखबामे सफल भेला। बिािडाक समीप बहपुिा गाममे एकटा मवस्जद अखनहु ितष्ठान अवि जकिा इल्सुतवाश पचुि मातामे दान देने िलैक। एवहसँ बुवि पडइयै जे

कमवलाक एक्ह केत्तपि इल्तुतकमशक पभाि हिल हेतैक आ तखने ओ दान देने हेतैक। इल्तुतकमशक समयमे तुगान खा कमहाकि ाजिथपाल ािलाह मुदा ताक्ह कदनक कमहामि कमवला सकममकलत नक्ह ाल। कमवला कमहासिँ फुटे एक सितंत ाजिथ ाल जकाि जीतबाक लेल बंगाल आ कदल्ली दुनु समान रपसँ पयतशील ािलाह। तुगान खा अपनाके बंगाल आ कमहाकि शासक बना लेलक आ कवजया बेगमसँ ओकि मंजूिी लऽ लेलक। अक्ह कस्थिताके देक्ख नकिसंह देि पुनः अपनाके सितंत घोकरत कलेलक्ह आ कि देि बन्द कऽ देलक्ह। मुदा ािडबे कदनक बाद ओ वाकपस भऽ गेला आ कदल्ली लऽ जाएल गेलाह। चंगेज खाक विरद अपन बहादुिी देखा ओ पुनः कमवलाक सितंतता पाप्त केलक्ह आ एक्ह आदेशसँ घुिला जे ओ सोिि कदल्लीके कि देल किाि।

ािमकसंह देकि समयमे मुसलमानी आकमणक पकोप बक्ढ गेल ाल। तुगान खाक कतिहूत आकमणक उल्लेख मुसलमानी सोतमे भेटइत अवि पिञ्च ओक्हमे ािजाक नाम नक्ह अवि। कालक क्हसाबे तखन ािमकसंह देि कमवलापि शासन कैित ािलाह। तुगानक आकमणसँ कमवलाक सितंतताके धका अिश्य पहुँचले पिञ्च सितंतता सुकक्षत हिलै। तुगान पचुि माता धन वित पाप्त केलक। कतब्बती याती धमसवािमी जे ािमकसंहक शासनकालमे एतए आएल ािलाह से अपना आँक्ख सब ककछु देखलक्ह आ कलखैत विि जे मुसलमानी पकोपसँ ैशालीक कािसी हडकमपत ािलाह आ मुसलमानी सेनाक आािगमनसँ जे धुिि उडैत ाल ताक्हसँ सौसे मेघ अक्हाि भऽ जाइत ाल।

तुरक आक्रमणक संख्या दिन प्रतिदिन बढ़ैते जाइत छलैक आ कुतलूगकेँ मैथिल शासक हरिसिंह देव मुसलमानी प्रकोपसँ बचबाक हेतु अपन राजधानीक चारुकात बड़का किलाबंदी करौने छलाह। किछु संस्कृतक पाण्डुलिपिक पुष्पिकासँ सेहो इ ज्ञात होइछ जे हरिसिंहकेँ मुसलमान सबसँ संघर्ष करए पड़ल छलन्हि आ ओहिमे हुनका अभूतपूर्व सफलता सेहो भेटल छलन्हि। चारुकातसँ मुसलमानक प्रकोप रहितहुँ हरिसिंह अपन पूर्वजक जकाँ मिथिलाक स्वतंत्रताकेँ सुरक्षित रखबामे समर्थ भेलाह आ एहि हेतु हुनक शासन काल मानल गेल अछि।

शक्तिसिंहक समयमे मिथिलापर अलाउदीनक आक्रमणक विवरण मुल्ला तकियाक बयाजमे भेटइत अछि परञ्च कोनो आन साधनसँ एकर संपुष्टि नहि होइत छैक। अलाउदीनकेँ हम्मीरक विरुद्ध इ सहायता देने छलथि आ हुनका हम्मीर धीर भानुः कहल गेल छन्हि। हुनका संग देवादित्य ठाकुर आ देवादित्यक पुत्र वीरेश्वर सेहो गेल छलथि। चण्डेश्वरक कृत्यरत्नाकरमे एकर उल्लेख अछि। फरिश्ताक विवरणमे अछि जे अलाउदीन समस्त बिहारकेँ जीत लेने छलाह मुदा तकिया मिथिला बिहारसँ भिन्न छल आ बिहार कहलासँ मिथिलाक बोध नहि होइत छल। अलाउदीन मिथिलाक व्यक्तित्व आ शक्तिकेँ देखि ओकरा मित्र बनौने होथि से संभव कारण ओहि मित्रतासँ हुनका कैकटा लाभ छलन्हि। सर्वप्रथम लाभ तँ इ भेलैन्हि जे ओ मैथिल शासकके अपना पक्षमे कए हम्मीरक विरोधमे ठाढ़ केलन्हि आ देवादित्यकेँ ‘मंत्री रत्नाकर’ पदवीसँ विभूषित केलन्हि। अहि सबसँ बुझि पड़इयै जे ओ बिना युद्ध केनहि मिथिलाकेँ अपना मैत्री भावसँ मिला लेने

होएताह आ ओक्हठाम अपन पभाि केत्त बढौने होएताह। कर्नविलामे पभाि केत्त बढाएब आिश्यक िल कएक तँ ओम्हि बंगाल क्दकस मुसलमान लोकक्क कर्नविलाक पूर्ी दक्कणी केत्तमे घुकस िहल िलाह।

अक्ह पसंगक वर्ििणिक पूिष बलबनक संक्कम्त उल्लेख आिश्यक अर्वि। कहल जाइत अर्वि जे अपन बंगाल अक्भयानक कममे बलबन इकक्लम इ लखनौती ति अिशाह इ बंगालके दबाके अपना अधीनमे केने िलाह आ मुसलमानी बंगालक िज्यपालक रपमे ओ अपन पुत बुगि खाके ओतए क्नयुतत केलक्ह। बुगि खाके ओ कहलक्ह जे अहा “क्दआि इ बंगाल”के जीतबाक पयास कर। कक्ुि गोटएक मत िक्ह जे सोनाि गाकि दर्शि दनुजाियि (िगि)क िज्य ‘क्दआि इ बंगाल’मे िलक्ह। एक्ह क्दआि इ बंगालके कक्ुि क्ताहूत वजलाक दिभंगा बुिैत िवि जे हमिि बुिबे अपासवाक बुर्वि पडइयै कािण अक्हठाम दर्शि दनुजाियक िज्य िल ने क कणाट िशक। बंगालक दाि जँ एकिि बुिल जाइक तँ इ केत्त कतहु बंगालक समीप िहल होइत कािण बलबनक समयमे कर्नविलामे कणाट िशक िज्य िल आ ओ तीिभुक्ततक नामे पक्सद िल आ ‘क्दआि इ बंगाल’क नाम ताधर्वि पचक्लत नक्ह भेल िलैक। बलबनक समयमे क्ाहाकिे बंगालसँ अलग कैल गेल िलैक से बात ठीक मुदा तखन कर्नविला क्ाहािसँ फािके एकटा सितंत िज्य िल।

१९५५मे महेशिािि (बेगूसाियि)सँ क्कर जएक्तवान (१२९०— ९२)क एकटा सुपक्सद एिि अक्दतीय क्शलालेख उपलब्ध भेल

अवि जकरि हम पूनासँ पकाक्षत करैने ि‍ी। करैज एकगीन बंगालक रकनुदीन कैकश दारि कयुतत एक पशासक ि‍लाह जे अपनाके ओक्ह अकमलेख कदतीय कसकन्दि आ खानक खान कहने ि‍वि। एक्ह पशासकक नामक एक गोट अि अकमलेख लतखीसिाय (मूंगेि)सँ सेहो पाप्त भेल अवि। रकनुदीन कैकस बलबनक िशिक ि‍ल आ कवि ला केतमे ओकि अकधकाकि पसाि अक्हबातक संकेत दैत अवि जे शकततकसंह आ हविकसंह देकि समय बंगालक शासक दकरणसँ गंगा पाि कए गण्डक धवि बकढ चुकल ि‍लाह आ कणाट शासकके ओक्ह केतसँ धकरया चुकल ि‍लाह। कणाट शासक लोकक्न बंगालक दबाबसँ तबाह भऽ िहल ि‍लाह। मुल्ला तकरआ एक्हबातक उल्लेख नक्ह कएने ि‍वि मुदा अकमलेख जखन साकाते मौजूद अवि तखन दोसि साधनक अपेके कोन? गण्डक केतसँ अक्ह कशलालेखक पावक्त अक्ह बातके स्पष कऽ दैत अवि जे ओक्हकाल धवि अिँति अिँति कणाट लोकक्नक शकतत दकरणमे कीण भऽ चुकल िलक्ह। अक्ह केतमे गंगाक दुनु कात बंगालक सीमा धवि कदयािि सब अवि अक्ह कदयािि सबके संकेत “कदआिइ बंगाल”सँ होइत हो से संभि काणि गंगाक दुनु काते बंगाल जेबा एबाक िस्ता ि‍ल। अक्ह अकमलेखसँ कणाट िाज्यक िस्तविकि वस्तिाकि सम्बन्धमे पश उठब सिभाविकि बुवि पडइत अवि। बलबनक बाद बलबनी शाखा बंगालमे सितंत शासन कएि लागल ि‍ल आ एतए धवि अपन िाज्यक सीमा बढा लेने ि‍ल।

एकि बाद वििट पुट ढंगसँ मुसलमान लोकक्न एम्हि ओम्हिसँ हुलकी बुलकी दैत िहलाह आ लूट पाट करैत िहलाह।

चार कात मुसलमानी पभाकि ाििजूदो जे क्मविलाक कणाट लोकक्म अखन धवि अपन सितंतता सुक्मिक्त िखिने िलाह, इ कोनो कम गौािकि विरय नक्ह। लखनौती जेबाक बाटमे क्मविला पडैत िल आ तै एक्हपि एबा जेबा कालमे सब केओ अपन क्मि ुने क्मि ु बना लैत िलाह। संगक्ित रपे क्मविलापि सुक्मयोक्मजत आकमण केक्महािि क्मयक्मत िलाह वायासुदीन खलजी। सुगक्म सोपानसँ जात होइि क्मविलाक ाििजनैक्मक क्मसिक्म दयनीय भऽ गेल िल। दान िताककि एक श्लोकमे कहल गेल अवि जे क्मविला म्लेच्ि रपी समुदमे डुक्मब गेल िल (मग्नाम्लेच्िमहाणवि.....)। कहबाक तातमयष इ भेल जे हविक्मसंह देकि समय तक अवि ि मुसलमानी आकमणक पकोप क्मविलापि बक्ढ गेल िल आ हविक्मसंह देि अखन धवि ककिी समक ुिकल नक्ह िलाह जेना ज्योक्मतिशिकि विििणि सँ स्पष होइि। अक्मपतु हमिी बुिना जाइत अवि जे ि कोनो सुलतानके पिक्मजत सेहो केने िलाह आि इ सुलतानके िलाह से कहब कक्मठन? नामक अभािि क्मि ु क्मनक्श्चत नक्ह कहल जा सकइयै। नाबाक्मलक होएबाक काििणे हविक्मसंह देकिे बहुत क्मदन धवि अपना मंती सबक अधीनमे िहिए पडल िलक्ह।

१३२३ २४मे क्मविलापि वायासुदीन तुगलकक आकमण भेल। क्मविलापि आकमणक पूिषि ओ बंगालपि आकमण कएने िलाह मुदा कानूनगोए महोदय कहैत िवि जे ओ पक्हने क्मतिहूत आ तब बंगालपि आकमण केलक्क्ह। मुदा से मत माह्य नक्ह अवि। वायासुदीनक आकमणक विििणि सब मुसलमानी सोतमे भेटइत अवि, मुल्ला तकिआमे सेहो आ एक्ह घटनाक एकटा

चश्मदीद गिह सेहो िव जक्क पोिी शिाकानुलउहस अखनो उपलब्ध अवि आ जकि फोटो कॉपी पटनाक काशी पसाद जायसिाल शोध संसिानमे अखनो िखिल अवि। ओक्ह पाण्डुक्लकपक बाहिम पातपि कमविलाक िजाक सम्बन्धमे कहल गेल अवि जे ककिी कोनो बात नक्ह सुनलक्न्ह, तकषआ बुक्दसँ काज नक्ह लेलक्न्ह आ अनेिी पहाड कदक्स पडा गेलाह आवा जका पािकि पािु नुका गेला मुदा तइयो चकमक कविते िहलाह। इशामीक अनुसाि वायासुदीन क्ताहूतपि आकमण केलक्न्ह आ ओक्हठामक िजा एतेक भयभीत भऽ गेला जे कबना कोनो पकािक विरोध केने भावा गेला। क्हन्दू लोकक्न सेहो जंगलमे नुका िहलाह। सुल्तान जखन अपनक्ह हािसँ जंगल काटब शुर केलक्न्ह तखन सैक्नक सेहो ओक्हमे जुक्ट गेला आ तीन कदनमे सम्पूणषजंगल साफ भऽ गेल। तकि बाद िजाक कलापि चढाई भेल जे सातटा पैघ पैघ पाक्न भिल खाक्धसँ घेिल िल। कलापि वजिय पाप्त कए िजाक धन सम्पक्त्त सबटा लूटलक्न्ह आ विरोधीक हत्या केलक्न्ह। अहमदके अक्हठामक शासक कनयुक्त कए ओ ओतएसँ िपस गेलाह। फविश्ता आ मुल्ला तककआमे हविक्संह देिक वािपन्नािक गप्प िूठ अवि कािण शिाकानुल उंसक विििणसँ इ बात कक्ट जाइत अवि। शिाकानुलउंस (लेखक इखक्तासान)क अनुसाि क्ताहूतक िजाके पचुि सामगी उपलब्ध िलक्न्ह, जन धनक कोनो अभाि नक्ह िलक्न्ह, मजबूत कला िलक्न्ह, नीक व्यक्क्तत्ति िलक्न्ह मुदा ओ घमण्डे चूि िहैत िलाह आ विदोहक भािनाक् नेतत्ति सेहो किैत िलाह। िजदोह हुनकामे कूक्ट कूक्टके भिल िल। एक्हसँ पूिक शासकक पक्त

कञ्हयो ओ अपन मा‍ि नञ्ह ‍ि कौने ‍िलाह, ने ककी मातहदी ग‍ि ने ‍िलाह आ ने कञ्हओ प‍िक्जत भेल ‍िलाह। सुल्तानक आगमनक सूचनासँ ओ भयभीत भऽ गेला आ संगञ्ह क्वंक्तत सेहो। ओ क्कंकतष्यक्वमूढ भऽ बैक्स गेला। एतेक क्वंतातु‍ि आ अपाञ्हज जका ओ भऽ गेला जे सब क्क‍ि क्ञ्हतहुँ ओ सुल्तानक क्व‍ि‍िध कबिाक ‍िजाय क्कला ‍िक्ड भगबाक घोरणा क‍ि ‍ित ओ सबसँ तेज घोडाप‍ि चक्ढके भावा गेलाह। भो‍िमे जे अपनाके समाट बु‍ि ‍ित ‍िलाह क्तनके क्स‍ि क्त सा‍िमे क्मखाव‍ि जका भऽ गेलैन। ओ ओतए पहाड क्दक्स भगलाह आ अपनाके पा‍ि‍िक पा‍ि नुका लेलक्ञ्ह। सुल्तान ओक्ञ्हठाम बहुत क्दन धव‍ि रकला आ पशासक्नक व्यव‍िसि‍ि केलक्ञ्ह। जे केओ सुल्तानक आजा मानलक्ञ्ह हुनका क्मादान भेटलक्ञ्ह आ बाकीके सजा। सब क्क‍ि ठीक ठाक केलाक बाद ओ ओक्ञ्हठामसँ क्दल्ली क्दक्स व‍िदा भेला। क्त‍िहूत तुगलक सामाज्यक एकटा अंग बक्न गेल आ ओक‍ि तुगलकपु‍ि सेहो कहल जाइत ‍िल। ए‍ि ‍ि पका‍ि कणाट कालक गौ‍ि‍ि पूणषशासनक अंत भेल आ शुद रपे क्मव‍िलामे मुसलमानी अमल शुर भेल। एत‍ि क्दन मुसलमान एम्ह‍ि आम्ह‍िसँ हस्तक्षेप क‍ि ‍ित ‍िलाह मुदा आ‍ि क्मव‍िला क्दल्ली सल्तनतक एकटा पात बक्न गेल आ एक‍ि स‍ितंत सता समाप्त भऽ गेलैक जक‍ि पुनस‍िापना कबिाक पयास बादमे क्शव‍िसंह आ भै‍ि‍ि क्संह केलक्ञ्ह।

कणाट ‍िशक प‍िभ‍ि भेलाप‍ि क्मव‍िलामे ओइन‍ि‍ि ‍िशक स‍िापना भेल आ इ ‍िज‍िश तुगलक सामाज्यक क‍िद ‍िज्य ‍िल। ओना आंतव‍िक मामलामे जे स‍ियतता पाप्त ‍िहल हौकसँ

दोसि बात मुदा ािस्तवि कता आि इएह जे कणाट कालीन स्ि तंतता लुप्त भऽ चुकल िल आ मुसलमानी पभाि क्षवि लामे काफी बढ़ गेल िल। खास कऽ कए तुगलक लोकक्षक सम्बह्ध ओइनाि शासकक संग बिबवि बनल िहलक्ह आ जखन तुगलक िशक हास भेल तखन आन आन शक्तत सब सेहो क्षवि लाके धमकाि लागल। बंगाल, जौनपुि, अिध आ क्ह्दल्ली सबक्हक मुसलमान शासकक नजवि क्षवि लापि बनल िहैक्ह आ जखन जे मौका पाििव सैह हाि मावि लैत िलाह। कोनो तिहे क्षवि लाके चैन नक्ह िलैक आ बेचाि क्षिाक्सिंह आ भैिक्सिंहक सत्पयासक बादो क्षवि ला स्ि ायीर पेण ािजनीक्षक केन्त कणाटकालीन मयादा नक्ह पाप्त कऽ सकल। इ तँ धह्य वि दािपक्त जे अक्हिशक गौिािगाािक यशोगान कऽ एकिा अमतिि पदान किबामे समि िष भेलाह। वायासुदीन तुगलकक समयमे क्तािहूतके बंगालसँ फूटका कऽ एकटा अलग पात बनाओल गेल िल आ दििभंगामे ओकि ािजधानी िल।

ताक्ह क्ह्दनसँ दििभंगा मुसलमानी शक्ततक पसािक जे एकटा केह्द्र बनल से बनले िहल जा धवि क्क ओक्हपि अंगेजक कब्जा नक्ह भऽ गेलैक। ओइनािि िशके तुगलक लोकक्षक हाि ािज्य भेटल िलक्ह तै ओ लोकक्ष ओक्हिशक उपकत िलाह। मोहम्मद तुगलकक समयमे एकि आि पसाि भेलैक आ क्तािहूत पि तुगलक शक्ततक वि स्ताि सेहो मुदा महतििकाकी लोकक्षक तँ कतहुँ अभाि नक्ह अवि आ इएह काििण िल जे बंगालक शमसुदीन हाजी इक्लयास िक्कक सिान पि भक्कक काज केलक्ह आ क्तािहूत आ नेपाल पि आकमण कए देलक्ह। तुगलक

सामाज्यमे मोहम्मद तुगलकक पगलपनीक चलते जे अव्यसि‍ि उत्पन भऽ गेल िलैक ताव्हसँ पोत्साव्हत भए गोिखपुि, बहिाइच, चम्पाििण, व्ताहूत आव्दक िाजा ढीट भगेल िलाह आ शमसुदीन इव्लयास अपन महतिाकाक्षक पूव्ताषकिबाक हेतु व्हनका लोकव्हके सजा देिक ढोग िचलक। व्हदू िाजा लोकव्न आपसमे बटल िलाह जकि पिवणाम इ भेल जे इ लोकव्न सव्मव्लत भए ओकि मुकाविला नव्ह कऽ सकलाह आ हाजी इव्लयास अपन िवजयक डंका बजबैत हाजीपुि धिव पहुँव्च गेल। गोिखपुि धिव ओकि पभाि बढलैक आ क्षिवलामे ओइनिाि िाजाक अव्धकािके ओ सीव्मत ककए बूढी गण्डकक उतिी भागमे िव्ख देलक आ दव्क्षणक समस्त भागपि अपन आव्धपत्य सिाव्पत केलक। समस्तीपुिसँ बेगूसािाय धिव आ ओम्हि हाजीपुि धिव इव्लयासक आव्धपत्य बढलैक आ समस्तीपुि एिँ हाजीपुिक संसिापको इएह मानल जाइत अिव। हाजीपुिक सामिवक महतिव ताव्ह व्दनसँ बनले िहिल आ मुसलमान कालमे एकि महतिव िल। बंगालोक पव्तव्नव्ध अव्हठाम िहैत िलाह।

जखन व्फिोज तुगलक गदीपि बैसलाह तखन इव्लयासक ढीटपनी व्दव्स हुनक ध्यान आकष भेलव्न्ह आ तै तुगलक सामाज्यक व्नधािवत सीमापि अपन सता सिाव्पत किबाक हेतु ओ अगसि भेलाह। एम्हि जे व्हदू िाजा सब इव्लयाससँ पिाव्जत भेल िलाह सेहो सब इव्लयाससँ व्खव्सयैले िलाह आ तै ओ लोकव्न हरौतम्फुल भेलाह। व्फिोज तुगलकक सिागतमे ठाढ भेला गोिखपुि, कार र, चम्पाििण आ व्ताहूतक शासक लोकव्न। अव्ह सबपि अपन सता सिाव्पत कए व्फिोज सियिु नदीसँ कोशी

नदीक केत्त धवकि इलाकापि अपन पशासकाक व्यसि ि ठीक केलक्ह आ ओकि ि अपन अधीनमे पुनः आलक्ह। वकाि जिक पगकाक सूचना सुक्तक्ह इक्लयास काहिूतसँ भागल आ वकाि ज हुनका पाि गेला। इक्लयास पक्हने पण्डुआ पहुँचल आ तकि बाद एकदला। वकाि ज तुगलक काहिूत बाटे बंगाल क्दक्स गेलाह आ ि ि ापुि अनुमण्डलमे सम्पाक्त एकटा क्पर जगढ अवि जे वकाि ज दाि सिावात कहल जाइत अवि। ओक्हठामसँ ओ ि जिवि ि जि लग कोशी पाि कि ति बंगाल पहुँचलाह आ इक्लयासके हि ौलक्ह। ओक्हठामसँ घुि लापि क्मवि लाक सहयोगक पक्तादान सिरिप ओ भोगीशिके अपन क्पायसखा कहैत क्मवि लाक ि जा बनौलक्ह। कहल जाइत अवि जे काहिूतक दुनू भागके क्मलाके ओ एक केलक्ह आ समस्त ि जिक भाि ओइनिि लोकक्ाके देलक्ह। मुदा कवि ु गोटएक मत िक्ह जे इ काजक शेय क्शाक्सिंहके ि लक्ह। क्दल्ली घुि बासँ पूि षि वकाि ज क्मवि लाक हेतु अपन कलतटि आ काजी बहाल केलक्ह। हाजी इक्लयासके क्मवि लासँ भगाके ओक्हपि ओ पुनः अपन आक्धपत्य सिावात केलक्ह आ ओइनिि िशके कदि ि ज्यक रपमे हिए देलक्ह। इ लोकक्ा ि क्रषक कि तुगलकके दैत हिलाह। इक्लयास अपना अमलमे काहिूतमे बहुत िसि कला बनबौने ि ल मुदा ओकि ि गेलापि ओक्ह सब कलाके क्हन्दू लोकक्ा तोड देलक्ह।

वकाि ज तुगलकक क्दल्ली चल जेबाक बाद ओइनिि िशमे आंतवि क संघरषपािभ भेलैक आ एम्हि तुगलक लोकक्ाक पभाि सेहो घटे लगलक्ह। गणेशिक हत्यासँ क्मवि लामे एक नक्सिक्ा उत्पन भेल जकि चचषहम पूिक्ह कऽ चुकल िी।

बाहामे मलक ीि अफगान तुगलक लोकनक पकनक्ष िलाह मुदा कोहूतपि हुनक कोनो अधकाि िलक्ह अिि नक्ह से कहब कठन काणि कोहूत तखन बाहासँ अलग िज्य िल। कीर्तसंह आ ीि कसंहक जौनपुि याताक उल्लेख पूर्वह भऽ चुकल अवि आ इ लोकनक जौनपुकि इबाक्हम शकीसँ मदक्त लेबाक हेतु वदिापकाक संगे ओतए गेल िलाह। कफिज तुगलकक पोता सुल्तान महमूद तुगलक बाहाि आ कोहूतक िज्य अपन जीिि खिजा जहा (जकिि मलक उस शकष) सेहो कहल जाइत ैक के देने िलाह आ ओ जखन देखलक्ह जे कदल्लीक गदी लडखडा हिल अवि तखन ओ अपन सतिंतता घोक्त कऽ लेलक्ह। ओ अपन पदिी सुल्तान उस शकष खिलक्ह आ अपनाके जौनपुकि शासक घोक्त केलक्ह। आ अधि, बाहाि, कोहूत तिि गंगाक दोआि धवि ओ अपन आधपत्य कायम खिलक्ह। एतिि धवि कनश्त अवि जौनपुकि आकमण कवलाि पि भेल िलैक मुदा ओ कीर्तष कसंह ीि कसंहक हेतु अिि बंगालमे मुसलमानी सताक पुनसिापनक कममे से कहब कठन। मुल्ला तकया विििणमे इबाक्हम शाह शकीक कालालेखक उल्लेख अवि जाक्हसँ तथ्यक पुष्ट होइि मुदा तत्कालीन घटना कमक सम्बन्ध ततेक िसि नेऽ बात सब कझिि भेल अवि जे ओक्हमे सँ कोनो िस्तवकि तथ्यके बाहि कबि कठन गप्प। एक्ह हेतु अखन आिि पयास कए पडत आ तखनक्ह हमिि लोकन ओक्ह औिलि जालसँ बाहि हैब। १४६० धवि कवलाि जौनपुिि िज्यक मातहदी िज्य िल तकि कोनो पमाण हमिि लोकनके नक्ह भेटइत अवि। मुसलमानी साधन सेहो एतेक स्पष नक्ह

अवि जाक्ह आधािक्कि ठोस बात कहल जा सकए।

जखन तुगलक सामाज्यक पतनक बाद चार कात असाियित िल आ कोनो वसत्तुकी िजाक शासन जवम नक्ह हिल िल तखनक्ह मवलामे वशािसंहक उदय भेलक्ह आ ओ मवलाके मुसलमानी वयंतणसँ मुतत कऽ अपन सोनाक वसका बाहि केलक्ह। बंगाल, जौनपुि, वदल्ली आ आन आन, िट िट िजय जखन सब अपन डफली बजा हिल िलाह तखन वशािसंहे वकएक चुपप बैवसतैि? वशािसंहक संघरष जौनपुिक शकी िजाक संग भेल िलक्ह। ओना तँ अक्ह युदक पूणषविििण नक्ह जात अवि मुदा कीवतषताकाक विििणसँ एक्ह युदक संकेत भेट सकइयै। हुनका दाि घोवत मवलाक सतिंतता मुसलमानक आँवखमे काट जका गिए लागल आ ओ अपन सतिंतताक सुिवाषि अपन जानक बाजी लगौलक्ह। वशािसंह लडैत लडैत माि गेला अिि कतहु पडा गेला से कहब कवठन। वशािसंहक बादसँ मवलापि आवधपत्यक हेतु वदल्ली, जौनपुि आ बंगालक बीच घीचातीिि होइत हिल। वशािसंहक पिवाि कालकमेण इवलयास िला बटबाििके बंगालक शासन पुनः जीऔलक आ ओक्ह केतपि पुनः अपन वसतति कायम केलक। भैििसंहक समयमे ओक्ह केतपि बंगालक पवतकवच हैत िल से धिषानक दणडविकि गंिसँ जात होइि ——

"*गौडेशिपवतसाििमिवा पतापः।*
केदाििियमािगर्चवा दाितुल्यम्"॥

इ केदाििि बंगाल सुल्तानक पवतकवच िलाह। इ हाजीपुिमे अपन मुख्यालय िखने िलाह। भैिि वसंह वहनका पिवजत कऽ

पंचगौडेशिकि पदवीसँ विभूषित भेल छलाह आ मिथिलाक दुनू भागके एक कऽ पुनः जोड़बाके एक केन्द्र छलाह आ संगहि अपनाके स्वतंत्र सेहो घोषित केने छलाह। तकर बाद लोदी शिक प्रभाव मिथिलापर बढ़लैक आ सिकन्दर लोदी मिथिलाक राजाक पमि क्षत छलाह जकर उल्लेख हम पूर्वहि कऽ चुकल छी। सिकन्दर जौनपुरिके हरिके अपन राज्यक विस्तार पटना, तिरहूत आ सारनि चम्पारणि धरि केने छलाह। लिखआत इ मुस्तकीसँ जात होइछ जे तावहि ओदनमे चम्पारणिमे मिया हुसैन फामिुली जागीदार छलाह। आवश्यपत्यक हेतु लोदी आ बंगालक शासकक बीच संघरष होइत रहिल आ मिथिला पेडाइत रहिल। लोदीक समयसँ मिथिलापर मुसलमानक प्रभाव एकदम पत्यक होमए लगलैक। बेगूसरायमे एकटा लोदीडीह अखनो अछि आ तुगलकसँ लऽ कऽ शाह आलम धरिक सिका ओतएसँ पाप्त भेल अछि। दिल्ली आ बंगाल दुनु मिथिलापर अधिकार पाप्त करबा लेल संघरषशील रहैत छलाह। भवारिपुर अभिलेख अकबरातक साक्षी अछि जे मिथिलापर चार कातसँ मुसलमानी पकोप खूब जोर शोरसँ बढ़ि गेल छल। १५२६मे पानीपतक पहिल लडाईमे इबाहिम लोदी पराजित भेला। बाबरिक लेख इत्यादिमे तिरहूतक राजा रूपनारायणक उल्लेख भेटइयै। तिरहूत बाबरिके कर दैत छल। बाबरिसँ पूर्वहुँ तिरहूतमे अपन आधिपत्य कायम रखिबाक हेतु मुसलमान लोकनि कम उठा नहि रखिलकहि। बंगालक राजा नसरत शाह तिरहूतक राजाके पराजित केलक आ नसरत शाहक एकटा अभिलेख बेगूसरायक मटिहानी गामसँ पाप्त भेल छैक। नसरत अलाउदीनके तिरहूतक गर्निषिक रूपमे नियुक्त केलक। नसरतिक अरिसान भेलापर

मकदूम शाह विदोह केलक आ सासामिक अफगान नेता शेिशाहक संग कमतता सेहो। शेिशाह चम्पाणिसँ चटगाि धिव जीतबाक पयास केने िल। हुमायुँक भाएक पभाि नहिनमे िलैक जे कक महेश ठाकुिक सिषेश िताित संगहसँ बुिना जाइत अिव। हाजीपुिपि शेिशाहक पभाि िलैक। १५४७मे हुमायुँ कािजा कह्हदालके हाजीपुिपि कबजा किबाक आदेश देलकै। १५३० सँ १५४५ धिव कमविलामे अिजिकता िहलैक आ तकि कािु कदनक बाद केशि कायसि िाजा भेल। कदल्ली सँ इ िज्यक भाि हुनका भेटल िलक्हि। शेिशाह आ हुनक िशिजक शासन कािहूतपि िलक्हि। तेघडा केतमे मुगल अफगानक संघरष भेल िल। मुगल सामाज्यक समयमे कमविलाक हेतु कदल्ली कदवस गिनिषि अिि मुगलक पकतकवध कायुतत कैल जाइत िल। दिभंगामे बिािबवि फौजदाि िहैत िल। महेश ठाकुिक शासनकालमे बहुत िसि पठान सब कािहूतमे आबाके बवस गेल। 1575मे जखन दाउद खा अफगान मुगलक विििधमे विदोह केलक्हि तखन कमविलाके पठान सब हुनक संग देलक्हि। दाउदके दबेबाक हेतु अकबि कबहाि, कािहूत आ हाजीपुिसँ सेना जमा केने िलाह। सैकनक दक्ष कोणसँ मुगलकालमे हाजीपुि बहु महतिपूणष भऽ गेल िल। अकबि हाजीपुिके बिािबवि सुिक्ित िखिए चाहैत िलाह आ खान इ आजमके बंगाल आ कािहूतक गिनिषि कायुतत केने िलाह। मुजफ्फि खा चम्पाणिक िाजा उदीकिणिक संग कमल विदोही लोककके दबौने िलाह। कािहूतक िाजा समाटके कि दैत िलविह्हि। १५८०क बाद शुभंकि ठाकुि भौिमे कमविलाक िाजिधानी बनौलक्हि आ मुगल समाटसँ अपन बवढया

सम्बन्ध बनाके छिलाह।

शुभंकर ठाकुरकि समयमे जखन अकबर काबुल दिस गेल छलाह तखन एम्हर काहीहूतमे बदम्मीक पुत बहादुर शाह सामाज्यक विरुद्ध विद्रोह केलन्हि आ अपन नामक सिक्का आ खुतबा शुरू क देलन्हि। पश्चात् ओ आजम खाक नौकर सब दारि मारि गेला। पुरुषोत्तम ठाकुर जखन राजा भेलाह तखन हुनका राजिसँ जमा करबाक हेतु कमला घाटमे बजाओल गेलन्हि आ ओतहि धोखासँ मारि देल गेलन्हि। हुनक पत्नी धर्ममती जाए जहांगीरकि दरबारमे एकरा शिकायत कैलक आ पुरुषोत्तमक हत्यारिके मृत्युदण्ड देल गेलैक। रानी ओतहि जमुना नदीक संगम बोध घाटपर सती भऽ गेलीह। हुनक बाद नारायण ठाकुरकि शासन कालमे कोनो एहेन महत्वपूर्ण घटना नहि घटल आ मुसलमानक सम्बन्ध यथापि छल। तब सुन्दर ठाकुर राजा भेलाह। १६६१मे औरंगजेबक एकटा फरमान अछि जाहिमे उल्लेख अछि जे महिनाथ ठाकुर पलामू आ मोरंगके जीतबामे साहाय्य देने छलाह। हुनका समय नबिब खाँ राजा दरभंगाक फौजदार छलाह। पलामूक चेरो सरदार प्रतापराय समाटके कर देब बन्द कऽ देने छलाह आ अपना क्षेत्रमे तहलका मचौने छलाह। हुनका दबेबाक हेतु औरंगजेबक आदेश एलापर फौजदार महिनाथ ठाकुरसँ मदति लेलन्हि आ पलामूक संग-संग मोरंगिक विद्रोही लोकसबके सेहो दबाओल गेल। ओहि हेतु औरंगजेब हुनका धन्यवाद सेहो देने छलथिन्ह। अहिसँ इ स्पष्ट अछि जे मुगल समाटक अधीन छलाह। हुनका पारितोषिक हेतु मूंगेर, हवेली, ताजपुर, पूर्णिया, धर्मपुर आदिक जमीन्दारी भेटलन्हि आ मालिक निशान सेहो। मोरंगिक विरुद्धक लड़ाइमे नरपति ठाकुर सेहो

संग देने िलविह्ह। मक्हनाकि बाद नपिक्त ठाकुि िजा भेलाह। क्ताजि खाक पशात मासूमखा, नुसेिी खा, शाहनिाजि खा आ हादी खाक ओक्हठामक फौजदाि भेला।

नपिक्त ठाकुिके मकि ानिपुकि िजासँ िॉिट भेलक्ह। नपिक्त ठाकुि तखन सूबादािसँ अनुिोध केलक्ह आ सूबादािसँ आशासन भेटलापि मकि ानीपि आकमण केलक्ह। मकि ानीक िजाके पकक्ङके दिभंगाक फौजदाकि समक आनल गेल जतए ओ कि देि सीकाि केलक्ह। बादमे नाबि क्फदाई खा (1692 ___ 1702) ओकि ा आ बढाके बेसी कऽ देलक्ह। तकि बाद िाघि क्संहक शासन भेल। 1701मे शमशेि खा क्ताहूतक फौजदाि िलाह। ओक्ह िरषाघि क्संह िजा भेल िलाह। अलीिदी हुनका िजाक पदिी देने िलक्ह। ओ क्ताहूतक िाजय मुकिीपि लऽ लेने िलाह मुदा पावीिवकि संघरषक चलते केओ एक गोटए जाके नािबके हुनका विोिधमे खबिि कऽ देलकक्ह आ नतीजा इ भेलैक जे हुनकापि चढाई भऽ गेलक्ह आ हुनक िाजय जपत कऽ लेल गेलक्ह। विआज ___उस सालाक्तनक अनुसािि भौकि िजाक विदोही पिक्तिक कािणे इ आकमण भेल िल। पुनः हुनका 'िहयु कलतटि' बनाके क्ताहूत िपस पठैल गेलक्ह। नािबक दीिान धिणीधिके सेहो इ पचास हजाि टाका सालाना दैत िलविह्ह। एकि बाद विषणु क्संह िजा भेलाह आ तकि बाद निहिद क्संह। निहिद क्संहक शासनकाल महतिपूणष अिि। क्हनकक्ह शासनकालमे कहदपी घाटक लडाई भेल िल। िजा िमनाियणसँ क्हनका संघरष भेल िलक्ह जकि विििण हमिा लालकविसँ पापत होइि। िमनाियणक नेतति मे कमखािी महि, सलाि ाि िाय आ िखक्त क्संह

पाच हजाि सेनाक संग कार्विलाक िाजा नरेन्द्र सिंहपि आकमण केने िलाह। िमिनाियिण िमखाि महािके आदेश देलविन्ह जो कािहूतके सोि अपना कब्जामे कऽ लौि। सलाित िायि सेहो हुनका संग गेलविन्ह। िाजा नरेन्द्र सिंह सेहो तैयािी कऽ कए बढलाह। बतसी गोकुलनाि िा, जाफि खा आ हालाियि सेहो हुनका संग आगा भेलविन्ह। िाजा सितजित आ उमिाि सिंहके आगा पठौलविन्ह जाहिसँ ओ लोकिन दुश्मनक सेनाके िोकि सकैि। सलाित िायि उमिािके हाि मािल गेला आ िमखाि महाि कहुना बचाके भागलाह। लालकविक िणिाक किछु अंश एिि पकािअछि ____

"िमिनाियिण भूपते कहयौ मुखाकिलफ जाय।
हाकिम को कार्विलेशने, दीन्हो अदल उठाय॥
सीकिि कािहूकि को, ताके िचो उपाय।
फौजदाि महािभये, संग सलाकित िायि॥
िखिि सिंह कुल उदिणि, िाडिमल्ल किलपुि।
चौभान भानु भानू सुउअ, एक एक तै सूि॥
याही सब तै नाि किि, फौजे पाच हजाि।
किग शुल सन्मुख जोवानी, महि उतिि पाि॥

पडै उठाय धाय धाय एक एक सँ लडै।
मनो गजेन्द्र सो गजेन्द्र जंग जोि को धिै॥
महीप सितजित िािि खिि सिंह को धिै।
चखा चखी चोट चोट लोट पोट हैविै॥

एकि युदमे नहिनक िाजा नरेन्द्र सिंहक संग देने िलाह।

कहब्दपी घाटक युद बलान नदीक तटपि भेल िल। नहिद्द क्संह एव्ह युदमे विजयी भेल िलाह। दभिंगाक अफगान लोकक्त सेहो कनिब तीन मासक हेतु अपनाके सतिंत घोक्तत कऽ चुकल िलाह। दभिंगाक अफगान आ दभिंगाक महाजि लोकक्तक बीच सम्बन्ध बव्द्धया िल। अलीदीक वििधमे दभिंगाक अफगान लोकक्त मठाक संग रडयंत कएि लागल िलाह। अफगान सब अखनो मोहदीनगकि समीपमे िवि। 1765मे जखन अंगेजके बंगाल, क्बहाि आ उडीसाक क्दिानी भेट गेलैक तखन िजनैक्तक क्सिक्तमे पूणष पर्वितिषा भऽ गेलैक आ मुसलमानी अमल एक रपे समाप्त भऽ गेलैक। 1774मे क्तहिूतके पटनाक अधीन कऽ देल गेलैक आ 1782मे गैण्ड क्तहिूतक कलतटि भऽ कए एला। तखन मुजफ्फपुि क्तहिूतक अधीन िल। मुसलमानी अमलक अंत भेलापि अंगेजक अमल शुर भेल आ क्जविला ओकि एकटा अंश बक्त गेल। मुगल कालमे क्जविला तीन पकािमे विभाक्जत िल — हाजीपुि, चम्पाणि आ क्तहिूत आ अधुना (क्तहिूत) क्जविलाक पाचीन सीमा केत्रक क्हसाबे मुजफ्फपुि, दभिंगा आ कोशी पमण्डल क्जलाके क्जविला कहाओल जाइत अवि। अंगेज अपना सुविधानुसाि पशासक्तक केत्र बनौने िलाह आ आजुक शासक ओकिि आओि अपना सुविधानुसाि बना िहल िवि।

अध्याय १३

कर्वि लामे अंगेजी ाजिक अमल

(१७६५ १९४७)

१७६४क बतसकि लडाइ भातिक हेतु एकटा कणायक युद लि काणि एकाि बाद इ स्पष भऽ गेल लि जे उतिा भातिक कोनो शक्तिके आब अंगेजसँ मुकाबला कबिाक कमता नहि िकि गेल लिकह। १७६५मे अंगेजी इस्ट इण्डया कम्पनीके जखन दिानी

भेटलैक तखनक्हसँ भातिमे अंगेजी ाज्यिक स ापनाक ीजाापिण सेहो भऽ गेलैक। १८म शताब्दी उतत भाति आ दक्कण भातिक महतािकाकी नेता लोकक्नक स ाािषपूक्तक युग ाल जखन लोग देशक पैघ स ाािषके क्नसैवि अपन ाट ाट स ाािषक पूक्तक हेतु देशक बक्लदान कैं ति जाइत गेलाह। क्ताहूत औांिगजेब समय धवि मुक्शाबाबादक नाबिक मातहदीमे ाल। १७४०सँ क्नहाि आ क्ताहूतक भाग्य मुक्शाबाबादसँ क्नलल ाल आ ओक्हठामक नाबि क्नहामि अपन उपनाबि बहाल कैं ति ालाह। अलीदिी खा पक्हने क्नहािक उपनाबि ालाह। अलीदिीक कपासँ अंगेज व्यापाि लोकक्नके ािडेक सुविधा पाप्त भेल हैक्ह।

१७५६मे अलीदिीक मत्यु भऽ गेलैक आ तकि बाद क्नसािजुदौलाह बंगालक नाबि भेल। अंगेज लोकक्न अपन कुचकसँ पलासीक युदमे क्नसािजके पािस्त कए मीिजाफिके १७५७मे नाबि बनौलक्ह। १७६०मीिजाफिके हटा कए मीिकाक्नमके नाबि बनाओल गेल। मीिकाक्नम मूंगेिके अपन ािजधानी बनौलक्ह। हुनका अंगेजसँ पटइत नक्ह ालक्ह आ बािबि खटपट होइत हिक्ह आ अंगेज मीिकाक्नमक चुस्ती चालाकीसँ खाि खाइत ालाह। १७६३मे अंगेज आ मीिकाक्नमक बीचक सम्बन्ध आ खािब भऽ गेल आ मीिकाक्नम क्दल्लीक शाह आलम आ अधिक नाबि शुजाउदौलाहक सहायतसँ अंगेजक पटनामे क्सित कम्पनीपि धाि कबाक विचाि केलक्ह। एकि नतीजा भेल १७६४क बतसिक लडाइ। एक्हमे अंगेज लोकक्न विजयी भेलाह आ १७६५मे हुनका क्दिनी भेटलक्ह। बंगाल, क्नहाि आ उडीसाक ओ अपतत्यक रपे मालिक भऽ गेलाह। तक्हयेसँ क्नविलामे अंगेजी ाज्यिक अमल

मानल जा सकइयै। १७६५मे ि बिटष बाकिि अपन सेनाक संग उत ाि बाहािमे विदोही जमीह्दािके दबेबाक हेतु ऐलाह। बेक्तयाक जमीह्दाि जे गत दू िरखँ अिजक वसिक्तसँ लाभ उठाके विदोहक िंडा गावि देने िलाह तकका इ धतेलक्ह। ओ जमीह्दाि अपन बक्लामे नुका िहल िला। बािकिक पहुँचलाक बाद ओ तुिि हुनकासँ समिाता कऽ लेलक्ह आ सबटा बक्कऔता चुका देलक्ह। बािकि बेक्तयाक सम्बह्धमे बडड बक्ढया विििण देने िवि। १७७२मे जखन बोडष आफ िेिह्यु क सिापना भेल तखन क्तािहूतक सेहो ि जिसिक आधािपि समिाता भेल। १७७४मे क्तािहूतके पटनाक अधीन कऽ देल गेलैक। १७७२मे फासीस गैण्ड क्तािहूतक पिम कलतटि भऽ के एलाह। गैण्ड नीलहा कोठीक संसिापक सेहो िलाह आ क्हनके पयासे समस्त क्तािहूतमे नीलहा कोठीक जाल बक्ाि देल गेल िल। १७८७धवि गैण्ड साहेब िहलाह आ एक्ह बीच ओ समस्त क्तािहूतक सिकण ि जिसिक दक्ष ये केलक्ह। तकि बाद िििषसट एला।

१७६२मे िजा पताप क्संह भौिसँ हटाके दिभंगामे अपन िजधानी लऽ अनले िलाह। १७७०मे जखन पटनामे िेिह्यु कौक्सलक सिापना भेल तखन पुनः पताप क्संहके अपन जमीह्दािीक मुकिषी कम्पनीसँ भेटलक्ह। केली क्तािहूतक िजसि अधीकक भऽ कऽ एलाह। १७७१मे पताप क्संह आ केलीमे मतभेद पािभ भेल। िजाक ओतए बहुत िसि बक्कऔता भऽ गेल िलक्ह आ अंगेज लोकक्त क्हनक पुिनि क्स्तितके नक्ह िहए देमए चाहैत िलविह्ह। माधविसंहक समयमे फेि नि क्हसाबे कम्पनीक संग समिाता भेलक्ह, ओना िज्यािोहणक पूिषिह् माधविसंहके धीिजि नाियणसँ

कैकटा परगिना भेटल छलन्हि। सबटा बक्कऔता चुकौलापर राज्य पुनः माधवसिंहके वापस भेलन्हि। ताहि कालमे एक पकारक असामयिकता छल तै लगले लगले परिवर्तन सेहो होइत रहैत छल। तावा १७८१ सँ १७८९ धरि दरिभंगा कम्पनीकी रपे माधवसिंहक अधीन रहल। मिस्टर कलतटर दरिभंगा आबि महाराजसँ भेट कए अनुरोध केलकन्हि जे दमामी बन्दोबस्त मानि लैथ परञ्च माधवसिंह बड़ा कंताामे पड़ि गेल छलाह आ कोनो कारणवश लेबामे असमर्थ रहलाह। रागनियर जेनरलसँ अनुरोध केलन्हि जे हुनक राज्य घुरा देल जान्हि। जखन इ सब होइतालाप छल तखन हुनका कमिश्नर अलीक स्टेट सेहो पाप्त भेलैन्हि (१७९५)। एहिमे १५परगिनामे ३५टा गाम छल। सरकार बहादुर अन्हिबातके नहि मानि एहि सब दान बला गाम अपन राज्यमे मिला लेलक। पुनः किछु दिनक बाद १८००इ.मे इ सम्पत्ति राजके भेटलैक। अतंतोगत्वा दरिभंगा राज सेहो दमामीबन्दोबस्तक अधीन भऽ गेल।

महाराज छत्रसिंहक समयमे कम्पनीक संग सम्बन्ध आर बढ़िया भेलैक। कम्पनीके तखन नेपालसँ खटपट होइत छलैक आ लड़ाइक संभावना बढल जाइत छलैक। कम्पनीक पक्षसँ महाराजसँ भेट केलक आ हुनकासँ अनुरोध केलकन्हि जे संभावित गोरखा आक्रमणक विरुद्ध हुनका लोकनिके सतर्क रहिबाक चाही। ताहि हूतक कलतटर सीलीके सेहो लिखल गेलैक जे ओ जेतक सब जमीन्दार सबसँ सेना पाप्त करबाक पयास करथि। सीली सेजर बैडशाक नाम जे पत्र लिखने छलाह जनकपुरसँ ताहिसँ ज्ञात होइछ जे दरिभंगा महाराजके दिससँ केओ सक्रिय सहयोग नहि देने छलन्हि। छत्रसिंह करीब ९हजार टाकाक मदति सेहो देने

छिथिन्ह। योग्य सैन्कक व्यसिि सेहो इ कऽ देने िलिथिन्ह। हुनक खुफिया सब अंगेजके गोरखाक आकमणक पूवि सूचना एिं ओकिर सबहक बढबाक बाटक संकेत सेहो देलकिन्ह। नेपालक विरुदक संघरषमे अंगेजक मुख्य सहायक (सब तिहि) ितथ्यसंह िलाह आ अंगेज सेना तखन पुपििर तक पहुँच चुकल। व्यवसयाके नेपालक िाजा अपन सैन्कके इ आदेश देलकिन्ह जे िो क्षतिहुत क्जलाक सब गामके लूट पाट शुरु करि। जखन नेपालक विरुद अंगेजक जीत भेलैक तखन ितथ्यसंहके महाािज बहादुिक पदिी भेटलकिन्ह। युद समाप्त भेला उतिि अंगेजक अनुिाधिपि ितथ्यसंहक सेना मोक्तहािीमे बनल िहिल। इ लोकिन सतत अंगेजक खैििखाह बनल िहिल। महेशि व्यसंहक समयमे क्षसपाही विदोह भेल। अंगेजके हिन्हुस्तानी जमीन्दािपि सन्देह होइते िलैक आ ताहपि एकटा कािणो आवि गेलैक। एक अफिाह पसािवित भेलैक जे बहेडाक ब्डपुटी मक्जस्टेट व्यस्टि डोिटनपि महाािजक एकटा कमचािी बन्दुक उठौलक यदवि इ बात व्यकि दोसि िलैक। महाािज अपन स्िािमीभक्तत पदव्शि कि बाक हेतु अंगेजके नािपुि आ पुवणयााक बीच डाक व्यसिि चालू िखिबाक हेतु १६टा घोडसिाि देलथिन्ह। १०० क्षसपाही सेहो ओ अंगेजके पठौलकिन्ह मुदा ओ लोकिन संशक्तत िहिबाक कािणे ओकिि घुिि देलकिन्ह। १८५५मे संिथाल विदोहके दबेबाक हेतु सेहो महाािज हाििी इत्यादद कम्पनीक सैन्कके देने िलथिन्ह। महाािज महेशि व्यसंहक बाद कोटष आफ िाडषस भऽ गेलैक। क्षतिहुतमे क्षसपाही विदोहक पभािि कोनो रुपे कम नविि िल।

अंगेजक संग बढ़या सम्बन्ध रखितहुँ महाराज लक्ष्मीशर सिंह देशक नबजके कहलक्ह आ कागेसक पाथिमक अर्सिमे जी जानसँ मदत केलक्ह जकर उल्लेख हम पूर्विहें कऽ चुकल छी। सिपाही विद्रोहक बाद समस्त भारतपर अंगेजक एकतंत्र राज्य कायम भेल आ ताहि हूत कमीशरीक एकटा अंग रूजलाक रूपमे दरभंगाके राखल गेल। महेश ठाकुर शि अंगेजी राजक समएमे दरभंगा राजक नामे पसद भेल आ उतर बाहाकि पायः सब रूजलामे कतौ न कतौ हुनका लोककाके छिबे करैह। रमेशर सिंह आ कामेशर सिंहक समयमे सेहो काव्टश सरकारि संग सम्बन्ध बढ़ये छिलक्ह आ १९३५-१९३६मे महाराज कामेशर सिंह अपन स्तरतके आर दढ़ केलक्ह आ हुनकमे बढ़ भेलक्ह। नेव्टभ राज्यक स्थिति पाप्त कबाक हुनक पैघ अरमलारा छिलक्ह आ अहि दशामे ओ बहुत पयतो केने छिलाह। सामाहूय पकाष राक हसाबे आन जमीन्दारकि अपेक्षा दरभंगा राज्यक विशेर महत्व छैक आ अंगेज लोकका एकरा अपन एकटा पैघ सम्बल मानैत छलाह। १९३५क कानूनक बाद जे राष्ट्रीयताक एकटा रायर बहल तकरा फले पवृत्तिषा सभाविकि भगेल आ १९४७मे भारतिक स्वाधीनताक बाद बहार पहल राज्य छल जे जमीन्दारी उन्मूलनक हेतु कानून पास केलक आ बहारसँ जमीन्दारी पर समाप्त भऽ गेल। बहाकि सब जमीन्दार समाप्त भऽ गेला आ ओहि कममे मर्वलाक सबसँ पैघ जमीन्दार जे कहयो मर्वलेशो कहबैत छलाह, सेहो समाप्त भऽ गेला।

||

कालिहूतमे नीलहा कोठीक इतिहास:- उत्तर बिहार आधुनिक भारतिक इतिहासक दृष्टिकोणसँ बडड महत्वपूर्ण मानल गेल अछि कारण नीलक खेती अठारहम सदीमे होइत छल आ एकरा हेतु अंतर्राष्ट्रीय बाजार प्राप्त छल। नीलक अपन महत्व होइत छैक आ जखन इ बुझि गेलैक जे उत्तर बिहार एकरा हेतु उपयुक्त स्थान अछि तखन इस्ट इण्डिया कम्पनीक कार्यकर्ता लोकनिक ध्यान अहि दिस जाएब स्वाभाविके। अंग्रेजक आगमनक पूर्वहुँसँ अठारहम नीलक खेती बढ़िया जका होइत छल। युरोपमे इ गिरि ततेक जनप्रिय भऽ गेल छलैक जे एकर माग बढ़ि गेल छलैक। भारतीय स्रोतमे सेहो एकर खेतीक प्रश्न कएक बेर विवादि उठल हेतैक जकर कारण स्पष्ट नहि अछि मुदा १८३७ई.क लार्ड मैकौलेक एकटा मेमोरिण्डम छैक जाहिसँ अहि स्थितिपर प्रकाश पडइयै आ इ आभास भेटइयै जे तकर बादसँ बंगालमे नीलक खेती कम होमए लागल आ नीलक खेतीपर कालिहूतमे विशेष ध्यान देल जाए लागल।

१७८२ गैण्ड कालिहूतक कलक्टर भऽ कए आएल छलाह आ १७८५मे ओ लिखैत छथि जे ओ अपने कालिहूतमे नीलक खेतीक सूत्रपात युरोपीय पद्धतिपर केलन्हि। इ ओ सबटा अपने खर्चपर केने छलाह। अंग्रेजक सर्वप्रथम फैक्टरी ओना कालिहूतमे १६५० ——— १७००क बीच हाजीपुरक समीप सिंघिया अछि लालगंजमे भेल छल आ तहियासँ अहि क्षेत्रमे अंग्रेजक प्रभाव बढ़ैत गेल आ गैण्ड जखन कलक्टर भऽ कए एलाह तखन नीलक खेतीके विशेष प्रोत्साहन भेटल। गैण्ड एकरा एकटा उद्योगक हिसाबे विकसित केलन्हि। १७८८क ४फरवरीक एकटा रिपोर्टमे कहल गेल अछि जे कालिहूत कलक्टरीमे जे बाहर गोटए युरोपियन रहैत छथि ताहिमे

१०गोटए नीलक खेती करैत छल। इ बाहिरो गोटए कम्पनीक नौकरी नहि छलाह। एहिमे सँ ६ गोटएक नाम छल पीटर डी रिजेवियो, जेम्स जेक्सन, जी. डब्लु. एस. शुमान, जेम्स गेलन, जान बार्लो आ फ्रान्सस ग्रिज। जेम्स गेलन रिजेवियोक मनेजर छलाह। फ्रांसीस ग्रिज जबरदस्ती कोनो ग्रामीण तिरहुतमे रजिल्लाभक जागीरमे अपन नीलक खेती शुरु कऽ देने छलाह। १७९३मे नील फैक्टरीक संख्या ९ भऽ गेल छल। नील फैक्टरीक स्थापनासँ कानूनी व्यवस्था जटिल भऽ गेल छल आ ओहिपर सरकारके ध्यान देमए पडइत छलैक। एकर कारण इ छल जे इ लोकनि तहिक अन्याय आ जोर जबरदस्ती करैत जाइत छलाह। १७९३मे तिरहुतक जज नीलके बाध्य भऽ कए डोनबल नामक एक फ्रेंच नागरिक तथा टोमस पाकर्के तिरहुत छोडबाक आदेश देमए पडल छलन्हि। टोमस पाकर साँठिया आ कांक्रयामे बिना कोनो लाइसेंसके बस गेल छलाह। बिना लाइसेंसके कतहु बसब ताहि दिनमे गैरकानूनी छल। ढोलीक जेम्स आनण्डके सेहो जज महोदय ताकिद कऽ देने छलाह जो स्थानीय लोकनिक कुलाचारपर ध्यान राखैथि आ ओकर विरुद्ध कोनो काज नहि करथि। एहेन आदेश देबाक कारण इ छल जे जेम्स आनण्ड एकटा ब्राह्मणके मारि बैसल छलाह। एहि प्रकारे ग्रिज कोनो ने कोनो समस्या उठबैत छल आ एकर विस्तृत इतिहास हमरा लोकनिके ब्राह्डन विलसनक "हिस्टरी आफ बिहार इंडिगो फैक्टरीज"मे भेटइत अछि। ९टा प्रारम्भिक नीलक कोठी जे फुजल छल तकर विवरण एहि प्रकारे अछि:-

(i) दाउदपुर -

(ii) सरिय - विलियम औखी हण्टर

(iii) ढोली -

(iv) अि -   जेम्स जेक्टल

(v) शाहपुि -   विचाडष्मन पर्विसि

(vi) काटी -   अकेजेण्डि नामेल

(vii) मोतीपुि -   ‘’

(viii) दयोविया -   फ्कंच

(ix) बनाि -   ल्युक्स कक ति शुमान

१७९४मे मात ७६७ बीघा १४ कटा जमीनपि नीलक खेती होइत िल मुदा िडि क्दनमे ओकि एतेक विकास भेलैक जे समस्त उतिक्भाहाकि कोन-कोनमे नीलहा साहेब सब पसवि गेल आ बक्छयासँ बक्छया जमीनपि अपन अक्धकाि कऽ लेलक। १८०३मे २५टा नील कोठी िल जाक्हमे पमुखक नाम अवि भििहा (भौि), मुहम्मदपुि, बेलसि, क्मपिघाट, दलक्संहसिाय, क्जतिपुिि, क्ताि, कमतौल, क्यतिि, पुपिी, शाहपुर ण्डी इत्याक्द। १८१०मे कलतटि अक्हबातक अनुशंसा केलक्न्ह जे २५टा नील फैतटीके खजानासँ कजष देल जाइक काणि इ लोकक्न अपना क्षेत्त बेकाि सबके काज दैत िवि आ एिि पकाि बेकािीक समस्याके दूि कित िवि। १८१०मे लगभग १०,०००मन नील क्तिहूतसँ कलकता पठाओल जाइत िल। चम्पाणिमे नेपाल युद्द समाप्त भेलाक बाद कनष्ल हीकी नामक एक व्यक्तत १८१३इ. मे नीलक खेती शुर केलक्न्ह। हीकी बाििमे अपन फैतटी खोललक्न्ह। ओकि ठीक बाद िजपुि आ तुिकौक्लयामे मोिनि आ नहल अपन अपन नीलक काििखाना खोललक्न्ह। १८४५मे क्सिहामे कैप्टेन टाइलि अपन काििखाना खोललक्न्ह।

१८१६मे चम्पाणिमे नीलक खेतीक उल्लेख नक्ह भेटइयै मुदा १८३०क विपोटषे एकि णिषा अवि। चीनीक सिानपि लोग नील उपजाएब शुर केलक्हि। नीलक खेती अक्ह क्हसाबसँ बढए लागल क्क क्ताहूतक कलतटि घबिा गेला। १८२८मे क्लखलक्हि जे आब अक्हपि िकि लगाना चाही। १८५०मे क्ताहूतमे (दभिंगा मुजफ्फिपुिमे) ८६टा नीलक काखिाना भऽ गेल िल। सब गोटए चीनीक काबािि िक्ड नीलपि उतवि गेल िलाह। नील उदोगपि युिापयन लोकक्तक एकाक्धपत्य िलक्हि। क्तसपाही विदोहक समयमे जे क्ताहूतमे बेसी विस्फोट नक्ह भेल तकि कािण इएह िल जे अक्ह क्षेत्रमे नीलहा साहेबक बोलबाला आ दबदबा िल आ मजूि सब क्हनका सबसँ िजी िटी पबैत िल आ तै दबाबमे िहैत िल। क्तसपाही विदोहक समयमे अक्ह क्षेत्रमे शाक्त सिापनाक भाि सकिाि क्हनके लोकक्तपि िक्ड देने िलक्हि आ इ लोकक्त ओकि नीक जका क्ताहि केलक्हि। दलक्तसंहसिाय, क्तािि आ क्वजतािपुिकि काखिाना पुिान िल आ ओक्ह सबहक बडड धाक िलैक। १८७४मे क्ताहूतक सबसँ पैघ नीलक कािािि पण्डौलमे िलैक जकि क्षेत्रफल ३०० िगषील िलैक।

१८६७-६८मे नीलक खेतीक विािधमे एकटा जबदक्षस्त पदशषा चम्पाणिमे भेलैक। ियतक शोरण चिमोत्किरषि िलैक आ ओकि कोनो क्तदान सेहो नक्ह बहािइत िलैक। मजदूिके पूिा पाविशक्तक नक्ह देल जाइत िलैक। मजदूि लोकक्त नीलक खेती कबिासँ इंकाि कएि लागल आ क्वजउकक्ताया नामक गाममे अक्ह विािधक पक्हल उदाहिण भेटइत अवि। आनगामक लोग सब सेहो एकि देखा देखी शुर केलक। अक्ह िस्तुके जल्दी सोििािक हेतु

मोक्ताहारीमे तत्काल कचहरीक स्थापना भेल। रैयितक पक्ष रिडेक सुविधा सेहो देखाओल गेल। अंग्रेजके शक भेलैक जे अक्ष आन्दोलनके केओ उसका रहल अछि। आ हुनका लोकक्स दबा बेक्तया रिजपि गेल। १८७६मे बेक्तया रिजमे अंग्रेज मनेजर बहाल भेल आ तकरि बाद फेरि अंग्रेज लोकक्स नीलक खेती क्दस ध्यान देलक्हि। १९म शताब्दीक अन्त धरि चम्पारणिमे कुल २१ फैक्टी आ ४८टा ओकरि शाखा रहि। चम्पारणि, मुजफ्फरपुरि, दरभंगाक नीलहा साहेब क्मल कए १८०१मे अपना सबक्हक हेतु एकटा क्ायम बनौलक्हि आ १८७७ ओ लोकक्स क्बहारि इक्गडगो प्लाटसषएशोक्सयेशन नामक संस्था सेहो स्थापित केलक्हि। एकरि मुख्यालय मुजफ्फरपुरिमे रहि आ एकरि सरकारिसँ मान्यता रहैक।

मूंगेरि, भागलपुरि, पूर्णियाक क्वमन भागमे नीलक खेती पसरि गेल आ बेगूसरािय, सहरसा, पूर्णिया आ कटहारि क्जलाक क्वमन नीलहा कोठीक ताता लागा गेल रहि। १८९६मे मंझौल, बेगूसरािय, भगवानपूरि, बेगमसरािय, दौलतपुरि आक्द स्थानमे नीलक कारखाना खुजल रहि। ओनातँ १८७७सँ अक्ष क्जलामे नीलक पसारि भS चुकल रहि। बेगूसराियक कोठी १८६३मे बनल रहि। सहरसामे चपरामि, क्संहेशरि, परिघिट, रिघोपुरि आक्द केत्तमे पमुख नीलक कोठी सब रहि आ तक्हना पुर्णिया आ कटहारमे सेहो। एके नीलहा साहेबक कैकटा कोठी होइत रहि। पतापगंज क्दक्स सेहो एकटा पक्सद कोठी रहि।

क्तारहूत प्लाटसष लोकक्स एकटा सैक्यक टुकडी सेहो बनौने रिलाह जकरि नाम रहि 'दS क्बहारि लाइट हासष। १८५७ ५८क क्सपाही विदोहक समयमे जखन क्हनका लोकक्सके क्तारहूतमे शाक्त

सुकिर खिबाक भार देल गेल छलन्हि तखन इ लोकनि सकारकि समक अन्ह आशयक एकटा आदिन देने छलाह जे हुनका लोकनिके अपना हेतु एक पकार सैनिक संगठन कबिाक अधिकार भेटैन्हि। १८६१ ६२ ई. इ अधिकार हुनका लोकनिके भेटलन्हि आ इ लोकनि 'सूबा बहार माउंटेड राइफल्स' नामक एकटा संस्थ बनौलन्हि। १८८६मे ओकर नाम बदलिके 'बहार लाइट हासफोड़ देल गेल। १९१४ १८क पथम विश्वयुद्धमे एहिसँ सकारकिे बहुत सहायता भेटल छलैक। १९२०मे एक कानून दार एकर 'आवजलियरी फोसमे परिवर्तित कऽ देल गेलैक।

१९म शताब्दीक अन्तम चरणिमे नीलक खेतीके बड़का धका लगलैक। १८९६मे जमनीमे एकटा कर्त्रिम सस्त नीलक आविष्कार भेलैक आ संसार भरिमे पसद भऽ गेलैक आ एकर पर्वणिाम इ भेलैक जे अन्हठामक नीलक खेती समाप्त होमए लगलैक। नीलक दाम २५०सँ घटिके १५०/- मन भगेलैक। जाहिमे नील उपजैत छलैक ताहिमे लोग तम्बाकु आ कुसियारकि खेती शुर केलक। प्लाटसषएशोसियेसन सेहो अन्ह पकारकि कारणेँ लेलक। १९१४मे विश्वयुद्धक कारणि जब जमनीसँ नील एनाए बन्द भऽ गेलैक तखन फेर साहेब लोकनिक ध्यान अन्ह दिस गेलन्हि आ पुनः नीलक खेत शुर भेल मुदा से बहुत दिन धरि चलल नन्ह। नीलक खेती समाप्त भेल।

III

सतिंत्य संगाम आ बर्वला:- पाचीन बर्वलाक सीमा अंगेज अमलमे आबिके नन्ह रहि गेल। अंगेजक आगमन कालहिसँ पत्यक एवँ अपत्यक रपे ओकर विरोध सबठा शुर भऽ गेल छल कारणि हुनका

लोकक्नक सीिष अपन सामाज्य विस्तािमे िलक्ह, जनताक कल्याणमे नक्ह। तािक्म शक्ततशाली होएबाक काणिे आ अक्हठाम आंतविक फूट हिबाक काणिे हुनका लोकक्न जे सफलता भेटलक्ह तकिा पविणाम सरिप ओ लोकक्न २००रिषधवि अक्हठाम शासन केलक्ह आ १९४७मे अक्ह देशक वाण्ड िविडके ओ लोकक्न गेला।

क्नविलामे क्सपाही विदोहक बाद जे विीिधक पक्हल आिज उठल िल से उएह जे चम्पाािणमे क्कसान लोकक्न नीलहा कोठीक साहबक विरिद उठौने िलाह आ क्ताहूतक क्हसाबे ओ एकटा महतपूणषघटना भेल। ओक्ह विदोहक सूतके महात्मा गाधी १९१७मे चम्पाािणमे पकडलक्ह आ सत्यक संग अपन पयोग शुर केलक्ह। अक्ह दक्ष कोणसँ इ क्नविषीद रपे कहल जा सकइयै जे िस्तविक अिषे सीधीनता संगामक शीगणेश गाधीक युगमे क्नविलक्हक आँगनसँ भेल। जँ कक्हयो महािज लक्ष्मीशिा क्संह लाउिि कासल कीक्नके कागेसक सेसनक हेतु देने िलाह तँ कागेस ओकि पक्तदान चम्पाािणमे गाधीजीके क्नयुतत कऽ देलक आ चम्पाािणमे सीतंत्य संगामक जे आवा पजिलसँ तातक जडैत िहल जातक क्क भाित सितंत नक्ह भेल। िशाली विदेहक गणाज्यि पिम्पाािक अनुरप अशोक दाि क्वक्हत एिं शेशिाहक सुशासनसँ पदाक्कत चम्पाािणक पवित केत्र गाधीजीक कमषभूक्म बक्न महाििकि अक्हंसाके साकािरप पदान केलक। १९१७-१९४७धवि गण्डकसँ कोशी आ क्हमालयसँ गंगाधविकि केत्रमे एकसँ एक सपूत जन्म लेलक्ह जे सितंतताक हेतु अपन पाणक आहूक्त देने िलाह। कलकतासँ आक्ब पफुल्ल चाकी आ खुदीिम बोस सेहो अपनाके अक्ह भूक्ममे अमि केलक्ह। िष्टीय संगामक इक्तहास क्लखब हमि अभीष एतए नक्ह

अवि मात एतबे कहबाक अवि जे सीतंत्य संगाममे क्मविला कोनो पातसँ ककासिँ पाि नक्ह ि ल। १९१७मे जँ गाधीजी बाट देखौलक्ह तँ १९४२मे क्मविला सेहो अपन सषि ि क्ािि कऽ देलक हुनके आहानपि आ उति क्बाहाि १९४२मे सब तहिे कार्तकाि लोकक्क गढ बनल ि ल। सब क्बचाकि ि जिनेता क्मविलाक केत्त अपन विचाकि भूक्मकाक क्ाहि केलक्ह आ हुनके लोकक्क सत्प्रयासे १९४७मे भातिक सतितंतता पाप्त भेल ओक्हमे क्मविलाक योगदान ओतिि ि ल जति आन कोनो पातक। कार्तकाि दलक इक्तहासमे सेहो क्मविलाक नाम पख्यात ि क।

अध्याय १४

कार्विलाक अह्याह्य ाजिशिक वर्ििण

(i.) गंधर्विया ाजिशिक इक्तहास:- संगीय पुलक्कत लाल दास 'मधुि' अिक पर्विशम कए गह्धर्वियाक इक्तहास क्लक्ख संिामधह्य शी भोला लाल दासक ओतए पकाशनाषि पठौने िलाह। कोनो कािणिश इ पाण्डुक्लक्प (जे कक आब जीणािसिमे अर्वि) पकाक्शत नक्ह भऽ सकल आ गह्धर्वियाक इक्तहासक पसंग एककदन जखन हमिा भोला बाबूसँ गप्प भेल तखन ओ एक्ह पाण्डुक्लक्पक चचष केलक्न्ह आ हमिा आगहपि ओ पाण्डुक्लक्प हमिा पठा देलक्न्ह। पाण्डुक्लक्प देखलापि इ बुिझामे आएल जे मधुजी गह्धर्वियाक इक्तहास कक्ंिदंतीक आधािपि क्लखने िवि मुदा ताहु हेतु हुनक पर्विशम स्तुत्य एंि सािहनीय अर्वि। जखन गह्धर्विया कतहु कक्िु पामाक्णक इक्तहासक सामगी नक्ह एकक्त्रत भऽ सकल अर्वि तात्ह दशा कोणे मधुजीक इ सत्पयास सर्वषिा पशंसनीय अर्वि। सोनबसिा ाजि केसमे गह्धर्वियाक इक्तहास देल गेल अर्वि मुदा ओहुमे जे गह्धर्विया लोकक्न सोनबसिाक र्विाधिमे गािही देलक्न्ह ताक्ह मँहक एकटा पमुख व्यक्क्त संगीय शी चंचल पसाद क्संह मुइलासँ पूर्वष

हमरा व्यक्तिगत रूपे इ कहने गेला जे हुनक अपन जे ध्यान ओहि केसमे भेल छन्हि से एकदम उल्टा छन्हि तैं गन्धर्वरियाक इतिहासक हेतु ओकर उपयोग करबामे ओकरा ‘विश्लेषण कऽ कए पढब उचित। ओहु केसमे जे इतिहास बनाओल गेल अछि से बहुत किछु परंपरापर आधारित अछि मुदा ओहिमे एक बहुत महत्त्वपूर्ण बात इ भेटल जे गन्धर्वरियाक द्वारा देल दानपत्र सब बहुत किछु उपस्थित कैल गेल छल जाहिमे किछु चुनल दानपत्रक अंग्रेजी अनुवादक अंश हम अपन ‘हिस्ट्री आफ मुस्लिम रूल इन तिरहुत’मे प्रकाशित कैल अछि। सहरसा जिलामे गन्धर्वरियाक एतेक प्रभुत्व छल तइयो ओकर कोनो उल्लेख पुरनका ‘भागलपुर गजेटियर’मे नहि छल आ जखन सहरसा जिला बनल आ ओकर नव गजेटियर बनल तखन ओहिमे इतिहास लिखबाक भार हमरा भेटल आ ओहिक्रममे हम एक पाराग्राफमे गन्धर्वरियाक चर्चा कैल। एकर अतिरिक्त आ कोनो प्रामाणिक इतिहास गन्धर्वरियाक नहि बनल अछि आ ने अद्यावधि एहि दिशामे कोनो प्रयासे भऽ रहल अछि। एहना स्थितिमे मधुजीक लिखल गन्धर्वरियाक इतिहासक मूलके हम अहिठाम प्रस्तुत कऽ रहल छी जाहिसँ ओहि मतान्तरके अपन कथाक स्वीकृति देखि आनन्द होइछ। अनापेक्षित बातके हटा देल गेल अछि। गन्धर्वरिया लोकनिक गन्धर्वडिही एखनो शकरी आ दरभंगा टीसनक बीचमे अछि आ हुनका लोकनिक ओतए जीवित पूजा होइत छन्हि। गन्धर्वरिया लोकनि पँचमहलामे पसरल छथि—बरैरा आरि, सुखपुर, परशरमा, बरैल आ यदुरया मानगंजके मिलाके पँचमहला कहल जाइत छल। जाहिठाम मधुजीक अंश समाप्त होएत ओतए हम संकेत दऽ देब।

दभिंगा ओ वशेरतः उतत भागलपुि (सम्पकत सहिसा वजला)मे गह्धविया शिज िजपूतक संख्या अत्यवधक अवि। दभिंगा वजलातगषत भीठ भगािनपुकि िजा साहेब ति सहिसा वजलातगषत दुगापुि भदीक िजा साहेब एिँ िरिआिी, पिगविया, सुखपुि, बौिल, पिसिमा, िजनी, मोहनपुि, सोहा साहपुि, देहद, नोनैती, सहसौल, मंगुआ, धििली, पामा, पस्तपाि, कपवसया, विष्णुपुि एिँ िािि इत्यावद गाम वस्त बहुसंख्यक िट पैघ जमीन्दाि लोकवन एवह शिक विकाह आ सोनबसािक सिगीय महािज हविल्लभ नाियिण वसंह सेहो एवह शिक िलाह। इ िजिश बहुत पाचीन वि ओ एवह िजिशक सम्बद्ध मालिक सुपवसद धािनर्गिक पिमािशीय िजा भोज देिक िशसँ अवि। एवहिशक नाम "गह्धविया" एतै आवबके पडल। िजा भोज देिक ३५म पीढीक पशात् ३६म पीढीक िजा पवािज साह अपन धमषती ति दूइ पुतक संग बह पुत सन्तानक कामनत आसाम गेल िलाह। एवह याता जखन ओ लोकवन वफिलाह तँ पुिणषा वजलातगषत सुपवसद सौविया डयोढीक समीप मागषे कतहु कोनो संकामक िगसँ िजा िनीक देहात भऽ गेलवन्ह।

सौविया िजक पवतकवध एखनो दुगागंजमे विि। माता वपताक देहात भेलापि दुनू अनाि बालक भूलल भटकल सौविया िजाक ओतए उपवस्त भेलाह आ अपन पूणष पविचय देलवन्ह। सौविया िज ताविह समयमे बडड पैघ आ पवतावत ति। ओ दुनू भाइके यिोवचत आदि पुिस्कािे अपना ओतए आशय पदान केलवन्ह ति कालाति उपनयन संस्कािि कि देलवन्ह। उपनयनक समय उतत दुनू भाइक गोत अिगत नवह िहबाक कािणे हुनका लोकवनके

पसिि गोत देल गेल जबकक पमिाकि गोत कौवण्डह्य िल। दुनू िजकुमाकि नाम लखेशाियि आ पिर्शिाियि िलक्हि। ओ लोकक्न ीि आ योदा िलाह। सौवियिा िजिक जमीह्दाि दिभंगा िज्यमे सेहो पबै िलक्हि। कोनो कािणे ओक्हठाम युद उपक्सि त भेलक्हि। िजा साहेब अक्ह दुनू भाइके सेनानायक बनाए अपन सेना पठौलक्हि। कहल जाइि जे दुनू भाइ एक िक्त कतहु क्ािस कैलक्हि कक क्ाशीि िक्त भेलापि क्ाशविकि आगा कक्ि दूिपि एक िदा स्त्तीक कानि ओ दुनू गोटए सुनलक्हि। क्ाजासा केला संता ओ स्त्ती बाजक्ल "*जे हम अहा घिकि गोसाओन भगिती विकहुँ। हमिा अहा लोकक्न कतहु सिान क्ादअहं*"। एक्हपि ओ दुनू भाइ बजलाह जे हम सब तँ सियिं पिाक्शत ीि तै हमिा ििदान क्ादअह जे हमिा लोकक्न एक्ह युदमे विजय पाबी। ओ स्त्ती हुनका लोकक्नके एक बहुत उतम खडग पदान कैल जकिा दुनू पष भागपि बहुत सूक्म अक्िमे समस्त दुगा सप्तशती अंककत िल। इ खडग पिम दुगापुिा भदीमे िल पशात् महािज हविल्लिभ नाियिण क्सह ओकिा सोनबिसा आनलक्हि। ओक्हमे कक्हयो बीि नक्ह लागल िल। ओ खडग एक पनबटामे चौपेतल बह्द हैत िल आ िक्ड देला संता ओ खडगक आकािक भऽ जाइत िल। दुनू भाइ युदमे विजयी भेला। समस्त िणिक्ेत मुदासँ पाक्ट गेल आ दुगाक्ध दूि दूि धिव क्याप्त भऽ गेल। एक्हसँ सौवियाक िजा पसन भए एक्हि शिक नाम 'गह्धविया' िखलक्हि। इ युद दिभंगा क्ाजलातगात गंधिवि नामक गाममे भेल िल। गंधिवि आ अहयाह्य केतक क्ानका लोकक्नके उपहािा सिरिप भेटलक्हि। लखेशाियिक शाखामे दिभंगा क्ाजलातगात (सम्पक्त मधुबनी) भीठ भगिनिपुकि शीमान िजा क्ाभषा

नारायणजी भेल छथि आ परिशिष्ट शाखामे सहसाक गढ़धरैया जमीन्दार लोकनि छथि। सहसाक बेशीर भूभाग एहि शाखाक अधीन छल। दुगापुर भदौ एकर प्रधान केन्द्र छल।

परिशिष्टयिके चारि पुत्र भेलखिन्ह— लक्ष्मण सिंह, भरत सिंह, गणेश सिंह, शिवलाभ सिंह। गणेश सिंह आ शिवलाभ सिंह निःसंतान भेलाह। भरत सिंहक शाखामे धरौलीक जमीन्दार भेल छथि। लक्ष्मण सिंहके तीन पुत्र भेलखिन्ह— श्रीकृष्ण, निशंक आ माधव सिंह। एहिमे माधव सिंह मुसलमान भए गेलाह आ नौहटाक शासक भेलाह। 'निशंक'क नामपर निशंकपुर कुढा परगनाक नामकरण भेल। परगना एहि परगनाक नाम मात्र 'कुढा' छल बादमे ओहिमे निशंकपुर जोडल गेल। निशंकके चारि पुत्र भेलखिन्ह— दान शाह, दर्याव शाह, गोपाल शाह आ रूपनारायण शाह। दर्याव शाहक शाखामे रामपुर, सुखपुर, बरैल तथा परसिमाक गढ़धरैया लोकनि छथि।

लक्ष्मण सिंहक ज्येष्ठ पुत्र श्रीकृष्णके चारि पुत्र भेलखिन्ह— सिंत सिंह, सुमन सिंह, धमागत सिंह, विजित सिंह। सुमन सिंहक शाखामे परगनैयाक राजि भेल। धमागत सिंहक शाखामे जबद्दिया मानगंजक जमीन्दार लोकनि भेल छथि। विजित सिंहक शाखामे सोनबरसा राजि भेल। एहि शाखाक हरिवल्लभ नारायण सिंहके १९०८मे सोनबरसासँ १०-१२मील उत्तर काप नामक स्थानमे साढे नौ बजे रात्रिमे शौचक समय मारि देलकन्हि। हुनक एक कन्याक विवाह जयपुरक स्टेटक संबन्धीक संग भेल छलन्हि। आ हुनका एकोटा पुत्र नहि छलन्हि। ओहि कन्याक पुत्र रुद्रप्रताप सिंह सोनबरसाक राजा भेलाह। एहि शाखामे सोहा, साहपुर,

सहमौरि, देहद, हिट, रिटपुर, तरा मंगुआक गंधर्विया जमीन्दार भेल छथि। एकरमे साहपुरक राजदरबार सेहो प्रसद्ध छल हुनका दरबारमे क्वाहपुर मालकीक श्यामसुंदर कवि आ शाह आलमनगरक गोपीनाथ कवि उपस्थित छलाह। स्वर्गीय चंचल प्रसाद सिंह सेहो सोनबरसाक दमाद छलाह।

सित सिंहके जहागीरसँ राजाक उपाधि भेटल छलन्हि। राजा सिंत सिंह गंधर्वसँ अपन राजधानी हटाके सहरसा जलामे सिंतपुर नामक गाम बसौलन्हि आ ओतय अपन राजधानी बनौलन्हि। मधेपुरसँ १८ २०मील पूब इ गाम अछि। सित सिंहके चारि पुत छलन्हि रामशाह, वीरशाह, कल्याण शाह, गंगाराम शाह। प्रथम पुतक शाखा नहि चलल। वीरशाह राजा भेल। कल्याण शाहक शाखामे जिनीक जमीन्दार लोकन आ गंगारामक शाखामे रारिक जमीन्दार लोकन भेलाह। इ अपना नामपर गंगापुर तालुका बसौलन्हि। वीरशाहके दु रानी छलन्हि जाहिमे जेठरानीसँ राजा केसरी सिंह आ जोरावर सिंह भेलथि आ छोट रानीसँ पदसिंह। जोरावर सिंहक शाखामे मोहनपुर आ प्रस्तपारक जमीन्दार लोकन भेलाह। पदसिंहक शाखामे कोडलाहीक जमीन्दार लोकन भेल छथि। राजा केसरी सिंह प्रतिभाशाली व्यक्ति छलाह। हुनका औरंगजेबसँ राजाक उपाधि भेटल छलन्हि। केसरी सिंहक पुत धीर सिंह, धीर सिंहक कीर्तिष सिंह, कीर्तिष सिंहक राजा जगदत सिंह भेलाह जे बडड प्रतापी, दयालु आ दानी छलाह। गंगापुर, दुगापुर आ बेलारी तालुका हुनका अधिकारमे छलन्हि। इ जनश्रुति विशेर प्रख्यात अछि जे ताहि समयमे दरभंगा राजक कोनो महारानी कौशिकी स्नानक कारण आएल छलीह। सिंहेशरक समीप बेलारीमे

हुनक डेरा पडल। इ सुनलाके जे इ दोसर गोटाक हाथक बनल छन्हि ओ बजलीह जे हम आन हाथमे अन जल गहण नहि कऽ सकैत छी। जगदत्त सिंह तत्काल बेलाउर तालुकाक दानपत लिखवाकै महारानीसँ स्नान भोजनक आगह केलन्हि। उतत बेलाउर तालुका हेमिन धर्व बडहगोवर्यिाक खडौडय बबुआन लोकनिक अधीन छलि आ तत्पश्चात् राजि दभिंगाक भेल। जगदत्त सिंहके चारि पुत भेलैन्हि—हरिहर सिंह, नल सिंह, कुमुनि सिंह, ति सिंह। कुमुनि सिंह 'पामा'मे अपन डयौढी बनौलन्हि। मधुराजीक वर्णिणि संक्षेपमे एतबे अछि।

मधुराजीक वर्णिणिसँ आ आन वर्णिणिसँ किछु तफात देखबामे अबिइयै। पंचगर्वियाक राजिशि अपनाके नाहयदेकि शिज हरिसिंह देकि पुत पक्ताजि सिंहसँ उत्पन्न मनैत छथि। पक्ताजि सिंह 'गह्याराजपुर'मे अपन राजि स्थापित केलन्हि आ तै गह्यवर्यिा कहौलथि। पश्चिम इहो लोकनि अपनाके पक्ताजि सिंहक पुत पर्शिराि यिक शिज कहैत छथि। राजिकषण सिंहक शिज भेला पगिर्वयिा स्टेट। हुनका लोकनिक शिरवृक्ष अनुसार—

लक्ष्मण सिंहसँ राजिक बटबारा एहि पकार भेल—

माधर सिंह	राजिकषण	काशंकसिंह

(मुहम्मद खान)	(दुगापुर, सोनबरसा

(पंचमहला)

(नरहिटा)	पगिर्वयिा इत्यादि)

सोनबरसा, पगिर्वयिा तथा बर आरि पक्सद स्टेट मानल जाइत छलि। पंचमहलामे बर आरि मुख्य स्टेट छलि। काशंक सिंहक पुत दर्वयिा सिंहक शिज भेला बर आरि स्टेट। अकहिशिमे राजा

कोकिल सिंह पख्यात भेल छथि जनिका समाट शाह आलमसँ १९७५ ईस्वीमे शाही फरमान भेटल छलन्हि। हिनका उपाध्यि हिनका समाटसँ भेटल छलन्हि। बरआरि जाहिमूत सरकारकि अधीन छल आ कोकिल सिंहके अधिकेतक ननकारि हैसियत भेटल छलन्हि। गन्धविरिया लोकनिक कुलदेवी "जीवि"क पतिमा हरि आरि हिजदबारिमे छल आ ओकर पूजा नियमित रूपे होइत छल। 'जीवि'क पतिमाके नोहटासँ अधिठाम आनल गेल छल।

नशंक सिंह

दानी सिंह दरिया सिंह रतपति सिंह गोपाल सिंह

(परसिमा) (हरि आरि) (गोबरगढ़ा)

(कुमरखिन)

सुहृदि सिंह कृष्ण नारायण सिंह

(सुखपुर) (बरौलि)

एतिक सब कहि होइतहुँ गन्धविरियाक कोनो पामाणिक इतिहास नहि बनि पाओल अछि। जे किछु दानपतक अंगेजी अनुवादमे केसमे भेटल अछि से बेसी भीठ भगवानपुर हिजा सबहक। भीठ भगवानपुर गन्धविरियाक पैघ रियासतिक हिजधानी छल आ हुनका लोकनिक स्थिति निश्चित रूपे दृढ़ छलन्हि आ ओ दानपत दैत छलाह जकर पमाण अछि। दरिभंगाक गन्धविरिया लोकनि सेहो अपन इतिहासक रूपरेखा नहि पकाशित केने छथि तैं ओहि सम्बन्धमे किछु कहब असंभव। हमर बुझने ओइनवार शिक पतनक बाद 'भौर' क्षेत्रमे हिजपूत लोकनि अपन पभुत्व जमा लेने छलाह आ स्वतंत्र हिज्य स्थापित केने छलाह। खण्डवलासँ हुनका

संघरो भेल िलक्ह आ ओक्ह संघरषक कममे ओ लोकक्न भीठ भगािनपुि होइत सहिसा पुवाषाक सीमा धवि पसवि गेला। ‘‘गह्ध’’ आ ‘‘भि’’ (िजपूत)क शब्दक क्मलनसँ गह्धािवि बनल (‘गह्धभि’) आ ओक्ह गािके ओ लोकक्न अपन िजधानी बनौलक्ह। कालातिमे भीठ भगािनपुि क्हनका लोकक्न पधान केह्द बनल। इक्तहासक पिपिािक पालन किैत इहो लोकक्न अपन सम्बह्ध पाचीन पिमाि िशक संग जोडलक्ह आ ‘नीलदेि’ नामक एक व्यक्ततक अनुसंधान केलक्ह। ओक्हमे सँ केओ अपनाके वििकमाक्दत्यक िशज कहलैक्ह आ केओ नाह्यदेिक। भीठ भगािनपुिक िशि ताक्लका तँ हमिा लग नक्ह अवि मुदा सहिसाक गंधिविया लोकक्नक िशि ताक्लका देखलासँ इ स्पष होइि जे पिमाि भोज आ नाह्यदेिसँ अपनाके जोडक्नहाि गह्धविविया लोकक्न लखेश आ पििशिक अपन पूिषि मनैत िवि। पूिषिक क्हसाबे सब सोत एकमत अवि। पिपिामे इहो सुक्नित्त अवि जे नीलदेि गंधािविमे आक्बके बसल िलाह आ ‘जीिि’ नदीके अपन कुलदेिता बनौने िलाह। कहल जाइत अवि जे नीलदेि िाजा गंधके मािविके अपन िाज्य बनौलक्ह। सहिसा क्जलामे भगितीक आशीर सिि प िजि भेटबाक जे गप्प अवि ताहुमे कैक पकािक किि आ क्कंिदंती भेटइयै। मात एक बातपि सब सोत एकमत अवि जे क्हनका लोकक्नके उपनयनक अिसिपि अपन गोत याद नक्ह िहला संता ‘पिािसि गोत’ देल गेलक्ह। जा धवि कोनो आन ििजाक्नक साधन उपलब्ध नक्ह होइि ताधवि गह्धविवियाक इक्तहास अक्हना क्कंिदंती आ पिम्पािपि आधािवत िहित।

ii. बनैली िाजक इक्तहास:- पाचीनताक दक्ष कोणसँ बनैलीक इक्तहास सेहो अपन महति िखैत अवि। १४म शताब्दीमे

गदाधि ि नामक एक विदान दभिंगा वजलाक िगनी नािदा नामक गाममे िहैत िलाह। कहल जाइत अवि जे वहनक विदतासँ पभावित भए वायासुदीन तुगलक वहनका काफी सम्पवत दानमे देने िलविह्ह। हुनकासँ नवमि पीढीमे भेला देिनंदन ि ि जवनका पिमानंद ि ि आ मावनक ि ि नामक दूटा पुत िलविह्ह। पिमानंद ि ि संस्कृत, फािसी आ अिबीक पवसद विदान िलाह। वशकाकि सेहो हुनका बडड शौख िलवह्ह। बाघ मािबामे तँ ि ि सहजवह वनपुणते पापत केने िलाह। अपन पूिविसँ वहनका पयापत धन सम्पवत भेटले िलवह्ह आ इ अपन केतक पूणषमावलक िलाह। केतक पशासवनक काज लऽ कए वहनका बिािबि अजीमाबाद जाए पडइत िलवह्ह आ तै वहनक वनपुणताके देवख अठािहम् शताबदीमे वहनका फकािबाद पिगिनाक चौधिी बना देल गेलवह्ह। वदनानुवदन वहनक ख्यावत बढैत गेलवह्ह पिन्च इ अपन काज सम्पादन किबामे असािधान होइत गेलाह। फलसिि प इ अजीमाबादक कोपभाजन बनला आ दििंगासँ भािा कमला नदी बाटे फिकिया वदवस पसिान केलवह्ह। अजीमाबादक सििकािसँ डिि बनले िहैह्ह तै फिकियाके ििवड ओ धमिपुि वदवस बढला आ पुवणषाक केतमे अमौि वदवस चल गेलाह। तावह वदनमे निािब आ अंगेजमे खटपट चवल िहिल िल। एम्हिि वहनका लाल वसंह चौधिी आ दुलािि वसंह चौधिी दूटा पुत उतपन भेलवह्ह। हुनक भाए मावणक चौधिीक देहात भऽ गेलवह्ह। मावणक चौधिीक एक पुत िलविह्ह हििलाल चौधिी। ओवह समयमे अमौिमे भैिि मवललक नामक एकटा सम्पन कायसि सेहो िहैत िलाह जे बडड जनवपय, वनपुण आ उतसाही लोक िलाह आ वजनकि पवतषा ओवह केतमे अपूिषिल। ओ पूवणषा आ वदनाजपुि केतक कानूनगोय

िलाह। इएह अपना ओकहठाम पमिानन्द चौधर्ीके हिबाक पशय देलक्हि। कक्रकायष कए अपन पालन पोरण कबिाक हेतु पती जमीन सेहो ओ पमिानंद चौधर्ीके देलक्हि।

तकि बादक्हसँ पमिानंद चौधर्ीक भाग्य पलटल। पहसािक पक्सद िजा इह्न्दनाियिण िय एक क्दन अपन पालकीपि बैसल कतहु जाइत िलाह क्क बाटक्हमे पमिानन्द चौधर्ी एकटा हिु मािि मावकि हुनका समक उपक्स ित केलक्हि। िजा पसन भए हुनका अपना ओतए तहसीलदाि मनेजिमि बहाल कऽ लेलवि हि। पमिानन्द शक्ततशाली लोक भऽ गेलाह आ ओक्ह क्तेमे हुनक पभाि बढए लागल। एक क्दन पुव्राषाक निब क्शकाकि हेतु एम्हि एला मुदा हुनका एकोटा क्शकाि नक्ह भेटलक्हि तखन पमिानंद चौधर्ी हुनका देक्खतक्ह देक्खतक्ह एकटा बाघ मावकि देलवि हि। निब पक्सन भए हुनका “हजािि”क उपाक्ध देलवि हि आ ि आब हजािि चौधर्ीक नामे पक्सद भऽ गेलाह। क्हनक पुत दुलाि क्संह कक्र आ क्यापाकि माध्यमसँ अपन आवक्षक क्स क्तके सुदढ केलक्हि। घी, इलायची, आ लकडीक क्यापाि ओ नेपालसँ शुर केलक्हि आ निबसँ क्मलके ओक्ह सब क्स्तुके कलकता धवि पठबे लगलाह। फेि हािीक क्यापाि शुर केलक्हि जाक्हमे बडड लाभ भेलक्हि। अक्ह क्तेमे धनीमानी क्यक्ततमे हुनक वानती होमए लागल। भैिि मक्ललकक धन क्बलक्ह गेल आ ओ शोकाकुल भए मवि गेल। हुनका सिनपि दुलाि क्संह कानुनगोय क्युतत भेला। एम्हि ताधवि पमिानंद चौधर्ी असजा आ मोिि तटक तीिि पिगनाक अक्धकािि सेहो भऽ चुकल िलाह। ओम्हि ताधवि िजा इह्न्दनाियिण क्संहक महाल कुिसाकाटाक बह्न्दोबस्त दमामी बह्न्दोबस्तक समय इ लऽ लेने

िलाह। िजा इन्द्रनाियण हुनक एक्ह विशासघाती कायर्सँ असंतुष भऽ गेल िलवि्ह्ह। हजािी चौधिीक पिीक भेलापि हुनका लोकक्नमे आपसी मनमुटाि शुर भेल। दुलाि क्संह हििीलालके अमौिक इलाका दऽ कए अपन घििलु कलहके शात केलक्ह्ह। हिीलालक उतिाविधकाििी अयोग्य बहिीला। दुलािक्संह बनैलीमे अपन क्ताििस सििन बनौलक्ह्ह। ओतक्हसँ क्हनक पभािमे वि्द्द शुर भेल। दुलािि क्संहक दू पुत िलवि्ह्ह सििनह्द आ िदानह्द सििनह्द क्नसंतान मवि गेलाह। िदानंदक कायर्कलापसँ िशक कीिर्त बढल। दुलािि क्संहके दोसिि विििहसँ कतेको संतान भेलैह्ह जािक्हमे पख्यात भेलाह रदानंद क्संह जे अपन पुत शीनंदनक नामपि शीनगि िजक सििपना केलक्ह्ह। कानूनगोय िहलाक कािणे सिकािक ओतए दुलािि क्संहक िशि पभाि िल आ अपन पभािक्हसँ ओ निहिटा, धपहि, गोगिी आक्द केत धवि अपन अधिकािक विस्ताि केलक्ह्ह। ओम्हि पुवर्गाषा आ मालदह धवि अपन जमीह्दािी बढौलक्ह्ह। नेपाल युदमे सेहो इ कम्पनी सिकािके सहायता देने िलाह। नेपाल विजयक पशात् क्हनका कम्पनी सिकािसँ िाजाबहादुिक उपािधि भेटलक्ह्ह। नेपाल आ अंगेजक बीच सीमा िनणर्यक समयमे कम्पनी सिकािि तीिि पििगनाक समीप क्हनका सातकोस भूिम बह्दोबस्तमे दऽ देलकक्ह्ह।

दुलाि क्संहक बाद हुनक पुत िदानंद क्संह िाजा भेला आ हुनको कम्पनीसँ िाजाक उपािधि भेटल िलक्ह्ह। हुनका समयमे िाज दू भागमे बट गेल। िदानंद अपन पैतृक बनैलीमे िहलाह आ रदानह्द सौिी नदी टिप कए शीनगिमे बसलाह। िदानह्द खिगपुि महाल कीनकके अपना िाजमे िमलौलक्ह्ह आ अपन िाजक पूणर्

विस्तािर केलकिन्ह। हिनके बनैली ाजिक संसिापक कहल जा सकइयै। हिनक विाहि अववािलामे महेश ठाकुिक ाशजमे भेल लिकिन्ह। इ विदिा पेमी सेहो लिाह आ कतुि पोविओ लिखने लिाह। हिनक बाद लीलानंद सिंह ाजिा भेलाह। हिनका तीनटा पती लिविकिन्ह—पिमि पतीसँ पदानंद सिंह आ तेसि पतीसँ कुमाि कलानन्द आ कत्यानंद सिंह भेलविकिन्ह। लीलानंद सिंह अपना समयक अववािलाक एक पमुख व्यकित लिाह। हिनक पिाके भेलापि ाजिा पदानंद सिंह ाजिा भेलाह आ हिनका अंगेजी ाजिसँ सकिाकि उपाधि सेहो भेटल लिकिन्ह। हिनकिह समयमे ाजिमे बटबािकि मामला शुि भेल जाहिमे हिनका ७आना आ कुमाि कलानंद आ कत्यानंदके ९आना हिस्सा भेटलकिन्ह। पदानंद सिंह अपना बापे जका दानी लिाह। ादिनािर मंदिकि फाटक बनेबामे हिनक पूणष योगदान लिकिन्ह। महादेकि पिि हिनक ािमलिखित कविता पसिद अवि—

”जो अलका पिि की सुख सम्पति देइ मेिी पभु भौन भिािगे।
अङ्गलये वािवि ाजि सुता, कि पंकज तेिसि आइ धिािगे॥
चन्द्र विभूरण भाल धिि, दुख जाल कािल हमाि हिािगे।
पदानंद सदा शािके, हिखिाहमखाह ािहि कििगे॥

किि पविति जाको दशिान्तिय देिनि को,
सेितिे होत जाके सहजिह सनाि है।
गाये यश जाको, पािि मंगल मनोिाि को,
ािइ विकि कीििि कपाल गुणगाि है॥
नािनिके नािको अनािनिके नािि पभु,

देनिके नाि मेिं बाबा िदिनाि है।।

बनािसमे श्यामा मंिदि आ तािि मंिदिक सिापना िहनके पती लोकनाक पयते भेल िल। िहनक पुत लोकनाक अकालमत्यु भऽ गेलिह। िहनक ििशजक िनी चिदाितीक कोठी भागलपुिमे अिि।

कलानंद िसंहके सेहो सिकाि बहादुिसँ िाजा बहादुिक पदिी भेटलिह। िहनक दूटा पुत भेलिि्ह कुमाि िमानंद िसंह आ कुमाि कष्णानंद िसंह। कष्णानंद िसंह अपन सािसि सिान सुलतानगंजक शीकष्णगढमे बनौलिह। कलानंद िसंहक बाद िाजा कत्यानंद िसंहक पभाि बनैली िाजमे सबसँ िशेर िल। िाहािक जमीनदािीमे इ सििषिम गैजुएट िलाह आ अंगेजी, िहनदी आ संस्कतक असाधािण िदिान सेहो। खेलकुद आ िशकािमे इ अिदतीय िलाह। बंगाल िाहािक काउंिसलमे सेहो इ सिकय भाग लैत िलाह आ पटनासँ िाहािी पतकाक पकाशन सेहो किैने िलाह। तेजनािायण जुिबली कालेजक आपात् कालमे इ अपूिष सहयोग दए ओिह कालेजके जीििि िखलिह आ तािह िदनक िहसाबे ६लाखक दान देने िलाह। िहनके दानक सििप ओिह कालेजक नाम तेजनािायण बनैली कालेज पडल अिि। िहनको िाजाबहादुिक उपािध िलिह आ सनद देिि काल िाहािक िाजयपाल बेली साहेब तेजनािायण जुिबली कालेजमे देल िहनक सिाहिणीय दानक उल्लेख केने िलाह। भागलपुिमे आयोिजत अिखल भाितीय िहनदी सािहत्य सम्मेलनक सिागताध्यक सेहो िलाह। कलकता िशिविदालयमे मैििलीके सिान िदयेबामे िहनक अपूिषयोगदान िल। िाहाि पातीय संस्कत सम्मेलनक सभापित सेहो इ िलाह।

िशिकि
गदाधि ि
११म पीढी दुलाि क्संह चौधिी
(१२) सिानंद क्संह िदानंद क्संह र दानंद क्संह
लीलानंद क्संह (शीनगि
िाज्य शाखा
पदानंद क्संह कुमाि
गंगानह्द क्संह)
कलानंद क्संह
कत्यानंद क्संह
पदानंद क्संह कलानंद क्संह कत्यानह्द
क्संह
चह्दानह्द क्संह िमनंद क्संह श्यामानंद
क्संह
सूयानह्द क्संह कषानह्द क्संह कामलानंद
क्संह
(सुलतान गंज) तािनह्द
क्संह
दुगानह्द
क्संह
जयानह्द क्संह
नुनु जी

iii. शंकपुि िजक इक्तहास:- शंकपुि मधेपुिसँ उत िि १२मीलक दूीपि अिव। एकि बडगोक्ष्या स्टेट सेहो कहल जाइत िल काणि बडगोविया नामक एकटा गाम दिभंगामे अिव जाक्ह नामपि अक्ह िजक नामकणि भेल िल। शंकपुिकि समीप दूटा पक्सद पाचीन गढ अिव ियि भीि आ बुक्ष्या गढी। एकि समीपमे बेलािि गाम अिव। बेलािकि सम्बक्षमे क्कंदिक्ती अिव जे िलालसेन अक्हगामक संसिपक िलाह। शंकपुिकि समीप मधेली बजाि आ िसतपुि नामक पक्सद एकहाक्सक सिान अिव जाक्हठाम सीत____ िसंतक धिसािशेर देखबामे अिइयै।

बेलािि तालुका पक्हने दुगापुिकि अधीन िल। पािि दिभंगा िजक अंतगत भेल। खण्डिला कुलक महािज ितक्संहक तेसि पुत नेतेशिक्संहके बबुआनीक क्हसाबे शंकपुि भेटलक्ह। तखनक्हसँ शंकपुि िजक सिापना मानल जा सकइयै। क्हनका दूटा पुत िलविक्ह एकदिेशिक्संह आ जनेशिक्संह। जनेशिक्संह लक्मीशि क्संहक अक्भभािकित मे िहलाह। जनेशिक्संह पख्यात पुरर भेल िवि। इ विदापेमी िलाह आ मधेपुिमे संस्कत विदालयक सिापना केने िलाह। क्हनक पुस्तकालय अपूिष िल जे क्हनक पिीक भेलापि लक्मीशि पुस्तकालय दिभंगामे पठा देल गेल। ििक्हक दक्ष कोणे एकदिेशिक्संहक सम्बक्ष सौविया िजि (संसिापक िजा सुमेिक्संह चौधिि)सँ सेहो िल। एकदिेशिक्संहके तीन पुत भेलविक्ह____

होमेशिक्संह, कुलेशिक्संह, क्पतेशिक्संह।

िशिक

महािज रद क्संह

नेतेशि क्संह

एकदिेशि क्संह   जनेशि क्संह

होमेशि क्संह

फुलेशि क्संह

क्तेशि क्संह

iv. हिाति स्टेटक इक्तहास:- इ िाजि सहिसा आ पूवाणषाक सीमा िखापि िल। हिाति पिगनामे िहलाक काणिे अक्ह िाजिक नाम हिाति िाजि पडल। अक्ह िाजिक संसिापक अवानिशीय चौहान िलाह पिक्ि बादमे इ लोकक्त जैन धमषके दीक्ा लेलक्ह। समाट शाहजहाक समयमे क्हनका लोकक्तके िाजाक उपाक्धसँ क्वभूक्त कैल गेलक्ह आ िाजिसिनिसँ इ लोकक्त मुक्शाषबाद पहुँचलाह। हिाति पिगनामे स्टेट संसिापकक रपमे पतापक्संहक नाम अिइयै। क्हनक व्यक्ततत्सँ पभाक्वत भए क्दल्ली समाट आ बंगालक निाबसँ क्हनका क्खल्लत भेटल िलक्ह। हिाितिक पक्सद िाजा इक्न्दनाियिणक पती इक्न्दाितिीक कतापुत क्वजियगोक्वन्द क्संह पताप क्संहसँ महाजनी काबािि शुर केलक्ह। इक्न्दनाियिणक जमीन्दािी सौक्विया िाजिक नामे पख्यात िल जे क्हनक पूक्षि सुमेिक्संह चौधिीके मुसलमान समाटसँ भेटल िलक्ह। क्वजय गोक्वन्दसँ पताप क्संहके िागडा भेलक्ह आ १८५०मे सम्पूणष हिाति पिगनाक जमीन्दािीपि पतापक अक्धपत्य भऽ गेलैक्ह। एिि पकािे सौक्विया िाजिक एक महत्पूणष भाग समाप्त भऽ गेल। हुनके नामपि पतापगंज बाजाि बसल अक्ि। पतापक्संह अक्हंिशक सक्िशेष व्यक्तत भेलाह। अपना मत्युसँ पूक्षहं ओ अपन सम्पक्त अपन दुनू पुत लक्मीपक्त क्संह आ धनपक्त क्संहमे बटबा देलक्ह। इ दुनू भाए सािषक्नक कामे सक्कय रपसँ भाग

लेलक्हि। धनपक्त क्संह सेहो काफी पक्सद क्यक्तत भेल िवि। क्हनका तीनटा पुत िलविक्ह गनपत, नपित, बहादुि। गनपत क्संह अपना नामपि गनपत गंज बजाि बसौलक्हि। नपित क्संह कैसि क्हह्द कहबैत िलाह। क्हनक पुतमे शूपित क्संह पक्सद भेल िवि। ओ महाजनी भाराक अक्तवितत आि कैक भाराक जानकाि िवि। क्हह्दीसँ हुनका विशेर पेम िलक्हि आ जैन धमष गंिक क्हह्दीमे अनुिाद सेहो कििने िलाह। पाचीनकालमे हिाित जंगल िल आ आइनी अकबिीमे एकि िाजिसक उल्लेख अवि। नािपुिक चलते हिाितक बडड नाम िल मुदा कोशीक पेटमे सब जाके नष भऽ गेल।

िशािक

िाजा सोमचंद

४८म पताप क्संह

।   ।

लक्मीपत   धनपत

।   ।   ।

।

ितपत   गनपत   नपित

बहादुि   ।

।   ।

शूपित   मक्हपत

भूपत

v. चकौिकि इक्तहास:- कर्विलाक पाक्ज आ अंगेजक इस्ट इक्णडया कम्पनीक कागज देखलासँ जात होइत अवि जे मुगलकालक अंक्तम क्दनमे बेगूसाियि इलाकामे एकटा ािट ािन ाजि चकौाि बाहण लोकक्न बनौने िलाह जे सम्प्रक्त चकौाि भूक्महाकि नामे पक्सद िव। शुद भूक्महाकि दक्ष कोणसँ क्लखल गेल सीमी सहजानंदक 'बह क्षर्षिंश विस्ति'मे चकौाकिे भूक्महाभिे नक्ह वानल गेल ैकि आ बहुतो क्दन धवि ओ लोकक्न मैविल कहबैत िलाह। चकौाकि मूल िक्ह्ह 'बेलौचे सुदइ'।

सानीय पक्मिाकि आधापि जात होइि जे क्ायिुँक्नश नामक एक व्यक्क्त बेलौचे डीहसँ उपक्टके बेगूसाियि क्जलाक साम्हो गाममे आक्बके बक्स गेल िलाह। मुल्ला तक्कयाक ियाजसँ इ जात होइि जे ओ हाजी इक्लयास क्ाहूित िजके दू भागमे बटने िल आ गंडकक दक्क्णी भागपि अपन अक्धपत्य सािक्पत कए बेगूसाियि केत्त धवि अपन पभाि बढा लेने िल। क्फाजि तुगलक पुनः क्ाहूतक सम्पूणष ाजि्य भोगीशाकिे हस्तातविित कऽ देने िलाह। कर्विलाक बाहण शासक, ओइनाि िशक लोग, आंतविक मामलामे सतिंत िलाह पि्ञ्च क्दल्लीक पभुताक मनैत िलाह। ओक्ह कालमे जे एक पकाकि अस्तव्यस्तता िल तकाि चलते बहुत ािस मैविल बाहण अपन जीविकोपाजषक हेतु चाािकात बहाइत गेलाह। तेिहम चौदहम शताब्दीमे क्ायिुँ क्नश सेहो गंगा स्नान कबाक दक्ष ये साम्हो क्क्स पहुँचलाह आ ओतुका पाकक्तक िटा देक्ख आकष भए गेलाह आ ओतुके लोकक आगहपि ओतए बक्स गेलाह। चकौाि पक्मिाािमे तँ इ काि सुक्क्त्त अवि जे तक्हयेसँ हुनका लोकक्न ािजय ओतए बक्स गेलक्ह आ चकौाकि पभाि पूवणषासँ बत्सि धवि

गंगाक दुनूकात पसरि गेल। तुगलक कालीन मक्लक ियासँ संघरष हेबाक कि सेहो चकिाि पिम्पािमे सुिक्ति अिछ। (अिह पसंगमे देखु हमिर िलखल 'चकिािस आफ बेगूसािय')

अठािहम शताब्दीक पूििदिमे मुगल सामाज्यक िवघटन पािभ भऽ गेल िल। पातीय िजिपाल लोकिन अपन सितंतता घोिरत कऽए लागल िलाह। एहना िसिितमे चकिाि लोकिन सेहो अपनाके बेगूसािय केतमे सितंत घोिरत कए देलिन्ह। हुनक सितंत िज होएबाक सबसँ पैघ पमाण इ अिछ जे चकिाि िजक िविभन व्यिक्तत अपन हस्तािर आ मुदासँ युतत अनेको दानपत देने िछ। चकिाि िजा बख्तािि िसंहक एक भूिमदान पतसँ इ पतीत होइि जे हुनक अिधपत्य दलिसंहसािय धिर िल। "महािज बख्तािि िसंह देिदेिनाम्" क उपािधसँ सेहो इ सूिचत होइि जे ओ मात एक सामंतेटा नही अिपतु अपना पदेशक एक सितंत शासक सेहो। कम्पनीक कागजातमे बख्तािि िसंहक उल्लेख चकिािक िजाक रपे भेल अिछ। िजा िशािदत िसंह चकिािक एकटा दानक माहत्यता अलीिदी सीिकत केने िल आ ओिह दानके ओ यािित् िहए देने िल। इहो कहल जाइि जे िजा बख्तािि िसंहक िपतव्य रको िसंह फििकया पिगनाके लूटने िलाह जे तखन िजा कुंजल िसंहक अधीनमे िल। रको िसंह १७३०मे कुंजल िसंहक हत्या कऽ देलिन्ह।

कम्पनीक लेखसँ बुिि पडइयै जे १७७१९धिर चकिाि लोकिन बेगूसाियमे पभुता संपन िजयक रपमे सीिकत भऽ चुकल िलाह। ओ लोकिन सिकािके लगान देब बन्द कऽ देने िलाह आ मूंगेिसँ पटना धिर गंगा नदीक मागषि िनयंतण सेहो कऽ लेने

िलाह। ओकह मागषसँ जाइबला सब नाकिे िककके ओ लोकक्स किसिूल कैित िलाह आ ओकिा लूटतो िलाह। अंगेज कम्पनीके अपन नाकि संग सेना सेहो पठि पडइत िलैक। कोना आ अह्म सिनमे चकिाि लोकक्स सबल पडइत िलाह। चकिाि लोकक्स अंगेजक नािपि आकमणो कैित िलाह आ अंगेज आ चकिािकि बीच बििबर्व युद होइत िल। अंगेज लोकक्स १७२१मे बखतािि क्संहके चकिािकि िजा माक्स लेलाह। अलीिदी चकिािकिे पिकजत किबामे सफल भेलाह। कहल जाइत अर्व जे १७३०मे विशासघात कऽ कए अलीिदीक आदमी चकिाि िजाके मािर्व देलक। हालिल अपन पोिमिे अहह विशासघातक िणष्य केने अर्व। ओ चकिाि िजा कोन िल तकि नाम नहह भेटइत अर्व कािण बखतािि क्संह अलीिदीसँ नीक सम्बह्ध सिापत कऽ लेने िलाह आ बादमे अलीिदीक अक्मयानमे हुनक मदक्स सेहो केलविह्ह। चकिाि िशक दलेल क्संह टेकािि िजक एक महतिपूणष पदाक्षकािि िलाह आ िजा क्मतकजत क्संहक पाण बचेबामे सहायक भेल िलाह। १७९३मे दमामी बह्दोबस्तक समय कानषिक्लस साम्होक बह्दोबस्त चकिाि क्दवािजय नाियिणक संग कऽ देलक। अखनो धर्व बेगूसिाय िजलाक बािहि गाम चकिाि लोकक्स पसिल िर्व आ अपन पाचीन इक्तहासक अध्ययनसँ गौििक्वति होइत िर्व। चकिाि कालमे बेगूसाियिक महति काफी बढ्ढ गेल िल आ एकि पमाण हमिा कम्पनी ििकाडषसँ भेटइत अर्व।

vi. नहिनक दोणाि िशि :- दोणाि लोकक्सके िर्व, कहासँ एलाह आ कोना अहहठाम अपन िजक सिापना केलक्सह तकि कोनो पामािणक इक्तहास नहह भेटैि आ अपन अिकि

पर्वशिमक बाबजूदो हम कोनो ठोस सामगी जुटेबामे समर्थ नहि भेलहुँ अछि। इ लोकनि पश्चिमसँ एलाह आ एक परम्पराक अनुसार कनौजसँ। जँ अहि परम्परामे विश्वास कैल जाइक तखन तँ हमरा बुझि पडइयै जे कोलाञ्चसँ बाहमण लोकनिकेँ बजाकेँ जे दान देल जाइत छल ताहि कालक ओहि महक कोनो शाखा दोणवारक पूर्वज हिल हेतहि। पंचोभ तामपत अभिलेखसँ स्पष्ट अछि जे १३म शताब्दी धरि कोलाञ्च बाहमणके आमंत्रित कए दान देल जाइत छलैक। दोणवार परम्परामे कहल जाइत अछि जे कनौज से जे दोणवारक शाखा तिरहुत अाइत छल ताहिमे सँ किछु गोटए बाटहिमे गाजीपुरमे रुकि गेलाह। कहल जाइत अछि जे तिरहुतमे 'दोणवार' लोकनि 'दोणडीह'सँ आएल छथि। दोसर परम्पराक अनुसार हिमालयक तलहटीमे दोणसागर नामक कोनो ताल अछि जकर चारकात बहुत रास बाहमण बसैत छलाह आ तै इ लोकनि दोणवार कहौलन्हि। हालहि बोडषदार पकाशित 'तीरभुक्ति प्रदीपिका' नामक पोथीमे काशीपुर दोणसागरक रिषा अछि। पाण्डव लोकनि अपन गुरु दोणाचार्यक हेतु 'दोणसागर'क निर्माण केने छलाह।

सभ सम्पादक दोणवारक ओतए जे मैथिल पंडितक लिखल हस्तलेख सब अछि ताहिमे ओ लोकनि दोणवारक हेतु 'दोणवंशोदभव' शब्दक व्यवहार कएने छथि। दोणवार लोकनि अपनाकेँ दोणक वंशज कहैत छथि आ पश्चिमक वासी सेहो। मुसलमानी उपद्रव बढलाक बाद इ लोकनि अपन मूलस्थानसँ भगलाह आ ओहि क्रममे एक शाखा तिरहुतमे आबिकेँ बसलाह। विदापति अपन लिखनावलीमे दोणवार पुरादित्यक उल्लेख केने छथि जनक राज नेपालक तराइमे छल आ जाहि ठाम विदापति लखिमाकेँ लऽ कए

पशय लेने िलाह। पिमेशिािक अनुसाि क्षशािक्संह क्षिािसक सब स्तीीिगषके िवदापक्त ठाकुिकि संग कए नेपालक तािइमे िजाबनौली गाम सप्तािी पिगनाक अवक्ष्पक्त क्षजक्षत पुिाक्दत्य नामक दोणािशीय दोनािािजाक शिणमे पठौलक्ह। पुिाक्दत्य दोणािि हुनका सबक्हक सम्मानपूिषिक िक्ष केलक्ह। एक्हसँ स्पष अिि जे ओइनािािशिक क्षशािक्संह आ दोणाििशिक पुिाक्दत्यक मध्य घक्षष क्षतता िल। अक्हठाम िवदापक्त क्लखनािली क्लखलक्ह आ भागितक पक्तक्लब सेहो तैयाि केलक्ह।

दोणाििकि बस्ती देकुलीक सम्बन्धमे पिमेशििा क्लखैत िवि जे तेसि देकुली मुजफ्फिपुि क्वजलामे क्षशाहिािजधानीसँ एक कोस पूिषसीतामढी सडकसँ दक्क्षण भागमे अिि, ताक्हमे एक बहुत खाक्षमे एक क्षशाक्लंग भुिनेशिि नामक िवि आ एक्ह गामक िवियमे बहुत िासि पुिािन कििपकिन अिि जाक्हमे कौिि पाण्डिकि उल्लेख सेहो अबैि। संभि जे इ देकुली दोणािकि मूल सिान िहल हो आ एतक्हसँ ओ लोकक्न चािकात पसािल होिि। दोणािकि संघिष बौद लोकक्नसँ क्तािहूतक सीमामे भेल िलक्ह से हमिि लोकक्नके िवदापक्तसँ जात होइि। एक्हसँ इहो क्सद होइि जे दोणाि लोकक्न सेहो क्षिविलाक उतािचलमे पबल शक्तक िपमे िवािजमान िलाह आ मैिवल बाहणक्ह जका बौद िविािधी सेहो िलाह। आन दोणािि शिक एहेन पमाण आिि कहा भेटइत अिि। दोणाि लोकक्न मूलिपेण क्तािहूतक अंशमे पाचीन कालमे िहल हेताह आ नेपालक तािइ धिि अपन िाजक िवस्तािि केने होिि से संभि।

दोणाि पिम्पिाि एकटा कििा इहो अिि जे बुदक देहािसान भेलापिि जखन हुनक अक्सि िवतिण होइत िल तखन क्षिविलामे

दोण बाह ण लोकक्न हुनक अक्स अनने िलाह। जँ ताक्हकाल ‘दोणाि’ लोकक्न कार्वलामे उपक्सित िलाह तखन तँ हमि इ मत आि पुष होइि जे दोणाि अक्हठामक विकाह आ कार्वलाक आन बाह ण जका क्हनको उत्पाक्त काहिूतेमे भेल िलक्ह। मात अक्स संचय किबा लेल ओ दोण लोकक्न ओतए दूिसँ एतए नक्ह आएल होएताह। कालकमेण बाह ण कौक्लक कायर्सँ अपनाके फािक कऽ लेलापि इ लोकक्न भूक्महाि कऽ कोक्टमे िखिल गेल होिव से संभि।

एक दोसि पक्मािक अनुसाि नेपाल दिबािसँ दोणाि लोकक्नके िजाक उपाक्ध भेटलक्ह आ क्हनक शौयर्के देखैत मकमानी क्जलाक भाि क्हनका लोकक्नके देल गेल िलक्ह। दोणाि िजा अक्भमान िाय पक्सद भेला आ मकमानीमे क्हनक अक्धपत्य िलक्ह आ इ लोकक्न ‘पाण्डेय’ कहबैत िलाह। अक्भमानक मत्युक पशात् हुनक कमर्चािी लोकक्न महािानीके लऽ कए कार्विला पातक दक्कणी सीमापि क्सित बेलौचे सुदइ मूलक चकिाि बाह णक िाज्यमे पहुँचा देलक्ह। अक्भमान िायक पुत िलाह गंग़ािाम। गंगािाम अक्हिशक साक्षक्सद क्यक्तत भेल िवि आ क्हनका सम्बक्न्धमे बहुत िास क्कंवदंती अिव। चकिाि िजा अपन कन्यासँ गंगािामक विवाह कैलक्ह। साि बहनोइमे सामाक्न्य बाताबाती भेलापि ओ िाज्य िाक्ड देलक्ह आ अपन पतीके संग लऽ कए ओतएसँ चक्ल देलक्ह। ससूिसँ सेनाक साहाय्य भेटलक्ह आ ओ साँसा पिगनामे अपन िाजक सािपना केलक्ह। साँसा पिगनाक “पुनाश” गाममे क्हनक पूक्षि पक्हने िहैत िलिवक्ह तै साँसा पिगनामे िाज्य सािपनाक कािणो इ केलक्ह। ताक्ह क्दनमे ओक्ह सब केतपि मुसलमानक

आधिपत्य ि ल। ताजखा (ताजपुकि संस ि ापक) आ सुल्तानखा (सुल्तानपुकि संस ि ापक)के मावि इ मोखामे अपन ि जधानी बनौलक्हि। सौंसा पि गना नहिनसँ जह्दाहा धवि करीब ४०मील नाम अवि आ पोखौं ि ि सँ सुल्तानपुि घाट धवि करीब २०मील चाकि अवि। क्हनक एक विि हि मैविल बाह ण पवि ि ि मे सेहो ि लक्हि। पक्हल पतीक नाम भागि िनी आ दोसि िक नाम मुतता ि िनी ि लक्हि। क्हनक दुनू ि िनी मोखागढमे सती भेलवि क्हि।

भागि िनीसँ उत्पन्न पुत भेला ि िय बडड पतापी भेलाह। भेला ि िय मोखा सुल्तानपुि मे हिलाह आ माला ि िय ‘ि ि क्सिंहपुि पोखौं ि ि’मे। भेला ि ियक ि शज नहिनक पूि षि भेलाह। अक्हि शक लोग बना सिक गदीपि ि वि। भेला ि ियक पुत विकमाक्दत्य ि ियके सौंसा पि गनाक ‘चौधि इ’ भेटलक्हि। विकमाक्दत्य ि िय बडा पि किमी ि लाह। इ अपना नामपि ‘विकमपुि’ गाम बसौलक्हि। क्हनक पुत हि किषण ि िय नहिनमे अपन दोसि ि जधानी बनौलक्हि। पधान ि जधानी मोखा आ दोसि नहिन। ि शि किक अनुसाि इक्तहास एि पकाि अवि ——

दोणि ि हिगोवि न्दि ि िय ——

चौधि ि केशि निा ि ियण ि िय (सौंसा, भूि ि ि, नैपुि पि गना)

फतेह ना ि ियण

अजीत ना ि ियण

क्दत ना ि ियण (इमादपुि पि गनाके क्मलौलक्हि)

अजीत ना ि ियण समाटसँ टभका, सुि ौली, लोमा, वि ि ौली, ननकाि, लाक्खि ि जिक ि पमे क्हनका भेटलक्हि। क्हनक

ि ि क्हक सम्बन्ध टेकाि ि सँ ि लक्हि।

हुनक जेठपुत उदवाजिय नाायिण बनाासिक ाजा बलबंत सिंहक बेटीसँ विाहि केलिन्ह ।

ाािनि हेस्टिंग्सक मदतिसँ बलबंत सिंहक बाद चेतसिंह बनाासिक गदीपि बैसलाह। जखन चेतसिंह ाािनि हेस्टिंग्ससँ पािजित भेलाह आ बनाासिक ाजगदी खाली भेल तखन नहिनक अजीत नाायिणक पौत आ उदवाजिय नाायिणक पुत ाािनि हेस्टिंग्सक अनुमतिसँ बनाासिक गदीपि बैसलाह। हुनक नाम छलिन्ह ाजा महीप सिंह आ इ सालाना ३८ लाख टाका ाािनि हेस्टिंग्सके देबाक चिन देलविन्ह। तकियासँ बनाासिक गदीपि हुनके ाशिज शासन कै हिल अवि।

महीप सिंह

उदित सिंह

इशािी पसाद सिंह

पभुनाायिण सिंह

आदित्य नाायिण सिंह

उदवाजियक भाता नहिन स्टेटक मालिक भेला। महााजि दभिंगाक जे नािबक संग कहदपी घाटक लडाइ भेल छलि तामहमे सिाीत सिंह नहिद सिंहक दास छलाह। हुनक भाए उमािि सिंह नहिनक सैनिकक नेतत्ि कति छलाह आ एकि विािणि हमािि लाल कविसँ भेटइत अवि। नहिद सिंह पसन भए हुनका दुनू भाइके पुस्कित कए चाहैत छलविन्ह मुदा ओ लोकनि पुस्कािि लेबासँ नकावि गेलाह तािपा फकिया पिगिनामे हुनका लोकनिके किछु गाि भेटलविन्ह। दभिंगा ाजि पविािमि एकि हेतु नहिन ाजि पविाािकि बडड सम्मान छलैक। हुनका लोकनिमे एतेक नीक सम्बन्ध छलि

जे महाराजि पताप क्संहक समयमे जखन नाबिक दबाब बढल तँ पताप क्संह अपन पर्वाकिके नहिन पठा देलक्ह आ अपने बेक्तया चल गेलाह। ामिेशा क्संह धर्व इ सम्बन्ध ओक्हना बनल ाल।

सषिीत

ाणिजीत

र प नाायिण

ािम नाायिण

पमिेशाी पसाद क्संह

नहिन दबािमिे क्यतधा क्नश आ चंदा ाा सन पक्सद वदानके पशय भेटल ालक्ह आ महामहोपाध्याय गंगानाा ाासँ सेहो क्हनका लोकक्नक बक्ढया सम्बन्ध ाल। ाािम नाायिणक सम्बन्ध नेपालक जंगबहादुा शाहसँ सेहो ाल काािण दुनू गोटएके सोनपुा मेलामे भेट भेल ालक्ह। ाािम नाायिण नेपालो गेल ालाह।

vii. बेक्तया ााजिक इक्तहास:- सोलहम शताब्दीक उतादिमे उगसेन क्संहक पुत गज क्संह दाा बेक्तया ााजिक स्ाापना भेल। गज क्संहके शाहजहासँ ााजाक पदाी भेटल ालक्ह। इ क्नवाालाक ााजा मक्हनाा ठाकुािक समकालीन ालाह आ हुनका समयमे दुनूक बीच मनमुटाा आ खटपट सेहो भेल ाल। मुगल सामाज्यक कमजोा भेलापा उतााक्नहाािक सबटा ााज्य स्ातंत हेबाक पयासमे लावा गेल ाल आ बेक्तया ााज एकाा कोनो अपााद नक्ह कहल जा सकइयै। १७२९मे अलीवदी बेक्तया ााजपा आकमण कए ओकाा अपना अधीन केने ालाह। १७४८मे बेक्तयाक ााजा लोकक्न दाभिंगा अफगानक संग क्नतता केलक्ह। दाभिंगा अफगान अलीवदीक सेना दाा पााक्जत भेला। दाभिंगा अफगानके बेक्तयाक ााजा सब बााबा

मदक्त कर्ति हैि। अलीदिीक बाद पुनः बेक्तया अपन स्तिंतता घोक्रत कए लेलक आ अंगेजी सताक विरिद ताधर्व बनल हिल जाधर्व क्क १७५९मे अंगेजी सेनाक आकमण बेक्तयापि भेल। मीिजाफकि पुत मीनि अंगेजी सेनाक संग १७६०मे बेक्तयापि धाि मालिक आ बेक्तयाक स्तिंतता पुनः समाप्त भऽ गेल। १७६२मे मीिकासीम बेक्तयाक विरिद सेना पठौलक्ह आ बेक्तयापि अपन अक्धकाि जमौलक्ह।

१७६६मे िबिटष बेककि पयाससँ बेक्तयामे अंगेजी सताक स्तािपना संभि भऽ सकल। १७६२मे ओक्हठाम जुगलकेशि क्संह ििजा ििलाह। हुनका पुनः इस्ट इक्णडया कम्पनीसँ ििि भेलक्ह काणि बहुतो क्दनसँ बेक्तयापि ककि बक्कऔता खसल ििलैक। कि देबाक बजाय बेक्तयाक ििजा अंगेजी सेनासँ युद कबि उक्चत आ सम्मानीय बुििलैि आ युदमे पिास्त भेला उतिि ओ भावाके बुन्देलखंड चल गेला आ कम्पनी हुनक ििजके अपना अधीन कऽ लेलक। बादमे जखन ििजक क्सिक्त अंगेजक बुते नक्ह सुधिलैक तखन अंगेज पुनः जुगलकेशि क्संहसँ िािता शुर केलक आ हुनका घुििबाक लेल अनुिोध केलक। अंगेज जुगलकेशि क्संहके मििि आ क्समौिन पिगिना सेहो देलक आ बाक्क केतके गजक्संहक पौत आ वाक्तऔत शी क्कशुन क्संह आ अिधुत क्संहमे बाक्ट देलक। उएह लोकक्न बादमे कमशः क्शहिि (मुजफ्फिपुिि) आ मधुबन (चम्पािण) ििजक संस्तािपक होइत गेलाह।

१७९१ जुगलकेशि क्संहक पुत िीिकिशोि क्संहक संग कम्पनीक समझौता भेल आ िीिकिशोिक नेततिमे बेक्तया ििजक क्सिक्त सुदढ भेल। कम्पनी आ नेपालक बीच जे युद भेल ताक्हमे

ीकिेशि क्संह सक्कय भाग लेलक्क्ह। १८१६मे आनह्दकेशि क्संह िजा भेला आ लाडष वक्लियम बेक्टडसँ हुनका महािज बहादुकि पदीि भेटलक्क्ह। एकि कािण इ िल जे ओ अंगेजके बडड मदक्त केने िलाह। हुनका बाद निलकेशि क्संह िजा भेलाह आ १८५५मे िजेह्दकेशि क्संह। क्सपाही विदोहक असिपि इ अंगेजक अपूषि सहायता केने िलाह। हुनका आ हुनक पुत हिह्दकेशिके महािज बहादुकि पदीि अंगेजसँ भेटल िलक्क्ह। १८९३मे हिह्दकेशिके के.सी.आइ.इक पदीि सेहो भेटलक्क्ह।

बेक्तयाक शासक लोकक्त भूक्महाि बाहण िलाह। इ लोकक्त अपना िजकालमे नीक अस्पताल आ पुस्तकालय बनौने िलाह। इ लोकक्त साक्हत्य पेमी सेहो िलाह। क्हनका लोकक्तक दिबािमे कवि आ कलाकाकि बडड आदि िल। भाितेह्दु हविशह्द आ िजा क्शपिसाद क्सतािि क्हह्दके क्हनका लोकक्तक ओतएसँ बिबिि सहायता भेटइत िलक्क्ह। ओना तँ बेक्तया िज बडड पाचीन मानल गेल अवि मुदा एकिि सम्बह्धमे अखन सब बात स्पष नक्ह भऽ सकल अवि। बेक्तया िजक िशािली एिि पकाि अवि।

बेक्तया िजक िशािली

गंगेशि देि

मकेशि देि

िजा देि

धानोिज

उदय कणि िज, जदुिज

उगसेन
गज क्संह (िज क्संह ?)
क्दलीप क्संह
पर्थी क्संह
सतक्जत क्संह
धुक्संह (बडड पैघ क्कला बनौने िलाह।
अपन बेटीक बेटा जुगलकेशकिे कोिमे लेलक्ह। काणि क्हनका पुत नक्ह िलक्ह।
क्शािनािक्संह
जुगलकेशिक्संह
ीिकेशिक्संह
ीिकेशििक्संह
निलकेशिक्संह
महेह्न्दकेशिक्संह
आनह्न्दकेशििक्संह
िजेह्न्दकेशिक्संह
हिह्न्दकेशिक्संह
(महािनी क्शािितन महािनी जानकी कुँिि)

भूक्महािबाह णक इ िशि अपनाके बडड पाचीन मनैत िवि। क्हनका लोकक्नक ीिक्हक सम्बह्न्ध बनािसि िजसँ सेहो अवि। कामेशिि शि जका इहो लोकक्न अपनाके सुगौनासँ जोडैत िवि मुदा एक्तहाक्सक ततकि अभािमे अखन क्कि◌ु कहब असंभिि। बेक्तयाक िणिषा १७८६मे पकाक्शत गजेक्टयिमे भेटइत अवि। १७८६मे अक्हठाम इशाइ क्नशनक एकटा शाखा िलि।

िट विह्ह िज सभक्हक विििण:- क्शाहिकि सिापना बेक्तया िजक शाखासँ भेल िल। सुसिंड िज सेहो भूक्महाि बाह ण िशक िज िल जकि सिापना महाििज पताप क्संह (दिभंगा)क समयमे भेल। एक्हमे सिाक्धक पक्सद व्यक्तत चह्देशि पसाद नाियण क्संह भेल िव जे नेपाल काक्त (१९५०)क समयमे भाितक िजदूत हिल िलाह। बनैली िजक शाखाक र पमे शीनगि िजक सिापना भेल अवि। र दानंद क्संह अपन पुत शीनह्दन क्संहक नामपि शीनगकि सिापना केने िलाह शीनह्दन क्संहक तीन पुत कात्यानंद क्संह, कमलानंद क्संह आ काक्लकानंद क्संह भेला। कमलानंद क्संह साक्हत्य सेिी िलाह। आ क्हह्दीक पगक्तक हेतु लाखो टाका खचष केने िलाह। ‘साक्हत्य सिाज’, ‘अक्मनि भोज’, ‘कक्लयुगी हविशह्द’, ‘कक्लकणष आक्द उपाक्धसँ इ विभूक्रत िलाह। क्हनके पुत भेलविह्ह कुमाि गंगानह्द क्संह जे मैविली, क्हह्दी, अंगेजी आ पाचीन भाितीय इक्तहासक पकाण्ड पक्णडत िलाह। काक्लकानंद क्संह आ गंगानंदक पुस्तकालय दशषनीय िल। पुक्णषामे िजा पर्थीचह्द लालक िज सेहो पख्यात िल। िट मोट मुसलमान िजक संख्या सेहो ओतए बडड अवि। पुक्णषामे शोक्तय लोकक्नक िजबािि सेहो िल जाक्हमे सौविया िजक इक्तहास पक्सद अवि। मुसलमानी िजमे खगडाक मुसलमानी िज पक्सद िल।

अध्याय 15

मिथिलाक प्रशासनिक इतिहास

प्राचीन कालमे मिथिला एक एहेन स्थान छल जतए जनक सन शासक छलाह, याज्ञवल्क्य सन विद्वान विशेषज्ञ एवं विद्वत्ता तथा गौतम सन प्रख्यात नैयायिक। एक ठाम एहेन व्यक्तिक जुटब कोनो सामान्य बात नहि अपितु ओहि माटिक विशेषता कहल जा सकइयै। जनक कालीन मिथिला अपना युगमे राजतंत्रक प्रधान केन्द्र छल मुदा ओ राजतंत्र सब तरहें आदर्श राजतंत्र कहल जा सकइयै आ एकर प्रमाण हमरा उपनिषदसँ भेटइत अछि।

(अफलातुन (प्लेटो)क दाशर्षनक ाजाक कल्पना कार्यविलक्ष्मे जनक युगमे साकाा भेल ाल आ हमा एक्ह कानके कोनो र पे अत्तशयोक्तत नक्ह कहल जा सकइयै। बहदाण्ण्यक उपक्वरदसँ जात होइा जे ाजा अपन पजाक हाल चाल बुाबाक हेतु बाबिव अपन ाज्यमे भमण काैत हैत ाला आ ाजाक अक्ह पवभमणक कममे गामक बद लोकक्ता ाजाक ठहाबाक आ सुख सुवधाक व्यासा काैत ाला। जाधवा ाजा अक्ह पकाक यातापा हैत ाला ताधवा ओ लोकक्ता ाजाक संग हैत ाला। गामक मुख्य पदाक्वकाा उगकमासूत कहबैत ाला आ ओ गामक बदक संग काक्ल शासन कायषचलबैत ाला। ाजा अपन पजासँ पेम काैत ाला आ पजाक व्यसाक्तक जान पाप्त काबाक लेल सयिं बाबिवा भमणशील हैत ाला। उगकमासूतके पुक्लस पदाक्वकाा सेहो कहल गेल अवा। पाचीनकाल ग्याहि वक्तनमे एकटा 'सूत' सेहो होइत ाला आ बादमे इएह इक्ताहासकाक काज सेहो काए लागल ाला। जनक कालीन कार्यविलामे क्हनक मुख्य काज ाल गामीण शासन व्यासाके सुदढ बनाके ाखब आ जनताक कल्याणपा ध्यान देब। एतबा सब काु होइतहुँ ताहु क्वनमे अकाल पडइत ाल आ जनकक समयमे अनाकृष्ष क काणे अकाल पडल ाल जाक्हमे जनकके सयिं हा जोतए पडल ालक्ह।

क्वैदक कालमे कार्यविलामे ाजतंक्तय व्यासा ाल आ वाशानुगत ाजतंत पणालीक जक्ड जक्म चुकल ाल। पवतिताक भााना ाजा लोकक्तके हैत ालक्ह। ाजा लोकक्त शक्ततशाली होइत ाला। ाजदबााामे बाहणक पधानता ाल आ संगक्ह सेनापक्त आ ााकाा सेहो हैत ाला। एताय बाहणक अनुसाा

ककरोसँ कोनो काज लेब राजाक विशेराधिकार बुझल जाइत छल। राजा समस्त मानविक एक मात्र शासक मानल जाइत छलाह आ ओकरामे जे गैरजिबाबदेह होइत छलाह हुनका पजाक भोतता कहल जाइत छल। जनवाय राजा लोककाके देवि संजा भेटइत छलन्हि। बाहरण साक्तयमे राजा जनकके समाट सेहो कहल गेल छन्हि। राजा जनकक समयमे राजतंत्र व्यवस्थामे चरमोत्कर्षपर छल। अत्याचारी राजापर अंकुश रखिबाक हेतु पाचीन मनीषी लोकक्र अधिकाधिक नियम बनौने छलाह। राज्याभिषेकक अवसरपर जे शपथ गहण होइत छल ताहूमे राजाके इ पतिजा करए पडइत छलन्हि जे ओ अपना पजाक हेतु काज उठा नहि रखिताह। राज्यमे सूत, गामणी आ अनाह्य अधिकारी वर्गक बडड महत्व छल आ राजाक निचिनमे इएह लोकक्र सहयोग होइत छलाह। तैं तँ शतपथ बाहरणमे हुनका लोककाके "राजकत" सेहो कहल गेल छन्हि। वैदिक युगमे विदथ, सभा आ समितिक उल्लेख सेहो भेटैत अछि। विदथ बडड पुरान संस्था छल आ व्यवस्थामे एकर पचलन छलैक अथवा नहि से कहब असंभव। सभा समिति पाचीन वैदिक वैधानिक संस्था छल आ एकर माध्यमसँ राजापर अंकुश राखल जाइत छल। वालवाटसँ पाप्त बौद पाण्डुलिपिमे एहिबातक उल्लेख अछि जे व्यवस्थाक राजाक ओतए ५००अमात्य रहैत छलाह जाहिमे 'खण्ड' अमात्य अगगण्य छलाह। खण्ड शक्तिशाली अमात्य छलाह आ समस्त व्यवस्था राज्यमे हुनक धाक जमल छलन्हि। खण्डक रितियसँ इ स्पष्ट अछि जे जखन वैशालीमे गणराज्यक स्थापना भऽ चुकल छल तखनो व्यवस्थामे राजतंत्र पतापूर्वक राजनैतिक व्यवस्था छल। महाउम्मग्गजातकसँ इ ज्ञात होइत अछि जे

क्मविलामे िजा विदेहक ओतए केटि नामक एकटा पधानमंती िलाह। क्मविलापि एकबेि जखन उतिि पाचाल क्दक्सँ आकमण भेल िल तखन क्मविलाक किािषि केटि कक्ि उठा नक्ह िखने िलाह। केटिक कािक विशद विश्लेरण जातक कािमे भेटइत अवि। कािल जनकक कुकत्यसँ तंग भए क्मविलाक जनता िजतंतक जूआके उठा फेकलक आ ओक्ह सिािनपि िैशालीक देखादेखी गणतंतक सिापना केलक। कक्ि क्दनक पशात् विदेह गणिाज्य अपन सुिकािषि िैशालीक गणिाज्यसँ क्मल जुक्लके िहिए लागल आ िज्जीसंघक पमुख सदस्य सेहो भऽ गेल।

िैशालीक गणिाज्य शासन पदक्त:- िैशालीक क्लचविी लोकक्नक शासन गणतात्मक िल। िाज्यक शक्तत जनतामे क्नक्हत िल। कौक्टल्य क्लचविी लोकक्नक हेतु ‘िाज शब्दोपजीवीसंघ’क व्यवहािि कएने विि। ‘लक्लतविसति’क अनुसाि िैशालीक पत्येक व्यक्तत अपना सम्बन्धमे इएह बुिैत िल जे ओ िाजा अवि। केओ अपनाके ककिोसँ िाट नक्ह बुिैत िलाह। ओक्हठामक िाज्यशक्तत समूहमे क्नक्हत िल। शासक िाज्यक सेिक बुिल जाइत िलाह। पविरदक बैसक जाक्ह भिनिमे होइत िल तकिा ‘संिािगाि’ कहल जाइत िल। संिािगािमे बैक्सके सब केओ िाजनैक्तक आ सामाक्जक पशपि विचाि विमिशष किैत जाइत िलाह। पविरदक सभापक्त अििा गणमुख्य सेहो िाजा कहबैत िलाह। िैशालीमे ७७०७िाजाक उल्लेख भेटइत अवि। संभवतः इ सब गोटए कुलीन पविािक िलाह आ शासन सता क्हनके लोकक्नक मध्य क्नक्हत िल। इएह कािण अवि जे िैशालीक शासनके कुलीनतंत सेहो कहल गेल अवि।

आजुक संसद जका ताह्व क्तनक संिगािमे सेहो सबटा कायषक्तयमानुसाि होइत िल। सदस्य लोकनक बैसबाक पबह्धके आसन कहल जाइत िल आ पिरदक कायषिीहीक हेतु क्तनशत गणपूक्तषक आिशयकता िल। गणपूक्तष कें क्तहाि पदाध्कािके गणपूिक कहल जाइत िल। पिरदमे उपक्तसत पस्ताके पक्तजा कहल जाइत िल। पस्तािपि िद ििद होइत िल आ तकि बाद ओह्वपि मत लेल जाइत िल। मतके गुप्त िखल जाइत िल आ पािित पस्ताके सबके मानए पडइत िलह्व।

गणक मुख्य अध्कािी होइत िलाह िजा, उपिजा, सेनापक्त, भाडागािक, इत्याक्द आ सेना, अिष आ ह्याय शासनक मुख्य अंग िल। बौद साक्हत्यमे क्हण्यक, सािि आक्द कमषािक उल्लेख सेहो भेटइत अिछ। नायक नामक एक पदाध्कािक उल्लेख सेहो भेटइत अिछ। ह्याय िभागक अध्कािके िनय महामात्य कहल जाइत िल। अिभयुततके सिषिम क्हनके समक उपक्तसत कैल जाइत िल आ अक्हठाम सिषिम आिपक जाच होइत िल। क्तपिाध भेलापि अपिधीके मुतत कऽ देल जाइत िल आ अपिध क्तसद भेलापि पुनः ओकि क्याि हािक अिि िहािक महामात्यक समक उपक्तसत कैल जाइत िल। क्तपिाध क्तसद भेलापि अपिधी मुतत कऽ देल जाइत िल अह्यि ओकि पुनः अटकुलकक समक उपक्तसत कैल जाइत िल। कमशः अिभयुततके सेनापक्त, उपिजा आ िजाक समक उपक्तसत कैल जाइत िल। अिभयुततके दण्ड तखने देल जाइत िल जखन ओकि अपिध पूणषया क्तसद भऽ जाइक। समस्त ह्याय पणालीक िकाडष िखल जाइत िल जकि 'पिणीपुस्तक' कहल जाइत

िलैक। ह्याय क्यसि ि समता आ सितंतताक क्सदातपि आधावित िल। अपील कबिाक क्यसि ि सेहो िल।

नगि क्यसि िक भाि नगिगुिक्तकपि िहैत िल। नगिमे शाक्त सिापनाक दाक्यतिक भाि ओक्ह पदाक्धकािीपि िलैक। नगिगुिक्तकके िक्ताक िाजा सेहो कहल जाइत िलैक।

अक्हठाम इ स्माणि िखबाक अिि जे िैशाली क्लच्ि िी संघक िाजधानी िल आ संगक्ह िक्जज गणसंघक सेहो तै िैशालीक अत्यक्धक महति बौद्ध युगमे भऽ गेल िल। िदिेह आ क्लच्ि िी संयुतत रपसँ संिक्जज कहबैत िलाह आ िक्जजसंघमे आठटा गणिाज्य सक्ममक्लत िल। कल्पसूतक अनुसाि क्लच्ि िीक एहेन सम्बन्ध एकबेि मल्लक संग सेहो िल आ इ दुनू गोटए क्मक्लके एकबेि संयुतत परिषदक क्नमाण केने िलाह जाक्हमे १८ सदस्य िलाह ९क्लच्ि िी आ ९मल्ल। इहो लोकक्न िाजा कहबैत िलाह। सामाज्यिादी आकमणक पकोपसँ बचबाक हेतु इ लोकक्न समय समयपि अपन संघ बनबैत िलाह। िैशाली सबमे पमुख िल तै सब िाट िाट, गणिाज्य िैशालीक संग क्मक्लके संघ बनेबाक हेतु उत्सुक िहैत िल। िक्जजसंघ शासनके पिमिशष देबाक हेतु एक संसि िल अष कुलक जाक्हमे आठो गणक पक्तक्नक्ध िहैत िलाह। संघक सब सदस्यक अक्धकाि बिाबि िलक्ह। उच्चतम न्यायालयके अष कुलक कहल जाइत िल। संघ शासन पणालीक अपन क्नयम िल जाक्हसँ संघ शासन संचाक्लत होइत िल। िैशाली ताक्ह क्दनमे सििशेष संघ िाज्यक केन्द्र िल।

बुद्ध िैशाली गणतंतक मतैतय, सौहादष्र, आदि, दढता, पिाकम आक्दक भािनासँ बडड पभावित िलाह आ बेि बेि िैशाली

अबैत िहैत िलाह। बुदक अनुसाि जे गणािज्य क्रमक्लवखत सातटा आदशषक (सप्तअपिवहािगसुत) पालन कि ित िहत तकि कक्हुओ हास नक्ह हेतैक ____

i) क्रयकमत एिं क्यािक्स्ित ि पे सदक्त सभाक आयोजन कि ब ____

ii) िवचाि, उत्तान एिं क्यिहािमे सदस्यक मतैतय िहब ____

iii) क्यिहत क्संदातक पयोग कि ब ____

iv) बद लोकक्नक पक्त आदि, शदा, सहयोग एिं पक्नष ाक भाि िखब ____

v) संघक चैत्यक पक्त शदा एिं सहयोगक भािना िखब ____

vi) पिक्जत देशक स्तीक संग उक्चत क्यिहाि कि ब ____

vii) अहषत् क पक्त समुक्चत सहयोग एिं िक्नक भािना िखब।

महापिक्निाणसुत सँ जात होइि ज िज्जीसंघक शासन क्यिसिामे ____

i) िवक्भन संघक सभाक अक्धिशन बािबि क्रयकमत ि पे होइत िहैत िल।

ii) िज्जीसंघक सदस्य लोकक्न बािबि आपसमे क्नलैत जुलैत िहैत िलाह आ शासन चलेबामे सतकषताक पिवचय दैत िलाह।

iii) ओ लोकक्न अपन पिम्पािगत क्रयमक पालनक पक्त जागर क िहैत िलाह।

iv) शासनमे बुिनुक बद लोकक्नक हाि िहए दैत िलाह।

िशालीमे कोना आ कक्हया गणािज्यक सािपना भेल से कहब असंभि। बुद तँ क्लचिि लोकक्नक पशंसा 'तािक्तंश देिि कक्हके केने िवि आ ओ सियं गणशासन पणालीसँ एतेक पभािवत भेल िलाह जे ओ एक्ह पणालीके अपन संघ संगठनक आदशष मानलक्न्ह। ७७०७िजा ओक्हठाम िजकुलोदि मानल जाइत िलाह

आ ओकहना क्यहिाि कति िलाह। िशालीक पुष्करिणी कहनके लोकक्नक हेतु सुिकत्त िहैत िल। इ लोकक्ना िशालीक एक विशेष केतसँ संबक्ध्धत िलाह। जैन कल्पसूतसँ इहो स्पष होइि जे िशाली शासनक एकटा कायकारिणी सक्मक्त सेहो िल। िशाली सन पाचीन ह्याय क्यसििाक कोनो दोसि उदाहिणि संसािमे नक्ह भेटइत अिि। अक्मयुततके तखने दक्डत कैल जा सकैत िल जखन ओ कमशः सातो ह्याय सक्मक्तसँ एकमतसँ दक्डत घोक्त हुए। िजजीसंघक शासनमे सेहो समानताक क्सदातक पालन होइत िल। अजातशतुक आकमणक बादो जखन िशाली मगध सामाज्यक अंग बक्न गेल तखनो एकि गणतातक सिरप अपना केतमे बनले िहल।

मौयषयुगसँ िशाली विदेह मौयषसामाज्यक एकटा अंग बक्नके िहल। अशोकक समयमे िशाली आ चम्पािणिक पशासक्नक महत बढल होइत कािणि अक्ह दुनूठाम अशोकक स्तंभ अिि। अशोकक स्तंभसँ इ अनुमान लगाओल जाइि जे पशासक्नक दक्षकोणसँ क्मििलाक महत घटल नक्ह िल अक्पतु बढले िल। अक्ह बाटे नेपाल जेबाक मागष िल तै पशासक्नक दक्ष ये सीमासँ सटल िशाली विदेह िज्यके सुिकत्त िखिब आ ओकिसँ नीक संबह्ध बनौने िखिब सामाज्यिादी शासकोक अभीष िहैत िलक्ह। िशालीसँ पुक्लाषा धिकि सीमा क्मििला पातक अंतगष्त िल आ क्मििला उतिि ब्बहािकि एकटा पमुख पशासक्नक केह्द िल। सामाज्यिादी ितिियाक अंतगष्त िक्हतहुँ क्मििला अपन पजाताक्नक पणालीके सोहागक क्सह्दुि जका संजोगने िल। पतञक्लक महाभाष्यमे सेहो जतए ततए क्मििला जनपदक उल्लेख भेटइत

अवि। मौयषसामाज्यक समाप्त भेलापि िशाली पुनः अपन स्तिंतता पाप्त केलक से बुवि पडइयै।

िशालीक उत्खननसँ जे बहुत िसि मोहि सब भेटल अवि ताकहपि शेणी, सािषिहि, कुक्लक, कागम आकदक उल्लेख भेटइयै। एहेन बुिना जाइत अवि जे िशालीमे शेषी, सािषिहि आ कशलमी लोककनक सबममकलत कागम िलि आ एकह कागमक काज विविमन नगिि सबमे पसलि िलि। शेषी सािषिहि कुक्लक कागमक २७४टा मोहि िशालीसँ भेटल अवि जाकहमे ७५टा इशानदासक, ३८टा मातदासक, ३७टा गोवमसिमीक मोहि अवि। संभितः इ लोककन कागम शाखाक अधयक हिल होयताह। ठाम ठाम मोहि सबक अकतवितत भगिानि, वजन, पशुपक्ष आकदक नामक उल्लेख सेहो भेटइत अवि।

गुप्तकालमे िशाली तीभिुक्तत पातक िजिधानी िलि आ ओकहठामसँ पाप्त मुदामे एकिि अवधषिान सेहो कहल गेल िकि। एकह पातक महति अहुँसँ बुिना जाइत अवि जे स्वियं गोविहिदगुप्त एकह पातक िजियपाल िलाह आ हुनक एक अवमलेख सेहो अकहठामसँ भेटल अवि।

महािजािधिािजि शी चहिदगुप्त पती शी गोविहिद गुप्त माता शी धुिसििविमनी ___

अकहठामसँ बहुत िसि मुदा, अवमलेख आकद भेटल अवि। पातीय शासकक रपमे िजिकुलक लोग कनयुतत होइत िलाह। हुनका लोककनके युििजि कुमािमात्य कहल जाइत िलकह। पाहतीय शासकके अपन अपन महासेनापकत, महादण्डनायक आ अहयाहय कमषािी होइत िलकह। पुणरदिषा भुक्तत आ तीभिुक्ततक केहत ताकह कदनक कविला पातमे िलि। युििजि कुमािमात्यक

अधीन भुक्तितक शासनक हेतु उपरिक नियुक्त होइत छल आ पुण्ड्रवर्धन भुक्तिमे कतेक कायस्थक 'दत' पदवी धारी 'चिरातिदत'क ३-४पुस्त उपरिकक पदपर विराजमान छलाह। उपरिकके प्रातीय शासक अथवा गवर्नर कहल जाइत छल। प्रातीय शासकक मुख्य कर्तव्य निम्नलिखित छल—

i) शान्ति व्यवस्थाके सुरक्षित राखब

ii) कृषि मूलीक व्यवस्थाके सुदृढ राखब

iii) प्रजाक रक्षा करब

iv) सुख-समृद्धिक प्रबन्ध करब

v) राजाक प्रति प्रजामे विश्वास उत्पन्न करब

vi) सीमावर्ती राज्यक आक्रमणसँ अपन क्षेत्रके सुरक्षित राखब।

गुप्तकालमे प्रादेशिक शासक लोकनिक सम्पर्क सोझे राजासँ छलन्हि। सामंतवादिक विकास अन्ययुगमे प्रारंभ भऽ चुकल छल आ एकर प्रभाव शासनपर पड़ब स्वाभाविके छल। उत्खननसँ प्राप्त सामग्रीक आधारपर प्रातीय शासनसँ सम्बन्धित निम्नलिखित कर्मचारीक विवरण भेटइत अछि—

उपरिक, कुमारपालाधिकरण (राजकुमारक मंत्रीक कायालय), बलाधिकरण (सेनापतिक कायालय), दण्डपाशाधिकरण (पुलिस अधिकारीक कायालय), महादण्डनायक (प्रमुख न्यायाधीश), विनय स्थिति स्थापक (कानून आ व्यवस्था मंत्री)।

गुप्तकालमे केन्द्रीय शासनक विभिन्न विभागके अधिकरण कहल जाइत छलैक आ एक प्रकारक विशिष्टीय सेवाक प्रावधान सेहो छलैक। जकरा 'कुमारामात्य' कहल जाइत छलैक। 'कुमारामात्य' साम्राज्यक शासन प्रणालीक स्थायी सेवामे रहैत छलाह आ हुनका

कतहु कोनो काजमे पठाओल जा सकैत छल। ओ लोकक्स पशासक्षक सेहो सदस्य होइत छलाह। कवि हर्षिरेण सेहो अपनाके कुमाारामात्य कहने छथि। कुमाारामात्यक सम्बन्ध प्रातीय आ स्थानीय शासनसँ सेहो रहैत छल। वैशालीसँ पाप्त सूचना पशासक्षक सम्बन्धमे एहि पकारें अछि ——

i) कुमाारामात्याधिकरणस्य

ii) युवाराज पादीयकुमाारामात्याधिकरण

iii) परमभट्टारक पादीय कुमाारामात्याधिकरण

iv) बलाधिकरणस्य

v) रणि भाण्डागाराधिकरणस्य

vi) दण्डपाशाधिकरणस्य

vii) तीरभुक्तौपरिकाधिकरणस्य

viii) तीरभुक्तौ विनय स्थिति स्थापकाधिकरणस्य

ix) तीरभुक्तौ कुमाारामात्याधिकरणस्य

x) वैशालयाधिष्ठानाधिकरण

भुक्तितक अधीन विषय (जिला) होइत छल। विभिन्न सोतसँ इ ज्ञात होइछ जे पालयुग धरि अति अति तीरभुक्तिमे चामुण्डा, होदेय, कक विषय छल आ नौलागढसँ पाप्त अभिलेखक अनुसार एक 'क्रिमुतत विषयाधिकरण' नामक सेहो एकटा पशासक्षक केन्द्र छल। विषयमे पादतर्विक आ गौल्मिक नामक अधिकारी होइत छलाह। अक्षपटलाधिकृत गामक जमीनक लेखा जोखा रखैत छलाह। विषयमे चारि सदस्यक एकटा पतिनिधि सभाक सेहो होइत छल जाहिमे नगर श्रेष्ठी, सार्थवाह, पथमकुलिक आ पथमकायस्थ सदस्य होइत छलाह। विषयपति अपन जिलाक पमुख

व्यक्तितक संग कामलके शासन करैत छलाह। वैशालीमे नगर शासन स्थानीय कागमक हाथमे छल।

अक्हठाम पुण्ड्रवर्द्धन पुक्णाषा (जे कि पूर्वी बर्वलाक अंश छिल अर्छ)के सम्बन्धमे कोनो कबहुदे आवश्यक। पाचीन कालकहुसँ पशासनक, सामर्विक आ सांस्कृतिक दृष्टि कोणसँ पुक्णाषाक महत्व छिल अर्छ आ बर्वलाक सुक्ति सेहो पुक्णाषाक सुक्तिसँ सम्बद्ध मानल गेल अर्छ। गुप्तलोकक पूर्वी पदेशपर अपन नियंत्रण रिखबाक हेतु अक्हठाम अपन शासनक एक पमुख केन्द्र बनौने छलाह। कंकाघमक अनुसार वैशालीक लिच्छवीसंघ सेहो एक्ह पदेश अपन नियंत्रण रिखैत छलाह। पुण्ड्रवर्द्धन भुक्तितक समीकरण पुक्णाषासँ करब अत्यंत स्वाभाविक बुझना जाइत अर्छ। अभिलेखमे कोकामुखस्वामी आ स्वेतवाराहस्वामी उल्लेख भेटइत अर्छ जे नेपालक धनकुटा नामक स्थान लग अर्छ आ पुक्णाषा जलाक अभ्यंतर सेहो। बादमे जे आर अभिलेख सबमे छिकेत्त करै 'पुण्ड्र'क उल्लेख भेटैत से सब पुक्णाषाक संकेत दैत अर्छ। पुक्णाषाक पशासनके नियंत्रणमे राखब अहुलेल आवश्यक छल कारण पुक्णाषाक सीमा नेपाल, असम, बंगालसँ मलैत छल। पुण्ड्रवर्द्धन भुक्तित बंगाल आ बिहारक पूर्वी अंश जलाके छल आ पुक्णाषा ओकर पमुख केन्द्र छल।

हरषक शासन कालमे सेहो बर्वलाक पधानता बनल छिल। राज्यसत्ताक कमजोरीक कारणे राजतंत्रक विकेन्द्रीकरण भऽ गेल छल आ हरषक मत्युक पशात् व्हाहूतमे अराजकता पसर गेल छल जे लगभग ५० वरिष धरि बनल छिल। दोसर बात इहो जे अक्हयुगमे सामंतवादी पवृत्ति दृढतर भेल आ शासनयंतमे एकर पभाव स्पष्ट होमए लागल। चीनी यात्री ह्युएन संग सेहो एक्ह बातक

समषि केने वि। हरषक शासनक मुख्य आधार िल व्यक्तिगत भमण एवं क्रांतिक्रिया आ तै हरषक पतिक भेलापर शासन यंत एकदम ढील भऽ गेल आ चार कात सब केओ अपन अपन हाथ पैर पसारि लगलाह। तकर्हयासँ लऽ कए पाल शासनक स्थापना धरि एक पकारिक अस्थिरता बनल हिल आ क्सर्वलाक केतपर चार क्दक्ससँ आकमण होइत हिल। एकर्ह अस्थिरताक कालोमे तीरभुक्ति एक पमुख पात िल आ उतर गुप्त शासक लोकक्नक मुख्य शासन केन्द्र सेहो जकर पमाण हमरा कटरासँ पाप्त तामलेखसँ भेटइत अवि। कटरा (मुजफ्फरपुर)सँ पाप्त जीवगुप्तक अभिलेखमे तीरभुक्तिक चामुण्डा वरियक आ क्ताक हल पाटकक उल्लेख भेटइत अवि। तारा नामक स्थानसँ इ तामपत देल गेल िल आ ओकर्हमे सुभिकार, याम्या आ हवगामक नामक गामक उल्लेख सेहो भेटइत अवि। एकर्ह तामलेखमे क्रमक्लिखत शासनाधिकारीक विषय अवि ___

i) महासाक्षिधविगक्हक

ii) अक्पटक्लक

iii) साविधकाक्हक

iv) पक्तहार

v) सेनापक्त आ

vi) महासामंत

पालयुगमे तीरभुक्ति एकटा पधान केन्द्र िल। ओना तँ नारायण पाल भागलपुर तामलेखमे तीरभुक्तिक कक (कौशकी ___ कच्छ ___ पगिना) वरिय आ गाम सबक्हक विषय भेक्टते अवि मुदा क्ताहूतक केन्द्र निगारसँ जे ताम अभिलेख (वगिह पाल ततीयक) भेटल अवि ताहुसँ तीरभुक्तिक शासनपर पकाश पडइयै।

पालकालमे जखन कलचुरि शिक आकमणक पकोप बढल तखन पाल लोकक्न अपनाके समेटके तीभिुक्तमे सुकित्त खिलक्न्ह आ एि पकािर अपन सामाज्य आ पक्तष ाके बचौलक्न्ह। क्नविला भौगोक्लक दक्ष ये सुकित्त िल तै ओ लोकक्न एम्हिर घसकक्के एलाह। निगाकि अक्भलेखसँ जात होइि जे तीभिुक्तमे हौदेय (आधुक्नक हिदी गाि सहिसा) विरय सेहो िल। गुप्तयुगसँ कणाटिशक सिापना धिव तीभिुक्त शासनक एकटा पधान केह्न्द बनल हिल। ११म शताब्दीक दूटा अक्भलेख चम्पािणिसँ हालक्हमे उपलब्ध भेल अिव जाक्हसँ ताक्ह क्दन शासन पणालीपि कक्ि पकाश पडइयै। गोिखपुिसँ चम्पािणि धिव केत्तके दिद गण्डकी देश कहल जाइत िल आ पशासक्नक इकाइक क्हसाबे दिद गण्डकी मण्डल जकिा अधीनमे विआक्लक्स विरय (४२गाम) िल। एक्ह लेखसँ इ स्पष्ट अिव जे अक्हठाम विरय मण्डलक एकटा िाट अंग मानल गेल अिव। चम्पािणिक इ दुनूटा अक्भलेख कणाटक पूषिविक आ पक्तहाि लोकक्नक सताक कमजोि भेलापि इ लोकक्न संभतिः एक्ह केत्तपि अपन सता सिाक्पत केने िलाह। एक्ह दुनू अक्भलेखमे क्नमक्लक्खत पशासक्नक शब्दािली भेटइत अिव।

i) िाणिक, ii) ठाकुि, iii) अमात्य, iv) पुिोक्हत, v) महामतक, vi) महासाक्न्धविगक्हक, vii) महापक्तहाि, viii) महाक्षपटक्लक, ix) महासाधक्नक, x) महापीलुपक्त, xi) महासेनापक्त, xii) महाकटकाध्यक, xiii) दुष साध्यासाधक्नक, xiv) दाक्णडक, xv) दण्डपाक्शक, xvi) शौक्लकक, xvii) गौक्लमक, xviii) दूतसंपेरक्णक, xix) तलविाक्षक, xx) अंगिकक, xxi) चाट भाट, इत्याक्द।

एकहमे विगाषा बहुत िसि शब्दािली पाल अवमलेखमे सेहो भेटल अिव। एकह अवमलेखसँ इहो अनुमान लगाओल जाइि जे क्मविलाक सीमा पवशममे शािसिती भुक्ततसँ पवशमोतमिे ददि गण्डकी देशसँ आ पूबमे पुण्र दिषा भुक्ततसँ क्मलल जुलल िल। एिँ पकािँ समस्त उतिि क्महाकि पक्तकवधित पाचीन कालक तीभिुक्तत किँत िल आ अवह दवा कोणे एकि पशासवनक महति अवद्वतीय िलैक जे मुगलकाल धिि बनल िहलैक। उतमिे कणाट लोकवन क्समिँिनगढ धिि बढले िहैत आ ओतए अपन िजिधानी बनौने िहैत। गाममे गाम पंचायतक व्यिसिा िल आ अवमलेख सबमे पञ्चमण्डली आ पञ्चकुलक उल्लेख भेटइत अिव।

१०९७मे जखन कणाटिशिक सिापना भेल तखन पुनः शासन व्यिसििक संगठन क्मविलाक आिश्यकताक अनुकूल गवठत भेल यदवा एकि आधाि िल सामंतिादी व्यिसिा। नान्यदेि अवहठामक शासन व्यिसििके सुगवठत केलवन्ह आ क्मविलाक क्जीगौिि एिँ विशिष ताक विकास सेहो। नान्यदेि सियं कणाट िशिक संसिापक िलाह तै शासनमे हुनक पधानता िहब सिाभािविके। शासकक पधान िजिा होइत िलाह। पजाक विि कबि उक्चत बुिल जाइत िल चण्डेशि तँ पजाके विष्णु कहने ििि। िजिा शासन, न्याय एिँ पशासवनक यंतक अध्यक होइत िलाह। शासनके सुरक्षपूणष ढँगसँ चलेबाक हेतु िजिा बिबि पाचीन पिम्पिा एिम माह्यताके ध्यानमे िखैत िलाह। शासकक संगवह संग क्मविलाक िजिा पवसद विदानो होइत ` लाह आ उदाहिणि सिरिप हमिि लोकवन नान्यदेि, िमवसंह देि, वशािवसंह, लवखमा, विशिास देिि आवदक नाम लऽ सकैत िी। िजिा लोकवन

पिमेशि, पिमभटाकि, महाििजाविाज, महानपक्त, कक्तपाल, भूपाल, कविलावपक्त, भुजलि भीम, भीमपिाकम, कणाटचूडामवण, दशमदेि अिताि, एकादश अिताि, भूकपक्त, मुकुटमवण, आवद पदिीसँ विभूवरत होइत छलाह। नाह्यदेि, गंगदेि, िमिवसंहदेिक शासन धवि तँ कोनो पकािक गोलमाल देखबामे नवह अिइयै पिञ्च शक्ततवसंहदेिक शासनकालमे मंती लोकवन शासन सता अपना हािमे लऽ लेने छलाह। सामंते मंती होइत छलाह। शक्ततवसंहक कठोि शासनसँ ओ लोकवन उवब गेल छलाह तै हुनकासँ सब अविकाि िीवनके अपना हािमे लऽ लेलवन्ह। मंवतायेक संििणमे बहुत वदन धवि हविवसंह देि नाम मातक शासक छलाह। सामंतिादी व्यिसिाक फले िाजाक शक्तत कीण अिश्य भेल छल मुदा शक्ततशाली शासक अपन अविकािक उपयोग कइये लैत छलाह। हविवसंह देि, वशिवसंह देि, भैिि वसंह देि आवद शासक एकि उदाहिण विक। सामाह्यतः िाजाके सामह्तक बलपि वनभि किए पडइत छलवन्ह।

िाजाके सहायता देबाक हेतु मंवतपविरदक व्यिसिा सेहो छल। कविलामे पधानमंतीके महामतक कहल जाइत छल। अह्हििाढी आ हिििडीह अविलेखमे पधानमंती लोकवनके मंतीक नामसँ संबोवित कैल गेल अवि। मंती लोकवनके संवि, विगह, यान, आसन, दैधीभाि, आ संशयक पूणषजान हैब आिश्यक बुिना जाइत छल। शीधिदास एिँ िितदेिक िशज कविलामे बहुतो वदन धवि मंती पदक भाि सम्हािने छलाह। शीधिदासके सेन िशि वदवसँ महामण्डवलकक पदिी भेटल छलवन्ह। िितदेिक िशजके सामंतिादी पदिी 'िउत' छैवन्ह आ विदापवतमे िितदेिक िशज िउत

िजदेकि उल्लेख अवि। िमाक्दत्य, कमाक्दत्य, िीशि, देिक्दत्य, गणेशि, चंडेशि आक्द सेहो पमुख मंतीगण क्सवलामे भेल िवि। शक्ततक्संहक क्नकुिश शासनसँ जखन मंतीगण उक्ब गेल िलाह तखन ओ लोकक्न सात बदक एकटा पवरिद बनौलक्न्ह आ शक्ततक्संहके गदीसँ उतावि ओक्ह पवरिदक हािमे शासन भाि देलक्न्ह। एक्हसँ मंक्तपवरिदक व्यापकता एिँ अक्धकाकि पता लगइयै। पािि जखन हवक्संह देिि यिस्क भेला तखन हुनक िजिाक्भरेक भेल। ताक्हसँ पूिि संभतिः चण्डेशि िजियक भाि सम्हािने िलाह। चण्डेशि साक्धवगक्हक िलाह। हुनका महािक्तषक नैबक्न्धक सेहो कहल गेल अवि। एक्हसँ पत्यक अवि जे चण्डेशि बडड शक्ततशाली मंती िलाह। मंती लोकक्न सामंत, महासामंत, माडक्लक, महामाण्डक्लक, महािजि, महामतक आक्द पदिी एिँ उपाक्धसँ वभूक्रत होइत िलाह। इ लोकक्न हदयसँ दान इत्याक्द सेहो कीति िलाह आ एक्ह क्दशामे िीशि आ चण्डेशकि नाम अगगण्य अवि। चण्डेशकि अधीन जे एकटा सामक्त हवबिह िलाह क्तनक एकटा पद पाकत पैगंलममे सुक्कत अवि। मंक्तपवरिदक अक्तवतित आिि कतैक पदाक्धकािि होइत िलाह जेना—

i) महामुदाक्धकत

ii) महासािक्धकत

iii) महाधमाध्यक

iv) धमाध्यक

v) पाडविक

vi) कोराध्यक

vii) सििातवकि, इत्याक्द।

गाम शासनक न्यूनतम इकाइ छल। गामक अध्यक्षके गामपक्त कहल जाइत छल। गामपक्त कर वसूल कए राजाक ओतए पठबैत छलाह। गुल्म सेहो एकटा गाम पदाधिकारी होइत छलाह। तीन अथवा पाचटा गामके मलाके एकटा गुल्म नियुक्त होइत छलाह। एकर अतिरिक्त दश गामपक्त, विंशक्त गामपक्त, शतांशक्त गामपक्त, सहस्त्र गामपक्त, इत्यादिक उल्लेख सेहो भेटइत अछि। प्रत्येक गाममे एकटा मुखिया होइत छल। केन्द्रीय शासन गाम शासनक सफलतापर निर्भर करैत छल। गाम सभामे राजनैतिक, आर्थिक, सामाजिक, आ सांस्कृतिक आदि विषयपर विचार विमर्श होइत छल। गामक झगड़ा दन गाम सभामे फरियैल जाइत छल। जखन गाम सभा फरियैबामे असमर्थ होइत छल, तखने उपरका अधिकारीक ओतए ओ पठाओल जाइत छल। सर्वक लाक समस्त राजनैतिक संगठनक आधारशिला छल गाम सभा। गाम सभाक पदाधिकारीके पारिश्रमिक भेटइत छलन्हि जकर विवरण निम्नांकित अछि—

i) दशेश—दश गामक अधिकारीके जोतबाक हेतु ओतेक जमीन भेटइत छलन्हि जतेक ओ एक हरसँ स्वयं जोतैत सकैत छलाह।

ii) विंशत्यंश—बीस गामक अधिकारीके चारिटा हरसँ स्वयं जोतैत सकबा जोकर जमीन भेटइत छलन्हि।

iii) सतेश—एक सौ गामक अधिकारीके एकटा सम्पूर्ण गामे भेटइत छलन्हि।

iv) सहसाधिपक्त—एक हजार गामक अधिकारीके एकटा सम्पूर्ण नगर भेटइत छलन्हि।

गाम शासन संगठनक पसंगमे गंगदेकि नाम अगगण्य अवि। क्ववि लामे एकि सिषिोष शेय हुनके िक्हि। ओ समस्त क्ववि ला ािज्यके ािजसि पशासनक दक्ष कोणसँ कतेको पिगिनामे बटने िलाह आ पत्येक पिगिनाक हेतु चौधिी आ कोतािल क्ायुतत केने िलाह। इएह लोकक्ि गाम शाक्ि आ ािजसि िसूलीक हेतु उतिदायी होइत िलाह आ क्हनके लोकक्िक योग्यता आ सहयोगपि केहन्दीय शासनक सफलता क्ाभषि किति िल। गाम शासन आ केहन्दीय शासनक मध्य सम्पकष सिािक्ायत किबाक हेतु आ ओकिा बनाके िखबाक हेतु एक पकाकि विशेर कमषचािी होइत िलाह जकिा ‘क्स्निगध’ कहल जाइत िल। ‘क्स्निगध’के गाम विभागक मंत्रायो कक्ह सकैत िी। यदा कदा ‘क्स्निगध’क सिािषपूणषआचिणिसँ गामीण तबाहो होइत िलाह। ‘सिािषि क्ाितकम्’ नामक एकटा अधिकािी आ होइत िलाह क्जनका गामीण लोकक्ि ‘िहु’ बुिैत िलविह्ह। गाममे पंचायतक चुनािि जनतांक्तक पदक्तसँ होइत िल आ क्ववि लामे एकि पिम्पिा बडड पाचीन िल। पत्येक गामक हेतु पुक्लस (आिक्ि)क क्ायुक्तत सेहो होइत िल। पत्येक क्दन पुक्लस लोकक्िके अपन काजक ब्योिा गामक मुक्खयाके देमए पडइत िलक्हि। जँ कतहु कोनो गडबडी भेल तँ ओक्ह हेतु पुक्लसके उतिदायी ठहिाओल जाइत िल।

क्ववि लाक अक्भलेख आ पाचीन पोिी सबमे बहुत िसि पशासक्तक शब्दािली भेटइत अवि जाक्हसँ बुवि पडइयै जे ओ सब ताक्ह क्दनमे क्यिहािमे िल। संगामगुप्तक पंचोभ तामलेख(१३म शाताब्दी)मे क्ामक्लक्खत अधिकािीक विििण भेटइत अवि ——

i) महािािजाधिािज िणषाितािकमे ——

ii) महामाण्डक्लक

iii) महासाक्न्धव गिक्हक

iv) महाव्युहपक्त

v) महाव्धकाव कि

vi) महामुदाव्धकाव कि

vii) महामत क

viii) महासाधक्नक

ix) महाकटुक

x) महाकणिाध्यक

xi) िक्नाषैबक्न्धक

xii) महादण्डनायक

xiii) महापंचकुक्लक

xiv) महासामक्नतािणक

xv) महाशेक्न दाक्नक

xvi) गुल्नपक्त

xvii) खण्डपाल

xviii) नपिक्त

xix) महौक्त क

xx) महाधमाव्धकिवाक, इत्याक्द।

i)भूपाल

ii)माण्डक्लक

iii)सामक्नत

iv)सेनापक्त

v)पुपिक्त

vi)मंती

vii)पुिक्हत

viii) धमाव्धकणि

ix) साक्न्धव गिक्हक

x) महामत क

xi) पातबलकणिाध्यक

xii) शाक्तकिवाक

xiii) दुगषाल

xiv)िजगुर , इत्याक्द।

चण्डेशिक िजनीक्त िताकि:- भािीय िजनैक्तक विचािधािक विकासक इक्तहासमे क्नवलाक चण्डेशिक सिन अगगण्य अवि। ओनातँ भािमे िजनीक्त शास्त्तपि पाचीन कालक्हसँ गंि क्लखल जा िहल अवि आ एकि पमाण हमि महाभाित, शुक, उशनस आ कौक्टल्य ति कामक्न्दकमे भेटइत अवि। एक्हमे

कौटल्यक गं ि सविशेष अछि आ पाि सब केंओ ओकिं अनुकणि केने िछि। चण्डेशि गं ि िजिनीक्ता िताकिमे सब पूिाचायक मत उदत अछि।

मध्ययुगीन वि चािकिमे चण्डेशकि नाम वि शेर र पे उल्लेखनीय अछि। ओ एक संभाह्न्त, पक्ताक त एि वि दान पिछिािमे जह्म गहण केने िलाह। ओ देिवदत्यक पौत आ िीिशकि पुत िलाह आ इ तीनु गोटए कणाट शासक हिविसंह देिक शासन काल मंती पदके सुशोिभत केने िलाह। हिनक िपती धीिशि, शुभदत आ लक्ष्मीदत तिा गणेशि सेहो पैघ पैघ िजािधकािी िलाह। ओ लोकिन अपना युगक धुह्हिि वि दान सेहो िलाह। चण्डेशि िवि लाक पक्सद कबह्धकाि भेल िछि आ कत्यिताकि, दानिताकि, व्यिहाििताकि, शुद्ध िताकि, पूजा िताकि, गहसि िताकि, वििाद िताकि, िजिनीक्ता िताकि हिनक पमुख िचना भेल िक्ह। मिवि लाक धमषव्यिसिा आ कानूनक पसंगमे हिनक वििाद िताकि आ िचिसमकाक विवाद क्वंतामिण पामािणक गं ि मानल जाइत अछि। सिातषवि रियपि क्लखल हुनक गं ि कत्य क्वंतामिणमे उत्सि संस्कािकि िणिा अछि। चण्डेशकि व्यक्तित एि कक्ताकि पभािा उतििती वि दानपि सेहो देखबामे अिइयै। मैिवि ल आ बंगाली वि दान हुनकासँ पभावि त देखल जाइत िछि। िासरिमश, िदिान, िचिसमक्त िमश, आ िघुनंदन चण्डेशिसँ एतेक पभावि त िछि जे ओ लोकिन अपना गिमे हुनक गं िक असंख्य उदाहिण देने िछि।

ओइनिािि िशिक ििजा भिशिक आजासँ चण्डेशि िजिनीक्तािताककि िचना केलक्ह। ओक्हयुगक दशा ये एक्ह गं िक बडड महतिि अछि। िजिनीक्त वि रियपि इ एकटा पौढ गं ि मानल

गेल अिछ। एिहमे १६टा तरंग अिछ आ सबहक व्यवसिथत एवं कमबदतापर चण्डेशवर िवशेर ध्यान देने छिथ। िवरय पितपादनक दृिष्टये सेहो इ महत्वपूणर मानल जा सकइयै। सोलहो तरंग एवं पकार अिछ ____

i) राजाक कमर पण, x)सेनापितक कमर पण

ii) मंतीक कमर पण, xi)दूतक कमर पण

iii) पुरोिहतक कमर पण, xii) राजाक सामान्य कायरक कमर पण

iv) पाडवि िकक कमर पण, xiii) दण्डक कमर पण

v) सभ्यक कमर पण, xiv)राज्यव्यवसथाक कमर पण

vi) दुगरक कमर पण, xv)पुरोिहत आिद दारा राज्यदान कमर पण

vii) मंतणाक कमर पण, xvi)राज्यािभरेक कमर पण

viii) कोरक कमर पण,

ix) सेनाक कमर पण,

अिहठाम दृषव्य जे चण्डेशवर पिहने िविजगीरु राजा अमात्य एवं अन्यान्य पिरकर आ राज्यव्यवसथाक पितपादन केला उतर राज्यािभरेकपर सबसँ अंतमे िवचार कैलिन अिछ। राजाक वासतिवक एवं न्यायसंगत उतरािधकारी भेला ज्येष पुत आ तैँ राज्यािभरेक हुनके हेतैिह आ ताही पसंगक एिहमे िवसतृत वणरन अिछ। पत्येक िवरयक कमर पण करबाक पूवर चण्डेशवर पारिभमे कोनो पामािणक िवदानगण अथवा राजनीितजक मतक उदरण दैत छिथ आ तखन अपन मत सथािपत कैलिन अिछ। पारसपिरक मतान्तर एवं िवरमतामे समन्वय सथािपत करब हुनक लक्ष्य बुझना जाइत अिछ। एिह गंथक पणयनक कममे ओ वेद, पुराण, धमरशास्त, स्मृित गंथ, सूत

गंि, ािजनीक्त विरयक गंि आक्द अध्ययन कए ओकि समह्वयि सािवम्त कबिाक दक्र ये सिषिाह्य क्सदातक सािपना सेहो। पत्येक विरयक सागोपाग विििचिन कबिामे ओ बीच-बीचमे अपन सिितंत क्टप्पणी सेहो देने िवि जाक्हसँ इ स्पष अवि जे ओ कोनो बातके आँक्ख मुक्तके नक्ह मानए बाला िलाह। एक्ह आलोचनात्मक क्टप्पणीसँ गंिक उपयोवाता आ विलक्ष्णता बक्ढ गेल अवि। कोनो दक्र ये देखला उतिि इ क्तविषिाद अवि जे ‘ािजनीक्त तािकि’ अपना ढँगक एक अपूिष गंि अवि आ ािजनीक्त क्तंतनक केत्रमे क्तविलाक इ अनुपम देन अवि। पाचीन पाविभाक्रक शब्दक अिषिोधक हेतु चण्डेशाि जे पदक्त अपनौने िवि से विशेर रपे उल्लेखनीय अवि। विक्भन पमाणसँ अपन तकष्के पुष कऽ कए ओ अपन मतक सािपना केने िवि आ ओक्हमे समह्वयि सािवम्त कबिाक पयास सेहो। अपन गंिक अंतमे ओ क्लखैत िवि “मनु एिँ अह्य स्मक्त गंिमे क्तरवात ािजनीक्तक अगाध एिंमि विशाल सागसिँ साििरिप तिक चयन कए एिँ नीक्त क्तबंधक सिषिम्मत मतक संकलन कए हम एक्ह गंिक ििचना कैल अवि जे भगािनके माह्य हेतैक्ह, ािजा दाािि समादत होएत आ उदाि व्यक्ततक ऐशयषक्विक हेतु लाभदायक क्सद हेतैक्ह”।

मध्य युगमे जखन क्क ािजनीक्त विरयक पुस्तकक कोनो अभाि नक्ह िल तखन चण्डेशाकिे इ पोि़ी क्लखबाक आिश्यकता क्तएक भेलैक्ह से एकटा विचािणीय विरय। इ गंि क्लखबाक पािि चण्डेशाकि अक्तपाय इ िल जे पत्येक ािजा धमष आ अिषिे सामंजस्य सािवम्त कििित ह्यायोक्वत मागष चक्लके ािजनीक्तक िास्तविक कतष्य एिँ दाक्यतिक क्तािहि कििि। सोलहो तिगिक

पक्षपाद विरय देखला उतिइ स्पष्ट भऽ जाइि।

i) िजा:- चण्डेशि मनुक मतक उदिणि दैत लिखने िवि जे संसाकि किािषपजापक्ष िजाक सक्षम केने िलाह। पजाक िक्षा कैकहािि िज्याक्रमकक पुरकके िजा मानल गेल अवि। याजल्क्य दाि िवगाि िजाके अपेक्षक्त गुणक िणिाि सेहो कैल गेल अवि। एक्ह गुणक अक्षावतित चण्डेशकि अनुसाि िजाके धाक्षक सेहो हेबाक चाही। तीन पकाकि िजाक िणिाि ओ कोंति िवि समाट (चकतिी), सकि (कि दै िला) आ अकि (कि नक्ह दै िला)। तीनुक धमष आ गुण एक समान होएबाक चाही। पजाक पालन, विदान, बद एिं बाहणक िक्षा िजाक मुख्य कतषष्य मानल गेल अवि। िजाके विभिन विरयक जान हिबाक चाही। व्यसन िवहत िजाके एक्हक आ पािलौकक सफलता भेटइत िैक आ अहयाय केक्हाि िजाक शीघक्ह नाश भऽ जेबाक संभािना िहैत िैक। चण्डेशि कौवटल्य दाि कधावित िजाक कतषष्य आ अवधकाकि चचषनक्ह केने िवि।

ii) अमात्य:- िजाके चाही जे ओ सात आठ सुपविक्षत व्यक्षतके अमात्य क्षयुतत कोंि काणि ओक्ह वबनु िजि काज चलब असंभि। सक्षि विगह आवद पशपि िजाके अमात्यक संग विचाि विमिशष कििबाक चाही। अमात्यक पविरदके मंक्षपविरद कहल गेल अवि।

iii) पुिोवहत:- िदि िदािष्क जाताके पुिोवहतक पदपि क्षयुतत कििबाक चाही। शौत स्मातष कायषि िजाके पुिोवहतक संग क्षत्विजक क्षयुक्षत कििबाक चाही।

iv) पाडविािक:- धमषएिमि हयाय व्यसििक हेतु पाडविािक

(मुख्य न्यायाधीश)क नियुक्ति आवश्यक मानल गेल अछि। पाड्विवाकके कुलीन, शील सम्पन्न, गुणी, सत्यनिष्ठ, निर्भीक, चतुर आ निपुण होएबाक चाही। पाड्विवाक तीन सभ्यक संग मिलिके निर्णय दैथि से सर्वोत्तम एकमतसँ निर्णय हो तँ ओकरा धार्मिक निर्णय मानबाक चाही।

v) सभा सभ्य:- चारि प्रकारक सभाक निर्देश भेल अछि प्रतिष्ठिता नगर अथवा ग्राममे आयोजित कैल गेल सभा जे राजा द्वारा आहूत हो तकरा मुद्रिता कहल गेल अछि।

अप्रतिष्ठिता कोनो गाममे आयोजित होइवाला सभाके अप्रतिष्ठिता कहल गेल अछि।

मुद्रिता जाहिमे अध्यक्ष एवं न्यायाधीश विराजमान होथि।

शासिता जाहिमे राजा विद्यमान होथि।

सभाक दश अंग कहल गेल अछि राजा, अधिकारी (प्रतिनिधि), सभासद, धर्मशास्त्र, गणक, लेखक, सुवर्ण अग्नि, जल आ दण्डधारी। राजा शासन करैत छथि, अधिकारी निर्णय करैत छथि, सभासद मुकदमाक कार्य करैत छथि, धर्मशास्त्र निर्णयक काज करैत अछि, गणक हिसाब लिखैत छथि, लेखक न्यायालयक कार्यवाही लिखैत छथि, सुवर्ण अग्नि आ जल शपथक सामग्री भेल। उत्तम कार्यक अवधारणा, सत्य धर्मक पक्ष अनुचित प्रलोभन एवं क्रोधक व्यक्तिके राजाके सभ्य चुनबाक चाही। एहने लोग धर्म आ कर्मक ज्ञाता होइत छथि। निर्णयक शुद्धता सभासदक शुद्धतापर निर्भर करैत अछि। अधार्मिक बातक प्रतिवाद करब हुनक प्रमुख कर्तव्य थिक।

vi) दुर्ग- राजाक हेतु दुर्गक निर्माण करब आवश्यक छल। छह प्रकारक दुर्गक चर्चा कैल गेल अछि। राजाके स्वयं

वार्वि दुगषे आशय लेना चाही कारणि सब दुगषओकाि शेष मानल गेल िैक। पत्येक दुगषे सब कि्ु हिबाक चाही।

vii) मंतणा:- एकात िजभिन अििि जंगलमे जतए मंतभेदक कोनो आशंका नहि हो ततए गुप्त मंतणा कबिाक चाही। मंतणाके सब तहि गुप्त िखिब आिश्यक।

viii) कोर:- एहने कोरके पशंसनीय मानल गेल अवि जाहमे दव्य जमा हो मुदा बाहि नहि कैल जाए। िजाके कोरक विृिक हेतु सतत पयतशील हिबाक चाही।

ix) सेना:- िजाके सेना आ बलक व्यिसिापि पूणष ध्यान देबाक चाही। एहमे िहि पकािकि सेनाक संयोजनक चचष भेल अवि।

x) सेनापित:- हस्ति, अश, िि, पदाित सेना, सेनापितक अधीन िहैत अवि आ एहि पदक सेहो ओतबि महत्व अवि जतबि पुिोहित आ अमात्यक। पुरराषि युतत, लोकव्यिय, दक, शस्त्रास्त्रसँ युतत, िणि विदामे कुशल, पििसिक संकटके सहएिला व्यितके सेनापितक पदपि िनयुतत कबिाक चाही।

xi) िजदूत आ गुप्तचि:- सन्धि एिं विगहक दाियत्व िजदूतपि िनभषि किैत अवि। एहपि एहि गंिमे विशेर विचाि कैल गेल अवि। दूतके सच्चिवत, चतुि, मेधािी, देशकालक जाता, िनभीक, आ सुितता होएबाक चाही। दूतके िजाक मुँह कहल गेल अवि। दूतके मािबाक नहि चाही चाहे ओ मलेच्छि िकयैक ने हो? गुप्तचि सेहो िजयक पमुख अंग मानल गेल अवि। सििमष्ट आ पििमष्टक ििस्तुिसििितक पता लगाएब गुप्तचिक मुख्य कायषििल।

xii) ाजाक सामान्य कायक्ष- एक्ह पसंगमे मनुक सहाा लैत चण्डेशा क्लखैत वि ___

i) युदसँ विमुख नक्ह हैा।

ii) पजाक पालन।

iii) बाहणक सेाा।

iv) सक्न्ध, विगह, यान, आसन, दैधीभाा, संशय (रडगुण)क क्चंतन ___ मनन कबि।

v) साम दाम दण्ड भेदपा विचाा कबि, दण्डक पयोग तखने कबिाक चाही जखन सब उपाय क्नाष्फ क्सद हो।

vi) ाजाके धनक टोहमे बाबिवा हिबाक चाही।

vii) ाज्यक क्ति आ अपन सुक्ति।

xiii) दण्ड:- शाावकि आवषिक देशकालके ध्यानमे ाक्ख दण्ड विधान बनेबाक चाही।

xiv) ाज्यक उताक्धिकाा:- सुयोग्य ज्येष पुतके देबाक चाही।

xv) पुाक्हतक हाा ाज्याक्भरेक:- उताक्धिकाा सौपबाक पूक्षह जँ देहाासान भऽ जाए तँ पुाक्हत आ मंती दाा ज्येष पुतके अक्भक्रतत कबिाक चाही। जँ कोनो पुत नक्ह हो तँ ाजाशिक कोनो उपयुतत व्यक्ततके चुनबाक चाही।

xvi) ाज्याक्भरेक:- ाजा अपन जीाा कालक्हमे ज्येष पुतके युााज पदपा क्नयुतत कऽ सकैत वि। जँ कोनो पुत नक्ह हो तँ पजा आ बाहणक पामिशक्षसँ कोनो समीपाती अन्य व्यक्ततके ओक्ह पदपा आक्नके ाज्याक्भरेक कैल जा सकइयै। अक्भक्रतत युााजके मान्य पाम्पाकि अनुसाा चलबाक चाही। धमक्षशास्त आ अाक्षशास्तमे विाधि भेलापा मध्यम मागक्ष अाललंाा कए अपन व्याहाावकि बुक्दसँ

िजस्यक संचालन कबािक चाही।

चण्डेशि अपन िजनीक्त ितािकिमे अमिसंह, कात्यायन, कामन्दक, कुल्लूक भट, कौटल्य, नािद, भागिति, मनु, याजिलक्य, िमायण महाभािति, लक्ष्मीधि, िक्सष, विष्णु, बहस्पक्त, व्यास, शुक, शीकि, हािीत, आक्दसँ मत उदत केने िवि। िजनीक्त ितािकि एक पकाि संगह गंिवि क आ मध्य युगमे जखन लोग सब मौक्लक गंिक अिगाहन कबािमे असमि षिलि तखन चण्डेशि एक्ह गंिक िचना कए ओक्ह अभािकि पूक्त षकेलक्ह। एकि लोकक्पयता एिँ पक्सक्द्ध इएह कािणि अवि।

चण्डेशकि िजनीक्त ितािकि क्मविलाक हेतु एकटा आदशष गंिभेल आ तदनुसािक्मविलामे शासन पदक्त संगक्ठत भेल जकि पमाण हमिि ओइनिािि िशक शासन पदक्तसँ लगइयै। देिक्संह अपना जीितिक्ह क्शिक्संहके युिििज बनौने िलाह। अक्हठाम इहो स्मिणि िखबाक अवि जे १३२५क बाद क्मविलमे मुसलमानी अमल पाििभ भऽ चुकल िलि आ अक्हठाम मुसलमान शासकक पक्तक्नक्ध सेहो िहैत िलाह। अक्हबातके ध्यानमे िक्खयेके चण्डेशि अपन िजनीक्त ितािकिमे विचाििक पक्तपादन केने िवि आ अपन समर्हियििदी पिक्तक पवचिय सेहो देने िवि। सामंतिदी कुलीन लोकक्नक पभाि तँ सहजक्ह बक्ढये गेल िलि। विदापक्तक िचना आ अहयाहय साधन सबसँ क्मक्लक्खत मंती आ कुलीनक नाम भेटइत अवि।

i) अच्युत,

ii) महेश,

iii) िक्तधि,

iv) क्तिपक्त आ शंकि,

v) िचस्पक्त (पर्वरिद िलाह),

vi) िउत िजिदे,

vii) अमतकि आ अक्मि िकि,

viii) गणेशि,

ix) चण्डेशि।

ह्याय व्यसिाक क्तेमे व्कवलाक योगदान वशिर िहल अिव आ ताहुमे फौजदाि िक क्तेमे सेहो। िधषानक दण्डवि िकि कानूनक एक पमुख पोि ि मानल गेल अिव। ह्याय व्यसिामे जावा सेहो देखल जाइत िल आ तदनुसाि अवमयुततके सजा देल जाइत िल। सब क्कि ि होइतहुँ िदषान बहुत अिषे स्पष िका िलाह आ मूल सत्यके पकडने िलाह। हुनक वशिास िलव्ह जे लोभ आ अजानताि शे क्दिनी मुकदमाक संख्या बढैत अिव। हुनक विचाि िलव्ह जे अवमयुततके एव्ह व्हसाबे सजा देल जाइव्ह जे पुनः ओ ओहन काज नव्ह कएि आ ओकि ि चर्वतिमे सुधाि भऽ जाइक। बाह ण अवमयुततके सुर्वधा भेटइत िलव्ह। गैि कानूनी ढंगसँ दोसिक चीज िस्तु लेबके चोि ि कहल गेल अिव आ एव्ह पकाि कि तीनटा िगीकिण िदषान कएने िवि ___

i) साहस कत (डकैती)

ii) पकाशतस्कि (ठग)

iii) अपकाशतस्कि (चोि)

िदषान दण्डक िगीकिण एिँ पकाि केने िवि ___

दण्ड
िक् कधक् धन् धि् कािसन्
धन्
धनदण्ड सििषिहिणि
धि
पीडन अंगचि्द पमापण
पीडन
ताण्डि अििधिन बहुधन विडमबन

िचसमपक कशक अनुसाि सजा देबाक अविधकाि िजाके िक्ह। हनयायपालकाक अधयक िजा होइत िलाह आ हुनका कानूनक पालन कए पडइत िलक्ह। कानूनमे सावमक र प 'बरल'के विशास नक्ह कैल जाइत िल आ तै साकी ओ नक्ह भऽ सकैत िलाह। कानून आ िजनीकाक दवा ये िचसमपकाक विदिकंतामवा, नीकाकंतामवा आ विदि कणषा महतिपूणषमानल गेल अवि। विदापक सेहो एकटा कानून गंि कलखने िलाह जकि नाम िल विभागसाि। िकीलके कमविलामे कयाहािविक कहल जाइत िल।

मुसलमान लोकक शाकसुिकाक हेतु ठाम ठाम कोतिलक कयुकत कैति िलाह आ कोतिल शबदक कयिहाि हमिि विदापकमे सेहो भेटइत अवि जाक्हसँ इ सपष होइि जे कोतिल कमविलाक शासन पणालीक एकटा पमुख अंग बक चुकल िल। विदापकमे कोतिलक हेतु कोटिि शबदक कयिहाि अवि। बादमे कोतिलक सिान फौजदाि लेलक। काजी, खिजा, मखदुम आकद शबदक कयिहाि कमविलाक शासन पणालीमे शुर भऽ चुकल िल।

जिघंटक वर्णि सेहो भेटइत अछि। कीर्तिषताकासँ कतमकलियखित व्यक्तत (पदाधिकारी लोकनि?)क नाम उपलब्ध होइयै।

सूजि, जिनहृदन, हदित, वमखु, पुण्डमल्ल, गोपाल मल्लिक, जयसिंह, हर्षहि, जिदेि, केदादिास, सोहन, मुर्वि, मिसिंह, पर्थीसिंह, वदिु, दामोदि, जर्नजिन, सोने, वदाधि, कमलाकि, शीमि, शीशाखो, सनेही ि। इ सब गोटए जियक पदाधिकारी लाह। गोपाल मल्लिक आ पुण्डमल्ल धनुर्विद्यामे निपुण लाह। उित जिदेि योदा लाह। युदक णिषाक कममे ज्योतिरीशि ठाकुि ३६पकाकि सिस्तासक नाम वानौने र्वि आ वदिापक्त सेहो सेनापक्त, दलपक्त आ िउतक णिषा केने र्वि। ज्योतिरीशि 'िजनीत' शब्दक व्यहािि केने र्वि आ िजनीत केकहाकि हेतु 'ततजि' शब्दक। िजनीताकताक ततजि कममे ''मंतगोपन, मत्यमणि, देशकिा, लािलिजान, कोरसंचय, व्युहचिना, व्युहपशि, व्युहभंग, शंशय''क वर्णि णिषा िताकिमे अछि। वदिापक्तक लखनालीमे कतमकलियखित शब्दालि भेटइत अछि ——

i) महापक्तक ठकुि
ii) महामतक ठकुि
iii) महासूपकापिक्त
iv) महापाणागार्वकि ठकुि
v) सिसागर्वकि
vi) पाकयगार्वकि
vii) महादश नैबन्धिक ठकुि
viii) महादेिगार्वकि ठकुि
ix) कोरागाि

x) महाभानुगार्विक

xi) दलपक्त

xii) िउित

xiii) कात्यष

xiv) ओसर्व

xv) मोकद्म, इत्याक्द।

खण्डिला कुलक समयसँ मुगल अक्धकारी क्तािहूतमे िहिए लागल। सम्पक्त क्तवला तीन पमण्डलमे िवभतत अर्व क्तािहूत, दिभंगा आ सहिसा।

अध्याय 16

क्षर्व लाक सामाव्जक इक्तहास

क्षर्व लाक अक्स्तत्व ि क्क्दक कालक्हसँ अदा ाक्ध सुक्क्त्त अर्व । क्षर्व लामे आयष्क आगमनक पूषि क्षर्व लाक सामाव्जक क्यसि ाक र पिखा केहेन िल से कहब असंभि । ओकि ठीक ठीक अनुमान लगायबो संभि नक्ह अर्व । क्षर्व लाक संस्कक्त्तक अर्व विन पभाि हिल अर्व । आजुक क्षर्व लामे हमि लोकक्त्त जे देखैत ि ी ताक्हसँ बहुत क्भन ओक्ह क्दनक असि ा सामाक्ष्य जनक हेतु नक्ह िल। पत्येक देशक अपन अपन देशगत वशिरता होइत ि क आ ओक्हपि ओक्ह देशक भूगोलक पभाि क्हते ि क। क्षर्व ला एक्ह क्तयमक अपिाद नक्ह हिल अर्व आ हिबे क्तएक कि ति? सामाव्जक क्तयमक क्तमाण कोनो एक क्दनमे नक्ह होइत ि क आ सामाव्जक क्यसि ापि मात भूगोलक नक्ह अक्पतु आर्व षिक क्यसि ाक पभाि सेहो पडइत ि क। पूषि ि क्क्दक कालमे समाजक क्यसि ा कठोि नक्ह बनल िल आ बहुत दूि धर्व ओ क्यसि ा सचिक्ह्द एिि मुतत िल। समाजमे पत्येक क्यक्क्तके मुतत ाताि णिक अनुभि होइत ि लैक आ ओ लोकक्त्त कोनो सि ायी क्तयमक क्तमाण कए नक्ह बैक्स गेल ि लाह। गक्तशील समाज िल आ तै विकासोक्ष्मुख सेहो। एिि पकाि इ समाज बहुतो क्दन धर्व चलल आ शनैः शनैः आयष्क विस्ताि जक्हना भाितिरिष्क विक्भन भागमे होमए लगलैक तक्हना

समाजोमे तदनुकुल पर्वितिमा अशियममार्गी बुिना गेलैक आ समाजक महार्ििी लोकक्त ओक्ह क्दस अपन ध्यान देलक्ह। सामाजमयक विसत्तािकि संगक्ह अिषीक्तक पेच कसे जाए लागल आ समाज ओक्हसँ वमन नक्ह क्हि सकल। णिाशमक व्यसिि, भने कोनो ऊँच्चम आदशषसँ भेलहो, पिक्त ओ अपन दुगुषाक संग हमिि लोकक्तक समक उपक्सित भेल आ जेना जेना िगष विभेद बढल गेल तेना-तेना एकि सिरिप क्दन पक्तक्दन विकित होइत गेलैक। जँ से नक्ह होइत तँ क्वविलामे पुनः जनक सन शासक, याजलित्तय सन विक्चकमाता एिं गौतम सन सूक्ष्म विचाकि कएक नक्ह अितीणषभेलाह? आ ने फेिं उत्पन भेलीह कोनो गागी आ मैतेयी? एक्ह मूलतथ्यके जाधवि हमिि लोकक्त अिगाहन किबाक चेषा नक्ह किबि ताधवि हमिि लोकक्तक कल्याण नक्ह आ ने ततिकि उक्चत क्दगदशषे।

सषिषिमि चाविि णिाक उल्लेख ् गि्दिक पुरर सूत्तमे भेटइत अविि। पाििमे एहेन बुवि पडैत अविि जे जखन आयष लोकक्तक विसत्तािि भेलैक्ह आ हुनका लोकक्तके अक्हठामक मूलक्तािसीसँ सम्पकष भेलैक्ह तखन दुहुक संस्कक्तमे पयाप्त वमनता िलि आ ओ लोकक्तके णिाक विभाजन उक्चत बुिलक्ह आ तदनुकुल णिाक विभाजन भेल। क्वविलामे आयषक पसािकि समय णिाव्यिसिािक पचलन भऽ चुकल िलि। मुदा ताक्ह क्दनमे अिुिका कटिता देखबामे नक्ह अिइयै। विििहाक्दक पसंगमे ् गि्दि आ शतपिि बाह णमे वमनता देखबामे अिििि। बाह ण आ क्त्तयके अपनासँ िािट िगषे विििहि किबाक अक्वकािि पाप्त िलक्ह। बाह ण कालमे शूद लोकक्तक अिसिि शोचनीय भऽ

गेल छलि। एतेबे नहि ब्राहमणमे शूद्रक दुर्दशाक विवरण भेटइत अछि। शूद्र लोकनि सब अधिकारसँ वंचित छलाह आ समाजमे हुनक स्थान सभसँ निकृष्टतम् छलन्हि। कालान्तरमे क्रमिक एहेन व्यवस्था बनल जाहिमे ब्राहमण-क्षत्रिय लोकनि सर्वसम्मत रूपेँ उत्पादक वर्गक शोषणमे प्रवृत्त भऽ गेलाह। एकर मूल कारण इ छल जे जँ-जँ सामाजिक व्यवस्था गूढ होइत गेल तँ तँ इ दुनू वर्ग उत्पादनक साधन एवं तत्संबंधी जानक कुंजी अपना हाथमे दबौने गेलाह आ क्रम दुनू वर्गक लोग हिनका सबहिक अधीन होइत गेल। जखन आर्थिक कोनो चारा नहि हिलैक आ परिस्थिति दिनानुदिन बदतर होइत गेलैक तखन शूद्रके विद्योसँ वंचित कैल गेलैक। एहि सब घटना क्रमक उल्लेख तत्कालीन साहित्य एवं कथा सबमे सुरक्षित अछि। दलित लोकनिक की दशा हिल होइत तकर पूर्वाभास तँ महाभारतिक अध्ययनसँ भेटइत अछि जतए इन्द्रलोके इ कहए पडल छन्हि जे दुःखक अनुभव करबाक हो तँ मत्यलोक जा कए हुनका लोकनिक संग रहिके देखि आउ। महाभारतिक अनुशासन पर्वमे एहि दृष्टिकोणक बहुत रास घटना विवरण अछि।

समाजक श्रेणीकरण दिनानुदिन चरम होइत गेल। शूद्र एवं अस्पृश्य जाति लोग सब जमीनक अभावमे मजूरी आर बेगारीक अवस्थाके प्राप्त केलक आ ओम्हर दोसर दिस गगन चुम्बी अट्टालिका ओकर लोकनिक दयनीय एवं उपेक्षित आ असहाय अवस्थापर अट्टहास करए लागल। सूत एवं स्मृति साहित्यमे एहि बातक पुष्ट प्रमाण अछि। कहिुक मामलामे वैश्य-शूद्रके तंग होमए पडइत छलन्हि। वैदिक युगमे जाति प्रथा

िगष्क क्ाणष्ठा कमष्ठाँ होइत िल आ आन िणष्क लोगो अपन कमष्ठाँ बाह ण भऽ सकैत िल। शतपि बाह णक अनुसाि िजा जनक याजिल्क्ायक उपदेश एिं अपन कतष्यसँ बाह ण भेल िलाह। तैक्ाििय बाह णमे विदानेके बाह ण कहल गेल अिि।

स्त्ी, शूद, शान आ गायके "अनत"क संजा देल गेल िैक। विािहमे खिंिद-क्ािकीक पिा िल। बहु विािहक पिा सेहो िल। धनसम्पक्त्सँ सेहो स्त्ीगणके िंक्ित िखिल जाइत िल। पूिषिकैदक कालक जे मुतत िताििणि िल से आब समाप्त भऽ चुकल िल आ ओकि सिान लऽ लेने िल संकीणष्ता। सामाक्जक दक्ा कोणसँ संकीणष्ताक समािश घातक क्सद भेल। संकीणष्ताक भािनाके पशय देबाक हेतु अत्यक्धक साक्हत्य एिं कमषकाण्डी क्ायमक क्नमाण भेल। ओना उपिसँ देखबामे तँ इएह बुिि पडैि जे स्त्ीगणक सिान समाजमे बडड उँच्च िलक्ह मुदा इ क्सिक्त िास्तविकतासँ बडड दूि िल। गागी आ मैतेयीक नामसँ कोनो देश अपनाके गौििाक्न्ित बुिओ पिञ्च हमिा लोकक्नके एतए इ स्मिणि िखब आिश्यक जे ओ लोकक्न क्ायमक अपिाद मात िलीह। ओक्हठाम याजिल्क्ायक दोसि पती कात्यायनीके देक्खऔक तँ बुिबामे असौकयष नक्ह होएत जे समाजमे स्त्ीक िास्तविक क्सिक्त की िल? सुलभा आ गागीक देनसँ भाितिक दशषा भिपुि अिि। जतए एक क्दस मनुतखके अक्धकाक्धक विािह कििबाक अक्धकाि पाप्त िलक्ह ओक्हठाम एक स्त्ीके दोसि विािह कििबाक आ दोसािक संग मेल जोलक कोनो अक्धकाि नही िलैक। सुर क्च जातकमे

एकटा किा सुकिक्त अवि जकि साशिा भेल-*"मवलाक िाज्य बडड वस्तित अवि आ एक्हठामक शासकके १६०००(सोलह हजाि) पती िक्ह"*। एक्हसँ पत्यक भऽ जाइि जे सामाक्जक व्यसिामे स्तीगणक की व्सिाक्त िल? एतवि बाह णमे कहल गेल अवि जे पुतोहु अपन शसूिक सोिा नही जाइत िलीहे, जँ अनचोकसँ शसूिक नजवि पुतोहुपि पक्ड जाइत िलक्ह तँ पुतोहु बेचािी नुका िहैत िलीह। मवलामे पदा पिा आ पुतोहु-शसूिक सम्बह्धक इ पाचीनतम उदाहिण भेल आ मैवािल समाजमे ताक्ह क्दनसँ अदािाक्ध कोनो वशिेर पवािितिष नही देखबामे अबैि। वधािाक व्सिाक्तओ पायः अिाके जका िल। समाजमे वधािाके हेय दक्ष ये देखल जाइत िल आ व्सिाक्त बदतिा िल। िखेल िखबाक पिा, दासी पुतक सािा दुव्यविहाि, व्यवभचाि एिा िश्याक्ताक उल्लेख सेहो भेटैि। िाजदिबािमे असंख्य दासी पुती आ िखेलक व्यसिाा िहैत िल। मवलाक वभाण्डक मुक्नक पुत ऋर शंग्यके अंगक एकटा सुह्दािी फुसला लेने िलक्ह। कंविदंती अवि जे अंगक िाजा लोमपाद अपन बेटी शाताके एक्ह कायिक हेतु अगुऔने िलाह। एक्ह घटनाक उल्लेख अशघोर सेहो कएने विि।

"ऋष्य शंग मुक्न सुतं स्तीषि पंक्डतम्।
उपायै ववधैः शाता जगाहच जहािच"॥

पुिाण आ जातकमे िवाणित समाजमे बहुत कििा समानता अवि। क्दन पिा क्दन समाजमे कटिता एिा अनुदािा भािना जक्ड पकडने जाइत िल। धनक महतिा बढए लागल िल आ वदिा आ वदिानक महतिा कमशः घटए लागल िल। ओना तँ

लक्ष्मी-सरस्वतीक आपसी देर बौद्धयुगमे आबाके विशेर रूपे चर्वितादिष भेल छलि मुदा ओहुँसँ पूर्बहुँ हमरा एकर सब रिस्तुक स्पष्ट उदाहरण भेटइत अछि। ब्राह्मणक अपेक्षा धनाढयक पक्षेषा बढ्ढ रहिल छलि। आवश्यकतानुसार आब लोक अपन रोजगार चुनए लागल आ प्राचीन कालमे ब्राह्मण लोकक्क लेल जे खेती वाक्वद मानल जाइत छलि से आब नक्ह रहि गेल। ब्राह्मण खेती आ व्यवसाय दुनूमे लावा गेलाह। पुराणाक्दक अध्ययनसँ इ सब बात स्पष्ट भऽ जाइछि। बौद्ध साक्हत्यक अनुसार ब्राह्मण लोकक्क अपन जीविकाक हेतु सब काज करैति छलाह। जातक तँ एक्ह प्रकारक कथा सबसँ भरिले अछि। सामाक्जक नैक्तकतामे सेहो परिवर्तिषा भेल आ प्राचीन मूल्याकनक मापदण्डमे सेहो समयानुसार उक्चत संशोधन आ परिवर्तिषा कैल गेल।

मनुतखक जीवनिक कमसँ कम तीनटा विभाजन सषिमि छाहदोग्य उपक्नरदमे देखबामे अबइयै। उपक्नरद कालमे क्नविलामे क्क्षत्रय ब्राह्मणक स्तर धर्व पहुँक्च चुकल छलाह। जान एवं ब्रह्मविद्याक क्षेत्रमे ओ कोनो रूपे ब्राह्मणसँ कम नक्ह छलाह। उपक्नरदमे कमषकाण्डक विरोधमे उठैत भावनाक प्रदशषा सेहो देखबामे अबइयै। उपक्नरदमे हम जे देखैत छी ताक्हसँ स्पष्ट अछि जे ओ युग क्नविलाक सामाक्जक-सास्कक्तक इक्तहासक उत्कषषक युग छलि आ सब तरहे सुखी सम्पन्न सेहो। एक बात जे स्मरणीय अछि उ भेल इ जे क्नविलाक क्क्षत्रय शासक कोनो रूपे ब्राह्मणसँ अपनाके कम नही बुझैत छलाह आ ब्राह्मणोके इ स्वीकार करबामे कोनो आपक्त नक्ह

िलक्ह। सयिं याजिलक्तय जनकक एक्ह गुणके स्पष रपे मनने िवि आ गीतामे सेहो एकि संकेत अवि। िणषक्यसिि ताक्ह क्दनमे एतेक दढ नक्ह भेल िल।

बौद एिं जैन धमषक कायषकेत्र सेहो क्मविलामे िल आ एकि पभािे तत्कालीन समाजपि पडब सिभाविके िल। अिक्दक धमषक विकासक मुख्य सिान िल मगध आ िैशाली सेहो ओक्ह पभासिँ अकुण्ण नक्ह िल। बौद युग धवि अबैत अबैत बाहण सताक भीत ढक्ह हिल िल आ क्त्ताय लोकक्क पभािे चारकात क्दनानुक्दन बक्ढ हिल िल। भोजन भािकि क्तयमाक्दमे सेहो पविितिषा अिश्यम्भािी भऽ गेल िल। जातकक अनुसािे एक्ह युगमे बाहण लोकक्त सबक्हक संग भोजन भािकिति िलाह आ एहेन बाहण सबके कटिे िक्दक लोकक्त अपना पातीसँ फािकिके िखैत िलाह। सभक्हक संग खेक्नहाि बाहण लोकक्तके पक्तत कहल जाइत िल। सामाक्जक माह्यताक हेतु एक्ह युगमे संघरष चलैत हिल आ तिहि तिहिक उिल-पुिलक कािणे समाजमे सतत असिक्यति बनल हिल।

आजीविकि, जैन, आ बौद संपदायक पसािसँ िक्दक अपौरेयतामे लोगक संदेह उत्पन्न होमए लगलैक आ एिं पकािे समाजक िगीकिणमे सेहो। कािणि उपिितत तीनू सम्पदायक नेता िणष्यसििाक कटिे विििधी िलाह। एकिे पभािे सिि प जाक्त पाक्तक खाक्ध भोिि हिल िल आ एक्ह अवक्नधािे बहुत िसि सडल विचािकि होम सेहो भए हिल िल। पािभिमे िैशालीसँ आगा एक्ह विचािे सबक्हक दाक्त नही गलल िलैक पिक्श्च काल कमेण एकिे पभासिँ क्मविला मुतत नक्ह क्ह

सकल। ैशिाक्लयो पूणषा: णिष्क्यसिसिसँ मुतत नक्ह भऽ सकल यदक्म बौद क्लचििी लोकक्कके ताक्लंशदेि कहने िवि। धनक पभाि एक्ह सब केत्तमे सेहो बनले िल आ गिंब मानिता कक्हओ अपनापि होइत अह्यायक विाििधमे सशतत भऽ कए ठाढ नक्ह भऽ सकल। क्लचििी लोकक्कक िहन सहन सेहो िगषात िलक्ह्ह जँ एक्ह क्यसिसिमे कतहु कोनो पकाकि िूट देखबामे अबैत हो तँ ओकिा क्यमक अपिाद कहब। समाजक भद लोकक्क चाण्डालके हेय दक्व सँ देखैत िलाह आ समाजमे चाण्डालक क्सिक्त बदतिा िल। ओ लोकक्क नगिसँ बाहिा िहैत िलाह। घक्णत कायष हुनके सबसँ किाओल जाइत िल। हुनका लोकक्कक असिसिमे सुधाकि कोनो आसाि देखबामे नक्ह अबैत िल।

भक्य, गुलाम, बक्हया आक्दक क्सिक्त तँ आिि क्लंतनीय िल कािण इ लोकक्क तँ शूदक कोक्टमे िलाहे। सियं बुद जे अपना मुँहसँ गुलामक असिसिाक िणषा कएने िवि ताक्हसँ िामाच भऽ जाइि। जातकमे चािि पकाकि गुलामक िणषा अवि। क्हियाक पिा क्लवि लामे अक्त पाचीन कालसँ चक्ल आक्व िहल अवि। कौक्टल्यक अिषाास्त्र आ अह्याह्य गंिि सबमे एकिा उल्लेख भेटइयै। िश्याक पचलन ऐहु युगमे िल आ ैशालीक अम्बपालीक नाम तँ सिषिक्दत अवि ये। यदक्म बुद सियं एक्ह क्यसिसिाक विाििधी िलाह आ एतए धवि जे ओ स्तीके संघमे एबासँ िक्जषा कैंत िलाह मुदा तइयो जखन अम्बपाली हुनका पक्त अपन भक्तत दिसौलक तखन बुद ओकिा क्लमंतण सिीकाि कए ओतए भोजन केलक्ह्ह। अक्भजात िगषक

लोक सबक्हक ओतए गणिकाक ढेरि लागल रहैत छल। एकरामे बहुतो नत्य एवं संगीत कलामे निपुण होइत छलीहे। कोनो कोनो जिदबारि १६०००गणिकाक उल्लेख भेटइयै। पदा परिक संकेत बौदयुगमे भेटइत अछि।

बौदकालमे धनसम्पत्ति आ जियाधिकारि सामाजिक मापदण्ड भेल आ क्षत्रिय लोकनिक महत्व समाजमे एतेक बढलन्हि जे ओ लोकनि आब विशेर रूपे आहूत होमए लगलाह। विदेह-शैलीमे ओ लोकनि अधि शक्तिशाली छलाह। णिषक्तिय सिमिमे एवं पकार सेहो छिडेक पर्वतिष्ठा हैवि स्वभाविक भऽ गेल। अक्षाशक्ति बाहण लोकनि कामस्तिकिे पाप्त भेलाह। क्षत्रिय लोकनिक पभावि विदक सबसँ पैघ उदाहणि इएह भेल जे शैलीक अवमरेक पुष्पकविणीमे कलचिरि जिा लोकनि अनका स्नान नहि कएि दैत हिवन्हि। समस्त कलचिरि केत्त तीन कहस्सामे गिष अििर णिषक आधापिर बटल छल आ पत्येक केत्तक हिकसहारि अपनहि केत्तमे विहािक कऽ सकैत छल। पैघ णिषक बालक जँ िटि णिषक कह्यासँ विहि कएि तँ ताहि कदनमे एकि माह्यता छल मुदा एकहबात स्पाणि खिबाक इ अछि जे िजिकुमारि नाभाग जखन एक शिष्य कह्यासँ विहि केलन्हि तखन हुनका गदीसँ क्यित कए देल गेलन्हि। एकहसँ अनुमान लगाओल जाइत अछि जे जिदबारिमे अंतषातीय विहिके पोत्साहन नही देल जाइत छल। कुलीन पर्विारि एवं अवमजात गिषक सदस्यगण ताहु कदनमे एकि कटि विििधी छलाह।

बहचारि एवं धमषचारि लोकनि कतहु भोजन कऽ सकैत छलाह। ओ लोकनि जातीयताक बन्धनसँ अपनाके मुतत मनैत

िलाह। शूद लोकक्ा भनक्सया कायुतत होइत िलाह। मािमाउसक क्यहािा बाह ण लोकक्ाक ओतए सेहो होइत िल। भोजन-भािमे मध्ययुगीन कटिता ताक्ह क्दनमे नक्ह िल। गैिा बाह ण लोकक्ा सेहो सब क्कि खाइत-पीबैत िलाह। ि आिूतक कटिता नक्ह क्ितहुँ इ देखबामे अबैि जे चाण्डालसँ सब केओ फािके िहैत िलाह आ चाण्डाल नगािक बाहि िहैत िल। चाण्डालके अिूत बुिल जाइत िल आ जँ ओकि नजिा ककिो भोजनपि पक्ड जाइत िल तँ ओक्ह भोजनक पिित्याग कैल जाइत िल। बुदक संघक स्िापनाक पिाक्त बहुतो शूद आ िािट िणक्ष लोग सब ओक्हमे सक्म्मक्लत भेल िल।

िणािशमक पधानता तािक्ा बौदयुगमे बनले िहल। एक्ह युगमे बह चयािशमक पधानता िशेि िल। िििभन आशमक महतिपि एक्ह युगमे बेस िििाद चक्ल िहल िल। िििादक मुख्य पश इएह िल जे िाणपस्ि आ सह्यासमे कोन उतम? ओना तँ एक्ह युगमे हम इ देखैत िी जे सह्यासक पिक्त क्दनानुक्दन बक्ढ िहल िल। माकण्डेय पुिाणक कििाक अनुसािि शािलीक िािजा लोकक्ा-खक्तत, मि त, ििष्यंत, मखदेि आक्द- सह्यास गहण कएने िलाह। बह चयष्ठ गाहस्ि्थ, िाणपस्ि आ सह्यासी सम्बद्धी क्ायम एखनो पूणष पेण स्िायी नक्ह भेल िल। बौधायन धमषसूतमे तँ िाणपस्ि आ सह्यासक पक्तकूल िितािािण देखबामे अिइयै। क्कि धमषसूत सबमे गहस्िािशमक अपेक्ा िाणपस्िक सिािहना कैल गेल अिि मुदा इहो ििचािि ततेक संक्दग्ध ि पे पगट भेल अिि जे ओक्ह सब आधािपि क्कि काक्शत बात कहब अििा कोनो मत काधाििित कििा

असंभि। एहि युगमे पर्दा कि चर्चा सेहो भेटइत अछि। ताहि कालमे कन्या-कन्याओज नीक नहि बुझल जाइत छल। कन्याक हेतु विवाहक अवस्था आयु १६ वर्ष छलैक आ जाहि कन्याके भाई इत्यादि नहि होइत छलैक से अपन पैतृक धनक उत्तराधिकारिणी सेहो होइत छल। 'स्त्रीधन' क सिद्धांतक विकास एहि युगमे भेल छल। सती प्रथाक उल्लेख सेहो ठाम-ठाम भेटइत अछि। वैशालीक राजा चेटकक आ दिधिवाहनक पत्नी सती भेल छलिह। माद्री जे अपनाके एहि सतीत्वमे अननै छलीह ताहुसँ सती प्रथाक संकेत भेटइत अछि।

बौद्ध युगक ओना इतिहासमे अपन विशेष महत्व छैक परञ्च वैशालीक हेतु तँ इ स्वर्णयुग छल। जाहि पुष्करिणीक उल्लेख हम पूर्वहि कऽ चुकल छी ताहिमे स्नान करबाक हेतु श्रावस्तीक सेनापति बन्धुल मल्लक स्त्री मल्लिका व्यग्र छलीह आ एकर विवरण हमरा जातकमे भेटइत अछि। जातकमे कहल गेल अछि.....

"वैसाली नगरे गणराजि कुलानाम्।

अभिसेक मंगल पोतखरिणीम्॥

ओतरित्वा नहातापानीयम्।

पातुकम् अम्हि समीका"॥

बन्धुल अपन पत्नीके लऽ ओहिठाम गेलाह मुदा पहरू लोकनि हुनका दुनूके नहि जाए देलथिन्ह आ अंतमे एहि लेल युद्ध भेल आ ओ दुनू गोटए ओहिमे स्नान कऽ घुरि गेलाह। एकर अतिरिक्त वैशालीमे आओर कतेको दर्शनीय वस्तु छल उदेन चैत्य, गोतमक चैत्य, सतम्बक चैत्य, बहुपुतक चैत्य,

सादिह्द चैत्य, चापाल चैत्य, कवानय्थ चैत्य. मकष्ठ हदतीि चैत्य, मुकुट बह्धन चैत्य, इत्याक्द। िशालीमे एक्ह युगमे महाक्ल, महानाम, क्संह, गोशंडी, भद आक्द नामक पधान क्यक्तत भेल िलाह। चुल्लुिगामे क्लचिि भदक उल्लेख एक्ह पसंगमे अिछ जे एकबेि हुनका बौद संघसँ क्षक्ाक्रत कऽ देल गेल िल मुदा पुनः सुधाि भेलापि हुनका लऽ लेल गेल िल। ओक्ह समयमे समाजसँ क्षक्ाक्सत कििाक पिा एिि पकाि िल जाक्ह सभके क्षक्ाक्सत कििाक होक्ह्ह कानका भोजनाििक्षमंतण देल जाइत िलक्ह आ आसनपि बैठला उतिि हुनक जल पातके उलक्ट देल जाइत िलक्ह। पुनः जखन हुनका समाजमे लेल जाइत िलक्ह तखन ओक्ह पातके सोि कऽ के िखल जाइत िलैक। जाक्ह समयमे तोमि देि िशालीक पधान िलाह तखन क्लचिि लोकक्न साज गोज कए हुनक सििगत कएने िलाह। केओ नील, केओ सिेत आ केओ लालििगक शास्तास्त एिि आभूरण आ िशभूरासँ सुसक्जजत भए बुदक सििगताििउपक्सिित भेल िलाह। महवस्तुमे एकि वििणि एिि पकाि अिछ-

"संत्यत क्लचिियः पीतास्था पीतििि

पीत क्शम पत्योदयका । पीतिसिा,

पीतालंकाि, पीतोष्णीशा, पीतििताः

पीतखङ मुक्तपादुका।

पीतास्था पीतििि पीतक्शम पत्योदमुष्णीशा।

पीता च पंचक कुपा पीलािसिा अलंकािपि॥

नीलास्था, नीलििि, नीलक्शम पत्यादमुष्णीशा।

नीला च पंचक कुपा नीलािसिा अलंकािः॥

िशालीक आमकानन जाक्हमे अम्बपाली हैत िलीह सेहो बडड पक्सद िल। बौद धमषक इक्तहासक दक्ष कोणसँ सेहो िशालीक अत्यक्धक महत अवि। अक्हठाम इ क्णषा लेल गेल िल जे स्ती लोकक्षके संघमे पिशिक अनुमक्त देल जाइि। एतक्ह क्षकुणी संघक स ापना सेहो भेल िल। आनंदक कहलापि बुद एक्हबातके मनने िलाह आ एक्हपि अपन सीकक्त दैत बौदधमषक सम्बक्न्धमे भविष्यिाणी सेहो कएने िलाह- *"स्ती जाक्तक पिशिसँ बौदधमष आब ५००रिष धवि जीवित हित"*। िशालीसँ जेबा काल बुद इ कक्ह गेल िलाह जे आब ओ पुनः एतए घुवकिे नक्ह आक्ब सकताह। िशालीक लोग सब इ सुक्न बडड दुखी भेल िल___

"इदं अपक्शमं नाि िशाल्यास्ताि दशषाम्।

न भूयो सुगतो बुदो िशाली आगक्मष्यक्त"॥

हुनका महापवक्निाणिक सए रिषबाद िशालीमे बौदसंघक दोसि संगीक्त भेल िल। क्षवलाक माक्टमे एहेन पभाि जे अक्हठामक लोग सब बेस ताकक्षक होइत िलाह। नागाजुषनक क्शष्य क्षकुदेि जखन िशाली जेबाक हेतु पस्तुत भेलाह तखन नागाजुषन कहलवक्ह- *"ओना अहा जाए चाहैत िी तँ जाउ मुदा इ स्मिणि िखिब जे ओक्हठामक निीनो क्षकुक लोकक्न बडड जबदस्त ताककषक होइत िवि"।*

जैन गंि सबसँ सेहो ताक्ह क्दनक सामाक्जक अि िाक विििणि भेटइयै। िशालीमे क्क्षय, बाह ण आ िक्णक क्षन-क्षन उपनगिमे हैत िलाह। सामाक्जक केतमे हुनका लोकक्नक मध्य सहयोग एिं सहकाक्रताक भािना व्यापक िलक्ह। ओ लोकक्न

विदेशी अकावि के सक्मकलत रपे सिगत कबिाक हेतु जाइत िलाह। ओ लोकक्त बडड कमष्ठ होइत िलाह आ िगीन स्तिसँ विशेर पेम िलक्ह। दाक्ल, भात, तकािकि अक्तवितत ताक्ह क्दनमे माि-माउसक पचलन सेहो िल। अपना नगिसँ हुनका लोकक्तके बडड पेम िलक्ह। हीिी, जिक्हित, सोना, चानीसँ हुनका लोकक्तक हािी, घोडा, आ सिािी सजल िहैत िलक्ह। क्शकाि हुनका लोकक्तके बडड क्पय िलक्ह। अंगुतिि क्तकायक अनुसाि क्लचििी बालक लोकक्त बडड चंचल आ नटखक्टया होइत िलाह। क्लचििी लोकक्त सितंतता आ सिाक्भमानक पेमी िलाह। क्शाक्त पाप्त कबिाक हेतु ओ लोकक्त दूि-दूि देश धिि जाइत िलाह। विािहक क्नयमाििली क्लचििी लोकक्तक हेतु कठोि िलक्ह। जाक्ह कन्याके विािह कबिाक विचाि होक्ह से क्लचििी गणके सूचना दैत िहिक्ह आ गणक क्दक्स हुनका लेल सुक्िि िि चुनल जाइत िल। स्तीक सतीति किाि षि क्लचििी लोकक्तक क्नि उठा नक्ह िखैत िलाह। एक्हमे िाजा आ िकिमे कोनो कानूनी भेद नक्ह िल। मतकक दाह संस्कािकि सम्बन्धमे सेहो हुनका लोकक्तक अपन क्नयम िलक्ह- मुदा जिबाक, गािबाक, अििि ओक्हना िक्ड देबाक पिा हुनका ओतए िलक्ह। मुदाके गािमे लटकेबाक उल्लेख सेहो भेटइत अवि। हुनका लोकक्त ओक्हठाम एकटा उत्सि होइत िल जकिा "सब्बिक्तािि" कहल जाइत िल जाक्हमे ओ लोकक्त भिि िाक्त जावाके नाच गान किैत िलाह आ एकि उदाहिण अंगुति-क्तकायमे भेटइत अवि।

मौयष युगमे सिषिमि समस्त भातिक िाजनैक्तक एकीकिण

भेल आ क्षविलाक केंत्त अक्खल भातिीय सामाज्यक अंग बनल। सामाक्जक दक्ष कोणसँ सेहो इ युग महतिपूणष मानल गेल अवि। ािज्यक सिि प मंगलकाािी िलि यदक्प ािजाक शक्तिमे अपाि बक्द्ध भेल िलैक। सासाविकताके पक्ष आसिा लोगमे बक्द्ध गेल िलैक आ पत्येक व्यक्तत जीनिके सुखी ि पे व्यक्तत कबिा लेल इच्िुक िलि। ताक्ह क्दनमे मनुष्य सुगक्ठत, सिसि आ बलिन होइत िलि। िस्त्राभूरणक पक्ष हुनका लोकक्नक स्नेह विशेर िहैत िलक्न्ह आ खेलकूद, नाचगान आ संगीतक पचलन बक्ढया िलि। मगधक ािजधानी पाटक्लपुत ताक्ह क्दनमे संसािक सिोषष नगिा िलि आ पधान कीडा केन्द्र सेहो। एक्ह कीडाक अंतगषत शाल-भंक्जका एिं अशोक पुष्प पचाक्यका विशेर ि पे पचक्लत िलि। कौक्टल्यक अिषशास्त्र आ अशोकक अक्भलेखमे उत्सि, समाज, आ याताक उल्लेख भेटइत अवि जाक्हमे आमोद-पमोदक व्यिसिा िलि आ सब केओ बडड उत्साहसँ ओक्हमे भाग लैत िलाह।

कौक्टल्य िणाशम धमषक बडड पैघ समिषक िलाह। एक्ह धमषक समुक्चत पालन किाएब ािजाक कतषव्य िलि। अशोकक शासन कालमे िणाशम धमषिवि विशेर ध्यान नक्ह देल गेल कािण अशोक सियं बौद िलाह आ हुनका एक्ह व्यिसिापि पूणष आसिा नक्ह िलक्न्ह। चन्द्रगुप्त मौयष सियं शूद िलाह तै हम देखैत िी जे एक्ह युगमे शूदक पक्ष कौक्टल्यक विचाि मनुक अपेक्षा विशेर उदाििादी िलि। िणषव्यिसिाक अंतगषत कतेको जाक्त उपजाक्त बक्द्ध गेल। मनु तँ बहुतो विदेशी जाक्त सबके क्षतियक शेणीमे िखिने िवि। क्षविलाक क्लचिा लोकक्नके

सेहो मनु स्मृति कहने छथि। स्मृतिक सेहो ओ चारि णिमे बटने छथि स्मृति ब्राह्मण, स्मृति क्षत्रिय, स्मृति वैश्य एवँ स्मृति शूद्र। यूनानि दूत मेगास्थनीज क लिखने छथि जे एकठाम युनान जकाँ गुलामक व्यवस्था नहि छल। एहि युगमे स्त्रीके अस्थिमे सेहो परिवर्तित भेलैक। कौटिल्य स्त्रीके सम्पत्तिक अवज्ञा कबाक आ खिबाक अधिकार देने छथि। अपन जेपिपि खचष कबाक अधिकार सेहो हुनका लोकनिके छलनि। जँ कोनो व्यक्तिके बेटा नहि छैक तँ ओकरि बेटीके ओहि सम्पत्तिक संपतिक अधिकार भेटइत छैक। स्त्रीक कल्याणक हेतु अशोकक समयमे "स्त्री अध्यक्ष महामात"क नियुक्ति भेल छैक। गुलाम लोकनिक पक्ष सेहो राज्यक विचार उदार छल। प्रत्येक गुलामके अपन स्वतंत्रता प्राप्त कबाक अधिकार छैक।

मौर्योत्तर कालमे चारि णिषक व्यवस्था बनल हिल। जाति आ उपजातिक संख्यामे विशेर बढ़ि भेल। चार णिषक लोग अपना अपना णिषक अभ्यंतरिमे विवाहक सम्बन्ध स्थापित करैत छलाह। विहिमर्कहकि हितसंकताक अनुसार नगरमे चार णिषक व्यमन व्यमन केन्द्र होइत छल। चीनी यात्रीक विवरणिसँ स्पष्ट अछि जे ब्राह्मण लोकनि पूज्य बुझल जाइत छलाह। ब्राह्मण लोकनिक शुद्ध जीवन व्यतीत कबाक प्रसंग सेहो ओहिमे भेटइत अछि। समाजमे ब्राह्मणक पक्षपात विशेर छल आ मनु ओकरि आर पक्षपाती बनौलकहि। नारदक अनुसार शोत्रिय लोकनिके कर नहि लगबाक चाही। ब्राह्मण वर्गके सब प्रकारक सुविधा प्राप्त छलनि। गुप्त युगमे ब्राह्मण लोकनिक गीकरिण

ैिदक शाखाक अनुरूप भेल। पाि आकाके एकि आि
िगीकिण भेल।

मौयोतिकालीन भातिमे क्षत्रय लोकिनक पधानता बढल। शूंग िंश आ कण्ि िंशिक स्थापनासँ क्िलामे पुनः बाहमण धमक पुनर्स्थापन सम्भि भेल आ बाहमण लोकिनक सतामे ब्लद्ध सेहो। एहियुगमे क्िलाक बाहमण क्िलासँ बाहि जाए अपन शाखा पशाखाक स्थापना कएने िलाह। शासन भाि जे केओ लैि हुनक धमक्षत्रयक धमभऽ जाइत िल। ओना सामान्यतः शासनक भाि क्षत्रय लोकिनक हाथमे िहैत िलिन्ह। क्षत्रय युद्धविद्या, कला, संगीतमे तँ पाििगत होइते िलाह संगिह ओ लोकिन विदान सेहो होइत िलाह। समुद्रगुप्तक पयाग पशस्तसँ एहिपक्षपि विशेर पकाश पडइयै। जे केओ शासक अिि िाजा होइत िलाह हुनके क्षत्रयक संजा भेटइत िलिन्ह। गुप्तशासक लोकिन ओना तँ क्षत्रय निह िलाह मुदा जखन िाजा भऽ गेलाह तखन ओ क्षत्रय कहबे लगलाह। िाजाक गुणक विििण बाणक हरचरितमे सेहो भेटइत अिछ। कृर आ व्यापाि भाि ैश्यपि िलिन्ह। इ लोकिन दान आ धमक पपकी होइत िलाह। स्थान स्थानपि धमशाला, अस्पताल आ सतक स्थापना इ लोकिन बडड पेमसँ किबैत िलाह। व्यापाि आ उद्योगक संचालनाथ इ लोकिन अपना मध्य जे संगठन बनौने िलाह तकिा शेणी अिि िालड कहल जाइत िल। क्िलामे शेषी आ सािथ्िहक जे उल्लेख भेटइत अिछ सेहो हिनके लोकिनक ततिाधानमे बनैत िल। शूद लोकिनक स्स्थित कंतनीय िलिन्ह। ओ लोकिन िाट िीन िाजगािक संग खेती

गहस्िी सेहो कएने जाइत िलाह। हुनका लोकनिके दि पढबाक अधिकारसँ वंचित िखल गेल िल। बानाना मंतक ओ लोकनि अपन यजादि कएने िलाह। मूल रपे ओ लोकनि दू भागमे बटल िलाह सत् शूद्र आ असत् शूद्र। असत् शूद्रके अिूत कहल जाइत िलनि। अनुलोम प्रतिलोम पािक काणि कतेको नवशात जानिक अविष्कार समाजमे भऽ चुकल िल। चाण्डालक स्थिति यिाि् िल। नवजिलाक उतिी िौपिि िर आ कनिति नामक जानि सेहो बसैत िल।

विािाहदिक नियममे कोनो विशेर पविितिा एहियुगमे नहि भेल। अपन अपन जानिक अंतगएमनहिमे विािाहदि होइत िल। अनुलोम प्रतिलोम विािहक उल्लेख सेहो यदा कदा भेटैते अवि। माह्य क्यसििाक िािजूदो अंतजातीय विािह सेहो होइते िल। गुप्तकालीन साहित्यमे ठाम ठाम गंधिािवविािहक उल्लेख सेहो भेटइत अवि। एहियुगमे स्त्रीगणक स्थितिमे आ अिनिि भेल। हुनका लोकनि शूद्रे जका दिक अध्ययनसँ वंचित िखल गेल। दि मंतोच्चारणि ओ लोकनि नहि कऽ सकैत िलीह। कनिु गोटए पढल लिखल सेहो होइत िलीहे मुदा ओहन स्त्रीगणक संख्या महान समुदमे एकठोप तेल जका िल। पदा पािक सम्बन्धमे कालिदास घूंघट घोघक उल्लेख केने विि। एहि युगमे समृतिकार लोकनि विधािक सम्बन्धमे आि कठिन नियम बनौलनहि। शंख, अंगीरसि आ हारीत समृतिमे तँ एतेक धवि कहल गेल आवि जे विधािके अपना पतिक चितापि जविके पाणात कए लेबाक चाही। तत्कालीन अभिलेखमे सेहो सतीक उल्लेख भेटइयै।

स्त्राभूरणमे ताहिकुदिनक लोग शौकीन होइत छलाह। रेशमी सूती आ ऊनी कपडाक वशेर पचलन छल। धोती, साडी, साया, दुपटा, आंगी, जनेउ, बाला इत्यादिक व्यवहार होइत छल। अवशलाक केतसँ पाप्त मूर्तसँ तत्कालीन भूषाभूराक जान होइछ। लोग सब नाभीक नीचासँ धोती पहिरैत छलाह आ स्त्रीगण सब साडी सेहो ओढैना। स्त्रीगण सब साडीक संगे दूपटो ओढैत छलीह। टोपीक व्यवहार सेहो होइत छल। नौलागढसँ जे एकटा माटिक मुरत भेटल अछि ताहिमे देखैत छी जे एक गोटए बेस सुन्दर मुँठा बान्हने अछि। इ मुरत गुप्तकालीन थिक। ओहुसँ पहिलुका आर एकटा सुन्दर स्त्रीक माटिक मुरत ओतहिसँ भेटल आछि जाहिमे केश विन्यास शैली आ वशेरता देखबामे अबइयै। सौन्दयष पसाधन एवँ शंगार पक्रियाक रूप एहि दुनू माटिक मुरत बढिया जका जात होइत अछि आ संगहि दु युगक सौन्दयष साधनक जान सेहो। स्त्रीक मुरत शुंगकालीन थिक। अवशला आ वैशालीसँ पाप्त माटिक मुरतसँ तत्कालीन सौन्दयष पसाधनक ज्ञात भेटइयै। औंठी, कणफूल, कण्ठहार, बाला, इत्यादिक व्यवहार होइत छल। ताहि दिनमे जे अवशलाक स्त्रीगण पाइत पहिरैत छैथि तकर अन्यतम नमूना अवशलाक मुरत सबमे भेटइत अछि। सुगन्धित तेल आ अन्यान्य सौन्दयष साधनक व्यवहार सेहो ताहि दिनमे होइत छल। दातमे मस्सी लगेबाक पथा सेहो छल आ व्हयुएन संग एकर उल्लेख कएने छथि।

गुप्तयुगक पतिष्ठा एवँ कणाटकालिक उत्थान धवशणाश्रम धमषक पधानता बनले रहिल आ ठाम ठाम कठोर सेहो भेल।

समाजकाि लोकक्तक िचनासँ एकि भान होइि। अनुलोम____
पक्तलोमक फले अनेको िणष्ठांकि उपजाक्त आक्दक विकास
भेल। असत् शूद अंत्यजक नामसँ पाचम िणष्ठे पवगिवगात
भेल। एक्हयुगमे पंचगौडक कल्पना सेहो साकाि भेल आ
पंचगौड बाहणक सूतपात सेहो। बाहण लोकक्त दोसिा िणष्क
जीविकाके अपनौलक्हह। यजक संगक्ह संग ओ लोकक्त मूक्तषूजा
आ पुिक्हताइक पेशा सेहो अपनौलक्हह। बाहण लोकक्त
सेनापक्तक काजमे सेहो क्तपुण होमए लगलाह। पालिशिक
अधीन बहुतो बाहण सेनापक्त हिैि जकि उल्लेख पाल
अक्तलेखमे अवि। एक्हयुगमे बाहण लोकक्तके पचुिमातामे खेत
दानमे भेटल िलक्हह आ ओ लोकक्त पैघ पैघ सामंत भेल िलाह
आ जमीनके दोसिकि हाि खेती किबाय ओ लोकक्त अपन
सामंत पदत िजिनैक्तक अक्तकाकि सुिक्तमे व्यस्त हिैत
िलाह। बाहण क्कत्तय आब खेक्तयो क्तदक्स भीि गेल िलाह।

शूद लोकक्तक अिसिा आ दयनीय भऽ गेल िलैक।
एक्हयुगसँ डोम, चमाि, नट आक्दक उल्लेख सेहो भेटइत अवि।
भाटक उल्लेख तँ सहजक्ह भेक्टतक्ह अवि। एक्हयुगमे जाक्तकमष्,
नामकिणि, उपनयन, विििाह, शाद इत्याक्द संस्काकि उल्लेख
भेटइत अवि। विििाह संस्कािि पधान सामाक्जक संस्कािि मानल
जाइत िल। बहुपक्तातकि उदाहिणि सेहो भेटइत अवि। बाहण
अहृय जाक्तक भोजन अििि जल नक्ह गहण किैत िलाह।
एक्हयुगमे पायक्शतक विधान सेहो बनल। मािि, माउँस आ
मक्दािकि व्यिहाि होइत िल। क्तसद कवि लोकक्तक लेखतँ एक्ह
सब विििणिसँ भिल अवि। चयापद(मैविलीक आक्द रप)मे

एकठाम वर्णित अछि जे स्त्री लोकनि मद्यपान करैत छलीह। किछु लोकनि विशेष मद्यपान करैत छलाह। पहिरबा-ओढ़बामे कोनो विशेष फर्क देखबामे नहि अबैछ। मूलतः सबसँ शंखावलिकाक भान होइछ। कणफूल, हार, भुजदण्ड, करधनी, कंगन, बाला आदि आभूरणक व्यवहार होइत छल। कुमकुम लगेबाक प्रथा सेहो छल। सतीप्रथाक प्रचलन तँ चर्यापदमे आबि गेल छल। एक लेखमे दीपावलीक उल्लेख सेहो भेटइत अछि ——

"दीपोत्सव दिने अवन्ति करतां पेक्ष मध्य मण्डपे"।

संगीत आ नृत्यक आयोजन तँ बराबरि होइते छल। चर्यापदमे सतर्जिक उल्लेख सेहो अछि। जूआक प्रथा प्रचलित छल। एहि युगमे अन्धविश्वास आ तंतमंतक प्रधानता बढ़ि चुकल छल। ज्योतिषपर लोकक आस्था जमि चुकल छल। विजयसेनक देवपाड़ा अभिलेखमे गाम ललनाक नगरजीविक अनभिज्ञता आ अबोधपनक उल्लेख भेल अछि। मुसलमान लोकनि भारतमे प्रवेश कऽ चुकल छलाह तैं एहि युगमे शुद्धिक व्यवस्थाक प्रतिपादन सेहो भेल। कार्निलामे पान आ चौपाड़िक प्रचलन खूब छल।

शबरसिद्धिमीक लेखसँ तत्कालीन मैथिल समाजक झाँकी भेटइत अछि। ओ 'हूलिवर्धी'क उल्लेख कएने छथि। शतपथ ब्राह्मणमे कहल अछि ——

"तस्माद गिरिहं गार्ग्यऽनु धावति"।

गम्हरी, दही, दूध, चूडा, आदिक उल्लेख सेहो शबरसिद्धिमीमे भेटइछै। इहो दास आ गुलामक उल्लेख कएने छथि। हुनका लेखनीसँ व्यवहारिक खेबाक प्रथाक अपत्यक रूपे

उदाहरिण भेटइयै। दही भातक उल्लेख सेहो ओहिमे भेटइयै। माछ खेबाक क्षुणताक निषेधमे तँ एहने बुझि पडैत अछि जेना शबरसिमी नाक्च उठल होअछि। ओ खीर बनेबाक उल्लेख सेहो केने छथि।

"ये एकक्सानन कायाषा वकिल्ये न साधका:

शूयंते ते पस्तिराणि वीविधनोभविन्त।

लोकनि यरि मत्स्यान् न पयसा

समशीयादक्त। यद वा

सगुणमत्स्या भविन्त तावि

पयसा सहन समश्यंते"।

एकहियुगमे जाक्तक रप कायस्थ जाक्तक वकिास आ उतरिन भेलैक। उशनस आ दिव्यासक स्मक्तमे कायस्थक उल्लेख जाक्तक रपमे भेल अछि। याजलिक्तय स्मक्तमे सेहो कायस्थक उल्लेख भेल अछि। गुप्तकालीन अवमलेखमे सेहो पर्मि कायस्थक उल्लेख भेटइत अछि। गुणैगारि तामपतमे सैक्तक मंती लोकनाथके कायस्थ कहल गेल छिक्ह। बंगाल पूवणाषा केतक पुण्रदिषा भुक्ततमे तीन चारि पुस्त धर्वि क्षतिदत (करणि कायस्थ) रिज्यपाल छिलाह। ५५०ई.क पशात् कायस्थ लोकक्त एक जाक्तक रपमे समाजमे स्थापित भऽ चुकल छिलाह। 'पर्मि कायस्थ' मुख्य सचिव होइत छिलाह। कायस्थमे अखन वशेिर उपजाक्तक विद्र नहि भेल छलि। 'करणि' सेहो कायस्थक दोतक छिलाह ओना इ एकटा 'पद' छलि जाहिपर काज केनिहार सब केओ करिणाक कहबैत छिलाह आ जतए एकर मुख्यालय होइत छलि तकरा अधिकरणि कहल

जाइत छलि। मिथिलामे कर्णाट कायस्थक प्रभुता कर्णाटवंशक स्थापनाक संग बढ़लैक। वैशाली क्षेत्रमे ११-१२म शताब्दीक एकटा लेख प्राप्त भेल अछि जाहिमे कर्णि कायस्थक उल्लेख अछि। ई लेख बुद्धक प्रतिमाक पादपीठपर खोदल अछि। एहि मूर्त्तिक दान केनिहार कर्णिक महायान पंथी भक्त छलाह।

"देय धर्मोऽयम् प्रवरमहायानयायिनः करणिकोच्छाहः माणिकसुतस्य"

एहि प्रकारेँ हम देखैत छी जे कर्णाट वंशक स्थापना धरि मिथिलाक समाज सब स्टेजसँ गुजरि चुकल छल। नान्यदेवक पश्चात् मिथिलाक अपन व्यवस्था पत्यक्ष भेलैक आ सामाजिक क्षेत्रमे जे व्यवस्थाकारी परिवर्त्तन भेलैक तकरा हमरा लोकनि हरिसिंह देवी प्रथाक नामे जनैत छी जकर प्रभाव अखन धरि मिथिलामे बनल अछि।

पंजी प्रथाक विकास:- महाराज हरिसिंह देव कर्णाटवंशक अंतिम शासक छलाह जे मुसलमान द्वारा पराजित भऽ पड़ा गेला। पड़ेबासँ पूर्व मिथिलाक सामाजिक नियमनक हेतु ओ जे एकटा विस्तृत व्यवस्था केलन्हि ओकरा अधुना हमरा लोकनि 'हरिसिंह देवी' प्रथाक नामे जनैत छी अथवा सुसंस्कृत भाषामे एकरा पंजी प्रथा कहल जाइत अछि। एहि सम्बन्धमे अखनो धरि कैक प्रकारक विद्वानक बीच मतभेद बनले अछि। ओना एहि प्रथाक जन्मदाता तँ हरिसिंह देवकेँ मानल जाइत छन्हि मुदा किछु विद्वानक अनुसारेँ एकर इतिहास प्राचीन अछि। कुलीन प्रथाक स्थापना जँ जन्मक विशुद्धतापर भेल छल तखन तँ एहि प्रसंगपर मीमांसक कुमारिल भट्टक मंतव्य जे तंत्रवार्त्तिकमे

पसारवित अवि से देखब आिश्यक ___

"विशेषणैवि कहू पयतेन महाकुलीनाः

पविक्षिता आत्मानम् ।

अनेनैवि कहू हेतुना िजवमबाहणैश

सविातवातामहाकद पािमिया ___

विसमािणािषसमूहलेख्याका पविनाका

तािि च पवाकूलं गुणदोर समािणातदनुर पः

पविका कातियो दशयंते"॥

अिषभेल जे कुलीनके अपन जाताक िकाक हेतु बडड पयत कएि पडइत िकहू। तकहू सँ कवाय एिँ बाहण लोकका अपन वाता वातामह पभका पूिषाक नाम कासवि नकहू जाइ तँ "समूह संख्य" िखैत िवि आ पत्येक कुलमे गुण दोरक विँचन कए तदनुसाि सम्बद्ध किबामे पित होइत िवि।

जँ एकहू पमाणके कुलीन पिि अिि पावज िखबाक पिाक पािभ मानल जाइक तँ इ कहए पडत जे सिषिम एकि उदगम कावििलामे भेल आ बादमे जखन लोग एकिि कासवि गेलाह िल तखन हविसंह देि ओकिि िँजाकाक पदकापि पंजीबद किौलकहू। सातम आठम शताब्दीसँ हविसंह देि धविकि कालमे जँ लोग एकहू 'समूह लेख' पदकाके विसैवि गेलाह तँ कोनो आशयक गपप नकहू कािणि एकहू बीचमे कावििलापि चार कातसँ आकमण होइत िहल िल आ एक अवसििताक वसिका व्यापक िल। कणाटिशिक सिािपनाक बाद पुनः एक पकािि सिाियति आ निजागिणि आएल आ तै सामाविजक उचिखंलतापि पूणषििम लगेबाक हेतु सामाविजक कायमनक

आशियकता लोकके बुवि पडलैक आ हविसिंह देकि इ शेय विहि जे बाहण क्ताय मध्य पचलत पाचीन पदता अपना शासन कालमे पूणष पेण िजाकक बनौलहि।

सिगीय मिनािक अनुसािसमूह लेख्य पाज जका िखल जाइत िल आ पत्येक िविहक सम्बह्ध भेल उति ओहिपि टीका लेल जाइत िल। कुमाविलक 'समूह लेख्य' समस्त बाहणक एकत संगहित भऽ पंजी कहाओल। एहि पविचिय सबहिक आधािप एक एक कुल एक एकटा नाम दऽ देल गेल जे नाम ओहिकुलक पूिषक आवम जात काि सिािन गामक नामपि भेल ओ सैह ओहि कुलक मूल कहाओल। कुमाविलक समएमे गुणदोरक विचिन लोग सियं किति िल मुदा हविसिंह देिक बाद आब पविचियक आधािप गुण दोरक विचिण होएब पािभ भेल। बंगालक कुलीन पि जाता मूलक िल आ अकुलीनक संपकष होइतहुँ कुलीन अपन कुलीनतिसँ पतात भऽ जाइत िल। कािवलामे उच्चता नीचताक अिधािण सामताक अनुसािह भेल। मनुक उक्ति देखबा योग्य अिव ——

"कुविािहैः कयालोपैिदाध्ययनेन च

कुलाह्यकुलता याता बाहणाताकमेण च" ——

उतमैर तमैकास्थं सम्बह्धानािचितसह

कवगुः कुलमुत्करषधमानधमास्त्यजेत्"॥

उपािततसँ स्पष अिव जे जाताक अपकरष कािंि उत्करष िविहक सम्बह्धसँ कायमत होइत िल। मुदा मात जह्मक शुद्ध मात एकि कायामक नहि िल। भिभूताक मालती माधकि

टीकामे धमाधकविाक जगद ि क्लखने िव ____

"जह्मना बाह णो जेयः संस्काादि् क्दज उच्यते

वधिया याक्त वपित ित्ताकः शोक्ताय उच्यते"॥

एति सब क्रक्ि क्वितहुँ वदि ओ आचाकिे गौण माक्त मात जह्मक उत्क्रकरषके पधानता दए सामाक्जक क्तयमन जक्हयासँ आम्भि भेल तक्हयेसँ एक्ह क्यसिािमे दोर आबए लागल। विािहक सम्बक्ल्धमे पाचीन कालक्हसँ क्रक्ि क्तयम बनल िल ____ विािहक अक्धकाि ओक्ह कह्यासँ भऽ सकैत अि जे ____

i) एक गोतक निव हो।

ii) एक पिकि निव हो।

iii) माएक सक्ताण्ड निव हो।

iv) बापोक क्दक्स कोनो पूिाक ६पुशत धिव क्तम निव हो।

v) माएक क्दक्ससँ कोनो पूिाक ५पुशत धिव क्तम निव हो।

vi) क्तातामह_मातामहक संतान निव हो।

vii) कठमाम (सतमाएक भाई)क संतान निव हो।

सिजनक संग विािह नक्ह भऽ सकैत िल काणि ओहन विािहसँ उत्पन्न संतानके चण्डाल कहल जाइत िलैक। क्तविलामे साक्तासाकि चिक्यता हविनाििसँ एहने गलती भऽ गेल िलक्ह आ तै हविसिंह देि पंजी पिाक क्तमाण केने िलाह सएह कहल जाइत अिव। सब केओ इ किा जानने िव तै अक्हठाम एकाि दोहािएब हम आिश्यक नक्ह बुिात िी। हविनाि अनक्धकािमे विािह कऽ लेने िलाह काणि हुनक पती हुनक साकात क्ताक्तऔत भाइक दौक्हती लविक्ह। जाक्ह समूह लेखक उल्लेख हम पूिहि कैल अिव हविसिंह देि ओकिि

िजाक्तक पदक्तापि आक्त पंजी पिाक जक्तमदाता कहबैत िवि। हविक्संह देकि आदेशानुसाि सब बाहणक पविचय संगक्तत भेल आ ओक्त संगहके विशाष पंक्तइतक वजम्मा लगा देल गेल जे सब कािु देवख अवधकाि कणाष किि आ वििाहक हेतु पमाण पत दैि ओक्त पमाण पतके 'असिजन' पत कहल जाइत िैक। संगक्तत पविचयमे पत्येक वििाह आ वििाहक संतानक नाम जोडल जाइत िल आ उएह पविचय पञी कहाओल आ वजनका वजम्मा एकि भाि देल गेलक्त सैह पञीकाि कहौलवि। 'असिजन पत' वलखके देबाक पिि वसदात कहाओल जे अदावधि बाहण आ कणि कायसिमे पचवलत अवि।

जे लोकवन पविचय एकत किैत िलाह से 'पविचेता' कहबैत िलाह एक्त पसंगमे गोत, पिि आ शाखा सेहो वलखल जाइत िल। सब पविचयके गोतक अनुसाि अलग अलग खिलासँ पत्येक गोतक वभन वभन कुलक वगत समक आवा जाइत िल। कुलक नाम कुलक पाचीनतम जात वािस सिानपि िखिल गेल जे ओक्त कुलक "मूल" कहाओल। बादमे गोत आ मूलसँ पत्येक िशिक संकेत भेटए लागल। गुप्त युगक्तंसँ एक्तबातक पमाण भेटइत अवि जे बाहण अपन गाम अििि वािस सिानक्तसँ वचक्तल जाइत िलाह आ गुप्तयुगसँ पाल युग धविक अवभलेख सबमे बाहण लोकवनक चावि पाच पुस्तक विििणि भेटइत अवि। बाहण लोकवन जाक्त जाक्त गाममे वािस किैत िलाह ताक्त ताक्त गामक पशंसा सेहो अवभलेख सबमे भेटइत अवि। मध्ययुगमे िढक बाहण लोक ५६उपजावतमे बक्ट गेल िलाह आ क्तनका लोकवनक िगीकणि

गाम गाइ गामीकक आधापि भेल लिक्है। ११ १३म शताब्दीक अवमलेखमे एकि उल्लेख भेटइत अवि। ठीक अव्हना हर्विसिंह देि मूल कािसक आधापि बाह ण लोकक्के कीब १८०मूलमे बँटने लाह आ क्वविलाक कणि कायसिके कीब ३५०मूलमे। अव्हना अम्बष कायसि सेहो कीब १००घमि बटल वि। बह ीितिष पुिणिक बह खण्डमे कहाबत अवि जे देश भेदसँ जाक्त भेद उत्पन होइि आ मध्ययुगीन पंजी पिम्पि जे जोड देल गेल अवि से एक्हबातक सबूत मानल जा सकइयै। गाम गामक महति बढए लागल। संगक्हत पाक्तमे जे सबसँ पाचीनतम जात पुर रक नाम उपलब्ध भेल उएह 'बीजी पुर र' कहौला। जँ एके गामक िसी दु कुलमे भेटला तँ हुनक भेदके स्पष कबिाक हेतु कुलक मूलक संगक्ह संग नि कािस सिनिक नाम जोव्ड देल गेल।

क्वविलाक बाह ण लोकक्त सामिदि आ शुतल यजुिदिक अनुयायी वि सामिदी कौिम शाखीय वि आ यजुिदी माध्यक्न्दन शाखीय। कमशः इ दुनू िहन्दोग आ िजसेनव्य कहबैत वि। सामिदी िहन्दोगमे मात शाक्डल्य गोत पचक्लत अवि आ माध्यक्न्दन िजसेनव्यमे ित्स, काश्यप, पिशि, कात्यायन, साणिष आ भािदाज। एक्ह सात गोतक कुल व्यक्सित कहबैत वि। बाह णक आ ग्याहिटा गोत जे क्वविलामे अवि से भेल गाग्यष, कौक्शक, अलाम्बुकाक, कषणातेय, गौतम, मौदगल्य, क्शिष, कौव्णडल्य, कवपल आ तव्णड। पत्येक गोतमे कैकटा मूल अवि। ओना तँ लगभग २००मूलक आभास भेटइत अवि पक्ति बाह ण विदान लोकक्त मात सात गोट गोत

आ ३४या ३६टा मूलके व्यवस्थित मानैत वि। क्वर्विलामे कुलीनताक पर्वचायक लि जन्मक वशुदता, आचाकि चार ता आ विदा व्यसिाय एक्ह तीनुसँ युतत व्यक्ततके शोक्तय कहल जाइत लिक्ह। एक्हठाम स्मणीय जे पाक्जमे मात पर्वचिय संगक्हत अर्व जाक्ह आधापि विहिक अक्षकाकि क्मणष्व होइत अर्व। हर्वक्संह देि बाहणके तीन शेणी (शोक्तय, योग्य, जयबा)मे बँटने लािह इ कनि क्माधाि अर्व। आदशषके क्वसर्वके जखन हमािलोकक्म केलि भेदपि जोड देब पािभि कैल तखनक्हसँ एक्ह व्यसिामे कुिक्षक पिश भेल। जे जे नीच काज कित गेलाह से कमशः नीच होइत गेला। बाहण पाक्मक अनुसाि अक्षकाि क्मणष्वक क्मयम एि पकािअर्व

i) कह्याक क्पताक क्पतामहक क्पतामह।

ii) कह्याक क्पताक क्पतामहक मातामह।

iii) कह्याक क्पताक क्पतामहीक क्पतामह।

iv) कह्याक क्पताक क्पतामहीक मातामह।

v) कह्याक क्पताक मातामहक क्पतामह।

vi) कह्याक क्पताक मातामहक मातामह।

vii) कह्याक क्पताक मातामहीक क्पतामह।

viii) कह्याक क्पताक मातामहीक मातामह।

ix) कह्याक माताक क्पतामहक क्पतामह।

x) कह्याक माताक क्पतामहक मातामह।

xi) कह्याक माताक क्पतामक्हक क्पतामह।

xii) कह्याक माताक क्पतामहीक मातामह।

xiii) कह्याक माताक मातामहक क्पतामह।

xiv) कन्याक माताक मातामहक मातामह।

xv) कन्याक माताक मातामहीक मातामह।

xvi) कन्याक माताक मातामहीक मातामह।

आठम पीढीसँ सपिण्डता हटि जाइत छैक।

मिथिलामे पाञ्जिक अध्ययन अखनो शिक्षाक पदतिसँ नहि भेल अछि कारण ओकर साहित्य एतेक जटिल अछि जे सब केओ ओकर अध्ययन कइयो नहि सकैत छथि। मिथिलाक बाबूक अतिरिक्त आ एकाध गोटए पाञ्जिक अध्ययन कएने छथि मुदा पूर्णरूपेण शिक्षाक ढँग आ तालपतपर लिखल पाञ्जिक अध्ययन मेजर विनोद बिहारी वर्मा अपन "मैथिल कर्ण कायस्थक पाञ्जिक सर्वेक्षण"मे कएने छथि। इ अध्ययन अपना ढँगक अद्वितीय अछि आ पाञ्जिक अध्ययनक क्षेत्रमे इ अपन एकटा नव कीर्तिमान स्थापित केलक अछि। तालपत बहुत काफी प्राचीन अछि आ पाञ्ज प्रथाक स्थापनाक लगभग ५०वर्षक अभ्यंतरहिमे लिखल अछि। एकर आधारपर अखन आरो कतेक अध्ययन प्रस्तुत कैल जा सकइयै। पाञ्ज प्रथाक नीव जाहि आधारपर पडल तकरा सम्बन्धमे मेजर वर्मा लिखैत छथि ____

चण्डेश्वर ठाकुर गृहस्थ रत्नाकरसँ उद्धृत करि स्मृतिकारक कथन उद्धृत कैल जाइछ जाहिपर पाजी प्रथाक नीव पडल। ____

मनुशातातपौ:-

असपिण्डा तुया मातुर सगोता चयापितुः।

सा प्रशस्ता द्विजातीना दार कर्मण्य मैथुने॥

एहि प्रकारे ओ गौतम, याजवल्क्य, हारीत, विष्णुपुराण आदिसँ

विभिन्न मत उपस्थित कएने छथि। पाञ्जि जखन उपस्थित कएल गेल तखन देशक स्थिति क्रांतनीय छल। कारण कायस्थ पाञ्जिक अध्ययनसँ स्पष्ट होइछ जे कठोर बन्धनक पश्चातो पाञ्जिमे “स्त्रियं गहीता” कहब्या, “चेक्चक विजाती”सँ व्याहक उल्लेख, “कुलाल” जातिक उल्लेख, “चेक्टका धताः” आदिक यत्र तत्र वर्णन भेटइत अछि। जातिक ज्ञान कबि पाञ्जिक एकमात्र पयोजन छल पञ्जिच कायस्थ पाञ्जिक अध्ययनसँ स्पष्ट अछि जे कतु अंतजातीय विवाह सेहो होइत छल। कारण कायस्थक पाञ्जिमे गोतक उल्लेख नहि अछि। बलायन मूलक आदि पुरुष मंधदासक गोत छोढमे अछि, कुचबिहारामे विशेष आ अधिकांशमे काश्यप लिखल गेल अछि। पाञ्जिमे कतहु नहि कहल गेल अछि जे अमूक मूल श्रेष्ठ आ छोट अछि आ ने भलमानुसे गहस्थिक चचषओहिमे कतहु अछि।

पाञ्जिक पूर्णज्ञान पाचीन कालमे पञ्जीकार लोकनिके देल जाइत छलन्हि आ पाचीन पाठशालामे अधिकांशमे पाञ्जि शास्त्रक पढाइ होइत आ जे एहिमे उत्तीर्ण होइत छलाह सएह ‘पञ्जीकार’ होएबाक योग्यता पाप्त करैत छलाह। पञ्जीकारके निम्नलिखित वस्तुसँ अवगत हैब आवश्यक छल—

i) मूल ग्रामक,

ii) डेरिछली,

iii) शाखछली,

iv) सादा उतेढ।

पाञ्जि लिखबाक हेतु किछु नियमक पालन आवश्यक छल। पञ्जीक एक पातक एक पष्ठक सोलह कालम आ गाम एवि

पकाि विभतत कैल गेल अवि ____

मायक िशक हेतु आठ कालम आ गाम।

वातामहीक िशक हेतु चावि कालम आ गाम।

पवातामहीक िशक हेतु दू कालम आ गाम।

िदा पवातामहीक िशक हेतु एक कालम आ गाम।

अपन सियंक ५पीढी पूिषाक हेतु एक कालम आ गाम।

पाकाक १६कालम विभतत देखबामे अिइयै। एक पातक एक पष मे १६मूल गामक उल्लेख िहैत अवि ३१व्यक्ततक नाम आ १६कह्याक नामक उल्लेख िहैत अवि। अधुना पाका देखबाक अिि अध्ययन कबिाक अिगक्त आब पञीकाििके नव्ह िक्व्ह। कायसिक पञीकाि मूलतः दुई िशक िवि महुनी आ सीसब। पाकामे जातीय इक्तहास सुिक्षत अवि।

पंञीक कावि:- पञीक कावि कि सम्बह्ध सेहो विदानक बीच मतभेद अवि। सब तथ्यक अनुशीलन केला उपाित हमाि अपन विचाि इ अवि जे पञीक पािभ १३१०-११ ई.मे भेल होएत। १३२३ सँ १३२७ धवि कि कावि जे मनैत िवि से हमाि बुिने माह्य नव्ह भऽ सकइयै काििण १३२३सँ १३२७क बीच हविक्सिंह देि मुसलमानी आकमणसँ ततेक तबाह आ व्यस्त िलाह जे ओव्ह समयमे कोनो एहेन काज कबि असंभि िल। नेपाली सोतसँ इहो जात होइि जे हविक्सिंह देि १३२६ई. धवि कावि लासँ पडा चुकल िलाह आ तकि बादक हुनक इक्तहासक कोनो वास्तुकी पता हमाि लोकवाके नव्ह अवि। काठमाण्डुक िीि पुस्तकालयक गोपाल िशाििलीक मूल एतए विज पाठकक हेतु देल जा िहल अवि ____

“स माघ शुक्ल ३ काहूिकाः हरिशंहु िजासन
कहोसन तासत गही टो ढीलीस तुर क याके
िङ ियित मानालपं िमु अगु गन याङ िस्थं
क्शमािनि गडढ भङ याङ काहूिकाया िजा महाि
आव्कन समस्त िडङ व्यसन िगि टो गलिवि नो
कलह्दुंकल िः गलिवि नो िजिगाम दलखा धाि ि िगि।
कंपोतस िजा हरिसंह तो क्शाकथ सि
काय नो मआि नो उभय बंव्ध यंङा कूलन
जीङाि हंगि िजि गामया मि िधािो
धायान समस्त धन कासन”।

उपाितत िशािलीसँ स्पष अवि जे हरिसंह देि ७जनिि १३२६के क्शमािि गढक नष भष भेला पडेला आ तकि बाद ओ मवि गेला। िजगाािक मािि भाि हुनक पुतके वािफ्नाि कए कैदी बना लेलकव्ह आ हुनक सब िसतुजात लूट पाट लेलकव्ह। ओ शिणािक शेणीमे िलाहे शासक व्हसाबमे नव्ह। एव्ह पसंगके जखन हमाि लोकक ध्यानमे िखब तखन बुिना जाएत जे पजी पबह्ध सन काजक पािभ १३२३ — १३२७क बीच नव्ह भेल होएत। मैवि ल पम्पािमे इ कहल गेल अवि जे शक् १२४८मे नेहािमे वि शिचक महादान कएने िलाह। ओ पजी कणषाि षिविदान लोककाक आहान कएने िलाह। शक् १२४८मे इ सम्भि नव्ह भऽ सकइयै काणि तखन ओ पािव्जत भऽ नेपाल पडा चुकल िलाह। िधुनह्दन िा दाि बनाओल पजी पबह्धक आव्कमे एव्ह तिहे श्लोक अवि —

“शाके शी हरिसंह देि नपतेभूषाकष१२१६ तुल्ये जका —

स्तस्मादंत बतेऽब्दके द्धजगणैः पञी पबह्धः कतः"॥
१२१६+७८=१२९४ई. जखन हर्विसिंह देि एकटा नाबाक्लकक र पमे िल। अहु समयमे पञी पबह्ध सन मूल पशपि विचाि कबिाक क्मता क्हनकामे तखन नक्ह हेतैह्ह तै इहो क्तवि हमिा बुिने अमाह्य अवि। शक्तक्सिंहक समयसँ क्तर्विलामे अस्तव्यस्तता िल। चण्डेशि ठाकुि हर्विसिंह देकि मुख्य सलाहकाि िलाह आ िज्यक हेतु सब काज कौित िलाह। नेपाल विजयक असिपिि तुला पुरर सेहो केने िलाह। १३१४क आसपास हर्विसिंह देि यिस्क भेलापि अपन िज्यक भाि सम्हालिक्ह आ तखने चण्डेशकि तति िधानमे नेपाल विजयक खुशखबिी सेहो भेटलक्ह। ओम्हि मुसलमानी पकोप जोिसँ बढ़ हिल िल तै हेतु सामाक्जक क्यम काषाके सुदढ कबिाक हेतु क्हनक ध्यान आकष कैल गेलक्ह आ एक्ह क्दस ध्यान देलक्ह आ पञी पबह्धक व्यसिा केलक्ह। पाकामे िट पैघक गप्प नक्ह िल इ सभ कल्पना मात विक। सब जाक्तक हेतु पञी पबह्ध भेल िल मुदा मैविल बाहण आ कायस्ि िक्डके इ चलल नक्ह। सूिी लोकक्तक बीच सेहो पाका िल आ हिर्वया ति मधेपुिमे एकि संकेत भेटल अवि। सूिीमे पका आ पदिी एखनो वििजमान अवि। एतए पैघ काज कबिाक हेतु काफी समय आ पलखक्तक आिश्यकता िल तै १३१०सँ १३१४क बीच पञी पबह्धक पािभ हैि बेसी युक्तसंगत बुवि पडइयै।
क्तमक्लक्खत तीनटा सोतपि एक्ह पसंगमे विचाि कबि आिश्यक ____
"शाके युग्म गुणाकषसक्मत िि भूपाल चूडामक्णः

शीमच्चि हरिसिंह देवि विजियी पञ्जी पबन्धः कृतः
तस्मात कणषबीजकल्लतं सुवंश चकेपुिि।
कायस्थि मन्ना पदस्थि गुणानः शी शंकि दतभान"॥

शंकि दत मल्लिकके (सीसब मूल)के १३१० ११मे हरिसिंह देवि पञ्जी पबन्ध कबिाक आदेश देने िलथि्ह। श्यामलाल चौधिी लिखत "*िशािली मैथिलि कणष कायस्थि उपाख्यान पुस्तक िश कुलदीपक*" (इ पाडुलिपि सम्पति नैशनल लाइबेिी, कलकताक, 'शाक्त देिी िधा कषण चौधिी संगह'मे सुरिक्षत अछि आ ओहिठाम कायस्थि पञ्जीक तालपत पोिी सेहो)मे कहल गेल अछि जे शंकि दत मल्लिक अपन भावान मोहनिि मूल गामसँ लडूआिी डेिी अविस्त गुणपति दासके पाञ्ज देलथि्ह तै इ िश पञ्जीकाकि िश कहाओल। श्याम लाल चौधिी एिम पकािि श्लोक लिखने िथ-

"शाके युग्म गुणाकषसम्मत िि भूपाल चूडामणि
तस्मात् कणि विज कल्लतं कायस्थि पञ्जी पबन्धः
कृतः तस्मात् मंत गुणीना शी गुणपतिः दतािन॥

तेसि सोतके स्पष्ट केलहाि िथि मेजि विनोद बाहािी िमा। हुनका दािि पस्तुत अध्ययनक सोतमे एकठाम लं.सं. २३३(=१३५२)मे लिखल कोनो 'दत मल्लिक'क सबूत भेटलच्हि अछि। इ ओहि 'दत मल्लिक'के शंकि दतक पुत शंभू दत मल्लिक मानैत िथ। शंभूदत मल्लिक पाञ्जक नकल कबि १३५२ई.शुर केलच्हि। शंकि दत कवि सेहो िलाह। एहिसब तथ्यके एकठाम संगहित कए जखन हम अध्ययन कित िी तँ हमिि इ स्पष्ट बुिना जाइत अछि जे पाञ्ज प्रमाणमे

पमुख र पे बाह ण आ कायस्‍ि लोकक्‍क योगदान ्लैक आ १३१०सँ १३१४क मध्‍य पञी पि व्‍यसि‍ािवत भेल। तकि बाद जखन हवर्ि‍संह पडाके चल गेला तखन पव्‍ग्‍डत लोकक्‍ बैक्‍सके ओकि सव्‍ औलक्‍ह आ ताक्‍हमे ताक्‍ह क्‍दनमे १५ २०िरष लगले हेतैक्‍ह तै संभि जे बाह ण कायस्‍ि क पाक्‍ आ िशि संगह कबिामे जे समय लागल हेतैक्‍ह तकि बाद जे एकटा सागोपाग वि िणि पस्‍तुत भेल होएत से १२४८ शक=१३२६/२७मे पकाव्‍शत भेल होएत। क्‍व िलाक तत्‍कालीन िजनैक्‍क क्‍सि क्‍तमे देखैत उपि ितत तकषहमि बेशी युक्‍तसंगत बुवि पडइयै आ तै एकि क्‍तवि क्‍णषि कबिाक पशपि ओक्‍ह तथ्‍यके ध्‍यानमे िखब आि‍श्‍यक।

कणाट आ ओइनिि युग क्‍व िलाक सामाक्‍जक इक्‍तहासक दक्‍ ये महतिपूणषमानल गेल अवि। बौद धमषक हास भेलापि एतए बाह ण व्‍यसि‍िक पुनस्‍िपन भेल आ जातीयताक व्‍यसि‍िमे जे िड बहुत लचड एक्‍ह बीचमे आक्‍ गेल िल तकि मैवि ल क्‍बंधकाि लोकक्‍ अनेकानेक स्‍क्‍त गंिक्‍ क्‍लक्‍खके ठोस बनौलक्‍ह। सामाक्‍जक कायषकलापक हेतु सेहो बहुत िसि गंि क्‍लखल गेल जाक्‍हमे चण्‍डेशकि गहस्‍ि तािकि सि‍िशेष अवि।

कुलीन पिाक विकास क्‍व िलामे एक्‍ह युगमे भेल। ओना एकि वि‍श्‍लेरण पञी पबक्‍धक पसंग भेल अवि पञि ओकि एक्‍तहाक्‍सक पषभूक्‍म एक्‍हठाम िखब आि‍श्‍यक। कुलीन व्‍यसि‍िाक संस्‍िापक िलाह आक्‍द सूि जे पूिी क्‍व िलामे कतहुँ शासन कि ति िलाह आ िद िचस्‍क्‍त हुनके ओतए क्‍ह अपन

ह्यायकथाका नामक पुस्तकक चिना कएने लाह। आद्सूि क समय (९म शताब्दी)मे मवलिा आ बहािमे बौद धमक पधानता लि आ तै बाह णर्तकि क्रिाषि ओ कोलाञ्चसँ पाचटा शुद बाह णके बजाय अपना ओतए आशय देलकह। आद्सूिकि दबािमे बाह ण लोककक गीकणि पािभ भेल लि आ पाि बल्ला सेन अपनाके आद्सूिकि शिसँ मलाय अपनाके कुलीन पाक जहमदाता घोवत केलकह मुदा एकठाम इ समणीय जे मवलिाचलसँ पाप्त दू ताम पत (बनगाि आ पंचोभ) अवमलेखमे दान देबाक हेतु कोलाञ्च बाह णक उल्लेख समष अवि। मवलिाक पाकमे जे मूल गाम अवि सएह ओकि पाचीनताक सबसँ पैघ पमाण मानल जा सकइयै। एि पकाि कुलीन व्यसििक जहम सिषिमि मवलिकमे भेल लि आ पाि एकठामसँ बंगाल आ असममे इ पसलि। हविसंह देि ओकसब पुणि व्यसििके एकत कए पञी पबहधक व्यसिि केने लाह। एक पाक बादसँ विाहाद्क मयम सेहो शंखलाबद भेल। पक आ घटकक पिा चलल। एक पािके जँ मिाना बाबू समाजक मयमनक हेतु सविोष मनने विि तँ उपेहद्र ठाकुि एकि पकक्याि दी कहने विि। एकि चलते सामावजक संकीणता क्नानुक्न बढैत गेल आ बकौआक पि पचलत भेल।

एक युगमे व्यापक र पमे िजिपूत लोकक्क विकास भेलकह हुनको लोककमे पाकक पिा चललकह मुदा बहुत क्न धवि नक कि सकलकह। ओना मवलिामे ताक क्नमे गहधविया िजिपूतक विकास भऽ चुकल लि तािव

ज्योतिरीश्वरकि वर्णरत्नाकरमे ३६टा राजपूत जातिक वर्णन भेटइत अछि। मिथिलामे व्यापारी वर्ग, कर्मकार, कलाकार, पशुपालक, खेतिहर, साहूकार, आदि लोकक बहुलता रहैक। मिथिला मूल रूपेण खेती करैत छलाह आ व्यापार सेहो। आर्थिक उन्नतिक भार हिनके लोकनिपर छलन्हि। शूद्रक स्थान दयनीय छल। तेली, सूँड़ी, धानुक, यादव, धानुक, केओट, अमात आदि शूद्रक श्रेणीमे गनाइत छलाह आ हिनका लोकनिके कोनो विशेष सामाजिक अधिकार नहि प्राप्त छलन्हि। मुख्यतः इ लोकनि बाहुबल मजूर होइत छलाह आ हिनका लोकनिक सब काज अपन मालिकपर निर्भर करैत छलन्हि। जँ वर्णरत्नाकरमे एकर उल्लेख अछि तँ विद्यापतिक लिखनावलीमे हिनका लोकनिक दयनीय स्थितिक वर्णन। वर्णरत्नाकरमे दू प्रकारक दासक जातिक वर्णन अछि i) अविकसित आ, ii) विकसित। एकर अतिरिक्त ज्योतिरीश्वर 'महत्तर जातीय'क एकटा पैघ सूची उपस्थित कएने छथि। ओहि सबसँ दासक जातिक सामाजिक स्थितिक पता चलइयै। गुलामी आ बेगारिक प्रथा सेहो छल।

स्त्रीक स्थिति तँ आर दयनीय भऽ गेल छल। समाजमे स्त्रीके कोनो उच्च स्थान प्राप्त नहि छलन्हि आ एकर स्पष्टीकरण तँ ज्योतिरीश्वरकि समकालीन लिखित साहित्यक भऽ जाइत अछि "स्त्रीक चरित्र अइसन दुर्लभ्य; स्त्रीक चरित्र अइसन दारुण" विद्यापति सेहो स्त्रीके "अलप गेआनी" कहने छथि। इ बात ठीक जे एहि युगमे लखिमा, धीरमती, विश्वास देवी सेहो भेलीह आ चन्द्रकला सन विदुषी स्त्री सेहो प्रसिद्ध हिनका

लोकक्मक आधापि इ नक्ह कहल जा सकइयै जे समस्त क्मविला स्त्रीक सिान क्हनके सब जका िल। सती पािक पचलन सेहो िल आ इ िजपूतमे बेसी िल। चौठम (मूँगेि)सँ पाप्त एकटा कागजसँ एक्ह बातक जान होइि। भक्संहक दुह पती सेहो िग्मतीक तटपि सती भेल िलविह्ह। स्त्री क्शाकापि विशेर ध्यान नक्ह देल जाइत िल। पदा पािक पचलन िल आ िश्यािक्तक पचलन सेहो। विक्हता स्त्री लोकक्मके सुहावान कहल जाइत िलक्ह आ ओ लोकक्म क्सह्दुकि क्यिहाि कँति िलीह।

पाटी फािबाक, काजि लगेबाक, तिहिि िगबाक, नह िगबाक पिा स्त्रीगणक मध्य विशेर पचक्लत िल। पानसँ दात लाल आ क्मस्सीसँ दात किबाक पिा िल। गोदना पडेबाक उल्लेख सेहो लोकगीताक्दमे भेटइत अवि। घोघ काढबाक पिा िल। धोती साडीक पचुि क्यिहाि िल आ स्त्री लोकक्म साया आ चोलीक क्यिहाि सेहो कँति िलीह। कसीदा काढबामे मैविलानी क्नपुण बुिल जाइत िली। िौडी सब लंहगा, घघिा आ कंचुकी पक्हँति िल। पनटीक क्यिहाि होइत िल। भोज भातक पिा सेहो िल आ मैविल तँ भोजन भट होइते िलाह। ज्योक्तािशि 'पुनभोज णिषाः' क्लखने िवि। चूडा दहीक विशेर क्यिहाि होइत िल।

क्लखनािलीमे जे पताक्दक नमूना अवि ताक्हसँ िाट जाक्तक सामाक्जक असििाक जान होइि। सियिं विदापक्त क्लखने िवि ___

"उच्चैः ककमधः कके समकके नपिक्त

नयमे क्याहार्ि च क्लख्यते क्लखन कमः"।

क्हन्दू मुसलमानक सम्पकष बढलासँ क्हन्दू लोकक्नक मध्य एक पकार्ि अस्तव्यस्तता आक्ब गेल ि ल। क्वदापक्त अपन कीक्तलताामे एकर्ि क्वस्तृत क्ाष्ण कएने िक्ि ___

"धर्ि आनए बाभन बटुआ, मर्ि चढाबए गाइक चुडुआ।
फोट चाट जनेउ तोड, उमर्ि चढाबए चाह घोड।
क्हन्दु बोक्ल दुक्ि क्नकार्ि, िोट ओ तुरका भभकी मार्ि।
क्हन्दुक्ह गोटओ वाक्लये हल, तुरक देक्ख होइ भान"॥

चण्डेशर्िक कत्य तिाकमिे ओक्हयुगक पूजा पाठ, पवक्ित्तहार्ि एर्ि उत्सर्िक्दक क्ाष्ण भेटइत अक्ि। गौर्िी पूजा, दुगाक्िा, दुगार्िी, ििहि दादशी, नक्सिंह दादशी, बुद दादशी, मत्स्य दादशी, िसिकल्याण, महाषमी आक्दक उल्लेख भेटइत अक्ि। एकर्ि अक्तक्ित उदकोत्सर्ि महोत्सर्ि, क्वनायक पूजा, भाष्कर्ि पूजा, सूयषूजा, आक्दक उल्लेख सेहो भेटइत अक्ि। फगुआक उल्लेख सेहो भेल अक्ि। (क्वस्तृत क्वििणिक हेतु देखु हमर्ि पोिी "क्मक्िला इन द एज आफ क्वदापक्त")।

सक्ताकाक्ि दक्ष कोण:- सामाक्जक समस्याक पक्त मैक्ि ल सक्ताकाक्ि अपन क्विशष दक्ष कोण िलक्ह जकर्ि मूल उदेश्य ि ल समहक्यात्मक पक्वक्त के पोत्साहन देर्ि। ओ लोकक्न क्वक्दक एर्ि अक्वक्दक तत्तकेि अपन सक्ताम संिान एकटा क्विशष समहक्यात्मक पक्वत्त के जन्म देलक्ह कािणि ताक्ह क्दनक पवक्िक्िक्तमे ओकर्ि आिश्यकता ि ल। एक्ह दक्ष कोणसँ ओ लोकक्न गौडीय आ उत्कलीय सक्ताकाक्सँ बडड आगा िलाह। शीदत उपाध्याय, चण्डेशर्ि आ क्वदापक्तक कायष एक्ह केत्रमे

पशंसनीय अछि। कीर्त्तानातासँ जे व्यक्तिक भान होइछ ताहिसँ बुझि ना जाइत अछि जे कालिलोमे हिन्दूक व्यक्ति दयनीय छल आ ओ लोकनि लाचारीक हालतमे छैत छलाह। जखन छजिकुमारि इबाहिम शाहक पक्ष कहलन्हि "अज्ज पुण्णा पुछविसिथी, पात्तसाह पापोस पाइअ", तखन दोसर कोन गप्प? कहबाक बाकी सेहो होइते छल। मुदा तखन कालिलामे उपाये की छल? विदापति हिन्दू मुसलमानक पसंगमे पायश्चितक कोनो चचषनहि केने छथि। छिचस्पति सेहो एहि दिस कोनो विशेर ध्यान नहि देलन्हि आ मात एतेक कहिके छोडि देलन्हि जे मलेच्छिक भारा नहि सिखबाक थिक(मलेच्छ भारा न शिकेत्)। ताहि दिन धरि बुझि पडइयै जे कालिलामे एहेन कोनो समस्या नहि उठल हेतैक कारण कतेक मुसलमानी पकोप कनेक ने बढल हौक एहिठाम हिन्दू शासक छल आ सूफी लोकनिक विशेर पभाव छहिलासँ मनोमालिन्य कम छल। अगर ककरो जबदस्ती मुसलमान बनाइयै देल गेलैक अथवा गोमास खुआइये देल गेलैक तँ ओकरा पायश्चित् कछिके घुरबासँ कोन लाभ। ओहिठामक लोग तँ ओहिना विशेर कटर होइत छल तै समस्या एखन धरि जटिल नहि भेल छलैक।

हिन्दूधमषके सुरक्षित रखिबाक हेतु बहुत रास पावजात, तीकर इत्यादिक निमाण भेल पछिअ लोक एतेक आलसी भS गेल छल जे ककरो एतेक पढबाक बुझबाक पलखति नहि छलैक। बहुत गोटए कोनो नियमोक पालन नहि करैत छलाह। एहिसबके ध्यानमे राखि शंकर मिश एकटा संक्षिप्त 'हृद्रोगाष्टकोदार' रचिना केलन्हि आ ओकर अंतमे लिखलन्हि

"एताि त्यिवा कते न पत्यि यात्, अह्यि ा तु पत्यि यात्"।

र दधि अपन शुक्द वि िकिमे क्लखलक्ह ___

"सत्येि िताकि पावि जात क्मताकी हािकितादयोऽह्ये।

तताव्म ततालसमानसाना भि दि पमोदम्य मम पयासः"।

चण्डेशि अपन गहसि िताकमिे वि ािहक क्नयमक पक्तपादन कएने िवि। मैवि ल पमिमािमे पक्तलोम वि ािहके माह्यता नक्ह िक यदवा एक्हपि वि चाि आ वि ािद दुनू भेल िक। मैवि ल स्नक्तकाि लोकक्नक सामह्त दबािमे िहैत जाइत िलाह आ तै इ लोकक्न अपन िचनामे बाह णेटाक महति दैत िलाह अनका नक्ह। शासक आ सामह्त सेहो बाह ण िलाह आ स्नक्तकाि लोकक्न अपने सेहो। शूदके तँ कोनो सि िने नक्ह देल जाइत िलैक। शूद पाडवि िकि सेहो नक्ह भऽ सकैत िलाह। ताि िवा र दधकि इ ितिय देखबा योग्य अवि *"शूदस्य िरोत्सगष ितये एि िदि पाठाव्यकाि नाह्यत इक्त सि षामावणक क्सदम्"* ___ (शादवि िकि)।

इ कतेक हास्यास्पद बुवि पडइयै जे जखन मुसलमान अिि आन वि देशी बाह ण शूदके एके िगि बुि त िहक्ह आ जखन दुनूक एक भऽ कए चलब अत्याि श्यक िल तखन बाह ण स्नक्तकाि लोकक्न अपन समह्ि यात्मक पि क्तिक बाबजूदो सबके क्मलाके एक संग नक्ह लऽ चक्ल सकलाह। बहु वि ािहक पि ि पत्नी पबह्यक काि णे बक्द गेल िल। गहसि िताककि अध्ययनसँ स्पष अवि जे दोसि वि ािह कबािक पूि षि पि मि पतीक पबह्य कऽ देबाक चाही। वि धिा वि ािहक सम्बह्यमे कोनो स्पष क्नदेश नक्ह भेटइयै। चण्डेशि वि ािहक सम्बह्यमे

मात एतबे कहैत छथि जे पूर्वक नियुक्ति कएनाइक पक्क व्यवस्थासँ कोनो बात करबासँ चुकाके नहि छिबाक चाही। कोनो दोर कोनो पक व्यवस्था हो तँ ओकर स्पष्ट करब देबाक चाही आ जँ कोनो बात नहि कहल गेल आ विचारिक बाद ओकर पता चलल तखन ओहि हेतु दण्डक आदेश सेहो देल अछि। मैथिल समाजकाकि पयतसँ व्यक्तिगत कानूनक अवधिला स्कूलक स्थापना भेल। एहिमे ओ लोकनि लक्ष्मीधरक कृत्य कल्पतरसँ बडड पभावित भेलाह। सामाजिक दुश्मनक वर्णन विधान अपन दण्ड विधिमे 'पकाश तस्कर' कहिके केने छथि मायाविक, तांत्रिक, व्यापारी, वैद्य, ठूठ गणिहि देवहार, इत्यादि भला आदमीक श्रेणीमे समाजक हेतु खतरनाक बुझल गेल छथि।

दानपर अवधिलामे विशेर बल देल जाइत छल। चण्डेश्वरक दान रत्नाकर, मिमदतक रोडस महादान पद्धति, विद्यापतिक महादान निर्णय एवं विद्यापतिक 'दान वाक्यावली' एहिबातक पमाण अछि। दानोमे सप्तसमुद्रदान, हेमहस्तिरथदान, विश्व चकदान आदिक उल्लेख अछि। एहि सबसँ स्पष्ट अछि जे इ सब गंभीर राजा महाराजा, सामंत लोकनिक हेतु लिखल जाइत छल आ सामान्य गरीब लोकके एहिसँ कोनो लाभ नहि छलैक। विद्यापतिके छोडि कोनो मैथिल स्मृतिकार गरीबक हेतु दानक रास्ता नहि बतौलन्हि अछि। मैथिल स्मृतिकार लोकनि तंत पंचरात्र एवं पाशुपत साहित्यसँ पभावित छलाह। समन्वयवादी होइतहुँ ओ लोकनि पंचोपासनाक समर्थक छलाह। दैनन्दिन जीवनके आयमत छिबाक हेतु ओ लोकनि धमषर विशेर जोड देलन्हि। समाजपर एकर पभाव पडल। संस्कृतक सुचिर

व्हनका लोकक्षक पयासे भेल।

समाजमे गुलामक पि सेहो पचक्लत िल। गुलामीक एहेन विकिािल र प िल जे पुि जक्ष। सामंतािदी क्यसि ा िल आ बक्हल मजूि िल। ि क्हियाक खिंद क्षकी होइत िल। गौंिि िव्टका पत, बही खाता, अजातपत, अकिािपत, जनौढी, क्षस्ताि पत, क्लखनाििली आक्दसँ बक्हया सबक्हक क्षसि क्तक पता लगैत अिव। १८ १९म शताब्दी धिव एकि पचलन क्षविलामे िलैक। ि क्हियाक सितिक्षकािक पशपि बिबिव लोकके आपसमे िगडा ािट होइत िलैक आ अंततोगतिा ओकि क्षणष कचहिंमे जाके होइत िलैक।

पाचीन कालसँ इ क्यसि ा चल अबैत िल। जातक, बौद साक्हत्य आ कौक्टल्यक अध्ययनसँ एक्हपि पूणष पकाश पडइत अिव। क्षविलामे पाचीन कालक्हसँ दास दासीक संख्याक विििण पाचीन साक्हत्यमे भेटइत अिव। नािदिक अनुसाि जँ कोनो गुलाम अपन माक्लकक जीिनिक ि क्त केलक आ माक्लक बक्ष गेला तँ ओकिा गुलामीसँ मुतत कऽ देल जाइत िलैक। विािद क्षंतामक्षणमे नािदिक मतके िचिस्पक्त उदत केने िवि जाक्हसँ स्पष होइि जे ताक्ह क्दनमे नािदिक इ मत माह्य िल। क्षविलाक सामंतािदी समाजमे हेक्षिधिव खिािस लोकक्षक जे महति िलैक ताक्हसँ बुिनाि जाइत अिव जे क्षयपात गुलाम, खिािस आ ि क्हिया अपन माक्लकक मोनके जीक्तके बहुत कक्ि पाप्त कैित िल। विदापक्तक क्लखनाििली आ मैविल स्तक्ताकाि लोकक्षक िचनाक्दमे सेहो एक्ह पसंगक विशेर बात भेटइत अिव।

दू बाहण पर्वािमे एकटा गुलाम लऽ कए जे ािगडा भेल आ ताह्पि न्यायालय अपन कणषा देलक्ह से अदािवध सुिक्त अिव आ तत्कालीन सामािजक वयसिािप पकाश दइयै। िह्या लोकक्क विस्ा बडड दयनीय होइत िल आ ओकिा सबक्हक इज्जत सदक्ा खर्तािमे िहैत िलैक। बिह्या सभक्हक अदला___ बदला, िलखा पढी, कऽ कए होइत िल जाह्सँ केओ कतौसँ भागे नक्ह। भगलापि ओकिा सजा देल जाइत िलैक। १७७०आ १८११क दूटा एहनो उदाहणिक पमाण हमिा लोकक्के भेटल अिव।

गुलामक अंतगत्ा कामक्लिखतके हमिा लोकक्ा िवख्र सकैत िी___गुलाम, नफि, खिास, िडंगि, कामकाि, िह्या, इत्याक्द। कुिमी, धानुख, केओट, अमात, कहािि, आक्द जाक्तक लोग खिासीमे ािखल जाइत िल आ िह्याके बाह्हल मजूि बुिल जाइत िलैक। एक्ह सबक्हक लोग घि गहसर्ािसँ खेती आ बहलमानी धिव कि्ति िलैक। चमािि जूता आ चमडाक कािबािक हेतु ािखल जाइत िल आ ओहुना िगर्ष्ाँ बाह्हल मजूि होएत िल। िमवलाक कोन___कोनमे ािट पैघ जमीह्दािक संख्या ततेक ने िल जे कोनो एहेन गाम नक्ह िल जाक्हठाम खिासी आ िह्यावािी नक्ह हो।

जखन एकि अभाि होमए लागल आ तंग भऽ कए पीक्डत___ शोिक्त लोग भागे लागल तखन एक्ह वयसिािके दढ किबाक हेतु कतेको उपाय िचल गेल आ िलखापढी शुर भेल। जे गुलामी या िह्यावािीसँ ािटइत िल तकिा हेतु िकस्तािपत िलखल जाइत िल। िमवलाक सामंतािदी वयसिािक इ एकटा

पमुख अंग ि ल। जकि उदाहि ण हेिकाधर्वि कार्वि लामे देखबामे अि इत ि ल। अपना शताब्दीक उत्तादिषे एक्ह पि ाक हास देखबामे अि इयै काि ण आब कार्वि लाक शोलकह्क वि शेर भाग अपना गामके ि ावड कमेबाक हेतु बाहि चल जाइत अर्वि ।

अध्याय १७

कार्वि लाक आर्वि षक इक्तहास

कार्वि लाक आर्वि षक अि सि ा अक्त पाचीन कालसँ अदपर्यंन्त कक्रपि आधार्वि त ि हिल अर्वि । पाचीन कालमे अखन जका जलक अभाि नक्ह ि ल। कार्वि लाक पाकक्तक बनाबट कक्ि एहेन अर्वि जाक्हसँ एक्हठाम कक्रक पगक्त नीक जका होइत अर्वि । ैक्िक कालमे खेत जोतबाक, बीआ पाि बाक, काटबा आ फक्सल तैयाि कि बाक वि स्तृत

रपे उल्लेख भेटइत अछि। पकला उतरि अनके काटल जाइत छलि आ तखन ओकरा बोरि बाहकहके खवहिानमे आनल जाइत छलि। दाउन होइत छलि तकर पशात् ओसौनी होइत छलि आ तखन ओकरा सवयािके क्यहिाकि हेतु रिखल जाइत छलि। एहि लेल करक लोकक्ाके बडड पविशिम करए पडइत छलिहि। नापतौलक आधारि छलि 'खाडी'। बखारिक उल्लेख सेहो भेटइत अछि। मविलामे चाउरि, जौ, मूँग, मकई, गहूम, काल, मसुरि, आदि वस्तु उपजैत छलि। जौ के रोपनी शीतकालमे होइत छलि आ गमी मासमे ओकरा काटल जाइत छलि। धानक रोपनी बसिातमे होइत छलि आ अगहनमे ओकरा कटनी होइत छलैक। अनावृिष्टसँ कवरके क्षति पहुँचैत छलैक। कीडा मकोडासँ सेहो फक्सल बबाद होइत छलि। अहरि, बाहाबड, बसात, अतवृिष्ट आ अनावृिष्टक संगहि व्टडडीक पकोपसँ कवरके धका पहुँचैत छलैक। अनावृिष्टसँ अकालक संभाविना सेहो रहैत छलैक। सामान्य कसानक स्थिति बढ़िया नहि छलि आ हुनका मालिक लोकक्ाक अत्याचारसिँ तबाह होमए पडइत छलिहि। करकक समूह विशाल होइतहुँ हुनका लोकक्ाके कोनो विशेराधिकारि नहि छलिहि आ हुनका लोकक्पर कजक बोरि बढिबे बनले रहैत छलिहि।

उपविरदमे जे जनकक बहुदक्षिणा यजक उल्लेख अछि ताहिसँ इ अनुमान लगाओल जा सकइयै जे मविला ताहि दिनमे एक समदशाली राज्य छलि। राजकोश धन धान्यसँ अशियै भरलि होइत अन्यथा एतेक पैघ यज ओ कइयै कोना सकितैि। ओहि यजमे हजारिक संख्यामे गाय आ सोनाक दान भेल छलि। गाय बडदपर विशेर ध्यान देल जाइत छलि ताहि दिनमे। बहदाण्यिक

उपकारदक अध्ययनसँ बुवि पडइयै जे मावि ला ताव्ह व्दनमे सुखी सम्पन्न िष्ट ि ल आ ओतए कोनो िस्तुक अभाि नव्ह ि लैक। ओव्हमे सामानसँ लदल बैलगाडीक उल्लेख सेहो अवि। आिगमनक हेतु ि ि एिँ नाकि व्यहािा होइत ि ल। ‘स णिषाद’क व्यहािा एव्ह बातक संकेत दैत अवि जे ताव्ह व्दनमे सोनाक व्सकाक पचलन ि ल। आवि षक व्यशांतताक काणि देशमे आध्यावत्मक एिँ बौव्दक विकास संभि भेल ि ल। मैवि ल लोकवन ताव्ह व्दनमे स भािसिँ शात एिँ व्कयाशील ि लाह। पढब व्लखबपि विशेर ध्यान दैत ि लाह तािवम सैव्नकक र पे सेहो ओ लोकवन ककिसँ कम नव्ह ि लाह आ तीि चलेबामे तँ अगगण्ये।

कवर मनुष्यक मुख्य कायष ि ल। लोक सब विशेर कए गामेमे िहैत ि ल। गाममे ३० ४०सँ लऽ कए १०००पविाि धवि िहैत ि ल। गामक समीपव्ह गाि ि व्भि ि सेहो िहैत ि ल। गामक अध्यक अि ि गण्यमाह्य व्यव्तत गामभोजक होइत ि लाह। गामक हेतु इ सविशेष एिम महतिपूणष पद ि ल। ि िजाक हेतु कि िसूल कबि, कवर व्यसि ि ाक व्नि ि कण कबि, गामीण ि गडा ि ि टके फविि बि व्हनका लोकवनक मुख्य कतषव्य ि ल। जँ उपजा नव्ह होइत ि ल तँ गामीण लोकवनक भोजनक व्यसि ि व्हनके कएि पडइत ि लव्ह। उपजवहािा खेतमे पहर दािा सेहो ि िखल जाइत ि ल। उत्पादनक साधन मूल र पे धनीमानी लोकक हािमे ि ल तै साधाि णि करकक व्सि िा दयनीय िहब स भािविके ि ल। जँ कोनो काणि अन नव्ह उपजल तँ व्हनका लोकवनके अपाि कष क सामना कएि पडइत ि लव्ह। अकाल पडबाक उल्लेख पाचीन साव्हत्यमे भेटइत अवि। महािस्तुमे एव्ह बातक स्पष उल्लेख अवि जे

ैशालीमे एक बेि भीरण अकाल पडल ि ल। भूखसँ पीवडत भऽ असंख्य लोक मुइल ि ल आ मुदाक दुगर्न्धसँ समस्त नगि कि ि ताि ि ण दुगर्न्ध पूणष भऽ गेल ि ल। एक्ह युगमे बाढ़क पकोपक उल्लेख सेहो भेटइत अवि । गण्डकसँ पूिषक केतमे जलक बाहुल्य हैित ि ल। मौयषकालीन अवमलेखमे अकाल आ अभाि क उल्लेख भेटइयै। कावि लाक अंतगषत विदेह, ैशाली, चम्पाि ण, अंगुताि प, पुण्र, कौवशकी कक, आवद स ि ान सब कवरक हेतु पवसद ि ल आ एव्ह समस्त पदेशके अनक भण्डाि कहल जाइत ि ल। अंगुताि पक आपण गाम सुखी सम्पन्न ि ल। खेती कबाक हेतु खेतके ि ट ि ट टुकडीमे बाटल जाइत ि ल आ खेतक बीच सबमे आवड सेहो होइत ि ल। कावि लामे इ पि ि अदपयंत अवि ये।

ताव्ह वदन कावि लामे जमीनपि सि ति ि वधकाि क पश लऽ कए विदानमे मतभेद बनल अवि । अखन जति जे साधन उपलब्ध अवि ताव्ह आधाि पि कोनो वनणषात्मक मतक पवतपादन कबि कवठन अवि काि ण जमीनपि दुनू पकक विचाि क हेतु सामगीक अभाि नव्ह अवि । व्यवक्तगत रपे हमि अपन मंतव्य तँ इ अवि जे पाचीन कालमे औपचाविक रपे समस्त जमीनक अवधकाि ि ि जा होइत ि लाह वकएक तँ पि म्पि ागित विचाि 'सि भूवम गोपाल की" मानल जाइत ि ल आ ि ि जा ईशि क पवतवनवध व्हसाबे जमीनक मावलक सेहो होइत ि लाह। विदान लोकवन तीनटा मत पवतपादन केने ि वि व्यवक्तगत, सामूव्हक आ ि ि जकीय सि ति ि वधकाि आ तीनू मतक पक विपकमे एके ि ि तकष देल जा सकइयै। फाव्हयान वलखने ि वि जे केओ ि ि जकीय जमीन जोतैत ि वि हुनका ओव्हमे सँ वकि ु अंश ि ि जाके देमए पडइत ि व्ह। अि षशास्त्रमे ि ि ज्य

कायंक्तत कक व्यसिाक वीिण अवि। जातकमे सामूकक सतिाव्धकाकि वीिण भेटइत अवि।

जमीन पाचीनकालक आवि षक जीिनक नीि िल जाक्हपि समस्त आवि षक रपिखा ठाढ िल। जातकमे भोगगाम आ अिषाास्त्मे 'आयुधीय' गामक उल्लेख भेटइयै। एक्ह सभक व्याख्या पत्येक विदान अपना अपना ढँगे किति िवि। अिषाास्त्मे कौक्टल्य कमषािाकिे नगद ितिन देबाक व्यसिा केने िवि मुदा 'आयुधीय' गामक उल्लेख कि् विदानके दोसि अिषलगैत िव्ह। जखनसँ पचुि माताामे जमीनक दान शुर भेल तखनसँ सामंताििदक िजािपण सेहो भेल आ भाितक अह्य पात जका क्षविलामे सेहो सामंताििदी पिाक विकासक सूतपात भेल। सामंतािद क्षविलामे मध्ययुगमे अपन चिमोत्करषि िल। सामंताििदक पभाि जमीनक टुकडी टुकडीमे बटब बढए लागल आ बेगाि पिाक शीगणेश सेहो भेल। गुप्त युगसँ जे पि पाभि भेल से क्षविलामे बनल िहल आ सामंताििदी व्यसिाक पभाि हमिा लोकक्षक दैनक्हदन जीिनपि सेहो पडल।

क्षका एिँ कि व्यसिा:- एक्ह पसंगमे कि व्यसिा एिँ क्षकाक पसंगपि विचाि कबि अपासवाक नक्ह होएत। टाका पैसाक व्यिहाि होइत िल अिि नक्ह से क्षवशात रपसँ कहब असंभि मुदा िव्कदक साक्हत्यमे क्हण्यि, अयस, श्याम, लौह, शीशा, कारापण आक्दक उल्लेख भेटइत अवि। चानीक टाकाके 'क्षषक' कहल जाइत िल। क्षकाके कषाल, सतमान, क्हण्यि, क्षण्ड, आ कारापण सेहो कहल जाइत िल। 'सिणष सेहो क्षकाक हेतु व्यिहाि होइत िल। कतहु कतहु क्षकाके 'पाद' सेहो कहल गेल िक।

िाजाजनक अपन यजमे पत्येक गामपि दश दश 'सिणिषपाद' लगौने िलाह। ओिहमे पत्येक बाह णके तीन तीन सतमान सेहो देल गेल िलिह। बौद सािहत्यमे सेहो एिह हेतु बहुत शब्दक व्यिहाि भेल अिि। चानी आ तामाक पाचीन िसका पचुि मातामे िमििलाक विभिन केतसँ पाप्त भेल अिि हाजीपुि, चम्पािणि, िैशाली, असुिगिढ, गोिहिघाट, पटुआहा, बहेडा, जयमंगलागढ, पुिणया, बिलिाजगढ, मंगलगढ इत्यािद। एिह सभ सििनसँ तँ घैलक घैल िसका बहिाएल अिि। जातक किािमे िसतुक दाम 'पण'क माध्यमसँ देल गेल जाइत िल। िसकाके पण सेहो कहल जाइत िल। साधािणितः िसकाक तीन नाप िल २४, ३२ आ ४०िती। 'पाद' १००तीक चौिाई भाग होइत िल।

लोकके िाजाके किि किि सेहो देमए पडैत िलैक। डी. आि. भण्डािकिकि अनुसािि जनक कालीन आ बौदकालीन िमििलामे "पाद" किकि व्यिहाि विशेर पचिलत िल। िाजसि पशासनक जे माह्य िसदात िल तदनुसािि िमििलाक शासक लोकिन किि संचय आ ओसूली किैत िलाह। 'रडभाग' िसदात तँ सििाह्य िल। िाजा पजाक िकिा किैत िलाह आ तकिि बदलामे पजा िाजाके किि दैत िल। 'किि' रपमे जमीनसँ पाप्त किि सभसँ पमुख िल। समाहता िाजसि पशासक होइत िल। हुनका सहायतािि गोप तिा सिािनक सेहो होइत िलाह। पतञिलक अनुसािि केतकिि नामक एकटा पदािधकािी महतपूणष व्यिकत होइत िलाह जे किरयोग्य भूिमक सिकिण कए ओिहपि किि लगेबाक अनुशंसा किैत िलाह। बिल, भाग, भोग, किि, िहिण्य, उदक भाग, उदंग, सीत आिद कैक पकािकि किि होइत िल। एिहमे किि किि तँ बडड

कष कि लि। उपीतत शब्दक विश्लेरण कबिामे विदान लोकक्क बीच मतभेद िक्ह तिाबा उपीतत सबटा कि पचक्लत लि सेहो माह्य अर्वि। एकि अक्तवितत शुल्क, क्तलप्त, उपक्तलप्त, पणय, विषी, उत्संग आक्द सेहो र्किक विभिन नाम लि आ इ िाजकीय आयक मुख्य सोत मानल जाइत लि। इ सब पकािक कि क्तवि लामे व्याप्त लि आ ओक्ह ठामसँ पाप्त क्शलालेख आ तत्सम्बह्धी पाचीन साक्हत्यमे सेहो एकि उल्लेख अर्वि।

सामूक्हक आर्विषक जीनि:- बौद साक्हत्यसँ इहो स्पष होइि जे क्तवि लामे क्तक्ल जुक्लके िहबाक व्यसिि आ शेणीबद भऽ काज कबिाक आदत बहुत पुिाण अर्वि। जातक कि ासँ इ जात होइत अर्वि जे विदेहक क्तासी बंगाल होइत समुदक मागर्सँ विदेश जाए व्यापाि र्कित िलाह। ओ लोकक्त एक्ह हेतु सामूक्हक व्यसिि र्कित िलाह आ नाि आ जहाज सेहो बनबैत िलाह। विदेहमे बाहिासँ व्यापाि लोकक्त अबैत िलाह। एक्ह मानेमे पूिषपक्शम दुनूसँ क्तवि लाक घक्तष सम्बह्ध लि। आर्विषक जीनिक क्ेतमे एक्ह पकािक सामूक्हक संगठन लाभदायक क्सद होइत लि आ मैविल लोकक्त एक्हसँ विशेर लाभाक्न्वत होइत िलाह। बहदाण्यिक उपक्तरदसँ एकि पमाण भेटइत अर्वि। सामूक्हकताक हेतु गण, िक्त, पूग, संघ, जाक्त, शेणी आक्द शब्दक व्यवहाि होइत लि। 'शेणी' मूलतः व्यापाि लोकक्तक संगठन लि। व्यापाि लोकक्त िवणक कहबैत िलाह। व्यापाकि संचालनक हेतु व्यापाि लोकक्त अपन 'शेणी' आ संघ बनबैत िलाह। क्तु गोटए एकि गणक संजा सेहो दैत र्वि। िामायण महाभाितमे सेहो व्यापाि संघक उल्लेख भेटइत अर्वि। िामायणमे 'नैगम' शब्दक व्यवहाि भेल अर्वि। र्वक्दक

साहित्यक 'शेषी' आ उपकारदक 'शेक्षन' शब्दो सेहो सामूहिकताक पर्विचायक विक। मनु आ पाणिनिमे सेहो शेणी शब्दक उल्लेख अवि।

बौद साहित्य तँ शेणी शब्दसँ भिले अवि। लोहाि, सोनाि, कुम्हाि, तेली, व्यापाीि, मि़आ, कमाि इत्यादि लोकक्नक अपन अलग अलग शेणी होइत िलैक। हुनका लोकक्नक अपन नियम कानून सेहो बनने िलक्हि। ओ लोकनि अपन नियम अपने बनलके बनबैत िलाह। हुनका लोकक्नक मध्य जे कोनो मतभेद होइत िलक्हि तँ ओकिी ननपटाि ओ लोकनि अपन संघेक दाि किंत िलैि। संघ शेणीक पधान लोकक्नके िजिदबािमे समादि होइत िलक्हि आ कानून इत्यादि बनेबा काल हुनका लोकक्नक िय विचाि लेल जाइत िलक्हि। नविलाक महतक िणिष एकि दकषकोणे महाउमग्ग जातकमे अवि जाहिसँ इ जात होइत अवि जे नगकि चार कोनमे ननगमक संगठन िल।

शेणीक पधानके पमुख, पधान, जेटक अिि सेठी कहल जाइत िलैक। कमाि, सोनाि, लोहाि, मालाकाि, ताती, कुम्हाि आदि सभ िगषक अपन अपन पधान होइत िलैक। शेणीक अंतगषत काज केनिहाि पदाधिकाीिक िनयुक्ति इत्यादि शेणीसँ देल जाइत िलैक। समय समयपि िजा शेणीक पधानके विचाि विमिशषकिबाक हेतु बजबैत िलविह्ह। व्यापाीि िगषक पतिनिधिके बिाबि िजिदबािसँ सम्पकष िखे पडइत िलैक। शेणीके बहुत िसिँधाक्नक अधिकाि सेहो पाप्त िलैक। सामूहिक जीिनक सभसँ पैघ पमाण हमिा िशालीक उत्खननसँ पाप्त अिशेर सबसँ भेटइत अवि। साि्पिह, कुलक, ननगम आदि शब्दक व्यिहाि ओहिठाम

पछुि माताामे भेल अर्वि। नगि शासनमे क्हनका लोकक्क बडड पैघ हाि लिक्ह। ओक्हठामक बहुत मुदापि ‘‘शेषी क्तगमस्य’’ उक्ललक्खत अर्वि आ ओक्हपि बहुत गोटएक नाम सेहो भेटइत अर्वि——जेना हर्वि, उमा भट, नाग क्संह, साक्लभद, धनहर्वि, उमापाक्लत, गिाष़ उगसेन, कष्ण दत, सुक्खत, नागदत, गोण्ड, नह्द, मिाष़ गौर्विदास इत्याक्द——इ सभ गोटए कुक्लक लिाह। साथििहमे डोडडकक नाम आ शेक्त्रमे रक्त्रदत आ शीदासक नामक उल्लेख अर्वि। बेगूसियिसँ पाक्प्त एकटा माक्टक मुदापि ‘शी समुद’ आ दोसपिि ‘सुहमाकस्य’ क्लखल भेटइत अर्वि। ैशालीमे बैक्कंग पिके चालू खिबाक शेय क्हनके लोकक्के िक्ह आ ैशाली क्यापाि एिँ सम्पक्तधाि लोकक्क केह्द लि। एक्ह युगमे मैर्विल लोकक्त अपन आशयक्ताि साहक्सक भािनाक पर्विचय देने लिाह। उदोग——क्यापाकि सिनीयकणिक काणि शेणीके बल भेटल लैक आ क्यापाकि उत्तकरष्क काणिे सेटी लोकक्क उतिान भेल लि। अपन संगठनके मजबूत कऽ कए खिबाक आिश्यकता अहू लेल लैक जे हुनका लोकक्तपि कोनो कोनसँ कोन पकाि घातक आकमण नक्ह होमए आ हुनका लोकक्क सिािषि आँच नक्ह आबे। सामूक्हकताक भािनासँ जे बल भेटइत िक तकि अनुभि ओ लोकक्क लेने लिाह आ ओकि लाभके देक्ख चुकल लिाह। हुनक संगक्ठत शक्ततके नजअिह्दाज आब शासको नक्ह कऽ सकैत लिाह। पत्येक क्यिसायक पिक पिक संघ लि। मुगा पक——जातकमे १८टा शेणी (वालड)क उल्लेख अर्वि। मिश मजुमदाि २७टा शेणी (वालड)क उल्लेख केने र्वि। एकटा जातकमे क्तर्विलाक चार्विटा शेणीक उल्लेख अर्वि। शेणी कैक पकाकि अिष

व्यसिाक सहायक िलः ___

i) बैक्कंग पणालीके जीवित िखब।

ii) सब तहि स्तिुके ह्यास र पमे सुक्कित िखब।

iii) कजषदेबाक व्यसिा कबि।

iv) अपना केत्तक अंतगषाक भूक्मक व्यसिा कबि।

v) िजिस ओसुलीक काजमे सहायता देब।

vi) आपसमे सदािना बनाके िखब।

vii) अपना सदस्यक क्दक्स ठीका, पटा इत्याक्द लेबाक व्यसिा कबि।

viii) क्ाकी व्यसिाके क्नयक्मत कबि।

ix) अपना सदस्यके अनुशाक्सत िखब आ समय समयपि सामक्यक कि लगाएब।

x) सामूक्हक कायषक व्यसिा कबि।

xi) आिश्यक स्तिुजात पैदा कबि।

xii) विजापन पसावित कबि।

xiii) आिश्यकता भेलापि सिानीय तौपिि व्यिहाकि हेतु क्सका बाहि कबि।

शेणीके समाज आ िज्यमे पक्ताक्ात सिान पाप्त िलैक। जातकक अनुसाि भाण्डागाविकिक कायषक्ेत्त शेणीक क्ाकिण धवि सीक्मत िल। शेणीक क्नयमक माह्यता िजाके देमए पडइत िलक्है। पाचीन कालक सामूक्हक जीिनमे एकि विशेर महति िलैक आ जातकक अनुसाि क्मविलामे सेहो शेणीबद सामूक्हक जीिनक पमाण भेटइत अवि।

व्यापाि एिं उदोग:- अक्त पाचीन कालसँ क्मविलामे उदोग आ

व्यापारिक काफी प्रगति भेल छल। वैशाली चार कात नदीसँ घेरल अछि ये आ तैँ आवागमनक कोनो असुविधा कहियो हिबे नहि केलैक। विदेहसँ तक्षशिला धरि राजमार्ग बनल छल। जातक सभ तँ वैशालीमे उद्योग व्यापार सम्बन्धी कथा सभसँ भरल अछि। विदेहमे बाहरोसँ व्यापारी अबइत छलाह। वैशाली आ विदेह मुख्य व्यापारिक मार्गपर छल। राजगृह, कौशाम्बी, पाटलिपुत्र, वैशाली, कुशीनगर, कपिलवस्तु, श्रावस्ती आ वैशालीक बीच आवागमनक मार्गप्रशस्त छल। कश्मीरसँ होइत गान्धार धरि वैशालीसँ सोझे एक सड़क अबइत छल जकर वैशालीसँ उज्जैन, बनारस, चम्पा, ताम्रलिप्त, कपिलवस्तु, इन्द्रप्रस्थ, शाकल, कुशावती, पाटलिपुत आदि सैनिक सड़कसँ सम्बन्ध छल। सामुद्रिक व्यापारिक इ लोकनि बड़ड महत्व दैत छलाह आ समुद्रमे चलए बला जहाजके 'वहनम्' कहैत छलाह। मैथिल लोकनि दक्षिणी चीनमे अपन एक सांस्कृतिक उपनिवेश सेहो बसौने छलाह आ ओतए कतेक सैनिक नाम विदेह आ वैशाली सेहो रखने छलाह। रामायणमे वैशालीके उद्योग व्यापारिक केन्द्रक संगहि एकटा बन्दरगाह से कहल गेल अछि। चीन, तिब्बत आ नेपालक संग वैशालीक व्यापारिक सम्बन्ध छल।

सूती कपड़ाक कारबार ताहि दिनमे वैशालीमे बेसी होइत छल। बौद्ध साहित्यक अध्ययनसँ एहि पक्षपर विशेष प्रकाश पड़इयै तंतु, ताती, तंतभण्ड, तंत वितानम् आदि शब्द तातीसँ सम्बन्धित कारजक संकेत दैत अछि। वैशालीक 'कोकटी' अखनहुँ प्रसिद्ध अछि आ तखनहुँ प्रसिद्ध छल। एकर अतिरिक्त वैशालीक मुख्य उद्योगमे अबइत अछि चीनी, तेल, हड्डीपर कैल काज, धातु

उदोग, चमडा उदोग, माव्टक बतषाक उदोग, ि त, तािक पातक बनल िस्तु, वसलाई फािई, इत्याव्द। जवहना आई इ सब िस्तुक हेतु क्षवि ला पवसद अवि तवहना पाचीन कालहुमे िल। कुवसयािक चचष तँ तेिहम शताब्दीक क्षवभाती याती सेहो कएने िवि। ढोल, बाजा, आ अह्याह्य िट मोट उदोगक क्षमाण सेहो क्षवि लामे होइत िल। युद कालीन अस्त्र शस्त्र सेहो बनैत िल आ कहल जाइत अवि जे वलचिि ीक विर द युद शुर कबाक कालमे अजातशतु िि मूसल आ 'महाशील कातािे' सन यंतक वयिहािि केने िलाह। वलचिी लोकवन कुंकुम आ सुगवन्धत दवयक वयापािि किैत िलाह। कमािि लोकवन काठपिि तिह तिहक कलाकािी कइत िलाह आ पािि धातुक माला सेहो बनबैत िलाह। माव्टक सौह्दयषूणष िासिन आव्द बनैत िल आ ओवहपिि तिह तिहक पावलश आ कलाकािी होइत िल। माव्टक बासन एकटा कािी चमकैत पावलश होइत िल जकिा ''नादनष ब्लैक पावलशड िियि'' कहल जाइत िलैक आ समस्त भाितिमे एकि माग िल। क्षवि लाक विभिन केत्सँ इ पचुि मातामे पाप्त भेल अवि।

क्षवि लामे कपूि, चानन, नोन, िशिमी, ऊन, अफीम, कागज, सोना, तामा, पािि, चूना, आव्द िस्तु बाहिसँ मंगाओल जाइत िल। वयापािक दवा कोणसँ क्षवि लाक सम्मकषपूबमे तामवलवप्त आ पवशममे भरकचि सँ िलैक। क्षवि लासँ सभ पकािि अन, दलहन आव्द िस्तु बाहि जाइत िल। फल फवलहािी बाहि पठाओल जाइत िल। वयापािक दवा कोणे क्षमवलवखत पिि महतपूणष िल___

i) क्षवि ला िजगीि

ii) क्षवि ला शािस्ती

iii) वैशाली कपिलवस्तु
iv) विदेह पुष्कलाविती
v) वैशाली चम्पा
vi) वैशाली वैसिन्धु
vii) वैशाली पाटलिपुत्र
viii) वैशाली ताम्रलिप्त
ix) वैशाली नेपाल तिब्बत

सरिल मार्गक अवस्थित इ लोकक्सन समुद्र मार्गक सेहो काति छलाह। गण्डकसँ गंगा आ चम्पाक मार्गबाटे इ लोकक्स ताम्रलिप्त धरि पहुँचैत छलाह आ ओतहिठामसँ सुवर्णभूमि आ आस्पाहस्थ सन्निपर जाइत छलाह। जातकक कतिसँ इ जात होइत जे वैसिन्धुक घोडाक व्यविहारि वैशालीमे होइत छल आ वैसिन्धुक सम्मकषभेलासँ वैशालीक व्यापारक सम्बन्ध पश्चिमोसँ घनिष्ठ हैत बुझि पडइयै। भारतिक व्यापारि लोकक्स विदेशलोन धरि जाइत छलाह तैं संभव जे मैथिल व्यापारि वैसिन्धु बाटे आन व्यापारि सब संग ओम्हर जाइत होथि। पशस्त्त सरिल आ समुद्र मार्गक कारणे वैशालीक व्यापारिक पगति अपन उत्कर्षपर छल आ जातक एकर सबूत अछि। (एहि विषयपर विस्तृत अध्ययनक हेतु देखु मुहम्मद अकीकक लिखल "इकोनौमिक हिस्टी आफ वैशाली")।

मौर्यसयुगके मंगलकारि राज्यक युग कहल गेल छैक। एहि युगमे जनताक सामिग्रीण आर्थिक जीवनिक नियंत्रण राज्यक माध्यमसँ होइत छल। खान इत्यादिपर राज्यक प्रभुत्व छल। राज्यक जमीन आ करक कार्यक लेखिक्णक हेतु अधीक्षक नियुक्त होइत छलाह। राज्यक प्रत्येक विभागक हेतु अलग अलग अधीक्षक हैत छलाह।

ाज्यक व्दसँ कवरके विशेर महत देल जाइत लैक आ जनकल्याणके ध्यानमे ाव्ख इ साभाविको ल। बंजा जमीन सभमे खेती कबिाक हेतु शूद लोकक्के बसाओल जाइत लैक। पुाव्हत आ विदान बाहण लोकक्के दानमे जमीन भेटइत लैक। क्संचाई पटौनी आ मालक क्यसिा ाज्यक व्दसँ होइत लैक। पाकव्क उपदसिँ बचबाक हेतु ाज्यक व्दसँ सब पबह्ध होइत ल। गाम सभमे सहयोग सव्मक्क क्यसिा सेहो ल आ केओ एव्हमे सक्मक्त नव्ह होइत लाह हुनका दव्डत कैल जाइत ल। उदोग, क्यापा आ ाणज्य सेहो पगव्क पपि ल। पशस्त ाजिमागष्क क्यसिासँ क्यापाकि पगव्मे सहायता भेटइत लैक। बाजामे काधावति मूल्यपा सब स्तुक व्कको होइत ल आ मूल्य कायंतण आ तिन काधाणिक क्सदातक पक्तपादन आइसँ २३००रिष पूषकौव्टल्य केने लाह। जे केओ ाज्यका देबामे असमाषलाह हुनका ओव्ह बदलामे बेगाा कए पडैत लव्ह। क्यापााके पूणष मातामे का देमए पडइत लव्ह।

गुप्त युगमे कोनो विशेर पर्वतिष्ा देखबामे नव्ह अइयै। कव्र, उदोग, क्यापाकि पगव्त अहुयुगमे भेल। शिालीसँ पाप्त मुदा एव्ह युगक आविष्क जीनिपा पकाश दैत अवा। फाव्हयान आ व्हयुएन संगक याता विणिसँ इ जात होइा जे क्वलाक आविष्क असिा ओव्ह युगमे बेजाय नव्ह ल। एव्ह युगमे सामंतादी पाक विकास भेल। लोकके आब जमीव्दााा पाक अनुभा होमए लागल लव्ह। जनताक विशाष समूह अहुखन गाममे बसैत ल आ कव्र आजीविकाक पधान आधाा ल। 'काक मातामे हो फो आब जमीनक अनुसाा हैा पाभि भेल। जाव्हठाम पटौनीक क्यसिा ल

ताहठाम कि बेसी लगैत छैक आ छिजि जमीनक कम। ह्युएन संगक अनुसारि एकठामक किसान पर्वशिमी होइत छलाह आ अधिक अन उपजबैत छलाह। जमीन मूलरूपसँ तीन भागमे बाटल जाइत छल—

i) गोचर जाहिमे कमन पकारक घास उपजैत छल।

ii) बंजर कोनो पकारक उपजा नहि होइत छल।

iii) उपजाऊ।

हाटक व्यवस्थिा सेहो पारंभ भऽ गेल छल। हाटक कारिक्रणक हेतु 'हटपक' नामक एकटा अधिकारी सेहो नियुक्त होइत छलाह। बाह्मण आ क्षत्रियके करमुक्त जमीन दानमे भेटइत छलन्हि। एहि युगमे जमीन छोट छोट टुकडामे बँटि चुकल छल। भूमि नापबाक पणाली पचलित भऽ चुकल छल आ गुप्तयुगमे एकरा कुलपिय कहल जाइत छल। अन नापबाक पणाली सेहो पचलित भऽ चुकल छल आ ओकरा 'दोण' कहल जाइत छैक। खेतीबारी हरसँ होइत छल।

एहि युगमे व्यापारिक पगति सेहो खूब भेल छल। एहियुगमे बहुतो गोटए मर्वलासँ काशी जाइत छलाह। वसकाक रूपमे कौडीक पचलन सेहो भऽ चुकल छल। लहना तगादाक रिश बढल—चढल छल आ सूदक दर ९% सँ १२% धरि छल। भोजन स्त्तक सामगी एकठामसँ दोसर ठाम पठाओल जाइत छल। कैक पकारक आभूरण बनाओल जाइत छल। एक स्थानसँ दोसर स्थान सामान बैलगाडी आ नाविर पठाओल जाइत छल। आ सभपर चूंगीकर सेहो लगैत छैक। एक बैलगाडीपर बीस बोरसँ बेसी सामान लदलासँ दू टाका शुल्क लगैत छल। कनिना छिला

बैलगाडीपि एक टाका शुल्कक लगैत िल। कि सवित्तसागिसँ जात होइत अवि जे काशीक चार कात िस्तिाक जाल बािाओल िल। पुण्र दििासँ पाटवलपुत धवि क्षवले बाटे िस्तिा िल। एवह सबसँ स्पष होइि जे पाचीन क्षविला सब तहि सम्पन िल। आ देश वदेशसँ ओकि सम्पकष बनल िलैक। सामान्य मनुतखक जीिनमे कोनो विशेर पविितष नवह भेल िलैक। धनी लोकवन अपना धनके गाविके खैित िलाह।

मध्ययुगीन क्षविलाक आविषक इवतहासक जनबाक हेतु साधनक अभाि अवि तािि तत्कालीन सावहत्यक अध्ययनसँ हमि लोकवनके पयाप्त जान पाप्त होइि। ज्योवतिशिक िणिताकिमे एवह युगक आविषक वसिवतक विििण भेटइत अवि। ओवह गंिसँ इ पतीत होइि जे तावह वदनमे क्षविलाक गामीण सिि पाउल भऽ उठल िल। चाउि, जौ, विवभन पकािक दावल, बाजिा, मटि, तेलहन, कुवसयाि, र ई, वपआज, लहसून, दाना इत्यावद क्षविलामे पचुि मातामे उपजैत िल। चूडा आ चाउकि भूजाक उल्लेख सेहो भेटइत अवि। सोआ, मेिी, मंगिैल आ सोफक खेती सेहो होइत िल। आम, खजूि, नेमो, नािंगी, अनाि, अंजीि, जामून, कटहि, सपाटु, लताम, पपीता आवद फलक उल्लेख सेहो भेटइत अवि। चूडा दहीक पिा विशेर पचवलत िल। अन िखबाक हेतु बखािि बनैत िल। चीनी आ गूडक पाचुयष िल। एवहठामसँ मधु नेपाल जाइत िल। ताडी दार सेहो बनैत िल। महुआक दार बडड पचवलत िल। पानक बडका व्यिसाय क्षविलामे होएत िल। पान लगेबाक विवधपि ज्योवतिशितँ विवभन पकािक विधानो बतौने िवि। ओवहमे तहि तहिक मशाला पडइत िलैक आ ओ सभ मशाला

देशक विभिन्न भागसँ मँगाओल जाइत छलैक।

तीस पकाकि वस्त्रक निर्माण ज्योतिरीश्वर सेहो कएने छथि। दामी वस्त्रक अंगपोछि बनैत छल। ओ गिर्रि आ मुशहरीक उल्लेख सेहो कएने छथि। विभिन्न पकाकि धातुसँ अनेकानेक पकाक बासन बर्तन बनैत छल। निर्मिताकमे अष्ट धातुक उल्लेख सेहो भेल अछि। लोहा आ अन्यान्य धातु गलेबाक कलामे मैथिल निपुण होइत छलाह। एकठामक लोहार लोहा गलाके हर, खुरपी, कैची, चक्कू, कुड़हरि आदि बनबैत छलाह। खपड़ैल घरक उल्लेख सेहो भेटइत अछि। कमार लोकनि काठक अनेको वस्तु बनबैत छलाह। ज्योतिरीश्वर ३६पकाकि शस्त्रास्त्रक उल्लेख केने छथि।

निर्मिताकसँ जात होइछ जे मैथिल लोकनि तंजोर, स्लहट, अजमेर, काची, चोलपदेश, कामरूप, बंगाल, गुजराति, काबुयाढि, तेलंगना, आदि स्थान सभसँ अपन वस्त्र मंगबैत छलाह। ओहिमे शीखण्ड, मलय आ सूतिक उल्लेख सेहो अछि। नाव बनेबामे मैथिल लोकनि सिद्धहस्त छलाह। एकर विवरण धमर्सवामी सेहो उपस्थित केने छथि। नाव सबमे सिंह, बाघ, घोड़ा, बतक, साप, माछ आदिक चेन्ह रहैत छल। नाव बनेबामे मैथिल लोकनि अपन सौन्दर्यबोधक परिचय दैत छलाह।

स्वास्थ्यपर सेहो विशेर ध्यान देल जाइत छल। मैथिला तावन्दनमे दूध दहीक हेतु पसंद छल आ ओहिठाम लोग स्वस्थ होइत छल। देहक शंगार संग देहक सेवाक विन्यास सेहो छल। देह मालिश कएनिहारके मरदिनया कहल जाइत छलैक। भोजनमे गर्म मशालाक पयोग होइत छल। आ शरीरक सौन्दर्यक हेतु अगुरु, कपूर आदिक व्यवहार पचुर मातामे होइत छल। जीविक

एहन कोनो अंश अ ि ि सौह्दयष सामगीक एहेन कोनो अ यि ि नव्ह जक ि उल्लेख ि णिषताकिमे नव्ह हो। पंचशायकमे एक व्दक्स स्तीक पसाधनक सभ व रियक ि णिषा अव ि तँ दोसि व्दक्स पव ि ि ि क्सयोजन आ गभष क्सा िधिक तकक व व्धि व्लखल अव ि। कामसूतसँ कोनो अंशमे एव्ह गं िक महत ि कम नव्ह अव ि। ज्योक्स ि शि कि ि णिषताक ि, पंचशायक आ व दि ापक्तक कीक्सष्तता एि ँ व्लखना िली पढलासँ बहुत बातक जान होइ ि।

व दि ापक्तक व्लखना िलीसँ इ जात होइत अव ि जे ि जिसक ि सेहो ि सूिल होइत ि ल। भूक्स नपबाक उल्लेख सेहो ओव्हमे अव ि। दानपतक सूची सेहो ि खिल जाइत ि ल। एव्ह गं िमे ् ण पत, खेती क्सय सि ि ि पत, बह्धकी क्सय सि ि ि पत आव्दक व ि ि णि भेटइत अव ि। दाना ितिया िलीमे ि हिव ि, साठी आ लतामक चचष अव ि आ ओव्हमे कैक पका िकि ि स्तक उल्लेख सेहो भेल अव ि कापाक्सक ि स्त, समेम ि स्त, कौम ि स्त, कौशेय ि स्त, कुश ि स्त, कक्सज ि स्त, मगलोमज ि स्त, ि कि्ा ि क् संभ ि ि स्त आ आव ि कि ि स्त। कीक्सष्ततामे बाजा ि, हाट, नग ि, आव्दक व ि क्शष ि णिषा अव ि। बजा िमे पनहटा, धनहटा, सोनहटा, पक ि निहटा, म ि हिटा इत्याव्दक उल्लेख अव ि। ओव्ह गं िमे दव ि दिताक उल्लेख सेहो अव ि। तत्कालीन दव ि दिताक व ि ि णि ओव्हमे अव ि। कीक्सषताकामे व दि ापक्त कहने ि व ि जे ि जिाक मुख्य कतष्य होना चाही दव ि दिताके खतम कि ि। ् णक उल्लेखो कीक्सष्ततामे अव ि आ दव ि दिताक व ि ि णि तँ पदा िलीक कतेको गीतमे। आव ि ष्क इक्सहासक दक्स कोणसँ इ युग अखनो एकटा व ि क्शष अध्ययनक अपेक्स ि खिइयै का िणि ने तँ उपेह्द ठाकु ि आ ने मोहम्मद अकीक एव्ह कालप ि

कोनो पकाश देने िर्वि। िोड बहुत र्वििोणि हम कार्विला इन द एज आफ विदापकामे कैल अर्वि। मुसलमानी पसासिँ आर्विषक जीिनिक र पर्िखिामे सेहो िोडेक पर्वितिषा भेलैक मुदा तइयो मैर्विल अपन कटतिाक काणिे आन पातक अपेका एकहठाम अपनाके फिके खिलकह आ अपन विधि विधानके यिशकातत सुिकत सेहो।

मुसलमानी शासन कालमे कार्विलाक आर्विषक जीिनिमे कोनो विशेर उल्लेखनीय पगका नकह भेलैक अकातु कसिका यििति िहलैक। शाहजहाक समयमे जखन समसत भाितिमे अकालक कसिका उतपन भेलैक तँ कार्विलो ओकहसँ िचिल नकह िहल। कासतकाि आ सामाहय कसानक कसिका बडड दयनीय भऽ गेलैक। कािहूतमे ताकह कदनमे बंजािि लोकक्कक उपदि जोिपि िल। बकिअिक याता र्विोणिसँ जात होइि जे बंजािि समसया उभर्विके ऊिप आएल िल आ ओकिि दबेबाक हेतु संगकठत पयास भऽ िहल िल। करक लोकक्कक कसिका बदतिि भऽ गेल िल आ औिगजेबक पिोक भेलापि तँ कसिका आिि कयहतनीय आ दयनीय भऽ गेल िल। भाितिमे अंगेज आ अहयाहय विदेशी लोकक्कक कािबाि आ कयापाि शुर भऽ गेल िल आ शोरण पकयामे एकटा नि गका आका गेल िलैक। १७५७मे पलासीक लडाईक बादक कसिकाके भाितीय अिषीकाक इकतहासमे अंधकािपूणष कहल गेल अर्वि। अंगेज, मुसलमानी अमला फैला, कहहदू जमीहदाि, बंजािि, सहयासी सभ कालके जनताके लूटबामे लागल िल आ संगकह अपन अपन जेबी गििि कबामे। देशक कयहता ककिि नकह िलैक। चार कात हाहाकाि आ अकालक कसिका िल। १७५७क पिाकमे कार्विलामे बििबिर अकाल पडइत िहल। बेकािीक समसया उतपन भऽ गेल।

कवर आ उदोगक क्सिक्त कदन पक्तकदन खसए लागल। क्ताहूतक गामक गाम उजाि होमए लागल।

१७७०मे बडका अकाल पडल आ ओक्हठामक लोग खेती बाि िक्डके पडाए लागल। ओक्ह िरषे दिभंगाक विशेर भागमे चासक कोनो काज नक्ह भऽ सकल आ क्सिक्त एहेन भऽ गेल जे १७८३मे दिभंगाक कलतटि एक्ह आशयक पस्ताि िखिलक्ह जे अधि पातसँ खेक्तहि मंगाकए दिभंगामे खेतीक क्यसिाि कैल जाइक। एक्ह अकालक काणि मुजफ्फिपुिक कलतटिीसँ पाप्त कागज सभसँ जात होइि। हाजीपूिसँ पुक्णषा धवि अभूतपूिषअकाल पडल िल। एकि मुख्य काणि इ िल जे सिकाि अकाणि सभ बातमे हस्तक्ेप किैत िल, आिगमन एिं यातायातक असुविधा िल आ ताक्ह कदनमे केओ एहेन योग्य नेता नक्ह िलाह जे एक्ह सभक्हक क्ताकिणिक कोनो पयास कवितैवि। एहेन अिजक क्सिक्तमे जकिा जतए जे हाि लगैक से सैह किि आ जमीन्दािी अत्याचाि आ शोरणक तँ कोनो किि नक्ह िल। १७८२मे बाध्य भऽ कए इ क्यम बनबे पडलैक जे क्बना अंगेजी सिकािक अनुमक्तके केओ जमीन्दाि अपन जमीनके एम्हि ओम्हि नक्ह कऽ सकइयै। िििबुस्ट साहेब १७८७मे क्ताहूतक शासक भेला। दिभंगाक महािज आ इस्ट इक्ण्डया कम्पनीक बीच एक्ह पशके लऽ कए बिबवि िंिट होइते िहलक्ह (देखु हमि 'द खण्डिलाज आफ कावििला')। क्सिक्त एहेन विभत्स भऽ गेल िल जे पिगना पचही, आलापुि आ भौिमि क्ािु उपजािीि नक्ह होइत िल आ इ सभ जंगलमे परिवक्तषि भऽ गेल िल। एक्ह सभ क्ेत्रमे जंगली जानिकि िास भऽ गेल िल। अंगेजके अपन िाज्यक सुिक्ाक क्ंता िलक्ह आ जमीन्दाि

लोकक्तके अपन सम्पक्तक आ बीचमे व्यसाइत िल दर्विद जनता जकिा हेतु चार कात अह्र्ािा अह्िा िलैक। सकिािा आ जमीह्दाकि अक्तवितित महाजन लोकक्त सेहो क्तदषा भऽ कए जनताक पसीनाक कमाई िीन लैत िलैक।

मानि कत शोरण यंतके साहाय्य देक्तहाि पकक्त सेहो िलैक। अक्तािवा आ अनाविा तँ अपन रप देवखबते िल आ ताक्तपि नदीक बाक्ढ तँ अपन नङटे नाच देवखबते िल। क्तवलामे नदीक तँ अभािा अर्वि नक्त आ पक्त िरषएकि बाक्ढ अखने जका ताक्त क्तनमे अबैत िल। गंगा, गण्डक, िग्मती, कमला, कोशी, बलान, कहि, लखनदै आक्त नदीक बाक्ढ बसिातमे तीन मास धर्वि क्तवलाके समुदमे बदैल दैत िलैक जाक्तसँ एकि आविक जीिन अस्त व्यस्त भऽ जाइत िलैक। कोशीके तँ सहजक्त 'दुखक नदी' कहले गेल अर्वि। एक्तसँ सब फक्सल नष भऽ जाइत िल, महामाििक पकोप बढैत िल आ आिगमन एिं यातायातक सुविधा लुप्त पाय भऽ जाइत िल। एहना क्तसिक्तमे बिबर्वि अकाल हैिि सिभावके १५५५सँ १९७५धर्वि क्तवलामे कतेको बेि अकाल पडल अर्वि आ महामाििक पकोप बढल अर्वि १५७३ ७४, १५८३ ८४, १५९५ ९६, १६३०, आ अंगेजक समय १७७०सँ १९००क बीच १५ २०बेि अकालक दशषा लोकके भेल िलैक। १६३०क अकाल तँ अक्तितीय िल। ओक्त साल क्तवलासँ बहुत िस लोगके भावाके दोसि ठाम चल गेल िल। क्तवलामे बाक्ढ तँ िवरक कम जका अबैत अर्वि आ एहेन शायद कोनो िरषहोएत जाक्तमे बाक्ढ नक्त आएल हो। बाक्ढ आ अकाल क्तवलाक आविक इक्तहासक एकटा अविन अंग मानल जाइत अर्वि।

१७७०क अकाल बिहारक इतिहासमे अद्वितीय छल आ बिहारक जनसंख्या घटिके एक तिहाइ भऽ गेल छल। १८७३_७४मे पुनः एकटा ओहने अकाल बिहारमे भेल छल जकर वर्णन हमर फतुरी लाल कवि अकाली कवित्तसँ भेटइयै ___ अकाली कवित्त अपकाशित अछि। अकालके दूर करबाक हेतु आ मजूरिके रोजी देबाक हेतु ताबड़ काल रेलगाडीक योजना चलाओल गेल जकर सम्बन्धमे फतुरीलाल लिखैत छथि ___

"कम्पनी अजान जान कलनको बनाय शान।
पनि को छिाय मैदानमे धरियो है॥
छिडत है अडादार बडा बीच धाय_धाय।
सभेलोग हटाजात केताजात खडा है॥
ताकिी अपाकिार खबरि देत छिर छिर।
चेत गयो देखकसदार छिि की उठिई है॥
कति है अनोर शोर पीीर कत लगत छिर।
जोर की धमाक से मशीन की बडाई है॥
कम्पूसन पहदिार कोरि सब अजबदार।
कोइला भरि कलि कार धूआँसे उडायो है॥
बाजा एक बजन लाग हारि अस।
चाकन लाग जैसा जो चढनदार सिाधर पायो है॥
गंगाके भलि धार उतरि गयो फतूर पार गाडीकी।
अजबकार कवित यह बनाया है"॥

अकाल, अतिवृष्टि, अनावृष्टि, बाढ़ि, अभाव, एहि पाकृतिक पकोपसँ बिहारक आर्थिक जीवन पतिकूल रूपे पभावित होइत अछि आ अहुखन अछि ये।

अंगेजक अमलमे आबाके जखन िलगाडीक सुविधा बढल आ आिगमन एिं यातायात आ संचाि व्यिस्िामे सुधाि भेल तखन क्मविलाक आविषक इक्तहासक रपिखामे पवितिषा हैि सिभाविक भऽ गेल। उदोग आ व्यापाकि पगक्त सेहो भेल पिञ्च ओकिा अखनो पयाप्त नक्ह कहल जा सकइयै। पाचीन कालक्ह क्मविलामे उदोग व्यापाि विकक्सत अिस्िामे िल आ मध्य कालक विशेष भागमे एकि से क्सक्ति बनल िहलैक मुदा इस्ट इक्णडया कम्पनीक समयमे आबाके एक्हमे िाडेक हास अिश्य भेलैक। खाद सामगीक अक्तविितत क्मविलाक क्केतमे कुक्सयाि, तम्बाकु आ पाट आ क्मिचाई बेस मातामे उपजैत अवि एक्ह लऽ कए क्मविलाक व्यापाि अवि। सब पकाकि खादीक कपडा सेहो एक्हठाम बनैत अवि। कोकटीक हेतु तँ क्मविला सषिक्सद अवि ये। क्मविलामे व्यापाकि पक्सद केह्न्द िल हाजीपुि, लालगंज, बगहा, गोविह्न्दपुि, सतािघाट, दिभंगा, कमतौल, खगक्डया, िासिा, पूसा, समस्तीपुि, मुजफ्फिपुि, िानीगंज, नबाबगंज, नािपुि, साहेबगंज, िाजगंज, िामपुि, अलीगंज, खबासपुि, दुलालगंज, कक्लयागंज, देिगंज, क्कसनगंज, बहादुिगंज, बािसोई, बेगूसिाय, तेघडा, दलक्संहसिाय इत्याक्द। एक्हमे नािपुि तँ अंतािष्टीय व्यापाकि मुख्य केह्न्द िल जाक्हठाम पचुिमातामे नेपाली लोकक्न सामान लऽ कए अबैत िलाह आ एक्हठामसँ सामान लऽ कए जाइत िलाह। अंगेजक अमल धवि नािपुि एक पख्यात व्यापाविक केह्न्द िल। १८३६ नाविक्दगि आ नािपुकि सिक्मग अंगेज दािा कैल गेल जकि िकिडषसम्पक्त सुक्कक्त अवि। क्सह्न्दूि, कागज, आ अफीमक व्यापाि बेस होइत िल। अफीमक कािखाना विदुपुि, लालगंज, दिभंगा, िगनी नािदा, आक्द सिानमे िल।

पाटक काबािा पुवणाषा आ सहसिामे सबसँ बेसी होइत िल आ नीलक सम्बन्धमे पूणषविििणि हम पूिषिहं दऽ चुकल िी।

एतिा होइतहुँ वमविलामे २०म शताब्दीमे कोशीक पकोपक बढलासँ आविषक वस्विि दयनीय भऽ गेल िल। िलमागष सबटा टूवट फावट गेल, गामक गाम उजवि गेल िल। नाविपुवि व्यापावक महति नष भऽ गेल िल आ जे पाचीन उपलब्ध आविषक दवा कोणे वमविलाक िल से आब इविहासक विस्तु बवनके िवह गेल। िाष्टीय आन्दोलन आ सविदेशीक पुनरतािनक कममे कोकटीक हेतु पवसद वाहूित (वमविला)के पुनः अवखल भाितीय खादीक पधान केन्द्र बनाओल गेल आ मधुबनीमे एकि मुख्यालय िाखिल गेल। बहुत गोटएक गुजि एखनो एवहसँ चवल िहिल अवि। १९५५मे कोशीके बन्हबाक पयास भेल आ ििपुिमे कोशी बैिजिक वनमाण भेलासँ दिभंगा, सहिसा, पूवणषा आ उतिि मूंगेि आ भागलपुि पूणषतः लाभावन्वित भेल अवि। वमविलामे आि सब नदीके जँ बान्हल आ वनयंवित कैल जाइक तँ वमविलाक आविषक वस्विवतक रप िाखा बदवल जेतैक। पूवणषा सहिसा जतबे कष कोशीक कािणे भोगने िल अखन ततबे सुव्यवस्त आ सम्पन्न भऽ गेल अवि। सविगीय लवलत नािायिण वमश जखन िल मंती बनलाह तखन ओ एवह सभ केितक टुटल फाटल िलि लाइनके चालू कि़िलवन्ह। एवहसँ एवह केितक आविषक विकासक संभािना आि बवढ गेल आ दुभाग्यक गप्प इ एहने एक लाइनक उदाटनक हेतु जखन ओ ०२/०१/७५के समस्तीपुिमे पहुँचलाह तँ ओतए एक संवदग्ध वस्विवतमे बम विस्फोटक कािणे मािि गेलाह।

अध्याय 18

धमषआ दशषा

धमष्ठ ैदिक युगक्हसँ क्मविला धमषआ दशषाक पधान केह्द हिल अवि। पाभिमे एकेशा िदी मत बडड पचक्लत िल आ ्ग िदिमे एकि विशद विश्लेरण भेल अवि। िदक पाव्भिक कालमे यजक महति विशेर िल मुदा पाि जे हमि लोकक्त पजापक्तक कि क्ाहानी पढैत ी ताक्हसँ इहो जात होइि जे 'अतिािद'क क्सदाह्त सेहो जोि पकवड हिल िल। बाह ण साक्हतयमे पजापक्त 'पुर र'क र पमे ठाढ भेल िवि आ एहेन बुवि पडइत अवि जेना की विशिक भाि सम्हाि िक कायष हुनके माि पि पवड गेल हो। 'आत्मा' आ 'बह 'क विकास उपक्नरदक युगमे भेल। क्हह्दू धमषक दाशषक्नक विश्लेरण उपक्नरदमे भेटइत अवि आ एक्हमे विक्शष भागक विश्लेरण क्मविला भूक्ममे िजा जनकक दबिािमे भेल िल।

अक्खल भाितीय धमषक र पमे जैन धमषआ अक्खल विशि धमषक र पमे बौद धमषक उति न पसाि आ पचाि क्मविलक्हक अंगनामे भेलैक। जनक सेहो अपना युगक विदोही िलाह आ पाचीन क्नयमक उल्लंघन कए यज सम्बह्धी अपन कतषव्य कए एक्ह बातके क्सद केने िलाह जे मनुष्य अपन कतषव्यसँ क्ि पाप्त कऽ

सकइयै। ओकर पम्पिराकि अनुरप आ पाचीन कटति एिँ अहर्धिविशासके कटैत तिा िदक अपौरेरयतामे अविशास कैित क्षिविला आङन्मे अितीणष भेल िलाह िदषमान महाािीि आ गौतम बुद। िदषमान महाािीिकि जन्म िैशालीमे भेल िलकहि —— कुंडगाममे जारहठाम जात्तक लोकक्ष हिैत िलाह। महाािीिकिे विदेह, िैदेहीदता, विदेह जात्य, विदेह सुकुमाि, िैशाल्लक एिँ िैशाल्लए इत्याकद कहल गेल िकहि। आ चाागिसुतमे तँ साफ क्लखल अवि ——

“समणस्स णं भगिओ महाािीिस्स अम्मा

ििसटत्सगुता तीिि णं क्तक्ष ना तं ——

क्तसला इि विदेह कदना इि क्षियकाविणी इिि”।

महाािीिकि माए क्तशलाके िैदेही कहल जाइत िलकहि। २१म तीिषिकि नेमीनािकि जन्म सेहो क्षिविलेमे भेल िलि। महाािीि १२टा िािासि िैशालीमे आ ६टा िािासि क्षिविलामे क्षितौने िलाह। विदेह आ िैशालीमे महाािीि बहुत िसि क्षिशाष्य िलविहि आ एकह सब केत्तमे कहनक पक्तपाकदत धमषक विशेर पचाि भेल िलि। जैन साकहत्यमे क्षिविलाक पचुि िणिषा भेटइत अवि जारहसँ इ स्पष होइि जैन आ क्षिविलाक बीच घकनष सम्पकषिलि आ क्षिविलाक सास्कक्तक पम्पिा जैन विदान लोकक्तक ध्यान अपना कदस आकष केने िलकहि। पािम्भिक अिसिा बुद सेहो जैन धमषकदस आकष आ पभावित भेल िलाह मुदा से मात कि्ु कदनक हेतु। बौद धमषक उतिान आ पसािकि पूिष विदेह आ िैशाली जैन धमषक एकटा पधान केन्द्र िलि। महाािीि णिषक्यसिािकि विीिधी िलाह तािका ओ क्तणिषक एक पकाि समिषक सेहो िलाह। जैन धमष क्तणिपि जोि देने अवि। हविभद अपन ‘रडदशषा समुच्चय’मे

कलखने िव "आत्यंक्तको वियोगस्तु देहादेमोक उच्यते" महावीिक विशास िलक्हि जे मनुष्य अपन कमेसँ िणषव्यसि ि रपी जालके तोवड सकइयै। चाण्डालोमे सदगुण भऽ सकैत जे ओ उक्यत कतष्यक पालन कएि। मनुष्यक आसि ि हुनक अपूषि विशास िलक्हि आ बहुत बाहणो हुनक मतके महतव दैत िलविक्हि। कल्पसूतक सुखिविधका टीकामे कलखल अवि

"पभु अपापापुया....जगाम, तत बहिी बाहणाः मवक्लताः....

चतुशतिविंशचिि तास्म क्ाजाः पविजताः"।

जैन लोकक्न दशष्न आ न्यायक केतमे सेहो बडड पैघ योगदान देने िवि।

महावीिक इक्तहास कविलाक पाचीन इक्तहाससँ जुटल अवि आ जैन साक्हत्यक अनुसाि कविलाक िाजा क्वक्न जैन धमषस्वीकाि केने िलाह आ शमण भऽ गेल िलाह। उतिाध्ययनसूतमे कलखल अवि

"नमी नमेइ अप्पाणं सतखं सकेण चोइओ

चइऊण गेह चं िदेक्ह सामण्णे पज्जुंक्टिओ"।

एक्हठाम स्माणि िखबाक अवि बौद पम्मािमे एहने कक्ि बात एक्ह िाजाक सम्बन्धमे सेहो अवि जेना कक महाजनक जातकक कि ासँ जात होइि। विदेहमे महावीिक पयाप्त समिषक िहिल हेतक्हि एक्हमे संदेह नक्ह। विशालीमे तँ क्हनक विशेर पभाि िहिबे कक्हि। एक्हठामसँ जैन धमषक पसाि सबतवि भेल। क्हयुएन संगक समय धवि एक्हठाम 'काििि' लोकक्नक पयाप्त संख्या िल। जैन लोकक्न सेहो स्तुपक क्नमाता होइत िलाह आ ओहन एक स्तुप विशालीमे सेहो िल तकि पमाण जैन साक्हत्यमे भेटइत अवि।

बौद धमक दर्शनकोणे सेहो कवि ला महतपूणष मानल गेल अवि। ई. पू. ६ठम शताब्दी तँ समस्त विश इतिहासक दर्शनकोणसँ सहजक्ष महतपूणष अवि, कवि लाक हेतु तँ आ विशेर रपे। वैदिक कमषकाण्डक विधि तँ उपकरदक युगक्षसँ स्पष भऽ चुकल िल मुदा ओक्ष विधिक पवणिक्त भेल जैन आ बौद धमक उतिनसँ। मुण्डक उपकरदमे विधि तीरितासँ भेल िल। विधि तीरिता भेलेसँ जँ काज चललतै तँ से बात नक्ष। एक क्दवस तँ ओ लोकक वैदिक कमषकाण्डक विधि केलक्ष्ह आ दोसि क्दवस एहन गहन दशषाक पवतपादन केलक्ष्ह जकिा सामाह्य लोक बुिबामे असमिष िल। एहना वस्तिमे सामाह्य लोकक हेतु सुधाकि अपेक्ष िल आ बुदक अतिीणष भेनाइ ओक्ष अपेक्षाक पूक्तष मात िल। बाहण धमक कमषकाण्ड आ कुक्तिसँ लोग तंग आब चुकल िल आ एकटा क्दानक खोजमे िल। विदेह आ वैशालीमे बौद धमक पयाप्त पभाि हिल हैत एकि सबसँ पैघ पमाण इ अवि जे मनु क्लचविये जका विदेह लोककके क्षत्रिय कहने िवि ह्ह। विदेह भेलाह ओ जनक वपता क्षत्रिय आ माता बाहण हेवि ह्ह।

बौद धमक पभाि कवि लामे हिल होइत एकि पमाण जातक कथा साक्षत्यसँ सेहो भेटइत अवि। जातक कथामे एक्ष सम्बह्धमे बहुत िसि पसंग अवि। सभ कक्ु होइतहुँ कवि लापि बौद धमक कोनो स्ायी पभाि नक्ष पडल काणि हम देखैत िी जे बौद धमक तुित बाद ओक्षठाम पुनः सनातन धमक तुती बाजए लगैत अवि। बुद वैशालीक सब तहि पशंसा केने िवि आ अशोक बौद धमक पसाकि हेतु कक्ु उठा नक्ष खिलक्ष्ह मुदा तइयो कवि लाक समस्त भूक्म एकि पभाि मे स्ायी रपे नक्ष आब

सकल। मवि लाक विक्षिन केत्त बौद धमषक केह्द आ पाचीन अशिर अवि मुदा धमषक पभाि कोनो अशिर नक्ह देखबामे अइयै। जँ बौद धमषक पचाि पसाि भेलो हैत तँ मवि लामे शूंग कणि कालीन शासनक समय बाह ण लोकक्त ओकिि नीप पोक्तके एक कऽ देने होएताह। ककाषक बुदक वमकापात लेबाक हेतु िशाली धवि आएल िलाह आ ओक्हयुगक गणेशक एकटा मूक्तषकविऔनसँ भेटल अवि जे एक्ह बातक पमाण दैत अवि जे ककाषकक युग धवि बौद धमषक पभाि एम्हि घक्ट चुकल िल। क्हयुएन संग क्तखैत िवि जे सातम शताब्दीमे मवि ला िशालीक केत्तमे बौद धमषक पभाि घक्ट चुकल िल। बाह ण धमषपुनः अपन पाचीन सता पाप्तक चुकल िल। बौद धमषएक्हठाम सिानीय सम्पदायमे मक्तके लुप्त भऽ गेल िल।

मैविल पम्पिामि एकटा किि सुक्ति अवि जे पम्माि(पिमाि) विकमाक्दत्यक िज्य मवि ला धवि िल। मवि लामे विकमाक्दत्यक एबाक काणि इ जे हविहि केत्तमे बौद संघ ति मैविल िगषके शास्ताषि भेल पज्चि बौद सब िजाक बलसँ मैविलक अपमान केलक्ह। तखन सब मैविल कुद भए िरिक्य मशक पुत जयाक्दत्य मशके विकमाक्दत्यक ओतए पठौलक्ह। ओतए क्षापानदीक तटसि महाकाल क्षाभिक्दमि पूजाक समय भेट भऽ गेलैह्ह तखन दुनू गोटएक बीच श्लोक बद पशोति भेल

“के यूयं, कुत आयाता, अत िततक्यमक्तकम्?
मैविला मविलातोऽत शकाक्दत्येन पीक्डताः॥
आसजीिक्त कुताक्तत? नेपाले बौद संकुले।
इतोभष स्ततो भष : सोऽक्यािणिभविष्यक्त”॥

तखन विकमाक्दत्य मवि ला मण्डल आकके दखल कैल आ

बौद लोकक्कके पिक्जत केलक। हुनके शिक िजपूत एकठाम गह्धविया कहबैत वि। बौद धमषएकठाम कहदूधमषे क्झि भऽ गेल आ सनातनधमी हुनका विषुक निम अितािमाक लेलविहह गीत गोविहदमे क्खल अिव

“कहदस यज विधेिहह शुकजातम्।

सदय हदय दक्षश पशु घातम्।

केशिधत बुद शिीि।

जय जगदीश हिि”।

कविला मौकलक रपे सनातनी मानल जाइत अिव आ एकठाम िणाशमक पकाषा अक पाचीन कालक चक्ल आक्ब िहल अिव। उपकारद युगमे एतए आत्मा आ बहक विशलेरण भेल िजा जनक अपन कतष्य पिसँ जे एकटा मागषसंकेत केलक्ह सेहो बहुत क्दन धवि चक्ल नक्ह सकल आ जैन धमषतँ सहजक्ह अह्हि काहाक्ड जका आएल आ चक्ल गेल। ओ िसात ककिि लगलैक ककिि नक्हओ लगलैक। बुद मध्यम मागषक समिषक िलाह। हुनक किन िलक्ह जे आत्मा कािधक माध्यमसँ आत्माक उनका भऽ सकइयै। शील, समािध आ पजाके इ लोकक उत्कष यज कहलक्ह। िशालीमे बौदधमषक पधानता विशेर िल आ ओतए बौद लोकक्कक दोसि संगीका भेल िल। ओक्हमे किु काकािि कणष सेहो लेल गेल िल। महायान गीतासँ पभावित कहल जाइत अिव। बौद धमषक उत्तिनक पािि िक्दक पिम्पािके कविलामे किु चोट लगलैक। कविला शीघक्ह ओक्ह घातक आकमणसँ हक्टके पुनः अपना पैपिि ठाढ भेल।

पूिि भाितिमे आयषसंस्कृकक पिम माह्य केह्द िहला

उतािा क्षविलामे धाक्षमषक केतक पधानता िल क्षशािं, शक्तत आ विष्णुक। क्तपुण्ड चाननक पतीक इएह तीनु देिता िविं। क्षविलाक सक्षिोष इशािं क्षशािं िविं जक्तका भैिि सेहो कहल जाइत िक्षहं आ एहेन शायदे क्षविलामे कोनो गाम हैत जतए क्षशामिक्षन्दि अिाि भैिि मक्षन्दि नक्षह हो। एकमुख क्षलंगसँ चतुमुषख क्षलङ्गक अिशेर क्षविलाक कोन कोनसँ भेटल अवि। पाचीन अक्षभलेखमे सेहो क्षशािं माहेशकि विििणि अवि। संगाम गुप्तक अक्षभलेखमे क्षशािकि िहिन नक्षदीक विििणि सेहो अवि। क्षविला कवि लोकक्त सेहो क्षशािकि मक्षहमाक गुण गान कएने िविं विदापक्तसँ चंदा िा धवि।

शक्ततक पधानता सेहो क्षविलामे ओतिि हिल अवि। शक्ततक संगक्षह संग एतए तंतक पचाि सेहो विशेर रपे भेल अवि आ मध्यकालीन क्षविलाक देिक्षदत्य, धिषान, मदन उपाध्याय आक्षद शातत आ तावंक िलाह। क्षविलामे नेना सभके जे पक्षहल पाठ देल जाइत अवि ताहुसँ तंतक िलक भेटइयै आ अविपन इत्याक्षदक आधाि तँ तंत अविये। मातकका पूजा शक्तत पूजाक पतीक विक। पाग बनेबाक कला तंतसँ पभावित अवि। क्षविलाक एहेन कोनो धाक्षमषक अिसि नक्षह अवि जाक्षहमे शक्ततक उपासना नक्षह होइत हो। खोजपुिसँ एकटा दुगाक पक्तमा (अक्षभलेख सक्षहत) सेहो भेटल अवि। नेपालक तुलजादेिीक सिापनाक शेय मैविलेके देल जाइत िक्षह।

एिं पकािं क्षविलामे क्षशािशक्ततक पभाि तँ िलाहे आ अधुना अवियो। मुदा मध्ययुगमे क्षविलामे िैषणि धमषक पभाि सेहो ओतबे िल। भागाति, हविंशि आ बहिििेिष पुिाणसँ क्षविलाक िैषणि धमषपभावित िल। कषणक पभाि क्षविलामे कोनो रपे कम

नक्ह िल। पाक् विदापक्त युगसँ एकि पभाि देखबामे अिइयै। उमापक्त भिािनी, हवि आ क्शाकि उल्लेख अपन पविजातहणिमे केने िवि। चण्डेशि अपन कत्यिताकिमे गौिि आ शंकिीक संगक्ह संग मत्स्य आ कच्िप अिताकि उल्लेख सेहो केने िवि। पूजा िताकिमे तँ क्शाि, विष्णु, दुगा आ सूयषक पूजाक ताक्तक विधिक िणिष अवि। ज्योक्तीिशि धूतिषमागममे अपना क्शाकि पकधि कहने िवि। विदापक्त सब देिी देितापि गीत बनौने िवि। हुनक दुगाभक्तत तििंणीमे दुगापूजाक विधि अवि, शैिि सविषसािमे क्शाकि मक्हमा अवि, बयाक्ट भक्तततििंणीमे सपषपूजाक विधान अवि आ िरिषकत्यमे िरिषभविक कत्यक विििण। जतेक साक्हत्यकाि आ दाशषिनक क्षविलामे भेल िवि सब कोनोने कोनो रपे क्शाि, विष्णु, शक्तत, सूयष आक्द देिी देिताक बन्द्दना केने िवि तै ककिी कोनो सम्पदायमे बाक्ह्हके ििखब उक्चत नक्ह बुिना जाइत अवि। हपिक्त आगमाचायष अपन मंत पदीपमे शैि शातत आ िैषिािि देिी देिताक उल्लेख कएने िवि। विष्णुपुििीक विष्णु पूजा कल्पलता एिँ भक्तत ितािलि िैषिािि धमषक एकटा पधान स्तंभ विक।

िैषिािि धमषक पसाि पचािमे गीत गोविन्द्दक विशेर हाि िहिल अवि। कषण अिताकि संगक्ह संग सविशेष देितो मानल जाए लग लाहे। ११ १२म शताब्दीमे नान्ह्यदेकि मंती शीधि दास कमलाक्दत्य (विष्णु)क एकटा मक्न्द्दि बनौलक्ह। पाचीन क्षविलामे विष्णुपूजाक कावि सेहो काक्शात् िहैत िल। विष्णुक सब अिताकि पूजा होइत िल। भगीिि िपुि अविलेखसँ जात होइि िनी अनुमक्तक आजासँ माधिकि मक्न्द्दि बनाओल गेल िल। विष्णुक पभाि क्षविलामे कतेक िल से एक्हसँ बुिल जा सकइयै जे उमापक्त अपन पाविजातहणिमे

हर्विसंह देि के विष्णुक दशम अिताि मनैत िवि आ विदापक्त क्शािसंहके एकादशम अिताि। निसंह ठाकुि कष्णाक उल्लेखक संदभषे िशीिट एिम मुिलीक उल्लेख सेहो केने िवि। विदापक्त सियं भागितसँ अिगत िलाह। विदापक्तक पूिष आ विदापक्तक बादो िषिािि धमषआ पदािलीक धाि बक्हते िहल आ एकि पमाण इ अवि जे विदापक्तक बहुत क्दन बादो मनबोध अपन पक्सद काव्य ‘‘कष्ण जह्म’’ (हर्विशि)क िचिना केलक्ह।

तंतक पधानता क्मविलामे पाचीन कालसँ िहल अवि। तंतक माध्यमे क्मविलामे हेि्क्ि धवि बहुतो साधक भऽ गेल िवि। तंतक विकासक भूक्म क्मविलोके मानल गेल अवि

‘‘गौडे पकाक्शता विदा मैविलैः पबलीकता।
तिक्चत् तिक्चह्महािषि्टे गुजिे पलयं गताः’’॥

बंगालमे उत्पन भेलोतिि तंत क्मविलेमे आक्बके दढ भेल। निह्यायक जह्मदाता गंगेशक सम्बह्धमे क्कंविंती अवि जे ओ कालीक साधना कऽ कए ओतेक पैघ विदान भेल िलाह। तंतपि क्मविलामे बहुत िसि पोिि सेहो क्लखल गेल अवि। देिनािि ठाकुिक तंत कौमुदी एक्ह दक्ष कोणे बडड महतिपूणषअवि। हुनक दोसि पोिीक नाम अवि मंत कौमुदी आ इ दुनू पुस्तक ताक्तक विधिमे जान पाप्त किबाक हेतु महतिपूणषमानल गेल अवि। निसंहक क्लखल तािभुक्तत सुधाणि सेहो महतिपूणषपोिी मानल गेल अवि। एक्हमे केिल ताििक नक्ह अवितु समस्त शक्ततक पूजा विधि अवि आ एकि ग्याहिम अध्यायमे काली भक्तत सुधाणि सेहो अवि। तािक संग कालीके अनबाक औक्चत्यपि विचाि कैिति क्लखल गेल अवि।-

“यि ा काली तिा तािा या तािा काक्लकौि सा।
उभयोनर्ह्ष भेदोऽक्स्त।
इक्त गह्यिार्धिंत िचिनात् काली विधिार्धिम िार पयते”॥

हर्वपिक्त आगमाचायष मंत पदीपक िचिना केलक्र्ह। कुमाि गदाधिि शाािदा क्तलकपिि टीका क्लखलक्र्ह आ ओक्र्ह गंिक नाम िखलैर्ह तंत पदीप। िामाचािि आ कुलाचािक दक्ष ये साधक मण्डन आ भािनी भक्तत मोक्दका महत्तपूणष पोिाि मानल जाइत अर्वि। कहल गेल अर्वि जे कक्लयुगक तंते पधान अर्वि आ शूद ___ शोलकक्र्हमे एकि विशेर पचलन िहत। क्तमक्लक्खत श्लोकसँ एकि सिरिप बुिबामे आओत ___

“यदपयेते पयोगाः काली तािा िविक्षकत्य पोततः तमागम।
यि ा काली तिा नीला यि ा नीला ताि ाह्मुखौ॥
यि ाह्मुखी तिा दुगा नामा भेदोऽक्स्त कुतक्चत्॥
पणम्य पाि िीनािि सिगुरं च विनायकम्
ईशानािि: कीत्येना भािनी भक्तत मोदकाम्।
कुलवािि
सिभियशोतमा िदा िदोभ्यो िषिाि पिम्।
िषिािदुतमं कौलं कौलइत् पितिि नक्र्ह॥
कौलं कुलधमषपक्तपादकं शास्त्रं भािनी भक्तत युततमत्यिभ।
विहाय सिििमाश नानागुर मताक्तच।
जपाचामेिि जानीयानाह्य क्तंता विधीयते”॥

घनानंद दास नामक एकटा मैविल कणषकायस्ि पख्यात ताक्तक क्तविलामे भऽ गेल िवि।
सूयषूजाक विधान सेहो क्तविलामे िलि आ एकि पचािि सेहो। गुप्त

युगक बादसँ सूयषूजाक पधानता क्षवलामे बढल लि आ क्षवलाक विभिन्न क्षेत्रसँ सूयष मूर्ताक भग्नािशेर सभ भेटल अवि जाक्हमे बौनीसँ पाप्त एकटा मूर्ताष अखनो बेगूसायिक संगहालयमे ािखल अवि। कलात्मक आ धाक्मष दुनू दक्षा कोणसँ इ मूर्ताष महतपूणष अवि। एकि अक्तावतित सबसँ महतपूणष िस्तु इ जे ओइनाि शासक नक्सिंह देि सहसिा क्जलाक कह्दाहा गाममे एकटा सूयषक मक्ह्दि बनबौलक्ह्ह जे अहुखन वििजमान अवि आ जाक्हपि एकटा अक्भलेख सेहो अवि। भिक्तत्यक मक्ह्दक नामे अखनो ओ मक्ह्दि ओतए पक्सद अवि। क्षवलाक चार कातसँ पाप्त अक्भलेख क्षवलाक धाक्मषक एिं सामाक्जक आविषक जीिनपि पूणषपकाश दैत अवि आ ओक्हसँ इहो बुिना जाइत अवि जे क्हह्दू धमषक विभिन्न सम्पदायक माह्यता एक्ह क्षेत्रमे लि। पालशासक लोकक्न कक विरिय (कौक्शाकी कक)मे क्शािमक्ह्दक क्नमाण हेतु दान देने िलाह। एक्ह सभसँ स्पष होइि जे कोनो विशेर संपदायक पक्त आकष नक्ह भऽ एक्हठामक लोग सभ देिी देिताक अचषा कौत िलाह आ धाक्मषक दक्षा कोणमे ओक्ह अिं उदाि िलाह।

मक्हरीक महत:- तावक्तक दक्षा कोणसँ क्षवलामे मक्हरीक उल्लेख कबि आश्यक भऽ जाइत अवि। गामसँ बाहि आग्नेय कोणमे पक्शामाक्भमुख एकटा मक्ह्दि अवि। ताक्ह मध्य एकटा नील सिसिती अक्षोभ्य ्र सक्हत तािमूर्ताष विािक्जत िवि। एक्हठाम दूि दूिसँ लोक अनुष ानाि षि अबैत िवि। निितिमे विशेर उत्सि होइि। ओक्हठाम तािा, नील सिसिती, एकजला, लक्ष्मीनाियिण, क्तपुिसुह्दिी, सीतला, तािनाि आक्द देिी देिताक मूर्ताष अवि आ ६टा कुंड सेहो जकि नाम कमशः अवि ___ तािकुंड,

ताकिंचुकीकुण्ड, विशष्ठकुण्ड, गौतमकुण्ड, अक्षोभ्यकुण्ड, आ मानसरिकुण्ड। एहि सभ कुण्डक विषय चीनाचारि तंतमे पाओल जाइत अछि

“विशष्ठकुण्डं पापघ्नं, कुण्डं च गौतमाश्रधा
अक्षोभ्यकुण्डं सफलं, चैतज्जाभ्य व्यक्षश्रमत।
तत समीपे महेशाव्ज सरिमानससंजकम्
मान्धपमत्याशमहात्मशणु साध्वि बनिने।
विशष्ठ समाक्षता तारिणी चीन देशतः
नावभियेन जटाशक्षत तारि नील सरिति
अक्षोभ्य गरणायुतता स्विपता यतसुहृदी”॥

कहल जाइत अछि जे चीनाचारि तंत नामक पोथी दरभंगा राजिक पुस्तकालयमे अछि।

मैथिली परम्पराक अनुसार दक एकटा यजक आयोजन केलन्हि जाहिमे ओ ने शिव आ ने पार्वतीके आमंत्रित केलन्हि। ओतए सती पार्वती अपन बापक ओत यजक करि सुनि पहुँचलीह आ ओतए अपन पतिक अपमान देखि यज कुण्डमे कूदि पडलीह। शिवके जखन एहि बातक भान भेलन्हि तँ ओ ओतए पहुँचलाह आ सतीक शरीरके अपना कन्हापर उठौलन्हि। शिवके एहेन तमतमाएल देखि विष्णुक चिंतित हैत सभावके लि आ तै ओ अपन चक घुमौलन्हि जाहिसँ सतीक देह कट्ट कट्टके ठाम ठाम खसए लागल। सतीक आँखि महिषीमे खसल आ तहियेसँ महिषी तंतक एकटा पधान केन्द्र बनि गेल।

एकटा दोसर परम्पराक अनुसार अति पाचीन कालमे महिषीमे असुर लोकनिक अडडा छल आ ओकरा कार्यंतत कबाक

हेतु विशेष चीनसँ शक्तिके अनने छलाह। मकहरीके मकहरासुकि राजिधानी सेहो कहल गेल अछि। सभ ठामक आ सभ तहिक तान्त्रिक लोकनिक जमघट एकठाम प्राचीन कालहिसँ होइत अछि। मकहरीक नील सरस्वतीके तान्त्रिक लोकनि महानील सरस्वती मनैत छथि जकर अप्रत्यक्ष उल्लेख हमरा लोकनिके प्राल अभिलेखमे "उग्र नील प्रदा"क रूपमे भेटइत अछि। मकहरीके सिद्धपीठ सेहो मानल गेल छैक- "*कमला विमला चैव तारा मार्केषमतीपुरी गिरिही काम्पुरी चैव ग्रमती नील वाहिनी*"।

तथैला महात्म्य आ शक्तिपीठमे सेहो एकर वर्णन भेटइत अछि। ओहि क्षेत्रमे गणेशक महादेव सेहो अछि जकर स्थापनाक श्रेय गणासूरके देल जाइत छैक। तारा, भगवती आ गणेशक मकहरीक त्रिकोण तंत्र विक जाहिसँ मकहरीक तान्त्रिक केन्द्र होएबाक प्रमाण पुष्ट होइत अछि।

एकटा लोकगीत अछि-

"भगा भगवती देवि महेश

बनगा दुगा काटे कलेश

बोलोवि मधुरि गणी दुगा"।

मकहरीसँ किछुक दूरिक मधेपुरामे प्रसिद्ध सिंहेशरक मन्दिर सेहो अछि। मकहरीमे मण्डन शंकराचार्यवादिद भेल छल।

तान्त्रिक केन्द्रक हिसाबे तथैलामे कात्यायनी स्थान आ जयमंगलागढक सेहो बडड महत्व अछि। प्राचीनकालमे संभवतः जयमंगला गढ तान्त्रिक बौद्धक केन्द्र छल होएत। जयमंगला गढक उल्लेख मैथिली पम्परामे सेहो अछि आ पुरातात्त्विक दृष्टिकोणसँ तँ ओ पुरान स्थान अछिये। तथैलामे तंतक प्रचारक जे रूप छल

हो से अलग बात मुदा एति धर्वि क्वशात अर्वि जे एव्हठाम आव्द्द कालव्हसँ शक्तत पूजाक बडड महर्ति हिल अर्वि आ अहुखन क्वर्विलामे घर्ि घिर गोसाउक्वक पूजा होइते अर्वि। मैर्विल ताक्तक र्विशेर कए िमाचाकि पक्ष्धि होइत िलाह। क्वर्विलामे कौल आ दशमहार्विदाक पाधाह्य िल। काली, तािि, भुिनेश्वरी, दुगा, पािििी, आव्द्दशक्ततके र्विशेर महर्ति देल जाइत िल। क्वर्विलाक ताक्तकमे िमाचाि आ दक्व्नणाचाि दुनू पाओल जाइत र्वि। तंतक फलव्ह एव्हठाम अव्भचाकिमक्ष पािभि भेल। लक्ष्मीधि ६४तंतक नाम र्वानौने र्वि। शूद आ क्वशात जाक्तक लोगक हेतु िमाचाकिमे र्विशेर स ािन िल। ओना तंतक साधनामे जाक्त पाक्तक कोनो र्विशेर महर्ति नव्ह िल। तंत क्वर्विलाक धाक्मक्ष जीिनिक एकटा मुख्य अंग िल आ अध्ययन अध्यापनक अक्तर्विित क्वर्विलामे एकि साधना सेहो कैल जाइत िल। दक्व्नणाचाि पक्तक्ष त बुिल जाइत िल। कहल जाइत अर्वि जे तंत लऽ कए क्वर्विला आ चीनक सम्पकष भेल िलैक। क्वर्विलामे अहुखन नििितक र्विशेर महर्ति अर्वि आ अहुँसँ एकि तंतसँ पभार्विति हैि क्वसद होइत अर्वि।

दाशक्षनक पष भूक्वमे क्वर्विलामे जे धाक्मक्ष र्विकास भेल ताव्ह फले क्वर्विलामे कमषकाण्डक अव्भर्वक्द्द भेल आ इ क्वर्विलाक सास्कक्तक जीिनिक एकटा पधान अंग बक्त गेल। कमषकाण्डक र्विकास एव्हठाम पाचीन कालमे भेल आ एखनो हमिि लोकक्तक जीिनि एिँ संसापिि एकि पभािि देखबामे अबैत अर्वि। िणाशमक र्विकासक संगव्ह संग कमषकाण्डो अपना लोकक्तक जीिनि संस्क्ाकि एक पमुख अंग बक्त गेल अर्वि। कमषकाण्डपि अनेकानेक गंि क्वर्विलामे क्वलखल गेल अर्वि आ कणाट कालमे िीिशिि, गणेशिि आ

िमदत एक्कपि कतेको पोिी क्लखने विि। चण्डेशकि 'गहसििताकि' आ 'कत्यिताकि' ति 'पूजािताकि' एक्क दक्क कोणसँ बडड महतिपूणष अवि। क्मविलाक मुख्य संस्काि जे सभ ििमे देखल जाइत अवि से भेल नामकिण, चूडाकिण, उपनयन आ वििाह। इ सभ कायष क्मविलामे अपना पदक्तक अनुसाि होइत िल। पाचीन क्मविलामे जैक्मनीय कमष मीमासा समादत िल आ एखनो एकि पधानता अवि। कमषकाण्डक पुक्तकिणक हेतु तँ महािाज भैििक्संहक शासन कालमे जहिक्टया गाममे १४००मीमासक एक महान सम्मेलन भेल िल। जहिक्टयामे सभसँ पैघ पोखवि अवि जकि यज बडड उत्साहसँ भेल िल जाक्कमे देश देशातकि िाजा आ विदानके बजाओल गेल िल। लंकाक िाजाके आमंक्तत कबाक हेतु चौहान संगाम क्संह आ केसिी क्संहके पठाओल गेल िलक्क्ह।

मैविल लोकक्न शौत, स्मातष आ आगम तीनू कमषकाण्डक अनुषानक विक्ध क्लखने विि। एक्क दक्क कोणसँ गोकुल उपाध्यायक कुण्डकादम्बिी महतिपूणष मानल गेल अवि। एकि अक्तविकत संध्या तपषा आ एकोक्कष सँ पाविषक क्मयम सेहो मैविल लोकक्नक ओतए पचक्लत अवि। मैविल शीदतक 'आविक'क पचलन एखनहुँ देखबामे अबैि। विदापक्तक 'िषकत्य' सेहो एक्क दक्क कोणसँ महतिपूणष अवि। कमषकाण्डपि अनेकानेक गंिक पणयन भेल िल जाक्कमे देशकमष पदक्तक बडड नाम िल। पूिषमीमासक लोकक्नक ध्यान सेहो एक्क क्दस गेल िलक्क्ह। शाद कमषि सेहो अनेकानेक गंिक िचना भेल।

क्शि शक्त आ विष्णु पूजाक विधानपि सेहो पोिी क्लखल

गेल। नायिण पालक अवमलेखसँ जात होइ जे कौवशाकी कक केत्तमे एक हजाि वशाि मक्हदि बनल िल। कार्विलामे कामूकाष(बह ा
विष्णु महेश)क कल्पना बडड पुिन िहल अवि। मुदा काहिािमे देखबामे इएह अति अवि जे कार्विलामे वशाि आ शक्तक जनमायता विशेर िहल अवि। तंतक पधानता ताहु कदनमे िल आ एखनो अवि। तावाक केह्द होएबाक कािणे कार्विलाक पवसक्द विशेर िल आ बाहिसँ लोक एक्हठाम अबैत जाइत िलाह। शक्तत पूजाक विटि रप अखनहुँ कार्विलामे देखल जाइत अवि। निितक महत्त अखनो एतए बडड अवि। तंतक पभािताँ एक्हठामक िश भूरा आ साधािण जीिनमे अखनो देखबामे अिइयै जेना अइपन, साि पूजा, पाग, कापुण्ड इत्याक्द। मातकापूजाक पि पाचीन कालसँ अदाविध विजमान अवि। णिवताकिमे विवमन पकाकि समपदायक उल्लेख अवि आ ओक्हसँ इहो जात होइ जे एक्हठाम नाि पंि आ अह्याह्य मतक विकास सेहो भेल िल। धमषािन आ वसद लोककाक णिष सेहो ओक्ह पोिमे अवि। ज्योत्तािशि 'बौद पक'क काहिाि केने िवि आ ओक्ह संगे उदयनक उल्लेख सेहो।

पािकाकहाकि उल्लेख हमिा लोककाके चण्डेशिक कत्यिताकिसँ भेटइत अवि। फागुन मासमे होलीक उल्लेख भेल अवि। पत्येक मासमे कोनो ने कोनो उत्सि होइते िल। पत्येक पूजाक अिसिपि यज आओि दानक कािसिा िल। स्कंद पूजा दीपजािके होइत िल। कात्तकेयक िसक बडड महत्त िल। क्हह्दोल चैत, मदन दादशी, िसंतोत्सि, अक्यतकाया, गौििसि, गंगा दशहिा, मत्स्य दादशी, दुगाक िियाता, वातपक, निित, देितिान एकादशी, कोजागिा, वशाि चतुदशी, आक्द पािकाक नाम चण्डेशि

क्लखने वि। क्मविलामे क्माहुला पूजा, इह्मदपूजा, कषणाषमी, गणेश चतुि, जीक्तया, धहिह्तर्ाि पूजा, दीपालिी, सामाचकेबा, मधुशािणी, नेिन आवक्दक विधान सेहो बनल अवि। हविहि केक्तक सिन सेहो पाचीन कालक्हसँ पक्सद िहल अवि।

क्मविलामे मुसलमानक एलाक बाद दुनू संपदायक बीच कमेण समह्ियि सिाक्मत भेल आ क्मविला केक्त सूफी लोकक्नके विशेर रपे आकष केलक। ज्योक्तिंशिा आ विदापक्तमे जे अिबी फािसी शब्द भेटइयै ताक्हसँ स्पष भऽ जाइि जे क्मविलामे मुसलमानक सम्पकषपूवषक्हसँ िहल होइत। इस्लामी संस्कक्तक पभािव क्मविलाक धमष आ संस्कक्तपि पडल होएत एक्हमे कोनो सह्देह नक्ह। सत्यनािायिण पूजा एकि एकटा पमाण देल जा सकइयै। क्मविलाक मुसलमानोपि एक्हठामक संस्कक्तक पभािव पडल। तक्जया दाहामे मैविल लोकक्न सेहो सक्रय भाग लैत िवि। अकबिक चलाओल फसली संितिक क्यिहािि क्मविलामे विशेर अवि। मैविलीगिमे इमान आ क्फदौस मुसलमानी संपकषक देन विक। मुसलमान लोकक्न क्मविलामे क्िह मैविल संस्कक्तसँ पभािवत भेलाह आ सूफीक अपत्यक पभािव तँ क्मविलाक भक्तत भािनापि देखले जा सकइयै। लोविक किपि आधािवत दाउद अपन पेमकाव्य चह्दायन क्लखने िवि। एिि पकािि सास्कक्तक समह्िय दुनू संस्कक्तमे भेल। अंगेजक आिगमनसँ अहुक्सिक्तमे पविितषन भेल मुदा क्मविलाक कटिता क्मविलामे इसाई धमषक दाक्लके गले नक्ह देलकक्ह। ओना ठाम ठाम वािवजाघि फूजल मुदा ताक्हसँ कोनो पभािव क्मविलाक जनजीिनपि नक्ह पडल। धमषमे एक्हठाम अखनो कमषकाण्डी लोकक्नक संख्या विशेर अवि आ कटि मैविल अखनो सहजक्ह

अपन अवधकाि िडबा लेल पस्तुत नक्ह होइत िवि। ओ कयाकमषके विशेर महति दैत िवि आ अपन पदक्ताक अनुसाि सभ काज कबिाक पक्पाती होइत िवि।

दशषा:- क्मविला पाचीन कालक्हसँ दशषाक एकटा पधान केह्द्द हिल अवि। बहविदाक जह्मदाता जनक जाक्ह दशषाक शीगणेश केलक्हह तकि अवमकिद्द क्दनानुक्दन होइत गेल आ क्मविला अपन ह्याय आ दशषाक हेतु जगत्पक्सद भऽ गेल। “ततत्ति अक्स”क मूलमंत हर्मि लोकक्त देने िी जकि विश्लेरण बादक पकाण्ड पक्ण्डत लोकक्त विक्भन रपे कएने िवि। माया, कमषु मुक्त्त, आत्मा सभक्हक विश्लेरण िजा जनकक ओक्हठाम भेल िल। धमष मनुष्यक आह्त्त्विकि सुखानुभूक्ताक िस्तु विक एहु क्सदातक विचिन क्मविलेमे भेल अवि आ शतपि बाहणमे कहल गेल अवि “मनशहं ििकिच भुजो देक्भ्यो यजः हितः” स्माणि िखबाक िस्तु इ अवि जे पाचीन पक्मािकि अहिलना िजा जनक यज कबिाक अवधकाकि घोरणासँ कैलक्हह आ यज सेहो क्ताना पुिक्हत िगक्ष हस्तक्पके। ओक्ह युगक क्हसाबे इ एक महान काक्तकािी बात िल जकि नेतत्ति कए जनक पूिी भातिमे एकटा नि कीक्ताषानक सिापना केलक्हह आ भविष्यक हेतु मागषदशषा सेहो। जखन ओ इ काज सफलता पूिषक कऽ लेलक्हह तखन हुनक अवमलारा तँ पूणष भेिि केलक्हह मुदा एकिा संगक्ह संग इहो माहुय भेल जे कमषक माध्यमसँ सभ केओ सभ कििु भऽ सकइयै। उपक्तरद साक्हत्य क्मविलाक एक्ह गुण गौििसँ भिल पुिल अवि। जनकक एक्ह पक्तजासँ क्मविलामे एक नूतन युगक आविभाि भेल।

आत्माक ततजिक हेतु संसामि कोनो बाधा नक्ह क्हि जाइत िक। एक्ह सत्यक वििचन क्मवलक्हमे भेल अवि ––“तक्ति शोकं आत्मवित्” ––आओि एकक्हि संगक्ह संग इहो कहल गेल अवि जे “बहवदि् बहमैि भक्ति”। बहक जनक्महाि बाहण कहबैत अवि। बहदाण्यिक उपक्मरदमे एक्ह सभ बातक स्पषीकणि भेल अवि। िजिा जनकक ओक्हठाम दूि दूिसँ दाशक्मक लोकक्म अिति िलाह आ तै क्मवलाके दाशक्मकक भूक्मए कहल गेल अवि। सास्कृक्तक दक्ष कोणसँ तँ ओहुना उपक्मरद युग भातिीय संस्कृक्तक चमिोत्कृरष मानल गेल अवि। क्मवलामे पािभिक्हसँ िति लोकक्मके दाशक्मक क्शाक्त देल जाइत िलक्ह आ एक्ह पकािे दाशक्मक क्शाक्तक पष भूक्म बनाओल जाइत िल। एक्हठाम कुर पाचाल धर्वसँ लोग दाशक्मक क्शाक्त लेबए अबैत िलाह। जनक सवियं अपने पैघ पैघ वदिानसँ क्शाक्त पाप्त केने िलाह। हुनका दिबािमे पैघ पैघ वदिान सेहो िहैत िलवक्ह। ओ अशमेध यज सेहो केने िलाह।

बहिितिषे कहल गेल अवि जे क्मी आ हुनक उततिाक्धकािी जनक िदेह आयुिदिपि सेहो क्लखने िलाह। एक्ह युगमे गौतम आ कक्मल आयुिदि शास्तपि सेहो क्लखने िलाह। चकपाक्ण शुशुतक टीकामे कक्मलक उल्लेख केने िवि। क्यास कदान गंिक टीकामे गौतमक उल्लेख केने िवि। क्मवला गयायुिदि (गाय बडदक आयुिदि)पि सेहो एकटा गंि एक्हयुगमे क्लखल गेल िल मुदा ओकि कोनो पमाण अखन नक्ह भेट हिल अवि। शुशुत अपन पोिि उततितंतमे वदिेह िजिक िणक्ष कएने िवि ––“शाकल्य शास्तावक्हता वदिेहाक्धप कीक्तमा:”। न्यायशास्तक पणेता महक्रष गौतम मैवल िलाह। गौतमक अक्पादक उल्लेख

चीनी यातीक वििणिमे सेहो भेटइत अवि। िहुलजीक अनुसाि अक्पाद, िात्सायायन आ उदोतकि मैविल िलाह। याजवल्क्यक जीिन चवित तँ सहजवह क्मविलाक सास्कवतक इवतहासक जीिन चवित िीक। केओ केओ हुनका योगदशषनक अगुआ सेहो मनैत अवि। "योगीशिं याजवल्क्यं संपूज्य मुनयोऽब्रुिन्"। याजवल्क्यक सामावजक ओ सास्कवतक विचाि उदाि िल। गौतम, कवपल, ्‍ वि शंग्य (मधेपुिाक वस्ित शंगेशाकि संस्िापक), विभाण्डक, सतानन्द, िदिती आवद विदान विदुरी क्मविलाक गौिि्कि उठौने विि।

सामान्यतया दशषनक संख्या ६ मानल गेल अवि। नावस्तक दशषन विशिक पत्यक रूपके क्मरपण केवहा्कि शास्त्र विक। नाम, रूप, कमषशीला पदािषक (पत्यक जगतक) नावस्तक दशषन जतेक गंभीितापूिषक विचाि केलक अवि ततेक आवस्तक दशषन दृश्य जगतपि नवह। एवह तथ्यके दवष्मे िाखि नावस्तक दशषनक अिहेलना नवह कैल जा सकइयै। ओकि जान िाखब आिश्यक। िदात क्मगुषा आत्मा मानैत अवि। जैन दशषनक मुवक्तक तीन पधान मागष अवि सम्यग् दशषन, सम्यग् जान आ सम्यग् चवित। िैशेवकक उदेश्य पधान तत्ि विशद विक। िैशेवक दशषन ईशि्कि दािा साकात सवष्क उदय नवह मावन ईशि्कि इच्छासँ सवष्क पवक्रया मानैत अवि। अणुिाद एवह तंतक िाय धािित विक। महामुवन कवपल िैशेवक तंत संमत पिमाणुिादसँ संतुष्ट नवह िलाह। िैशेवक दशषनक पधान लक्ष्य अवधभूत पपंच विक द्रव्य, गुण, कमष, सामान्य, विशेष, समिाय जकि आवधभौवतक जगतसँ सम्बन्ध मानल गेल अवि। सांख्य एवह सभसँ अवतवित एक पुरूष सता आि मनलक अवि। कवपलक दशषन सांख्य नामे विख्यात

अछि। साङ्ख्यतंत्र प्रकृतिकेँ जगतक कारण मानलक अछि। प्रकृति जगतक कर्त्ती थिकीह।

“*प्रकृतिः कर्त्ती, पुरुषस्तु पुष्करपलाशवत् निर्लेपः किंतु चेतनः*”।

वैशेषिक परमाणुसँ विश्वक उत्पत्ति मानैत अछि। इ दर्शन सृष्टि संबंधी भूतक व्याजसँ सांसारिक पदार्थक साधर्म्य एवं वैधर्म्यक विचार पण केलक अछि। नास्तिक दर्शनक शास्त्रार्थ द्वारा परास्त करबाक उद्देश्यसँ तर्कशास्त्रक निर्माण भेल।

विदेहक राज्य सभामे एवं याज्ञवल्क्यक सभापतित्वमे ब्राह्मण गंक निर्माणेटा नहि भेल अपितु गूढ धर्मतत्वक निर्णय सेहो। कर्मक अनुष्ठान करबामे कर्ण विदेह राजा जनकके सर्वश्रेष्ठ मनने छलाह आ ओकर आदर्श मनैत छलाह। न्यायशास्त्रक उद्गम स्थल मिथिले अछि। गौतम एवं कणाद मैथिल छलाह। भारतीय गूढ दर्शनक तत्व विवेचना मिथिलामे प्रारंभ भेल छल आ ओहि परम्पराके बादमे मण्डन, वाचस्पति, मदन, उदयनाचार्य, गंगेश, पक्षधर, आ शंकर प्रकाश बढौलन्हि। मिथिलामे पूर्व मीमांसा आ वेदांत (उत्तर मीमांसा)क पूर्ण रूपेण विकास भेल छल। कर्मकाण्ड (पूर्व मीमांसा) आ ज्ञान काण्ड (उत्तर मीमांसा)पर एकहि ठाम विशद् विश्लेषण कैल गेल। वेदांतक माध्यमसँ बहु विज्ञासापर जोर देल गेल अछि। वेदांत उपनिषद्, गीता आ ब्रह्मसूत्रपर आधारित अछि। वेदांतक विश्लेषण बादमे बहुतो गोटए अपना अपना ढँगे केने छथि। न्याय आ मीमांसाके मिथिलाक अपूर्व देन मानल जाइत अछि। गौतमसँ गंगेश धरि दर्शनक इतिहास मिथिलाक एकटा स्वर्णिम पर्व मानल गेल अछि। मीमांसाके प्रखर केन्द्र

िलाह कुमावि ल, पभाकि आ मुिाि ।

क्षवि लाक दशषाक इक्तहासमे कुमावि ल आ शंकि नाम सि णाक्षिमे क्लखल गेल अवि । बह सूतपि टीका क्लक्षख शंकि िदातके आि जगवजआि केलक्षह । कुमावि ल जैक्षमनीक मीमासा सूतक आलोचना केने िवि । हुनका भटक पदिी िलक्षह आ तै हुनक मतके भटमत सेहो कहल जाइत िक्षह । मैवि ल लोकक्ष क्षहनका क्षवि लाके मनैत िवि आ आनह्दवािी शंकि क्षदवा जियमे मण्डन क्षशके कुमावि लक भवानीपक्ष कहने िवि । भटपुिक क्षाििसी कुमावि लके मानल गेल अवि आ हुनका मतके भटमत कहल गेल अवि । बौद दाशषक धमकीक्ष्िषसँ सेहो हुनका िद विीिद भेल िलक्षह । क्षहनक पक्षसद पुस्तक अवि श्लोक िक्षाषक, तंतिक्षाषक, हित् टीका, मध्यम टीका इत्याक्षद । तंत िक्षाषक शबि भाष्यपि टीका विक । श्लोकिक्षाषकपि बहुत िसि मैवि ल विदान सभ टीका क्लखने िवि । भटमतक संसि ापिकक रपे ओ क्षवि लामे पख्यात िवि ।

पूिषमीमासा आ िदातक केतमे क्षवि लाक इक्तहासमे मण्डन क्षशक नाम अगगण्य अवि । एक पम्पिाक अनुसािि िद विीिदमे मण्डन शंकिाचायषदािि पिक्षजत भेलाह आ शंकिाचायषक मत गहण केलाक बाद ओ सुिशिाचायषक नामे पक्षसद भेलाह । अपन िचनासँ ओ बौद दाशषक लोकक्षके धतौलक्षह । मण्डन सुिशिाचायषक क्षलौनाइ विदानके गाह नक्षह िक्षह । मैवि ल पम्पिाक अनुसािि मण्डन मक्षहरीक हिक्षहािि िलाह आ शंकि जखन िद विीिदक हेतु आएल िलाह तखन ओ काफी बद भऽ गेल िलाह । ओ कुमावि लक बहनोइ िलाह आ हुनक पती भािती अक्षदतीय विदुरी

ि लवि हह। मण्डन भटमतक वि शेरज आ व्याख्याता ि ला आ कुमावि लिक तंताि क्तिषकपि टीका क्लखने ि लाह। मण्डनक पव्सद पुस्तक अवि वि धि वि ि कि, भाि ना वि ि कि, वि भम वि ि कि इत्यावद। अपन ि चिनाक आधाि पि ओ अदैतक पि ति ष्क कहल जा सकैत ि वि । हुनक अव्दतीय वि दि ाक हेतु शंकि िके एतए आबए पडल ि लव्हह आ दुनूक बीच जे ि ति ालाप भेल ि ल ताव्हमे भाि ती सभापव्तत ि केने ि लीह। मण्डनक बह व्सव्द पाक् शंकि ि िदातक पव्सद गंि मानल गेल अवि । ''स्ति ति: पमाण'' (मीमासा ि िदात) आ ''पि ति: पमाण'' (न्यायावद) शब्द हुनक दाशषिनक जानक पवि चिय दैत अवि । 'बह व्सव्द'क ''बह तत्ति समीका''क अंशपि ि चिस्पव्त टीका क्लखने ि लाह।

मीमासाक केत्तमे गुर मतक पि ति ष्क पभाकि व्मशक उल्लेख कि बि आि श्यिक बुि ना जाइत अवि । एव्हमतके पभाकि स्कूल सेहो कहल जाइत अवि । मीमासाक लोकव्त व्हनका गुर क पदि ी देने वि व्हह। इ मण्डन व्मशक सहपाठी ि लाह। शबि भाष्य व्हनको एकटा टीका ि व्हह 'बहव्त:'। पभाकि कि मतके गुर मत, कुमावि लिक मतके भटमत आ मुि वि व्मशक मतके व्मशमत कहल जाइत ि कि। मुि वि कि पि व्हनका दुनूसँ व्मभन ि ल। मुि वि कि पि 'ततीय पि' कहल गेल ि कि।

ि चिस्पव्त व्मशक नाम व्मवि लाक दशषिनक इव्तहासमे अव्दतीय अवि । ओ पूि ी व्मवि लाक व्ति ासी ि लाह आ ओव्महुि के ि जिाक दि बाि मे ि हैत ि लाह। ि िहुलजीक अनुसाि ि चिस्पव्तक पसादे व्मवि लाक दाशषिनक जान बाचल, बढल आ बौद दाशषिनकक आकमणसँ बव्च सकल। बौद दशषिक खण्डन कए ओ आदशषिदी

दशषाक कित केलक्हि। उदोतकिक ह्यायविक्तषकपि हुनक टीका पक्सद अवि। ाचिसपक्तके रडदशषाक्लिभ, सषिांत सतिंत आ दादश दशषा टीकाकाकि संजा भेटल िलक्हि। हुनका तात्पचाचायषक पदिी सेहो िलक्हि। शंकि भाष्य बह सूत ओ जे अपन टीका क्लखने िलाह तकि नाम िल भामती (अपन पतीक नामपि) जकि वशिद वशिलेरण अखनो अपेक्कते अवि। िदात साक्हत्यमे भामतीक सिान अक्तदतीय अवि आ ओक्हमे ओ बौद क्सदात 'पतीत्य समुत्पाद'क उल्लेख सेहो केने िवि। तात्पयष टीकामे ओ क्दङनागक उक्तत देने िवि। रडदशषाक सभ अंशपि ओ अपन वििचिन उपक्सित केने िवि आ ईशि कषाक साख्यकाविकापि हुनक टीका साखतति कौमुदी साख्य साक्हत्यमे अक्तदतीय सिान िखैत अवि। मण्डन क्मशक विधि विेकि आ 'बह क्सक्द'पि ओ कमशः ह्यायकक्णकाक एवं तत्तसमीक्ा, तत्तक्बह्दू नामक टीका क्लखलक्हि। अपना युगमे ओ समस्त उतिि भातिमे िदातपि एक मात अक्धकािी विदान मानल जाइत िलाह। ह्यायकक्णकाक ह्यायक अपूि्िषि पुस्तक मानल गेल अवि। दशषाक क्ेतमे हुनका सषि मानल गेल अवि। दक्ा शक्ा ािद एवं जीिशक्ा अवदिापकक हुनका संसिापक मानल गेल अवि। योगदशषाक टीका र पे ओ तत्तििशािदी क्लखलक्हि। एक्हसँ इ पत्यक भऽ जाइि जे दशषाक एहेन कोनो शाखा नक्हि िल जाक्हपि ओ नक्हि क्लखने होवि। क्हनकक्ह पयाससँ समस्त ह्यायशास्तपि क्मविलाक एकाक्धपत्य भेल। इ बौद दाशषाक सिुबह्धुक उल्लेख सेहो कएने िवि।

मीमासाक इक्तहासमे पािषािििी क्मशक नाम सेहो

उल्लेखनीय अछि। शास्त्रदीपिका नामक पोथी हुनक प्रसिद्ध अछि। इ कुमारिलक समर्थक छलाह आ साल्लकनाथ क्रमश प्रभाकरक। श्लोकवार्तिकपर पार्थसारथी क्रमशक टीका न्याय रत्नाकर नामे प्रसिद्ध अछि।

एकर बाद क्रमिलामे अतिप्रसिद्ध भेलाह प्रसिद्ध नैयायिक उदयनाचार्य इ न्यायशास्त्रक अद्वितीय विद्वान छलाह। किरणावली, कुसुमाञ्जलि, न्याय परिशिष्ट, न्यायवार्त्तिक, तात्पर्य परिशुद्धि, आत्मतत्त्वविवेक आदि हुनक लिखल प्रसिद्ध पुस्तक सभ अछि। न्यायक क्षेत्रमे ओ अद्वितीय मानल गेल छथि आ अपन तर्क प्रणालीसँ ओ बौद्ध लोकनिके परास्त कए पूर्ण यश प्राप्त केने छलाह। मैथिली परम्परामे तँ एतेक धरि कहल गेल अछि जे ओ बौद्धसँ ततेक दूर हिए चाहैत छलाह जे ओ क्रमिलासँ दूर जाके छिजा आब्दसूर्कि धमावकिवाक बक्ष गेलाह। हुनक ग्रंथ लक्षणावलीसँ ज्ञात होइछ जे ९८४इ.मे ओ जीवित छलाह। आत्मतत्त्वविवेक चारि परिच्छेदमे बटल अछि ___

i) प्रथम परिच्छेदमे संसारक असत्यिकतापर विचार भेल अछि।

ii) दोसर परिच्छेदमे ओ आदर्शवादीक व्यक्तिगतक विश्लेषण कैने छथि।

iii) तेसर परिच्छेदमे गुणसँ फरक ओ द्रव्यके नञ्ज मनैत छथि।

iv) चारिम परिच्छेदमे इशरक हेबाक प्रश्मे पूर्ण नैयायिकक तर्क उपस्थित केने छथि।

इ हुनक सभसँ प्रसिद्ध ग्रंथ मानल गेल अछि आ एहिमे ओ बौद्ध लोकनिक पूर्ण आलोचना केने छथि आ बौद्धक अनात्मादिक विरुद्ध एहिमे आत्माक प्रकाश ाके पुनर्स्थापित कैल गेल अछि।

न्यायकुसुमाञ्जलिमे सेहो ईशकि अस्तित्वपि विचाि कैल गेल अिछ आ बौद्धक दष्टिकोणक आलोचना सेहो। तेिहम शताब्दीमे दिधान 'पकाश'क टीका आ रुचिदत 'मकिन्द' नामक टीका एहपि िलखलिन्ह। शैिवरकक दष्टिकोणसँ उदयन अपन न्याय पदित्तक स्थापना केने िलाह। निय्यायक पमुख संस्थापकमे हुनक नाम आएब स्वाभािवके। हुनका नामपि कािमकिलिखत श्लोक पचिलत अिछ —

"एशयषमदमतोऽिस मामिजाय िस्थतो पुनबौदे समायाते मदधीना तविस्थिकः" —

मीमासाक अन्तविितत िवािलाक महत्वपूणष योगदान निय्यायक केत्रमे िहल अिछ। एहि निय्यायक संस्थापक िलाह गंगेश उपाध्याय। उदयनाचायष बौद्धक िविद जे तकषपूणष विािद पािभ केने िलाह तकि स्थािगत केलैिन्ह बंगालक िघुनाि िशिोमिण तिा िवािलाक शंकि िमश आ भगीिि ठाकुि। अतेय नाियणाचायष आिद बादमे ओकि िवशद िवश्लेरण सेहो केने िलाह। उदयनाचायषक पूिषसँ िवािलामे मण्डन िमश्रिचस्पित दशषनक जे एकटा अिविच्छन्न शंखला चलौने िलाह तकि पिणित भेल गंगेशक निय्यायक स्थापनामे। कविओौनमे ताहि कदनमे दशषनक अध्ययन अध्यापनक एकटा पधान केन्द्र िल आ ओतहि भेल िलाह उदयनाचायषआ ओहि केन्द्रक िस्थत िलाह गंगेश उपाध्याय।

पुिनिका न्याय आ शैिवरकके िमलाजुलाके निय्यायक जन्मदाता िलाह गंगेश। निय्यायपि शीहरषक खण्डन खण्ड खादक पभाि सेहो देखबामे अिबइयै। गंगेश अपन तत्वचिंतामिणमे शीहरषक मतक आलोचना केने िछि। गंगेशमे हमिा मीमासा आ वेदातक आलोचना सेहो भेटइत अिछ। ओ मात चािटिा पमाणके मनैत

छि i) प्रत्यक्ष, ii) अनुमान, iii) उपमान, आ iv) शब्द। पुनः प्रत्यक्षक्के बाहि िदमे, अनुमानके सतह िदमे, आ शब्दके सोलह िदमे बाटल गेल अछि। बादमे चक्लके न दीपक लोग सभ अनुमानपि वशिेर जोि देलक्हि। ताक्ह क्दनसँ अदािक्ध ततक्वंतामवण अक्दतीय ह्यायक गंि मानल गेल अछि आ नि ह्यायक तँ इ मूल सोते भेल। क्मवलासँ पक्ढके गेलाक बाद जखन िघुनाि क्शािमवण नाक्दयामे नि ह्यायक सिापना केलक्हि तखन ओक्हठाम गंगेशक गंिपि बहुत िसि आलोचना क्लखल गेल। क्मवलामे पक्धि क्मश एक्ह गंिपि 'आलोक' नामक टीका क्लखलक्हि आ बंगालमे हुनक क्शष्य िघुनाि क्शािमवण 'दीक्धक्त' नामक टीका आ मिुिनाि तकर्िवाश 'पकाश' नामक टीका क्लखलक्हि। पुनः 'दीक्धक्त'पि जागदीशी आ गदाधिी टीका क्लखल गेल। गंगेश तँ एक्हर पक नि ह्यायक सकि केलक्हि जे आगा चक्लके वशिेर वदित कय भेल आ पाचीन ह्यायशास्त्र पठन पणालीमे आमूल पविितिन अनलक। युग युगातिसँ भाितिमे मैविल लोकक्न शेष तम नैयाक्यक भेल छि। नि ह्यायक सिापना तँ क्मवलामे भेल मुदा एकि पस्फुटन नाक्दयामे (देखु इंगलस नामक अमििकी वदानक पोिि "मटेवियलस फाि द स्टडी आफ नि ह्याय")। गंगेशक पुत िदमान सेहो पैघ नैयाक्यक भेलाह। ओ गंगेशक सभ पोििपि टीका क्लखने छि। 'पकाश' नामक टीकाक िचियता ओ िलाह। लीलाििती पकाशमे ओ अपन क्पताक सम्बह्धमे कहने छि

"ह्यायाम्भोज पतडाय मीमासा पाि दश्यने
गंगेशाि य गुिि क्पतेऽत नमः"

एक्हठाम इ स्मणि िखबाक अछि जे िदमान धमाक्धकिणक

दिषानसँ क्मन लाह। बडड पक्तष ाक संग सषिशषा संगहमे क्हनक उल्लेख भेल अवि। न ह्यायक केतमे क्वलामे क्मक्लक्खत क्यक्तत पक्सद भेल वि पक्धि (जयदेि), िसुदेि, र क्वदत, भगीिि ठाकुि, महेश ठाकुि, शंकि क्मश, िचस्पक्त क्मश (अक्मनि), क्मसार क्मश, दुगादत क्मश, देिनाि ठाकुि, मधुसुदन ठाकुि इत्याक्द।

िचस्पक्त क्मश ह्याय, मीमासा धमषास्त्र आक्दक पकाण्ड पक्ण्डत भेल वि। हुनक पुत नहिवि क्मश सेहो महान विदान लिवह्ह। अयाची क्मशक पुत शंकि क्मश अपना युगक अक्दतीय विदान लाह। शंकि क्मशक क्पता भिनाि क्मश सेहो पैघ नैयाक्यक लाह। शंकि क्मशक सम्बह्धमे कहबी अवि जे जखन ओ नेना लाह तखन क्मविलाक कोनो िजा ओक्ह बाटे जा हिल लाह जे क्हनक सौहृदयषाँ अत्यंत मुग्ध भऽ गेलाह आ बालकके बजाके कोनो श्लोक सुनेबाक हेतु कहलविह्ह। शंकि क्मश क्मक्लक्खत श्लोक सुनौलक्ह्ह

"बालोऽहं जगदानह्द न मे िला सिसिती
अपुणे पंचमे िि िणषाक्म जगतयम्"।

महािजि कहलविह्ह जे अपन आनक क्मवशात कए श्लोक पढू तखन शंकि क्मश पढलक्ह्ह

"चक्लतशक्कतशिनः पयाणेलि भूपते
सहरषीरा पुर रः सहशाक्ः सहस्त्रपात्"।

महािजि पसन भए दान देलविह्ह। शंकि क्मश महािजि भैिि क्संहक कक्मष पुत िजा पुररोतम देिकि आक्शत हैि। शंकि अपना समयक अक्दतीय विदान लाह आ बहुत सि पोिीक

पणेता सेहो िहल ि।

पक्धि क्श (जयदेि पीयूर िरष्) वदािपक्क समकालीन व्यक्त िलाह आ क्वलाक नि ह्याक एक पकाण्ड वदािन सेहो। उहो भैि क्संहक समयमे वििजमान िलाह। ह्याय शास्त ओ अदभूत वदािन िलाह। मैवली पम्पिमे इ बात सुक्ति अव जे जतय कतहु कोनो विरयमे शास्ताषिअि िद वि िद होमए लगैक आ ओक्हमे जकि पक लचल होइक तर्कि पक धय उपपादन कि लागैव पक्धि आ एि पक्ाि सिमा वजियी हेबाक काणि लोक हुनका 'पक्धि' कहए लागल। हुनका सम्बन्धमे क्मक्लक्खत श्लोक पचक्लत अव ——

"शंकि िचस्मत्यो: शंकि िचस्मक्त सदशौ।

पक्धि पक्तपकी लकी (क्मी) भूतो न ििश्वो जगक्त"॥

कव समाजमे ओ 'पीयूर िरषक नामे पक्सद िलाह आ चह्द्रालोकमे ओ अपन एक्ह नामक क्यहिा सेहो केने ि——

"चह्द्रालोकंममुं स यिं वतिनुते पीयूररिष्र कती"॥

पक्धि क्शक हाि क्लखल वषिणुपुिणमे क्मक्लक्खत श्लोक भेटइत अव। तक्डपतपि क्लखल इ पोिी भटपुि गाममे अव (पोिी जोवायाि गामक केशि ि नैयाक्यकक ओतए िलक्ह)।

"िणैिद युतै: सशंभुनयनै: संख्या गतषहायने

शीमदगौडमही भुजो गुर क्दने मागे च पक्ेक्सते।

रष याताममििती मक्धा सिन् या भूक्मदेिलया

शीमत पक्धि: सुपुस्तकक्मदं शुदं क्यलेखीद् दुतम्॥

(लं.सं. ३४५)

पक्षधिरमिशक सर्वाधिक गंभीर मानल गेल अछि 'आलोक' आ एकर 'आलोक' आर कतेक गोटेए बादमे टीका लिखलन्हि। प्रधाननायक शिरोमणि रघुनाथ शिरोमणि विजयाक आएल छलाह परन्तु पक्षधिरमिशक विद्वत्ताक सभसँ प्रभावित भए ततीय श्रेणीक छात्रक संग हुनकासँ पढ़ए लगलाह आ किछु दिनमे अपन परिश्रमसँ उत्तम विद्वान भए स्वदेश गेलाह आ ओहि देशमे न्याय विद्याक प्रचार आ उन्नति केलन्हि।

'आलोक' गंगेशक तत्त्वचिंतामणिपर टीका थिक। हिनक लिखल दोसर ग्रंथ अछि चन्द्रालोक — इ ग्रंथ अलंकार विषयपर अछि आ एकर आधारपर अप्पय दीक्षित कुवलयानन्द नामक अलंकार ग्रंथ बनौलन्हि। इ एकटा प्रसन्न राघव नाटक सेहो लिखने छलाह। हिनक आर बहुत रास पुस्तक सभ अछि।

शंकराचार्यक समय धरि मैथिल विद्वान लोकनि बौद्ध मान्यताके कटैत छलाह अपन आदर्शवादी दर्शनक विश्लेषणमे व्यस्त छलाह। बौद्ध धर्मक दूटा शाखा भऽ गेल छल — हीनयान आ महायान। महायानक प्रभाव बज्रयान तंत्रयानक विकास सेहो भेल आ मिथिलाक तंतहुँपर बौद्ध तंतक प्रभाव पड़ल हो तँ कोनो आश्चर्य नहि। कुमारिल भट्ट आ शंकराचार्यक प्रभावसँ बौद्ध धर्मक ह्रास भेल। 'शंकर दिग्विजय'मे कुमारिलक मुँहसँ शंकराचार्यके निम्नलिखित श्लोक कहाओल गेल अछि —

"श्रुत्यर्थधर्मविमुखान सुगतान् निहंतुं
जातं गुहं भुवि भवंतमहं नु जाने"॥

एहिमे तथ्य कहाँ धरि से कहब कठिन मुदा इ तँ स्पष्ट अछि जे कुमारिल, शंकराचार्य, मंडन आ दिग्विजयक प्रयासे मिथिलामे बौद्ध धर्मक अंकुश नहि जमि सकल आ एकठाम

हिन्दूधर्मक पधानता बनल छल। अद्वैत वेदान्तक इतिहासमे शंकराचार्य एक नवीन धार्मिक पतिष्ठक मानल जाइत छथि। बड्ड सूक्ष्म ढँगसँ ओ अपना ग्रंथमे बौद्धमतक खण्डन केने छथि। माधवक शंकर दिग्विजयक अनुसार सुधन्वा नामक एक राजा शंकराचार्यक कहलापर हजारो बौद्धके नदीमे डुबा देलन्हि। मुदा एहिमे तथ्य कतबा अछि से कहब असंभव। शंकराचार्य आ मंडनसँ विशेष श्रेय बद्ध वाचस्पतिके भेटबाक चाही जे अपन युक्तिसंगत तर्क आ दार्शनिक कुशलतासँ बौद्ध लोकनिके परास्त करबामे सफल भेलाह। वाचस्पतिक बादसँ शंकर पक्षधर मिश्र धरि दर्शनक क्षेत्रमे ई बाद विवाद चलैत छल।

एहि सभ वाद विवादक बाबजूदो मिथिलामे कर्णाट आ ओइनवार शासक समयमे हम देखैत छी जे धार्मिक सहिष्णुताक भावना विद्यमान छल। १२३४-३६ धरि तिब्बती यात्री धर्मस्वामी (बौद्ध) भारतमे छलाह आ राजा रामसिंह देवसँ हुनका विशेष पेम छलन्हि। रामसिंह स्वयं तँ ब्राह्मण धर्मक समर्थक छलाह तथापि ओ धर्मस्वामीके अपन राज पुरोहित बनबाक हेतु आग्रह केने छलथिन्ह। ओहि कालमे वैशालीमे एकटा तारिक मूर्तिक उल्लेख सेहो धर्मस्वामी केने छथि। कट्टर मैथिल लोकनि बौद्ध विरोधी छलाह आ उपेन्द्र ठाकुर मते मैथिल ब्राह्मण बौद्धके मुसलमानसँ बेसी घृणा करैत छलाह। ज्योतिरीश्वर ठाकुर बौद्धके पतीत आ खतरनाक कहने छथि आ बौद्ध विरोधी भावनाके पखर करबाक हेतु उदयनक पशंसा केने छथि। सम्पूर्ण इलाकामे बौद्ध आ हिन्दूक बीच बराबरि संघर्ष होइते रहैत छल।

मिथिलामे तांत्रिक पधानता पाचीन कालहिसँ अछि तकर

पमाण हमि धमषमिमीसँ भेटइत अछि। 'ताि'के ताक्ह क्दनमे बौद देीक रपमे मानल जाइत िल। मुदा तंतक विकास भेलासँ 'ताि' तावताक देीक रपमे सेहो सीकत भेल आ क्मवलामे एकि जनवपयता बव्ह गेलैक। १२ १३म शताब्दीमे िशालीके तीभिुक्ततक अंतगष्त िखल गेल अछि। बौद धमषक सम्बन्धमे चणडेशकि कत्यिताकमिे कहल गेल अछि जे बुदक पूजा चैत शुतल पक्तपदाके होएबाक चाही। िशाख आ शाणि सेहो बौद पूजाक क्वधान बताओल गेल अछि। एक्हसँ बुझि पडइयै जे बौद लोकक्तक क्क्ि संख्या क्मवलामे अिशय िहल होएत आ चणडेशि सन समह्यिदी ओकि ध्यानमे िक्ख अपन विधान बनौने होएताह।

क्मवलामे सूफीसंत लोकक्तक पभाि सेहो विशेर िल आ पोफेसि सैयद हसन असकिक क्तबह्ध सभमे एकि विशद विश्लेरण भेल अछि। सूफी लोकक्तक पभाि एक्ह केतमे हिस्थिदक विकास भेल। क्मवलामे शेख फतु, शेख बुहिान आ इसमाइल, सैयद मुहम्मद, सैयद अहमद, अबुल फतेह क्हयायतुल्लाह, मीि इबाक्हम क्वस्ती, शेख काजीन शुतािि, अब्दुि हिमान, शेख हुसैन, शाह ताजदुनीन, शेख शमशुदीन, शमन मदािि, पीि शाह नजीि, आ शेख ताजुदीन मदािि आक्द पमुख सूफी संत सभ भS गेल छवि। क्वहािि लालक 'आयनी क्तिहूत'मे क्मवलाक बहुत िस मुसलमानी पवििकि इक्तहास सुक्कत अछि। शताब्दीक सम्पकष आ संघरषक उपित तँ आब क्मवलाक माक्ट पाक्तमे इ लोकक्त एहेन क्मल गेल छवि जे ओक्हसँ क्हनका लोकक्तके फिक कबि असंभि। क्हनका लोकक्तक 'मक्तसया' मैविली साक्हत्यक एकटा पमुख अंग बक्त चुकल अछि।

अध्याय 19

कविलामे शाकाक विकास

उपक्तरद् एक्ह बातक पमाण अवि जे कविलामे अक्तपाचीन कालक्हसँ क्शाक्तक पचाि बेस िहल अवि। विदा क्ययसनी एक्ह ठामक लोग सभ क्दनसँ होइत आएल िवि आ विदानक पक्तष ाक सीिकक्ताक सिषोष एिँ सिषिम उदाहिण हमिा जनकक िजसभासँ भेटइत अवि। उपक्तरदसँ इ जात होइि जे ताक्ह क्दनमे लोक क्शाक्तपि विशेर ध्यान दैत जाइत िलाह। याजिलक्तयक मत िक्हह जे गुर के विदािीसँ ताधवि कोनो पकािक दान इत्याक्द नक्ह गहण किबाक चाही जाधवि ओ अपन क्शाक्त समाप्त नक्ह कऽ लैत िवि। एकि अिषइ भेल जे गिीबसँ गिीब विदािी सेहो गुर क ओतए जाए क्शाक्त पाप्त कऽ सकैत िल। क्शाक्त पाप्त किबाक मागमे अिषक कमीके बाधक नक्ह बुिल जाइत िल। क्शाक्को क्तसिािष भाि समाजक सेिा कैत िलाह। क्शाक्कके िजयसँ पूणषसहयोग भेटइत िलक्हह आ हुनक सम्मान आ पक्तष ाक तँ कोनो किि नक्ह। यजमे िजा बाह णके गाय आ सोना दानमे दैत िलविह्ह। विदान कखनो कोनो क्सक्त कोनो सहाय्यक हेतु िज दिबािमे कःसकोच आ सकैत िलाह। आचायष लोकक्तक सभ पकािक क्दकतके दूि किबाक कायषके शासक अपन धमषबुित िलाह कएक तँ हुनका लोकक्तक जीिन विदाध्यनक हेतु समक्पत िल। चावि िदक अक्तवतित इक्तहास, पुिाण, विदा, उपक्तरद्, श्लोक, सूत, अनुक्याख्यान, क्याख्यान आक्दक पठन पाठन होइत िल। ` क्रक आशम विदालयक काज कैत िल आ आशमेके पक्सद विदा केह्द मानल जाइत िल। विदेहमे ताक्ह क्दनमे पढल क्लखल लोगक संख्या विशेर िल।

बालक सभिमि तँ अपना घरिमे शिक्षा भेटइत छलैक। ताहि दिनमे बालक बालिकामे कोनो भेद नहि छल आ दुहुके शिक्षा देबाक परिपाटी छल। किछु स्कूलमे (चरणिमे) बालिकाक प्रवेश सेहो होइत छल। किछु सम्प्रदायमे शिक्षित बालिकाके कन्या कहल जाइत छल। ताहि दिन गार्गी, मैत्रेयी, सुलभा सन विदुषी छलीहे। उपनयनक बाद अध्ययनक विशेष क्रम शुरु होइत छल। विद्यार्थी जीवनि बाहि रिषक होइत छल आ बाहि रिषविद्यार्थी अपन गुरुक संग रहि विद्याध्ययन करैत छलाह। विद्यार्थीके आचार्य कुलनिवासिन आ अंतेनिवासिन कहल जाइत छलन्हि। दिनमे सुतब वर्जित छल। गैर ब्राह्मणके शिक्षाक एतेक सुविधा नहि छल हेतैन्हि। एक लक्ष्यक कतिसँ एहि बातपर प्रकाश पडइत अछि। उद्दालक, आरुणि, स्वेतिकेतु, आदि तहि दिनक प्रसिद्ध विद्वान छलाह। भ्रमणशील रहितहुँ कतेक गोटए विद्याक उपार्जन करैत छलाह आ एहेन भ्रमणशील विद्यार्थीसँ जनकके भेट भेल छलन्हि स्वेतिकेतु आरुणेय, सोमशुष्म, सत्ययजी आ याज्ञवल्क्य। एहि क्रममे जनक याज्ञवल्क्यके विदिदो भेल छलन्हि आ एकर बादहिसँ जनक 'ब्रह्मविद्'क कोटिमे आबि गेल छलाह। प्रसिद्ध क्षत्रिय विद्वानमे काशीक अजातशत्रु, पाञ्चालक जैवलि, केकैयक अश्वपति, विदेहक जनक, ततबा प्रतर्दन आदिक नाम उल्लेखनीय अछि।

उपनिषद् युगमे मिथिला विद्याक प्रधान केन्द्र छल। जनक 'ब्रह्म'क सम्बन्धमे निम्नलिखित ६ शिक्षकसँ अपन ज्ञान प्राप्त केने छलाह जितनि, उदंक, बर्कु, गर्दभी विपीत, सत्यकाम, साकल्य। याज्ञवल्क्यसँ ओ उपनिषदक ज्ञान प्राप्त केने छलाह। जनकक उदारतासँ काशीक अजातशत्रु तबाह रहैत छलाह। जनकक अश्वमेध

यजक असिपि कामकलवखत दाशषनक लोकक उपस्ति िलाह। उदालक आरवण, अशल, जारतकोख आतषाग, भुज्युलाहयायक, उशष चाकायण, कहोड, कौवरतकेय, विदग्ध शाकल्य एिं गागी आ एकहमे याजल्तिय विजयी भेल िलाह। जनक पभावित भए अपन समस्त विदेह िज्य याजल्तियके अवपष केने िलाह।

वशाकक पगवतक कम ओकि बादो चवलते हिल आ बौद युगमे तँ िशाली अवत पवसद केन्द्र भऽ गेल। तक्शला विशविदालयमे कावलिा आ िशालीक विदािी पढबाक हेतु जाइत िलाह। महला सेहो विदुरी होइत िलीहे। ओ लोकक पढबाक हेतु तक्शला जाइत िली वक नवह से कहब कठन काणि जातकमे एकि एहेन कोनो उल्लेख नवह भेटइत अवि। चाण्डालके वशाकसँ विजत िखिल जाइत िल। िशाली सेहो वशाकक एकटा पधान केन्द्र मानल जाइत िल। बुद एकठाम अपन कैकटा सागिवमत पचिन देने िलाह। धावमष आ दाशषनक िदवििदक हेतु वलचिि लोकक एतए एकटा कूटागाि पशाल बनबौने िलाह। तकि बादसँ जखन समस्त भाति एक िजिनैवतक सूतमे बवह गेल तखन एकहमे एकर पता आबए लागल। मौयषगुप्त हरष आ पाल युगमे सेहो कावलाक अपन िशाषय सुवित हिल। उति वाहािमे सेहो कैकटा बौद वाहाि िल जकि पमाण भेटइत अवि आ एहने एकटा बौद वाहािमे बौद संत निािपा हिैत िलाह जे ओतएसँ विकमशाला गेल िलाह। नौलागढसँ एकटा जे अवभलेख भेटल अवि ताहु आधािपि इ कहल जाइत अवि जे ओवह केतमे एकटा विहाि िल।

कावलामे कणाटिशिक सिापनाक बाद कावलाक अपन व्यक्ततिि विकवसत भेल आ तावह वनसँ सासकवतक एिं सामावजक

केतमे कविलाक अपूषियोगदान िहल अछि। कणाट, ओइनाि आ खण्डिला कुल शासक लोकिन सियं पकाण्डत िलाह आ ओ लोकिन विदापसाकि नीक वयििसा केलिन्ह आ अपना अपना शासनकालमे विदापसाकि पाचीन पिमपाकि पुनसािपन केलिन्ह। एिह युगमे विभन्न विरयपि किवलामे पोिी ििलखल गेल आ पाचीन पोिी सभपि असंखय टीका। पतयेक मुखय बातक हेतु िनबन्धक िनमाण भेल आ विदाक विभन्न पकपि विसततरपेण गंिक िचना कैल गेल। कणाट युगके एिह दृिषकोणसँ सिणषयुग कहल गेल िैक। समस्त किवलामे िशकाक केन्द्रक जेना जाल िबिा देल गेल।

व्याकिणिक केत पदनाभ दतक नाम िवििसमिणीय िहत कािि ओ अपन ‘सुपद’क िचना कए एिह िदशामे बडड पैघ योगदान देलिन्ह। िहन्दशास्त्रपि भानुदत िनशक िचना महतिपूणष अछि आ ‘सिसिती कणठाभिण’पि िितशािक टीका सेहो पशंसनीय अछि। कामशास्त्रपि भानुदतक अलतविततत ज्योितििशिक पंचशायक एिँ िगशेखि महतिपूणष गंि मानल गेल अछि। भिदित पणीत नैरधचवितमक टीका एखनो धिि पढाओल जाइत अछि। पथिीधि आचायष मचिकिटकपि टीका ििलखलिन्ह। अमिकोशपि शीकि आचायषक टीका संस्कृत सािहतयक एक अमूलय िनिध मानल जाइत अछि। ज्योितििशिक ‘िणष्तािकि’ अपना ढँगक अपूषि गंि अछि जािहसँ मैििली सािहतय गौिािन्वत अछि। दाशषिनक केतक लेखक उललेख हम पूिषिह कऽ चुकल िी तै दोहिायिब उिचत निह बुिना जाइत अछि। शीदत उपाध्याय, हिविनाि उपाध्याय, भििशमषा, इन्द्रपित, लकमीपित आ चण्डेशिि, विदापितक पिविािक योगदान एिह युगमे विशेर िहल अछि। किवला न्याय मीमासाक हेतु अतयंत

पक्सद ि ल आ देश देशातर ि लोक इ दुनू विरिय पढबाक हेतु एक्हठाम अबैत ि लाह।

ताक्ह कालमे क्मर्वि लेटा एहेन अंचल ि ल जाक्हठाम देशक कोन कोनसँ विदान लोकक्न आक्बके शणि लैत ि लाह। सास्कक्ताक दक्ष कोणसँ क्मर्वि लाक महात्म्य बडड बक्ढ गेल ि ल। नालक्हदा विकिमक्शाला जखन नष्ट भऽ हिल ि ल तखन बहुत पक्णडत जे पोि ि लऽ कए भावा हिल ि लाह ताक्हमे बहुतोके क्मर्वि लेमे शणि भेटलक्क्ह। उत ि भातिमे आ ि जतए कतहु उि ल पुि ल होइक तखन ओतहुँसँ विदान लोकक्न क्मर्वि ला क्दक्स चल अि इत ि लाह कयैक तँ एक्हठाम विदान लोकक्नक समादि होइत ि ल। मणडन क्मशक समयसँ क्मर्वि लाक पक्सक्द समस्त भातिमे पसावि ति भए चुकल ि ल आ तकि बाद तँ एकापि एक एहेन विदान एक्हठाम होइत गेलाह जाक्हसँ क्मर्वि लाक पक्सक्द समस्त भातिमे क्दनानुक्दन बक्ढते चल गेल। मध्य युगमे ह्याय िशिक मीमासा ि दातक हेतु क्मर्वि ला भातिमे पक्सद भए गेल ि ल आ मुसलमानी आकमणक फलसरि प ि णाशमक जे डोि ि ढील भेल जाइत ि ल ताहु हेतु क्मर्वि लामे क्मबक्ह्ध आ कमर्षकाणडपि गंकि ि चिना एि ि ओकि अध्ययन अध्यापन पाि भि भए चुकल ि ल। एक्ह सभमे योग्यता पाप्त कि बाक हेतु बाहि सँ विदान लोकक्न एतए पढबा लेल अबैत ि लाह आ विशेर कऽ कए ह्यायक अध्ययनक हेतु क्मर्वि ला विशविदालय समस्त भातिमे अक्दतीय ि ल। जखन मगधक अि सान भेलैक तखन क्मर्वि ला विशविदालयक चि मोत्करष भेल आ पक्धि क्मशक अनुमक्तासँ ि धुना ि क्शाि मिक्म जखन नाक्दयामे नि ह्यायक केह्द्र खोललक्क्ह तखनसँ नाक्दयाक पभुति बढल। ताक्ह क्दन क्मर्वि लाक

विदानक महत्व तँ एतबेसँ बुझि जाइत जे बंगालक विदान लोकनि मैथिल निबन्धकार लोकनिक मतके महत्व दैत छलथिन्ह आ बंगालक नैयायिक मैथिल नैयायिकक उक्तियके प्रमाण मनैत छलाह। ओहि युगक मिथिलाक प्रत्येक विदान अपना आपमे एकटा संस्था होइत छलाह। मिथिलाक संस्कृत एवं भारा साहित्यक हेतु एकरा स्वर्णयुग मानल गेल अछि।

मिथिलामे कर्णाट ओइनवार कालमे उदयन, गंगेश, दिवाकर, पदनाभ, जगदर, शंकर, वाचस्पति, पक्षधर आदि जे विदान भेल छथि ताहिसँ कोनो देश आ कोनो काल गौरवान्वित भऽ सकैत अछि। विदापतिके तँ सहजहि सभ केओ एकस्वरसँ भारतीय भाराक सर्वश्रेष्ठ गीतकार मनैत छथि। गीतकाव्यक दृष्टि कोणसँ कालिदास आ जयदेवक बाद विदापतियेक स्थान अबैत अछि। ओनातँ विदापति मैथिली पदावली लऽ कए प्रसिद्ध छथि मुदा संस्कृतमे लिखबाक विरय इ जे एहेन कोनो विरय नहि अछि जाहिपर विदापति नहि लिखने होथि। लखिमा ठकुराइनी सेहो परम कोटिक विदुरी छलीहे। स्वयं महेश ठाकुर अपन विदाक बले मिथिलाक राज्य प्राप्त केने छलाहे आ ओहि खण्डवला वंशमे आर कतेक अद्वितीय विदान लोकनि भेल छथि। महेश ठाकुर स्वयं अकबरनामाक संस्कृत अनुवाद सेहो केने छलाह आ हेमांगद ठाकुर ज्योतिषपर अपूर्व ग्रंथ लिखने छलाह। महेश ठाकुर तँ प्रसिद्ध विदानक कोटिमे मानल जाइत छथि आ हुनक उक्तियके प्रमाणो मानल गेल अछि।

कविन्द्रचन्द्रोदयमे विशंभर मैथिलोपाध्याय, बदरीनाथ उपाध्याय मैथिल, दामोदर उपाध्याय मैथिल आदिक उल्लेख अछि। शाहजहाक दरबारमे सेहो दूटा मैथिल विदान अपन विदता प्रदर्शन केने छलाह

आ एकर पाछाक लेखकक पूर्षा सेहो कोनो मुगल बादशाहसँ अपन विदता पदर्शाश कए, जमीन्दारी पाप्त केने छलाह आ चौधरिइ सेहो। ओ मूल तामपत गत सौ विषपूर्षक भीरण अग्निकाण्डमे स्वाहा भS गेल। खण्डवला शासक विदान लोकनिके जागीर दैत छलाह जकर पमाण अछि।

ताहि दिनमे मिथिलामे गामे गाम विद्यालय छल आ जाहिठाम जाहि विषयक पणिडत छैत छलाह ताहिठाम सैह विषय नीक जका पढाओल जाइत छल। राजा महाराजाक दिससँ विदानके पोत्साहन भेटइत छलैक। मिथिला विश्वविद्यालयमे ताहि दिन अन्य विषयक अत्तरिक्त न्यायपर विशेष ध्यान देल जाइत छल। न्याय पढबाक हेतु भारतक कोन कोनसँ एकठाम विद्यार्थीगण अबैत छलाह। विदता एवं विदाक क्षेत्रमे मिथिलाक स्थान अगगण्य छल आ मध्य युगमे नालन्दाक स्थान बुझु जे मिथिलेके पाप्त भS गेल छलैक। नालंदा जका मिथिला विश्वविद्यालयके अटालिका नहि भवन नहि छलैक, कारण एकठाम तँ टोल आ चौपाडिक व्यवस्था छल। मिथिला विश्वविद्यालयक आन वैशिष्टय छलैक। स्नातकत्व पाप्त कबाक जे कसौटी एकठाम छल ताहिसँ यदि अन्यत्रका स्नातक लोकनिके मलाओल जाइन्ह तँ एको गोटए अहुना स्नातक नहि कहा सकताह। मिथिला विश्वविद्यालयमे जे परीक्षा पद्धति छल तकरा शलाका परीक्षा कहल जाइत छलैक। इ परीक्षा बडड कठिन छलैक। एहिमे शास्त्रार्थक व्यवस्था छल आ ओहि शास्त्रार्थमे पकाण्ड पणिडत लोकनि सेहो बैसैत छलाह। 'शलाका'क अभिपाय भेल जे पाण्डुलिपिक पष्ठ सभ जे सुइसँ घोपल जाइत छल ताहिमे सँ कतहुँसँ कोनो विषयपर शास्त्रार्थक सूतपात भS सकैत छल।

जखन पाठयकमक पढाइ समाप्त होइत िल तखन सभ ित एकठाम बैसैत िलाह आ ओक्हमे गुर जन सेहो सक्मक्लत होइत िलाह आ तकि बाद शास्त्ताि ष पाि भ होइत िल आ ओक्ह शास्त्ताि षक पशात् स्नातकतकि पमाण पत देल जाइत िलक्ह। ओहुसँ एक कक्ठन परीका पणाली िल जकिर 'रडयंत' कहल जाइत िल। एक्ह पणालीमे ित लोकक्नके अपन विदताक पदशर्न जनताक मध्य करए पडइत िलक्ह। ओक्ह परीकामे केओ हुनकासँ कोनो पकाकि पश कए सकैत िल आ जखन ओहन लोग हुनका उत्तरसँ संतुष होइत िलविक्ह तखने हुनका पमाण पत भेट सकैत िलक्ह। पाध्यापक लोकक्नके उपाध्याय, महोपाध्याय, महामहोपाध्याय कहल जाइत िलक्ह। क्नविला विशविदालयमे चार िद, मीमासा, न्याय, दशर्न, धमर्शास्त्त, आयुिद आक्द विरयक क्शका देल जाइत िल।

क्नविला विशविदालयक सबक्धमे एकटा क्कंदिंती पचक्लत अिव जकिर उल्लेख एक्हठाम आिश्यक बुिना जाइत अिव। पक्धिर क्नशक एकटा बंगाली क्शष्य िलविक्ह िघुनाि क्शािमिण। परीकाक अिसिपि ककु एहेन बात भेल जाक्हसँ िघुनाि क्शािमिणाक विदतापि ककु चोट पहुँचल। सक्ध्या भेलापि पक्धिर क्नश अपन आगंन गेला आ पूर्णमाक इजोविरयामे बैक्स ओ अपन पतीके कहइत िहविक्ह जे आइ हमिसँ एक बडड पैघ गलती भऽ गेल अिव। शास्त्ताि षकालमे िघुनाि बेचािर ठीके बजने िल मुदा हम ओकिर काक्ट देने िक्लयैक जाक्हसँ ओकिर पक्तष ापि अिस्से चोट पहुँचल हेतैक। हम तँ उक्चत बुिैत ती जे हम ओकिर बजाके इ बात स्पष कक्ह क्दयैक। एम्हि िघुनाि तर आिव नेने गुर पि आकमण

कबिाक हेतु ािवहमे नुकाएल अपन गुरक सभ बात सुनक हिल िल। पकधािनश जनहना अपन सीकािक्त अपन पतीक समक केलकहह तनहना िघुनाि अपन तरआवि फेकक अपन गुरक चणिपि खकस पडल। ओ अपन मूखनाक हेतु माफी मंगलक आ उदगाि पगट केलक जे अहा सन गुरसँ हमिा इएह आशा िखबाक चाहैत िल। िघुनाि वशािमवण कवि ला विशवदिालयक एक पखयात ाित िल आ ओ कवि लाक इवतहासक एकटा अंग बवन चुकल अवि। मैविली पमिािमे सेहो ओकि सम्बन्धमे एकटा पिद िक जकि उललेख कबि आिश्यक। जहिवटया गाममे भैिवसंह देिक खुनाओल पोखविक पसंगक उललेख हमिा लोकवन पूिह कऽ चुकल ाी। ओवहमे पािकि जावह लंकासँ बवनके आएल िल मुदा ओवहमे शतषइ िल जे यजमे कोनो 'काण' अििा 'वकलाग' वयक्त नवह उपवसित हैि। शुभ लगनमे यज पाििभ भेल। जखन जावह बैसेबाक बेवि भेलैक तखन मदंग धवन ािडलक____

"भावदक भावदक भावदक भा भैिि भूपवत देि सभा"

यज देखबाक हेतु कोनो कोनमे िघुनाि वशािमवण जे 'काण' (काना) िलाह सेहो बैसल िलाह। हुनका उपसिित अपूणषिातिय सुनवके हिल नवह गेलैहह आ िा तत्काल बावज उठलाह____

"सािािती कविता कविना पवणडतावज (िा) वशािमवण ना"

एवह शलोकवहसँ हुनक पविचय सपष भऽ गेल आ लंकािासी काना वयक्तके देवख पोखविमे जावह फेक भावा गेलाह।

िघुनाि वशािमवणसँ पसन भए पकधािनश हुनका बंगालमे सितंत रपे नािायाय विशवदिालयक सिापनाक अनुमवत देलविहह आ तखनवहसँ नावदया नािायायक अध्ययनक पधान केनद बवन

गेल। नाव्यक सिपनाक उपस्थित कविलाक महत्व घटए लागल ताहि समकाक केतमे चण्डेशर, हर्वनाथ, भवशिमषा, इहृदपक्त, विदापक्त, ाचिसम्कताक काणि कविलाक पभुत बनल हिल। कविला वशिवदािलयक पतापे संस्कृत साव्हत्य सुविकृत विह सकल। घर्घर कविलामे ताव्ह क्दन पाण्डुक्लाबा तवपित क्लखल जाइत िल। महामहोपाध्याय पी.ि.कणे ठीके कहने िवि जे याजवल्वयक समयसँ आइ धवि कविला अपन वदिताक पमािके सुविकृत खिने अवि। महेश ठाकुवि समयसँ कविला वशिवदािलयक पविक्ा पदवामे एक नवीन पदवाक शीगणेश भेल जकिा 'धौत पविक्ा'क नामे हमिा लोकवन जनैत िी। जकवका वदिान कहेबाक शौख िलक्ह हुनका लेल इ पविक्ा पास कबि आवश्यक काणि एव्हमे क्वानु पविक्ोतीणष भेने केओ वदिान नव्ह कहा सकैत िलाह। एव्ह पविक्ाक क्ायम इ िल जे पत्येक विषएकि घोरणा कैल जाइत िल आ इच्छुक संस्कृत पक्णडत लोकवन ओव्हमे उपक्सित भए िलाह। पविक्ोतीणष भेलापि नैयाव्यक लोकवनके एक जोड लाल धोती आ वैव्दक एवं वैयाकवण लोकवनके एक जोड पीअि धोती वदिाइ भेटइत िलक्ह। एव्हमे कविलाक बाहिसँ वदिान अबैत िलाह। एव्हमे सफल भेल वदिान अपनाके सगौिव "धौत पविक्ोतीणष" कहैत िलाह। दिभंगा िाजक अंत भेलाक पूष धवि कविलामे इ व्यवसिा िल। एव्हि आवाके सवगीय डातटि गंगानाि िा एव्ह पविक्ाक क्सलेबस (पाठयकम) सेहो क्नधावित कऽ देने िलाह। खण्डािल कुलक समयमे संस्कृत आ मैविली साव्हत्यक विनामे अवभवृक्द्ध भेल। महेश ठाकुवि िाज सभ एकापि एक वदिान िलाह सभ पोिी क्लखलक्ह आ उतािलक्ह आ वदिान

लोकक्नके पशय दए पोि क्लखबौलक्न्ह। नपिक्त ठाकुकि समयमे लोचन अपन िगितविाणी नामक पोि क्लखलक्न्ह। मैविक्लयोसँ विशेर खण्डलिा कुलक समयमे संस्कृत साक्हत्यक अविक्द्ध भेल आ मक्हनाि ठाकुकि समयमे क्ताहुक्त गीतक पचाि सेहो। हेक्नि धविक्मविलामे संस्कृत विदानक कोनो अभाि नक्ह िल आ बहुतोके दभिंगा िजिसँ क्नि भेटइत िलक्न्ह।

ताहु क्दनमे मैविल विदान बाहि जाके अपन नाम कमाइत िलाह। बाहण मुख्यतः दानपि आधावित हैत िलाह आ जखन क्मविलाक क्सक्ति विपन भऽ गेल तखन ओ लोकक्न क्मविलासँ बहिाए बाही जाए लगलाह। ओना अपन विदताके पदक्शषा कबिाक हेतु सेहो ओ लोकक्न क्मविलासँ बाहि जाइत िलाह। भनािि क्मश अयाचीक क्शाष्यगण भातिक कोन कोनमे पसलि िलविक्ह्ह। एक्हमे सँ बहुतो पिसिमे क्विहयो गेलाह जकि पमाण अखनो अवि। भातिक कोन कोनमे बाहण लोकक्नक टोली अखनो देखल जा सकइयै जे अपनाके मैविल कहैत विि। काक्य पदीपक चिक्यता गोविक्ह्द ठाकुि कषानगकि िजा भिनिंद ियक ओतए हैत िलाह। हुनक िशज क्दनाजपुिमे बक्स गेलविक्ह्ह। मालदहमे सेहो ओइनािि िशक शाखा एखनो विजिमान विि आ ओक्हशिक सिगीय अतुल चक्ह्द कुमि (हमि क्याय क्मत) बंगाल सिकािकि पाक्लषामेटी सक्यि सेहो हिल िलाह। हुनक देल ओइनािि िशक शिकि पविक्शष मे भेटत। भनािि क्मश अयाचीक पपौत एिं िसमंजीक सुपक्सद लेखक कविाजि भानुदत मध्य भातिके कैक िज्यमे भमण केलक्न्ह आ हुनक लेखनीसँ गढमण्डलाक िजा संगाम क्संह, बक्ह्दोगढक बघेल िजकुमाि (िि), अहमदनगकि िजा क्नजाम

शाह आ िजा शेिखाक पता लगइयै। क्हनके पुतक नाक्त गंगानंद क्वाकानेि धर्व गेल िलाह। महामहोपाध्याय गोकुलनाि उपाध्याय आ क्हनक भाता महामहोपाध्याय जगनाि गढिलक िजा फतेहशाहक ओतए िलाह।

भिनी नाि क्वश (उफषसचल क्वश) एक पक्सद ह्यायाधीश भेल िर्व जे १८म शताब्दीमे पूनामे पेशिा माधि िकि ओतए हिैि। ओक्हठाम पेशािसँ हुनका जबलपुिमे दूटा गाम भेटलक्ह जतए हुनक िशज अखनो िर्विक्ह। हुनका ओतए अक्दतीय सम्मान भेटल िलक्ह। कषादत मैर्विल नागपुिक भोसलाक पधानमंती देिजी पुरषोतमक ध्यान आकष केने िलाह। इ बहुत पैघ नाटककाि िलाह आ क्हनका सम्बह्धमे हमि कबह्ध फािके पकाक्शत अर्वि।

महेश ठाकुिक भाता गढमण्डलाक संगामशाहक पुिक्हत िलाह आ हुनक िशज बहुत क्दन धर्व मक्हषमतीनगिमे बसल िलाह। अखनो मैर्विल बाहणक बहुत िस शाखा ओम्हि िर्वि। शाहजहाक दिबािमे सेहो दूटा मैर्विल अपन वदिताक पर्वचिय देने िलाह। हुनका दुनूके शाहजहासँ इनाम भेटल िलक्ह आ दूटा गाम दानमे सेहो। िघुदेि क्वश शाहजहाक पशंसामे एकटा ‘विरदािली’ सेहो बनौने िलाह। संस्कृत क्वाकाक सम्बह्धमे ‘हर्वहिसूक्तत मुततािली’मे विशेर बात भेटइत अर्वि।

क्वर्विलामे वदिाक कि्ु पक्सद केह्द िल_____जजुआि (यजुर्विदक क्वाकाक हेतु पक्सद), िगा (र्गदिक हेतु), अिि (अििर्विदक हेतु), माउबहेट (माध्यनक्ह्दनी शाखाक हेतु), कुिुमा (कौिुमी शाखाक हेतु), शकिी (शकििी शाखाक हेतु), भटक्सम्मर्व

एिँ भटपुि (मीमासाक भट सम्कूलक हेतु) इत्याब्द। क्मविलामे तँ कुम्भकाकिे सेहो पक्मडते कहल जाइत िैक (कुम्भकािऽक्म पक्मडतः)। टोल आ चौपाब्ड तँ अखनहुँ क्मविलाक गाम गाममे पसलि अवि। एक्हठामक क्शाक्र पिम्पािके देक्ख १८ १९म शताब्दीमे अँगेज एक्हठामक भूक्मके विश्वविद्यालयक हेतु उपयुतत मनने िलाह। १९७२मे क्मविला विश्वविद्यालयक सिापना भेल आ १९७५मे लक्लत बाबूक पिीक भेलापि ओकि नाम लक्लत नाियिण क्मविला विश्वविद्यालय कऽ देल गेल।

कला:- क्शाकक संगक्ह संग क्मविलामे कलाक विकास सेहो युग युगातिसँ होइत आक्ब िहल अवि। उत्खननक अभािमे इ कहब कक्ठन अवि जे पाचीन कालमे क्मविलाक कलाक सरिप कक िल आ कोना िल। पुिातात्विक साधनक अभािमे ओक्ह पकपि कक्ि कहब असंभि। क्मविला महात्म्यमे जे क्मविलाक िणणा भेटइत अवि ताक्ह आधािपि इ अनुमान लगाओल जा सकइयै जे क्मविला नगिी सुक्मयोक्जत ढँगसँ योजनाबद्ध रपे बनल िल आ देखबा सुनबामे सितिम िहल होएत। क्मविला महात्म्य तँ जे िणणा अवि तकिा जाधवि पुिातत्विक क्मसद्ध नक्ह कऽ दैत अवि ताधवि तँ ओकिा काल्पक्नकके माने पडत। जातक किा सभमे सेहो क्मविला नगिीक विक्शष वििणि भेटइत अवि आ ओहुसँ इ क्मसद्ध होइत अवि जे क्मविला एकटा सुक्मयोक्जत नगि िल जे देखबामे सुन्दि िल आ एकि सीमा िशि विस्तृत िलैक। जातकमे िाजि दबािि आ क्कलाक वििणि सेहो भेटइत अवि।

विदेह, िैशाली, अंगुत्तिापि केतक पाचीन इक्तहास पुिातात्विक अंििणक अपेक्ा अखनो िखैत अवि। एक्ह सभ केतसँ पाक्

बौदकालीन अिशेर पचुि मातामे भेटइत अिछ आ नादनष ब्लैक पाललशडियि (एन.बी.पी.)क पाप्त एिह बातके स्पद करैित अिछ जे बौद युगमे एिह सभ क्षेत्रमे कलात्मकताक रप लिखल गेल हैत। एन.बी.पी.क संगिह संग ताम्र िदनक िसका सभ सेहो भेटल अिछ। कर्वलाक गामिह गाम गढ सभसँ भिल अिछ आ तै इ कर्विवाद रपे कहल जा सकइयै जे कलाबह्दीक क्षेत्रमे एिहठामक लोक पिसद्ध पाप्त केने िल। बल्लिजगढसँ पाप्त ईटा एिहबातक सबुत अिछ। गढक िनमाण सुिनयोिजत ढँगसँ होइत िल आ मौयकालमे गढ िनमाणक सम्बन्धमे कौिटल्यक मत स्पष अिछ। कलाक िनमाण िकत्तमक दिक कोणसँ होइत िल। कर्वलाक गढ सभसँ मािटक गोलक पचुि संख्यामे भेटल अिछ। मौयकालीन अिशेर पुिणया, सहिसा, दिभंगा, मधुबनी, समस्तीपुि, बेगूसिाय, हाजीपुि, मुजफ्फिपुि, िैशाली आिद सि्ानसँ पाप्त भेल अिछ आ ताहुमे मण्मूिताष सभ भेटल अिछ से तँ सििि अिद्वतीय अिछये। शूंगकालक अिशेर सभ सेहो भेटल अिछ। िैशालीक अिस्थित अशोक कालीन एकटा मौयकालीन स्तंभ धिहिि (पुिणया)सँ सेहो पाप्त भेल अिछ। जयमंगलागढसँ मौयकालीन एकटा काष पुलक अिशेर भेटल अिछ। पाटलिपुतक बाद उतिि बिहािमे इएह एकटा काष पुलक नमूना मौयकालीन भेटल अिछ।

इ िनश्चत रपे किह सकैत िी जे अशोक कालमे उतिि बिहािमे सेहो िकिु भिनािद, स्तंभािदक िनमाण भेल आ िैशालीमे िड बहुत चैत्य इत्यािद बनल। चम्पािण आ जयमंगलागढमे सेहो एहेन पाचीन अिशेरक उदाहिण भेटल अिछ आ चम्पािणसँ तँ सहजिह पर्थीक एकटा मुिताष। पाल साम्रज्यमे िैशालीक सम्बन्ध

बहुत िसि णिषा अवि आ चैत्यक वि ि णि सेहो। िशालीक पोखवि क्लचि ी लोकक्तक समयमे कलात्मक िलि। गुप्तकालीन अिशेर सेहो क्मवि लाक सभ केतसँ पाप्त भेल अवि आ ओक्हमे सँ विशेर भाग कोशी आ आन आन नदीक बाक्ढमे भाक्स गेल अवि। एक अत्युतम गुप्तकालीन मण्मूक्त षनौलागढसँ भेटल िलि आ संगक्ह कक्ि क्सका साचा सेहो। आि कतेक िसि गुप्तकालीन सामगी एम्हि आम्हिसँ भेटल अवि। बिौनीसँ पाप्त एकटा सूयक मुर त (काि पाि मि) उल्लेखनीय अवि काणि ओक्हमे पैिमे जूता आ देहमे जनेउ सेहो अवि।

एम्हि आक्बके पालकालीन अिशेर िशाली, उचैठ, बक्लिजिगढ, नौलागढ, जयमंगलागढ, अलौलीगढ, मक्हरी, पुक्णाषा, आओि सहिसा ति बेगूसिायिसँ भेटल अवि। कलाक दक्त सँ इ युग अत्यंत महत पूणष मानल गेल अवि आ बेगूसिायि क्जलाक गामे गाम पालमूक्त षाँ भिलि अवि। बीहट, जिौि, बिौनी, संहौल, नौला, जयमंगला, िपुिि, आक्द जतक्ह देखु सभ पालकालीन मुर तसँ भिलि अवि। नौलागढ, जयमंगलागढ, िपुिि आक्दसँ पाप्त पालकालीन मूक्त षविक्षतसा एिँ अक्भकल्पना सभ तिहि विलकण अवि। पालयुगमे बौद कलाके पशय तँ भेटि कैल मुदा क्हन्दू कला शैलीक अिहिलना नक्ह भेल से क्नक्शात। एक्ह युगमे क्मवि लामे आकाशचाि गक्ध िक पचुिता एिँ ऐक्न्द्रक्यक विस्ताि कि दुनू सीमातक बीच जे संतुलन देखाओल गेल अवि से सिषिि पशंसनीय आ स्तुत्य अवि। धाक्मषक िस्तुके कलात्मक िस्तुमे र पातवि ति कए देल गेल अवि। मुख्य मुर त सभक्हक दुनू पाशषे सेिि ति देि तागण एिँ अनुगत मूक्त षके पिकि कमलाशनपि िखिल गेल अवि जे क्नर क्पत देि ताक

िहनके पदर्शन करैत अिछ। शारीिरक बल एवं पौरुषके चारुता आ लािलत्यमे पिरवितर्त कए देल गेल अिछ। मध्यकालीन कलाक पूर्ण स्फूलक रूपमे एिह युगमे कलािलाक योगदान िहल होएत से बुिझ पडइयै। बािह, सूयर्, गंगा, शािपािर्वी, दुगा आिदक पालकालीन मुरुतक अिशेर सौसे कलािलामे भेटल अिछ। बािह मूिर्तष विष्णुक बािह अिताकि क्वतणक पतीक िक। जयमंगलागढक सुखासन पोजमे शािपाश्विीक मूरुत अिद्वतीय अिछ। अपन दिहना हािके शािकि दिहना कहापिर िाथ पािर्वी महादेिक िमा जाघपर एिह मुरुतमे बैसल िछ। शािर अपन बामा हािसँ पािर्वीक संग गाढािलडन्बद भेल िछ आ शािकि हािर पािर्वीक स्तनके ुएत िह। एिह पकािकि मुरुत तािन्त्रक केतसँ विशेर भेटल अिछ। एहेन टुटल फुटल मुरुत मिहरीमे सेहो बहुत िसि अिछ आ तािर (खिदर्िणी)क मुरुत सेहो पालकालीने िक। जयमंगला आ मिहरी दुनू पक्सद तािन्त्रक केन्द्र मानल जाइत अिछ। तािन्त्रक साधक लोकिन सुखासन पोजमे बैसल शािकि कोिमे पािर्वीके अपना मोनमे केन्द्रित कए साधना करैत िछ। नािरयण पालक अिभलेखसँ स्पष्ट अिछ जे कौशाकी कचिके केतमे एक हजार शािर मन्दिकि स्थापनाक हेतु दान देल गेल िल। कालक्रमे रूपे एिह सभ केतमे स्थापित कलाक पूणर्िवकास भेल होएत। सुहृदर िित्तसँ अिभकिल्पत स्तंभ हमिर लोकिन नौलागढ, जयमंगलागढ आ संहौलसँ भेटल अिछ जािहसँ स्थापत्यक सम्बन्धमे जान पाप्त होइत अिछ। इमादपुर (मुजफ्फरपुर)सँ धातुक मूिर्तष सेहो भेटल अिछ। पालयुगमे तीरिभुक्तिमे बौद आ तािन्त्रक संपदायक पभाि पविलक्त होइत अिछ।

कलाक दक्ष कोणसँ कावला कक्हयो कोनो रपे बाि नक्ह हिल आ सभ युगमे कक्ुने कक्ु कलात्मक स्तिुक कामाण एक्हठाम होइते हिल। मूक्ष कला आ सापित्यमे सेहो कावला पिुऐल नक्ह िल। स्मूनि क्ताहूतक कक्ु मक्हदकि कावला आ क्ताहूतक शैलीक मानैत िवि ___

i) बगहाक हिमंक्दि (चम्पािणि)

ii) क्तािणीक कमलेशािी नाकि मंक्दि (चम्पािणि)

iii) सौिठक महादेि मंक्दि (मधुबनी)

iv) अक्हयाािक िमिचह्नक मंक्दि (दिभंगा)

v) सुबेगढक भगािती मंक्दि (मुजफ्फिपुि)

vi) क्शाहिकि क्शािमंक्दि (मुजफ्फिपुि)

vii) मुजफ्फिपुिकि ािम मंक्दि

viii) क्समािि गढक कंकाली देिीक मंक्दि।

एम्हिि जे बहेडामे उत्खनन भेल अिि ताहुसँ एकटा मंक्दिकि अिशेर भेटल अिि जकि िििणि हम आनठाम पकाक्शत कीने िी।

बहेडाक उत्खननसँ मंक्दिकि कावला शैलीपि पकाश पडइयै। स्मूनकि ध्यान कंदाहाक सूयमंक्दि क्दक्स नक्ह गेल िलक्ह जाक्हसँ हुनका इ बुिनामे आबतक्ह जे ओइनािि लोकक्षक समयमे सापित्य कलाक सिरप क्ष िल। भगीििपुि उत्खननसँ सेहो बुिना जाइत अिि जे ओक्हठाम एक मंक्दिकि कामाण भेल िल जे काल कमेण टुक्ट गेल मुदा जकि अिशेर उत्खननसँ पाप्त भेल अिि। शीधिदास (कणाट काल)क कमलाक्दत्यक मंक्दिसँ मक्हदि बनेबाक जे पिम्पािि कावलामे पािभ भेल से बीिबि चक्लते हिल

आ मक्कूदि बनेबाक क्षेत्रमे मिथिला चित्रकलातरपे अपन एकटा अलग शैलीक निर्माण केलक।

स्थापत्य एवँ वास्तुकलामे सेहो मिथिला पछुआएल नहि छल आ बलिराजगढ़ (सारिणि)सँ भीठ भगवानपुरक अवशेषक अध्ययन केलासँ एहि बातक पुष्टि होइत अछि। बलिराजगढ़ आ भीठ भगवानपुरक कलापर कामशास्त्रक प्रभाव स्पष्ट अछि आ एहिसँ इहो साफ देखबामे अबइयै जे कलाक क्षेत्रमे ओ लोकनि वास्तुकलाके नहि बिसरने छलाह। मूर्तिकलाक क्षेत्रमे सेहो प्रचुर सामग्री भेटल अछि। हाजीपुरसँ पूर्णियाधरि मूर्तिकला (पाथर आ माटि)क असंख्य अवशेष भेटल अछि। वैशाली, लौरिया नंदन गढ़, अन्धराठाढ़ी, पुनौरा, जनकपुर, दरभंगा, भगीरथपुर, देकुली, बहेडा, बलिराजगढ़, लदहो, बौरिम, बाउर, भीठ भगवानपुर, बसैनी, जयमंगलागढ़, नौलागढ़, असुरगढ़, अलौलीगढ़, बीहट, रतिपुर, संहौल, पटुआरी, मक्कूरी, बलबागढी, हरदी, पसिमिा, अन्धराठाढी, शीनगर, पुरैनिया, वसकलीगढ, आदि स्थानसँ प्राप्त विभिन्न युगक मूर्तिकला उपलब्ध अछि। लौरिया नंदनगढ़सँ स्वर्णिम मूर्ति (मातृ देवता-पृथ्वी) भेटल अछि। भीठ भगवानपुरक मूर्ति सभके विद्यापतिक गीतक साकार रूप मानल जा सकइयै। मैथिल शासक मूर्तिकला शैलीके यथाशक्ति जीवित रखिबाक प्रयास केलन्हि मुदा पालयुगीन सफलता हुनका लोकनिके नहि भेट सकलन्हि। प्राचीन कालसँ अद्यावधि मिथिलामे कखनो मूर्तिकलाक नेऽ तँ हास भेल आ नेऽ लोपे। एखनो मिथिलाक माटिक मूर्ति देखबा योग्य होइछ। संहौलसँ प्राप्त एक मूर्ति कार्तिकेयक (पतलेखन मुद्रामे नायिका) बेगूसरायक कालेजक संग्रहालयमे राखल अछि जे कोनो अर्थे खजुराहो आ भुवनेश्वरक

तुलनामे कम नहि अछि। ओहने एक शाल भंजकाक मुरत सेहो अछि। सूयक मुरतक उल्लेख तँ कइये चुकल छी। बहेडासँ एकटा कासाक मुरत सेहो भेटल अछि जकर बनाबट कुक्कुहाकि मूर्तकला सन छैक। भनि कमाण कलाक केत्तमे कविला अपन गौरिकि काहि केने छल। मुजफ्फरपुरिकि मंदिकि सम्बन्धमे स्पूनर साहेब कहने छथि जे ओ 'नगरिति टाइप'क विशेष उदाहरणि थिक। क्समगिनगढक अभिशेरसँ कणाटकालीन भनि कमाणक उदाहरणि भेटइत अछि। क्समगिनगढ कणाट लोकक्कक राजधानी छल आ ओतहि शिमक्संहक समयमे काबाती याती धमषामिमी आएल छलाह। ओ क्समगिनगढक जे णिषा उपक्सति कएने छथि ताहिसँ बुझि पडइयै जे क्समगिन संगठित एवँ सुक्कयोजित नगर छल आ ओकरा चारकात विशाल कलाबंदी छलैक। क्समगिनसँ पाप्त अभिशेरसँ इ पतीत होइत अछि जे नीचा मे पहने पाटिकि आधार देल जाइत छल आ ताहिपर सँ काकन ईटाक नींर दऽ कए भनि बनैत छल। पाटि आ ईटापर तहितहिक नकासी सेहो होइत छल आ बक्लाजिगढसँ पाप्त ईटापर मनुतखक तहिरिीक रूप देखल गेल छैक। नकासीदार ईटा बहेडासँ सेहो पाप्त भेल अछि। एकटा ईटापर अशमेध घोडाक रूप अछि आ दोसपिर कोनो ताक्तक चकक। मैथिल संस्कृतिकि अध्ययन एहेन एहेन कलात्मक सितुक उपलब्धसँ सेहो भऽ सकैछ। जतो धरि जे अखनो धरि कविलामे पाप्त भेल अछि तकरा कलात्मक दक्षासँ अह्यतम कहि सकैत छी।

कविलाक अपन विशेष ओकर कमकाकात, अइपन, कोहबिमे छैक जे अदािधि "कविला पेन्टइन्स"क नामे पक्सद भए देश

विदेशमे नाम अजषा केलक अवि। अविपनक आधाि तँ ओना पुिणिमे सेहो अवि मुदा तंतसँ इ कम पभावित नवह अवि। अइपन कोहिि वलखब एक विशेष कला बुिल जाइत िल आओि कविलाक पत्येक नािीमे एवहमे वसदहसि होएब आिश्यक बुिना जाइत िल। कोबिा मडबाक वचत सेहो बनइत िल आ एकटा पाण्डुवलवपक मुख्य पष मडबाक वचत हमिा बिौनीसँ पाप्त भेल अवि। ओवह वचतमे ििपिक आ कह्यापवक लोग पाग पवहिने मडबापि बैसल देखल जाइत िवि। एवह वचतके हम विशेर महतिपूणषमनैत िी कािण एहेन पाण्डुवलवप हमिा आ कतहु देखबामे नवह आएल अवि। इ पाण्डुवलवपक पष िाह्दोग्य विाहि पदवतक पाण्डुवलवपक एक पष विक। कागजपि वचत बनाएब सेहो कविलाक पुिािन कला विक आ बािहिम शताब्दीक एक पाण्डुवलवपपि एक तािािक वचत बनल अवि जावहमे तीिभुक्तित आ ििशाली दुहुक उल्लेख अवि। वमवथला वचत, कोहबि, अइपन, आवदमे दुगा, सीता, काली, िाधा, ििमकषण, वशि, आवदक वचत बनैत अवि आओि कविलामे एहेन कोनो उत्सि नवह होइत अवि जावहमे वचतावद नवह बनैत हो। सभ अिसिक हेतु वनधािित वचतमाला अवि। सूयष, चन्द्रमा, बास, कमल, तोता, मैना, मािि इत्यावदक पयोग सेहो एवह वचत सभमे होइत अवि। वचत बनेबाक पाििा एक विशेष कािि सावहत्य एवहमे जूटल अवि जकिा संगह आ अध्ययन अपेवक्त बुिना जाइत अवि। आिाि सेहो एवह क्तेमे वकिु काज केने िवि आ आबतँ सहजवह एवह कलाक अंतािाष्ट्रीय पसािि भऽ गेल अवि। कविलामे कििण कायसि आ बाहणक पविाि एकिा एखनो धेने अवि। वसकी, मौनी, सूप, डाला, कोवनया आवदपि सेहो वचत

बनेबाक पि अवि। वसकीक तँ बहुत िसि कलात्मक स्तुि बनाओल जाइत अवि। एवह सभ कलाके गहकला कहल गेल िक आ कावविलामे अवत पाचीन कालवहसँ इ सभ पि चवल आवा हिल अवि। एवहमे तहि तहिक िगिक व्यहाि होइत अवि जेना गुलाबी, पीअि, हवअि, लाल, सुगा पावखक िगि इत्यावद। एक पकाि माव्ट सेहो ओहन होइत िल जावहसँ िगि तैयाि कैल जाइत िल।

संगीतक केत्रमे कावविलाक योगदान ककिसँ कम नवह हिल अवि। कणाटिशिक संसिपक नाह्यदेकि शासन कालमे संगीतमे बहुत िसि निीन िगि आ भासक पयोग शुर भेल। नाह्यदेि सियं एक महान संगीतज िलाह। सािगिदेि अपन संगीत तिाकमिे एवह बातक उल्लेख केने िवि। नाह्यदेि सियं ‘ससििती हदयालंकाि’ नामक एक पवसद गंिकि चिवयता िलाह। शीधि दासक अह्धिाठाढी अवभलेखमे कहल गेल अवि जे नाह्यदेि ‘गंिमहाणवि’ नामक पोिीक चिवयता सेहो िलाह। नाह्यदेि संगीतमे 160िगि सभवहक िणिा केने िवि। नाह्यदेकि सिावपत कैल पिम्पिा संगीतक केत्रमे कावविलामे सदवत व्याप्त हिल। कावविलामे एकपि एक संगीतज सभ युगमे भेल िवि। पुर र पिीवक्षक एक किसँ जात होइि जे हविसिंह देि सियं सेहो एकटा पैघ संगीतज िलाह। ज्योवतिीशि ठाकुि, वसंह भूपाल, जगज्योवतमल्ल, आ लोचन पवसद संगीतज भऽ चुकल िवि। विदापवत आ लवखमाक नाम सेहो एवह केत्रमे अमि अवि।

पूिषिसमयमे भिभूवत नामक एक बाह ण हैिि जे निीन धुवन (धिवन) सभमे गीत बनौलवन्ह। ओवह समयमे सुमवत नामक कायसि पवशामसँ आवबके हुनकासँ सभ कला वसखलवन्ह आ िजिसभामे

ओकर पदर्शन केलन्हि आ ताहियासँ ओ कलानि, करि, कलाओत आदिक नामे पसिद्ध भेला। हुनक संततिमे कतेको व्यक्ति "मल्लिक"क उपाधि धारण केलन्हि। सुमतिक पुत छलाह उदय आ हुनक पुत जयत भेलाह। जयत सुशिर गायक छलाह तैं वृश्वाकिसंह हुनका विद्यापति ठाकुरक समीप शिक्षार्थ समर्पण कैल। विद्यापति हुनका हेतु नवीन नवीन धुनि सभहक कल्पना कए गीत बनौलन्हि जकर अगगायक छिजसभामे जयत भेला। जयतक पुत कृष्ण देशी छिगमे गान करथि। हुनक पुत भेला हर्षवर्हि मल्लिक आ हुनक पुत घनश्याम विशेष गायक भेलाह। घनश्यामक पुत सभ देशी सम्पदायक गानमे नुपुण भेलाह। तदनुसारहिं लोचन कवि एहि नपित ठाकुर साहित छिग सभहक पचार केलन्हि। छिगतंविाणीमे गीतक भक्तता अवि ताहिमे नपित आ महेशनाथक उल्लेख अवि।

संगीतक क्षेत्रमे मर्विलाक अपन अलग शैली छैक। संगीतमे ओ लोकनि कतेक पारखी होइत छलाह तकर पता णिषातिकरक भाट णिषासँ लगैत अवि। ओहिमे सात पकारक गायन दोर आ १४पकारक गीतक दोरक उल्लेख अवि। पेशेवर गबैयाके विद्यापति कहल जाइत छल। णिषतिकर्मे नत्यणिषाक उल्लेखक संगहि संग लोकिक नाचक उल्लेख सेहो अवि। ढोलकक विभिन्न पकारक सि आ तालक णिषा सेहो अवि। जगदर अपन संगीत सर्वस्वमे सेहो मैथिल संगीत शैलीक विशद विश्लेषण केने छथि। मर्विला संगीत शैलीक क्षेत्रमे घनश्यामक शीहस्त मुक्तावली सेहो पसिद्ध मानल गेल अवि। संगीतक क्षेत्रमे शिमवण छिक नाम सेहो उल्लेखनीय अवि। लोचन अपन छिगतंविाणीमे मैथिल छिगक सम्बन्धमे कामकलाक्षत उदगार पगट केने छथि ___

"शीमद्दापक्त कविथ्यतुः काव्याणानुदौसततत्तायानि तदनु गाथ्यात गीतैविधान्।
िगानेभ्यः कमिवातिा तिुष्णीकत्य धीमाना पेमणाकी मंनापवितो लोचनस्ताकलेख"॥

ओ पक्सद ािग सभक्हक उल्लेख सेहो केने िवि।

िगक उल्लेख:-

लक्लता विभासी तदनु भैथ्यिक्हिक्ति ििडीच।
गोपीिलिभ गुजिी िमकली कापशािगी॥
कौक्शक कोिी िखिो िसंतो धनिीतिा।
असािीिी चशीीिगो गौडा मालि मालिी॥
भूपाली िजि विजियनायः कामोद देशाखौः।
केदािडि मलािी इत्येते मैविलाः कविताः॥

मैविल िगक पचाि ओक्हकालमे नेपाल, गोिखपुि, बंगाल आ आसाम धवि भेल िल। संगीत आ नत्यकला क्वविलामे एक समयमे अपन चमिोत्किरषि िल। शुभंकि ठाकुि नत्य विदािपि एकटा महान गंि क्लखने िलाह। मैविल गिथयाक बजाहक्ट क्तपुिक िजाक ओतएसँ होइत िलक्ह। संगीतमे क्वविला शैलीक विकासक हेतु लोचनक िगतंविाणी आक्निियषगंि बुिना जाइत अवि। हेक्ति धवि क्वविला संगीतक पधान केह्न्द िल आ पचगवियाक सिगीय िियबहादुि लक्मीनािियण क्संहक दिबाि समस्त भाितीय गायक लोकक्तक हेतु एकटा बडका आशय िल। हुनके एक्हठाम मागन खबास पक्सद गबैया िल आ मागनक क्शष्य ििु िा सेहो। लक्मीनािियण क्संह अक्खल भाितीय स्तिक पक्सद संगीतज िलाह

आ अपन जमीन्दारीकेँ संगीतक पाछाँ बर्बाद कऽ देलन्हि।

अध्याय २०

कार्विलाक संस्करण

I. वरिय पर्शि

मिथिला एकटा भौगोलिक इकाइ छल अछि प्राचीन कालसँ। यजुर्वेदिक समयसँ 'मैथिल' शब्द एक संस्कृतिक परिचायक छल आ मिथिलाक भौगोलिक इकाईक अंतर्गत जे केओ छैत छलाह से 'मैथिल' कहबैत छलाह। अधुना एकटा अपिषदोसँ लेल जाइत अछि पश्चिम प्राचीन कालमे से बात नहि छल। मैथिल संस्कृतिक विकास कालक्रमेण होइत गेलैक आ 'मैथिलत्व' जे अपन एकटा व्यक्तित्व छैक तकर पूर्णोत्कर्ष वैदिकपरम्परामे आबिकें भेल।

प्राचीन कालक मिथिक संतान माथव कहौलन्हि आ ओहिसँ 'मैथिल' शब्दक आविर्भाव भेल। अजुर्ण आ शीकषणक मध्ये भेल गप्पसँ 'मैथिल'क व्यत स्पष होइछ। एहिठाम विदेह जनकक कमानुषासनपर बल देल गेल अछि। शतपथ ब्राह्मणक प्रमाण मैथिलक हास भेल सेहो कहल जाइछ। याज्ञवल्क्यके एकर श्रेय देल जाइत छन्हि "याज्ञवल्क्योऽहि मैथिलः"। ब्राह्मण युगमे विदेहक विद्वत्सभामे याज्ञवल्क्यक सभापतित्वमे विमहत्त्वपूर्ण गूढ धर्मतत्त्वक विवेचना करैत छलाह। मिथिलेके न्यायशास्त्रक उद्गम स्थल मानल गेल अछि आ परम्परानुसार गौतम एवं कणादके मैथिल कहल गेल छन्हि। मिथिलामे त्रिविद्या, व्यसदविद्या, त्रिविद्या, एवं आरविद्याके कमशः त्रिज्ञान, ज्ञान, ऐश्वर्य एवं धर्मक नामसँ सम्बोधित कैल गेल अछि। मिथिलामे बुद्धियोगक प्राधान्य छल अछि। शीकषण कमानुषासनक रूपमे विदेह जनकके आदर्श मनने छथि। वेदाके मिथिलाक निधि मानल गेल अछि।

उपकारद् कालमे कार्विला विदेहक नामे जात लि। बहदाण्यिकमे जनकके विदेहक ाजिा कहल गेल िक्ह। विदा आ दानक हेतु ओ सुपक्सद िलाह। अपन समककीक मध्य ओ अक्दतीय िलाह। भौक्तक दक्ष कोणसँ सेहो विदेह एकटा सुसंपन ाजिय लि आ एक्हठाम आध्याक्तमक एिं विदतपूणषविकासक संभाना विशेर लि। जनक बहुदक्कणा यज केने िलाह जाक्हमे दूि दूि देशसँ बाह ण लोकक्नके आमंक्तत कैल गेल िलक्ह आ ओक्हठाम कुर पाचालक बाह ण सेहो आएल िलाह। िैक्दक कमषकाण्डक पधान केन्द लि कार्विला ताक्ह क्दनमे। जनक बाह णके गाय आ सोना दानमे दैत िलाह। बह विदाक गूढ ततिक विश्लेरणक हेतु क्हनका दबािमे एकटा बहत् जमघट भेल लि विदानक जाक्हमे ताक्ह क्दन सबटा पक्सद विदान सक्ममक्लत भेल िलाह। जनक सियं एक पैघ दाशषक्नक िलाह। एक्ह जमघटमे याजिल्क्य, आतषभाग, लाह ायनी भुज्य, चाकायण उरस्त, कौक्रतकेय कहोल, गागी, आर णी उदालक एिं शाकल्य आक्द विदान उपक्सित िलाह। बेिि बेिि याजिल्क्य एक्हमे सभके पिक्जत केलक्ह। जनक याजिल्क्यक विदतासँ पभावित भेला आ हुनका अपना ओतए िखलक्ह। याजिल्क्यक दूटा पती िलविक्ह मैतेयी आ कात्यायनी। विदेहक लोग विशेर विदा पेमी होइत िलाह। स्ती क्शका सेहो बडड पचक्लत लि। मैतेयी विदुरी िलीह। गागीक विदताक पशंसा तँ बहदाण्यिकमे अिियि। गागी याजिल्क्यक संग विािदमे भाग लेने िलीह। याजिल्क्य स्मक्ृतमे कहल गेल अिि

"*मविलासि: सयोगीन्द्र: कणंध्याती रिीह्मुनीन्*"

जनक िशिक िजा सभ योगीशि याजिल्तयक पसादे बह जानी भेलाह ____

"*एते िि मैविला िजनात्त विदा विशादि:*

योगीशि पसादेन दह्यैमुतता गहेषिवां"

व्यासक पुत शुकदेजी मविलेमे बह विदाक वशाक्त पाप्त केने िलाह। गीतामे शीकषण कहने िवि ____

"*कमषौिह्न संवसद्ध मात्सि ता जनकादय:*"

एव्ह सभ तथ्यसँ मात एतबे संकेत देल गेल अवि जे मैविल संस्कृवताक नीि िव्दक युगमे पडल आ ओकि बहुमुखी विकास भेल। एक सम्पूणष भौगोव्लक केतक भौव्तक सुविधाक आधाि इ विकास संभि भेल होएतैक एव्हमे सह्हेह नव्ह काणि जाधवि चार कात सुिक्ति एिि शाक्त नव्ह हैत िक ताधवि आध्याव्तमक व्चंतनक हेतु िताििण उपयुतत नव्ह बुिल जाइत िक। समस्त बाह ण साव्हत्य एिि उपव्तरद् मैविलक कव्ततकि पाचीनकालक गािही विक जकि अिहेलना मविलाक सास्कृवताक इव्तहासक अध्ययनक कममे नव्ह कैल जा सकइयै। मविलाक सीमाक सम्बह्धमे विािद भने हो मुदा मैविली संस्कृवताक पिाह जे अविव्छिन चलैत िहल अवि आ जकि चमिोत्क्रषवदापव्तमे भेलैक ताव्हमे सह्देहक कोनो गुंजाइश नव्ह अवि। अव्त पाचीनकालसँ एखन धवि मविलाक भूव्म संस्कृवताक एक विशाष केह्द्र िहल अवि आ संस्कृवताक ओव्ह पाति डोिसँ बाह्हल अििको मविलािसी व्ताह कऽ िहल िवि। ओव्ह संस्कृवताक अपन जे िवशाष य िक

तकि सखािि अखनो धिि पूणरूपेण नष्ट भेल िैक। एकि विशाषयक विस्तत विििि महाभाितमे भेल अिि ——

"मैथिलस्य" —— शब्दक व्यिहाि एक्ह कििनके पुष किैति अिि। बौद्ध आ जैन साहित्यमे सेहो मैथिलक विशाषता सुिक्षित अिि। अशघोर अपन बुद्धचरितमे ललखने ििि ——

"*धुनिुजौ यौ बकलबजबाहु िभाजमाराढ मिाियदेमि्।*
विदेह ििजं जनकं तििि (ििमं दुमं सेनवजत सििििजः)"

बहदािण्यक उपनिषदमे अिि ——

"*सहोिचाजातशतु सहस्तमेतस्यािििदधमो।*
जनको जनक इवत िजना धाििीवत"॥

पाणिनिमे 'मैथिल' शब्दक उल्लेख मैथिल संस्कृतिक व्यापकता एिं पाचीनताक दोतक िैक। मैथिल आ तैहूितक एके संग व्यिहाि भविष्य पुिाणमे सेहो भेल अिि ——

"*कमेः पुतस्तु ततैि मििनिम महानस्मतः*
पििमं भुजूबलैयेन तैहूितस्य पाशािः॥
िनिमषां सििय नामा च मििलापुिमितमम्।
पुििजनन सामथ्याज्जनकः स च कीििताः"॥

शीमद् भागितिमे कहल गेल अिि ——

"*जन्मना जनकः सोऽभूदैदेहस्तु विदेहजः।*
मििलो मििनाज्जातो मििला येन िनिमषा"॥

"*एते िि मैथिला ििजनात्म विदा विशािदाः*
योगेशिि पसादेन दन्दैमुिाता गहेषिि"।

मििलाक जनक एक्ह पिमिािािक सििापना कििबामे समिि भेल ििलाह जे लोग गहसिि िहितहुँ जीवन्मुतत भऽ सकैत ििल आ

अपनाके ‘विदेह’ कहि सकैत छलि। मिथिलाक इ एकटा विशेष देन संस्कृतमे मानल गेल अछि जकर एहेन उदाहरण दोसर ठाम नहि भेटइत अछि। जखन व्यासजीक पुत्र शुकदेवजी अपन माातासँ तपश्याक हेतु आज्ञा मंगलन्हि तखन व्यासजी हुनका योगाभ्यास जनकक दरबारमे रहैत कहलथिन्हि जे अहाँ घरेमे रहिके तपस्या कऽ सकैत छी। अतहुसँ जखन ओ संतुष्ट नहि भेला तखन हुनका राजर्षि जनक ओतए उपदेश ग्रहण करबाक हेतु पठाओल गेलैन्हि। देवी भागवतमे एहि प्रसंगक उल्लेख अछि। मिथिला पहुँचलापर शुकदेवजी जनकक द्वारपालक प्रश्न “कं सुखं, कं दुखम्” प्रश्नसँ आश्चर्यचकित भऽ गेलाह। एहि प्रश्नक समीचीन उत्तर देने बिना ओ भीतर नहि जा सकैत छलाह परञ्च जखन जनकजीके हुनक आगमनक सूचना भेटलन्हि तखन ओ हुनका स्वागतक संग भीतर लऽ गेलथिन्हि। शुकदेव जी ज्ञान प्राप्त कए मिथिलासँ घुरलाह। कहल जाइत जे कृष्ण सेहो जनकसँ ज्ञान चर्चाक हेतु मिथिलामे आएल छलाह। महाभारत, ब्रह्मपुराण, पद्मपुराण, रामायण, आदि ग्रंथमे मिथिलाके ज्ञान भूमि कहल गेल छैक। मिथिलाक धर्मव्याधक उल्लेख महाभारतमे भेल अछि जे एक क्रोधी ब्राह्मणके गृहस्थ तपस्याक शिक्षा दए गृहस्थ बनौने छलाह।

आनन्द रामायणक अनुसार राम जानकीक सुन्दरी लक्ष्मीर पा पद्माक रूपगुणक प्रशंसा सुनि ओकरा प्राप्त करबाक हेतु उताहुल भऽ गेल छलाह आ अंततोगत्वा तिररूपमे परिणत पद्माके प्राप्त कए अपना ओतए आनि पूजाक पेटीमे रखलन्हि। दोसर दिन जखन मन्दोदरीके देखेबाक हेतु पेटी खोलल गेल तँ ओहिमे एकटा विकराल सहस्त्रमुखी पद्माके देखि रावण त्रस्त भऽ गेल तखन पद्मा

िाणिके कहलक्ह ____"*अहा एक्हठाम आक्रके हमि जे अपमान कैल अवि ताक्हमे अहाक नष क्करात अवि। अहा अविलंब हमिा अपना ओतए धऽ आउ गेऽ आ ओतक्ह हमिा माक्टमे गावि क्दयह। हजाि रिष्क पािक्त ओक्ह पवित भूक्रसँ जखन हम पुनः उत्पन्न होएब तखन अहा अपन नाशके अिश्यम्भािी बुवि लेबं*"। इएह सीता भऽ कए जन्म लेलवि।

क्रविलाक धाक्रष्क महत्ति विािणि क्रमक्लक्खत उदािणिसँ स्पष होइत अवि ____

देिी भागातिक िठम् स्कक्ह्धमे क्रविलाक सम्बक्ह्धमे कहल गेल अवि ____

"*एिि क्रक्रसुतो िाजा पविातो जनकोऽभित्*

नगिी क्रक्रक्षा तेन गंगातीिि मनोहिा।

क्रविलेक्त सुविख्याता गोपुिाटाल संयुता

धनधाह्य समायुतता हटशाला विािक्जता"॥

बहक्द्वष्णुपुिाण:-

"*ततयाता महापुण्या सिािकामसमक्द्द्नी*

इयंतु क्रविला पुण्या सियिं िामिसि िक्षणी॥

क्रविला सिािाः पुण्या सुिाणामक्व दुलिषा।

अतस्तीिि िु सिि िु क्रविला पूज्यते सदा॥

माया पुजाक्दकाः पोतताः सामाह्येन विमुक्ततदाः।

यैरा तु क्रविला िाजिन् विष्णु सायुज्य काक्विणी"॥

यामलसािोदाि:- (क्रशािजनक संिाद - 'बहदविष्णुपुिाण')

"*बैकुण्ठगान पुिस्कत्य लोकाल्लंक्कभी िाितित्।*

बैकुण्ठस्तु कजाशेन कर्वि ला भूक्समाविशित्॥
अतोक्ाि सि भूक्सस्ते सिषि िनाद्वक्शष्यते।
बैकुण्ठानकला ह्यूना दश्यते कर्वि ला मया॥
कर्वि ला िसमासाद जीह्मुततो भि नि ि।
देहाते ििर्घि पाप्य तद् भततैः सह मोदते"॥

कर्वि लाक तीिष सभक्क नामक विर्ििणि सेहो िमायण, विष्णुपुिाणि, स्कह्दपुिाणि आद्द गंि सभमे भेटइत अवि। अगस्त्य िमायणमे कमाक्त िणिष्ा अवि ___

"*िदेहो पिनि स्याते क्दश्यैशाह्या मनोहिम्।*
विशालं सिस्तीर्ि गौिमिंद्वमिुतमम्॥
िदेही िव्टका तत नाना पुष्पसुगुक्फता।
िकिता माक्लकह्यावः सुिश्ुषुखदाशुभा॥
पभाते पत्यहंतत गति स्नातिक्लवः सह।
गौिमिपूजयत्सीता माताजप्ता सुभक्ततः"॥

स्कह्दपुिाणि:-

"*आसीद् बहपुिि नामा कर्वि लाया विक्ज़ता।*
तस्या लसक्त धमात्मा गौतमोनाम् तापसः॥
अहल्यानाम तत्पली पक्तभतता कार्यंदिा।
सिष्ुक्ग सम्पना सासीत्सािगसुह्दिि"॥

बहद विष्णुपुिाणि:-

"*गौतमस्या शमे याम्ये पातालोक्सि त पाि क्स।*
स्नातिकुण्डेनमेदततया ययुः पाठफलंलभेत्"॥
"*विभाण्डको महायोगी दक्मणो क्ासित्यसौ।*
गौतमस्याशमात्पुण्याधाम्य पक्शम कोणके"॥

एक्हसँ स्पष अवि जे विभाण्डक मुक्तक आशम गौतमाशमसँ सटले िल। क्ववि ला मात अध्यात्म विदेटामे नक्ह अवातु शस्त्त आ शास्त्त दुहुक हेतु पक्सद िल। पिशिि मैतेय संिदिमे कहल गेल अवि जे सभ ठाम आ सभ समयमे जाक्हठाम शतुक मिन होइत हो उएह जनक क्वक्ष क्ववि ला विक।

"*अंतोक्हिश सिब्र मथ्यंते विपिः सदा।*

क्ववि ला नाम सा जेया जनकैश कता मही" ॥

एक्ह पक्मिि िमायणमे सेहो विशद् विश्लेरण भेल अवि। जनक विरय विििगी क्हितहुँ िजि काज क्कंिि सासाविक कतष्यसँ किमक्म विमुख नक्ह िहैत िलाह। तै तँ हुनका िजक्ष जीक्हमुतत, योगी आ विदेह कहल गेल िक्ह। िमायणमे कहल गेल अवि जे िजा सुधक्ह ि क्ववि लापि घेिि डाक्लके क्शाधिनुर जनकक ओक्हठाम पठाके पदाक्रि सीताक याचना केलक्ह। जनक एक्हबातके नक्ह मानलक्ह जकि नतीजा भेल युद। िजा सुधक्ह िके मावि ओ साकाश्यमे अपन ििि भाता कुशधिजक अक्मरेक केलक्ह। एक्हसँ स्पष अवि जे जनक क्याि हािवकि सेहो िलाह।

िैशाली अपन गणतात्क्क शासन पदक्तक हेतु विशविख्यात िल एिि जैन धमष आ बौद धमषक पसाि केक्हक हेतु सेहो। िैशालीक गविमासँ सियं गौतमबुद एतेक पभावित िलाह जे एक्ह सिनिके ओ ताक्वांश देिसँ तुलना कएने िवि। िैशाली लोकक्म नागविकताक कलामे अपना समयमे अपूि षिलाह आ ताक्ह क्वनमे चार कात क्वनक यश विक्डऐल िल। चम्पाणि तँ सहजक्ह िक्दक कालक्हसँ पक्सद सास्कक्तक केक्ह िल। लौविया नंदनगढमे ८०फीट उँच्च स्तुप भेटल अवि आ ओक्हठाम िक्दक समाक्धभूक्तक क्टलहासँ

एकटा सणिषतपि अंककत पर्थीमाताक कचत भेटल अवि जे कैक मानेमे अपूषि अवि। ओकहठाम एकटा अशोकक स्तंभ सेहो अवि जाकहपि अशोकक धमोपदेश अंककत अवि। आधुकनक युगोमे महात्मा गाधी अपन अकहंसात्मक संघरषक पयोग सेहो एकहठामसँ पाभि केने िलाह। 'हवहि केत्र' कवविलाक एकटा महान धाकमषक केहद मानल गेल अवि आ पुिणिक अनुसाि गजगाहकक युद एतकह भेल िल। धाकमषक आवि षिक आ सामाकजक कवकासक कममे कवविलाक वविशेष योगदान िहल अवि। एकहठाम इ उल्लेख कबि आिशयक बुिना जाइत अवि जे दिभंगाक महािज सिगीय िमिशि कसंहक सत्पयासे हविदािमे गंगा नहकि बाधके कटबाओल गेल आ गंगाक रकल पिहिके पुनः भगीिि खातमे आनल गेल जाकहसँ हमिि लोककनके गंगाक दशषन भहिल अवि। कवविलामे हुनका 'अपि भगीिि' कहल जाइत िकह। जखन खादीक आहदोलन पाभि भेल तखन अकखल भाितीय खादीक केहद मधुबनीमे सिाकपत भेल आ अदािवि ओ चलल आकब िहिल अवि आ खादीक पामाकणकताक हेतु मधुबनीक नाम आिशयक मानल जाइत अवि। ओना मधुबनी हस्तकशल्प आ कुटकशल्पक हेतु सेहो पकसद अवि।

कवविलाक संस्ककतक वकिास कोनो एक कदनमे अिि एक ठाम नकह भेल िल। कवविलाक सीमा काफी वकस्तत िल आ एकि सभ केत्र सािणिसँ महानंदा धिि कोनो ने कोनो रपे मैविल संस्ककतक वकिासक सोत िल। जैन आ बौद साकहत्यक अकववतित आिि बहुत िसि साकहकत्यक साधन अवि जाकहमे कवविलाक संस्ककतक वििणि भेटइत अवि आ जकि मूल्याकन अदािवि नकह भऽ सकल अवि। मैविल संस्ककतक वविशेष

अध्ययनक हेतु एक एहेन दलक आशियकता अवि जे रिौ एक्ह काजक हेतु अपनाके समपषा कऽ दैवि आ तखने एकि सागिीण अध्ययन संभि भऽ सकत। सोमदेकि 'यशक्स्तलक चम्पू'मे हमरि लोकक्ा 'क्ाहूित विजमेट'क उल्लेख भेटइयै जाक्हसँ बुििना जाइत अवि जे एक्हठामक क्ाििसी युद वदिामे सेहो क्ापुण होइत िलाह आ एक्हठामक 'विजमेह्ट'क विशेर महतिि हैत िल। साक्हत्यक केतमे 'मैविल िक्ा'क उल्लेख भेटइत अवि जे एक्ह बातक दोतक विक जे गौडीय आ 'दिभी िक्ा'क अक्तवितत एकटा 'मैविल िक्ा' सेहो एकटा स्कूलक पक्ताक्वधर्त कैति िल। कलामे क्मविलाक अपूिषियोगदान हिल अवि। हस्तकला, क्शल्पकला, क्चतकला, आक्द जे हेक्िमे अंतिाषिटीय ख्याक्त पाप्त केलक अवि। मैविलतकि अपन विशेरता तँ एहने िलैक जे विदापक्ा बाध्य भए एक्ह गुणके अपन 'पुरिर पिीक्ा'मे िणषा केने विि। 'विदापक्त'मे आक्बके मैविल संस्कक्त अपन चिमोत्करषि पहुँचल आ मैविलक व्यक्ततति शुद रिपे क्ाखािि ओक्हठाम आक्बके भेल।

क्बहाकि आन भागक अपेक्ा क्मविलेटा एकटा एहेन केत अवि जकि अपन सास्कक्तक विशिष्टय अखन धवि बनल िक्क आ जकि एकटा सास्कक्तक खण्ड कहल जा सकैत अवि अपन क्लक्प, अपन कला, अपन सामाक्जक संस्कािि, अपन भौगौक्लक इकाई, अपन साक्हत्य एिँ अपन कानूनक स्कूल तिि पिम्पािि एकिि एखनहुँ अपन व्यक्ततति पदान केने िक जे आन कोनो केतमे नक्ह देखबामे अिइयै। हिन सहन, खान पान, विक्ध व्यिहाि, क्ायम पविक्ायम, सामाक्जक दक्ष कोण, आविषक समानता आ भारा एिँ साक्हत्यक शखंलाबद विकास कम तिि सास्कक्तक गक्तविक्धक

अविच्छिन पहि एँ एकरूपता मिथिलाक सांस्कृतिक परम्पराक द्योतक थिक आ इएह कारण थिक जे एकर व्यक्तित्व विशेष य अखनो धरि सुरक्षित अछि। 'मिथिला', 'मैथिल' शब्दसँ एकटा संस्कृतिक बोध होइत अछि आ एकर नामसँ हम अखिल भारतमे कतहु समादत भऽ सकैत छी आ व्यक्तिगत रूपे हम भेलो छी। इ दुनू शब्द मात्र एकटा भौगोलिक क्षेत्रक द्योतक नहि अपितु एकटा संस्कृतिक द्योतक थिक जकर विकासक क्रमक प्रारंभ हमरा यजुर्वेदमे देखबामे अबइयै आ चरमोत्कर्षविद्यापतिमे।

II. मिथिलाक संस्कृतिक विशेषता - अइपन

मिथिलाक चित्रकला (अइपन) :- मिथिलाक अरिपन आब एकटा विशिष्टकलाक रूपमे परिचित भए स्वीकृत भऽ चुकल अछि आ मैथिली कलामे दक्ष लोकक्रमे आब सम्मानित उपाधि सेहो भेटए लागल छन्हि। 'अरिपन' शब्दक विकास आलेपन अथवा आलिम्पनसँ भेल अछि ‗‗‗'आलेपन' 64कलामे सँ एक कला मानल गेल अछि जकरा हमरा लोकनि चित्र अथवा शिल्पकला कहि सकैत छी। अरिपन देबाक प्रथा तँ प्राचीन कालहिसँ चलल आबि रहल अछि। प्रत्येक शुभ कार्यमे कोनो ने कोनो रूपे अरिपन देबाक प्रणाली प्राचीन कालहुँमे छल। शुभ कर्मक अवसरपर 'सर्वतोभद्र', 'स्वस्तिक', 'षोडसदल', 'अष्टदल', आदि एकर प्रभेद मानल गेल अछि आ एकर प्रमाण हमरा प्राचीन साहित्यमे सेहो भेटइत अछि। निम्नलिखित उद्धरण सभसँ प्रमाण भेटत।

ब्रह्माण्ड पुराण:-

"*व्रीहो सर्षपजेर्व पञ्चवर्णकमद्भुतम्।*

सर्वधान्य विशेषमुक्तशेष न चिदेगादतेरुच॥

ािसुदेि कािवमश स्तोतैह्यैशे िषाि: ।
सुभावतैवहि्दजालैभूषशोभावर्षाि: च"॥
भूषा शोभाक वर्िणि एकहठाम देखबामे अिइयै। इएह भूषा शोभाके हमाि लोकक अपना ओतए 'अवपिन' कहैत िी।
संस्काि तिमाला (भट गोपीनाि कत):-
"*लग्नाहेमातका: पूज्या: पूज्या गौिी हिवह्ििता।*
पीठे ि तदलाभे तु सुश्लाकणे तण्डुलावह्िते॥
पंकज कािियती तु तंत गौिी हिी यजेत्"॥
संसिाप्य गणपं गौिी काञ्चनी काण्चने गजे।
कतिपििसक्तयमं गजं गौिञ्च पूजयेत्"॥

एकहठाम "सुश्लकण", 'ताण्डुलावह्िति' आवदसँ इ भान होइि जे अवपिनक हेतु चाउि पीसकके चौिठ बनाओल जाइत िल आ तखन ओकिा घेवकेि अवपिन देल जाइत िल। सिकाकाष्ठा गजक ऊपि गौिी आ गणपवतक पूजनक पसंगक वर्िणि भवषियपुिाण आवद अह्याय गंिमे सेहो भेटइत अवि। एवह सभ साधनक आधािपि इ कहल जाइत अवि जे भूषाके बवद्धया जका नीपाके ओवहपि मंडल आलेपन कए (अवपिन दए) नघिटक सिापना कििबाक चाही।
चण्डेशि कतत्यिताकिमे वलखने िवि ____
"*पूजयेन्मंगला तत मण्डले वविध ित्सदा"* ____अिात् अवपिन दऽ कए सदैि वविधपूिक मंगला देिीक पूजा किी। एवह पसंगमे वमिमवलखत गंि सेहो उल्लेखनीय बुिना जाइत अवि ____
पूजा पकाश (िीिवमत वमश):-
"*पदाष दलं तत कवणाका केसािजिलम्।*
उभाभ्या िदितंताभ्या मध्ये तुभय वसदयें"॥

पूजा पदीपमे गोविन्द ठाकुि लिखने िवि —"*यंताधािमाकशातौ ि पूजा विहिता*"।

एकि आिो कतेक िसि उदाहिणि देल जा सकइयै मुदा सिनाभाकि काििणे एिहठाम ओतेक उदिणि देब संभि नवह। पििि भेदसँ नाना पकाकि अिवपिन काविलामे सिीगण दैत िवि। अपन किवतिन संस्कृितक पभाकि फले एिहठाम सिीगणमे इ कलाक विलकणता देखबामे अिइयै। पत्येक अिसिकि फािक —फािक आलेपनक (अिवपिनक) विधि िकै। विििहोतिि महुअकक शुभ अिसिि जे दूटा पुिनी पातक आकाकि अिवपिन देल जाइत अिि से भेल िििधिुक अिविवििन सम्बन्धक पतीक। ठीक ओिहना कोजागिकि अिसििपि लकमीपूजासँ सम्बिन्धत अिवपिन मखानक तीन पातक आकाकि बनाओल जाइत अिि। पृथ्वी पूजाक अिसििपि िकोण यंताकाि, देिितिनमे पििवधनी, साकि 'मंिदिकाि' आ तुलसी पूजाक अिवपिनक अलग विधान अिि। सभ पििि अलग —अलग अिवपिन देबाक पििपाटी काविलामे अदपयंत अिि। सत्यनाियिण पूजाक अिसििपि जे 'चौशंख' अिवपिन देल जाइत अिि से बडड माकाि अिि —'चौशंख' चतुभुज भगििनक दोतक विकि। पिी देिीक पूजाक अिसिि 'कमलाकाि' अिवपिन देबाक पणाली अिि। देिितिन (पििवधनी)क सम्बन्धमे चण्डेशि िलखैत िवि —

"*िसुदेि कािवशश सिोतैहयैश िििाि।*
सुभाकितैविन्दजालैभूिपशोभािविि चिं"॥
'*भूिम शोभाि क अििभेल अिवपिन।*

कुल देिताक सम्बन्धमे रदधकि मत िवह —

"*ततः कतैक भुतता बाह णी तण्डुल चूणेनोपलेपनं*
विधाय तत्समीपे पूषिभागो पर्वफिलके पटके
ि तर्ि िपिलेपयेत।...एर्ि सुह्दर्ि महार्ििद्द मण्डलं कतर्िशाह्या गहर्िदा
शेत र्िािष्कयाऽष ादशदलं पदं विलिर्ििय...."

हेमाद्द्र सेहो अर्वपिनक उल्लेख केने र्िि आ शीहरष्क नैरधीय चर्वतिमे सेहो एकि र्वििणि एर्ि पकार्ि अर्वि ___
"*धत लाज्ञि नि गोमयाञ्चनं विधुमालेपनपाण्डर्ि वििध।*
भमयत्युक्चतं विदिभषाऽननीिाजिनर्दिषानकम्" ॥
एकि टीकामे नार्ियिण क्लखने र्िि ___
"*आलेपनम् व्वाष ादिकम् अईपण इक्त लोके पक्सदम्*"। आगा ओ पुनः क्लखने र्िि ___ "*चतुष्कोण क्समाणार्िषहर्वदाचूणषमक्शतं तण्डुल व्वाषं तस्यदाने आलेपर्िणिे पंक्डताः चतुिः*" ॥

र्वििह, शाद, पूजा आक्द अिसिकि हेतु विविधि पकाकि अर्वपिन क्लखबाक व्यसिि क्सर्वलामे पाचीन कालसँ चक्ल आक्ब हिल अर्वि। र्वििहक सप्तपदी पकणिक पसंगमे सेहो आलेपनक उल्लेख भेटइत अर्वि। आलेपन शब्दक व्याख्या शब्दकल्पद्रूममे सेहो भेल अर्वि। विदापक्त एकि उल्लेख एर्ि पकार्ि केने र्िि।
"*ललातर अर्ि मंडप जीक्त, क्सिमिल ससधाधिलिए भीक्त।*
हर्वि जब आओब गोकुलपुरि, घर्ि घर्ि नगर्ि बाजए जयतूर्ि।
अक्लपन देओब मोक्तमहार्ि, मंगलकलसक कबि कुचगर्ि" ॥

र्विद्दक युगक्हसँ क्सर्वलामे सभटा मागक्लक कायष सिषोभदाक्दमंडलेपि होइत िल। ओना अर्वपिनक पर्वपाटी तँ समस्त भातिमे कोनो ने कोनो रपे अर्वये मुदा एक्हकलामे क्सर्वलाक अपन एकटा र्विशष्टय िक। हर्वदा कुंकुम केसि आक्दक

संग वसहद्दूकि संग अविपन देबाक पविपाटी क्षविलेटामे अवि। क्षविलाक लोक क्षतकलामे अपन एकटा सादगी अवि। इ कला सनातन कालसँ पिक्वित होइत आएल अवि। क्षविलाक एक्हकलामे उहमुतत भािना एिँ पविष्कित शैली, नैसवाक अवभव्यंजना एिँ सुर क्षक जे समहृयि देखबामे अिइयै से आनठाम भेटल असंभि। लोक संस्कृवतक एहेन पाजल पसाद आ कते भेटत? कहल जाइत अवि जे सविस्ताक अविपनक पािभ िक्दिक युगक्हमे भेल िल। ‘सिषिोभद’ आ ‘सविस्तक’के एके मानल गेल अवि। क्षविलामे पचवलत ‘अविपन’ आ अहयाहय क्षतशैलीके ‘क्षविला शैली’क नामसँ सेहो जानल गेल अवि। एकिा आधुवनक विदान लोकवन ‘‘क्षविला स्कूल आफ पेक्टङ’’ सेहो कहैत िवि आ अधुना एक्ह धािहिके संयोवाके िखने िवि मैविल कणि कायसि आ बाहणि ललना लोकवन। आिषि महोदय एक्ह कलाक विशेष अध्ययन केने िवि आ एक्ह सम्बहधमे अपन मतो पकावशत केने िवि। एक्ह क्षतक अध्ययनसँ सामावजक धावमक आवद्दक जान सेहो होइत अवि। अविपन आ वभवत्त क्षत कालजयी भए एखनो क्षविलाक घािघिमे व्याप्त अवि।

एक्हमे दू पकािक भेद अवि। वभवत्त क्षत आ भूवम क्षत। भूवम क्षत अइपनक नामे पवसद अवि। क्षविलाक सबटा शुभकायमे अइपन वलखबाक पिा अहुखन बनल अवि। िीिशिा एिँ िमिदतक लेख सभसँ सेहो एक्हबातपि पकाश पडइत अवि। अइपनपि तंतक पभािि स्पष अवि आ एकिा कािणि इ विक जे क्षविला तंतक पधान केहद्द िल आ अइपन ओकिा यावतक पकाश विक। मैविल

कबन्धकाि लोकक एकि महत्तक विश्लेषण अपना लेख सभमे केने छवि।

अवपिनमे मूलतः तुसािी पूजा, पविी, सािि, मौहक, मधुशािणी, दादशा, गिहा संकाक्ति, कोजागिी, सुखिवत्त, रडदल, अषदल, सविस्तक आवद पवसद अवि। कमक क्तमे हवसौ पूजाक क्त, सािीि, नयनायोवान, बास, पुँनि, देहवपिकि क्त, दहीक भवविया, मािकि भवविया, गोपी चीहििणि लीला आवद पवसद अवि। डाला, हािी, कोहििकि घिकि हािी, चुमाओनक डाला, गिकािगिक पकहया आवदक क्त सेहो पवसद मानल गेल अवि। कवविलामे एखनो उपिीतत क्तशैलीक व्यापकता देखबामे अवियै।

संगीत:- संगीत मैविल संस्कृक्तक एकटा अवमन अंग मानल गेल अवि। पाचीन कालवहसँ कवविलामे संगीतक पदक्त चवल आवब िहिल अवि। १४हम शताब्दीमे कवविलामे संगीतपिि वसंह भूपाल ''संगीत तिाकि व्याख्या'' नामक गंि वलखने िलाह। १६हम शताब्दीमे जगदि 'संगीत सषिा' नामक गंि वलखलवह आ ओकि तुित बाद खडगिमि आ कल्लीिमि ''लवविािघि'' नामक गंिकि चिना केलवह। लोचनक िगितविाणी तँ सषिपवसद अवियै जकि उल्लेख पूिषवह भेल अवि।

कवविलामे संगीतक पाििभ वैवदक गानसँ मानल जाइत अवि। गौतम, भगु, विशावमत, याजविल्वय आवदक आशममे वैवदक यज आ गान सदैि होइत िहैत िलि आ ओ पिम्पिा कवविलामे बहुत वदन धवि बनल िहिल। जनक विदेहके िजिदबािि तँ सहजवह एकि आशय केहद िलि। वैवदक गानमे ् गवदिक मंतसमूह गाओल जाइत िलि। सामविदक गानक कमाणमे कवविलाक अपूिष योगदान अवि।

याजिलत्तय संगीत विदाके मुक्ततमागषक साधन मनैत िलाह *“िणा िदन ततिजः शुक्ताजाक्तविशािदः। तालजशा पयासेन मुक्ततमागेक्तगचिक्त”॥* िक्दक गानमे जकिा सिमिण्डल कहल गेल अिछ ओक्ह समूहक सात सििके (स,िर,ग,म,प,ध,नी) सप्तक कहल गेल अिछ। संगीतक इ सात सिि अपन अपन सिानपिि क्तशात बनल अिछ। एक्ह सात सििके फेिि अलग अलग समूह सेहो होइिछ। १६म १७म शताब्दीमे दामोदि क्तश िि टा िािगक सिापना केलक्हि। एक एक िािगक पाच पाचटा ििािणी एिं हुनक आठ आठ पुत आ आठ आठ पुतिधु। ओ िािगके पुरुर आ ििािणीके स्ती मनलक्हि। भैिि, मालकोर, क्हंडोल, दीपक, मेघ आ शीि इ िि टा िािग भेल। ‘गीत गोविक्द’के पबक्ध काक्यक गानक रुपमे मानल गेल अिछ। *“िािगदेिता चाविितक्तकताकत क्वतसदा....कीक्ता जयदेि कवि पबक्धम्”*।

ओकिि बाद एक्ह शेणीमे विदापक्त ठाकुिि पदािली सेहो अबैत अिछ। विदापक्त सियं एक पैघ संगीतकाि िलाह। क्तविलामे ‘नचािी’ आ ‘लगनी’ अहुखन पक्सद अिछ। क्तविलामे संगीतक मुख्य केक्द्र हिल अिछ दििभंगा। आइन ए अकबििमे विदापक्तक नचािीक उल्लेख अिछ आ संगक्ह ६ िािगक ६ ६ िािाणीक उल्लेख सेहो अिछ। पचगविया क्तविला संगीतक एकटा पधान केक्द्र अदािधि मानल जाइत अिछ। एक्हठामक िायबहादुि लक्ष्मीनािायण क्संहक दििबािमे मागन खबास सन पक्सद गबैया िहैत िलाह। एक्ह सम्बक्धमे हम पक्हने बहुत क्ििु क्तलक्ख चुकल िी तै ओकिा एक्हठाम दोहिाँब आिश्यक नक्ह बुििा जाइत अिछ।

III. मैथिल संस्कृतिक स्तंभ ——

मैथिल संस्कृतिक किछु पमुख स्तंभ:-

i) गौतम — मिथिलाक बहुपुराणिक ऋषि छलाह। गौतम कुण्ड एवं अहल्या स्थानसँ हुनक सम्बन्ध बताओल जाइत अछि।

ii) याजवल्क्य — हुनका सम्बन्धमे मतभेद अछि मुदा हुनको मैथिल कहल गेल अछि। महाराजा जनकक समकालीन आ योगी छलाह। इ अपनाके "मिथिलास्थस्य योगीन्द्र:" कहने छथि। हुनक पत्नी मैत्रेयी विदुषी छलथिन्ह।

iii) कपिल — मिथिलामे सांख्यक जन्मदाता मानल जाइत छथि।

iv) मण्डन मिश्र — न्याय आ मीमांसाक अद्वितीय विद्वान सहरसा जिलाक महिषी गामक निवासी छलाह। शंकराचार्यसँ हुनक शास्त्रार्थ भेल छल जाहिमे हुनक पत्नी भारती(शारदा) अध्यक्षता केने छलीह। हुनक पत्नीभगिनी शंकराचार्यके बाट देखबैत कहने छलथिन्ह ——

"*स्वतः पमाणं परतः पमाणं शुकाङ्गनायत्र विचारयन्ति।*

शिष्योप शिष्यैर पगीयमानमवेहि तन्मण्डनमिश्रधाम॥

जगद् ध्रुवं स्याज्जगद् ध्रुवं आ कीराङ्गनायत्र वाचिवदन्ति।

द्वारस्थनीडाङ्गणसानेरुद्धा जा नीहि तन्मण्डन मिश्र धामं" ॥

v) वाचस्पति — अद्वितीय दार्शनिक जिनक 'भामती' दर्शनक क्षेत्रमे अपूर्व ग्रंथ मानल गेल अछि। इ सर्वतंत्र स्वतंत्र विद्वान छलाह आ पूर्वी मिथिलाक निवासी छलाह।

vi) उदयनाचार्य — ओना तँ करिऔनक निवासी कहल जाइत छथि मुदा पूर्वी मिथिलाक निवासी हेबाक पमाण सेहो हुनका सम्बन्धमे

भेटइत अछि। ओ पैघ दाशर्निक छलाह आ हुनक कमोतत गछितत पक्सद अछि ___

"*ियमक्ह पदवदिा तकषमाह्रविक्कीि*

यक्द पवि वपिं ि ितिषामस्सपंि॥

उदयक्त क्दक्श यस्था भानुमान् सैि पूि

नक्ह तविगार दीते क्दतपाधीन किः"॥

हुनक कलखल अनेक गंि उपलब्ध अछि आ ओ एक विशवख्यात दाशर्निक छलाह। कवलाक पक्सक्दक पसामिे हुनक योगदान ककिसँ कोनो हालतमे कम नक्ह अछि। कहल जाइत अछि जे जगनाि धाम जेबाक कालमे हुनका मोनमे इशि सम्बन्धी संकल्प विकल्प होमए लागल आ जगदीशपुिि नामक सिनमे जखन ओ एक मंक्दमिे पिशि केलक्ह तखन एकाएक मंक्दकि केबाि बह्द भऽ गेल। इशकि पक्त हुनक आसिा बक्ढ गेलक्ह आ ओ कलखलक्ह ___

उपक्सितेरु बौदेरु मदधीना तक्सििकाः

ऐशय्यषमदमतस्सि मामजिाय ितिषो॥

vii) गंगेश उपाध्याय ___ मंगिौनी कािसी गंगेश ह्याय शास्त दुधरष विदान भेल छि आ हुनक पक्सद गंि "ततिक्तंतामका" अपना वरियक अक्दतीय गंि मानल गेल अछि। निह्यायक जह्मदाता इ छलाह जाक्ह हेतु कवला जगत्पक्सद भेल।

viii) अक्मनि िचस्पक्त ___ धमशास्तज आ दाशर्निक छलाह आ कवलाक धमशास्त साक्हत्य एिं ह्याय आ कानूनक सुदढ कबिामे हुनक अपूिषियोगदान छिल िक्ह।

ix) पक्षधि मिश्र ताकरबक संगहि संग न्याय शास्त्रक अद्वितीय विदान छलाह। गंगेशक तत्व चिंतामणिपर हिनक टीका 'आलोक' सर्षिवदित अछि। हिनके अनुमतिसँ मिथिलासँ बाहर नादियामे 'नव्य न्याय'क केन्द्रक स्थापना कयने छलाह। तकर बादहिसँ नादिया नव्य न्यायक प्रसिद्ध केन्द्र भेल। इ 'प्रसन्न राघव' (नाटक) आ 'चन्द्रालोक' चिव्यता सेहो छलाह आ हिनका सम्बन्धमे कैक प्रकारक किंवदंती मिथिलामे अहुखन प्रचलित अछि ——

"*शंकर वाचस्पत्योः शंकरवाचस्पती सदृशौ।*

पक्षधर प्रतिपक्षी लक्षीभूतो न च क्वापि"॥

x) शंकर मिश्र भवनाथ मिश्र अयाचीक पुत्र शंकर मिश्र मिथिलाक साहित्यक इतिहासक एकटा कीर्तिस्तंभ मानल गेल छथि। पाँच बरखक अवस्थामे उपस्थित श्लोक सुनाके मिथिलाक शासकके इ चकाचौंध कऽ देने छलाह ——

"*बालोऽहं जगदानन्दनमे बाला सरस्वती*

अपूर्णे पंचमे वर्षे वर्णयामि जगत्त्रयम्"॥

जखन मिथिलाक शासक एकटा श्लोक कहय कहलथिन्ह तखन ओ पुछलथिन्ह जे लौकिक अथवा वैदिक कोन रूपे तखन महाराज कहलथिन्ह जे दुहु रूपे श्लोक करु ——

"*चलितश्चकितश्छन्नः प्रयाणे तव भूपते*

सहस्रशीर्षा पुरुषः सहस्राक्षः सहस्रपात्"॥

एहिमे पहिल पाँति संस्कृत लौकिक संस्कृत थिक आ दोसर पाँति वैदिक मंत्र थिक।

xi) विद्यापति ठाकुर मिथिलाक संस्कृतिक चमोत्कर्ष भेल महाकवि विद्यापति जे हमर लोकनिक चितमे अद्यतन समाहित छथि आ

वजनका बाना बवलाक सास्ककताक इवतहासक कल्पनो कबि असंभि अवि। मैविल जनजीविनक एहेन कोनो अंश नवह अवि जाबहमे विदापवत व्याप्त नवह होवि आ इ गौवि एवह रपे संसावि आन कोनो कविके पाप्त नवह भेल वबवह। जहमसँ मत्यु धवि सामाविजक संस्कावपि विदापवत अदावधि व्याप्त वि आ मैविल संस्ककताक विशाष ततिमे जे वकवि एखनो बाचल अवि तकि एकमात शेय विदापवतके वबवह। मैविली संस्ककताक ओ एहेन कीवतषस्तंभ वि जकि मूल्याकन कबि अखनो धवि संभि नवह भेल अवि।

ओ मैविलके 'पुरराविषक पाठ पढौलवबह आ 'सुपुरर'क कल्पनाके साकाि कबिामे समविषभेलाह। 'पुरर'क चवितक विवभन पवक्क विश्लेरण कवति ओ कहने वि जे विदा, बुवद्ध आ विकिके समुवचत रपे उपयोग केवनहावि व्यवक्ततये मानि कहा सकैत वि। पुरराविषक अवि भेल मनुतखक संतुवलत विकास। पविभावविदी होइतहुँ विदापवत युगपुरर विलाह आ भविषयक हेतु संकेत देवनहावि सेहो। अपना समयक वहसाबे ओ पगवतशील कहल जा सकैत वि आ विचािमे वस्तुवनष आ धमवनिपेक सेहो। 'विभागसाि' नामक कानूनी गंि वलवख विदापवत अपन विजनैवतक पटुता आ जानक पविचय तँ देने वि ये, संगवह एवह पुस्तकक माध्यमसँ ओ ओइनवि शिक एकताके सुदढ विखबामे सेहो सफल भेल विलाह।

विदापवत मूलररपेण तीन पकाि मैविली गीतक विचना कए अपनाके अमि कऽ गेलाह आ मैविल संस्ककताके नवजीवन पदान कऽ गेलाह। मैविलीमे एवह तीनू पकािक गीतक विचना कए ओ मैविली भारा, बवलाक संस्ककत माध्यमके सेहो अमिि पदान

केलक्हि। पमि कोटक गीत भेल विभिन देीं देिताक पक्त गाओल गीत सभ जे अदाक्धि क्मविलामे ओक्हना पचक्लत अर्वि जेना ताक्हि क्दनमे हिल होएत। सभ पकाकि सामावजक उत्सपिि इ गीत सभ गाओल जाइत अर्वि आ एक्हसँ मैविल संस्कक्तक एकर पता देखबामे अिइयै। एकिि सामाह्यतः क्यहिाि गीत कहल जाइत अर्वि। दोसि पकाकि गीत भेल क्शािगीत जाक्हमे नचािीं आ महेशािणीके िखिल जा सकइयै आ जाक्हि माध्यमसँ विदापक्त क्मविलाक शोवरत पीक्डत मानिि क्यिाके क्यक्त कबिामे सफल भेल र्विि। तेसि पकाकि गीत भेल सामाह्य क्सिक्ताक जीिनियापन कैिति जीिनिक उपभोग कैिति पेम गीत पेमी आ पेयसीक क्मलन, विििहि, संभोग सम्बह्धी गीत जाक्हमे ििधाकषणाके आक्त क्यक्त कैल गेल अर्वि। एक्हि क्दशामे ओ जयदेसिँ पभावित देखना जाइत र्विि। पेमी पेक्मकाक हेतु तँ विदापक्त पाणदायके कहल जा सकैत र्विि काणि मानि दाि संभावित एहेन कोनो मनः क्सिक्त नक्हि अर्वि जकि िणिषा विदापक्त नक्हि केने होर्वि।

क्शािि गीतक सेहो तीन रप देखबामे अिइयै i) क्शािकि स्तुक्त क्कािि पािषािा; ii) क्शािविििहि, आ iii) क्शािकि पाविििविकि जीिनि सम्बह्धी गीत। साक्हत्यक इक्तहास दक्ष कोणे विदापक्ताक क्शािगीत साक्हत्यक केत्रमे एकटा अपूिष देन कहल जा सकइयै जकि दोसि उदाहिणि हमिि देखबामे नक्हि अिइयै। नचािीक हेतु विदापक्त समस्त भाितिमे पक्सद र्विि। एकि पभािि आनोठाम देखल जाइत अर्वि खास कए नेपालमे।

तैभाक्रक नाटक कऽ चिना कए विदापक्त जे आदशष सिािक्पत केलक्हि तकिि क्मविलामे हेक्ि धर्वि लोग अनुसिणि कैिति

छिलाह आ हरषाि धर्व तैभावरक नाटकक िचना होइत छिल।

मैर्विल संस्कक्त एकटा अह्यतम उदाहणि जे हमाि विदापक्त गीतसँ भेटइत से भेल क्शाि र्विाहिक गीत एकटा अपूषि महेशाणिी जाक्हमे पाचगोट मैर्विल र्विाहि विधिक उल्लेख अर्वि आ इ गीत भारा गीत संगह (संख्या ६६)मे संगक्हत अर्वि। पमिक्ह एक्ह संगहमे पकाक्शत भेल अर्वि एक्हमे पर्विानि, तकबिाद पक्टआपि बैसब, महुअक, सासु दाि बेदीपि घुमोनाइ, आ पाचम गौाििक सखी सभ दाि महादेकिे काजि कबि आक्द विदाक उल्लेख अर्वि जे अहुखन क्मर्विलामे पचक्लत अर्वि एक्ह महेशाणिीके एतए उदत कैल जाइत अर्वि—

“दोला तािनबइते सक्स पक्स पर, बाघािल गेल विक्डआइ।
तेक्ह अक्मअ िसे मगर्विपु क्जक्स उठु, भागे मोए अएलाहुँ पडाइ॥
दोसाि र्विधि पक्डचा चक्ढ बैसलाहे, जरने क्दगंबाि आइ ि।
लाजक लेल गोर्विनक्ह आबए, सक्ख सभे गेल पडाइ॥
माइ हे माडब मए नक्ह जेबए, जहा बस उमत जमाइ॥
पएि धोअए रने दूध क्माउल फक्ण, हाि लागल तसु चोिि।
सबे सबतहु कतिाल बजाबए, मधुिहासे हँस गोिि॥
सासुक्ह शंकािदिन उगालि, आँचाििनल वामपासे।
देक्ख वार्विभाने भोवा कुच चढलाह, आओिक्क कहब उपहासे॥
गोर्वि सक्ख क्मक्ल इस सीाि धर्वि, नयन आँजल मन मोहे।
एकहाि नयनानल डाढल, दोसाि वाडल गंगा गोहे॥
भनइ विदापक्त सुनह मह्दाइक्म, ओ िि सहजक भोिि।
गोर्वि सक्हत हाि देि अभयाि, पुति मनोिि तोिि’॥

महादेकि सरिप एँ िरिसँ अदभुत क्सक्ति उत्पन भगेल

िल। एक्हमे विदापक्त कालीन विािहक लौक्कक विध्कक विािण भेटइत अवि जाक्हसँ तत्कालीन मैविली संस्कक्ताक सामाक्जक र पक दशाष्ठा होइि। एकिा पर्विािनक गीत सेहो कक्ह सकैत िी। एक्ह कममे एकटा आि गीत दष क्य अवि ____

“*कौन िि आनल तपक्सया,*

गोवि मुगुध भेक्ल देक्ख िगिक्सिया॥

नयन अनल काजि कहा लगाओब।

जटा गाग गोट कैसे कए चुँिओब॥

भुत बर्विआती कतए जेमाओब।

पाच िदिन महुअक कहा पाओब॥

पाक्त बानाक मुसिि सिि गाबए।

बाघिािल ओढन क्ति न सोहाबए॥

भनइ विदापक्त ओ िदिायक।

देि अभय िि ओ जुग नायक”॥

आँक्ख आवा िहलाक कािणे काजि कतए कबिैक्ह, जटामे गंगाक मोक्त िहलाक कािणे चुमाओन कोना कबिैक्ह, भूत पेत बर्विआतीके भोजन कतए कबिैक्ह, पाचटा मुँह िक्ह महुअक कोन मुँहे कबिैक्ह। हािक बानाकसँ अठोङि कुटैत।

अहुठाम मैविल विािहक विधिक विािण भेटइत अवि आ विदापक्ताक सामाक्जक व्यापकताक सेहो। जाक्ह दक्ष ये देखबा हो देखु। मुदा इ मानए पडत जे विदापक्त मैविली संस्कक्ताक व्यापकताके जीिित िखलक्ह आ पाचीन कालक्हसँ चल अबैत पिम्पिाके एकठा समेक्टके मैविलतिक िक्शिष्टयके क्शखिपि

चढौलक्हि। तै तँ विदापक्त हमि लोकक्तक संस्कक्तक आलोक स्तंभ वि।

IV. मैवि‍ल संस्कक्तक उत्करषमैविली भारा:- कोनो संस्कक्तक एकर पताक दोतक होइ भारा आ काहामि क्तविलेटा एकटा एहेन सास्कक्तक केत्त अवि जकि एकर पताके दोक्तत केक्ताहा मैविली भारा अद पर्यंत्ता जीवित अवि। क्तविला उपक्तरद् युगक्हसँ पक्सद विदाकेह्द हिल अवि आ जखन मगधक पबल पताप सूयष डुक्तायो गेल लिैक तखनहुँ क्तविला अपन संस्कक्त आ विदाके सुक्तिक्त खिने लि। इक्ताहासक कममे सभ्यता ओ संस्कक्तक जतेक अंग उपाग अवि ताक्ह सभमे क्तविला अपन सतिंत सिान बना लेने अवि। अधुना भातिीय सभ्यता मध्य मैविल संस्कक्त एिं भाराक विक्शष सिान अवि। क्तविलाक विदा, संस्कक्त एिं भारासँ समस्त उतिभाति अनुशाक्सत पभावित भेल अवि आ बजलोकसँ आसाम धवि एकि पत्यक अपत्यक पभाि देखल जा सकइयै।

अक्त पाचीन होइतहुँ मैविली एक जीिति भारा विक। क्ताहामि मैविलीक पभेद भेल दक्तण भागलपुिक 'विकाविकी', चम्पाािणक 'मधेशी' तिा िटि लोकक 'जोलहा' बोली आक्द। मैविलीक पाचीनताक सम्बन्धमे एतबे स्मिणि िखब आिश्यक अवि जे 'लक्लतविस्ति' नामक बौद गंिमे जे ६४क्लक्तक विििणि भेटइयै ताक्हमे एकटा 'िदेही' क्लक्तक उल्लेख सेहो अवि। क्तविलाक नाम पक्सद भेलापि उएह क्लक्त 'मैविली' आ 'क्ताहूत'क पक्सद भेलापि 'क्ताहूता'क नामे पक्सद भेल। क्तविलासँ असम धवि इएह क्लक्त पचक्लत अवि। बद िचिस्मक्तासँ अदाविध जतबा जे संस्कृतक पंक्डत, मनीक्र एिं विदान भेल वि से सभ केओ मैविली क्लक्त आ

भाराके जीवति खिबाक पयास केने वि आ ओक्हमे योगदान सेहो देने वि। र क्वापक्त जगदि, चण्डेशि, विदापक्त आक्द क्यक्तत अपन संस्कत चिनाक्दमे मैविली शब्दक पचुि मातामे क्यिहाि केने वि जाक्हसँ बुिना जाइत अवि जे भाराक रपमे मैविलीक र्सीकक्त अक्त पाचीन कालक्हमे भऽ गेल लि। िचस्पक्त क्मश 'भामती'मे मैविली शब्द 'हडी'क क्यिहाि केने वि।

मैविलीक पाचीनतम उपलब्ध गंि अवि ज्योक्तिशि ठाकुिक 'िणषा तािकि' जे अपना ढँगक अक्दतीय गंि मानल गेल अवि आ अपूषिगदगंिक क्हसाबे पूिी भाितीय भाराक पाचीनतम गंि विक। एहेन अदभुत गंि भाितिषक आन कोनो भारामे अदाक्धि उपलब्ध नक्ह भेल अवि। ज्योक्तिशि, उमापक्त, विदापक्त, अमतकि, अक्मयकि, गोविन्द दास, केशनाियिण आक्द कविमनीक्रक पयासे मैविली १३ १४ १५म शताब्दी धवि समस्त उतिपूिी भाित एिँ नेपालक एकमात सास्कक्तक भारा लि आ इ समस्त क्ते एक सास्कक्तक सूतमे बाक्हल लि। चाविसे िरषधवि नेपालक िाजा ओ हुनका सभसँ पोत्साक्हत धुिन्धि विदान मैविल लोकक्न मैविलीमे सहस्त काव्य ओ नाटकक चिना केलक्ह। पाचीन क्शलालेख ओ अन्याक्ि एक्तहाक्सक साधनसँ इ स्पष होइि जे एक समयमे मैविली उतिभाितिरषआ नेपालमे पूणषरपे क्याप्त लि आ नेपालमे गोिखा शासनक पूिषधवि एक पकािक िाष्टभारे लि।

विदापक्तक क्लखनालीसँ सामाक्जक क्स्क्तक जान होइि। क्मविलामे बक्हया बक्हक्कनीक कय विकिय होइत लि आ एकि बहुत िसि पमाणो क्मविलामे यत तत भेटल अवि आ एक्ह पशके लऽ कए मि मुकदमा सेहो होइत लि। भेर भाि भारा एिँ क्लक्मपि कोनो

जाक्त आ देशक मयादा काभषि कीति अवि आ एकह दकाये कावि ला___
मैविलीक जे अविकिन पिहि ८_९म_ शताबदीमे पाभि भेल िल से अदाविध पािकहत अवि ये जाकहसँ मैविल संसककाक सिरप पविलकक्त होइि। जाकह मैविलीक उदि एिँ विकास हमिि लोकका अखन देवख िहल िि तकि उतपका बौद_गान आ दोहा आकदक कालसँ भेल अवि जे कक कामकलवखत विििणसँ सपष होएत।

८म शताबदीसँ १२मशताबदी धवि बौद वमकु लोकका जाकह चवलत भारामे अपन सफुट दोहा, गीत आकदक िचना केलवकह तकि साकहतयमे ‘वसदगान’क संजा देल गेल अवि। एकहमे सँ बहुत िसि वसद लोकका काहािकि कािसी िलाह। वसद लोकका भाराके महान भारावदि लोकका अपना_अपना ढँगे लेने िवि आ केओ ओकिि कहनदी, बंगला, असमी, उवडया आकदक पाचीन रप मनने िवि। एकहठाम समिण िखबाक अवि जे पातः समिणीय िाहुल साकतयायन एकह वसदगानक भाराके मैविली मगहीक पाचीन रप कहने िवि। जयोवतिीशि ठाकुिक िणषिताकिमे सेहो एकह वसद सभकहक नाम भेटइत अवि। वसद गानक भाराक उदाहािणसँ सेहो इ सपष होएत जे इएह मैविलीक आकद रप विक___

सिहपाद (८_९म_ शताबदी)___

जह मन पिन न संचिइ िवि शवश नाह पिशि

तकहं िहि वचत विसाम कर सिहै कवहअ उिशि।

विरपा (९म शताबदी)___

दशम दुआिति वचहह देखइया,

आइल गािहक अपणो िवहआ।

चउसवठ घवडये देह पसािि,

पइठल गहिक नाह्न कसाहि।

कम्बलपाद (९म शताब्दी)——

खुण्टी उपाडी मेलल कार्छि,

हितु कामकल सदगुर पुर्छि।

कुकुरिपाद——

ससुरे विहुडी काइड भाअ दिवस भइले कामर जाअ।

अइसन चर्या कुकुरि पाएँ गाइड केवड मर्ज एकुडी एक्ह सनाइड।

भानो त कुकुरि पाए भि सि जे एहि बुहिएँ सो एहिसि।

उपरितत गीतमे संचडि, कर, भाअ, जाअ, अइसन आदि ठेठ मैथिली शब्द जकर पयोग अहुखन मैथिलीमे व्याप्त अछि। एहि पकारक पयोग ज्योतिरीशर आ विद्यापति सेहो केने छथि। शिक्षा दिाकर, कीर्त्तिलता आ पदावलीमे एहेन सभ पंयोग आ भाराक साम्य देखबामे अबइछै। चर्यागानक भारा शिक्षा दिाकर आ कीर्त्तिलताक भारासँ विशेर भिन्न नहि अछि। एहि कोटिमे पाकतपैंगलमके सेहो राखि सकैत छी। लोरिक आ डाकवचनावली सेहो पाचीन अछि।

शंकरदित, उमापति आ विद्यापतिक पयासे मैथिलीक पगति विशेर भेल। उमापतिक मैथिली गीत कोनो साहित्यक शोभा भऽ सकैत अछि। उमापति आ विद्यापति ज्योतिरीशरकि अपेक्षा चलत मैथिलीक पयोग विशेर केने छथि। विद्यापति 'देसिल बअना'क व्यवहार कए अपनाके गौरवान्वित बुझैत छलाह। उमापति आ विद्यापतिक मैथिलीक रपक बानगी देखब आवश्यक——

उमापति:

अनगुन पविहिर हविरा हेर धवलमानक सबद्धि विहाने।

कमवारि कुमारि चरणि हदय, धरि सुमति उमापति भाने॥

विदापक्त:

साकि ीि जमुनाक तीि कदीि ितिर तीि

अकक्त कानि क्क कहब काला सोि िक्ह बुि ल सक्ख कुसुमसि

कण्ठ गलि नक्ह मगमद चार फक्गपक्त मोि नक्ह मुकुताहार ।

भनक्ह विदापक्त सुन देिकामा एक दोस अवि ओक्ह नामक िमा॥

गोविह्न्द दास:

कोक्ट कुसुमसि िविसिय जे पि तेक्हक्क जलदजल लावा

पेम दहन कि हदय जकि पुक्त ताक्ह क्क िजिक आवा।

जसु पद तल हम जीिनि सौपल ताक्ह क्क तनु अनुिधि।

गोविह्न्द दास कहए धक्त अवमसर सहचवि आओल िधि॥

गोविह्न्द दासक एकाक्ति अनुपासक एकटा अह्म्यतम उदाहिणि देखब आिश्यक ___

काचा कंचन काक्त कमलमुखी कुसुक्तत कानन जोइ।

कुंज कुटीि कलाििती कातिि काह्नु काह्नु की िइ॥

क्क कहब क्कतब कत जे कुल काक्मनी कक्ठन कुसुम सि सहइ।

कक्ति कपोल केश कत कुंनचत काक्लह्न्दीकूल से िहइ॥

लोचनक िगितंििाणीमे ३७मैविल कविक गीत सभ संगक्हत अवि। लोचन बजभाराके मध्यदेशी भारा आ विदापक्तक भाराके देशी भारा कहने िवि। लोचन सयिं बजभारा आ मैविलीमे गीत बनौने िलाह। लोचनक एकटा मैविली गीतक नमूना क्माक्कत अवि ___

साि िदिन विहुक्सया, मधुिनि जाइते क्मलल तोि क्सिकया।

सुनाक्स न मधुि मुिली िि, सुकत सफलकि सि समुक्चत नि।

लोचन भन बुिि सिस वमिलमक्त, मधुमक्त पक्त मक्हनािि महीमक्त।
मध्यकालीन मैविली गदक एकटा नमूना ——

"हमिि क्हियाक हिइक बेटी पदुमी नामी गौिििणा जे तोहिि बेटा िि शीकषणा िि क्षहायाले से हमे एक टका लए तोहिि हमे देक्लयाि। ताक्ह सँ हमिि किि लिि सम्बक्न्ध नक्ह"।

एिि पकािि हम देखैत िी जे मैविलीक वकिास कम बिबिि बनल िहल अविि। एकि पगक्त कक्हओ अिरिद नक्ह भेल। क्हन्दीमे क्कयाक रप कताक कमषके अनुसािि पविक्तषत होइत अविि, आ क्लंगभेद पधान िहैत अविि, मुदा मैविलीमे से बात नक्ह अविि। मैविलीमे क्लंगभेदक कम गौण िहैत अविि आ क्कया कािकक अनुसािि बदलैत अविि। आदिि, अत्यादिि, अनादिि, आक्द भािकि संगक्ह क्कयाक रप क्षमन होइिि जे आन ठाम देखबामे नक्ह अिइयै।

१७ १८म शताब्दीमे आबाके मैविलीक रपमे पविितषा देखबामे अिइयै आ ओक्ह दका ये मनबोधक कषणजन्ममे मैविलीक ठेठ रप देखबामे अिइयै ——

"*कतओक क्दिस जखन वक्तगेल,*
हविि पुक्त हििगािि गोिगािि भेल।
से कोन ठाम जतय नक्ह जाविि,
कय विििि आडन्हु सँ बहिविि"॥

एक्ह मैविलीक रपक साम्य आधुक्नक मैविलीसँ अविि। मनबोधक पिाक्त हरषािि, चक्न्दा िि, जीिनि िि, धििुनक्न्दन दास, लाल दास आक्दक नाम उल्लेखनीय अविि। क्हनका लोकक्नक उदििणि देिि आिश्यक ——

चक्न्दा िि ——

"पडा पडा बडा बडा गहाद जावि देलकौ___
विदेह कह्यका विपक्ष जाक्स, काक्स लेलकौ
बहुत ाटि बार्नि सभैक हाल कैलकौ
पचण्ड दण्ड देक्सहावि दूत चोि धेलकौ"।
हरषावि___
"मिक्स हे सुक्सय चिन दय कान।
जे ओ मोि माक्सय दोर दोर कवि.
कर धक्स दण्ड विधानें"।
लाल दास___
"खसल क्शुंभ महा बलबान, संजालुप्त सुतल हतजान।
देक्ख क्शुंभ को मव्हमे पडल, आएल शुम्भ कोध अक्स भवि।
जीनि ा___
"विहि क्यावि अक्स आकुल मिनी,
सकल कलेबवि केवि धमनी।
सहजव्ह पाति लकलक क्हयकवि,
धक धक ि की"॥

अह्याह्य भारा जका मैविलीक अपन क्लवा सेहो ैकि जे अदािव्ध जीवित ैकि आ ठेठ क्सविलामे जकवि अखनो सभ कायक्ष असिपिि क्यहावि होइत ैकि। मैविलीक विकास २०म शताब्दीमे सभसँ बेसी भेल अवि आ ताहुमे सितंतता पाक्सतक पाक्स तँ आिि बेसी। अव्हठाम मैविली साव्हत्यक इक्सहास क्लखब हमवि अभीष नव्ह अवि एव्ह विरियपवि कतेक पुस्तक उपलब्ध अवि आ कतेक गोटए क्लक्खओ हिल वि। हमवि कथ्य एतबे जे मैविली भारा क्सविलाक सास्कव्कक एकर पताक सविशेष साधन हिल अवि आ

७०० ८०० रिष सँ मैविलीक माध्यमसँ क्मविलाक ाजिनैक्तक आ सास्क्रक्तक एकताक क्रमाणमे साहाय्य भेटल अवि। भाराके संस्क्रक्ताक संबलक रपमे उपक्सित कैल गेल अवि आ मैविलीक पाधान्य एक्ह बातक स्मष सबूत अवि।

V. मैविल संस्क्रक्ताक क्जी विशाष :- जेना बंगाल, महाष्टि, तक्मलनाडु, गुजाति, कणाटक, केलि आक्द पात भाक्क, सास्क्रक्तक, भौगौक्लक, ऐक्तहाक्सक आक्द दक्ष ये पात कहल जाइत अवि ठीक तक्हना क्महामि क्मविलेटा एहेन एकटा सास्क्रक्ताक केत्त अवि जे सभ दक्ष ये पात कहल जा सकैत अवि। भौगोक्लक ऐक्तहाक्सक, सास्क्रक्ताक एवँ भाक्क दक्ष ये क्मविला एकटा महान केह्द अक्त पाचीन कालसँ हिल आ एकि अपन सास्क्रक्ताक विशाष क महता सेहो विक्दक कालसँ अदाविध अवक्वि न रपे चक्ल आक्ब हिल अवि। उतिान पतन इक्तहासक एकटा अकाटय क्मयम आ तै क्मविला एकि कोनो अपादि नक्ह पक्ञ्च एकि सास्क्रक्ताक एकता सभ क्दन बनल हिल कि आ इक्तहास एकि साकी अवि। एकि केत्त विस्तीणषअवि आ क्मविला एकटा भौगौक्लक इकाइ मानल गेल अक्ह जे सम्पक्त तीन पमण्डल (क्ताहूत, दभिंगा आ कोशी)मे विभतत अवि। उतमि नेपाल, पूिषे पक्शम बंगाल, दक्क्णमे मगध, आ पक्शममे क्महाि आ उतपिदेशक अंश अवि। नदीक दाि क्सकाचत हेबाक काणिे एकिा 'तीभिुक्तत' सेहो कहल गेल अवि। 'तीभिुक्तत'क हिक्महाकि गाक्ततक उल्लेख विदापक्त अपन 'पुरर पाक्त'मे कएने विि ——"अहो तीभिुततीयाः सभािद् गुणगविषाो भक्ति" (क्ताहुक्ताया सभाितः गुणगविषा होइ अवि)। विदापक्ताक इ उक्तत मैविल सँस्क्रक्ताक एक विशेरताक दोतक विक।

पर्वितिषाशील सका मे अपवर्िकाता र पे डटल क्हिके मर्विला अपन ैिशाष्टयक जे पर्वचिय देलक अर्वि तकि उदाहणि स्रिप इ कहल जा सकइयै जे अपन आङनमे जह्मल, पोसल आ बढल जैन धमषआ बौद धमषके इ कह्यो अंगीकाि नह्ि केलक आ ैद्विक धमष आ कमषकाण्डके अपनौने हिल। जह्ना जैन बौद मैर्विलक ैदिकतिके पलव्ट नह्ि सकलाह तह्ना बादमे मुसलमान लोकक्ष एकहठामक कटिताक गढके नह्ि ढाह्ि सकलाह। मर्विलाक सामाजिक संगठन दढ हिल आ ओकिि दढति बनाओल गेल। कटिताक क्ािहक हेतु शास्त पुिणिक अध्ययनपि र्विशेर बल देल गेल आ कमषकाण्डक समिषाक हेतु ‘कबह्म’क चिना भेल। सनातन समाज र पी स्तम्भके जैन, बौद, मुसलमान अिि अंगेजी पभािि सष्ोभािनि कह्लेबामे समिषि नह्ि भेल। मर्विलामे सनातन धमषक पक्ष जनताक पगाढ पेम अर्वि आ ओकिि अहुखन कङैब असंभि। एम्हि आकाक जे अखिल भाितीय स्तापिि सुधाि आह्दोलनो भेल तकिि कोनो पभाि मैर्विलपि नह्ि भेल। एताििता मैर्विल संस्कक्ताक धाि अकुण्ण र पे पकाह्ित होइत चलल आका हिल अर्वि भने आजुक दका ये हम ओकिि अनुदाि कही से दोसि कििि। मर्विला आदशषादी दशषाक जह्मभूक्ष मानल गेल अर्वि। दशषाक कह्गाज आचायष लोकक्ष मर्विलाक धितीके अपन र्विदितासँ चमत्कत कएने र्विि। एकहठामक देन र्विक ‘‘स्तिः पमाणं’’ (मीमासा र्विदात) आ ‘‘पतिः पमाणं’’ (ह्याय)। मण्डन कश मीमासक िलाह। आनह्दवािि कुमािर्विल भटके सेहो मैर्विल कहने र्विि। मैर्विलक आदशष हिल अर्वि जीह्मुतत हिब। शी शुकदेि जी एकहठाम आका जनकसँ उपदेश लए अपन मोह भंग केने िलाह। योगिाशष आ

गगषांक्हतामे एक्ह पसंगक कि अवि। शनैः शनैः क्मविलामे धाक्मक कमषकाण्डी लोकक्मक संख्यामे क्वि भेल। विष्णु, क्शि, शक्तत आक्दक पूजा क्मयक्मत रपे शास्त्तानुकुल ढँगे अहुखन क्मविलामे होइत अवि।

कमषकाण्ड शीकि संस्कारिसँ सम्बन्ध खैत अवि। संस्कारि कमषपूषिकालमे अनेक रपक क्हितहुँ एम्हि आक्मके दश पकाकि अगित होइत अवि। िशि, गणेशि, िमदत आक्दक लेख सभसँ एक्हपि विशेर पकाश पडैत अवि। दश पकाकि कमषे ६काम्य ति ४क्मत्य मानल गेल अवि नामकणि, चूडाकणि, उपनयन आ विहिक हीि, जे यियोग्य नक्ह केने णिाशमक विलोप मानल जाइत अवि। एकि विक्ध एखनहुँ क्मविलक्हमे यिसमय ओ यिशास्त्त होइत देखल जाइत अवि। क्मविलामे जैक्मनीय कमष मीमासा शास्त्तक अक्धक पभाि लि ओ अविओ। शौत स्मातषआगम तीनू कमषकाण्डक यि दिनुष ान ओ लोकमे आविषकाि मैविल विदानक्हक कैल भेटइत अवि। 'कुण्डकादम्बािी'मे गोकुलनाि उपाध्याय गह योगसँ लऽ कऽ अशमेधात कमषकलापक कुण्ड क्मिमाण कऽ गेल वि। मैविल एखन धवि संध्यातपषा एिँ एकोक्दष पायषा कीति वि। पंचदेिापासक मैविल अहुखन होइते वि। एकि पचाि क्मविलक्हमे सिषोभािि देखल जाइत अवि। क्मविलामे मनुक अक्तविित याजलित्य क्मक्दष आचाकि विशेर पचाि अवि। मैविल विदानक विशास क्वह जे आचाकि संग धमषक जाक्ह तहिक सम्बन्ध कि आिग्य शास्त्तसँ कम नक्ह। पातः कत्याक्दसँ शयनपयंत्त, िेत आक्दसँ लऽ साधािणि आचमन सभ िजाक्मक ततसँ

भलि अवि। विचाि सीतंतत्यक उदाहणि क्मकलवखत ितियसँ भेटत —

“यस्तकेणानुसन्धते सधमष दि नेतिः” —विदापक्तक ‘पुर रपीकि’मे अपन अपन कतष्यक समुक्चत ढँगसे कबिके धमष कहल गेल अवि। ‘बहदाणिवकोपक्ारद’ जकि िचिना क्मवलामे भेल िल ताक्हमे यौनधमषक सम्बन्धमे स्पष्ट रपे कहल गेल अवि —“सििामानन्दा नामुपुष्यं एकायतननम्”। मनुष्यके संस्कायिुतत कमष कबिाक अवधकाि क्मवलामे देल गेल िैक। संस्काि एिं कमषक सम्बन्धमे मनुक मत अवि —

“*सिध्यायेन िैहोमैस्ति विदेनेज्यया सुतैः।*
महायजैश यजैश बाहीयं क्रयतेतनुः”॥

िदिक अध्ययन, बहचयष असििाक पालन, सायं पातः केि होम, देि ओ ्वरक तपषा, संतानक उतपक्त, पाच महायज (बहयज अध्यापन, वपतयज तपषा, देियिज देिपीत्यिष अवनमे होमक आहूत देि, भूतयज बक्लविशेदेकि, नयज अक्तवि केि पूजन) तिा आन ज्योवतषोमावदक काम्ययजक दाि शीिीकिे पवित कबि उक्चत मानल गेल अवि। एकि सभके संस्काि कहल गेल अवि। संस्काि कुलाचाकि अनुसाि होइत अवि। संस्कािनुसाि सभ जावतक कमष सेहो वनधावित अवि। कणि कायस्ि कोनो िणषगत नक्हओं िहिला उतिि क्मवलामे सम्मावनत िहिला अवि। क्हनका लोकक्तक आचाि विचाि तिा व्यिहाि कोनो रपे क्द्जसँ कम नक्ह कहल जा सकैत अवि। बाहणे जका सभ संस्काि क्हनको लोकक्त ओतए होइत अवि आ संगक्ह धावमषक तिा सामावजक कायषकलाप सेहो िीिक्हक सम्बन्धो अहुखन धवि हवि क्संह देिीय पदक्तसँ होइत

ि क्ह। कायस हुक हेतु पाचीन कालमे ि ि क्हक सभाक क्य सि ि मधुबनी आ जगतपुि मे ि ल। क्व ि लामे सत शूदके 'सोलकह्ह' आ असत् शूदके 'अ ि प' कहल गेल ि क।

क्व ि लामे संस्का कि पालन पूणष पेण होइत आ अहुखन पाचीन पम्मिा ि देहातमे व ि जिमान अवि। पाचम ि रषे एक्हठाम व दा भि संस्का ि शुर होइत अवि आ ओक्ह अ सि ि मे बालकके 'खडी' अ ि ि 'भटा' ध ि ओल जाइत अवि। धाक्ष कमष केला उत ि गुर जी बालकक हा ि धकए "आँजी क्सक्द सि्तु" क्लखबैत ि व ह्ह। आँजीके केओ पणा कि भष र प, गणेशक अंकुश, सूंढक पतीक अ ि ि क्ाशूलक चेह्ह कहैत ि व ि। व दा पा भिक पू ष्हसँ बालकके संस्कृत श्लोक इत्याक्द क्सखाओल अ ि ि टिाओल जाइत ि क्ह आ ओक्हमे स ि षक्सद श्लोक क्माक्त अवि —

"साते भ ि तु सुपीता दे ि क्शखा ि क्सनी।
उगेण तपसा लब्धो य ि पशुपक्त: पक्त:॥
बालोऽहं 'जगदानह्द' नमे ि ला स सि ि ती।
अपूणे पंचमे ि रे ि णिषाक्त जगत् तयम्॥
मा क्राद पक्ष ा नि मिगम: शाशती: सभा।
यत्क्रौञ्च क्ा ि नादेकम ि धी: काममोक्हतम्॥
सा ि मि ा न ि ि ि हा नगे भागमनाक्ह या॥
याक्ह न तामगभागेन हा ि ि ि णि मा ि सा"॥

क्व ि लामे व ि ि ह संस्का ि सेहो एकटा महत पूणष संस्का ि मानल गेल अवि आ मैव ि ल क्य सि ि ाक अनुर प बा ि ह ि रष धवि व ि ि ह भए जाएब आ ि श्यक बु ि ना जाइत अवि। शास्तमे कह्यासँ क्ागुण अ ि ि अढाए गुण पैघ ि कि है ि उक्त मानल गेल ि क।

विािहक हेतु कह्याक गुण, कुल आक्दपि सेहो विचाि कैल जाइत िक। ीािक्हक सभा समौल, सौाठ, पतिापुि, भखािइन, बनगाि आक्द सािनमे पूषिे होइत िल। अखन आब मात सौाठ सभा क्हि गेल अिव जाक्हठाम शुदक समयमे एक विशाल मेला लगैत अिव आ जकिा देखबाक हेतु दूि दूिसँ लोग सभ अबैत िवि। शास्त्रीय अनुमक्त देबाक हेतु पञी पबंधक सभ सामगी सक्हत पकाायाि लोकक्न सेहो एक्हठाम उपक्सित िहैत िवि। जखन दुनू पक्के (िपिक कह्यापक) सािा सम्बक्ध कबािक क्नशय भऽ जाइत क्िक्ह तखन 'असिजनपत' लऽ कह्या पक्क लोक लौक्कक व्यिहाािनुसाि 'हिधािी' कए अपन गाम जाइत िवि। 'असिजनपत'के गोसाउक्नक क्सािमे समक्पत कैल जाइत अिव। क्सदात भऽ गेलापि दुनू पक क्नक्शत भऽ जाइत िवि। तकि बाद विािह क्नक्शत बुिल जाइत अिव।

धमषक केतक हम विािचन कऽ चुकल ाी जे क्मविलामे पंचदेिापासनाक पदक्त बडड पाचीन अिव आ मैविलक िवशिष्टयक क्हसाबे एकि महतिि एखनो बनले अिव। एक्हठाम स्मािण िखबाक अिव क्क सभ क्किाु क्हतहुँ एक्हठाम कक्हओ कोनो पकाकि साम्मदाक्यक कलह नक्ह भेल अिव आ सभ पकाकि धाक्मषक विचाकि लोग एक्हठाम अपन अपन धमषक पालन कािैत आएल िवि। एके ठाम अिाि एके पवािािमे शैि शातत, आ िषािा देखल जा सकैत िवि। िस्तुतः साम्मदाक्यकतामे जाक्ह पकाकि सामंजस्य एक्हठाममे देखबामे अिइयै तेहेन अह्यत भेटब बडड दुलषा। सभ सभक्हक धाक्मषक कायषकलापमे सक्किय रपेण भाग लैत िवि। भाितीय संस्कक्ताक इएह मूलमंत िहल अिव आ क्मविलामे एकि

चर्वितािष होइत हम देक्ख सकैत ि। कर्विला तात्तक सम्पदाय अपन एकटा सिान भातिक संदभषे खिैत अर्वि तै ओकि र्विचिन अपेक्क्त।

तात्तक संपदाय आ कर्विला—क्शाि आ शक्ततक पधानता कर्विलामे पाचीन कालक्हसँ चक्ल आक्ब हिल अर्वि। क्शाकि पूजाक हेतु कर्विलामे क्शामिंक्दकि कोनो अभाि नक्ह अर्वि आ सभ िगष आ िणिषक लोग क्शाकि पूजा कौिते र्वि। क्शाकिे आशुतोर सेहो कहल गेल िक्ह्ह आ कर्विलाक गामक गाममे र्विदापक्त क्कित नचािी आ महेशिाणी केओ कखनो सुक्न सकैत अर्वि। क्शाकि संगक्ह संग कर्विलामे शक्ततक उपासनो होइि आ सभ घिमे गोसाउक्नक पूजा कायक्त रपे पक्तक्दन हेिि कौिते अर्वि—कर्विलामे कुल देिी सभ घिमे पाओल जाइत अर्वि। स्मक्तक अनुसाि क्शातितकि जान पाप्त कबािक हेतु शक्ततक उपासना आिश्यक मानल गेल अर्वि। तै तँ कहल गेल अर्वि—“क्शािक्ह शक्तत िहितः शततः कतुषा क्कंचन”। एकि समिषा शंकािचायषक सौह्दयषलहिीमे सेहो भेल अर्वि—

“*क्शािः शततयायुततो यक्द भिक्त शततः पभाक्तुम्।*
नचेदेिं देिी न खलु कुशलः स्पक्न्दतुमक्प”॥

क्शातितकि जान पाक्तक हेतु शक्तततत्तकि जान अपेक्क्त अर्वि आ कर्विलाक संस्कक्तमे एक्ह दुहु तत्तकिे बुिब अत्यािश्यक मानल गेल अर्वि।

शुक्त तीन भागमे र्विभतत अर्वि—कमषकाण्ड, उपासना काण्ड, आ बहकाण्ड। कमषकाण्डक पितिषक भेल िर्वि जैक्मनीय (पूिष मीमासा), बहकाण्डक पितिषक बहसूतकाि व्यास क्कित उतिमीमासाकाि आ उपासना काण्डक पितिषक भेल िर्वि नािद। आगम

शास्त्र जानी उपासना काण्डके महत्व दैत छथि। ज्ञान आ उपासना शुक्ल मूलक मानल गेल अछि आ इ दुनू मत अदैतक समर्थक अछि। सकल साधारणक सुविधाक हेतु आगम मार्गक उपस्थापन केनिहार छलाह ब्रह्माक चार पुत्र सनक, सनन्दन, सनातन, आ सनत कुमार जेकरा महादेवसँ प्राप्त कए एकर मार्गक सूत्रपात केलन्हि। चार गोटएके महादेव जे उपदेश देलथिन्ह सैह 'आगम' कहाओल आ इएह 'आगमशास्त्र' तंत्रक नामे प्रसिद्ध भेल। 'निगम' आ 'आगम' भिन्न पदक्रम अछि। एखनि हमर लोकनि अधुना 'निगम' (वेद विद्याग) आ 'आगम' (तंत्र मंत्र)क नामे जनैत छी। कुलार्णवमे लिखल अछि—

"*कृते श्रुत्युक्त आचारस्त्रेतायां स्मृतिसंभवः।*
द्वापरे तु पुराणोक्तः कलावागमसम्मतः" ॥

कलियुगमे आगमशास्त्रक प्रधानता निर्विवाद रूपसँ एकठाम कहल गेल अछि। महानिर्वाणतंत्रमे शिव पार्वतीके कहने छथि जे आगम मार्गक बिना अनुसरण केने कलियुगमे सिद्धिक प्राप्ति असंभव। ओहि तंत्रमे आगमक सामान्य लक्षण बताओल गेल अछि—

"*सृष्टिश्च प्रलयश्चैव देवतानां तथार्चनम्।*
साधनश्चैव सर्वेषां पुरश्चरणमेव च॥
षट्कर्मसाधनञ्चैव ध्यानयोगश्चतुर्विधः।
सप्तभिर्लक्षणैर्युक्तमागमं तद्विदुर्बुधाः" ॥

आगम उएह कहबैत अछि जाहिमे सृष्टि, प्रलय, देवताचर्चा, कार्यसाधन, पुरश्चरण षट्कर्म आदि विधा दृष्टि करबाक एवं शान्ति स्थापनाक हेतु वशीकरण, विद्वेषण, उच्चाटन आ मारणक विधानक

योग हो। आगमशास्त्र क्शा शक्ततसँ सम्बक्ध्त मानल गेल अवि। आगमक तीन मुख्य भेद भेल डामि (तमस्), यामल (जिस्), आ तंत (सत्)। पुनः एक्ह सभक पभेद एिँ पकाि अवि ____

डामि ____योग, क्शा, दुगा, सासिति, बह , एिँ गह्धषि

यामल ____ आक्दयामल, बह यामल, विष्णुयामल, गणेशयामल, आक्दत्ययामल, ता र दयामल।

तंतक विक्षन पभेदक विणि िहिी तंतमे भेटइत अवि।

क्षविलामे शक्ततक पधानताक काणि शाततंतक पचाि अवि कौलमत एिँ दशमहाविदाक पचाि एतए बेसी भेल अवि। कौलमतालिम्बी िमाचाकि पतिष्क भेलाह काणि एक्ह मागषे क्सक्द क पाक्त शीघ होइि। काली एिँ ताकि पधानता क्षविलामे विशेर रपे िल। क्शाष ताकि उपासक भेल िवि। बौद धमषक पभाि भने मैविलपि नक्ह हिल हो से संभि मुदा बौद तंतक पभाि तँ स्पष रपे क्षविलाक तंतक इक्तहासपि पडल अवि आ चीन क्तब्बतसँ क्षविलाक सास्कक्तक सम्बह्ध एक्ह माध्यमसँ भेल अवि। दश महाविदा पिक समुक्चत आदि अहुखन क्षविलामे अवि। िमाचाि एिँ कौलमतक पचाि सामाह्यतः क्षविलाक क्नमिगष लोगमे भेल। ओना गंिक्दमे तँ 64तंतक नाम भेटइत अवि। चह्दकला, ज्योत्सनािती, कलाक्नक्ध, कुलाणषि, कुलेशिी, भुिनेशिी, बाहस्पत्य ओ दुिसामतमे बाहणाक्द चार िणषके ओ िणषसंकहिुक समान अक्धकाि देल गेल िैक। पिम तीन िणषके दक्कणाचाि मागे आ शूदाक्द आ िणषसंककिके िमाचाि मागे साधना कबिाक अक्धकाि पाप्त िैक। क्षविलामे ताक्तक सिान सभमे विशेरकए िटलोकके भगताक रपमे एखनो देखल जाइत अवि। अखनो क्षविलामे

कैकटा पधान ताक्तक केह्द अवि आ ओक्हसभ ठाम जाक्त पाक्तक कोनो बह्धन नक्ह देखबामे अिइयै। ताक्तक धमक उत िनक पाि सेहो कक्ि आविक आ सामाक्जक तथ्य िलि जकि अनुसंधान एखनो पूणषपेण नक्ह भऽ सकल अवि। पूिी भाितिमे मैविली, असमी, आ बंगाली संस्कक्तमे तंत एकटा महतिपूणषभूक्मकाक क्ािह केने अवि। क्मविलामे घनानंद दास नामक एकटा पक्सद कायसि ताक्तक भेल िलाह।

तंत क्यापक अवि आ लौक्कक पािलौक्कक दुहु मागक बताओल गेल अवि। मोक पाक्प्तक मागषे भोगके नक्ह त्यागे पडए सैह विधान तंतमे बताओल गेल अवि। सिषिम आक्दशक्तत पकक्तक पूजा पािभ भेल आ ताक्ह क्दनसँ क्मविलामे तंतक पिम्पािा चक्ल आक्ब िहल अवि। बहसिरिप पकक्तक पाक्प्तक हेतु तंतमे पंचमकािक विधान सेहो बताओल गेल अवि पंचमकािक नाम एिँ लकण एिँ पकािि अवि ——

"*आनह्दं पिमं बहमकािास्तस्य सूचका*
मत्स्यं, मासं तिा मदं मुदा मैिुनेि च।
एते पंचमकािाः स्युमोक्दा क्ह युगे युगे"॥

कुलाणषि तंतमे एकि विश्लेरण एिँ पकािि अवि ——

मत्स्यः ——

मायामलाक्दशमनाह्मोक्मागषमिपणात्।
अष दुःखाक्द विहाह्मत्स्येक्तपविकीक्ततषः॥

मासः ——

मागल्य जननादेवि संवदानंददानतः ।

सर्वैि वायतिच्च मास इत्यवमधीयनः॥

मद ः ____

सुमनः सेवतितिच्च िजतितसर्वाामये ।

आनद्द जननादेवि सुिकिपवकीिताः॥

मुदाः ____

मुदं कुिषि देिनामनासदािियंताच

तस्माद्मुदा इकाख्याता दक्षषा व्याकुलेशिि॥

मैिनः ____

सर्वोहं वक्षमुतति तिपाणवाय भित् ।

एकाकािि भिदेवि तिय बह वा मैिनम्॥

कर्विलामे तात्ताक साधनाक आधािपि पैघ पैघ तात्ताक अपन वसद्द दािि लोकके चकत केने िवि। इएह कािण विक जे अहुखन कर्विलामे तंतािदक ममषसुिकत अवि।

स्तीगणक वसिक्ता:- कर्विलाक सामाजक सासृक्तिक िवशष्टयमे स्तीगणक वस्तित महतिपूणष िहल अवि आ एवहठाम हमिि सभ पकािक स्तीगणक विभेद देखबामे अिइयै। ओना भािितीय संस्कक्ताामे तँ स्पष कहल गेल अवि जे स्तीके कवहयो कोनो अििसि सिचिह्द िहब अपेक्कत नवह अवि ____

“*माता किक्ता कौमािि भता किक्ता यौिने।*

पुतश सिविि िकित् न स्ती सितंत्यमहर्ति’॥

स्तीके कुल, जावत, समाज एिं देशक गौिि बुिल गेल अवि। स्ती वशकाक आधुवाक पविपाटी तावह वदनक कर्विलामे नवह िल ओना ििनी महािनी लोकवा विदुरी होइत िलीह से देखबामे

अि इयै। ‘मैतेयी’ बह ाविदनी भेल ि लीह आ ‘मल्ली’ नामक एक मैवि लानी जैन लोकक्तक एक तीि र्षकंि भेल ि वि । मंडन क्तशक पती ‘भाि ती’ तँ सर्वि दीत ि वि ये। लक्खमा ठकुि इिन आ वि दापक्तक कुलधि ु ति ा ‘वि शास देि ी’क नाम तँ पख्यात अवि ये। मुदा एकहसँ इ अनुमान नक्ह लगेबाक चाही जे क्तवि लाके सामाह्य नावि लोकक्तके सेहो एहने क्शाक्त देल जाइत ि लक्ह। पि म्पिाि गत र पे पर्वी ि ि मि जे कि ि ु क्तसखाओल जाइत ि लैक सैह हुनक क्शाक्त भेलैह्ह। पदा पि ाक संकेत तँ मनुक कालक्हसँ देखबामे अि इयै। मेधाक्तवि अपन मनुभाष्य (४१४४)मे कहने ि वि “अि ि गुक्तग्ग्ताामेि क्ह वि शेरे सम्हयंक्त”। क्तवि लामे स्त्री पदाक क्हसाबे घोघ काढैत ि वि आ इ पि ा एखनो धवि वि ि ि जिमान अवि । क्तवि लामे नाि ीक सौह्दयष् कोमलता, माधुयष् पवि तिता आ शीलक कि ाि षपदाके आि श्यक बुि ि ल गेल अवि । मध्ययुगमे क्तवि लामे एकहपि ाक वि शेर पचाि भेल ि ल। अहु पि ाक पचलन पैघ लोकमे जति ा अवि तति ा ि ि ट लोकमे नक्ह काि ण ि ि ट लोकके तँ बाल बच्चा समेत सदक्त बाहि भीति काज कि ए पक्डते ि ैक। क्तवि लामे कुमावि बाह णके पवि त मानल गेल ि ैक आ कुमावि भोजनक पि ा अद तन पचक्लत अवि ये। अवि ि ि क्हत कह्या क्तवि लामे माि नक्ह ि पैत अवि । क्तवि लामे कोजागि ि पूक्तणषा, सुखि ाक्त आ कावक्तकमे शामा चकेबाक पचलन स्त्रीगणक मध्य पक्सद अवि ।

एकहठामक सामाक्तजक संगठन अद ाि वि जीि ि त अवि आ सामाक्तजक क्तयमक उल्लंघन केक्तहाि के दण्ड देल जाइत ि ैक। बाल वि ि ाि ह आ अनमेल वि ि ाि हक पणाली पक्हने जेहेन ि ल ताक्हसँ आब कि ि ु बदलल अवि । स्त्री क्शाक्तमे पगक्त भेल अवि आ पदा

पि सेहो कम भेल अवि। कटि मैविल लोकक (चाहे ओ कोनो णिषक कऐक ने होवि) अखनो स्पशास्पशष सम्बह्धमे बडड विचाि खैत िवि आ चमैन जे घकि ओतए महतपूणषकाज कैति अवि तकाि अखनो अिपक वानतीमे िखल गेल अवि। सभठाम पविितषा भेला उतिा क्सविलाक गाम घिमे अहुखन कटिता आ अह्धविशास जक्त पलाप देखल जा सकइयै। घुिनंदन दासक ‘क्सविला नाटक’मे तथ्यपूणषसामाक्जक क्चतण अवि।

अध्याय २१

पर्वविशेष

१. कार्वलाक इतिहासपर चंदा ाक मंतव्य

नान्य ाजा कर्नाय कणाट ालाह जे शाके १०१९मे ाज्य पौलक्हि।
२२६ रिषधवि हुनक संतान लोकक्त ाज्य केलक्हि।

हुनक मंती जबदी पगिना क्सति अह्धिाठाढी गाममे कमलादित्य विष्णुक सापना केलक्हि। आधाशिलामे लेख श्लोकाषि

अवि नाह्य ाजाक मंती शीधि शीधकि पक्ाष ा केलक्ह। खसल पाि कि चौखक्ापि "मकधिजि योगी" क्ालखल अवि।

शाके १०४०मे क्चकौि ाजाक ाज्यमे जयचह्द ाजासँ असगािि संगाम कैल।

काफि ाजाके मािबाक बहादुािमे पुस्काि सिरिप महमुद गजनी नवक्ासंहके क्ाहिूतक ाजा बनौलक। नवक्ासंह नाह्यक पोता ािल। बंगदेशसँ घुिबाकाल गयासुदीन क्ासमािनिगढीसँ नवक्ासंह देिकिे लऽ गेल ािलाह।

हवक्ासंह देि मैविल बाह णक पञी पबह्ध केलक्ह। हुनक मंती हिवक्ह सावधवगिक्हक महाािक्त ष्क क्ाबह्धकाकि, महामतक ािशिि ठाकुि। णिस्तंभ क्कलापि वजियाक्मयानक असिपिि मैविल मंती ािशिि अलाउदीनक संग ािलाह। १२९५इ. मे हर्मीिि सिगािपसी भेलाह। अलाउदीन ािशिकिे मंक्ताितािककि पदीसँ अलंकत केलक्ह।

शकक्ासंह देि कणाटक मंती ािलाह।

हवक्ासंह देि अपना ािशक पंचम ाजा ािलाह। शाके १२१६मे जह्म भेल ािलक्ह। ओ १२४८शाकेमे दिभंगासँ पूब ७कोश एिं सकिीसँ ११/2 (डेढ)कोश दक्क्ाण नेहाि ािघोपुािमे क्ाासि कैिति ािलाह। ओक्ह गाममे पैघ पैघ पोखवि आ क्कला ािल। ओ ओतक्ह पञी पबह्धक क्यासिा केलक्ह। दैािधीन ओ पटना ािक्ड उतिि पहाड जंगल क्दक्स चल गेलाह। कवििलामे भाला पिगिनामे मौजे उमागाममे अहुखन हवक्ासंह देि पूज्य ािवि। ओतहु भिनि आक्द देखबामे अिड्यै।

कणाट िश

िजय भोग िरष२२६

i) नाह्यदेि ३६

ii) गंगदेि १४ गंगासागि

iii) निसंह देि ५२

iv) िमसंह देि ९२

v) शकसंह १२ सुखीदीघी

vi) हविसंह २० कजाम्बुदीवघका

नोट:- एक पसंगमे हमि अपन मत "कणाटज आफ कविला" (भण्डािकि शोध पिका १९५५) पकाशत अिछ। संगक 'कम्पीहेनसभ हस्टी आफ िबहाि खण्ड १'मे सेहो हम सभ तथ्यक विचिन कैल अिछ। िमसंह देकि पिकत १२६०इ.मे कविलामे ीिसंह नामक िजाक विण पेटेक देने िछ जे विचाणीय अिछ आ संगक एक तथ्यपि ओ िन पकाश सेहो देने िछ। दिषव्य अिछ हुनके िलखल "कवडिल हस्टी आफ नेपाल" आ िबहाि विसचषसोसायटीक महािजा िल्युममे "कविला आ नेपाल" नामक हुनक िनबन्ध।

"शाके शीहिसंहदेि नपतेभूषाकषतुल्येजिन

स्तस्मादंतिमतेऽब्दके िद्वजगणैः पञी पबन्धः कतः।

तस्मादैविजिशि िविकिल्लने (?) सद्दश चकेपुिि

सद्पाय समवाप्तः सुकतिने शाताय तस्मैनमः॥1॥

शास्तानाह्यपकबधूि तदनुशीगाङ्देिि नप

स्तत्सूनुनिसंहदेिनपकः शी िमसंहस्तः।

तत्सूनुः खलु शकसंह विजयी भूपाल िह्दिस्ततो

यत शीहर्व (हा) क्संह दे नपक्तः कणाट चूडामक्ण॥२॥
ाणिक्धबाहुशक्ष्रासक्मत शाकरे
पौरस्त्य शुतलदशमी कक्सूनुार्ि।
त्यतता सुपटनपुा हर्व (ि?) क्संह दा
दुदे देक्शत पा वार्वमार्वाशि॥३॥

कार्विलामे जबदीनहडी पगिनामे बक्लाजिगढक समीप क्सहुलानि (क्सर्विहिला) नामक पक्सद सानि अर्व जतए बलदेजी स्यमंतक मक्णक हेतु ६०रिषधर्व क्तासि कएने ाछाह। दुयोधन, केमधूक्ताष, जलसह्ध आक्दक सम्बह्ध सेहो एक्ह सानिसँ ाछि।

पक्धि क्वाश १३५०शाकेमे हर्विनाायिण पक्सद भैादेकि सभामे उपक्सित ाछाह।

शीकषा स्यमंतक मक्ण जाम्बािनिके पाविजत कए पाप्त केलक्ह आ ओ मक्ण ओ सताक्जतके देलक्ह। सताक्जत सत्यभामा नामक कह्याके देलक्ह। सत्यभामा ाक्तमे सताक्जतके मार्व मक्ण लऽ अकर किे एक्ह शतघे देलक्ह जे ओ एक्ह चोाकि गफ्के पकासमे नक्ह अनताह। सत्यभामा हक्स्तनापुि पहुँक्च क्वातामणि एर्ं मक्णहणिक समाचाि शीकषाके देलक्ह। शीकषा दािका पहुँक्च अपन जेठ भाइ बलभद जीसँ एकिा खोजबाक हेतु आगह केलक्ह। मक्ण नक्ह भेटलाक काणि कषाके कोध भेलक्ह आ तखन ओ क्वार्विलामे आक्ब ाजि सत्कासिँ पसन भऽ धमागंद गढमे क्तासि केलक्ह आ तखनक्हसँ ओक्ह गढक नाम कोपगढ पडल। ६०रिषक पाक्त कषाजी दार्विका घुाछाह।

बक्लाजिगढ ओ केमगढ सेहो पक्सद अर्व-------

स्कन्दपुराण (सह्याद्रिखण्ड अध्याय ३५)क आधारपर सौनल मुनिसँ उत्पन्न कायस्थ शिक बीसम राजा बल्लाजि छलाह (चन्द्रवंशी)।

हरिअमय बल्लाजिपुर मूल पकसद अछि जाहिमे ब्राह्मण शोत्रिय महामहोपाध्याय सचल मिश्र पूनामे राजीराजि पेशासिँ अनेक दान प्राप्त केने छलाह।

बल्लाजिपुर गढक समीप मदनेश्वर महादेव मन्दिर जकर स्थापना बल्लाजिक दादा मदन कएने छलाह आ जकरा नामपर मदनोगाम सेहो अछि। १२८१सालमे हाथी पगिनामे साहो मौजेमे पोखरि खुनैतकाल एकटा पत्थरमा बाहर भेल से हाथीडीहमे राखल छल आ लक्ष्मीनारायिणक पत्थरमा वंशलामे कामकलविखत लेख उत्कीर्णष छल "शीमाह्ममदनमाधवः"

पदाति देवी सौनलस्यमुक्त

१.) यदु

२.) भास्कर

३.) सुरि

४.) गजेष

५.) दण्डधारी

६.) खड़गधर

७.) शीदिन

८.) नागराज

९.) गुणराज

१०.) वंशर

११.) सोमनाथ

१२.) महाकाल

१३.) दुह्दुभ

१४.) काम्बाजि

१५.) देकि

१६.) अक्कर द

१७.) गोपक्त

१८.) मदन

१९.) सुनेत

२०.) बक्लाजि (जकाि नामपि बक्लाजि गढ अर्वि।)

पवक्शिष २

ओइनािि िशिक िशि ताक्लका

ओएन ठाकुि

अक्तर प ठाकुि

विशिर प ठाकुि

गोविह्द ठाकुि

लक्षमण ठाकुि

ािजपण्डत कामेशाि हरषा (सुगौनेशः) तेाािडी सलखन क्तपुर्ि गौड।

ािजा भोगीशाि

महतक कुसुमेशाि

ािजा भक्सिंह

ािजा भोगीशाि

ाजा गणेशा

ाजा कीर्तिसिंह(?)

ाि सिंह

ाजा भविसिंह

ाजा देविसिंह

ाजा हविसिंह

(पदसिंहक बाद ाजा भेलाह)

रूपुि सिंह (ाज्य दुजषा खाडे पुत अजुषा ाय)

ाजा देि सिंह

श्राविसिंह

पदसिंह

ाजा हविसिंह

दपषाायिण पदाकृत तिसिंह नविसिंह

हदय नाायिण धीविसिंह (पुत ाघिह्न्द)

हविनााायिण भैाविसिंह (धीि सिंहक भाता)

(विशास देवि)- ?

र पनााायिण ामिभद

कंसनााायिण लक्ष्मीनाि

(श्राि सिंह)

लक्खमा ािनी विशास देवि(?)

पदसिंह

(भैाविसिंहके चह्न्दसिंह नामक एक ाट भाइक उल्लेख अवि इ संभतिः सतभाय हिविह्न। इहो कोनो केतमे ाजि कौति ालाह विदिपक्त आ क्रमसार क्रमश क्रनक 'नौशि', 'नपक्त' कहैत ावि ह्न।

ह्नक पतीक नाम सेहो लक्ष्मा हिक्ह।)

नोट:- चंदा िक अनुसाि क्तापुक्सिंहक पुत अजुष्ा ियि गणेशकि माििक्ह। कािण ििल िजिगदीक हेतु आपसी िगडा कामेशि आ हरषाक िशजमे। कीक्तषक्संह बादशाहक मददसँ िजा भेलाह। चंदा िा क्लखनाििलीक आधािपि कहैत िवि जे बह्धुघाती अजुष्ा (क्तापुकि पुत) सेहो माििल गेला। कीक्तषक्संह ििि क्संह अपुत मवि गेलाह तखन भक्सिंहक िशक हािमे शासन गेलक्ह।

ओइनिाि िशक एक शाखा अहुखन अिाइदंगा (मालदह) पक्शम बंगालमे विािजमान िवि जे अपनाके कामेशि ठाकुिकि िशज मानैत िवि। हुनक िशि किि हमिा सिगीय अतुल चह्द कुमि १९५८मे पठौने िलाह।

लक्ष्मण ठाकुि

आठम पीढीमे भेलाह कुलमन ओइनीसँ मुक्शिाबाद गेला।

संतोर (अिाइदंगा पहुँचलाह)

बोधनािायण

भोलानाि

काशीनाि

दुगापसाद

चण्डीपसाद

विशेशि

िििशि

िमेशि

हिशि

विशेशि

नवीन

कनानाि

उपेन्द्र

कनानाि

स्गीय अतुल चन्द्र कुमि (भूतपूि षिपाक्लषामेटी सेकेटी, बंगाल)
अरुण चन्द्र कुमि (पुनिका मालदह गजेक्टयिमे सेहो कनका लोकक्तक विििण भेटइत अवि।)

क्तविला भातीमे पो. हेतुकि िाक कबन्धसँ स्पष अवि जे क्तविलामे १७-१८म शताब्दी धवि ओइनिाि लोकक्त ाजिनैक्तक दक्ष ये महत्पूणष िलाह आ मुगल बादशाहत एक्ह तथ्यके मनैत िलाह। अाइदंगाक ओइनिाि लोकक्तक केत पुक्तगाषा धवि पसलि िलक्ह आ हेक्ि धवि ओ लोकक्त ाजिनैक्तक दक्ष कोणे मालदहोमे महत्पूणषबुिल जाइत िलाह।

पविक्शष -३

विदापक्तक शािली

विष्णु ठाकुि

हिक्दत्य

कमाक्दत्य

ििशि

धीिशि

गणेशि

धीिशि

जयदत

गणपक्त

विदापक्त

कमाक्दत्यक क्शालालेख:- अब्देनेत शशाक पकगाक्दते शीलक्भण क्मापते

माक्स शाणि संजके मुक्कक्ताि सितया गुिशोभने।

हािपटन संजके सुविक्दते हैहट देिी क्शाि

कमाक्दत्य सुमंक्तणेह विक्हता सौभाग्य देक्याजया।

क्मविलाया हािडीहेक्त पक्सदे देिी क्संहासन क्शालायामुत्क्रीणषस्तीक्त।

तिि क्तलकेशविक्शामिठे कमाक्दत्य नामैि कीक्तषशालायामुत्क्रीणष माक्स्त॥

विदापक्तक पूषि क्मविला िजियक पशासनमे सक्कय भाग लैत िलविक्ह जकि पमाण हमिा लोकक्स क्मक्लक्खत पशासक्तक शब्दाािलीसँ भेटइत अवि। एक्हसँ क्मविलाक पशासनक विक्भन विभागक जान सेहो होइत अवि।

पशासक्तक शब्दाािलीक सूची:-

i) साक्ध्विगक्हक

ii) िजिािलभ

iii) पाण्डागविक

iv) महािक्तषक नैबक्ध्क

v) महामतक

vi) महामतक साक्ध्विगक्हक (चण्डेशि)

vii) भाण्डागाविक

viii) सिानातविक

ix) मुदाहस्तक

x) ाजिपक्षडत

xi) सुमंक्षण

पर्विशष ४

क्षािसंह दाि िवदािपक्षके देल गेल तामपतक पक्षक्लवम:-

स्विस्त। गजि ात्याक्ष समस्त पक्रया वािजमान शीमदामेशािालिबध पसाद भिानी भिभक्तात भािन पियिण र पनाियिण महाािजाध्िाज शी माधि क्षसंह देिपादाः समि विजयनः जिलि तपाया वािसपीगामािस्तव्य सकल लोकान् भूकरषकाश समाक्षशंक्त मतमस्तु भिता गामोऽयमस्माविः सप्त क्रयावमनि जयदेि महािज पक्षडत ठकुि

शी विदािपक्षभ्यः शासनीकत्य पदतोऽतोयूयमेतेरा िचन कीियभूय करषाक्षकं कवधियािक्त लसं २९३ शाािणशुक्ष सप्तम्यागुिा। श्लोकास्तु अक्षदे लक्ष्मण सेन भूपक्ष मते िवि(3) गह(९) दय(२) क्षुत्ते।

माक्षसशाािण संजके मुक्त क्तािपकेऽािलके गुिी॥

िगित्याः सवितस्तहे गजि ात्याख्यापक्षसदेपुिि।

क्षत्सोत्साहविािदबाहुपुलकः सभ्यायमध्येसभम्॥१॥

पजाािन् पचुिािर्िपििताािभोगं नदी मातकं

सािण्यं ससाििचि विसपीनामानमासीमतः।

शी विदापक्षशमषो सुकियेििणीिसासिद विद्

िाि: शी क्षािसंह देि नपक्षागामं ददेशासनम्॥२॥

येन साहस मयेन शास्त्रणातुङ्गहिहिं पष विक्षा।
अशपक्तबलयोबर्षा वजतं गजजनाथपक्तगौऽभूजाम्॥३॥
ि पिष्य कुंभ इि कज्जल िखा स िति पद इि शैिलि ििल्ली।
यस्यकीक्तषा िकेतककात्या मलाक्तमेक्तविजतो हविणाङ॥४॥
क्दरनपक्त ििक्हनी र वधा ििक्हनी कोव्टक्मः।
पतापतरिदये समिमेक्दनी फ्लाविता॥
समस्त हविदिङना क्वकुिपाशािसः कर्म।
क्सतपणािपाण्डा जगक्तयेन लब्धं यशः॥५॥
मतङ्जिपिदः कनकदान कल्पदुम
स्तुलापुररमदुतं क्तजधनैः क्तातादाक्तातः।
अिक्तच महात्मना जगक्तयेन भूक्तभुजा
पििपिपयोक्तवध पिम मैत पातं सिः॥६॥
निपक्तकुलमाह्यः कणक्षाकािदाह्यः
पविक्यत पिमाि दानतुष ाविक्षािषि।
क्तजचवितपविती देिक्तसंहस्य पुतः
सजयक्त क्शिक्तसंहो ििनिागेह्द क्तसंहः॥७॥
गामेगहणंत्यमुक्तान् क्रमक्तानपतयोक्हह्दािऽह्ये तुरष्का
गोकोलमिता मासैः सक्हतमनुक्दनं भुज्यते ते सिधमष्।
येचैनं गामितं नपकिक्हतं पालयंक्त पतापै
स्तेरा सतक्रीक्तषगािि क्दक्श क्दक्श सुचिगीयता क्हिदहिदै॥८॥

ल.स. २९३ शाके १३२४ क्शिक्तसंह िजा भेलाह। चाविं मक्हनेक बाद विदािपक्तके विस्फी गाम दानक तामपत देलक्ह।

१३२६मे हविसंह देिं क्ताहूत िक्ड नेपालक जंगलमे गेलाह। भाला पििगनामे उमगाममे गुप्त िहिबाक हेतु एकटा पक्सद

कला िल। कामेशि पक्ाडतके बादशाहसँ िाज्य भेटलिन्ह मुदा वि्सदपुर र होएबाक काणिे ओ अंगीकाि नवि केलिन्ह। िकािजशाह भोगीशकिे िाजि देलिन्ह। भोगीशसिँ भवसिंह िाज्य बटलिन्ह। १३६०मे भोगीशि मवि गेलाह आ गणेशि िाजा भेलाह। गणेशकिे भवसिंहक पौत (वत्तपुि वसिंहक पुत) मावि देलकिन्ह। हरषा ठाकुकिे पौत िताकिक हाि सेहो एकहिमे िल । गणेशकि पुत िीवसिंह आ कीतिाषसिंह वदल्ली पहुँचलाह आ बादशाहक मदतिसँ कीतिाषसिंह िाजा भेलाह। अजुषा पुिकदत्य दोणािकि हाि मािल गेलाह।

वशािवसंह १५रिषक अविसिािमे वपताक जीतिवह िाजा भेला। देवसिंह देवकुली बसौलिन्ह (दिभंगा कचहििसिँ सबाकोस दवक्षण)। वशािवसिंहपुि (गजििपुि)क स्िापना वशािवसिंह किौलिन्ह। देवसिंहक बाद वशािवसिंह तीन रिषनौ मास िाज्य केलिन्ह। एकििि पकडाके वदल्ली गेल िलाह। अंतमे यिनिसँ पििभूत भए उतिि पहाडमे चवल गेलाह। विदापवत लवखमाके लऽ कऽ दोणािि पुिकदत्यक ओतए िहि लगलाह। वशािवसिंहक मंती चहिदकिकि पुत अमतकि पटना जाए बादशाहसँ अभयदान लऽ कऽ बििौिमि पदािमे िहिए लगलाह। लवखमा १२रिषक बाद सती भेलीह तकि बाद एक रिषपदवसंह िाज्य केलिन्ह आ तकि बाद पदवसंहक ििनी विशािस देिी १२रिषधवि। भाला पिगनामे वािसौली गाम विशािस देिीक नामपि अवि। ***विशािस देिीक बाद धीिि वसंह पवसद हदयनाियिण ततपिि िाजा भैिि वसंह हविनाियिण अववि लामे १४००मीमासक जमघट भेल िल भैििवसिंहक पुत हविनाियिण(?) भैििवसिंह बििौि पिगनामे ििआि नामक गाममे अपन िाजधानी बनौलिन्ह

परिशिष्ट ५

राजा संगाम गुप्त देरकि पंचोभ अभिलेख

(मूल हमर ‘क्सलेतट इहस्किपसहस्स आफ बिहार’मे पकाशित अछि।)

लहेरियासरायिक समीप पंचोभ गामसँ एकटा ताम्रलेख बहुत दिन पूर्वहि बाहर भेल छल जे मिथिलाक इतिहासक दृष्टिकोणसँ महत्पूर्ण कहल जा सकइयै। एहि अभिलेखमे तिथि नहि अछि परञ्च लिपिक आधारपर एकरा १३म शताब्दीमे लिखल जा सकइयै। इ अभिलेख माण्डलिक राजा संगामगुप्तक थिक। एहिमे निम्नलिखित ६ राजाक उल्लेख अछि (संभव जे इ लोकनि उत्तर गुप्त शिसँ सम्बन्धित होथि।)

i) यजेश गुप्त

ii) दामोदर गुप्त

iii) देवगुप्त

iv) राजादित्य गुप्त

v) कृष्णगुप्त

vi) संगामगुप्त

एहिमे उपर्युक्त मात तीनटाके राजा कहल गेल छैक। संगाम गुप्त स्वयं “परमभट्टारक महाराजाधिराज परमेश्वर महामाण्डलिक” आदि पदवीसँ विभूषित छथि। इ सभ कोनो सोमवंशी अर्जुनक शिज कहल गेल छथि। भऽ सकैत अछि जे इ समाट हर्षवर्द्धनक राज्यपाल अर्जुन (जे तिरहूतक राज्यपाल छलाह)क शिज होथि। किछु इतिहासकार एहिमे विशेष सैनिक बलान मूंगेर जिलाक जयनगरसँ करैत छथि जे हमरा बुझि ने

असि भाविक अवि आ एक्ह शिके पाल अिि सेनशिक सामंत माण्डक्लक क्सद कबिाक चेष । कित िवि। इ क्नणषा तथ्यपूणष नक्ह बुि ना जाइत अवि काणि ताक्ह क्दनमे क्मवि लामे कणाट शिक शासन सक्षिाक्तमान िल। दभिंगा (आि मधुबनी क्जला)मे सेहो जयनगि नामक एकटा पक्सद ऐक्तहाक्सक सिान अवि। हमिि बुि ने संगाम देि अिश्ये एक्हठाम कणाट शिक महामाण्डक्लक िहल होएताह आ पत्री पबक्न्धक पक्हने इ तामपत पकाक्शत भेल होएत काणि एहुमे कोलाक्न्च बाह णके दान देबाक क्यसिि देखबामे अिइयै। पशासक्नक शब्दािलीक दक्ष ये सेहो इ अक्भलेख महतिपूणष मानल जाइत अवि। पशासक्नक शब्दािलीक सूची हम क्मवि लाक पशासक्नक इक्तहासक कममे क्लक्ख चुकल िि तै एक्हठाम दोहिएब उक्चत नक्ह बुि ना जाइत अवि। संगाम गुप्तक सम्बक्न्ध जे मंतव्य पक्हलुक विदान लोकक्न देने िवि से हमिि माह्य नक्ह अवि आ हमि अपन विचाि इ अवि जे इ लोकक्न क्मवि लाक िलाह आ एक्हठामक कोनो शासकक महामाण्डक्लक िहल हेताह।

पक्िशष्ट ७

क्मवि लासँ पाप्त कक्िु क्हक्न्दू आ मुक्स्लम अक्भलेख

(१) अशोकक पंचम स्तंभलेख (िमपुििि : चम्पाणि)

१. देिनं क्पये क्पयदक्स लाज हेि आह। सडडीसक्त सावस क्सतेनमे इमाक्न क्ा जाताक्न अिध्याक्नकयाक्न। सेयि २. सुके सािलक अलुने चकिके हँसे नंदीमुखे गेलाहे जतूक अंबाक क्पक्लक दुगले अनक्ष्ठक मि िदियिके ३. गंगा पुपुटके संकुज मि कफट सेयके पंन ससे क्समले संडके ओक क्पंडे पलसते सेन कपोते ४.

गाम कपोते सबे चतुपदे ये पटिभोगं नो एतिन च खादयाति। अजका नाति एलका च सूकली च गभिनीं ५. पाय मीना िअधिय पोतके च काति आसं मासिके। वधिय कुकुटे नो कट वियो। तुसे सजी िनो िपयति वियो। ६. दाबे अनठाये िविहिसाये िनो िपयितवियो। जीनि जीं नो पुसितवियो। तीसू चातुं मासु कास्थं पुनंमासियं ७. कात कसिाति चसुदिसं पंनडसं पटिपदं धुिये च अनुपोसं मं अधियो नोवा विकेतविये। एताति येि ८. कसिाति नाग निकि केटि भोगति याति अंनाकाया जीकिका याति नोहं तवियाति। अठमि पखाये चाि दसाये ९. पंतऽसाय कासा ये पुनासिुने तीसु चातुं मासीसु सुकसिाये गोने नो कलाखेतविये। अजके एलके सूकले १०. एिवा अंने नीलखियति नो नीलखित वियो। कासाय पुना िसिुने चातुं मास पखाय असिस गोनस ११. लखने नो कट वियो। यािसडडीसति िसाव कसतेनमे एताये अंतकलकाये पंन िसति बह्धन मोखाति कयति।

(२) अशोकक रषम स्तम्भ लेख (मिपुिि : चम्पाणि)

१. देविनं वाये वायदसि लाज हेि आह। दुिऽस िसाव कसतेन मेघंमकलवा कलखावात लोकस कत सुखाये। से तं अपहट २. तं तं धंम बद्ध पापोि। हेि लोकस कत सुखे वा पटिखाति अि इयं नातिसु हेि पतया संनेसु हेि अपक ठेसु। कंम काति ३. सुखं आि हामी वा ताि च विदहाति। हेमेि सिखायेरु पटिखावं। सिषासंग वामे पूकजत विधाय पूजाय। ए चुइयं। ४. अतन पचूप गमने से मे मोखयमुते। सडडीसति िसाव कसतेनमे इयं धंम कलवा कलखावाति।

(३) िशालीसँ पाप्त किि महतपूणषकशलालेख

१. ध्रुविस्वामिनीक मुद्रा अभिलेखे महाराजाधिराज श्री चन्द्रगुप्त पत्नी श्री गोविन्द गुप्त माता श्री ध्रुविस्वामिनी (एकरूपि शीघ्रहि हमर्लेख प्रकाशित भए रहल अछि।) २. घटोत्कच गुप्तस्य।

(४) संघ श्रेणी एवि राजकर्मचारी लोकनिक मुद्रा लेख

१. कुमारामात्याधिकरणस्य। २.युवराजपादीय कुमारामात्याधिकरण। ३. श्रेष्ठि सार्थवाहकुलिकनिगम। ४.श्रीयुवराजभट्टारकपादीय कुमारामात्यअधिकरणस्य ५. श्रीपरमभट्टारकपादीय कुमारामात्याधिकरण। ६. युवराजभट्टारकपादीय......काधिकरणस्य ७. युवराजभट्टारकपादीय बालाधिकरणस्य ८. श्रीरणभाण्डागाराधिकरणस्य ९. दण्डपाशाधिकरणस्य १०. महाप्रतिहारा तरवर विनयशूरस्य ११. महादण्डनायक अग्निगुप्तस्य १२. भटाश्वपति यज्ञवत्सस्य १३. तीरभुक्त्यौपरिकाधिकरणस्य १४. तीरभुक्तौ विनयस्थितिस्थापकाधिकरणस्य १५. तीरि कुमारामात्याधिकरणस्य १६. उदानकूपे परिषदः १७. वैशाल्याधिष्ठानाधिकरण १८. वैशाल्यामरप्रकृतिकुटुम्बिनाम् १९. वैशाल वरियाः २०. श्रेष्ठि कुलिकनिगम् २१. वैशाली अनुटकारि सप्यानक २२. सुजातस्य २३. आमात्क्रेशरि २४. श्रीविष्णुपाद स्वामीनारायण २५. जयत्यानंतो अभनि स्वाम्बा २६. जितं भगवतोनंतस्यनन्देशारि स्वामिनः २७. नमः पशुपतेः २८. विंदास २९. भगवतादित्यस्य ३०. राजोमहाक्षत्रपस्य स्वामीरुद्रसिंहस्य दुहितु राजोमहाक्षत्रपस्य स्वामीरुद्रसेनस्य भवाह्या महा देव्या प्रभुदमायाः। ३१. देयधर्मोयम् प्रवर महायानायिनः करणिक उच्छाह माणकस्य सुतस्य यदत्रपुण्यं तदस्ति चर्योपाध्याय मातापितोरात्मनश्च पूर्वगमं कृत्वा सकल सत्वराशि

ितजानापियैक्त। ३२. कुमामित्याव्यकणिश सर्वषि वरिये बाह णादपुिस्ससािन् ितषानाभर्वनिश ३३. शीसामंत......वरियपक्तांसाव्यकणािन्......क्याहािाि जनपदान बोधयत्यस्तु ओ वक्तितम्। ३४. शी लोकनासिय ३५. ल.स. २३९ शोधािली शी चण्डेशासिय कीक्तष

एक्हमे लक्मण समित् देल अर्वि ताक्ह आधापिि एकिा महामतक चण्डेशकि अक्मलेख माक्त सकैिी।

(५) कक्ि क्दन पूिषिमुजफ्फपुि क्जलातगक्ष कटिा िनासँ पाचम िठम शताब्दीक एकटा तामलेख भेटल अर्वि जे गुप्तकालीन विक आओि जाक्हमे तीिभुक्तिक उल्लेखक संगक्ह संग चामुण्डा वरियक उल्लेख सेहो अर्वि। इ अक्मलेख आओि चम्पाणिसँ पाप्त तीन चार्विटा तामलेख अपकाक्शत अर्वि आओि इ पटना पमण्डलक विदान आयुतत शी शीधि िसुदेि सोहनीक संग िक्छ्ह। आशा अर्वि ज ओ शीघे एक्ह सभ अक्मलेखके पकाक्शत कििताह। आब इ तामलेख एक्मगाक्फया इक्णडकाक िल्युम ३५मे पकाक्शत भऽ चुकल अर्वि। ओक्हठाम मोक्तहािसँ पाप्त दूटा आि अक्मलेख पकाक्शत अर्वि।

(६) गुप्तकालीन एकटा मुदा (माक्टक) हमिा बेगूसिायिमे पाप्त भेल िल जाक्हमे एकपीठपि गुप्ताक्षिमे लेख अर्वि आओि दोसि पीठपि क्मर्विलाक्षिमे आओि लं.सं.क उल्लेख सेहो अर्वि। (मुदाक गुप्ताक्षि िला लेख) सुहमाकस्य सुहमाकस्य (क्मर्विलाक्षि िला लेख) सं. ६७ दौ पौशक्दने नगम केदतम् दभम् शाध्येच्येकेः केशिा पदे इक्त इ मुदा हमिा लग अर्वि।

एकि अक्तर्वितत बुदमंत ये धम्महेतु पभिा......आक्द क्लखल

ढेकि ढेि मूक्तषकर्विलामे भेटइत अवि।

(७) पालकालीन क्वर्विलाक क्वशालालेख

(i) भागलपुि कौपफ्लिेटमे तीभिुक्तत आओि कक विरियक उल्लेख अवि आओि ओक्हमे कहल गेल अवि जे तीभिुक्ततमे हजाि क्वशामिक्व्दकि क्वमाण भेल िलि, (ii) इमादपुि (मुजफ्फ़ि पुि क्वजलासँ पाप्त) अक्वभलेख। मक्हपाल पिमिक अक्वभलेख ॐ शीमान मक्हपाल देिि जिसम् ४८ ज्येष क्वदने सुकलपके २ आलै चकोऽवि माहिसुित साक्ह देधिम्मष़ (iii) िनगािि (सहिसा)सँ पाप्त विगिहपाल ततीयक ताम अक्वभलेख इ सभटा अक्वभलेख हमिि 'सेलतट इह्सक्वकपसह्स आफ क्वबहािमे िपल अवि।

(पाक्त २४): काञ्चनपुि समािसीता शीमञय स्कहन्ध िििति पिमि सौगतो महािजािक्वधिाजि शीमनयपालदेि पादानुध्यातः पिमेशिः पिमि भटािको २५. महािजािक्वधिाजिः शीविगिहपाल देिः कुशली। तीभिुततौ हौदेय िरिक्वयक िसुकाितात। यिपिक्तत्या पंचशक्त काशे। २६. समुपगता शेर....३७. शाक्वण्डल सगोताय। ३८. शाक्वण्डल्याक्वसत देिलि पिििय निक्वसंह स बह चाविणे। िह्दोग शाखाध्यायक्वने। मीमासा व्याकिणि तकष विदाविदे। ३९. कोलाञ्च विक्वनषताय। इटाहाक िसिक्तव्याया योग सििमी पौताय। तुंग पुताय। शी घण्टुक शमषो। विरुिति संकात्याम्। विक्वधिति्। गं। ४०. गायाम् स्नाति शासनी कत्य पदतास्मािक्वभः।

(iv) नौलागढ (बेगूसाियि)सँ पाप्त विगिहपाल ततीयक अक्वभलेख क्वसदम्

शी विगिहपाल देिि जिये समिति् २४ कक्वमक्लया शौक्वण्डक महामती

दुक्हता धाम्मवजपल्या आशोककया कार्विता॥

(v) नौलागढसँ पाप्त दोसि अवभलेख

नमोधमाय......शदा कारण्य संभेदिदान मस्तुम माये पुण्यधाि। वभक्त भुजावमतयमायधतुमक। िट (िक्ह)...आशय मव्हिता। यद िध (च) सिहा (or शदा) कौदोव्यंता....भा..िमद...दमल व्यावक्सिताह....शदाया भाि (च)...यद् गहाव्द (धै)....याद दक....वाहाि...एव्ह अवभलेखसँ संव्दग्ध रपे इ बुिना जाइत अवि जे पालकालमे मर्विलामे नौलागढ अंचलमे कोनो एकटा बौद वाहाि अिश्य िल।

अह्याह्य अवभलेख

पंचोभ तामलेखक काि अंश

पाक्त १. शी संगामगुप्तः २. ॐ सविस्तः पिम भटािक महािजावधािज पिमेशाि, पिममाहेशाि, िरभधिज, सोमाियजाजुषा िशोन जयपुि ३. पिमेशाि महामाण्डवलक शीिजाव्दत्य गुप्तदेि पादानुध्यात िजपुत शीकषणगुप्त सुत पिमभटािक महािजावधािज ४. पिमेशाि पिममाहेशाि िरभधिज सोमाह्ियजाज्जुषा िशोदि जयपुि पिमेशाि महामाण्डवलक शीमत् संगामगुप्त देिपाद पिदिषान विजयािज्ये ५. सप्तदश समितसिि कावत्तक कषण निम्या वति शी मज्जयस्कह्धािित् अयदेि महािजावधािज महामाण्डवलक शीमत् संगामगुप्त देिविजयी....६.७.महासाव्धिविगव्हक, महाव्यूहपक्त महावधकार्विक, महामुदावधकार्विक महामतक, महापीलुपक्त, महासाधक्तक, महाक्पटवलक, महापक्ताहाि, महाधमावधकिणक, महाकिणाध्यक, ८. िक्तषैबव्धक, महाकटुक, महौक्ति क, तासक्तक, महादण्डनायक, महादाक्तक, महापंचकुवलक, महासामंतािणक,

महाशेवा दाक्क, धूक्लदाक्क, घटपाल, खण्डपाल, नापिक्त, गुल्मपक्त, १. नौ बलव्यापत गोमक्हर डिबाध्यक ाजिपादोपजीविनी......११. ....समस्तपीडोपकि विज्जवो अचाटभट पिरो महतानुगहेण

एक्ह अवमलेखमे शासन सम्बन्धी बहुतो एहेन शब्दक उल्लेख भेल अवि जकि विश्लेरण एखनो धवि फविािके नक्ह भेल अवि। इ सभ अवमलेख हमि *Selected Inscriptions Of Bihar* मे पकाश्वात अवि।

आसीक (मक्हआहीक) पाि लेख

जातो िशे विलि पंचावमधाने धमाध्यक्षे दिषान भिशात्। देिस्यागे देयिवा धजिागा र ढँ कतिाऽसि ापिय दैन तेयम्। एक्हमे नैयाव्यक दिषानक उल्लेख भेल अवि।

वालकेशिगिढक अवमलेख

अबदेनेत शशाकपक गवाते शी लक्ष्मणावमपतेमावस शािण संजके मुक्त क्ताि तिायागुर उशोभने। हािपतन संजके सुबाक्दते हैहटदेि क्शाि कमावदत्य सुमंविशेह विक्हता सौभाग्य देव्याजा ___

एक्ह अवमलेखमे ािनी सौभाग्य देि, मंती कमावदत्यक उल्लेख संगक्ह हैहट भगितीक उल्लेख सेहो भेल अवि।

खोजपुकि अवमलेख

एक महतिपूणष अवमलेख खोजपुकि दुगाक मूक्तािष अवि जाक्हमे ल.स.१४७क उल्लेख भेल अवि आ ओिि मदनकपुत सूयषकि नाम सेहो उक्ल्लवखत अवि।

कहदाहाक अवमलेख

कहदाहा अवमलेखक उल्लेख पूषिह ाजिनैक्ताक इक्ताहासमे भए

चुकल अछि। स्मरणीय अछि जे एहि अभिलेखमे 'विलिपिंचकुलोद्भुत' शब्द व्यहित अछि जे दिशानक आसीक अभिलेखमे अछि।

भगीरथिपुरिक अभिलेख

पाक्त १. स्फुराहर्विनारायिण कक्षापतेगाथे: क्षाभता बधूनषक्तमण्डली। मक्हतामि भूमीपते: २. क्तजोतम सुखपदानपक्त कंसनारायिण पर्ाीजिननीमुदा मठमधीकति सुह्मिदम्। ३. दानैय्या दलयाम्बभूर्ि जगता दावदियमत्युत्कटं कीत्याया: सुह्दि तानि् लोकाशकायिुतान। ४. कञ्ज्योच्चैर्विषायानयाश शिता नीतोयया बाह्भ्यािः सेयं वशिर्विलिकण्जोजजालि गुणगामा मठं क्तमषे। ५. दिह्भिहानेत क्वक्हते लक्ष्मणस्य नपतेम्मष तेब्दके। विशिर्विशु तगुणागुणालयं देतिालय ममुषुदाऽकाति। ६. कविता माधा सुकपि कीक्तदेव्याप सुधम्बुध स्फीता। क्ताभुनि भुनिा भोगे: विलसतु कल्याहृत्त पयष्ठतम्।। ७. देर्ाी देलियक्तयममु कार्यािमास कर्च भतत्या नततं क्तनमामिक्त.....तता। यैरा शेरे जगक्त जागतीनाि नायस्य योरा भूरा भूता विविधि वधिया रपनारायिणस्य। ८. धह्ाी का कीक्तषिया कुलधि कविता कीतषीयानुमत्या लक्ष्मीप सा काक्ता लक्ष्मीधामिुपगता साधािधिनाया। सूनुक्जयायान् यदीयो यानिपक्य भयाधाकस्त्तीभिुततौ ािजा ािजाक्याजिप समपि....सप कंसनारायिणौ सौ.....शीमदनुमक्तदेर्ाी नामाजयापन्नविलाक ािजनैक्तक एर्ि सास्क्ृक्तक इक्तहासक दक्षा कोणसँ इ अभिलेख बडड महतपूिणष अछि।

शीनगरि (मधेपुरा)क अभिलेख

मगधिजि योगी ७०० इयह अवमलेख एकटा अह्धाठाडीमे सेहो अवि।

िािटपुि (सहसिा)क अवमलेख

शीमह्माहेशर्िाि िलिब्ध सक्कया विाजिमान बुदेश िशस्य सदा चह्दाजि शीमत् सवषिसंहदेि विजयी

लदहोद वषिणुमूक्ताषक पादुका लेख

(एखनधवि अपकावशत िलि) शीािमनाि ािजह्यो वषिणुप सेिकि सेिकप सर्िाि देिि तलयो वषिणुनाम कवषियक्त।

कवविलामे एखनो असंख्य लेख सब चारकात विवडआएल पडल अवि तैँ पत्येक मैविलक इ कतषय होइि जे ओ लोकवन एवह वदस ध्यान दऽ ओकिि संगह कविि। जे वशलालेख सब ािजनैवतक इवाहासािला खण्डमे िवा चुकल िलि से एवहठाम नवह देल गेल अवि।

१० कवविलासँ पाप्त किाि मुवस्लम-अवमलेख

(i) महेशािाि (बेगूसिाय)सँ पाप्त १२०९ई. एकटा अिबी वशलालेख १६५५मे पाप्त भेल जे भण्डािकिि शोधसंसिािन (१९५६)मे पकवशत भेल अवि। एवहमे भिनि बनेबाक उल्लेख अवि। इ लेख बंगाल सुलतान रकबुदीन कैकाउसक समय विक। (ii) तुगलककालीन िदीिनि (चम्पािणि) अवमलेख १. तमाम शुद इन हलकात-उल-अतताि-उल अकर्िि २. दिि अहाद इसहान शाह-इ-आवदल शाह मुहम्मद ३. वान तुगलक शाह लजलामुकोहुब दौलतहु ४. अनाम बजैल इज्जुद दौलत िदीन ५. काजी-इ-मुहिि खासब वजकरल्लाह बकिि ६. िाएन िह्दाह महमुद विनुयुसुफ अलमुलकाि ९. विष्टुम मह-इ-िकवाउल अबलि सनत सब ब अिबीनि सब मयत

दीनि अभिलेख बडड महत्वपूर्ण अछि। कहल्दू लोकनि बहुत दिनधरि एकरा ‘भगतिनक चरणापाद’ कहि पूजा करैत छथि। इ शिलालेख महमुद तुगलक कालक थिक (हिजरी ७४७-१३४६ ई.) एकरासँ स्पष्ट रूपे पतीत होइछ जे १३४६मे चम्पारण धरि तुगलक शासनक पमाण भेटइयै।

दरभंगासँ प्राप्त मुहम्मद तुगलकक अभिलेख

कल्लललाह ओतलमनजा वलिहसनत फलहु अश अम्सलह बिन मस्जिद अलमुजाहिद फी साबीकल्लल्लाह मुहम्मद बिन अस-सुल्तान अस सइद इस शहीद इल गाजी वायासुदुनिया दीन अनरल्लाह बुरहिानहु इज सोयलत अन तारिख-इ-बेन एही फकुल हरिल मस्जिद अल अतस फिसानत इ वसत ब इशरीन बसबा मयात अल हिजाविया उन नबुबप ७२६-इ अभिलेख मुल्ला तकियाक बयाजमे सुरक्षित अछि आओर पटनाक मासिक पत्रिका मे छपल छल (१९४६ ई.मे)। अभिलेखसँ इ पतीत होइछ जे महम्मद तुगलकक आदेशानुसार दरभंगामे एकटा विशाल मस्जिद हिजरी ७२६मे बनल छल। हरिसिंहदेव पराजित भऽ चुकल छलाह। तुगलक-कालीन दूटा सिक्का सेहो भेटल अछि जाहिपर तुगलकपुर उत्कीर्ण कएल अछि।

दरभंगासँ प्राप्त इब्राहिमशाह शार्कीक अभिलेख

कलन नबिया सल्लालाहु अलैहासिल्लम मम बिन मस्जिद अल्लाह बिनल्लाह लहु तिन फिल जनत ही बनि हजल मस्जिद फी जमनल इमाम नायब-उलखलीफा अमीरल मुमीनीन अबुल फतह इब्राहिम शाह अस सुलतान खलदह खिलाफत तहु सनत खस समन मयत ८०५-इ. अभिलेख बहुत महत्वपूर्णअछि कारण (८०५-

१४०२-३इ.) इबाक्हमशाहक लेख क्मविलाक केह्दमे भेटल अवि आओि एक्हसँ पमाक्पात होइि जे शकी लोकक्त दभिंगापि अक्धकाि पाप्त कएने िलाह-ओक्ह िरिषदभिंगा बाटे इबाक्हमशाह बंगाल जाइत िलाह आओि हुनक उदेश्य िल क्शाक्सहके पािस्त कबि काणि क्शाक्संह बंगालक िजा गणेशक साहाय्य कऽ हिल िलविह्ह। एक्ह सम्बह्धमे पो. अस्कीिक लेख *Bengal Past and Present* मे िपल अवि।

बंगाल सुलतान नसीिशाहक अक्भलेख

(बेगूसिाय-मक्टहानीसँ पाप्त)

क्बसक्मल्लाह इि हिमान दूि क्हम नसर न मीनल्लाह ब फि्िन किीब। हजल मक्सजद अल जमायउल मुअज्जम नसीिशिाह अस सुलतान खल्लल दल्लह िा मुलकहु ि सलहृतहु।

इ ओक्ह नसीिशिाहक अक्भलेख विक जे क्मविलाक ओइनिािि शिक अक्हतम शासकके पिाक्जत कएने िलाह।

इहो अक्भलेख आि ‘‘पक्सयन आ अिक्बक इह्सक्कपसहृस आफ क्बहाि’’मे िपल अवि।

पविक्शष्ट ८

१२३४-३६ इ.क मध्य क्तविसँ एक याती आएल िलाह जकक भाितीय नाम धमक्षािमी िलक्ह। ओ क्ताहितमे कणाट िजा िमक्संहदेिसँ भेट कएने िलाह आओि िमक्संहदेिक कालीन क्मविलाक बहुत सुह्दि िणषा एक्हमे अवि। ‘धमक्षािमीक जीिनी’क सम्पादन पक्सद र सी विदान डा. जी. िायविक कहने विि आओि

एकि पकाशन पटना क्सि त काशी पसाद जायसिलि शोध संसिानिसँ भेल अवि। हम ओक्ह पोिमिसँ कक्ि ओहन अंश एक्हठाम दऽ हिल ि जाक्हसँ तत्कालीन क्मवि लापि पकाश पडैपि

P. 58.- In this Country (Tirhut) there was a town called PA.-TA, which had some 600,000 houses and was surrounded by seven walls…..outside of the town walls stood the Raja's palace which had eleven large gates and was surrounded by twentyone ditches filled with water and rows of trees. There were three gates facing each direction, East, West and South, and two gates facing North………guards were stationed, more than ten archers at each bridge. These protective measures were due to the fear of the Turushkas……who during the year had led an army but failed to reach it. It was also said that there were three men experts in swordsmanship. The Raja owned a she-elephent. P. 60___Ma-hes (मक्हंसक उल्लेख) *non-Budddhist kingdom of Tirhut. P. 61-uninhabited border of Vaisali. There exists a miraculous stone image of the Arya Tara with her head and body turned towards the left, foot placed flat, and the right foot turned side ways the right head in the*

varmudra and the left hand holding the symbol by the Three Jewels in front of the heart… ….they were told that the inhabitants were in a state of great commotion and panickstriken because of rumours of Turushka troops. P. 61- When they had reached the Vaisali, all the inhabitants had fled at dawn from fear of the Turushka soldiery … ….the soldiery left for western India P.98- According to Dharmaswami one pana equalled to eighty Cowries… …At that time he was in possession of an extraordinary manuscript.

P. 99-….the owner of the house stole the book-fell ill in Trihut (on his return Journey)- The tantric treated me-and I did not die…..The Tantric appears to have been a manifestation of the four. Armed Protector.

P.100… …he was told that the Raja of the Pata city was coming to the street corner, The Raja was accompanied by a crowd of drummers and dancers with banners, buntings, brandishing fans and sounding conches and various musical instruments All the house tops and street corners were ever hung with silk trappings. The Raja named Ramasimha was coming riding on a she

elephant, sitting on a throne adorned with precious stones and furnished with an ornamented curtain. The Dharmaswamin received an invitation from the Minisiter who said "please come! If you do not come in person the Raja will punish you. The Raja comes to the street corner only once a year, and there is a pageant. The minister sent a sedan chair (Doli) for the Dharamaswamin, who went to meet the Raja. The Dharamaswamin greeted the Raja in Sanskrit slokas and the Raja was very much pleased and presented the Dharamswamin with some gold, a roll of cloth, numerous medicines, rice, and many excellent offerings and reauested Dharamswamin to become his chaplain but Dharamswamin replied that it was improper for him, a Buddhist, to become the Guru of a non-Buddhist. The Raja accepted it, and said "well stay here for some days". The Dharamswamin said that the Raja honourd him with mumerous requisites, P.101- Among the large gathering of people in the town of PA-TA in Tirhut, Dharamswamin met with some Nepalese whom he had met previously.

एहि पोथीसँ मिथिलाक सांस्कृतिक जीवनपर बडड प्रकाश पडइत अछि। एहि पोथीमे जे ‘धर्मशास्त्र’क उल्लेख अछि सैह आधुनिक मैथिलीक मूल थिक।

शिल्पशास्त्र, चिकित्सा, दर्शन, व्याकरण, न्याय, मण्डल इत्यादिक अध्ययन ओहि युगमे होइत छल।

कालिदास सम्बन्धी किंवदन्ती एहि पोथीमे अछि आओर चन्द्रकीर्ति आओर चन्द्रगोमिनक शास्त्रार्थक चर्चा सेहो। पटके डा. अल्तेकर विसमगिगढ मानने छथि जे हमरा मान्य अछि। एहि आधारपर आब जँ ओतए उत्खनन होअए तँ बडड लाभदायक होएत।

साहित्यमे तान्त्रिक चर्चा अछि। एक चर्चितहीन एवं हठी स्त्रीक उल्लेख सेहो अछि।

एहिसँ लक्ष्मणसेन समय सम्बन्धी अध्ययनमे साहाय्य भेटइत अछि। मिथिलामे कुसियारक खेती खूब होइत छल। काली मंदिरक समक बलिदानक प्रथा छल। हाथीदाँतक प्रथा छल आओर अछूत लोकनि अपन कान नहि छिदबइत छलाह। अछूतसँ देखला पर छूअल अन पैघ वर्णक लोक नहि खाइत छलाह। पान खेबाक प्रथा छल आओर मैथिल लोकनि ताम्बुल विन्यासमे प्रवीण छलाह। खुचिन डोकाक चून बनइत छल आओर ओहिमे कैक प्रकारक सुगन्धित मशाला सेहो मिलाओल जाइत छल। भीजल कपडामे पान लगाके राखल जाइत छल। दात रंगबाक हेतु सुतीक व्यवहार होइत छल। टाकाक प्रचलन छल आओर एक पण ७०कौडीक बराबर होइत छल।

परिशिष्ट ९

पाकतपैगलम् आ मैथिली

मैवि ली भारा आओि साहित्यक सि ान भाितीय भारा मध्य महत पूणष िैक। कलकत्ताक मैवि ली संघ दाि पकाशित विदापक्त-पि षिअंकक १९६१क अंकमे हमि एक कबन्ध पकाशित भेल अवि; पाक् विदापक्त कालीन मैवि ली। जाहिमे हम मैवि लीक पाचीनतापि अपन विचाि संकेपमे ि खिने िी तै ओकि एतए दोहिएब उकित नहि बुि ना जाइत अवि। मैवि ली कलपक पाचीनताक सबसँ पैघ पमाण इएह जे 'लकलत विस्ति'मे एकि उल्लेख अवि; आदित्यसेन (सातम शताबद)क अवभलेख एहि कलपमे अवि, धमषसि ामीन एकि उल्लेख ि ितिषकलपक नामे कएने िवि; ल. स. ६९क एक माटक मुदापि कमवि लाकि कलखल भेटल अवि; खोजपुि (दि भंगा)सँ ल. सं. १४७क। एकि अकतवि तित कमवि लासँ जतेक अवभलेख आओि कसतका लेख भेटल अवि सब मैवि ली कलपमे अवि- तैँ एकि िैजाकनक अध्ययनक आिश्यकता। कमतािि आचायषपि मिानहद शास्त्री मैवि ली कलपक िैजाकनक अध्ययन कमवि लाकवहि कि पष्ठक माध्यमसँ पस्तुत कएने िवि जे स्तुत्य अवि। अकबि कालीन कमवि लाकि कि एक अवभलेख एखन हालहिमे गोडडा (संताल पि िगना)क एक मकन्दिसँ पाप्त भेल अवि आओि ओकि पकतकलप काशीपसाद जायिाल संसि ान, पटनामे सुिकक्त अवि।

कलपक संगहि मैवि ली भारा सेहो बडड पचीन अवि आओि कसद लोककक भारा एकि सबसँ पैघ पमाणि विक। कबबती बौदधमषक पकसद रसी विदान िकसलज्यु *(Wassilijeu)*

अपन एक लेखमे एकठाम लिखने छथि जे प्रसिद्ध कवि लोकनि अपन-अपन मातृभाषामे गीत लिखने छथि। साहित्य प्रकाशित रूपे ज्योतिरीश्वरकेँ पूर्वहि एक प्रकाशित शैलीपर पहुँच चुकल छल अछि तैं लोकक मन रीतिकाव्य आ गीतिकाव्य सन महान् गद्यक रचना तेँ हठात् नहि भऽ गेल। डा. जयकान्त मिश्रक *History of Maithili Literature* क प्रथम भागमे बहुतो एहेन विद्वान आओर ग्रंथ अछि जकर उल्लेख नहि भेल अछि आओर जे मूल रूपसँ मैथिलीक अंग थिक। हमर विश्वास अछि जे ओ अपन भविष्यक संस्करणमे एहि सबहक अपना पोथीमे अवश्य स्थान देताह। 'प्राकृत-पैंगलम्'क उल्लेख डा. मिश्र कतहु नहि कएने छथि आ ने कृष्णदत्त मैथिलक। (कृष्णदत्त मैथिलपर देखू हमर लेख जे *Journal of the Bihar Research Society* मे छपल अछि।) बंगला भाषाक सुप्रसिद्ध विद्वान आओर प्रसिद्ध भाषा विद्वान डा. श्रीकुमार बनर्जी *History of Maithili Literature* क आलोचना करैत सेहो अइकमीक उल्लेख कएने छथि (द्रष्टव्य *Jouranl of the Asiatic Society of Bengal XVI Letters-p.* २६९)। प्राकृतपैंगलमक संबन्धमे इ स्मरण राखब आवश्यक जे एकर भाषा प्रायः ओएह थिक जे विद्यापतिक कीर्तिलता आओर कीर्तिपताकाक भाषा अछि तथा एहि ग्रंथक रचनामे (गीत सभक्हक संग्रह पूर्ण भातिमे भेल छल।) महामंत्री चण्डेश्वरक प्रशस्तिमे बनाओल दूटा गीत सेहो अछि आओर एकर बनौनिहार छलाह चण्डेश्वरक अधीनस्थ सामन्त 'हरिब्रह्म'। 'प्राकृतपैंगलम'मे कतोक शताब्दीक भाषाक परिचय भेटइत अछि आओर ओहिमे जतेक जे प्रयोग भेल। अछि से मूलतः मैथिली प्रयोगसँ मिलैत-जुलैत

अवि । 'वसद गान'पर जतेक लोक सब मानिपच्यी कएने वि तति जँ पाकतपैगलममे एहुखन कएल जाए तँ मैविलीक बडड उपकार होएत। डा. सुभद र्ा कबीकिे मैविल वसद कबिाक बीडा तँ उठौलवह (देखु *Journal of the Bihar University*) (हुनक लेख) मुदा 'पाकत-पैगलम्' जे शुद मैविलीक सितु वि क, तावहपर कोनो विशिष्ट ध्यान नवह देलवह। एकर पमाण एवहसँ बुिना जाइत अवि जे ओ अपन पवसद पोिी *Formation of Maithili Language* मे एवह गह कि बडड कम चचषकएने वि ।

डा. सुभद र्ाक पोिीसँ कि ु अंश हम पाठकक हेतु उदत् कऽ हिल िीप

प.41-*The Prakritpainglam gives an example to several metres and verses which may be said to have been composed in proto-Maithili..... there is nothing in them that may prevent them being called Maithili of an early period…..*

प.4२-*The language of the Charyas Sarvananda, Prakritpainglam, Kirtilata and Kirtipataka represent Maithili of the oldest period in as much as it preserves some of the Apabhramsa characteristics'.*

पोिीक दाम ततेक वि वह जे केयो साधारण मैविल पाठक एकरा कीनकए नवह पढ सकैि । एतबा कवहतो इ पाकतपैगलमपर विशेर ध्यान नवह देने वि । एवह पोिीक आलोचना जे हालवहमे िपल अवि लण्डनमे से उतसाहदिक नवह कहल जा सकैि । भारा

आओर अहृमाहृ समस्याक अध्ययनक हेतु आओर देखू िहूलजीक ्ककहदी काव्य-धाि जाकहमे एक्क सभ िस्तुक विशद् विश्लेरण भेल अवि। ‘पाकतपैगलम’मे कमविलाक इक्तहासक सम्बहधी सेहो बहुत सटीक बात सब क्लखल अवि (देखू-हमि लेख- *Prakrtapainglam an important source for the study of the History of Mithila)* । ‘पाकत-पैगलम’क दूटा संस्कि ण हमि बूि ल अवि (i) सी. एम. घोर दाि सम्पाक्कदत एि विक्ललयोविका इक्कडका सीिीज, कलकतासँ पकाक्शत १९०२ई.मे पाकत-पैगलम् आओर (ii) एम्हि हालक्हमे क्कहदीमे एकि एक संस्कि ण क्कदल्लीसँ पकाक्शत भेल अवि।

एक्क सम्बहधमे हर्विि कोि डिक ‘अपभंश साक्कहत्य’क अध्ययन आश्यिक बुि ना जाइत अवि। ‘पाकतपैगलम्’पि पो. एस. एन, घोरालक बहुतो लेख अंगेजीमे भाितिरिक विक्मन शोधपक्तकामे पकाक्शत भेल िक्क्ह। एक्कठाम ‘पाकतपैगलम्’सँ हम िडिेक ओहन शब्दक संचय कएने िी जकि रप शुद मैविलीक अवि एक्क हेतु जे केओ १४म शताब्दक मैविली शब्द देखए चाहवि से डा. उमेश कमशक लेख *JBORS-XIV* पष्ठ २६६-२७३मे देक्ख सकइत िवि। हम अपन ‘पाकत-विदापक्त’ िला लेखक इ एकटा पद सेहो पाकतपैगलमसँ देने िी जाक्हसँ क्सद होइि जे इ मैविली विक। सिनाभािक काि ण एकि विश्लेरण एक्कठाम संभि नक्क।

पिविक्शष्ट १०

कमविलाक पाचीन सीमा जनबाि शोत

(i) कविलासपि योगीन्द्रप सम्यग् ध्याति बीन मुनीन्। यक्समन देशे मगप कषणस्तक्समन् धमान् कबोधयत् (याजल्क्तयसमक्त-आचाि १२)
(ii) डा. उमेश कश दाि सम्पाक्त विदाकसिहस्तक प.१४७मे क्लखल अविप जाता स यत सीता सविदम यतपुण्या। यतास्ते सकाधाने सुनिगनिदी भैिि यत क्लङम्। मीमासा-न्याय-दिाध्ययन-पटुतीः पक्ङतैपक्ङताया भूदेि यत भूपो यजनसुिमती साक्स्तमे तीभिुक्ततः
(iii) क्तकाण्डशेरकोर
(a) गण्डकी तीमािभिय चम्पाण्याहृतकं क्शापि विदेहभूप समाख्याता तीि-भुततकाधो मनुः। (आओि देखु-शक्ततसंगमसूत)
(b) पाग्ज्योक्तरप कामरपे तीभिुक्ततस्तु क्लचविः (पष्ठ ५६)
(iv) काठकसंक्हता- *xiii*,४- इन्द्रो ि तिमहस्तं हस्तस्ससपताभोगैप पयष्ठंस्तस्य मू ो िदेहीर दायंस्ताप पाचीियिंस्तसमाताः पुस्यि जघह्यमरयं िदेहमनुदाहृतममह्यतेमकादानी मालभेय तेन ति इतो मुच्येयेक्त
(v) ाियुपुिण (८८-३०६)
कविनाम महाियो येनासौ कविलाऽभित्
(vi) शब्दकल्पदुम-७२३-विदेहा कविला पोतता
(vii) क्लङपुिण-तीि-भुक्तत पदेशे तु हलाति हलेशिपि।
(viii) चन्द्रा ि-गंगा बहक्त जक्तक दकक्ण क्दक्स पूिषकौक्शकी धाि पक्शम बहक्त गणडकी उतक्हिमति बलविस्ताि कमला क्तयुगा अमता धेमुडा िगमती कतसाि मध्य िहत लक्मणा पभक्त से कविला विदािगाि

(ix) ाजिनैक्तिक इक्तहासक पाद क्टप्पणी मे बहुत क्तकिु क्तलखल जा चुकल अक्ि आओि देखू- *IHQ -XXXV.No.२.*

(x) पाचिनो साक्तहत्य आओि क्तवक्तवध तीिकल्पमे वदिेह जनपदक ाजिधानी क्तमक्तिला कहल गेल अक्ि। एकि सीमा पूवषसँ पक्तिम १८० मील आओि उतिसँ दक्तक्षण १२५कहल गेल अक्ि। क्तकिु िाक्तलयाओमे क्तमक्तिलाक ाजिधानी वैशाली कहल गेल अक्ि।

पेमशंकर श्संिंह

बीसम शताब्दी- मैविलीक सणिषयुग

अतीत आ भविष्यिक संग सम्बद्ध सिवेत क' कए साहित्य अपन अवस्तातिक सत्यताक उदोरणा करैि। विश-मानि अत्यन्त उत्सुकतापूिक साहित्यक गिकिसँ अतीतक वावगिहकि गुफामे पिहित जीनि-धािकि अिलोकन करैि आ अपन गम्भीितिम उदेश्यक विविधि पकािकि साधन भूल आ संशोधन दाि पाप्त करैि अपन भाििी जीनिके वसंदेत होइत देखबाक उत्कट अवमलारा िखैि। अतीतक पेिणा आ भविष्यिक चेतना नहि तँ साहित्य नहि। अतीत, तिषान आ भविष्यिक कडीक अनन्त शंखलाक रपमे भाकि सवा होइत चल जाइि आ मानि अपन पगत्तक वयमाद्ध, वसदाहत्ताद्धके अपन िास्तविकि सताक विकासक मंगल कंगन पद्धवि कए अपन दुनू हािसँ आिि कयने हैि। विशकवि ििीन्द्रनाि ठाकुि (1861-1941) क कनि िकि जे विश-मानकि विििट जीनि साहित्य दाि आत्मपकाश करैि। एहन साहित्यक आकलनक तात्पयष काव्यकाि एिं गदकाकि जीनिी, भारा तिि पाठ सम्बन्धी अध्ययन तिि साहित्यक विविधि विधाद्धक अध्ययन कबि मात नहि, पत्युत ओकि सम्बद्ध संस्कृत्तक इत्तहाससँ अवि, मानि-मनसँ, सभ्यताक इत्तहासमे साहित्य दाि सुिक्षत मनसँ अवि।

उनैसम शताब्दीमे भाितििषे नविजागिणिक पबल जीि उठल। तकि

कोनो पभावि मिथिलाचलपि नहि पडल, कारण मिथिलावासी पाचीन परम्पराक पबल पोषक छलाह आ संस्कृत शिक्षामे लागल छलाह आ अंग्रेजी शिक्षा तथा पाश्चात्य विचाधाराक महत्वके नहि स्वीकारलनि। परिणामक फलस्वरूप एहि दशकमे भारतीय स्वतंत्रताक बेडीसँ मुक्त होएबाक लेल सन् 1857 ई. मे सिपाही विद्रोह कएलक। मिथिलाक शासक मैथिलीके कोनो स्थान नहि देलनि। एहि दशकक अन्तिम बेलामे मिथिलाक पशासन '*कोटषऑफ वार्डस कँ अधीन*' चल गेल जकर पभावि मिथिलापि पडलैक।जे एहिठामक वासीके परिमे-परिम पश्चासक स्वशासनुभूति भेलनि। किन्तु दुर्भाग्य भेलैक ' जे कोटष ऑफ वार्डसष द्वारा मिथिलाक भाषा मैथिली आ ओकर लिपिके बहिष्कृत क कए ओकर स्थानापन कयलक उदूष आ फारसी तथा देवनागरी। मिथिलेश महाराज लक्ष्मीश्वर सिंह (1858-1898)क गद्दीनशीन भेलापि उनैसम शताब्दीक अष दशकोत्तर कालमे मिथिलावासीक सामाजिक, सांस्कृतिक एवं साहित्यिक जीवनमे नव चेतनाक संचार भेलैक। हुनक चुम्बकीय व्यक्तित्व, कपापूणष व्यवहार, विद्या-व्यसन आ असीम देशभक्ति एवं दानशीलताक फलस्वरूप विद्वान साहित्य सजषकके आकष कएलक। हुनक उत्तराधिकारी मिथिलेश महाराज रमेश्वर सिंह (1898-1929) मेहो उक्त परम्पराके कायम रखलनि।

उनैसम शताब्दीक अष दशकोत्तर कालमे भारतीयमे अभूतपूर्व जनजागरण भेलैक, जकर फलस्वरूप स्वतंत्रता संग्रामक नव स्फुलिंग जागृत भेल आ ओ सभ स्वतंत्रताक लेल अत्यधिक सचेष ताक संग सनद भेलाह, जकर पभावि साहित्य सजकहाुपि पडलनि। यद्यपि शताब्दीक अन्तिम विषधवि धार्मिक आ सांस्कृतिक

क्यहुतन परिवर्द्धिककताक पुनः पकोपक विस्तत ियासँ बौद्धक आ साहित्यिक पगतक समक असिादपूणष िताििणिक पवियािप्त भ' गेलैक। तािा मैविली साहित्य जगतमे उत्करष अनबाक लक्षत अपन पिभािगत पवधिानक पवत्याग क' नि पिकाक चिनाकाकि पादुभाि भेल जाहमे मातभारानुिगी आ पकाशनक सौविध्यसँ साहित्य नि रप धाििण कयि लागल जकि नेततृि कयलक्ष कविीशि चहदा िा (1830-1907), कविीि जीनि िा (1848-1912), पक्षडत लालदास (1856-1921), पिमेशि िा (1856-1924), तुलापक्ष संह (1859-1914), साहित्यिताकि मुन्शी घिुनहन दास (1868-1945), मुकुह्द िा बतशी (1860-1938), जीिि िाश (1864-1923), चेतनाि िा (1866-1921), खुदी िा (1866-1927), मुिलीधि िा (1868-1929), जनादषा िा *पगुजनसीदन* गुसि गंगानाि िा (1872-1941), दीनबहधु िा (1873-1955), िमचहद िाश (1873-1938), बबुआजी िाश (1878-1959), गुणहतलालदास (1880-1943), कुशेशि कुमि (1881-1943), विदानहद ठाकुि (1890-1950), कविशेखि बदीनाि िा (1893-174), पुलककतलालदास (1893-1943), गंगापक्ष संह (1894-1969), उमेश िाश (1896-1967), धनुरधाििलाल दास (1896-1965), भोलालादास (1897-1977), अमिनाि िा (1897-1955), िजपक्षडत बलदेि िाश (1897-1965), कुमाि गंगानहद संह (1898-1970), बजमोहन ठाकुि (1899-1970) एिं िसकहािीलाल दास आदि-आदि जे विविध साहित्यिक विधाहक जहम देलक्ष आ एकि समविधा कबाक दढ संकल्प कयलक्ष।

िस्तुतः वगित शताब्दी मैवली साक्हत्यक हेतु एक काक्न्तकाि युगक रपमे पस्तुत भेल। अंगेजी िज्यक सिपना देशक साक्हक्त्यक, िजाक्नक, िजनैक्तक, आवषक आ सामाक्जक केत्तमे एक नि स्फूक्तष पदान कए क्नवलाचलक जीनि-शैली आ सोचक पुनसंष्काि कयलक। एक्ह शताब्दीमे आधुक्नक क्शक्ा, िपाखाना आ सलि यातायातक सुवधाक अभाि क्िहतहुँ मैवलीमे साक्हत्य सजनक पिम्पिा ित्रमान िहल। बहुतो क्दन धवि मैवली साक्हत्य संस्कृत साक्हत्यक पक्तािया सदश िहल। एक्हमे साक्हक्त्यक एिं अन्य पकािक लेखन क्नहिताि होइत िहल। दुइ वश युदक बीचक कालमे मैवली साक्हत्यक सिगीन समुदािक चेतना अनलक। एक्ह कालक लेखनमे ई नि मनोदशा पक्तफक्लत भेल आ साक्हत्यक वक्मन वधामे उल्लेख्य योग्य पवितष भेल।ह
यिािः मैवली सक्हत्य अपन पिम्पिािदी पशस्त मागषक पवत्याग क' कए गदक आशय गहण क' नीन मागषि डेग िक्ख शनैः-शनैः अगसि भेल तकि शेय आ पेय दुनू वगित शताब्दीके िक जे साक्हत्य सवताक पिहमान धािि सदश कलकल िलि कति अगसि भेल, तकि साक्ी वक वक्मन वधाक्दक साक्हत्येक्तहासक पकाशन। एक्ह सविाष कालक सहसाब्दीक सम्पूणष साक्हत्यके सिूल रपे दू धाििमे वभाक्जत कयल जा सकैि- काव्य-धािि अ गदा-धािि। युग संवधक उत्करष बेलामे साक्हक्त्यक गक्तवक्धक केत्त काव्यसँ बेसी गदके पधानता भेटल। लोकक ध्यान िजनीक्त आ सामाक्जक सुधाि क्दस गेलैक आ काव्यक वकासक लेल अनुकूल आिमि ि पलखक्तक िताििणि आब नक्ह िहलैक। निक्दत िचनाकािके कवता सदश वलास-िस्तुक लेल साधन आ समय

नक्ह हिलक। युग-सक्न्धक उत्करषबेलामे उदभूत विभिन्न साक्हत्यिक विधाक्द भीक्तपि दक्ष क्तकेप अकाहिक्त कमसँ कयल जाइत अवि, जे विगत शताब्दी कोन र पे एकि सणिकाल उदोक्त कबिाक क्दशामे अदिान कयलक तकि संक्रम्स र पखिा अपनेक समक पस्तुत कयल जा हिल अवि।

कविता सकल जीनिके अपनामे समाक्हत कति अवि आ मैविली कविता एकि अपादि नक्ह। विगत शताब्दीक मैविली काव्यधाकि सकिगसँ जात होइि जे काव्यकाि दुइ भागमे विभतत िवि- कक्ि तँ पम्पािगत र पक अनुयायी िवि तँ कक्ि नि पयोग कयकहाि मेहो। शताब्दीक सक्न्ध-बेलामे मैविली काव्यके पाम्पिक एिं निीन दुनू र पमे अवभव्यक्तत भेटलैक। पाम्पिक एिं आधुक्तक काव्य जक्टल र पे क्तिि गेल अवि। काव्यकाि लोकक्त लोकवपय धुन एिं शैलीपि आधावित गीतक चिनाक सामावजक, िाजिनीक्तक चेतना जगयबाक पयास कयलक्त। सिाधीनताक पशात् मैविली काव्यके आगू बढयबामे मैविली पक्तकाक्द महतपूणष भूक्तकाक क्तािह कयलक। सिाधीनोतिि काव्यक पक्ति सामावजक, आविषक एिं िाजिनीक्तक वसक्तक कािणे आ समाजािदी विचािधािक पसादक कािणे पगक्तशील कहल गेल अनेक काव्यक चिना भेल। चीनी आकमण तिा पाकक्स्तानक संग भेल युदसँ िाष्टािदी जोश, एकताक भािना एिं देश-भक्ततक स्फुिण भेल। िाष्टीय जागिण एिं ीिताक क्चतण कति कतोक काव्यक चिना भेल। मैविली काव्य-धािा भाितीय भाराक समकालीन पक्तसँ मेहो पभावित भेल। कक्ि कवि एहनो दक्ष गोचि भ' हिल िवि जकक्तक चिनामे कोनो विशेर पक्तक कािणे हुनका फाकि कयल जाऽ सकैि। आलोच्यकालक

काव्य-साहित्यके क्रमसँ निम्न विभाजित कयल जा सकैत अछि

१.महाकाव्य, खण्डकाव्य, प्रबन्ध काव्य।

२.प्रगीतिक गीति काव्य।

३.मुक्तक काव्य।

४.नव रूप आ नव विषय एवं अभिव्यक्ति जकर अन्तर्गत पदबद्ध कविता, हास्य ओ व्यंग्य, प्रगतिशील, देशप्रेम, देशभक्तिपरक सम्बोधगीत एवं शोक गीत, प्रेम ओ शृंगारपरक नव कविता।

विगत शताब्दीक सातम दशकक मध्यमे किछु युवा कवि नवकविताक चिन्ता कएब प्रारम्भ कयलनि। जीवनक परख रचना, मानवीय मूल्य आ परिस्थितिमे परिवर्तनक प्रति व्यक्तिवादी प्रवृत्ति एहन कविताक प्रमुख स्वर अछि। एहि आन्दोलनक फलस्वरूप काव्य साहित्यमे परिवर्तनक स्वर गुंजित होमय लागल जे सम्पूर्ण साहित्यमे दृष्टिगोचर होइछ।

विंशतिम शताब्दीमे कविक ध्यान आजुक मानव एवं ओकर बहुविध समस्या तथा ओकर बहुविध तत्त्व दिस विशेष रूपें आकर्ष भेल अछि, तथापि प्राचीन विषय-वस्तु जेना सत्यता, नीति, प्रेम, पराक्रम आदि तँ आदर्श रूपें रहिबे करत। एहि प्रकारें आधुनिक काव्य-धारा विषय-वस्तुक क्षेत्रमे निस्संदेह समृद्ध भेल अछि, तथा नव-नव काव्य रूपक मेहो स्थापित भेल अछि। अतुकान्त ओ मुक्तवृत्त तथा अनेक नव-नव लय तथा छन्द-बन्धनक सफल प्रयोग एहि युगक प्रवृत्ति भ' गेल अछि।

छन्दके वर्तमान पीढीक कवि पूर्णतः त्यागि देलनि मे एक ध्यानाकर्षक प्रवृत्ति थिक। स्वयं कोनो मौलिक छन्द उद्भावित कविताक एकोगोट प्रयोग नहि देखबा पडैछ। एहन काव्यकारक संदर्भ

संकेत, उपमा, पतीक सभ नि-नि आ पाम्मिर्वकि कविताक विसक लोकक्मके काव्योपयुतत शब्द विक्श िलक्म तँ ऐंस्ट (ANGST) युगक बहुतो कवि अपन नि शब्द भण्डाि बनौलक्म। एकि काणि विक जे कवि लोकक्म कव्मितमताक कोनो खास दशष्ा अपनौलक्म। नि तूकि कोनो कविकि विरियमे ई नक्ह कहल जा सकैि, जे आयाक्मक ि अह्य पकाकि कोनो खास िदिक पभाि हुनकापि पडलक्म अवि। तिाक्म बहुतो दष ाह्त, सह्दभष् संकेत, पतीक, क्माकिक पयोग तिा शब्दालिीमे क्कु पभाि ताकल जा सकैि। काव्य-भारा, क्वम्ा आ अलंकाकि केतमे हुनका सभके नि-नि उदभािना कबिाक िक्म।

गद-धाि

आधुक्मक भातिीय भारामे गद-साक्हत्यक आविभाि भातिीय जीिनिमे ओक्ह मंक्जलक दोतक विक, जखन मध्ययुगीन िताििणिसँ बहि क’ िैजाक्मकताक पतीक बनल। हमि समग गद साक्हत्य जीिनिक पविष्कििणि आ उतिानिक साक्हत्य विक। आइ एकि माध्यमे हम अह्ताषि्टीय जान-विजानक सम्पकष्मे अयलहुँ। मुसलमानी शासन कालमे अिबी-फािसी साक्हत्यक सम्पकष भेलासँ गद चिनाके पोत्साहन नक्ह भेक्ट सकल। पूिषिआ पक्शमक सम्पकष्क फलसिरिप निचितेना उत्पन भेल, समाज अपन हेियिल शक्ततके जमा क गक्तशील भेल, साक्हत्यमे गदक शीिक्ददृ भेल। अतएि विगत शताब्दी मैविली गदक सििणष्काल विक। आब ते ई साक्हत्यक पधान अंग बक्म गेल अवि। एक्ह समयमे क्मविलाचलििसी पक्शमक एक सजीि आ उनक्तशीलजाक्तक सम्पकष्मे अयलाह आ ओ जाक्त अपना संग यूिपीय औदोवाक काक्ह्तक पशात् सभ्यता ल’ कए आयल। निीन

व्शाक्त पदक्त, ैजाक्तक आविष्कािक्क्तक पक्तिसँ मैविली साक्तत्य अि ूत नक्त हिल। शासन सम्बक्तह्धी आिश्यकता ति ा जीि नि पविक्सि क्तक कािणे गद सदश नीि न साक्तत्यक माध्यमक आिश्यकता भेल आ ि ास्तिमे गद दाि ा मैविलीमे आधुक्तकताक बीज ि पिन भेलैक। ि स्तुतः नि युगमे नि व्शाक्त-पदक्तमे पाक्तलत-पोवरत व्शाक्तक्त समुदायक आविभाि कािणे मैविली गद-पिम्पाि कमबद इक्तहास विगत शताब्दीसँ उपलब्ध भ' हिल अवि। नीि नता जँ भेटैत अवि मात गदक रपमे।नीि नता एक्त अि षे जे ई साक्तत्यक पमुख आ सि ायी अंग बक्त गेल अवि। गदक अटूट पिम्पाि भेटैि जे एकि ा उजजलि भविष्यक संकेत कि ैि। क्तविलाचलमे आधुक्तकताक बीजपिन गद ि चिनासँ मानल जयबाक चाही। ि ास्तिमे गदक इक्तहास क्तविलाचलक जीि निमे बढैत पाशात्य पभाि कि इक्तहास कही तँ अनुक्तत नक्त हैत।

गद-साक्तत्यक पसंगमे ई बात स्माि णि ि खिबाक चाही जे विगत शताब्दीमे अक्तधकाश उपयोगी आ व्याि हािविक वि रियसँ सम्बक्तह्धत ि चिना भेल। ि तषान समयमे गदमे अनुि ाद, आलोचना, इक्तहास, उपह्यास, कि ा, नाटक-एकाकी, क्तबह्ध, पक्तका ति ा विविध रपमे ि क्तत गद साक्तत्यक ि चिना भ' हिल, कािणि जाक्त-जाक्त साधन दाि ा गदक विकास भेल अवि ओ सभ नीि न आिश्यकताक पूक्तष लेल व्याि हािविक दक्ष कोणमे सक्तक्तत अवि। साक्तत्यकाि सभक दाि ा एकि ा सजयबाक आ सँि ािि कायषकयल गेल। मैविली गदक गाि ा क्तविलाचलक नि जीि निक पभातकालीन चेतना, स्फूक्तष, गाक्तका शक्तत आ गक्तशीलताक आशा भि लि गाि ा वि क। जाक्त क्तदन गदक कोनो पि मि पष पेसमे मुक्तत भेल हैत मे क्तदन

कासससह्देह साक्हत्यक काक्हतक क्दन हिल हैत।

अनुािद

विगत शताब्दीक चतुिष दशकमे मैविली साक्हत्याहत्गषा अनुािदक सूतपात भेल। आिक्म्भक कालमे ओकि गक्त मह्िि हिलैक; कक्हतु सािधीनताक पशात् एकि विकासमे गक्त आयल आ तिषान समयमे ई एक अत्यहत सशतत विधाक र पमे पक्तफक्लत भेल अवि। तिा एकि सािपवि उपलक्ध विक जे पचुि पविमाणमे गद आ पद पकाशमे आयल अवि। एक्ह पकाि साक्हक्त्यक उपलक्ध अतीतमे नक्ह िल। आधुक्नक, पाचीन भािितीय भाराक संगक्ह संग पाशात्य भारा आ साक्हत्यक सहसाक्धक गद-पद मैविली गद साक्हत्यक शीिक्दमे सहायक भेल अवि।

आलोचना

साक्हक्त्यक सजन आ ओकि आलोचनाक धािा समानाहति चलैि। पत्येक युगक साक्हत्य एक एहन आलोचनाक उदभािना किैि जे ओकि अनुर प होइि। एक्ह पकािे पत्येक युगक आलोचना मेहो ओक्ह युगक िचनाके अनुकूल सिर प पदान किैि। िस्तुतः देश आ समाजक पविितिषानशील पवक्त एक भाग साक्हत्य कनमाणके क्दशा दैि आ समीका ओकि सिर प कनधाविित किैि। अतएि िचनात्मक साक्हत्यक इक्तहास आ समीकाक इक्तहासमे धािािक्हकताक समानता िहैि।

मैविलीमे आलोचनाक उदय विगत शताब्दीमे भेल आ एकि विक्सत स्िक्त अवि तिा ई ओकि सभसँ दुबषल अंग विक। विचि्य कालक मैविली आलोचना विधाक सम्पूणष विकास याताके दक्श मे

िविख हम एकि तीन रप कमधावित कयल अवि। पिम रप संस्कत समालोचना वसदात ि वणषातमक अवि। एवह पणालीक अनुगमन कयवहाि संस्कत आचायषलोकवक रप विक। वदतीय अवि पाशातय समालोचना वसदात। ततीय रप अवि जावहमे पाचीन भाितीय आ पाशातय वसदाहतक समहिय कयल गेल अवि। जीिनक नि पविसििवत एिं नि सामावजक चेतनाक कािणे विशुद भाितीय दवषकोण अपनायब तँ असमभि विक। वकहतु दुभागयिश अहय दूरपक कोनो विशेष आ वविशत पिमपिा सिावपत नवह भ' सकल अवि। सावहतयक उतकरषक सवहध-बेलामे आलोचना शासत विविन मत िदिक अजायब घि बवन गेल अवि। ओकि पधान आधाि ियवकतक रवच-अरवच अवि ने वक कोनो वसदाहतक आधाि। एकवह आलोचकक समीकामे पिसपि विििोधी बात आ ओकि सुसंगत रप नवह भेटैि।

िवशानमे पिणिता सभसँ बेसी देखल जाइि जे भाित एिं पाशातयक विविन विशविदालयमे मैविली विरयपि अनुसंधान भेल अवि आ भ िहल अवि, जकि संखया लगभग तीन सहसावधसँ अवधक अवि। वकहतु मैविली अनुसंधानक जे वसिवत अवि तावहपि कवतपय पश ववहह लावा गेल अवि। अवधकाशतः अनुसंधान अपकावशत अवि। िवशान पविपिकामे ओकि पकाशनक पयोजन अवि, जावहसँ यिािष वसिवतक िहसयोदघटन भ' सकय ति ई विधा अविकवसत भ' सकय।

इवतहास-लेखनप

सावहतयेवतहासक लेखन तँ ओवह सावहतयक दपषण समान होइि जकि अिलोकनवहसँ सावहतयक यिािषताक पविजान पाठकके

होइि। विगत शताब्दीके सणिकाल उदघोवरत कबिाक आ मातभारानुगिगी पबुद पाठकके अपन मातभाराक गौरि-गविमाक आख्यान पस्तुत कबिाक लेल कवतपय इवतहासकार एकि सावहवत्यक पवमावक पुनरिख्यान कयलवन्ह। किन्तु एवह सावहवत्यवतहासक गहवि अिलोकनोपरान्त ई स्पष्ट होइत अवि जे एवह सावहवत्यवतहासक गहवि अिलोकनोपावहत्त कावश होमय पडैि, कारण कवथत भावि मैविलीक िैजावनक पदवतक अनुसरण क' कए अदावप इवतहास नवह वलखल गेल अवि जे वचन्तनीय विरय विक। पत्येक इवतहासकार दलगत भािनासँ उत्पेवरत िवि जावह कारणे महत्तपूणष कवतकारक चचा पयषवप्त नवह भ' सकल अवि। एवह सन्दभषमे हम दुइ इवतहासक चचा करब। सावहत्य अकादेमीक सत्पयाससँ '*इवणडयन वलटरेचर वसन्स इवणडपेनडेन्स*' (1973) पकावशत भेल जकर तुलक विरयमे कवविला कावहवक कतोक अंकमे एकर भत्सषना कयल गेल। युग-संवधक उत्कररष बेलामे '*ए वहस्टी ऑफ मोडनष मैविली वलटरेचर*' (2004) पकाशमे आयल अवि जकर कवतपय कारणे सावहत्य जगतमे विवादास्पद ओ अपूणष मेहो अवि जकर इवतहास कहबामे संकोचक अिबोध होइि। तिषमान संदभषमे पयोजन अवि एक एहन सावहत्यवतहासक जावहमे सावहवत्यक यिािषरवरपक उदघाटन हो तिा उपेवक्षत लेखक लोकवनक कवतक सम्यक रपेण उल्लेख पवतवक अनुरप हो।

उपन्यास

आधुवनक भारतीय भारा सावहत्यक अन्तगषत उपन्यास लेखनक पादुभाि पवशमक नि सभ्यता आ वबंवटंग पेसक देन विक आ मानि जीिनके समग रपसँ देखबाक पयास मैविली उपन्यासान्तगषत विगत

शताब्दीक पिम दशकमे भेल। ई.एम.फॉस्टर (1879-) क कनि कि जे जीनिक गुप्त हिस्यके समग र पसँ अवमव्यक्ततक क्मता जतेक उपहृयासमे अवि ओतेक अह्य कोनो विधामे नक्ह। इएह कारणि अवि जे विगत शताब्दीमे उपहृयास अपन सीमाक कारणे महत्तपूणष विधाक र पमे साक्हत्यमे पश्चिम पौलक तिा पधान साक्हत्यक र प बक्त गेल जकरा दारि मानि अपन ाहि एरि आक्हतविक समस्याक्दके सोिियबाक पयासमे संलग्न अवि।

क्मविलाचलक नि-चेतना, आकाक्त आ विरमता, िष्टीय संगामक विभिन मतादि सामाक्जक, आविषक, मनोिजाक्नक विरमता आक्दक अवमव्यक्तत मैविली उपहृयासक पमुख र पे मुखवित भेल। विगत शताब्दीक चतुषि दशकक आक्विभक साल मैविली उपहृयास जगतमे विशेर महत्ति खिैत अवि। '*क्मविला*' (1929) माक्सक पतमे हविमोहन िा (1908-1984)क '*कह्यादान*' धाािक्हक र पे उपहृयास पकाक्शत होमय लागल। उपहृयास क्लखबाक पेणाि हुनका जनादषि ा '*जनसीदन*' सँ भेटलक्त। स्ती-क्शाकाक आिश्यकता तिा नि-पुिानि सम्बह्धी विचाकि संघरषदेखयबाक लेल एकि चिना कयल गेल िल। पुस्तकाकाि पकाक्शत होइतक्ह ई उपहृयास लोकक्पय भ' गेल। सामाक्जक जीनिक एतेक व्यापक क्चतण एक्हसँ पूिषनक्ह भेल िल। सामाक्जक कुिक्तक पदाफाश होइत देक्ख क' रक्ढािदी क्तलक्मला गेलाह, कक्हतु नियुिकि क्हद एकि सिागत कयलक्त। एक्ह उपहृयासक पभाि मुख्यतः तीन र पमे पडल- पिम समाजक मनोक्तिपि, क्दतीय कह्या लोकक्नक व्यक्ततगत जीनिपि तिा ततीय मैविली लेखक समुदायपि।

जतय सिाधीनतापूिष मैविली उपहृयासक संख्याअत्यल्प िल ततय

सिधीनोतिा युगक पश्चि एहि विधामे नि सम्भिदन आिा देलक आ एकिा सहसमुखी धािा पिावहत भेल आ युग-संवधक उतकरष बेलामे अनेक उपहयासकािा पादुभूत भ' अपन पतिभाक कािणि कथाखेविा क' एकिा समुनतशील बनौलकि तिा संदभमे बना हिल विा। उपहयास-लेखनक कषेतमे एक कीतिमान स्थापित कयलकि विलकण पतिभासमपन उपहयासकािा बजककशोिा िमा *मवमपद* (1918-1986) जे तिावलटी आ तिावहटटीक दवाएँ डेढ दजष उपहयास एहि साविहतयके भेट देलकि जे अदावि कोनो उपहयासकािा दािा समभिा नवि भ' सकल अवि। हिनक एक नितिम् उपहयास '*सोना रपा हीिा* ' पकाशनक पिपिा अवि।

दुइ शताबदीक संवध बेलामे उपहयास साविहतयमे नि-नि मागष पशस्त भेल अवि, जाविसँ ई एक सशतत विधाक रपमे चकाचष-अकाचष भऽ हिल अवि। पिम विश्व-युदक पशात् कागेसक नेततिमे िाजिनीवतक चेतनाक जागिणि भेल संगवि सामावजक आ आविषक आनदोलनक जनम भेल। उपहयासकािा जमीनदािािक अतयाचािा, दविद ककसान, अंगेज शासक नीवत, नागविक जीिनि, नािा समसया, समाजमे वयापत कुसंसकािा, विािह पिा, वशाक आवद अनेक विरयके ल' कए उपहयासक वनमाण कयलकि। कविलाचलक गामीण जीिनिक वचतणक पमुखता आिवमभक कालमे अवश्य हिलैक, ककनतु आब ओविमे शहिा मधयविगष मजदूिक जीिनिक आविषक, िाजिनैवतक आ मनोवैजावनक समसयाक पमुखता भ' गेल अवि। एहि दवाएँ उपहयास कषेतमे अनेक पयोग भेल अवि तिा पाशातय विचािकि पभािा साविहतयपिा सपष लवकत भ' हिल अवि। अधुनातन समयमे मैविलीक अनेक आधुवनक जीिनिक विसंगवत, अनेक जविटल

ाजिनीक्तक, आविषक आ मनोोैजाक्तक यािाषाके ल' कए अपन कक्तक क्तमाण क हिक िवि अ' शैली आ क्यक्ततत्िक दक्त सँ नीिनता उदाक्तत क' हिल िवि।

किाप

साक्तहत्यक विधानमे किा नीिनतम अवि। मैविली किा-साक्तहत्यक इक्ततहास पूणषपेण बीसम शताब्दीक देन विक, जकि विकास ततीय दशकक पूिषनक्त भ' सकल ाल। पाम्भमे संस्कत किाक रपाक्तणि पकाक्शत भेल। मैविली किा-साक्तहत्यके लोकक्तय बनयबाक शेय अवि मैविलीक पक्तकाक्दके। मैविली किामे पवितत्िानक सूतपात होइत अवि विगत शताब्दीक क्दतीय दशकक पशात् जा क'। मैविली किा साक्तहत्यपि विचाि कैति एकिा क्तमसि कालखण्डमे विभाक्जत कयल जा' सकैि।

1. पाम्भ युग- 1920 ई.सँ 1935 ई.
2. पगक्त युग 1936 ई. सँ 1946 ई.
3. पयोग युग 1947 ई.क पशात्

सािधीनता पूिषे कक्तपय किाकाि साक्तहत्यमे पिेश कयलक्त, क्कन्तु हुनक पविपति किा सािधीनताक पशात् पकशमे आयल। देशक सािधीन भेलाक पशात् मैविली किामे तीि विकास भेल। मैविली गल्प-साक्तहत्यक विकासमे पक्तकाक्दक योगदान सािधक हिल अवि। पत्येक पक्तकाक रािन साधाणितः किा क्दस हिल अवि। अतः निि-निि किाक िचनाक संगक्ह-संग निि-निि किाकाकि आविभाि अत्यक्त दुत गक्तएँ भेल। अक्त आधुक्तक किा-साक्तहत्यमे जाक्ह नियुिक किाकाकि अदिान अवि ओ गल्प िाडमयक जे मानदण्ड अवि ओकि सम्यक् पविचय िखैत गल्प िचनामे संलग्न भेलाह।

शनैः-शनैः सामाजक जीनिमे घक्त भेक्हाि साधाणि घटनाके आधाि बना क' कािक िचना भेल ति यिाि्पीदी आ' कल्पना पसूत कािक दुइ धाि जकि पति्षाक हर्वमोहन िा एि िजक्कशोि िमा '*मक्पद*' कयलक्ह जाक्हमे िाजकमल (1929-1967), लक्लत (1932-1983), मायानह्द (1934), पभास कुमाि चौधिी (1941-1998) आक्द कक्तपय कािकाि योगदान िलक्ह। उपयुषत कािकाि लोकक्हमे सामाक्जक चेतना िलक्ह आ हुनका सभक कि-आदशषपूणष संिदनशीलताक वििशेर गुण आ मनोविजानक हल्लुक पुट अिि। पििती कािकाि लोकक्ह िमासपूणष कािक सजषि कयलक्ह। युग-संक्धक उत्करष बेलाक कािकाि जीिनक कािनक चुनलक्ह, मध्यिगषक जीणषजीिनक िणषि कयलक्ह, व्यक्तक मनक विश्लेरण कयलक्ह, स्त्ी-पुररक पेमक क्ितण कयलक्ह आ आधुक्नक जीिनक मानक्सक आ भौक्तक विरमताक पाशष्ूक्मपि अपन कािके आधािित कयलक्ह।

मैविली कि साक्हत्यक केत्र व्यापक भेल ति मूल्य एिं दक्ष्कोणमे पिििति्षनक संग विरय-िस्तुमे अक्धक िैविध्य आयल अिि। सत्तिकि दशकमे कि सभमे यिाि्पीदी एिं व्यक्तिादी सिि तीख आ सुस्पष भेल। मैविली कािक पमुख भाग सामाक्जक कि विक। सामाक्जक जीिन एिं विचाधािामे पिििति्षनके क्ित्त कयक्हाि कािक िचना भेल। सामाक्जक संिचना, पििाि एिं व्यक्तगत जीिनक विक्मन पक्मे भ' िहल पिििति्षक यिािषक्ष क्ितण कािकाि लोकक्ह कयलक्ह अिि। मैविलीमे लघु कि, व्यंग्य कि, लोक कि इत्याक्द विविध िचक िचना मेहो भेल अिि। सर्विध मैविली कि साक्हत्यक समक्दषक कािकाि

लोकक्षक सक्कय सहभावाताक फलसरिप ई एक सुवकिक्सत वधाक रपमे अपन सिान सुक्कित क' लेलक अवि।

नाटक-एकाकीप

वगित शताब्दी मैविली नाटक-एकाकीक हेतु एक काक्तकाि युगक रपमे पस्तुत भेल। आधुक्क मैविली नाटय जगत जखन अह्यकामे टापि-टोइया द' हिल िल तखन युग-पुरर जीनि ि गदक नि-ज्योक्तसँ सम्पूणष मैविली नाटय-साक्हत्यके आलोकत कयलक्त। आधुक्क मैविली नाटकक जह्म एही शताब्दीमे भेल जकि पतिषा कयलक्त कीक्तषपुरर जीनि ि। ई मैविली गदक महान उनायक हिवि। ओ गदके निीन सरिप पदान कयलक्त। अपन नाटयाक्दक माध्यमे मैविली गदक मंगल दाकिे खोललक्त ति भवषियक नाटककाकिे एक नि पेणिा देलक्त। मैविलीमे उच्च कोक्टक नाटय-साक्हत्यक क्तमाण कायष वगित शताब्दीक अनुपम उपहाि एक्ह साक्हत्यके भेटलैक। वगित शताब्दीक नाटककाि जीनिक वक्तभन क्ेत्रसँ सामगी गहण क' कए सामाक्जक, धाक्तषक, वशुद साक्हक्त्यक, पौिाक्णक आ िषीय एिं िाजनीक्तक नाटकक पिम्पिाकिे जह्म देलक्त आ भाितीय निीतिानकालीन भाििनाक पचाि कयलक्त। जीनि िाक पशात् मैविलीक दोसि नाटककाि साक्हत्यिताकि मुंशी िघुनह्दन दास आ पक्णडत लालदास आ हुनका सभक पशातो नाटकक क्ेत्रमे एक्ह पिम्पिाकि क्तिाह होइत हिल। देशक आिश्यकतानुसाि वगित शताब्दीमे ऐक्तहाक्सक नाटकक िचना भेल। पौिाक्णक कािाकिे नि-ढंगे पक्तपाक्दत कयल जाय लागल। मैविलीक कक्ु नाटककाि पतीकात्मक नाटकक िचना कयलक्त, क्कह्तु ई पिम्पिाि अक्धक पुष नक्ह भ' सकल। यदक्प गीक्त-

नाटयक िचना मेहो विगत शताब्दीमे भेल तािम मैविलीमे सुह्दि गीक्त-नाटयक रपमे सोमदेि (1934-) क '*चाििक्त*' (1982) एक पक्तमान पस्तुत कििि। विििच्यि कालाविधमे समस्या नाटकक िचना भेल अवि। यूिपीय पभाकि अह्तगषा समस्या नाटकमे बुद्धििदक आधािपि सामाविजक, व्यक्तिगत तिा जीििनक अह्य केत्रमे व्यािष्क आडम्बिि आ ििहािचाि तिा पिम्पिा पालनक वििधि कयल गेल अवि। ककह्तु मैविलीक समस्या नाटकक बुद्धििद ठक्कुंत आ ओकि केत्र सीवमत अवि, जावहमे जाजष बनाड शॉ आ हेनविक इब्सनक तीक्ष्ण दवष्ट क अभािि अवि। ओहुना ई पिम्पिा मैविलीमे विकवसत नवह भेल

आलोच्यकालमे िगिमंचक अभािि कािणे एकि पगवतमे बाधक वसद भेल अवि। मैविलीमे एक साधु अवभनयशाला नवह भेलासँ पाठय सावहत्यक विकासक गवत एक विशेर वदशामे ििक्कि गेल अिित् एहन नाटकक वनमाण होइत िहल जे सावहवत्यक आनह्दक दवष्टएँ सुह्दि िचना विक, ककह्तु िगिमंचीय विधानक दवष्टएँ दोरपूणषअवि। विगत शताब्दीक नाटय-सावहत्यपि विििचन कविबाकाल मात्र िगिमंचपि ध्यान नवह देबाक चाही। जँ िगिमंचके नाटकक कसौटी मानल लेल जाए तँ विशिक अनेक पवसद नाटकािवदके नाटकक शेणीसँ वनष्कावसत कििए पडत। शैलीक दवष्टसँ मैविली नाटय सावहत्य पूिषआ पवशमके ल' कए चलल िवि, ककह्तु शनैः-शनैः ओ' पवशमाविमुख अवधक भ' गेल अवि आ। भािितीय तत्ि नगण्य भेल जा िहल अवि।

विगत शताब्दीक चतुिषदशकमे सावहत्य िताकि मुंशी ििघुनह्दन दासके शेय आ पेय दुनू िवन्ह जे मैविलीमे एकाकी िचनाक

शुभाम्भि कयलक्त जे पशात् जा क' एक सबल पाणह्नि विधाक रपमे पल्लवित भेल। तिषान समयमे एकाकी क्लखल जा हिल अवि अश्यि, कह्नु कि अपादिके िाक्ड क' एकाकीक िास्तविक कलाक कसौटीपि खिा हिक्नहाि एकाकीक अनुसंधान कबिा-काल काशि होमए पडैि। पष भूक्न, िातािणि आ कायषव्यापाकि अभािि पायः सभ एकाकीमे भेटैि। एकि उदेश्यक पविधि विस्तित अवि। ओ सामाक्जक, ऐक्तहाक्सक, ाष्टीय, मनोिजाक्नक, हास्य-व्यंग्यपूणष आक्द अनेक उदेश्यके ल' कए क्लखल गेल अवि। िशीकणिक फलसरिप आधुक्नक जीिनिक विडम्बनापि गम्भीि पहाि कबि एकाकीकाकि कतषय भ' गेलक्न अवि। िक्डयो आ' टेलीभीजनक काणिे नाटकक निीनतम रप धक्नि रपकमे भेटैि, जकि टेकक्नक एकाकीक टेकक्नकसँ क्नम होइि। ाििमंचीय कलाक दक्ा सँ एकाकीक धक्नि रपकके आघात पहुँचबाक पूणष सम्भािना अवि, ओक्हना जेना कक्नक पचािसँ नाटयकलाके क्वत पहुँचल अवि।

क्नबह्ध प

भाितीय समाजमे एक नि सास्कृक्तक आ ािजनैक्तक चेतनाक उदय, पक्तकाक पकाशन, साधािणि विरय, सामाक्जक आह्दोलनक फलसरिप पक्तकाक संग जाक्ह साक्हत्यरपक जह्मक संगक्ह ओकि सिभािि पतकाविताक विशेरताक ालक भेटैि। विरय िैविध्य, सामाक्जक आ ािजनैक्तक, शैलीक ािचकता आ गाभीयष गौिकि अभािि आक्द आिक्मभक क्नबह्धक एहन गुण अवि जे पतकाविातासँ सम्बद अवि। क्नबह्ध तँ जान ाक्शक संक्चत कोश विक।

क्नबह्धकाि समाजक भाष्यकाि आ आलोचक मेहो होइत विि। अतएि सामाक्जक पविक्सिक्तक जेहन पभािि क्नबह्धमे देखबामे अबैि

ओ साहित्यिक अहम्य रूपमे नहि। विभिन्न कालाखिण्डमे निबन्धक विषय जीनिक अनेक क्षेत्रसँ लेल गेल तुच्छसँ तुच्छ तथा गम्भीरसँ गम्भीर विषयपर निबन्ध उपलब्ध होइछ। यद्यपि ओहिमे चिन्तन-मननक गम्भीरताक अभाव अछि तथापि ओकर सामाजिक चेतना व्यापक छल। समयानुकूल विविध विषयपर बिनु कोनो पूर्वाग्रहक सचिन्हित भ' कए निबन्धकार आत्मीयताक संग अपन हृदय पाठकक समक्ष खिलक। बिनु कोनो संकोचक विदेशी शासक ओ शोरकके डाक्ट-फटकारि सकैत छथि तँ अपना ओतयक पण्डित मुल्ला आ पुनि शास्त्रकार धरि हुनक कठहुज्जतापर नीक अधलाह कहलक। निबन्धकार एक भाग आतुर भ पश्चिम पक्षत पर्वतिषादिदी अंगेजी सभ्यताक गुलामक खबरि लेलक तँ दोसर भाग नूतनता भीरु रूढ़िवादीक भर्त्सना कयलक।

विगत शताब्दीमे गद्य शैलीक निमाण निबन्धकारक व्यक्तिक प्रयासक प्रतिफल थिक। भाराक दृष्टिएँ तत्कालीन निबन्धकार लोकनिमे सामूहिक भाव कॉर्पोर्टि सेहसक अभाव छल। गद्यक कोनो स्वीकृत रूप नहि भेलाक कारणे ओकर भारा साहित्यिक रूप नहि प्राप्त क' सकल। आलोच्यकालक आरम्भिक निबन्धमे विषय आ' शैलीक दृष्टिएँ वैविध्य भेटैछ।

शनैः-शनैः निबन्धमे पत्रकारिताक सचिन्हितता क्षीण होमय लागल। पत्रिकाक संख्या बढलाक कारणे साप्ताहिक, मासिक एवं त्रैमासिक पत्रक दृष्टि बढैत गेल आ निबन्धकार शनैः-शनैः शिक्षित आ विशेष समाजक समीप अबैत गेलाह। पश्चात् जा' क गम्भीर विषयपर निबन्ध लिखल जाय लागल जाहिसँ ओकर रूप-रंग गम्भीर भ' गेलैक। साहित्यिक समालोचनात्मक निबन्धक धारा जतेक पुष्ट भेल

ओतेक िचना विरयक कायमानुिवतासा िवड क’ नि ढंगसँ कम अवधक सिचिह्नदतापूिक शैलीमे कबह्ध नव्ह कलखल गेल।
हवमिोहन िा पचुि पविमाणमे पधान वयंग्य कबह्धक िचना कयलक जकि-विकास युग सव्ह्धक उत्करष बेलामे भ’ हिल अवि। वयंग्यक मूल वित सामाविक िताििणिक विशेष सह्द्भमे आलोचना भ’ हिल अवि। एकिा मूलमे नि सामाविक चेतना आ ओव्हसँ उत्पन आलोचना वित पखि वयंग्यक रप धाणि क’ कए एहन कबह्धमे अबैत अवि। एहन कबह्धकाि लैब आ’ लूकसक अपेका, पवितक विचािसँ चेस्टटिन, पत्युत कसिफिटक अवधक समीप िवि। मैविली कबह्ध अपन अत्यल्प जीिनिकालमे कोन पकाि विविध रप-िगिमे विगत शताब्दीसँ विकवसत होइत आयल जे आगा साव्हत्यमे विरय-िविध्य जव्हना-जव्हना विकवसत होइत जायत तव्हना-तव्हना भािी पीढीक कबह्धकाि बढैत जयतह।

पठन-पाठनमे स्वीकवाप

एकि पाचीन साव्हत्यक गौिि-गविमासँ अिगत भ’ कए विगत शताब्दीक व्दतीय दशकमे आधुवनक भाितिक पाचीनतम कलकता विशविदालयमे पिमे-पिम मैविली भारा आ साव्हत्यक एम.ए. स्तिि धवि पठन-पाठनक शुभािमभ कएलक सि आशुतोर मुखजी (1864-1924) आधुवनक भाितीय भारा विभागक अहतगता। तत्पशात् आलोच्य शताब्दीक रष दशकक पूिदिमे पटना विशविदालयक संगव्ह संग बहािकि अह्याह्य विशविदालयमे मेहो एकि पठन-पाठनक वयसििा भेलैक। वयाकण संसिानिमे मैविलीक माह्यता भेटलाक पशात् साव्हत्यकाि लोकवाक दावयति बढलक जे एव्ह वावमत तदनुरप पाठय-गह्िकि कमाणािष ओ सभ सवकय भेलाह आ

सक्हत्याहत्तगषा नि समहद्दनक पादुभाि भेल।

पक्तकाप

पुनजागणिक एकह पक्तिक मैविलीक सचेष मनीरी तपः सपूत संघरषित भ' साक्हत्यक नि क्नमाणक क्दशामे उह्मुख भेलाह। एक्हमे सह्देह नक्ह जे पगक्तशील आ सामाह्य पूिगह मुतत क्शाकत समाजके िणी देबाक कक्मत पिसी मातभारानुिगी लोकक्नक सतप्नयाससँ जयपुिसँ '*मैविल क्हतसाधन* ' (1905) तिा काशीसँ '*क्मविला मोद* ' (1906) क पकाशनक शुभािम्भ भेलैक, जकिा एक काक्ह्तकािी डेग कहल जा सकैि, जे गद साक्हत्यक गक्तविक्धसँ पाठकके पक्तचय किौलक्न। एकिा माध्यमे सामक्यक साक्हक्त्यक पक्मािाकि अध्ययन, क्वह्तन आ मननक कम सिभाविक आ िािनीय नक्ह, पत्युत भविष्यक हेतु मागषक्नदेश कबिाक, रक्ढ आ विशास, शास्तीय माह्यताक्दक मूल्याकन कबिाक, युगक नािन आिश्यकता आ पिखबाक दक्न एँ अत्याििश्यक ्ल। एक्ह दक्न एँ साक्हत्य क्नमाता आ अध्येता एक दोसिाकि समीप आक्न गेलाह आ कोनो ठोस िस्तु पाक्त कबिाक पशस्त मागषक क्नमाण कयलक्न। एक नि शक्तत उदआवरत भेल, पयुषरतक सिान अपयुषरतक जह्म भेल। एकिा जोदािि पभािि पडलैक क्मविलाचलक मैविल समुदायपि जे ओ सभ एक्हसँ अनुपाक्णत भ दिभिंगासँ '*क्मविला क्मक्हि* ' (1909-) क पकाशनक शुभािम्भ कयलक्न जे विगत शताब्दीक नमि दशक धवि अनिितिि चलैत हिल जे पाठकक संगक्ह लेखक िगषक सबल दल तैयािि कयलक आ ओकिि नािनतम अंक देखबाक कक्मत जक्हना पाठकमे उत्सुकता हिैत िलक्न तक्हना लेखक लोकक्न मे मेहो औत्सुतय हिैत िलक्न जे हुनक कोन िचना

पकाशित भेल अछि।

मैथिली पतकारिताक दोसर चरणक पारंभ पथम विशयुद (1914-1918) क पशात् पारंभ भेल। एहि समयमे सामाजिक, बौदिक आ औदोगिक विकासक रचनात्मक कायकम हेतु मेधावी जनशक्तिक लोप भ' गेलैक। विश-युदक समाप्तिक पशात् लोकक मोह भंग भ' गेलैक जे विदेशी आधिपत्यक चापसँ मुक्ति आशा क' रहल छथि। एहि निराशासँ 1920 ई. मे राष्ट्रपिता महात्मा गाधी दारा समाज सुधार आ असहयोग आन्दोलनक शुभारंभ मिथिलाचलक चम्पारनसँ भेल। एहि आन्दोलनक हेतु परिस्थिति अनुकूल भेल अपन मुक्ति गम्भीर मन, देशी लोकक विपरित एहि आन्दोलनक संगत सोत्साह कयलक आ मैथिली पत्रिका आलोच्य कालक ततीय दशाब्दीमे पकाशनक पथ पर अगसर भेल।

मैथिली पत्रिकाक तेसर चरणक शुभारंभ आलोच्य शताब्दीक चतुर्थ दशकमे गवर्नमेंट ऑफ इण्डिया एक्ट (1935) दारा देशमे संविधानक परिवर्तनसँ भेल। एहि समयक अवसान बेलामे दितीय विश-युद (1939-1945) पारंभ भेलैक तथा कतिपय नव-नव पत्रिका साहित्य जगतमे पवेश कयलक। विगत शताब्दीक षष्ठ दशकमे अनेक पत्रिका पकाशित भेल जाहिमे वैदेही (1950) एवं *मिथिला दर्शन (*1953*)* मैथिली साहित्यक नव-निर्माण अहम् भूमिकाक निर्माणे नहि कएलक पत्युत रचनाकार संगहि पाठक वर्गक निर्माण कयलक। युग-सन्धिक उत्कर्ष बेलामे गोट बीमेक पत्रिका चलैत रहल अछि जाहिमे कोलकातासँ पकाशित कर्णामृत विगत 26 वर्षसँ अनवरत चलैत रहल अछि, किन्तु शेष पत्रिकादि कखन काल कवलित भ' जायत ओ तँ भविष्यपर निर्भर करैत।

पकाशनप

विगत एि तिषान सहसाब्दी मैविलीक जे उत्करष जनमानसक समक पस्तुत अवि तकि जिलिहत साकी विक जे साक्हत्य क्मताक संगक्ह-संग पकाशनक सौविध्यक फलसरिप मैविली साक्हत्यमे विपुल पविमाणमे गद-पद साक्हत्यक पकाशन भेल अवि, तकि शेय आ पेय मैविली अकादमी आ साक्हत्य अकादेमीके िक। मैविली अकादमी दाि विविधि विधाक्दक स्तरीय गंि अदाक लगभग अढाय सय ति साक्हत्य अकादेमी दाि डेढ सय गहिक पकाशन भ' सकल अवि। एक्ह दक सँ कोलकाताक पिसिी संसिाक्दके िक जे ओतएसँ विविधि-विधाक्दक सहसाक्धक मौक्लक अनूक्दत पुस्तकक पकाशन संभि भ' सकल अवि जे एक पक्तमान पस्तुत करिि। एक्ह क्दशामे चेतना सक्मक्त अदष शतकसँ बेशी पुस्तकक पकाशन कयलक अवि जे उल्लेख्य योग्य अवि। ित्ष्मान पविपेक्यमे पयोजन अवि जे अह्याह्य संसिाक्द जे पुस्तक पकाशनमे सक्रय अवि तकि क्सलक्सलेिि ढंगसँ पुस्तक-पकाशनमे सहयोग देवि। एक्हसँ अक्तवितत कक्तपय साक्हक्यक संसिि ति लेखक लोकक्न अपन रक्चक अनुकूल साक्हक्यक पकाशन क' कए एकिि समक्ि्षत कबिाक क्दशामे संलग्न िवि जे एक्ह साक्हत्यक िढिके सुदढ कयलक अवि। युग-सक्न्धक उत्करष बेलामे जेना पुस्तक पकाशनक बाक्ढ आक्ब गेल अवि।

मक्हला साक्हत्यकाकि पादुभािि

सितिहत्तयोति साहित्याहत्तगत्त जनजागणिक जे महत्त फूकल गेल तकि महिला साहित्यकापिि अत्यहत्त तीरि पभाि पडल। विगत शताब्दीमे पुरर लेखकक समानहि महिला लेखक पचुि पविमाणमे साहित्यक पत्येक विधामे अपन उपकसित दजषकौलकि जकाि नहि असीकालि जा सकैि। शताब्दीक सहसध-बेलामे महिला साहित्यकाकि कत्तिकि अगािहनोपाहत्त स्पष पत्ताभाक्त होइत अवि, जे हुनकामे साहित्य-साधनाक अपविमित समभािना िकत। हुनका सभक िचनाक कमता एिि गुणतिा दुनू दवा एँ उल्लेखनीय अवि। साहित्यक केतमे कवि लाचलक नाििि समाजक जागिण विगत शताब्दीक अदषातकक पशात् भेल जे सािवधक महत्िपूणष उपलबध विक। महिलामे साहित्यक अवभरक्त जगयबाक शेय िक मैविली पत्तकाक्दके जकि कतिपय उदाहिण अवि। साहित्यक कोनो एहन विधा बाकी नहि अवि जाहिमे ई लोकिन अपन हस्ताकि नहि कयलकि। हमिि दवा एँ हुनका सभमे साहित्य-साधनाक अपविमित समभािना युग-सहसधक उत्करषे स्पष पविलकत्त भ' िहल अवि।

विविध गदप

युग सहसधक उत्करष बेलामे मैविलीमे आत्मकिा, जीिनी, याता, संस्मिण, साकात्कािि आ पविचचा विरियपि साहित्य पाठकक समक आयल अवि। विविन पत्तकाक्दमे समय-समयपि एहन िचनाक्द अशिय पकाक्षत भेल अवि, कहत्तु ओ सभ पकाशनाभाकि कािणे धूल-धूसवित भ' िहल अवि। ितषान शताब्दीक पिम दशाब्दमे बजककशोिि मिा '*मवणपद* ' *क* एक अनमोल संस्मिण पकाशमे आयल अवि, '*हुनकासँ* ' *भेट भेल िल (*2004*)* जकि समपादन कयलकि पेमशंकि वसंह एिि इह्द्रमोहनलाल दास, जे अत्यवधक

चक्षुष्मा-अक्षुष्मा भेल अछि। एकर माध्यमे मैथिलीक अनेक कीर्तिपुरुषक व्यक्तित्व ओ कृतित्वक संगहि मैथिलीक सांस्कृतिक चेतना तथा भौगोलिक परिस्थितिक वर्णन क' मैथिली पाठकके अनुप्राणित कयल गेल अछि।

संस्थागत सक्रिय सहभागिताक

मैथिली साहित्यक उत्कर्ष बेलामे विगत शताब्दीमे मातृभाषानुरागी लोकनिक सक्रिय सहभागिताक फलस्वरूप मैथिली भाषा आ साहित्यक उन्नयनार्थ भारतिक विभिन्न क्षेत्रमे यथा- मैथिल महासभा (1910), मैथिल हित सम्मेलन (1910), मैथिली तरुण (1918), मैथिल विद्यार्थी समाज (1919), मैथिल सम्मेलन (1923), मैथिल युवक संघ (1930), मैथिली साहित्य परिषद (1930), मैथिली लोक संघ (1947), अखिल भारतीय मैथिली साहित्य समिति (1950), चेतना समिति (1954), कर्णगोष्ठी (1974) आदि-आदि साहित्यिक संस्थाक प्रादुर्भाव भेल जे योजनाबद्ध रूपे मनसा - वाचा-कर्मणा दत्तचित्त भ' कार्यरत भेल, जकर फलस्वरूप एकर विकासक अविरल मार्ग शनैः-शनैः प्रशस्त होइत गेल। सन् 1947 ई.मे विश्व लेखक सम्मेलन पी.ई.एन.मे, 1960 ई. मे इलाहाबादमे एवं 1963 ई. मे दिल्लीमे पुस्तक प्रदर्शनीक फलस्वरूप 1965 ई. मे साहित्य अकादेमीमे आ वर्तमान शताब्दीमे भारतीय संविधानमे एकरा भाषा आऽ साहित्यके अष्टम अनुसूचीमे एक प्राचीन भाषाक रूपमे मान्यता भेटलाक तत्पश्चात् एकर विकासक गति तीव्रतर होइत गेल।

वर्तमान परिप्रेक्ष्यमे प्रयोजन अछि जे समग्र संस्थागत क्रियाकलापक ढंगसँ अनुसंधान क' कए तथ्योपलब्ध ऐतिहासिक विवेचनक लेखा-

जोखा पस्तुत कयल जाय जे भावी पीढीके ई क्दशा कादेश कति। एकह पकाकि संसावद्क संख्या बड वशाल अवि ते ऐवतहावसक वतक लेखा-जोखा कबि आवश्यक अवि।

कःसाणिप

युग-सक्ष्मक उत्करष बेलामे बीसम शताब्दीके सविपष काल उदोवरत कबिाक-पावि कवतपय आवषक, ऐवतहावसक, धावमषक, वजनैवतक, सास्कवतक आ सामावजक तत्वि पवपिेक्ष्यमे मैविली सावहत्यक उनयनावषजे कक्या-कलाप भेल तकि वस्तवि रपे ववणि पस्तुत कबि एक दुष्ि कायषवि तावप सावहवत्यक गविकसँ उल्लेख योग्य पवविस्कि एि पवविशिमे एकवि सविपष काल उदघोवरत कबिाक उपकम कयल गेल अवि। वगत शताब्दीक मैविली सावहत्य जावह सजीविता, पवतभा आ ववभन ववचावदशष आ गवतववधक पवचिय दैत अवि ओकवि जवडमे जावह पकावि उनैसम शताब्दीक उतविधषे जमल ओवहना बीसम शताब्दीक उतविधषक बौवद्क कक्याशीलताक पूविभास हमवि भेटैवि।

विषान पवपिेक्ष्यमे ई शेय आ पेय बीसम शताब्दीके विक जे आलोच्य कालक सविष्मक महत्पूणष उपलवष वि क गद-सावहत्य। जतय एक भाग पविपावगत मैविली सावहत्य अपन बह्धनमे बविबवि बवहने हिल आ अपनाके मेटबैत हिल ओतय वनशये अभूतपूषि आ वास्सहन्देह गदक रपमे पवतवष त भेल। आलोच्य कालीन गद मैविली सावहत्यमे एक नवि युगक अविति ण कयलक। सावहत्यैवतहासमे कमबद पविपावि एवह शताब्दीक महतपूणष अविदान वि क जे अपन भववष्यक पवत आशाक सम्बल लेने सावहत्यमे पविशि कयलक आ ओकवि शब्दकोशमे आशयषजनक वद्ि भेलैक। वस्तुतः

आलोच्य शताब्दी गद-युग वि क जे अतिाणिा आलोच्यकालीन गद वि क।

युगसक्न्धक उह्मेरबेलामे गद जगतक संगक्ह संग काव्य जगतक अभूतपूि षि समागम एक्ह कालाविधमे भेल जे मैविली साक्हत्याह्तगष्ठा कक्तपय नि-नि विधाक्दक जह्म भेलैक, ओकि संस्काि भेलैक आ ओकि पचाि-पसाि दुतगक्ताएँ भेलैक आ भ' हिल अवि जे तिषान सह्दभष्मे ओ साक्हत्यक सिविधक पमुख अंग बक्त क' अपन अवक्स्तति के सुिक्क्षत कयलक आ लोकवपय भ' गेल अवि। तिषानमे साक्हत्यक कोनो एहन विधा नक्ह अवि जाक्हमे क्ताल-क्ताल नूतनताक संचाि नक्ह भ' हिल हो आ साक्हत्य नि स्पंदनसँ भवि गेल अवि। ति्षामान समयमे हमिा लोकक्त अपन मातभाराक अत्यह्त समीपमे िी आ एक्हमे कक्तपय उलिनि आ सह्देहपूणष सिलि अवि। तािवप क्तस्सह्देह कहल जा सकैि जे मैविली जीनिक सहसाब्दीक कालाविध मानक्सक उिलि-पुिलि आ बौक्दक काक्ह्तक संवध-सिलि वि क। विवधि-धाािा अह्तधाािक बीच तिषानमे हम मैविली साक्हत्यक संवध सिलपि क्सिि भ' नियुगक आशा भिलि पतीक्त क' हिल िी। गेटेक कििनि क्ति *'िी क्ताड यू होप-'* इक्तहास हमिा एक्हसँ नीक संदेश नक्ह द' सकैि।

■

सामावजक वि ति्साक जीनि ि

उनैसम शताब्दीक पंचम दशकमे आधुक्नक मैविली साक्हत्यक क्व्तजपि एक पक्तभासम्पन साक्हत्य मनीरीक आविभावि भेल जे अपन नाक्ह्मेरशाक्लनी पक्तभाक पसादात पविपदीक्प पकाश पुञसँ बीसम शताब्दीक पिम दशक धवि अबैत-अबैत मैविली नाटय-साक्हत्यक पूविपिति पमिमावमे काक्हतकावि पविवितिषा आक्न, पिविति युगक नाटयकावि लोकक्नक हेतु एक उह्मेर, नमोह्मेरक नेततवि नविीन नाटय गदक जनक, पगक्तशील विचाकि, संविदनशील मनोक्ि, कल्पनाशील मक्स्तषक, सिि िमाचक अनुभूक्त एिि मैविल समाजमे पविक्याप्त समस्याक पक्त अक्तसाकाक भ' समाजके क्दशा-क्नदेश कबिाक स्तुत्य पयास कयलक्न, ओ हिवि शलाका पुरर कवििि जीनि ि (1848-1912)। िजदबािसँ सम्पोक्रत क्हतहुँ ओ जन-जनमे चेतनाक दीप जिौलक्न, कण-कणमे उत्साह पसाविलक्न आ क्ण-क्णमे सजषाक क्दशा क्नक्दष कयलक्न। युगपुरर जीनि िक समसामक्यक समाज आ साक्हत्य बौक्दक उतेजनाक लहविसँ गुजवि हिल िल। िजनीक्त, समाजनीक्त, अिषीक्त, धमषीक्त, संस्कक्त, संगीत, नाटक एिि क्यतकाविपि िजाक्नक पभाकि फलसििप पविदिषा, पविवितिषा, पविमाजषा पािम्भ भ' गेल िलैक। क्शाकाक निज्योक्तक फलसििप सास्ककक्तक, सामावजक एिि आविषक चेतनाक उदय भेल, जकि सिभाविकि अवभव्यक्त क्हनक नाटकाक्दक पमुख

केह्न्द विह्न्दु विक।

ओ एक दूरदिशी साव्हत्य क्यह्तक सदश आशा-क्ताशाक क्मलन-विह्न्दुपर जनमानसके देखलक्त। ओ नैराश्यक अह्न्धकारमे आशाक दीप जरौलक्त। युगीन परिस्थिरिके नीक जका क्यह्न्हलक्त तरि युगानुभूक्त एर्ं कालक सत्यताक कोनो क्स्थक्तके अक्भव्यतत करबाक शक्ततके दक्मत नव्ह क' पौलक्त। सामाव्जक रिरारिणक विक्शष सह्न्दभषे सामाव्जक वरिमताक हुँकार, तत्कालीन सामाव्जक, आर्वषक एर्ं सास्कृक्तक क्स्थक्तक उपस्थापनमे अक्त पुरर पमाक्णत भेलाह। सामाव्जक, सास्कृक्तक एर्ं आर्वषक दक्ष सँ जखन हम व्हनक नाटकाव्दक परीक्ण-क्तरीक्ण करैत री, तखन हम ओकरि समसामव्यक सामाव्जक क्स्थक्तक दपषा, सास्कृक्तक भिरकि धारहिर आ आर्वषक विपनतासँ संतस्त समाजक यरािषएलबम कव्ह सकैत री। ई सर्षक्दत सत्य विक जे ओव्ह कक्तकारकि कक्ततर अक्य हैरि, जे सास्कृक्तक, सामाव्जक एर्ं आर्वषक जीनिक रिस्तविकि पक्तक्व्यत करैरि, जक्तका हदयमे उपयुक्तातक पक्त पूणषआस्था हैरि तरि ओकरि अधःपतनके जन मानसक समक रिखाक्कत क' सचेष हेबाक पेरिणा दैरि, कारिण साव्हत्य तँ हमरि जीनिानुभूक्तके पक्तविक्म्बत करैरि।

युगपुरर जीनि राक नाटकाव्दक पेरिणासोत विक नरीन जागरिणक ज्योक्त। अपन सजग आँव्खएँ ओ देश-देशाह्न्तरकि विकासोह्न्मुख गक्तविक्धपर दक्ष ककेप्र कयलक्त, एव्ह वरियक अनुभरि कयलक्त जे मैविल समाजमे नरिजागरिणक अभारि अरि। ई अपन नाटकक करिनकक चयनक क्रक्मत क्रविलाक, सामाव्जक, सास्कृक्तक एर्ं आर्वषक क्स्थक्त व्हस दकपात कयलक्त तरि अपन युगक रिस्तविकि

समसामयिक वस्‍तिवाक र पायन ओकहमे कयलक।

संस्कृत पण्डित विकतहुँ जीनि ि आधुनिकताक पूणषकपाती अपन कवतातिमे दका गत होइत वि । मार्विलाचलमे पविव्याप्त ि ि िक्क्क समस्या िल तकि केन्द्र-बान्दु बनाय सामाविजक ितािणिक विशेष सह्दभषे देशकालाक कामत नाटकक माध्यमे जन-आन्दोलनक पेिणा देलक, कािण मार्विलामोद ओ मैविल महासभाक आविभािसँ पूिहि ई अपन नाटयकतामे ओकि समाधानािष विचािि पस्तुत कयलक। मैविल समाजमे वालक-दहेज, जाि-पाविजक नामपि कह्यापि होइत अत्याचािि एिि अह्याय एिि अह्य सामाविजक कुपिािपि पत्यक ि पिोक र पे अपन आलोचनात्मक दका कोण जनसामाह्यक समक पस्तुत कयलक।

सामाविजक पष भूमिके आधाि बनाय ई मैविलीमे नाटय-लेखनक शुभािम्भ कयलक। वहनक तीन सम्पूणष नाटक सुह्दि संयोग (1904), *सामािती पुनजषम, नमषदा सागि सटक* एिि खण्डित *मैविली सटक* समकालीन सामाविजक, सास्कृवताक एिि आविषक पविस्िविताक उदेश्य वाधाािणिमे सहायक होइि। िस्तुतः वहनक नाटकाद्मे मैविल समाजक विशास एिि संस्काकि पवतविम्ब भेटैि, जकि माध्यमे ओ उच्च जीिनिक पवतषाक आकाकी भेलाह। वहनक सम्पूणष नाटय-सावहत्यमे व्याप्त सामाविजक, सास्कृवतक एिि आविषक सताकि सवाशिक कािणे मार्विलाचलक ितािणिमे पविव्याप्त अवि।

विािहक चौमुखी समस्यापि आधावित िसिना, पेम, वमलन आ विािह यदवा वहनक नाटकक केन्द्र-वान्दु विक, जकि समाजशास्त्रीय एिि भाराशास्त्रीय अध्ययन अपेकणीय अवि। सामाविजक ितािणिक

विशेष सहृदभषे मैथिल सामाजिक जीवनक अवधकाव्धक पामाणिक रप सुहृदि संयोग एवं नमषा सागि सटक मे पस्तुत कबामे ओ सफलता पाप्त कयलक। क्हनक नाटकाद्द मात मनोरंजिनक हेतु नक्ह, पत्युत जीवनिक गम्भीर समस्याक समाधान कबाक उदेश्यसँ उत्पेवित भ' चिना कयलक। एकि नायक-नायिका क्वविलाचलक पिम्पिागित कुलीन पिाक रप पदर्शा कर्ीि। यदवा 'सामिती पुनजन्म' क कािनक पौाविणक पष्ठभूमपि आधावित अवि, तावि ओकि पत्येक पात समसामयिक समाज, संस्कृत्ति एवं आविषिक पष्ठभूममे उताविल गेल अवि।

'सुहृदि संयोग' मे नाटयकाि समाजक ओक्ह मानक्सक क्सविक्तक विश्लेरण कयलक्त अवि, जे जाक्त-पाक्त, कुलीनता, क्वकौआ पिापि पचक्लत बहु-विविाह आ पती-पिवत्यागक सन विकिक्तसँ उत्पन्न होइत ि ल। तािकविवत कुलीनजन अनेक क्वयाह कवित िहिवि आ पतीके नैहिमि िविक्ड दैत िहिवि। भलमानुसक पतीक जीवनि गक्त इएह िलैक। विविाह क कए जावि आ' जीवनि भवि िपिस नक्ह आबवि। दाम्पत्य सुख एहन कह्याक कक्ष्यत जीवनि भवि अननभूत सत्य बनल क्हि जाइत िलैक। ओ ने तँ कुमावि िहैत िल आ िस्तिमि सधवि। सधवि क्हितो िधिक्य-िदना सहैत िहैत िल। एहन क्सविक्तक क्यतण क्मसि पंक्त्तिमे क्यक्त भेल अवि

सीमह्तक क्सह्दूिकि िखासँ िी हम धनमह्ती।
हािकि दू लहठीसँ होइि सधवािमे क्नत गनती।

क्ववि लाचलमे कुलीनताक बलपि पक्तािरषविविाह कबि सामान्य बात िल। समाजमे एहन पिम्पिि पचक्लत िलैक जे एक ठाम विविाह आ चतुवि सम्मान क' कए दोसि ठाम पुनः विविाह कवित िलाह।

कुलीन व्यक्तित विहिोपिह्नत पलक्ट क’ जयबाक पयोजन नक्ह बुित हिवि। समयक कममे अपन पतीक आकक्त आ सासुकि लोकके क्वासवि जावि। अत्यल्प पविचियक काणिे सि-कुटुम्बके नक्ह क्यह्नब तँ सिषिा सिभाविक।

एहन विरम क्सिक्तमे कह्याक माता-क्पता, समाज आ कह्याके केहन मानक्सक यातना होइत लैक, क्नाशा आ विरादसँ आनि मनःक्सिक्तमे कोना जीनि-यापन कैति िल मे सितिः कल्पनातीत िल। कोनो सौभाग्यशाक्लनी कह्याके पुनः दाम्पत्य जीनि पाप्त होयतैक, कतेक उल्लास होयतैक, केहन हरष होयतैक, ओहो काल्पक्नक अवि।

क्मविलाचलमे पचक्लत कह्यादानी शब्द ओही पविणीता; क्कह्तु पविक्स्थतता नाकि यातनामय इक्तहासके अपनामे समेटने अवि।

युगपुरर जीनि िाक समसामक्यक सामाक्जक िताािणिमे पिभािा पविक्याप्त िल। सामाक्जक जीनि मे ई पक्तष ाक विरय िल। नाटककाि एक्ह सामाक्जक पविक्सिक्तसँ पूणष अिगत हिवि। एकि दुष्पभाकि ओ अनुभि कयने हिवि। समाजक ओक्ह पविशिमे कह्यापकक मानक्सक अह्तदषद्धके ओ सुह्दि संयोगमे अक्भव्यतत कयलक्न। समाजक समक ओ सुह्दि क्मश सदश आदशष पुररक रपमे पस्तुत कयलक्न।

सुह्दि क्मश अपन सासुकि पत्येक व्यक्तत, अपन पतीके तखने क्यह्न जाइत िवि, जखन हिदत पण्डा हुनक ससुकि पूिषपुरिखाक नाम गाम बाचैत िवि। ओ चतुिी क्दन पतीक असिसिताक काणिे सासुि िाक्ड देने हिवि। ओ अपन पती पयह्तके नक्ह क्यह्न पौने हिवि। इएह क्सिक्त तँ सिलाक ओकि माय, ओकि पविािि,

ओकि सखी-बहिनपा ओ समाजक छलैक। किन्तु सभक मन मे आशाक किरणि छलैक जे भलमानुस सुहृदि काश विहि क' कए चल गेलाह तँ आने काकौआ छि जका नहि जे आबवि। एहि मानिसकताक अवभव्यक्ति ससितीक कनि मे अवभव्यतत भेल अवि। जखन ओ दिनाकि पाषिा कति विि; *'हे दिनाथि! जे जे कबुला कैल सभ मनोरथि पुलि, आब जमाइके कुशल पूषि देखी मे छिदान करिअ '* (सुहृदि संयोग, पष 12)।

ससितीक मनोभािव अत्यधिक पल्लवति भेल अवि, जखन ओ अनचीहिहेमे (अपन जमाय) सुहृदि काशके कहैत विनि, *हे बाबू! बड पुण्य हैत तँ एकि ई थिस भेलैक जमाय चुतुविषअवहक दिन एकि दुखत बिडके जे गेलाह मे आइ धवि उदेशो ने पबै वि ऐहि!* *(सुहृदि संयोग, पष -14)।*

जखन पण्डाइन संकेत कति विनि जे पविण्डत बाबू सलिाक छि विकविनि तखन हुनक कािशा व्यतत होइत छथि, *'एहन भाग गहमि कहा जे जमायके देखब पहिनु दिनाि बड गोट विकाह।'* *(सुहृदि-संयोग, पष -19)*

सलिाक मनोव्यथिा ताति धवि अव्यतत हैि जाति धवि ओकि संकेत नहि भेटैि जे पविण्डत बाबू समभतिः ओकि छि विकविनि। ततपशात् ओकि विहि व्यथिाक अवभव्यक्ति भेल अवि। मुदा ओ सामाह्य विहि नहि विक। सलिाक कनि गद आ गीतमे सामािजक पविशि-जह्य विराद बजैत अवि, हे दिनाि! *ऐ तहि दुखनीके करए सतबैत हिक।* (*सुहृदि-संयोग, पष -20*) मे *'दुखनी* ' शब्दक मािकषकताक अनुभूवित तखने भ' सकैि, जखन ओहि समयक सामािजक पविशिक अनुभि हो। ओहि सामािजक कुपािक

पष भूकमे सलिाक कनि विशेराषिबोध भ' जाइ;

एतक्दन क्शापिद मेलि, केलि एतबक्ह काज।

मे पसन िि भारल ाखिल मोि कुल लाज॥

(सुह्दि संयोग, पष -18)

बुि देमक चाही कौखना अनजानके कक्नए।

जे ई अपधि िै तोहि क्कए हमिसिँ रसल िी॥

(सुह्दि संयोग, पष -19)

सलिाक विहि समाजशास्तीय विरय विक जे समाजक पवक्सिक्तसँ उत्पन भेल अवि। एक्ह तथ्यके टयकाि अह्तमे स्पष कौति विि। सुह्दि सासुसिँ गाम जयबाक जखन पस्ताि कौति विि, तखन उक्दग्त भ' जाइ, '*हमि बुवि पौिए जे एक्ह लोकक मन फेवि अह्तऽ गेलैक।" (सुह्दि संयोग, पष -33)*। ओऽ सुह्दिके कहैत विनि, *औि नक्ह कि, जे फेवि ओएह बाहिमासा सबने गाबक पडै (सुह्दि संयोग, पष -34)।*

सुह्दि जखन ओक्ह बाहिमासा गीतक वजासा कौति विनि तँ सलिाक उति विक, '*िओ मासक पाप्त खन लोक ाजि जे आब नक्ह औिनि तखनसँ कादम्बिाी बक्हनक संग इएह गीत सब गबै िलहुँ। (सुह्दि संयोग, पष -34)*

सुह्दि संयोग नाटकक कािनक सामाह्य पेम-किाक पवक्धिमे नक्ह ाखिल जा सकैि। ओ विक मैविल समाजमे पचक्लत नािी-यातनाक मानस-इक्तकिा। पकाह्तिा नाटयकाि ओक्ह पिक पक्त अरक्य पदक्शषा कौति समाधान रपमे सुह्दि सदश आदशपुरक पयोजनीयता देखौलक्त। सुह्दिमे आदशपक्तक पाण पक्तषा क' कए नाटयकाि समाजके काह्ता सम्मक्त उपदेश देलक्त।

कहनक नाटकमे कवि लाक सामाकजक जीनिमे वयाप्त वि ाि हि सम्बन्धी कुपि ाक्दक पक्ष आलोचनात्मक दक्ष कोण पक्षफकलत भेल अवि , तकि वि श्लेरणसँ पक्षभाकरत होइि जे नाटककाि सामाकजक सुधाकि पक्ष पूणषतः साकाक हिवि । वि ाि हि सदश अक्षमहत पूणष संयोजनमे कािँहि पाती होइि , कहया सामि ती पुनजषमक पस्तानिामे नटीक कि नि वि कप

कहया कुल मयादामे बाह्कल फूजय मुँह न बकाि ।

(सामि ती पुनजषम, पष -3)

समाजमे कहयाके पुतक अपेक्षा हयून मानल जाइत अवि जे सि ाि अनुकचत। ते तँ गौतमीक कि नि वि क; '*तखन पुत ि ि कहया दु टा संसाि मे हैै ि क। हम तँ बकड पसन ि ि ।*' *(सामि ती पुनजषम पष -23)*

जीनि ि ि कालीन कवि लाचलक समाज दुइ ि गषसमपन एिं वि पिन ि गषमे वि भाकजत ि ल। ताकह काि णे सि जाक्षमे जाक्ष-पाकज, कुलीन-अकुलीन, सोक्ष-जोग, भलमानुर, जयि ि , पकठयाि इतयाकदक वि चाि समाजमे घून जका लागल ि लैक। एकि फलसि ि प कहया-वि कय, कनकौआ पि ि , बहुवि ाि हि पि ि आ अनेक अमानुरक समस्याके जन्म दैत ि ल। ई शेय युगपुरर जीनि ि ि के ि कि जे अपन नाटकक माध्यमे एकि साकात वि ाि ध कबिाक साहस कयलक। नमषदा सागि सटक''क सुहदि कमश तकि जि लहन्त पमाण ि वि । मोदन कमश सुहदि कमशके नीक जाक्ष-पाकजक ि ि कावि किम ठाकुि कि संग नमषदाक वि ाि हि कयिबाक वि चाि दैत अपन मतक समि षषमे कहैत ि वि प

कुलहीन जमाय अधीन कुलीन सुता अनुताप सदा सहती।

बक्स नीच मनुष्यक बीच यिक्यत नीच किा कहती सुनती। ।
पक्छयाि अगाि आचाि-विचाि विचावि विचावि क्याि सहती।
पविीि समान जहा न तहा भविजन्म कोना सुख सैँ हिती॥

(कविीि जीनि िा चिनािली, पष -107)

उपयुक्षत पंक्ततमे कह्याक क्यताक मानक्सक क्याि क तिा सामाक्जक क्यसिा, ओकि पविीशि आ पविक्सिक्तक िखाकन नाटककाि अत्यह्त सूक्ष्मताक संग क' कए समाजके क्दशा-क्देश किबाक उपकम कयलक्न। एक्हपि सुह्दि क्षशक किनि िक्तप

उतम जाक्त जमाय असङ्त कष सुता सभ काल जनाउक्त।
सासु दयाक्दन आक्द अनादि िदि कि कुल िट गनाउक्त। ।
जीउक्त जौ सक्ह गावि कदाक्यत् मातु-क्षता क्हत बह्धु कनाउक्त।
ई असमञ्जस हैत क्ताि षक ऊँचक सङ जे नीच िनाउक्त॥

(कविीि जीनि िा चिनािली पष -107)

नाटककाि सामाक्जक िताििणिमे पविव्याप्त िीिक्हक पिाक पसंगमे अपन विचाि क्यतत कैति ओकि मात आलोचने नक्ह कयलक्न, पत्युत एहन िीिक्हक सम्बह्धक पसंगपि तीक्ष्ण क्यंग्य मेहो कयलक्न तिा समाजके सुधबाक संकेत देलक्न।

सामिती पुनजाक्षमे बह्धुजीकि विकौआ मनोक्ति आ पुनर्विाहि किबाक चेष ाक पक्ष सािसिति ओ िदक्मतक क्तासिकाि भािसँ नाटककाकि क्यक्ततगत विचाि धािक पविचय भेटैत अवि। एक्ह पसंगमे बह्धुजीकि किनि िक्तप

जे हमि ठुनकाबर्वि मे लय पव्हांि िङ।
हम पुक्त कतहु विकायब पोसब अपन समाङ।
(सामिती पुनजन्म, पष्ठ.39)

उपयुक्तात कनिमे विकौआ पिक क्लद्दाक स्पष िलक भेटैत अवि। सामिती पुनजन्ममे घटक दाि सासितिके ि पकसँ टाका गनयबाक पस्तापिि ससितिक *उतकि अिलोकन कर, 'ि ि टाकाक चचा कोन हमि तेहन मैती अवि आ ओ ततेटा व्यक्त्त िवि जे एहन कि सुक्त टाका तँ गक्त देताह। पहिुं असहतोर* हयतैक्ह। ई कि पुक्त जक्त बाजी''। (सामिती पुनजन्म, पष - 46)।

नमष्ठा सागि सटकमे क्तविकिम ठाकुि क्दससँ नमष्ठाक पक्त टाका गनयबाक घटकक पस्तापिि सुह्दि क्तशक विपिंित पक्तक्रयाक संग देल गेल उतपि

क्ताता आक्त ि कह्या का िसिन-विभूरण-युतत।
सादि अपषा मह्तति मे विीहि विक्षि युतत॥
(कविीि जीनि ि चिनालिी, पष -109)

क्तविलाचलक समाजमे पचक्लत क्तयमानुकूल िीव्हक सम्पकष सिापत्यि षि घटक-पव्जआडक क्तयोजन एक आिश्यिक उपादान विकि। युगपुरर जीनि िाक चाहे सामाव्जक नाटक हो ि पौिािणक ओ अपन पत्येक नाटकमे एकि क्तयोजन कयलक्त अवि। सामिती पुनजन्ममे मेहो घटक पव्जआडक क्तयोजन कयल गेल अवि। जखन सासिति आ दिि क्तातक बीच अपन सह्तानक विीहाषि सीीकक्त भेटैि तखन दिक्तातक कनि िक्त, *यदक्ता बाहणक विीहिमे अपद क्तयय कोना ने हैइ िक तािक्ता घटक-*

पवजआड जे कहताह ततबा टाका त अशिय ओवआि लेबै पडत।

(सामतिी पुनजन्म, पष -4)

अकपिुरर जीनि ि ि कवि लाचलक सामावजक जीनिसँ कापिैक नव्ह भ' सकलाह ते क्हनक नाटकाक्मे सबठाम सामावजक िताि िणिक विशष सहृद्भषक संगक्ह-संग सास्कक्ताक एि आविषक जीनिक अक्त यािि ष पक्तकव्धत करिि। क्हनक समस्त नाटक जनसामाह्यक काकरपि अकसिः सत्यताक आि िणिसँ आचि ाक्दत अवि जाक्हमे आशा-आकाका, आचाि-विचाि, आमोद-पमोद, स्ती-पुररक सुख-दुःख, ि हिन-सहन, खान-पान, ि शि-भूरा, भाि-भारा, ि जिनीक्त आक्दक यािि ष पविचय भेटैत अवि। ओ कवि लाक सास्कक्ताक पिमाि िक पबल समिषक ि हवि जकि पक्तर प क्हनक नाटकाक्मे सि ल-सि लपि उपलब्ध होइि। मैवि ल संस्कक्ताक अनुरप विाि ह पूि ष घटक-पवजआडक कायोजन हमि सास्कक्ताक पिमाि िक अनुरप समाजमे पचक्लत कायमानुकूल िि िक्हक सम्पकष सिापत्यिष घटक-पवजआडक कायोजन आिश्यक अवि। सामतिी पुनजन्म एिं नमषा सागि सटकमे जे घटक-पवजआडक चचा भेल अवि ओ सिषि ा मैवि ल संस्कक्ताक अनुकूलक्ह अवि।

जतेक दूि धवि ि शिभूराक पशन अवि क्हनक नाटकाह्तगष विशुद रपे मैवि ल संस्कक्ताक अनुरपक्ह पातक ि शिभूराक संग साकात्काि होइि। नमषा सागि सटकक घटकािजक सिरपक तँ अिलोकन करप

जैखन देखल लटपि पाग।
धोती तौनी नोक्सक दाग॥
कयलक लोक गाम घि त्याग।

हमरि हृदय भेल अनुरागि॥

(कविरि जीनि ि चिनालिी पष -17)

हारिमे फाटिठी कि, असिरि वशिरेक काणि हुनक डारि पयक्षत ि ुक्क गेल कि, पाग लटपरि कि। एहन शि-भूराके देखख लोकके घटकके कहलहब कनेको भाङठ नक्ह होइत किप

ओ जेना लि केहन उकाठी।
उचक्क पडायल हमरि फाटिठी॥
बीतल यिस रिषकि साठी।
पैनि सोरि पडय कानु लाठी॥
जौँ जक्तहुँ एक्ह गामक ढाठी।
तौँ न आक्य भक्सअइतहुँ भाठी॥

(कविरि जीनि ि चिनालिी, पष -95)

एक्हमे नाटककारि कविलामे िीक्हक असिपिरि घटकक कतथ्यपायिणता तारि ओकरि शि-भूराक यारिषिकस्कताक कातण अत्यहत्त मावाषकताक संग कयलक्स अवि।

सास्कृक्ताक पविदिशयमे कविलामे पदा पिरिक पालन सामाक्जक िीक्त-नीक्तक अनुकूलक्ह क्हनक नाटकाव्दमे किलाषा अवि। एक्ह पिरिक अनुसारि ससुि-भैसुि ि पविरिकि शेष व्यक्ततक समक ि अपविक्चत व्यक्ततक समक कविलाचलक मक्हला नक्ह जाइत वि। एक्ह पिरिक अनुरपक्ह कादम्बारी एरि अकभानिनी एक्ह हिस्ययसँ अगित क्हितहुँ जे सुह्दरि काक्शात र पे सलिाक पक्त विकवि न तावाि ओ सभ आत्मीयता नक्ह पदक्शाषा कतै वि। सुह्दकि मेहो अनुभरि होमय लगैत कि जे सलिा हुनक पत्नी विनि, कत्तहु मयादाक पालनारिषओ अपन िास्तविकि पविचिय नक्ह उदघाक्टत कतै वि।

सास्कृतिक पर्विशिक कयोजनक दका एँ जखन कहनक नाटय साकृत्यक विश्लेरण कति ि तँ स्पष पकाभावत होइि, जे युगपुर र जीनि ि कविलाक संस्कृतक अनुर पक फगुआक हुडदंगक कतण सामिती पुनजम्ममे कयलक अवि। विदिभृीज सपर्विाि बैसल िवि आ मदंग िदि सकृत हुनक िजय श्य़िा कलाििती नचैत अवि आ गीत गबैत अविप

िङ िस होिि हो। गाबह सब कल िङ॥

हिकस-हिकस सब फागु सुहावान गाबय मनक उमङ।

पहु पिदेश विताओल हमि (सर्वि खहे) भेल मनोिि भङ॥

(सामिती पुनजम्म, पष -14)

एक नाटकक होकलकोत्सिक दश्य अत्यहत मनोमि अवि। िगि अबीिक पयोग सँ होिक हुडदंग मचल अवि। ओक असिपिि िजसभाक पत्येक पात िगि अबीसँ बोिल अवि। लोक होिक हुडदंग मचयबा आ उधम मचयबामे अस्त-व्यस्त अवि। िजयादेश अवि जे एक असिपिि जे अनचुिक होवि तकका एकसँ फििके िखल जाय अह्यिा िगि-अबीिक सिबोि िजयाधकाि लोकक िजभिनमे उपस्ि त िवि। िजभिन वकस जाइत नगिक शोभा ओ होकलकोत्सिक विकत र प दका गत होइि। सभ एक दोसिक संग हँसी-मजाकमे व्यस्त देखल जाइि। एक असिपिि बसहतक िजाके आशीिद दैिप

महािजक मन हििक नटी, कहो लोक अपिद।

सय िरषसँ जक जीिि घटी हम दैिि आकशािद।

(सामिती पुनजम्म, पष -14)

शलाकापुरर जीनि ाके क्षवलाक सास्कक्ताक पमि्ााकि गम्भीि अनुभि लिक्ष ते ओ अपन नाटकमे एकि पालनाि ष उपयुतत अिसि बहाि क’ लेलक्ष।

कीक्तष पुरर जीनि ि अपन नाटकाद्दमे धाक्षष्क भाि नाक क्षतण मेहो अतयह्त माक्षष्कताक संग कयलक्ष जे हुनक सास्कक्ताक पष भूक्षक पष पोरक हैबाक पमाण दैि। सामि ती पुनजष्मे अिपाजषाि ष सामिि न आ सुमेधा विदभषीजक ओतय दम्पक्ष-रपमे पूजनाि ष क्षयुतत होइत िवि। सास्कक्ताक एि धाक्षष्क पष भूक्षक पर्वपैक्षमे सुह्ुिद-संयोगक कि िनकक शीगणेश िदनाि धामक पागणसँ आम्भि होइि ति ओकि अह्त मेहो ओतक्ह भ’ जाइि। नमष्ासागि सटकमे नाटककाि कक्षलेशिमे क्षशाि चषाक चचा कयलक्ष अिव। काक्तष पूक्षषाक अिसिपि लोक स्नानाि ष गंगा-कमला जाइत अिव जे हमि सास्कक्ताक एि धाक्षष्क जीि निक अिवभाज्य अंगक रपमे क्षक्षतत अिव। सास्कक्ताक एि धाक्षष्क दक्ष एँ जखन क्ह्नक नाटकाद्दक विशलेरण किति ि तँ स्पष भ’ जाइि जे ई पमि क्षशाि भितत पियिण हिवि जे क्ह्नक नाटकाद्दमे पयुतत नचाि आ महेशिाि णीसँ भ’ जाइत अिव।

क्षवलाचलक सास्कक्ताक पष भूक्षमे एक्ह ठामक क्षासीक िवक्षशष्टय हिल अिव जे साक्तकि भोजनक पक्पाती हिलाह अिव। एतय तामसी भोजन सिषि ि क्षजष्त मानल जाइि। एक्ह पमि्ाकि पालन नाटककाि सिल-सिलपि अपन नाटक मे कयलक्ष अिव। सामि ती पुनजष्मे नाटककाि समाजमे पचक्लत निलोकक बीच मद्दिपानक पमि्ाािसँ कुब्ध भ’ एकि बक्ह्षकाि किबाक उदघोरणा कयलक्ष। एक्ह पसंगमे सुमेधाक किन िक्ष, ‘*एक्ह सभ कािणिसँ िजय क्षक्षरद*

वि क। देखू तँ मद्यपान कयने केहन लाल लाल आँखि लैकय। ि ि आब मन पसन भेल अवि मन अि गहमे पडल ि लहुँ’’। (सामिती पुनजष्म, पष -19)।

क्षवि लाचल कासीक पमुख भोज्य िस्तुमे हिल अवि ि डीमेड चूडा आ दही जकि चचा पौिणिक साक्हत्यमे मेहो यत-तत उपलब्ध होइि। नमष्वासागि सटकमे एक्ह भोज्य-सामगीक विश्लेरण नाटककाकि पमुख पक्तपाद अवि जखन घटकिजि भोजन कौति िवि प

कोि नि बै अवि नाकक पूडा।
ककहि कोि आगा बैसौले िकवड बह्है अवि जूडा॥
ि ट ि ट गट गट घटक वाडै िवि ि ि दही संग चूडा।
दुइ एक बेि पाक्त दै मक्ल मक्ल कात पसौलक्ह गूडा।
धवड एक विि लक्ह पुक्त अगुतैला सह-सह कि झि सूडा॥

(कवि ि जीिन ि ि चिनाि ली, पष -99)

कीक्तषुरर जीिन िक नाटकाक्दक वैशिष्टय एक्ह विरयके ल’ कए अवि जे क्षवि लाचलक सामाक्जक एि सास्कक्तक जीिनिक क्वतणक कममे ि िक्हक अिसिपि होम आक्दक क्यसि िक क्वक्त लाि, जाक्ति, धान, घी, जल, कुश, आवा आक्दक क्वतण सामिती पुनजष्ममे कयलक्त अवि। जक्टलके सासि ति आजा दैत िवि नप

लाि जाक्ति धान क्वउ जल कुश विषि आवा।
माडि पि सकक्वत कहि सब पुक्हित सङ लावा॥

(सामिती पुनजष्म, पष -47)

ौिक्हक विधिमे लौककक एिं ैिक्दक दुनू िक्तक पर्वपालन कयल गेल अर्वि एक्ह नाटकाहत्तगर्त। चतुिीक विधि सम्पन्न होइि संगक्ह संग भाि-दोकि चचा मेहो नाटककाि कयलक्न अर्वि।

अक्रि पुरर जीिनि ाि क्मर्वलाचलक सामाक्जक जीिनिक क्चतण अत्यहत्त कुशलताक संग कयलक्न अर्वि। सामिति पुनजर्न्म एिं नमषरा सागि सटकमे सामाक्जक िक्त नीक्तक चचा कौंि नाटयकाि जाक्ह ौिक्हक पिक उल्लेख कयलक्न अर्वि मे अत्यहत्त पाचीन पिम्पिा अर्वि। क्मर्वलाचलमे एक्ह पकािक पिा एिं पिम्पिा पचक्लत अर्वि जे ौिक्हक असिपििि एिं कहया पक्क घटक पक्जआडक क्मलान होइि, जाक्हमे पयाप्त टाकाक पयोजन पडैि जाक्हसँ िििाहक उक्चत पबहध कयल जा सकय। सामिति पुनजर्न्म एक्ह पसंगक विश्लेरण पूणि कयल गेल अर्वि। नमषरा सागि सटकमे मेहो एक्ह क्सिक्तक क्चतण भेल अर्वि। घटकिज नमषराक िििाहाषि ओ सागकि ओतय पस्तुत होइत िि तँ सामाक्जक एिं सास्कक्तक पषभूक्मे एक्ह पिम्पिाकि क्ािह कोना कौंि िि तकि अिलोकन तँ करू, '*भौजी! एहना ठाम घटक जे हयत मे लगले कोना विचाि देत? पक्जआडके जे इच्िा होइहह मे बूर्वि लै जाउ।' (कर्विि जीिनिा िचनािली, पष-97)।*

सामाक्जक क्यििािके सुदढ बनयबामे आर्वषिक क्सिक्त दढता अत्यहत्त पयोजनीय बुिना जाइि। वित विहीन क्यक्तक सामाक्जक जीिनमे कोनो मूल्य नक्ह िक्ह जाइि। अतएि जाक्ह समाजक आर्वषिक जीिनि जतेक सबल हित ओ उनक्तक पिपि अगसि भ' समाजके क्दशा-क्तदेश कििामे सक्म भ' सकैि। जतेक दूि धर्वि क्मर्वलाचलक सामाक्जक जीिनिक आर्वषिक क्सिक्तक पश अर्वि ओ

सदा सिषा आविषक विपनतासँ संतस्त हिल जकि फलसिरप कह्या-विकिय सदश कुपािक जह्म भेलैक। जीिन ि अपन नाटकाद्धमे आविषक विपनताक क्दगद्दशषा अनेक सिलपि किौलक्त अिव। सामिती पुनजषमे सामािन एि सुमेधाक िीिव्हक पसंगमे सामावजक आविषक विपनताक क्दगद्दशषा होइत अिव जे विीिहक क्तयोजनािष पचुि टाकाक पयोजनािष समाजक विपनताक क्दगद्दशषा किौलक्त अिव। एव्ह पसंगमे बह्धुजीिक किन समसामव्यक समाजक विपनताक क्यत दशषैत अिव जखन ओ कहैि, *'घिमे तैखन सुख जौ पयाप्त धन हो। हमिा तँ सतत सभ िस्तुक व्ययता लगले िहैए'। (सामिती पुनजषम, पष-20)*।

आविषक विपनताक कािणे समसामव्यक समाजाह्तगषा भीख मङनी पिाक जह्म भेल। नाटककािर सामिती पुनजषमे एव्ह पिाक यािषाक संग क्यतण कयलक्त अिव। क्षकुक बाहणक ओतय भीखक हेतु पाविषा होइत िवि, कहु पविसि िक्त िसात हुनका भीख नव्ह भेटैत िक्त।

शलाका पुरर जीिन िाके सामावजक जीिनक गम्भीि अनुभि िलक्त ते ओ सिल-सिलपि नािी दोस क्दस समाजके साकाक किौत देखल जाइत िवि। सामावजक, सास्कव्तक ति आविषक पषभूव्तमे नािीके सामावजक मयादाक पालनािष मदपान, क्तिषक भमणशील बनब, तन्ताक आहान, पक्तपि क्षपयोजन िर, दुजषा व्यक्ततक संग पिसि गमन आव्दके ओ कुल ललनाक क्तमत िव्जषा कयलक्त। एव्ह पसंगमे ओ नमषा सागि सटकमे अपन अव्तमत पगट कयलक्तप

मदपान पय्यषन पुक्त तह्दा पक्तपि िर।

दुजषा सङ पिस यैह िटा नार्विक दोर॥

(कर्वििि जीनि ि चिनािली, पष -112)

बीसम शताब्दीक पिम दशकक मैर्विली नाटय सक्हत्यक जनक अकि पुरर जीनि ि अपन समयक पकाश स्तम्भ हिर्वि जक्कक नाटकाक्दमे क्मर्विलाक सामाक्जक, सास्कक्तक एिं आर्विषक जीनिक जाक्ह सरिपक पदशषा कर्िि तकि साषिकता एक्हमे अर्वि जे नाटककाि ओकि समुक्चत समाधान ओही समस्याह्तगषा कयलक्न। युग र्विधायक जीनि ि एक्ह र्विचाधािक अत्यह्त व्यापक पभाि हुनक समसामक्यक साक्हत्यकाि लोकक्मपि पडलक्न जे पिििती युगक नाटककाि लोकक्नक हेतु एक पकाश-पुञ्ज पमाक्णत भेल। एकि शेय आ पेय कर्वििि जीनि िके क्न जे क्मर्विलाचलक तत्कालीन सामाक्जक सास्कक्तक एिं आर्विषक पर्विक्स्िक्तके नीक जका जाक्न बूर्वि क' युगक आिश्यकताके ध्यानमे िक्ख क' अपना सम्मुख जनसाधािणक दक्ष कोणके समक्ह ति क' कए मौक्लक नाटय-िक्नाक सूतपात कयलक्न ति नाटय-पणालीक सह्दभषे निीन दक्ष कोण अपनौलक्न। हुनका नाटय-िचिनाक जान क्नशये र्विस्तत िलक्न। ओ समसामक्यक समाजमे घक्टत होइत घटनाके अपन अनुभिि आधािपि र्विश्लेरण कयलक्न। आधुक्नक मैर्विली नाटय साक्हत्याह्तगषा अकि पुरर जीनि ि नाटकक केतमे सामाक्जक, सास्कक्तक एिं आर्विषक क्सिक्तक पसंगमे एक कीक्तषमान सिाक्पत कयलक्न जे एक्ह साक्हत्यक क्नकमत एक अर्विस्मािणीय ऐक्तहाक्सक घटना र्विक जे अधुनातन सह्दभषे मैर्विल समाजक हेतु क्दशाबोधक पमाक्णत भेल।

▪

मैथिली भाषाक साहित्य

ऽ गदिक भाराक अध्ययन-अनुशीलन, चिन्तन-मनन, विचिन-विश्लेरणसँ अिबोध होइत अिछ जे वैदिक युगमे तीन उपभारा पचिलत िल- '*उतिर भारा*' *मध्यक भारा*' आ '*पूर्ी मध्यक भारा*'। बाहण गर्हिक अिगहनोपािहत एहन पतीत होइत अिछ, ओही भारा सभके कमशः '*उदीच्य*,' '*मध्यदेशीय*,' एिं '*पाच्य*' भाराक नामसँ सम्बोधित कएल गेल। पाच्य बोली अदषमागधी आ मागधी पाकतक साकात माय िलीह। '*पूर्ी िहन्दी*' आ '*कौसली*' क सोत अदषमागधी िछ। एखन मागधी अपभंशक अत्याधुिनक पितिनिधत बाङला, असिमया, ओिड़या, मैथिली, मगही आ भोजपुरी क' िहल अिछ। उपयुषत पषभूिममे स्पष भ' जाइि जे मैथिली आयषभारा पिरािरक एक पाचीनतम भारा िछ। एकि उत्पित पूर्ी पाकतक पूर्ी कोष मगध विदेह पाकतसँ भेल अिछ। पाचीन उपलब्ध सामगीमे एकि अनेक नाम पकाशमे आयल अिछ। विशकिि विदापित *(*1350-1450*)* एकरा '*अिहट*,' लोचन (1650-1725), 'मिथला अपभंश' बेलुगती (Beluigatti), 'ितहुितया', ि 'ितहूितयन' आ सुभद झा (1909-2000), 'मिथला अपभंश' नामे सम्बोधित कयलिन। मिथलाक भाराक उल्लेख 'आइने' 'अकबरी' मे मेहो भेल अिछ जतय एकरा पिक भाराक रूपमे स्वीकार कयल गेल अिछ। आधुिनक कालमे मैथिली नाम सिािधक पचिलत अिछ। ई नाम जे लोकिपयता अिजषत कएलक तकर सब शेय िमस हेनरी िॉमस कोलबुकके जे सिषपिम एिशयािटक विसिचेज भाग-7, पष 199 पर हुनक संस्कृत आ पाकत सम्बन्धी िनबन्धक अन्तगषत भेटैत अिछ। तत्पशात् िसिमपुर िमशनरी दारा अपन सोसायटीक

1816 ई.क ठिम मेमीयिमे अह्य आयषभारा सभक संग तुलना कौति मैविली शब्दक उल्लेख कयलक्ष अवि(इकण्डयन एण्टीतीर्ी 1903, प.245)। पाि जा क' एस.डब्लू. फेलन, विशप कैम्पबेल (1814-1891), डॉ. हानेले (1841-1915) आ केलाग आव्द विदत्-िह्वि सिल-सिलपि क्षविलाक भारा मैविलीक चचा कयलक्ष अवि। पाशात्य विदत्-िह्वमे मैविलीक सबसँ उल्लेखनीय मेिि डॉ. जाजषअिहिम वायसषा (1851-1941) कयलक्ष। िस्तुतः वायसषा दाि मैिली शब्दक पचाि कयल गेल आ क्षविलाक भाराक अिषे कयल जाय लागल।

क्षविलाक भारा मैविलीक एव्ह व्यापकताके सिषिम डॉ. सि जाजष अबाहम वायसषा लक्ष्य कयलक्ष। 1880 ई. मे अपन '*क्षहािि भारा* ' क व्याकिणिक भूक्षका ओ क्लखलक्ष जे '*क्षकट* भूतमे क्षविलाक भारापि पक्षमसँ भोजपुिी अक्षकाि क' लेलक अवि आ बदलामे ई गंगा पाि क' गेल अवि आि उतिि *पटना* तिि मुंगेि एिि भागलपुिकि ओव्ह भागपि अक्षकाि क' लेलक जे गंगाक दक्षक्षणमे पडैत अवि। ई कोशीके पाि क' पूणाषा धवि पसवि गेल। ओ पुनः 1903 ई. मे गंगाक दक्षक्षण भागलपुि एिि मुंगेिकि अक्षवतित संिािल पिगिनाक पक्षमोतिि भागके मैविली कहलक्ष।

अतएि मैविल संस्कृक्षत आ मैविली भारा क्षविलाक भौगोक्षलक सीमासँ विशेर व्यापक अवि। मैविली भारा सम्बक्षधी सीमापि जखन विचाि कबि तखन पायब जे मैविलीक पक्षशमी, पूिी, उतिी तिि दक्षक्षणी सीमापि कमशः भोजपुिी, बाङला, नेपाली आ मगही भारा क्षस्ित अवि। अपन क्षाजी क्षेत्रमे मुण्डा आ संताली एव्ह दुनू अनायष भारासँ क्षलैत अवि। ई कहब क्षािषिक अवि जे अपन पडोसक

भारासँ सीमापि ओकहसँ क्मवशत भ' जाइत अवि आि ओकह केतमे ई कहब कवठन अवि जे बाजल गेक्महाि भारा ओकह भाराकदसँ पभावित मैविलीक उपभारा विकि ि नकह।

मैविली मुख्यतया उति-पूिविक वबहाकि आकदिसी लोकक्मक मातभारा विक। वबहाि पाहतक मधुबनी, दिभंगा, समस्तीपुि, मुजफ्फिपुि, हाजीपुि, िैशाली, सीतामढी, वशहिि, पूिी चम्पािणि, पवशमी चम्पािणि, बेगुसिाय, खगवडया, सहिसा, सुपौल, मधेपुिा, पूवणया, वकशनगंज, कवटहाि, मुंगेि, भागलपुि, लखीसिाय, शेखपुिा, बाका, आि ािखिण्ड पदेशक संिाल पिगिना, गोडडा, देिघि, जामताडा इत्याकद वजलामे ई भारा बाजल जाइत अवि। एकह भाराके ई शेय िैक जे ई अहतिाषटीय भाराक रपमे नेपालक िितहट, सिलाही, सप्तिी, महोतिी आ मोिंगि आकद वजलामे बाजल जाइत अवि। एकह भारा-केतक उतिमे मगही आि ओवडया तिा पवशममे वहहदी अवि। पाचीन कालसँ ल' कए आधुवनक काल धवि भारातत्िविद् लोकवन एकि बोली उपरपक ताविलका पस्तुत कएलवन अवि। एकि वावम्माककत उपरप अदावि उपलब्ध अविप मानक मैविली, दवकणी मैविली, पूिी मैविली, पवशमी मैविली, िका-िीकी मैविली, जोलही बोली आ केहद्रीय ितात्मक मैविली।

मैविली भाराक अवधकाश साकहत्य मानक मैविली मे उपलब्ध अवि जकिा '*साकहवत्यक भारा,*' '*साधुभारा अििा वशषटभारा*' मेहो कहल जाइत अवि। अवधकाश समयधवि ई एकमात साकहवत्यक अवभव्यवक्ततक भारा िल जाकह आधािपि एकिा नकमा मैविली कहल जाइत अवि। ई दिभंगा आमधुबनी वजला मे बाजल जाइत अवि। दवकणी मानक मैविली समस्तीपुि, बेगूसिाय, खगवडया, सहिसा,

मेधपुरि आ सुपौल जिला आदि मे बाजल जाइत अछि। एहि मे मानक मैथिली सँ किछु अन्तर अछि। पूर्वी मैथिली पूर्णिया, अररिया, किशनगंज, कटिहार आदि जिला क केन्द्रीय आर पश्चिमी भाग मे अधिकांश हिन्दु सभ मे चलैत अछि तथा महानन्दा सँ पूर्व सेहो हिन्दू लोकन बजैत छथि जतय मुसलमान मुख्यतया बाङला बजैत अछि। छिकाछिकी बोली गंगाक दक्षिण भाग मे बाजल जाइत अछि। एहि मे खगड़िया आ बेगूसराय जिला क पूर्वी भाग, बाँका जिलाक पश्चिम भाग के छोड़ि क' संथाल परगनाक उत्तरी आ पश्चिमी भाग मे बाजल जाइत अछि। पश्चिमी मैथिली मुजफ्फरपुर, पूर्वी चम्पारण आ पश्चिमी चम्पारण जिलाक पूर्वी भाग मे बाजल जाइछ। चम्पारण आ उत्तर मुजफ्फरपुर क बोली भोजपुरी सँ प्रभावित अछि। जोलही बोली दरभंगा जिलाक अधिकाश इस्लाम धमावलम्बी अपन पडोसी हिन्दू क भाषा मैथिली बजैत अछि, मुदा ओकर बोली छोड़े क विकृत आर अरबी-फारसी शब्दएँ सँ व्याकृत। रहैत अछि।

वर्तमान समय मे मैथिलीक दू उपभाषाक नव नामकरण आ निर्धारण भेल अछि जाहि मे प्रथम थिक अंगिका आ द्वितीय थिक बज्जिका। अंगिका भाषाक नाम पडल अछि जकरा हम पूर्वी मैथिली कहल अछि आ डा. सर जाजषअबाहम ग्रियर्सन छिकाछिकी गॉवारि कहलनि।एकर क्षेत्र भागलपुर, गोडा आ देवघर तथा संथाल परगना मानल जाइत अछि। बज्जिका ओहि उपभाषाक नाम पडल अछि जकरा हम पश्चिमी मैथिली कहलहुँ अछि। ई नामकरण बज्जी आ लिच्छवि क इतिहास क आधार पर कयल गेल अछि, किन्तु आधुनिक पत्रिकाक मे एहि जातिक नामोनिशान नहि भेटैत अछि।

मैविली व्याकणिक अपन व्काजी विशेरता अवि। एकि विक्शष्टताक पसंग मे डा. सि जाजष अबाहम वायसषा *क्लविक्स्टक सिं ऑफ इक्णडया (खण्ड-5, भाग-2 1902), 'एन इण्टोडतशन टू द मैविली लैगंिज ऑफ नौिष विहािं (1800) तिा सेभन गामसष ऑफ द डायलेतटस एण्ड सब डायलेतट ऑफ द विहािी लैगंिज* (1883) मे विस्तािपूिषक विचाि क' ई पमाक्णत क' देलक्न अवि जे ई विक्शष्ताा अन्य भाितीय भाराक्द मे नक्ह उपलब्ध भ' िहल अवि। मैविली व्याकणि मे सिषामक तीन रप पयुतत होइत अवि-'अपने', 'अहाँ' आ 'तो' िा तोिा, मुदा बाडक्ला मे दू 'आपनी' आ 'तूक्म' िा 'तुइ' आ क्हन्दी मे मेहो दूइए रप पयुतत होइत अवि *आप* आ *तुम*। मात भरा-शास्तक दक्ष संसँ नक्ह, पत्युत व्याकणि आ शब्दािलीक विक्भन्नताक्द आ विशेरताक्द कािणे नक्ह, अन्य भारा-भारी लोकक्नक दाि सलिता सँ बुिबाक कािणे नक्ह, पत्युत अपन एक सतिन्त्त साक्हक्त्यक आ सास्कक्तक पिम्पिा हैबाक कािणे मैविली भाराक सतिन्त्त अक्स्तति अवि। मैविली भारा आ व्याकणिक सम्बन्ध मे अनेक कायष भेल अवि। ओहुना संस्कत आ अंगेजी व्याकणिक आधाि मानक्न क' मैविली मे िोट-पैघ अनेक व्याकणि क्लखल गेल अवि, मुदा महािैयाकणि दीनबन्धु िा (1878-1955) क *मविला भारा विदोतन* (1945) क ऐक्तहाक्सक महति अवि जकिा सूत-शैली मे ओ क्लखलक्न जे संस्कत-पाकतक शेष्ठ व्याकणिाक्द सँ तुलना कयल जा सकैि। एक्ह व्याकणि के आधाि मानक्न क' गोविन्द िा (1923) *लघुविदोतन* (1963) आ *उच्चति मैविली व्याकणि* (1979) क िचना कयलक्न। क्हनक अन्य कक्त मे *मैविलीक उदगम ओ विकास* (1968) आ *मैविली भारा* (1909-

2000) *द फामिेशन ऑफ मैवि ली लैगिज* (1960) सविाधक उल्लेखनीय कायषकयलक्ि अफि।

अह्य सतिह्नत साक्हक्त्यक भाराक समान मैवि ली भाराक अपन सतिह्नत पाचीन क्लवप वि क जकि *क्ाहिता* ि *मविलाक्ि* ि *मैविलाक्ि* ि *मैविली क्लवप* कहल जाइत अवि। क्ाहिता नामसँ जात होइत अवि जे ई क्लवप क्ाहित देशक अवि जकि विकास *तीमिुतत* ि *क्ाहुष* नामक क्याहिा हैबाक बाद पूणषाप पाप्त कयल गेल अवि। बौद गह्नि *लक्लत-विस्तिा* मे एक्ह क्लवप के *िदेही क्लवप* क नाम पि अवमक्हत कयल गेल अवि। घुमा क' क्लखक्हाि पूिी णिषाला साकात बाडला असक्मया, मैविली आ ओक्डया क्लवपक सोत वि क। िस्तुतप क्मविलाचल मे उपलब्ध पाचीन संस्कृत गह्नि एही क्लवप मे उपलब्ध अवि जकि बाडक्ला, असक्मया आ ओक्डि्याक पक्णडत लोकक्ि के पढबा मेन सुविधा होइत ि। पटना सँ पकाक्शत पिमानह्नदशास्त्ा 1915 क्मविलाक्ह्न मे आचायष*क्मविलाक्ि क उदि ओ विकास* (1960-61) मे अनेक क्रस्म मे एक्ह क्लवपक तात्विक अ्ययन पस्तुत कयलक्ि, क्कह्तु दुयोग हिल जे पुस्तकाकाि पकाक्शत नक्ह भ' सकल। एक्ह क्दशा मे िजेशिि ि (1923-1977) *क्मविलाक्ि क उदि आ विकास* (1971) क्लवख क' एकि ऐक्ाहाक्कसकता, पाचीनता, शास्त्ीयता पमाक्णत कयलक्ि अवि जे भारा-िैज्ाक्कक दवष्ट सँ एकि सािक्शायी महत्ि वि क। उनैसम शमाब्दीक मध्य चविधि ई क्लवप जीवित िल, मुदा तिषान सह्नदभषमे एकि लोक क्ासवि गेल अवि आ ओकि सिन पि देिनागिी क्लवप क्याहिा कयल जाय लागल अवि।

मैविली साक्हत्य क इक्ाहासकाि लोकक्ि एकि सामाह्यतप तीन

काल आदिकाल, मध्यकाल आ आधुनिककाल मे विभक्त क' अध्ययन कयलनि अछि। किन्तु ओकर समय सीमाक निर्धारण मे इतिहासकार लोकनि मे मतैक्यक सर्वथा अभाव अछि। इतिहास-लेखनक आधार-भूत प्रक्रियाके ध्यान मे राखि क' एकरा निम्नलिखित काल खण्ड मे विभाजित करब श्रेयस्कर प्रतीत होइत अछि

i. आदिकाल 800 ई. सँ 1350 ई. धरि।

ii. मध्यकाल 1351 ई. सँ 1857 ई. धरि।

iii. आधुनिक काल

i. ब्रिटिशकाल 1857 ई. सँ 1947 ई. धरि।

ii. स्वातन्त्र्योत्तर 1947 सँ अद्यपर्यन्त।

सन् 1857 ई. क सिपाही विद्रोहक पश्चात् मैथिली साहित्य मे आधुनिक कालक सूत्रपात मानल जा सकैछ। ई विशाल मुगल साम्राज्यक अन्तिम रेष थिक। मुगल शासनक अवसानोपरान्त ब्रिटिश शासन काल मे जाहि सामाजिक चेतनाक उदय भेल ओहि मे सन् 1857 ई. पश्चात् तीव्रता अबैत अछि। एहि सामाजिक चेतनाक प्रतिक्रियास्वरूप नवीन शिक्षित बुद्धि जीवी वर्ग कयलक जे एक भाग अपन प्राचीन संस्कृति क सुरक्षाक प्रति उत्सुकता देखौलक आ दोसर भाग युग क नव आलोकक स्वागत कयलक। एहि सांस्कृतिक अनुष्ठान मे भारतीय भाषादिक विकास भेल आ ओकर साहित्य सम्पन्न आ समृद्ध होइत अछि।

पाश्चात्य शिक्षाक प्रचार, रेल-तार क विस्तार, स्वीय शासनक विस्तार, मुद्रण कलाक आविष्कार आ सामाजिक चेतनाक प्रभाव साहित्य पर पड़ल आ ओ रूढ़ परिपाटीके तोड़ि क' नव दिशाक दिस चलि पड़ल। मैथिली साहित्यक इतिहास मे नव-युगक निर्माण

मे कमीशि चह्दा ि (1831-1907) आ पवण्डत लालदास (1856-1921) अदिान सविधक महतिपूणष अवि। हुनक िजिनीवतक.सामावजक चिनाक्दक आधापि अनुमान कयल जा सकैि जे सन् 1857 ई. क पश्चात् पर्विवतष्ठा पर्विसवितक सहजल पक्रया िल। िस्तुितप चह्दा ि आ लालदास मैविली साक्हतय मे नियुग अनबा मे समिष भेलाक्ह। अपन गदय चिनाक्द दािि ओ लोकक्त आधुवनकता क दािि खोललक्त। फेिि जक्हना-जक्हना क्मविलाह्चल मे नि आलोक पसलि साक्हतय मेहो नि-नूतन क्कसलयक संग पल्लविित भेल।

सविम साक्हतय्र तँ ओ िहस्र्यािदी गीत एिं कविताक्दक विक जकि अहिरिण नेपाल मे तिि पकाशन बंगाल मे भेल। एकि चिवयता क्सद लोकक्त िवि। एक्ह क्सद लोकक्तक सम्बह्ध बौद लोकक्तक महायान शाखासँ िलक्त। एक्ह चिना-संगहक नाम *बौद गान ओ दोहा* देल गेल अवि। सन् 1323 बंगाब्द अिात् सन् 1916 ई. मे महामहोपा् याय डा. हिपसाद शास्त्री (1853-1931) सविम एकि पकाशन कौिने िलाह। एक्ह मे संगहीत कविता सभक भारा अवत पाचीन अवि मिि एक्ह मे ओ विशेरताक्द अवि जे बाङ्ला. मैविली, मगाही आक्द पूिीय भराक्द मे अवि। एक्ह काणिसँ एक्ह भाराक्दक पाविम्भक रपक उदाहिणि मे िखिल जाइत अवि। एक्ह काणि सँ एक्ह भाराक्दक पाविम्भक रपक उदाहिणि मे िखिल जाइत अवि। िस्तुितप ई कविताक्द तक्हया क्लखल गेल जखन आधुवनक पूिीय भाराक्द अपन पाविम्भक अिसिा मे िल। भारा िैजावनक लोकक्त एक्ह विरय मे एकमत िवि। अतप एक्ह कविताक्दक भारा पूिीय अिि मागधी अपभ्रंिशक पूिीय रप

विक। यदवा एक पि शौमिनी अपभँशक मेहो पभाि संक्रमत अवि। तािमा ई सिभािवक अवि जे एक मे ओ सभ तति उपलबध अवि जे मागधी अपभँशक पूिीय रप विक। यदवा एक पि शौमिनी अपभँशक मेहो पभाि संक्रमत अवि। तािमा ई सिभािवक अवि जे एक मे ओ सभ तति उपलबध अवि जे मागधी अपभँश सँ विकसत तिषान भाराक मे मेहो पाओल जाइत अवि। एकि संगक ई मानबाक लेल पचुि साधन अवि। ई संगह पाचीन मैविलीक रप विक। एकि िचियता अिधकाश कविलाक कािसी िहल हैताह।

बौद गान ओ दोहा मे तीन पकाकि साकहतय उपलबध भ' िहल आवि, जकि मैविलीक पाििमभक रप कहल जा सकैि। ओ अविप दोहा कोश, चचाचचषविनशचय आ डाकाणिि। एकि िििचता बौद कसद आ तािकतक िहिव। कनक भारा कविलाक पूिी भागक पाचीन रप विक। एक सामगी आकक आधािपि एकि िचियता लोकनक समय आठम शताबदी सँ तेिहस शताबदी धिव नशचय कयल जाइत अवि। विरयक दवा सँ एक िचनाकक ओतेक महति नक जतेक की भाराक दवा सं अवि। एकि भारा एहन अवि जकि आधािपि एकि मैविली, बाङला, असमया, कहदी, मगही आ भोजपुिि आक पतयेक भारा-भारी अपन समपका घोरत कैिि िवि। एक समय भाितीय आयषभारा कमाणक कसि मे िि। इएह काििण अवि जे भारा-िैजािनक लोकक एक िचना-समूह मे भाितीय पूिाञचलक सभ भाराकक रप भेटैत अवि। संगक-संग ई मानबाक लेल मेहो पचुि साधन अवि जे एक संगह के पधानतप मैविलीक रप विक। जयोििीशि (1280-1340) िणितािक

(1940) मे एकि सम्पूणष नामालि ली द' देलक्त अवि। पूरीय भाराक्ष मे सषिमि मैवि लीक पयोग गम्भीि साक्षत्यक र प मे कयल गेल लि। बाङक्ला आ आसमी मे तँ साक्षत्य-चिनाक पयास एक शताब्दी पाि ँ जा क' पामिभ भेल ति एकि लेल मैवि लीक महान कवि वि दापक्त पेकि क्सद भेलाक्ष। एकि अक्तवितत पाचीन अपपभ्ंशि मे कविता क्लखबाक पम्पिाि मात क्तवि ला मे लि आ ई पम्पिाि चौदह म शताब्दी धवि चलैत हिल। वि दापक्त अपन दू पुस्तक-*कीक्तषलता* (1924) आ *कीक्तषताका* (1960) ति अनेक िट कविताक्षक चिना मे कयलक्त जे देश्य-क्तकशत अपभंश क्शाला पाकत पैङ्गलम' टीकाकि शिीधि एक्ष मे संगहीत अपभंश कविताक्षक भाराके अहिट कहलक्त। डा. सुभद ि एकि आक्षकालीन मैवि ली कहलक्त। ओ क्लखैत वि. *पाकत पैङलम मे उदाहणि स र प अनेक शब्द एि पद देल गेल अवि जकि वि रय मे कहल जा सकैि जे ओ पाक् मैवि ली मे क्वित वि क ओक्ष मे एहन कि नक्ष अवि जकि आक्षकालीन मैवि ली कहबासँ क्वित क' सकी*।' िधाकषण चौधिि (1924-1984) *क्तवि लाक सास्कक्तक इक्तहास* (1961) क पविक्शष्ट-ग मे पाकत पैङलम मे क्यहित 115 शब्दाक्षक सूची देलक्त अवि ति एकहि आक्षकालीन मैवि लीक गहि मानलक्त अवि। ति ावि एक्ष पाचीन भाराक वि रय मे सुक्तक्शत एि अक्षत्तम र पसँ विचाि किब आक्शयक अवि। तिषान पविपेक्य मे एकि पाक् मैवि ली मानि तकषसंगत अवि।

दोसि पकाकि साक्षत्य जे उपलब्ध भ' हिल अवि ओ वि क *डाकचिनालि ी*। एक्ष चिनालि मे सि ानीय लोक पक्सद विजाता, ज्योक्तर एि कक्र सम्बक्ष्धी चिन, जीनि आ विविध वि रयक

समालोचना भेटैत अछि। ई जनसामान्य मे प्रचलित अछि तथा एकरा विस्तारित आसामसँ ल' कए ओडिसा धरि सम्पूर्ण आर्यावर्त मे विस्तृत अछि। एकर रचयिताक सम्बन्ध मे विद्वान लोकनि मे मतैक्य नहि अछि तथा अनेक जनश्रुति आदि प्रचलित अछि। देशक भिन्न भिन्न भाग सब मे एकर रचयिता लोकनिक भिन्न-भिन्न नाम अछि। मिथिला मे डाक, घाघ, भण्डरी एवं डंक आदि प्रचलित आदि। एम्हर आबि क' देशक विभिन्न भागसँ एहि रचनावलीक कतिपय संग्रह प्रकाश मे आयल अछि, परन्तु एहि मे सँ कोनो, कोनो प्राचीन हस्तलिखित पत्र पर आधारित नहि भ' कए ओहि भू-भाग मे प्रचलित अनेक मौखिक रूप पर अछि। एकर फलस्वरूप प्रत्येक संस्करणिक भाषा आधुनिक भ' गेल अछि। मैथिलीक हेतु ई सौभाग्यक बात थिक जे डाकक नाम पर प्रचलित अनेक रचना मैथिल विद्वान द्वारा लिखित ज्योतिषक प्राचीन ग्रन्थादि मे उद्धृत अछि। जाहि मे किछु तँ चौदहम-पन्द्रहम शताब्दीक थिक। एहि उद्धरणादिक भाषा अत्यन्त प्राचीन अछि तथा *बौद्ध गान ओ दोहा* क भाषासँ साम्य रखैत अछि। ओना तँ मिथिला सँ जे रचनावली प्रकाशित भेल अछि ओकर भाषा आधुनिकताक छाप नेने अछि। मात्र मिथिलाक आचार्यगण कोनो महान आचार्यक रचना सदृश प्रमाणक हेतु डाक रचनादि के जे उद्धृत कयलनि अछि ओहिसँ ओकर मैथिल उद्भव आ प्राचीनता सिद्ध होइत अछि। अतएव ई कहब पूर्णरूपें संगत सिद्ध होइत अछि जे डाक मैथिल छथि आ हुनक लोक प्रसिद्ध साखी आदिक भाषा प्राचीन मैथिली थिक। कालान्तर मे ई सम्पूर्ण भारत मे प्रचलित भ' गेल तथा अपन मौखिक परम्परा मे नूतन रूप धारण क' लेलक अछि।

मात डाके एहन व्यक्तत नक्ह हिवि जे एक्ह पकाकि लोक पक्सद ाणिषाक िचना पाचीन मैवििली मे कयलक्त। एतबा तँ क्तक्शात अवि जे सबसँ विख्यात इएह विि। सप्ताि्ताककिता महामहोपाध्याय चण्डेशिि अपन *कतक्चह्नतामवण नामक* ज्योक्तर क्तबहृधक पशानगहृि मे अिहिट भाराक अनेक पद ममाण रप मे उदत कयलक्त अवि, जकिा क्पणक जातक भगुसंक्हता तिा कापक्लक जातक पभत गहृिसँ उदत कहलक्त अवि। यदक्प ई गहृि आब अनुपलब्ध अवि, अतएंि ई क्तक्यचत रप सँ नक्ह कहल जा सकैि जे उतत गहृि ओही भारा मे क्लखल गेल अिि ओक्ह मे कतहु सँ उदत कयल गेल अंवि। पक्ह्तु डाकचिनािली क िचनाक समानक्ह ई सब मेहो जनसाधािणि के पभावित किबाक लेल विदान लोकक्त हुनके भाराक आशय लैत हिवि आ चाण्डेशिि सदश विदान् मेहो पमाण सिरप ओंकिा उदत किबा मे कनेको कुक्पठत नक्ह भेलाह।तेसि पकाकि जे साक्हत्य उपलब्ध अवि ओ लोक पक्सद आख्यान आ गीतक विक। एक्ह मे क्तक् ितँ साक्हक्त्यक विक। गोपीचह्दक गीत एही शेणी मे अबैत अवि। ई गीत ओही समयक विक जाक्ह समयक डाकक िचन विक। ई गीत भीख माँगक्तहाकि एक िगष दािा गाओल जाइत अवि जकिा गुदवि़या गोसाईक नाम देल गेल अवि। एक्ह गीतक अक्तवितत लोविक, सलहेस. क्बहुला, मक्तिसया आक्दक गीत कािक्द एही िगषक विक। ई सभ िचनाक्द पाचीन कालक विक। एक्ह कािक्दक विशेरता ईहो अवि जे एकि किािनायक कोनो अितािी देिता िा अंशी पुरर नक्ह िवि। डा. सिि जाजष अबाहम वायसषा एकि संकलनक पयास कयने हिवि। युग-युगसँ ई जनकण्ठ मे पीढी-दि-पीढी गुंक्जत होइत आवि हिल अवि। एकि

भाराक पविशुदता क विरय मे तयो दाि नक्ह क' सकैि। अपन मौक्खक पिम्पिा सँ एकि भारा मे क्वशात र पेण पविितिषा भेल हैत। एक्ह िचनाक्ह के देक्ख क' ई स्पष्ट पमाण भेटैत अवि जे मैविली अपभंश भाराके लोकक्य िचनाक लेल पयोग कि बाक पिम्पिा मात उपयोगी साक्हत्यक लेल नक्ह, पत्युत मनोिजनक लेल हशे-क्विला मे पूिषि भाितीय अपभंश भाराक आक्विभक क्सिक्त मे जकि समय भारा िजााक्तक एक हजाि ई. क्धावित कि ित िवि।डा. सि जाजष अबाहम वायसषा सिषि पिम एहन गीताक्द के *इक्कडयन एण्टीतिटी* खण्ड-10 मे पकाक्शत कि लक्त। एकि अक्तवितित *समक्हाि फोक सॉंग्स* (1884), *टू भिसिहस ऑफ द सागस आफ गोपी चह्द (जे. ए. एस. बी. खण्ड 54, भाग-1 आ* '*द िषिआफ लोविक* (कैक्बज 1929) आक्द मे पकाक्शत अवि जे उल्लेखनीय अवि। एम्हि आक्ा क' लोकगीतक कक्तपय संगह पकाश मे आयल अवि जाक्हसँ एकि विकास मे गक्त आयल अवि। क्विलाञ्चलक विक्भह्न जनपद मे मैविलीक कि ीब तीस लोक नाटयक पस्तुक्त हम देखल अवि जाक्ह मे लोक जीिनक सिभाविक अक्भव्यक्तत भेल अवि। एक्ह लोक-नाटयाक्द मे गीत, संगीत आ नत्यक क्ािणी पिक्हत भे ल अवि जाक्ह मे लोक जीिनक सिभाविक अक्भव्यक्तत भेल अवि। एक्ह लोक-नाटयाक्द मे गीत,संगीत आ नत्यक क्ािणी पिक्हत भेल अवि जाक्ह मे लोक-जीिनक साि-गविषा भािसँ सम्पह्न, तत्कालीन युग क पिक्तक मनोिजकता पदान कि बाक हेतु नि-नि आयामक व्यिसिा कयलक। कालह्ति मे इएह साक्हक्यक विधाक्दक र प मे विकक्सत भेल। विविध मागक्लक अिसि जेना क्त-त्यौहाि, धाक्मष्क,

सास्कृकत्तक लोकोसि इत्याव्दक विशेर पर्वक्सि क्त मे विभिह्न पक्रयाव्द सँ उदभूत सामाव्जक, धाक्मक एि सास्कृकत्तक आ साव्हत्यक चेतनाक पर्वणाम विक मैविली लक्क-नाटय।
क्मविला औि मैविली साव्हत्यक ऐवतहाव्सक गर्हि क अिगाहन सँ जात होइि जे क्मविला पि अनेक िाजिंश शासन कयलक जाव्ह मे तीन िाजिंश क शासक लोकक्त मे कणाट िाजिंश (1097-1324), ओइनिाि िाजिंश (1353-1526) आ खण्डिला िाजिंश (1556-1947) पमुख र्वि। कणाटिंशीय िाजा लोकक्नक ित-िाया मे मैविली साव्हक्त्यक साव्हत्यकाि लोकक्न के पोत्साहन भेटबाक पक्रया पािम्भ भेल। ज्योक्तीशिि ठाकुि एही िाजिंशक ठिम िाजा महािाज हर्वक्संह देि (1443-1444) क सभासद र्हवि। ओइनिाि िंशक शासनकाल मे मैविली साव्हत्यक विकास अत्यव्हत्त दुतगक्तसं भेल, काणि एव्ह िाजिंशक िाजा लोकक्न के साव्हत्यक पक्त अव्धक अक्भरुक्च िलक्न जकि फलसिरुप साव्हत्य मनीरी लोकक्नके कतेक िाजा लोकक्न पोत्साव्हत कयलक्न जाव्ह मे उल्लेखनीय र्वि विदापक्त' जक्नम सिि पदािली मैविली साव्हत्यक अमित्यक सबसँ पैघ मेतु बनल। महाकर्वि जयदेिक अनुकिणके क' कए ओ िाधा कष्णाक हिंगािपूिि लीलाक गुणगान कयलक्न। व्हनक विविध िचनाव्दक अिगाहन सँ जान होइत अर्वि जे एव्ह िाजिंशक कक्तपय िाजा लोकक्नक अिगाहन सँ जान होइत अर्वि जे एव्ह िाजिंशक कक्तपय िाजा लोकक्नक संग व्हनक सम्पकष हिल। ओइनयाि िंशक पतनोपिाव्हत्त क्मविलामे खण्डबला कुलक सिािपना भेल जे आधुक्नक मैविली साव्हत्यक लोकक्नके पोत्साव्हत कबि पािम्भ कयलक्न जाव्हमे उल्लेखनीय र्वि कींशिि चह्द िा

आ महाकवलिालदास आ साहत्यितिनाकि मुंशी धिुनकन्दन दास (1860-1945)। ई साहत्यमनीरी लोककनक चिनाद मे सषिा आधुनकक कताक शुभािम्भ होइत अवि।
सषिपमि पामाणमम पुस्तक जे खॉटी मैवलिी मे अवि आ वकि ज्योतिीशिि ठाकुकि *णिष्तिनाकि (1940) आ धूतषमामागम* (1960)। ई दुनू पुस्तक चौदहम शताब्दीक आिम्भ मे कलखल गेल िल। णिष्तिनाकि वरिय मे सन् 1901 ई. मे बंगाल एकशयाक्टक सोसायटीक सकचि के महामहोपा् याय डा. हपिसाद शास्ती सूचना देने हिवि। पमिे पमि एकि पकाशन डा. सुनीकतकुमाि चटजी (1890-1977) आ पकणडत बबुआजी कमश क संयुतत समपादकतव मे एकि पकाशन भेल िल। अपन वपिोटष मे महामहोपा् याय डा. हपिसाद शास्ती कहने हिवि, ई गद्दि काव्य नकह, काव्योपयोगी गद्दि कक्ह सकैत िी। यकद ज्योतिीशिि िस्ति मे इचिापूषक काव्य गद्दि कलखतवि तँ एकि सरिप आन रपक हिैत, मुदा णिषाक असिि पाकक गद्दि काकि सहज कवतिि पायप नकह मानलक आ लाख िकिनहुँ पि मेहो कस्तुिि मोदक समान पकटभ’ गेल। सिल-सिलक णिषाके देकख क’ कादम्बिि पभकत संस्कत गद-काव्यक स्मिण भ’ जाइत अवि। एकह पकाकि उहनत गद-साहत्य के देकख क’ अनुमान होइत अवि जे एकह सँ चावि-पाँच शताब्दी पूषि कविला भारा मे कायचये साहत्य िचना पाििम्भ भ’ गेल िल। अनेक अनुकृिट उपमादक संगह. भारा-उपभाराक उल्लेख दाि भारा-वजिान सम्बह्धी अनेक सामगी, ओकह समयक सामाकजक तिा साहकत्यक वचिाकि भणडाि, ओकह समयक णिषा-शैली इतयाकद वशिेरताक वशिद रप एकह गद्दि मे उपलब्ध अवि।पकतपाद गद

गद्दि भािी कवि आ कतिक लोकक्क क हेतु एकपि पदशक्क गद्दि बनायब िल जेना जँ नायकक णिषा कबिाक हो तँ कोन-कोन वरियक उल्लेख कबि उक्यत, जँ नाक्यका णिषा कबिाक हो तँ कोन-कोन वरियक क्यर पण कबि आश्यिक अवि। ई गद्दि सात कल्लोल मे वभाक्जत अवि जेना नगिणिषा, नाक्यका णिषा, आसिान णिषा, ृतु-णिषा, पयानक णिषा, भटाक्द णिषा आ श्मशान णिषा। सबसँ महतिक बात ई वकि जे ई पुस्तक गद मे अवि ति उत्ति भातिक कोनो भारा साक्त्य मे एतेक पाचीन गद्दि नक्ह भेहैत अवि। जखन दोसि-दोसि पाह्त अपन भाि पकाशनक लेल कोनो साक्हत्यक मा्यमक अभाि मे अह्यकाि मे टापि-टोइया द’ िहल िल, तखन मैविली एक पूणषभारा क रप मे वकिक्सत भ’ गेल िल जाक्ह सँ समाजक सिरप के पकट कयल जाय सकय। ई कोनो लोकवमय भाराक पधान वशिेरता वकि। णिषितनाकि एकि सटीक उदाहणि वकि।ज्योक्तिशििकि दोसि िचना संस्कत-पाकत-मैविली क्मश्यत क्ताभाक्रक नाटक वकि *धूतषसमागम* । ई नाटक जतय मैविली कविता आ नाटकीय पिम्पिाकि दोतक वकि, ओतक्हतत्कालीन समाजक क्यत पस्तुत कििति अवि।ऐक्हमे लेखक एक सम्पह्न गहसिक क्यत अंक्कत कयलक्न अवि जक्क चातुष्शालक चार भाग कतहु महीस बाह्हल अवि, कतहु बाि-बािीक संग पुष्ट िनतिली गाय एम्हि-ओम्हि जा िहल अवि, कतहु दासी सुह्दि भिनक पागंण मे मह्द-मह्द गक्त सँ अिगाहन क’ िहल अवि।णिषित्ताकि आ धूतषसमागम क िचना लोकभाराक आलोकमय भविष्यक सूचक िल। भारा-साक्हत्यक एक्ह अभ्युदय आ वकासक कोनो साक्हत्यक पेणािक पविणाम नक्ह कहल जा सकैि,

पत्युत ई तँ साहत्यक जडादि सँ असन्तुष्ट जनताक सभािवकि पत्तिक पकाशन लि। भारा मे फूटैत कव-पतभा जखन ाजा लोकक के चमत्कृत कयलक तखन हुनक संिकण एि पोत्साहनक फलसरिप भारा-काव्यक वकास भेल। ई वकास एहू बातक दोतक जे लोक भारा के साहत्यक गौि सँ वशेर अधि धवि िचत नहि कयल जा सकैि। जे सामान्य जन मानसक व्यापक भारा बि गेल ओहि मे व्यिहािपसोगी एि लतत दुनू पकाकि साहत्यक सब अशय हैत। मैिली साहत्यक इतहासक इतहासक अिलोकन कयला सँ एकि स्पष्ट बोध होइि। िस्तुतप ज्योतीिशि कि चिनाहु मैिली गंगाक *हिदाि* विक जतय ओ लोक भाराक सामान्य धाितल पि उतिव क' पूणष िग सँ पिकहत होमय लागल। एकि पश्चात् उमापत उपाियाय सिाधक लोकपय नाटकक भेलाह जनक पािजातहिणनाटक असमक िषािसंत शंकिदेि (1499-1568) अत्यधक पभावित भेलाह। मैिली साहत्य के ई सौभाग्य अवि जे ओइनाि िशक शासनकाल मे एक एहन पतभासम्पन्न व्यक्तत्तिक पादुभाि भेल जनक काव्यपतभा अमि भ' गेल आ ओ मात मिलािाि धविसीमत नहि िहल ; पत्युत पूिांचल मे बंगाल, आसाम आ ओडसा धवि ख्यात अजन कयलक आ समस्त भाितिरिमे लोकपयता अजन कयलक ओ िहि वदापत। हुनक गहि वरय-िवियके देखला सँ जात होइत अवि जे ओ केिल कविए नहि, पत्युत सिोमुखी पतभासँ समलंकृत सपहतक िहि। ओ एकहि संग शास्तकाि, िाजनीत-वशािद, इतहासकाि, भूिाहत लेखक, अिशास्तवद्, नीतशास्त वचक्षण, धमषव्यिसािपक, नबहकाि, िशाकक, किाकाि, संगीतज

आ पुर राषि पुजाि हिव । ई काममसि संस्कत गहिकदक चिना कयलक यि, भूपविकिमण (1976), शैि सषिषसाि (1815), कलखनािली (1969), दुभाभकततिवकडणी (1902), शैसिषिषसाि (1980), शैि सषिषसाि पुिणि-भूतसंगह (1981), गंगाितियािली (अपकािशत), दानितियािली (1981), विभागसाि (1976), कयाडीभकततिवकडणी (2008), गयापतलक (अपकािशत) एि िरिष कत्य (अपकािशत)।संस्कत-पाकत-मैविली ममिशत चिनाकद मे कीभावरक नाटक गोकिववजिय (1960) आ मवगामञि (1966) आ अहिट चिनाकद मे कीकताषसता (1924) एि कीकतषताका (1960) विक । विशुद मैविली मे ई पदािलीक चिना कयलक जकि उपलबधताक सोत विक नेपाल, ममिवलाञचलक अहताषा िमिभदपुि, तिौनी एि िगितिवकडणी आ बंगालक अहताषा कणदागीतकचहतामवा, पदामतसमुद, पदकलपतर , कीतषानहद आ संकीतषामत ति लोककणठक पद। एकह पदक संखया एक हजाि पाँच सयक लगधक अवि। यदवप कहनक अवधकाश चिनाकद पकाश मे आबा गेल अवि तिावप गंगाितियािली, गयापतलक आ िरिषकत्य पुसतकाकाि पकाशन नवह भ’ पाओल अवि। ई पीडा दायक वसिवत अवि जे कहनक चिनाकद एतेक लोकवपस भेल तिावप कहनक समग चिनाकदक पकाशन गहिािली ि चिनािलीक रप मे अदावप पकािशत नवह भ’ पाओल अवि।

िसतुतप एहन पकाभासमपहन महाकविक कवतके ्यान मे िवख अदावप साकहतय कवहतक लोकक जतेक अपुसहधान आ आलोचना पसतुत कयलक अवि ओकिा एकागी कहल जा सकैि जे ओ पुर राषिकवि हिवि जे अपन कवत आकद मे कोनो-ने-कोना रप सँ

पुरुषार्थ चतुष्टय क प्रतिपादन कयलनि अछि। हुनक सम्पूर्ण काव्यक मुख्य उद्देश्य अछि पौरुष। विद्यापति अपन काव्य सभ मे मानवीय उदारता, वीरता, धीरता, साहसिकता, निर्भीकता, स्पष्टता, कर्तव्यपरायणता, बुद्धि आ ज्ञानादिक सभ साधन पर बल देलनि अछि जे सामाजिक आ सांस्कृतिक परिवेशिक निर्माण मे समान रूपसँ सहयोग प्रदान क' सकैय। जाहि मानव मे उपर्युक्त गुणक अभाव अछि जे हुनका दृष्टि मे अयलनि तकरा ओ उपहास कयलनि। पुरुषार्थ चतुष्टय क दृष्टिएँ हुनक समग्र काव्य हुनक नीतिमीमांसाक्लिनी प्रतिभाक विपुल-निदर्शक परिचय दैत अछि। लोक मे सत्-धर्म आ शिष्ट-धर्मक सुचिन्ता क भावना ओ संचारित आ ओकरा पल्लवित पुष्पित करय चाहैत छथि। अपन समग्र पदावली मे ओ अतीव मृदुलता, जनजीवन मे सुसुप्त मधुर-भाव के जगयबाक क्षमता कविलाक जनमानस मे अभिव्यक्त हैबाक कारणे ई सार्वभौमिक लोकप्रिय भेल।

विद्यापति अपन साहित्य-साधनाक माध्यमे मैथिली-साहित्य भंडार के भरिबाक लेल अनेक विधा क रचना कयलनि। हुनक एक-एक रचना मैथिलीक अमूल्य-निधि थिक जाहि मे एक भाग शृंगारिकताक आभास भेटैत तँ दोसर भाग भक्तिक, मुदा विद्यापतिक समग्र काव्य पर जखन प्रत्यक्ष रूप सँ विचार करैत छी तखन स्पष्ट भ' जाइछ जे भारतीय-चिन्तन-धारासँ प्रभावित भ' कए ओ पुरुषार्थचतुष्टयक उद्देश्यसँ समग्र रचनादि कयने छथि।एहि प्रकार विद्यापति मैथिली-साहित्य मे जे परिमार्जित शुभारम्भ कयलनि ओकरा परवर्ती कवि लोकनि अपना क' रचना कयलनि। विद्यापतिक समसामयिक एवं परवर्ती कविलोकनि एहि साहित्यक बहुमूल्य सेवा कयलनि। हुनक

समसामयिक कवि लोकनि मे भानुनाथ (1375-1450), अमतकर (1450-1500), चन्द्रकला (1400-1475), कंसनारायण (1475-1528), गोविन्द कवि (1450-1530), लक्ष्मी नाथ (1500-1550), नृकवि यशोधर (1500-1550), जीवनाथ (1500), दस-अवधान (1500), सदानन्द 1550), भीखम (600), चतुर्भुज (1575-1640), श्यामसुन्दर (1500), भीखम (1609-1950), गंगाधर (1600) शीकान्तिस मल्ल (1640) इत्यादि उल्लेखनीय छथि।

विद्यापतिक परवर्ती मैथिलीक कवि लोकनिक रचनादि के पोत्साहित कयनिहार नरेश लोकनि मे कंसनारायणक नाम अगगण्य अछि जनिक दरबार मे जतेक कवि लोकन छथि ओ सभ विद्यापति द्वारा चलाओल गीतशैली के सम्यक पशय देलनि जाहि मे उल्लेखनीय छथि महाकवि गोविन्ददास (1663-4-1670-71)। हिनक एकमात रचना 'शंगारभजनावली' (1938) पकाशित अछि। हिनक कविताादि सँ शंगारिकताक बोध होइछ, किन्तु ओ भक्तित विषयक रचना थिक। बंगालक वैष्णव भक्त कवि हिनका बंगाली बनयबाक पयास कयलनि, किन्तु ई मैथिलाक छथि जनिक रचनाक अधिक दुरहताक कारणे पसिद्ध अछि। विद्यापतिक पश्चात् ई मैथिलीक दोसर पसिद्ध कवि छथि। महाराज कसनारायणक संग हुनका ओही रूपक सम्बन्ध छलनि जे विद्यापति के महाराज शिवसिंहक संग छल। मैथिलीक हिनक पदावली साहित्य समस्त पूर्वाञ्चल मे एकर नवीन पदलालक पोरक सिद्ध भेल।

विद्यापतिक उत्तराधिकारी कवि लोकनि मे महाकवि लोचन (1650-1725) क नाम अगगण्य अछि। यद्यपि मैथिली मे हिनक

अधिकाश चिनाक्द नक्ह उपलब्ध भ' हिल अवि तावि जे उपलब्ध भ' हिल अवि ओ कलाक दवा सँ उच्च कोटक विक। कन्हु एकमात 'गितविङणीग (1924) उपलब्ध भ' हिल अवि। क्हनक हाकि कखल *नैरधीय चवित* क एक पक्त *लक्लतनागियण* कविला विशविदालय दभिंगाक पुस्तकालय मे सुकित अवि। लोचत संस्कत क कषणात विदान, संगीतक ममष आ कवि हिवि। क्हनक कविताली 'गितविडणी' मे उपलब्ध अवि।ओइनिाि िशक पतनोपिहित अनेक रिषधवि कविला मे अकिताआ अवसििताक वसिक्त बनल हिल। पुनप कविलाक विदान, कवि, संगीतज आशयक अहरिण मे अपन समीपिती िषट नेपाल चल गेलाह। एम्हि क्दल्लीक वसंहासन पि अकबि के बैसबाक पश्चात् उतभिातिक िजनीवतक वसिक्त मे पविितिष भेल। एही समय मे कविलाक शासन-सूत खण्डलाकुलक महेश ठाकुि (1556-1569) के भेटलक आ क्दल्ली केह्द सँ कविलाक वनकट सम्पकषसिावपत भेल। महेश ठाकुकि अधिकाश समय पवशम मे व्यतीत भेल िलक, अतप पवशमक भारा-साक्हत्यक एतय पचाि-पसाि नक्ह भेल, पत्युत सिानीय साक्हत्य मेहो पभावित भेल। इएह काणि विक भेल, पतयुत सिानीय साक्हत्य मेहो पभावित भेल। इएह काणि विक जे लोचन िगेतविडगणी मे िग-िवाणीक उदाहणि सरिप बजभाराक अनेक सकवियाक पद उदत कयलक अवि।मैविली साक्हत्यक म्यकालीन साक्हत्यक चिनाक दवा सं सणिकाल कहल जा सकैि। यदवप एक्ह समयक िजनैवतक दवा सँ उिल-पुिल भेल. कन्हु साक्हत्यपि एकि कोनो पभािि नक्ह पडल। एक्ह िजनैवतक उिल-पुिल क काणि मैविल विदत-िगषएतय सँ पडीक' नेपाल

चल गेलाह। ओ सभ ओकह ठामक ाजिदबािा मे संकिग आ पोत्साहनक हेतु गेलाह। नेपाल सुसंस्कत क्शाका-पेमी लोकक्नक दाा मैविलीक नेपाल मे साक्हत्यक भाराक र प मे स्ीकाा कयल गेल। ओकह समय मे मल्लाशिक शासल ाल। मल्ल शासक लोकक्न काव्य आ नाटकक अत्याक्धक पेमी हिव। मल्ल ाजािशिक दाा मैवाल साक्हत्यकाा लोकक्न के पोतसाक्हत कयल गेल जका फलसरिप मैविलीक पाक्भमक नाटय-साक्हत्यक ाचिना नेपाल मे पाम्भि भेल। क्दिापक्तक पवपािटाा पा ाचिल गेक्नहाा साततं पदक अक्नवातत एकह कालाक्धक अक्धकाश पदनाटक मे गुक्मफत अवा। मैविली गीत सँ गुक्मफत संस्कत-पाकत नाटकक ाचिनाक शीगणेश ज्योक्तशीशाा कयने हिव जका उमापक्त उपा्याय आगाँ बढौलक्न जे एकह कालाक्ध मे किशेर पचक्लत भेल। कमशप संस्कत पाकतक क्याहाा कम होमय लागल आम मैविली मे सम्पूणष नाटक क्लखल जाय लागल। पदाालत-साक्हत्यक समान म्यकालीन नाटक नेपाल आ आसाम धवा क्यापक भ' गेल। एकह एकाा मैविली नाटकक किकास तीन केहद्र मे भेल,क्मविला, नेपाल आ आसाम।नेपालक मैविली नाटककाा लोकक्नक कायष भूक्म भातागााँ, काठमाण्डू आ लक्लतपुा पाटन मे हिल। नेपाल मे मैविलीनाटक संस्कत नाटक पाम्पािक सािनपा मैविली नाटकक सूतपात भेल। ऐकह समय मे मुसलमानक पभाा सँ नेपाल मुतत ाल जका फलसरिप सास्कक्तक आ साक्हत्यक क्कया-कलाप मे कोतो नाहिक क्याधान नकह भेल। एकह पकाा नेपाल मे मैविली नाटकक सूतपात भेल जे एक भाग अपन नाा-क्शल्पक उतािन मे लागल हिल आ दोसा भाग पाचीन संस्कत-पाकत-मैविली क्मक्शत क्नभाक्नक नाटय फलाकसरिप

के कि्छु क्षदन धरि अपन पूरिितीिी सरिप के सुक्षित्त खिलका नेपाल मे मैविली नाटकक जे शंखला सिावपत भेल ओ कि सब शेय मल्ल िाजिशि के िैक। भात गााँि मे पचुि पविमाण मे नाटक क्लखल गेल आ उल्लेखनीय नाटककाि मे जगज्ज्योक्षतमल्ल (1613-1633), जगत्पकाशमल्ल (1637-1672), सुमक्षतक्षजतावमतमल्ल (1672-1696), णिजीतमल्ल (1722-1772),भूपतीन्द्रमल्ल (1696-17क22) आ शीक्षनिासमल्ल (1658-1685) िवि। णिजीतमल्ल सबसाँ बेसी नाटकक िचना कयलक्षन। काठमाण्डू आ पाटनक उल्लेखनीय नाटककाि मे िशमक्षण आ क्षसद नक्षिसंह देि (1622-1657) क नाम लेल जाइत अवि। ई नाटककाि लोकक्षन पचुि पविमाण मे नाटकक िचना कयलक्षन जनक्षह मे जगज्ज्योमल्ल क *हाि गौिी विहि* (1970). विशिमल्लक *विदाविलाप* (1965) आ जगत्पकाश मल्लक *पभाितिी हिणि* नाटक अदयावि पकाक्षशत भ' पाओल अवि। शेर अन्य नाटककाि लोकक्षनक नाटकक पकाशन अदावि नक्षह भ' पाओल अवि जे नेपाल दिबाि लाईबेिी मे संक्षित्त अवि। शेर अन्य नाटकाक्षदक पकाशनसाँ मैविली नाटकक उदय आ विकास पि नि पकाश पक्षड़ी सकैि। एक्षह नाटकाक्षद मे गीतक पधानता अवि, कििनक पौिाक्षणक अवि, नाटककाि तयो होि्छ, क्षकन्तु ओक्षह मे पयुतत गीताक्षद अन्य कवि लोकक्षनक उपलब्ध होइि। सभा नाटक अक्षभनीयता साँ पूणष अवि आ ओकि भारा मानक मैविलीक पक्षतमान पस्तुत किैत अवि। महािाज पर्थीनाियिण साह (1768-1775) क आकमणक फलसरिप मल्ल िाजिशि दािा सिावपत पिम्पिा समाप्त भ' गेल आ ओकिि सिान पि गोखिा िाजिशिक सिापना भेल। एकि फलसरिप काठमाण्डू

आ पाटन मे नाटकक पिम्पिा क समाप्ति भ' गेल, किन्तु भातगाँि मे अदायि ई पिम्पिा सुक्षित अछि।नेपालक उपयुक्त पिम्पिाकि कीण आलोक काछिला मे सेहो भेटैत अछि। कािछिला मे जे नाटक लिखल गेल ओकि नाम के न' कए विद्वान लोकन मे मतैत्यक अभाि अछि। डा. जयकान्त मिश (1922-2009) एकि *कीतिनियाँ नाटक* िसानाि ि (1906-1971) *कीतिनियाँ नाच* आ डा. पेमशंकि सिंह (1942) *लीला नाटक* नामसँ अभिहित कयलनि अछि। एिह नाटककािद मे मूलरूप सँ शिाि ताि विष्णु क लीला पस्तुत कयल गेल अछि। एिह नाटककिद के नाटय मण्डली आिद कषण आ शिासम्बन्धी विविधि किािद के आधाि बना क' पदशिन किैत छलि. एिह कोटिक नाटक मे उपलब्ध सामगी सभके तीन काल खण्ड मे बाँटल जा सकैछि पिम उत्थान, द्वितीय उत्थान आ ततीय उत्थान । पिम उत्थानक नाटककाि मे गोविन्दक *नलचिवतनाटक* िमिदास (1644-1671) क *आनन्द विजय नाटक*, देिानन्दक *उराहिणि* आ िमापतिक रुक्मणीहिण इत्यािदक नामोलेख कयल जा सकैि। द्वितीय उत्थानक उल्लेखनीय नाटककाि लोकनि मे लाल कविक *गौिसिययंि* (1960), नन्दीपतिक *कषणकेिल माला नाटक* (1960), गोकुलानन्द क *मानचिवत नाटक*, शिािदतक *पाििजात हिणि*, कणिजयानन्दक *रुकमागद नाटक* शीकान्त गणक *शीकषण जन्म िहस्य*, कान्हािमिदासक' *गौिि सिययंि नाटक*, ित्तिपािणाक *उराहिणि नािटका*, भानुनाधक *पभािती हिणि* आ हरषिाि ि (1897-1898) क *उराहिणि, मािािनन्द* एिं *िधिाकषण मिलन लीला* (1962) आिद सािहित्यक दिष्ट सँ उल्लेख नीय अछि।ततीय उत्थानक नाटककाि मे विशिनािि ि क *िमेशिचिन्द्रक* चन्दा ि

क *अहल्या चरित नाटक* महामहोपाध्याय परमेश्वर झा क *महरासुर मर्दनी* आ हिनके पुत्र पण्डित बलदेव मिश्र (1897-1975) क *निजनिर्वाण* एवं *मिथिलोदय* नाटक' उल्लेखनीय अछि। एहि मे सँ कतेको नाटक अनुसंधाना लोकनिक अथक प्रयास सँ प्रकाश सँ प्रकाश मे आयल अछि, किन्तु अधिकाश अदयावधि अप्रकाशित अछि। ई नाटककार लोकनिक नाटकादि मे नाटकीयताक अभाव परिलक्षित होइत अछि तथापि एहि कालक नाटकक बुझित दीपक क्षीण आलोकक अभास भटैत अछि।मैथिली नाटकक विकसित आ सुव्यवस्थित स्वरूप हमरा असम मे उपलब्ध होइत अछि। महाप्रभु चैतन्यक वैष्णव धर्मक समस्त पूर्वाचल क भारतीय साहित्य पर यथेष्ट परिमाण मे पड़ल जकर परिणाम भेल जे साहित्य पूर्णरूप भक्तिमय भ' गेल। फलतप साहित्य मे सिक दवार सँ विशेरतप कृष्णक अवतार लीला कवि के अधिक प्रशय देल गेल। वैष्णव कवि लोकनिक अभिव्यक्तिक भारा अहधिकामिय छल। विद्यापतिक शृंगार रसिक पदावली मे राधाकृष्णक उल्लेख रहिलाक कारणे चैतन्यदेव ओकरा भक्तिरस क कविता बुझलनि। ओ वैष्णव धर्मक प्रचारार्थ विद्यापतिक कविता के माध्यम बनौलनि। जखन विद्यापतिक भारा आसाम पहुँचल तखत युगपुरुष शंकरदेव (1449-1568) आ हुनक शिष्य माधवदेव (148951556) विद्यापतिक भाराक अनुकरण क' कए ओकरा संग असमिया के मिश्रित क' कए एक नूतन भारा ब्रजबुलिक जन्म देलनि। आसमाक ब्रजबुलि असमिया साहित्यक मेरुदण्ड अछि। एकरा माध्यम सँ असमिया-साहित्य रस-समृद्ध भेल अछि। एक दू रूप विकल्प गीत आ अंकयानाट। युगपुरुष शंकरदेव वैष्णव धर्मक प्रचारार्थ नाटक कें माध्यम बनौलनि।

अडीयानाट मे गद आ पदक समविभाग विक। सबसँ आश्चयक बात विक जे महापुरर शंकदिि विशुद आसकया मे चिना कयलक, मुदा विदापकक भारासँ ओ एतेक अवधक पभावित भेलाह जे मैविली-वकशात असकया मे ििगीत आ नाटकक चिना कयलक। असमी साहित्य मे एकि एक विशष्टता पि पकाश दैत अवि। डा. िणीकाह्त कातकी *क कनि िक, जाक पकाि पचण्ड ितिया िन मे लागल दतिवान के पजविलत किबा मे सहायक होइत अवि ओही पकाि साहित्य जातीय एिि महाजातीय आह्दोलन के पेवित किि। नाटक, गीत एिि पद ई तीनू शंकदिेकि िषाि-आह्दोलन के शातत पदेश मे एतेक व्यापक आ लोकविय बनौलक जाक पकाि मरभूवमक ऊँट जलक गह्ध-सूत पकविड क' जलाशयक खोल मे चवल पडैि ओही पकाि तवरत जनता ििगीतक सौिभसँ आकष्ट भ' कए शंकि माधिक शिणापह्न* भेलाह असवकया साहित्य, 510 िणी काह्ता काकती)।युगपुरर शंकदिि अपन तीिषयाताक कम मे विदापवत क िषाि-सम्पदायक गुरमाक वविला अयलाह। ओवह समय मैविली-काव्य आ नाटय-साहित्य विकासक अपन चमिपि िल। उमापवत उपा्याय विचत *पाविजातहिणि* क अवभनय अत्यवधक भ' हिल िल। एकि विरय-िस्तु मेहो िधाकषणि िल। पाविजात हिणि अवभनीत होइत देवख क' पयोतता शंकदिि अत्यावधक पभावित भेलनाह। एस. के. भूइयाँक मातानुसाि, *आङ्यानाटक भारा मैविलीक ति आसवकयाक वशणक* विलकणक विलकण उदाहिणि पस्तुत किैत अवि। '(On Ak.ik.a NAT, S शंकिदिि अपन अवद्वतीय पवतभा आ अपवतभ िदुण्यक बल पि असवकया साहित्य मे अडीया नाटक जनकक रप मे पख्यात िवि।

नाटककाि लोकक्त पुिणाक्द सँ उपादान क चयन कयलक्त आ एक्ह सह्रभष मे भागति पुिण, हर्वंिश पुिण एिं िमायण हुनक पधान उपजीव्य िहल। शंकिदेिक क्ाम्माक्कत नाटक काक्लदमन (1518), पत्तीपसाद (1521), केक्लगोपाल (1540), िमर्वजिय (1568), रक्तामणी हिण (1568) एिं पार्विजात हिण (1568) आ माधिदेिक भोजनर्विहाि, भूक्त लोटिा, अजुषा भंजन (1538), र्विम्पाि-गुचोबा, िसिुमिा, चोिधिा, कटोिा-खेलोबा, भूरण हेिािि एउिं बहमा-मोहन आक्द पकाक्शत अिर्छ। एकिं अक्तार्वतित गोपाल अता (1533-1688), क्दजिािजभूरण (1507-1571), िमचिन ठाकुि (1521-1600) आ दैत्यािर्छ ठाकुि (1564-1622) आक्द नाटककाि उल्लेखनीय िर्छ। यदक्प एक्ह नाटक सभक किा-र्स्तु पौिािणक िहल, क्कन्तु संस्कत औि पाकतक सिान पि मैर्विली-असक्तया-क्मक्शत गदक पयोग भेल। गीतक क्सिक्त यिािित िहल, क्कन्तु संस्कत-पाकतक पयोग नक्ह कयल गेल जतय ओ अक्तािियषिल। एक्ह नाटकाक्दक उदेश्य मनोर्विनोद नक्ह, पत्युत िषिाि धमष पचाि कििब िल। एक्ह लेल अक्धकाश नाटकाक्द मे कषाक िात्सल्यमय आ दासति भाििक पूणषलीलाक रप मे िणषा कयल गेल। िगमंचक दक्ष सँ ई अक्धक सुव्यर्क्सित अिर्छ।एक्ह नाटकाक्द र्विरय-र्स्तु, रप-िचिना, भारा आक्द र्विक्शष्टता के देखलासँ पक्तभाक्रत होइत अिर्छ जे युगपुरर शंकिदेि असमक लोक मनोिजनक र्विधा पि मैर्विली आ बज क्ेत्त मे पचक्लत िगि-शैलीक आिापिन ओक्हना कयलक्त जेना संस्कत नाटकक शास्त्तोतत पिम्पिा िल, कािण नाटकक माध्यमसँ ओ िषिाि धमषक पचाि-पसाि कियि चाहैत िलाह।

म्‍यकालीन अन्‍य उल्‍लेखनीय सामगी सभ मे मैविली गदक पाचीन पिम्‍पिा के जोडबाक कामत पाचीन दस्‍ताजािवेद मे एक एकनिामा, गौंििि चव्‍टका, बन्‍हखत, अजातपत, एकपित, कास्‍ताि पत, दानपत, फैसलापत आ कवटी-पती उपलब्‍ध होइत अवि। एिह अवमलेखावद मे शायत कतहु सािहित्‍यक सौन्‍दयष भेिि। मैविली सािहत्‍य मे एकि महति एिह बात के ल' कए अवि जे सब मैविली गदक विकास-कम विवहन्‍न पिम्‍पिािक पूवाषकाित अवि।

पद-काव्‍यक पिम्‍पिा तँ पूणषितेिहल, कन्‍तु एिह युग मे महाकाव्‍य, चवित-काव्‍य, सस्‍मि आवद कलखबाक पिम्‍पिािक शुभाम्‍भ भेल। निािजनैवतक, सास्‍कवतक, सामावजक आ सािहित्‍यक सिरपक जन्‍म भेल आ मैविली मे नियुगक पाम्‍भ भेल। एिह समय मे डा. सिजाजष अबाहम वायसष दाि संकवलत एिि सम्‍पावदत चिनावद मे मैविली कस्‍टोमैिि (1882) तिा टिन्‍टी निि षिपाि कम्‍स (1884), भोल िि दाि सम्‍पावदत मैविली गीत संगह (चावि खण्‍ड) (1917), लवततेश्‍ि िसंह दाि सम्‍पावदत मैविली संस्‍कत भवत गीतावदक संगह, मैविल भतत पकाश (1920) आ वजतेन्‍द नाियिण ि दाि संकवलत आ कविशेखि बदीनाि ि (18931974) दाि सम्‍पावदत मैविली गीतिनािली उल्‍लेखनीय अवि। एिह काल खण्‍ड मे गीवतकाव्‍य क पिम्‍पिािक विकास भेल। विदापवतक पिम्‍पिािक अवतवतत गीवत-काव्‍यक काव्‍यकाि भेलाह ओवह मे भजन कवि, लालकवि, कणषश्‍याम अवि पमुख िवि।पििती म्‍यकाल मे एक नि-धािि चलल जकि सन्‍त काव्‍य क नाम सँ सम्‍बोवधत कयल जाइि जकि आधािि स्‍तम्‍भ मे साहेबिाम दास (लगाधक 1746), महात्‍मा िवक्‍मणीदत गोसाई, महात्‍मा तािदित गोसाई, महात्‍मा

िमरपदास, महात्मा लक्ष्मीनािगोसाई (1787-1872)महात्माहर्वकिंकिदास,महात्मा िमरपदास, महात्मा हकर गोसाई, महात्मा पिमानन्द दास आ िघुििगोसाई पमुख िव। लक्ष्मीनािगोसाई क गीतािली (1969) मे पकाश मे आयल अवि।विद्यापित्क शंगाि-पधान गीत पिम्पिाक विपिीत मनबोध (क्षधन 1788) कि काव्यक म्‌य मे *कष्णजन्म* (1934) क िचना कयलक। क्षनक लोक क्षायताक पमुख कािण वि जे ई गाम्य-शब्दाक्क सिचिन्ह भ’ कए पयोग कयलक। इएह कािण अवि जे मैविली साक्षत्य मे क्षनक महत्पूणष सिान अवि।अनेक दक्षसं मैविली साक्षतयक आधुक्षक काल मे अत्याक्षधक आधुक्षकताक आभास भेटैत अवि। सन् 1857 ई. क क्षसपाही विदोह क पश्चात् भाित िषिक िाजनैक्षक के्त मे बड पैध पविििष भेल जाक्ष सँ साक्षत्य मेहो अिूत नक्ष िहल। जतय अक्ष्याक्ष्य भाितीय भाराक्ष मे साक्षत्य मे गदक क्षदशा मे अत्याक्षधक पगक्ष भेल ततय मैविली उपेक्षक्षत िहल। एकि पमुख तत्ि िल फोटषवक्षलयम कालेज क दािा उपेक्षा, क्षशीन्िी दािा उदासीनता, क्षलिी आ टाइप पेसक अभाि, समाज सुधाि सम्बक्षन्धी आन्दोलनक अभाि, नि-क्षशक्षा योजना आ कचहिी क भारा मे मैविलीक उपेक्षा, मैविल पक्षण्डत लोकक्षक संकीणष दक्षकोण ति मैविली भारा-भारी मे जनजागिणक अभाि। एक्ष क्षदशा मे उपयुषक्त उपेक्षा नीक्षक फलसिरप मैविली भारा-भारी जतय िहवि ततय एक्ष गेलाह। आधुक्षक युग मे एक्ष साक्षत्यक जे पगक्ष भेल अवि ओकि एिशेय कीिशि चन्दाि, लालदास आ साक्षत्यित्नाकि मुंशी िघुनन्दन दास के क्षि जे मौक्षलक, अनूक्षदत िचनाक दािा मैविली साक्षत्यक

शंगाि कयलक्त।मैविली मे पत-पवतकाक्दक पकाशन क फलसिरप गद-साक्हत्यक विकास भेल जकिा मा्यमे सुक्दि भाराक क्तमाण भेल, शब्द-भंडाि मे शीक्दि भेल आ विशिविदालय स्तिि पि मैविली के पाठय-वरियक रप मे र्सीकाि कयल गेल। बीसम शताब्दीक पाविम्भक दशक मे मैविली मे पत-पतकाक्दक पकाशनक शुभाििम्भ भेल जकि फलसिरप आधुक्तक गद-साक्हक्यक विकास मे तीिता आयल। मुदण कलाक नर्ीन िजााक्तक पगक्तक फलसिरप पवतकाक्दक पकाशन मे जोदिाि पगक्त भेल। मैविली पतकाविताक पाविम्भक अिसिि तप, उत्सगष आ पीडीदायक िहल अवि। मैविलीक सषििम पवतका क्तविलेति केत्त जयपुि सँ पकाक्शत भेल मैविल क्हत साधन (1905)। एकि पकाशनक दोसि िरषकाशीसँ क्तविलामोद (1906) क पकाशन भेल। क्तविलामोद मातभाराक जागणिक जे शंखनाद कयलक ओकिा क्तिि्क नक्ह कहल जा सकैि, कािणि मैविलीक आडण्म मे बैह शंखनाद काक्ततक सिि बबल। क्तभीकता, क्यंग्य, मैविलीतिक समिषा, मैविली भाराक ओजक्सिता एक्ह पवतकाक पधान गुण िन। क्तविला सँ क्तविला क्तक्हि (1907) मे उक्दत भेल। पाििम्भ मे एकि सिरप माक्सक िहल आ पािाँ जा क' ई साप्ताक्हक भ' गेल। मैविली मे ई पवतका दीघषजीिी िहल। सन् 1960 ई सँ 1989 धवि ई पकाक्शत होइत िहल। जतय धवि मैविली मेिक पश्न अवि एकि योगदान सििाहणीय िहल। एकिा दािि गद के अक्तमाक्दष्ट कििबाक उशय सँ उत्पेविति भ' कए तििषान गद-गंगा विविधि रप सँ समलंकत भेल अवि। सितन्योतिि काल मे मैविली गद-साक्हत्यक विकास विक्भन्न विधा यिा उपन्यास, कहानी, क्तबन्ध, आलोचना,

याता, संस्मणि, साक्षात्कािआदि गदक संभावित विधाक्षक विकास मे एकि बहुमूल्य योगदान हिल। पिम विशि युद क पश्चात् मैविली पत्रकाक्षक पकाशान मे तीिता क संचाि भेल। एिह कालाविध मे अनेक पत्रकाक्ष पकािशत भेल जे सािहत्यक जागिण मे सहयोग दैत हिल। ई पत्रकाक्ष मातभाराक पत्त जे शाक्ता जनमानसक ्यान आकष्ट होइत हिल जकि पत्तफल ने तँ एकिा अिशेत्र कहब। मैविल पभा (1920-1926, मैविली पभाकि) (1929-1930), शी मैविली (1925-1927), क्षविला (1929-1931), क्षविलाक्षत (1931-1932), मैविल बह्धु (1935), मैविलयुिक (1931-1941), जीिन-पभा (1940-1950), भाििती (1937), विभूक्त (1936-1938), मैविली सािहत्यपत (1937-1938) आदि अनेक पत्रकाक्ष सािहत्यक जागिण मे सहयोग दैत हिल अिछ।देशक सिाधीनताक पश्चात् तँ मातभाराक्षक महति आि िसी बिढ गेल अिछ। जनसाधािणक ्यान मातभाराक क्षदस गेल आ सचेष्ट एिं जागरूक भ’ कए एकि विकास मे संलग्न भेलाह। सितंतताक पभात मे सिदेश (1948) क अभ्युदय भेल। पटना सँ क्षविला ज्योक्ता (1949) पकािशत भेल। सीतामढी सँ िैदेही (1950) पकट भेल। मातभाराक एिह निितािन मे क्षविला दशषा (1952), पल्लिि (1948), क्षविला मेिक (1954), क्षमाण (1955), इजोत (1960), क्षविला दूत (1954), बटुक (1949) घीयापूता (1957), कणामत (1981), अक्षतका (1998), पूिित मैविल (2000) एिं घिबाहि (2001) इत्याक्ष सब पत्रकाक्षक योगदान अिछ।मैविली मे एिह पत्रकाक्षक महति समाचाि पतक रप मे नक्ह बिछ। साप्ताक्षक पत्रकाक्ष मे देश-विदेशक िाड बहुत

समाचार पित्र िल तािव ई समाचार पत कहयबाक अधिकारी नहि। यदकाि ई समाचार पत सिाई रुपे नहि चलल सकल, तािव ई पमाणमात क' देलक जे जँ समुचित व्यसिाक संग समाचार पत चलाओल जाय तँ मैविली पेमी जनमानसक सहयोग काश्चये भेटत।ई पतिकाक मैविलीक विकास मे अपन महतिपूणष भूमिका क काहि कयलक। एकर पतिकाकेक साहितियक महति अवि। पतिकाक सँ मैविली साहितियक विकास मे अपेकित सहायता भेटल। ई गदक पदिष्ठा कयलक, जानक परि कयलक, मातभारा मे मनोरंजक साहितय के पोतसाहित कयलक तिर मातभारानुरागी पाठक िगषक किमाण कयलका एकि संगहि पेरणा आ पोतसाहनक फलसिरुप नि लेखकक दल तैयार भेल जे मैविलीक शंगार-विनियास मे लगन सँ संग देलक।

कविला पतिकाक पर ई एक नि दावयचि िल जे ओ मैविली के ह्ययायोचित सिान कदयबा मे संघरष कयि। एकर कदशा मे सफलता मेहो भेटल। सरकारी काज मे तँ नहि पहितु कशका-विभाग मे मैविली के सिान भेट्ट गेल। देशक सिाधीन भेलाक पश्चात् उपयुकत पतिकाक पर आरो दावयचि आकब गेल अवि। मैविलीक संग कविला आ मैविलक सिि मेहो उग रुप धारण क' हिल अवि। मातभाराक पति ममतकि संगहि-संग राजनीतिक आ आविषिक दकष कोण मेहो व्यापक भ' गेल अवि। मैविली पतिकाक एकर सफल नेतति कौति अवि। एकर पतिकाकेक मा्यमसँ एकर शैलीक यरािषसिरुपक कधारण कयल गेल आ गदके वयाकणिक कठोर कियमाक सँ बाहहल गेल। एतबा सीकार कयि पडत जे एकर पतिकाकेक मा्यमे गद के एक अवमनि कदशा भेटल।सामाकजक

जागत, ाजिनीक्तक असहतोर आ पत्तकाक्दक पकाशनक फलसिरप कबह्ध महतिपूणष साक्हक्यक विधाक उदय भेल विचाि आ विरयक बह्धन नक्ह िहबाक काणिे आत्म-पदशषा, जान-गविमा, बहुशुतता ताि सूक्म पयषिेक्णक ािलक िहबाक काणिे ई साक्हक्यक महति पाप्त क' सकल। ास्ता मे आधुक्नक मैविली गद मे कबह्ध पाक्भिक युग सँ उपलब्ध भ' िहल अवि, मुदा एकि समुक्त विकास बीसम शताब्दी मे आक्ब क' भेल अवि। मैविल क्हत साधन, क्मविलामोद, क्मविलाक्मक्हि, शीमैविली, क्मविला, भाािती, विभूक्त, कणामत, िैदेही, क्मविला दशषा आक्द पत्तकाक्दक पकाशनक फलसिरप ई विधा आि पुष्टति भेल अवि। आक्भ मे सामक्यक, सामाक्जक एिं साक्हक्यक आक्द विविधाविधाक्द क संगक्ह-संग अनेक उपदेशात्मक कबह्ध क्लखल गेल। एकिा संगक्ह-संग अनेक विरयाक्द पि पाक्णडति पूणष आ गम्भीि कबह्धक िचना भेल। पत्तकाक्दक सम्पादकीयक मा्यम मे कबह्धक विरय, शैली कथ्य आ पभाि सभ रप मे एकि पविक्धक पविक्धक विस्ताि कयल गेल,गद के पविमाक्जषत कयल गेल। क्मविला मोदक सम्पादक महामहोपा्याय मुिलीधि ाि (1869-1929) आ क्मविला क्मक्हि सम्पादक सुधाशु शेखि चैधिी (1920-1990) ताि अह्य पत्तकाक्दक सम्पादक जे पख्यात साक्हत्यकाि िहवि, विक्शष्ट गदकाि िहवि जक्नका दािा क्लखल गेल सम्पादकीय कबह्धाक्द के पुस्तकाि संकक्लत नक्ह कयल गेल अवि जे पमाक्णक इक्तहास, साक्हत्यक इक्तहास, समाजक इक्तहास ओक्ह सम्पादकीय कबह्धाक्दक दुइ संगह पकाश मे आयल अवि जाक्ह मे लक्मण ाि (1916-2000) क विचाि क्वह्तामक्ण (2002) एिं भीमनाि ाि (1945) क लघूतिीय (2003)।सम्पूणष मैविली

नबन्ध-साहत्य के चारिभाग मे विभाजत कयल जा सकैिप

i अभ्युतिान युग 1906-1920

i पर्विमाजषा युग 1921-1947

ii उत्करषयुग 1947-1960

iv पसणि युग 1960 क पश्चात्।

मैविली नबन्ध साहत्यक विकास कम उदि आ अभ्यास, पयत्त आ नमाण, उत्करषआ पर्विष्काि तिा पसाि आ पसाधनक असिि मे नहित गनाशील आ विकासोन्मुख हिल अवि। विरय आ शैलीक दना सँ एहू मे विविधता भेटैत अवि। मैविली मे अदयावि पकाशत नबन्धात्मक िगीकणि आ नबन्धकािक पैध सूची पस्तुत कबि कठन अवि, मुदा ओकिि विचािात्मक, िणिात्मक, भािनात्मक, आलोचनात्मक अिश्य कहू सकैत िी। तिमान सन्दभष मे आत्म-चिति, जीिनी, संस्मणि, इतहास, भूगोल, दशषा, धमष आद विरयाद के `यान मे िखि क' अनेक नबंध नलखल गेल अवि। एहू िचनाक विशष ता एहू विरय के ल' कए अवि जे एहू मे नबन्ध शैली मे निीनताक आभास भेटैत अवि। एहू मे युग चेतनाक पाणिता नयोजत अवि। ई ियक्तक, सामाजक, साहत्यक आ शास्त्रीय भूम पि संिणि कित सचिन्तता आ कलात्मकता एिं भौनकता यिािोन्मुखताक दशा मे अगसि भ' हिल अवि। व्यक्त आ विरय, कला आ शास्त्र, संिेदन आ चन्तन क सिि एहू मे संपयुक्त आ आसिद अवि। मैविली नबंध व्यक्त आ विरय तटक बीच पिहत भ' हिल अवि। अदतन पविणत एहन अवि जे मूलधाि सँ विकसत भ' विरय आ व्यक्त विरयक पिहि मे दू नहकि समान पिक्-पिक् सौन्दयषउदाट्त क' सकल

अवि जेना पगक्तािदी आ आत्म-केक्न्दत क्नबंध।मैविली क्नबंध कम विकास सिािपूणष आ समद युतत अवि। ओक्न मे पौढता, पविितषाक अक्तवितत सिुत्तु, दक्ष कोण, र प-शैली आ भारा-पयोग क िविय अक्जष्ठा कयलक अवि। एक्न विधाक एक अपन पहचान अवि जे कालाक्तिि मे मैविली साक्न्क्यक गौिि मानल जायत। एक्न पकाि क्नबक्न्धकाकि भाि-पिणिता, हाक्दषकता, कल्पनाशीलता एिं सिचि ह्द पिक्तक पविणाम सिर प मैविली क्नबक्न्ध साक्न्त्य अपन नि पल्लि सँ पल्लवित कयलक अवि। *खटि ककाक तिग (1948)* कनाम सँ पकाक्शत हविमोहन िा (1908-1984) क कक्त हुनका विक्शष्ट क्नबक्न्धकाकि पविचय दैत अवि। एक्न मे लेखक अत्यक्न्त कुशलतापूििक व्यक्तत, समाज, धमष, दशषा आक्द सभक आलोचना पस्तुत कयलक्न अवि। िकि जकाि िउिड एपाउट पेपसष कहलक्न िहि विक्शष्टता हुनक क्नबक्न्धा क्नमे पविलक्क्त होइत अवि। एक्नमे संगहीन पत्येक क्नबक्न्ध िितालाप र पमे अवि जाक्नमे बाकू विलासक चातुय्यषक सगक्न सिुत्तु-विह्यासक अदयुत कुशलता देखबाक हेतु भेटैि। हास्य-व्यंग्य एिं उवितक दक्ष सँ ई क्नक्न्ध लेखकक मैक्लक पक्तभाक पविचायक वि क।

हमि क्नबक्न्ध साक्न्त्यक पविसि मे स्केच, विपाताज, संस्मिणि सहि वियके सक्म्मक्लत क' लेल जाइत अवि। कक्न्तु सत्य बातते ई वि क जे ई सभ विधाक्द हमि ओतय पासक्भकासििक्न मे िहिल अवि। मैविली क्नबक्न्ध साक्न्त्य मैविली गदयक विकासमे अत्यक्धक फलतप गदयके वि विधि पकाकि विचाक्िक अक्भव्यक्तत माध्यम बनय पडल जकि फल सिर प एक्न विधामे पक्णडत लाल दास कस्त्तीधमष क्शक्ा (1910), िधाकषण चौधिीक साक्न्क्यक क्नबक्न्धाविली

(1950) एि शाविक्त धा (1968), िमानाि ि क क्वबंधमाला (1370साल) एि पबह्य संगह (1317 साल) शैलेह्न मोहन ि (1929-1994) क पिहेर्वि िधा (1963), उमेश क्वश (1895-1967) क मैर्वि ल संस्कक्त ओ सम्चता (1960), बलदेि क्वशक 'क्वाकु क्वाका (1952), गपशप र्वि कि (195A), भाित क्वाका (1955), िमायण क्वाका (1965), संस्कक्त (2006संित्) अमिनाि ि (1937) क दुतक्लक्यल ओ अह्य क्वबह्य (1979) इत्याक्द उल्लेख्य योग्य पकाशन जनमानसक समक आयल अर्वि। ओनातँ मैर्वि ली किाबीज रपमे कीक्तामता मे उपलब्ध अर्वि, क्कह्तु गदयक र्वि कास क हर्वि सँ आधुक्नक मैर्वि ली किाि सक्हत्यक र्वि धाक्द मे सिाषा नर्वीनतम अर्वि। एकि केत्र र्वि स्तृत अर्वि। यदयक्प पािम्भक कािक्दमे सुधाििदी पक्तिक पर्वि चय भेटैत अर्वि तािक्य आगा जा क' कािकाि लोकक्नक ध्यान िताि णिक क्नमाण आ चर्वि त-क्वयण क्दस गेल आ क्वाल्यक दष्ट सँ मेहो महत्पूणष पर्वि तिषा भेल। िस्तुतप एक्ह साक्हत्याक र्वि दाक उह्नैसम शताब्दी सँ मानल जाइत अर्वि। अधुनातन तथ्य अर्वि जे ओक्हमे मानब जाक्तक आधुक्नक आ नि संिनाक्द के क्यतत कि बाक शक्तत अह्य सब साक्हत्यक र्वि धाक्दक तुलनामे सिाक्धक अर्वि। मैर्वि ली साक्हत्यमे किाि र्वि कास बीसम शताब्दीक ततीय दशक सँ पक्हने नक्ह भ' सकल। तहयो ई मानय पडत जे एकिा लेल भूक्म क्नमाण पक्हनक्ह भ' गेल िल। आधुक्नक मैर्वि ली साक्हत्यक नि जागणिक जे इक्तहास पािम्भ होइत अर्वि, ओक्हमे संस्कातक र्वि दान् ला कक्हतक हाि िल, जक्नका अंगेजी क्वाका सँ कोनो सम्बह्य नक्ह िल, तािक्प अह्याह्य भाितीय भाराक नि र्वि कासक पेणा पाक्ब

क’ मैविली कवि के निरपण देबाक लेल पवि भेलाह। उन्हैसम शताब्दीक अन्तम दशक मे कविशिवचन्द्रा वा दावि पुरर-परीक्षाक अनुवाद सँ ल’ कए बीसम शताब्दीक पहिम तीन दशकक अवधिकाश कवि साहित्य अनुवाद अवि अवि उपाख्यान मात पर आधारवित अवि, जाहि मे भौलिकताक अभाव, गतिहीनता एवं चरित-क्षतण कनि दृष्टकोणक अभाव अवि, तावि जतय धवि साहित्य मे चैतन्य अनबाक पश्न अवि, कविक विकासक दृष्टि सँ पष्ठभूमिक पश्न अवि, ओकर स्थायी मूल्य विक।

मैविली कविक विकास के लक्ष्य क’ कए 1920 ई. क काल के भूमिका काल कहि सकैत वी। एहि समय धवि कवि स्वस्थ नहि भ’ सकल। एहि अवधि मे संस्कृत उपाख्यान के गहण क’ कए लिखबाक पचुरता छिल। एहि भूमिका कालक कतिपय घटना महत्वपूर्ण अवि। सुधारवादी आन्दोलन, स्वदेशी आन्दोलन सदश आन्दोलन बुद्धि जीवी मानस के पभावित क’ छिल वि। स्तुतप मैविली कवि साहित्यक विकास पर विचार करैत एकरा

i पारम्भ युग 1920-1935ई.

ii पगति युग 1935-1946 ई.

iii पयोग युग 1947-1960 ई.

iv विस्तार युग 1960-2000 ई.

मैविली कविक विकास कम मे दू कविक चचा कवि विशेर रप सँ आवश्यक भ’ जाइत अवि। ओ छवि काली कुमार दास लिखित भीरण अन्याय (1923) तवा भोल वा लिखित *मनुष्यक मोल* (1924)। एहि दूनू कवि मे आधुनिक शिल्प तवा स्तुक पति संचेतना देखल जाइत अवि। एकर पश्चात् मैविली गदक विकास

तीिशक्त सँ होमय लागल।ई कहब कठिन अवि जे कविला मोद, कविला कक्हि आ मैविली पभाक नीक्त एक्ह नि कि ि क्शलप्मक पक्त केहन िल। सन् 1920 ई. क पशचात् विक्मिन्न समयाक्द पि कि िकाि साक्हत्यक केत्र मे पिश कि ति हिलाह। पिह्तु एकिि संगक्ह-संग तर ण पक्ताभाशाली कि िकाि लोकक्क दोसि दल मेहो पस्तुत भ' हिल िल जक्तक पक्ताभा, चेतना एिि कि ि-क्शलप क चमत्काि विशेर र प सँ सन् 1935 ई. क पशचात् देखबाक हेतु भेटैि। पूिषिसिितंतता युग मे अनेक पशस्त कि िकाि साक्हतय केत्र मे पिश कयलक्न, कक्न्तु हुनक पविपिति शैली कि िक्द सिाधीनता पाक्प्तक पशचाते पकाश मे आयल।मैविली कि ि के लोकक्पय बनयाबाक शेय हविमोहन ि ि के िक्त। पणम्य देिता (1945) क कि िक्द जकि ि कि िकाि कटाक्पूणष खिाक्चत कहलक्न, पधानतप सामाक्जक जीिनक आलोचनाक्द पस्तुत कि ति अवि। सबसँ पैघ विलकणता तँ हुनक उपसािपन शैली सम्बक्न्धी मौक्लकताक्द िक्त। पाचीन कि ि-पदक्त के गहण क' कए गमभीि सँ गमभीि विरयाक्द के सिस सुसािद बन क' जन-मन-िजिन क संगक्ह र क्ढगस्त, जीणष शीरष विचाधािि पि कशाधात क' कए नि पगक्त क पेणिा दैत विि। ने तँ हुनका पाचीन अक्न्ध-विशिास क पक्त कक्षठा िलक्त आ ने तँ नििन अक्न्धानुकणिक पक्त आसक्ततए। पणम्य देिता क कि िक्द मे िीट पैद अनेक िसि समस्याक्दक क्दस पाठक क ्यान आकक्रषत कयलक्न जाक्ह मे सामाक्जक क्यंग्यक अत्यंत भक्य र प भटैत अवि।आगाँ चक' कि िकि लोकक्न क्यक्ततक ऐक्हक जीिनि आ हुनक क्यक्ततगत िक्शष्टय के ्यान मे िक्खाक' कि ि िचना कयलक्न। एहन कि ि मे मानि मनोविजानक पूणष् यान िखिल गेल

आ पातक बाहय पविकाक संगहि-संग ओकि अहतमषाक िाँकी देखबा मे आयल। मानि-मनक उदघाटन मे कलात्मकता तख नहि। अबैत अवि जखन ओ दहद आ संघरषमे पडल हैि। एहि दका सँ उपेहदनाि िा व्यास (1917-2002) क कवि *रसल जमाय* (1949) तिा सुधाशु शेखि चौधिी क *भाितिी* (1948) मे एक पुरर तिा एक नािी क पवतक्रयाहि ओकि अहतप संघरषक रप मे स्फुट अवि। मनाि िा (1923) विवत *आध घण्टा* तिा *माधिजी* मे अहतप संघष क वचतण अत्यहत मावमक अवि। एहि पकाि योगानहद िा (1922-1986) क कवि *ककि कोन दोर तिा वलखलाहा* (1946) मे मानि मलोववजानक मधुि ववहयास अवि।सितिहतयोति काल मे मैविली किाक ववकास अत्यंत दुतगवतसं भेल अवि। बौवदकताक समािेश आ मनोवजिान दू एहन तति हिल अवि जे मैविली किा-रपक ववकास मे अपेवक्त सहायता देलक अवि। वकहतु सतिहताक पूषि जतय ई पवितिषाक सूचक हिल आब ओ ववकासक पवममान भ' गेल अवि। रवढ़ीिद तँ हमि धमाहधता पि जबदस्त आघात कयलक अवि तिा एकि पभाि सँ पाचीन पोवरत संस्काि वषपभ भ' गेल अवि। ओहिना बौवदक ववकास सँ समाजिादी ववचािधािा के बल भेटल अवि आ मानि व्यवक्ततत्वक पक्त आदकि भाि जागल अवि। एहि सभक गम्भीि असि नि किाक ववरय आ उपादानपि पडल अवि तिा रवढ़ीिदी पिम्पिा, सामावजक शोरण, िगषसंघरषआ बािीक असहाय जीिन के स्पशषकयवाहाि अनेक िास किाहि वलखल गेल अवि। पविणाम सिरप समकालीन सत्य यिािषक वचतण कयवाहाि पभािीिदी किाक जहम भेल अवि।जीिनक एहि यिािषवचतण के

मनोवैज्ञानिक विश्लेषण कथाक्रममे गम्भीरता देलक अछि। जतय पूर्वक कथामे बाह्य जीवनक विषयक प्राचुर्य रहैत छल ओतय कथाकार लोकनिक दृष्टि अन्तर्मुखी भ' गेल अछि। सत्यता तँ ई अछि जे मनोविज्ञान कथाकार लोकनि के सूक्ष्म दृष्टि सँ समृद्ध कयलक अछि। फलस्वरूप चरित्र-चित्रण विशेष स्वाभाविक आ विश्वसनीय जँचय लागल। हठात् एहन कथाकार लोकनिपर टाइप क आरोप नहि लगाओल जा सकैछ। उदाहरणक लेल अन मेल वीहि पर प्रकाश देनिहार ललित (1932-1983) क लिखल *कलकत्ताक पेट* (1953) के देखल जा सकैछ। मानव मनोविज्ञानक मानवीय अन्तस्वप परिलक्षित मायानन्द मिश्र (1934) मे अत्यधिक अछि। अपन कहानी *आवागमन आ परिधि* (1956) मे ओ दृश्यक गहिराई मे ओ उतरि क' ओहि तुफान के देखबाक प्रयास कयलनि जकर साधारणतया उपरका सतह पर अनुभव नहि होइछ। हिनक अधिक कथा मे एहो ई विशेषता समाहित अछि। वस्तुतः मनोविज्ञान नवकथाके सबल धारा क' आकर्षक बना देलक अछि। एहन कथा मे घटना क बाहुल्य नहि अछि, प्रत्युत एक छोट सन साधारण सन घटना रहैत अछि जकर छाप एक मूड एवं भावात्मक रूप मे मन पर शेष रहि जाइत अछि।फ्रायड क मनोविज्ञान सम्बन्धी अध्ययन मे अचेतन मनक प्रसंग मे जे निष्कर्ष प्रस्तुत कयल गेल अछि ओकरा कतिपय मैथिली कथाकार लोकनि प्रातक व्यक्तित्वक मानदण्ड बनौलनि अछि। परन्तु अत्याधुनिक कथाक प्रति तीव्र प्रतिक्रिया कयल जाय लागल अछि। एहि कथा मे जीवनक प्रति अनास्था, मानवीय चेतनाक उपेक्षा एवं मेतसक क्षेत्र मे उच्छृंखलताक आरोप लगाओल जाइत अछि। ई

सत्य अछि जे अचेतन मानस मे चलकि काटैत विभिन्न क्रिया-प्रतिक्रियात्मक ताना-बाना सँ नीक सँ नीक कवि चित्रित कयल जा सकैत जे साहित्यक नव्यतम उपलब्धि हैत। फ्रायड, युंग, एडलर आदि मनोविज्ञानक क लोकक कहिन छनि जे मनुष्य सभ्यताक विकास क्रम मे भारि परकताक अनेक भिन्न आदिम प्रवृत्ति आदि के दूरित कहि क' ओकरा दबा देलक अछि जकर फलस्वरूप आजुक कत्तम जीवन मे अनेक भिन्न विकृति आदि आबि गेल अछि। हुनक मतानुसार मानविक समस्त क्रिया कलाप क मूल प्रेरणा-स्रोत ओकर यौन-आकांक्षा थिक आ ओकर प्रवृत्तिक के माध्यम क' जीवन व्यापार चलबैत अछि। ई तथ्य जेना मैथिलक क्षेत्र मे विद्रोह क' देलक आ नारीक तरि कामुकताक नग्न चित्रण पर प्रगतिवादि क मोहर लावा गेल। राजकमल चौधरी (1929-क1967) आ कल्पना शरण (1933) आदि क सम्मुख आइ मनोविज्ञानक इएह रूप अछि। राजकमल चौधरीक डलक लिखल गेल बड़ा कम कथा एहन अछि जाहि मे शारीरिक सीमा के स्पर्श कयल जाहि काम-भावनाक चर्चा नहि हो। परिचायक लेल हुनक *कतिकथा* (1956), *चहन्नादास*, 956) , *हर्विदारीस* (1957) आदि कविताके देखल जा सकैत। कल्पनाशरण तँ *गीन पदा* (1956) मे सासु आ जमायक यौन सम्बन्धक चित्रण क' कए अद्भुत साहसिकताक परिचय देलक अछि। ललित अपन कथा *मुक्ति* (1956) मे असंसि मन आ मस्तिष्कक परिता क' कए ओकार क्रिदानक प्रयास कयलक अछि। उपर्युक्त कथाकार लोकनिक विषय मे एकहि संग अनास्थावादी, अस्तित्ववादी, भित्तिवादी कहि क' लाक्षणा लगाओल जाय लागल अछि।सम्भवतः

कविक केन्द्र मे *यथार्थवादीक* एक दल बनल भेल अछि। एकर श्रेणीक कविता लोकक्षक चिनाक्ष मे जीनिक पक्ष गहल अनुभूक्त पाओल जाइत अछि। महान कलाक सम्बन्ध्ध धतिल सँ हैबाक चाही आ ओकरसँ एहन स्थितु पकट हो जाक्ष मे मानव स्थिति मे मानि बक्न सकय। फायड आ मातसषक क्षसदाह्त एहन कविता के अधिक्ष पभावित कयलक अछि, परन्तु ओ सभ अनुभव कयलक्न जे कला यथार्थसँ ऊपर अछि। अक्न आधुनिक कवि साक्हत्य पर जाक्ष कविता लोकक्षक हाथ अछि, ओ वशिष्ट गल्प डिक्नयक वकासक मानदण्ड थिक, जाक्ष मे सम्यक् परिचय खैत गप्प चिना मे संलग्न थिक। नव कविता मे सोमदेव (1934), पभास कुमार चौधरी (1941-1998), मायानन्द क्षश, भिमदेव झा (1936), गोविन्द झा (1923), गंगेश गुंन (1942), भिमानन्द अणु (1934), जीवकान्त (1936), नीजिर्षणु (1945), बंजकशोर भिमा मवापद (1918-1986) घूमकेतु (1932-2000) शैलेन्द्रमोहन झा, (1929-1994) नगेन्द्र कुमार आदि-आदि उल्लेखनीय थिक। एकर अतिवर्तित शताक्षक कविता एकर वधाक वकासक क्षदशा मे सचेष्ट थिक।स्वाधीनता पूर्वजतय अत्यन्त कक्षनताक संग कहानी पकाक्षत होइत छल ओतय स्वतन्त्रयोत्तर काल मे बड बेसी संख्या मे कवि-संग्रहक पकाशन होमय जागज अछि। उत्तर स्वतन्त्रता युग मे मैथिली कविक वकास मे पक्षकाक्षक योगदान सर्वाधिक हिल अछि। पत्येक पक्षकाक्षक उकार साधारणतया कविक क्षस हिल अछि। अतएव नव कविक चिनाक संग्रह-संग नव-नव कविताकि अवभाव अत्यन्त दुत गक्ष सँ भेल अछि। जतय धरि लघु कविक पश्न अछि एकर परिधि अत्यन्त वृिट होइत अछि। एहन कवि

सूक्ततक विशेरता सँ समन्वित होइत अछि अथिा कोनो िटि घटना के अपना क' कोनो महान सत्यक उदघटनक पयास हिल अछि। मैथिली मे व्यंग्य कथिक साहित्य सुसम्पन्न अछि। कथि व्यंग्य-कथिक अपन वशल्पगत वैशिष्टयक आधापि लघु कथिक कोटि मे गनल जायत। लोक-कथि एथि बाल-कथिक रप मे हमथि कथि-साहित्यक विकास भ' हिल अछि। मैथिली कथिक मे िाजिनीवत, धमषनीवत. समाज सुधाि सम्बन्धी ततवके आधाि बना क' कथिकाि लोकक एहि विधा के समुष्ट कबिाक पयास मे लागल छथि जे एकि आलकमय भविष्यक सूचक कहल जा सकैछि।आधुनिक भाितीय भारा साहित्यक मे उपन्यास एक नव विधा अछि जाहि मे मैथिली उपन्यासक इतिहास तँ आिो नव थिक। बातवला साहित्यक समीपिती हैबाक काणे मैथिली उपन्यासक विकास मे एकि यषिट पभाि पडल अछि। मैथिली मे उपन्यास लेखकक आिम्भ अनुिाद सँ भेल छथिला अवधि मे तुलापवत सिंह (1859-1914) कृत, धािािाहिक रप मे पकावशत *मदनिाज चवित* (1908) मनोिंजनक दवि सँ एकि जे महतत हो, परन्तु एहि मे यािाषिजीनिक वचतण लेशमात नवह छल। मैथिली मे मौवलक उपन्यास-लेखन जीिि वमश्र (1864-1923) क *िमेशि* (1915) सँ होइत अछि। एहि कडीके आगाँ बढयबा मे जनादषन िा जनसीदन (1872-1951) कृत *वनदषी सासु (1916), शशिकला (1915)* उल्लेखनीय अछि। ई दूनू उपन्यास छथिला अवधि मे धािािाहिक रपे पकावशत भेल। विनक अन्य उपन्यास मे *पुनविवाह (1926)*, *कवलयुगी संयासी (1929)* आ, *वनिमिमन हिस्य* (1945) क चचा कयल जा सकैछि। फेि िासविहािी लाल दास कृत *सुमवत (1918)* आ

पुष्पानन्द ि (1898-1967) क्लखत *मर्विला दपषा (1925)* क पकाशन होइत अर्वि। मर्विला दपषा क पकाशनोपिान्त मैर्विली उपन्यास लेखन मे एक नि संचेताक र्विकास भेल जकि फलस्ि रिप मर्विला नामक पक्तका मे पकाक्शत हर्विमोहन िाक *कन्यादान (1929)* धाििावक्हक रिप सँ पकाक्शत होमय लागल। स्त्ती-क्शक्षाक आिश्यकता तिा नि-पुिान र्विचाि संघरष के देखयबाक उदेश्य सँ एकि िचना कयल गेल िल। पुस्तकाकाि रिप मे एकि पकाशन 1933 ई. मे भेल। एकि पभाि मुरयतप तीन रिपे पडल-पक्हल समाजक मनोक्तपि, दोसि कन्या लोकक्नक व्यक्क्तगत जीिनपि आ तेसि मैर्विली लेखक समुदायपि एकि पकाशनक फलस्ि रिप मैर्विली उपन्यास पढक्निहाि क संख्या मे अत्यक्धक िक्ृद्ध भेल आ एक्ह सँ मैर्विली लेखक लोकक्नके पोत्साहन भेटलक्न। एही बीच मे काक्न्चीनाि िा क्रिण (1906-1989) क *चन्द्रगहण (1932)* क पकाशन भेल। यदक्प एकि स्िरिप अत्यन्त लघु अर्वि तिाक्प एकि स्िायी महत्ि अर्वि। पर्विपकिता आ पर्विमाजषा क दक्ष सँ कुमाि गंगानन्द क्संह (1898-1970) क अवालही (1935) सिोत्कृष्ट अर्वि।सामाक्जक आिष्टन मे जतेक उपन्यास क्लखल गेल ओकि संख्या पयाप्त अर्वि। गंगापक्त क्सह (1881-1973) क र्विधिा किणिक क्वत *सुशीला (1943)* मे पस्तुत कयल गेल। योगानन्द िा *भलमानुस (1944)* मर्विला मे पचक्लत कुलीन पिाक क्नस्साििता पि क्लखनल गेल उपन्यास अर्वि। िॅिनाि क्मश याती (1911-1998) िि-र्विाह के ल’ कए *पािि (1946)* क िचना कयलक्न। एही समस्या के ल’ कए फेि हुनक दोसि उपन्यास *नितुर्वि्या (1954)* पकाक्शत भेल। फेि

चतुरानन मिश्र क *कला (1947)* एकटा पत्रिकाक प्रसंग मे क्रान्तिकारी पत्रिका के ल' कए उपस्थित होइत अछि। विधिक विडम्बना उपन्यास एखन धरि लिखल जा रहल अछि। मायानन्द मिश्र अपन उपन्यास *बिहाड़ि-पात-पाथर* (1960) नारी समस्याक संगहि-संग दिवाक कारणक रूप प्रस्तुत कयलनि अछि। मैथिली उपन्यासक सामाजिक परिस्थिति मे आरो अनेक नाम अछि जाहि मे छोट-पैघ सामाजिक समस्यादिक चित्रण भेल अछि। बदरीनारायण दास लिखित *चन्द्रकला (1948)* मे चन्द्रग्रहण मे विवाह कथा के नाटक रूप मे प्रस्तुत कयल गेल अछि। एकटा प्रकाशक तारानन्द कंठ लिखित दुलारि (1957) मे नतुनिया कथा के नव प्रकार सँ प्रस्तुत कयल गेल अछि।सामाजिक जीवनक चित्रण जतेक कुशलता सँ बंजराशोभा मिश्र *मकरन्द* लिखित *अनलपथ (1953)* मे पबैत छी ओ शायदे अन्यत उपलब्ध हो।मैथिली मे व्यक्तिपरक उपन्यासादिक चर्चा भेल अछि। एहन उपन्यासादि मे सामाजिकता जतेक रहैत अछि ओतेक पायप सामान्य व्यक्तिक जीवन मे नहि। ई दोसर बात थिक जे कखनो-कखनो व्यक्तिक सामाजिक चेतना विशेष जागरूक भ' जाइत अछि। मैथिली मे नव नारीक आकर्षक चित्रण कयनिहार प्रथम उपन्यास हरिनन्दन ठाकुर सरोज (1908-1945) लिखित *माधवी-माधव (1935)* थिक, परन्तु मनोविज्ञानक स्वाभाविकताक न्यूनता सँ ओहि मे कृत्रिमताक मात्रा विशेष अछि। उपेन्द्रनाथ झा *व्यासक* उपन्यास *कुमार (1946)* एकटा दृष्टि सँ विशेष महत्व रखैत अछि जाहि मे देओर-भाउज क आदर्श प्रेम कथा के अत्यन्त मनोवैज्ञानिक ढंग सँ प्रस्तुत कयल गेल अछि। नव-नारी क एकटा सहज आकर्षक चित्र पर शैलेन्द्रमोहन झाक *प्रतिमा (1948)* क

कि ा-िस्तु आधाविित अवि। फेि हुनक *मधुशाविणी* (1956) क कि ा-िस्तुक क्रमाण मेहो व्यक्तितक एही आकरषा-पतयाकरषा पि भेल अवि।एहन उपन्यास मे यौन-आकरषाक सत्यता के पमावणत कविाक लेल सामावजक नैवतकता के खुजल चुनौती देल जाय लागल अवि आ लेखक दवषकोण एहन लगैि जेना िंशगत संस्कावि बेसी व्दन धवि एकि कवि नवह क’ सकत। एहन उपन्यासावद मे जतय व्यवक्तितक िाह्याडम्बिक पदाफाश भेल अवि, संगवह-संग आन्तविक जगतक िीभत्स नग्नता के क्रमिषता पूिाक देखल गेल अवि। िाजकमल चौधिीक विवचत *पाि ि फूल (1957)* एिं *आवद कि ा (1958)* मे इएह पिवत्त पबैत िी।उपन्यासक एवह विकासोन्मुख पिम्पिा मे कवि ु जासूसी उपन्यास मेहो वलखल गेल अवि। एवह िगाक अगगण उपन्यासकाि मे िवि गणेशचन्द्र चौधिी जवनक *कष्णाक हत्या (1957)* एिं *िनिहाि (1957)* क नाम सँ हुनक दू जासूसी उपन्यास पकाश मे आयल अवि। एवह कड़ीके आगाँ बढयबाक पिम्पिा मे बजवकशोि िमा *मवणपद* क *कोविगिल* एिं सोमदेिक *बहमवपशाच* (1970) (1972) क गणना मेहो गणना कयल जा सकैि।मैविली उपन्यासक पगवतक सामान्य विवेचन कयलाक पश्चात् हम देखैत िी जे ओकि णियविरियक दवषसँ मैविली मे अनेक पकािक उपन्यास वलखल गेल अवि। आइ हमिा पौिावणक, ऐवतहावसक, सामावजक, िाजनीवतक, लोक गािात्मक जासूसी सभ पकािक उपन्यास भेटैत अवि। सामान्य दवष मे ओकि ा िस्तु पिक आ व्यवक्तत पिक एवह दू कोवट मे िावशखब सकैत िी। िस्तुपिक उपन्यासक शेणी मे ओवह सब उपन्यासक गणना कवि जे हमि जीिनिक बाह्य अंगक अ्ययन पस्तुत कैित अवि।

एकक वपिीत व्यक्क्तपिक उपन्यास सभ मे मनुष्यक अन्तमषनक अ् ययनक पयास पबैत ि ी। एहि मे मनुष्यक पवृत्ति सबपि, हिस्यमय भा िनाक्दपि गुर्ति ी सबपि कुण्ठाक्द एिं दुबषलताक्दपि पकाश देल गेल अवि। एहि दृक्ष सँ हमि साक्हत्य मे ि स्तुपिक उपन्यासाक्दक संख्या पयाप्त अवि। क्शाक्त-पधान आ पौि ाक्णक उपन्यास, ऐक्तहाक्सक उपन्यास, समस्या पधान सामाक्जक उपन्यास घटना पधान जासूसी उपन्यासक एही कोक्ट मे अबैत अवि। मैविली उपन्यासक उर्षि उपन्यासकाि मे बजकक्शोि िमा *मक्णपद* क नाम अग्रयतम अवि। ई क्मविलाक लोक साक्हत्यक अ् ययन-अनुशीलन, क्चन्तनमनन क' कए हुनक व्यक्ततत्ि आ ि गभंवामा के एहन पक्िचाक्लत कयलक्न अवि जे मैविलीक अन्य उपन्यासकाि लोकक्न मे नक्ह उपलब्ध होइत अवि। ई ि ि-पैद पन्द्रह उपन्यासक ि चना कयलक्न जे अवि यि ा *अनलपि (1953), वदिापत्त (1960), लोर्विक वजिय (1973), ि ाियिणपाल (1976) लहिर्वि-कुशहर्वि (1976), फुटपाि (1978), अदषक्िशिि (1981) दुलि ा दयाल (1984), नागभूक्म (1985), आक्दम गुलाम (2003), कनकी (2003), भाि तीक* ि लाक्ड (1978) एिं *सोना ि पा हीि ा* (अ पकाक्शत) 1 ई अपन अक्धकाश उपन्यासाक्द मे लोकगाि ाक ि ि भावामाक चासनी द' कए वि लक्षण गदक क्नमाण कयलक्न अवि। क्हनक उपन्यासाक्द क सफलताक मूल तर्ि अवि क्हनक दृक्ष क महनता आ अन्तर्ि धिकता।मैविली चक्चषत उपन्यासकाि लोकक्न मे ि ाजकमल चौधि ी, मायानन्द क्मश, सुधाशु शेखि चौधि ी, पभास कुमाि चैधि ी, धीि ेन्द्र, लक्क्लत, जीि काक्न्त, ि मानन्द ि ेणु, क्ललीि , उराक्कि ण खाँ आक्द अनेक उपन्यासकाि लोकक्न ि ि षान

सामाविजक, िाजनीवतक पष्ठभूवमक आधाि पि उपन्यासाक्ह िचना कयलवन अवि। उपयुक्त उपन्यासकाि लोकवनक कवत एक्ह पकाकि अवि। िाजकमल चौधिी *आक्ह कि (1958), पािि फूल (1967) आ आन्दोलन (1968)* क िचना कयलवन जाक्हमे ओ काम-िासनक सम्बन्ध मे वनसंकोच आ सिचिन्ह विचिन कयलवन अवि। मायानन्द वमश वमविलाक जन-जीिनक अनुरप वाहावक पात पािि *(1960), खोता आ वचडै (1922) आ ऐवतहावसक उपन्यास मंतचुत* (1986) क िचना कयलवन। सोमदेि *चानोदाइ (1959) आ बहमवशाच* मे समकालीन समाज मे व्याप्त समस्याक्ह के उठयबाक पयास कयलवन अवि। मैविलीक सशतत उपन्यासकाि िवि सुधाशु शेखि चौधिी जे ई *बतहा संसाि (1979),* वािन्दता *(1996), तिपिटा ऊपि पटा (2003), दवदिवगवड (1987) आ अंगेजी फूलक वटी (2003)* क िचना कयलवन जाक्ह मे सामाविजक सन्दभष मे विविध समस्याक्ह के उदाटत कयलवन अवि।वमविलाक गामीण पविेश मे वमम्न िगीय के व्हशा-वदेश आ गम्भीि वचन्तन देलवन अवि लवलत *पथीपुत (1965) मे*। मैविली मे िमानन्द िेणु *दूध फूल* (1967) आ *उत्ति जनपद (2003)* मे वमविलाक आंचवलक पविेश के आधाि बना क' कए मावमषक वतण कयलवन अवि। जीिकानक *दू कुहेसक बाट (1968), पवपत (1967), अवमबान (1969), पीअि गुलाब(1970) एिं कतहु नव्ह कतहु (1971)* उल्लेखयोग्य औपन्यावसक कवत विक। व्हनक उपन्यासाक्ह मे वकंकतष्यविमूढ आ कुब्ध, असफल युिकक िमि कहानी जकिा जीिन मे पल-पल मे वािशा आ वािशा िलकैत अवि आ भूख, वािशा आ बेिोजगािीक अवम आधुवनक समाजके

कोना तबाह कऽ रहल अछि ओकर मार्मिक चित्रांकन भेल अछि। मैथिलीक निर्विवाद उपन्यासकार मे प्रभासकुमार चौधरी अन्यतम छथि जे *अभिशप्त (1970), युगपुरुष (1971), हमलोग जीब (1977), नहि ओड़ा (1979) आ राजा पोखरि मे कतेक मछरी (1981)* क रचना कयलनि। एहि क्षेत्र मे धीरेन्द्रक दुइ उपन्यास भोरुकबा (1965) एवं कादो आ कोयला (1982) उल्लेखनीय अछि।मैथिली उपन्यासक क्षेत्र मे उपेन्द्रनाथ झा व्यास क लघु उपन्यास *कूपत (1969)* क विशेष महत्व अछि, कारण प्रतात्मक शैली मे नव प्रयोग आ नव-विषय वस्तुक कारण ई अभिनव प्रयोग भेल अछि। मैथिली उपन्यास मे ललित जीक आगमनक फलस्वरूप एक नव कान्ति आयल। ओ *पटाक्षेप (1979), मुक्तिका प्रथम खंड (1981), मुक्तिका द्वितीय खंड (1981), उपसंहार (1991)* क रचना कयलनि। नव कथानक पृष्ठभूमि मे ओ अपन उपन्यासक कथानक के विन्यासस्त क' ई जतयबाक उपकम कयलनि जे मैथिली उपन्यासकार लोकनिके नव दिशा भेटल।इतिहास प्रयोगक सन्दर्भ मे मौलिक उपन्यासकार रचना भेल अछि जे किंवदन्ती पर आधारित अछि यथा केदारनाथ ठाकुरक *सौन्दर्योपासनाक पुरस्कार (1914)*, ब्रजकिशोर वर्मा मणिपद क *विदापत्र (1960)*, हरीन्द्रनाथ ठाकुरक *गोनू झा* (1968) आ मार्कण्डेय प्रवासीक *हम कालिदास (1982)* । लोकगाथा पर आधारित उपन्यासक अन्तर्गत लक्ष्मीपति सिंह (1907-1979) क *चामुण्डा (1933)* आ ब्रजकिशोर वर्मा मणिपद क *लोरिक विजय, राजा सलहेस, नैकाबनिजारा, लालकि कुशहर, रायरणपाल एवं दुलरादियाल मे* अजात इतिहास क समावेश कलेल लोकतात्रिक आशय लेल गेल गेल अछि। ऐतिहासिक तथ्य

के आधाि बना क' जे उपन्यास क्लखल गेल अवि ओक्ह मे इक्तहास तथ्योपलब्ध सूत के पकक्ड क' तत्कालीन समयक िाजनीक्तक, धाक्मषक, िाष्टीय, सास्कृक्तक पयाविण आ पक्विेश के सजीव रूप सँ पक्तक्बक्बत किबा मे समथष भेल अवि ओक्ह मे चन्द्रनािायण क्मश (1928-1982) क *बालक्दत्य (1980)* तथा *िाखी पूक्णषमा (1982)*, बजक्कशोि विमा मक्णपद क *आक्दम गुलाम (2003)* आ मायानन्द क्मश क *मन्त्रपुत (1985)* आ गोक्वन्द झा क *क्वद्यापक्तक आत्मकथा (1993)* कयल जाइत अवि।आधुक्नक भाितीय भाषाक मे मैक्थली नाट्य-सम्पादक गौिवशाली पिम्पिा आ ओकि क्वशाल पृष्ठभूक्म एक्ह साक्हत्यक पाक्िभाक्षक स्वरूप सँ अक्विक्च्छन्न रूपसँ चलैत आक्ब िहल अवि, मुदा बीसम शताब्दी क आिक्म्भक चिण मे मैक्थली नाटक, एकाकी आ िंगमंचक क्दशा मे साक्हक्त्यक अन्यान्य क्वधाक्दक अपेक्षा अत्यन्त तीव्रगक्त सँ पगक्तक पथ पि अगसि भेल अवि जाक्ह मे सन्देह नक्ह। मैक्थली नाटकक प्राचीन पिम्पिा क डगमगाइत लौ एक्ह युग मे नव ज्योक्त भेटल पक्श्चमी आदशषक जाक्ह दीप क्शखा के सजाजष अबाहम वायसषा क्गयसषन अनने िहक्थ ओकि क्षीण पकाश आधुक्नक मैक्थली नाटकक आक्द पक्तष्ठापक जीवन झा (1848-1912) पि यथेष्ट पक्िमाण मे पडल। जाक्ह समय ओ नाट्य-क्नमाणक क्दशा मे उन्मुख भेलाह ओक्ह समय संस्कृत नाट्य-पिम्पिा, कीतषक्नयाँ नाटक वा कीतषक्नआँ नाच वा लीला नाट्य पिम्पिा आ पािसी क्थयेटि सँ लोक ऊक्ब चुकल िहक्थ। जीवन झाक समक एक चौिाहा िल। कोन मागषक अनुसिण कयल जाय जे एक समस्या आ पिीक्षा दुनू िल। जीवन झा मध्यम मागषक अनुसिण कयलक्न। ई सभ पक्क्त के समक्न्वत

क' कए एनल एक नि पविताक जह्म देलका जकि आलोक मैविली नाटक पगवताक वदस उह्मुख भेल। ई चावि नाटक क चिना कयलका जेविक *सुह्दि संयोग,(1904), मैविली सटक (1906), नमवद। सटक (1906) आ समाविती पुनजह्म (1908)*। वहनका पश्चात् जे नाटकावद वलखल गेल ओकि दू शेणी अवि-एकाकी आ अनेकाकी। एवह कालाविध मे जे नाटक वलखल गेल अवि-एकाकी आ अनेकाकी। एवह कालाविध मे जे नाटक वलखल गेल अवि ओकिा दुइ शेणी मे विभावजत कि सकैत िपि विरय-विस्तुक दवा सँ आ चिना-वशल्पक दवा सँ। विरय विस्तुक दवा सँ पौविणक,ऐवतहाविसक आ सामावजक। एवह शेणी क अहतगवत मैविली मे पचुि पविमाण मे नाटक वलखल गेल अवि। पौविणक नाटकावद मे लालदासक *साविती-सत्यविलन (1908)*, आनह्द िक सीता सवियंि (1938) महािीि ि ीि क *शम्भू ि धि (1936)*, दामोदि िक *गह्धावि षविविाह (1953)* आ जीनाि िक *दुगाविजय (संिित् 2015)* आवद नाटकावदक गणना कयल जा सकैि। हमि ऐवतहाविसक कहल जाय बाला नाटक इवतहास सँ पाप्त सामाह्य वििणावद आ सुनल सुनाओल विरयावद एिं जवलशुत आवद पि आधावित अवि। ऐवतहाविसक पुर र विदापवतक जीपनसँ सम्बद्द हिबाक, काणि एकिा ऐवतहाविसक नाटक नवह कहल जा सकैि। ईशनाि ि (1907-1965) वचित *उगना (1956)*, विदानाि ियक *विदापवत (1959)* आ *बजवक* शोिणि क कण्ठहाि एिं जीनाि ि वचित *िीिनिाह्द (1956)* क चचा कयल जाइत अवि। सामावजक नाटकक तेसि कोवट सामावजक नाटकावद विक। एवह नाटक सभक कि सिषिा तिषान युग क विक। एवह शेणी

क नाटक क दू रप अवि-पतीक नाटक आ समस्या नाटक। पतीक नाटकक शवशनाि ि क्यित *कवलधमषपकावशका (1911-12)* तिा सावहत्य तिाकि मुंशीधुनहदन दास क्यित *कवला नाटक (1920-22)* अबैत अवि। एवह नाटकाक मे तिषान युगीन कवतपय समस्याक पि विचाि कयल गेल अवि। सामावजक नाटकक दोसि रप विक समस्या नाटक। एवह मे नाटकाकक अहतगषत कवतपय सामावजक समस्याक के उठाओल गेल अवि। एवह मे समाज मे फैलल विवभहन वि पता, रवढ, सामावजक अपिाध विरमता, िाष्टीय चेतना, सत्यागह आहदोलन आवद के मुख्य आधाि बनाओल गेल अवि। एहन नाटकाक मे ईशनाि ि क चीनी क *डडूलहु (1937-39),* शािदानहद ि क *फोेिि (1950)*, गोविहद ि क *बसात (शाके 1820), िजा वशि वसंह (1976), अवहतम पणाम (1982) एिं रवक्मणी हिण (1989),* सुधाशु शेखि चौधिी क *भफाइत चाहक वजनगी (1975) ढहैत देिाल क लेटाइत ऑचि (1976), पवहल सॉि (1982) एिं लग क दूिी (1992)*, महेहद मलंवायाक *लक्ष्मण िेखा खवण्डत (1970), एक कमल नोि मे (1970), जुआयल कनकनी (1972), ओकि आडवाक बािहमासा (1980), कमला कातक िाम लक्ष्मण मे सीता (1981), काठक लोक (1987), गाम नई सुतैए (1993) एिं ओवि जिल काम (2000)*, सोमदेिक *चििवत (1982)*, *उदयनािायण वसंह* नवचकेताक *नाटकक नाम जीिन (1971), एक िल िजा (1973), नाटकक लेल (1974), िामलीला (1974), पतषाितषा (1976) एिं नोतइहटी मा पवशि (2008)* अिविहद अतकूक *तालमुटी (1982), आवा धधवक हिल िै 1(1981) एना कते वदन*

? *(1985), अह्लाजिंगल (1987), तित (1992), आतंक (1994), के ककि ? (1996) पद्धुआ कतका अएला गाम (1998) बाह ि हम आ बाह ि हमि नाटक (1998), गुलाब ि डी (1999), िजियमरेक (2004)*, बजककशोि मिा मवापद क *ि मिकी (1977) एि तेसि ककायाँ (1986)* महत्तेशि ि ि क *पायश्चात (1994) एि सौभाग्यिती भि (1994)*, उदयहिदि ि विनोद क *उदास गाि क बासह्त* (1992) िमिभिसि *कापड* भभकि *एकटा आि सिह्त (2001)*, िवहणी मिण ि ि क *अकतम गहना (1989) िजिा सलहेस (1990)*, कुमाि शैलेहद क *अवमपि क सामा (2000)*, निदेि पुगत भनािि क *लीडि (1994)*, कुमाि गगनक श*पि गहण (2003),* कमल मोहल चुहनूक *नि घि उठे (2002)*, विनोद कुमाि कमश िह्धुक एकिी क्यनता (2006), ितानहद कसंह ि ि क *सुनू जानकी (2008)* इत्याकद आधुकनक कालक चकचत नाटककािि िवि। एकह कालाकिध मे अनेक नाटककािि लोकक नाटय-साकहत्यक विकास मे अपन योगदान देलक।सिितहत्योतिि काल मे मैविली-नाटय-लेखन मे एहन सभ पशन के नाटकीय रप देबाक हेतु ततपि भ' उठलाह जकि सम्बह्ध युग सँ अवि जाकह मे ओ जीिि हिल अवि आ एकह लेल आदशावादक कालपकनक एि ियिनीय जगत सँ सम्बह्ध विचिि दि क' कए ििस्तविकताक धितिल पि पैि जमयबाक लेल मैविली-नाटककािि के पूणषिि गि सँ गकममान हैबा मे नविनता, ताजगी, पौढता आ कलात्मकताक मौकलक व्यकततति पाप्त कबिाक लेल संघरषकियि पडल। अतएि दासतासँ मुतत भ' कए आधुकनक नाटय-लेखनक सिि अपन सम्पूणष सजन पकक्या मे सामूकहक भाितीय मनक नि सहदभष अवि। सामाकजक यिािषि के

अवमव्यक्तत देवहाा नाटय लेखनक केत्र मे एहन औाि नाटककाि वि जे नाटय कक्त क सफलताक संगव्ह िगमंच पि क्ताु सवििा नि क' देखयबाक दवा सँ साव्हव्यकतासँ अव्धक जनर व्चक आकरषा पि वशिास ि खैत वि। आइ जे नाटक वलखल जा हिल अवि, ओव्ह मे नाटकक कथ्य आ वशल्प क अहता पाचीन नाटकक तुलना मे व्यापक भ' गेल अवि आ एव्ह लेल ई नाटक समकालीन सामावजक यिाि षिके जनता धवि ल' जाय चाहैत अवि, अतप कि हीन नाटक दशषक के अव्धकतम वनकट अवि, कावण दशषके होइि जकि सवीकवत िगमंचीय आलोचनाक मानदण्ड बनैत अवि। दशषक ओही वसि वतक दश्य र प मे गहण करैि जे ओकि िगमंचीय जीि निक लगपास घटैत अवि आ वसि वत सभाक दश्य बनययि मे नाटयकाकि सम्मुख िगमंच पूणषप पववकवल्पत िहैत अवि। कि हीन नाटकक िगमंचीय असफलता पस्तुवतकणिक आधुवनकता सँ सम्बद्द अवि।मैवि ली मे वशुद्द एंकाकी-पहसन आ िवडयो र पक क लेखनक सूतपात बीसम शताब्दीक चतुि ष दशक सँ पाि म्भ होइत अवि। साव्हत्यि व्ताकि मुंशीि धुनहन्दनदास *दूतागद व्यायोग (1933)* क ि चिना क' कए एकाकी-लेखनक पि म्पिाि क सूतपात कयलवन जे आइ एक सवतिहत वधाक र प मे वकवसत भेल अवि। तिषान युग एकि वकासक लेल अव्धक उि षि वसद भेल अवि। मैवि ली मे अनेक एकाकीकाि लोकवन एकाकी पहसन आ िवडया र पकक ि चिना कए एव्ह वधा के सम्पुष्ट कि बाक वदशा मे सहभागी बनलाह अवि। िस्तुतप नि युगक उपज वि क, अतएि एव्ह मे संस्कृत एकाकी क वधान कम भेटैत अवि। एकाकी, पहसन आ िवडयो र पकक लोकवपयताक फलसि र प अव्धकाव्धक

संख्या मे साहित्य-मनीरी एहि विधा क अन्तर्गत कतिपय संगह पकाश मे आयल अछि यथा तन्त्रनाथ झा (1909-1924) क *एकाकी चयनिका (1949)* परमेश्वर झा शक कामिणी (1950) चन्द्रनाथ मिश्र अमर (1925) क *खजबा टोपी (2006)*, बालगोविन्द झा व्यथित, (1932-2002) क *कापरिगा (1968)*,भाग्यनारायण झा (1937) क *सोनक ममता (1969)*, दिनेश कुमार झा (1941-2004) क *सप्तर्षि (1971)*, उदयनारायण सिंह नचिकेताक *जनतक एवं अन्य एकाकी (1978)*, रामदेव झा (1936) क *पसरैत पाँव (1989)*, रवीन्द्र राकेश क *अन्तर्ज्वाल (1991)*, सुधांशु शेखर चौधरी क *हरिटुटा कुर्सी (1992)*, महेन्द्र मलंगियाक *टूटल तागक एकटा ओर* (1983), महेशर झा क समाहि (1991), *धूतराष्ट्री (1993)*, *बहुरूपिया (1993)* एवं *पराजय (1994)* आ बजकिशोर वर्मा मणिपदक *अनमोल आखर (2008)* इत्यादि।एकाकी, पहनल आ रेडियो रूपकक पणेतालोकक मानसिक कल्पनाजक विस्तार भेलनि, जकरा नव चेतना भेटलनि, नव दिशा मे अगसर हैबाक पेरणा भेटलनि, नव दृष्टि भेटलनि तकरा हम पत्रकाव्य एकाकी कार क रूप मे उदघोषित कयलहुँ अछि। एहन रचनाकार क कृति मे नव पवृत्ति क पक्ष आगह अछि। मैथिलीक साहित्यकार लोकनिक मानसिक कल्पनाजक विस्तार भेलानि आ हुनक नाटय-कला सम्बन्धी मान्यतादि मे कान्तिकारी परिवर्तन भेल। मैथिलीक ई सौभाग्य हिल अछि जे अधिकाश साहित्य कर्मिक एकहि संग एकाकीकार, रेडियो रूपककार आ पहसनकार मेहो रहि। अतएव एहि विधाक अन्तर्गत पत्रकाव्य रचनाकार भेलहि कुमार गंगानन्द सिंह (1878-1770)

हविमोहन ि।, तह्ल नाि ि।, बजक्कशोि िमा मक्पद, सुधाशु शेखि चौधिी, गोविह्द ि।, चह्दनाि क्मश अमि, ििमदेि ि।, मह्तोशि ि ित आ महेह्द मलंवाया आक्द उल्लेखनीय िवि। मैविली एकाकी, ंविडयो रपक आ पहसनक उदय के ल' कए अदातन पकाशनसँ पतीत होइत अवि जे ई विधा अपन उह्नक्तक क्शखि पि पहुँच्च गेल अवि। िचनाकाि सामाक्जक, िाजनीक्तक आ मनोिंजाक्नक समस्याक्द के ल' कए सोि ियिबाक संगक्ह-संग नि विचाि, समसामक्यक जीिनिक समस्या आ ओकि समाधान एिं जीिनि-मूल्यक आलोचना, िाष्ट, मातभूक्म ताि मातभाराक पक्त सम्मान आ नििाष्टक क्नमाणक पेिणा िचनाकाि लोकन देलक्न अवि। एक्ह विधा मे िताम्ान युगक आशा आकाक्, कुंठा-संतास, दह्द

एिं जजीविरा के अक्भव्यक्क्त देल गेल अवि। ंचाविक आ विरय-िस्तुक निीनता क कािणे नि-नि क्शल्पक एकाकी, ंविडयो रपक आ पहसन दक्ा गत भ' िहल अवि।नाटकक क्ेत मे नि आह्दोलनक फलसिरप मैविली िंगमंचक विकास मे गक्त आयल अवि। सितह्तयोति युग मे िंगमंचक सम्बह्ध मे क्चह्तन-मननक नि आभासक सोत पिक्ह्त होमय लागल क्अि। नाटक के मंचोपयोगी बलनयबाक लेल िंगमंचीयताक अपेक्क्त तति जेना दश्य-विधानक संक्क्प्त आ सह्तुक्लत सिरप, संक्क्प्त सिलि जीिनि, सिाभाविक एिं पातोक्चत संिाद, िंि-संकेत, संगीत एिं काव्य-ततिक संतुक्लत पयोग मैविली नाटकाक्द मे भेल अवि। यदक्प मैविली मे व्यािसाक्यक िंगमंचक अभाि िहल अवि, तािक्प अव्यािसाक्यक िंगमंचक कलाकाि लोकक्न एकि पाणह्ित बना देलक्न अवि। एक्ह

क्षदशा मे कोलकाता क्सति संसाक्ष मे क्मवलिा कलाकेन्द्र (1960), मैवलिी िगमंच (1966), अक्खल भातिीय क्मवलिा संघ (1963), कूक्मषक्त्य-ाति-क्तिकोर (1968), क्मव यात्तक (1971), आल इक्षण्डया मैवलि संघ (1973), क्मवलिा-क्मत-संघ (1974), कणष गोष्ठीक जयाह्त लोक मंच (1983) आ कोक्कल मंच (19090) सदश िगकमी संसाक्ष नि नाटय आन्दोलन मे अनेक नाटककाि के एक्ष क्षदशा मे पेवति कयलक। िगमंचक केत्त मे चेतना सक्मक्त पटना क नाटय मंच (1972), अवपिन (1987), भंवामा (1984), आडडान नतिि, ग, कला सक्मक्त आक्ष िगकमी लोकक्क सहयोग क फलसरिप एकि वकिास तेजी सँ भ' हिल अव। िगमंचक केत्त मे एकि वकिास मात क्मवलिाचले धवि सीक्मत नक्ष हिल, पत्युत पडोसी िाष्ट नेपाल मे सेहो एकि वकिास भेल जाक्ष मे क्मतगुप्त सास्क्कक्तक केन्द्र जनकपुि धाम, क्मवलिा नाटयकला पवरिद नेपाल, भानु कला केन्द्र वीिाट नगि इत्याक्ष िगकमी संसाक्षक सहयोग हिल अव। क्मवलिाचलक पडोसी पदेश िाखिण्ड मे मेहो एकि वकिक्सत सरिपक अिलोकन होइत अव जाक्ष मे क्मवलिाक्र जमशेदपुि, मैवलिी कलामंच बोकािी स्टील क्सटी. क्मवलिा सास्क्कक्तक पवरिद बोफािी स्टील क्सटी इत्याक्ष उल्लेखनीय अव।

मैवलिी मे आक्षकाल मे काव्य-धािक जे बीजािपण भेल िल ओकि िास्तवकि वकिास आधुक्नक काल मे भेल अव। जतय धवि आक्ष कालीन काव्य-धाि िधा-कषण आ हिगौिी के ्सान मे िक्ख क' कवि लोकक्न काव्य-िचना कयलक्न ततय आधुक्नक काल मे वविधि रपा काव्य-धाि क पश्न अव ओक्ष मे मुख्य रप सँ दू

पक्ति भेटैत अवि। एक भाग जतय विरय-स्तु, भाि-भारा इत्याक्द दक्ष सँ अनेक कवि लोकक्त अपना के सपििा पाचीन पम्पािािदी हिबाक पयास कयलक्त ओतय दोसि भाग अनेक कवि लोकक्त अपना के सपििा नािीनतासँ सम्बद्द खिलक्त। पम्पािािदी काव्य मे महाकाव्य, खण्डकाव्य, पबह्ध-काव्य, पम्पािािदी गीक्त-काव्य आ मुत्तकाव्य आक्दक चिनाक्द सँ मैविली काव्य-काननक शंगाि कयलक्त। एक्ह क्दशा मे एक नािीनता ई भेटैत अवि जे मैविली साक्हत्य मे सषिम िमि-काव्यक पम्पाि सिापत कयलक्त आ ओक्ह मे कािीिशिि िि *मिविला भारा िमायण (मधुशािणी 1984)* आ लालदास *िमेशि चवित मिविला भारा िमायण (संित् 2011)* क चिना क' कए महाकाव्य लेखनक सूतपात कयलक्त। तत्पश्चात एक्ह कालक कवि लोकक्तक दक्ष काव्यक एक्ह पक्तिक क्दशा मे गेल जकि पविणाम भेल जे एक्ह साक्हत्य मे पचास सँ बेसी महाकाव्य पकाश मे आयल अवि जाक्ह मे उल्लेखनीय िवि कविशेखि बदीनाि िि क *एकािली पविणय (1938-40)*, मुंशी िघुनह्दन दासक *सुभदाहिण (1937-44)* तह्नताि िि क *कीचक बध (1938-6क1)*, *सीतािमि* िि (1991-1975) क *महाचविति (संित 2013)*, जीिनाि िक *ििणािधि (2012 संित्)* दीनानाि पाठक बह्ध (1928-1962) क *चाणत्य (1959-61)*, *काशीकाह्त* मिश मधुप (1906-1987) क *िधािविहि* (1969), िदनाि मक्ललक विधु (1912-1987) क *सीतायन (1973)*, सुिह्द िि सुमन (1910-2002) क *दतिती (1987)*, मक्तनाि मिशक *िजा सलेस (1986)*, बौआजी िि अजात क *रक्ममणी पविणय (1990) आ पक्तजा पाण्डि (1995),* विशिनाि िि विरपायीक *िमिसुजश*

सागि (1978), माकण्डे पिसीक *अगस्त्यायनी (1980)*, ईनाि ि क *महाभाित (1987)* उपेह्न्दनाि ि व्यासक *मैविली महाभाित आव्द पवि (1994)* कागचीनाि ि व्वणिक *पिशिि (1984)* आ चह्न्दभानु ससंह क *शकुह्न्तला (2002)* इत्यावद।खण्ड काव्य मेहो आधुवनक कालक देमेवि क जावह मे कवि लोकवन एवह ददशा मे अपन पवतभाक पस्फुटन कयलवन जकि पविणाम भेल अवि जे अनेक कवि लोकवनक पयास एवह विधाक शीवि मे अपन योगदान देलवन जावह मे उल्लेखनीय िवि उपेह्न्द नाि ि व्यासक *सँह्यासी (1947)* एिं *पतन (1969)*, केदािनाि लाभ (1932) क *लवखामा िनी (1960)* एिं *भाििी (1964)*, अमिह्न्द वमश क *एकलव्य (1970)* एिं *सत्यकेतु (1977),* लक्ष्मण ि ि क *उत्सगष (1975)*, िीह्न्दनाि ठाकुि क *पंचकह्या (1977)*, योगेशिि ि क *नोिि (1979)*, सुिह्न्द ि सुमनक *उतिि (1980)* लोकपवत ससंह क दोहावली (1969), बुवद्धधािी ससंह िमाकि (1919-1991) क *समावि (1983)* इतयावद।कमीशिि चह्न्दा ि िक मैविली कविता मे नििानिक पेकि शवित िवि। ई काव्य क बवहिंग आ अह्न्तिंग दुनू केत्र मे पविितिन अनबामे समि षभेलाह। जतय पवहने शंगाि आ भवित वियक िचनावदक पचुिता िल ततय ओ सामावजक आ िाजिनी।वतक वियक समािेश पिस मे पिस काव्य मे कयलवन। चह्न्दा ि एक नि सामावजक पेिणा सँ अनुपावणत हिवि। जँ ओ एक भाग पाचीन पिम्पिाक विशिष्ट कवि ससद होइत िवि तँ दोसि भाग निीन पिम्पिाक सूतधाि मेहो। मैविली काव्य-धािाक इवतहास मे सन् 1929 ई. क अत्यह्न्त महतिपूणष सिान अवि। मैविली गीताञ्जवलक नाम सँ िाष्टीय कविताक पिम महतिपूणष संकलन

एही समय मे पकाशत भेल लि। स्तुितप एक्ह कविताक्द सँ मैविली मे देशपेमक ाष्टीय-सास्कृक्ताक कविता धाािक सूतपात होइत अवि। देशपेमक अक्तिवतित समाज कल्याणक जतेक साधन भ' सकैि ओक्ह क्दस एक्ह कालक कवि लोकक्त क्तदेश देलक्त। मैविली कविता मे पगक्ताािदक एक विशष्ट काव्य-पिक्त क रप मे माह्य भ' गेल अवि। मैविली काव्य मे एक्ह पिक्त विकास भेल। मैविली कविता मे पगक्ताािदी काव्य क पाम्भि ओतय सँ माक्त सकैत ाि जखन कवि लोकक्त मानिताक पक्त सहानुभूक्त पकट कयि लगैत विि। एही मानिताािदी भािनाक काणिे मािनािा भुिनेशिि क्संह भुिन (1907-1944) के पगक्ताािदक पितिष्क मानैत विि। कक्ह्तु क्हनका सँ पूिषिँिदनािि क्तश यातीी क िचनाक्द मे यह पिक्त पकट भ' गेल लि। युग-युग सँ सामह्ती क्शाकाक नीचा दबायल कविक ािणी जँ एक भाग अपन मनक उदगाि क्यतत कैित अवि तँ पुनप तत्क्ााले जनमन क भाििक्द के पकट किबाक हेतु मचक्ल उठल। िस्तुितप पगक्तशील साक्हत्य मे कवि लोकक्तक काक्ह्तकािी आत्मा जािलामुखीक समान स्फुक्लंग फेकैत पतीत होइत विि। पगक्तािदी कवि लोकक्त मानि के सािपवि सताक रप मे सीकाि कयलक्त। एक्ह पकाि मैविली कविता मे अक्धकाक्धक कवि लोकक्त पनक्ताािदी कविताक क्तमाण सिसि आ क्यापक रपे कयलक्त अवि। पगक्ताािदी काव्य पधानतप बुक्द्द पधान अवि। ियक्ततक कविताक्द मे जाक्ह मसण भाािुकता एिं कल्पना पिणि अह्तषक्त दशाषा होइत अवि । पस्तुत काव्य-पिक्त मे ओक्ह क्दस असक्ततक अभािि अवि। िस्तुितप पविक्सिक्त कवि लोकक्तक दक्ष पविक्ताषा क' देलकक्त। बुक्द्दािदी दक्ष कोणे क पविणाम विक जाक्ह मे

ितषान समय मे कवि लोकक्न क व्यंग्य पधान कविता क्लखबाक पेणिा देलक। जखन सोि आडु सँ धी नक्ह बहाइि तँ टेढ आडुि क आशय लेमय पडैि। ई व्यंग्य साक्हत्यक टेढ आडुि व्यंग्य-पधान कविताक्द क मा्यमे समाज आ व्यक्तत क दुलषता पि मावामक चुटकी लेल गेल अवि। कवि लोकक्न ितषान समाज मे पचक्लत क्मथ्याचाि. रक्ढ़ाक्ददता, पाखण्ड, आडम्बाकि संगक्ह िजिनीक्तक विरपता, असािमाक्ददता आक्द पि तीि् व्यंग्य कयलक्न अवि।साम्पक्तक मैविली कविता मे एकक्ह संगक्ह विक्मह्न पक्ति आक्द क विकास देक्ख हिल िि। अतएंि एकिा कोनो विशेर नाम सँ अक्मक्हत कबािक ओकि सुस्पष्ट रप-पविचय नक्ह भेटैि। सुविधाक दक्ष सँ एकिा निगीक्तािद क नाम कक्ह सकैत िि। विशेरतप तरण कवि लोकक्न एकिा लोक वाय बनौलक्न अवि। ओना तँ पमिमािािदी धािक कवि लोकक्न एक्ह धािा मे क्दलचस्पी देखाबय लगलाह आ अपन िचनाक्द सँ योगदान देलक्न। निगीक्तािद मे ने तँ पमिमािािदी लोकक्नक इक्तातात्मकता अवि आ ने व्यक्ततािदी क क्तापिकता। िस्तुतप निगीक्तािद काव्य-धािा ई निा मोड विक जाक्ह मे ियक्ततक पक्तभा नियुगक नि-काव्य-चेतना क नूतन-सि माधुिा सँ समक्न्त क' कए पकट भेल अवि।आधुक्नक मैविली कविता मे गीक्त-काव्यक विकास एक नि-रप सँ मेहो भेल अवि। ई िस्तुतप हमिा साक्हत्य पि निा पभािक पविणाम विक मि निा गीक्त काव्य पाश्चात्य क्लविकिक उपजीिा विक। ई पूणषतप आ्याक्त्मीत काव्य विक जाक्ह मे हमिा अनुभूक्त क सहज अक्मव्यक्तत क बोध होइत अवि। पािक्मभक एिं म्यकालीन मैविली गीत क्वशात रप सँ संगीत सँ सम्बद्ध िल। सभ गीत कवि

संगीतक विशेरज बुिल जाइत िलाइ तिा पत्येक गीक्त-कविता कोनो-कविता कोनो-ने-कोनो िाग-िावाणी सँ बाह्लल हैित िल। आधुक्तकाल मे निि गीक्त-काव्य के विकासक पिि पिि अगसिि पाक्ब हिल ि ी। गीक्त-काव्य क कविक अह्लतगाम्ब क ओ सितप पेवित तीतिम भाित्तिक अव्भव्यक्तत विक जाव्ह मे विक्शष्ट पदािलीक सौह्लदयष अनुभूक्तक एतय एिि संगीतात्तकता क योग सँ व्दगुक्वात होइत अवि। निि गीक्त काव्यक विकास िाष्टीय-सास्कक्तक काव्याव्द मे भेटैत अवि, ओना तँ एकिि पवषिक्त रपक दशाम्ब ियक्तत कविताव्द मे आक्ब क' होइत अवि। िाष्टीय-सास्कक्तक धािक कविताव्द विशेरतप उपदेश काव्य विक िा विचाित्तिक कोव्टक िचनाव्द विक। फलतप ई िाणाम्ब पधान भ' गेल अवि आ इक्तािताित्तक विक जाव्ह मे भाविक्व्यञ्जना क दक्ब सँ सीलिता एिि भािित्तकता क अभािि पबैत ि ी। आलोच्य काल मे विक्भह्लन विरयाव्द सँ सम्बक्ह्धत िचनाव्द भ' गेल अवि। पधानतप एकिि पेमगीत, भािपिि क गीत, पकक्त सम्बाह्धी गीत, विचाित्तिक गीत एिि बुक्व्दपधान गीत आव्द िगाव्द मे बाँव्ट सकैत ि ी। मैविली काव्य मे गीताव्द कविकासोह्लमुख पम्पिािि मे अनेक कवि िवि। एव्ह कवि गीतकाि लोकक्तक विस्तत नामािली पस्तुत कबि कोनो विशेर अिष नव्ह खैिि। मैविली गीक्त-काव्य क दोसिि पचक्लत रप विक सम्बोध- गीक्त। िस्तुतप गीत काव्यक एव्ह सिरपक विकास अंगेजी काव्य ओड क अनुकिणि पिि भेल अवि। सम्बोध-गीक्त काव्याव्द मे कविक भािना कोनो िस्तु विशेर के सम्बोवधत क' कए पकट होइत अवि। मैविली सम्बोध गीक्त काव्याव्द मे विरयक िवि्य एिि शैलीगत अनेक रपताक दशाम्ब होइत अवि। सत्य ता ताँई अवि

जे आलोच्य कालीन मैथिली गीति काव्य म सम्बोध-गीति अपन समद परिपाटि स्थापित क’ लेलक अछि आ आइ हम ओकरा परिष्कृत रूप मे पबैत छी। आधुनिक गीति। काव्यक एक रूप चतुर्दशपदी कविताक थिक। एकर विकास अंग्रेजीक सॉनेटक अनुकरण पर भेल अछि चौदह पंक्ति मे रचित गीति-काव्यक एहि रूपकक महत्व एकर स्वरूप के ल’ कए अछि जाहि आधार पर एकर नामाकरन कयल गेल अछि। मैथिली मे एकर रचिना अत्यल्प भेल अछि।गीति काव्यक अन्तर्वर्तित अनादि रूपक दोसर काव्य-रूप मुक्तक थिक। मैथिली मे सेहो परिवर्तित रूपिक कविते के मुक्तक कहल गेल अछि। मैथिली मे मुक्तक काव्यक विकास आलोच्यकाल मे आबि क’ भेल अछि। आधुनिक युगक पूर्वकाव्यक कवि लोकनिक ध्यान नहि गेल। चन्दा झा पहिल कवि छथि जे तत्कालीन सामाजिक, राजनीतिक जीवन के लक्ष्य क’ कए मुक्तक रचिना कयलनि। मैथिली मे मुक्तक काव्यक विषय क दृष्टि सँ विविधताक दर्शन होइत अछि। शृंगार, भक्ति, नीति ओ उपदेश एहि सम्पूर्ण विषयादि सँ सम्बद्ध मुक्तक काव्य लिखल गेल अछि। मुक्तक एक कला पधान काव्य-रूप थिक आ एकर कलात्मकता उक्ति-वैचित्रय के ल’ कए अछि। एही सँ चन्दा झा क इक्तितात्मक शैलीक आगाँ जा क’ परिष्कार पबैत छी। आब कविगण उक्ति कौशलक अनुरूप मुक्तकक विकास मे सहायक भेलाह।एहि आबि क’ मैथिली काव्य क्षेत्र मे नव कविताक ध्वनि परिलक्षित होइत अछि। एहि काव्यके ल’ कए विद्वान लोकनि मे मतैक्यक अभाव अछि। किछु क कहब छनि जे नव कविताक सर्व सार्वभौम सत्य थिक। किछु क कहब छनि जे मैथिलीक नव

कविताक आजुक जे स्वरुप देखबामे आबि रहल अछि तकर आरम्भ एही कालखण्ड मे भेल। एहि काव्य मे प्रगतिशील मूल्यक आशा, अखिल मानवता, सौहार्दपूर्ण जीवन, बौद्धिकताक प्रतिष्ठा, कटु यथार्थक अभिव्यक्ति, धार्मिक कर्मकाण्ड प्रति अनास्था, अविश्वास, असन्तोषक प्रति विद्रोहक अभिव्यक्ति भेल अछि। जतय धर्वेशालक पक्ष अछि ओ साध्य नहि साधन थिक।

कविताक आजुक जे स्वरूप दृष्टिगत भ' रहल अछि ओकर निर्माण मे अहि भारा साहित्यालोचक प्रविश्त पेकि भूमिकाक निर्वाह कयलक। मायानन्द मिश्र क अनुसार मैथिली मे नव कविताक उन्मेष 1960 ई. क लगपास मे भेल। एहि काव्य मे प्रगतिशील मूल्यक आशा, अखिल मानवता, सौहार्दपूर्ण जीवनक विस्तार, बौद्धिकताक प्रतिष्ठा, कटु यथार्थक अभिव्यक्ति, धार्मिक कर्मकाण्ड प्रति अनास्था, अविश्वास, अनास्था, असन्तोषक प्रति विद्रोहक अभिव्यक्ति भेल अछि। जतय धर्वेशालक पक्ष अछि ओ साध्य नहि साधन थिक।

मैथिली काव्य-धाराक अन्यतम नव प्रवृत्ति गीत, नवगीत आ गजल दिस उन्मुख भ' रहल अछि। यद्यपि मैथिली मे गीत रचनाक प्राचीनतम परम्परा रहल अछि, तथापि गीत, नवगीत आ गजल लिखबाक नव परम्परा चलल अछि। एहि मे कविलोकनि परम्परागत लोक धुन के अपना क' कवि लोकनि एकर प्रयोग कयलनि अछि। मैथिली मे नव गीत क स्वतंत्र काव्य-विधा स्थापित हैबाक प्रक्रिया मे अछि। अबी या उर्दू काव्य-परम्परा सँ प्रभावित भ' कए मैथिलीक कवि लोकनि गजल लिखबाक परम्परा अष्टदशकोत्तर काल मे भेल अछि, तथापि काव्यक ई नव प्रवृत्ति दिस कवि लोकनिक ध्यान गेलनि जकर उत्तरोत्तर स्वरुप सोझाँ आबि रहल अछि। एहि प्रकारे आधुनिक मैथिली काव्य विविध वस्तु-विन्यास आ शैली सँ समन्वित भ' कए दिनप्रतिदिन उन्नति क' रहल अछि।समालोचना आधुनिक साहित्यक विशिष्ट अंग थिक। पाश्चात्य साहित्यक सम्पर्कक माध्यमे समालोचनाक शुभारम्भ भेल जकरा मैथिलीक साहित्यकार लोकनि अपनौलनि। एहि प्रकारे साहित्यक अध्ययन सहो समालोचना साहित्यक अन्तर्गत अपेक्षित भ' जाइत

अछि। भाषा आ साहित्यक रूप मे मैथिली पर विचार करबाक प्रारम्भिक विदेशी विद्वान लोकनि कयलनि। एहि विदेशी विद्वान लोकनिक समानहि बंगाली विद्वान् लोकनिन सेहो मैथिलीक पक्ष अपन रचना प्रदर्शित कयलनि। प्राचीन साहित्यिक कृति सभक अन्वेषणक दिशा मे चन्द्रा झा क महत्व अक्षुण्ण अछि। कविशेखर चन्द्रा झा अनुसन्धानक क्षेत्र मे नव गति प्रदान देलनि आ ओकर परिणाम भेल जे प्राचीन साहित्यिक कृति सभक सम्पादन होमय लागल। प्राचीन कवि लोकनिक काल आ परिचय के ल' कए विद्वान लोकनि मे मतभिन्नता छल जकर परिणाम रूप मे उपलब्ध सामग्री समक अनुशीलन क' कए उचित संगत निष्कर्ष उपस्थित कयल गेल।मैथिली मे आलोचना साहित्यक वास्तविक विकास नहि भ' पौलक अछि। ओकर भव्य स्वरूपक निर्माण बीसम शताब्दी मे आबि क' भेल अछि। मैथिली पत्रकारिता क अग्रदूत महामहोपाध्याय मुरलीधर झा आलोचनाक क्षेत्र मे नव भाषा, नव-शैली एवं विविध आलच्य वस्तुक संग अयलाह। ओ आलोचनाक लेल विविध प्रकार साधन, साहित्य-निर्माण, भाषा-परिमार्जन, समाज-सुधार एवं राष्ट्रीय आन्दोलन आदि अनेक विषय सुझौलनि। किन्तु एहि काल अर्थात् सन् 1906 ई. धरि आलोचना आ निबन्ध दुनू एहि प्रकार सम्बद्ध छल जे ओकर बीच कोनो स्पष्ट विभाजक रेखाकंन करब सम्भव नहि भ' सकल। एहि काल मे मोद-मण्डल तथा ओकर बाहर क लेखक लोकनि निबन्ध आ आलोचनाक सम्मिलित रूपहि छल।साहित्यक क्षेत्र मे दू महापुरुषक योगदान अत्यन्त महत्वक थिक। विशेषतः प्रस्तुत सन्दर्भ मे उक्त दूनू महापुरुषक गहन-गम्भीर व्यक्तित्व, वैदिक एवं विलक्षणता, अध्ययन एवं मनन सब मिल क'

आलोचना के नि रप देिक चेष्टा कयलक। बाबू भोलालाल दास (1897-1977) आ सुहिद ि सुमन दूनू अपन विशेराक क संग साक्तिस्यक केत्त मे आयल हिवि। भोलालाल दास एक अ् ययनशील विदान्, समाज सुधाकि आ मातभाराक अनयह्य अनुिगी रप मे पकट भेलाह। सुहिद ि सुमन संसकत साक्तिस्यक गहन अ् ययन एिं पाण्डित्य, बाङला साक्तिस्यक पक्त अवमर क्य, अंगेजी एिं क्हिन्दी साक्तिस्य क क्तकटतम पविचय, भाि‍कि कवि हदय एिं विलकण कवि पक्तभा सॅ समक्वित हिवि। भोलालालदास क्तविला आ भातीक सम्पादन कयलक आ सुहिद ि सुमन क्तविला क्तक्हि क सम्पादन क’ हिल हिवि।मैविली आलोचनाक ऐक्तहाक्सक विकास कम मे, आिम्भ मे िहि आलोचक अबैत िवि जे संस्कत साक्तिस्य मे क्तष्ठा ख़िैत हिवि। उमेश क्तश एिं बलदेि क्तश सदश ियोदि आलोचक एही िगक पक्तक्तधत क’ हिल हिवि। क्तक्हु आलोचना साक्तिस्य मे जे नि रप पाप्त कयलक अवि अिि ओकि विकासक जे गक्त देखबा मे आक्ब हिल अवि, ओकि सब शेय अ् ययन केत्त सँ व्यक्तत सभ के िक्त जे आलोचनाक लेल एक सुव्यक्विस्त मानदण्डक क्तमाण मे व्यस्त हिलाह। एहन आलोचकक पंक्तत मे नक्हिनाि दास (1904-1993), िमानाि ि, काक्चीनाि ि क्तणि, बजक्तशोि िमा मक्तपद, शैलेन्द्र मोहन ि, दुगानाि ि शीश (1929-2000) आक्दक नाम लेल जाइत अवि।

दोसि पीढीक आलोचक लोकक्त सामंजस्य क्सिक्त क्तमाण कयलक। क्हनका सभक उदेश्यक समुक्चत विचिन एिं मूल्याकंन कबि िक्त। ई सभ आलोच्यक अक्तक्त्वक्हत सौन्दयष के पकाश मे अनलक जे साक्तिस्य क अक्तषा जे सौष्ठि अवि तकबोध अपन पाठक के कि

दे अपन कतष्य बुिैत िव िन पीढीक आलोचक सािहत्य मे सामािजक मयादाक ध्यास नक्ष कैित होिव, एहन बात नक्ष अिव, पिहन्तु एहन क्सिकत्त जँ उत्पहन्न भ' जाय तँ ओकिा अपािध नक्ष मानैत िव। आलोचकक ई दोसि पीढी सँ सम्बाहन्ध एक नि दल मेहो फूटैत दक्षा गत होइत अिव। एहन नि आलोचकक पक्तभा मे व्यकित क्यहत्तन एिं समाज मंगलक अदभूत सामंजस्यक पक्तफलत भेटैत अिव। िस्तुतप क्हनका सभ क' दाि क्तक्तासा आलोचना विभहन्न युगक सास्कक्ताक एिं दाशक्तनक आदशक आकलनक संगक्ष िचनाक मनोिैजाक्तक आ सािहक्तयक विशेराक्तदक अ्ययन उपकम विक।मैविली आलोचनाक व्यािहािविक पक अपेक्ताकत पुष्ट आ सबल अिव, तकि मूल कािण विक जे क्सदाहन्त पक सँ व्यािहाि पक के सलि मानल जायत अिव। दोसि बात विक जे सतत िचनात्तमक सािहत्यक पयलोचन होइत िहैत अिव आ अ्यापनक केत्त मे से हो सािहत्यालोचनाक व्यािहािविक पकक आिश्यकता अक्षक होइत अिव। हमाि ओतय व्यािहािविक आलोचनाक सामाहन्यतप चािि रप अिव भारण , भूक्षमका, पुस्तक पिचिय आ समीकात्तमक सािहत्य। मैविली मे आलोचनाक एक अिषदोरविक्षकािण होइत अिव। क्तस्सहन्देह समालोचनाक एक्ष रप मे पयोग ओकि योग रक्षद अिषमे अिव। तािक्षम एक्ष सँ िाड बहुत माता मे हमि सािहत्य के मेहो आकाहन्त क' िहल अिव।पिहन्तु ई रप विशेरतप साम्पक्तक सािहतयमे सेहो पाओल जाइल अिव आ सिसि आलोचनाक विकासक संगक्ष-संग एक्ष पक्तिक अिसान मेहो भेल जा िहल अिव। आधुक्तक समय मे मनोविजान एिं समाजविजान आलोचक के नि दक्षा देलक अिव आ विजानक नि आलोक मे

आलोचनाक सर्सि पम्पिाकि विकास भ' हिल अवि। मैविली साव्हत्य मेहो एव्ह सँ असम्पतत नव्ह अवि आ ओकाि एकि शुभ भविष्यक सूचक मानल जायत। साठोतिि मैविली साव्हत्य मे शोधक व्दशा मे सहत्तोर जनक पगवत भेल अवि। अनेक शोधकता लोकवि विशालकाय शोधपबह्ध के पस्तुत क' कए विम्हिन्न उपावि पाप्त कयलवि अवि आ मैविली आलोचनाक भण्डाि के शोधक विरय बना क' शोधपबह्ध पस्तुत कयलवि अवि। एव्ह मे अव्धकाश शोध-पबह्ध अपकाव्शत अवि अतएि एव्ह पसंग मे व्टप्पणी नव्ह कयल जा सकैि। पाचीन आलोचनाक गवत जतय मह्िि लि ततय आधुव्नक समय मे एकि विकास दुतगवतसं भ' हिल अवि।मैविली साव्हत्य क लेल याता-साव्हत्य नयतम विधा विक जकाि अहत्तगत तीर्िदशाषन ऐव्तहाव्सक सिलक पविभमण आ विदेश-याता अबैत अवि। जतय धवि मैविली साव्हत्यक पश्न अवि, यदवप एहन चिनाक सूतपात बीसम शताब्दी क पिम दशक मे भेल आ चेतनाि ाि (1866-1921) क *जगह्नािपुिीक याता* (1910) पुस्तककाि रप मे पकाव्शत धावमषक कटिता क काणिे कविलािसी विदेश भमण नव्ह कयि चाहैत हिवि आ जे सभ याता मेहो कयलवि ओकाि विििणि नव्ह पस्तुत कयलवि। सषि पिम सुभदाि (1910-2000) अपन विदेश याता के *पिास* नामे पकाव्शत कािलवि। विदेश याता सँ सम्बव्ह्धत व्हनक दोसि पुस्तक आयल याता *पकणि शतक*। डा. जगदीशचह्द ाि क विदेश याता सात समुद पाि (1969), नगेह्द कुमाकि आयि लैण्डक याता *शामली (1981)* उपेह्दनाि ाि व्यासक अमेविका याता *विदेशभमण*, आङ्चेतकिाि क विदेशयाता *पथ्वी पविकमा (1992)* पकाव्शत

भेल। भाति भमण सँ सम्बन्धित चिनाक्ट मे जीनिहृद ठाकुकि *बदीनािक याता,* जयहती देीक *गया याता (1969)*, सीतामििक *भातिभमण* आ शेफाक्लका मिाक *यायादिी (1995)* तिा बजकक्शोिमिा मक्णपदक *ओक्हठाम गेल लिहुँ (2004) पकाक्शत अवि।* मैविलीक विक्भहन पाचीन आ आिचीन पक्तकाक्ट्क अिगाहनोपिहृत ई जानकािी भेटैत अवि।क्ति याता पेमी लोकक्त अपन व्यक्तगत याताक्ट के मूतषरप अिश्य पदान कयलक्त, मुदा पुस्तककािरप मे नक्ह पकाक्शत नक्ह भ' सकल अवि। अहय विधाक्ट क तुलना मे ई विधा अदावि सशतत नक्ह पाओल अवि।आत्मकिा, जीिनी, संस्मािणि, साकात्कािआ इहटिव्यू साक्हत्य मे नगण्य अवि। एक्ह क्दशा मे महामहोपा्याय डा. सिगंगानािमिा (1872-1941) क अंगेजी मे क्लक्खत आत्मकिा मैविली मे अनूक्दत भ' कए पकाश मे आयल अवि। एक्ह क्दशा मे मौक्लक आत्मकिा हविमोहन िाक *जीिनियाता (1984)*, लकमीपक्तक्संह क अतीत क स्मक्त पटल, काशीकाहत क्मशधुपक *पेिणािपुहज* (1980), तक्लका िा (1930) क िजिलक्मी एक भाि-क्यत (1972), मेहिृदिा सुमनक *मोन पडैत अवि (2000),* भीमनाि िक्तक मक्त *आडक्त मे ठाढ (2000)* आ गोविहृद िाक आत्मालाप (2002) तशा स्मक्त सह्या एिं जीिनि चवित साक्हक्त्यक दक्ष सँ उल्लेखनीय अवि। एक्ह क्दशा मे बजकक्शोिमिा मक्णपद *हुनका सँ भेट भेल लिि (2004)* अदभूत संस्मािणि क्लखलक्त जकिा डा. पेमशंकिक्संह सम्पाक्दत कयलक्त जकिा पक्ढ क' पाठक के पेिणा भेटैत िक्त। आत्मकिा आ संस्मािणिक अदभुत सिरप क क्दग्दशषन होइत अवि। वािहृद मोहन क्मश (1890-1993) क *क्ति देखल क्ति सुनेखे*

कार्विलाक ाजिनीतिक, सास्कृतिक आ सामाविजक पकार्द पि पमावाणक विविणि पस्तुत किते अवि।

मैविली लोक साविहत्यक विपुल सामगी लोक कण्ठ मे व्याप्त विअि,मुदा एवहि विदशा मे जतेक पकाशन होमक चाही ओ अदावि नवहि भ' सकल अवि। आइ धवि एवहि साविहत्य मे एवहि विधाक अविहतगाि *मैविली लोककोवित। कोशक* सम्पादन डा. पेमशंकि विसंह कयलवि अवि। अनुसविहधानोत्ति लोक गीतक अनेक संगह पकाश मे आयल अवि जावहि मे उल्लेखनीय अवि अवािमा विसंह क *मैविली लोकगीत* (1970), कामेशिि देिीक *मैविलीक संस्कावि गीत* (1980), लोकनावि विमशक *मैविलीक व्यिहावि* गीत (1970) आ बालगोविहिद ि व्यविवत क मैविली गाम्य-गीत दू खण्ड।मैविली बाल-साविहत्यक विस्विवत सहविोर जनक नवहि। एकि पमुख कािण विक जे मैविलीक पािविमभक विशक्ा क रप मे अंगीकावि नवहि कयल गेल अवि। तािवि साविहत्यक एवहि पभाग के विकविसत किबाक विदशा मे साविहत्य-कविहतक देखबा मे आबवि िहल विवि। विगत शताब्दीक अविहतम दशक मे कतिु बाल साविहत्य अविशय पकाश मे आयल अवि जकिि संसिा नागण्य अवि।अनुिाद सँ साविहत्यक शीविहद होइत अवि। बीसम शताब्दीक आविमभक चिणि मे अनेक संस्कृत आख्यावयकावहि, किाविहक अनुिाद मैविली मे भेल जकिि फलसिरप एवहि विधाक विदस लेखक लोकविनक ्यान देलवि। साविहत्य अकादेमी दािा मैविलीक माहयता भेटल विबिहन शताब्दी रष्ठ दशकोत्ति काल मे जकिि फलसिरप विबिहन भाितीय भाराविह सँ स्तिीय गंिहिक अनुिाद मैविली मे समभि भ' सकल। कवितपय विदेशी भाराविहक गहिविहक अनुिाद भेल। एवहि विदशा मे लोकक

्यानाकवरष्ष भेल अवि।वमवि ला आ मैवि लीक पाची इवतहासक पसंग मे महतिपूणषकायषभेल अवि। एवह वदशा मे श्यामनाािसण वसंह क *History of Tochut* (1922), महामहोपा्याय पवमिशर्ि ि (1886-1924) क *वमवि ला तति विमिशष(1949)*, महामहोपा्याय मुकुन्द ि ितिशी (1860-1938) क *वमवि लाभारामय इवतहास*, जयकान्त वमशक *a History of Mithi Leteraterse Volume I* एि *II* (1949-1950), िधाकषण चैधिरक *A Saver of Maitlie Leteratere* (1976) आ *Miahtil in the Age of vidyapati* (*1976*) आ िमि पकाश शमा क *वमवि ला का इवतहास (1979)*, दुगानाि ि शीश (1929-2000) (1932-2000) एि बालगोविंद ि वमवि तिक इत्यावद कवत पकावशत अवि, वकन्तु दुयोगक विरय वक जे अदवि मैवि लीक सागोपाग इवतहास नवह वलखल गेल अवि जे सभ गिषक समुवचत पवतवनवधति कि ति हो। अतएि जे ऐवतहावसक कवत उपलब्ध अवि ओ एकागी अवि।

आलोच्यकालीन भारा आ सावहत्यक सिरप ओकि विकासोन्मुख पवि वत क दोतक वक। देशक पविवतिषत पविवस्ि वत मे सावहत्यके नशिि सँ विकवसत हैबाक हेतु पेवित कयलक अवि। तिषान पविपेकय मे हमि सावहत्यकाि भगीिि सदश साधना दाि मैवि ली सावहत्य मे भाि-मन्दावकनीक अिताििा मातभाराक पवत जे जनरवच लागल अवि ओकि पचाि-पसाि हेतु सन्नद वि। तिषान सन्दभषमे एवह सावहत्यक इवतहास नि जागिि, निीन वशाक पचाि एि पाश्चात्य सम्पकषक समवन्ित पविणाम वक। जतय पाचीन आ म्यकाल मे ई गीतात्मक रप सँ गवतशल िल ति ओवह मे

विरय ि रपक विविधाक्दक अभाि लि ओतय आधुक्तक आ सितिहतयोत्ति काल मे साक्हत्यक विकास विविध विधाक्द पचक्लत भेल अवि। देशक सिाधीनता साक्हत्यक विकास मे जेनला नि रप सँ योगदान देलक अवि। देशक सिाधीनता साक्हक्त्यक विकास मे जेना नि रप सँ योगदान देलक अवि। भाराक पचाकि संगक्ह आइ साक्हत्यक विक्मह्न विधाक्द चिनात्मक कक्त सभसँ भलि जा हिल अवि। तावि्म मैविली के एखन बड पैद मैदान पाि कबिाक िैक।

■

लोकनाटय

जीनिमे लोक आ साव्हत्यक सक्तिशायी महत्त अवि। लोक शब्द अत्यह्त पाचीन अवि। लोक शब्द अत्यह्त पाचीन अवि। आधुक्तक सभ्यतासँ दूि, अपन पाकक्ताक पर्वशिमे क्ताि कयक्हाि ताकिवित अक्ताक्त एिं असंस्कत जनताके लोक कहल जाइि जकि आचाि विचाि एिं जीनि पम्पिायुतत क्तयमसँ क्तयंक्तत होइि। लोक समाजक ओ िगष विक जे अक्भजात्य संस्काि, शास्त्रीयता, पाव्डत्यक चेतना आि पाव्डत्यक अंधकािसँ शून्य अवि जे एक पम्पिाकि पिाहमे जीवित अवि। एहन लोकक अक्भव्यक्ततमे जीनिक जे तत्त भेटैत अवि ओ हमि सव्हत्यक विकासक अिि द मागषमे नि गक्त पदान किैति ओकिी संबद्धता कबिामे अहं भूक्मकाक क्ताह किैति अवि। एव्हमे जनजीनिक तिषान सिि पक उपसिापन अत्यह्त मूलतप एकि पात समकालीन क्सिक्ताक संकेत किैति अवि।

लोकायतनक समस्त विधा समिितमे लोक नाटयक अत्यह्त महत्तपूणष सिान अवि जे अनेक रूपमे लोक जीनिक सिि मनोिंजन किैति आयल अवि। क्मविलाचलक लोकनाटय एव्ह साव्हत्यक अमूल्य क्तव्ध विक जाव्हमे हमि सास्कक्तक जीनिक आंचक्लकता पचुि पर्वणामे उपलब्ध अवि। िस्तुतप लोकजीनिसँ सितप उदाक्त लोकनाटय ओव्ह केत्तक सास्त्तकक्ताक चेतनाक

धाहिव विक। एक्ह सास्कक्तक चेतनासँ क्षाहल मैविली लोकनाटय हमि जीनि आ सक्हत्यक अविभाज्य अंग अवि।

लोक जीनिक सिभाविक अवभव्यक्तत लोकनाटयमे भेल अवि। लोकनाटयमे गीत, संगीत एि नत्यक क्ताणिी पिक्हत भेल अवि। गीतक संग सगीतक योजना अत्यवधक आनह्द पदान कवैत अवि; कहतु एकिा संग नत्य मेहो हो तँ आनह्दक सीमा अनह्तभ जाइि। काक्लदासक अनुसािि नाटय जनमनक अनुिजिनक सिाक्तकष्ट साधन विक। लोक जीनिमे एक्ह नाटयक सिाक्तशायी महति अवि जकिा देक्खक पसह्नताक अनुभि कवैि। जक्हना भोजपुिीक *विदेक्शया*, गुजिातिक *गिा* एि *भिाई*, मालिाक *माच* बंगालक *याता* एि *गंभीिा*, महाििाष्टक *तमाशा* आक्द लोकनाटयमे गीत, संगीत एि नत्यक क्ताणिी पिक्हत भेल ताक्हना क्षविलाचलक लोकनाटयमे मे हो उपयुक्ात क्ताणिीक अदुत समह्िय भेल अवि।

लोकनाटय लोकजीनिक साििाक्कल भािसँ सम्पह्न तत्कालीन युगक पिक्तक मौक्लक आिण्यिान कवैत अवि। जीनिक कोनो पविक्सिक्तमे एकि सभ कए तयो जीवित नक्ह िक्ह सकैि। लोक मानस अपन पिक्तके मनोिजिकता पदान कििाक हेतु एक नि आयामक क्यसिा कयलक जे कालाह्तिमे साक्हत्य-विधाक रपमे विकक्सत भेल। लोक जीनिसँ संबंक्धत विविध मागक्लक असिि यिा पाक्नि-क्तहािि, धािाक्षक, सास्कक्तक लोकोत्सि आक्दक विशेर पविक्सिक्तजह्य पक्कयासँ उदूत सामाक्जक, धािाक्षक एि सास्कक्तक चेतनाक पविणाम विक मैविली लोकनाटयक लोकधमी िैक्शष्टय।

लोक महति प

नाटयशास्त्रक टीकाकाि अवभनविगुप्ताचायष *धमी* शब्दके व्याख्यावयत कॉति अपन मतक स्पष्टीकिण कयलवि जे अवभनय लोकधमष िा लोकमूलक लोकोपयोगी सामवयक तत्तवक अनुकिण कॉिि।[1] नाटयाचायष भितिक मान्यता िवि जे अवभनयमे मात अवभनेतेक पमुखता नवह िहैि, पत्युत शोता एिं दशषकके लोकशास्त्रक जान अपेवक्षत अवि। लोकाचाि, लोकभािा ति लोक-व्यिहािक जाता दशषक नाटक िा अवभनयक िास्तविक आनन्द पाप्त क’ सकैि। एवह पकािें नाटकमे िेद, आध्यात्म, व्याकिण, शास्त्र एिं विविध शास्त्रक समवन्वत दशषन होइत अवि जावहमे लोक मान्यातके जीिन एिं सावहत्यसँ अन्योन्याशय सम्बन्ध स्थावपत भ’ जाइत अवि। अतएि नाटकक सफलता िा विफलतामे लोकरवच अत्यन्त महत्तिपूणष भूवमकाक वनिाह कॉिि।[2] एवह पसंगमे नाटयाचायष भितिक मत िवि जे शास्त्र, धमष, व्यिहाि ति लोक-वकया, लोक धमषपिति िहैि तकि नाटक कहल जाइि। नाटक लोकिृत्तक अनुकिण कॉिि चलैि। भिति लोक िृत्तान्तक अनुकिण क’ कए नाटक क वनमाण कयलवि।[3]

लोक सब कायषक अनुदशषक अवि। िस्तुतप लोक जीिनसँ सम्बद नाटय एिं शास्त्र सम्मत नाटयमे कोनो अन्ति नवह अवि। आवद आचायष भिति एिं हुनक व्याख्याकाि अवभनविगुप्तक किन िवि जे लोकतीत अनुभिसँ नाटय विरक पावप्त होइि। भिति कालीन भाितिमे सावहत्य िा नागविक नाटय एिं गामीण नाटयमे कोनो अन्ति नवह िल ई अन्ति तखन आयल जखन नाटक िाजदिबािमे संकवचत भेल। नाटक सविष संगही नाटय पिम्पिाके गवतशील िखबाक हेतु गुप्ता कालक पश्चात् पयोक्ता एिं नाटयाचायषक

पयाससँ आंचलिक एवं अनौपचारिक नाटय-शैलीक उदभव भेल। एकर परिणाम नाटय-सिद्धान्तक प्रतिपादक एवं नाटय लेखनक एक एहन श्रेणी बनल हैत जाहिमे नाटयाचार्य आदेशक तथा पयोक्ताक एक संतुलित विषय हिल होयतैक। लोक जनसाधारणक रुचि एवं नाटयके लोक मानसक प्रतिपादक हिल होयतैक। तत्पश्चात लोकनाटय अपन वास्तविक रूपमे सोझाँ आयल।[4]

लोकधमी नाटयक स्रोत एवं क्षेत्र

लोक जीवनक सहज संस्कार लोकधमी नाटयक सहस स्रोत थिक। एहिमे आपसी प्रेम भाव, धार्मिक अनुष्ठान, मेला-ठेला, पाबनि-त्यौहार तथा विविध सुख दुःखहार लोकानुरंजनक मूलभूत बिन्दु थिक। एहीसँ लोकधमी नाटयक अनन्तरूप सहलला परिलक्षित भेल। एकर स्रोत सामूहिक जीवन, टुटैत-जुटैत आ विकसित होइत अपन रूढ़ि परम्परा तथा परिस्थितिक सुविधाक अधिने अछि तथा ई हिह िताविणि क’ कोनो प्रभाव नहि पडय देलक। एकर सृजन, प्रणयन प्रयोग एवं प्रतिष्ठामे लोकजीवनक योगदान अछि जे सङ्घात्मक विशिष्ट अंग अछि। एकर प्रणयनमे प्रकृतिक विशाल कोरसँ अनायासहि एकर उत्पत्ति भेल। मेघक गर्जन, बिजलीक चमकब एवं गर्जब, प्रलयंकारी स्वरूप, मेघ बरसिब, मोर नाचब, पतझड़, बसंत, हेमन्त आदि ऋतु प्रकृतिक अनन्त असीम लोकनाटयक उदगम एवं विकासक मूलाधार अछि जे लोक जीवनसँ व्याप सभ’ सङ्घात्मक विशिष्ट अंग बनल।

लोकनाटयमे एखनो अविशिष्ट अछि तत्कालीन परिस्थितिक सुकुमारता एवं सुग्राहता। ओहिमे लोक जीवनक महत्व प्रतिपादन भेल अछि ते एकर लोकप्रिय होयब स्वाभाविके। एकर

काव्य भाग एिं पयोग भाग लोकधमाश्रित अवि। लोकनाटयमे जनसामान्यक अिात, लोक मनोिंजनमे हमिि जीिनिक, पकृतकाम्म्ब भेटैि जे सान्हत्यक अविभाज्य अंग अवि। एक्ह नाटयक उत्पकत लोक-विशिास, लोक पचलन, धाकमषक रकढ़, जन पिंपिा िीिि पूजा, मनोिंजन, उत्सि, मागकलक पषि एिं लोकाकद अिसिकि धाणािक बीचमे भेल। अतएि लोकनाटयसँ तात्पयष नाटकक ओक्ह सिरपसँ अवि जकि सम्बन्ध विशिष्ट शाकत समाजसँ कभन्ना सिषसाधाणािक जीिनिसँ अवि जे पिंपिा अपन केतक जनसमुदायक मनोिंजनक साधन िहल अवि।[6] एक्हमे जनसामान्यक चाहे गामक होिु िा शहिक एतबे विशेरता अवि जे ओ िशाका-दीका, पक्हबि-ओढब, खान-पान, आचाि-विचाि, संस्कािि तिा व्यिहािमे ओक्ह केतमे पकृतकवक संस्कृतक पतीक िहि एिं देशक जनसाधिणािक मूतष रपमे स्पष्ट अवि।[7]

लोक-नाटय कोनो जाकत विशेरक संपकत नक्ह, पत्युत एकि केत, जाकत, समूह, गाँि, कजला, पान्तव्यापी पभाि विक। एक्ह पकािि सान्हत्यके पविपोरणक हेतु एक्ह नाटय-पिम्पिामिे अपन जनपदीय संस्कृत, अनुशुकत, पचकलत पिंपिा, रकढ़ कंिदिन्ती, विशिास, मान्यता एिं धाणािक सागोपाग रपमे पवििकत त अवि। अतएि ई एक केत अपन जनपद विशेर धवि सीकमत िहैत अवि। एक्हमे भौगोकलक वसिकत, नत्य,संगीत तिा किि बीज मेहो अपन-अपन केतक िहैत अवि। िस्तुतप लोकनाटय समाजक सभ्य एिं सुसंस्कृत कहो[2] कहािि लोकसँ सििा कभन्न सभ्यताके चौिकहािि बाह आडम्बिि एिं उपचािसँ अनकभज अपन रकढ़ अिषमे पूणषतिा शाकत एिं सुसंस्कृत होइत अवि।[8] लोक जीिनिक पिंपिा युगक

अभीप्सा, अवमरक्य आि माह्यताक अनुसाि ई क्नहिति पिहिमान हिल अवि।[9]

लोकनाटय हमि पिम्पिापिक धािकि विक। मुसलमानक आकमणक फलसिरिप एक्ह पिम्पिाकि शनैप्-शनैप हास होमय लागल। एहना क्सिक्तमे गामीण पर्वििशिमे ई पिम्पिाि सुकिक्त हिल ।[10] एकि केत्त अत्यह्त व्यापक अवि। लोकधमी नाटय जाक्त विशेरक संपक्त विक जे समुदाय विशेरक पक्तक्नक्धत्व कििि। एक्ह पकाि ई नाटय-विधा हमि गामक संपक्त विक जे अपन जनपदीय, संस्क्रक्त, रक्ढि, विशिास, माह्यता एिि धाििाक सागोपाग रपमे पर्विक्शष्ट तकने एकि केत्त जनपदे धवि सीक्मत क्हि गेल।[11] भौगोक्लक क्सिक्तमे नत्य, संगीत तिा किाि बीज मेहो अपन विक्शष्ट केत्तमे पचक्लत अवि।

िचिना विधान प

लोकनाटयक िचिना-विधान शास्त्तीय क्नयमानुसाि नक्ह होइि। एक्हमे लोक पिपिाि तिा क्चि विकक्सत नाटय-रक्ढिक सिाक्धक महत्व अवि। ताक्तकि दक्ष एँ गीत, नत्य, पुिाण तिा यिािषि जीिनिक पसंग लोक-जीिनिक किािनक पधानता अवि। एक्हमे जीिनि एिि पक्कक्तक सहज पक्तविि होइि। जीिनिक विविधि आनह्ददायक तत्वकि सिाक्धक महत्त्ता एकि पमुख सिि विक। [12] एकि िशि-भूरा एिि शंगाि पसाधमे कोनो पकाकि तामिमिक आयोजन नक्ह कयल जाइि।

सामाक्जक माह्यता प

लोकनाटयक सामाक्जक माह्यता अवि। एक्हमे अनेक समस्याक

विविध सरिपक विश्लेषण कयल गेल अछि। ई हमर सामाजिक इतिहासपर महतपूर्ण प्रकाश दैत अछि, कारण धर्मक नियम एवं सामाजिक परिपाटिक कठोरताक विरुद्ध नाटय-कलाक संघरष चलि रहल छल।[13] लोक स्वभाव एवं लोक-व्यवहारक सुख-दुखक अभिव्यक्ति एहिमे भेल अछि। वस्तुतः मनुष्यक सहज भावक अभिप्राय विशेषसँ एकर अभिनय प्राणवन्त भ' गेल अछि। एहिमे सामाजिक जीवनक सांस्कृतिक अभ्युदयक युगानुरूप विकासक यथार्थता प्रस्तुत कयल गेल अछि। एकर सुदीर्घ परम्परा आ क्षेत्रीय सरिताक कारणे ई जनजीवनक अत्यधिक सन्निकट रहल अछि। ई समाजक जीवन-शैलीमे सामूहिकता तथा लोकानुरंजकताक प्रति पूर्ण प्रतिबद्ध अछि। ई लोकजीवनसँ समूहगत दायित्वसँ परिपूरित मनोरंजनक उत्सवके ल कए अबैत अछि जे लोकजीवनक सम्पर्कमे पल्लवित-पुष्पित भेल अछि। मिथिलाचलक लोक-नाटय समाजशास्त्रक दृष्टिएँ, अथवा संबंधक अध्ययनक दृष्टिएँ अत्यधिक महतपूर्ण अछि। सामाजिक ओ सांस्कृतिक परिप्रेक्ष्यमे प्रदर्शनक रूपमे ई सभ नाटय अधिक जनरुचिसँ सम्पोषित जनकल्याणक भावनाक हेतु पूर्ण प्रतिबद्ध अछि। मानव जातिक विकासक क्रमिकतामे लोकनाटय विविध नव-नवीन आत्मानुभूतिके स्पष्टतासँ मुखरित करैत रहल अछि।

मिथिलाचलक लोकनाटय परम्परा

सम्पूर्ण मिथिलाचल ग्रामीण क्षेत्र अछि। ग्राम्य जीवनक प्रमुखताक कारणे लोकजीवनक जतेक भव्य स्वरूप एहिमे उपलब्ध अछि ततेक अन्यत्र दुर्लभ अछि। वस्तुतः मिथिलाचलक ग्रामीण जीवन सभ्यतासँ परिचित अछि तकर परिणाम एतबा अवश्य भेलैक जे ओ अपन

पाचीन सरिपके तदति सुक्लित खिने हिल। एकि, रप, गि एि सिमे अदाविध कोनो पर्वितिषा नक्ष भेल अवि। भौगोक्लक दका सँ क्मविलाक बनाबक्ट एहन अवि जे एकि उषि भूक्म हमि संस्कक्ताके यािति सुक्लित खिने अवि। एहन बनबक्ट लोकनाटयक हेतु सषिा अनुकूल अवि। इऐह काणि अवि जे एतय अनेक लोकनाटय सुक्लित हिल। एक्ह भूक्ममे लोकनाटयक विविधताक दशषा नक्ह होइि। एक समान भूक्म नाटय रपके सीक्मत एि संकीणषबनबैत अवि। नाटय विविधता ति विकासशीलताक हेतु भूक्मक विविध रपता आश्ियक पतीत होइि। हमि लोकनाटयक विशाल, सुदढ ऐक्तहाक्सक पम्पिाि अवि।

लोकमंच आ लोकनत्य प

क्मविलाचलक विकास कक्हया भेलक ई एक अहं पशन अवि। क्मविलाचलक ई सौभाग्य हिल अवि जे लोकमंचक माध्यमे पिक्-पिक् केत्मे लोकाजिनक रपमे ई जीविति हिल। लोक जीनिमे सुक्लित ई गिमंच ने तँ मात विशाल भूभागमे गिमचीय क्लहितता बनौने हिल, पत्युत संस्कत गिमंच ति सहज सिभाविक सिानीय लोकनाटय पिपिािक एक क्मवशत समक्हति रपके शताब्दी अकुण िखिलक। मैविली गिमंचक अध्ययनक ई एक पक अवि जे मैविलीक पाचीन महतिपूणषकला रपमे पुनरदाि एि पुनरजजीनि पापत कयलक।

लोक मंचक दका एँ क्मविलाचक पचक्लत लोकनत्यक महतिपूणष सिान अवि। लोकनत्य िस्तुतप पाकक्तक नत्य विक। लोक जीनिमे जतय कतहु भाि्किताक क्ण अबैि ततय ओकि अनुकूल कोनो ने कोनो नत्यक रप पकट होमय लगैि।[14]लोकनत्यमे

मिथिलाचलक सांस्कृतिक आत्माक पक्षधर गुंजित होइत अछि तथा एकर माध्यमे लोक जीवनक दृश्य हमरा समक्ष अबैत छल। एहन नृत्यक कथानकमे नैसर्गिक सुन्दरता एवं उल्लास एवं जीवनमे परिव्याप्त व्यापक दरिद्रतापर आधारित होयबाक कारणे अत्यधिक मर्मस्पर्शी, भाव-पूर्ण आकर्षक अछि। वस्तुतः लोकनृत्य हमर दुखमय जीवनके सुखमय बनयबाक प्रयास करैछ। विशेषतः मिथिलाचलक लोकनृत्य एतेक प्राणवन्त अछि जे सतत हमर जीवनके सुखमय बनौने छल अछि।

अतः प्राचीन कालहिसँ मिथिलाचलमे एहन लोकनाटयक प्रचलन छल जे समय-समयपर ओकरामे परिवर्तित, परिवर्द्धित आर परिमार्जित होइत छलैक। एकर नाटयप्रदर्शनमे वेश-भूषा एवं शृंगार प्रसाधनक कोनो प्रयोजनक नहि पड़ैछ। पमरिया एवं नटुआक नाचमे घघरा अचकन एवं मुलतानी पगड़ीक प्रयोग कयल गेल अछि वर्तमान शताब्दीमे।[15]

यद्यपि मैथिली लोकमंचक स्वरूपक प्रसंगमे कोनो ठोस प्रमाणक अभाव अछि, किन्तु एतबा निर्विवाद अछि जे मिथिलामे गीत काव्यक उदय मनुष्यक वाणीक संगहि भेल। एतदर्थ मनुष्य जीवनसँ संबद्ध जीवनक प्रत्येक सुख दुःखक अभिव्यक्ति एकर माध्यमे जीवनक चरम उद्देश्यक पूर्तिक प्रयास कयल गेल जकर दिग्दर्शन मिथिलाचल गोसाउनिक एवं व्रतादिक गीतमे उपलब्ध अछि। मिथिलाक लोकजीवनमे गीतात्मक प्रवृत्तिक व्यापक संबंध मात्र उपनयन, विवाह आदिमे नहि छैक, कन्याक विदागरीक कालक गीतात्मक रूदन एवं मृत्यूपरान्त क्रन्दनमे सेहो परिलक्षित होइछ।

मैथिली लोक नाटयक प्रकार

कवि लामे कामसि लोक नाटयक अनुष्ठानगत परिपाटि पचालित अवि जकरमे लोकमंचक स्वरिपक विदग्दशण होइि यनि दसौत, सामा-चकेवि, वविया, जट-जटन, िक्कि, मिखेवलया, डोमकि, लोविकि, सलहेस, गोपीचहन्द, वविदापत, हवलिता एवि वकाहुला आवदक उल्लेख लोक-नाटयाहत्तगण कयल जाइ एतवदवतित एतय अहन्य पचालित लोकनाटय अवि यनि चौपहिि, नावदी, नयना-योवान, भावि, िडनी, पमरवविया आवदक उल्लेख मेहो भेल अवि जाकह वदशमे अनुसंधानक पयोजन अवि।

दसौत प

दसौतमे ि-ककयाके लोक-जीवनिसँ सम्बाद माया, मोह, आवदसँ अगित कवबाक हेतु एकि नाटयायोजन कयल जाइि। मानि जीवनिक कटु वदग्दशण एवि लोक जीवनिसँ सम्बाद जानक अजण एकह नाटयक उदेश्य अवि जकि स्वरिप लोकगीतमे सुविक्त अवि।

सामा-चकेवि प

सामा चकेवि-लोक नाटयक संबंध मूलतप ककरसँ अवि। एकह लोक नाटयावभनयक दावि बवहन अपन भायक धनक अभ्युदय ककामना एवि हुनका घवमे धनधाहन्यक कलपनाके साकावि कविते लवमीक आहान कविते अवि। आनुभाववकि बुवदक आकुल चेष्टासँ सामाववजक अंकुश दग्ध होइि। यौवनिमे सौहदयणक पूणषववकास होइि, आत्माक क्वाहितनक धविक बवक जाइि जे पक्वहीना नाविक हेतु अवभशाप कवक। एकि कविपकवनिमे नाविक िस्तववकि स्वरपक वदग्दशण होइि। बवहकवक पक्ष भायक अविलम्बान तँ विहितवक विक, मुदा नाविक त्यागक भाविना, ववताक सम्मवक्तमे भातीजक अवधकावि तावि

मात मोटीक अंशपर संतोरमे आसक्तितक वीिध तिा विवितत भोगक विशिष्ट वीािकि अवभव्यक्तत *क्सनुि कोि आस* मे सक्ताक्हत अवि। [17]एक्ह नाटयावभनयक पवपाटी क्मवलाचलक पत्येक गिमे पचाक्लत अवि जे एकर सविापकताक घोतक वक[1] एकर सरिप गीतात्मक अवि।

विविया प

विविया लोक नाटयावभनक रप आन लोकनाटयावभनयसँ सविा वभन्न अवि। एक्ह लोक नाटयावभनय दािि उाइन-योवानक साधनामे व्यधिान उपक्सित कयल जाइि। एकर सरिप मेहो गीतात्मक अवि।

जटजक्टन प

जट-जक्टन पढय-बद लोकनाटय विक। एक्ह लोक नाटयक किानक लोकजीिनक िािक्हक जीिनक विविध समस्या, सुख-दुक्ख पुररक पाशविक बलात्काािा पक्तिक बबिता, यौिनक विरम समस्याक अह्तर्धिय एिं जीिनक विविध अनुभूक्त एक्हमे सिभविक रपे व्यक्तत भेल अवि। एक्ह लोकनाटयमे अह्तदक्कदक पमुखता अवि।[18] एकिि पस्तािनामे सहगान एिं नत्य सक्हत संिाद गीत दािा उत्सकिि उल्लासक हेतु उदीपनक भािक पमुखता अवि। एक्हमे उत्सकिि लालसाक संग जीिनक अह्तक आशंकाक शाश्ित संयोगक मािमक उल्लेख अवि जे दाम्पत्य जीिनसँ सम्बद धटनाक कमक पविचय भेटैि। एकिि किानक विािहसँ पािभि होइि। एक्हमे नािा सिह्तताक धिक्न अनुगुंक्जत होइत अवि। लोक मानसक माध्यमे एक्ह लोकनाटयमे हमिि जीिनक िाकी भेटैत अवि।
एक्ह लोक नाटयाक्भनयोपाह्त मक्हला दािा हिि जोतबाक पिम्पािा अवि। अनाििष्ट भेलापि नग्न स्त्री दािा हिि जोतबाक तािि बेग कूक्टक अपन पडोक्सक आंगनमे पेकबाक पिम्पािा मेहो अवि।[19] ििाक अभािमे अकालक सागोपाग क्यतण एक्हमे उपलब्ध अवि1 स्त्री दािा हिि जोतब, बाहमण दािा दैक्तक कमिक अिहेलना तािि सामह्तािदक विििधी पक्तिक मािमिक क्यतण एक्हमे भेल अवि। एक्हमे पक्तक पक्त पत्नीक वशष्टता, व्यिहािा कुशलता एिं नमताक व्शाक्त भेटैि; कक्हतु मुतत, सितंत सिािलंिनी तािि शम-शीला सहचिािक व्यताकन मेहो भेल अवि। अतएि जक्टनक व्याहािविक जीिन िािशी सिाधीनता तािि समानाक्धकाि वािय अवि।[20] जट सिभािातिप पत्नी पि अक्धकाि जमायब चाहैि तािि पत्नीके

मनोनुकूल बनाबय चाहैि जे मुग्धाक आचणिक सिाधा पक्तकूल अवि। एकि नाटयवभनयके अतयहत्त मनोिजिक बनयबाक हेतु ििवहदास एि ििदिपाडनीक गीत गाओल जाइि एवह लोक नाटयावभनयक आयोजन हमि जीिनिके मुखमय एि समवद्धमय बनयाबाक कावमत कयल जाइि।एवह पकाि नाटयावभनय मात वमविलाचलेमे सीवमत नवह, पत्युत तवमलनाडु एि मध्यपदेशक संगवह विदेशमे विटिश कोलवम्बयाक डॉमसन इवण्डयनक बीच यूििपमे मेहो पचावलत अवि जकि चचा पेजि द गोल्डेन िाउमे िवि।[20]

िुवमि प

वमविलाचलमे ‘िुमिवि’ लोक नाटयावभनय पचावलत अवि जे लोकजीिनिक माध्यमे भाय-बवहनक उमडल स्नेहमे पिलवक्षत होइि। एवहमे वापस्िािषिात्सल्य िसि पूिवित हदयक, जे अपन बाल गोपालक मंगल कामनाक हेतु पैधसँ पैध पलोभनके लात माविि सकैि। एवहमे बहु विििहक धमकी, खादाह्नक अभाि, अनमेल विििह, शंगाि पसाधन, मनोिजिन, आभूरण आवद वविवधि पकपि पकाश देल गेल अवि जे मानि जीिनिमे सिायी महति खैिि जावहसँ स्पष्ट होइि जे पाचीन कालवहसँ अदािवध एवह लोक नाटयावभनयक महति अवि। तििमान पविपेक्ष्यमे एवह लोकनाटयमे कवतपय पविितिाना भेल अवि। एकि भारा, भाि, शैली आिि विरिय समसामवयकताक कोमल साचामे पविषवकत एि पविवितिदृत भेल जा िहिल अवि।

िमिखेवलया प

नेपाल तििाई ििर एि अहीििमे िमिखेवलया सिाािवधक पचावलत लोकनाटय अवि। एवह लोकनाटय बंगलाक कवतािसक िामायणक

अवधक पभा अवि। नेपालक उपत्यकामे देंीना, ज्यापूनाच, महाकाली नाच आवदक अवतवतत सिय केलाक िउ नाचमे मेहो मुखौटाक पयोग होइत अवि। मिखेवलयामे मेहो मुखौटा ओ अनेक उपकणावदक पयोगसँ एकि पाचीनता एं समवत पिपि पवतभावरत होइत अवि। एकि संिद गीतत्मक ओ गदात्मक अवि।

डोमकि प

डोमकि कि शावब्दक अि ष होइि डोमक सि ग। एकि अवभनय मवहलाक दाि कयल जाइि। एवहमे पुरषक पशि वनरेध हैि। पुत विाहक अिसि पि जखन घकि पुरष िगषविियात चल जाइत िवि तखन ओवह िवि घि आंगनक ओ अडोस-पडोसक स्त्रीगण िवि भवि खेल-खेल (डोमकि) मे जावा जाइि ति चोंिक भयसँ समाजक िवि कि। डोमकिमे विाहक सामावजक आिश्यकता पि बल देल जाइि। एकि कििपकधन गीतात्मक ओ गदात्मक दुनू संिद मैविलीमे उपलब्ध अवि। एवहमे विाहक सामावजक आिश्यकताक संकेत भेटैत अवि।

लोविक प

लोविक ि लोविकायन मैविली लोक कंठक अनमोल िि विक। एकि कि पूिषमे पूवणाषा उतिमे वहमपिषा, दवक्षणमे गंगा ति पवश्चमतमे ओदहत्तपुि विहािमे चवचषत अवि। एवह लोक नाटयचचा िणषिित्माकिमे मेहो उपलब्ध होइि।

सलहेस प

वमविलाचल एं पूिी नेपाल तिाइक जनजीिनिमे ई नाटय अत्यहत्त वपय अवि। वकहतु मोिंिाया सलहेस एं वमवधलाचल पविसिमे

पचाक्लत सलहेसमे कि्ु क्महन्नता अवि। एकिी कि्ानिक गदय ओ पदय दुनूमे उपलब्ध अवि। कतहु-कतहु किीप भ' कि्ानि ओ दश्यविधान क्मक्शत गेल अवि। एक्ह लोकनाटयमे विदूरकक चचा भेल अवि। सलहेसक संग सूभ्मि शब्दक पयोग भेल अवि जे ओकि िीतिाक विकि।

गोपीचह्द प

पस्तुत लोकनाटय भातिक विक्मह्न भूभागमे पचाक्लत अवि, कक्ह्तु एकि उदगमक शेय बंगालके िैक। एकि कि्ानायक गोपीचह्द िि्ध। एक्हमे मैनातिीक कायक्मता ओ दीक्कत जीनिक पिहपूणष णिष्ा भेटैत अवि। एकि कि्ानिकक सम्बह्ध नाि समपदायसँ अवि जे सिष्ािूह्यके पिमि तति मानैत िवि। एकि कि्ानिक क्मविलाचल धवि सीक्मत नक्ह अवि, पत्युत आसामी, पंजाबी, गुजिाती, मिाठी एिं नेपालीमे मेहो उपलब्ध होइि जाक्हपि बंगालक स्पष्ट पभाि अवि। क्मविलाचलमे एक्ह लोकनाटयक पस्तोता रपमे गुदविया बाबाजी जानल लाइि।

विदापत प

पूक्णषाँ क्जलामे विदापद नाटयक आंचक्लक अवि। एकि पदशष्ा मुतत िंगभूक्ममे नत्य, संगीत ओ अक्मनयक माध्यमे होइत अवि जकि मूलाधाि अवि लोकधक्माष्ा जे पूिाचल समाजमे अपन अक्स्तति अकुण्ण िखिने अवि। कष्ण लीलाक साक्मनय पदशष्ाक काििे विदापतमे एखनो अपूँिष भाि सौह्दयष, शुक्त माधुयष, लोकानुिंजन एिं पभािोत्पादकता आदयािह्ध सुिक्कत अवि। एक्ह लोक नाटयमे शास्त्रीय एिं लोक पिंपिाक अदभुत सामंजस्य भेल

अछि। एहूमे लोकधर्मक लोकाचार तथा लोक आदर्शक प्रमुखता अछि।

हरिलिता प

एहि लोकनाट्यमे कृतमेन, बुद्धमेन ओ धर्माविलोकक प्रेम कथाके अभिनय द्वारा प्रस्तुत कयल जाइछ। लोकधर्मी नाट्यक सभ तत्व एहूमे मुखर अछि। एक संवाद पद्यमय ओ गद्यमय दुनू अछि। एकर भाषामे प्रवाह, शैलीमे सरलिता तथा कथिपकथनमे सशक्तता अछि। प्रेम गाथाक समायोजन तथा प्रस्तुतीकरणक उत्स जेना लगैछ जे ओ संभवतः मध्यकालीन प्रेम कथाक विशृंखलित कड़ीक संकेत करैछ जे कालान्तरमे लोकनाट्यक रूपमे प्रसिद्ध भेल।

बिहुला प

बिहुला महादेकि बेटी िलीह जे बाहि रिषक असिामे िमुकी नागसँ पविणीता भेलीह। ओ गौंिके कटैत िलीह आ पुनप मत्यु मुततक दैत िलीह। एक्हसँ महादेि पसह्न भ' हुनका िदान देलवि न जे चाह्दो बकयाँ दािअहाँक पूजा हैत। कत्हु चाह्दो बिहुलाक पूजामे अपन असमििा पगट कयलक जकि पविणाम भेलैक जे बिसहीि चाह्दोके चेतािनी देलवि न तािओकि पुत सपष दंशसँ मवि गेल। अह्तमे बाला कुमकि विहुलाक संग वििहिल गेल जे सपष दंशसँ मत पाय िल; विहुला अपन पाकत िधमषसँ अपन पवतके बचा लेलक। बिसहीि बिहुलाक पवतके दंशक हेतु तैयाि नव्ह भेल। विरिहाँ शेरनागक आिधना कयलक। ओ जादू-टोना, जडी-बुटीसँ विजीक दािओकि गंभीि वनदामे िखिलक। कत्हु बिहुला आ बालाकुमाि सुतल िलाह ओतय ओ गेल आ बाला कुमािके दंश माव्ह देलक। बिहुला अपन मत पवतके जीवित कबिाक हेतु इह्द, सूयष आव्द देिताक सावनध्यमे गेल ताि ओकि पवत पुनप जीवित भ' गेल। ििय बहादुि व्दनेश चह्द सेन बंगालमे जखन बिहुलाक तािवलखलक तत्पश्चात् एकि पचाि अत्यविक भेलैक। भागलपुि पविसिमे ई कि एवि पूजाक विधान मेहो पचवलत अवि। एक किनिक सोदेश्यतासँ भलि नािक आदशष ओ पाकतितिक अवभनयक र पमे पख्यात अवि।

सीमाकन प

उपयुषत विश्लेरणसँ स्पष्ट भ' जाइि जे पागैवतहावसक एवि ऐवतहावसक एव्ह कवतमे लोक जीिनिक वचताकन भेल अवि जे

मैविली साक्त्यिक अमूल्य कावधक कवताकन भेल अवि जे मैविली साक्त्यिक अमूल्य कावध विक। एक्हमे लोक जीविनक पिम्पािा, लोक विशािस एिं अनुशुक्त रपमे सुविक्ति िहिल जे समयक गक्तमे शनैप-शनैप हमि साक्त्यिके पभावित कयलक। ई पिम्पािा क्वहित्तनसँ विकवसत होइत िहिल तिा ओकिा माह्यता ओकिा पक्तमान युगक अवसिर क्वक अनुकूल पविवक्ततषा होइत गेल। एक्ह पिपििक कवत, संगीत एिं अवमनयक िास्तविक विश्लेरण कयल जाय तँ आक्हमे लोक जीविनक स्पष्ट िापि पविलवक्त हैत। उपयुक्तत पिम्पािाक पष्ठभूक्तमे भित, धनंजय, अवमनगुप्त, नीह्दकेशिा तिा िामिचह्द गुणचह्द आक्द नाटयाचायष लोक जीविनसँ पेिणाा गहण क’ कए नाटयधमी नाटकक िचना कििाक पेिणाा देलक्त।
उपयुक्तत पिम्पािाक पविपेक्ष्यमे क्तविलाचलक लोकमंच विवमह्न आख्यानपि आधावित भ’ विकवसत भेल जकिा क्वगदशष उपलब्ध होइक जाक्हमे क्तविलाचलक लोकजीविनक विवमह्न समस्याके पक्तपाक्दत कयल गेल जे हमि साक्त्यिक अक्य भंडाि विक। सभ्यता एिं विकासक नामपि नागविक जीिन लोक जीविनके अनेक क्वेत्तमे पभावित कयने जा िहिल अवि। एहना क्वसिक्तमे पयोजन अवि मैविली लोक अनुिंजिक साधनके यिािित संगहीत कयल जाय। मैविली लोक नाटयक अध्ययन मात मौक्लिक एिं जान विस्तािाके नक्ह, पत्युत लोक जीविनक सास्कृवतक सिरिपक संकिक्तक दक्वा सं हमि साक्त्यिक हेतु उपयोगी हैत।
आलोच्य नाटय सभक अक्तवितितो क्तविलाचलमे अनेक एहन लोकनाटय अवि जे जीिह्त किािा ततिसँ भिल, पदशषा सािाविौम सत्ताक अनुकूल अवि। एक्हमे अल्लाह रदल, िायिणिपाल, गुगली

घटाि, दुलािदलाल, दीनाभदी, भगता, लुखेसिा, ढोला कुँिा, काली विलास, विरहाि, अघोिा आक्द विशिष्ट अवि जकि कािनक, कािपककिन, अवभनय पिम्पाि, िािमंच, रप-योजना, भारा-शैली लोकानुिंजन आक्द हमि साक्हत्यक अक्त महतिपूणष अंग अवि। क्मविलाचलक उपयुषक्त नाटय रप सभमे आधाभिूत ततिक अवक्स्ितत सिानीय विशिष्टता उपलब्ध होइत अवि जाक्हमे हमि जीिनिक अवभव्यक्क्त भेल अवि जे साक्हत्यक अविभाज्य अंग विक। ई लोकनाटय लोकोनुिंजनक संवाह-संग लोकावभव्यक्क्तक सिि माध्यमक रपमे पचवलत अवि, तकिा आजुक पविक्स्िवतमे आिश्यकतानुसाि उपयोगी बनाओल जा सकैि। आधुवनक पविशिमे संदेश पचािक हेतु क्मविलाक लोकमंच सिावधक उपयोगी वसद भ' सकैि। क्मविलामे उपलब्ध कवतपय लोकनाटयक गवतशील पिम्पािके विश्लेरण गिेरणा ओ अनुशीलन सौविध्यक दवष्ट एँ उपयोगी अवि।

मैविली लोकनाटय हमि पाचीन जीिन, जीिन पकवत ओ पवक्तक साकाित सििपके वसि किबामे सहायक भेल आ तत्कालीन युगक लोक मानसक दशा-क्दशाक अवभजान अदािवध किबैत अपन युगधमषक पवत पवतबद अवि। एवह संदभषमे अदयािवध पकावशत एिं विक्वित लोकनाटयक सिकिणसँ ई तथ्य स्पष्ट भ' जाइत अवि जे सभक मूल आत्मा आ उदेश्य समाने िैक जकिा नगिीय मंचपि समुक्वत िवतएँ उपसिापनसँ एकि भविष्य आिि विकासमय, उज्जिलमय पमावणत भ' सकैि। लोकनाटय लोक जीिनिक पागैवतहावसक जीिनिक मौवलक दस्तािेज सदश विश्लेरणक क्मष्करषि गिेरणाक पयोजन अवि। ई हमि सास्कृवतक जीिनिक

धाहि क्यक। तिषान पर्वपिक्यमे आश्यिकता अवि जे एक्ह क्दशामे अनुसंधान क’ कए एकि समुक्यत पकाशनक योजना बनाओल जाय जे हमि संस्कक्त सभ्यता, जीनिक लौकक पक साक्त्य जगतक समक आओत जे हमि जीनिके पकाक्शतक नि क्श्मसँ आलोकत क’ सकत। क्मविलाचलक लोकनाटय जनजीनिक दक्ष सँ अक्लक्त भ’ हिल अवि तकिा सभक समक अनबाक आश्यिकता अवि जाक्हसँ ओकि नीनीकणिक पक्कया दािा िजाक्तक आधाि पदान कयल जा सकैि।

संदभषप

1. क्हन्दी अक्मनि भातिी, संपादक एिं भाष्यकाि आचायषविश्िशिि क्सदाक्त क्शािमिक्, क्हन्दी विभाग, क्दल्ली विश्विदिालय, क्दल्ली, 1960, पष्ठ-435

2. मैविली नाटक ओ िगमंच, डॉ. पेमशंकि क्संह, मैविली अकादमी, पटना, 1978 पष्ठ-102

3. याक्त शास्त्ताक्ण ये धमायाक्त क्शल्माक्तयाप क्कयाप। लोक धमष पित्तक्त ताक्त नाटये पकीक्ततषाम्।। नाटयशास्त्त, संपादन-डॉ. मनमोहन घोर, मनीरा गंिालय पा. क्ल., 4/3 बंक्कम चटजी स्टीट, कलकता, 1967, अध्याय-26, श्लोक-124-125, पष्ठ.221

4. मैविली नाटक औ िगमंच, डॉ. पेमशंकि क्संह, पष्ठ-103

5. पिम्पिािशील नाटय, जगदीशचन्द्र मािि, विहाि िाष्टभारा पविरद् पटना, 1969

6. लोक धमी नाटय पिंपिा, डॉ. श्याम पिमाि, क्हन्दी पचािक पुस्तकालय, िािाणसी, 1958, पष्ठ-30

7. भािीतीय लोक नत्य एिं सैदाक्न्तक अध्ययन, देिीलाल सामि,

भातीय लोक कला मंडल उदयपुि, 1976, पष्ठ-1
8. लोक-नाटय-पिंपिा औि पिवृत्तयाँ, डॉ. महेन्द्र भानिा, बाफना पकाशन जयपुि, 1971 पष्ठ-4
9. मैविली नाटक ओ िंगमंच, डॉ. पेमशंकि वसंह, पष्ठ-109
10. आधुवनक वहन्दी सावहत्य, डॉ. लक्ष्मी सागि िाष्णेय, वहन्दी पविरद्, इलाहाबाद युवनविसटी, संशोवधत औि पविर्द्धत संस्किण 1948, पष्ठ-224
11. मैविली नाटक ओ िंगमंच, डॉ. पेमशंकि वसंह, पष्ठ-114
12. तत्रैि, पष्ठ-114-115
13. तत्रैि, पष्ठ-117
14. वहन्दी सावहत्य कोर भाग-1, पधान संपादक-धीिेन्द्र िमा, जानमण्डल वलवमटेड, िािाणसी, वद्वतीय संस्किण िंिंच पंचमी 2020 पष्ठ-751
15. मैविली नाटक ओ िंगमंच, डॉ. पेमशंकि वसंह, पष्ठ-127
16. तत्रैि, पष्ठ-131
17. मैविली नाटक पविचय, डॉ. पेमशंकि वसंह, मैविली अकादमी पटना, 1981, प-131
18. जट-जीटन, िाजेशिि िा, मैविली सावहत्य संसिान पटना, 1971, पष्ठ-4
19. मैविली नाटक पविचय, डॉ. पेमशंकि वसंह, पष्ठ-47
20. Golden Bough, J. E. Prazer, Abridged Edition, 1960, Page-96
21. पूिाचलीय लोक सावहत्य, चेतना सवमवत पटना, 1974, पष्ठ-7

पारिवर्कि नाटक

साक्हत्यक अह्य विधाक तुलनामे भातिक विभिह्न जन जनपदमे सािक्धक नाटय िचना क्मविलाचंलमे भेल; इऐह काणि अवि जै एकि इक्तहास अक्त पाचीन एिं पौढ अवि। क्राष्टगिष ओ क्राकि समाजमे साक्हक्यक अवभर क्य उत्पह्न कबिाक हेतु मैविलीक साक्हत्य मनीरी नाटय िचना क्रस अत्यक्धक उह्मुख भेलाह। देश कालक आधापि मानि-मूल्य पर्विक्ततष होइत गेल, युगीन दडाविमे जतय ओकि जजषि पिम्पािािदी क्सद्ाह्त अटक्क गेलैक ओतय साक्हत्य सेहो समयक मागक अनुसािि कििट फेलिक। मैविली नाटक अपन अत्यह्त पैघ-याता पाकि आइ एक चौबक्टया पि ठाढ दक्ष गोचि होइत अवि। आधुक्तक नाटककाि पिम्पािािदी माह्यताक्रके ्स्िित नक्ह कयलक्न; पत्युत नाटकके िगमंचक क्रशामे अवभयान कयलक्न। कि ा-साक्हत्य सदश अपन क्तक्शात कलेिमिे ओ अपनाके चमका देबाक संकल्प कयलक्न। नििन मूल्यक अह्िरगमे पारिवर्कि नाटकाकि कथ्य एिं क्राल्प दुनूमे युगाह्तकाििी पर्विक्ततषक शीगणेश तयलक्न। म्यकालके िक्ड क' पििपािािदी नाटककाि सिचिह्दतािदी कम यिािक्ादी एिं बौक्द्क विि। नाटय-क्राल्पमे भेल पर्विितष नाटकके पठनक सीक्मत केत्सिँ बहाि क' कए िगमंचक अत्यक्धक समीप आक्न देलक अवि।

िस्तुतप नाटक एक एहन विधा विक जे अपन पििपािकि विािसितसँ अक्धक लाभाक्ह्ित भेल अवि। कि ा-विस्ताकि नाटकीय सौष्ठि

पदान कबिाक हेतु विरकंभक, पिशक, अंकास्य, अंकाताि आिद जे पिपािगत मैविली नाटक शैली िल ताि नाटय-शास्त पणालीक सम्मत आधुिनक नाटककािक पिवत्त भेलिन। िस्तु-विधान, पात-पिवकिल्पना, चिवत-िचतण एिं संिाद योजनामे निि दक्षा के सीिकािलिन। नाटक िसोदेकक साधन निह िथि क' देशक नि-िनमाणक पेिक शिकत बिन गेल अिछ। नैिशयक अंधकािमे आशाक दीप जियबाक पेिणा पािपिवक नाटककाि देलिन अिछ। पािपिवक मैविली नाटक बहुिग संिचनाक सँदभषमे नाटककाि समिकािीि अिात् भाितीय एिं पाश्चात्य रंगिवक क' समाकलन ओ नाटकािलतगषत कयलिन अिछ। मैविली नाटक आधुनीकिण िा अंगेजीकिणिक पिवत्त स्पष्ट अिछ। पाश्चात्य नाटय-शैलीमे जे संघरष, द्वन्द्व, मनोिैजािनक चिवत-िचतणके नाटककाि अपन उदेश्य बुिलिन। अनुकिणिक ई पिवत्त मैविली भारी केतक नाटककािके यिािाििमुख एिं बौिद्धक हैबाक हेतु बाध्य कयलक।

मैविलीक पािपिवक नाटक िकछु एहन अिछ जकिि सूचनामात सािहत्येितहासक गंिमे उपलब्ध होइत अिछ; िकन्तु दुयोगक विरय विक जे अदािविध ओकिि पकाशनक िदशामे तँ ने कोनो अनुसंधाता आने कोनो संसिा एिह िदशामे पयास कयलक अिछ। यदिप विविहन्न विश्विविदालयािदमे नाटक पि अिधकािधक संख्यामे पबंध पस्तुत कयल जा िहल अिछ तिािप अनुसंिधत्सु ओही सूचना मातके दोहिबाक पयत्न कयलिन, िकन्तु अपकािशत पािपिवक मैविली नाटकक पकाशनक िदशामे कोनो सिकय पयास निह कयकलिन। एिह संदभषमे डॉ० जयकान्त िमश विश्विनािििक *िमिशि चिन्दका* आधुिनक मैविली सािहत्यक जनक किीिश्ि चन्दा

िाक (1831-1907) *अहल्या चार्वति नाटक* एिं बलदेि काशक (1887-1946) *गिज गिजेर्शि नाटक* (1920) एिं *मिशोदय नाटक* पर्पिागित नाटक सूचना देलक जे अदािधि अपकािशात अिं। एिह िदशामे पयासक पयोजन अिं जे उपयुत नाटकाक मैिथली पाठकक सम्मुख आबय जािहसँ निि ढंगे मैिथलीक पर्पिागित नाटय शैलीक आलोचना भ' सकय।

मैिथली नाटक अत्यापाचीन िहतहुँ ओ सतत अनुसंधेय अिं; कािण शखलावद्ध रूपे ओकर अहिरण अदािधि सुव्यविस्थित रूपसँ निह भ' सकल अिं। जिहनाक जिहना अनुसंधत्सु एिह िदशामे सचेष्टता देखौलिन तिहना-तिहना मैिथली नाटय सािहत्यपर पकाशक निि ज्योत पिड़ हिल अिं जे एकिट आलोकमय भिवष्यक सूचक कहल जा सकैिं। गहन अनुसंधानक फलस्वरूप एिह शंखलािहगत एक पर्पिागित नाटयकािक नाटयकिा पकाशमे आयल अिं ओ िििं तेजनािि िा (1854-1934) जनक *सुिििज विजय नाटक* (1919) किहु एिह नाटक संबंधमे ने कोनो इितहासकािि िक कोनो अनुसंधता अदािधि सूचना देलिन जे अत्यिधक खेदक िवषय िक। ई ठेय िक िजजासा (1995) क' िवदान संपादक िहनिके जे संपूणष नाटकके अपन पितशाकमे पकािशत कयलिन अिं। जिहना जीनि िा (1848-1912) पर्पिागित नाटय शैलीक अनुकिण क' कए पािंपिविक नाटक िचना शीगणेश कयलिन तिहना तेजनािि िा किचत सुिििज विजय नाटक सेहा ओही शैलीके आगाँ बढयबाक िदशामे एक अिभनि पयासक कयलिन। िस्तुतप सुिििजविजय नाटक स मैिथलीक पािंपिविक नाटय सािहत्यक इितहासमे एक सेतुक काज कििं जे जीनि िा एिं

साहित्यरत्नाकर मुंशीरघुनन्दन दासक (1860-1945) बीच एक नि नाटक क' सूचना मैथिली नाटयालोचकके भेटलन्हि अछि1 जतय जीवन ि ा, लालदास (1856-1921) एवं साहित्यरत्नाकर मुंशी रघुनन्दन दासक नाटकादिमे संस्कृत-संस्कृत पर पारंपरिक नेपाल, बंगला, एवं असामक अंकीया नाट सदश धडल्लेसँ संस्कृत श्लोकक माध्यमे मैथिली पदक भावके व्यक्त कयल गेल ततय तेजनाथ ा ाक विशिष्टता छन्हि जे ओ सुरि ाजिवजिय नाटकमे कतहु संस्कृत श्लोकक पयोग नहि कयलन्हि। विशुद मैथिली गदक अनुकरण ओ जीवन ासँ अभिप्रेय कयलन्हि आ पारसी थिएटरिकल कम्पनीक पभावक कारणे ओ मैथिली पदक पयोग नाटकमे कयकलन्हि।

मैथिली नाटक परिदृश्यमे कतिु नाटक पकाशित रूपे उपलब्ध होइत अछि जे विशुद रूपे मध्यकालक शैलीपर आधुनिक कालमे लिखल गेल अछि। हमरा लोकनिके महामहोपाध्याय हर्षनाथ ाक (1844-1899) जतेक नाटक उपलब्ध होइत अछि जकर पकाशन *हर्षनाथ काव्य ग्रंथावली* मे भेल ओ तँ विदयु रूपे पारंपरिक नाटक थिक जाहिमे मैथिलीक पारंभिक नाटकके मध्यकालीन। नाटक शिज कहबामे कोनो तातिम्य नहि। मध्यकालनीन नाटक तैभावरिक ि ल, कथोपकथन संस्कृकत पाकत तथा ओहिमे मात मैथिली गीतक समाविशक 'कारणे ओकरा मैथिली नाक गेल। अतएव हर्षनाथ दारा लिखित जे नाटक उपलब्ध अछि क तकरा पारंपरिक परिपेक्ष विशलेरण कश्यल जायत। एहिसँ स्तिप स्पष्ट भ' जाइत जे क' पारंपरिक नाटक अछि जे मूलत प मध्यकालक पष्ठभूमिमे लिखल गेल अछि आ दोसर ओ अछि जे आधुनिकताक परिपेक्ष मे लिखित

पांपिविकि नाटक विकि।

जतस पंपिगित मैविली नाटकमे मैविली गदक अभाि, पदयक पाचूयष़ संस्कत श्लोकाव्दक अव्धकताक संगव्ह कििकिपन सेहो संस्कत िि पाकतमे होइत िल ततय जीनििि तेजनाि शा लालदास एिं मुंशी धिुनह्दन दास नाटक अनुशीलनसँ सष्ट भ' जाइि जे तिषान युगमे पंपिगित मैविली नाटकमे एक काव्हकािी पविितषा भेल जे ओ मैविली गीत एिं संस्कतक िलोकक सम्पिि पवित्याग नव्ह क' कए विशुद रपे मैविली गदयके किपकिनक साधन माव्न ओकिि अपन अव्भव्यक्तक माध्यम पमुख काणि व्यक जे मध्यकालके िव्ड क' जतेक पांपिविकि नाटक उपलब्ध अवि गदयक पचुिता पविलव्क्त होइत अवि।

जीनििि क पखि पव्तभा काणि मैविली नाटय साव्हत्यक व्वाज पि एक अदभुत आलोकक संग पस्फुव्टत भेल। जीनििि जखन नाटय िचिना आिंभ कयलव्न तखन आधुव्नक गदक ह्यो िखल जा चुकल िल; व्कह्तु ओकि कानो व्वशाचत एिं व्यव्स्ित सिरप नव्ह व्धावित भेल िलैक। मौव्लक रपसँ मौविली नाटय साव्हत्यक िव्स्तकि विकास व्हनकव्हसँ होइत अवि। पंपिािदी आि नींन विचािधािाकि एहन संधरष कालमे जीनििि सत्यतप मातभूव्म पेमी तिि भारा पेमी कोना मौन व्ह सकैत िलाह? अतएि ओ मातीभारक सेिकि हेतु दढ संकल्प कयलव्न ओ गदयक विधामे नाटकके पव्हने एव्ह हेतु चयन कयलव्न जे ओकिि माध्यमे जनपसामाह्यमे शेष्ठ आि साधािणि व्यक्त धवि अपन उदाििनाके सुगमतापूििक पहुँचा सकवि ओ मौव्लक पांपिविकि नाटक सजनक मैविली नाटय भंडाकि समद कबािक पयास कयलव्न। जीनि

िसँ पेिणा पाप्त क' कए हुनक समकालीन अनेक लेखक नाटक िचना कयलक्न। जीनि ि कालीन लेखक लोकक्न िविध भािनाक व्यापक पचाि किबाक हेतु ओक्हमे नाटय कलात्मकला गौण िलैक। तत्कालीन पिविस्िक्त एिं समस्याके ओ यािाषिंक्तसं पक्तािक्कात कयलक्न। पिम्पािगत मैिलली नाटय साक्हत्य एिं संस्कृत नाटक शास्त्रीयतासँ ओ पभािवित भेलाह; ककन्तु शनैप शनैप हनका पि तत्कालीन िकचक पभाि सेहा यिष्ट मातामे पडलक्न। नाटय िचनाके समयानुकूल बनयबाक दक्ृष्ट सं अगसि पिपािगत संस्कृत नाटय शास्त्रके ओ अपन आधाि अिश्य बनौलक्न; ककन्तु यिासंभि आधुक्नकताक पिश कियबाक क्ददशामे यिष्ट पयास कयलक्न। तत्कालीन अक्भनय व्यिसाय आ पािसी कम्पनीक ककया-कलापक पभाि एक्ह युगक नाटककाि लोकक्नपि पायप्त पडलक्न। पािसी कंपनीक अक्भनयमे उतेजना, भािदिग, पेमोदगगाि आक्द तथ्यक पभाि हुनक समकालीन नाटय-साक्हत्यपि अिश्य पडलक्न। नाटक िस्तु-िक्न्यासमे पिपािगत नाटय पस्तुक्तक सिीिा पिक्तयाग नक्ह कयल गेल। नाटय िचनामे सिाभािविकताक भूक्नपि कििनकक िक्न्यास कयल गेल। यदक्प एक्ह नाटक भारा अशास्त्रीय हिल तािक्प ओकि पयोग पातक अनुकूलताक अनुसाि भेल ते भारामे उक्त्मुतता तिा सिलताक क्दगक्दशषा अनेक सिलपि भेल जकि फलसििप ओक्हमे कक्त्मताक समािश भ' गेलैक।

िनि ि मैिलली नाटय गदयक संस्क्दपके नयक्हि ि लाह; पत्युत िक्मक्न्न नाटय-शैलीक जनमदाता सेहो हिि। क्हनक भारा-शैलीमे लोक पचाक्लत शब्द, मुहाििि एिं लाकोक्क्तक पयोग भेल जकि फलसििप क्हनक भारामे एक अदभुत सौक्न्दयष आक्न गेल संगक्ह

सिभाविकताक कि सेहो भेल। क्हनक नाटकाव्दमे सिसता, सलिता, स्पष्टता एिं क्यतमयताक क्दग्दशषा होइत अवि। क्हनक पत्येक नाटक पद-गद क्मश्यत नाटक वि क। क्हनक नाटकाव्दमे गदक पधानता क्हितहुँ पदक पचुि पयोग भेटैि। पदय पयोगक अन्तवितत ई गीतक अतिािणाा सेहो कयलक्न। काव्य-िभिकि दक्न एँ क्हनक एक-एक पद् अमूल्य क्नध्क समान अवि। पदय एिं गीतक पयोग नीिािताक पवहिकि’ िसोत्पादन कबािमे, िताििणक सक्न कबािमे ति पातक मनोभाि एिं चवितगत विशेरताके पगट कबािमे सहायक भेल अवि। क्हनक नाटकाव्यमे भाकि अनुर विविध िह्दक विधान उपलब्ध होइि।

अतएि पक्तपाद पबह्धाह्तगत्त हम मध्यकालके िक्ड क’ मैविलीक पािपविक नाटक पविपैक्मे एक्ह आलेखके केव्हदत कबाक उपकम कयलहुँ अवि। पक्तपादय पबंधके विश्लेरणक कममे हम एकिा दुइ भागमे विभाक्जत कैंति िी- मौक्लक एिं अनूव्दत। मैविलीमे ितत्ताषान कालमे क्कि एहन नाटक अिश्य उपलब्ध हाइि जे िस्तुतप मध्य-कालक शैलीक अनुकिणपि क्लखल गेल अवि आ अनूव्दत नाटकाह्तगत्त ओहन नाटक चचा कयल जायत जे संस्कत िा अंगजी िा फेच िा बाङला िा क्हह्दी नाटक यािाित् मैविलीमे गदय-पदयानुिाद िा गदयानुिाि कयाल गेल अवि। मैविलीक पािपविक नाटकक्ाि विविध पतक्नक नाटक िचिना।कयलक्न। अतएि आम विश्लेरणक सुविधाक दक्न एँ पािपविक नाटकके विक्भह्न िगमे विभाक्जत क’ कए विश्लेरण कबि। विषय-िस्तुक आधािपि पािपविक नाटक तीन पकाि भ’ सकैि- पौिाणिक, ऐक्तहाक्सक एिं सामाक्जक। सामाक्जक नाटकके हम पुनप दुइ खण्डमे विभाक्जत

कौित ि- पतीक नाटक एिं समस्या नाटक। उपयुर्क्त पिरपेक्ष्यमे मैिथलीक पारिंपिरक नाटकपर िवचार कयल जा रहल अिछ।

परिंपरागत पौरािणक नाटक प

मैिथलीक पारिंपिरक पौरािणक नाटक क्षेत्रमे हिषर्नाथ झा क' *उरहािण*[5] (1962) *माधािनल*[6] (1962) *िधाकष्ण केिलना लीला* (1962) जीविनाथ झा क सािमती पुनजर्न्म (1908), तेजनाथ झा *सुिििज िवजय नाटक* (1995), लालदास *सािवती-सत्यािन*[10] (1909), बालोकनाथ िमश (1889-1960) क *जीमूतािहन चिरत* (1352 साल), आनन्द झा 1913) क *सीता सियंिि* (1995 सिि) ठाकुिपसाद िाक *सीता पिरणय*[13] (1960) दामोदि िाक *गहधािषिििहि*[14] (1210 सिि), जीिनािाि िाक *दुगा िवजय*[15] (2015 साल), शंभुनाथ िाक पुतदान[16] (1982) एिं कािशकान्त ठाकुिक *कष्ण िनुि िधि*[17](1984) आिदक गणना कयल जाइिछ। उपयुर्क्त नाटकािदक किानक पुिाणाशत एिं महाभािताशत अिछ अतप तदयुगीन िितािणि, आकवस्मकता आिदक पूणष समािेश अिछ एिह नाटक पात सभ अलौिकक गुणसँ युतत िथि। उपयुर्क्त नाटक पौरािणक पिरिेशमे संस्कृत नाटतक गणसँ अलंकत अिछ ते ई सभ मैिथलीक पारिंपिरक नाटक िथक।

मध्यकालीन पारिंपिरक नाटक क अन्तिम नक्त िथि महामहोपाध्याय हरषनाथ झा िहनक नाटकािदमे किोपकनक अपेक्षा गीतक पधानता अिछ। गीतिहक माध्यमे किा-िवकास होइिछ। संिािदमे संस्कृत एिं पाकत तिा गीतमे मैिथलीक पयोग भेटैिछ। उरा हिणि नाटयशास्तीय लक्षणसँ युतत अिछ। एिहमे पख्यात पौरािणक किा-िस्तु, धीिोदात्त अक्षर द नायक अंगीिस शंगाि, अन्य िस अंग,

पाँचो संधि ओ पाँच अंक अछि। एकर कथानक हरिवंश पुराणसँ लेल गेल अछि। एहिमे प्रयुक्त गीत संस्कृतनिष्ठ मैथिली आ संस्कृत एवं विद्यापतिक शैलीपर उपमा तथा उत्प्रेक्षा अलंकारसँ सरस एवं कौशलपूर्ण रचनाक अभिव्यक्ति एहिमे नाटकीय विशेषताक अभाव अछि। ई नाटक नाटकीयतासँ पूर्ण अछि। एहिमे नाट्यकारक कवित्वपूर्ण अभिव्यक्ति भेल अछि। एकर कला पक्ष अत्यन्त सबल अछि जे नाट्यकारक कलात्मक दृष्टिकोणक परिचायक थिक। ई संस्कृतनिष्ठ सुललित शब्दक प्रयोगक कए नाटकके अत्यधिक बनओलक।[18]

माधवानन्द नाटक (62) मे नान्दीक पश्चात् सूत्रधार रंगमंचपर उपस्थित भ' कए नाटयक अभिनयक प्रस्ताव प्रस्तावनामे करैत छथि। संपूर्ण नाटक पाच अंकमे विभाजित अछि। एकर कथा अत्यल्प एवं गीतक बाहुल्य अछि। एकहि भावके व्यक्त करबाक हेतु अनेक गीतक प्रयोग भेल अछि। एहिमे संवाद नगण्य अछि। एहि नाटकमे प्रयुक्त गीत परम्परागत कीर्तनिया नाटक अनुकूल थिक। एकर कथोपकथन संस्कृत एवं प्राकृतमे तथा गीत मैथिलीमे अछि। गीतक भाषा संस्कृतनिष्ठ अछि। हुनक वैशिष्ट्य अछि जे जाहि रसक गीत ई लिखलन्हि ओकर व्यंजक वर्णक प्रयोग कयलन्हि। कलापक्ष एवं भावपक्षक सुन्दर समन्वय एहिमे भेल अछि। पात्रक मनोवैज्ञानिक विश्लेषण करबामे ई असफल भेलाह अछि। गीतक आवश्यकता कारणे हुनक कवित्व शक्ति प्रकाशित भेल अछि। प्राञ्जल भाषा, वर्णक सौष्ठव, विभिन्न अलंकारक प्रयोग अति कुशलताक संग भेल अछि।"[19]

राधा कृष्ण मिलना लीला (1962) मे मात्र गीत तत्वक प्रधानता

अवि। एहि नाटकमे कथोपकथन एवं दृश्य-विधानक सर्वथा अभाव अछि। पात्रक प्रवेश एवं निष्क्रमण तथा ग्रह-निर्देश आवश्यक सूचना संस्कृत श्लोक माध्यमे देल गेल अछि। एहि नाटक प्रसंगमे डॉ. जयकान्त मिश्रक कथन छन्हि जे ओहि समयक दर्शकक सुविधाक हेतु कालान्तरमे एहिमे तजभाराक समावेश कयल गेल।[20] उपर्युक्त तीनू नाटकमे नाटककार मध्यकालीन परम्परागत नाटकपद्धतिक यथावत अनुकरण कयलन्हि। जे एहि सभ नाटकक रचना आधुनिक कालमे भेल अछि ते एकर चर्चा एतय अपेक्षित अछि।

विशुद्ध मैथिलीमे पौराणिक नाटक रचनाक श्रीगणेश कयलन्हि जीवन झा सामवती पुनर्जन्म (1908) क रचना क' कए। पद्यपादय नाटकमे शास्त्रीय परम्परा समीपता युगसँ प्रचलित विभिन्न नाटय रूपक समन्वय देखा गत होइत अछि। तथा-परिह दुतगत्याएँ अगसर होइत; किन्तु नाटककारक कुशलताक फलस्वरूप तारतम्य एवं रोचकता कतहु बाधित नहि भेल अछि। कथोपकथन गतिवत तथा प्रसंगनुकूल अछि। नाटक संवादक प्रत्येक स्थितिमे नाटकीय गत्यशीलता अछि आ एको अंश एहन नहि अछि जे अनावश्यक एवं शिथिल हो। बीच-बीचमे संगीत भारणक आयोजन अछि, जनाक्तकक आवश्यकतानुसार प्रयोग भेल अछि। एकर आरम्भमे नान्दी पाठमे मैथिलीक आशयण अछि ओहि प्रकारे भति स्थितिमे नहि कयल गेल अछि। एहि प्रसंगमे नाटयालोचक डॉ. प्रेमशंकर सिंहक कथन छन्हि एकर कथानक पौराणिक पृष्ठभूमिमे अछि; किन्तु ई अस्वाभाविक प्रतीत होइत। एक कथामे सिक आभास मात्र होइत जे नाटकीय समीक्षक देखा सं दोरपूर्ण अछि। रचनाक प्रसंगमे अनेक स्थलपर असंगत्यपूर्ण विषयक उल्लेख भेल अछि। नाटयकार

पक्तभाक बलपि असिभाकक्क कनिकके बनयबाक पयास कयलक्त अवि। मंगलाचणि, पस्तानिा, भति तिय, चामत्काकिक कनि, शंगाविक कनि, शंगविक गीत, गजल, ठुमिी, पौिवाक कनिकमे सामावजकताक समािशि कि- पहिके दुत गक्तसं आगा बढबैि। एकि कनिक संस्कत नाटय पम्मितक समान पपिगित अवि जे इक्तहास एिं अनुरप अवि।[21]

मैविलीक पािपविक नाटय साक्तत्यक अक्ततगत एक नि आयामक शीगणेश कििि तेजनाि िि क सदय- पकाक्शत सुििजि विजय नाटक। एक्ह नाटक चिना काल विक 1919; कक्तु एकि पकाशन भेल अवि 1995 मे । एक्ह नाटक मंचन महािजिावधिाजि मिेशिि क्तसंहक समक इह्द पूजाक असिपि भेल िलि। नाटक मुख्तप इह्द एिं तिासुकि घटनापि आधत अवि जाक्हमे शचीक संयोग एिं वियोग तिि पपिगित नाटक विदूरकक हास-पविहासक िचिक णिष्क कयल गेल अवि। एक्ह नाटक विक्शष्टता अवि जे एक्हमे लीला िि कीतक्तया एिं पाससी वियेटकि शैलीक क्तक्शत सरिपक पविचिय भेटैत अवि। नाटक पपिगित नाटक सदश पाँच अंकमे विभावजत अवि। नाटकाक्तमे भति-ितियक पम्मिािि पि *आशीिदी* गीतक नि पयोग कयलक्त जे नाटककाकि मौक्तलतता िक्त।

नाटकक भारा अत्यक्त सिभाविक, जीिनिपूणष पिहमयी एिं पभाििक्तपादक अवि। भारा-शैजीमे भािक्तवत शब्द-क्तमाण एिं शब्द चयनमे नाटककिके अत्यक्धक सफलता भेटलक्त अवि। क्हनक नाटकमे भारा-पयोग पायप पातक पकक्त एिं योग्यतानुरप एिं विरयानुरप आ पविक्सक्तक अनुकूल भेल अवि। क्हनक नाटक

भारा वरियानुरप सेहो पर्वक्तित होइत अवि। भाविभव्यक्ततक अनुरप कोमल पुरर भाराक पयोग व्हनक नाटक विशिष्टय विक। पेमक पसंगमे भारा मधुि आि सिपूणष दशकक हदयके स्पशष कबािमे समि अवि। व्हनक नाटय-चिनामे वरियानुसाि भाराक विविहन्न शैली भािमम, व्यंग्याक एिं विश्लेरणात्मक रपक दशष होइत अवि। नाटककाि व्यंग्यात्मक खिावित अपन नाटकमे विदूरकक माध्यमे उतालिक्त अवि। एहन सिलपि व्यंग्यक गविमा तिि लकण-व्यंजना आवद शब्द-शक्तितक पयोग स्पष्ट धक्ति होइत अवि। व्हनक गद ओ पदय दुनू समान रपे उच्चकोवटक वधक। पािपविक मैविली नाटक मजतपूणष कक्त वधक लालदास क *सावती-सत्याविन* (1979) एकि चिना ओ कव्हया तयलक्त तकि कवशात समय अढयावधि अनुसंधेय अवि; कव्हतु किि अंश *मविला मव्हि* 1909 क अंकमे पकावशत भेल िलि जकि सूचना विविधि साव्हत्येक्तहासक गंिमे उपलब्ध होइि। संस्कत लकण गहिानुरप पवतपाद नाटक पािपविक शैलीक अनुकिणपि वलखल गेल अवि। एकि मंगल श्लोक संस्कतमे अवि। नाव्हदीमे मंगल गीत, महािजावधिज मिशि वसहंक विरदािली गीत गाओल जाइि ततपश्चात पस्ताविनाहतगष िीि, शंगाि, अदभुत, करण सि सवमवलत संयुतत शास्त्रोतत नाटकमे सावती सत्याविन नाटकके अवमनीत कबिाक उद्देश्यपि पकाश देल गेल अवि। नाटक सम्पूणष किािस्तु एक अंकसँ दस अंक धवि चलैत अवि। पिम अंकसँ पंचम अंक धवि नाटक पूिादिष वधक तिि रष्ठसँ दशम अंक धवि उतिादिष नाटक किािनक पौििणक अवि तिि एव्हमे नाटकाकि अदभुत कविि शक्तितक संगव्ह-संग मैविलीक विलकण पौढ गढयक

पारप उपलब्ध होइि। मंचनक दक्ष संई नाटक अवभनयोपयोगी नवह अवि; काणि संिदि एतेक पैघ-पैघ एिं पाताक बाहुल्य अवि जे मंचोपयोवाताक हनन करैि।[23] अहूतमे भति िितय अवि जावहमे *सिभिह्तु सुवखनप सिसिह्तु वनिमिया* क पानि उपेश देल अवि।

भाराक सौटकी पि जखन पवत्तपादय नाटक विश्लेरण करैत िी तखन एवहमे दुइ संस्कतक श्लोक पयोग भेल अवि पिम नाटक आवदमे आ दोसि क नाटकक अहूतमे। मैविली गीतक पचुि पयोग एवहमे भेल अवि जे स्पष्ट करैि जे वहनका संगीतमे विशर अवभरवच िलीवन। िगि-ििवाणीक नीक जान ति िह्वदपि अदभुत अवधकाि िलवन। इऐह काणि अवि जे अवधकाश गीतक संग ओकि िगिक वनदेश कयलवन ति ओकि सिकि आिह-अििहक विवधक सेहा उल्लेख कयलवन। एवह नाटकमे भारागत दोर, शब्दक अवधकता, िितयविन्यासमे वशविलता, व्याकणि सम्बहूधी कीवतपय दोर दवष्ट गत होइि जे मैविलीक पािविमक पिमािगित नाटक हेबाक काणिे महति नवह िखैि।

जीमूतििहन चविति (1952) पोििवाक पविििशिमे विवित नाटक विक। इहो नाटक पािपिविकि पष्ठभूवममे वलखल गेल अवि संगवह नाटकीयताक दवष्ट सँ उपयुतत पायप सभ ततकि समाििशि अवि। एवह नाटक विचािि- विह्दुमे सुिह्वदि ि ''सुमन'' क शब्दे स्पष्ट अवि ''पुिनि पवसद धीिीिदात चाविति जीमूतििहन नायक विि। कििस्तु गनधषि विढयाधिि युगक आख्यान वहितहुँ आधुवनक िीवत नीवतसँ अनुियूत हिने िवचषणु अवद। कवि अपन समयक संस्काि दािि पुििणि युगहुके अदयतन ओ सजीिि बनौने िवि। भारामे यििियोग्य पातामुखे मैविलीक केह्वदीय ओ पाह्तीयँ पयोग पचुि अवि जे रपक

िचनाक स्भािवक सोत अिछ।[24] कतहु कखनहु अन्त भ' जयबासँ अस्भािवक भ' गेल अिछ। जीमूतािहनक सासुिक लोक सुनहदं दािा 'ओिा जीमूतािहन कहा क' लेखक अन्त उत्साहमे आवकक जेना पोिाणकताके खंिडत क' देने िछ।

संस्कृत लकण गंिक पणालीपि नाटक कलखलक आनहदं िा सीता स्यंिा (1995 सं.) क अहतगत जाहमे नाहदी, पस्तािना नाहदी एिं सूतधाि पाचँ अंकमे -िमिक िािहक पसंगक कािनकके ििाित्तएँ अनुस्यूत कयलक अिछ। नाटकि कािनक पौिाणकतासँ ओतपोत संगिह ििििध भाषाक पयोग नाटकक़ाि पाताक योग्यतानुरूप क' कए एहमे ििशेर िचिकता अनबाक उपकम कयलक अिछ। खासक पिशुिाम एिं लकमणक िततालाप अत्यहत िचिक अिछ। भाित ितयक रूपमे समदाउन गाओल गेल अिछ। नाटकक़ाि युगक बुिद्धिादिसँ पभािित िछ ते तािपकिन चमत्कािक नि भेल अिछ। एहमे पातोिचत भाषाक पयोग स्भाििकताक उदघाटनमे सहायक नि होइि, पत्युत मैििलीक कितपय उपभाषाक पिचिय दैि। नाटक पािपििक शैलीक अनुरूप िहतहुँ सिल-सिल पि आधुिनकताक िाप नने अिछ। एिह नाटकमे पािपििक नाटक सदश संस्कृत श्लोकक पयोग नि भेल अिछ। "जनकक शासन व्यिस्िा, आचाि-ििचाि, िहन-सहन एिं िीित-नीितक िणषन मििलाक अनुरूप भेल अिछ जे सीता स्यंिािक पृष्ठभूिममे उिचत पतीत होइि।"[25]

ठाकुि पसाद िाक सीता पििणय (1950) पाच अंकमे ििभत्त अिछ। एहमे नाटकीय लकणक यिासाध्य िािश भेल अिछ। नाहदी, पस्तािना एिं अंक-ििभाजन एकि उपयुक्त अिछ। एिह

संबंधमे नाटकाकि कनि कि-'' एहमे पाचीन नाटकक ियासँ सूतधाि, नटी कंचुकी आदक पातक पिश कयल गेल अि ति कवलाक भापूिणष िक्त, क्यहाि, सभ्यता ति शक्तक पधानता देखाओल गेल अि।''[26] एह नाटकमे डेग-डेगपि गीतक पयोग भेल अि। एकि पात कपाल-कल्पत अि। सीता सियिि एिं सीता पिणय क कािनकमे समानता अि।

दामोदि िाक गाह्धषिविीिह (2010 संित्) क कािनक यदयवा महाभाित क्शात कअि तावा एहमे सबसँ पैघ बात जे ध्यानके आकरष्त कित अि ओ िक आधुकिक मैिवल समाजक आचाि-क्यहािकि कादशष। यदयवा पचक पिमािकि पिपेक्यमे ई नाटक कलखल गेल अि तािवत निीनताक कादशष अनके सिलपि भेटैि। विाहोपिहत्त चतुिीक भोज, दुिकत ति एतेक दूि धवि जे सबोधन पयक्तमे िटकी भौजी, किया भाई, िटकी दाइ आदक पयोगक पूणषाया मैिवल िताििण उपकस्ित कयल गेल अि। पत्तपादय नाटक नाटयशास्तानुकूल अि जाहमे नाटककाकि कौशलक पिचिय भेटैि। एह पसंगमे कालोकनाि कशक कनि कि ''िदान युकि किक लेखनक कक्त सिि प ई नाटक निीन िहतहुँ पाचीनताक ताह र पे अकुण्ण कि कएने वि जाहसँ तििषान युगक कतोक सचिहत मैिवली किकि कंकुिश काव्यक हेतु एकि तीक्ण अंकुश कह सकैत िी।''[27]

एकि नाटय-शैली पािपिकि अि; कल्पनामे निीनतामे नाटककाकि पक्तभाक कादशष होइत अि। नाटकमे ऐकहाकसक एिं देशकालक तथ्यक अभाि,पातक आवक्तय, कशविल, गक्तहीन एिं नाटककाकि पक्तभक कादशष होइत अि। नाटकमे ऐकहाकसक एिं

देशकालक तथ्यक अभावि, पातक आवश्यतय, क्षर्वेल, गतिहीन एवि नाटकीयतासँ विहित कविपतधन, पारिपविक नाटय-सदश गीतक बाहुल्य, पातोचित भाराक अभावि हिलाक कारिणे एकवि नाटकीयता समाप्त भ' जाइत अवि। एहि नाटकमे गदयक संगहि-संग पयक पचुवि पयोग भेल अवि। एहि संदभष विष्णुलाल शास्त्रीक कवि नि कि। एहिमे पाचीन नाटय शास्त्रक नियमक पविपालन कवि ति नबीनताक समाविश नीनताक समाविश ताहि तहि कएल गेल अवि जे ओहिसँ दुनू दवाक पाठकक रुचिक पूवतष होएत तवि एहिसँ मैविलीक नाटक विरियक अभाकि पूविषक संग कवदषट मनोविजिन होएत।"[28] एहि पसंगमे डॉ. पेमशंकवि सिंहक कवि नि कि "यदयवि पाचीन पविपाकि पविपेक्षमे ई नाटक वलखल गेल अवि तवावि नविनिता अनेक सविलपवि भेटैवि। ई नाटक अवभनयोपयोगी नहि अवि। नाटकमे देशकालक तथ्यक अभावि, पातक आवश्यतय, क्षर्वेल, गतिहीन एवि नाटकीयतासँ विहित कविपकवि नि, गीतक बहुलता, पातानुकूल भाराक सविवि कावि हि नहि इत्यावि विभिन्न तथ्यक पयालोचसँ सपषट भ' जाइवि जे नाटयनावि असफल विव[29] जीविनावि वि दुगा विजय (2015 सं.) मे सेहो पारिपविक नाटय-शैलीक अनुकविणि क' कए पौविविकताक पविविशिमे एकवि विचिना कयलवि। यदयवि एहि नाटके पारिपविक नाटक केतमे विखिल जाइत अवि, किन्तु एहिमे ने तँ पसताविना अवि आवि ने विरिकंभके। एकवि मुख्य सिवि विवि, अंगसि हास्य, करुण, भयानक एवि शंगावि अवि। नाटक अवतशय सविलि एवि विचिक अवि। अनुपासयुतत विवट-विवट कविपकवि नि नाटक वैशिष्टय कहल जा सकैवि। आधुवनक मंच विधिक अनुकविणि क' कए नाटयकावि एकवि विविमंचोपयुतत बनयबाक

पयास कयलक्त अर्वि। पुतदान (1992) मे शंभुनाि ि अजुषा- क्यतागदक पौ िक्वाक आख्यात्तके आधाि बनौलक्त जाक्हमे क्हनक कर्वि ति कि संगक्ह भर्वि ष्णु नाटकीय पक्तभाक पर्वि चय भेटैि। एक्हमे जनर क्यक िक्त कयल गेल अर्वि। नाटकीय िचिकता एंिि मंचोपयोवाता एकि िक्शिष्टय अर्वि।

डॉ. क्शाि िकाह्त ठाकुि पिम्पिगित संस्कत नाटय-शैलीक अनुकिणि क' कए कष्ण र्वि नु िधिा (1984) नाटक िचिना कयलक्त जाक्हमे िधिाक र्वि हि िक्शिष्टयके नाटय र प पदान कयल गेल अर्वि। यदयक्प एकि किानिकमे कोनो नर्िनिता नक्ह; पत्युत पर्विपाटी पि आधत अर्वि ताि क्प एक्हमे नाटयकाि कि मौक्लिकताक आभास सि ल- सि लपि भैटि।

उपयुक्त नाटकाक्द पौ िक्वाक पर्वि शिमे संस्कत नाटक अनुर प अर्वि। एक्ह नाटकाक्दमे कोनो पकाि कि नर्िनिता नक्ह भेटैि। जॅ नर्िनिता भेक्टतो अर्वि तँ दुइ बातपि- पौ िक्वाक किानिकक भंडािसँ िगृ्य किानिकक चयन एर्वि ओकिि र पायतनमे यिािसंभि मैर्विलर्ति क्द्स िुकाब। अतप नाटक सक्हत्यमे पक्हल बेि अंगद, जीमूतािहन आक्द नायकक र पमे अतिर्विति कयल गेल िक्थ। जतय नाटककाि एहन प सि लक सजषा हेतु साकाक हिलाह अर्वि ततय ओ क्सर्वि लाचामक िक्त-नीक्तक क्यतण कयलक्त अर्वि।

पिपिगित सामक्जक नाटक प

पािपािकि नाटय-शैलीक अनुकिणि क' कए सामाक्जक नाटकक िचिना मैर्विलीमे सेहो भेल अर्वि। मैर्विलीक सामाक्जक पिपिगित नाटय-शैलीक पुिधिा युग-पुर र जीनिाि िक्थ जक्तक *सुह्र्दा-संयोग* [30] (1904), ईशनािि ि (1907-1965) क *चीनीक लड्डू* [31]

(1989) उल्लेखनय पमिमागित मैवि‍ली नाटक वि‍क जकि विश्लेरणषकयल जा हिल अवि।
सामाव्जक वि‍रिय-स्तिुक पर्विपेक्ष्यमे पािपवि‍कि नाटक क्लखक्हामि जीनि िा सषिमि वि‍ जे शास्त्रीय पमिमाकि संगक्ह संग आधुक्ककताक समहिये क्तयक्तान अवि *सुह्दि संयोग* मे। एक्हमे नाटकीय कौतुहलताके एक्ह पकाि समाविष्ट कयल गेल अवि जे पाठकक व्जजासाक तुका आदयापाहत्त पढने क्ानु नक्ह होइत अवि।[33] सुह्दि सबके क्यहह्र जाइत िवि आि हुनक हाकि क्लखल पत पक्ढ क' सलिाक मामा सेहो क्यहह्र जाइत िक्य; पहितु नाटककाि एहन दुनू पातक संभारण पस्तुत कि‍ति िवि जे ककिा पर्विचय कबिाक असिि नक्ह भेटैत िक्त। यदयक्प कादम्बाििि मस्तकपि लागल क्तलक क्यहह्रके देक्ख संदेह कि‍ि, क्कहतु क्तथ्यािदि एिि ससिितीक मा क भये ओ पत्यक र पसँ एकिा पकट नक्ह क' पबैि। ािस्तवकिताक हिस्योददाटन गाम पहुँचलापि होइि तखन विस्मय क्तक्शात आनंदक अनुभूक्त होइि। पाठकके पक्ढनेसँ जागत व्जजासाक तुका एक्ह पसंगपि अनायासे भ' जाइि। एक्ह पकाि नाटकीय कोतुहलक क्तािह नाटककाकि कुशलता एिि क्सदहस्तताक पर्विचायक अवि।[34]
यक्दप एकि कािश अत्यर प अवि। क्कहतु पस्तुतीकणि एिि िणिषा सौष्ठमिे नाटककाकि पक्तभा एिि क्पुणता पदिक्शाता होइत अवि।[35] किानकक विकास एहन मोड उपक्सति कि‍ि ओक्हमे अनायासे नाटकीय क्यंग्य एिि डासुकताक तवि अवि। कािपकनि ािट, चुस्त ससि, हदयर पशी एिि नाटकीस्यतासँ पर्विपूणष अवि। भारा संस्कक्षठ, पाजल एिि माधुय्यष गुणसँ संयुतत अवि। एकक्ह

सामाव्जक स्तकि पातक सक्मशिक काणिो भाराक एकरपता दक्म गत होइत अवि। भाशिशिक सलिपि अशिये ओव्हमे भाि-भाशिहनक अदभुत शाक्तत देखबामे अबैि।

चावति-क्यतणक दक्मएँ नाटकक़ाि असफल विि। एव्हि िाट नाटकमे पातक बाहुल्य अवि जाव्हसँ पातक ैविशष्टय नव्हि पकाशात भ' पबैि। कक्हतु नाटकक़ाकि ैविशष्टय अवि जे एहन संिदि योजना कयलक्म अवि जे पत्येक पातक मनोिक्मक संकेत अेव्ट जाइत अवि।[36] तीिषिनिमे अनाशियक लज्जा एिि औपचाविकताक काणिे ओ अपन पविचय नव्हि दैत विि। ई हुनक शालीनता एिि धीिपशाह्तक ढयोतक विक। सिलाक हृदयमे पेम वियोगक जिला पज्जविलत अवि पमाणमह्तप काणि पततयप ''क आधाि पि ओ आपन पेमी क्सस आकवस्मा होइत भाि पगट नव्हि कैति विय; कक्हतु िहाशि नव्हि कव्हि पबैत विि। अपन अह्तदस्द्वके ओ अपन सखी पयस्तके नव्हि कहैत विय। सािजक किनसँ स्पष्ट अवि जे ओ सहृदया, चचंल एिि पौढ विय। मनोिवाक्मकताक अभाविमे नाटकक़ाि चविति-क्यतणमे क्पुणता नव्हि पाप्त क' सकलाह।[37]

एव्हमे पचीस मैविली त एिि गावि संस्कृतक गीत पयुतत भेल अवि जाव्हते पह्दह मात चतुिषअंतमे अवि। एव्हि गीतक भाविक्द स्पष्ट कैिि जै नाटकक़ाकिे साव्हक्यक एिि लोकजीिनक पिपिकि अनुभविलक्म ते दूनूक समह्यात्मक सिरिप पविचय देलक्म। गीतक बाहुल्यक काणिे कि-पिहिमे गक्तिध आक्म गेल अवि। एव्हमे पयुतत गीतसँ हमिि पतीत होइि जे क्हनकापि क्मविलाक कीतिनया िि लीला एिि पािसी वियेव्टकल कम्पनीक शैलीक पभाि अवि।[38]

मैविली नाढय-साव्हत्यक इक्तहासमे असंक्दग्ध रपे ईशनि िि क

''चीनीक लडडू (1937-39) सर्वश्रेष्ठ पारिवारिक सामाजिक नाटक थिक। एहिमे पारिवारिक वातावरणक जीवन्त चित्र उपस्थित कयल गेल संगहि दुष्ट एवं धूर्तसँ सावधान रहबाक संकेत भेटैत अछि। एक सुखी-सम्पन्न परिवार कुचक्र एवं कलहक कारणे कोना मरुभूमि बनि जाइछ तकर हृदयस्पर्शी चित्र नाटककार प्रस्तुत कयलनि अछि। परिवारिक रिवाजपरतके नाटककार अत्यन्त सतर्कताक संगहि पारिवारिक वैरम्य वैमनस्य, कलह एवं ओकर दुष्परिणाम दुष्टक सलिता तथा भिनस्यसँ अनुकूल लाभ उठौनिहार आर अन्तमे कुकृत्यक फलभाग आदि तथ्यसँ समाजके सावधान रहबाक संकेत देलनि अछि।[39]

एहिमे नाटककारक प्रतिभा सजीव भ' गेल अछि जे ओ पारिवारिक भारतीय एवं पाश्चात्य नाटयकलाके सहज समन्वित रूपमे प्रस्तुत करबामे हिनक वैशिष्टय थिक। नाटककार शेक्सपियरक ''ऑथेलो'' सँ खलनायक, संरक्षक आदिसँ प्रेरणा ग्रहण क' कए आदि वस्तु-स्थिति पर भारतीय नाटय-कलाक अवतारणा कयलनि।'' ऑथेलो क खलनायक इयागो सँ प्रेरणा ग्रहण क' नाटक कखलनायक बटुआ, दास प्रेमकान्त एवं हुनक पत्नी सलिताक अनुचित लाभ उठबैछ।

एहिमे पाश्चात्य शैलीक अनुकरणपर भारतीय शैलीक आवरणक कारणे ई नाटक सहज रूपमे आकर्षक एवं गतिशील भ' गेल अछि। एहिमे कथा एवं चरित्र चित्रणक पूर्णसविधान अछि। कथा पहि सहज गतिसँ अग्रसर होइत अकस्मात् अपन धारामे एहि रगसँ एक आवर्त उत्पन्न करैछ जे लि, परिचना विशिसघाता आर तज्जन्य कालिमा- अंधकारक संघर्षक कारणे सुधाकान्त ओहिसँ ग्रस्त भ' कए अकालहि आलक ग्रास बनि जाइत छथि। एकर संघर्ष

काणि कनिकक धाि कखनो िगिती भ' जाइि तँ कणिजो सप गक्तािली घटना। कम मे कतहू कामक्षधाि, सिभा विकि पेम, औदायष् माह्ह ित्तसलता, शाक्त ताि संतोर अिव तँ कतहु ईष्या, देर, हत्या संकीणषा आि लोभ। एक्ह पकाि नाटक पाश्चात्य शैलीक अनुसाि विििधक मिसीमा आि कायक्ताक आधापिि कनिकक सक्ष कयल गेल अिव।[39]

भाितीय पदक्ताक अनुसाि गभषसंधक आधाि एकि नामकणि चीनीक लडडू कयल गेल अिव। एक्ह लक्ष्यक पाक्तक हेतु नायक एिं अह्य पात सतत उदोगशील हिि। जँ सुधाकाह्तक मत्यूपिह्त नाटक समाप्त भ' जाइत तँ भाितीय िि पाश्चात्य पािपिविक शैलीक अनुसाि कोनो सफल पयोग नक्ह होइत। काणि भाितीय पदक्ताक अनुसाि ने तँ नायकके फल पाक्त, आ ने पाशचात्य पदक्ताक अनुसाि खलनायकके समुक्त ह्याये भेक्ट सकैत। अतएि नायकक मीत्यु भ' जाइि ताि भाितीय माह्यताक अनुरप *आत्मा िै जायते पुत्* आत्माक पतीक ओकि आत्मजके पाप्त होइत अिव। अतएि नाटक करण सुखाह्त कबि अिव।

नाटकमे कािपकिनक सािपिव सिान अिव जकि कािहमे नाटककािके सफलता भेटलक्त अिव। किा-िस्तुक विकास, कौतूहल, नाटकीय व्यंग्य, चवितक विकास मात संिाद तति पद कािभि कििि। उपयुक्त नाटकमे सब गुण ितिान अिव। एक्ह नाटकमे भाितीय पािपिविक एिं पाश्चात्य उत्कृष्ट समह्वयात्मक रप उपक्सित कििि। एक्ह भाितीय पािपिविक एिं पाशचात्य शैलीक उत्कृष्ट समहिात्मक रप उपक्सित कििि। एक्ह नाटक फलागम दुष्ट व्याक्ततके समुक्त ह्यायक आदशषक उदबोधन कयल गेल

अवि।[40]

एहि पारिवकि नाटकमे गीत आि संगीतक पाचूयष अवि संगहि-संग कििपकिनिमे मैविलीक सुहदि गदयक सिरप भेटैि। एहिमे जे पयोग भेल अवि ओ नीसिताक पविहाि क' सिोतपादन कििा, ििताििणक सिकि कििाक तिि पातक मनोभाि आि चवितिगत विशेरताके पगट कििामे सहायक भेल अवि। कििपकिनिक भारा विरयानुकूल एिि पातक वसिकि, योगयता एिि पकिताक पयुतत भेल अवि।

पििमागित पतीक नाटक प

पािवािकि नाटय-शैलीक अनुकिणि पि एक मात पतीक नाटक उपलबि होइि ओ विक आधुिनक मैविलीक विशालाहयासकता साहितयितािकि मुंशी िघुनहदन दासक िमविला नाटक (1923)। एहि नाटक पषठभूिम पारिवकि नाटक पूषठभूिम विक। यदिि ई नाटक संसकत लकिणगंिानुसािि नहि ििखल गेल अवि तिािि एकिा हम पारिवकि नाटक शेणीमे ििखल, अवि. कािणि जािहि पषठभूिममे ई नाटक ििखल गेल िि ओहि नाटकमे नाहदी, पिशिक, विरँभक गभषसंिि एिि भित-िितयक पयोग भेल अवि तिािि एकिा पारिवकिे नाटक कहब उिचत हैत। नाटककािि एहिमे अपन विविधि भाराक जानक पिचिय देलिि अवि। एहिमे संसकतमे शलोक, मैविलीमे गदय-पदय, बंगला, िहहदी आिद विविधि भाराक नुमाइश कयलिि अवि। िहनक भाराक विमि विधािियनी शिकत अपाि अवि। िििता बोधिय आि शोताक अनुकूल हुनक भारा बदलैत अवि। संसकत नाटक समान भेदके अपनौलिि अवि। िशिकत एिि अिशिकत पातक भारामे विविधिता ई पारिवकि नाटकक अनुरप अपनौलिि अवि।

एक्हमे पातक एतेक बहुलता अवि जे मंचोपयोवाताक दक्षा एँ उपयुकत नक्ह कहल जा सकैि तापिक्त एकि अीवनयक पसंगमे सूचना भेटैि काणि ओक्ह समयमे अवभनयोपयोगी नाटतक मैविलीमे सविाा अभाि िल।[45]

पिपिगित ऐवतहावसक नाटक प

वदियापवतक जीिन िके आधाि बनाि क' मैविलीमे अतयवधक नाटकक िचना भेल; वकनतु पिपिगित शैलीक अनुकिण कयवनहाििमे उलखेखनीय िवि ईशनाि क *उगना*[46] (1956), डॉ. िशवकशोि िमा *मवणपदम* (1918-1986) क *कंठहाि*[47] (2021) वकिम सं जीिनाि िाक '' िीि नॉवहद''[48] (1956), िधाकषण चौधिाि) (1924-1985) ''िजयावभरक''[49](1962)।[9]

वदियापवतक भवतत-भािनासँ पसन्न भ' कए महादेि हुनक सेिमिे िलवन; वकनतु िहसयोदघटनक पशचात् ओ अनतधयान भ' जाइत वथि। एक्ह पसंगमे िचकता एिं नाटकीयता अनबाक हेतु अनेक कालपवनक पातक नाटककाि सवष्ट कयलवन अवि। एक्ह नाटय-शैलीक अनायासवक्ह वनिाह म भ' गेल अवि। नाटककाि एक्हमे वदियापवत कालीन समाजक समसामवयक वसवितक आंवशक जान देलवन अवि। नाटकमे सफल रपसँ ऐवतहावसकता, सामावजकता एिं रपकतिक वनिाह नाटयकाििक कौशल एिं ठोस मौवलक वचनतन-पवतभाके पदवशषत कििैत अवि। नाटकीय कौतूहलक पावपत होइि[50] चावरति-वचतणकक दवष्ट एँ नाटक पूणषतया सफल अवि। एक्ह नाटककक आकरषणक केनद्र-वबनदु वथिक । वदियापवत अपन दाशषवनक, भाििक भवतत आि सासकवतक चवितक काििे पाठक एिं दशषकपि अवमट िाप िाडैत िवि। अतएि हुनक चवित सििलता

एवं सादगीक प्रतीक थिक । कथोपकथनमे नाटकीय लाघवपर ध्यान राखल गेल अछि। प्रत्येक विषय मे गत्यात्मकता अछि। कतहु अनावश्यक विस्तार नहि कयल गेल अछि।कथा संवाद शैली, नाटकीय आरोह-अवरोह व्यंजक अछि। कथोपकथन चारित्रिक वैशिष्ट्यके स्पष्ट करैत अछि। ई नाटक मंचोपयोगी अछि। इएह कारण अछि जे एकर अभिनय शहरी एवं ग्रामीण परिवेशमे अनेक बेर भेल अछि।[51]

बीरि नरिहिंद नाटक (1956) एक ऐतिहासिक, मौलिक विषयवस्तु आधारित नाटक थिक जाहिमे वीर नरसिंह देवक चरित्र प्रतिपादित अछि जकर रचना नाटककार ऐतिहासिक परिवेशमे कयलनि अछि। एहि प्रसंगमे सुरेन्द्र झा सुमनक कहब छनि लेखक, बड कुशलतासँ नाटकीय कथा-वस्तुक विन्यास कयने छथि। रंगमंचक अनुकूल दृश्यक विभाग करैत, सूच्य अंशके लक्षणानुकूल विष्कम्भक-प्रवेशकादि द्वारा देखाय कथानकक जटिलताके लेखक सोझरौने छथि। कथोपकथन जे नाटकक प्राण थिक, पात्रक प्रकृतिक अनुरूप प्रभावोत्पादक भाषामे अछि। [50] प्राचीन परिपाटीक अनुरूप आधुनिक रंगमंचक हेतु ई प्रथम मैथिली नाटक थिक।[51]

राधाकृष्ण चौधरी ऐतिहासिक पृष्ठभूमिमे *शिवसिंहक* (1962) क रचना कयलनि जाहिमे वीरतापूर्ण मिथिलाक इतिहास पर्चिह्न पृष्ठके उदघाटित कयलनि अछि। ओइनवार वंश (1353-1526) क प्रसिद्ध राजा महाराज शिवसिंह (1413-1416) मिथिलाके स्वतंत्र घोषित कयने छलाह तकर कारण सतत युद्धरत रहलाह आ अन्ततोगत्वा वीरगतिके प्राप्त कयलनि। यद्यपि शिवसिंहक राज्याभिषेक तँ नहि भेलनि, किन्तु लखिमा हुनक मुकुट ओ शंखचिलाक टुकडीके

विधिति ाजियाकरेक कयलक। नाटकमे क्शाक्संहक ाजियाकरेक ताि स्तिंतता संगामक हेतु विविधि मंतणाक अनुपम कात भेटैि। यदयका नाटतक भारा पातोकत अवि कह्तु सि ल-सि लपि सिभावकिताक हनन भेल अवि। बंगदूत एि इािक्हम साहक दूतक मैविली बाजब अनुपयुतम कहल जा सकैि। नाटक ाि सिाकि त अवि। ई मैविलीक दुखाह्त पाबिविक नाटक विक। पैघ-पैघ किपकिन एि जव्टल दश्य विधानक काणे ई नाटक िगमंचोपयोगी नक्ह अवि। [52]

मैविलीमे विदियापकाक पष्ठभूकामे कक्तपय नाटक िचना भेल, कह्तु ओक्हमे िशकक्शोिमिा मकापद् क *कंठहाि (2021)* विकिम सं. नाटकक एक पिक अकस्ततिि अवि; काणि ऐक्हहाक्सक पष्ठभूकामे ािचत एक्ह नाटकमे नाटककाि काल्पक्कताक कतहु पयोग नक्ह कयलक अवि। विदियापक्त शास्त एि शास्त दुनू विरियक जाता िहिवि। गढ गोव्कयाकि समि केतमे क्हनक शस्त-शास्त विरियक जानक पविचय भेटैि। ई नाटक पािपिविकि शैलीमे लखल गेल अवि जे एकि विशष्टता विक। नाटककाि पाचीनतामे निीनता, निीनतामे आधुकिकता आ आधुकिकातामे सिसिता अनबाक चेष्टा कयलक अवि। नाटक किपकिन यदवा सजीअवि तािका एक्हमे उपह्यासक ािचकता, नाटक अकिनेयता एि संगीतमयता सहेज पस्फुक्टत भेल अवि। घटनाक बाहुल्यक काणे एकि मंचोनयोवाातामे हनन कििि।[53]

मैविलीक पािपिविकि शैलीमे क्लक्खत गोविह्द िि (1923) *रताणी-हिणि (1989)* कषण लीलाक अनेक किमिसँ रक्मणी हिणक इक्तहास पक्सद किाक पष्ठभूकामे युगीन यिािकि पकेपण पक्तपादय

नाटक विशेरता बधक। मैविली नाटकक केतमे ई एक नीन एिं अवमनि पयोग अवि। नाटयकाि अतयहत सजीिताक संग पािपिवकि शैलीमे वकंिगी दािि कयल गेल मजदूिपि अतयाचाि विरिदमे कावहतक सिकि आहान कयलक अवि। नाटयकाि ऐवतहावसक ति आलोकमे रकवमनआक पेम पसंगक कपोक-कलपना एवहमे कयलक अवि। एवह नाटकाहतगत वमविलाक सासकवतक एिं सामावजक पवदिशष दूसति पि चलैत अवि।एक भाग आम जन-जीिन, जमीदािक अययाशी वतलालहा आहेनति। गौिकि आहतक एिं शोरणक विरिद होइत जनताक आकोश िि विदोहक किि ति दोसि भाग वसलि भुकत आएल विविसतक सशतत नाटय-शैली कीतवनया िि लीला नाटतक सवमणि कबैत अवि। [54]

पवतपादय नाटकमे विवमहन सता क केहद मे सता िवषक पासिपवकि दहद अहतविवपोध, अहंकाि आ िैमनसय एिं युदक किि कहैत जावहमे जनसामाहयक भूवमका मूक दशक िहैि आवहमे जनसामाहयक कोनो हसतकेप नवह होइि। समयक कममे वमविलाचलक सामावजक आ िाजिनीवतक पवदिशयमे पविितष होइि। शनै-शनै वयापािि रपमे समसत वमविलाचलमे अंगेज अपन हािि पैि पसावि लेलक। एवहठामक िाजा, जमीदाि आ अमला सभ अगेजक हािक कठपुतिी बवन गेल ति अनायास पापत संविदसँ वकंकुश बवन गेल। एवहठामक विपुल पाकवतक संपदा , मेहनती मजदूि, विशाल भूवम एिं ललनाक आकरक सौहदयषअंगजके उहततक देलक। तानाशाही पिवतक अंगेज एतका लोकक पवत पशुिति वयिहाि कियि लागल। ई आकोशावग वयावततसँ समाजमे पसवि गेलैक। समाजमे अदभुत उततेजना अयलैक ति ओ वयग भ’ कए अंगेजके धिंस कियि

लागल ।[55]

यदयवि मैविली नाटय साव्हत्यक अह्तगत ऐव्तहाविसक नाटकक अभावि नव्ह अवि तावि पत्येक नाटक पावंपविक नाटकक पवविधमे नव्ह अवैि। मैविली पुविधा विदापवत (1350-1938) क जीवि-चवतिके केह्द्र-विह्दु मावि एक दजवि नाटक वलखल अवि, वकह्तु ओ सब पावंपविक नाटक शास्तीय पविपाविसँ अपन पविक अवि ते एतय उल्लेखनीय नव्ह।

कीतवनयाँ वि लीला नाटक शैलीक पविविशमे तिवान शताब्दीक नवि दशाब्दमे गोविह्द वि तदवि पावंपविक नाटकक विचना कयलवि जे तिवान पविपेक्ष्यमे पविपाविगत पविवाक नाटयविचना संभि अवि तकवि जविलह्त पमाण उपयुवत नाटक अनुशीलनसँ भ' जाइत अवि।

पावंपविक विविमह्न भारासँ अनूव्दत मैविली नाटकप

भावितीय अह्याह्य साव्हत्यमे विविधि भाराक नाटक अनुविदक जीवि आयल तकवि फलसविप मैविली साव्हत्याह्तगत पविपाविगत नाटक अनुविदक शीगणेश भेल। मैविलीमे अदयाविध जतेक नाटक अनूव्दत भेल अवि ओकवि हम पविपाविगत नाटकक शंखलाह्तगत विवख सकैत वि कावि अनुविदक लोकवि ओहने नाटकक अनुविद मैविलीमे कयलवि जे अपन साव्हत्यमे पूणषपवतावि त विल। संस्कत, अंगेजी एवि फेचसँ मैविलीमे नाटक अनुविद भेल अवि जे संस्कत नाटकसँ वाशव्यत रपेण शास्तीय पविपाविक अनुशीलन कविवि अवि।

अंगेजी वशाका, संस्कवत एवि साव्हत्यक पचूवि पसाविक फलसरप अंगजी नाटकक मैविलीमे अनुविद भेल जे हमवि पावंपविक नाटय-विचना विधानके अवतशय पभावित कयलक अवि। वशाका-संसविदमे

अंगजी नाटक अभिनयक पद्धति हमरा परिनिष्ठित अभिनय पद्धतिके पर्याप्त प्रभावित क' देलक अछि। परिपाटी एवं विधानसँ ई अभिनयमे एक नव स्पन्दन भरि देलक अछि। चमत्कारपूर्ण कथानक तथा कतहु-कतहु गीत वा संगीत आदि नृत्यक प्रबन्धक नाटककार जनताक युगीन रचनाक प्रवृतिओर कयलन्हि अछि। जनरुचिक परिमाजर्नक रूप मैथिली नाटकक एक ताजी विशिष्ट अछि।

अंगेजीसँ अत्यल्प नाटकक अनुवाद मैथिलीमे भेल अछि। एहि दिशामे जिनेन्द्र वा *सर्वाधिक सुप्रसिद्ध नाटयकार शेक्सपियरक ऑथेलो क अनुवाद देशमना* [56] (1957) एवं *एज यू लाइक इट* क *जिमीण* [57] (1968) तथा इब्सनक *द घोस्ट* क अनुवाद दामोदर वा *भूतक विया* [58] (1965) विशेर उल्लेखनीय अछि। फेंच भारासँ एकमात्र एकाकीक अनुवाद मैथिलीमे प्रकाशित भेल ओ थिक ऑस्कर वाइल्डक *सालोम* क *सलोम* [59] (1965) क अनुवाद कयलन्हि डॉ० इलारानी सिंह (1945-1995)।

संस्कृत नाटय साहित्यक विशाल परिपेक्ष्यमे जतेक नाटक मैथिलीमे अनूदित भेल अछि ओकरा हम पारम्परिक नाटकक श्रेणीमे राखैत छी कारण ओहि सभक रचना संस्कृत लक्षणानुसार भेल अछि। संस्कृतक नाटकते पारम्परिक नाटक अछिए ते ओहिमे पारम्परिक अनुवाद मैथिलीमे भेल अछि यथा महाकवि कालिदासक अभिजानशाकुन्तलमक क अनुवाद कयलन्हि ईशनाथ झा *मैथिली शकुन्तला नाटक*[60] *(1367 साल)* एवं महाकवि शूदकक मृच्छकटकम् *मैथिली मृच्छकटक*[61] (1995)। मैथिली साहित्यहुक क्षेत्रमे प्रगतिशीलता अनबाक दबाव एँ जीवनाथ ठाकुर (संस्कृत नाटक अभ्युदय कालक) महाकवि भास रचित विभिन्न नाटावलीके गद्य-

पदानुदि कयलक्न जाक्हमे *अक्मरेक*[62] (1945) भासनाटकाििली, भाग- दूतािितय मध्यम येयाग' एि *पंचिाता* (1947), भासनाटिाली , भाग-*3* मे *64* उर भङ एि *बाल चवति (1948)* एि भासनाटकाििली भाग-*4* मे *65 कणभािम्* एि दूत *घटोतिच* (1373 साल) उल्लेखनीय अवि। महाकवि काक्लदासक दुइ नाटकक मैविलीमे अनुदि भेल जाक्हमे *मालविकावाम क्मत 66* (1354 साल) एि *विकमोविशीय* [67] (1945) क अनुदिक कमशप िवि गेविक्ह िा एि भनािा िा।

मैविलीमे हरषक िताििली नाक्टकाक दुइ अनुदि उपलब्ध होइि जाक्हमे पिमानक्द िा *68* दाि *1956* मे ति सुक्हदि िाा शास्ती *69* दाि *1962* मे अनूक्दत भेल जे पकाक्शत अवि। भििभूक्तक *उतिािमिचािवति 2* क सेहा दुइ अनुदि मैविलीमे उपलब्ध अवि। एकक अनुदिक िक्य डा० िाजकुमािि क्मश 70 जकि पकाशन 1954 मे भेल; क्कक्हतु साक्हत्यिताकि मुंशी िधुनक्हदन दास 71 दाि अनूक्दत नाटक पकाशन भेल 1982 मे। मुंशी िधुनक्हदन दास दाि अनूक्दल उतिािमिचवित साक्हतक्यक मूल्यसँ िशी िताषान पक्यािपेक्मे एकि ऐक्तहासक्क मूल्य भ' गेल अवि।

पिमानक्द िा िाणभटक *पािवी पविचय 72* (1964) क डाण सुधाकि िा ''शास्ती (-1974) विशाखदतक मुदािक्स (1965-66)*73* एि आनक्हद िा जयदेिकि पबोध चक्हदोदय (1941) क मैविली पदय-गदयानुदि कयलक्न।

उपयुक्त संस्कत नाटकाक्द मैविलीक पािपविकि नाटयसक्हत्य शंखलामे एक निआयाम क्नमाण किबामे सहायक क्सद भेल। कोनो भाराक साक्हत्य तािि् पूणकाप समद नक्ह भ' सकैि यािि् ओ अपन

पूर्णिति ग समकातीन साह्त्यिक समुच्चत जानके आत्मसात नहि कयने हो। विशेरतप संस्कृत-साह्त्या जाहिमे भातितीय आत्माक वि युग- युगसँ िलकैत आयल अवि, ओकिा िविडदी तँ कोनो भातितीय भारा साहक्त्य अपन उक्कनत नहि क’ सकैि। इऐह काणि अवि जै अदयावि मैविलीक अभ्युह्नक्ताक हेतु संस्कृत नाटय साहित्यक अनुिदक िकिक्त अ नुपम ति सभक सौह्दयष अपना भारा के उह्नक्ताक पि पि अगसि कबिाक हेतु एक अभाकक पूक्ताषकयलक्त अवि। मैविलीमे िचिक गदय- पदयमे अनुिद क’ कए अनुिदक लोकक्त पािपिविक नाटक केत्रमे उल्लेखनीय कायषक कयलक्त अवि।

काषक्रषप

उह्नैस शताब्दीक िठम दशाब्दसँ मैविली साहित्यमे आधुक्तक कालक पािभ होइि तक्हया सँ ल’ कए सितह्योति कालधवि मैविली नाटक विविध पक्तिक क्दाह्दशषा होइत अवि। मध्यकालीन पािपिविकि मैविली नाटक पभाि आधुक्तक कालक मैविली नाटककािपि एतेक िशी पडलक्त ते आधुक्तक कालक पािभिकािसिमे महामहोपाध्याय हरषाि ि ओकि अक्तसिप अनुकणि क’ कए नाटय िचिना तयलक्त। दासि पक्तिक नाटककाि भेलाह युगपुरि जीनि िा जे ओ ओह्ह पिपिाकि अनुकाणि तँ अशियक कयलक्त; क्तह्तु नाटकमे गदयक पयोगक एक ओह्हमे नीिनता अनलक्त, क्तह्तु हुनको पक्ति पािपिविके हिल। ह्नक शैलीके अनुकणि कयलक्त साहित्यत्तिाकि मुशी िघुनह्दन दास जे अपन नाटकमे किािनकमे तँ नीिनता अशिय अनलक्त, क्तह्तु जतेक दूि धवि विरिय उपसिापनक पश्न अवि ओह्हमे जीनि ि क दािि जे मागषपशस्त कयल गेल िलि तकि आगाँ बढौलक्त। लालदास क गदयमे तत्सम शब्दक बाहुल्यक

काणि ओ बोविल बक्तगेल, कक्तहुओ संस्कृत िखोकक अल्प पयोग कयलक्त। विशुद रपे पाम्पिर्वक नाटकक िचना कयलक्त तेजनािा जे मात पद-गदमे सुिािज विजय नाटक िचना कयलक्त।
अवधकंश पािपिर्वक नाटक किािनक पुिाणावशत एिं महाभािताक्शत िहलाक काणि ओकि मंचनमे असुविधा भेल जाक्त काणि नाटक मात पठनीय बक्त भेल। सामावजक नाटक, पतीक नाटक, ऐक्तहावसक नाटक जे पािपिर्वक शैलीक अनुकिणिपि क्लखल गेल ओक्तमेसँ कि्ु एहन अविं जकिा अवमनयोपयोगी कहल जा सकैिं। अतएिं समग रपे पयालोचन कयलासँ सितिप स्पष्ट भ' जाइिं जे मैविलीक पािपिर्वक नाटक विरय तिा ओकि पक्तापादन शैलीमे क्तहितिं विकासक गक्त पविलक्कत होइत अविं। पािपिर्वक मैविली नाटय-साक्हत्य उपयुतत मंचक अभािमे देश-कालानुरप अनेक उत्सँ सम्पकषआ पभािं गहण किैल जनमानसके अनुिंक्जत एिं उदेक्लत किैत िहल अविं। जाक्त नाटकमे मानिं जीिनिक अतलमे पिशि क' कए ओकि शाशित-भािनाके उदे क्लत किबाक क्मता िहत िि नाटक क्सिािियी भ' सकैत अविं।

संदभषि

1. ए क्हस्टी आफॅ मैविली क्लटरिचििं, भोल्यूम-।, तीिभुक्त पक्लकेशन्स, । सिं पी.सी. बनजी िा, इलाहबाद,ख 1949 पष्ठ-353-357
2. वजजासा, िरष।, अंक-।, जनििा-जून 1995, पष्ठ-62
3. दिभंगा पेस कंपनी (पाइिटि) क्लक्मटेड, दिभंगा, 1962
4. मैविली नाटक ओ िगमंच, डॉ0 पेमशंकि क्संह, मैविली अकादमी पटना, 1978, पष्ठ.-63

5. संपादक अमनिाि ा, दभिगा पेस कंपनी (पाइिट) क्लिमटेड ददभगा, 1962

6. ततैि

7. ततैि

8. काशी ाजिक सभा पंक्डल ाैपाख्य शमा, 1920

9. वजजासा, ारिष। अंक, जनाीि-जून 1995

10. मैविली अकादमी, पटना, 1979

11. ाजिपेस, दभिंगा, 1352 साल

12. काचीनाि ा, ानिी चह्नदिती श्यामा दातव्य क्वकत्सालय कचौाी गली, संित् 1995

13. सूयकाह्न्त ा, गाम नेहाी शाहपुि, मुंगेि 1960

14. काशी ाजि मुदणालय, बनािस, संित् 2010

15. ाैदेही सक्मक्त, लालबीग, दभिंगा, संित् 2015

17. क्मविला क्कणि दभिंगा 1984

18. मैक्िली नाटक पविचय, डॉ. पेमशंकि क्संह, मैक्िली अकादमी पटना, 1981, पष्ठ 14

19. ततैि, पष्ठ-97-98

20. ए क्हस्टी ऑफ मैविली क्लटिचि, भोल्यूम- 2, डॉ0 जयकाह्न्त क्मश, पष्ठ-349

21. क्मविलाक वभिूक्त जीिन ा, डॉ. पेमशंकि क्संह, मैविली अकादमी पटना, 1988, प०-19

22. आधुक्नक मैक्िली साक्हत्य का विकास, डॉ0 शैलेह्न्द मोहन ाा(अपकक्शत) पष्ठ-

23. मैक्िली नाटक पविचय नाटक, डा० पेमशंकि क्संह, पष्ठ-141

24. जीमूतािहन चर्वित नाटक, विचाि विद्दु, पष्ठ-क

25. मैथ्लली नाटक पर्विचय, डा० पेमशंकि क्सह, पष्ठ-142

26. सीता पर्विणय, पष्ठ-25

27. गाह्र्धिषिर्विाह, गर जनक मुख्सँ , पष्ठ-क

28. तत्रैि, पष्ठ-क

29. मैर्विली नाटक पर्विचय, डॉ० पेमशंकि क्संह, पष्ठ-34

30. काशी ाजिक सभा पंक्ष्डत लक्ष्मण ाि, ततीय संस्मकणि संति् 1938

31. र्विदापक्त पकाशन, दर्भिंगा, क्ष्तीय संस्मकणि -1960

32. चेतना सक्मक्त, र्विदापक्त भिन, पटना 1989

33. क्मक्ष्लाक र्विभूक्त जीिन ाि, डॉ. पेमशंकि क्सह, पष्ठ-17

34. मैर्विली नाटक उदि औि र्विकास, डॉ. पतापनाििण ाि, कला संकाय, महािजा सयाजीिि ाि र्विर्शर्विढियालय, बडौदा, 1973, पष्ठ-। 201-202

35. मैर्विली नाटक पर्विचय, डॉ. पेमशंकि क्संह, पष्ठ-145

36. क्मर्विलाक र्विभूक्त जीिन ाि, डॉ. पेमशंकि क्संह, पष्ठ-25

37. मैर्विली नाटक उदि आओि र्विकास, डॉ. लेखानािि क्मश, आशुतोर क्मश पौना, अडेहिाट मधुबनी, 1978, पष्ठ-360

38. क्मर्विलाक र्विभूक्त जीिन ाि, डॉ. पेम शंकि क्संह, पष्ठ-25

39. मैर्विली नाटक का अदभि औि र्विकास, डॉ. पताप नाियिण ाि, पष्ठ-216-218

40. तत्रैि, पष्ठ-218

41. मैर्विली नाटक पर्विचय, डॉ. पेमशंकि क्संह, पष्ठ-45

42. रक्मणी हिणि, गोर्विह्द ाि, नेपथ्य कि ा, पष्ठ-ङ.

43. तिँ, कादेशकक कदससँ पष्ठ-6

44. मुंशी ि्घुनह्दन दास, बनािस कसटी 1980 संित्

45. मैविली नाटक पविचय, डॉ. पेमशंकि कसंह, पष्ठ-101

46. दिभंगा पेस कम्पनी (पाइिट) कलकमटेड, दिभंगा 1363

47. मैविली पकाशन सकमक, सविसि दिभंगा, विकम 2021

48. माधि ि, दीनबह्धु पुस्तकालय, इसहपुि िमिनगि, सविसिपाही, मधुबनी 1956

49. कविला कमहि 8 अपील 1962 सँ 13 मई 1962 धीि धाििक्हक र पे पकाकशत।

50. मैविली नाटक का उदाि औि विकास, डॉ. पताप नाियिण ि, पष्ठ-213

51. आधुकनक मैकिली नाटकमे चाविितक विकास, डॉ. इकह्दि ि, सिीती पकाशन, लँगिटोली पटना, 1987, पष्ठ-142

52. िीि निह्दि नाटक, जीनाि ि, भूकमका, पष्ठ-2

53. मैकिली नाटक पविचय, डॉ. पेमशंकि कसंह, पष्ठ-127

54. मैविली नाटकक उदभि आओि विकास, डॉ. लेखनाि कमश, पष्ठ-348

55. मैविली नाटक पविचय, डॉ. पेमशंकि कसंह, पष्ठ-24

56. सिितंत पुस्तकालय, विकमपुि, पोस्ट-विहपुि, भगलपुि, 1968

58. सुधा पकाशन, दिभंगा, 1965

59. कविला दशिा पाइिट कलकमटेड, 14 िशनाि कमत्ति लेन कलकत्ता, 1965

60. गंिालय पकाशन,दिभंगा, 1367 साल

61. सूयिनाियिण ि, दिभंगा पेस कम्पनी कलकमटेड, 1955

62. िजपेस दिभंगा, 1945
63. िजपेस दिभंगा, 1947
64. दिभंगा पेस कंपनी क्लिमटेड, दिभंगा 1948
65. दिभंगा पेस कंपनी (पाइिट) क्लिमटेड, दिभंगा, 1373 साल
66. मैििली सािहत्य पिषद, दिभंगा, 1354 साल
67. शी अजन्ता पेस (पाइिट) क्लिमटेड, 1945
68. पाठक एण्ड सन्स, दिभंगा 1956
69. महेन्द्र िवदाभूरण, गाम-बभिनगामा (िता) पोस्ट-जनतपुि धाम, िजला महोतिी 1962
70. िजकुमाि िमश, पण्डौल, मखुबनी, 1954
71. मैििली अकादीम पटना, 1982
72. भाितती पकाशन, काली सिान, दिभंगा चतुिषसंस्किण 1964
73. मैििली मंिदि, िमथला पेस, टािि चौक, दिभंग, 1965-66
74. चन्द्रकान्त िा, पी. मोद पेस, कचौडी गली, काशी, 1941

मायानन्दक विडियो-रूपक

कुशालय

समय परिवर्तनशील अछि, जकर प्रभाव अवश्यम्भावी रूपसँ माध्यम पर पड़ैत अछि आ साहित्यिक स्वरूप विधान सेहो परिवर्तित भ' गेल। अवश्यम्भावी परिवर्तनक फलस्वरूप नाटकक रूप-विधान पूर्णतया परिवर्तित भ' गेल अछि। विडियो रूपक औने सुंदर पाठ्य सामग्री भ' सकैत जेना संस्कृतक अमर कवि अपन नाटक सभ मे देलक। विडियो क आविष्कारक फलस्वरूप विडियो-रूपक के जकरा दृश्य काव्यक अन्तर्गत गणना कयल जाइत छल ओ आब श्रव्य-काव्यक श्रेणी मे परिवर्तित भ' गेल अछि। विडियो-रूपक एक नव रूप मे हमर समक्ष आयल अछि। जकर कला कक्ष के रंगमंचपर प्रेक्षकक समक्ष प्रस्तुत कयल जाइत छल ओ आब स्टूडियो मे अवतरित भ' कए श्रोताक कान धरि पहुँचि गेल अछि। पूर्व मे नाट्य-प्रेमी नाटक समक्ष प्रस्तुत होइत छलाह, किन्तु आब नाटक हुनका समक्ष प्रस्तुत होमय लागल अछि। आधुनिक परिप्रेक्ष्य मे प्रेक्षक मात्र श्रोता बनि गेल अछि आ विडियो सम्पूर्ण आ विस्तृत घर प्रेक्षागृह बनि गेल अछि।

वस्तुतः विडियो रूपक रंगमंचीय नाटक दृश्य-पक्ष हैबाक कारणे शुद्ध शब्दमे व्यक्त भावना पक्ष मे कलहु-कतहु अवरोध आबि सकैत ओतय विडियो-रूपक मे भावना पक्ष अधिक गतिशील होइत। विडियो-रूपक पूर्णतया श्रव्य काव्य थिक। ध्वनिसँ मूलभूत आधार मैथिका

धकि भाि व्यक्तितक सशतत साधन वि क। जे कायष क्वतकामिे गिक मा् यमे कहिि विडयो र पककाि आ पस्तुतकता ् कि क मा् यमे कहिि। एडडिषसेकवि लि स्टिक कि ान ि कि जे आत्यक्तिक नमनीयता आ कालचनात्मक साकेत्विकताक शक्तितक कािणे ई ि गमंच आ क्वतपट सँ अधिक नाटकीयता क सका कहित अवि।

अवमव्यक्तित मा् यमक पवि ितिषा क’ पभाि मैवि ली साक्ति्य क्वहितक मनीरी लोकक्िपि सेहो पडलक्ि. कािण समयक जे माँग ि लैक ओक्हसँ साक्ति्य मनीरी लोकक्ि कोनो क्िपिक कि्ह सकैत ि वि। एकि पविणाम भेज जे मैवि ली साक्ति्य मे विडया-र पकक ि चनाक शुभािम्भ भेल ति ा बीसम शताब्दीक उतिािदष मे ई वि धा पूणष विकक्िसत भ’ गेल जकि पभाि िि नाकाि लोकक्िपि पडलक्ि।

सिातह्योति ि काल मैवि ली भारा आ साक्ति्यक हेतु उति ान कालक र प मे जानल जाइत अवि, कािण कक्तिपय साक्ति्य-क्वहितक पादुभाि भेल जे मनसा-िाचा-कमषा अपन मातभाराक उन्नयनाि ष साक्हक्तियक गक्तिवि धि मे सहयोग देलक्ि ताक्ह पवि पेक्ष्य मे ि तिषान शताब्दी पतलक्खत-पुक्ति त भ’ हिल अवि। मैवि ली भारा आ साक्हक्तियक केत्रमे गत शताब्दीमे काक्हतक बीजािपन भेल जे साक्हक्तियक गक्तिविधिके क्दश संकेत कि बा मे साक्हयक क्सद भेल। कक्तिपय साक्ति्य सेिी तपप सपूत नि स्फूक्तिष आ नि स्पिह्दनक संग साक्ति्य ओ भाराक सम्बदषामे अपन अभूतपूि षि साक्हक्तियक अि दानक संग पिश कयलक्ि जे साक्ति्यक सोत एक नि स्पिह्दनसँ भयि लागल ति ा ओक्हमे जे अभाि िलि तकि पूत्यि ष चिनाधमी साक्ति्य क्वहितक अत्यंत लगनशीलता आ तन्मयताक संग एकि सम्बदषाि िात्पि भेलाह जकि पविणाम भेल जे मातभाराक वि शाल

भण्डारि के भविाक क्रमत ओ सब क संकल्प भेलाह।

गत शताब्दीक चतुर्थ दशकमे मातभाराक उह्मयनार्थ एक निष्ठिरशािलनी पत्रिभा सम्पह्न सात्त्हत्य व्यक्तत्कक पादुभार्व भेल जे उपह्यासकारक रपमे कविकारक रपमे, गीतकारक रपमे आ समीक्कक, रपमे सम्प्पोवरत कयलक्त ओ छि मायानह्द व्मश (1934) जक्तक अक्य कक्तसँ मैविली पाठक नीक जका पवक्वित छि; क्कंतुओ एक विशिष्ट ेिडयो-रपककार सेहो छि तकर पवचिय अदावक्त नक्त भेक्ट पौलक्त अवि तकर दोरी मैविलीक इक्तहासकार आ आलोचक छि। एक्ह पसंगमे इक्तहासकार आ आलोचक सभिि मौन छि। ने जाक्त क्कएक ई एक अनुउवति पश्न अवि। ेिडयो मे जीवकापह्न करैत कालमे ओ समय-समयपर भिनिह्दक नामे ेिडया-रपकक चिना कयलक्त। क्कनक पाँच ेिडया-रपक अदाविम हमरा दक्यपरिर आयल अवि ओ क्तिक, एके बापक बेटा, नलिोकप निगिप्प, गुड-चाउि, अपन आन आ इक्तहासक वसिलि (अक्मयान-2) शेर चार अदाविम अपाक्शत अवि, क्कह्तु सभक पसारण आकाशवाणी पटनासँ भेल अवि।

जीविकोपाजर्नार्थ मायानह्द आकाशवाणी पटनाक चौपाल कायर्क्रमसँ क्वगत अनेक रिषधर्व सम्बाद हिलाह ते उनका समय-समयपर ेिडयो रपकक चिनाक पक्तबदता हिलक्त। ओ ेिडया-रपकक क्शल्पक सैदाक्क्तक एवं व्याहािवक पक्क सूक्मताक संग अ् ययन कयलक्त। क्कनक उपलब्ध ेिडयो रपकमे हमरा पारिवािरक, सामावजक आ ऐक्तहाक्सक पहलूक क्वतण भेल अवि। कलाकार युग-जीिनक पक्त आवक्क जागरक हैत तरा ओकार पयास हैत जे संसारके खुजल आँखिए देखय। मायानह्द सजग मानितापादी

कलाकारि विं ते ओ युगीन समस्याक पक्ष अपन जागर कता देखौलक्ष। आधुक्षक आवि षक रियसँ उत्पह्न वाततताक क्सकिक्ष, समाजक म् यिगीय लोकक िजिगारि, ओकि दुदशा, सामाक्जक यिाषिआक्दके ओ अपन िवडया र पकमे क्यक्तत क' कए ओक्हपि तीक्ष्ण क्यंग्य सेहो कयलक्ष। यिाषक पषठभूक्षमपि आधावित आदशष स्थि क्हनक िवडयो-र पक मे मुख्य सिंि विक।

कि ानक प

मायानह्दक िवडया-र पकमे युगीन समस्याक पक्ष अक्धक जागर कता देखबा मे अबैि। आधुक्षक आवि षक रिम्यसँ उत्पह्न क्सकिक्ष समाजक म् यिगीय लोकक िजिगारि,ओकि दुदशा, संघरष आक्दके ओ अपन िवडयो र पमे उपसिावित कयलक्ष। एक्ह पविपेक्ष्यमे हमि समाजक पाविािविकि यिाषके अंक्कत कविबाक उपकम कयलक्ष जाक्हसँ कििाक वकिास सिलि गक्तसँ भेल अवि। कििाकाि हैबाक काििे ओ िवडया-र पकक कि ानकक क्षमाणमे अपन कुशलताक पविचय देलक्ष। ई अपन िवडयो र पकक कि ानक क्षमाणमे वक्जासा तत पि विशेर बल देलक्ष। क्हनक पायप सब िवडया-र पक कोनो-ने-कोनो िहस्यपि आधावित अवि जकिा उदघाटत कयल गेल अवि जाक्हसँ र पक चमत्काविकि बक्ष गेल अवि। क्हनक कि ानक संघरषि आधावित अवि। कि ानक क्षमाणमे विशेर कौशल पविलक्कत होइत अवि। ओक्हमे संघरषअवि, गक्त अवि।

एतके बापक बेटा क कि ानक एक आदशष आतपेमक उदाहििण पस्तुत कििे अवि। हवि आ मदन दूनू भय िवि। हवि एक आकक्समे अल्प ितन भोगी मुलाक्जम अवि। अपन िाट भाय मदनके क्शक्क्त-दीक्कत कविबामे ओ कोन कोन ने बेलना बेललक्ष,

किन्तु यहिसमय नोकरी-चाकरीक व्यवस्थि नहि भ' पौलक्हि तँ एक ट्यूशनके व्यवस्थि कयलक्हि जाहिमे अपन तिनक टाका बचला क' ओकरा अहँक तुरन्त कयलक्हि। अन्ततप एहि हिस्सक उदघाटन तखन होइत जखन मदनक बड़पटी कलकत्ता पविणाम अबैत अवि। पारिवारिक पविशिमे अल्प आयक कारिणे कजक भारसँ आयल कतततताक एक सुखद सोहान रितारिणिमे पविक्तित भ' जाइत। अधुनातन संदभमे एहन भातम कतहु नहि देखबामे अबैत। विडियो रपककार एक एहन रितारिणिक निमाण करिबामे सफल भ' पौलक्हि अवि जे भातपेमक अदभुत उदाहरिण पस्तुत करैत।

पारिवारिक पष्ठभूमिपर केन्द्रित अवि *नि लोकप नागिपक* करिनक। किसुन एवं विसुन दूनू भैयारी नोन-पाक जकाँ सकामलत हैत िलाह; किन्तु वजसेबी साहूक कजक तगादाक कारिणे पारिस्परिक पेम एहन कतत रितारिणिक निमाण करिबामे सक्षम होइत जे एक दोसरिक जानी दुशमन मारि संयुक्त पविवारके खण्डित करिबाक हेतु डेग उठयबाक उपकम करैत अवि। मधुकान्तक सत्पयासे सब समस्याक समाधानोपरान्त कतततता मधुविमामे विविक्तित भ' जाइत तरि संयुक्त पविवार यरितरि बनि जाइत अवि। विडियो-रपककार समाजक पविशिमे पविक्तित विचाधारिक धरितलपर नि दशा समाके एहिमे देबाक उपकम कयलक्हि अवि जे नितारिदी सरिणि नि आयामक सजन करिबामे सहायक होहत अवि जे टूटैत पविवार पुनप संगठित भ' जाइत अवि। अन्यथा विखण्डित भ' जाइत।

पति-पत्नीक हास-पविहासपर केन्द्रित अवि *गुड चाउर* करिनक। पारिवारिक पष्ठकभूमिमे कलहक जविड होइत अवि गहना-गुवियारि

जकि लेल पारिस्परविक ईर्ष्या-देष उत्पन्न भ' कए पेमक पवित बंधनके तोविड दैत अवि। दावकिा अपन पत्नी लक्ष्मीके आध सेकि सूक्त गढबा दैत वि जकि फलस्वरिप संयुतत-पविािमे वि्नक बीजािपण होइि ति माधि पत्नी जयाके ई घटना सविि अनसोहाँत लगैत कि। जया माधकिे सतत पेवति कैत वि जे सािी आशममे हिबाक अबि कोनो अिषि नवह एवह गेल अवि। शनैपशनैप समस्या एतेक गम्भीि भ' जाइि जे एवह घटनाके ल' कए दाावकिा आ माधि संयुतत पविािकि पम्पिाके खवण्डत क' कए भीन-बखिा कबिाक हेतु उताहुल भ' जाइत वि। कवह्तु लक्ष्मीके ई सिीकाि नवह होइत कि जे हुनका पवसन नवह। अन्ततप भीन-बखिकि बात खटाईमे पविड जाइत अवि ति दुनू भाय संयुतत पविािमे हिबाक अवभलारी बवन जाइत वि।

अपनप आन विडियो रिपकमे सामावजक िताििणिक वविशष्ट संदभवके विखाकत कैत अवि जे हमि समाजमे एहन-एहन महनुभाि एिििनो तिष्ठान वि जवकक सतत इएह पयास हैि जे एहन विरम िताििणिक विमाण किि से भाय-भायक बीच जे आपसी पेम, स्नेह, आ सदभािना अवि ओ वततततामे पविवतिष्ठ भ' जाय। शीतल ि एक एहने पात वि जे मुवखयाक चुनािकि असििपि वशािहत्त आ वषिणुकाहतके चुनािमे एक दोसािकि विािधी रिपमे विाष्ठ क' कए अपन उल्लूसोिि कबिाक पयासमे लावा िूठ-फूस, पपंचक तानाििना बुवन क' दुनू भायके चुनािि लडबाक हेतु सतत उत्पेवति कैत हैत वि ति दुनू पवसँ पयाप्त टाका-पैसा ऐंवठ क' अपन सििािषवसवद्ध कबिा मे कवयो कुंवठत नवह होइत वि। कवह्तु िास्तविकिताक हिस्योदघटन तखन जा क' होइत अवि जखन कवि वि्ताक िखीक

असिपि दुनू भायके एक्ह पसंगमे विस्तासिँ वि िचन कबिाक असि भटैत िक तिा शीतल िाक िास्तविकतासँ अगित होइत िवि।

सामाक्जक कि ानकक अक्तवतित क्हनक एक ँविडयो र पक विक *इक्तहासक विसाित्ल* जाक्ह मे र पककाि इक्तहासक एक आि ति अ् यायके अनाि त कबिाक अपकम कयलक्त अवि। एक्हमे मल्ल जनपदक भटाकि सूयषकूलभूरण समाटक ओक्ह कि ाश क्दस संकेत कयलक्त अवि जे भाि तक पाचीनतम विशि विदालय ँक्दक साक्हत्य आ पवि तनीक सूत अ् ययनाि ष गेल हिवि, क्कंतु क्वातत्यक देहािसानोपाि त सुखद जीि नक पवि त्याग क' कए समाट पदके सुशोक्भत कयलक्त। आचायष नागभदक पटट् क्वाष्य शेष्ठ आयषक्वालीके पाि खी समाट तत्क्ण हुनक क्वाल्प कलासँ पवि क्वित भ' जाइत िवि जक्तक क्वाल्प समाट तत्क्ण हुनक क्वाल्प कलासं पवि क्वित भ' जाइत िवि जक्तक क्वाल्प जान समग आयाि तष मे पख्यात तिा यशो् िज क्दगक्दगहन्त मे क्यातत िल। समाटक आदेशानुर प क्वाल्पीके दुगाक भव्य पक्तमा क्नमाण आजा भेटैि, क्कन्तु दुयोगसँ एहन नक्ह भ' पौनक आ मूक्तषक्नमाण भ' गेलैक िाजकुमाि ी मार क्नका जे सामाजी िलीह। समाट कोधान्ध भ' सूयोदयसँ पूि ष ओकि ा िज्य क्षक्कासनक आजा देल गेलैक। कतोक क्दनक पश्चात् आयषक्वाल्पी विकि्प्तता असि ामे मल्ल समाट स्द्र क्संहक समक पस्तुत कयल जाइि। समाट एक्ह विरियसँ अि गत हिवि जे नागभदक अि ा हुनक क्वाष्यकदाि बनाओल क्नकाष्ठ पक्तमामे पाण पक्तष्ठा सियं भ' जाइत ँिक। समाट इच्िा क्यतत कयलक्त जे एक एहन काल्पक्नक अलौक्कक नाि ीक कामना अवि जकि िवि

इन्द्रधनुरोसँ अधिक आकर्षक, जकरि कान्ति सघन जलदमे विकैत विद्युतलतो सँ अधिक पखरि जकरि मादकता सोमसि पयष्ठताके नीसि तरि कोमलता नरिनिताके कठोरि बना दैत रिक। समाट इचरि लिक्त जे मल्ल जनपद विखिदैके परिकाष्ठा क' काव्य-क्षमाणक आधारि दैक तरि सौहृदयषस्नेही के महान् पवित मंदाकिनीक नीक स्नानक फल दैक। रिजाक आजा व्शारिधायषक' कएल मूर्तषमाणारिष रिओ पक्क कलाविध देल जाइरि।

आयषशिल्पीक अपूणष सौहृदयष आ ओकरि व्शिल्प जानपरि आकवरषत भ' कएल रिजकुमारिरि तुँगभदा शनैप-शनैप ओंकरि सामीप्य सुखक लाभक आकाकंक्षणी बक्त जाइरि तरि अपन अगाध स्नेह जलसँ ओकरि अवमक्सतत कविाक उपकम करिरि, कन्तु आयष व्शिल्पीक समक हुनक अरिण्य रिदिन क्षफल भ' जाइरि। मूर्तषमाणमे व्शिल्पी ततेक ने तन्मय भ' जाइरि जे मूर्तषक सौहृदयषरिखा आयष महारिनी मार क्त तरि नाक्सका आ भौ तुंगभदा सदश सरियंमेरि बक्त जाइरि। समाट आयष व्शिल्पीक मूर्तषकलापरि आकवरषत भ' महामात्यक समक विचारि व्यतत कयलक्त जे तुँगभदा आ आयष व्शिल्पी एकक्तत भ' कएल नूतन-व्शिल्पकलाक सक्ष करिवि, कारिण रिजकुमारिरि संगीतकलामे क्षपुणा रिलीह। एकरि रिजकुमारिरि संगीतकलामे क्षपुणा रिलीह। एकरि सुखद पवरिणाम हैत जे मल्ल जनपद सौहृदयष साम्पदाक लेल पुनप विशिभासरिरि मे अपन ज्योक्त जगाओत।आयष व्शिल्पीक मूर्तष कला आयष व्शिल्पीक क्षमता सरिषा रिजकुमारिरि तुंगभदाक अनुरूप अवरि। समाट व्यक्ततक मूल्य रियक्ततक योग्यताक आधारपरि अंक्कत कविाक आकाकी रिवि। आयषव्शिल्पी एरि तुंगभदाक समाचारिसँ मल्ल सामाजी उज्जैनक रिजकुमारिरि मार क्त जे मल्ल समाट रदपक्तक

अधावाणी िवि ओ अतीि विहलता, मंद, कल्पन आ स्पहृदनक अनुभिमे हिल िवि, कािण कोनो समयमे मारक्त सियं आयष्पशाल्पीक िलीह, कन्हतु पँविस्त्रि िक्ताक विपिितताक फलसिरप ओ आयषक्षशाल्पीके अपन बनयबासे असमिषभ' गेल िलीह तिा व्याताक आजानुरप महामक्कम मल्ल समाटक रद पक्ताक अधावाणी बनबा लेल विशि भ' गेल िलीह। एक नािीक जे विशिता होइि जकि फलसिरप ओ आयष्पशाल्पीके अपनयबामे असकम भ' गेलीह।
पविक्ताित पविशिमे िस्त्तविकताक हिस्योदघटान नखन होइि जखन समाट रदपक्ता अपन कह्याक हेतु ओही आयषक्षशाल्पीक चयन कबािक अवमलारी भेलाह जे पूषि िजिमाताक पेमी िल। िजिमाता अिित् मारक्त सियं आयष्पशाल्पीक समक पस्तुत भ' कए िस्त्तविकताके उदघाटन कििते िवि। यिािस्त्र क्ता सँ पविक्षित भ' कए आयष्पशाल्पी समाटके क्वानु कोनो सूचना देने अदश्य भ' जाइत िवि।
क्नक समग िक्डयो-रपक पाविििविकि पविशिपि केक्न्हत अवि। सितंतताक पश्चात् पाविििविकि सिरपपि एतेक शीघतासँ पविििषा भेल अवि जे संयुतत पविििकि माह्यता शनैफ-शनैफ खंक्गडत होमय लागत आ एकागी पविििकि उदय होमय लगलैक ताक्न पविपैक्यमे संयुतत पविििकि पािम्पािविकि ढाँचाके सुिक्कत िखििकि उदेश्य सँ उत्पेविित भ' ओ अपन समग िक्डयो-रपकमे ओकािि माह्यताके पुनसिािक्पत किबाक कल्पना कयलक्न। ओ इक्तहासक ओक्न अ्यायपि दतपात कयलक्न जाक्न क्दस साक्हत्यकािकि ्यान नक्न आकक्षष्पा भेल िलक्न। इक्तहासक क्वासिलिक किािनकमे पयाप्त नाटकीय ततिि अवि आ ई एक पभािशाली िक्डयो-रपक विक।

पातप

मायानह्दक विडयो रपकक विशष्टय वकि ओ कि।-विह्यासमे अत्यलप पातक पयोग कयलक्त अवि। पाताक चुनाभि ओ अपन कलपनाशक्ततक पयोग क' कए अत्यंत कुशलताक संग पातक चयन कयलक्त। क्हनक विडयो-रपकमे पयुतत पातक मनमे कोनो ने कोनो दह्द अशय अवि। हुनक पत्येक पातक मानवसक दह्दक सूक्मसँ सूक्म पतिके उदघावटत कबािमे सफलता पापत कयालक्त अवि। क्हनक पातक मनोभावि आ दह्दके अत्यंत कुशलताक संग उदघवटत कबािमे साकम भेलाह अवि।

मनुष्य जेहन देखबामे लगैवि भीतरसँ ओ ओहन नक्ह होवि। मनुष्यक िाह व्यहािर कोनो व्सवक्तमे ओकि ािस्तविक चवितक पविचायक भइये ने सकैवि। मायानह्द एक मनोविजानी सदशय पाताक अह्तपसिल मे पविश क' कए मानकि ककाम आविणके हटा क' ािस्तविक रपके स्पष्ट कबािक पयास अपन पत्येक विडयो-रपकमे कयलक्त अवि। मनुष्यक आह्तविक रप अत्यंत संदिनशील, भावि-पविण आ कोमल होइत अवि। ओ एहने पातक चयन कयलक्त ि पातक जीनि कणके उदघवटत कयलक्त जाक्हमे दह्दक तीविता अवि। मनोविजाकनक पातक पभावि हुनक नाटकीय क्शलपपि पचुि पविमाणमे पडल अवि। हुनक विशष्टता वकि जे ओ हविकि पातक भाविनाक सधनता आ तीविताके सविलतासँ पाठकक समक पस्तुत कयलक्त। क्हनक विडयो रपकक धविातिल मुख्यतप भाविनात्मक अवि।

क्हनक विडयो रपकमे पातशील-कारपणक विनयोगमे रपककाविक सफलता एक्हमे अवि जे अत्यलप पातक पयोग दािि घटनाके

माक्सषकताक संग उपस्थित कबिामे सक्षम भ' पौलक्त। अपनप आनमे तीन पुरर पात आ दू मक्हला पाती,गुडचाउिमे पुरर एि दू स्ती पात, निलोकप निगिममे पाँच पुरर आ दू स्ती पात ति इक्तहासक क्षसलिमे चावि पुरर आ तीन स्ती पातक पयोग क्विडया रपककाि कयलक्त अवि जे हुनक विलक्ण क्शलमक पमाण विक। इक्तहासक क्षसलि एक मनोविजाक्नक क्विडयो रपक विक जकिा अक्तषत पत्येक पातक मानक्सक यातनाक पसंगमे विस्तािि पूषक विश्लेरण रपककाि कयलक्त अवि। आयषक्शलम, तुंगभदा, मारक्त एिं महाविज रदक्संह सभ मानक्सक दक्दसँ गुजवि हिल अवि। महाविजक उत्कट अक्भलारा िलक्त जे आयषक्शलमी आ तुंगभदाक सक्ममक्लत पयाससँ एक नूतन सौक्दयषकलाक क्नमाण संभि अवि, क्कन्तु सामाजी मारक्त जे यििषिस्तुक्सक्तिसँ अिगत विि। ओ नक्ह चाहैत विि जे एहन कायषमहाविज दाि कयल जाय तदषि ओ पयत्नशील भ' आयषक्शलमीके ओतयसँ विदा भ' जयबाक अनुिधि कैत विि। पक्तपाद क्विडयो रपकक पातक मानक्सक अंतदषक्द अपन पिकाष्ठासँ गुजवि हिल अवि।

दू भायक बीच अनादक्षद क रप भेटैि अपनप आन, गुड चाउि, निलोकप निगिम एिं एतकेिपक बेटामे। पत्येक पात अपना अनुसािि पत्येक कायषके क्कया रप देबापि उताहुल अवि, क्कन्तु क्सक्तिक यिाितासँ अिगत भेलापि सभ एकक्ह भ' जाइत अवि। क्विडयो रपकमे मनोविजाक्नक क्चतणक अनेक सुविधा पाप्त अवि जकि पयोग रपककाि पातक मानक्सक ओिसैठ के अत्यंत सिलासँ अंक्कत कैत विि। एक्हमे सामाक्जक जीिनिक विविधि रक्षणी यिाितािके अंक्कत कयल जा सकैि जे अक्तिके उदेक्लन

कयहाक्ति दहृदक क्यतण भेल अर्वि। समाजमे भेटक्तहाि कक्ति वशिेर पकाकि क्यक्ततके ्यानमे िक्षख क' एक्ह विडयो रपक सभक चिना भेल अर्वि।

संिाद प

समिाद लेखनमे मायानद्दृ अत्यंत क्तपुण र्वि। िताणि आ पसंगक अनुरप िट-पैघ सब पकाकि संलाप क्हनक विडयो रपकमे उपलब्ध होइि। विडयोपि क्हनक नाटक सफलताक िहस्य ई अर्वि विडयोक लेल जाक्ह संक्सलष्ट कानिकक एकागता क्तक्शाय क्दशा आ सशतत संलापक अपेक्ता होइत अर्वि। तकि क्तिह क्हनक विडयो रपकमे उपलब्ध होइि। क्हनक विडयो रपकमे िक्चक तीिताक पचुिता अर्वि। अक्त संक्कप्त संलाप दाि कोना घटना वकास आ भाि क्यंजनाक काज भ' सकैि। तकि उदाहणि क्हनक विडयो रपकमे उपलब्ध होइि।

ई विडयो रपकमे संलाप सहज बोलचालक भारामे क्तलखलक्त अर्वि। ओक्हमे िकिपटुता देखयबाक हेतु भेटैहि जे हास्य-क्यंग्यक सजनक हेतु उपयुतत अर्वि। संलापमे गक्त अर्वि। बातसँ बात कक्तक रपे बहिइत अर्वि जे क्हनक विडयो रपकक विशष्टय अर्वि। संलाप लेखनमे क्हनका कुशलता िक्त जे विडयो रपकके नीसि नक्ह होमय दैि। संलापमे पात, पसंग एिं भाकि अनुरप पविक्तिस्त होइत हैि। जाक्हसँ िचिकता आक्त जाइि।

भारा प

विडयो रपकक सिाक्धक महतपूणष वरिय विक भारा आ ई भारातक्तलखलक्त नक्ह, पत्युत भाक्रत होइि। अतएि एहन भाराक पयोग हो सिक्षाधाणि के बोधगम्य होइक। मायानद्दृक विडयो

रपकमे अपचक्लत शब्द जे साधाणि जनमानससँ उक्ठ जकाँ गेल अवि तकि पयोग अपन नाटकीय भारा गक्क्त कयलक्त। ओ भाराके व्याहािवकि रपके ंक्विडयो रपकमे सिान देलक्त। इएह काणि अवि जे हुनक भारा कतहु अव्यक्विसित नक्ह आ पौलाक। ओ शब्दके तोविड- ममोविड क’ कतलहु वकित नक्ह कयलक्त। हुनक भाराक िसधाि सिषिा सचिह्हद आ सिभाविक रपे पकाक्शत भेल। ओ सब पकाकि भाकि पकाशनक क्मता हुनक भारा मे अवि। पविक्सितिक अनुकूल ओ शब्दक चयन कयलक्त। लोकोक्तत आ मुहाििक सफल पयोग हुनक भाराक सौह्वदयषे अपूिष अवभाक्वि कयलक अवि। क्हनक भारा-नैसवाषक िसाद आ भापिूणष अवि। ओक्ह मे तह्मयता, साििषकता आ सिभाविकताक सहज समािशि अवि। मायानह्दक ंक्विडयो रपकक विशेरता विक जे सिल-सिलपि ओ एहन मावमषक लोकोक्तत आ मुहाििक पयोग कयलक्त जकि फलसिरप हुनक रपकक संिाद अत्यंत पाणह्लित क्बबे गेल अवि।

डा. नगेह्द *आलोचक की आस्िा* मे हाली के काव्य मे एक्ह विरयके स्पष्ट कयलक्त अवि जे गदय हो अिवा पद दुनूमे िजमािक्ायान िखब आिशियक अवि। भािनाक संटीक अवभव्यक्तत लोकोक्तत आ मुहािा दािा समभि अवि। भािनाक सहजताक काणिे ओकाि अवभव्यक्ततके लेल सहज, सिभाविक भारा ओ एकि मा्यमे समभि अवि। मानिक अत्यवधक जीह्लत, भाि-पिणि आ ऐक्ह्दय अनुअक्लाियसा ओक्ह भारासँ समबाद होइत अवि जे यिािषे बजैत अवि।

क्हनक एकाकी सभ चौपालसँ पसावित भेल जकि जनसाधाणिसँ

सम्पकष हैबाक काणि अनलंकत अित् सजह सीभाविक आि सलि अवि, काणि एहन भारामे कोनो पकाकि आडाबकि सीनि नक्ह हिैत अवि। इएह काणि अवि जे क्हनक भारा सिपिाधाणिक हेतु बोधगम्य अवि। भारापि क्हनका अवधकाि िकि। क्हनक भारा मुहािदािि अंलकत आ काव्यात्मक अवि क्हनक भारा व्याहाविकि जीिनिक भारा विक।

एक्ह तथ्यके उदधाव्टत कबिाक उददेश्यसँ क्हनक पत्येक िवडयो रपकमे पयुतत लोकोक्तत आ मुहाििपि विचाि कबि आश्यिक पतीत भ' हिल अवि। लोक भाराक यिािषरपके ओ अपन िवडयो रपकमे उपक्सित कयलक्ह जकिा पािाँ हुनक उदेश्य िलक्ह जे शोतापि एकि पभाि पडय।

अपनप आन िवडयो रपकमे ई क्ामासि लोकोक्तत एि मुहाििकि पयोग कयलक्ह अवि यिापि क्यकबि-भोकबि, नडाव्टे नाचने, घोडा पि चढल, कुसी-फुसी, मव्जस्टि दािगा, मन हनविनआएब, क्यकचाक, चुटट्ाक लोह तँ सोिि हिैि, एतकेटा पाण दूठाँ बाटल, बसुलाक धाि िस्तुके अपना क्दस िीकब, जकिि पास खोइ तकिि पात भूि कबि, ऑक्खक देखल-कानक ल, अनका घिमे आवा लगा क' तपक्हाकि कमी नक्ह, जकिि खयबैक तकिि गयबैक, ताल लागब,पाँच हाि तडपब, ऑक्खलाल पीयि कबि, अनटोटल गप्प, मुँह ने कान बीच मे दोकान, सौँसे नगिि क्यनाएब, लाबि-चाबि, अपने मने पैघ, आवा िायिब, बाभनक गाम मे िडि पव्जआड, इनाि मे, अतह कबि, अनटोटल गप्प,भेडा मक्हसक काक्ह,कटाउवि कबि,पाणडा आत्मा एकके, मुँह पुरख बनब.नारङ्टे नाचब, िसाताल मे पहुँचाएब, उजाक्ह उठब. मक्तभष्ट, नाककाब, अदगोइ-

बदगोइ, पोलखुजब, कपाि फाबि. धोखा देब इत्यादि। एकके बापक बेटा मे काबुल मे गदहा होइि, गदैस-मदौस, कचकच-कचकच कबि, ऑखि गडबि, भटकल भौह, बेलसक गप्प.पेट पोसब, भनभनायब. ललबबुआ बनब, मिा डोलबेनब, विहइआि ति हिब. बताह बनायब. बौआइत-ढहनाइत, ओलसन बोल, कान बहिीी, चूर्वि मे' िकिब. तम्मा ल' कए माङ्ब, आवा लगाएि.गुड चाउि मे वधिि हैत सात घि क मुदइ, ठीक पि मामु हँसी कबि, हुिनूड, कासा देब बनब, हतकन कानब, अकान बनब, कोसकलया कबि, बकलेल सन, मनोरिि पुबि. िुकादेब, फर्विि िट कबि. िङताल बजबि, खोताक चोचा जकॉ मुँह लटकायब, ककहावि काटब, अकचि कबि. सूइघाक नोक बििबर्वि, नलिोकप नगिप्प मे माि बाहिैक्स, काठुआ काटब, सुगि क गिाही हर्वनि देल दुनू पडा क' जंगल गेल, देह ढाहब, देह मे आवा लगायब, विसवापिि, हािि पि चढल एलाह आघोडा पि तैयाि, घि उजाबि, कडिीक िम्म पि कासतुआ चोख, कपाि फूटब, गलहथ्था देब, तिडाडा मे गाबि, भाकसी िकिब, कौआक नोिपे बेङ नैमिि. पाि लागब, अह्लेड कबि, नह्लो िन-काहहनबान, अपने कक्या सँ घेट तताबि, भुकायब, चौहाठी कहलायब, अपन बडद कुडहर्विए नािबि, मुह पि जाभी लगाएब, चौहाठी कहलायब, अपन बडद कुडहर्विए नािबि, मुह पि जाभी लगाएब, कोकसकाक दोखिि बालु फॉकब, उकटा पैची, खाद्य मे खसायब, आवा उगलब, लिगोबि एिि इकाहासक कासलि मे टकटकी लागब, संकल्प विकल्प मे ओिायब, िलि कबि आदि-आदि।

ितिािणिप

मायानह्द ्कि आ शब्दक म्ा् यमे ि ताा ि णि क्माण कयलक्त अर्वि । क्ह्नक ि ब्डयो र पकक वि क्शष्टता अर्वि जे हमि गामीण पर्वि ि शक म्ा् यर्वि त पर्वि ि ािकि यि ािषि क्सि क्ताके उदघक्टत कि बाक उपकम कयलक्त अर्वि जे ि तिषान पर्वि ि शि मे खक्पडत भेल जा ि हल अर्वि तकि ि कोना बचाओल जाय ताक्ह क्दस संकेत कयलक्त अर्वि । क्ह्नक ि ब्डयो र पकमे पर्वि ि ािकिे तोडबाक जे पयास सामाक्जक पर्वि ि शिमे जि लिह्त भ' गेल तकि ि ओ जोडबाक पयास कयलक्त अर्वि अपन आन, गुड चाउि, नि लोकप नि गिपप आ एतके बापक बेटा मे। पर्वि ि ािर्वि कि पर्वि ि शिमे ि क्ह क' लोक कोना एक दोसि ािपि टीका-क्टपपणी कि ँ ति अर्वि , क्कह्तु ि ास्तर्वि किताक धि ातिलपि ओ कतेक सटीक उत्ति ँ ति अर्वि तकि ि स्पष्ट कि बि र पककाि कि अभीष्ट पर्वि लिक्कत भ' ि हल अर्वि । इक्तहासक क्वासि लिमे काल्पक्नकताक वि सिक्ण पयोग क' कए र पककाि एहन ि ताा ि णि सजन कयलक्त अर्वि जे कि ािनकक वि कासमे कतहु क्यि धिान नक्ह भ' पबैत अर्वि । ई अपन ि ब्डयो र पकमे शक्य-म्ा् यमे ्यानमे ि खिलक्त। शब्द आ ्कि दाि यि ाक्चत ि ताा ि णिक क्माण कयलक्त ि ताा ि णिक अनुर प ि ाट-ि ाट सब पकाि कि संपालक ि चिना कयलक्त। ्कि-पभाि आ संगीतक म्ा् यमे ि ब्डयो र पककाि ि ताा ि णि-क्माण पभाि शीील ढंगसँ पस्तुत कि बाक पयत्त कयलक्त अर्वि ।

उदेश्य प

मायानह्द उदेश्यक एकतापि ्यान केक्ह्दत कयलक्त अर्वि । ओ सभ क्सि क्त के एकक्ह क्दशा क्दस पेर्वि ति कयलक्त। क्ह्नक ि ब्डयो र पकक उदेश्य मनोि ँ जिन ि हल अर्वि । क्कि ु ि ब्डयो र पकमे ओ सामाक्जक असंगक्तपि तीक्ष्ण क्यंग्य कयलक्त अर्वि । क्ह्नक ि ब्डयो

रपकमे उदेश्य अपन कथ्यके िचक एिं आकरषक रपमे पस्तुत कबिाक पयास विक जाक्हमे रपकका िके पयाप्त सफलता भेटलक्ह अवि।

िगि-क्शाल्य प

क्हनक िडयो-रपकमे िगि-संकेत आ दश्य-विधानक अहत्तगषा पिम शाक्य, क्दतीय शाक्य तदनुप अवि। ओ म्य-िगीय सामाक्जक जीिनक पष्ठभूक्म मे िडयो-रपकक िचना कयलक्ह। क्हनक सभ िडयो-रपक मे पारिवािकि समस्याक उदघाटन कयलक्ह जे सामाक्जक यािषि आधावित अवि। समाक्जक यािषि आधावित िडयो रपकमे ओ तिषान आवषिक िरभ्य आ ओक्हसँ उत्पन्ह समस्या क्दस संकेत कयलक्ह अवि। ओ िडयोके ्यानमे िक्खिं कएकि िचना कयलक्ह आ ओ ओक्ह मे सफल भेलाह।ई सभ सामाक्जक समस्याके अपन पक्षपाद बनौलक्ह। ओ एकिा पभािोत्पादक बनयबाक हेतु ्िक्त-पभािक उक्चत पयोगपि ्यानके केक्ह्दत कयलक्ह। शक्य-संकेत आ ्िक्त-पभािक क्यिहािक पयोग कुशलतापूिषक ओ अपन िडयो रपकमे कयलक्ह। क्बनु कोनो नैिटिक सहायता नेने पसंगके नाटकीय रपमे, पस्तुत कबिामे सफलता ओ पाप्त कयलक्ह। दश्य पवि ितषामे निीनता अनबाक ई पयास कयलक्ह। क्जजासा आ कुतूहलताके पक्षाषित कबिाक उपकम कयलक्ह।

मायानह्दक पत्येक िडयो रपक िडयोपि बाडकास्ट भेल। िडयोक म्यम विक ्िक्त। ऑक्खक अपेक्षा ओ कानक लेल अक्धक हैित अवि। अतएिं ओक्हमे एतशनक अभािं हैित अवि। ई अपन िडयो रपकमे ्ह्यात्मक मूल्य पि अक्धक ्यान देलक्ह

अवि। ई अपन विडियो रपक मे कायष्यापकि एकागता आ पातक चविताकंनपि अक्षक बल देलक्ष अवि। क्हनक पत्येक विडियो रपकक अहत्त पभाशिाली रपमे भेल अवि। दश्य-पविितषाक कलात्मक पयोग देखबामे अबैि। विरय पधानात्मक पभाि क्हनक चिना क्शाल्पपि पडल अवि। विरय पधानाताक पभाि क्हनक िगि क्शाल्पि पडल अवि। ई हास्य-व्यंग्य पधान, गम्भीि, िमिाचक, दुखाह्त आक्द विडियो रपक क्लखलक्ष। ओ शक्ष्य-क्शाल्पपि विशेर ्यान खिलक्ष अवि।

काप्साणि प

विडियो रपक संक्रम्त नाटय रप विक। विडियो रपक मैविली एकाकी एक शाखाक रपमे सतित रपसँ विकिसत भेल अवि। मायानह्द अपन विडियो रपकमे नैिशिनक पयोग कतहु नक्ह कयलक्ष अवि। ओ शक्ष्य-क्शाल्प सम्बह्धी कुशलताक पविचिय एक्ह विधामे देलक्ष अवि। सषिा शोताक दीष्ा सँ एकिि आकरष्क बनयबाक पयत्न कयलक्ष अवि। क्हनक एक्ह कक्तमे ्किन-पभाि आ संगीतक व्यहिािि कलात्मक रपमे भेल अवि। भाराशैली सब रपकक अपन-अपन अवि। िताििणिक पसंग पातक अनुरप अवि जक्हसँ नाटकीय दक्षा सँ पभाशिाली बक्ष गेल अवि।
जतेक दूि धवि मायानह्दक विडियो-रपकक अवि ओ विडियो रपक-नाटय-क्शाल्पक कसौटीपि अक्तसिप सटीक उतििति अवि। क्हनक विडियो-रपक मे कििनक-क्नमाण, चविति-क्नतण,संििद, उदेश्य ,िताििणि,भारा-शैली, िगि-क्शाल्प, ्किन-पयोग आक्द दक्षा एँ, कुशलतााएँ क्नािह कयलक्ष अवि। क्हनक विडियो रपक भािी-विकासक क्दशा-क्नदेशक' सकैि।

ि‍डयो-रपक मैविली एकाकी शाखा रपमे सतिंत विधाक रपमे विकिसत भ' हिल अवि। मैविलीमे विभन्न पकाकि ि‍डयो रपकक िचना क्हिति भ' हिल अवि। मायानन्द पाश्चात्य नाटय-शल्प आ नाटय कक्तासँ धक्कष्ठ रपे सम्पकष भेलाह। ि‍डयो रपक एक पैध सशतत मा्यम,एक जीविति िगमंच पदान कयलक अवि। ि‍डयोक पचाि-पसाि अधक भेलासँ अनेक क्यक्तके एक्ह रपक िचना कबाक हेतु पेविति कयलक। मैविली ि‍डयो-रपक कलखकहािके भाितीय अह्य भारा सदश अदाक सौव्िय नक्ह उपलब्ध िक तिक जे िहन िचना उपलब्ध भ' हिल अवि ओक्ह आधािपि ि‍डयो नाटय-शल्पके जतेक विकिसत हैबाक चाही ओ नक्ह भ' सकल अवि। ि‍डयो,नाटय-लेखनक लेल ि‍डयोके ककटसँ देखबाक-समििबाक पयोजन अवि। पक्तभा आ मा्यमक धक्कष्ट पविचय ि‍डयो-नाटय-लेखन हेतु अकाियष अवि। आकाशािणी सिकािी कयंतण मे अवि आ पक्तभा सम्पन्न साक्हत्यकाि ओतय पहुँच क' अपन पक्तभाक। समुक्त उपयोग नक्ह क' पबैत िवि, कािण ओक्ह ठामक याक्तकतासँ बह्हा जाइत िवि।

हुनकासँ भेट भेल िल

विगत अनेक शताब्दीसँ मैविली भारा ओ साक्हत्यक सुदीधष एिं समदशाली साक्हक्त्यक पम्पिा अविवि ल-अकुण्ण रपे चक्ल आक्ब हिल अवि; क्कन्तु बीसम शताब्दीके जँ एकि साक्हक्त्यक विकास-याताके सिणषुगक संजासँ अक्भक्हत कयल जातँ एक्हमे एक नि मोड आयल जे पत-पक्तकाक उदय भेलैक ति ओकि पकाशनक शुभाम्भि भेलैक जकि फलसरिप गदक विकासमे एक नि गक्त आयला गदक विक्भन्न रप-विधानक पादुभावि पत-पक्तकाक पकाशनसँ शुभाम्भि भेलैक। विगत शताब्दी पधानतप गद रपमे ख्याक्त अवजषत कयलक आ ओकावि पयोगक विविध रप-विधानक रपमे पाठकक समक पस्तुत भेल। संघरषमय युगक जीनिमे गदक मयादा एक्ह रपे सपाक्पत क' देलक जे ओ अक्भव्यक्क्तक असाधािण साधन बक्न गेल आधुक्नक मैविलीगद गंगाके सम्पोक्रत किबाक उदेश्यसँ साक्हत्य-पुिोधा लोकक्नक सत्पयासँ ओकावि पविषकावि आ पविमाजषन भेलैकागत शताब्दीमे आत्म-किा, आलोचना, उपन्यास, किा, गाल्प, जीनिी, डायिी क्नबन्ध, संस्मिण, साकात्काि आक्द अनेक साक्हक्त्यक विधाक जन्म देलक आ साक्हत्यमे एक नि-स्पन्दन भिबामे महतिपूणषभूक्मकाक क्नवाक्ह कयलक।

ई शेय िस्तुतप पक्ताकाद्दके ैंक जे आधुक्तक गदक आविभाि एिं विकास-याताके गक्ताशील किबामे ति साक्हत्यक शीकिद्दक सहयोगमे अपेक्कत ्यान देलक एक्ह क्नमत साक्हत्य-सजनक्हाि लोकक्न नि-नि पक्तक िचनाक दाक्यतकि भाि िहन कयलक्न आ सम्पादक लोकक्न ओकि यत्न पुिस्किाि पकाक्शत कयलक्न जकि फलसिरिप मैविली गदक पदिषा भेलैक आ ओकि विविध रप-विधानमे विन्यस्त कयल जाय लागल।पक्ताकाद्दक मा्यमे सेहो नि-नि िचनाकािके पोत्साहन भेटलक्न ति हुनका सभक ्यान ओक्ह विधा क्दस आकक्षत भेलक्न जकि एक्ह साक्हत्याक्तगत सििि अभाि िलैक। एक्हसँ अक्तविक्तत विगेत शताब्दीमे साक्हत्यक विकास,याता मे अनेक उल्लेख्य योग्य काज भेल जकि ऐक्तहाक्सक महति ैंक। िचनाकाकि भाि-पिणिता, हाक्दषकता, कल्पनाशीलता एिं सिचिनद पक्तक पविणाम सिरिप मैविली गद अपनाके नि पल्लिसँ पल्लवित कयनक विगत शताब्दीमे एकि सिषोमुखी विकास भेलैक जाक्ह आधािपि एकि गदयुग कहबा समीचीन होयत, कािणि मैविली गद-गंगा शत-शत धािमे पिक्हत िडत एकि साक्हत्य सागिके भिलिक आ पूणषकयलक।

उपयुषक्त पषठभूक्मक पविपेक्ष्यमे विगत शताब्दीमे एक अक्दतीय पक्तभा सम्पक्न तपप सपूत िचनाकाकि पादुभािि भेल आ अपक्तम पक्तभाक बलपि साक्हत्यक अनेक विधाके संस्कृवित कयक्लन आ ओकि क्नविलाञ्चलक अक्भजान द’ कए भाितीय साक्हत्यक समकक्ष सिाक्पत कयलक्न जे’ िचनाक पत्येक केत्र मे, सजषाक याितो पसिानिमे ओ अपन कक्तमे ने केिल पििती पीढीक हेतु; पत्युत समकालीन िचनाकाि लोकक्नक हेतु सेहो क्शखि पुरर आ पेिक

स्तम्भ बनकर गेलाह ओ छथि डा. जिकिशोर मिा मलगातप (1918-1986)। हुनक पकाशित साहित्य विि य-पूणष अछि, कारण साहित्यक अभिव्यक्तिक कोनो विधा नहि बाँचल छल जकर सहज पयोगमे ओ उल्लेख्य योग्य सफलता नहि पाप्त कयलक। हुनका दारा रचित साहित्यक पचूरता आ विविधता अछि, किन्तु ओहिमे सर्वाधिक महत्वपूणष तथ्य थिक जे एहि परिमाण-पाचूयषमे हुनक अधिकाश साहित्यक कृति अत्यंत उच्च कोटिक थिक। जहिना हुनक रचनाक विशदता पाठकके चकित आ विस्मित क' दैत छल अछि तहिना हुनक व्यक्तिक आ्यात्मिक हियमयता सेहो अधिक जोडे पकडलक। हुनक अयत्नविहि शक्ति हुनका काहिति कवि-नूतन रचनाक हेतु उत्प्रेरित करैत छलक तरि विशाम करबाक लेल पलखति नहि देलकाण ओ जीवनक विविध पथक पथिक छथि तरि विराद आ करुणाक बीच सौहदयषक अहिनेरण करब हुनक लक्ष्य छलक। हुनक मन आ मस्तिष्कक कपाट जागत छलक। ओ जीवन आ पकृति पकृति छथि। ओ एक दूरदिशी साहित्य-मनीरी छथि जे मैथिलीमे जाहि विधाक अभाव हुनका परिलक्षित भेलक तकर पूर्त्यथ ष मनसा-वाचा-कमषणा ओहिमे लागा गेलाह हुनका दारा पयुक्त विधाहि साहित्यक विधे नहि छल,पत्युत आकरषक विधाक रुपमे ख्याति अर्जन कयलक।

कवि नूतनताक अहेरी मलगापदम। मैथिली साहित्यमे संस्मरण साहित्याहन्तगषत चारवि न-विधाक पतिष्ठा कयलक जकर सम्बन्ध् अतीतसँ अछि, यदवा संस्मरणिक संसार विरयक दृष्टिएँ व्यापक नहि, तथापि संवेदनाक गाम्भीयष आ आत्मीय-स्पशषक दृष्टिएँ अत्यंत शेष्ठ कोटिक साहित्य-विधाक अन्तगषत अबैत। भारतीय भारा आ

साहित्यमे एहि विधाक जन्म पाश्चात्य साहित्यक संग सम्पर्कक फलस्वरूप प्रारम्भ भेल जे अधुनातन सन्दर्भमे एक चर्चित विधाक रूपमे प्रचलित भेल अछि। एहि विधामे ओ विपुल परिमाण मे साहित्य-सृजन कयलनि, किन्तु अत्यन्त दुर्भाग्यपूर्ण स्थिति अछि जे मैथिलीक तथाकथित इतिहासकार लोकनिक ध्यान एहि दिस नहि गेलनि आ ओकर चर्चा पर्यन्त नहि कयलनि। भारतीय साहित्यक निर्माता श्रृंखलाक अन्तर्गत साहित्य अकादेमीसँ हुनकापर मदनक पद (1996)नामे एक मोनोग्राफ प्रकाशित भेल अछि जे अत्यंत उपहासात्मक अछि। ओकर लेखक एहि सीमित रचनाके बिनु पढनहि उपेन्द्र महारथीक संस्मरणके त्रिलोचनशरणक नामोल्लेख कयलनि अछि। इएह तँ मैथिलीक लेखकक स्थिति अछि।

भारतीय स्वतंत्रता-संग्रामक इतिहासमे सन् उन्नीस सौ बयालिसक अगस्त क्रान्तिक ऐतिहासिक दबाव एँ अत्यंत महत्वपूर्ण स्थान अछि। एहि महाक्रान्तिमे बूढ-बूढानुस नेतासँ ल' कए जुआन-जहानक रक्त बेसी गर्म छलैक आ अंग्रेजी शासन-व्यवस्थाक विरुद्ध ओकरा लोकनिक स्वर अधिक मुखर भेल छलैक। उत्साहित आ अविचलित नवयुवक लोकनि एहि महायज्ञमे अपन प्राणक आहूति देलनि आ रक्तसँ तर्पण कयलनि। मदनपदम स्वयं सजग, सचेष्ट आ निर्भीक स्वतंत्रता सेनानी छथि। एहि परिप्रेक्ष्यमे ओ मैथिली-संस्मरण प्रेमे-प्रेम डायरी शैलीक प्रतिष्ठा कयलनि अछि, किन्तु एकर अंतर्गत ओ प्रचुर परिमाणमे रचना नहि क' पौलनि वा कहिनहु होयताह तँ ओ ने तँ प्रकाशित अछि आ आब अनुपलब्ध अछि।जँ कदाचित एहि विधामे प्रचुर परिमाणमे डायरी लिखने रहितथि तँ ओ निश्चये मैथिली साहित्यक अभूतपूर्व कृति होइत। एहि

वर्सीजक अह्तगत्ता हुनक बायालसीक फर्ािि सात वदन (वनविला वनवह, 5 वदसम्बि 1953) एि फर्ािक पाँच वदन (वनविली वनवह 31 वदसम्बि 1961) पकावशत अवि जावहसँ स्वतंतता आंदोलनक कममे ओ डायिी वलखलवन तकि दारण पीडा दायक ि णिा कयलवन। एवहमे चिनाकाि सदप स्फुटन भाि ि विचाकिे अवभव्यक्तत देलवन ि अपन अनुभकि खिाकंन ि विगत अनुभकि पुनामूल्याकन कयलवन। एवहमे बायालसीक महाकाव्हतमे फर्ािक वस्वत्तमे पववसिवत्तक वचतण जावह कयलवन जे नेपाल ओिइक जनजीवनिपि पकाश देलवन।

अपन दीघसाविवत्तक जीवन मे ओ देशक िजनैवत्तक, साविवत्यक, सामावजक आ सवकावितंतमे कायितत व्यवक्ततक सम्पकिमे अयलाह, ओवह समवक्तकणके जोवड क’ हुनकासँ भेट भेल ि सन् 1953 ई. सँ वलखब पािम्भ् कयलवन जकि समापन 1986 ई. धवि अनििि चलैत िहलवन जकि एवह वर्सीजक अह्तगत्ता अवभव्यक्तत देलवन। वहनक उपयुक्तत संस्मिण मात लेखकीय मनीरापि नवह आधत अवि, पत्युत पकवत-पेम, ईश्वि पेम, स्विजावतपेम, महतक पवत शदा, विनोदवपयता आवदक समस्त विशिष्टयक िलक एवहमे भेटैि। ओ अपन दीघसाविवत्यक जीविनाह्तगत्ता जावह-जावह मातभारानुिगी आ साविवत्यानुिगी साधक लाकवक सम्पकिमे अयलाह ओकि संगवह अह्यान्य भारानुिगी विदत् िगिसँ अवभभूत भेलाह, जावह रपे हदयंगम कयलवन, जावह रपे पभावित भेलावह तवकके ओ शंखलाक कडीक आधाि बनौलवन। वहनक संस्मिणात्मक आलेख यदयवप विििणात्मक अवि तथवप ओ सत्य घटनापि आधत संगवह विगत्ता व्यक्ततक मातभारानुिग आ साविवत्यक आह्दोलन पविचायक सेहो

अवि। एकर वासिजिक अहतगता पकाशात संस्मिणि जीनिक एक पक के उदघक्तत कसि अवि जे व्यवक्तत अपन कयाकलापसँ आककरता कयलविन तकेपि ओ वलखलक। एकिी अहतगता विगता व्यवक्ततक व्यवक्ततति ओही विशिष्टय ति व्यविक्तके जनमानासक समक पस्तुत कयलक जाहसँ व्हनक संस्मिणि विस्तविकि घक्टत घटनाक सविकट आ समभि भ' सकल। ओ स्पष्ट रपे अपन यिािष पक्तकया विगता व्यवक्ततपि व्यतत कयलक जकि तिषान पविपेक्यमे ऐतिहासिक महति भ' गेल अवि।

एकर शंखलाक अहतगता मैविला भारा आ साकहत्यक कमिसि व्यवक्ततति कि संग हुनका साकात्कािि भेलक ति अवमट िपि िडलविन यिा सीतािमिि (1891-1975) (कवि लाकमक्हि, 26 वदसमबि 1953), दिनाि वश *यात्री* (1911-क1998) (कवि लाकमक्हि, 26 वदसमबि 1953), कावचीनाि ि *कविणि* (1906-1989) (कवि लाकमक्हि, 23 जनििी 1954), चहद्रनाि वश *अमि* (1925) (कवि लाकमक्हि, 30जनििी=1954), हविमोहन ि (1908-1984), (कवि लाकमक्हि, 13=माचर=1954), कुलानहद=नहदन (1908-1980) (कवि लाकमक्हि, 27= माचर =1954), सुधाशु= शेखि=चौधिी (1920-1990) (कवि लाकमक्हि, 30=अपैल =1952), सोमदेि (1934) (10=अपैल1952), सुहिद ि *सुमन* (1910-2002)(कवि लाकमक्हि,=17=अपैल1954),नहिदनाि दास(1904-1993) (कविलाकमक्हि 8 मई 1954), मायानहद वश (1) 1934 (कवि लाकमक्हि,8 मई 1951)। भोलालाल दास (1894-1977) (कवि लाकमक्हि, 15 मई 1954), लकमण ि (1916-2002)

(कविलामक्हि, 22 मई 1954), वांहिदमोहनक्मश (1890-1983) (कविलामक्हि, 14 अगस्त 1954), जगदीशर्िि पसाद ओि ि (?) (कविलामक्हि, 28=अगस्त,=1954)उमेश क्मश(1895-1967) कविलामक्हि, 4क्सतम्बि, 1954) अमनिाि ि ि (1897-1955) (कविला=मक्हि,=11= क्सतम्बि,=1954), सोमनसदाइ (?) (कविलामक्हि, 25 क्सतम्बि, 1954), नइँ क्बसाबि (कविला दशषा, जनर्िि 1954), नइँ क्बसाबि (कविला दशषा, जनर्िि 1954क), नंगटू साँढ (कविलादशषा, अगस्त 1960), कमला, यमुना आ गंगा (कविलादशषा, जुलाई 1961), तीन गोट संस्मिणि (िदेही, जुलाई-अगस्त 1961), सामा चकेबा (िदेही, क्सतम्बि 1961), गोदपाक्डनी नक्टन (कविलामक्हि, 21 अपैल 1963), ई आराढक पमि क्दन (कविलामक्हि, 16 जून 1963) िानेदाि (कविलामक्हि, 17 नम्बि, 1963), िाजिकमल चौधर्िि (1929-1967) (कविलामक्हि, 30 जुलाई 1967), मक्हिदिय (कविलामक्हि, 1 माचष 1970), िमिकषण ि ि *क्कसुन* (1923-1970), (कविलामक्हि, 2 अगस्त 1970), मिानिि ि (1906-1971) (कविलामक्हि, 16 जनर्िि, 1972), हजािीपसाद क्दि्दी (1907-1979) (कविलामक्हि, 27 माचष 1973), बदर्िनाि ि ि (1893-1974) (कविला मक्हि, 30 क्सतम्बि 1973), लक्लतानािायिण क्मश (1922-1975) (कविलामक्हि, 19 जनर्िि 1975), बलदेिक्मश (1880-1979) (कविलामक्हि, 3 फर्िि 1975), विशालकाय मक्हला (?) (कविलामक्हि 2 नम्बि 1975) िाजाबहादुि विर्शिि क्संह (1908-19) (कविला मक्हि, 25 अपैि 1975), क्मताशी चल गेलाह (कविलामक्हि, 3 अततूबि, 1976), िाजेशि ि ि (1922-

1977) (मिथिला मिहिर, मिथिला मिहिर 14 अक्तूबर 1979 3 जुलाई, 1977), लक्ष्मीपति सिंह (1907-1979) (मिथिला मिहिर, 25 मार्च 1979), जयप्रकाश नारायण(1902-1939) उपेन्द्र ठाकुर *मोहन* (1916-1980) (मिथिला मिहिर, 8 जून, 1980), कीर्तिसेन (मिथिला मिहिर, 7 दिसम्बर 1980), उपेन्द्र महारथी (मृत्यु 1981) (मिथिला मिहिर,=1=मार्च=1981), योगेन्द्र मल्लिक (?), (कर्णामृत, सितम्बर 1981), धर्मलाल सिंह (?) (मिथिला मिहिर, 29 नवम्बर 1981) सुभद्रा (1911-82) (मिथिला मिहिर, 24 अक्तूबर 1982) राधाकृष्ण चौधरी (1924-1984) इत्यादि। कविवर सीताराम झा, बाबू भोलालाल दास एवं राधाकृष्ण चौधरी दुइ संस्मरण उपलब्ध होइत जे एक तँ जीवितावस्था मे आ दोसर मृत्यूपरान्त जे क्रमशः मिथिला मिहिर, 20 जुलाई 1975, मिथिला मिहिर, 19 जून 1977 एवं कर्णामृत, जनवरी-मार्च 1986 मे प्रकाशित भेल। उपर्युक्त संस्मरणात्मक आलेख ओ हुनक जीवन चरितक इतिहासे नहि प्रस्तुत कयलन्हि; प्रत्युत हुनक साहित्यिक अवदानक एवं अवदानक संग्रह-संग संगठनात्मक पक्षक लेखा-जोखा प्रस्तुत कयलन्हि अछि जे मातृभाषाक विकासमे उल्लेखनीय योग्य अवदानक कारणे चर्चित अछि। हुनकासँ भेट भेल छलन्हि प्रतिष्ठित मात्र मैथिलीसाहित्य मनीषी लोकनि धरि सीमित नहि छलि, प्रत्युत ओकर फलक विस्तृत छल तकर पार प भेटैछ जे विश्वविख्यात भाषा शास्त्री विद् वरेण्य सुनीतिकुमार चटर्जी, हिन्दीक प्रख्यात मनीषी आचार्य हजारी प्रसाद द्विवेदी, महान राजनेता जयप्रकाश नारायण, मिथिलाक प्रख्यात चितकार उपेन्द्र महारथी, मिथिलाक यशस्वी राजनेता ललितनारायण मिश्र एवं महान् लक्ष्मीश्वर राजा बहादुर कामेश्वर सिंह इत्यादि

व्यक्तितक पसंगमे अपन क्जी धाणािके र पााव्यत कयलक्त।
ताहसँ अक्तवितत अपन पूज्य हक्याताशी आ पूज्याए माशी सेहो संस्माणिक चिना कयलक्त। एक्ह क्सींजिक अह्तगत्ता समाजक उपेक्क्त आ क्तसिक्त गिष्क पक्त हुनकि हदयमे असीम शदा, अगाध पेम आ अपाि सहानुभूक्त िलक्त तकि यिािषाक पक्तर प भेटैि सोमन सदाय, गोदपाविडीनी नक्टन एिं नगटू साँढ मे जाक्हमे ओकि ास्तविकि पष्ठभूक्मक खिाकंन कयलक्त। सकिािी तह्तक पविशि मे भषटाचािी िनेदाकि संग कोन क्सक्तमे साकात्काि भेलक्त तकि यिािषक्कया-कलाप क्दस हुनक ्यान केक्ह्दत भेलक्त तकाी एक्ह क्सींजिमे समाक्हत कयलक्त। व्यसिायसँ ओ होक्मपैि हिवि। ओ एक विशालकाय पहाडी िवाकीक पसंगमे सेहो क्तखलक्त जे हुनकासँ इलाज किबय आल िलीह।
हुनकासँ भेट भेल िलक अह्तगत्ता ओ स्मक्तकण आ साक्हक्त्यक वितितताक जीनि पविचय, विचाि-धाािा, साक्हक्त्यक पिक्त आ सामाक्जक गक्तविक्धक पविचय पस्तुत कयलक्त। एक्ह संस्माणात्मक क्तबह्धमे ओ ने केिल पाचीन पविपिटीक पवित्याग कयलक्त, पत्युत निजीनि दक्त आ निि पदक्तक शीगणेश कयलक्त। एहन अनुभूक्त पकि कक्त सभमे ओ अपन अतीतक ओक्ह पसंगक उदाििना कयलक्त जे हुनक साक्हक्त्यक व्यक्तिततिकि क्तयामक क्सद भेल। एक्ह क्सींजिमे जतबे संस्माणि उपलब्ध अवि ततबे ओ तदुगीन साक्हक्त्यक गक्तविक्धक दस्तािजि विकि जे मैविली साक्हत्येक्तहासमे अंह भूक्मकाक क्तिहि कािि। भािनात्मक आ यिक्तितताक संगक्ह-िचािविकताक अदूत समहिय एक्हमे भेल अवि।
सैदाक्तक दक्त ाएँ, हुनक संस्माणि-साक्हत्य साक्हक्त्यक संस्माणिक

विशिष्ट गुणसँ अलंकृत आ महत्वपूर्ण अछि। एहिमे कथात्मकताक दर्शन एँ कथा, विचारिकताक दर्शन एँ निबन्ध आ भावात्मकताक दर्शन एँ कविता, एहि तीनू विधाक त्रिवेणीक अद्भुत पूर्ण संगम भेल अछि। हिनक संस्मरणमे अनुभूति, चिन्तन, वर्णन, विचार, भाव, यथार्थ आ कल्पनाक अद्भुत समन्वय भेल अछि। हिनक संस्मरणात्मक निबंधक मूलाधार थिक भावना जे काव्यात्मकताक गुणसँ अंलकृत अछि।

एहि रूपक संस्मरणिक अनुशीलनसँ अवबोध होइत जे हिनका भारतीय साहित्यक संगहि-संग पाश्चात्य साहित्यक सेहो गहन अध्ययन छलनि। एहि विस्तृत बौद्धिकताक परिचय हुनक उपर्युक्त संस्मरणात्मकताक डेग-डेगपर उपलब्ध होइत। ओ अपन एहि चिन्तनात्मकता एहन प्रतिभाक प्रमाण कयलनि जाहिसँ पाश्चात्य साहित्यकारक लोकप्रिय विशिष्ट पक्षपद चिन्ता सभक सेहो वर्णन प्रस्तुत करबामे कनियो कुंठित नहि भेलाह जे ओहि अवसरक हेतु उपयुक्त छल। एहिमे गाँधीवादक संगहि-संग मार्क्सवादक रीक स्थल-स्थलपर भेटैत।

हुनकासँ भेट भेल छल मे तीव्र मानवीय संवेदना, व्यापक सहानुभूति, सजल करुणा, ममता आ आत्मीयता अछि जे अत्यन्त दुर्लभ अछि। एहिमे नोर आ तीव्र आन्तरिक गम्भीर चिंतन तथा सामाजिक, राजनीतिक विचार-धाराक स्पष्ट रूप परिकल्पनासँ कहल जा सकैत। एहिमे साहित्यकार, शिक्षाविद्, विदित विषयसँ सम्बन्धित व्यक्तिक संग साक्षात्कार अछि जे तिथिमान परिवेशमे अत्यन्त जानदिशक आ ऐतिहासिक पृष्ठभूमिक प्रमाण करैत।

मणिपद्म एक पैघ यायावर छथि। साहित्यिक यायावरिके एक अद्भुत

आकरषा अपाना क्दस आककरषा कर्ाि, ओ महत्त मुग्ध भ' कए ओक्ह क्दस आककरषा भ' जाइि। एहन साक्हत्य सजषामे ओ संिदिनशील भ' कए क्ापिक हिर्ि। यायार्िक कममे हुनकि स्िृत्ताम पडक्हाि मक्न्दि, मसक्जद, मीनाि, विजय स्तम्भ, खण्डहि, समाकि, क्कला, कक्ब्रस्तान आ पाचीन महलक संस्कृक्त, कला आ इक्तहासके एकक्त्रत क' कए अपन याताक पष्ठभूक्म तैयाि कयलक्न। क्हनक उपलब्ध याता-साक्हत्य संस्मणात्मक विक जाक्हमे ओ एक सामाह्य याती जकाँ अपन पभािि, पक्तक्कया आ संिदिनाके महत्ि देलक्न। एक्ह सभ के ओ ओक्हसम गेल िलहुँ नामे याता िताह्त पस्तुत कयलक्न जकि अह्तगषा कोइहाँस गढक साँि (क्विला-क्मक्हि, 21 अपैलि 1963), ई आराढक पिमक्दन (क्विलाक्मक्हि, 16 जून, 1963) पुण्यभूक्म सक्दसािपाही (क्विला क्मक्हि, 14 माचष् 1968), कुलदेिी विशिशि (क्विलाक्मक्हि, 11 अगस्त, 1968), क्ाशूलातट पिस (क्विला क्मक्हि, 12 जनििी, 1969), एकटा पानि पक्तष्ठान (क्विला क्मक्हि, 10 अततूबि, 1971), पसंग एकटा समाकिक (क्विलाक्मक्हि, 10 अपैलि, 1975), मक्हरीक साधना केह्द (क्विलाक्मक्हि, 29 जून, 1975) एिं विसफीसँ िनगाम धर्वि (क्विलाक्मक्हि, 25 क्दसम्बि 1983) आक्द उल्लेखनीय अर्वि।

ओक्हठाम गेल िलहुँ मे ओ साक्हत्यक समग जीिनक अक्भव्यक्क्त रपमे गहण कयलक्न। क्हनका लेल पकक्त सजीि अर्वि, यातामे जे पात भेटलर्विन ओ हुनक आत्मीय आ स्िजन बक्न गेलर्विन। क्हनक याताा साक्हत्य महाकाव्य आ उपह्यासक विििटित, कलाक आकरषा, गीतकाव्यक मोहक भािशीलता, संस्मिणक आत्मीयता, क्नबह्धक मुक्त सभ क्किु आनायासक्ह भेक्ट जाइत अर्वि। ओ जे देखलक्न,

अनुभि कयलका तकि यिाषिकात एहमे पस्तुत कयलका।
एकि सािपवि िवशष्ट विक-औत्सुतय जे पाठक एकबेि पढब पािम्भ
किंि तँ ओकि समका जा धवि नहि भ’ जाइि ता धवि हुनका
चैन नहि होइत िका। हुनका भूगोलक विशद जान िलका ते कोनो
सािनक भौगोलिक िणाा कबािमे ओ कपुणता देखौलका जकि
यिाषि पवि‍चिय एहमे उपलब्ध किौलका।एहि शंखलाहतगता जे
िचनाहि उपलब्ध अवि ओकाि कहत-मननसँ स्पष्ट पवताभावित
होइत अवि जे िवाषा विरयक कल्पाकंन क’ कए पाठकक समक
पस्तुत कयलका जे पाठकक समक िवाषा विरय-िस्तुक समग कात
सोिाँ आका जावि।
हुनक याता-िताहत शैलीपि औपहयासिक शैलीक पभाि पविलकत
होइत अवि जे ओहमे सािन विशेरक विस्तत-कातण कयलका
जहिना ओ देखलका तहिना तकि यिाषि कातण पाठकक समक
पस्तुत कयलका। पाठकके सहसा होमय लगैत िका जेना ओहो
ओहि याताक सहयाती होवि। हुनक िणाा-कौशल कातात्मक होइत
िलका। एहन कातात्मक िणाा काशयये अपवाभ पवताभाक पविचायक
विक जे सामाहय िचनाकाि दाि सम्भि नहि। ओ जाहि िस्तुक
िणाा कयलका तकि िकंग कमेहटी ओहिना पस्तुत कयलका जेना।
कावि ककेट खेलक मैदानसँ िवडयो ाि िकलभीजनपि देल जाइह।
याता-विािण मे िाचकता अपविहायष गुण मानल जाइि, तकि
सम्यक काहि हुनक ओहि ठाम गेल िलहुँ मे भेल अवि। ओ
अत्यहत भाािक हदयक व्यकत हिवि ते कानु कोनो ाि-देरक
ओकि यिाषि िणाा कयलका। अपनाके सत्य आ जाानक भण्डाि
नहि बुवि क’ नहि ताि पाठकके वशकत कबािक मनसा हुनकि

कदाचि नहि लिक्, जेना ओ पञ्चभूतसँ भिन्न-भिन्न चर्वतिक सहायतासँ, भिन्न-'भिन्न दका कोण उपक्सित कयलक जाहि पकार्ि ओहिठाम गेल लिहुँ मे जेना ओ अपनहि संग तकषकर्ति याताक समान कयलक। एहि शंखलाहत्तगषाक चिनामे ओ जे कि मैविली पाठक के द' पौलक. ओ सभ हुनक आत्मपर्किगक सगित कनि विक।

मैविलीक पाचीन पक्तकाद्दक अनुखीलनसँ जात होइि जे हुनकि पबल इचि शक्तत लिक्ि ओ अपन व्यक्तिगत एि साहित्यक जीनिक आधािप आत्मकिक एक विस्तित पुस्तकक चिना कर्वि तकि पक्तमान उपलब्ध होइि सास्क्कतक सक्वत मधेपुि, मधुबनी दािर पकाव्शत समक्त नामक समार्वका ति मैविली पकाश- मे पकाव्शत *बाटे-घाटे* (1983) एि *अनजान कक्तज* (1983) मे। बाटे-घाटे पहिने पकाव्शत भेल समक्तमे जे पश्चात् जा क' मैविली पकाश मे पुनप पकाव्शत भेल। एहि दुनू आलेखसँ ई विरय स्पष्ट होइि। िस्तुतप ओ आत्मकि क्लखलक ि नहि से अनुसह्धेय अहि।

मक्पदके भाराप जबदिस्त अक्धकार् लिक। हुनक भाराक चमक कहियो फिकतका नहि पडलक। अपन विलक्ण भाराक कािणे ओ मैविलीमे अनुपम उदाहणि हिवि। मैविलीमे ओ अपन भारा आ िणिषा-कौशल कािणे पख्यात हिवि। चाहे ओ पकक्तक दश्य होि महानगरकि कोलाहन पूणष ितािणि हो,ओ ओकि अत्यंत मनोहारि िणिषा अपन भाराक बलपि कयलक। हुनक डायरी, हुनकाएँ भेट भेल िल, ओहिठाम गेल िटैहुँ एि आत्मकि सभक भारा-शैली अलंकत अहि जाहिमे कतहु असिभाविकताक आभास नहि भहैि

।विसम्ब-धावमषाता हुनक भाराक साविधक विशाष्टय विक। एहन भारामे संगीतात्मकताक लय आ धावि-पावि अवि।
भाराक धनी मवगापद अपन विचावि-विलीवक पत्याख्यान मे शबदक एहन अनुपम विन्सास कयलवन जे हुनक भारा मे दहद रप आ सुसविदता अवि जे पाठकक संग हुनक व्यविहावि. सौजन्य, आसावतत आ हास्य-व्यंग्यक बोध होइवि आ जगक संग ओकवि व्यविहाविमे विगि ओ दूविदशी कालपवनकताक पुट भेटैह। ओ तथ्यपूणष भाराक पयोग कयलवन। उपयुषत विचनावदमे भारा-काव्यमयी अवि जे सवि-सविलपवि ओ अनुपास, उपमा, उत्पेवक आ रपकक विडी लगा देलवन जे वहनक एवह साववहत्यक अनुपम उपलवबध विक।
वहनक भारा कवविलाञ्चलक लोक मावटक भारा विका वहनक भारापवि वहनक व्यवक्ततवि एतेक गम्भीवि विप विलवन जे सुगमतापूविक व्वहहल जा सकैवि। वहनक भारामे एहन अदूत शवक्त सम्पहन आ विभवि पूणष अवि जावह काविणे वहनक विचना सभके बाविम्बावि पढबाक उत्सुकता पाठकक मनमे सतत जागत होइत वहैवि विहे उपहयास हो, कवि हो, नाटक हो, एकाकी हो, संस्मविण हो, याता-विताहत हो, डायवी हो वि आत्म-कवि हो। एवहमे साधु भाराक संगवह-संग ठेठ चलहत भाराक सोतवस्विनी पविवहत कयलवन। लोक-पचवलत शबदाबलीके ओ मने-मन सवीकावि क' लेने हवि जकवि यविाविषपवतरप हुनक समग साववहत्याहतगषत पवतधवित होइत अवि। शास्त्रीय-भाराक संगवह-संग ओ आंचवलक भाराक अनुवकविष्ट उपमाक पयोग पचुवि पविमाणमे कयलवन। जवनका कवविलाचलक गाम्य-शबदाबलीक उपमानक विसासवन कविबाक होइन ओ मवगापद-साववहत्यक अविगाहण कवि जावहमे हुनका एहन-एहन शबदावलीक संग

साकारताकाि होयतक्ष तकि यििाष अिष्बोधमे अिश्यि कक्ठनता होयतक्ष। अह्ष्याह्ष्य भाितीय भारामे क्ठनक िचनाक्ठक अनुिाद किबा काल कक्तपय समस्या उतपह्ष होइि जे ओकि समानािी शब्द सुगमतापूिषक नक्ठ उपलब्ध होइि जाक्ठ सह्ष्दभषमे ओ पयोग कयलक्ष।

विरयगत वििविधताक अनुरप क्ठनक भारा-शैली विविध रपा विक। संस्कृत गाक्षभषत िक्षत भारा, काव्यातमक आ भाि बहुल भारा, सामाह्ष्य लोकक भाराक संगक्ठ-संग ओ आलंकाविक भाराक के पयोग कयलक्ष। एक्ठ शंखलाह्ष्तगषत िचनाक्ठमे क्षविलाञ्चलक माक्टपाक्षक अपूिष सौष्ठि अिि। ई अतयह्ष्त िट-िट ितयक पयोग कयलक्ष जाक्ठसँ भारासँ चमतकाि आक्ष गेल अिि। एक्ठ िचना-समूहमे संलाप-शैलीक पयोग ओ कयलक्ष। काव्यक समानक्ठ क्ठनक गदक भारा-शैली सेहो अतयह्ष्त सिल, पिाह पूणष आ माधुयष युतत अिि। भाि, भारा आ संगीतक क्तिणीक संगम बना क' ओ गदक क्षमाण कयलक्ष। हुनक शब्द-चयन अतयह्ष्त क्शाष्ट, भािानुकूल तिा सिल िातय-विह्ष्यास अतयह्ष्त सुदढ अिि। हुनक गद-भारा मे सिषत्र कविताक सिसता, तल्लीनता, तह्ष्मयता आ तीिता अिि। फलतप पाठक कखनो कोनो सिलपि अरक्षचकि नक्ठ अनुभि नक्ठ किै, पतयुत कलाकािक भािक संग बहैत चल जाइत अिि। ओ भाि-पिण िचनाकाि हिि। अतएि जाक्ठ सिलपि माक्षमषक अनुभूक्त आ विलकण काल्पक्षकताक समह्षिय अिि ओतय भाराक सौह्ष्दयष पेकणीय अिि। अपन भाििक अक्षभव्यक्तमे ओ अतयंत आलंकाविक एिं व्यंजनापूणष शैलीक पयोग कयलक्ष। हुनक शैलीमे कल्पनाक पौढता, भाििकता, सजीिता आ भाराक

चमत्कारि दर्शनीय अछि। हुनक भाषा-शैलीमे स्पष्टोनत्व अछि, दर्शनक मर्मिाक शक्त्ति अछि, सुकुमारिता आ ललिता अछि जे मैथिलीमे अन्यत्र दुर्लभ अछि।
मकरापद गदक उदात्त रूप उपलब्ध होइछि हुनक डायरी, हुनकासँ भेट भेल छलि, ओकर ठाम गेल छलहुँ आ आत्मकथामे। ओ गदरचना कयलनि कविक समान, हुनक कविताक गुण थिक। एकर कर्सौटिक गद तकरि प्रमाण प्रस्तुत करैछि जे ओकरमे शब्दालंकारक संगहि अर्थालंकारक अपूर्व चमत्कार भेटैछि। हुनक गद-साहित्य ओ पद-साहित्य हुनक व्यक्तित्वक अखण्डता के प्रमाणित करैछि। जहिना विमितफान मलयर्षिक पोर्लीक गदक समानहि साकेतक होइत छलि तहिना हुनक गद-साहित्य विरयोविशुद आ भावित्त अछि। ओ अपन डायरी, संस्मरण,यात्रा तिाह्त आ आत्मकथामे एकरा आधार बनैलनि आ अपन भावनाक, अपन कल्पनाक, अपन मूल्यबोध आ मत पक्क विस्तार कयलनि एकर कर्सौटिक गद-रचना एक भिन्न रचनाक प्रमाण प्रस्तुत करैछि।
सितिहासायोति मैथिली गद-साहित्यमे हुनक परिश एक महत्त्वपूर्ण ऐतिहासिक घटना थिक जे ओ सितिहासयोति गद-साहित्यक स्पष्टाक रूपमे ख्याति अर्जन कयलनि। गदक स्वरूप जाहि रूपे विकसित आ रूपान्तरित भेल जा रहिल अछि तामे आधुनिक गद कहबासँ जकर बोध होइत अछि तकर साक्ष्य, प्रमाण आ उदाहरणक भण्डार थिक हुनक गद-साहित्य। हुनक गदमे साधु-भाषाओं चलन्त-भाषा, धरौआ, गोष्ठी ओ दरबारी शिष्टक प्राचीन, आधुनिक आ आधुनातन शैली हुनक अक्षय गद-साहित्य एकर साक्ष्य थिक जकरा हम गदक अणु-विशि कही तँ कोनो अत्युक्ति नहि हैत। हुनक

गदमे सब ककि अवि भाषि, हल्लुक, गम्भीि, चपल, तत्सम, तदि, देशज, वि देशज, समतल, उबड-खाबड, अत्युक्त, किोक्त, सिभाविक्त ति ओकसँ कलल-जुलल गि-िवाणी अवि। साक्कि कताचाकि सककट, ऐशियक आत्मविककणि कनक गदक सिपिवि उपलकध वि क। जीनि समक्त, पवकि, यिौक्त ओ सतिहक्त वि क कनक गद।

कनक गदक अ्ययनसँ मैविली गद-धाकिे जानल जा सकैि, जे ऐक्तहाक्सक त अहयाहय काणिे अहय कोनो मैविली गदकाकि पसंगमे नकह कहल जा सकैि। कनक गदमे पद-िहदक िणी अनगुकजत भ’ हिल अवि। कनक ितय ्जु अवि, कशाकत सैहय-दलक समान ओ कालटि चणि कला क’ चलैि, ओकि शंखला आ धाक्किकता युक्त काभषि अवि जे एक अवकपायक कमतासँ सम्बद अवि। कनक गदक कलप ि यूकट ितय नकह अनुचिद वि क। यदघवि कनक गद महाकवि कि गद वि क ताविा ओ पद-गहधी नकह। कनक गद साक्हतय अपकाभ पकाभाक हस्ताकि वि क जे बेगिन आ दीक्तपूणषअवि।

जे तयो पाठक हुनक समग गद-साक्हतयके ्यानसँ पढने होयताह हुनक कवशात धाणिा होयतक जे गद-कशलपमे ओ मैविलीक सिषोष्ठ-पुरर हिवि ति हुनक समकालीन गद-साक्हतय अत्युच्च अवि। विशेरतप हुनक संस्मणिक गद तीि आ गम्भीि अवि। गद-कशलपक एहन ऐशियष़ एहन िभि अहय कोनो गदकाकि िचना मे पकट भेल अवि, ताकमे सहदेह अवि।

हुनकासँ भेट भेल िल, डायिी, ओकठाम गेल िलहुँ एिं आत्मकिाके पकाशन कावि क अनुरपक एकक संग विशलेरण कयल

अछि। चारि धार्मिक चिन्ह समूह के सम्बेत रूपसँ हुनकासँ भेंट भेल छलि नाम देल अछि तकरा दुह कागि अछि। पछिमतप हुनकासँ भेंट भेल छलिक संख्या अधिक अछि आ द्वितीय जे साक्ष्यात्मक दक्ष संसभ तँ संस्मारणिक श्रेणी मे अबैत अछि।

■

अमकि एकाकी-पहसनक सामाव्जक यािष

नाटक पकत्या सामाव्जक कला विक। एकि आयोजन सँ ल' कए अिलोकन धर्वि समस्त कया समाजे दाि सम्पाव्दि होइत अवि।अह्ततप्एकि पदशषा समाज दाि सामाव्जक लेल कयल जाइत अवि। अतएि एकि र्सि ससाज दाि सामाव्जकतासँ अवि सम्पुष्ट।एकि संचिनाक मूल पेणिाक सिल सामाव्जक विक। लेखक समाजगत पेणिासँ अनुपाव्गत भ, कए नाि य' चिना व्दस पित होइत वि। समाव्जक जीनिमे घव्टत अेक्हाि विमिह्न कया कलाण, रि-भूरा, भारा आव्दक आधपि नाटककाि अपन नाटय कया कक्तमे कानिक, पात, सि, संिाद आव्द विमिह्न नाटकीय ततकि सिमाशि कौति वि नाटय-कताक मानस पटलपि समाजपि समाज जे सिरप अंव्कत होइत वि ओकाि ओ पुनप सामाव्जकक समक पदव्शषा कौति वि। कोनो देशक समामाव्जक विकास नाि नाटय-साव्हत्योक्हाव्सक तुलनात्मक विश्लेरणसँ स्पष्ट भ' जाइि नाटक संचिनामे सामाव्जक पेणिाक सिरप हिल अवि। मैविली नाटय पमि्पाकि अिलोकनसँ सामाव्जक पेणिाक सिरप पूणष पेण स्पष्ट भ, जाइि जाइद। एव्ह मे समाजक यािि र्सव्क्तक व्यतण नाटककाि अत्यह्त सूक्ष्मता सँ क' रप कए िजिविकताक पविचय देलक्त अवि।पत्येक महतिपूरष नाटककाि एिं एकाकीकाि ओ अपन कक्तक माध्यमे जीनिक कोनो ने कोनो अपन अह्त

दलक के अपनसामाजिक, दार्शनिक, नैतिक, माननीय उपलब्धि के अभिव्यक्त करैत छथि। प्रत्येक साहित्यकारक सामाजिक दायित्व होइत छनि; किन्तु दृश्य साहित्य लिखबाक कारणे नाटककार अन्यक अपेक्षा अधिक उत्तरदायी होइत छथि नाट्यकला अपन सार्थकता तखने सिद्ध क' सकैत छथि जखनि ओ सामाजिक चेतनाके कला अपन संस्पर्श करैत छथि। इएह कारण अछि जे नाटक वा एकाकी वा प्रहसन सामयिक होइत अछि। जीवनिक जटिलता ओ गूढ रहस्यके खोलि क' देखबाक कारणे आधुनिक सहृदयमन जाहि द्रुत गतिएँ एकर माध्यम जतेक सुगमता सँ भ' सकैछ ततेक साहित्यक अन्य कोनो विधा सँ नहि। जनसमाजमे सामयिक विसंगतिक ओ समाज प्रति चेतना उत्पन्न करब नाटककारक प्रमुख दायित्व होइत छनि। शिष्ट व्याप्त कुनीति एवं यान्त्रिकता सँ परिचय करा क' उदबुद्ध करब नाटककारक धर्म होइत छनि। एहन पैघ उत्तरदायित्वक सफल निर्वाहक परिमार्जित अछि जे ओ विषविशेष वा सिद्धान्त विशेष वा दल विशेष धरि अपनाके सीमित नहि राखथि; समाजक समग्रता के प्रत्येक कोणसँ सामाजिकक सम्मुख प्रस्तुत करथि। एहि लेल नाटककारके अपन कला मे परिस्थितिक व्याघातक विरुद्ध संघर्षरत रहिमय पड़ैत छनि विराम ख्यातिक हेतु ओ छथि मे नहि प्रत्युत नाटककार सामाजिक शक्तिक गम्भीर अध्ययनक हेतु केन्द्रित होइत छथि। सामाजिक विवेचनाक फलस्वरूप नाटककारक दायित्व अधिक भ' गेलनि अछि। ओ सब ओकर विरोध करैत छथि। आधुनिक विज्ञानक आविष्कारक फलस्वरूप मानसिकजक परिवेशमे तीव्र गतिएँ परिवर्तन भ' रहल अछि। प्रगति घातक, प्रतिक्रिया, व्यक्तिवाद, आदर्शवाद सँ

लोकके धाणिा शनैप शनै समाप्त होमय लागत अवि। अतीतक व्यसिि आव्द तिषान पवपैक्यमे जीनि-यानक लेल पयाप नव्ह, व्हि गेल अवि। समाजमे एक विक्यित वसिक्त अत्पाह्न मे, गेलैक अवि एहन असिि मे समाजसँ बनब तिि समाजके बनायब नाटय पक्कयाक आधािभूत हेतु बक्त गेल अवि। ते नाटककािके सामाव्जकक रक्यसँ पभावित हैबाक होइत व्कि। संगव्ह हुनका समाजके सुरक्य सम्पन नबयबाक पयत्त कयि पडैत व्कि। नाटकमे नाटककािक मानव्कताक विम्ब हिैत अवि ई पक्तविम्ब आत्मव्काष्ठ एिि सियिं पूणष होइि। नाटककािक मानव्सकता हुकक गहीत संस्कािि तिि समाजमे घव्टत घटनाव्दक पविणाम होइत अवि। यदयले मैविली साव्हत्यमे समस्त पूििचालक भाराक अपेक्ता नाटय-साव्हत्य समदशली पिम्पािक व्दग्दशषा एकि पाव्विभकिसििव्हसँ इक्वात होइत अवि तािव्प एकाकी साव्हत्यपि दक्ष पात कँिति िि तँ एकि उदय ओ विकास बीसम शताब्दीक चतुिष दशाव्द सँ पािम्भ होइत अवि। तिषान युगमे जीिनक व्यस्तता, अशाव्त, कायाव्यतयक कािणे अिकाशाभािि तिि जीिनक बढैत दह्द एकि विकासक मूलमे अवि। व्शाक्त पचाविके फलसिरप विदालय, महाविदयालय ओ विशिविदालय मे अव्मकयोपयोगी एकाकीक काह्ति माग तिि व्डियो-टेलीव्भजनक पचाि-पसाािक फलसिरप एकाकीक लोकव्पयत बढैत अवि। व्दतीय विशि युदक असिपिि गद-साव्हत्यक पचात्मिक साधनक आिश्यकता भेलैक। फलत; एकाकीक अनेक रपक विकास भेलैक जाव्हमे व्डियो फ्ले. फीचाि. फेटेसी आव्द पमुख अवि। कह्तु मैविली एकाकीक विकास ओ पचाि-पसाि सीतत्योि युग मे भेल अवि।

बीसम शताब्दीक क्षागत पाच दशकसँ मैविली साक्हत्यक गक्तविक्षपि दक्षट क्तकेप कयाक्तहा सविक्षक चक्षत्ता साक्हत्य-मनीरीमे जक्तक गणना जाइत क्ति ओ वि अगगण्य साक्हत्य-क्षहत्तक, सशतत कवि, उपहयासका, कािका, एकाकीका, पहसनका, इक्तहासका अनुिदक, सम्पादक, ओ आलोचकक र पमे विक्षशष्ट सिान खिक्तहा चह्दनाि क्ताश *अमि* (1925)।क्हनक िस्तविक पक्तभाक पस्फुटन भेल हास्य-व्यंग्यसँ संयुतत काव्य-सजनसँ1 एही कािणे मैविली पाठकक सिक्षिक चक्क्षि व्यक्तत र पमे तख्याक्त अवजक्षा कयलक्त। तािक्षा हुनक जतबक्ह एकाकी ओ पहसन अदताक्षा उपलब्ध भ' हिल अवि ओक्ह आधाि पि हुनका शेष्ट एकांकीकाि ओ पहसनकािक र प मे गणना कयल जाय तँ एक्ह मे कोनो अत्युक्तत नक्ह। क्हनक क्षिशष्टय एक्ह विरियके ल' कए अवि जे ओ एकाकी ओ पहसनमे जँ गंगा-यमुनाक धाि पिक्हत कयलक्त अवि तँ ओक्हमे हास्य व्यंग्यक लुप्त ससििती सेहो दक्षा टगत होइत अवि जे क्हनक िचना धाक्षमषाताक क्षिशष्दय विक।

चह्दनाि क्ताश अमि सिंयि एक कशुल अक्षिनेता, कुशल क्तदेशकक र पमे अपन यिािष पक्तभाक पविचय अपन कायषकालमे देलक्त, जकि फलसिर प समाज मे ओ पक्तष्ठा अवजक्षा कयलक्त। एस. एल. एकेडमी लहेवियासियिमे अध्यापक पाविक्षमक कालक्हसँ सेिकाक्ति काल धवि क्षहन्न-क्षहन्न उत्सपि नाटक, एकांकी पहसनक मंचनमे क्तदेशकक र पमे सम्बद्द िहलाह जकि पक्तफल हमिलोकक्त देक्ख चुकल ी जे मैविली क्षफल्मक आम्हुतिनािष कहयादानमे लाल-काकामे अक्षिनय क' कए मैविली िगमंचक विकासािष अक्षिनाक अिदान देलक्त जकि फलसिर प ओ समस्त

मिथिलाचलमे लोक नाटयता अवरूद्ध कयलक। इएह कारण अछि जे हिनकामेचिनमे चोपयोबाता अदयोबाप अकुरण कि, जकर पक्ष फल ई भेल जे कवालपय नाटक एकाकी ओ पहसनक मंचन हिनक कुशल कादेशन मे भेल। ओ समाजके अतहन्त समीपसँ देखलक तरा ओकर सतीर क्षत अपन एकाकी ओ पहसनमे सामाजिक यथार्थक निस्तविक मूल्याकन गेल अछि। ई अपन एकाकी ओ पहसनमे मिथिलाचलक सामाजिक जीनिक यथार्थदी सरिप पकड उपसरापिन कयलक। ओ नर समाजक कल्पना कयलक तरा अधुनाक जीनिसँ आयल विकिक्तके केन्द्र-विन्दु बनौलक जे सामाजिक पर्विपिक्षके जनबामे सहायक ह्सद भेल।

मैथिलीक विभिन्न पत्रकादीक अहरिरण अनुसंधान ओ सर्किणोपिहित अदावा हिनक जे एकाकी ओ दक्षटपपि आयल अछि औ विक टोपी (विदेही 1950) समाधन (1955) मे संगहीत पहसन आधुनाक पाठय पणाली दुइ एकाकी कविता कारिकि पाठशपाला एर शमदान; घँिया लूवि (विदेही नमिारि <u>क्दसम</u>ारि 1958). (मलर्विमिथिला दशाम (1965) बाइचाहस (मिथिला मक्हि 14मार्च 1965) बहामसरानि (पटना विडयो सँ पसारित) हाककमक हाककम रि ननक्दओक ननक्द, क्दशा बोध (मिथिला मक्हि 16 जुलाइ 1978) पत्रकाक्द एर विभिन्न संगहमे संगईीत अछि, एम्हि आका क' ओ समगँ एकाकी एर पहसनक संगह पकाक्शात कयलक अछि *खजरि टोपी* (2005)क' नामे जाक्हमे कौआ ल' गेल कान' एक नर एकाकी इक्टगन भेल अछि। एक्ह टका सँ हुनक कुल क्सला क' एगारहि एकाकी पकाक्शात अछि जाक्ह दुइ पहसन आ शेर एकाकीक पर्विपिक्षमे हिनक मूल्याकन कबिाक उपकम कयल जा हिल अछि। ओ मैथिलीक

एकर काधाहत्तगण एक नि पकतमान उपकस ित कबिामे सहायक भेलाह।

कहनक, एकाकी ओ पहसन मे पाठक एिं दशकके मनविलाचत्तक समाजक पकतविमिब भेटैि। ओ अपन एकाकी एिं पहसनमे समाजमे पचकलत समसयाकदक सपष्ट अंकन, सूकम कािकिण एिं विरय उपसािपन अत्यहत पभािपूणष शैलीमे कयलकन। ओ जाकह समसयाके उपकस ित कयलकन अिं ओ ओकह कपजक सायेक धिं सीकमत नकह िहल; पत्तेन भविष्य कालीन पविणामक सपष्ट अंकन कबिामे सहायक भेल। हमिं धािणि अिं जे भविष्यमे सेहो कहनक एकाकी एंिं पहसन ओकहना पभािअनुभून हैत। यकतपय समसया एहन अिं जे कोनो कस ितमे कक्हयो नष्ट नकह हैन-जेना दकलतपि भेकहािं अहयाय, अत्याचाि, शोरण, पीडन . शाकाक पविकतपा सिप भषटचाि, िाजिनीकतक भबटता, सामाकजक असमानता इत्याकदके ओ एकाकी एिं पहसनमे युगीन सहदभषके महति देलकन। ओ जीिि पयहत अधययनअधयापनसँ सम्बद िहलाह आ समाजक विकिहन सतिकि िदािािी के अत्यहत समकतासँ दैखलकन। ओकि कतपय समसयाकद जे हुनक मनमे गडलकन तकि ओ एकाकी एिं पहसनमे सजी रपे पसतुत कबिाका उपकाम कयलकन। जेना कोनो कानून बनैत अिं सिषाधािणिके हयाय कदअयबाक हेतु, कहतु कखनो-कखबेसीबनो हयायमे एतेक सी जडत आका जाइत िैक जे ओकहसै हयाय नकह भेक्ट पबैि। अतएिं पितिषाशील समाजक लेल आिश्यकता अिं नकह भेक्ट पबैि। अताएिं पितिषा शील समाजक लेल आिश्यकता अिं जे कानूनमे सेहा समय-समयपि पविितिषा हो। कैसि अत्यहतपीडा दायक कामािी िैक जकि औरध नकह

िक। एकमाता मत्युक अक्तवितत आन कोनो उपाय नक्ह िक। तखान दोसि यिािषदयमणिक कानून हैबाक चाही।

मैविली हश्य काव्य मे चह्दनाि क्तश अमि दस्तक देलक्त पहिसनकाकि रप मे। क्हनक पक्हल पहसन पकक्शत भेल टोपी। एक्ह पहसन अनुशीलनसे अबिोध होइि जे एक्हपि व्यंग्यसमाट हविमोहन का (1908-1984) क पक्सद पहसन बौआक दाम (1946) क स्पष्ट पभाि अवि। फेच नाटककाि मौक्लयि (1622-1673) जक्हना अपन नाटकमे हास्यक आयोजनक हेतु कक्तपय साधन के अपनौलक्त हक्हना चह्दनाि क्तश अमि अपन पोप िहसनमे सेहो एकि आयोजन कयलक्त, कक्हतु सिल-सिल पि एक्ह जाजषबनाइ शा क समान गम्भीिि व्यंग्यक रप पविलक्तत होइत अवि।

आधुक्तक पाठय-पणाली (1955) मे पहसनकाि सकािक आधुक्तक क्शक्ता नीक्तक पविपेक्यमे एक क्शक्कक हैक्सयत सँ जे अनुभि कयलक्त तकि पण्ष्टभूक्तमे एकिा पविक्तिक्ष सामाक्जक पविेशिमे पस्तुत कयलक्त अवि। मैविलीक इक्तहासकाि एकि गणना एकाकीक केणीमे कयलक्त अवि, कक्हतु ई विशुद रपे पहसन विक, जाक्हमे हास्य-व्यग्यक धाि पिाक्हत भेल अवि। पाचीन ओ नीन क्शक्ता पणलीक पविपेयमे पहसनकि एकि कािभक्तक क्तमाण कलनक्त अवि जे पाठक एिं दशकके मनोिंजन कबिाक हेतु पचुि असिि पदान कति अवि। पचीन पिनुसाि जतय साले साल यौत पिीकेतीणषपंक्डतलोकक्त दिभंगा महािजिक ओतय गौिािक्वक होइत िलाह। ततक्ह आधुक्तक पाठय-पणालीक पविपेक्यमे पिीक्ता तँ सत्यनाििण पूजाक समान संकिाक्ता संकक्ति भ’ हिल अवि। एतय

पहसनकाि समसामयिक समाजमे पचलित सकािक आधुनिक पाठय-पणाली मे पचलित शिक्षा नीतिपि व्यँग्य कित िव जखन देश स्वतंत्र भेल िल, निि-निि योजना कायान्वित भेल जाहिसँ शिक्षाजगत सेहो बाचल नहि रहि सकल। पविर्तित पविशमे पहसनकाकि व्यंग्य कतेक ममर्स्पशी विक तकि अवलोकन तँ कर ।प

बचकानी प

बापि से धवि सते, िट-िट नेना सब हतकि पेलैत चढले भानसमे सँ काचे कोचिल खा क' तीन-तीन कोस दौडल जाइत आछि अवि' सुनैत विऐक जे स्कूलपि एकाि सबसँ टकुि- चटि कििबैत जाइत िक। (समाधान, क्मिमाण पकाशन, लहेवियासािय, 1955, पष्ठ-15)

स्वतिन्त्रताितिि भातिमे निीन शिक्षा-नीतिक तहत स्कूलपि बुकआदी शिक्षा के पशय देल गेलक तिा एकाि कियान्वित कबिाक हैतु पाठय-कममे आिश्यिक पविितिन कयल गेल, जकाि समकाली सामाजिक पविपेश मे सीिकाि कबिाक क्सिक्ति मे समाज एकदम नहि िल। समाजक एहन मानसिकता पि पहसनकाि हस्य-व्यंग्यसँ युतत धाििि पिचिहत कयलक अविप।

बुदनप हौ तौ मौसम्मान क बेटा बेटा क्यकाह जे चणिषलेिह ओ तँ गाधी बाबा एकटा िस्ता देखा मंलविहि जे िडँ , मसोम्मान अपन गुजि कति, जकि जीिन पहाड िक आ' तोिि कििक क्याहता िह? कोने िस्तुक कम्मी िह? समाधान पष्ठ-19)

आधुनिक आठय-पणाली पहसनक िशिपटा अवि जे पहसनकाि सामाजिक पविशिक यिािषगानसिकताक घटना चकक आधाि पि

िस्थ ततक्ह दोसक भाग ओकि माध्यमे मानक्सक क्सि क्ति के पविक्तिषा कबिाक सियिक िवक्रष कोवरक्षोत्सकि असिि पि भेल जतय तत्कालीन क्नहाि सकिाकि क्शाक्त मंती क्हीिि क्मि उपक्सित हिवि1 एकि क्तदेशन पहसनकाि सियं कयने हिवि।

एकाकी प

देशक पुनक्तषाणक आशियकता एिं सामाक्जक चेतना ल'कए मैविलीमे एकाकी क्लखक्हािमे चहदनाि क्तश अमि एक सजग एकाकीकाकि रपमे मैविक्लनी एकाकी दािपि दस्तक देलक्त। एक्ह दक्टएँ क्हनक क्तकिता क्तिकि पाठशाला, शमदान, घँयालूविन, बहमसकि, हाक्कमक हाक्कम ि ननक्दओ क ननक्द, मलविि, क्दशा बोध एिं कौआ ल' गेल कान, इत्याक्द मैविलीमे उल्लेखनीय एकाकीक रपमे चक्चष्ा अवि जाक्ह आधािपि क्हनका मैविली क सफल एकाकीक पमे पविगिरक्तल कयल गेल िक्त क्हनक उपलब्ध ऐंकाकीक विश्लेरण नाटकीय ततकि आधािपि कबि समीचीन होयत। मनुष्य एक सामाक्जक पणी विक ते ओक मूल्लयाकन सामाक्जक दक्ष ाटएँ अपेक्कत अवि।

िस्तु प

नाकय ततकि अहत्तगष्ा िस्तुक साक्षिक महतपूणष सिान अवि। िस्तु एकाकीक गक्तशील होइत अवि। सि-क्तषक्त, चविितक सजीिता एिं गक्तशील ताक लेल िस्तुक क्नमाण कयल जाइत अवि। एक्ह दक्लटएँ िस्तु एकाकीक पमुख ततकि रपमे सीकािल गेल अवि। एकि अहत्तगष्ा कायािसिि ि क्यापाि ततिं एकाकीके सफल ओ सपाण बनबाक उदेश्यसँ कयल जाइत अवि। कायषक

गाक्त दुतगक्ताएँ बढयबाक क्दशामे िस्तु-विन्यास शेष्ठ माध्यम विक, कायषएकाकीक पमुख साध्य विक1 नाटकीि सौष्ठिके िस्तु-संगठन एिं व्यापाक समुक्चत योजनाक रपमे देखल जाइत अविं। एक्ह पसंगमे पाश्चात्य आलोचक ई.एम. फास्टषिक किनि िक्त जे किानक घटनाक ओ काल कमानुसाि णिषा विक जक्हमे कायष काणि-सम्बधपि विशेर बल िहैत अविं। नाटक िि एंकाकी मे संघरष िि दह्दक महता सिोपवि अविं। ते िस्तु विन्यासक िि एकाकीमे संधरष िि दह्दक महता सिोपवि अविं। ते िस्तु विन्यासक अह्तगषा किानकपि दबाब ओकि पक्तक्रयाक अंकन कयल जाइि। िस्तु-विन्यास लेखकक उदेश्यक अनुरप कमबदता एिं विस्तािि गहण किंि। अतएि एकाकीकाि िस्तु-विन्यास किबा काल जीिनिमे घक्टत भेक्हािि समसामक्यक जीिनसँ सम्बद िहैत ििं, काणि मानि जीिति सँ विक्छिह्न कोनो साक्हत्य उत्कृष्ट नक्ह भ' सकैि।

क्किा क्तिकि पाठशालाा(1955) मे एकाकीकाि जाक्ह समसामाक्हक समस्याक उपस्िापन एक्हमे कयलक्त अविं तकि संकेत ओ पचास िरषपूिष्ह कयने िहिं तकि पक्तरप बीसम शताब्दीक निम दमक दशकमे सिकािि माध्यमे क्किके साक्ि बनयबाक क्दशामे पयास भेल अविं। सिकािि ियस्क क्शाक्ा योजनापि किोडक किोड रपैया खचषकिंति जा िहिल अवि जकि मूल उदेश्य िंक ज कोहुना पत्येक भािितीयके साक्ि बनाओल जाय। साक्हत्य-क्महतक कतेक दूिशी होइत िवि तकि िास्तविकताक पविचिय एक्ह एकाकीक पणयनसँ पाठक िि दशषकके उपलब्ध होइत िक्त। समसाक्मयक पविििशमे सिकािि ियस्क क्शाक्ा

नीक्तके कयवह्नति कबिाक हेतु नुतकड नाटक आयोजन कति अवि। जनसामाह्यके एव्ह क्दशामे आककरषा कबिाक कक्तपय पलोभन दैत अवि। तावि ओकि कतेक पविणाम ओकि भेव्ट हिल कि तकि स्पष्ट कबिाक पयोजन नव्ह; पत्युत अनुभि कबिाक योग्य वकि। कव्हतु एकाकीकाि समाजक एव्ह जलिह्त समस्याक सम्बह्धमे कतेक पूषि ध्यानाव्यविषा कयने िलाह तकि स्पटीकणि उतत एकाकीक मननसँ स्पष्ट भ' जाइत अवि। नेना बाबू तैना सोने िाके व्शक्त कबिाक कव्मत पयासति भेलाह जकि फलस्विप ओ व्शक्त भ' गेलाह। एकि माध्यमे एकाकीकाि एव्ह वरियके उदावति कबिाक उपकम कयलव्ह अवि जे देशक उनव्त तखने सम्भि अवि जखन पत्येक भातिीय व्शक्त क' कए जानक ज्योक्त पजवलत क' कए एकि ािस्तविक महति बुवि। तखतने मादभदभूवमक सतिह्खनाक ािस्तविक अषि बुकबाम ति अपन अव्धकाि ओ कतष्यक पालनमे सकम भ' सकताह अह्यिा सब पयास क्ािषिक अवि। एव्ह कव्मत आश्यिक अवि जे जनसामाह्यके व्शक्त कयल जाय। एव्ह पसंग मे चनुभुषाक कनि िक्तप

जतेक पढल क्लखल लोक िी से अवि पक्तजा किी आ कम सँ कम दस व्यक्ततके व्शक्त बनाबी। एक सँ दस, दस सँ सै, हजाि तुह्ति भ' जैत। तैँ हेतु साि खिन जे समय घूडलग क्तबैत अवि से एही काज मे लागबी तँ कीने क्वत। (समाधान, पष्ठ -7)

उपयुक्त िताििणिक पष्ठभूवममे एकाकीकाि समाजक समक एक पक्तमान उपक्स्ति कयजव्ह अवि जे व्शक्शत समात भ' कए अपन सामाविजक दाव्यति का संगव्ह-संग िाष्टीय दाव्यतिके बुवि देशक

पक्ष अपन त्याग कतर्ष्य के बुिर्व1 ई तखने सम्भि भ' सकैि लोक अपन अव्धकाि कतर्ष्यक पक्ष पूणर्षसाकाक भ' पौताह अह्म्याि ई संभि नक्ह। एक्ह दक्श एँ एकि कििनक समाजके अपन अव्धकाि औ कतर्ष्यक पक्ष क्दशा-बोध कबैत अिव।

आधुक्नक पिर्वशिमे क्दन पक्तक्दन समसामव्यक समाजक व्यक्तत आिमि तलब बनल जा िहल अिव। ओ जेना शमक महतिसँ अपवक्चत भ' गेल अिव। व्यक्तत-व्यक्ततमे एतेक िशी ऊजा िक जे ओ सम्भि कायर्षसेहो सम्भि क' सैकल अिव। ते मानि जीिन मे शम सिपापि साधन विक। एकाकीकाि शमदान (1955) एकाकीमे समाज के शमोह्मुख बनयबाक उदेश्यसँ, शैशािसिक्हसँ शमक महति के बुियबाक देबाक उदेश्यसँ शमदान कबिाक पिक्त जगयबाक हेतु एक्ह एकाकीक ओ िचना कयलक्न। सिितह्त्योत्ति भाितक सिर्षामुखी विकासक क्शाकाक निि नीक्त मे शुमादानक उपयोवाता के उदघाक्टत कबिाक उदेश्य सँ आधुक्नक पाठाह्नतगर्षा बुक्नयादी क्शाकाके महति देिक उदेश्यसँ गेमदान कबिाक पिक्त एकिि माध्यमे आिविषक सितह्तता तँ आसानीसँ भेक्ट जा सकैि। अतएि तन-मन. धन सँ अपन मातभूक्मक सेिमि ततपि भ' जयबाक पयोजन अिव। व्यक्तत-व्यक्ततमे एक्ह भािना के जगयबाक हेतु जे पयास भेल ओ तँ अपन सििनपि िहल, कक्तु विदियालय, महाविदािलय एि विशिक्दयालय स्तिि पि ए.सी.सी. एि एन.ऐ. सहसीश योजनाके क्कयाक्नचत कबिाक लेल सििनपना कयल गंलैक जकि मूल उदेश्य िलैक शामदान कबिाक पिक्त जगैबाक ति भािी संतक्तके शेशािसिािक्हसँ अनुशासनक सूतमे बाह्ल जाय जे भविष्यक हेतु लाभ पद भ' ते तँ जान-धन कहैिप

देशक एक-एक गोटसँ कांदिन अछि जे कमाण कायमे तन-मन-धनसँ सहायता कर। शमदानक भुखकल भाति माता अहाक आहानि कै हिल अछि। (सामाधन, पष्ठ -27)।

एक्ह पक्तिक उदय भेलासँ देशक नि-कमाण कवशत रपे हैबाक सम्भानिा अछि। सकिाि एक्ह वशाक नीकाक साहिना कोति किा जे स्कूल एिं कालेजमे पढ़िनहापिि दबाि या जनमानस उत्साकहत भ' कए एक्ह कदशा मे कायषित हैताह तखन सुहृदि लालक किनि किाप ने सोचलक ई बात बड बुकधयाि लि। देखहक आब पढैत ैकि बाहिो णिषक वधयापूता, सबके नोकरी भेटतैक नकह. तखन सब बेकाि भेल गामेपि एक्ह खोहृी सँ ओक्ह खोहृी ढहनाइत फकोति लि से तँ नकह ने हैत। (समाधान, पुष्ठ-32)।

अनाकद कानलकहसँ समाज दुह गिषे विभाकजत हिल अछि जकिि धनीक-गरीब ि शेरक-शोकत ि सम्पहन-विपहन आकद विविध संजासँ विभिहन समयमे सम्बोकधत कयल जाइत हिल अछि। सामाकजक विरमता सबसे जलिहल समस्या विक जकि फलसिरिप समाजक विभाजन भ' गेलैक नया समाजहक तिषान सिरिप विरिवान भ' गेल। आविषक पवकसिकत ि कहत-सम्बहधक आधापिि समाज मुख्यतप तीन शेणीमे विभाकजत अछि उच्च गिष, मध्य गिषओ काम्न गिष उपयुषात आधपिि समाजक अहतागषा गिषरिम्यक आगमन भेलैक। सामाकजक िताििणिक उपयुषात पष्ठभूकम कहनक *बहमसिान* एक उल्लेखनीय एकाकी विक जाकहमे एकाकीकाि शोकत ि गरीब ि विपहन गिषि होइत अत्याचाकि िस्तविकतासँ अिगत कोलकन अछि। गामीण पविशिमे एहन पम्पिाि हिल अछि जे गाम वडहबाक अिात बहासिान गामक ह्यायलय पतीक मानल जाइत

िल जतय नीक अधलाहक विश्लेरण क' कए दोरीके दण्ड देल जाइत िलैक, जकि ओ साकी होइत िलाह। समाजक आचाि संव्हताक ओ पेतीक होइत िलाह,। बहासिन जतय गाममे हिक्नहाकि सुख-दप्खक समान रपेण सह भागी होइत िवि। समाज कल्याण जकनक सिषमुख वैशिष्टय िक्न तिा सामाविजक कल्याणमे अपन कल्याण मानैत िवि।एहन ह्यायालयमे बैक्स क' लोक दूधक दूध पाक्नक पाक्न ह्याय कबिा मे िस्तुतप सक्म होइत िवि। बैह क्यडबाि समाजमे सतत पूविजत होइत हिल िवि तिा समाज हुनक सम्मान करैित आयल अवि।

बदलैत समाविजक पविशिमे एहन माह्यतामे पविितिषा भेल जकि पविणाम भेल अवि जे सीतत्योतिभातिमे िमि िजयक सिापनाक उदेश्यसँ गाम पंचायाक सिापना कयल गेलैक तिा ओकि पधान मुवखयाक हािमे हेल गेलक्न। मुदा मुवखया ह्याय की करैित िवि अह्यायक पतीक बक्न क' अपन िकसी पक्सिसँ समाजपि अत्याचाि करैित िवि। एही यिाितिाक पष्ठभूम मे एकाकीकाि बहासिन एकाकी किि व्यवक्तक क्नमाण कयलक्न अवि।

गामक मुवखया हविशि बाबके युग-युगाह्तिसँ दीन-हीन जनसमानसके शोवरत कबिाक अभ्यास िक्न। सुवायाक बेटा मखना विगत अठाहि व्दनसँ जििकाह्त िक जे हुनक शोरण नीक्तक फलसिरप अकस्मात् काल-तिगिषत भ' जाइत अवि सुवायाक मात एनबे अपािधि िक जाइत अवि, जे समयापि हुनका ओतय पाक्न भबिाक हेतु नव्ह जाइत अवि, जकि इनाम ओकिा भेटैत िक माविगावि सुनबैत क्नमषतापूविक पीटब ओ अपमाक्नत कबि। सुवायाक अह्य भतत पक्ल पचकौडी अपन पुतक मत्यसँ आहन भ' पििमािगत

न्यायालयक प्रतीक बहासिनिक अवसत्तकेँ मेटैयबाक लेल कटिकद्ध अवि; किन्तु ठकाइक बात मात्र अपन विचारकेँ बदलि दैि। अन्ततप ओही बहमसिनिमे गामक सब तयो उपवसित भ' तिष्ठान मुवखया हविंशि बाबूके पदच्युत क' कए एक नि मुवखयाक चुनाकि नाि दैत अवि।

एकाकीकाि शोषित गिष्क बीच युगयुगान्तसिँ चल आवि हिल आक्रोश सँ कनिकक निमाण कयलवि अवि। पक्षपाद एकाकीमे मूलतप दुइ विचाधाराि सँ संघरषित अवि। एक ते पम्पिरासिँ चल आवि हिल बाहयाक पक्ष शोरक गिष्क नशंस हत्या दोसि भाग समसामयिक सामाजिक पविंशिमे पचलित चुनाि-पदक्ष ताि आधुनिक मुवखयाक क्रियाकलापक िस्तविकतापि जे अन्हजिाली िल तकाि हटटयबाक उपकम कयल गेल अवि। पविंक्षिप्त पविंशिमे समाजमे विदोहक सिँ अत्यन्त तीरि भ' गेल अवि ते सामाविजक पविंशिके पविंक्षिप्त कबिाक पयोजन अवि। एकांकीकाि इएह पक्षि किा।

कतोक शनाब्दीक गुलमीक पश्चात् भातिके सतिन्तता पाप्त भेलैक। देशक नि-निमाणक हुतु कतिपय हेजनाक्ष क्रियान्विति कबिाक दिशामे सकिाि पयासोन्मुख भेल। सकिाकि दिससँ सेहो कतिपय योजनाके कायष्प देबाक हेतु पयास कयल गेल । एकि एक मात उदेश्य िलैक कोहुना व्यक्ति-व्यक्ति जे गिबीक माविसँ कुहवि हिल अवि तादिसँ मुक्ति दिअयबाक दिशामे पयास कयल जाय। अधिकाशं गामीण गामक पवित्याग क' शहिोन्मुख हैबाक दिशामे पयास कयि लागल। तकि भीरण दुष्पविणाम भेलैक जे गामक गाम जनशून्यताक कगाि पि पहुँचय लागल। समाजक समक एक विरम

स्थिति उत्पन्न होमय लगलैक। एहना स्थितिमे गमीण पर्विशिके बचयबाक लेल जनमानसमे एहन ितािणिक क्माण कयल गेल जे ओ ओही पर्विशिमे रहि अपन जीककिो पाजनाि ष अपन कौशलक धन्धाके पुनप र्स्थीकाि कयि। एकि दू टा पभाि पविडी तैक । एक ते लोक अपन गह-उदोग दिस उन्मुख होइत आि दोसि शहिी पर्विशिपि अनाि शियाक दबाक नहि पविडतैक।

एहि पर्विपेक्ष्यमे कहनक एकाकी '*घिँया लूबि*' (1958) एक महत्तिपूणष उपलब्धि विक। विसुनदेि गामीण पर्विशिक पवित्याग क' विसेसरिक संग कलकता सदहश महानगिीय पर्विशिमे िजगािकि तलाशमे जयबाक आकाकी अवि। मुदा विसेसरि शहिी पर्विशिसँ पविचित हिलाक काििणे ओकिि िास्तविकि कल्पनासँ अपन बाल संगी बात विसुनदेिके एहन कणष कबिा सँ सिषिा मना कैति अविप हम सौचैत विऔक जे तोिि की ककि चाहअउ तो हूँ नीक जका सोचै ले। ििदही, नबम्बि-दिसम्बि 1958 पष्ठ 407)

विसेसरि, अपन नेक सलाक दैत िक जे अपन पुश्तैनी अिित्ष कधिा चलासु क' अपन पर्विािकि संग, तखी सम्पन्न रहि सकै। अवि एकि औ समुचित पबन्ध सेहो क' दैत िक जकि पविणाम होइि जे विसुनदेि गामहिमे रहि अपन िजगािि क' कए सुखी-सम्पनन भ' जाइत अवि। विसुनदेिकि देखा-देखी गोविन्द ममस्त्री, सैनी ठडेिी एिं विंगुि चमािि दाि िकमरा पलंग, ििकल ओ ढोलक बाजामि ि िहुका उविड अवि। एकाकी कोिकि मान्यता ििक जो आधुनिक शाक पणाली व्यक्ति- व्यक्तिके िजगाि मुहैया नहि किि सकैि। जा धवि व्यक्तित पुश्तैनी धन्धाके नहि अपना ओत ता धवि ओकिि सामाजिक पर्विशि कोनो तहिक सुधािकि सम्भािना नहि

दक्ष गत होइि। अतएि एकाकीक मूलसिि िक अपन कौक्लक धह्याक अनुरपक्ह पक्शाकत भ' कए काज कबि। तखने हमि सामाक्जक पर्विशि पर्विक्तष्ठ भ' सकैि तिा क्यक्तत-क्यक्तत सुखी सम्पह्न बनबाक कामनाक पूक्तषभ' सकैि।
िाष्टक्पता महात्मा गाधीक िामिाज्यक सपना एकिि फलसिरप साकाि भ' सकैि। हमि पचीन सामाक्जक क्यसिामे पत्येक जाक्तक कायषओकि सामाक्जक पर्विशानुसाि विभाक्जत िलैक, ने िािजगािक समस्या नक्ह उत्पह्न होइत िलैक िाणाशमक जे क्यसिा हमि समाज मे कयल गेल िलैक तकि मूल पर्विकल्पना इएह िलैक। क्कह्तु पर्विक्तष्ठ पर्विशिमे लोक ओक्हसँ विमुख भ' अवि ते ि िािजगािक समस्या समाज ओ सिकािक समक्ष उपक्सित भ' गेल गेल अवि। पक्तपाद एकाकीमे एकाकीकाि मूल रपे कुटीि उदोग एिि गह-उदयोकक्म जदस यन सामाहरक्ष ध्यानाकषा कयलक्ह अवि। अत्याधुक्नक पर्विशिमे समाजमे, देशमे, पुनक्नाषाण तिा सामाक्जक चेतनाक आिश्यकता अवि। एकाकीकाि अपन क्यक्ततगत जीिनक क्याहािर्विक अनुभिक आधापिि समाज ओ देश मे पचक्लत योजनाह्तगषा घिाया लूविक केह्द-विह्दु मे क्ारक्ात कयलक्ह अवि। ओ समाजक ओक्ह पक क्हस संकेत कयलक्ह अवि जे अत्याधुक्नकताक चकािमे पर्विडी कौक्लक क्कया- कलापके तलाजक्ल द' कए शहािह्मुख हैबाक आकाकी भ' गेल िवि। क्कह्तु पयोजन अवि जनमानसमे क्हशा-क्नदेशनक जकि फलसिरप ओकि कायाकल्प्य कयल जा सकैि। उक्तत क्हशा बोधक फलसिरप विसुनदेि, गोविह्द क्मस्त्री, सैनी ठठेिा ओ विंगुि चमाि समाक्जक पर्विशिमै क्कह क' अपन आविषक क्सिक्तके सुधाबिाखा मे सक्म भ'

सकलाह आ उनन्ताक शिखपि चर्विढ समाजक अन्य व्यक्तिके अपन कौशलक व्यसिाय करस उन्मुख कयलक।

मलर्वि मे एकाकीकाि हास्य-व्यंग्यक अदभुत धाि पिवहित कयलक अवि। जवहना काव्य क्तेमे एवह पिक्ताक पस्फुटन भेल अवि तवहना ओकि िस्तावकि सिरप एवह एकाकीमे स्पष्ट अवि जे पवापडेतच लोकक्ि ूठक पपंच किसाि सर्विधाणक शोरण किैत आयल र्वि। एवहमे िउित लोकक्ाक ति पंवडत लोकक्ाक घूतताके अत्यन्त मनोर्विक ढंगे एकाकीकाि पस्तुत कयालक अवि।

सितिहत्योति भातिक पमुख पिक्ता जनसामान्यक समक आयल अवि भष्टाचाि। भष्टाचािी पिक्ता हमि जीनिमे एवह पकाि पिशि क' गेल अवि जे ओवहसँ मुर्वतिक मागष नवह भेवट हिल अवि। जीनिमे डेग-डेगपि एकि नग्न रप स्पष्ट अवि ति समाजके अवि मुक्तितक मागष नवह भेवट हिल वक। जँ पवचिमी-एसिडष नाटक लक्य क्तीय महायुदोति र्विसंगर्ताक क्तण कबि िलि तँ सितिहत्योति भातिमे उपजल कबि चवतिहीनता, एिं भष्टाचाकि केन्द्र-र्विन्दु पि तीक्ष्ण-व्यंग्यक पहाि कयल गेल अवि।

उपयुषत पवपेक्ष्यमे वहनक *हाक्कमक हाक्कम ि ननवदओ क नाक्द* मे स्पष्ट िकी भेटैत अवि। एवहमे एक क्धष्ा संस्कृत पाठशालाक शिक्षक क्तक माध्यमे एकाकी ओवह भष्टचािी वडप्टीक चवतिके उपस्ति कयलगेल अवि जे आकंठ भष्टाचाि मे डूबल अवि। वडप्टी साहेब भष्टाचाकि पतीक र्वि जकाक क्दषतासँ शिक्षक समुदाय बेचैन हैि, कहनु ओ एवह र्विरये के सर्विा क्सवि जाइत अवि जे ओकाि ऊपि कोनो अवधकाि वक। संस्कृत पाठशालाक शिक्षक र्विदयालयसँ अनुपस्ति हिलाक काणिे पाच टाका घूस। वडप्टीके

गिेत िवि, कन्तु टाकाक अभािक कािणे शीघक्ह अदा किबासँ कियत हिैत िवि। स्कूलक िवरकोतसिमे पकाडत जी चेयिमेन साहेबक सोिीँ र पैया दैत िवि। एक्ह घाटनासँ वडप्टी साहेब आहत भ' जाइत िवि कािण ओ हुनक हाकम क िविन। जक्हना पािवीिविक जीििनमे ननकदक िैक ओ अत्याचाि किबामे कनेको कुंवठत नक्ह होइि। अतएत एकाकीकाि अत्यन्त कायोवजत ढंगे सामावजक पविपैक्यमे घवटत भेकहाि घटनाक कताकन कयलक अवि एक्ह एकाकीमे।

कधषाता सामावजक जीिनिक अवभशाप विक। जतय पाचीन समयमे समाजिादी समाज िलि ततय आधुवनक पविपैक्यमे व्यवक्तिादी समाजक सिापना शनैप-शनै भ' िहल अवि। एकिि शेय िैक पवशामी संस्कवत ओ सम्यताके। तिमान शताब्दीक उतदिमे सामावजक पविििशमे एतेक शीधतसँ पविितिा भ' िहल अवि जे सामावजक सिरिप पविवितिा भ' गेल अवि।व्यवक्तत आब एतेक बेसी आत्मकेकनदत भ' गेल अवि जे एमसम शताब्दीक पिशि कििेत-कििेत अपन पाचीन पविििशिक पवत्यिाग किबाक हेतु विििशि भ' गेल अवि। हमि सामावजक पविििशि कतेक दूवरत भ' गेल अवि तकि ििास्तविकताक कतण एकाकीकाि कयलक अवि *कुशाबोध* एकाकी मे। सुहदि युििसििक पचणड कािहाविडमे सामावजक पविििशि पविवितिा भ' जयबाक कािणे एहन कुगाकात भ' गेलाह ने अपन िदि माता वपता पयत्नकेे अपन सुख-सुविधाक वजनगीमे बाधक मानैत िवि। कन्तु हुनक पत्नीपिि पिमिािक िपि एतेक िशिी िक जे आधुवनक पविििशमे िहितहुँ ओ अपन मयादाक पषपोवरकाक रपमे जन सामान्यक समक पवस्तुत होइत िवि। इएह कािण

अछि जे हुनका अपन ससुर एवं सासुक प्रति असीम श्रद्धा ओ सद्भावना छनि। एकर पालन करबाक हेतु ओ अपन पतिक विरोध करैत छथि
हम अहाक गार्जियन नहि छी, मुदा जे माय- बाप एतेक दिनसँ अहाँके पोसलकनि- पाललकनि, लिखौलकनि- पढौलकनि , ताहि मायके रस्ते दहि लय अहाँ कहैत छी जे नूढा भीटय चाहैत छथि आ डिनेमा मे पाइ फेकय जाइत छी से उचित छैक (अबिलाक्षणहि. 16 जुलाई, 1978)
सुहृदजी पत्नीक मानसिक दशाक विश्लेषण करबामे सक्षम अछि; कारण आधुनिकताक अछि जाली हुनका लागल छनि। ते पत्नीके एकाकी जीवन के' सिनेमाक लाग घरसँ पडा जाइत छथि। एकाकीकार पति-पत्नीक विचारधारामे फरक अछि घातिलपर आजुक सामाजिक परिवेशमे बदलैत मानसिकताक विश्लेषण करबामे सफल भ' पौलकनि अछि। एतय ओ सामान्य पाठकके सोचबाक हेतु बाध्य करैत छथि जे अत्यन्त भोगी कर्मचारीक मानसिकता आधुनिक सामाजिक परिवेशमे केहन भेल जा रहल अछि। ई मानसिकता मात्र कामिनीक नहि, प्रत्युत सम्पूर्ण समाजक भ' गेल अछि। सुहृदजी के परिस्थितिक वास्तविकताक ज्ञान तखन होइत छनि जखन ओ अपन बालसंगी के नूनूके अपन वृद्ध माता-पिताक प्रति अगाध आत्मीयता ओ श्रद्धा देखैत छथि जे स्तुत्य अनुकरणीय एवं सराहनीय अछि। पत्नीके प्रतावीक्षित क' कए ओ नूनूक ओतय उपस्थित होइत छथि। नूनू एम्.ए. इन फिलॉसफी छथि तथापि ओ नौकरीके परमुखापेक्षी मानैत छथि, की इएह आधुनिक सभ्यता ओ सामाजिक परिवेशक उपज थिक।

सामाविजक पर्विशिमे एहन लोकक अभावि नवि जे स्सि्तुविस्किताक यथाितिथा सँ वानु अिगत भेनवि ओकिि सत्यापनक पाि अपस्यात भ' जाइत अवि। एकाकीकाि *कौआ ल गेल कवि* मे एहने एक घटनाक वियोजन कविाक उपकम कयलवि अवि। डातटिकि पुत मनोज तिा धवनूक पुत मोहनक विििहा अपहिणि क' कएकिबाक अपिाहि सँ दुनू वित कवि कतषय विमिभूढ भ' जाइत विि; कवित्तु ििस्ततविकिताक हिस्योदघाटन होइत समग वििता पसवनता मे पर्विित भ' जाइि।

हास्य-व्यंग्यसँ उब-डूब कििति विनक एक एकाकी विक ििइचावि। वविाक पकाशसँ कोसो दुि हिलाक काणि वािजलीकावि कोना अपन वितोकँ ठकलवि तकयिाििथासँ पर्विचय कििलवि सत्यनाििणि पूजाक घूमधामसँ आयोजन कयलवि कवितु यििाथििस्सि्तु वि्सविासँ अििगत भेलापि हुनक मानविसक वि्सविता कोन तिहिक भ' जाइत िवि तकिि एवि मे उदधाविति कयल गेल अवि।

पात प

पात एकाकी पणेताक मानविसक सवितान होइि। आकेिमिमे िततबीच संचणि कििि। ओवमे संकल्प- विशििसक गोतता तिा जीिनि दशषामे िशिजता हििि। ओकिि समस्त अवभजात्य कौवलक हििि जकिि सम्पूणषणिषशुद सेहो हििि। समगतप अपन पणेताक जीिवत ििग साकात्काििकि जीिवत ििचना विक। ओवमे ििगात्मकता, आसंग सजन-संकल्पना, नाटयानुमिि, ििग- संस्काि तिा ििग-िविशाक तावििकि संधातसँ उदभूत ििगपुत अवि। एकाकी परेताक आवत्तविकि ििगयजक ििग कुण्डसँ उत्पवन तिा िििदान रपमे पाप्त ििग विसवद ििगििशी ििगकुमाि अवि। एकाकी पणेताक ििग पवकयामे ििचनामे पात

केहन होइि? ओ िग-पक्कयामे कतय सँ अबैत अवि ?एक्ह पश्नसँ िवचक आगा जायब युक्तत संगत नक्ह होयत। एिनि धवि बहुधा पातक गुण-पकाि िगषतिा ओकिा संगक बात होइत अबैत हो, अवधकाशतप पष्ठपेरण होइत अवि। पातक िगपक्कयापि बड कम विचाि भेल अवि। पात तँ िचनाकाकि मानवसक सहत्तान होइि। िचनाकाकि जीिनगत पक्तबदतामे पातक मयादा विक। ओ सेहो जीिनक पक्त ओक्हना पक्तबद होवि।

क्हनक पात योजनापि दवापात किति िी तॅ स्पष्ट भ' जाइि जे ओ मध्यम एिं वनम्नगीय सामावजक पर्विशिक पक्तवनधित किति देखल जाइत अवि जकिा समक िजी'-िटीक संगक्ह-संग अपन जीिपकोणाजषाािष विविध समस्या सुकि सदश मुह बौने ठाढ िक एक्हटक्टएँ सिान एिं घाँबियल लूविकि अवधकाश पात वनम्न गमैया सामावजक पर्विशिक पक्तवनधित किति अवि। मलनक्दओ के ननाक्द, भविि, क्दशा बोध, िइचाहस, कौआ ल' गेल कानक अवधकाश पात सेहो ओही शेणीमे अबैत िवि।मध्यमगीटा शेणीमे घाँयिालूविकि महेह्द बाबू बहमसिानिक हर्विशि बाबू एिं ननक्दओ के ननदक्क चेयिमैन पक्तवनधित किति िवि। उच्च िगषक पातक अभाि क्हनक एकाकीमे अवि।

िस्तुतप क्हनक पातक संघरषे सामावजक समायोजन (*सोसल एडजसटमेण्ाष्ट*)

क भािना सक्तक्हत अवि। क्हनक आत्मसम्मानी पात अपन पकक्तक विधिी नकात्मिक पिवेतक सामावजक पिवेसँ अपन मेल नक्ह बैसा पबैत अवि। अतएिं समयायोजनक वसिक्तमे ओ मानवसक आशावक्तक अनुभि किति अवि जे कोहुना ओक्ह मानवसक तनािसँ मुक्तत भेटय

एकरि हेतु ओ अपन समायोजनक कारणि भूत विरोधी परिस्थितिके परिस्त कयि चाहैिछ। एहि प्रयासमे ओकरि समाज-विरोधी परिस्थितिसँ संघर्ष कयि पडैत छैक।

एहि प्रकारेँ आत्मसम्मानसी पातक संधर्ष सामाजिक समायोजनक दिशामे कयल गेल एक प्रयास थिक। इएह हुनक अहंक्रसि सामाजिक पेणिाके व्याहिारिक क्षेत्रमे आबि क' अपनरसित क' दैत अछि। एहन संघर्षमय प्रयासक फलस्वरूप आत्मसामनी पातक व्यक्तित्व विकसित भेल अछि जे हुनक सर्वहिलाचलक समाजक एकाकीक अनुपम देन थिक। *बहासरिन क* पचकौडी एही शेणीक पात अछि जे अपन आत्म-सम्मानक रक्षिचारिषबहाकासरिनके कोर्डि क' हुनक अरस्तित्व के मेटैबाक लेल तैयार अछि।

सता आँखिक सोरिंमि-दशाक निर्माणक कृति अछि जकरामे एकमात स्वर रिहैत अछि। सरिहिय सताके जीवित रिखबाक हेतु मदति कयकराहिं व्यक्तित आत्मकेन्द्रित बनि जाइत अछि। कतहु ओकरि संधर्षओ कृति अछि जकरि लोकतन्त्रमे विशिस एि काष्ठा रिका। जे व्यक्तित सताक विरोधमे नारि लगबैत अछि तकरिपि विपक्तिक पहाड टूटि पडैत छैक। तरि नैतिकता आ सताक बल परि व्यक्तितक मनोबल बढैत छैक आ असत रिक्तिक संकिक्ति कालजयी सेहो सदति सँ डेरयि लगैत अछि। एहि पकारिे जन-जागरिक कायषएकमात साहित्ये दारि संभावित अछि। हविरिश बाबू गामक मुखिया छथि ते हुनक आजाक बिना गामक एक पात पयिहुत नहि हिलि पबैत अछि। ओ एतेक बेशी सरिहिय छथि जे ओ अपन स्वर्थक पूर्वाक्षक कारणत कारिह सुवायापरि पहारि करिबामे कनेको कुण्ठित नहि होइत छथि, करिणि ओ। हुनकरि बेटा नूनू

बचबाक आआक उल्लंधन कयलक अवि। जाहसँ हुनका चोट पहुँचैत छनि यदयवि ओकाद बेहा मखना अठाहि दन सँ जीिकाहत िक माया, मोह, ति ममता नामक कोनो िस्तु हुनक अहतत्िामे नहह छनि। ते कादायतता पूषिक व्यहािि कित िवि जकि पविणाम अत्यहत भयाहि होइि।

जाहह गामाचलमे अवशाक्त एिं अहध शदाक पभाि हित ओतय काघमता ति शोरिणिक पिम्पिा कवशाचत रपे िहैक। अधंशदाक पतीक िवि पंचकौडी ति हुनक पत्नी सुवाया जे बह स्िानिपि कबुला पानी क’ कए मखनाक नीके होयबाक कामना कित िवि। शोवरत िगषि एकता अभिाि अवि ति सदयपा िपि ओ अहयाय सँ डेिियल िहैत अवि, कहतु ओवह मुतत होयबाक इच्छा अभिाि िखैत अवि। मुदा सामाहजक पविवस्तरा पविशिमे से सम्भि नहह भ’ पबैत अवि।

तिषान पविशि मे एक दोसिाक उपयोग कबिाक पाि बेहाल अवि। एहह लेल कोनो तहिक योग्यता अपेवक्षत नहह पत्युत एक हकिण्डाक पयोजन अवि। मुदा एतबा कवशात अवि जे लोक अपन लाभक लेल ओकि उपयोग दोसिपि कित अवि। ई पिम्पिा समाजमे सतत चलैत िहैत अवि। एक बेि आतटोपसक वशंजामे पविडी गेलापि िपिसीक मागषअििद भ’ जाइत िक। *घांचा लूवकि* महेहद बाबू आ *बहमसिान* क हविशि बाबू एही शेणीक पात िवि। जतय महेहद बाबू अवह शेणीक पक्तकव िवि जे शोवरत िगषक शोरण सूक्षपि रपैया लगा क’ कित िवि। आसमाजक साइलॉक सटश िवि जे खदुकाक कोढ-कििज पयहत खोंबामे ककयो कुवटत नहह होइत िवि ततवह हविशिबाबू अहंकािि व्यवक्त

िव ि जे शोक ि गष पि अत्याचाि कि ैत ि वि । यदचप शोक्त समाज हुनका सभक गक्तविधि सँ पूणषरूपेण पविचित अवि ता ि वि बे ि-घडीपि ि ैहि काज अबैत ि विन ते विि ोि कबाक पश्न ने उठैि ।

अत्यल्प पातक पयोग क' कए क्दशाबोध एकाकीक ि चिना एकाकीकाि कयलक्ह। एक्ह मे कुल चावि पात अवि । नूनू, हुनक ि द। वता, सुह्दि ता ि हुनक युि ती पत्नी। हमि सामाि जक पवि ि शिक उत्तत चार पात मानक्सक विश्लेरण कि बामे सक्षम भेलाह अवि । आधुक्तक सामक्जक पवि ि शिक पतीक ि वि सुह्दि जे भौक्तकि दी युगमे अपन जीि निके सुखी-सम्पक्सानन्दत बनयाबामे काम्म सँ काम्म स्तापि ि जा सकैत ि वि । क्कन्हु युि ती पत्नीक विदोही तेि ि एतेक बेसी पखि अवि जे हुनका सोि ामे ओ अँटक्कि क्क्व पबैत ि वि । क्कन्हु नूनू कतषयक्नष्ठ पात ि वि जे एम.ए. इन क्कलॉसफी क्कितहुँ अपन कतषयपि ायिणता पाठ अपन वयि ािि सँ पढा क' क्दशाबोध कि बैत ि वि । नूनूक चवित सँ क्वक्कत्त भ' कए सुह्दि अपन सगि कायक इलाज कलेल तपि िला देखायब अपन पुनीत कतषय बि ैत ि वि । एकाकीकाि क्दगभक्त सामाि जक पवि ि शिक जे ि सत्ति क मावक्सकता भेल जा ि हिल अवि तकि यि ाि ाि सँ जन सामान्यके पविचित कि यिबाक पयास कयलक्ह अवि जे आधुक्तक पवि ि शिमे उपेक्षणीय नक्ह पत्युत गहणीय अवि ।

संि दि प

ि गि ि चना चाकुर यज वि क ता ि ि डन्नुष्ठान ओकि कमषकाण्ड। संि दिक ् चा स्तानिसँ युग पुर रके साक्षात् कयल जाइत अवि । ि गानुभि यज पुर रक एक्ह गाक्यती गायनसँ अि गाहन पबैत अवि

आ सम्पूर्ण गिकमषे पत्यक होइत अवि। अतएि संिदक महत्तोचासिँ गि कमषक साकात्कािा होइत अवि। एवह चागायनक क्वशाचत व्याकणि अवि। एवह पकािा संिदक पस्तुतनीकणिक सेहो एक संवहता अवि जे ओवहमे क्ववहत अवि । संिद गिानुभकि आत्मज विक। संिद गि कमषक व्यिहाि ओ आचाणि विक क्वदेशक , सूतधाि ओ गिकमीषकि संिदमे गिकमष मंचन आ अवभनयक क्वशाक अहिरण किैत वि। काणि संिदक पत्येक शब्द, िितय गिक्सवदमे हैत अवि। अतएि पूणष संिद चिना मे एक तँ पत्येक शब्दसँ गिकमषक क्कणि फुटैत अवि, दोसि सम्पूणष संिद एहन गिक्सद शब्दक अनुशाक्सत समहयि सँ एक एहन आलोक विम्ब पस्तुत किैत अवि जे गिकमषक क्वशा संकेत किैत अवि।

संिद पातक बहुविध व्यवक्ततत कि दपषा विक, ओकि विधाव्यका चाविवत्तकताक समानुपावतक विकासक मानदण्ड विक। संिद चिनामे नाटक पणेताक अत्यहत्त कवठन भूवमका हैत वि। हुनका एकवह संग विविध पातक भूवमकामे उतिविक’ ओकि मनप वसिवतक अनुरप संिद चिना कयि पडैत वि। कतहु संिद आिोवपत नवह लागय, पातक पकवत ओ गििदनाक पवतकूल नवह हो जकाि सतत ध्यानमे िखय पडैत वि।

कहल उपयुषक्त पवपिेक्ष्यमे वहनक संिद योजनापि दतपात कयलापि स्पष्ट पतीत होइत अवि जे ओ पत्येक पातक संिद-योजना ओकि पविवसिवतक अनुकूलवह कारपण कयलवन अवि। पहसनमे जतय हास्य-व्यंग्यक पमुखता हैत अवि ततय ओ तदनुरपवह संिद-योजना कयलवन अवि। वहनक पत्येक संिद एहन बुिना जाइि

जेना ओ स्थियं पातक रूपमे उपस्थित भ' कए अपन बात ओकरि मूहे कहलयबाक पयास कयलन्हि अछि। हिनक एकाकी ओ पहसनक एक विशेरता अछि जे एकाकीकारि ओहिमे पातोक्यत भाराक संगहि-संग गाम्य भाराक पयोग एतेक सहजताक संग कयलन्हि अछि जकरि पविणाम भेल अछि जे हिनक भारा-शैली अत्यहन्त ममस्पशी बनि गेल अछि। यदयपि ई संस्कृतक पविडत छवि जकरा तत्सम शब्दक पयोग कबिामे विशेर आवश्यकता हिबाक चाही; किन्तु ई भारा पयोगमे एतेक, उदाचिता छवि जे हिनक चाहे काव्य भार हो चाहे गदयभार हो ओहि मे ठेठ सँ ठेठ शब्दावलीक एतेक पचुि पविमाणमे पयोग करैित छवि जे पाठकक ममस्को स्पशषकबिामे सहायक होइत अछि।जतेकदूि धवि एकाकी ओ पहसनमे भारा पयोग क पश्न अछि ओहि पविपेक्ष्मय मे कविविवादि रूपे जा सकैि जे लोकोवितक पयोग कबिामे ई महाविि हावसल कयने छवि जे पाठक क ध्याना-कवणषा करैित अछि। पहसन ओ एकाकीक भाराशैली िि संिादि योजना पस्तुत कबिाक शौली एतेक सक्षम अछि जे नेपथ्यमे कोनो पकाकि आडम्बवि कबिाकक पयोजन नीवह पडैि जे ओकवि भूवमकाक नवह कमाण करैि। पात जखन पवस्थवि िितालय करैि तखन अपन मौन, आविग, वसि िदका एँ, कखनो-कखनो हँवस क' कखनो- कखनो बीचमे रूकि क' नाटकीय पभावि गम्भीवि बना दैत अछि। एहि पकारि मंचीय सम्भावनासँ पविपूणष हिनक पहसन ओ एकाकी सामावजक जीिनिक वविवहन्न समस्याके जहिना-तहिना पस्तुत कयलक अछि। कविलाचालमे पचावलत मुहाििि ओ लोकोवक्तक पयोगमे हिनक काव्य भाराक संगहि-संग गदभाराक वैशिष्टय अछि। हिनक एहि पवक्तक पक्षाफल पहसन ओ एकांकीमे सेहो उपलब्ध

होइत अछि जकरा कारण बानगीक अविलोकन कयल जा सकैत अछि पेट काटि क' पोसल पूत सैह कहै फलनामा भूत पछिलागब, दाँत क्रियोडब, हतकिट पेलब, जीक पाति, नडो- चडो करब, मनक मनोरथ मनक्हि काटलटल, आन करैत आन भेल हो तिमा, गाल लगाययब, अमात लगायब, बक्हारि नाचे अपने ताले, कुकुर मारि काटब, निनिायब करब, बडौट लगाएब, भोरिहा कलमय सनक सारि, मन लोहरब, गुमाने फाटब, पातमि पडब, कात काटब शिरि कुडहर्रि, मुक्किडऐल करब, कनहो गाके कैँ कमहने बरिन, कटहरि मे नेढा लगाएब, भोडो रिडल ओ पेटो नक्कि भलि, सोनक दोर की सोनाकि दोर, पहाड ढाहब, टिडी क्सखाबय बूढदादीके 'बुक्किडसही, खोप सक्कत कबुतारि नामप डि धुम्मस करब, दम्म ने दुस्सा। खाली खोप सक्कत कबुतारि नमप डि धुम्मस करब, दम्म ने दुस्सरि खाली बात पकठोस, गप्पी क खर्रिहान, दूरि ढोल साहओन, पेट रिटल गोनू रिक ढाकी, कनहा नकरि, नाक दम ठेकब, यमरिज कराती, आँख्ख गुडरब, कमला कातक दडावि जका मुह बायन,या जीइि िी ने मरिइ िी हुकु-हुकु करिइ िी, भोकना क्कालाड, सुख्खक' क्टटही, ककककआइत हरिब, रिहुतका उडब, खगल लोक, डारि पीठ एतकठा होयब, हकक्ललो भेल करबि , खगले लोक की ने करयि, पेट पहाड, सुतिा लागब, घूड घूआँ करब, रिही लागब, लते पत दौडब, जोगारि धरियिब, पिपान रि्रि चम कायब, कबुला करब, क्जहम पोसब, आँख्ख फुटब, एक बजा। सतहि आबे, अकाश ठेकब, साक्टधट रिखब, लटाहिम करब, खेखक्तया करब, कुषिकाई करब, ऑटागील करब, उतम खेती मध्यम रिन, अधम चाकरी भीख क्तदान, हारि पकडब, सेरि सँ मेरि पायब, कौआ ल' गेल

कान, इयाक्द। एक्हसँ स्पष्ट भ' जाइ जे क्हनका भारापि अदभुत अव्यकाि क्त ति पातक मुहे सुनैत देि दशष्कके सियं आत्मबोध भ' जाइत ैक।
एकाकी एि पहसनक भारा अह्य साक्हत्यक विधाक्दक तुलनामे एक पिक संस्कासिँ संयुतत अवि। यािष्क आगह काणि ओकिा सामाह्य जीिनक बोली िणष्क भारासँ क्ककट होयब अक्ायिष अवि।क्हनक एकाकी ओ पहसन सामाह्य भाराक भीतक्हसँ संचवित संस्काविति भेल अवि। एक्ह रपमे एकाकीक िस्तुक लेल तथ्ये नक्ह किै. पत्युत सम्पूणष िचिनातह्तक क्कमाण सेहो किै। िस्तुतप क्हनक एकाकी ओ पहसनक भारा सम्पूणष सम्पेसणक भारा विक जाक्हमे एक-एक शब्द कहल गेल अवि ओ महतिपूणष नीक्ह महतिपूणष अवि एक सम पभाि आि ओ जे नक्ह कहल गेल अवि, जे, धिक्त-व्यंजत माता कयल जाइत अवि। भारा क्हनक व्यक्ततिमे िचल-बचल िक्त जे सामक्जक पविेिश, माक्सक चेतना सब क्कल क' क्हनक भािक पक्ताभाक क्कमाण कििते सहायक भेल अवि। क्हनक सजषात्मक ििध, चयन ओ संयोजनक सायास आगह सामाह्यसँ विक्शष्ट बना देलक्न अवि।

गीतप

अमि मूल रपे कवि िवि ते एकाकीमे सेहो सिल-सिलपि क्हनक काव्य पक्ताभाक पस्फुटन भेल िक्त जकि पक्तफल िििा लूवि, हाक्कमक हाक्कय एि ' शमदानमे सेहो क्हनक काव्य- पक्ताभा सँ पाठक एि दशष्क पविक्चत होइत अवि धेिँयालूविमेढोलक िक्लपि गबैत एक मण्डली पिशि किैति अवि जकि विरय-िस्तु विक िष्टक्ाता महात्मा गाधी दाि देखाओल गेल गह-उदयोग एि कुटीि

उदोग, तकि महतापि पकाश देल गेल अवि। एक्ह एकाकी मे पयुतत गीतक महर्त मूलसर्ि विक जनसामाह्यके एक्ह क्दस आकवरषा कबि। हाक्कमक हाक्कम ि ननक्दओक ननक्दमे सहो उतत पम्पिाकि पालन कियल गेल अवि जखन क्वडल स्कूलक पागंणमे चेयि मैन साहेब उपक्सि त भ' ित लोकक्के िवरषकोत्सकि असिपि पविताेवरक देबाक लेल जाइत िवि तखन हुनक सिगततषि सिगत गानके आयोजन कयल जाइत अवि। शमदान एकाकीमे सेहो एक्ह पम्पिाकि क्ाहि कयल गेल अवि। सयि सेकिक दल काह्ह पि कोदावि आि हािमे विटपा ल' कए शमक महताके पक्ाक्दत कैति मातभूक्म भाति माताके आदान कैति िवि जे माननतापि दानिताक स्पष्ट िाकी भेक्ट िहल अवि। एक्हन विरम क्सिक्ामे दक्लतक उदािक हेतु एक्हसँ उतक साधन आिकी भ' सकैि ? शमक मोध्यमे हमिा समक उदाि संभावित अवि। एक्हसँ पेक्हत भ' कए गैआ सब क्ाक्ल क' देशक क्ामाण, अपन भाग्यक क्ामाण तिा भािीप संतानक भविष्य क्ामाणक हेतु कोशक िह्दना कैति देखल जाइत िवि जाक्हमे मातभक्ाक कल्याणाििषकाक्सतकािी डेग उठबैत विशि बह्धुतकि भािनासँ पेशति भ' कए आबाल-दि िक्ाता देशक नि-क्ामाणक हेतु सह्नद भ' जाइत िवि जे त्याग तस्पया , आलस्य, भय, आक्दक पविातिगक , देशक क्ामाण मे लावा जावि। उपयुक्ात तीनू एकाकी गीतक शब्द-विह्यास संगीत पम्पिािनुरप अवि।

उदेश्य प

चह्दनािक्ाश 'अमि' क जतबे एकाकी ओ पहसन पकाशमे आलय अवि ओक्हमे एकाकीकाि क्ावलाचलक पविपेक्यमे जाक्ह सामाक्जक

समस्याक्के पस्तुत कयलक्त अवि ओ मात कवि लाचलेक समस्या धवि सीक्मत नक्ह अवि, पत्युत सम्पूणष भातिरिष्क ओक्ह सामाक्जक पर्वािशक समस्या वि कि जाक्ह पर्वािशि मे भातिीय कान्म एर्वि ध्मीलति पर्वािि गुजबिसि कािति अवि। हमिि जनैत एकाकी ओ पहसनक िचनाक पािि एकाकीकाकि सािक्वक महतिपूणष उदेश्य िहलक्त अवि जे एकिि माध्यमे कवि लाचक सामाजक्क पर्वािकि पुनक्नषाणक संगक्ह संग समाजमे एक एहन चेतना आनब जाक्हसँ जाजषिति समाजक कायाकल्प जा सकय । एक सफल क्शाक्क होयबाक कािणे क्याहािवकि जीिनक अनुभकि आधािपि एक युगदष्टा साक्हतक्कािि सहश ओ इएह सह्देश देबाक उपकम कयलक्त जे क्शाक्त जगतमे आमूल पर्वािितषा, पर्वािदिन ओ पिवमाजषाक पयोजन अवि। एक्ह पषृभूक्मे ओ अपन एकाकी ओ पहसनक विियस्तुक चयन कयलक्त जे क्याहािवकि जीिनिमे जनसामाह्यक हेतु लाभ पद क्सद भ’ सकय।

पत्येक क्यक्कतक जीिनक एक सुनक्शाचत उदेश्य होइिि। ओक्ह ध्येयक पाक्प्तक हेतु क्यक्त सब कििु तन-मन-धन समक्पषत क’ दैत अवि। पुस्तक मनुक्यक गुर एर्वि क्तक संगक्ह सब कििु अवि। ओक्हसँ फािक िक्ह क’ मनुष्य के सुखक अनुभूक्त नक्ह भ’ सकैि। मगतषाक पािि-पािि दौडलासँ मनुष्यके मात िकाने होइत िक। कक्ह्तु पुस्तकमे क्यस्त िहलापिि मानक्सक समाधान ओ जानक संगक्ह सम्मान भेटैि। अतएर्वि समाजसँ कििु मागबाक लालसासँ नीक विक जे अध्ययन- अदािपनक सत्य दुक्नया अपनायब िजिमागषि विक। चह्द नािि क्शश अमिकि विफुल साक्हत्य साधनाके देक्ख पक्भाक्त होइत अवि जे क्हनक साक्हत्य साधना क्नक्शाचत रपे

व्हनक िजमागष िक्त जकिा अनुसणि क’ कए एतेक अिदान मैिवली साव्हत्यके शीिद्द बनयबामे द’ पौलक्त ओ जाव्ह सामाव्जक पर्विशिक पश्न एकाकी ओ पहसनमे उठौलक्त ओ क्वशात रपे क्वशालाक पष्ठभूव्ममे एक अव्मशाप िवक।

बहासिान एक उल्लेखनीय एकाकीक रपमे पाठकक समक अबैत अिव जाव्हमे एकाकीकािा क्वम्नािचष्ठा गमैया समाजक पतीक रपमे सुवाया ओ पंचकौडीके पस्तुत क’ कए ई जनयबाक उपकम कयसलक्त अिव जे युग-युगसँ सीव्हत अिव, पीव्डत अिव, जकिा पिा अत्याचािा तँ अिशय होइत िैक; क्कहुत अपन आकोशके गामक मुव्खचा हिर्विशि बाबू पिा नव्ह पकट क’ कए बहासिान पिा पकट किैत अिव जे भगािन सेहो शोरक िगष्क संग क्वल क’ अत्याचािा किबा मे सहयोग देबामे कनेको कुंव्ठत नव्ह होइत िवि। जाव्ह समाजमे अक्वशक्ता ओ अह्धशदाक पभािा िैक ओतय गिीब तिा मजदूिक शोरणक पिम्पिा बक्त क’ व्हि जाइत अिव। ओकिा मानव्सकता एहन िैक जे ओने तँ भगािनक िवििध क’ सकैत अिव आ ने शोरक िगष्क पक्तव्क्वध बक्त क’ मूक व्हि सकैि। ओ अह्यायसँ डेिायिल अिव तिा ओव्हसँ मुक्तत पयबाक आकाकी सेहो अिव। एतय संघरषदोसिा पक सेहो अिव जे मुव्खया एव्ह अह्यायक एक पुजा मात अिव।

सामाव्जक यिािषि्वरियक चयन किबाक पािा चह्दनािा क्वश अमिकि मुख्य उदेश्य िक्त समाज-सुधािा तिा जनसामाह्यके एव्ह व्दस आकाव्रष्ठ किबि। एकाकीकािा समाजक अह्यायपिा पकाश द’ कए जनसामाह्यमे चैतह्य उत्पह्न कयलक्त अिव। ओना तँ सभ देशक नाटकककािा सामाव्जक िवरियके आधािा बना क’ कक्तपया

नाटक एकाकी ओ पहसनकाि िचना कयलक अवि जे पाठक ि दशषक क आकषणक केह्द बनल अवि। भाितीय एकाकीकाि ओ पहसनकाि सामावजक यिािष्क पूणष उपयोग कयलक। पस्तुत एकाकीकाि सामावजक वरियक अधाि बना क' सुधाि कबाक वदशामे पयास कयलक। ओ वमविलाचलक क' सामावजक जीिन मे वस्तित कुशीवतके देखलक तिा ओवहपि व्यंगयाताक शैलीमे पहाि कयलक। एकाकीकाकि सुधाकि वतक पवणाम सिि प समाजक जीित-गैत वयत जनसाधिणक सोिा पस्तुत भेल तिा निीन भािनाक वकास क लेल मागष पशस्त भेल। समाजक पविकाि भािनासँ पेवित भ' कए ओ एकाकी एिं पहसनक िचना कयलक तिा सामावजक पवििशक अहतगित िगषत वाडम्बना के नष्ट कबाक अदेश्सँ ओ हास्य-व्यंगयके पमुख साधन बनौलक।
संभितिप एवह िवस्तकितासँ अिगत नवह हिलाक काणि डॉ. दुगानाि िशीश () मैविली सावहत्यक इवतहास (1991) मे वहनकापि जे आिप लगौलक जे वहनक एकाकी जावह पचाि-पसािक सिि अत्यहत पमुख भेलासँ पत्येक एकाकी, सकिािी पचाि सावहत्य जका लगैत अवि (पष्ठ-301)। हमािा दवष एँ दुगानाि िशीशक ई किन सििा वदगभवमत विचाि वक, काणि सावहत्यक पमुख उदेश्य होइि जे समाजमे घवटत भेवहाि घटनाक यिािष पाठक ओ दशषक के अिगत कियिब समाजक अभािमे सावहत्य महतिहीन भ' जाइि। एकाकीकाि चह्दनाि वमश अमि समाजक यिािष्क वयतण क' िस्तिवकितासँ अिगत कियिबाक पयास कयलक जे सििा गहणीय अवि, अनुकणीय अवि, काणि हुह्नक एकाकी ओ पहसनक वरिय-िस्तु समाजोमुखी तिा समयक जे माग

िल तकि पर्वपिकामे क्लखल गेल अवि।

कापसाणि प

चहृदनाि कमश अमि अपन पहसन ओ एकाकीमे हास्य-व्यंग्यक अतिाणिा क लेल विविध पात एिं पविस्थिक्ति कि-स्तुिमे कयोवजत कयलक्त अवि, काणि हुनक समसाव्यक सामावजक पर्विेशिक अहृत्गात्मा एही पकाकि जिलिहृत समस्या िल जकि ओ अत्यहृत सूक्ष्मताक तगस विश्लेरण कयलक्त। पहसनक कि अर्जवजित होइत अवि आि पहसनक पातक विविध कया कलाप सेहो दशाकके हँसबैत अवि। यदवा पहसन उहपासात्मक होइत अवि ताविा ओकहमे सुधाकि भाि्ना सक्कहृत िहैत अवि जे क्हनक पहसनक केहृद कवहृदु विक।

एकाकी मै सामावजक समस्याक विवभहृन पहलूके पभाित्पादक शैलीमे पभािशिली ढंगसँ पस्तुत कयलक्त अवि। एकाकीकाि यािसिान सहज स्फूतताँ मावाक विचािके अवभव्यतत कयकहाि गाम्य भाराक माध्यमे पस्तुत कयलक्त। क्हनक एकाकी ओ पहसनक भारा तिा ओकिा पस्तुत कबिाक ि्ली एतेक सक्म अवि जे नेपथ्यमे कोनो पकाकि आयोजनक पयोजने नक्ह पडैि। ई एकाकी ओ पहसनमे िि-व्यसिािक एहन संकेत पातक माध्यमे देलक्त अवि जाक्ह सँ एकि भूवमका कवाण स्ियं भ’ जाइि। एक पात दोसि संग ितालाय कित अपन आिि, मौन एिं क्सिि दवटएँ बीच-बीचमे र कक क’ नाटकीय पभािके गम्भीि बना देलक्त अवि। एक्ह पकाि मंचीच सम्भािनासँ पवपूणष क्हनक ओ पहसनक सामावजक जीिनक यािाविताक विवभहृन समस्याके एक्ह पकाि र -ब-र पस्तुत कयलक्त अवि जाक्हसँ आ लोकक्त कवानु भेने नक्ह िक्ह सकैि। क्हनक

एकाकी ओ प्रहसनक भाषामे सूक्ष्मता एवं प्रत्यक्षता अछि।

चन्द्रनाथ मिश्र अमर अपन समसामयिक जीवनक दैनिक, आर्थिक सामाजिक समस्याकेँ विचार प्रधान ढंगसँ सोचिबाक प्रयासकयलन्हि। ओ कल्पनाक जीवनसँ हटि क' यथार्थक सहजिमीन पर अयलाह। कविनक' प्रात चर्चित कृतिक' भाषा शिभूरा सबमे यथार्थवादकप्रवृत्ति अत्यधिक हुनक एकाकी ओ प्रहसनक विशिष्टता अछि। यथार्थवादीप्रगतिशील समस्याकेँ ओ एकाकी एवं प्रहसन मे स्थान देलन्हि। ई नाटकीय भाषाक संस्कार कयलन्हि, नव भावकेँ संजीवनी ओकरा देलन्हि एवं कलाक विभिन्न रूप मे सार्थक प्रयोग कयलन्हि तथा विशिष्ट मैथिली गद्यके दिशा देलन्हि। हुनक एकाकीओप्रहसनमे शिल्प-कथ्यक सन्धि होइत अछि। विशेषतः हास्य-व्यंग्यक ई मैथिलीमे कुशलतम लेखक छथि जकर प्रमाण हुनक समग्र साहित्यमे उपलब्ध होइत अछि। हुनक एकाकी ओ प्रहसन अभिनयोपयोगी अछि जकरा प्रस्तुत करबाक हेतु कोनो तामझामक आयोजनक प्रयोजन नहि पड़ैत। हुनक एकाकी'- प्रहसन जहिना पठनीय अछि तहिना अभिनेय सेहो। एहि प्रकारें हुनक एकाकी-प्रहसनक माध्यमे समकालीनचलैत सामाजिक समस्त सामाजिक जीवनक चित्र भेटैत अछि जे विविध रूपमे प्रत्यक्षीकरण भ' जाइत अछि।

लोकगाि ओ मवागपदम

अकि आवि षिकाि सँ दीघकालािध धावि कावि लाचलमे मौखक लोक साहत्यक पिमािि अनुितिषान हल जकि आधुिनक सहदभमे हमिि लोकक मात कल्पनाक ऑखए देख सकैत िी, कािण कालकमेण लोक साहत्यक बहुलाश विलुप्त भेल जा िहल अवि । तािव सुसंस्कृत रपमे कलयािद साहत्यक संग-संग गीत. कविता, कि, गाि उपाख्यान, लोकोक्त एिं मुहाििक विशाल भण्डाि विदमान अवि आ ई पिमािि अनेकानेक शतक लोक साहत्यके आगो संसाित-पसाि होइत िहल, भनक काल कमंण एकमे कहु पविितिषा होइत िहल अवि ।

मैवि लीक साहत्य कहतक आगििक एक अनुँिकाक सम्पदाक संकलन-पवितुलन काजमे लागल िवि । िस्ति मे ई पिमािि कतेक समद अवि तकि िस्तविकताक जानकाि हुनके होयतक जनका एकि अ्ययनमे रच िक ि गामीण पविेि मे जनसाधािणक जीिनसँ िकट सम्पकी िवि । पीढी-दि-पीढी समतक पिमािमे पिहमान विविध विधाक लोक साहत्य मनोिंजन कि्ति काक दैत अवि आ पाठक ि शोताके कनबैत, हँसबैत आ चेतबैत िहल अवि ।

मैवि ली लोक साहत्य अपन आहतविक गुण एिं िवि्यमे अत्यहत समदशाली अवि । कावि लाचल िसी जहना-जहना संचावित भेल अवि से एकि लोक साहत्यक विविदाताके निआयाम देलक अवि । कावि लाचल िसीक उदभि के कममे, विविध आयषभाराक िक्त-नीक्त, कि, गाि आ िगिगक जे अिदान अवि से एक साहत्यके आि समदति बना दोलक अवि । सभािति एक साहत्य

मे एहन-एहन बात कहल गेल अछि जे दोसरिके अनसोहाँत, जाहि विशेरक प्रिक्रतय पि पहारि करैत अवि, परिन्तु एहिमे कान्हदासँ देशी पविहासक पुट आदि आ जकरापि कोनो कहबी, कोनो गीत ि कोनो कांदिहत्ती चोट करैत अवि ओ सभ एकरि विनोदमय मात बूरैत अवि।

साहित्यक सिवाधक पाचीनतम विधा लोक साहित्य वकि जाहिमे लोकगीत, लोकगारि, लोकोक्तत, लोकना टयलोकनत्य, लोक अपारिय, लोक जान, लोक याता, लोक परिमारि, लोक पिहि, लोक मानस, लोक पक्तमा, लोक िडाषमय, लोकिता इत्यादि समाहित अवि। जहिना नदीक पिहि मान धारिमे पारिकि िट-िट टुकडी सभ घसा क' गोल आ सुहदि आकारि पाप्त करैत अवि जे ककरो दारि पारिभि भेल ओ लोक कंठमे युग-युग धवि परिवहत होइत कात नरीन रप धारिण करैत गेल आ ता धवि विकविसत होइत हैिर जा धावि पढत-गुनल व्यकित ओकरि संकविलत क' िावि क' ओकरि रप वसिरि नहि क' सकैर।

लोकगारि लोककंठ सँ उत्पहन्न आ विकविसत होइत अछि। लोकगारिक सामाहन्य रप-विधानके ल' कए कोनो विशेर कवि क' दारि िकत होइह जाहिमे गीतात्मकता (कलविकल तिविलटी) आरि करित्मकता दुनूक मशण होइर जकरि पचारि जनसाधारिणमे मौखिक रपसँ एक पीढी दोसरि पीढीमे होइत अवि। लोकगारि मानि समाजक आदिम साहित्यक रप अवि। एकरि उत्पत्ति तखन भेल जखन समाज अविभतत आ एक इकाई क रपमे िल। अतएि लोकगारि पारिभि मे सम्पूणषसमाजक सम्पत्ति िल, सब एकरि गबैत िल आ अपना ददससँ करिु ने करिु जोडैत-घटबैत िल। एहि

पकार्ँ एक स्रिनसँ दोसर स्रिन आ एक पुश्तसँ दोसर पुश्त कंठानुकंठ यात्रा कबिाक कारणे ओकर स्वरिप परविर्तित होइत गेल।

लोकगाािक उत्पत्तिक सम्बन्धमे लोक साहित्यक विशेरज लोकक्नक अनुसारँ लोकक्नक्वादि (कम्यूनल ऑर्िर्शिप), व्यक्तित क्नक्वादि (इनब्रविडुअल ऑयर्िर्शिप) आ विकासादि (इभोलुसन) क मुख्य हारि विक एकर पचार-पसार मुख्यतप ग्राम्यजीवनिक क्षेत्रमे भेल अछि। एक्हि मे आत्मव्यंजक तत्त्व (सब्जेक्टिभएलीमेंट) अभाव आ अक्तायिक्ता वस्तु व्यंजक (आब्जेक्टिभ एलीमेंट) क पमुखता होइत अछि तरा शम साध्य कलात्मकता नहि, पत्युत यरार्थ अभिव्यक्तिक पवित्तिक पधानता हैछि। एहिमे अनावश्यक बाग्जाल नहि, पविमल-पेम भावना, सहजोद्गार, भावात्मकता आ सरल कल्पनाक मात्रा अधिक होइत जाहिमे बौद्धिकता, कल्पनाशीलता आ शम साध्य कलात्मकताक नहि। एहिमे भाराक विचारित सरलता एवं नैसर्गिकता एहन हैछि जे आदिमक समाजमे उपलब्ध होइत। एहि रूढ, अस्वाभाविक आ शमसाध्य अलंकारिक आ शब्दक अभाव होइत। एहिमे पयुक्त अलंकार आ लोकोक्ति एवं मुहाराक बाहुल्य आति होइत। छन्द विन्यास सरल तरा तुकपर कोनो ध्यान नहि देल जाइत। ओकर गेयता शास्त्रीय संगीतसँ भिन्न होइत।

मैथिली लोक साहित्यान्तर्गत लोकगाािक वास्तविक संख्या कतेक अछि एहि पसंगमे क्रविषिद रूपे किछु कहब तथ्यान सन्दर्भमे अपासंगिक पतीत होयत, कारण ने तँ इतिहासकार आ ने लोक साहित्यक विशेरज लोकक्नि एहि सन्दर्भमे सुव्यवस्थित आ ने सुविचारित मनतव्य देलनि अछि। जयकान्त मिश्र (1922)

Introduction to the Folk Literature of Mithila (1950) मे लोविकि,सलहेस, दीनाभदी एि कमला मैया गीतक चचा कयलक। ओ जकि कमला मैयाक गीत कहलक ओ िस्तुतप दुलि दयाल लोकगाि वि कि जे नाम सम्भ तिप उनका जान नह िलक, काणि एह लोकगाहितगस कमला नदी जे मवि लाक मुख्य नदी वि कि ताहपि केह्दत अवि ति एकि गाि नायक िवि महान साहसी िि दुलि दयाल। जे कमला नदीक आख्यान हुनका एहमे उपलब्ध भेलक ते ओ एकि कमला मैयाक गीतक नामे अवमह्त कयलक।

मैवि ली साह्त्य मे ई शेय डा. िजकशोि िमा 'मवपद' (1918-1986) के िक जे लोकगािक िस्तविकि सिर िपक संकलनाि ष गहन भाि डुब्बी मावि क' एह दुलभष मोती सभक संगह कयलक ति हुनका अनुसाि लोविकि, सलहेस, नैका बकजाि, दीनाभदी, दुलि दयाल, अनंग कुसुमा, िियणिपाल एि लहिविकुशहवि अिि। पििती कालमे कतपय लोकगािक चचा भेल अवि, कहतु ओकि ऐतहासकता एि पामावकतापि पशत-वचहन अवि।

उपयुस्त लोकगाहितगस वदजेति जातपि केह्दत िहलाक काणिे मैवि ली साह्त्यक अनुसंधत लोकक एह गाि सभक संकलनाि ष उह्मुख नह भेलाह, काणि एह साह्त्यक अवष्ठाता लोकवक माह्यता िलक जे मैवि ली मात बाहमण भारा वि क। कहतु मैवि ली आइ जीविति अह ओही गामीण पविििशमे िवहाि वदजेति जातमे जवक बोली-चालीमे पुशत-दि-पुशत एकि अपना हदय मे अदावय संयोवा क' िखने अवि। अह्यि मैवि ली तँ कहया ने मावि गेल िहैत। वदजेति जातसँ अवमपाय वि कि लोविकि गाििमे गोप

समाजक, सजहेस गामिमे दुसाध समाजक, दुलिदयाल गामिमे मलाह समाजक, दीलाभदीगामिमे दकलत मुसहि समाजक नैकाबकनजािि गामिमे िशिप समाजक, िनि गामिमे डोम समाजक, ियिणिपाल एिं लहिवे कुशहवे गामि मे कनय सूाजक कातण कअि। एकह ऐकिहाकसक िवमूकि लोककाके पकाशमे आकन मवणपद मैविली भारा आ साकहतयक आ कमविलाचलक सामाकजक जीिनक संगकह भातितीय साकहतय एिं समाजक एहेन पकाश सतमभ आलोककन कयलकन जे कोकट-कोकट जनमानसक अहधकािमे टापि-टोइया द' िहल िल। िसििुतप कमविलाक ई लोक महाकावयक ऐशियषभातितीय लोकगाििक अहितगषि अपन ऐकिहाकसक, सासककिक, सामाकजक तिा साकहकतयक िैभिकि गविमा ओ दीकपत िटाक कािणे अतुलनीय अवि।

ई कािषिीद सतय विक जे िजकिशोिि िमा '*मवणपद*' जतेक गहनता एिं तनायायताक संग लोकगािि अधयन-अनुशीलन, कचहतन-मनन आ संचयन क' कए ओकहमे हेियल भुकिआयल मवण माकणतयके जनसाधािण पाठकक हेतु सिषिसुलभ किौलकन तकि शेय ओ पेय हुनकिह िकन। हुनक माहयता िलकन जे जा घवि लोकगािि सभाजेकहक मूलय पाठ भ' कमविलाचलक विकभहन केतमे जनकंठ मे पविवयापत अवि तकि संकलन, समपादन आ पकाशनक पि पशसत नकह हैत ताहवि कमविलाचलक लोक जीिनक इकिहासक िचिना असंभिि अवि। मैविली लोकगाििक पकि मवणपद अपन जीिनिके समकपषि कयेन हिवि ते कमविलाचलक कवय विभूकिक कसभोि भेल जीिनगाि के ओ अपन शम आ कलमसँ जन सामाहयके सुबोध किौलकन। ओ एक-एक विलुपत, भुकिआयल गािि सभके

ताक्र हेवि क' जीहि्त कयलक्त ताक्हसँ अनुमान कयल जा एकैि जे हुनक हदयमे जेना पेम आ सुरमाक म्प्र िव्टिका िलक्त। हुनक िचनाक पधान उत्त्स वि क असीम मानिताािद, पवि त-पेम आ शीतल सौहृदयष्ा हुनक भाििनाक केहृदमे अवधक्ा त िल पमि-पुरराि ी, लोक पाियिण. क्ांरहकाि आ कतष्यक्नष्ठ आदशषुरर आ सतत साध्कका, लोकसेविका, पेिणा आ गविमामयी आदशष नाि ी। यदवा सौहृदयष्क पक्त ओ अत्यहृत संिदनशील हिवि ताििक्र हुनक कल्पना, भाििना आ विचाािक पविध्र कतहु अक्तकमण नक्ह कयलक।

मवापदक भाििना सौदयष्के स्पशष्क' चेतनाक अहृतपुि हिस्यमय आििणिके अनाित क' विशि पेमक उहृमुतत ाितायनके खोक्ल देलक्त। क्हनक िचनाक्दमे जिनक याििष पविपैक्यमे मानि पेमक अक्ाियक्ाक सहज आ क्नशिल संिकक्त विक। क्हंसामे पेम आ विप्रलिभे शाक्हृतक िक्शम विकीणष कििामे ओ सफल हिवि। पिुद चेतना, कोमल भाििना, क्वतमयी कल्पनाक संगक्ह जननी जहृमभूक्मक मयादा, पक्तष्ठा, एिि गविमा ताि मक्हमाक पक्त सतत जागरकता हुनकामे ितिमान िलक्त। क्हनका नदी, पहाड, तुराि, क्शाकाि, जंगल-िाड, चौि-चाँचि, बाध-िािन, गामघििे अशेर रक्व िलक्त। ऐक्तहाक्सक भग्नाििशेर, देिसिल, मूक्तषक्वत, नत्य, संगीत, तहृतमंत, ित्ति, पक्री आ लोक साक्हत्यक हेियिल भुक्तआयल अहृििरण, सशतत ितत, विसल उपेक्कत क्मविलाचलक जन-जीििन ताि सामाक्जक ओ सास्कक्तक पिम्पिाके युग-युगसँ पािक्हत कििि आयल अवि तकाि ताक्र होवि क' अपन ससि, सिल ओ पाहिमय शैलीमे क्लवि द क' मैििली भारा आ साक्हक्त्यक शंगाि कयलक्त। ई शेय ित्तुतप मवापदके िक्त जे क्मविलाक कंठसाक्हत्यमे युगयुगाहृतसिँ िचल-

बसल गाथा सबके जगजयाथ कबिाक स्तुत्य पयास कयलन्हि।
मानतिाक मवा आ लोकगाथाक पावााव्डत्यक पदाि मवापद मैथिली लोकगाथा के अमर बनबिाक दशामे ओ एक एहन महापुरुर छथि जनिक कार्यक्षमताक नामसँ ई विधा-विनिय हुनक पोथ-पोथ मे भरि छलन्हि। ओ हिहित गाँधीवादी, उदट साहित्य-कारहतक आ चतुर कार्यकर्त्तक छथि। हुनक अहंरी पद्धि लोक-भारा, लोक-कवि,लोकगाथा, लोकगीत कोन पकारे भातिक उत्तीय खण्डमे भूखवामयास त्यावा, निरपाहतक जतय-ततय लौह लैत, बनैया जीव-जहन्तुक आकमणसँ कापिद्, कखनो-कखतो सामना करैत लोक साहित्यक पचुर संगह कयलन्हि। एहि विधाक पक्ष दुनकामे एतेक शिशी लगनशीलता छलन्हि जकर परिणाम भेल जे ओ अपन औपन्यासिक कथा सभक कथा-संयोजनमे ओकरे आशय लोकन्हि। एहि पसंगमे हुनक कथताक कहिन छलन्हि, 'कनककबिा व्यथि सोच्य हिलाह अर्थ। यद्द ओ सेहो बुदया करथि तँ शि, उपाजन क' परिणति भणि-पोरण ले हमरा जीवैत कनेको कहिता नहि करी, एतेक परिशम आ साहससँ लोक साहित्यक सामगी ओ जे एकठा कयलन्हि अर्थ, तकर सजनात्मक कायष करी जे अकुण्ण रहि जयतन्हि।
एहिसँ पत्यभाविरत होइत जे मवापद लोकसाहित्यक वास्तविक महतासँ अपन युगीसिहसँ परिचित छथि ते ओ एकर अनवरत संगह कयलन्हि। हुनक मान्यता छलन्हि जे लोकसाहित्यक अपरिचित भण्डार छैक उपेक्षित जनजातिक कंठमे। ठेठ मैथिली ओही चौरि चाँचमे, छिय जातिक करजिमे जीवित छैक। ओहि निपहाडक टोला-टपरिक स्त्री समाजमे, कागम्य सानिमे ई काव्य छैक जतयसँ

साहसिक तपस्या क' कए मर्वआ पद बहयिलैक। ते ओ एकि उखिनन कयलक। संभतिप ते अपन उपनाम मर्वापद खिलक आ साहित्य जगत मे पख्यात भेलाह। मैविलीक ई िदि पुत मानिताक मर्वा हिर्व आ पक्तभाक पद िगके पफुल्लित आ सुविमत कयलक। हुनक वैशिष्टय विक जे ओ साधना कयलक लोककंठमे चिल-बसल साहित्यक, कहुनु जे हुनका संग ितालाप कयने होयताह तनिका ई अनुभि अशिये होयतक जे ओ संस्कृत शब्दक पचुिताक संग पयोग कर्वि; कहुनु जखल ओ कलम धर्वि तँ लोककंठमे व्याहज भारा-पयोगक असिि नहि चुकर्वि। यिािप मैविलीके हुनका सदश कनिओ साहित्यकहुतक आि भेल हितर्वि तँ एकि भण्डाि आि पूणषआ समदशाली बनैत।

मर्वापद जाहि मनर्वबिता, तेजस्विता, गम्भीिता. तन्मयाताक संग मैविली लोकगािि ओकाि संस्कृति, ओकि सभ्यताक अ्ययन कयलक ताहि गम्भीिताक संग मैविलीक तयो अनुसन्धाता अदावि नहि क' पौलक। पस्तुत पकाशय गहि एहि विरयक पुष्ट पमाण पस्तुत कर्िि जे एहि कतिक अ्ययनसँ स्पष्ट भ' जाइि जे कविलाक संस्कृति आ सभ्यता कतय धर्वि विस्तृत िल। महापाण िहुल साकत्यायन(-1963) सदश हुनको घुमतकडीमे अत्यधिक रुचि िलक जकि पुष्ट पमाण उपलब्ध होइि हुनक वाय कृर्िज *ओतहठाम गेल िलहुँ* जकिि सभके एकत्रित क' कए हम *हुनका सँ भेट भेल िल* (2004) मे पस्तुत कयल अर्वि जाहि मे हुनक एहि पतिाक पर्वचायक विक जे ओ जन-जीनिके अतयंत समीप जाय लोक जीनि मे व्याप्त साहित्यके संकलित क' अमूल्य कावधक हिस्योदघाटन क' कए साहितय पेमीके आँकि सिि पक िसासिदन

कौिलक। िस्तुतप ई मवापदक देन विक जे मैविली भारा सािहत्यके एक नि विशेरण भेटलैक।

मवापद मैविली जनकंठ सािहत्यक अहृतगषा लेविकाइन, नैकाबक्जािा, दुलिा दयाल एिं लहिवि-कुशहविक अनुसंधान िहत् रपे कयलक। ओ लोक सािहत्यक पािा तपस्यामे क्ािािक लागल िहलाह जकि फलसिरप ओ अपन अहृिरी पिक्तक पविचय देलक। पस्तुत लोकगाािक इक्तहासक अहृतगषा ओ अपन अक्त पकट कयलक ओ क्शचये मैविली सािहत्यक हेतु एक अविस्माणीय घटना विक। समयाभाकि फलसिरप ओ अहृय गाािक्दक पसंगमे नक्ह क्लवख पौलक।

लोक-संस्कृक्तक सुविख्यात क्शल्पी िशाकशोि िमा मवापद अपन मधुसाविणी भारामे मैविलीक एक्ह अमि गाािक सुमनके लोकगाािक इक्तहासमे गाँिलक अवि। एक्ह मवामालामे कक्तपय पुष्प-गुचिक सिरप आ मौक्लकताक पष्ठभूक्म ओ किाक पगक्तक आभास पाठकके अनायासक्ह उपलब्ध होयतक। पक्तपाक्द कक्त हुनक माँजल कलमक चमत्कािि विक जाक्ह दृवा कोणसँ विचिन कयल जाय तँ मैविली लोकगाािा इक्तहास मैविलीक अमूल्य क्नक्ध विक।

पक्तपाद लोकगाािक इक्तहासमे लेविकि गाािपि सोलह, दुलिा दयाल गाािा पि दस, नैका बक्जािा गाािपिसात एिं लहिविकुशहवि गाािपि पाँच लोकगाािा क इक्तहासपि मवापदक अनुसंधानात्मक आलेख एक्हमे संगहीत जे विक्भहृ पक्तकाक्दमे आइ सँ तीन दशक पूिि पकाक्शत भेख िल। एक्ह गाािा सभक िक्शष्टय ैकि जे क्िविलामे पिमािसँ अबैत गामीण लोकक अत्यंत मनोयोग पूििक एकि शिण. िसिािािदन युग-युगाहृतसँ कौिति आक्ब िहल िवि

तकि ई एकमात पामाणाक एलबम विक। एक्ह कंठगाि सभक्हक अमूल्य उपलब्ध विक जे एकाि क्मविलाचल ािसी अपन कंठमे हजाि-हजाि िरिषसँ संयोग ने आक्ब िहिल िवि।

लोविकाइन कंठ महाकाव्यके लोक जागणिक पिम लोकगाि कहब अवक्धक सभीचीन होयत आ एकि ािस्तविक मूल्याकन तखने सम्भि भ' एकैि जखन एकाि बाहमणक देिह्मुख साक्हत्य आ बौदक संसाि त्यागक साक्हक्त्यक पष्ठभूक्म मे नक्ह मूल्याकन क' एकाि भाितीय जन समाजक लोक-चेतनाक विकास कममे देखबाक उपकम कयल जाय तखन साष्ट पक्ताभाक्रत हैत जे ई गािि लोक काक्ह्तक पिम उह्मेरक एक सशतत कलात्मक आ पििहमान िचिना विक जकि ऐक्तहाक्सक महतिि ैक। एक्ह महापाण कंठ काव्यमे रष्ठप्तम शताब्दक क्मविलाक एहन सपाण िणिषा अह्यत कतहु नक्ह उपलब्ध भ' िहिल अवि। एक्हमे क्मविलाक आ् याक्त्मक, भौगक्लक, ऐक्तहाक्सक, ािजनीक्तक, समाक्जक वस्िक्तक अत्यह्त सशतत विििणि उपलब्ध होइत अवि।

एक्ह महापाण कंठ-महागािमे साक्हत्यक ििग आ भासक अनुपम आयोजन ैक जकाि विश्लेरण कयलासँ सहजे स्पष्ट भ' जाइि जे कोन अमदत्तक बले ई एतेक क्यिनीन आ एतेक क्यजीिि बनल िक्ह सकल अवि। एक्ह मे साक्हक्त्यक, ैचाविक आ घटनात्मक एकात्मकताक एतेक सुधड संयोजन ैक जे मानिक आधाििभूत संिदिनाके तात लयसँ अलंकत कैित आक्ब िहिल अवि। एकाि संगक्ह अपन भूक्मज मौक्लकता पदान कैित अवि। एकि भािा मैविलीक उराकालीन रप विकैक। एकि िचिना कालण धवि मैविलीक सिरप एतेक दढ भ' गेल िलैक जाक्हमे एकटा सशतत,

पिहमान, पाउस, सिक्सद अवमक्यक्ततिला महाकाव्य चिल जा सकलैक जे हजाि-हजाि शताब्दीक िमाि सव्हतो अदाव्म िमाननव्ह भेलैक आ लोविकक खण्डा सदश एखनो लहकलह क' हिल ैक। पक्तपाद महागाािमे सती माजवि, चनैन, सुनयना, िणचण्डी, लुिकी, योवानी कोसामावलन, महादेिी कोहिँस, महासुहृदिी दुहबी-सुहबी आ िजकुमािी संि पमुख नाव्यका िवि। जतय माजवि पवक्सिक्तक भोगक्तहावि िवि ततय चनैन पवक्सिक्त सजनक्तहावि िवि। करणामयी माजवि भक्तत, शक्तत आ आत्मदक्त िली िवि ततय भगिती चनैन पेिणा, स्फुिण आ ऊक्किली िवि। माजवि अपन सतीतिक मक्हमासँ मवण्डत िवि तँ चनैन अपन सौहृदयषावमािसँ ओतपोत। नैिशियक क्मगमे माजवि भगितीसँ खण्डाक याचना कैित िवि तँ चनैन िाि बक्तजाविनक संग रडयंतमे सहायता पदान कैित िवि। एकि िचव्यता अपन नायकके पत्येक क्सिक्तमे मािन िखलक्त जकि सुघडताक फलसिरप ई महागाािजनकंठमे अजाि, अमि एिं अशुण िक्ह सकलाह। लोविकि गाािति बा गहिमे कोना समाडक लाि अपन सेिा-पूजा नव्ह लेलक्त आ कोनो भगता िाहिन नव्ह तकलक्त जखन क्क अवधकाश लोकगाािक नायक मनुष्य देिी बक्त क' खीि-खाँड आ बक्लक भोग सिदैत भगता सभक देहपि खा लाइत िवि। एव्ह महागाािक पातढ'चविति अपना-अपना सािनपि सुदढता, सौहृदयषआ कलात्मक रपे सुसवज्जत अवि। एव्हमे पातक समहिय अतयहत्त मोहक ैके आ उच्च कोवटक साक्हक्त्यक पवक्सिक्त पकाि आ िताििणिक सजन कैित अवि। लोविकाइनक पशु-पकी यिा हािी-घोडी आ कौआ आवदम कालसँ मनुष्यक साक्‍यमे िहैत आयल अवि। एव्ह महागाािक महापाण

होयनाक काणि कज्जल वार्व आ णिहुलास सन हािी, कटाी आ बिडबा सन सन घोडाी आ बाव्जल कौआ सन पकीसँ मानकिे अत्यंत एकात्मकता सािव्यत भ' सकल अर्व आ मनुष्यक संग अत्यंत सूक्ष्म संिदना िाविख्र सकल अर्व। एकि िविशष्टय विक जे एक्हमे युद आ अखाडाक विशद् णिषा भेल अर्व। शाक्हतकालीन एकाक्हतकता आ समाज के दैत अर्व। लेक्कक खण्डा जेना हुनका सतत कहैत हिैत िकिन तित दे, तित दे। एक्हमे एहन आकरष्क सािल अर्व जतय मनके चकृत, विमुग्ध आ विमोिि क' देक्हािि मनोिज्ञानक तथ्य सभके अत्यंत सहजता आ सािभाविकताक एक्हमे संयोगने अर्व। एकि कव्तपय कािक्हगष्ठ मानि अहति मे व्तगुणक सक्ष्तुजन-असक्ष्तुलनक तति किि अििि मानक बुद्दक संग मिण कािि विलास आ युद एिि हदय संग मिण कािि शाक्हत, पाश मुक्तक किि अर्व जकाि सहज लोकािताििणिमे शक्तत पट भूक्मपि अत्यक्हत सूक्ष्मताक संग, मनोहािि शैलीमे इक्हदधनुरी ताक्हतक िगिसँ व्यक्तत कयल गेल अर्व। एक्हमे िविष्ठा नत्य ओक्हना सुशोक्मत अर्व जेना विकिहन णिषक उत्फुल्ल कमलसँ सािबि।
लोविकाइन मैविली कंठ गािािक एक अमूल्य उपलक्ष्यकविक। जकाि क्विलाक लोक अपना कंठमे हजाि िरिषसँ अक्धक समयसँ जोगौने आयल अर्व। एक्ह लोक महाकाव्यक काव्य ओ किि पबक्हध सािियं पूणष अर्व आ एक्ह बातक जािलक्हत पमाण अर्व जे मैविली जनसाक्हत्य कतेक सपाण, सशतत आ समदशाली अर्व। ई महागािि विशिकि कोनो क्लक्वखत आ अक्लक्वखत महाकाव्यसँ टतकि ल' सकैत अर्व। पयोजन एक्ह बातक अर्व जे एकि मूल्याकंन नियुगक आलोकमे हो संगे मैविली भारीक ई पुनीत कतष्य भ'

जाइत जे एकर महागाथाक सांगोपांग प्रकाशन हो। कविलाक उज्ज्वल अतीतक एक ज्योति स्तम्भ, शौर्य शील आ त्यागक प्रतिमूर्ति एक जननायक लोरिक कीर्तिगाथा स्तुतिप अमरत्व प्राप्त करबामे सफल भ' सकल अछि।

कविलामे पश्चिमासँ चल अबैत लोरिक कथा ग्रामीण जन समुदाय अत्यन्त मनोयोग पूर्वक रूचिसँ श्रवण करैत छथि। ई एक एहन लोक काव्य थिक जे लोरिकाइन नाम सँ सात खण्डमे विभक्त अछि आ अनेक रात्रिमे जाय क' समाप्त होइत अछि। एकर लोक गाथाक वैशिष्ट्य थिक ई एगाहि विभिन्न भारामे लोककंठसँ गाओल जाइत अछि। एकर सात खण्ड मे जनम खण्ड, सती माँ जरि खण्ड, चनैन-खण्ड, रणि-खण्ड, सारि-खण्ड,बाजकल-खण्ड आ सरौती रजा खण्डक चर्चा कयल जाइत। नेपाली-मैथिली संस्करणमे आठम खण्ड उपलब्ध होइत जकरा भैरवी-खण्ड कहल जाइत। एकर लोक गाथामे एक भाग रीति सिक रटा कि तँ दोसर भाग शृंगारि सिक इन्द्रधनुर सेहो दर्शन गत होइत अछि। एकर शृंगारिक रितारणि मधुमय सुरमासँ परिपूर्ण अछि। एकरमे नारी एरि नायक अपहरणक रिताहृतसँ ओतप्रोत अछि। एकर सभ पात्र अपन-अपन क्षेत्रमे अद्वितीय अछि तरि मूक पात्र सभ सेहो मनुष्यक रणीमे नरह बजाओल गेल अछि तरिम एकरा अमक आचार, अपनैती आ अवमव्यक्त अत्यन्त मनोविज्ञानक सौन्दर्यर्षसँ सफलतापूर्वक अवमव्यतत भेल अछि। एकरमे साहित्यक गंगा आ काव्य-सौन्दर्यक यमुना हसोरि ल' हिल कि ओही ठाम तात्त्विक भाधिारिक अन्तःप सकलला ससिरिती सेहो परिव्हत भेल अछि। कविलाक लोकगाथामे दुलरा दयाल एक प्राणहित लोकगाथा थिक। भारतीय भीककंग (जलयोदा)

क एहन संयोग गाीा सम्भवतः अह्माह्म साह्त्याह्नतगाा नह उपलब्ध होइि। एहि लोकगाािमे जल-जीवनिक ऐश्वयि पूणि वणिन उपलब्ध होइि। एहि लोकगाािक विशिष्टय ई कि जे कामर ूप आ बंगालक ताह्न्त्रक साधनाके उजागि कैने अि। ई महागाा मानव एक दुलि आह्त्वि शक्तक मह्माक आख्यान कैने अि। एकि नायक िजा ी योद्धा नह; प्रत्युत ह्सद नतक आ साहह्सक साधि हि। एहि गाािक घटना काल दोसि-तेसि-शताब्दी भ' सकै, ह्न्तु िचनाकाल अनुमानतः ठम-सातम शताब्दीक ई। जतेक दू ध्वि एकि भारा-शैलीक प्रश्न अि ओ अत्यह्त पाजवि अि जे मैवलीक आह्म स्वि ूपके उद्घाह्टत कैने अि। एकि भारापि ह्सद्ध कालीन मैवलीक आह्म स्वि ूपके उद्घाह्टत कैने अि। एकि भारा पि ह्सद्ध कालीन मैवलीक िशीिग आ एकि आध्याह्त्मक यह भूह्मपि बौद्ध महायान क िशी प्रभाि। एहिमे ह्निा नत्य सभ ठाम-ठाम गम्भीि ताह्न्त्रक ूप ल' लैत अि। एहि महागाािक विशेर विशिष्टय ि कि एकि प्रकह्त ििा। ह्माावसँ ल' किए गंगा आ गंगासँ ल' कए सागि धािक माि-संस्कह्तक एतेक विशाल प्रदेश जे ह्मििला, असम, बंग, आ ओवडसा धिक समेटने ि कि। विह्न्न प्रदेह्स ह्नमे एहन मोहक आ एतेक सूक्ष्म ििा-विन्यास एकि उच्चकोह्टक तलणाह्त्मकक प्रभा प्रदान कैने ि कि।

एहि महागाािक किा-प्राि अत्याह्धक कमबद्ध अि जे तत्कालीन नौकाशय, घाट-बाट आ बजािक ििासँ एकि िटा अपूि भ' गेलैक। एहि महागाािक पष्ठभूह्म ह्मििलाक जल-जीवन ि कि जकि नाह्म भूह्ममे पि ह्ह्त होइत ि महाकाली कोशी, हृदय

भूखमे पतिष्ठित होइत महालक्ष्मी कमला आ मस्तक भूख मे पतिष्ठित होइत छथि महासरिति बागमती। इएह कमला मलाह जातिक कुलदेवी थिक जकर गाथात्मक परिचय एहिमे देल गेल अछि। एहि महागाथाक नायक छथि नत्थु-गुनगुन दुलरा दयाल जे एक कुशल नर्तक, एकधीर साधिमह, एकसाहसी सागर यात्री अछि अद्भुत-ली छिपा। कमला शक्तिदा, धनदा, आदिदा, करप मे विख्यात छथि दुलरा अपन क्षमता पावन क कमला बड-बड तपस्या कयलक जकर परिणाम भेल जे हुनक यशपताका हंसालय अथिर् हिमालय, कमलालय अथिर् कमला सँ ल' कए महाशंखालय अथिर् सागर धरि दीदप-दीपान्तर धरि पहुँच गेलक। एहिमे कमलाक संगहि भाषि क ओहि कालक दृश्याकन अछि जं भाषिके सुवर्णद्वीप, सिंलीदीप. जावा. सुमता सँ सागर व्यापार चलैत छल तकर मलाही शौर्य आ साधिमह सबहक चमत्कार पूर्ण क्रिया-कलाप आ नदी व्यापारिक अनुपम चित्र एहिमे भेल अछि। ई महागाथा मानिक एक दुलर्भ, अजेय आह्तिक शक्तिक महिमाक आख्यान कैति अछि जकर विकसित कथाक विधान सहृदभावे लुप्त होइत-होइत अवधिक गुप्त भ' गेल अछि।

दुलरा दयाल महागाथाक एक-एक पात जलन जीवी समाजक एक-एक विदान क सफल पक्षकविध कैति अछि संगहि ई गाथा तत्कालीन युगधाराके काव्यक रिस धारामे परिणत क' कए युग-युगसँ तकर लोक मानसमे पतिष्ठित कथा मे सफल छिल अछि। एहि गाथामे जलजीवी. जलपथ, घाट, जलशासल ओ सुविधाक काव्यात्मक विवरणिक संगहि-संग तुला लक्ष्मी, तरआरिक विदुदाम छटा आ करआरिक अवभयानक क्षत सभ अत्यहृत सम्मोक रपे

उभाँति चल आयल अवि जे इक्तहासकाकिे सौह्न्दयानह्न्दक विपुल असिि पदान काँति अवि। एक्ह लोकगाािमे कमल ज्योक्त कविलाक बाध-बोन, चौि-चाँचिि, गाम-घिि. पशु-पक्ती आ नि-नािीक कलात्मक आ सौह्न्दयषबय िवि हंस क्शाखसिँ ल’ कए भागीििि घवि कलनक सौह्न्दयष्क विििणिसँ ओतपोत अवि। कविलाक लोकजीिनिक अत्यह्न्त पाणह्न्ित्त क्चत अवि जकि स्पष्ट पमाण एक्ह गाािमे उपलब्ध अवि। हंसालय क्हमालय.कमलालय कविला आ शंखपाल सागकि अनुपम आ कलात्मक साक्हक्त्यक सौह्न्दयष कखवि आयल अवि। एक्ह महागाािमे कविला जल-जीिनिके आलोक्कत कयकहािि विख्यात मैविलीलोक महाकाव्यक नत्यमयी महायोवानी उाइन बहुिि ठहुिइनक व्यक्क्ततति चह्न्द्रलेखा, अभीनाता. मंगला. शेबाििनी आ अपना िकिोज मे सपषदंश ल’ कए मत्य आक्लंगन कयकहािि क्कालयोपैटाक व्यक्क्ततति सँ बहुत अक्धक शक्क्तशाली, ििमाक्टक. िहिस्यमय अविभमानी आ ज्योक्क्तमष िैक। एक्ह महागााि क नाििी पात सभ डााक्कनी सँ ल’ कए याक्कन धाविक योवानक चवितक आधाि पि पतीक र पमे अपन सम्पूणष विि-िटाक संग उपक्स्ित अवि। एक्ह लोकगााि महाकाव्यक साििह्ित्क लोकक्त मे उल्लेखनीय िवि दुलाि दयाल, विजयमल्ल. गोक्हलमल्ल, कोयलाििि. क्हनूिीिक संकट ओ साहक्सक कणक विििणिसँ ओतपोत अवि। एक्ह लोक महाकाव्यक साक्हक्त्यक सौह्न्दयष आ कलात्मक क्शाल्प क्हि-क्हि क’ जेना सोिि पाडैत िैक मैविलीक सास्कक्क्तक भिि सँ उल्लक्सत होयबा ले,। एकिि जँ नदी हाक कीही तँ अक्तश्याकेक्क्त नक्ह। हंसालय सँ गंगाधाविक कमलाक धािि-पिहिक याताक एक अत्यह्न्त भव्य आ कलात्मक साक्हक्त्यक उपलक्ब्ध

अछि।

एहि महागाथामे मे साथि शब्दक पयोग तीन अर्थक अछि-जलपोतक बेड़ा, विणिकक व्यापारिक गाड़ी-बड़द आ लोकक हेजक अर्थमे तथा सैनिक गुल्मक अर्थमे तथा साहसिक नाविकक अर्थमे। साथि सम्बन्धित संतिहत होइत छथि जे शक्ति, साहस, शौर्य, सहिष्णुता आ शीलक आगर होइत छलाह। एहि महागाथामे साथि आ साथिबीहक लोकक्तक साहसक अत्यन्त मनोहारी वर्णन उपलब्ध होइत अछि। भारतीय जलयोद्धाक एहन स्मरणा अन्यत कतहु नहि उपलब्ध होइछ। एहि मे जल जीवनक बहुविध दशी साक्षात्यक घटना क परिहमान क सँ साक्षात्कार होइत अछि। एकर साथिबीह लोकक मे दयाल, विजयमाला, गोविलसफल कोयलाबीर आ लिलू बीरि क संकट ओ साहसिक कर्णक सभ विख्यात ग्रीक महकविक काव्य ओडैसीक महानायक युलीयसक एक कलात्मक उल्लास मैथिली पर्विशिमे पसविक' गौरविन्वति क' दैत अछि। एकर साथिबीह के सागर क संघरष्, शौयष् अवमयान, अनुभव, महाकाव्यक गाथा विक जकर सुनला पर मलुष्यके कर्त्तव्य, चेतावनी, चविति, चौंकि, पेरणा आ विशि द' कए ओकर अपना व्यक्तित्वके गढ़क' जीवनक दशा क्तदेश कविामे सहायक होइत छैक। दुलरा दयाल मनिमानि, शौयष शाली, तेजस्वी आ यशस्वी साथिबीह छथि। ओ देश देशान्तरक विणय कयलक्त। देशान्तरमे ओ कविलेक नहि, पत्युत भारतिक विजय अध्यात्मक विजय जि लहरौलक्त-आ अपन देश कविलाक यश सौरभ पसारि लक्त। तरआविक विजय कोनो विजय नहि होइछ कारण हिंसा. आतंक आ नितक्लपत विजय क्षणक होइछ। दुलरा दयाल महागाथा अत्यन्त कलात्मक रूपे सप्तकमलक सप्तयोवानी

नत्य पि आधावति अवि। एक्हमे क्मविलाक पशु-पक्ी, पुष्पलता, ` तुचक, तह्त-मंत, िक्त-नीक्त, संगीत-नत्य, देिी-देतिा आ नि-नािी एतेक आलोक्कत विििणि अह्यत नक्ह उपलब्ध होइि। ई गािा एक पििहमान महाकाव्य विक जे तह्त-विदाक आधाि नेने जल जीिनिक पष्ठभक्ममे युगयुगाह्तिि सँ पििहमान आ दुतमान अवि।
पक्तपाद लोकगािा ऐक्तहाक्सक ििसँ पर्वपूणष अवि, कािणि दुलिि दयाल दािि क्कक्त क्हमवािविसँ ल' कए गंगाधािि धवि सात मण्डप मूलाधाि, सिाक्धसिान, मविशापुि, अनाहत, आजाचक, सहस कमल आ सम्पूणष नत्यक क्कक्त क्कक्मा कतोक मण्डपक अििशेर अदक्म िितषान अवि। एक्ह महागािाक सििपवि िक्शष्टय विक जे एक्हमे क्मविला, कामरप आ बंगालक ताक्ह्तक साधाक पष्ठभूक्ममे क्लखल गेल अवि जाक्हमे मानिक आह्तविक शक्कतक मक्हमाक आख्यान कयल गेल अवि जे िििीकिणिक फलसिरप आब लुप्त गेल जा िहल अवि। तह्तक एक अत्यह्त शक्कतशाली विदा विक 'डायन विदा'। ई विदिया एक एहन विदिया विक जे विशिक पत्येक देश मे विदियामान अवि। ऐक्ह विदाक लेखनक कममे आङ्क्ल साक्हत्यक सिाक्धक पभाििशाली उपह्यास सी (SHE) क लेखक िइडि डेगडष्न विशिक पख्यात नाटककाि शेतसक्पयि (A Search in Secrtay of Esyft seerch) एसिषिइन क्सकेट इक्पाया 1564-1616) क टेसपेस्ट (Tempest) (क1611-12) क गणना कयल जा सकैि। पाल व्ंटत क 'एसचषइन क्सकेट इक्जप्ट' (A Search in Secret & Egypt India) तँ तह्तक िहस्यमय अह्िरणक हेतु विख्यात अवि। बाजीलक भुिनि विख्यात लेखक क्पतको-जेवियिक भूत सभहक क्लखनौल शाताक्धक उपयास

पकाशत िक। फ्लाइ माउिक एक कमस्चीक शीिमे एक कताब्ती लामा पिशक' गेलक, जाक्ह देशक भारा एिं विदाक नाम ओ सुनने िलाह तकि कताब्त, कताब्ती भाराक मटमष सभ आ लामाका विदापि एक पुस्तकक िचना कयलक िडषअक्ह (Third Eye)। ओक्ह आत्माका नाम िलैक लोि सागपिा। पक्तापाद गाि मे काया पर्वितिषक कतोक सिल अवि। एक्हमे डोइन विदाक विलकण िणिषा भेल अवि। सिनिहेकाडन टाह्स क्हमालया (Trans Himalaya) मे ।जाक्ह मानसीिि आ िकिस तालक विििण देलक अवि तकि यिािष पक्तर प एक्ह लोकगािमे इजोवियाि सीिि आ आह्वियाि सीिि कक्ह क' सम्बोकधत कयल गेल अवि। तह्त गािक िैशाष्टय विक जे पत्येक पातक चाहे ओ स्ती होवि िि पुरुर अपन केतमे अक्दतीय एिं अपक्तम िवि जे अपन चमत्काकि बलपि जनसामाह्यके सतत चमत्कृत कििैत िहैत िवि।
एक्ह महगािक अनुशीलनसँ अिबोध होइि जे दुलिि दयालक साहकसक कण विख्यात गीक महाकवि होमिक महाकाव्य ओडेसी (odyssey) क महानायक दुलीयसक अवभयान, आपक्त, धैयष शौयष आ आनह्दक कलात्मक उल्लास मैविली पर्विशिमे पसावि क' गौििक्वित क' दैत अवि। नोबेल पुिस्काि विजेता कमििइल सोलोखवि (Mikhail Olokovh)क नदी जीिनपि आधावित उपह्यास 'एण्ड तिाइट फलोज द डनॅ (And quite Flows the Doha) तिा िडक्ला साक्हत्यक उपह्यास क्शल्पी मािणक िदोपा्याय (1906-1956) क 'पदानदीि मािि (1936) सेहो जलजीिनक एतेक ऐशियष युतत विििण देबामे असमिष भ' गेल िवि।

मैवि ली लोकगाि ाह्तगण्म पाचीनकालीन क्मवि लाक समाज व्यि सि ि, ि जिव्यि सि ि आ व्यापाि व्यि सि ि ाक ममष्के उदघाक्टत कि ति अवि नैका बक्नजाि ि। ई क्मवि लाक पि पि ि गत सि णिष संस्कक्ताक महान सम्मदा वि क जकि ि अह्तगण्म तत्कालीन क्मवि लाक इक्तहास-संस्कक्त. सामाक्जक क्सि क्त, व्यापावि क व्यि सि ि ओ लोक भाि नाक मक्गामुतताक समान दु तमान अवि । जाक्ह कालमे एक्ह महागाि ाक ि चिना भेल होयत ओक्ह समय साक्हत्य, युद, ि मास, स्टंट, चलाकी देि ी-देि ताक अलौक्कक चवि तसँ भि ल अवि । एक्ह महागाि ाक ि क्शाष्टय वि क जे बौद कालीन क्मवि लाक समाजक कलात्मक अक्भव्यक्तत देक्नहाि आ लोक जीि निके उदाक्त कयक्नहाि साक्हत्य शायदे अह्याय भाि तीय भाषा साक्हत्यमे उपलबध हो। एक्हमे जे क्यत उपलब्ध होइि ओ पाँचम शताब्दीक वि क। नैकाक व्यक्ततत ि मे अनेक पकाि क वि दा आ कला सक्नक्हत ि लक्न। एक जीि निमे अनेक जीि निमे जीि ति ि लाह ओ। एक्ह गाि ाि मे ने तँ ि मासक ि टा अवि आ ने शस्त्र अलंकत शौयष्क ि टा।

नैका बक्नजाि ि एक एहन सामाक्जक लोक गाि ा वि क जकि ि माक्नयत अक्भयान आ मानि ीय संि ेदनाक सौि भक सुगक्न्ध जकाँ क्यि सि ि ायी ि क (सहसि ष्मसँ अक्धक पाचीन क्हतहुँ ई महागाि ा क्मवि लाचलक ि णाष्क समाज आ संस्कक्ताक एक एहन भव्य ि टा उपक्सि त कि ति अवि जे मूल्यि ान मवि ा सदश्य अदाक्म ओक्हना दतनान अवि । मैवि ली साक्हत्यक एक्ह महान धि ाहि वि मे सात भाषाक ऐश्ि यष्के म्लान कयक्नाहाि आ सात महाकाव्यक वि भूक्तके ि मान कयक्नहाि लोक महाकाव्य नैका बक्नजाि ि एक क्दव्य मक्णमाला वि क आ बाि ि क्तलंगाक मनोहाि ी चवि तक ि टा ओकि जापज्ज्ि लमान

सुमेर सदश दुतमान अवि। गोधन लोक जीनिक अत्यहत्त जलिह्त आधाि ि ल ति ओकि चेतना अवधक विकवसत हैत िलैक ति अपन पालकक पक्ष ओकि असीम आत्मीयता हैत िल। बाि क्षलंगाक क्रया कलाप अत्यहत्त विशिसनीय अवि।

एवहमे एक धीि, िीि आ साहवसक व्यापाि नैका बक्नजाि िणिष्ठ मेल अवि जे देश देशाह्ततकि क्षवलाक व्यापाि व्यविसाि के उदघक्टत कैति अवि ई क्षवलाक सामावजक एिं सास्क्रवतक ऐशियसँ पवपूणष पष्ठभूवमक बक्नजाि समाजक अलैवकक गाि विक। एवहमे क्षवलाचलक सास्क्रवतक ऐशियसँ पवपूणष पष्ठभूवमक बक्नजाि समाजक एक एहन सामावजक लोक महाकाव्य विक जकि र माक्तयत अवभयान आ मानिीय संिेदनाक सौभिक सुगक्न्धसँ ज कें क्यसिायी िैक। सहि रिषसँ अवधक पाचीन विहतहुँ ई महाकाव्य क्षवलाचलक िविाक समाज आ संस्क्रवतक एक अनुपास िटा उपक्सित कैति अवि जे मूल्यिान मवण सदश ओवहना दुतमान अवि। ई महागाि नैकाक व्यापाविक अवभयानक गाि विक जे मैविली साक्हत्यक एक महान हधाहिवमे सात भाराक ऐशियके म्लान कयक्हाि लोक महाकाव्य क्दव्य मवणमाला विक।

नैका बक्नजाि जतय उच्च सभ्यताक उदभी, उच्च क्षष्ठाक कतष्य-पाियण. धीि, िीि गम्भीि हिवि ततय हुनक विहोता पत्नी फुसेशिि अपन कुलमयादा. शलीनता एिं सतीतकि क्षि सती सीता-साविती सदश कयलक्न। नैकाक धक्हतति मे अनेक पकाकि विदा आ कला सक्नक्हत िलक्न। हुनक व्यक्ततिमे एक महान महायाती, ज्योक्तरी, िैद, अवभयानी, खान-खोजी, संक्ध-विगहताता. साि पिीह. िदिक, क्ति-पखिी आ पकीक िणीक विशेरज हिवि। ओ कतोक खानक

अह्निशिण कयलक्त। हुनक व्यक्ततत क्तापिद िलक्त। ई मानिीय स्त्तापिि एक सतिंगी मोहक िटा उपक्स्ित कििै एक अमि िचिना विक जे मैविली कंठ साक्त्हत्यक एक जाज्जिलमान मुकुट मक्ण बक्त गेल अवि।

एकि मुख्य्य नाव्यका िवि चदेशक िाजाक एकमात सह्तान नैका बक्तजाि क धमषपत्ती िनी फुलेशििी जे अभािमे सुभाि, विपह्नतामे सम्पह्नता आ विपक्त मे धैयष िखैत िवि। हुनकामे सजनात्मक पक्ताभा िलक्त जकिा दािि ओ दोण नगिकि महाकुबेिनीसँ पाविक्ष्ता भेलीह। ओ दोणेर्शीके पुत पावक्त्तक क्दशा संकेत कयलक्त। फुनेशििके पाप्त क’ कए बक्तजािि कुल तवि गेलैक। एक्ह पकाि क्तलकेशििी सन दुष्टा आ लेशििी सन धमषपियिण दू ननक्द आ फलेशििी सन एक मक्हमामयी भाउजक क्चतण एक कलात्मक क्तकोण बक्त गेल अवि एक्ह महागािि मे। क्तस्सह्देह एक्ह महागाािक अनमोल तीनू नािि िवित क्तविलाचल एिं मैविली साक्त्हत्यक जाज्जिलयमान धिोहवि विक।

समकाली समाज मे नािीक क्स्क्त अत्यह्त दयनीय िल जकिा मात भोग्य्या बुिल जाइंत िलैक। समकालीन सामाक्जक पविशिमे मक्हलाक कयविकियक व्यापाि अिधि गक्तसं चलैत िल तिा नािीक हाट लगैत िल जकिा देखतक्ह लोकक ऑक्खके चकचोह्ही लावा जाइत िलैक। एक्हमे िवगाक्ष्ता कुम्भा डोम दाि सुह्दिी-व्यापाि तत्कालीन भाितीय नािीक हीन क्स्क्त आ नैिश्य पूणषजीिनक अक्तािि षूणषक्चत पस्तुत कििै अवि। डोमिज कुम्भा नािीक कय-विकिय कयक्तहाि िश्या हाट लगौक्तहाि महादल िल। नािी समूहकजघह्यष़ बबिि आ पाक्खक उपयोग क ई एक विलक्ण

दस्तािज वि क जे एक्ह ठामक सामाविजक इक्तहासक अक्सट दग्ध पष्ठ कहल जा सकै ि। एक्ह हाटमे िजा लोकक्तक र पसी िनी. िजकुमािी, अपहता, उढलि. हता. पवित्यतता, क्ािक्सता, भष्टा एि पीवेडता ललना सभ हैित िलीह। कुम्भा उदण्ड, अिण्ड आ पमत िल। एक्ह महागािमे विणास कुम्भा डोम दाि सुह्दीक क्यापाि. तत्कालीन भाितीय नािीक हीन क्सिक्त आ क्ािशि जीिनिक क्यािपूणष क्त्त उपक्सित कि ित अवि। डोक्मन संग पुर रक वाय होइत िलीह आ अपना जुडामे फूलक गुच्ि गुम्फत कि ित िलीह। ई सभ मसान भैि आ योवानीक पूजक होइत िलीह एकि सभक बीचमे क्ाि् ताक्त्तक साधनाक पचलन िलैक िमा चाि क्सक्द लेल डोक्मनक उपयोग कापाक्लक भैि दाि कयल जाइत िल।

तका बक्जाि कालीन सामाविजक पष्ठभूक्मे अडोमक अक्तवितत चाण्डाल एि धाडण्डक सेहो विशेर चलती िलैक। चाण्डाल सतत अमानुक्रक कायषक लेल विख्यात िल। ओ ककि हत्या सुपािी जका कतवि क' कि ित िल। धाडड सभ युद वाय होइत िल आ क्ापुण अशिािी सेहो। समकालीन समाजक िजा लोकन अपन विपुल धन िक्श द' कए एकि सभ शौयषक उपयोग कि ित िलाह। ओ सभ दस्युक काज कि ित िल। ओक्ह कालक नागमक्ण क्ािटा धाडँड पख्यात िल।

अनाक्द कालसँ क्विलाक लोककंठमे लहिवि-कुशहविक गािि पचक्लत अवि। एक्ह गािक पसंग विधि पुिण एि िमायणमे सेहो विणास अवि; कक्न्तु एक्ह गािमे विणास िैदेहीक जे सिर प विधान अवि तकि अह्तगास लि-कुशक उत्पक्त्त किाक जे सिर प विधान अवि, से क्विलाक एक्ह अमि लोकगािक तुलनामे िूस-िमान

अवि। भातीय आदशक शेष्ठँतम नाीिक व्यक्ततत्तिक एहन क्द्व्य उत्क्करष जाव्ह ज्जलिताक संग एव्हमे देदीप्यमान अवि ओकि सिरिपक मौव्लकता अह्याह्य अनगक्ततो इक्तहास ाि पुणि मे नव्ह उपलब्ध होइि। एव्ह ज्नकंठ गाािमे जे उज्जिलि आ अत्युच नाीिक सजन कयल गेल अवि ओ अह्याह्य नाडमियमे दुलषा अवि। एव्ह गााक पष्ठभूक्ममे सीमा अपन मातभूक्म कविलाक सिविणष साधना, पिमिपािगत सास्क्कक्ताक एंशियिष आ लोकजीिनक सहज सौह्वयष नेने विकक्सत भेल अवि। एव्हमे कविलाक महान बेटीक अदम्य, सजनात्मक पक्ति आ पभमय आध्याक्त्मक व्यक्ततति आलोक्कत भेल अवि। एव्ह लोकगााक सिरिपक मौक्लकता अवि जे सहसमुख ािणि-िधि ओ िनिासिक पसंग सीताके देल गेल अदण्डदण्ड सेहो एक विचाािणीय विरिय विक। सीता दाािि सहसमुख ािणि िधि जेना सीता चविितके सहसा मुख्य ाािमायणसँ फािक क' अपत्याक्शत रपे हुनका बहुत आगाँ आक्न दैत िक्न। सीताक जाव्ह जाज्जिलमान ािमिमुतत आ ऐशियिष मुतत िदेहीक व्यक्ततति विकास िलसीक्क आशममे भेल, सहसमुख ािणिनध आ िनिासिक पसंग ओव्ह सशतत कििक पूिभास ाितािणिक रपमे कलात्मक भाि व्यक्तत भेल अवि। एव्हसँ आगू जे िदेही-सिरिप िविमिय भेल, तकिि पाक्ब क' संसािि कोनो साव्हत्य आ इक्तहासक पह्ना अनायासव्ह सिविणष भ' सकैि। सीताक जीिन-संघरषके कििक गभषके उदघाव्टत कििबाक कममे सीताक लेल िलसीक्क आशमक अत्याक्धक महति अवि। सीताक जीिन-संघरष शाीिविक ओ मानक्सक दुनू िक्न। एव्हमे लि-कुशक जह्म क कििक पविपेक्ष्यमे जगत जनीक जीिनि संघरषके एव्हमे पुनजीविित कििबाक उपकम कयल गेल अवि।

लहिर्व-कुशहर्व लोक गािमे सीताक ज्याक्तमषा आलम्बानसँ ई क्मर्वलाक सविगषा पिम्पािक माहात्म्य गाि विक। ई लोक गाि क्मर्वलाक अनुसंधानक एक अक्मनि क्कत्तजके आलोक्कत कैि अर्व। क्मर्वलामे विदेही साधनाक अक्धक पचाि-पसाि िलैक जकिि अह्तगषा दुइ सम्पदाय विकक्सत भेल-बहमािक्कनी सम्पदाय एिं भैिीि सम्पदाय। एक्ह गािक सिप अदभुत िैक। क्किु गीत पुनप किि, पुनप गीत तखन किि। एकि विरिय आ कम अत्यह्त स्पष्ट अर्व। िमि किाक्शत सीता आ लहिर्व-कुशहर्व लोकगािाक्शत सीताक मौक्लकतामे अह्ति िैक। जतय िमि किाक्शत सीता सतत अशुमयी िर्व ततय लहिर्व-कुशहर्व किाक्शत सीता एक साधािण नािि िर्व। िमि किामे सम्पूणष किाि िमाक्शत अर्व, क्कह्तु एक्ह गािमे सीताक्शत अर्व। ई गािि तीन खण्डमे विभाक्जत अर्व- आयो्या खण्ड, िनि खण्ड एिं कमल खण्ड।

लहिर्व-कुशहर्व मे क्मर्वलाक लोक मानस, अपन माक्ट-पाक्न, आ्याक्त्मक क्चह्तन, पिम्पािि आ आचािक अनुकूल एक शक्क्तमयी सीताक आििाधना जे विदेह भूक्म, विदेह जनक, विदेह गर्विमा आ विदेही दशषाक पूणष पक्ताक्त्धाति कैि शक्क्त-साधनाके उदघाक्टत कैि अर्व। एक्हमे िणित सीता, लोक सीता िर्व िजिजेशिीि नक्ह। ई गािि क्मर्वलाक सविगषा साधना, पिम्पािगत सास्कक्तक ऐशियष तािि लोक जीिनक सहज सौह्दयष विकक्सत भेल अर्व। एक्हमे क्मर्वलाक एक्ह महान बेटीक जिलह्त जीिन-संघरषसँ शक्क्त, अदम्य सजनात्मक पिक्ताय आ्याक्त्मक क्यक्क्ति आलोक्कत भ' उठत अर्व। क्मर्वलाक लोक जीिनक आ लोक-संस्कािक अपूिष िर्व एक्हमे उपलब्ध अर्व। क्मर्वलाक लोक जीिनक आ लोक-संस्कािि

क अपूषिवि एक्हमे उपलब्ध अवि। ई गाि कावलाक सवािगष साधना, पमिािगत, सास्कक्ताक ऐशियषआ लोक जीनिक सहज सौह्दयषविकक्सत भेल अवि।

विशि साक्हत्य मे एक साधाणि नािी, िाजा-िानीक अनेक गाि उपलब्ध होइि, कक्हत्तु एक िाजिजेिशिी के सहसा एक साधाणि नािी बक्त क' त्याग, चेतनामयी, ओजस्िी सािवमान पूणषओ सफल जीनियापन कबि एकमात एक्ह लोकगाािक िवशाषटय विक। पक्ताकूल पविक्सिकाके धैयषक संग अनुकूल बनालेबाक कमता एक्ह लोकगाािक िवशषटय विक।

मक्ापद मैविली लोकगाािके अमि बनयबाक क्दशमे जे हुनक अिदान अवि ओ कशचये एक्ह साक्हत्यमे हुनका अमतिि पदान कयलक ताक्हमे संदेह नक्ह। लोकगाािक विििणात्मक िणषाक कानु पायिण कयने एक्हपि आधत उपह्या साक्दक अध्ययन हमाि जगैत अपूणषहैत। ओ जाक्ह अंशक कािशि अपन उपह्यासक्दमे नक्ह क' फैलक तकाि ओ लोकगाािक इक्तहासमे सकािशि कयलक। पयोजन अवि एक्ह विरियक जे एक्ह लोकगाि सभक्हक सम्यक् रपे संकलन, सम्पादन आ तकि पकाशन हो। कक्हत्तु अदवा मैविलीमे एक्ह क्दशामे ने तँ अनुसह्धान भेल अवि आ ने अनुसंक्धवित्सु एक्ह क्दस उह्मुख भेलह जे क्चह्तनीय विरिय विक। कावलाक सणिष पमिािमे जक्टल एक्ह गिािीनी धािहविक अक्धकाक्धक अहििण आ संकलन हो।

चेतना समक्त ओ नाटयमंच

सास्कक्ताक, साव्हक्तयक आ कलाक मुख्य केह्न्द हिल अवि काहाकि पशासक्क ाजिधानी पटना। जीकिोपाजषााि षक्मवलिाचलासिी पचुि पवमिाणमे एव्ह महानगमिे क्ाास कति िवि। मैवलिी भारा-भारीक एतेक वशिाल जनसंख्या ाला महानगकि मातभारानुागिी लोकक्क सत्पयाससँ अपन भारा आ साव्हत्य ओ ागिमंचक वकिासमे महतपिूणष भूक्मका क्ााहि कयलक समानाा ि अव, काणि एव्ह केत्मे जे कक्ाि अदािन अवि ओ पटना आ चेतना सक्मक्ताक योगदान एकव्ह बात वकि। आब ई पयोजनीय भ' गेल अवि जे जनमानस ओव्ह अदािन के जानय आ जँ महतपिूणषअवि ता ओकि मुतत कण्ठे पशंसा क' कए ओकाि सीकाि कयि। ागिमंचक केत्मे चेतना सक्मक्ताक नाटयमंचक अदािनक पूणष क्मवलिाञ्चल एि क्मवलिेतािि केत्क अदािनसँ पविक्चत होयबाक हेतु पेमशंकि क्संह (1942) क एि नाटयाह्ाचिय (2002) क अलोकन कयल जा सकैि।

ई कवक्षीद सत्य वकि जे क्मवलिाञ्चल आ क्मवलिेति केत्मे मैवलिी ागिमंचक शौक्कया ागिमंचक संख्या अत्यह्त सीक्मत अवि। यदयक्प बीसम शताब्दीक ततीय,चतुिि आ पंचम दशकमे समग भाातीय सतिंतता-संगाममे संक्लप्त हिला, जाव्ह काणि नाटक सदश्य समािदिक कलात्मक सजन वकिक्सत नव्ह भ' पौलक, ताक्प पय-तत पौााक्णक, ऐक्तहाक्सक ताि सामाक्जक नाटक मंचन होइत हिल। एहन पस्तुक्ताक मूल उदेश्य ालैक ाष्टि आ समाजक समक

एक उच्च कोटक आदशष पस्तुत कबि। एहन शौकया ि गिमंच अत्यल्प संख्यामे समाजक संग जुडल आ एकहसँ आगाँ बढ़ क’ ओ ने तँ जीिनक अवभह्न अंगे बवन सकल आ ने सास्कवतक, साव्हत्यक एिं कलात्मक विकासक मा्यम मे।

सितंतात्मक पश्चात् व्यक्त-व्यक्तक दवष कोणमे पिवतिषन भेलैक आसमाजमे सास्कवतक. साव्हत्यक एिं कलात्मक विकासक अिरि द दाि खुवज गेलैक। सिाधीनोत्ति युग मे सास्कवतक, साव्हत्यक एिं कलात्मक वसिवतक यिाषि वचतण जानबाक, बुि बाक आिश्यकता महसूस भेलैक समाज एिं जनमानसके। सामान्य जनमानसक सुख-दुःख, आशा-वनिशा, कुण्ठा संतास, असन्तोर, कोभ, कोध एिं जीजीविरा के िणी देबाक हेतु नाटककावि अन्ति उदेवलत भेलाह आ एवह वदशामे सोिं-सोिं वसिवतक िणषन कबिाक हेतु नाटक आशय लेलवन ।शनैः-शनैः ि गिमंच सामावजक जीिनक सवनकट अबैतगेल आ तिषान वसिवत मे तँ ओ एक अवभावज्य अंग बवन गेल अवि। एकि पिवणाम एतबे नवह भेलैक जे शौकयाक संगवह-संग अदष व्यािसावयक ि व्यािसावयक सत्तपि जनमानस ि गिमंचक महति के सिीकािलक। एवहमे सबसँ काव्न्त पिवतिषन भेल जे मवहला समुदाय एतष्ह मे अपन सहभािवता देब पािम्भ कयलवन। हुनका सभक सवकय सहभािवताक फलसि रूप शनैःशनैः ई मनिि जीिनक अविभाज्य अंग बनाय लाग ला वकन्तु अत्यन्त दुभाग्य पूणष वसिवत विक जे वमविलाञ्चल ि वमविलेति केतमे अदावध व्यािसावयक ि गिमंचक पादुभािि नवह भेलैक।

पटना सदश महानगिमे चेतना सवमवतक ततािधानमे नाटयवभनयक याताक शुभािम्भ भेलैक तकि फलसि रूप नाटयाचनक पिम्पािक

सूतपात भेलैक जाहिमे गृहिणी महिला शिक्षक सहभावातासँ एकरि पाणमे नि स्पन्दन भलिक जे अनुशि लि। चेतना समितिक सपिनोपरिहित सास्कृतिक गतिविधिक संगहि-संग शिमंचक क्षेत्रमे नजिागणिक संचारि भेलैक सन् 1954 ई. सँ। किन्तु आरम्भिक कालमे अनरि ति एकाकीक मंचन होइत जाािक ि र्वि िणि आगाँ पएतुत कयल जायत, मुदा सन् 1973 ई. सँ अदपयन्त एकाकी ि नाटक मंचन होइत आबि हिल अवि। भातिीय गणतंत्रमे एहन कोनो महानगरि, नगरि का कसि नहि अवि जतय कायिकत र पसँ नाट्य-पस्तुति नहि होइत अवि, किन्तु नाट्यमंच अपन पिस्तुतिसँ एकिी मूतषर प पदान कबिामे सक्षम बिसद भेल अवि।

चेतना समितिक ततीाधिानमे आयोजित विदापति पर्विक पति शनैप-शनैपजनमानसमे एक पबल जीिकि उदारिना होइेत देखि एकरि कायिकाविणी समितिक अ् यक क्षिकिरि ि (1914-1997) एरि सचिरि जटाशंकरि दास (1923-2006) अनुभि कयलनि जे ई संसि मात साहित्यिक गतिविधिपरि केन्द्रित नहि हिय, पत्युत एकरिमे अत्यधिक गतिशीलता अनबाक हेतु आ ओहन जनमानसक संग।जोडबाक पयोजन बुिलनि जकरि हेतु मनोरिजनक कार्ि एहन कायिकम सुनिश्चित कयल जाय जे अधिकाधिक संख्यामे जनमानस एहि आयोजनमे सहभागी बनि सकवि तरि एकरि किया-कलापमे अपन उपस्थिति दजषकरि सकवि। एहि सोचके किया र प देबाक निमित्त कायिकाविणी समिति एक उपसमितिक गठन कयलक जाहि मे बाबू लक्ष्मीपति सिंह (1907-1979), आनन्द मिश (1924-2006), गोपाल जी ि गोपेश (1931-2007) एरि कामेश्रि ि ि के ई भारि देल गेलनि जे एकरि कोना कियान्वित कयल जाय ताहि पसंगमे

अपन ठोस विचािर कायर्कार्रिणी सिमितक समक्ष प्रस्तुत किरिथ। उपसिमितक सदस्य लोकिन एक स्वरे अपन विचार कार्यकारिणीक समक्ष प्रस्तुत कयलिन जे मैथिलाचलक गौरव-गिरमाक पुनर्रव्याख्यान आ नाट्यसाहित्यक पुनःतन पिरपाटिके पुनर्जीवित किबाक हेतु एकहि मंचसँ नाट्यभिनयक पिरपाटि शुभारम्भ कयल जाय। उपसिमितक विचारसँ सहमत भ' कायर्कार्रिणी सिमित जनमानसक हृदयमे मातृभाषानुरागके जागृत किबाक निमित्त नाट्योजनक प्रयोजनीयताक आवश्यकता अनुभव कयलक तथा एकरा कार्यान्वित किबाक दिशामे प्रयासरत भेल।

सिमित अपन प्रयोगािस्थमे नाट्ययोजनक शुभारम्भ नाटकासँ निह क' कए एकाकीसँ किबाक िनश्चय कयलक, कारण ओिह समय मैिथलीमे अभिनयोपयोगी नाटक सिर्वथा अभाव छलैक आ एकिह नाटकके बारम्बार अभिनीत किबा समुचित निह बुझल जा उपसिमितक सदस्य लोकिन अभिनयोपयोगी एंकाकीक अन्वेषण किब प्रारम्भ कयलिन। अभिनयोपयोगी एंकाकीक हेतु मैिथलीक विभिन्न साहित्य-मनीषी लोकिनक संग सम्पकर् साधल गेल। एिह दिशामे उपसिमितके सफलता भेटलैक जे समकालीन मैिथली साहित्यपर अपन अिमट छाप छोिड िनहार बहुविधािवदी रचनाकार हिरमोहन झा (1908-1989) सँ सम्पकर् साधल गेल आ हुनकासँ अनुरोध कयल गेल जे एक एहन एकाकी अिभनेयार्थ सिमितके उपलब्ध किरिब जािहमे मैिथलाक विद्या-िवदग्धताक गौरव-गाथाक उल्लेख हो। ओ सिमितक एिह आग्रहके स्वीकार क' मण्डन िमश्र (1958) एकाकीक रचना क' कए ओकर पाण्डुिलिप सिमितक तत्कालीन पदािधकारी लोकिनके उपलब्ध करौलिन जे मैिथलाक

अतीत के उदाहरत कोिि जाहसँ जनमासन विचत भ' सकवि। अवभनयोपयुतत एकाकीक पाण्डुवलवप उपलबध भेलाक पशचात् सवमवताक पदावधकाि लोकवन अत्यवधक उतसावहत भ' वनणषय लेलवन जे अदावप मैवथली िगमंचपि मवहला अवभनेतीक भूवमकामे बावलाजचल ि बावलेतिि केतमे पुरुष अवभनेतवह दािा अवभनेतीक भूवमकाक वनषपादन किाओल जाइत िल, तावह परिपाटि खवणडत किबाक वदशामे सवमवत सोचब पािमभ कयलक ई अनुभि कयल जाय लागल जँ मवहला कलाकाि उपलबध भ' जावि तँ नाटय मंचन विशेर सिाभाविक भ' जायत। मुदा ई एक जवटल समसया िल। मवहला कलाकाि औतीह कतयसँ ? कोनो मैवथलानी मंचपि आवब अवभनय कवि से सोचनाइयो साहसक काज िल, तखन पसताि िखब आ मना क' हुनका मंचपि उताबि आओि कवठन िल। सवमवत मैवथली िगमंचपि एक कावनत अनबाक वदशामे पयासित भेल, कािण सवमवताक सतत पयास िहल अवि ले एहन अवभनि कायष कयल जाय जकि सुपवणाम हैत जे जनमानसक हदयमे िगमंचक पवत आकरषण भािनाक उदय होयतैक ति नाटयवभनयमे सिाभाविकता आओत कोनो मैवथलानी िगमंचाि आवब अवभनय कवि ई सोचबो वनिाधाि िल। ई अत्यनत साहसक काज िल, तखन ककनको समक एहन पसताब िखबाक आ हुनका मना क' मंचपि उताबि ओहूसँ कवठन िल। सवमवत सोचलक जे ओही मैवथलीनीक समक पसताि िखल जाय जवनका हदयमे मैवथल संसकवताक उतकरषय पिमपिामे आयोवजत होइत सासकवताक अनुषठानाि कायषकमक पवत आकरषण आ आगाध शदा होइन। सवमवत एहि विरयसँ पूणषपविचत िल जे हविमोहन ि उदािािदी

पगक्तशील विचाि-धािाक साक्त्य-मनीरी छवि ते सकक्तक पदाक्धकािी लोकक्न हुनक आशयमे उपक्स्त भ' अपन मनोभाविाके र पाक्यत कबाक क्नक्त हुनका सवक्नय सागह अनुिोध कयलक जे एक्ह योजनाके क्कयाक्क्त कबाक क्नक्त कपया अपन धमपत्नी सुभदा झा (1911-1982) के अपन एकाकीमे भाितीक भूक्मकामे अक्भनय कबाक अनुमक्त पदान कयल जाय। क्कए क्कएतँ ओ इनस्ततक क्सक्तमे आक्ब गोलाह जे की कयल जाय ? ओ अपन क्चनाक्मे क्मक्िलाञ्चल नािी जागणिक गखनाद कएिंह छवि ते ओ अपन उदािवादी दक्ष कोणक पक्चिय दैत सहरष सास्कक्तक चेतना सम्पहन्न, मैक्िल समाजक समक एक्ह चुनौतीके स्वीकाि क' कए युग-युगसँ आक्ब िहल बहन्धन के तोक्ड मंचपि अयलीह आ सुभदाके मण्डन क्मशक पत्नी भाितीक भूक्मकामे िंगमंचपि उपक्स्त हैबाक अनुमक्त देलक्न जे सक्षिम मैक्िलानी िंगकमीकर पमे मैक्िली िंगमंचपि अवतारित भ' एक्ह अिरद धाििक दािके भक्वष्यक हेतु खोक्ल देलक्न जकिा एक ऐक्तहाक्सक घटना कहब समुक्चत हैत आ मैक्िल समाजक हेतु पकाश स्तम्भ बक्न गेलीह।
मैक्िली िंगमंचपि सुभदा झा पदापष मक्हला िंगकमीमे एक काक्न्त आक्न देलक। चेतना सक्मक्त एिं िंगमंच हेतु ई एक ऐक्तहाक्सक घटना भेलैक आ मैक्िली िंगमंचक इक्तहासमे एक नव अध्यायक शुभािम्भ भेलैक। हुनकासँ अनुपाक्णत भ' पटना क्वशक्वदालक स्नातकोत्ति क्वभागक एक छाता पक्कभनीक भूक्मकामे िंगमंचपि उपक्स्क्त दजष कएलक्न ओ छलीह अक्हल्या चौधिी। एक्ह एकाकी अक्भनय भेल छल लेडी स्टीफेहन्सस हाल मे। मण्डन क्मशक भूक्मकामे उतिल छवि आक्वतषक उपसम्पादक यदुनन्दन शमा आ

हुनक पत्नी भातीक भूमिकामे सुभदा िा। पकाभिनीक भूमिका कयने छिथि अहिल्या चौधरी आ कठािक भूमिकाक कािह कििन छिथि इण्डयन नेशनक इह्दकाह्त िा।

विगत शताब्दीक रष्ठ दशकक उतादिषअाित् सन् 1958 ई. मे चेतना समितिक रंगमंचपि एकि एकाकीक सफलतापूर्विक मंचसि कयल गेल तिा महिला रंगकमी अपन सहभावातासँ एकिा अधिक पाणह्ि बनोलनि। सुभदा िा एिं अहिल्या चौधरीक मैथिली रंगमंचपि उपस्थिति आ हुनका सभक अभिनय कौशल एतेक बेसी पभाितिादक भेल जे महिला रंगषएकि कलाक पदशिनमे अपन कुशल कलाकािताक पिचिय देलनि जाहिसँ पोत्साहित भ' अधुनातन रंगमंच एतेक विकसित भ' सकल अछि तकि शेय आ पेय हुनके लोकनि के छनि। समाजक पति सोच, अपन उतादिितिक पति पतादिता, त्याग, सेिा-भािना आ कमषनिष्ठाक पिणाम थिक जे महिला रंगकमी सचेष्टता, तत्पिता आ अपन अभिनय-कौशलक पिचिय द' िहल छिथि। मैथिली रंगमंचक इतिहासमे एकिा ऐतिहासिक महत्ि थिक।

समिितिा दािा पस्तुत एंकाकीक मंचन अनेक िदन धरि पटनाक अतिितित अछ्यो सि ानिप चचाष-अचाषक होइत िहल, जाहिसँ अनुपाणित भ' समििितिक पदाधिकािी लोकनिक विचाि भेलनि जे पतािषिदापति समिति पितिसिपि कोना-ने-कोनो रकाकीक मंचन अिश्य कयल जाय, कािण जनमानसक अभिरुचि नाटयमंचन िदस विशेर जागत भेल आ अधिकाधिक संख्यामे जनमानसक सहभािानी होमयलागल।

पुनप ऐतिहासिक पष्ठभूमिपि आधत गोविन्द िा (1923) एकाकी

ि कीक्तष क्संहक मंचन कयल गेल जाक्हमे कीक्तष क्संहक अगज ि क्संहक ाजिक्तलक कयि हुनके हाि कीक्तष क्सहंके क्संहासनार ढ कयिबाक जक्टल समस्या ाल जे मौक्लक एि मातस्नेहक विलक्ण आदशक्षे िगमंचपि पस्तुत कबि कक्ठन समस्या ाल। एहू एकाकीक मंचन सानीय लेडी स्टीफेह्सस हालक पागंनमे भेल ाल। सक्मक्तक कालीन सक्य िरपनाायिण ठाकुिके आशंका ालक्न जे ऐक्तहाक्सकताक पष्ठभूक्ममे क्लक्खत एकाकीक मंचन कक्ठन होइि, ते बाक्मिाि ओकि असफलताक आशंका क्यतत कैति हिर्व, क्कह्तु संयोगसँ एकि पस्तुक्त अत्यह्त सफल भेल। दशक्षकक मानस पटलपि एकि सिि पाभाि पडलैक। यद्यक्प गणपक्त ठाकुिके महे असलानसँ दान रपमे पाप्त ाजिय सीकािि कयिबासँ हुनक उज्जिल चक्रत धूक्मल भ' जाइि ताक्प क्नदेशक हुनक चाक्रक्तक उत्करषके एकशन सँ पस्तुत कयलक्न।

सामाक्जक पष्ठभूक्मपि आधाक्रत एकाकी गोक्र्वह्द ाक *मोिसंहाि* (1965) कतोक घटना एक्ह रपे क्ह्यस्त अक्रि जकिा मंचपि पस्तुत कबि ओक्ह समय मे मंचीय-कौ-शलक अभाि क्हतहुँ अत्यह्त सफलता पूक्षक ओकि मंचन भेल। एक्ह एकाकीमे मक्हला अक्भनेतीक अभाि ाल ते एकि पस्तुक्तमे कोनो पकाकि कक्ठनताक अनुभि क्नदेशक के नक्ह भेलक्न। एकि क्नदेशन कनिे हिर्व गोपाल जी ाा गोपेश। *मर्विलाक पक्तमक्य* (1963) एकाकीक मंचन सेहो चेतनाक मंचपि भेल अक्रि जकि लेखक आ क्नदेशन गोक्र्वह्द ाा सयिं कयलक्न। एक्हमे दू मक्हला अक्भनेतीक ैक जकि अक्भनयमे मक्हला अक्भनेतीक भूक्मकामे पुनप पाचीन पम्पिाके साक्पत कयल गेल जे पुरर दाि मक्हला अक्भनेती भूक्मकाक

कालिह कनिओल गेल।

सन् 1962 ई. मे चीनी आकमणक पष्ठभूमि मे गोपालजी झा *गोपेश* लिखित *गुडूक चोट धोकडे* जानय तथा भारत-पाक युदक समय *विनु विभिहे क्षणिमक* मंचन चेतनाक तत्वाधानमे विद्यापति स्मृति पर्वसमारोहमे मंचित भेल छल लेडी स्टीफेन्सन हालक पंतगनमे। एहि पस्तुतिमे भारती ब्लाक तिलक पोफाइटर अजुषा ठाकुर संगहि-संग नगीना कुमारि एवं कामिनि झा महिला अभिनेतीक रूपमे मंचपर उपस्थित भेल हलिथ। पुरुष पातके महिलाक भूमिकामे देखि कऽ जनमानसँके कोनो आश्चयष नहि होइत छलैक एवं नायक-नायिकाक क्रिया-कलाप मे मयादाक चिनपर कोनो आश्चयष वा व्यवधान नहि होइत छलैक। एहि अभिनयमे भाग लेनिहार अन्य कलाकारमे इण्डियन नेशनक बेचन झा, नारायण झा आ जितेन्द्र झा पभूति अपन-अपन भूमिकाक कालिह सफलता पूवक कयलनि। उक्त दुनू एकाकीमे गीतगाइनिक भूमिकामे कमला देवी एवं हुनक सखबी लोकनिक सहयोग चेतनाक मंचके उपलब्ध भेल छलैक।

चेतना दारा कायक्षेत मंचक स्थापनाक पूर्वविद्यापति पर्वसमारोहमे जे एकाकी मंचित भेल ओ निम्नलिखित अछि

वर्ष	एकाकी	एकाकीकार
1958	मण्डनमिश्र	हरिमोहन झा
1959	मोर सहार	गोविन्द झा
1960	कविलाक पतनकथा	गोविन्द झा
1961	चंगेरिक सनेस	गोविन्द नारायण झा
1962	गूडक चोट धाकडी जानय	गोपाल जी झा गोपेश
1965	शिरीकीशोषसिंह	गोविन्द झा

1966 बानु विनोद क्दागिमन गोपाल जी ा गोपेश

उपयुक्षात पमिमाकि जे शुभाभिभ भेल ालैक ताक्हमे कतापय अपर्वहायष काणिे क्यक्ताकम भ' गेलैक ता सक्मक्त दाा ागिमंचक क्दशामे जे पयास भेल ाल ओ कका अह्ताालिक पश्यात् अािद भ' गेलैक।

कक्हतु ताािकाह्त ा (1927) जखत सक्मक्ताक सक्यािचक पद भाा गहण कयलक्त तखन ओ एकाा कक्याकलापके क्यापक फलक पाा अनबाक पयास कयलक्त। हुनक सोच ालक्त सक्मक्ताक विविधि आयोजनाक्द एकक्ह साानपाा केक्ह्दत नक्ह हियप पत्युत पचाा-पसााकि दक्त संपटनासाा विक्मह्न मुहल्ला सभमे एकाा आयोजनके मूतषरप पदान कयल जाय ओ अपन एक्ह योजनाके कक्याक्हाति कािबाक कक्मत अमनााि ा जयह्तीक आयोजन कंकडबागह्क लोक्हया नगाामे आयोक्जत कािबाक क्णषा कयलक्त जाक्हमे सक्मक्ताके गजेह्द नाायिण चौधाा, ािसुक्क नाा ा, गणेशशंकाा खगा सदश्य कमष्ठ कायषकता उपलबध भेलैक।

नाटयमंच प

शनैप-शनैप चेतना सक्मक्ताक अपन उतााताा विकास-याताक उताान ा उत्करष मे पहुँक्य विविधि रपैं कविलाक सासक्कक्ताक एा साक्हक्तयक विधाके सम्पोक्रत कािबाक क्दशामे पयासाति भेल। ई अपन गौाामिय पमिमााकि अनुरप विदापक्त सक्मक्त पााक्तसपाा नाटय मंचनक पमिमााा पुनषक्ताकपतकािबा क तत्कालीन अ्यक कुमाा ताािनह्द क्संह (1920-) एा सक्याा ताािकाह्त ा सोचलक्त जे सक्मक्ताक गक्तविक्ध अत्याक्धक पाणह्त बनाओल जाय, कााणि ओ लोकक्त दूािदशी क्यक्तत हिवाा जक्तका कायषकालमे सक्मक्त कतापय

नि-नि योजना के क्रियान्वित कबाक पयास कयलक। मैविली नाटक ओ िगमंच के विस्तत एिं व्यापक रप देबाक क्वमत्त कायषकाविणी सवमवत एक अनौपचाविक सवमवतक गठन कयलक जकि िीक टैकक सदस्य हिवि गजेन्द्रनाायिण चौधिी, िासुक्कनाि ि (1940), तिानन्द विसहं ि (1946) एिं गोलकनाि वमशके अवधकत कयल गेलवन आ एवह योजनाके कोना मूतषरप देल जाय ताविह हेतु पस्ताि देबाक भाि देल गेलवन जकि सुपविणाम भेल जे नाटक ओ िगमंचक विकासाि षिगकमीक नाटयमंच (1972) नामक एक पभािी पभागक सिापना कयलक जकि उदेश्य भेलैक निीन टेकवनक नाटक अवहिरण ओकि मंचन ति ि पकाशन। नाटयायोजनके मूतषरप पदान कबाक उतदावयत देल गेलवन नियुवि नाटय कमी तिानन्द विसंह िाके मूतषरप पदान कबाक उतदावयत देल गेलवन नियुवि नाटय कमी तिानन्द विसंह िाके जे िविडयोसँ सम्बद्द हिवि आ नाटयमंचक तकवनकक सैदावन्तक एिं व्यिहाविक पक्क अवधकाविक जानकािी िलवन। अत्याधुवनक नाटक आ िगमंचके वदशामे सवमवत कावन्तकािी डेग उठौलक जकि पयाससँ िगमंचके नि-वदशा भेटलैक ति ि नाटयमंचनक पविमाविक शुभािम्भ भेलैक सवमवत दािि।

नाटयमंचक सिापनाक पश्चात् मौवलक नाटय िचना हेतु पाचीन एिं अिाचीन नाटककाकि आहिािन क' कए नि-नि नाटक अवहिरणक पवकया पािम्भ भेल। एवह पकािें िगमंचक एक सुदढ पविमाविक सिापना भेल जे विदापवत स्मवत पषि समािोहिक असििपि ि सवमवत दािि आयोवजत कोनो महतपूणष असििपि नाटयमंचनक एक सशतत मा् यम सिावपत भेल। सवमवत नाटयमंच एक साविक

भूमिकाक निर्वाह कयलक जकर लाभ नाटककारकि संगहि-संग रंगमंचके समानरूपसँ लाभ भेटलैकपं

1. आधुनिक परिप्रेक्ष्यमे नवीन नाट्य-साहित्यक विकास यात्राक शुभारम्भ।

2. आधुनिक तकनीकक रंगमंचक स्थापना।

3. राष्ट्रीय एवं अन्तर्राष्ट्रीय स्तरपर मैथिली नाटक आ रंगमंचके स्थापित करबाक प्रयत्न।

4. अभिनेता-अभिनेत्रीक संगहि-संग कुशल निर्देशकक अन्वेषण।

5. नाट्य-लेखनक दिशामे प्रतिभावान नाटककारकेँ प्रोत्साहन।

6. अमंचित एवं अप्रकाशित नाटक पाण्डुलिपिकेँ आमंत्रित क' कए विशेषज्ञक अनुशंसा पर मंचन।

7. मंचनोपरान्त नाटक प्रकाशन।

बीसम शताब्दीक सप्तदशकोत्तर कालावधिमे सर्वाधिक नाट्यमंच प्रभाग नाटक लेखक लोकनिसँ नव-नव प्रवृत्ति आ नव-शैलीक नाट्य रचनाक अनुरोध करब प्रारम्भ कयलक तथा मंचोपरान्त ओकर प्रकाशनक भार लेब करबाक दायित्व स्वीकारलक। नाट्यमंच प्रभाग द्वारा विद्यापति स्मृति पर्वोत्सव वा अन्याय कोनो आयोजनोत्सवपर मौलिक, अनूदित वा उपन्यास वा कथाक नाट्य-रूप प्रस्तुत करबाक परम्पराक शुभारम्भ कयलक जे नाट्यलेखन आ मंचनक दिशामे ऐतिहासिक घटना थिक जे नव-नव प्रतिभाशाली नाट्य-लेखक लोकनिकेँ प्रोत्साहन भेटलनि तथा प्राचीन आ अर्वाचीन अभिनेता, अभिनेत्री आ निर्देशक लोकनि एकर प्रस्तुतिमे सहभागी बनलाह। अभिनयोपयोगी आ मंचोपयोगी नाटक जे अभाव साहित्यान्तर्गत छल तकर पूर्त्यर्थ सर्वाधिकक नाट्य प्रभागक ई कार्य

क्रमशात रपेण नाटय-लेखन ओकि मंचन ताि ओंकि पकाशेतन मे नि-क्दशाक संकेत कयलक।

चेतना अपन कायक्रमके व्यापक बनयबाक हेतु पूषि क्रणषापनुरप सन् 1973 ई. मे अमनाि ाि जयन्तीक आयोजन कंकडबाग कॉलनीक लोक्हयानगि मे ईबाक क्रणष भेलैक ताि इहो क्रणष भेलैक जे एक्ह अिसिपि एक नाटयाक्मनयक आयोजन कयल जाय जाक्हमे सहयोगी भेलाह ािसुक्कनाि ाि, गणेशशंकि सगा, अमनाि ाि एिं ितानन्दक्संह ाि। जखन ई पचाि भेलैक जे एक्ह कौलनीमे अमनाि ाि जयन्तीक अिसिपि नाटयतक्मनयक सेहो योजना ैक तखन कौलनीािसी सभक सहयोग पयाप्ता =1भे मे ताटय लागलक्न। ओक्ह अिसिपि जनमानसक मनोिंजनाि *हिली ािनी* नाटक मंचन भेल िल, जाक्हमे ाक्हणी िमण ाि जे आब मैविलीक नाटककाि आ अक्मनेताक रपमे चक्चषत िि अक्मनेती रपमे ािगमंचपि उतिल हिि। एक्ह नाटय योजनामे कक्तपय सहयोगीक बल भेटल जाक्हमे उल्लेखनीय िि इक्णडयन नेशनक इन्द्रकान्त ाि बेचन ाि, आयाितषक क्शाकिान्त ाि एिं ािजभारा विभाग क महादेि ाि क्मविलेन्दु एिं ािदानन्द ाि जनसम्पकषविभागक एक्ह आयोजनक ऐक्तहाक्सक महति ैक जे विहाकि तत्कालीन मुख्यमंती केदाि पाण्डेय एही मंचसँ विहाि पक्कलक सक्मषा कमीशनमे मैविलीक सीकक्त आ क्मविला विशिविदालयक सिापनाक उदघोरणा कयाने हिि।

पाक्मभकािसिामे अक्मनयोपयुतत नाटक अभाि हिलैक ओकाि संगक्ह-संग ािगमंचके निरप देबाक पयास भेलैक। समयाभाकि काणि सक्मक्तक नाटयमंच पभाग दाि एकि पयोग पाक्मभभेलैक

व्दगम्बाि ि व्लख्वत एकाकी टुटैत लोकसँ। पुनप सवमव्ताके मव्हला अवभनेतीक अहर्िरणक पवक्रया पािम्भ कयलक जाव्हमे ओंकाि कव्ठनताक सामना कयि पडलैक, कव्न्तु संयोगसँ िव्डयोक अवभनेती पेमलता व्मश पेम, कुमािी भािती व्मश ति अवभनेकताक रप मे ितिानन्द व्संह ि, जगन्नाि ि, नव्संह पसाद आ िदानन्द िाक अवविस्मिणीय सहयोगक फलसिरप ई पदशन अत्यन्त सफल भेल जाव्हसँ आयोजक संगव्ह-संग संयोगकक सेहो उत्साहिदन भेलव्न। एव्ह एकाकीक व्नदेशन कयाने िहि गणेश पसाद व्सन्हा ति व्बहाि आटषवियेटिक संसिापक अव्नल कुमाि मुखजणीक अपवतम तकव्नक सहयोग भेटलव्न। एव्ह एकाकीक मंचनक संगपिमे पिम आधुव्नक िगमंचक अिधािणाक एकिा बानगी पस्तुतमे भेल।

नाटयमंचक वव्धित सिापानोपिव्हत जनमानसक मनोवृव्तमे नाटक आ िगमंचक पव्त पव्तािकि संगव्ह-संग नाटयमंचनक हेतु पतीकानुसाि िहिब एक औत्सुकयक भािनाक उदय होइतव्ह सवमव्तक पदाव्धकािी लोकव्न एकिा पव्त अपन सचेष्टता आ तत्पािता देखायब पािम्भ कयलव्न तकि पवणाम वििक जे नाटय मंच मौव्लक आ निि तकव्नकक नाटयक हेतु अहर्िरण किब पािम्भ कयलक नाटयमंचक संयोगक ितिानन्द व्संह िाके ई गुरतिि भाि देल गेलव्न जे अवाम िरष चेतनाक नाटयमंचक तततािधानमे समसामव्यक समस्यासँ सम्बव्न्धत एहन मौव्लक नाटय लेखकसँ सम्पकष क' कए निि तकव्नक क नाटक हेतु पयास कििि। एव्ह हेतु ओ व्हन्दीक िवष्ठिनाटककाि आ व्मविला व्मव्हिक तत्कालीन सम्पादक सुधाशु शेखि चौधिी (1920-1990) सँ सम्पकषसाव्ध हुनकासँ एक एहन

नाटक अनुिधि कयलक्ष जे जनमानसक हदयके स्पशष कयक्षहाि हो। एक्ह पसंगमे नाटककाकि किनि किस, 'आकाशाणिी पटनाक बटुकभाइक आ चेतना सक्षमक्तक तिषान सक्षि गजेह्दनाियिण चौधिी ठोठ मोक्क हमिसँ भफाइत चाहक वजनगी वजचा लेलक्ष आ हम मैविली नाटककाकि रपमे चीह्हल आ जानल जा सफलहुँ।। भफाइत चाहक वजनगीक आत्म-कश्य) ओ इनक अनुिधिाक्ष मैविलीमे पिमे-पिसि काल खण्डी नाटक क्षलखलक्ष भफाइत चाहक वजनगी जकिा नाटयमंचक तत्िाधिानमे सन् 1974 ई. मे शहीद स्माकिक पागणमे पस्तुत कयल गेल जाक्हमे पायप पैतीस हजासिँ बेसी मैविल समाजक िँटल-िीिल लोक दम साक्ध नाटकक एक-एक शब्द पीबैत हिल, एक-एक दश्यके अपलक देखैत हिल। एक्ह पदशानक सफलताक पमुख कणि लिैक जे एक्ह पकाकि नाटयायोजन चेतना सक्षमक्त दाि पूिषे नक्ह भेल लि ते दशषकके ई सििा निनताक आभास भेटलैक। नाटकक सफलता एक्हमे हिलैक अपेक्षत ्किस पकाशआ। उपयुतत पेक्षगहक अभािमे नाटयमंच चुनल बीिल कलाकाकि सक्षय सहभावाताक फलसिरप एकिरपाक्यत कयल जा सकल। अवाम रिषओकि पकाशनक व्यिसिा कयल गेलैक जकि पर्वणिाम भेलैक जे जनमानसक जन-मन-िजनक साधनक संगक्ह समकालीन समाजमे व्याप्त बेिजगािक समस्याक हदयस्पशी किानिक जनमानसक आकरषाक केह्द क्षह्दु बक्ष गेलैक।

एक्ह पस्तुक्तमे सहभागी हिविितानह्द क्षसंह िा, हदयनाि िा, िदानह्द िा, अशफी पासिान आजनिी, बह्धु, फह्नत िा, पमिानह्द िा, चह्दपकाश िा, मोदनाि िा, मनमोहन चौधिी, शम्भुदेि िा,

ामिर्नाशि चौधिाी, पेमलता क्ाश पेम, कुमािाी मािाचह्न्द काह्त्त, सुजिीत कुमाि एिं सुनील कुमाि। अपाि जन समुदायक उपह्स्थािामे ई नाटक पशंसिते नह्; पत्युत बहुतो ह्िन धिि चचाक विरिय बनल िहिल। नाटक सफलतामे नाटकमे कलाकाि लोकनिक ओ अदम्य उत्साहक संग-संग क्ाहाि आटषविियेटि जन सम्पकष विभाग आ भाति सिकािि संगीत एिं नाटक विभागक कलाकाि लोकनिक सहयोगके असिीकािि नह् जा सकैि।

िस्तुतप एह् पस्तुितक सफलतासँ सम्बिितक पदािधकािी लोकनि पुनप हुनकासँ एक नि नाटक िचनाक अनुिोध कयलक। आधुिनकताक सह्न्दभषिे एक सेटक नाटकमे सुधाशु शेखि चौधिीक कि-िस्तु मूल पिह संग-संग एक ि एकसँ अिधक अह्ात पिहिक पयोग िहिल अिि। ओ नाटय मंचक संयोजक िितानह्न्द िसंह ािक पस्तुितसँ एतेक पभािवित भेलाह जे अपन दोसि नाटक ढहैत देिल। लेटाइत आँचिक िचना क’ कए हुनका देलविन पस्तुित किबाक हेतु। पुनप एहू काल-खण्डी नाटक पदशषा एतेक पभािकािी भेल आ जनमानस नि नाटय पस्तुितक हेतु िरिषावि पतीक्ातुि िहिय लागल। एह् पकािि नाटयमंच नाटक आ िगिमंच क ह्िशामे अपन डेग आगू बढबैत गेल। नाटय-पदशषनक सफलताक पािि नाटयामंचक पिसािद कलाकाि लोकनिक अदम्य उत्साहक फलस्िरिप एकि नाटयािभनय अपाि जनमानसक समक भेल। एह् नाटकमे पिसभगी कलाकाि लोकनिमे हदयनाि ि, मोदनाि ि, अशफी पासिािन अजनबी, शंभुदेि ि, ामिर्नाशि चौधिाी, सत्यनािायिण ािउत, िीिेह्न्दकुमाि ि, फह्नत ि, बालाशंकि कल्पनादास एिं पेमलता क्ाश पेम। एह् नाटययोजनक सब शेय

कलाकारि लोकनिक पर्वशिमक संगहि-संग बहारि आटषवियेटि एवि जनसम्पर्कषवविभागक कलाकारिके छिलसि।
चेतना समिसिक ई अविस्मिनि पयास भेलैक जे मिविलाञ्चलक पुरितन सास्कृतिक विरसित तिि नाटय साहित्यक अविच्छिन्न समृद्धशाली आ गौरिशाली परम्परामे एक नि पाणक स्पन्दन भरिबाक मिसित मियमित रूपे पाचीन एवि अवचीन पतिभाशाली नाटय-लेखकक आहरि क' कए नाटय लेखनक दिशामे पोत्साहन, मंचोपस्थित औकि पकाशनक व्यविस्थित परम्पराकि व्यसिि कयलक सन् 1973 ई. सँ जे जनमानसक मनोरिजनक संगहि-संग नाटय-साहित्यक साबदषिक दिशामे गतिशील भेल जे विदापति समिति पतिसपिि संगहि-संग अमरनारि िि, हरिमोहन िि, ललितनारियिण दास एवि जयनारि दास जयन्तीक असिपिि मौलिक, अन्य भारितीय भाराएं अनूदित ि मैविलीक पसिद उपन्यास िि करिक नाटय रूपान्तिणिक परम्पराकि शुभारिम्भ कयलक जे अदपयन्त अव्याहत रूपे चलल आबि रहिल अछि। एकरि सुपविणाम एतबा अविश्य भेलैक जे अदावधि करिसि नाटकक मंचन समितिक तितिधानमे भेल अछि जकरि ऐतिहासिक घटना कहब विशेर समुचित हैत, कारिण भंवामा (1984) के िविड क' मिविलाञ्चल ि मिविलेतरि केतक कोनो नाटय संस्थि अदयावधि एतेक पविभारामे नाटयायोजन नहि क' सकल अछि। एकरि दारि मंचित नाटकके विविधि काल-खंडमे सुविधानुसारि विभिन्न दशकमे पदर्शित नाटक तारिक अनुसारि कयल जा रहिल अछि।
अमरनारि ि जयन्तीक आयोजनपरि महेन्द्र मलंवाया (1946) क ओकरि आडम्बरक बारहिमासा, गुणनारि िक पारिय, गंगेश गुंजन

(1941) क चौबक्टयापि। बुक्धबक्धया एर्ि िवक्हणीवमिण िाक अक्न्तम गहना, हर्विमोहन िा जयह्तीपि हुनकक्ह दाि क्लवखत एकाकी अयाची क्मश (1956), हुनक पक्सद किा पाँच पतक एकल अवभनय एर्ि तिानह्द क्संह िाक आदशष कुटुम्बनाटय रपाह्तिण, लक्लत नािायण क्मश जयह्तीपि तह्तनाि िा (1909-1994) क उपनयनाक भोज (1949) एर्ि अर्विह्द अतकू गुलाब िडी तिा जयनाि क्मशक जयह्तीपि हर्विमोहन िाक पक्सद किा कह्याक जीिनक नाटय रपाह्तिण र्विभूक्त आनह्द दाि क्तक्ति दाइ के मंचर्सि कयल गेल जकि र्विर्वििण क्नम्नार्सि अविप

र्विगतीत शताब्दीक अष्टम दशकमे मंक्चत एकाकी/नाटकप

क्तर्वि नाटक नाटककाि अवभनीत सिान
सिान असिि
क्नदेशक

10 नम्बि 1973 टुठैत लोक क्दगाम्बि ि
शहीद स्माकि र्विदापक्तपि् गणेशपसाद क्सह्ा
10 नम्बि 1974 मफाइत चाह क्जनगी सुधाशु
शेखि चौधिी शही स्माकि र्विदापक्तपणष गणेशपसाद क्सह्ा
18 नम्बि 1975 ढहैत देिाल/लेटाइत आँचि
सुधोशु शेखि चौधिी शहीद स्माकि
र्विदापक्तपषि गणेशपसाद क्सह्ा
6 नम्बि 1976 पक्सैत पािि िमिदेि
िा शहीद स्माकि र्विदापक्तपषि नर्विनचह्दाक्मश
6 नम्बि 1976 एक क्दन एकाक्त
सीतासमिा श्यामशहीद स्माकि र्विदापक्त पषि

िीहदनाि ठाकुि

23 नमबि 1977 एकिा अहलयाता जनादन
ियि शहीद समािक विदापकत पषि जनादषा ियि
25 नमबि1977 इहटविू जनादषा ियि
शहीद समािक विदापकत पषि जनादषा ियि
25 नमबि 1977 वसहसत िीहदनाि ठाकुि
शहीद समािक विदापकतपषि िीहदनाि ठाकुि
25 नमबि 1977 ओिाजी दमन काहत िा शहीद समािक
विदापती पषि िीहदनाि ठाकुि
14 नमबि 1978 पावह साँि सुधाँशु शेखि चौधिी
शहीद समािक विदापकतपषि अवखलेशकि
14 नमबि 1978 हॉसटल गेसट सवचदानहद चौधिी
शहीदसमािक विदापकत पषि सवचदानहद चौधिी
25 फििी 1979 ओंकिा आडवाक बाहिमासा महेहद
मलंवाया आइएमए.हॅल अमनिाि ा जयहती अविलेिी
4 नमबि 1979 ओंकिा आडवाक बाहिमासा महेहद
मंलवाया शहीदसमािक विदापकतपषिअवखलेशि
4 नमबि 1979 चानोदाइ उराकणि खा शहीदसमािक
विदापकतपषि अवखलेशि
22 नमबि1980 एक कमल नोइ मे महेहदमजंवाया
शहीद समािक विदापकत पषिअवखलेशि

एहि दशक कालावधिमे कुल पन्द्रह एकाकी/नाटक प्रस्तुत कयल गेल जाहिमे पाँच नाटक आ शेष दस एकाकी अछि। एहि दशाब्दक अन्तरगत ख्यात अवसर कयलक भफाइत चाहक जिनगी, ढहैत देबाल लेटाइत आँचर पघिलल साँझ एवं ओकर आङ्गनक बारहमासा, कारण नाटकक सामाजिक परिपेक्ष्यके ध्यान मे रखि क' एकर कथानक संयोजन कयलक जे जनमानसपर अपन अमिट छाप छोड़मिे सहायक सिद्ध भेल। उपर्युक्त नाटकादिक कथानक द्रुतगामिता, घटना-उपघटनादिक विस्तारादि संग समन्वित क' कए नाटकक नाट्य साहित्यान्तरगत तेहन मानदण्ड स्थापित क' देलक जे अद्यतम भ' गेलाह। एहि संस्था द्वारा जखन-जखन नाट्यायोजन कयल गेल तखन-तखन दर्शकक रूप मे सम्पूर्ण मैथिल समाज उनटि आयल जे एकर लोक प्रियताक प्रमाण थिक।

विगत शताब्दीक अन्तिम दशकमे मंचित एकाकी/नाटकपर

कार्य	नाटक	नाटकक	अभिनीत स्थान	अतिथि
	निर्देशक			
22 फरबरी1961		पाहुन	गुणनाथ झा	आइ.
एम. ए. हॉल	अमरनाथ झा	जयन्ती	मिश्र झिजहंस	
11 नवम्बर 1981		आवाधधाक	हिल टैअर्विद्द	अतकू
	बाल उददान	पागण	विदापक्त पषि	मादनाथ
झा				
22 फरबरी ट 1982		चौबक्यापर/बुद्धबक्यया	गंगेश	गंजन

आइ. एम. ए. हॉल अमनिाि जयन्ती
विभूक्त आनन्द
28 नम्बि 1982 अक्षतम पणाम गोविन्दि
बालउदानपागण विदापक्तपषि जादि अखतिखा
28 नम्बि 1982 बेचाि भगिन अनुिदक
शैलेन्द्रपटक्ता बालउदान पागणविदापक्त पषि कौशलदास दास
28 नम्बि 1983 भतष्ठि अनुिदक शादिानन्द ि
बालउदानपागण विदापक्तपषिजादि अखिाखा
8 नम्बि 1984 पायश्चत ितानन्दसिंह ि बाल उदान पागण
विदापक्तपषि विनोद कुमाि ि
8 नम्बि 1984 नतिुवयि उराक्कणि खा बान
उदान पागण विदापक्त पषिसलोचन ि
8 नम्बि 1984 टूलेट िीन्दनाि ठाकुि बाल
उदान पागंण विदापक्त पषि िीन्दनाि ठाकुि
26 नम्बि 1985 एना कतेक्दन ? अविन्द अतकू
बाल उदान पागण अमनिाि ि जयन्ती
पशान्त कान्त
अन्हाि जंगल अविन्द अतकू बालउदान पागन विदापक्त पषि सलोचन ि
5 नम्बि 1987 जादूजंगल अनुिदक िक्मणीिमण ि
बालउदानपागण विदापक्तपषि अविन्द िजनदास
23 नम्बि 1988 विदापक्त बैले सिजा िदनाि
बालउदान पागणविदापक्तपषि सिजािदनाि

23 नभेम्बि 1988 जखते कहल कतका हो
ििहिदनाि ठाकुि बालउदानक पागण
विदापकतपषि मनोज मनु
23 नभेम्बि 1988 रुक्मणी हिणि गोविहिद
ि बालउदान पागण विदापकत पषि कुणाल
18 क्सतम्बि 1989 अयाची क्मशहविमोहन ि विदापकत
भनि हविमोहन ि जयहिती
िोक्हणीभिण ि

पाँच पतहविमोहन ि विदापकत भनि
हविमोहनि जयहिती
13 नभेम्बि 1989 आतंक अर्विहिद अतकू बाल उदानक
पागण विदापकतपषि क्सलोचनि
2 फर्ििी1990 अपनयनाकभोज तहितनाि ि विदापकत भनि
लक्ललतनाििसणक्मश जयहिती भनिाि ि
4 माचष1990 क्सकतादाइ रुपकाि विभूकत आनहिद विदापकत
भनि जयनाििक्मश जयहिती क्कशोिि कुमाि ि
18 क्सतम्बि1990 आदशषकुटुम्बि रुपकाि ितानहिद क्सहंह
ि विदापकतभनि हविमोहनि जयहिती उमाकाहित ि
2 नभेम्बि 1990 िजा सल्हेस
िोक्हणीभिणाििक्मलहाइस्कूल पागण विदापकतपषि
पशाहितकाहित
अपन अक्स्ततिक एक दशक पूणषकमलाक पश्चात् नाटयमंच दाि
26 नभेम्बि 1984 ई. मे ई एक नाटय पक्तयोवाताक आयोजन

कयलक जाहि मे पत्ताभागी नाटयसंस्थाक्हि नाटयाभिनय कयलक। पटनामे पादुभूसा िगकमी सहमागी बनल। भंवामाक पस्तुक्त ि ल पायक्शात ितानन्दक्संह ि ा दाि िलक्खत आ विनोद कुमाि ि ा दाि क्नदेक्शात ई नाटक अक्त पाचीन कथि क संग मंचस्ि भेल। सीताक पाताल पि्शि क्वपिवक्चित कि ानिह्के नाि ी-मुक्ात-आह्नदोलन चश्मासँ देखलापि एक्हि नाटक कि ानिक पासंवाक ि ल अह्यि ि गीत गाओति ि ल। नाटक समि ाद अत्यक्धक सशतत िहलाक काि्णे नाटय पस्मुक्त पाणि्हत्त िक्त गेल एक्हि नाकिकक्त-देशन कयने हिव्ि विनोद कुमाि ि ा हुनक अि िक पवि पिभक ि लक भैटल दशाकके। ओना ि िम गौि िग र्शि ाि क्नदेशकक ि िम-कि ाक स्पष्ट अ् ययन क्ैस पश्न क्ंइन उपक्सि त कि्ि ि। एक्हि नाटकके दशकीय बनयबाक पाि्ि विक्शष्ट चमत्काविक संि ाद-योजना। पकाश-पविकल्पना आ पभाि ित्पादक ्ि ि क्नक मा् यमे सीताक पाताल पि्शि देखाओ गेल। एकि मंच-सज्जा पटनामे अदा्वा मंक्चत मैविली नाटकमे सि ात्कष्ट ि ल।

अविपनक पस्तुक्त ि ल ि्दिनाि क्नाश यातीक उपन्यास नि ुविया (1954) क नाटय र पान्ति ाि्ण कयने ि लीह उराक्कि्ण खाँ जकि क्नदेशन कयने हिव्ि क्तलोचन ि ा। मतपाय समस्याि लि ा कथ्य आ ि िट-ि िट ि्वडियो टाइप दश्यक िक्हितहुँ क्नदेशक अपन पक्ताभाक बले नीक पस्तुक्त कयने ि लाक्हि। अक्भनेता लोकक्न मे चुक्त-चुक्त क’ संि ाद बजबाक पि्क्त ि ल। क्िु कलाकाि िक अक्भनय अतीब पभाि शाली ि ल, क्कन्तु शेर कलाकाि क्व ि्वड गेलाह, मंच-सज्जा नाटक अनुर प ि ल ति ा पाशि्वसंगीत ति ा पकाशयसि ा सामान्य ि ल।

नमिकामसा नाटय-संसि अवमनि भातीक पस्तुक लि टूलेट जकि लेखक आ कदेशक हिव िीह्ननाि ठाकक,। कदेशकके कलाकाि लोककपि कोनो कयंतण नक लिक आ ओ सभ मंचपकि फूलदानसँ अतयन्त हल्लुक हासय उतपन्नकिबामे सफल भेलाह। एकि पस्तुक गामीण मंच सदश पहसनक शेणी मे आक गेल।

उपयुक्त पकायोवातामे भंवामाके पमि, अविपनके कतीय आ अवमनि भातीके ततीय घोकत क' कए कमशप दूहजाि एक सय, एकहजाि पाँच सय आ एकहजाि एकसयक पुसकाि चेतना सकक पदान कयने लि जे नाटक आ िगमंचक केतमे एक साहकसक पयास कहल जा सकैि।

विगत शताब्दीक अन्तम दशक मे मंकत एकाकी/नाटक

कावि नाटक नाटककाि अवमनीत सिान असिि कदेशक

21 नमबि 1991 तित अविहि अटकूम कलहाइसकूलपागण विदापकपषि मनोजमनु

10 नमबि 1992 लीडि निदेि पुत भिनाि कलहाइसकूलपागण विदापक पषि घिुनाि ि कणि

28 नमबि 1993 ओविजन काम महेन्द्र मलंवाया कलहाइसकूल पागण विदापक पषि महेन्द्र मलंवाया

17 नमबि 1994 अिअदुतानन्द संजय कुन्दन कलि हाइ सकूल पागण विदापक पषि कुमाि शैलेन्द्र

6 नमबि 1995 एकि कनसा विनोद कुमाि कश बन्धुकलहाइ सकूल पागण विदापक पषि पशान्त कान्त

29 नभिम्बि 1996 केकि ? अविहिन्द अतकू क्मलि हाइ स्कूल पागण विदापक्त पषि कौशन क्रशोदिास

27अगस्त 1997 बिंहि हम आ बाहिं हमनिाटक अविहिन्द अतकू विदापक्त भनि सतिंतातक सणिषायहन्ती विनीतिा

14 नभिम्बि 1997 पदुआ कतका अयुल गाम अविहिन्द अतकू भातिीय नत्यकला मंक्दि विदापक्त पषि विनीतिा

4 नभिम्बि 1988 गुलाबिडी अविहिन्द अतकू क्मलि हाइ स्कूल पागण विदापक्त पषि विनीत िा

2 फिििी 1999 गुलाब िडी अविहिन्द अतकू विदापक्त-भनि लक्लत जयहन्ती विनीतिा

23 नभिम्बि 1999 अवामपिक सामा कुमाशिैलेह्न्द कष्णमेमोवियलहॉल विदापक्तपषि क्रशोकिुमाििा

11 नभिम्बि 2000 सेहहन्ता िव्हणीिमिण िा भाति स्काउट एण्डगाइड पागणविदापक्तपषिधुनाििा क्रणि

नाटक ओ िगिमंचक पगक्तक पार प भेटैि विगत शताब्दीक अक्न्तम दशकमे पदक्शषा नाटकाक्दमे। यदवा एक्ह दशाब्दमे मात बाहि नाटक पस्तुक्त भेल। भातिीय सतिहन्तताक पचास रिषपूणषभेलापि विहाि सकािकि कला संस्कक्त एिं युिा विभाग 15 अगस्तसँ 1 क्सतम्बि 1977 धविं विदापक्त भनिमे नाटय समािहक आयोजन कयलक जाक्ह मे चेतना सक्मक्तक नाटयमंचके पक्तभागीक र पमे आमंक्तत कयलक जाक्ह पक्तभागी भ' मैविली नाटक पस्तुक्त कयलक *िहि हम आ िहि हमि नाटक* । एक्ह सँ पमाक्गत होइि जे सकािि स्तिपि सेहो चेतनाक नाटयमंचक सीकक्त पाप्त अवि। आधुक्कक

समाजमे ब्याप्त विभिन्न समस्याक्हक पर्वपैक्रमे नाटकका लोकक्त कनिक संयोजन कयलक्त जकी जनमानसक हदयके स्पशष कयलक।

एकैसम शताब्दी क पमि दशक मे मंक्चत नाटकप

30 नम्बि 2001 नघि उठे कमल मोहल चुह्नू

भाति स्काउटएण्ड गाइड पागण विदापक्त पषि घिुना ा कणि

19 नम्बि 2002 शपगिहण कुमा गगन भाति

स्काउट एण्ड गाइड पागण विदापक्तपषि कशोकिुमा ा

8नम्बि 2003 ाजियाक्मरेक अविह्नि अतकू भाति

स्काउट एण्ड गाइड पागण विदापक्त पषि उमाकाह्त ा

26 नम्बि 2004 ूतिहा घैल महेह्नमलंवाया

भाति स्काउट एण्ड गाइड पागण विदापक्त पषि कशोि कुमा ा

15 नम्बि 2005 जयजयजनताजनादन कुमा गगन

विदापक्त भनि विदापक्त पषि कुमा गगन

2 नम्बि 2006 नदी गुवाआयलजाय मनोज मनु

कॉपक्टिभफेडशिन पागण विदापक्तपषि मनोजमनु

24 नम्बि 2007 अलखक्जिन अविह्नि अतकू

कॉपक्टिभफेडशिन पागण विदापक्त पषि कौशल कशोदिास

तिषान शताब्दीमे अदावा सात नाटक मंचन भेल अव जाह्मे सभक पस्तुक्त क्नपक्तक्न पगक्तक पपि अगस अव। पत्येक नाटक अपन कथ्यक नीनतासँ अनुपाव्गत अव ता ओक

पस्तुतिमे शनैः-शनैः विकास भ' रहल अछि जकर सुपरिणाम भेलैक जे अलख निरंजनक पस्तुति एतेक आकर्षक आ कलात्मक नवीनता आ समसामयिक विचारक कारणे जनमानसक हृदयके स्पर्श करैत अछि। एहि पस्तुतिक सफलतासँ अनुप्राणित भ' संस्थाक पदाधिकारी लोकनि पतिभागी कलाकार लोकनि के पुरस्कृत करबाक निर्णय कयलन्हि ई आयोजन 14 दिसम्बर 2007 के विद्यापति भवनमे आयोजित कयल गेल छल तथा नाटक ओ रंगमंचक लब्धपतिष्ठ विद्वान पोफेसर पेमशंकर सिंह द्वारा पतिभागी कलाकार लोकनि के नगदराशि एवं पमाण पत्रसँ सम्मानित कयल गेलन्हि जे हुनका सभक मनोबलके बढ़यबाक दिशामे अंहभूमिकाक निर्वाह कयलक आ भविष्यक हेतु पाथेय सिद्ध हैत।

पकाशन पक्ष

रंगमंचक क्षेत्रमे चेतना समितिक नाट्यमंच पभाग एक पतिमान पस्तुत कयलक जे अद्यावधि कुल संख्या क' सनतावन एकाकी/नाटक अपन तत्वाधानमे मंचित कयलक अछि जे उपर्युक्त विवरणसँ स्पष्ट अछि। नाट्यमंचक तत्वाधानमे जतेक नाटक अद्यावधि मंचित भेल अछि तकर सूची देल गेल अछि जकरा देखलासँ अनुमान कयल जा सकैछ जे समिति नाट्य पेमीक समक्ष एक कीर्तिमान स्थापित करबामे पूर्ण सफल भेल अछि। समितिक ई पभाग द्वारा निर्देशित नाट्यकारक नाट्य-कृतिके पकाशित कयलक अछि जे अद्यावधि मैथिली जगतक कोनो संस्था द्वारा नहि कयल गेल अछि। नाट्य लेखन, मंचोपस्थित ओकर कमीबेसी के सुधारि क' पकाशित कयलक अछि यथा दिगम्बर झाक टूटैत लोक (1974), सुधांशु शेखर चौधरीक भफाइत चाहक जिनगी (1975) एवं ढहैत

देिल/लेटाइत ऑचि (1976), महेह्न्द्र मलंवायाक ओकिा आडक्तक बाहि मासा (1980), अविह्नि अतकूक आवा धधक्क हिल ि (1981), एनाकते क्दन ? (1985), अह्वाि जंगल (1987), आतंक (1994), के ककि ? (1986), बाह ि हम बाह ि हमि नाटक (1998), पदुआ कतका अएला गाम (1994), गुलाबिडी (1999) गोविह्नि िाक अक्तम पणाम (1982) एिि रक्तमणी हिण (1989), िक्तणीमिण िाक अक्तम गहना (1929) एिि िजा सलहेस (1990), विभूक्त आनह्न्द का क्तक्ताि दाइ (1994) निदेिि पुत भिनािक लीडि (1994), कुमािि शैलेह्न्दक अवत्त पिक सामा (2000), कमल मोहन चुह्नूक निि घिि उठे (2001), कुमािि गगनक शपिगहण (2003) एिि विनोद कुमािि क्तशक एकटा क्यनमा (2006) आक्द।

चेतनाक नाटयमंचपिि क्तम्मसि एकाकी/नाटक क मंच पिि तँ अिश्य मंक्यत भेल, क्तह्न्तु ओ पुस्तकाकािि रपमे पाठकक समक नक्ह आक्व सकल अिि तकि एकमात कािण आविथक दिब सक्तक्ताक समक हिल िा अह्याह्य भारा सँ अनूक्दत िा उपह्यास के रपाह्नतिति क' कए मंचसि कयल गेल हो यिा सीतािमि िा श्यामक एकक्दन एक िक्त, जनादक्ष ियिक एकटा अह्नयाता एिि इह्नटिव्यू, िििह्नदनािि ठाकुिक विहिसक्ष. टूलेट, एिि जखने कहल कतका हो, दमनकाह्न्त िाक ओिा जी, सक्क्यदानह्न्द चौधिि क हॉस्टलक गेस्ट, उराक्तिण खा क चानोदाइ एिि नितुिवया, शैलेह्न्द पटक्तयाँक बेचािि भगििन, शािदानह्न्द िाक भतक्षवि, िक्तणीमिण िाक जादू जंगल एिि सेहह्ना, िितानह्न्दक्संह आदशष कुटुम्ब, संजय कुह्न्दनक अिि अदधदानह्न्द, कुमािि गगनक जयजय जनादक्ष, महेह्न्द्र मलंवायाक िूत घैल, मनोज

मनुक नदी गोवाआयल जाय एिं अखनीह्द अतकूक अलखक्कजिन आव्द।

सवाक्ता दाि मंखर्स कर्ा नाटक एहनो उपलब्ध भ' हिल अवि जकि पकाशनमे कािषक विलम्ब देवख नाटकका ओकाि अह्याह्य संसाह्दसँ पकावशत कयिबाक सयत्त पयास कयलक्त यि सुधाशु शेखि चौधिी क पव्हल सॉिँ (मैविली अकादमी. पटना 1989) िमिदेि ि क पवर्सत पाि (संकल्प लोक, लहेवियासिय 1989) अविह्द अतकूक तित (शेखि पकाशन, पटना 1992) महेह्द मलंवायाक ओविजिन काम (लक्लत पकाशन, मलंवाया 2000) एिं तिानह्द व्संह ि क पायवशत/सुनूजानकी (शेखि पकाशन, पटना 2007) आव्द।

चेतनाक नाटय पभाग नाटयमंच दाि पस्तुक्त एतेक बेसी लोकवपयता अवजष्त कयलक, जनमानसके आकवरत कयलक जे नाटक मे भाग लेवहाि अवभनेता मे अवभनेती के पुिस्कृत किबाक घोरणा नाटयपेमी जनमानस दाि भेल जाह्सँ नाटयत्योजना मे पवतभागी कलाकाि लोकवनके पोत्साहन भेटब पािम्भ भेलक तिँ ओ सभ अत्यह्त मनोसोग पूिषक एव्हमे पवतभागी बनब पािम्भ कयलक। एव्ह पकिि दू पाविितोवरक चेतनाक मंचसँ घोवरत भेल जकि आविषक भाि ओ िहन कयलक्त जवनक स्मवतमे एकि सिापना कयलक्त।

शैलिला व्मश स्मवत पाविितोवरक प

मधुिनी वजलाक चान्पुि गास वािसी साइह्स कॉलेज पटनाक पातत्न पधानाचायषएिं विश्विविदालय सेिा आयोगक पातत्न अ्यक सूयषकाह्त व्मश अपन व्दिगिता धमषत्तीक स्मवतमे हुनक सास्कवतक कायषकमक पवत अनुिाग विशेरतप अवभनय मे अविरव्च कलेल

चेतना सवमवत क नाटय पभाग नाटयमंच दाि आयोवजत विदापवत समवत पाितसवपि अवभनीत नाटक अवभनयमे सिितम अवभनयक लेल शैलििला समवत पवितोवषकक घोरणा कयलवन। एवह कमवत 1984 ि िषवक लेल एक सय एक एिं भविषयक हेतु एक हजाि एक टाका कवतस वडपोवजटमे िखिबाक हेतु सवमवत के समवपत कयलवन। तदनुसाि चेतना सवमवतक नाटय पभाग नाटयमंच दाि शैलििला समवत पाितोवषक योजना पािमभ कयलक जकि अनतगत कमसि सिितम कलाकाििके सिितम अवभनयक हेतु पुिसकृत कयल गेल अवि, यि प

िषव नाटक नाटककाि पुिसकृत कलाकाि

1984 नितुिवया नाटयर पकाि उराकवण खॉं

हेमचनद लाभ

1985 एनाकते वदन? अिविनद अतकू

वतलोचन िा

1986 अनहाि जंगल अिविनद अतकू

अशोक चौधिी

1987 जादू जंगल िोवहणी िमण िा पशानत

कानत

1988 रकवमणी हिण गोविनद िा

पेमलता वमश पेम

1990 िाजा सलहेस िोवहणीिमण िा

सुनीलकुमाि िा

1991 िित अिविनद अतकू शािदा

वसंह

1992 लीडि निर्देशि पुत भिनाि
शािदिा क्संह

1993 ओवजिनलकाम महेह्लमलंवाया सुभदा
कुमािी

1994 अि अदुदानह्ल संजय कुह्लन
लक्मीनाियिण क्मश

1995 एकटा क्वनमा विनोद कुमाि क्मश
शािदिा क्संह

1996 के केकि ? अिविह्ल अतकू
घ्िुिीि मोची

1997 पदुआ कतका अएला गाम अिविह्ल अतकू
अनीता मह्लू

1998 गुलाबिडी अिविह्ल अतकू अनीता
मह्लू

1999 अवानपिक सामा कुमाि शैलेह्ल
क्श्म

2000 सेहह्ला िक्कणीिमण िा क्श्म

2001 निघिि उठे कमल मोहन चुह्लू कुमाि
गगन

2002 शपि गहण कुमाि गगन क्मवलेश कुमाि क्मश

2003 िज्याक्मरेक अिविह्ल अतकू कुमाि गगन

2004 िूतहाघैल महेह्ल मलंवाया िमिशेष्ठ पासािन

2005 जय जय जनता जनादष्ण कुमाि गगन उमाकाह्ल िा

2006 नदी गोवांआयल जाय मनोजमनु िमिशेष्ठ

पासानि

2007 अलख निरंजन अरविन्द अक्कू विशेष

पासानि

कामेश्वरी देवी पुरस्कार

कर्णावलाक समिति विकासार्थ अपन जीवनक आहूति देनिहारि कर्णावलाक विदिपुत लब्धलनानायिका मंशक धर्मपत्नी कामेश्वरी देवीक मंधनोपरान्त हुनक स्मृतिमे हुनक ज्येष्ठ पुत्र विजयकुमार मंश चेतना समितिक तत्त्वावधान अध्यक्ष एवं हुनक परिवारिक सहयोग सँ नाटयाभिनयमे पाक्षभागी कलाकारके विदापक स्मृति पारितोषिक अभिनीत नाटक लेल सर्वश्रेष्ठ अभिनयक लेल पुरस्कृत करबाक परम्पराक शुभारम्भ भेल एकैसम शताब्दीक प्रथम दशक मे।

2002 शपथ ग्रहण कुमार गगन आरती

2003 विजयाभिरेक अरविन्द अक्कू गुड़िया

2004 ट्रैतहा घैल महेन्द्र मलंवाया गुड़िया

2005 जय जय जनताजनार्दन कुमार गगन स्मीति सिंह

2006 नदी गुगुआएल जाय मनोज मनु सपनाकुमारी

2007 अलखनिरंजन अरविन्द अक्कू विजय लक्ष्मी

मैथिली रंगमंचके व्यवस्थित स्वरूप प्रदान करबामे चेतना समितिक मात्र पुत नाटयमंच प्रभाग तत्त्वावधान पर्यवेक्षणमे बालक पारि बढ़ल गेल अवि जे जाव्ह क्रदशामे एकर प्रयास प्रारम्भ भेलैक आ ओकरा मूतरूप प्रदान करैत गेल तकर श्रेय आ प्रेय एकर समर्पित कलाकार लोकनके छन्हि। समितिक ई प्रयास कतेक सार्थक भेलैक जे नाटयमंचक स्थापनोपरान्त नव-नव तकनीकसँ संयुक्त कयक नवीनतासा संयुक्त एकसँ एक कलाकारके मंचपर आनब हुनका

अपन यथार्थपरक भाक प्रदर्शन स्वरूप अछि प्रदान कयलक। चेतना द्वारा नाटक ओ रंगमंचक विकास यात्राक मार्गके प्रशस्त करबाक हेतु जे अभियान चलौलक ओ साहित्येतिहासमे स्वर्णाक्षरमे अंकित होयबाक योग्य थिक। एकर इहो श्रेय आ प्रेय छैक जे एकर सक्रिय कलाकार लोकनि अपन अभिनय कौशलक प्रदर्शनार्थ सभाक नाटयमंचसँ अनुप्राणित भ' कतिपय नव-नव नाटय-संस्थाक स्थापित भेलैक अरिपन (1982), भंगिमा (1984), कलासंगम, आङन, भास्वती, अभिनव भारती आदि-आदि रंगकर्मी संस्थाक जन्मक मूलमे चेतना समितिक नाटयमंच प्रभाग अछि।
चेतनाक नाटयमंचक क्रियाशील प्रदर्शनक फलस्वरूप जनमानसके नाटक देखबाक लुलुक पकड़ि गेलैक अछि जाहिसँ दर्शकक संख्यामे अपार वृद्धि भेलैक ताहिमे सन्देह नहि। मैथिली रंगमंचीय गतिविधिक क्योरि अछि जे रंग कर्मक क्षेत्र मे चेतनाक नाटयमंच प्रभागक अवदानसँ हमर परिचिय करबैत अछि जे इतिहासक दृष्टिसँ उल्लेखनीय अध्याय थिक। एहिमे सन्देह नहि जे मैथिली रंगजगत के चेतनाक देनक चर्चा-अर्चा रंगमंचक इतिहासमे सतत स्मरणीय रहत, कारण एकर स्थापित प्रदान करबाक दिशामे ई एहन ठोस कार्यक कयलक अछि एकर नाटय प्रभाग आ कृति आबि रहल अछि आ आशा कयल जाइत अछि जे भविष्य मे से हो उज्ज्वल आ कर्मरत हैत से विश्वास अछि।
प्रस्तुतः चेतना समिति नाटक ओ रंगमंचक माध्यममे मिथिलाक सांस्कृतिक, साहित्यिक आ कलाक प्रचार-प्रसारक सुकार्य करैत आबि रहल अछि। समिति रंगमंचक माध्यमे सांस्कृतिक आ साहित्यिक आन्दोलन चलौलक जे जन चेतना जगयबामे सहायक

क्सद भेल। एकरि पयासक फलस्वरिप नाटय-लेखन आ मंचनक विकासक क्दशामे लोकक पक्तादिता बढलैक। क्नजी क्नदेशक, क्नजी तकक्नक्शायन आ विशुद्द मैक्थिल अक्मनेता-अक्मनेतीक सहयोगसँ नाटय-पस्तुक्त कबिामे क्नजी व्यक्क्ततत क्नमाण कयलक अक्व संगक्ह अपन पदशक्षसँ ाष्टीय स्ताकि कक्तपय कलाकाि बनलक्ह। सक्मक्ताक सत्पयासक फलस्वरिप नि नाटक, नि-शैली आ नि-कथ्यक जह्म द’ कए नि जागणिक शंखनाद कयलक अक्व। एकरिसँ पेक्वत भ’ नि-नि संस्िाक्दक उदय अ विकास िगमंचके क्सस्सह्देह स्मक्द्द कयलक अक्व। एकिा ई शेय आ पेय ैकि जे नाटयाह्दोलनमे तीति अनलक आ िगमंचके स्ियीतत पदान कबिाक क्नक्मत अत्याक्धक क्कयाशील अक्व।

जयकान्त मिश्र जीवनि आ साहित्य साधना

कविलाचलक जयन भूभमे कत्तपच मातभारानुगिगी जाज्वलिमान नक्त उद्धत भँ सुधी साहित्य-मनीरी अनुनि साधनालि हिलाह, किन्तु विगत शताब्दी कततीय दशक मे अपन अर्विलि साहित्य-साधना, आन्दोलनात्मक आ चिनात्मक शताब्दी कततीय दशक मे भनि अर्विलि साहित्य-साधना, आन्दोलनात्मक आ चिनात्मक सजन दावि विशि स्तावि पवि मैविली के पक्ताश न कबािमे, सीिलिम्बी बनयबामे, विधि अभाविदक पूत्यथि, मातभारा कमाध्यले पाविमक क्शाका नीका लागू कवििे मे सत संधबपित, जिाकक आलोचनात्मक गहिक पणयन कबािमे, शोध एवं अनुसधन के नव दिशा मे, साहित्यक हेडायल-भुक्तआयल विभूका के पकाश मे अनविले, क्लििकि क्यह्तागस्त हिकहावि एक एहन व्यक्तित्व अर्कि पुरर पादूर्भूत भेलाह जे अपन बहुआयामी व्यक्तितलक पभावि सँ सानूभाविनुगिगी काह्निता एकवि उतविनाविषकायचित हिलाह ओ हिवि पोफेसवि डाततवि जयकान्त मिश्र (1922-2009) , विगत लगधक सात दाशकक दीधा अह्वालि धर्वि अनबति एक सि आ एक कवत भ' कए मान्हभाराक काबमाण धमनी मे नवि तितक संचावि क' अवमनवि साहित्विक विताविणिक कामका कावि मे टापवि-विइया द' हिल लि तखन अने अपन अनु संधान दावि एक अलोकक किरल विकीणषकयलका।

पवि म दशषा

मैविलीक अध्ययन-भनुशीलन मे कालि हिबाक काविणे बागसिविहसँ एक्ह अर्कि पुररक नाम सँ अगिल बलहुँ, किन्तु डनक दशषा

कबिाक सुहासिनि नहि भेटल लि। हुनक पहिल दर्शनक अवसिर भेटल विहारिक राजधानी पटनामे जलय ओ विहार पब्लिक सर्विस कमीशनमे, बिहार विश्वविद्यालयक मैथिली विताग क हिन्दि एवं विभागध्यक्ष एक इन्टरभ्यू दबाक हेतु आयल छवि। कमीशन आफिस मे हम अपन गुरुदेल पोफसर शैलेन्द्र मोहन झा (1929-1999) क दर्शनाभिषगेल लिहुँ । ई घटना विकि सन् 1963 ई० क जखन हम पटना विश्वविदालय एम०ए० मैथिलीक अनअत्तम रिष्क ति दलहुँ । ओताह हुनका पमि मे पमि देखक्लयक आ हमर विकत्त पर्वचिय शेलेन्द्र बाबू हुनका देलवि न। जखन हम भागजपर विश्वविदाल मे मैथिलीक लेतचारि भ' अचलहुँ आ शहर मे विदापक्त परिषके आयोजन मे सम्मिलन दैबाक इेनु आभंत्रल कयक्लयाक्तत तँ ओ सहरर स्वीकारि क' कए आयोजन मे अपन सारिगर्भित गम्भीर व्याख्यान द' कए जनमानसमे मा नुरिगक गि जपिन कय हम जरिनि शोध कयषमे तल्लीन लिहुँ तँ मैथिली पाचीन पत्तकाव्द मेपकाशज क्तपच चिनाद्दक संकल नाषिहुनक क्तजी पुस्तकालय देखबाक हेतु इलाहाबाद गेलहुँ। हमर मुख्य कायषलि हविमोहन झा (1908-1984) क बहुचाचषि उपन्यास कन्यादान (1933) एवं द्विरागमन (1943) पर शीकषण क्तश (1918-1991) क एक बहत समालाचना क्तविला क्तक्हि मे पकाशत भेल लि तकरा देखबाक हेनु ओनय गेलहुँ। हमर शोधके सारि-गभष बनयबाक उदेश्यसँ हमर इच्ति रप आश्यिक सामगी सभके टाइप कबिा देलक्त, कारणि ओकर समयमे क्तसतसक आवत्तिकारि नहि भेल लैका ओ टाइप कापी अदयावधि हमर व्यक्तिगत पुस्तकाजय मे सम्पक धरोहर एक रपमे तिषान अवि। मेथिलीक एहन सम्पन्न पुस्तकालय हम नहि

देखने छलहुँ।

हुनकासँ कतेक बेर भेट भेज तकर ठेकान नाह, किन्तु विश्वविद्यालय अनुदान आयोग एवं विश्वविद्यालय स्तर पर, चेतना समितिक संगोष्ठी म० कविला सास्कृतिक संगम पयागक आयोजनोत्सर्प पर ततय िशक्षकशोर मिा (1918-1986) हुनकासँ भेटभेल छल (200A) पुस्तकक सम्पादनक कममे मैटर एकत्रित कबिाक लेल सहसाध्यक बेर हुनक दशाष 311 साक्षद पपत्त कबिाक असिर हमरा भेटल ततय सतल अपन अशेर शुभकामना सँ उत्प्रेरित करैत हिलाह मानभारक सोषा

पष्ठभूमि

िहनक पार्वारिक पष्ठभूमि मे संस्कृतक पठन-पाठनक परम्परा अगाध आसर आ शदा छलान, काणि िहनक प्रपितामह महामाहेपातध्याय पण्डित जयदेव मिश ( ) आ पिता ( ) आ पिता महामहोपाध्याय डाकर उमेश मिश (1895-1967) के संस्कृत शिक्षणक परम्परा अनुराग छलान1 किन्तु उपयुक्त पारिवारिक वातावरणक िहनक पठन-पाठन पाश्चात्य-शिक्षानुरुप पिता एवं पोफेसर अमरनाथ झा (1897-1955) क प्रति श्रिया मे भेल कारकाणि ओहि समच सोमग उत्तर भारत रिषम इलाहाबाद आधुनिक यूरोपियन परम्पराक केन्द्र विन्दु छल जनच अमरनाथ झा सहश बहुभाराविद अंगेजी विभागक सरिसर हिव यदचप्रि ओ पाश्चात्य शिक्षा पदति सँ अशिशिक्षित भेलाह, किन्तु िहनका हृदयमे भालभारानुराग एतेक बलवती छलान जे जीवन पर्यन्त विभिन्न रुपे सक्रिय िहि आकर उत्तराधिकार सतल दतचित्त हिजाहा।

उपध्यापन

पोफसि जयकान्त कमशक विलक्ण ंिदुक्ष आशैक्वाक योग्यताके ध्यान मे िाक्ख मात 21 रिषक असिािमे इलाहाबाद विशिविदालय मे स्टदीज एण्ड माडषा यूािक्यन विभाग मे लेकचििकि पदके ई सुशोक्मल कयलका सन् 1944 ई० मे 1 उतत विभाग मे ािडि, युक्नगक्सटी पोफेसि एिं विभागाध्यक पद पि आसीन भ' ओ सन् 1983 ई० मे अिकाश गहण कयलका। कन्तु अिकाशो पिहिल्त क्हनका अध्यापन कायसँ मुक्त नक्टअे टलकाकािण हुनक ंिदुक्ष सँ पभावित भ' सागि विशिविदालय हुनका क्मजीक्टंग फेलोक रपमे चयन कयलकका जलय ओ सन् 1985 सँ सन् 1988 धवि कायषित िहलाह। एही अवधिमे अिान् 1986 ई

मे दुनक चचन आँल इक्णडया बोडषफाि विसिचषएािड इन धयू मैक्नटीजक हेतु मैसूि विशिविदियालय आमंक्तत कयलका अध्ययन-अध्यापनक पक्ष गामोदय विशिविदियालय जतय ओ सन् 1992 सँ 1994 धवि डीन फैतलिा आँफ लैगिजिज एण्ड सोसल साइन्स विभाग मे अध्ययपन कििति िहलाह।

उपनुसंधान-पेिणा

कषाण मैविली साक्हत्य मे निि पाणक िचिह्दन भकिहािा पोफेसि जयकान्त कमश पिम मैविल ससिितीक िदि पुत पादुभूषा भेलाह जे मानभाराकँ जीिनदान देलका अपन गहन अनुसह्धान दािि। इलाहाबाद विशिविदालय क शैक्वाक पष्ठभूक्म आ अध्यापन किक्त मे संलग्न िहजाक कािणे ओ अनुसह्धनक क्दशामे उह्मुख भैजाई। क्हनका िदय मे अनुसह्धनक तीरि आकाका िलका जे हुनक अनुसह्धोनि ककाक अिलोकान सँ सपष्ट होइत अवि 1 जे अंगेजी विभाग मे अध्ययनक शुभािम्भ कयलका ते आिश्यक िल जे ओ

उपयुक्षात विरय पि शोध कर्वि एक्ह लेल विचाि-विमिशषकबिाक हेतु ओ अपन गुरिि पोफेसि अमनािि िि क लग गेलाह। ओ अपन विचािि व्यतत कयलक्ष जे हम शेतसवमयकि रामा पि काज कयि चाहैत िी। एक्ह पि ओ कहल विन 'नक्ह कािक पढत7 शेसिवमचि पि विशिक विवमहन्न भारामे हजाि पोिि उलब्ध िक1 ककि ध्यान जयतैक अहाक पोिि पि। भातिीय िितो आकसकोडक्ष पक्षलकेशन पढल ? इक्षडयन िइटकि पोिि नक्ह पढय चाहन ।'

पोससि िक एहन बात सुक्षक' ओ अिक् ि गेलाह। हुनका साहस नक्ह भेलान जे ि सक्हबक बात के काटवि।हुनका सँ ओ वजजासा कयजविन अपने कहज जाओ जे कोन विरय पि शोध किि।' ओ कहविन, 'मैविलीक काज।' ओ सह्नक्हि गेलाह जे अड0 िजी साक्हत्यक शोध-पबहन्धक विरय मैविली कोना होयत ? हुनका कि नक्ह फुलान ओ पुनप साहस क' वजजासा कयलविन, 'मैविली?' डा0 ि उति देलविन, ' हँ, मैविली साक्हत्यक विरयमे अमैविल भारी जानकािि पाप्त कति । अड0 िजी भारा मे क्लखल हितैक तँ अडर्णजीमे डी0क्ष0फल0क क्षडगी पाप्त होयता'

पोफेसि ि एक दूिदिशी साक्हत्य-मनीरी हिवि ते उपयुतत सलाह आ पेणिा हुनका देजविन संगक्ह इहो कहलविन जे इएह अहा के अजि, अमि आ अकुण्ण यशक भागी बनाओल जकि फलसरिप हुनक भाग्योदय भेलक्ष । हुनक ई अनुसहन्धान तिमान पवपैक्रम मे मैविली आ पोफेसि क्षशक हेनु एक दोसािक पचायषबक्ष गेल लवि। क्षनु हुनक नामोल्लेख कयन मैविलीक कक्ष अ नोन लगैि। क्षनक अनुसंधानत्मक कक्ष A hissory of Maitifi पि

इलाहाबाद विशिविदालय क्हनका सन् 1948 ई० डा ० कफल०क अपाक्ध सँ अलंकक्त कयलक। पशचात् जा क’ क्हनक कक्त पकाक्शत भेल दुइ खण्डमे जे पकाक्शत होइतक्ह मैविली साक्हत्यक अमूल्य क्नधक र प मे उदधोक्रत भेला काणि क्हनका सँ पूषि मैविलीक कोनो साक्हत्योक्तहाक्सक गहर्ि नक्ह ि लि, ले क्हनक अनुसंधान मैविलीमे अनुसंधानके क्दशा-बोधक अनुसह्धान कहब तँ कोनो अत्युक्तत नक्ह हैल। क्हनक अनुसंधान मात मैविलीक हेतु नक्ह, पत्युन विवि ि लि विशिमे आधुक्नक भातिीय भारा साक्हत्याह्नगष विक्शष्ट अिदानक र प मे चक्तर्चा अक्तर्चा अवि।

क्हनक अक्य अनुसह्धानक फलसरि प अह्याह्य भाराभारीके बोध भेलैक जे मैविली साक्हतय एक समृह्न भारा साक्हत्य वि क जकि कमदि ऐक्तहाक्सक पष्ठभूक्म नेहिक शताब्दी सँ आक्विहिन्न र पे चल आक्ब हिल अक्द1 एक्हऐक्तहाक्सक अनुसह्धानक पिमि खण्ड पि विशुन भारा शास्त्री पोफेसि सुनीक्त कुमाि चटजी (1890-1977) क कि न ि क्ि जे पिमे पिमि एक्ह भारा साक्हत्यक इक्तहास पकाक्शत भेल अवि ते ई सिगिलेअ वि क1 ई शेय आ पेय क्हनके क्दतीय खण्ड पि पोफेसि शमनािि ि ि आमुख क्लखलक्न जाक्ह मे माह्हभारानुिगिी साक्हत्य मनीरीक शोध-पबह्धक क्नदेशक दलविन हुनक कि न ि क्ि जे एक्ह विस्तित साक्हत्य गौि ि लिच इक्तहास आधु क्नकलाक पवपिेक्य मे मूत वपिमे पस्तुत क’ कए अत्यह्त साहक्सक काज ई कयल क्नअवि।

क्हनक गहन अनुसह्धातमक पक्त क पविचिय भेटैि क्हनक महत्त्वपूणष कीक्तष An Introduction to the folk leterafse of

Mithila हाक्ह मे इ क्मविलाचलक पविसि मे उपलब्ध लोक साक्हत्यक विश्लेरण कयलक्न

अपन शोध साक्हतयक संचयनक कममे साक्हत्यक विश्लेरण कयलक्न जतेक सामगी क्हनका उपलब्ध भेलक्न तकि संकक्लन कचलक्न आ अंगजी मे विश्लेरण क' पमाक्णन कयलक्न जे एकि समदशाली विपुल; लोक साक्हत्य जनमान स मे विक्डआयल अवि क्दशामे अनुसंधानक पयोजन अवि।

अपन अनुसह्धानक तीरिआकाक्रक पूत्यषिओ दुइ बेि पडोसी शब्द नेपाल क याता कयलक्न। पिम याता तँ ओ शोध-पबह्धक सामगी संकलनाषि गेलाह 311 क्दतीय याता क हुनक उदेश्य िलक्न जे पिम याता मे जाक्ह सामगीक पाण्डुक्लक्प नक्ह उपलब्ध 'क' पौलान नकि मूलषप पदानकबिाक क्नमत पुनपओतय गेलाह। एक्ह कममे ओ मैविली भारा आसाक्हत्यक बहुमूल्य नाटकाक्दक पाण्डुक्लक्पक संचयन क' कए पकाक्शत कौिलक्न जकि विििि हुनक कक्तातकि अह्नगक्त कयल जायल। ओक्ह नाटकाक्द क पकाशनक फलसरिप भािी अनु सक्ह्धसुक पि-पदशष्ण कचलक्न1 उतत कक्तक सचादनक कममे ई सागिक्भषत्त भूक्मका अंगेजी आ मैविली मे क्लक्खत ओकि मूल्याकनक संगक्ह ओकि ऐक्तहाक्सकता के उदधाक्टत कयलान जकि फलसरिप मैविली क कक्तायि क्मपाद क ओििठ के ओ सो िि देलान।

क्हनक अनुसधान सम्पूणष अिधािणा के बदक्ल देलक आ ओसकाित्मक भेल। आब मैविली गम्भीि अध्ययनक विरय मानल जाय लागल ई अिधािणा एि सकाित्मकता मैविली साक्हत्यक बहु विक्ध मागषपशस्त कयलका एक्ह क्दशा मे हुनका दािकियल गेल

पयास स्तुत्य अवि ।

साक्हत्य-याधना

जयकाह्त क्तशक साक्हत्य-साधनाक अह्नगत्ता मैवि लक , सम्पाक्दल एिं सतिह्त आलेखक्दक चिनालिी पाठकक समक ओ वि कि अड० िजी एिं मैवि ली मे1 ओ मैवि ली साक्हत्यके नि क्दशा देबाक क्तक्तत उपचुिित दुनू भाि मे समान र पेण लेखन कयलक्त जकिा पािा हुनक उदेश्य िलक्त अमैवि ल भारी सेहो एकि गौिि-गविमा के जानय, बुिय जकि वििििण एक्ह पकाि अवि प

अड० िजी मे मौक्लक

i. A History of Maithiki Literafuse Valume I 1949

ii. A History of Maithili Leterature Volume II 1950

iii. An Introduction to folk Leterature of Mithils volume I 1950

iv. An Introduotion to folk literature of Mithila Volume II 1951

v. A case of Maithili 1963

vi A History of Maithili Leterature 1976

मौक्लक मैवि ली

i. कीतक्तिा नाटक 1965

ii. क्ताहुिना ककहािा 1967

iii. मैवि ली मे पाि क्तकक्शाक्त 1969

iv. िहन् मैवि ली शब्दकोश खण्ड-1 1973

v. मैवि ली साक्हत्यक इक्तहास 1988

vi. िहन् मैवि ली शब्द कोश खण्ड- 2 1995

मौक्लिक अडo ि जी

जीजको पाजषा अडo ि जीक पोफेसकि रपमे भेलका ते ओहू साक्ष्त्य मे चिनात्मक पक्कक्ताक पविचिय देलकाप

i. Leetures on Thomas Hardy 1955 एि 1965

ii Leetoores on Four Poets 1957 एि 1963

iii iComplez style in English Poetry 1977

vi Leetares on Four Poets (Romantic Poets)1987

v Leetorees on four Poets (Victoriam Poets) 1992

सम्पाक्त कक्त

नेपाल याता मे हुनका मैविलीक बहुमूल्य धाोहि नाटकाक्द एि अह्य कक्त उपलब्ध भेजका नेपाल दिािि लाइबिी धूल-धूसविनि भ' हिल िललकिी सयत्त आका ऐक्तहाक्सक भूक्मका क्लक्ख सम्पाक्त कयलकआ पकाक्शत कयलकाप

i. धूमक्षमागल ज्योक्तिशिि -1960

ii. गौिी पविणिय क्षािदत- 1960

iii. गौिी सर्यिंि- काह्यािमि-1960

iv. गोक्किविजय विदियापक्त-1961

v. रविकिणी पविणिय- िमापक्त-1961

vi. कषण केक्लमाला-नह्दीपक्त-1961

vii. शी कषाजना हिस्य-शीकाह्तगणक-1961

viii.गौिसिर्यिंि- लालकवि -1962

ix. विदिया विलाप-भूपलीह्दभल्ल- 1965

x. Eneyelopadie of Indian Leteeahese Medieval

& Modern Indian Leteratuse Maithili Seetion.

Xi. आधुनिक गदयक निमाता महामहोपाध्याय डा० उमेश मिश- 2006

सह सम्पादन

कीतिषनाका-विदियापति-1960

अनुिाद

जयकान्त मिश् सफल अनुिादक हिथ जे साहित्य अकादेमी दािा भातिक साहित्य निमाता श्रृंखलाक अन्तर्गत गोविन्द िा (1923) दािा मैथिली मे लिखित उमेश मिश ( ) मनोगाफक अंगेजी मे अनुिाद कयलनि जे साहित्य अकादेमी दािा सन् इ० मे पकाशित भेल।

उपयुक्त चिनाबजीक अतिरिक्त मैथिली मे हिनक कतेको निबंध मैथिली पतकादिमे पकाशित होइत हिल जे कतिपय अथि

1. पोफेसि गंगापति सिंहक सुशीला उपन्यासक समीक्षा, मिथिलामिहि 1943

2. मिथिलाक जन साहित्य, चौ पाथिड मधुमास 2011

3. मिथिलाक इतिहास सम्बन्धी किछु समस्या, पिम अखिल भातीय लेखक सम्मलेन, चिना संगह पिम भाग, 1956

4. पिम अखिल भातीय लेखक सम्मेलन, नाटक विभागक अध्यक्षीय भारण 1956

5. आधुनिक मैथिली साहित्य पि अङ्गेजीक पभाि, िैदेही निम्बाि-दिसम्बि 1957

6. हमि नेपाल याता िैदेही जनििी 1958

7. पूि० चलीच भारा, साहित्य एिं संस्कृतिक पािस्परिक पभाि,

चतेना सनमक्त संगोष्ठी 1972

8. आधुनमक क्मवि लामे कीतषाकचेतना, चेतना सनमक्त संगोष्ठी 1973

9. पश्मिाि क पवित्यािगप साव्हत्यिक अक्सततिि क पश्ना, चेतना सनमक्त संगोष्ठी 1974

10. मैवि ली नाटक ओ िगिमंचप ितषािान क्सि क्त एि भवि ष्य, चेतना सनमक्त संगोष्ठी 1977

11. भाितीय सािधानप मैवि लीक समस्या, चेतनासनमक्त स्नािवि का 1977

12. जीवि नि जाक्तक जीवि ति भािा, क्मवि ला क्मव्हि 11 जून 1977

13. संगीन शास्त ओ पूिग्चिलीय गीक्त काव्य, चेतना सनमक्त संगोष्ठी 1979

14. साव्हत्य ओ पक्तािदिना, चेतना सनमक्त संगोष्ठी 1980

15. साव्हत्य मे पवि ितषाक सिि, चेतना सनमक्त संगोष्ठी 1984

16. िाष्टीय ओ आग्चक्लक संस्कक्त वि कास, चेतना सनमक्त संगोष्ठी 1986

17. साव्हक्त्यक समालोचनाप सह्दभषइक्तहास लेखनक, चतेना सनमक्त संगोष्ठी 1987

18. वि दियापक्त पि षि कोनाकर्िि, स्नािवि का चेतना सनमक्त स्नािवि का 1987

19. महाकाव्यमे युगीन संकेत , चेतना सनमक्त संगोष्ठी 1988

20. मैवि ली आह्दोलनप अदयनन क्सि क्त, चेतना सनमक्त संगोष्ठी 1989

21. यातीक मूल्याकन कवि कि िपमे कि बाक वि कि, चेतना सनमक्त

संगोष्ठी 2000

22.मैविली उपह्यास मे क्यक्ात समाज, चेतना सक्मक्त संगोष्ठी 2003

हुनक समग कक्ताक अिलोकन सँ हुनक साक्हत्य-साधना क यिाषि पर्वचिय भेक्ट जाइि जे ओ अपन माह्रभाराक विकासाषि सतत कायषित हिलाहा ओ अपन अक्य कक्त पििती पीढीक िविड गेलाह तकि आलोक मे मैविली साक्हत्यमे निजीनिक संभािना दक्ा गत होइि ओ अपन अक्दतीय िदुक्यक एक आदशषपस्तु त कयलक्ा जे िितषान पीढीक लेल पाियि बनला

सम्मान

मानूभरानुिगिी एिं साक्हत्यानुिगिी कीक्ताष पुरर क्ाश जे मैविलीक सम्मानाषि जे योगदान देलक्ा ओक्ह सँ अनु पाइज भ' कए भाितिक नेशनल एकेडेमी आँफ लेटसष्क संगक्ह विक्मह्न मानभारा सेिी संस्थाक्द दािा समय-समय पि क्हनका सम्माक्नत क' गौपाक्न्वत भेल।

1. भाितिक आविष्क िाजधानी मुम्बाईक क्मविला मण्डल दािा आयोक्जत अक्खल भािीतीय मैविली सम्मेलनक असिि पि 31 क्दसमबि 1996 मे सम्मान पत सँ अलंकत कयलका

2. विहािक िाजधानी पटनाक सास्कक्तक एिं साक्हक्त्यक संसि चेतना सक्मक्त 1990 मे माह्रभाराक अतुक्लत सेिाक कािणे क्मविला विभुक्त तामपत सँ सम्माक्नत कयलका

3. मानभारा नुिाग आ ओकि विकासाषि क्हनका दािा जे साक्हक्त्यक, िचनात्मक आ आह्दोलनात्मक कायष कयल गेल नाक्ह सँ अनुपाक्नान भ' क्मविला सास्कक्तक संगम पयाग-1995ईमे सम्मान

पत समविषा कयलका
4. ाािखिण्डक धनािद क्सित विदापक्त सक्मक्त विगत शताब्दीक अिसान बेला मे अािह्द 1999 ई० माह्हभाराक उत्तािनाािषकायष सँ अनु पाइज भ' सम्मान पत समविषा कयलका
5. विगिल शताब्दीक अक्न्तम िरषमे अाित् 2000 ई० मे नेशनल एकेडेमी आँफ लेटसषअाित् साक्हत्य अकादेमी नई क्दल्ली दाािा कालजयी मध्यकाजीन मैविली साक्हत्यक विशेरक्ज्ञक रपमे भारा समान सँ विभूक्रत कयजका
6. क्हनक बहुमूल्य माह्हभाराक सेािक पविपेक्ष्यमे साक्हत्य अकादेमी नई क्दल्ली एिं क्मविला सास्क्कक्तक संगम पयागक संयुतत तलाािधान मे मीट द आाििा अाित् लोखक सँ भेट कायषक्म क आयोजन कयलक 28 मई 2000 मे।
7. बंगभूक्मक जगता ज्योक्त संसिा क्मविला सास्क्कक्तक पविरद कोलकाता 2006 अक्भनह्दन कयलका
संसिा __संसिापक
पयाग अक्त पाचीन कालक्हसँ मैविल मानभारानुािगी मैविलीक कायष सिल िहल अवि तकिा दू काििा अवि। पशमतप धमाम्बलिी मैविल समाज गंगा-यमुना आविलुप्त सििसिती नदीक संगम िहल आ क्दतीय एतय विदियाक केह्द्र हैबाक काििे विदियानुािगी लोकक्क जमाििा िहल अवि। सिाधीनता सँ पूिषपयोग क मानभारानुािगी जयकाह्त क्मश एतय मैविलीक विकासाथ्षिज दू संसिाक सिािपना कयलक्ह तीिमुक्तत पक्ब्लकेशनस आ अक्खल भािितीय मैविली साक्हत्य सक्मक्तक सिािपना सन् 1944 ई कयलक्ह जकिा तिाषान पविदिश्य ऐक्तहाक्स भ' गेल अवि जे जनजागििि अनजक तत्कालीन

साक्हत्यकाि लोकक्स पुस्तकक पकाशन कयलकाजकि ऐक्तहाक्सक महत्तत्ि अक्ि। एक्ह संसिाक दाि मैक्िली समाचाि एक अक्नयक्तकालीन पक्तका मात सूचनात्मक समाचाक्ि अक्तक्ित नि पकाशन सँ पाठक के अिगत कक्बैि। क्तिान पक्िदश्य मे स्तिहत्त क्ववक्िला िाज्यक समक्ष मे क्क्विक्हन्न समाचाि आ पयासक क्क्विक्हन्न आयात पि क्िगत दुइ दशक सँ पकाक्शत कक्ति आक्ब आक्ब हिल अक्ि। एकिि सचादन ओ स्वयं कक्विि।

पी०ई० एन मे मैक्िली अन्ताक्षिष्टीय एिं साक्हक्त्यक सोक्कया िाक्डया दाि संसिाक्पत साक्हक्त्यक संसि Poets, Essagist and Notelist जकि संक्ेप मे पी.ई० एन० कहल जाइि। उक्तत संसिाक ई सक्कय सदस्य भ' भाितीय भारा साक्हत्यानुिािी लोकक्नक ध्यान मैक्िली भारा आ साक्हतय क्दस आकक्ररा कयलक्न 1 एकि अक्धिािन मे ओ सहभागी भेलाह बडौदा (1957), भुिनेश्िि (1959) आ लखनड (1964) मे सक्म्पक्लत भ' कए मैक्िली भारा आ साक्हत्यक पुनाक्ख्यान क' कए ओक्ह संसि दाि मैक्िली के भाितिक पाचीनतम भाराक रपमे माक्न्यता क्दऔलक्न । एक्ह संसि दाि माक्न्यता भेटलाक पश्चात् एकि अवाम योजना के कक्याक्न्वत कििि मे अभूत पूिि सहायता भेटल। उक्तत अक्धिेशन मे पाठल क्हनक भारणाक्द ओकि कायषक्िििणी मे पकाक्शत अक्ि।

पुस्तक पदशषी

क्िहािक तत्कालीन िाज्याल डा िािनाि िमिचन्द्र क्दािकि आँल इक्ण्डया पि एक भारणदेलक्न जाक्हमे दश्य सँ अपन उदगाि व्यतत कक्ति उदधोरणा कयने हिक्ि जे मैक्िली जान गहिसि पाचीन भारा क्िकजे एककक्िकास मे अक्त महत्तत्िपूणष भूक्मकाक क्नक्ह कयलका

जखन जयकान्त मिश्र ई व्याख्यान सुनलन्हि तँ ओ अत्यधिक उत्साहित भ' जोरसँ ताली सँ काज बिच्छ पासिमिन कयलन्हि।

ईएक ऐतिहासिक परिदृश्य अछि जे मैथिलीक भविष्यक दशा-दिदेश कर्ति। पुतिन काल सँ इलाहाबाद विशि विदियालय पाच्य एरि पतीच्य उच्चशिक्षाक दृश्य सलि अछि जतय साहित्यिक एरि सास्कृतिक केतक लब्ध पतिष्ठ विदित समाजक सालि सलि हिजिन्ह तिनक कर्मभूमि सेहो ओहो विशिविदियालय मे हिलन्हि जतय गणतन्त्र भातिक पहिम पधान मंती पण्डित जहिलिाल नेहरक जन्म भूमि हिलन्हि। ओ अकिाश भेटला पर सिक्षात रुपे ओतय अतिजाइत हिवि। अखिल भातीय मैथिली साहित्य समितिक अध्यक्ष आ विशिविदियालक 1960 ई० आनन्द भनि मे दशाध्यि क रुपमे ओ तत्कालीन पधान मंती सँ सन् 1960 ई० आनन्द भिमे दशाध्यि क रुपमे मैथिली दू पुस्तक दियनार्थ कांशरयाती (1911-1998) क काव्य-संग्रह कविता आ गल्पात्तजलि कथा-संग्रह हुनका उपहार देलविन, संगहि अनुरोध कयलविन जे मैथिली भाषा आ साहित्यक गौरिशाली साहित्यिक पम्परा तेहिल शताब्दी सँ उपलब्ध अछि, किन्तु सरकारी मान्यताक अभाव मे ई सर्वथा उपेक्षित अछि पण्डित नेहरू ध्यान सँ हुनक कनिके स्नेहपूर्वक सुनलविन आ कहलविन Institutional recognization is not soul management of the rechness of a language we enjoy with sound literature

एही कम मे हुनका ओनहि भेटलविन इलाहाबाद हाईकोर्टक चीफजस्टिस न्याय मूर्ति बी० मलिकका ओ कहल विन एकहि रुपे अहाक मानभाषा के मान्यता नहि भेटि सकै ओ सलाह देलविन

जे एक्ह लेल आह्‍दोलनक तीिका अपनाबय पडत तीिनक्ह अहाक मानभारा के माह्‍यता भेक्ट सकैि। आह्‍दोलनक तीिका विक जो अपन साक्हत्यक समदशाली, गौीिशाली आ ीिभशाली पिम्पािा सूं जनमानसक संवक्हसंग साक्हत्य क्चह्‍तक लोकक्ाक ध्यानकक्रसा कबिाक उपकम कर । ह्‍यायमूक्ाषमक्‍ललक क सत्पोिणा आ विचािसँ उत्पेविति भ' कए ओ इलाहाबाद मे सिगिंगानाि संस्कक्ता विसिचष इह्‍सच्यूि मे 15 क्दसम्बाि 1961 ई० के मैविली पुस्ताक पदशाीक आयोजन कयलक्ा तािा ओकिा उदधािनि कबिाक हेतु जक्स्टस मक्‍ललक सँ अनुिोध कयलक्ा तािा ओकिा उदधाटन कबिाक हेतु भाति सिकाििक कमीशन फािा नाइनोंीिटो लैगणिजक चेयिा मैनक पद पि सुशोक्ात भ' गेल हििा। ई सुखद संयोग विक जे उतत पुस्ताक पदशाीक उदधाटन जीस्टस मक्‍ललक सीिकािा कयलविनि जाक्हमे ओक्हठाम क पदि साक्हत्य क्चह्‍तक लोकक्ा मैविली भारा आसाक्हत्यक पाचीनतम गौीिशाली पिम्पािा सँ अिगित भैलाह जे हुनका सभ पि अपन अक्ाट ािप ािडलका एक्ह असिि पि यशसीि कवि िदयनािा क्ाश याती मैविली मे काव्यपाठ कयने हिवि।

इलाहाबादक पुस्ताक पदशाी सँ अनुपाक्ाणत आ अनुपेविति भ' कए ओसोचलक्ा जे एहन पदशाी क आयोजन गणतह्‍त भातिक ािजधानी क्दल्‍ली मे कयल जाय ते क्ाक्शत रपे मैक्लली के सिकािी माह्‍यता भेटबामे कोनो ािधा नक्ह आक्ा सकैि। एकिा आयोजनाि ओ अपन पोक्ाडेण्ड फण्डसँ लोन ल' कए 8 आ 9 जनीिी 1963 ई० मे क्दल्‍लीक आजाद भिनि मे ऐक्ताहाक्सक ािष्टीय पुस्ताक पदशाीक आयोजन कयलक्ा जाक्हमे क्ािविलाचलक विक्ाह्‍न क्ेत सँ

िदयाकरबक िला बहुतायाद मे पुस्तकाक्द एकत्तत कयल गेल िल जाक्हमे कावि ला इनटीच्यूि दिभंगा आ पटना विश्विदियालय विशेर उल्लेखनीय अवि। सासद रपमे लक्लतनाियिण क्तश एिं यमुना पसाद मंडल सहभागी भेल िहवि। भाित सकिाि संसदीय कायष मंती बाबू सत्यनाियिण क्संहक सहयोग सँ पधान मंती पक्तडत जिहि लाल नेहर एकि उदधाटन कयलक्त यदयाप ओ पह्हदह क्तनट विलम्ब सँ पहुँचलाह, क्कह्तु पुस्तकक अमिि देक्ख जपद भ' गेलाह। पोफेसि क्तश के। भीक्जविंग िक्जस्टि ओ क्टप्पिि कयल अक्त IWas ray to inaygware Maithali Book Exibition and to see the large Colleetion of books and Manuseripts in Maithli . This domonst trated that Maitili hasd been for long time and is today a living among the people of that areas the Language deseirurs eneourgenmentपदशषी के सफल बनयबाक लेल िस्य-व्यंग्य समाट पोफेसि हविमोहन िा मायानह्द क्तश (1934), िमिसि रप नटुआक अक्तवितत अनेको गण्य-माह्य िजनैक्तक , साक्हत्यक मैविली पेमी उनविटक' पदशषी सफलनय बाक हेतु उपक्स्त भेलाहाएकि शानदाि सजाबट क कािणे समग कायषमकािकी क्सनेमा हाल मे पदक्शत भेल जे कावि ली क हेतु ऐक्तहाक्सक घटना विक। उपयुक्त पुस्तक पदशषी एक्ह बालक सबल पमाण विक जे ओ क सफल आयोजक िहवि मैविली आह्दोलन एक डेग आगू बढला

साक्हत्य अकादेमीक सामाह्य पविरद मे पिश

विश्विदियालय अनुदान आयोग दाि माह्यता पाप्त भाितिक

विश्वविद्यालक अकारानुक्रम सँ बीस पन्नाकाव्य पाच वर्षक कालावधि हेतु साहित्य अकादेमीक सामान्य परिषदक सदस्य मनोनीत कबाक प्रक्रिया छैक, जकर नामक अनुशंसा सम्बद्ध विश्वविद्यालयक कुलपति करैत छथि। जीनिक परिणाम थिमे विहारि सरकार क्राहक ख्याता शी महा महोपाध्याय डा० उमेश मिश्र के सरकारमेशरि सिंह संस्कृत विश्वविद्यालयक कुलपति नियुक्त कयलक। ई सुखद संयोग छल जेप हुनक कार्यकाल मे साहित्य अकादेमीक सामान्य परिषदक सदस्य नाम अनुशंसित कबाक सूचना उक्त विश्वविद्यालयक कुलपतिके भेटलन्हि। मानधारानुगामी कुलपतिक अतीव इच्छा छलन्हि जे एहन व्यक्ति क नाम अनुशंसित कयल जे मैथिलीक मान्यताक षिएह भाराक पुरजोर पक्ष उपस्थापन सबल तर्क आधार प्रस्तुत क' कए ओकर अध्यक्ष पण्डित जवाहर लाल नेहरू के कनमीहुस क' सकथि अंगजी मेद कुलपति कार्यालय तीन केर पोफेसर जयकान्त मिश्रक नाम प्रस्तावित क' हुनक अनुमोदनाषिपस्तुत कयलका किन्तु कुलपति बाम्बिावर विनु कोनो टिप्पणी कयने फाइल के वापस क' देवि। हुनका एहबालक आशंका छलन्हि जे जनमानस ई आरोप लगाओत जे अपन पुत्रक नाम अनुशंसन कयलन्हि। अहतनप सामाजिक दबाब क कारणे कुलपति जयकान्त मिश्रक अनुशंसा कयलनि आ ओ अकादेमीक सामान्य परिषदक सदस्य भ' गेलाह सामान्य परिषदक सदस्य बननाह ओ मैथिलीक मान्यताषिआन्दोलन प्रारम्भ कयलन्हि जे एकर विकासक अविरद दारि शनैप शनैप खुजय लगलैक। अन्यान्य भारा सदस्य लोकनिक ध्यान मैथिलीक गौरवशाली साहित्यक परम्परा क दुर्दशामे ध्यान आकर्षण कबि ओ प्रारम्भ कयलन्हि।

मैथिलीक मान्यता

मैथिली के मान्यता साहित्य अकादेमी देअ, ताहि हेतु ओ फाड़ निर्ह क' एकरि पाि पडलक्ष तकरि पािर हुनक त्याग आ बलिदानक इतिहास जनमान सँ नहि नुकायल अछि। ओ सामान्य परिदक मानानीय सदस्य लोकनिक ध्यान करास कबाक आ मानभारा मैथिलीक महत्त्व कारवात कबाक लाकत अड० जि मे दू बुकलेट लिखलक A cabe for Maithili एिं Cohal They say about Maitheili तकरि सदस्य लोकनिक बीच वितवित कयलक। यदुयवि दिल्लीक पुसाक पदशर्षी मे पवण्डित नेहर जे अकादेमीक अध्यक्ष सेहो हि ओ एिह बालक संकेत देने हिवि जे एिह भाराके मान्यता भेटबक चाही1 किन्तु दुयोग सँ हुनक मत्यु अध्यक बनलाह जे मैथिलीक गौरि-गाविमा आ महत्त्व सँ पूषि पविचित हिवि। हुनका अध्यक्ष बलतिह ई अत्यधिक आशान्वित भ' गेलाह ज आब मान्यता जािह मे भाराविद डा० सुकुमारि सेन (1900-1992) पोफेसि हजािर पसाद दिवेदी (1907-1979) आ डा० सुभद ि (1909-2000) के सदस्य मनोनीत कयल गेलक जकि बैठक दिल्लीमे आहूत भेल। एिह सँ पूषिकोलकाताक पिसी मानभारा सेवी संसिाक संग मिथिलाचल मे जनजागिण भ' गेल ओ पोस्ट काई अभियान चला क' एिह माग क समिषा कयलकजकि फल सिरिप भेटला एिह दिशामे पोफोसि क्षशक सतत्पयास ऐतिहासिक घटनाक रपमे सतल क्षिसि िधीय हिल ताह।

वितहुता लिमकसां किुक

अन्य सिंतंत साहित्यक आधुनिक भाितीय समान मैथिली भाराके

अपन पाचीन सतिहत्त क्लवा ैिक जकाि क्ताहिुता ाि कार्विलाकाि ाि मैर्विलाकाि ाि मैर्विली क्लवा कहल जाइि। क्ताहिुता नामसँ जान होइत अर्वि जे ई क्लवा क्ताहिुत देशक र्विका जक्हना भारा आ सभ्यता पिसिमि अह्योह्याक्शत अर्वि तक्हना क्लवा आ भाराक सम्बाह्ध ैिक1 अपन क्लवा सँ जक्हना-जक्हना सम्बाह्ध ूिटल जायत तक्हना-तक्हना भाराक पक्त ताक्ह अनुजात मे आकरषा कम होइत जायत तकि पत्यक पमाण र्विक मैर्विली । एक्ह क्लवाक जानक्हािक संसाि क्दनानुक्दन नगक्य भेल जा िहल अर्वि ज मैर्विली हेतु क्यह्तनीय र्विरय र्विक। एक्ह पश्न पि जयकाह्त क्शश गमभीिता पूिक्क र्विचाि कयलक्त जे एकि संकिग्गािषपयासक पयोजन अर्वि। साक्हत्य अकादेमी मैर्विलीक माह्यताक पसंग मे एक पश्न उपक्सित भेल िल जे एकि सतिहत्त क्लवाह्म अक्स्तत्ति ैिक ाि नक्ह? ओएकि उतिि मे तकष देलर्विनजेएकाि अपन सतिहत्त क्लवा ैिक जकि पुिातन इक्तहास ैिक। हुनक माह्यता िलक्त जे मैर्विली क सतिहत्त अक्स्तत्ति सिाक्पत कबािमे जे कक्ठनता क्लवाक कािणे भेलक्त आ िताषान पर्विपेक्ष्य मे भ. िल अर्वि सेक नक्ह होइत जँ हमाि लोकक्त एकाि संकिक्त िखने िहित हुँ लँ ई पशन कििमक्ा नक्ह उठैता

िातालापक कम मे ओ हमाि एक बेि कहने िहर्वि जे पुिानिन काल मे समग कार्विलाग्चल मे क्ताहिुताक संगक्ह कैािं क्लवाक पचलन िलैका दिभंगा ािजक कायषकलाप मे सेहो क्ताहिुता क्लवाक पयोग होइत िलैक कक्ह्तु ओकाि बक्हतषकत क- कए क्हह्दी बहुत देिनागिाि क्लवा के लाक्द दोम गेजैक जकि भयंकि दुक्सर्विणाम भेलैक जे शनैपशनैप जनमानस सँ ई र्विलुप्त होइत गेल। एकि

फलस्वरूप मैथिली सदृश प्राचीनतम भाषाके तिरहुता पाण्डुलिपिक अध्ययनमे व्यक्तिक अंगक उदधोकरणा विदान लोकनि कयलन्हि जेनाक्षिभारा आ अधीक प्रसंग मे कहल जाइछ। जँ तिरहुता लिपिमे प्रचलित होइत तँ एकरा साहित्य एही लिपि मे लिखल जाईत तँ एहन विभिदक उदभाविना कमिया नहि होइत। संस्कृतक हेतु विकल्पक रूपमे समस्त भाति मे देवनागरी लिपि व्यवहित होमय लगल प्रभाव बढ़ि लागल पर पड़ल आ मैथिली साहित्य क्रमशः लोकान तिरहुताक स्थान पर देवनागरी लिपिक प्रयोग करय लगलाह।

यदयपि एहि लिपिक संरक्षणार्थ अनेक प्रयास अवश्य कयल गेल, किन्तु कोनो प्रयास सफल नहि भ' सकला दभिंगासँ तिरहुता लिपि मे समाचार पत्र बहार करबाक प्रयास कयल गेलैक, किन्तु ओहोक विफल भेल। मैथिली भाषी जनमानस तिरहुता आ कैथी लिपि मे पढ़ैत-लिखैत छल आ एहि सँ अवगत कोनो लिपिक प्रयोगक जान लोक के नहि छलैका यदुयपि एकर पुनर्जीवित करबाक नेयाभिास पुस्तक भण्डार सँ जीवनाथ राय (1891-1964) बाडण्ला लिपिक प्रभाव काटा अवश्य बनाओल गेल आ ओ 'मैथिलीक प्रथम पुस्तक' क रचना अवश्य कयलन्हि, मुदा ओ सफल नहि भ' सकल।

जखन मैथिली कोश प्रकाशित करबाक प्रश्न उपस्थित भेलन्हि तखन ओ विशुद्ध तिरहुता लिपिक टाइप बनयबाक अथक प्रयास कयलन्हि कारण हुनक बलवती इच्छा छल जे तिरहुता लिपि मे कोश प्रकाशित हो। एहि भावना सँ ओ उत्प्रेरित भ' तिरहुता ककहारा (1967) नामक एक पुस्तक लिखलन्हि1 दैव दुर्योग एहन भेल जे हुनक ओ प्रयास सफलीभूत नहि भ' पौलन्हि। हुनक मान्यता छलन्हि जँ हमरा लोकनि एकरा उपेक्षित करैत रहितहुँ तँ मैथिलीक

अवस्तुतः, पाचीन एवं मध्ययुगीन काल जयी साहित्यक विसिचष अवधक सुकि होइता तिषान पवपिक्म मे एकि पुरितिन कबि पयोजनीय अवि विसिचष आ सास्कक्तक कायाक्द मे अलंकणिक रपमे विशिर उपादेयहोयल । पत्येक मैविली पेमी जनमानस सँ आ विशिरतप मैविली रढक्नहाि ित समुदाय के एक्ह क्लवा के क्सबिबाक पेणिा देल कओ।

पिमिशषमाण्डलक संयोजक

साक्हत्य अकादेमी दाि मैविलीक माह्यता भेटलाक पश्चात् समग कविलाज्चल एविं पिसी मानभारानुििगी मे पसह्नताक लहाि पविक्याक्त भ' गेल। जनमानस आनह्दक सागिगे एक नि क्कणि विकोण अिश्य होयत। मैविली पिमिश मण्डलक पिम संयोजक भेलाह िमानाि भति (1906-1971) क आकक्सक काधनोपिह्नत जयकाह्त क्मश के एकि संयोजक बनओ लगेला।

यदुयवा ओ दू खेय पिमिशषमण्डलक संयोगक हिला' कक्हु हुनक कायषकाल मे कोनो एहन उललेखनीय पकाशन नक्ह भेल। हुनक कायकाक्धमे काम्नसि पुस्तक पकाश मे आयल ओ विकि उमानाि ि दाि सम्माक्दत विदियापक्त गीत शनी () आ जयधाि क्संह दाि संगहीत मैविली किि संगह ( ) इत्याक्द।

क्हनकक्ह संयोजक कालक दुइ घटना मैविलीक िस्मिणीय अवि। ओ विकि अकक्दमी दाि मैविलीक सीकिक्त पश्चात् इक्तहाक्सकाि पोफेसि िधाकष्ण चौधाि (1924-1984) के अडर्णजी मे मैविली साक्हत्यक इक्तहास क्लखबाक दाक्यतव सौ पलका ओ यिि समय ओकि पाण्डुक्लक्प साक्हत्य अकादेमी मे समविषि कयल काजकिि पिमिशषमण्डल क समक विचािििषपुस्तुत कयल गेल। कक्हु हुनक

पाण्डुलिपि एहन बभन पेच मे पडल जे कतिपय काणि सँ ओकि पकाशन सँ विंचत क' देल गेल। एकि पमुख काणि िल जे मैथिलीक इतिहास लेखन पि पोफेसि िशक एकाधिकाि िलान1 ओ अपन पूषि पकाशित इतिहास पिम खण्ड आ द्वितीय खण्ड के कए अकादेमी दाि पकाशित किौलनि A History of Maithili Leterature (1976) । तचश्चात् ओकि मैथिली अनुिाद मैथिली साहित्यक इतिहास (1988) सियें कयलनि, काणि हनुका एहि विरयक शंका िलनि जे कदाचित अन्य अनुिादक एम्हि-ओम्हि ने क' देत। किन्तु उपयुक्त पाण्डुलिपि के पोफेसि चौधिी सेहो पकाशित किौलनि A Seervey of Maithili Leterature (1976) नामे । उक्त दुनू इतिहास मैथिली मे विािदा चिह हिल।

हिनक कायकाल मे अकादेमी एक पुस्तक पकाशित कयलक Indian Leterature Since Independence (1973) जाहि मे अकादेमी दाि सींकत भाराक सहित्योति कालक पगतिक विकास-याता क मूल्याकन कबिाक िलैका मैथिली भाराक सितहत्योति काजक विकास गाथाक पसंग मे पोफेसि िाश आलेशि पस्तुत कयलनि जे पकाशनो पिहिले साहित्य जगत मे एक िधि विािद केन्द्र बिन्दू बनि गेल। सितहत्योति मैथिलीक साहित्यक यािषिमूल्याक न कबिामे अजानलाशि ि यािषिसूचनाक अभािं मे जे भाम्भक विचाि पस्तुत कयलनि तकि विािध मे पटना सँ पकाशित मिथिला मिहि क पचीस अंक क लगधक भिन्न-भिन्न लेखक दाि साहित्यक यािषिा क मूल्याकन कयल गेल। मिहि कि सचादक सुधाशु शेखि चौधिी (1920-1990) िदे-िदे

जाचते ततबोध नामे एक सीर्वजि चलौलक्त जाव्ह मे उतत आलेसाव्द पकाव्शत भेल जाव्ह मे हुनक कटु आलोचना कयल गेल।

व्दशा बोत्धक समीक्क

यदयव्प ओ जीनि पयष्त अडर्णजी साव्हत्यक अध्ययन-अध्यापन काि हिलाह जाव्हमे समीकाक पचूि सामगी उपलब्ध िक, कव्हतु मानभारामे समीकाक सिषिा अभाि देव्ख ओकिा अव्मव्दत कबिाक उदेश्य सँ उत्पेवित भ' मैविली मे समीका व्लखबाक शुभािभ कयजक्त। व्हनक िहत समीकात्मक कक्त पकाश मे आयल पोफेसि गंगापक्त व्संह (1894-1969) क सदयप पकाव्शत उपन्यास सुशीला ((पि जे दिभंगा सँ पकाव्शत व्मव्थला व्मव्हि क साचादक सुिव्द िा सुमन (1910-2002) पकाव्शत कयलक्त । एकि महत्तत एव्ह कािणे अवि जे उपन्यासकाि उपन्यास मे कक्तपय सिल पि मैविली शब्दक बदला मे व्हन्दी शब्द-समूहक पयोग कयने िहवि तकि आ सतष्क पक्तािद कयलक्त।इएह आलेख व्हनका मैविली आलोचना मे पिशिक दाि खोललक तिा व्हनका यशसिी बनौलाका जनमानसक ई धािणा िलैक जे मैविली मे जेव्लखल जाहन िक से ठीक िक तकि आलोचना नव्ह होमक चाही एव्ह पि कलेक विािद चण्डल । मैविली कचुना साव्हत्य व्वहतक बाबू भुिनेशि व्संह भुरन (1907-1944) व्हनका अत्यव्धक पोत्साव्हत कयल विना

यदयाण व्हनकव्ह सँ मैविली मे इक्तहास-लेखनक पिम्पािक शुभािभ होइत अवि जे िस्तुतप समीकाक शेणी मे पवणित अवि। एव्ह ऐक्तहाव्सक गहिक जे पयोवाता िक ताव्ह पसंग मे हम विस्तित पूिषक विििचन कयल अवि व्हनक अनुसंधान उपशीरषकाव्हतगक्त। ते

एतय गाओल गीत के गायब समुक्चत नक्ह। आधुक्नक पविपेक्ष्य मे ति कवित आलोचक क कनि िक्त हुनक इक्तहास मे कक्तपय दोर अवि। क्कन्तु एक्ह बात के ओ सिि क्नसवि जाइत िवि जे हुनका समक कोनो पक्तमान नक्ह िलक्त जकि आलोक मे ओकाि स्तत विश्लेरण कवितिवि। अपन इक्तहाक्सक अक्नठक्त ओ आक्ह विरय-िस्तुक विश्लेरण नक्ह क’ पौअक्त तकि हमिा लोकक्त अनु संधान क’ पकाश मे अनबाक पयास कििा। जँ हुनक इक्तहासके मात डाक मेहैशत कहबैक तँ ओकि आलोक मे ओ अनेक क्दशा क्तदेश कयलक्त जाक्ह क्दशामे तिमान पविपेक्ष्य मे गहन अनुसंधान क पयोजन अवि जे िति पीढी के कबाक िैक। क्हनक इक्तहास मैविली आलोचना साक्हत्य के क्दशा बोध कििलक जाक्ह सँ आगा हमिा लोकक्त नक्ह बक्ढ पौजहुँ अवि जे क्चन्तनीय विक।

मैविली लोक साक्हत्य सँ सम्बक्न्धत क्हनक An Introdution to Folk Literatuse of Mithila एक्ह विधाक पिम गंि विक जाक्ह मे क्नविजाञ्चल मे हनुका लोक साक्हत्य सँ सम्बक्धत जतेक सूचना उपलब्ध भ’ पौजक्त तकि लेखा-जोखा ओ दुइ खण्ड मे पस्तुत कयलक्त1 पिम खण्ड मे लोक गीत सूं सम्बक्लधत जतेक सूचना उपलब्ध भ’ पौजक्त तकि लेखा-जोखा ओ दुइ खण्ड मे पस्तुत कयजक्त। पिम खण्ड मे लोकगीत सँ सम्बक्धत पचुि सामगी, लोकनाट्य सम्बधी गीत आक्दक विििचन ओ कयलक्त । क्दतीय कििाक्द क चचा भेल अवि। आधुक्नका पविपेक्ष्य मे लोक साक्हत्य पि जतेक कायषभेल अवि िा भ’ हिल अवि तकि पेििा सोत उपयुक्त समीक्ता विक जे पििति पीढी क लाक साक्हत्यकाकि पाििय बनल।

ैदेही सकाक्त दाि आयोक्जत पिम अक्खल भाितीय लेखक सम्मीलनक असिि पकाक्शत िचना संगट मे मैक्िली इक्तहहास सम्बक्न्धी
कि ु समस्या क्दस जनमान सक संगक्ह पि ुद िगक्ष ध्याना कक्ज्षत कयलक्न जे क्दशा बोध किबैि जे जाधक्ि उपयुक्षत समस्या क्दक समाधान नक्ह होयत ताधक्ि इएह क्सक्ि हिता उपयुक्षत असिि पि अपन अध्यक्षीय भारणमे नाटय साक्हत्यक भक्क्ष्य पि पकाश द’ कए कक्तपय नि-क्बन्दुक संकेत देलक्न आ जोि देलक्न जे एकि माध्यमे मैक्िली क भक्क्ष्य सुक्नक्त क्ह सकैि जे हुनक आलोचनात्मक पक्तक संकेत किैि।
क्हनक समह उपलब्ध आलेखक अनुशीलन सँ अबबोध होइि जे ओ मैक्िल संस्कक्त, साक्हक्त्यक पिम्पिा के अकुण्ण िखबाक क्दशा-बोध कैलक्न। एक्ह पसंग मे हुनक अधािणा िलक्न जे भेर-भूरा, भाि-भारा, कला-कौशल, क्चत-कला-संगीत के उदाि किबाक पयोजन अक्ि। एक्ह उदेश्य क पूतयषि अपन आलेखाक्द मे क्स्तािपूक्षक क्चाि कयल-क्नआ संकेत देलान जे युिा पीढी के अगसत भ’ कायष किबाक पयोजन अक्ि। हुनक मान्यता िलक्न जे मैक्िली नािटक आ िगमंचक माध्यमे एकि भक्क्ष्यके सुक्नक्शत कयल जा सकैि। नाटय साक्हत्य जीक्त हिल-पढलाक ओ सुतबाक एिं देखबाक पक्कया मे सजीिता ैक, मूनषय िस्तुके उपक्सित किबाक क्मता ैक ति अक्भनय मे सौहृदयष ओ कलाक िास्तक्िकता, मनुष्यता एिं सत्यता ैक, से साक्हतयक अन्यान्य क्धा मे भेटब असम्भि ैक।
बीसम शताब्दी मे मैक्िली साक्हत्य मे पक्ितिषाक सिि गुक्जत भेल

तकि ओ समष्टिक रूपमे अयलाहा आधुनिक शिक्षाक प्रचार सँ लोकक ज्ञान ओकर दृष्टि विकसित भेलैक तथा मानवतावादी लेखक लोकनिकलेखनी ओहि प्रवृत्तिक के अंकित करय लागल जे साहित्य मे नवीनताक संचार भेलैक। प्रवृत्तिक सभ मुख्यताक कारण अछि नूतन विज्ञानक आविष्कार क चमत्कार, औद्योगीकरणक वृद्धि, एहि सँ उत्पन्न जन-जीवनक संकुलता, आर्थिक विचार क क्षेत्रमे मार्क्सवाद क उदय, फ्रायडक मनोविज्ञान बौद्धिकता वृद्धि। साहित्यक क्षेत्र मे एकर प्रभाव पडल आ प्रवृत्तिक सभ गुंजित भेल तकर ओ पक्षपाती छथि। उपर्युक्त परिप्रेक्ष्य मे हिनक समग्र रचनावली हिनका युगबोधक समीक्षक रूपमे प्रमाणित कयलक।

कीर्तनिया नाटक

A History of Maithili Leterature क Volume I मे मिथिला मे उपलब्ध नाटकावलि के ओ कीर्तनिआ नामे साबोधित कयलन्हि जाहि प्रसंगमे आप्रत प्रस्तुत कयलान्हि मिमांसा वा अवधारणा क परिम अंक मे हुनका दावा सभ प्रचलित मतक खण्डन करैत ओकरा कीर्तनिया नाच कहलन्हि। एहि पर मैथिली आलोचना क क्षेत्रमे विविदक एक परम्पराक शुरुआत भेल। प्रोफेसर रमानाथ झा हुनक मतक खण्डन कयल उत्तर पक्षक जबाबमे (1) मे । तत्पश्चात् रमानाथ झा प्रबन्ध संग्रह (137साल) मे मैथिली नाटकपर एक बृहत् आलोचना कयलन्हि। इहो कीर्तनिया नाटक (1965) नामक एक विस्तृत पुस्तक अपन सतक समर्थन मे प्रकाशित कयलन्हि जाहि मे हुनक मतकखण्डन तर्क देलन्हि जे मैथिली मे शोध कोना हो, इतिहास मे परम्परा नामकरण

कीतर्नआ नामक सार्थकता, नटुआ आ नटकियामे भेदा, नाच ओ नाटकक अभेद सम्बन्धी पमाण, नाटक शब्दक व्यापक अर्थ, मिथिलामे अभिनयक परम्परा, कीतर्नामे पातक पवेश-निष्कमण, पातक संख्या, योग्यता, मिथिला मे कीतर्निआक परिचिति, मिथिला मे नाटकक परिचिति अभाव, कीतर्नआ संस्कृत नाटक थिक तथा एकर नटुआक अयोग्यता आदि विषय पर पकाश देलनि।
एहि पसंगमे हुनक मान्यता छलनि, जे ई नेपालक जगओल धनिका थिक। इतिहास बुझबाक हेतु बड तह मे जाय पडत। हुनक कहब छलनि जे इतिहासकार के इमानदार आ निष्पक्ष होयब परमावश्यक अछि। मिनाक्षी राजिव ए कह्लजभिक्टि इमैलनेर्वी व्हस्टोवियन।
उपयुर्क्त पर्यपेक्ष्य मे मैथिली आलोचक लोकनि दू भाग के विभक्त भ' गेलाह1 कछु दिनक पश्चात् पोफेसर पेमशंकर सिंह (1942) मैथिली नाटक ओ रंगमंच (1970) एक नव बिन्दु दिस संकेत कयलनि जे ई ने कीर्तनिआ नाटक ओ रंगमंच मे एक नव बिन्दु दिस संकेत कयलनि जे ई ने कीर्तनिआ नाटक थिक ने कीतर्नआ नाटा, पत्युत एहि सब नाटकादिक के ओ लीला नाटक कहलनि । पोफेसर सिंह एहि दिशामे विचार करबाक एक नव दिशा क बोध करौलनि जे विचारणीय थिक।
आन्दोलनक सजग पहरी
अनुसन्धानोतर एक नव परिवर्तक जागरण हुनक मस्तिष्क मे भेलनि जे मैथिली क गौरव-गारिमाकेँ तिपेक्षा पर्यवेक्ष्य मे जागत करबाक कामत ओ रचनात्मक आ आन्दोलनात्मक मागर्क अनुसरण कयजनि। एहि लेल ओ अकमर्ण्य सकियाकय , सुसुप्त, धार्मिक

कटिता, रवीढ मुस्त जीनिक अहधकूप मे डूबल समाज मे जीनिक संचाि कबिाक हेतु जनजागणिक अवभयानक सूतपात कयलवि जे मैवथलाक सामाविजका, सास्कवतक एिं साविवत्यक जीनि मे नि चेतना अनबाक हेतु ओ िचिनात्मक आ आहदोलनात्मक सर्ि अविहत्तयाि कयलवि जकि पभाि मैवथलीसी पि पडला हुनक आहदोलनकािी सरिप पाहल पविचय भेटैि जे साविवत्य क समद शाली पिम्पिा के जनमानस के अिगत कयिबाक हेतु ओ इलाहाबाद आ वदल्लीमे दुइ बेि अवत उत्साविहत भ' पुस्तक पदशनीक आयोजन कयलवि। साविवत्य अकादेमीक सामाहय पविरदक सदस्यक भाराभारी के एकि महत्त्ि सँ अिगम कयिबाक वनवमत ओ संधरष कबि पािम्भ कयलवि। हुनक एवह सकािात्मक आहदोलन के मूत्ष रप पदान कािण ऐ मैवथलाञ्चल आ पिसी मानभारानुिगी संसािक्ा अपविवमत सहयोग भेटलवि जकि एनय पुनिस्थान क पयोजन नवह । एवह आहदोलन मे मात हनके नवह, पत्युत समस्त मैविली भारी जनमानस क सहयोग के असतिकाि नवह जा सकैिकि पविणाम भेल भाितक सिोच्च साविवत्यक संसि नेशनल लेटसष ऐकेडमी अशवत साविवत्य अकादेमी दािि सवह भारा साविवत्यक पिम्पिा सँ अिगत भ' माहयता पाप्त भेलैक।

विहाि एिं केहद सिकािकि उदासीनताक कािणे ई भारा सििा उपेवक्त देवख हुनका हदयक आकेश भेलवि आओकविरि सीतािम िा (1891-1975) क वनम्नसि पंवत सँ अवतशय पभावित भेलाहप अवि सलाइ मे आवा बित की वाना िगडने।

पायब वाज अवधकाि कतहुँ की वाना िगडने।।

कविि क उपयुक्त पंक्तिक व्यापक पभाि जनमानस पि पडलैक जाहिसँ अवभभूतओ जन जागणिक अवभध अवभयान चलौलक जे जनमानस अपन लेल माहृभाराक महत्ति के जानय, बुिय आ अपन समुवचत अवधकाि पाप्त कबिाक वदशामे हुनका सहयोग देमक हेतु उनाहुल भ’ गेल। कािण ओ अनुभि कयलक जे वमविलाचल िसी मे भारा चेतनाक सिििा अभाि िैक। भारा चेतनाक अिष विक माहृ भाराक पवत पेम, दावयलबोध, कतषव्य बोध, गौिि, बोध आवद समस्त विरय चेतना शब्दमे सवनवहत अवि, भाराक उहनवत आविकास समस्त विरय चेतना शब्दमे सवनवहत अवि। भाराक उहनवत आविकास ओवह भारा भारीक चेतना पि वनभिि कििि म कवहतु मैविली भारी जनमानस मे अपन भारा आ साववहत्य क सिािगीन विकासक अकाकाक अभाि देवख ओ सविषिम भारा चेतना जगायनाक वनवमत आहदोलन कयजक जे हम मैविल िी, हमि मानभारा मैविली विक आ हम वमविलािसी िी। एवह भािना सँ ओ उत्पेवि भ’ वमविलाचल िसी सँ अनुिोध कयजान जे जावि भेद, विदाहवेरणक पविाक पवत्याग क’ एक जुट भ’ वमलणुवलक भाराक विकास काटवक पात सम्बद भ’ आहदोलन किी।

ओ मैविली आहदोलनकेँ निि सरिप पदान कबिाक आकाकी हिवि, कािण हुनक पबल इच्िा िलकजेआहदोलन समबहधी कायिक्रम के रपाववत कबिाक िुणड बावह क’ एवह लेल मुख्य-मुख्य महत्ति आ तजजवनत विविध समस्यावद सँ जनमानसक ध्यान कविि कबि। एवह भारा पि एक जातक िचस्ि के समाप्त कबिाक लेल सेहो आहदोलनक पि एक जातक िचस्ि के समाप्त कबिाक सेहो आहदोलनक आिश्यकता अवि तकि अनुभि हुनका भेजक। ओ

मिथिलाचल क मुसलमान के आन्दोलनक संग जोडेबाक हुनक बलिती इच्छा छलन्हि । ओ एहन आन्दोलनक आकांक्षी छथि जे सामान्य जनक हि पक्षधर्ता क' ओहि अंचलक, ओहि क्षेत्रक, समाजक सर्वांगीण उन्नतिक हेतु सतत सक्रिय छथि। किन्तु हुनका पीडा एहि बातक छलन्हि जे मिथिलाचलवासी आन्दोलनक प्रति उदासीन अछि। मैथिली आन्दोलन मे तीव्रता अनबाक हेतु जाधरि नहि भ' सकैछ। किन्तु ओ एहि बात सँ अत्यधिक दुःखी छथि जे मिथिलाचल सँ कांग्रेस प्रत्याशी लोकसभामे जागरूक अभाव प्रतिलक्षित भेलन्हि। मैथिली आन्दोलन दधीचि बाबू भोला लाल दास (1894-1977) कहैत छथि जे चुपचाप बैसने न्याय नहि भेटि सकैछ। मिथिलाचलक सर्वांगीण विकास क हेतु मिथिलावासी के एकदिन भ' सिंहनाद करबाक प्रयोजन अछि आ अपन अधिकारक लेल संघर्ष करबाक ओ आह्वानकर्ता छथि यथा

अन्यायी सत्ता छी प्रलयगगन सम अछि विरल।

हमहिं लाधु हुँकार सँ महाप्रलय होइछ कायम।

मैथिली आन्दोलनके ओ नव रूप देबाक प्रयास कयलन्हि। इनक धारणा छलन्हि जे जाधरि राष्ट्रीय रूप एकरा नहि प्रदान कयल जायत ताधरि मैथिलीक विकास क सम्भावना नहि। जहिना डोगरिया भाषी, असमिया भाषी आ नेपाली भाषी के अपन भाषाक प्रति अगाध श्रद्धा छैक जे अपन कवि स्नेही 'मातृ भाषाजननी' क नाम लगबैत अछि तहिना मैथिली भाषी के अपन भाषाक प्रति स्नेह उत्पन्न करबाक लेल आन्दोलनक प्रयोजन अछि। जाहि-जाहि भाषा के साहित्य अकादेमी द्वारा मान्यता पाइज छैना ओहि सब भाषा के

भाि तीय संविधानक अष्टम अनुसूची मे नव्ह सवम्मवलत कयल जायत तकिा लेल ािष्टीय स्ति पि आह्न्दोलनक पयोजन अवि1 एव्ह लेल आह्न्दोलन के तीव्रिा कबिाक लेल वमविलाचलक गामक पद-याता कयल जाय आ वजला-वजलामे जन आह्न्दोलन कबिाक ओ आहािन कयलवन। मैविली आह्न्दोलन तँ पत-पवतका, पतकाि, सावहत्यकाि आ सहदय मैविली पमी धवि सीवमत अवि तकिा व्यापक पवविवि मे अनबाक आिश्यकता अवि।

हुनक धािणा िलान जे जाधवि एकिा िाष्टीय रप नव्ह देल जायल ताधवि एव्ह भाराक कल्याणक सम्भािना हुनका नव्ह िलवन। जव्हना पौल ािबसन क वलखल जाव्ह गीत के लूिि वकंग नाम वनगो नेता अपन वनगो आह्न्दोलन मे उपयोग कयलवन तव्हना तकिा हमिा लोकवन के भारा समूहक संगमाम गीत धोवरत कबिाक आिश्यकता अविप

We Shall OverCome, We Shall Over Come

We Shall over come, Some day, o ! deep in my hewck

I do seelieve, We Shall OverCome Someday

We will have in peaee, We will go hand in hand

जाधवि वमविलाचल िासी के उपयुवत काव्याश अनु पावणत नव्ह हैलाइ ताधवि हमिा लोकवनक आह्न्दोलन सफलीभूत नव्ह भ’ सकैि।

जयकान्त मिश्र मैथिली नाम पर चलाओल आन्दोलनके टिमटिमाइत दीप मानैत छथि। मैथिली क नाम पर जतेक संघरष चलाओल जाइत ओ साधारणतप हमर आन्दोलनके उजागर करैत अछि। छिट-फुट बातके ल' कए आन्दोलन करब तकर कयलथि आन्दोलनक संज्ञासँ नहि अलंकृत कयल जा सकैछ। मैथिली भारी दारि जे आन्दोलन चलाओज जा छिल अछि ओकर एकर विकास नहि-पत्युत विनाश मानैत छथि।

मैथिली आन्दोलन क असफल भ' जयबाक कारणिक उल्लेख करैत हुनक कहब छिन्ह जे पंजाबी आ उदूष सहश हमर भारा कोनो धमषक संगसम्बद नहि अछि। मैथिली बजनिहार क संख्या भारत मे सातय अछि। एकर महान सास्कृतिक परम्परा छैक। सास्कृतिक अवस्मता क छिनक लेल आन्दोलन आजुक धमषविक। आन्दोलन मे तखने बल आओत जखन हम संस्कृतिक शंखनादकबि जन-जन भावक चेतनाक हुँकार भरब। एहि पसंगमे ओ आरसी पसाद सिंह (1911-1996) क पवसद काव्य बाजि गेल छिडेक उल्लेख करैत छथि—

बाजि गेल नडिंक, ललकारि छिल अछि
गरजि-गरजि कय जनजन के परचारि छिल अछि
आबहु की छिनीह , मैथिली बनबि छिन्दनी ?

तस क छिह मे बान उदासिनी जनकनन्दनी?

मैथिली आन्दोलन सततगति शील छिल तकर परिणाम अछि जे ओ नीचा सँ ऊपर ससरि अछि । ई एकर परिणाम थिक जे साहित्य अकादेमी, भारतीय संविधानक अष्टम अनुसूची, संघलोक सेवा

आयोग, विहार लोक सेवा आयोग, उच्चतर मैथिलीक, विश्वविद्यालय स्तर पर अध्ययनक रूपमे स्वीकृत भेल। इएह तँ मैथिली आन्दोलनक अद्यतन वस्तुस्थिति अछि। जनिक सुविधा हमरा लोकनिके उपलब्ध भेल अछि तकरा ओ उपयोग करबाक मंत्र देलनि।

मैथिलीक वास्तविक विकासक हेतु अद्यावधि आन्दोलन अपेक्षित अछि। आवश्यकता अछि जे हमरा लोकनि आन्दोलनोन्मुख भ' प्रयास करबाक चाही जे राजभाषाक रूप मे एकरा स्वीकृति भेटैक। जीवनिक प्रवर्णित यथि मे ओ सर्वथा राज्य क स्थापनार्थ आन्दोलनक हेतु संघर्ष करबाक शुभारम्भ कयलनि। अपन सम्मानक रक्षार्थ ओ पुनप एक्ह अवधि के प्रज्वलित कयलनि जे अद्यावधि जनमानस संघर्षित अछि। हुनक आकांक्षा छलनि जे राष्ट्रक अखण्डता एवं एकता हिओ, किन्तु अपना धर्मे, अपना कलामे, अपना प्रान्त राज्य मे अपन भाषा आ संस्कृति अकुण्ठ विकास अगसर होइ। लोक भर्विपोख, भवि मन जीवित रहि देशक उन्नति मे सहभागी हैत। कुंठित, कलुषित, हीन, व्यक्तित्वक विकास कहियो नहि सम्भव छैक।

माह्भाराक माध्यमे प्राथमिक शिक्षा

शिक्षा आ भाषा दुनूक विकास परस्पराश्रित अछि। शिक्षा मानव जीवनिक मेरदण्ड थिक। शिक्षाक उद्देश्य जानार्जन थिक। जानार्जनक हेतु भाषा माध्यम थिक। अत एवं कोनो भाषाक सफलता एहि बातपर अवलम्बित अछि जे कोन सीमा धरि जानार्जन आ अवार्जन जानक अभिव्यक्ति मे सहायक होइत अछि तकरा दारा व्यक्तित्वक निर्माण होइत आ आन्तरिक शक्तिक विकास होइत

तनि ओ एक उतरदायी व्यक्ति एक व्यक्तित्वक दू पहलू थिक। अतएव परिवारक समाजिकतामे मातृभाषा आ पारिवारिक व्यक्ति दुनू मे पारिवारिकता अपेक्षित अछि। एहि प्रसंग भारतेन्दु हरिश्चन्द्र (1850-1885) क कथन थिक

निज भाषा उन्नति अहै, सब उन्नति की मूल

बिनु निज भाषा ज्ञानके मिटय न हियक शूल।

माध्यमे शिक्षा नहि देलाक कारणे हुनका हृदयमे अपन मातृभाषाक कष्ट छलनि।एहि लेल ओ प्रतिबद्ध सँ जन आन्दोलनक चलयबाक अभियान चलौलनि, किन्तु हुनक ई सपना साकार नहि भ' पौलनि मिथिला समाजक उदासीनताक कारणे। हमरा जनैत मिथिलावासी अपन मातृ भाषाकामहत्त्व नहि बुझबाक ई दुखद परिणाम थिक। जँ लोक अपन नेना-भुटका के मातृभाषाक महत्त्व सँ परिचित करबितथि तँ एक एहन समाजक निर्माण होइत जे मिथिला समाजके शिक्षा भ' कए शिक्षा नीति लागू करय पड़ितैक जखन जगन्नाथ मिश्र बिहारक मुख्यमंत्री भेलाह तखन जयकान्त मिश्र बिहारक मुख्यमंत्री भेलाह तखन जयकान्त मिश्र अत्यधिक आशान्वित भेलाह, किन्तु ओकर कोनो फलाफल नहि बहरायल हुनक अभिलाषा छलनि जे जँ पारिवारिक शिक्षा मैथिलीक माध्यमे होइत तँ मिथिलाचलक अधिकांश समस्याक समाधानस्वतः भ' जाइत। मातृभाषाक माध्यमे शिक्षा नहि भेटबाक कारणे पारिवारिक स्तर नेना सभ के शिक्षा क प्रतिअरुचि भ' जाइछ। ते पारिवारिक स्तर पर मातृभाषा क माध्यमे शिक्षा नहि भ' जाइछ जकर परिणाम होइछ जे विद्यालय सँ छात्र क पलायन भ' जाइछ। ते पारिवारिक

स्तरि परि मानभाषा क माध्यमे शिक्षाक कायायन क ईतुओ सतत संघरष करैत रहलाह। मैथिलीके पाठ्यक्रम स्तरि परि यात्रा, बैसाखि, पचारि तँ करि कयलक्, एतेक धरिओ कानूनी लडाई लडबा सँ पाछू नहि रहलाइ।

एहि पसंगमे हुनक कहब छनि जे आन-उदार देश उन्नतिक शिखरि परि पहुँचल अछि तकर पमुख कारण अछि जे ओ सभ मातृभाषाक महत्त्व सँ अवगत अछि। रुस, जापान, इंग्लैण्ड, अमेरिका आदि देश मे पाठ्यक्रम शिक्षा ओकर मातृभाषाक माध्यमे देल जाइछ जे पगतिक परि पगति दिनानुदिन अगसर भेल जा रहल अछि। किन्तु मिथिलाचल मे जन जागरण क अभाव कारणे अधिकभारि अपन भाषाक शीघ्रि करबाक हेतु पयत्न नहि करैत छथि। मैथिली शिक्षक मैथिली पढयबाक हेतु पयत्न नहि करैत छथि। यादि मैथिल समाज एहि पश्नक समुचित उत्तर नहि देत, नाहि मैथिली के आगा बढयबाक कोनो आन्दोलन सफल नहि भ’ सकत।

सन् 1969 ई० मे मिथिला मण्डल मुम्बई द्वारा आयोजित अखिल भारतीय मैथिली सम्मेलन मे विचारणीय बिन्दु मातृभाषाक माध्यमे पाठ्यक्रम शिक्षा ओहि सम्मेलन मे हमहुँ सम्मिलित भेल छलहुँ। जयकान्त मिश्र अपन विचार पस्तुत कयने छथि जे निम्नरि अछि:

1. शैशवावस्था मे मातृभाषाक माध्यमे शिक्षाक व्यवस्था रहला परि ओकर मस्तिष्क क विकास सहज, सुगम आ विषय-वस्तुक ज्ञान पाठ्यक्रमक संस्कार स्थायी होइछ। ओ सुगमता पूर्वक गहण करैछ जे विषय-वस्तु बुझिमे सहायक होइछ। एहिमे कोना सन्देह नहि जे सुगमता सँ ओकर विकासक सम्भावना अछि।

2. पजातन्त्रक पमि शतषवि क जे जनमानस के क्शाक्त कबि, जाक्ह सँ ओ कोनो कायषसम्पूणषशक्तत क संग सहरषकतिा ओकि शक्तत विरय-स्तिु बुिबामे सहायक होइि। जतय कोनो समस्या उत्पन्न हैत तँ ओकि समाधान ओ आसानी सँ क’ पबैि। जीवित पजातन्त्रक मूल महत्त्व िक पािक्मक क्शाक्त मानभारा क माध्यमे देल जाय।

3. एक्ह मे कोनो सन्देह नक्ह जे पािक्मक क्शाक्त मान्हभाराक माध्यमे देल जाय, कािण मैविली एक पाचीनतमषजीवित भारा िक ते एकिा अक्नायिषरपे लागू कबािक क्दशा मे पयासक पयोजन अवि आ सकििा पि एकिा लागू कबािक हेतु िध्य कबािक पयोजन अवि। विहाि एिं िाखिण्ड िज्य क अक्धकाश क्जला मेईबाजल जाइत अवि ततय अक्नायिषरपे एकिा लागू कबािक हेतु सकििा पि दबाि बनायाब आिश्यक अवि।

कक्न्तु दुयोग विरय िक जे सकिािक उदासीनताक कािणे ने तँ मैविली मे पािक्मक क्शाकाक पुस्तक पकाक्शत भेल आ ओकि अध्ययापन क क्यिस्िा अवि जे क्चन्तनीय विरय िक। अतएि आिश्यक अवि एकि विििध मे जनमत संगह क’ कए संशतत आन्दोलन क’ कए क’ बक्धि सकििा के जगयबाक पयोजन अवि। सुसुप्त सकििा के जाधवि जगाओज नक्ह जायत ता धवि क्मविलाचल मे पािक्मक क्शाकाक माध्यम मैविली के मान्यता नक्ह भेटता क्मविलामा मैविली क सक्षिो भािनि विकास आ विविि समस्याक्दक क्नदान ओकि क्नािकिणि ताधवि सम्भावित नक्ह अवि जाधवि ओक्ह सँ लडबाक शक्ततक लेल मान्हभाराक माध्यमे पािक्मक क्शाक्त अपेक्क्त अवि। जयकान्त क्मश दाि चलाओल एक्ह

आह्लदोलन के साकाि र प देबाक हेतु घिघिमे बच्चा सभके पाि क्मक क्शाक्त देबाक क्दशामे पयास अपेक्क्त अवि। ई विरय बुि बा मे नक्ह अिँि जे भाितीय संवि धान, साक्हत्य अकादेमी आ अह्लतािष्टीय साक्हत्य क एिं साक्हत्यक संसि ा, पी०इ०एन० दाि ा एक्ह भारा आ साक्हत्य के माह्यता पाप्त तखन विहाि सकिाि पाि क्मक क्शाकाक र पमे एकिा लागू क्कएकनक्ह कँि ति अवि ? कयला सँ सकिाकि पक्तष्ठा बढतैक।

क्तपसाि ण

मैविली साक्हत्यक पाचीनतम पिम्पिा के सुदढ कबिाक क्दशा मे जनजागिण क जयकाह्ल क्नश दाि ा जे अक्भयान चलौलक्न एकि माह्यनाि ष ओ जे संघरर कयलक्न, दधीक्यक समान इही गलौलक्न नक्तक अक्य अिदान के अक्षुण्ण िखिबाक आ ओकिा अगगक्त कबि पत्येक मैविली भारी जनमानसक पुनीत कतष्य विक। एक्ह पवपिक्ा मे हुनक आलेखक्ह यज-तंत्त विविध संगहाक्ह मे, पक्तकाक्ह मे पकाक्शत अवि ितिाान मे धूलधूसवित भ' िहिल अवि तकिा संकक्लत क' कए पकाशमे आनब पत्यक मैविली भारी क पुनीत कतष्य विक। एक्ह युगपुररक पक्त िस्तक्ति शदा जनक्ल हैत जे हुनक मानभारानुिागिक पक्त व्यतत विचाक्ह ितिाान पवपिक्ामे पकाक्शत क' कए पिितिी एिं भािी पीढीक क्दशा बाव्ध कयिबा मे सक्म भ' पाओत अह्यिा ओ अक्य कीक्तष कालक जिहमे वािविगहिि मे विलीन भ' जायत।

ई शेय आ पेय क्हनके धक्त जे ओ अपन सत्पयास सँ क्नविली साक्हत्य के समद आ व्यापकसि रिप पदान कयलक्नजे

मैविजीक अक्सततत सुकिक्त क' सकल 'हुनका समक कोनो आदशष नक्ह िजक्त तािक्त माह्हभाराक समिदषािषमो आदश पुरर हिव। ओ भागषदेशक बक्त माह्हभारानुिगक बीजक िपन कयलक्त आ ओकि उहन्नयनाािष अक्त महत्तपूणष कायष कयलक्त। हुनक तप, त्याग, तपस्या, कमषीलता, ििचावकि स्तािि पि सतत अटल-अव्ड्ग हिक्तहाि मैविली पेमी जनमानस के क्यहितन पेिणा-सोत बनल हिता रिििती पीढी पि क्हिनक माह्हभाराक बहुमूल्य साक्हत्यक अिदान सँ अक्ताशय पभावित भ' विशुत भाराशास्ती पोफेसि सुनीक्त कुमाि चटजी मैविली शब्द कोशक पिम खण्डक फाििडिष क्लखलक्त जे डo सि जाजषअिक्हम वायसक्त (1850-1941) क पश्चात् भाित मे मैविली क सब सँ पैघ क्यह्तकक रपमे अजि, अमि आ अकुण्ण हिता His name will loe handed down to Posterity in India as the gseatest bene faesor of Maithili at present day after that of illustrious geosge Abraham geierson, and will earn for him gratitude of sixteen millions of Maithili speakers in the first instance and of the Senolarly world of India, in the see and िस्तुतप क्हनका हेतु इ सौभाग्यक बात हिलक्त जे अपन जीिन काल मे ओ मैविलीक विकास आ विस्ताि देक्स पौलक्त।

डॉ० कैलाश कुमार मिश्र- समीक्षा- बनैत बिगड़ैत

(कैलाश जी इन्दिरा गान्धी राष्ट्रीय कला केन्द्रमे स्कॉलर छथि आ कतेक प्रदेशमे मानवशास्त्रीय फील्डवर्कक क्रममे घूमल छथि। फॉक म्युजिक ऑफ मिथिलापर पी. एच.डी. छथि आ मिथिला चित्रकलापर हिनकर आलेख एहि विषयपर सभसँ नीक प्रबन्ध मानल जाइत अछि।)

श्री सुभाषचन्द्र यादव केर कथा संकलन आद्योपान्त पढ़लहुँ। लेखक महोदय अपन भावनाके नीक रूपे प्रस्तुत कएने छथि। कथा पढ़ब तँ लागत जे केना एकटा निम्न-मध्यम-वर्गीय परिवारमे बदल-पलल एक पढ़ल-लिखल मनुक्ख अपन जीवनक घटना, अनुभव आ संवेदनाक विषय अंकित कऽ देने अछि। परम्पराक नीक चीजसँ लेखक अपना-आपके जोड़ने छथि आ परम्पराक पाखण्डक विद्रोह कथामे कखनो नहि हिचकिचाइत छथि। गाम, घर, परम्परा, परिवेश, खेत, खरिहान, गामघरक आपसी कलह, समन्वय, कोसी नदीक कहर, सौहार्द्र यात्रा वृत्तान्त आदिक विषय सोहनगर लगैत अछि।

सुभाषजीक कथा-संग्रहके हमरा जनैत दू दृष्टिकोण सँ विश्लेषित कएल जा सकैत अछि

(क) भाषा विन्यास आ शब्दावलीक दृष्टिकोण सँ ,

(ख) कथा-वस्तुक दृष्टिकोण सँ।

आब उपलिखित दृष्टिकोण पर विचार करी

भाषा विन्यास आ शब्दावलीक दृष्टिकोण सँ कथाकार बड़ड

पशंसनीय कायषकेलक्हि अवि। पकाशक सेहो एकह तहिक चिनाके पकाशित कए एक नीक पमिपाकि पािभ केलक्हि अवि।

मैविली भाराक सब सँ पैघ समस्या, हमि एकटा मानविजानक ित हेबाक नाते, ई बुिना जाइत अवि जे जखन ई भारा कलखल जाइत अवि तँ कि तािकवित संस्कृतक्षिष्ठ बाहण एिं कायसि लोकक्षक हािक खेलौना बक्ष किह जाइत अवि। अनेिं संस्कृतक शब्दके घुसा-घुसा भाराके दुरह बना देल जाइत अवि। िटि जाक्त, एिं सिद्धाािकि शब्द, विन्यास, क्यािहाि आक्द के नजअिंदाज कS देल जाइत िैक। सही अिषे भारा माक्टक सुगन्ध आ लोक पमिपािसँ दूि भS जाइत अवि। सिद्धाि िगष्षँ कव्ट जाइत अवि। एकहना क्षसि क्षमे िटि जाक्त, स्त्रीगण आक्द अपना-आप के भाराक तागसँ बाह्हल नक्ह बुिैत िवि। भाराक पक्त लोकक क्षसनेह कम भS जाइत िक्ह। बाजब धवि तँ ठीक पिह्तु पढब आ कलखब पमिपािसँ ई लोकक्ष अपन नाता समाप्त कS लैत िवि।

मैविली भाराक समस्या केिल जाक्त अििि समुदाय मातसँ नक्ह िैक। विमिह्न सास्कृक्षाक एिं भौगोकलक केत्तक क्हसाबे सेहो लोक भाराके ऊँच-नीच बुिैत िवि। सौिठ (मधुबनी) एिं सौिठ गामक चार क्दशामे पाच कोस धविमे उच्च िगषक लोकक दािि पयुतत मैविलीके साविधक नीक मैविली , पुनप समस्तीपुि सँ कनीक दक्कण क्दस आगू गेलाक बाद पयुतत मैविलीके क्षम्न शेणीक मैविली बुिल जाइत अवि। दक्कणमे जे मैविली बाजल जाइत अवि, तकाि पंचकोक्षसला लोकक्ष दविनाहा , पूबमे क्यिहविति मैविलीके पुिहा एिं पक्कमि, विशेर रपसँ सीतामढीमे पयुतत

मैथिलीके पर्वमाहा भारा कक्ष ओकि अपमान कैति वि।

एक्ष सभ काणिसँ कुजि मुसलमान, तेली, सूँी, यादब, बक्सया, कोइँी, धानुख आक्ष अपना आपके मैथिली भाराक बाजय लिा नक्ष बुैत वि। दक्कण, पक्षिम केि लोकके एहन बुाइ क्ति जेना ई लोकक्त भाराक मुख्यधािसँ अलग-लिग होवि। लोकवदिा अिि फॉकलोि एतेक सम्पक्षो होइतो एक्ष केत्रमे बहुत नीक सिान बनाबयमे क्षवि ला एखन धवि असमिषहिल अवि।

नामकणिक उदाहणि जे ली तँ बुायित जेना बाहण एिं कायसि लोकक्त संस्कृतक्षष्ठ नामक पयोग कबािक पूि ठेका लऽ लेने वि। जिनि क्क पंजाबी भाराक उदाहणि बहुत उल्टा अवि। पंजाबी भारामे नाम आक्ष, लोक एिं सामाक्ष्य जनमानस केि क्षसाबसँ क्षधावित होइत अवि। गुर गक्षसाहेबके एखनहुँ धवि गुगिक्षि साहेब, कहल जाइत अवि। स्मणि आइयो क्समनि िक। फॉकलोि जागत िक। एकि पवणाम ई होइत िक जे की स्त्री, की पुरर, की िाट, की पैघ सभ जाक्तक लोक अपना आपके भारा, संस्काि आ संस्कक्तसँ जुडल बुैत अवि। सब भाराके अपन हदयसँ सटेने हैत अवि।

अतेक सम्पक्ष फॉकलोि क्षितहुँ, क्षवि लाक फॉकलोपिि कक्ि वि शेर कायषनक्ष भऽ सकल अवि। सुभारजीक किा-संगह एक उल्लेखनीय कदम िक। एक तँ सुभार जी पंचकोक्सया नक्ष वि आ दोसि ओ बाहण अिि कणषकायसि सेहो नक्ष वि। से अपन पवेिशक पयुतत शब्द, िितय, पम्पािा, नाम आक्षक िक

िणषा कयलक्हि अवि। कताबक सब पहला पढ लेलाक बाद अपन ठेठ गाम, गामक पिम्पािि, लोक पर्वििश इत्यािद सामणि होबय लागत। लोकमे पयुतत खाटी देसी नाम जेना क मुसाया, कुसेसि, उवाया, बाहािि, बौकू, वसबननन, िमिसनि, िघुनी, नटा, निुनी, बैजनािि, सकुन आिद पाठकके एकाएक गामक ठेठ पर्वििशमे मानवसक रपसँ लऽ जाइत अवि। भारा सेहो अगाब देसी। कुनो बनाबटीपन नवह। जेना सुभारजी केतक लोक बजैत अवि, तवहना ई वलखलवह अवि।

एवह तिहक यििपीदी पिम्पािक पािभ केलासँ मैविली सािहत्य सम्पहन्न हैत। िििइटी बनतैक। पाठकक संख्या बढत। अनेिि संस्कृतवन्ष बवन जेबाक कािण मैविलीक पाठकक संख्या लगभग शूह्य जका अवि। वस्कि ई अवि जे लेखक एिि कवि लोकवन सियं कताब िपा मुफ्त बाटैत िवि। तैयो कयोक पढयबला नवह। िबिलडष्क विकास हेमाक कािणे कि पिसी एिि कावविलासँ बाहि िहकवहािि मैविल आब आइ कािव कि सामगीके सफष कय देवख लैत िवि। हालाक इहो लोकवन सब सामगी मैविलीमे वलखल पढैत नवह िवि। वहनका सबमे अवधकािधक लोक अपन कथ्य अंगेजीमे व्यतत किति िवि।

सुभारजी जका अगि आिि लेखक, कवि इत्यािद आगा आबवि तँ यििपीदी पिम्पािि समद हैत। मैविलीमे नि-नि शब्दािली विकवसत हैत। सब केत, सम्पदाय, जावत, िगषक लोक मैविलीक संग वसनेह कििाह। मैविली पढबाक पवत जागत हेताह। कोसी,

कमला, जीबि, कति, गंडक, बूढी गंडक आ गंगाक बीच संगम हैत। मैविली कि विशेर केि हाि क खेलौनासँ ऊपि उक्त सिप्राि क भारा बनत।

आब सुभारजीक कि-संगहक कि-स्तिु पि कनी विचाि कबि जरिी। कि-स्तिुक दक्ष ये सेहो लेखक अपन पर्विशिसँ बाह्हल वि। कि सभमे लेखकके पम्याि क नीक तति क पक्त क्सनेह, पाखण्डक पक्त विदोह, एक क्म्न-मध्यम गिक्ष बेिजगाि क्षाक्त युि क केि फस्टेशन, एक युि कक सुह्दि नाक्यकाक पक्त आकरषा, कोसीक कहि, गाममे पर्विििष्ा केि पिहि, गामक समस्या, याता-िताह्त, मोनक अह्त:दह्द, सुह्दिता आ सुह्दिताक पक्त मगतषा आक्दक मनोिजाक्तक आ सहज िणिष्ा भेटत।

“बनैत क्तगडैत” किमे माए-बापक मनोदशा, जकि संतान बाहि हैत ेक, नीक िणिष्ा कएल गेल ेक। किक मुख्यपात माला टाक्ह-टाक्ह कति कौिक आिजसँ डति अवि। ओकि हकाि दैत उडबै चाहैत ेक। लेक्कन “टोकाि आ िपडी सँ नै उडै ि तऽ माला काि कौि के सिपिय लागै ि – “बजजि खसौ, भागबो ने कि ि”।

पि देसमे क्हि िहल संतान सबक्हक पक्त मालाक मनोदशा लेखक कि ऐना क्तखैत विप

कौका कखक्तये सँ ने काि-काि के टाक्ह लगेने ि। कौिक टाक्ह सँ मालाक कलेजा धक क्सन उठै ि। संतान सब पदेस िहै

िै। नै जाक्न ककिी की भेलैक! ने क्मटी-पतीं दै िै, ने कक्हयो खोज-पुिाि किं िै। कते ब्दन भऽ गेलै। कुशल समाचाि लय जी औनाइत िहै िै। लेक्कन ओकिी सब लेखे धन सन। माय-बाप मिलै की जीलै तै सँ कोनो मतलब नै।

“हे भगािन, तूही चिंा किहिबु। हाह। हाह।”–

माला कौिी संगे मनक शंका आ बलाय भगाबय चाहै िै।”

आ मालाक बात पि हमिी जनैत लेखक सतोक माध्यमसँ अपन विस्मय व्यतत किैत िवि। मायक मनोविज्ञानक तहमे जयबाक पयत्न किैत िवप

माला सब बेि अक्हना किं िै। सतो लाख बुिलक बात जाइते नै िै। कतेक मामला मे तऽ सतो टोक्कतो नक्ह िक। कोय पिदेस जाय लागल तऽ माला लोटा मे पाक्न भवि देहीं पि िवख्र देलक। जाय काल कोय िीक देलक तऽ गेक्नहाि के कनी काल िकने िहल। अइ सब सँ माला के संतोख होइ िै, तै सह्तो नै टोकै िै। ओकिी होइ िै टोकला सँ की फैदा ? ई सब तऽ मालाक खूनमे क्मल गेल िै। संस्कािि बक्न गेल िै।

सह्तोके िगुह्ना होइ िै। यैह माला कक्हयो अपन बेटा पुतौह आ पोती सँ तंग भऽ कऽ चाहैत िहै जे ओ सब कखैन ने चैल जाय । िटना लागल िहै जे मोटीं नीक, बच्चा नै नीक। सैह माला अखैन संतान खाक्ति कते व्यंक्नत िै।”

अही तिहे अपन व्खस्सा ‘कक्नया-पुतिा’ मे लेखक टेनमे ठाक्ढ़ एक बाि िह बरषक लडकी आ लडकीक क्नशिल व्यिहािसँ आत्मविभोि

भय, लडकी सँ एहन सम्बन्ध बना लैत छथि जेना जो लडकीक भाय अथिा पिता होथि। टेनक छ भीथि भलि बोगीमे ठाढि लडकीक िाती जखन कािक सुतधािक हाथि सँ सटैत छै क तँ लडकीक क्राथिकाि मुदासँ एना बुिना जाइत छै क जेना ' ऊ ककिो आन संगे नै, बाप-दादा या भाय-बहीन सँ सटल हो।'

लडकीक भथिष्यपि लेखक दथित होइत सूतधािक माध्यमसँ सोचय लगैत छथि प "ओकि जोबन फुइट िहल छै। ओकिो क्द्दस ताकैत हम कल्पना कऽ िहल छी। अइ लडकीक अनमोल जोबनक की हेतै? सीता बनत की दौपदी ? ओकिो के बचेतै ? हमिो िबन आ दुथिोधनक आशंका धेिने जा िहल ऐि।"

'ओ लडकी' नामक कथिमे सुभार बाबू क्रम्मािगीय दब्बूपनीक मनोदशाक थिणथि कथिैत छथि। जखन एक आधुिनका अपन हाथिक ऐँठ पात नथिनके थिमाबय चाहैत छै क, तँ सूतधाि बाथिज उठैत अथिप

"सािल खतम होइते नथिनक नजथि लडकीक चेहिो सँ उतथि के ओकि हाथिक कप थिि चक्कल गेलै आ ओ अपमान सँ क्तलक्तला गेल। ओकिो भीतिि कोध आ धणाक धधिो उठलै। की ओ ओकिि दुनूक अँइठ कप ल' जायत ? लडकीक नेत बुथिते ओ जिाब देलकै – 'नो'। ओकि आिाजि बहुत तेज आ कडा छै आ मुँह लाल भ' गेल छै। ओकिो ओकिि बातक खौंि हुअए लगलै जे ओकि जिाब एहन गुलगुल आ क्तलक्तल कएए भ' गेलै। ओ कएयैक नथिं कथिि सकलै -हाउ क्डड यू डेयि?' तोहि ई मजाल ! मुदा ओ कथिि नथिं सकलै। साइत क्रमािगीय दब्बूपनी आ संस्कािि ओकिो िोिक लेलकै।"

गजेन्द्र ठाकुर- समीक्षा- बनैत बौआगडैत

सुभाषचन्द्र यादवजीक “बनैत बौआगडैत” कथा-संग्रहक सभ कथामे सँ अधिकाशमे ई भेटत जे कथा खिस्सासँ बेशी एकटा थीम लए आगा बढ़ल अछि आ अपन काज खतम कऽ तुरत अन्त प्राप्त कएने अछि। दोसर विशेषता अछि एकर भाषा। बलचनमाक भाषा ओहि उपन्यासक मुख्य पात्रक आत्मकथात्मक भाषा अछि मुदा एतए ई भाषा कथाकारक अपन छन्हि आ ताहि अर्थे ई एकटा विशिष्ट स्वरूप लैत अछि। एक दिस कथाक उपदेशात्मक खिस्सा-कहानी स्वरूप ग्रहण कएबाक प्रवृत्तिक विरुद्ध सुभाषजीक कथा एकटा सीमित परिधिमे थीम लऽ कए चलबाक, भाषाक शिल्प जे खाटी देशी अछि पर ध्यान देबाक सम्मिलित कारणसँ पाठकक एक वर्गकेँ एहि संग्रहक कथा सभमे असीम आनन्द भेटतन्हि तँ संगे-संग खिस्सा-कहानीसँ बाहर नहि आबऽ सकल पाठक वर्गकेँ ई कथा संग्रह निराश नहि करतन्हि कारण हुनकर सभक रुचिक प्रतिक्रिया करत।

कथाक भाषायी मानकीकरण प्रसंग- जेना ऐछ, अछि, अइ छै। जाहि कालमे मानकीकरण भऽ रहल छल ओहि समय एहिपर ध्यान देबाक आवश्यकता छलए। जेना “जाइत छी” के “जाइ छी” लिखबी आ फेर जाइ (जा इ त) लेल पोनक्रिएशनक चिह्न बनाबी तेहने सन ऐछ संगे अछि। मुदा आब देरी भऽ गेल अछि से लेखकको *कनिया-पुतरा* मे एकर प्रयोग कए दिशा देखबैत छथि मुदा दोसर कथा सभमे घुरि जाइत छथि। मुदा एहिसँ ई आवश्यकता तँ स्पष्ट होइते अछि जे एकटा मानक रूप स्वीकार कएल जाए आ “छै”

लिखबाक अछि तँ सेहो ठीक आ ‘‘कि’’ लिखबाक अछि तँ ‘‘अन्तक ’क’ साइलेन्ट अछि’’ से पोनन्सिएशनक नियम बनए। मुदा से जल्दी बनए आ सहिाह होअए तकर बेगरता हमरा बुझाइत अछि, आजुक लोकके ‘‘य’’ लिखल जाए वा ‘‘ए’’ एकरा भरि लिनगी लडबाक समय नहि छै, जे ध्वनि विसदात कहैत अछि से मानू, आ नहि तँ पोनन्सिएशनक नियम बनाऊ। ‘‘नहि’’ लेल ‘‘नञि’’ लिखब तँ बुझबामे अबैत अछि मुदा नइँ (अक्षतका), नइं (एन.बी.टी.) आ नँइ (साकेतानन्द- कालरिात्रश दारणा) मे सँ साकेतानन्दजी बला पयोग ध्वनि-विजान विसदातसँ बेशी समीचीन विसद होइत अछि आ से विशास नहि होअए तँ ध्वनि पयोगशाला सभक मदति लिअ।(वैजाश्निक आ मानक मैथिली वणमिालाक ऑश्डियो फाइल श्विदेह आकाइवक (http://www.videha.co.in/) श्विदेह ऑश्डियो श्लांकपर डाउनलोड/शवण लेल उपलब्ध अछि।)

‘‘बनैत बिगडैत’’ पोथीक ई एकटा विशेरता अछि जे सुभारचन्द्र यादवजी अपन विशेष लेखन-शैलीक पयोग कएने छथि जे ध्वन्यात्मक अछि आ मानकीकरण समदिके आगा लए जएबामे सक्षम अछि।

कथिक यात्रा- वैदिक आख्यान, जातक कथा, ऐशप फेबल्स, पंचतंत्र आ हितोपदेश आ संग-संग चलैत छल लोकगाथा सभ। सभ ठाम अवमजात्य शिष्ट कथाक संग लोकगाथा रहिते अछि।

कथामे असफलताक सम्भावना उपन्यास-महाकाव्य-आख्यान सँ बेशी होइत अछि, कारण उपन्यास अछि ‘‘सोप ओपेरा’’ जे महिनाक-महिना आ सालक-साल धरि चलैत अछि आ सभ

एपीसोडक अन्तमे एकटा क्लाइमेक्स आबए खतम होइत अछि। माने सतरहि एपीसोडक उपन्यासमे उन्नैसतम एपीसोड धरि तँ आशा बनल रहैत अछि जे कथा एकटा मोड लेत आ अन्त धरि जे कथाक दशा नहि बदलल तँ पुनः सभटा एपीसोड व्यर्थ आ मात्र अन्तिम एपीसोड फ्लॉप। मुदा कथा एहि अनुमतिक नहि दैत अछि। ई एक एपीसोड बला चिनगी आ नीक तँ खूबे नीक आ नहि तँ खपिपे-खपि।

कथा-गाथा सँ बढि आगू जाइ तँ आधुनिक कथा-गल्पक इतिहास उनैसम शताब्दीक अन्तमे भेल। एकर लघुकथा, कथा आ गल्पक रूप मानल गेल। ओना एहि तीनूक बीचक भेद सेहो अनावश्यक रूपसँ व्याख्यायित कएल गेल। रवीन्द्रनाथ ठाकुरसँ शुरू भेल ई यात्रा भारतक एक कोनसँ दोसर कोन धरि सुधारवादी रूपी आन्दोलनक परिणामस्वरूप आगाँ बढल। असमियाक बेजबरुआ, उड़ियाक फकीर मोहन सेनापति, तेलुगुक अप्पाराव, बंगलाक केदारनाथ बनर्जी ई सभ गोटे कखनो नारीक पतित समस्यामे तँ कखनो समाजक सूदखोरक विरुद्ध अबैत गेलाह। नेपाली भाषामे "देवी को बलि" सूर्यविक्रम ज्ञवाली द्वारा दसहराक पशुबलि पर विरुद्ध लिखल गेल। कोनो कथा प्रेमक बंधनक मध्य जाति-धनक सीमाक विरुद्ध तँ कोनो दलित समाजक स्थिति आ धार्मिक अंधविश्वासक विषयमे लिखल गेल। आ ई सभ कथा सभ कथाक अन्त सुखद होइत छल सेहो नहि।

प्रदीप साहित्यमे उत्तर आधुनिक, अस्तित्ववादी, मानवतावादी, ई सभ विचारधारा दर्शनशास्त्रक विचारधारा अछि। पहिने दर्शनमे

विजान, इक्तहास, समाज-िजिनीक्त, अिषाास्त्त, कला-विजान आ भारा सक्समक्लत हैत िल। मुदा जेना-जेना विजान आ कलाक शाखा सभ विक्शाष ता पाप्त कििति गेल, विशेर कए विजान, तँ दशषामे गवगात आ विजान मैिमेक्टकल लॉक्जक धवि सीक्मत क्हि गेल। दाशषनक आगमन आ क्नगमनक अध्ययन पणाली, विश्लेरणात्मक पणाली क्वस बढल। मात्सषजे दुक्नया भविकि गििबक लेल एकटा दैीिय हस्तक्षेपक समान िलाह, दह्ह्दात्मक पणालीके अपन व्याख्याक आधाि बनओलक्ह। आइ-काविक ''क्डसकसन'' ि दह्द जाक्हमे पक-विपक, दुनू सक्समक्लत अवि, दशषक (विशेर कए रडदशषक- माधािचायषक सिषदशषा संगह-दष व्य) खण्डन-मण्डन पणालीमे पक्हनक्हसँ विदमान िल।

से इक्तहासक अह्तक घोरणा कएक्नहाि फाक्सस फुक्कयामा -जे कम्युक्नस्ट शासनक समाक्पतपि ई घोरणा कएने िलाह- क्कि क्दन पक्हने एक्हसँ पलक्ट गेलाह। उतिि-आधुक्नकतािद सेहो अपन पािक्म्भक उत्साहक बाद ठमक्क गेल अवि। अक्स्ततिािद, मानितािद, पगक्तािद, िमेक्टक्सज्म, समाजशास्त्तीय विश्लेरण ई सभ संश्लेरणात्मक समीका पणालीमे सक्समक्लत भए अपन अक्स्तति बचेने अवि।

साइको-एनेक्लक्सस िजाक्नकतापि आधाविति हिबाक काणि दह्दात्मक पणाली जेका अपन अक्स्तति बचेने हित।

आधुक्नक किि अवि की? ई केहन होएबाक चाही? एकि कक्ि उदेश्य अवि आक्क होएबाक चाही? आ तकि क्नधाणि कोना कएल जाए ?

कोनो किक आधाि मनोविजान सेहो होइत अवि। किक

उदेश्य समाजक आवश्यकताक अनुसार आ करि यातामे परिवर्तित समाजमे भेल आ होइत परिवर्तितक अनुरूपे होएबाक चाही। मुदा संगमे ओहि समाजक संस्कृतिसँ ई करि सयिमेर्ग कयक्रत होइत अछि। आ एहिमे ओहि समाजक ऐतिहासिक अवस्थितिर सोिर अबैत अछि।

जे हम वैदिक आख्यानक गप करी तँ ओ ारिष्टक संग प्रेमके सोि अनैत अछि। आ समाजक संग वयक्ति कए हिनाइ वसखबैत अछि।

जातक करि लोक-भाराक पसाकि संग बौद-धमषपसाकि इचि सेहो खैत अछि।

मुस्लिम जगतक करि जेना रूमीक "मसनवी" फारसी साहित्यक विशेष गहि अछि जे जानक महति आ ारियक उनतिक व्याख्या दैत अछि।

आजुक करि एहि सभ वस्तुके समेटैत अछि आ एकटा प्रबुद आ मानवीय (!) समाजक वनमाणक वदस आगा बढैत अछि। आ जे से नहि अछि तँ ई ओकरि उदेश्यमे सवम्मवलत होएबाक चाही। आ तखने करिक विश्लेरण आ समालोचना पाठकीय विवशता बवन सकत।

कम्यूवनस्ट शासनक समाविप्त आ बवलषिक देबालक खसबाक बाद फावसस फुकुयामा घोवरत कएलवन्ह जे विचाधािरक आपसी ारगडासँ सवजत इवतहासक ई समाविप्त अछि आ आब मानवि व्हतक विचाधािरा मात आगा बढत। मुदा करिु वदन पवहनवह ओ एवह मतसँ आपस भऽ गेलाह आ कहलवन्ह जे समाजक भीतर आ ारिष्टीयताक मध्य एखनो बहुत ारस वयमन विचाधािरा बाचल अछि।

तक्हना उतर आधुनिकतावादी विचारकि जैतस देरीदा भाराके विखण्डित कए ई सिद्ध कएलक्हि जे विखण्डित भाग ढेर सिन विभिन्न आधारपर आवश्यत अछि आ क्वना ओकरा बुझिने भाराक अधिष हम नक्हि लगा सकैत छी।

मनोविश्लेरण आ दहद्वात्मक पद्धति जेका फुक्कयामा आ देरीदाक विश्लेरण सेहो संश्लेरित भए समीक्षक लेल सहायी पक्षमान बनल हित।

सुभार चन्द्र यादवकि कथा-संगह बनैत बिगडैतप

सहितकताक बादक पीढीक कथाकार छथि सुभारजी। कथाक माध्यमसँ जीवनिके रूप दैत छथि। शिल्प आ कथ्य दुनूसँ कथाके अलंकृत कए कथाके साथक बनबैत छथि। अवस्ततक लेल सामाह्य लोकक संघरषतँ एक्ह व्यक्तिमे क्हनकर कथा सभमे भेटब सम्भाविके। कएक दशक पूर्ष लिखल क्हनक कथा "काठक बनल लोक" क बदवया साइते संयोग हंसैत हिए। एहु कथा संगहक सभ पात एहने सन विशेरता लेने अछि। हॉस्पीटलमे कनैत-कनैत सुतलाक बाद उठि कए कोनो पात फेरसँ कानए लगैत छथि तँ कोनो पात पेममे पडल छथि। क्कनकोमे बिजनेस सेहत छक्हि तँ हर्विरशि सन पात सेहो छथि जे उपकारक बदला सिस्टम फॉल्टक कारणे अपकार कए जाइत छथि। आब "बनैत बिगडैत" कथा संगहक कथा सभपर गक्हंकी नजवि दौगाबी।

कन्नया-पुतरि- एक्ह कथामे स्तिमे एकटा बक्चया लेखकक पएर छित फेर ठेहुनपर मार छिक्ख सकशहत्त अछि, जेना माएक ठेहुनपर मार छिखने होअए। नेबो सन कोनो कडगर चीज लेखकसँ टकरलिक्हि। ई लडकीक छिती विऐ। लडकी कविषिार हिए जेना

बाप-दादा ि भाए बक्हन सऽ सटल हो। लेखक सोचैत िव, ई सीता बनत की दौपदी। िबन आ दुजोधनक आशंका लेखकके घेि लैत िक्हह।

कक्नया-पुति पढबाक बाद ि्ह सडकक चौबक्टया अव आ ि्ह िड-लाइटपि गाडी चलबैत-िकैत काल बालक-बाक्लका सभ देखबामे अबैत िव। मुदा आब दक्ा मे पवितिषा भऽ जाइत अव। कािक शीसा पोव पाइ मँगक्नहाि बालक-बाक्लकाके पाइ-देने ि कान देने, मुदा कानु सोचने आगा बक्ढ जाएबला दक्ाक पवितिषा। कक्नया-पुति पढबाक बाद की हुनकि दक्ामे कोनो पवितिषा नक्ह होएतक्हह? बालक तँ पैघ भए चोव कति ि कोनो रग काटेलक सभसँ कक्चुलका सीढी बनत मुदा बाक्लका ? ओ सीता बनत आक्क दौपदी आक्क आमपाली। जे सामाक्जक संसि, हूमन िइटस ऑिगेनाइजेशन कोनो पेमीक कक्जलीक खाम्हपि चक्ढ पाण देबाक धमकीपि नीचा जाल पसाव कऽ टी.िी.कैमिपि अपन आ अपन संसिक नाम पचावति कित िव ओ एक्ह किके पढलाक बाद ओक्ह पुितन दक्ासँ काज कए सकताह? ओ सिकाि जे कोनो हॉस्पीटलक नाम बदक्ल कए जयपकाश नाियणक नामपि कित अव ि हाक्डंष पाकषक नाम िीि कुँअि क्संहक नामपि कए अपन कतषयक इक्तशी माक्न लैत अव ओ समस्याक जक्ड धवि पहुँक्च नि पाकष आ नि हॉस्पीटल बना कए जयपकाश नाियण आ िीि कुँअि क्संहक नामपि कति आक्क दोसिक कएल काजमे “मेड बाइ मी” केि स्टाम्प लगाओत? ई संसि सभ आइ धवि मेहनक्तसँ बचैत अएबाक आ सिल उपाय तकबाक पक्ितपि िक नक्ह लगाओत?

असुविक्त- टेनसँ उतलिाक बाद घकि २० क्मनटक स्तिाक िक्त जतेक असुविक्त भऽ गेल अर्वि तकि सक्यत णिषा ई कि कर्ति अर्वि। पक्हने तँ एहन नक्ह हिैक- ई अर्वि लोकक मानक्सक असिि। मुदा एक्ह तहिक समस्या क्दस ककिी ध्यान कहा ि। पैघ-पैघ समस्या, उदाििकिणि आन कतेक विरियपि मीक्डआक ध्यान ि। चौक-चौहिाक एक्ह तहिक समस्यापि नि दक्ब अबैत अर्वि, एक्हमे स्टेशनसँ घकि बीचक दूिी िक्तक अह्हामिे पहाड सन भऽ जाइत अर्वि। पदेशक तत्कालीन कानून-व्यसििापि ई एक तहिक क्टप्पणी अर्वि।

एकाकी- एक्ह कििमे कुसेसि हॉस्पीटलमे िवि। हॉस्पीटलक सक्यत विििणि भेल अर्वि। ओतए एकटा स्त्री पक्तक मत्युक बाद कनैत-कनैत पायः सुक्त गेक्ल आ फेि क्मन टुटलापि कानए लागक्ल। एना होइत अर्वि। किकाि मानि जीििनक एकटा सत्यता क्दस इशाि दैत आ हॉस्पीटलक बात-व्यसििापि क्टप्पणी तेना भऽ कए नक्ह िणि जीक्ह्तता देखा कए कर्ति िवि।

ओ लडकी- एक्ह कििमे हॉस्टलक लडका-लडकीक जीििनक बीच नवीन नामक युकि एकटा लडकीक हािमे ऐंठ खाली कप, जे ओक्ह लडकीक आ ओकि पेमीक अर्वि, देखैत अर्वि। लडकी नवीनके पुित ि जे ओ केम्हि जा हिल अर्वि। नवीनके होइत ि जे ओ ओकिी अपनासँ दब बुर्वि कप फेकबाक लेल पुिलक। नवीन ओकिी मना कऽ दैत अर्वि। विचाि सभ ओकि मोनमे घुमैत हिैत ि। ई कि एकटा िट घटनापि आधावित अर्वि...जे ओ हमिी दब बूर्वि चाहक कप फेकबाक लेल कहलक? आ ओ दढतासँ *नक्ह* कक्ह आगा बक्ढ जाइत अर्वि। एकाकी जेका ई कि

सेहो मनोिजाक विश्लेरणपि आधावित अिि।

एकटा पेम किा- पक्ने जकिा घिमे फोन हैत िल तकिा घिमे दोसिक फोन अबैत हैत िल, जे एकिा तँ ओकिा बजा कअ। लेखकक घिमे फोन िलक्ह आ ओ एकटा पेमीक पेमकाक फोन अएलापि, ओकि पेमीके बजबैत हैत िि। पेमी मोबाइल कीक लैत अिि से फोन आएब बन्द भऽ जाइत अिि। मुदा पेमी दािा नम्बि बदलल लेलापि पेमकाक फोन फेिसँ लेखकक घििि अबैत अिि। पेमका, पेमीक मकयौत बक्नक सखी वितु िि आ लेखक ओकि सहायताक लेल कचक्तत भऽ जाइत िि। एक्ह किामे पेमी-पेमका, मोबाइल आ फोन ई सभ नि युगक संग नि किामे सेहो सिभाविक रपे अबैत अिि।

टाइटल किा अिि *बनैत-कबगडैत*। तीन टा नाकत पात । माला, ओकि पक्त सतो आ पोती मुकया । गाम-घिक जे सास-पुतोहुक गप ि, सेहक्ता कि गेल जे कक्योो नहेलाक बाद खाइ लेल पुवितए, एहन सन। मुदा सैह बेटा-पुतोहु जखन बाहि चलल जाइत िि तँ िह सासु कािि कौआक टाक्पि कचक्तत होमए लगैत िि। माइगेशनक बादक गामक यिािषके कचक्तत कैित अिि ई किा। सतोक संग कौआ सेहो एक कदन कबला जाएत आ मुकया कौआ आ दादा दुनूके तकैत िहत।पिसीक किा, बेटा-पुतोहुक आ पोतीक किा, सासु-पुतोहुक िगडा आ पेम !

अपन-अपन दुःख किामे पती, अपन अिहेलनाक कसकतामे, धीया-पुताके सिपैत िि। िकतामे धीया-पुताक खेनाइ, खा लेबा उतिि भनसाघिक ताला बन्द िहबाक कसकतामे पतीक भूखल िहब आ पविणामसििप पकतक फोफक सििसँ कुकाात होएब सिभाविक।

सभक अपन संसाि ि। लोक बुिए जे ओकि संसाकि सुख आ दुःख मात सम्पूणषि मुदा से नवह अवि। सभक अपन सुख-दुःख ि, अपन आशा आ आकाक्ष ि। कािकाि ओहन सत्यके उदाक्टत कति िवि, जे हुनकि अनुभकि अंतगषत अबैत िवह। आत्मानुभूक्त पविशि सितंत कोना भए सकत आ से सुभार चवह्द यादजीक सभ कािमे सोिि अबैत अवि।

आतंक कािमे कािकाकिे पुिन संगी हविशिसँ कायालयमे भेट होइत िवह। लेखकक दाक्खल-खाविज बला काज एवह लऽ कऽ नवह भेलवह जे हविशिक सिनाहत्तिणिक पशात् ने तयो हुनकासँ घूस लेलक आ तावह दाि काजो नवह केलक। हविशिक बगेबानी घूसक अनेि पाइक कािणि िल से दोसि कक्एक अपन पाइ िडित ? लेखक आतंक्कत िवि। कायालयक पविशि, भषाचाि आ एक गोटेक सिनातिणिसँ बदलैत सामाक्जक सम्बह्ध ई सभ एतए व्यतत भेल अवि। आइ कावि हम आक्क अहा ब्लॉकमे िि सक्चािलयमे कोनो काज लेल जाइत िी, तँ यैह ने सुनए पडैत अवि, जे पाइ जे मागत से दए देबैक आ तखन कोनो क्दकत होअए तँ कहब ! आ पाइक बदला ककिि नाम िि पैिि लए गेलहुँ तँ कमषचािि ने पाइये लेत आ नवहये अहाक काज होएत।

एकटा अह्त कािमे ससुिक मत्युपि लेखकक सादू केश कटेने िवि आ लेखक नवह, एवहपि कैक तिहिक गप होइत अवि। सादू केश कटा कऽ कवाशह्त िवि। ई जे सास्कवतक क्सम्बोक्लज्म आएल अवि, जे पकडा गेल से चोि आ खिाप काज केक्नहाि, जे नवह पकडाएल से आदशषिदी। पूिि-पूिि तँ नवह, मुदा अहू कािमे एहने आसिि जह्म लैत अवि आ टूक्ट जाइत अवि। हवियाणामे

बापो मलिापि लोक केश नक्ह कटबैत अवि, तँ की ओकि दुःखमे कोनो कमी हैत ि ते ? पंजाबक मक्हला एक बखिक बाद ने क्सनूि लगबैत िवि आ ने चूडी पक्हँति िवि मुदा पक्हल बखि काह्ह धवि चूडी भलि हैत िक्ह्ह, तँ की क्वायाहक पक्हल बखिक बाद हुनकि पक्त-पेममे कोनो घटंती आक्व जाइत िक्ह्ह ?

कबाीि कि मे चम्मीबलाक लेखक लग आएब, जाघपि हाि ि खिब। अवमजात्य संस्काकि लोक लग बैसल हिबाक काणिसँ लेखक दाि ओकि हाि हटाएब । चम्मीबला दाि ई गप बाजब जे िअल देहके ि्लामे कोन संकोच। जेना चम्मीलिा लेखकके बुि इिय हिक्ह्ह जे हुनका युिती बुवि हिल िलक्ह्ह। लेखकके लगैत िक्ह्ह जे ओ स्ती िवि आ चम्मीबला ओकि पुिनि याि। ठाम-कुठाम आ समय-कुसमयक महीन समि चम्मीलिाके नक्ह िइ, नक्ह तँ लेखक ओतेक गमिीयोमे चम्मी कि लैतए। चम्मीलिाक दीनतापि अफसोच भेलक्ह्ह मुदा ओकि शी-इ-इ के मोन पाडैत वतिष्णा सेहो। फायडक मनोवश्लिेरणक बडड आलोचना भेल जे ओ सेतसके केह्द्रमे िक्खि गप कँित िवि। मुदा अनुभिसँ ई गप सोिि अबैत अवि जे सेतससँ जतेक दूिि बनाएब, जतेक एकिि ितिालाप-कि-साक्हत्यसँ दूि िखिब, ओकि आकमण ततेक तीरि होएत।

कािबाि मे लेखकक भेट क्वास्टि िमा, क्सह्हा आ दू टा आि गोटेसँ होइत अवि। बाि मे क्सह्हा दोस्ती आ क्वाजनेसके फिकि कहैत दू टा क्खस्सा सुनबैत अवि। सभ चीजक मोल अवि, एक्हपि एकटा दोस्तक िइफ लेल टी.िि. क्वनबाक बाद क्फजक क्डमाह्ड अएबाक गप बीचेमे खतम भऽ जाइत अवि। दोसि

व्यवस्थामे एकटा स्त्री पत्नाक जान बचबए लेल डॉक्टरकि फीस देबाक लेल पूषिपेमी लग जाइत अछि। पूषिपेमी पाइ देबाक बदलामे ओकरा संगे रिश्ता बनतबए लेल कहैत छै। व्यसहुा एक्ह करिमे ककरो गलती नव्ह मानैत छथि, डॉक्टर बिना पाइ लेने कएक इलाज करति, पूषिपेमी मँगनीमे पाइ कएक देत आ ओ स्त्री जे पूषिपेमी संग रिश्ता नव्ह बनताओत, तँ ओकर पत्न मरि जएतैक।

आब बारिसँ लेखक व्यकलैत छथि तँ दबिानक सलाम मालिपर अहूमे पैसाक टनक सुनाइ पडए लगैत छन्हि। पाचीन मूल्य, दोस्ती-यारी आ आदशक टूटबाक वसकिा एकटा एकाकीपनक अनुभर करबैत अछि।

कुश्ती मे सेहो फायड सोरि अबैत छथि, करिक पाम्भि लुंगीपरकि सुखाएल कडगर भेल दागसँ शुर होइत अछि। मुदा तुरिते स्पष होइत अछि, जे ओ से दाग नव्ह अछि, रिनि घाकि दाग अछि। फेर हाटक कुश्तीमे गामक समस्याक व्यपटारि, हेलि सेह्टकि बह्द हिब, ओतए ईटाक चोवकि चर्चा अबैत अछि। रिट भाइ कोनो इलाजक कममे एलोपैथीसँ हव्ट कए होम्योपैथीपर विशास करिए लगैत छथि, एक्ह गपक चर्चा आएल अछि। लोक सभक घाकि समाचार पुबिा लऽ अएनाइ आ लेखक दारि सभके विस्तृत विवरणि कव्ह सुनओनाइ मुदा उमवरिमे कम रियसक कैक गोटेके टारि देनाइ, ई सभ कम एकटा रितारिणिक व्यमाण करैत अछि।

कैनारी आइलैण्डक लारिले करिमे सुभार आ उव्यया करिक चरति छथि। एतए एकटा बाम्भ अछि- जेना व्यणष कोसीक धसना जका। मव्ययौत भाइक व्यटी, कटारि देने नाहपर जएबाक, गेरआ पाव्यक धारमे आएब, नाहक रिटपर उतारिब, रिटक बादो बहुत दूर

धवि जाय भवि पाक्तक हिब। धीपल बालुपि साइक्कलके ठेलैत देक्ख तयो कहैत क्किह- ''साइक्कल ससुिर्विमे देलक-ए? कने बडद जका क्टटकाि क्दयौक''। दीदी-पीसा अक्हठाम एक्ह गपक चर्चा सुनलक्कह, जे कोटक खाक्ता हुनकि बेटीक विाह दू क्दन रक्क गेल क्लक्कह आ ईहो जे बेसी पढने लोक बताह भऽ जाइत अवि।सुभार चाक्हयो कऽ दू सए टाका नक्ह माग पबैत विि, दीदीक क्यहािि असम्पष क्किह, सुभार आशस्त नक्ह विि आ घुवि जाइत विि।

तष्णा कििमे लेखकके अक्खलन भेटैत क्किह। शीलतासँ ओ अपन भेटक विििि कक्ह सुनबैत अवि। पाचम क्दन घुिलाक बाद टेनमे ओ नक्ह भेटलीह। आब अक्खलन की कति, विशाखापतनम आ विजयिडाक बीचक क्सत्तामे चकि काटत आक्क समक्तक संग क्दन काटत।

ििट-ििट भािनात्मक घटनाक विश्लेरण अवि कििि ''कैनिी आइलैण्डक लािि'' आ ''तष्णा''।

दाना कििमे मोहन इक्हटक्यू लेल गेल अवि, ओतए सहदय चपिासी सूक्चत करैत िै जे बाहिीके नक्ह लैत िै, पी.एच.डी. क्हितए तँ कोनो बात क्हितए। मोहनके सभ चीज बीमाि आ उदास लगैत हिए। फुदी आ मैना पािििटीक टुकडीपि ची-ची करैत िपटैत हिए।पक्तयोगी पिीक्षक साक्षात्कािमे बाहिी आ लोकल केि जे संकल्पना आएल अवि तकि समिेदनात्मक ििषा भेल अवि।

दक्ष कििमे पढाइ खतम भेलाक बाद नोकिीक खोज, गाममे लोकसभक तीक्ष्ण कटाक्ष। फेि दक्षिण भाितीय पतकािि पेििणासँ कक्तयाक विििधक बािजूद गाममे लेखकक खेतीमे लागब। ई सभ

गप एकटा सामाह्य कथ्य हिलाक बादो ठाम-ठाम सामाक्जक सत्य उदाव्टत कति अवि। एतए गामक लोकक कुटीचाली अवि, जे काजक अभामे खाली समय बेशी हिलाक काणि अबैत अवि। संगमे आइ-कावि क स्तीक शहिी जीनि जीबाक आकाक्ष सेहो पदक्शष्त कति अवि।

नदी कामिे कथ्य काक संगे चलैत अवि आ खतम भए जाइत अवि। गगनदेकि घपि क्बहािी आएल ि। शहमिे ओकिा एक साल हिबाक ि। गगनदेकिे ओकिा संग मकान खोजबाक कममे एकटा लडकीसँ भेट होइत ि। ओकिा िवड आगा बढल तँ ई बुिलाक बादो जे आब ओकिासँ फेि भेट नक्ह हेतइ ओ उल्लास आ पेमक अनुभूक्तसँ भवि गेल।

पलिय बाक्ढक कािवि क, कोसीक कािा कहल गेल अवि एतए। बौकी बुनिकक इह्लतजािमे अवि। मुदा धािमे पाक्त बक्ढ हिल ि। कोशीक बाक्ढ बढल आक्ब हिल ि आ एम्हि माएक िद-दस्तसँ हाल-बेहाल ि। माल-जाल भूखसँ क्डकति हि। िमिचनिक घिमे अनपाक्त बेशी ि से ओ सभके नाहक इह्लतजाम लेल कहैत ि। बौकूक घिसँ कटक्नया दूि हि। मत्यु आ विनाश बौकूके कठोि बना देलकैक, मोह तोक्ड देलकैक। मुदा बखिा र क्क गेलैक। बौकू चीज सभके क्चह्हबाक आ स्मिण कबाक पयत कए लागल।

बात कामिे सेहो काकाि अपन कािनकके बाट चक्लते ताक्क लैत िवि आ क्शलसँ ओकिा आगा बढबैत िवि। नेबो दोकानपि नेबोिला आ एकटा लोकक बीचमे बहस सुनैत लेखक बीचमे कूक्द पडैत िवि। नेबोिलासँ एक गोटे अपन िता मावा हिल अवि जे

ओ नीचा खिने हिए।दुखक गप, लेखकक अनुसाि, बेशी क्दन धर्व लोकके मोन हैत ि।

िभा कििमे पुरर-स्त्तीक बीचक बदलैत सम्बन्धक तीरिगक्तसँ िणिषा भेल अर्व। पुरर यािि स्त्तीसँ दूि हैत अर्व तँ सभ ओकिि मेनका आ िभिा देखाइ पडैत ि। मुदा जे समिदक पाििभ होइत अर्व तँ बादमे लेखक के लगैत िक्न्ह जे ओ बेटीये िी।िस्तामे एक स्त्ती अबैत अर्व। लेखक सोचैत िर्व जे ई के िी, िभिा, मेनका आक्क...। ओकिि संग बेटा ि, ओतेक सुनि नक्ह, काििण एकिि िि सुह्न्दि नक्ह होएतैक। ओ गपशपमे कखनो लेखकके ससुि जका, कखनो अपनाके हुनकि बेटी तुल्य कहैत अर्व। पक्हने लेखकके खिपि लगलक्न्ह। मुदा बादमे लेखकके नीक लगलक्न्ह। मुदा अह्नतमे ओकि पएि ूिबए लेल ुिकब मुदा क्यान ूिने सोिि भऽ जाएब नक्ह बुर्विमे अएलक्न्ह।

हमि गाम कििमे लेखकक गामक िस्ता, कटक्नया सँ मेनाही गामक लोकक र्वक्डआएब आ बाह्नहक बीचमे अहुर्विया काटैत लोकक िणिषा अर्व। कोक्सकह्नहाक लोक- जानिकि समान, जानिकि हालतमे। कटक्नयामे लेखकक घि कक्ट गेलक्न्ह से ओ निुक्नया एक्हठाम क्टकैत िर्व। मिबाक्ह आ क्यडै बििबऽ लेल निुिनी जोगाि कििैत अर्व। जमीनक िगडा िक्न्ह, एक क्हस्सेदाकि जमीन धाििमे डूमल ि से ओ लेखकक गहूमिला खेत हडपए चाहैत अर्व। शन आ स्त्तीक (!) पािूि लोक बेहाल अर्व।

स्त्तीक पािूि क्यान काििण लेखक पक्ड गेल िर्व जेना र्वषणु शमा पंचतंतमे कििि कहैत-कहैत शूद आ मक्हलाक पािि पक्ड जाइत िर्व।

याति सभ कमलक घूि लग कपक अभामे बेिा-बेिा चाह क्राबैत िवि, फक्सल कक्ट कऽ क्सबननक एतए चक्ल जाइ-ए। िौआ, कास, पटेकि जंगल जखन हिए, क्वडै बडड आबए, आब कम अबैत अवि। खक्द्धया, हर्वनि, माि, काि, डोका सभ खतम भऽ हिल ि- जीनिक साधन दुलक्षा भऽ गेल अवि। सामिे जमीनक पंचैती होइत अवि।सतोक बकडी मवि गेलैक, पुतोहु एकि काणि सासुक सिपिब कहैत अवि। सासु एकि काणि बक्ल गिलोपि पाठी सभके बेचब कहैत िवि। सतोक बेटीक जौबनक उभाकिे लेखक पुरर सम्मकक्ष साकी कहैत िवि आ सकाणि फेसिँ मक्हलाक पाि पक्ड जाइत िवि, काणि ई धाणिा लोकमे ि। सतोक बेटी एखन सासुि नक्ह बसैत ि। सुकन िमिक एक्हठाम खाइत काल लेखकके संकोच भेलक्ह, जकािसँ उबबिाक लेल ओ बजलाह- आइ तोिि जाक्त बना लेक्लअह। कोसी सभ भेदभाकिे पाक्ट देलक, डोम, चमािि, मुसहि, दुसाध, तेली, यादि सभ एके कलसँ पाक्न भिति अवि। एके पक्टयापि बैसैत अवि।

ककिि लेल किि क्लखी? िि कही? कििक िदिप क्वजनका वियमे क्लखब से तँ पढताह नक्ह। किि पक्ढ लोक पबुद भऽ जाएत ? गीताक सप्पत खा कए ि्ठ बजक्हाकि संख्या कम नक्ह। ते की एहन कसौटीपि क्वित कििक महति कम भए जाएत ?

सभ पबुद नक्ह होएताह तँ सिि मनोिजिन तँ पाप्त कऽ सकताह। आ जे एकोटा क्यक्तत किि पक्ढ ओक्ह क्दशामे सोचत तँ कििक सािषकता क्सद होएत। आ जकिि लेल क्वित अवि ई किि जे ओ नक्ह, तँ ओकि ओक्ह पविसिक्तमे हस्तकेप कबािमे

सकम व्यक्तित तँ पढताह। आ जा ई हित ताधवि एक्ह तहिक कि वियत कएल जाइत हित।

आ जे समाज बदलत तँ सामाविजक मूल्य सनातन हित ? पगवाशील कि मे अनुभकि पुनक्षाण कबि, पर्वितिषाशील समाजक लेल, जाक्हसँ पाकताक आ सामाविजक यिािष्क बीच समायोजन होअए। आक्र एक्ह पर्वितिषाशील समयके सिाियर्त देबा लेल पमिाकि सियी आ मूल ततपि आधावित किाक आशियकता अवि ? व्यक्तित-क्हत आ समाज-क्हतमे दैध अवि आ दुनू पसिपि वििधी अवि। एक्हमे संयोजन आशियक। वशि दक्ष आशियक। कि मात विचाकि उतपक्त नक्ह अवि जे िशनाइसँ कागतपि जेना-तेना उतावि देक्लयैक। ई सामाविजक-ऐक्तहाक्सक दशासँ क्वक्षशत होइत अवि।

तँ कि आदशािदी होअए, पकक्तिादी होअए ि यिािादी होअए। आक्र एक्हमे सँ मानितािदी, सामाविजकतािदी ि अनुभकि महति देमएबला जानेक्ह्दय-यिािादी होअए ? आ नक्ह तँ कि पयोजनमूलक होअए। एक्हमे उपयोवातािद, पयोगिद, व्यिहािािद, कािणािद, अिक्षकयािद आ फलिद सभ सक्मक्लत अवि। ई सभसँ आधुक्नक दक्षकोण अवि। अपनाके अक्मव्यतत कएनाइ मानिीय सिभाि अवि। मुदा ओ सामाविजक क्तअममे सीक्मत भऽ जाइत अवि। पर्विसिक्तसँ पभावित भऽ जाइत अवि।

तँ कि अनुभकि पुनषियत कए गढल जाएत। आ व्यक्तितगत चेतना तखन सामाविजक आ सामूक्हक चेतना बक्त आओत। शोरकके अपन पक्तिपि अंकुश लगबए पडतक्ह। तँ शोवतके एकि वििध मुखि र पमे कएि पडतक्ह।

स्तिंतता- सामाक्जक पर्वितिष्ा । कि तखन संपेक्रत होएत, संवादिक माध्यम बनत। कि समाजक लेल शस्त्र तखने बक्त सकत, शक्तत तखने बक्त सकत।

जे किकाि उपदेश देताह तँ जानक हस्तातणि कतिाह, जकि आश्यकता आब नक्ह ि। जखन किकाि समिदि शुर कतिाह तखने मुक्ततक ितिािणि बनत आ समिदमे भाग लेक्नहाि पाठक जडतासँ ताण पओताह।

कि कमबद होअए आ सुगाह होअए तखने ई उदेश्य पाप्त कति। बुक्दपकि नक्ह क्यहािपिकि बनत। िक्दक साक्हत्यक आख्यानक उदाति संिदिके जह्म दैत िल जे पौिाणिक साक्हत्यक रक्ढिक्दता खतम कए देलक।

आ संिदिक पुनसिापना लेल किकािमे िशास होएबाक चाही- तकपकि िशास आ अनुभपिकि िशास, जे सुभारचह्द यादिमे िक्ह। पत्यकिदिक िश्लेरणात्मक दशषा िस्तुक नक्ह, भािरक किन आ अधिाणाक िश्लेरण कितै अिछ से सुभारजीक किमे सिषा देखबामे आओत। िश्लेरणात्मक अिि ताकक पत्यकिद आ अक्स्ततिादिक जह्म िजानक पक्त पक्तकयाक रपमे भेल। एक्हसँ िजानक क्दअिी िचािके स्पष कएल गेल।

पघटनाशास्तमे चेतनाक पदतक पदत रपमे अध्ययन होइत अिछ। अनुभूक्त िक्शष मानक्सक कयाक तथ्यक कििकण अिछ। िस्तुके क्पिके आ िशुद रपमे देखबाक ई माध्यम अिछ। अक्स्ततिादिमे मनुष्य-अक्ह मात मनुष्य अिछ। ओ जे कक्ु कमाण कितै अिछ ओक्हसँ पकि ओ कक्ु नक्ह अिछ, स्तिंत होएबा लेल अक्भशप्त अिछ (सातत्र)। हेगेलक डायलेक्कटतस दाि िश्लेरण आ

संश्लेरणक अंतहीन अंतस्संबंध दाि पक्रयाक गुण क्गणष आ अक्स्तत िक्गणष कबािप जोिि देलक्ह। मूलतत ि जतेक गहीि होएत ओतेक सिरिपसँ दूि िहत आ ािस्तवकितासँ लग।

ताि्हटम क्सदाह्त आ अनसिटेह्टी क्ाक्सपल सेहो आधुक्नक क्ह्तनके पभािवत कएने अि। देखाइ पडएबला ािस्तवकिता सँ दूि भीतिक आ बाहिक पक्रया सभ शक्त-ऊजाक ािट तत िक आदान-पदानसँ समभि होइत अि। अक्नक्शतताक क्सदाह्त दाि क्सिक्त आ सिरिप, अह्दाजसँ क्नक्शत कएि पडैत अि।

तीनसँ बेशी डाइमेह्सनक ि शिक पिवकिल्पना आ स्टीफन हॉक्कह्सक "अ ब्ाफ क्हस्टी ऑफ टाइम" सोि-सोिि भगािनक अक्स्तत िके खतम कए िहल अि कािण एक्हसँ भगािनक मत्युक अिधािणा सेहो सोिि आएल अि, से एखन ि शिक कायह्ताक अक्स्तत ि खतािमे पडल अि। भगािनक मत्यु आ इक्तहासक समाक्पतक पिवपिेक्मे मैिवली किि कक्हया धि िक्खस्सा कहैत िहत ? लघु, अक्त-लघु किा, किा, गल्प आक्दक ि शिलेरणमे लागल िहत?

जेना िचुम्बल वअिक्लटी ािस्तवकिता के कक्ाम रपे सोिि आक्म चेतनाके ओकिि संग एकाकाि किैत अि तक्हना ब्ाना तीनसँ बेशी बीमक पिवकिल्पनाक हम पकाशक गक्तसँ जे क्सह्धुघाटी सभ्यतासँ चली तँ तइयो बहाण्डक पाि आइ धिि नक्ह पहुँक्च सकब। ई सूयष अिबि-खिबि आन सूयषसँ एकटा मध्यम कोक्टक तािगण- मेक्डओकि स्टाि- अि। ओक्ह मेक्डओकि स्टािक एकटा गह पथ्िवी आ ओकि एकटा नगि-गाममे िक्काहाि हम सभ अपन मािपिि हािि ािक्ख क्यक्तत ािी जे हमि समस्यासँ पैघ ककि

समस्या ? हमर कहिक समक ई सभ राजनैतिक आ दार्शनिक तथ्य चुनौतीक रूपमे आएल अछि।

होलोकास्टक आतंक सम्पूर्णताक समस्या कए पड़त ! ई दर्शन दार्शनिक सँ वास्तविक तखने बनत।

पोस्टस्ट्रक्चरलिज्म मेथोडोलोजी भाषाक अर्थ, शब्द, तकर अर्थ व्याकरणिक नियम सँ नहि वरन् अर्थ निर्माण प्रक्रियासँ लगबैत अछि। सभ तरहक व्यक्ति, समूह लेल ई विभिन्न अर्थधारण करैत अछि। भाषा आ विश्वमे कोनो अन्तिम सम्बन्ध नहि होइत अछि। शब्द आ ओकर पाठ केर अन्तिम अर्थवा अपन विशेष अर्थ नहि होइत अछि।

आधुनिक आ उत्तर आधुनिक तर्क, वास्तविकता, समानता आ विचारक आदान-प्रदानसँ आधुनिकताक जन्म भेल । मुदा फेर नव-वामपंथी आन्दोलन फ्रांसमे आएल आ संरचनावाद आ अस्तित्ववाद आन्दोलन सन विचारधारा सेहो आएल। ई सभ आधुनिक विचार-प्रक्रिया प्रणाली ओकर आस्था-अवधारणासँ बहार भेल अविश्वासपर आधारित छल।

पाठमे नुकाएल अर्थक स्थान-काल संदर्भक परिप्रेक्ष्यमे व्याख्या शुरू भेल आ भाषाके खेलक माध्यम बनाओल गेल- लंगुएज गेम। आ एहि सभ सत्ताक आ सीमा आ ओकर सैद्धान्तिक आलोचनाक रूपमे आएल पोस्टमॉडर्निज्म।

कंप्युटर आ सूचना क्रान्ति जाहिमे कोनो केन्द्रीय सत्ता ओकर निर्माण कए ओकरा विश्वव्यापी अन्तर्जालपर नियन्त्रण दैत छथि आ ओ केन्द्रीय अपन सत्तासँ स्वतंत्र अपन काज करैत रहैत अछि, कारण ओहनो कार्यक्षेत्रे एकर सत्ता ओकरा लेल आवश्यक नहि

कएने छथि। आ कम्प्यूटर हस्तक्षेप-तंताश जेना भाइरस, एकर मामलाँ हटाबैत अछि, विध्वंसक बनबैत अछि तँ एण्टी भाइरसक एंटी भाइरस सेहो एकटा तंताश अछि, जे ओकरा ठीक करैत अछि आ जे ओकरासँ ठीक नहि होइत अछि तखन कम्प्युटरक बैकप लए ओकरा फॉमेट कए देल जाइत अछि- तलीन स्लेट !

पूँजीवादक जनम भेल औदोगिक क्रान्तिसँ आ आब पोस्ट इन्डस्ट्रियल समाजमे उत्पादनक बदला सूचना आ संचारक महत्व बढ़ि गेल अछि, संगणकक भूमिका समाजमे बढ़ि गेल अछि। मोबाइल, क्रेडिट-कार्ड आ सभ एहन वस्तु कम्प्यूटर आधारित अछि। एहि बेरका (२००८) कोसीक बाढ़िमे अनलकान्तजी गाममे फसल छलाह, भोजन लेल मारि पड़ैत छलिए मुदा क्रेडिट कार्डसँ ए.सी.टिकट बुक भए गेलन्हि। कर्विलाक समाजमे सूचना आ संगणकक भूमिकाक आर कोन दोसर उदाहरण चाही?

डी कन्सट्रक्शन आ री कन्सट्रक्शन विचार चिन्ता प्रक्रियाक पुनर्गठन के देखबैत अछि जे उत्तर औदोगिक कालमे चेतनाक निर्माण नव रूपमे भऽ रहल अछि। इतिहास तँ नहि मुदा परिभाषित इतिहासक अन्त भऽ गेल अछि। राज्य, राष्ट्र, दल, समाज, परिवार, नैतिकता, विवाह सभ फेरसँ परिभाषित कएल जा रहल अछि। मानि लिअ परिवर्तनक परिणामसँ, विखंडित भए सम्बन्धहीन भऽ गेल अछि कतेक संसार।

एहि परिपेक्ष्यमे मैथिली कथा गाथा सेहो एकटा गम्भीर नजरि दौगाबी।

रामदेव झा जलधर झाक "विलक्षण दाम्पत्य" (मैथिल कृत

साधन, जयपुि, १९०६ ई.) के मैिलीक आधुिनक किक पािम्भ मानलजाइ। पुलकत शक "मोहनी मोहन" (१९०७-०८), जनसीदनक "तािक िधक" (िलाकाक, १९१७ ई.), शीकषा ठाकुिक चन्दपभा, तुलापित संहक मदनिाज चित, काली कुमाि दासक अदलाक बदला आ कािमनीक जीिन, श्यामानन्द िक अकञ्चन, शी बल्लभ िक िलासता, हिनिन्दन ठाकुि "सिाज"क ईर्शीय िक, शािदानन्द ठाकुि "िनिय"क तािि आ श्याम सुन्दि ि "मधुप"क पजा-पत, िदनाि शा "िदासन्धु"क गप-सपक खिहान आ पबोध नाियण संहक बीिल फूल आएल। हिमोहन िक कि आ यातीक उपन्यासका, िजकमल चौधिी, लिलत, िमदेि ि, बलिम, पभास कुमाि चौधिी, धूमकेतु, िजमोहन ि, साकेतानन्द, िभूित आनन्द, सुन्दि ि "शासती", धीिेन्द, िजेन्द िकशोि, िीती िमण लाल, िजेन्द िमल, िमभद, अशोक, शािशंकि शीवािस, पदीप िहािी, िमेश, मानेशि मनुज, श्याम दिहिि, कुमाि पिन, अनमोल ि, िलेश कुमाि ि, हिशिन्द ि, उपाध्याय भूरण, िमभिस कापिड "भमि", भुिनेशि पािय, बदिी नाियण बमा, अयोध्यानाि चौधिी, ि.ना.सुधाकि, जीतेन्द जीत, सुिेन्द लाभ, जयनाियण ि "िजासु", श्याम सुन्दि "शिश", िमेश ििन, धीिेन्द पेमिष पिमेशि कापिड, तािनन्द ियोगी, नागेन्द कुमि, अमिनाि, देिशंकि निीन, अनलकान्त, शीधिम, नीता ि, िभा िनी, उरािकणि खान, सुिसमता पाठक, शेफािलका िमा, ज्योतसना चन्दम, लालपिी देिी एिह याताके आगा बढेलिह।

मैिलीमे नीक कि निह, नीक नाटक निह? मैिलीमे

क्याकणि नक्ह? पक्तसोह आ पक्तगि एक्ह तहिक विश्लेरण कतए अर्वि मैर्विली क्याकणि मे, िहि अनल, पाकि सभ अर्वि ! मुदा दीनबह्धु िाक धातु रप पोिमे जे १०२५ टा एक्ह तहिक खाटी रप अर्वि, मिानि िाक कवर्विलाभारापकाशमे जे खाटी मैर्विली क्याकणि अर्वि, ई दुनू वसोसषबुक लए मानकीकणि आ क्याकणिक कमाण सिषिा संभि अर्वि। मुदा भऽ हिल अर्वि ई जे पानीपतक पक्हल युदक विश्लेरणमे ई क्लखी जे पानीपत आ बाबकि बीचमे युद भेल। िमिभदके धीिह्वि सिषोष मैर्विली कािकाकि रपमे िवाणा कएने िर्वि, मुदा एखन धर्वि हुनकि कएक टा कािक विश्लेरण कएल गेल अर्वि ? नक्यकेताक नाटक आ मैर्विलीक सेतसवाअि महेह्द मलंवायाक काजक आ िमिभद आ सुभार चह्द यादकि कािायाताक सह्दभषे ई गप कहब आश्यक िल।

जाक्ह समय मैर्विलीक समस्या घि-घिसँ मैर्विलीक कषकासन अर्वि, जखन क्हह्दीमे एक हाि अजमेलाक बाद नाम नक्ह भेला उतिलोक मैर्विलीक किा-कर्विता क्लक्ख आ सम्पादक-आलोचक भए, अपन महतिकाकक भािसँ मैर्विली किा-कर्विताक िताि णिके भर्विया हिल िर्वि, मातसषीद, फेवकक्जम आ धमषािपिक्ता घोक्सया-घोक्सया कए किा-कर्वितामे भिल जा हिल अर्वि, तखन स्तकि काधाणि सएह कऽ हिल अर्वि, स्ताहीनताक बेढ िदि बनल अर्वि। जे गिीब आ कम जातीयक शोरण आ ओकिा हतोत्साक्हत कबिामे लागल िर्वि से मातसषीदक शणिमे, जे मक्हलाके अपमाक्त केलक्ह से फेवकक्जम आ कवर्विला िजय आ संघक शणिमे आ जे साम्पदाक्यक िर्वि ओ धमषािपिक्ताक शणिमे जाइत िर्वि। ओना साम्पदाक्यक लोक फेवकक्सट, मक्हला विािधी माक्तसषट आ एक्ह

तहिक कतेक गठबंधन आ मठमे जाइत देखल गेल छवि। तयो गिजकमलक बडाइमे लागल अवि, तँ तयो यातीक आ धूमकेतुक तँ तयो सुमनजीक, आ हुनका लोकक्तक तँ की पक गिखत तकि आवमिे अपनाके आगा गिक्ख हिल अवि। यातीक पागिके आ गिजकमल आ धूमकेतुक कगिके आइयो संगीकागि नक्ह कएल गेल अवि- एक्ह तहिक अनगाक्ष पलाप ! तयो तागिकवित वींगिदास्पद कगिक सम्पादन कए संयिं वींगिद उत्पन्न कए अपनाके आगा गिक्ख हिल छवि। मात मैवगिल बाहण आ कणषकायसंगिक लेखनक बीच सीक्मत पक्तयोवाता जाक्ह कवि-कगिकागिके वंचिक्लत कए हिल गिक्ह आ क्हह्दी गिक्ड मैवगिलीमे अएबाक बाद जाक्ह गक्तसँ ओ ई सभ कतिब कए हिल छवि, क्तनका मैवगिलीक मुख्य समस्यापगि ध्यान कक्हया जएतक्ह से नक्ह जाक्त ? लोक ईहो बुझैत छवि जे क्हह्दीक बाद जे मैवगिलीमे क्लखब , तँ संगीकक्त तविगित गक्तएँ भेटत ? जे मैवगिलीक चिनाकागिके एक्ह तहिक भम गिक्ह आ आत्मवंशिासक अभागि गिक्ह, अपन मातभाराक संपेरणीयतापगि अविशास (!), तखन एक्ह भाराक भविष्य क्हनका लोकक्तक काक्हपगि दए कोन छदि हम सभ संजोवा हिल छी ? सेमीनागिमे साक्हत्य अकादमी पुस्किागि पाप्त एहन जुगिर कगिकागि, सम्पादक आ समालोचक सभके अपन पुत-पुती-पतीक संग मैवगिलीमे नक्ह गिनि् क्हह्दी मे (अंगेजी पायः सामथ्र्यक्षाँ बाहगि गिक्ह ते) गप कंगित देक्ख हतपभ क्हि जाइत छी। मैवगिलीमे बीस टा क्लखनहागि गिलाह आ पाचटा पढक्तहागि, से कोन वींगिद उठल होएत? गिजकमल/ यातीक मैवगिलीक लेखन सौम्य अवि, से हुनकगि सभक गोट-गोट चिना पक्ढ कए हम कक्ह सकैत छी। ताक्ह क्तसंगिक्त मे- ई वींगिद हिए

एक्ह कवितामे आ एक्ह किमे- एक्ह तहिक गप आक्त आ ओकि पक्मे अपन तकष दए अपन लेखनी चमकाएब ? आ तकि बाद यातीक बाद पक्हल उपह्यासकाि फलना आ िजिकमलक बाद पक्हल कवि क्चलना-आब तँ किाकाि आ कविक जोडी सेहो सोिा अबैत अवि, एक दोसािक भक्ततमे आ आपसी िदके आगा बढएबा लेल। मैविलीक मुख्य समस्या अवि जे ई भारा एक्ह सीक्मत पक्तयोगी (दुघष्षा) सभक आपसी महतिकाकाक माविक बीच मवि हिल अवि। कवि-किाकाि मैविलीके अपन कैविअि बना लेलक्ह, घिमे मैविलीके क्षक्काक्सत कए सेमीनािक िस्तु बना देलक्ह। तखन कतए पाठक आ कोन विािद ! जे समस्या हम देक्ख हिल िी जे बच्चाके मैविलीक िातािणि भेटओ आ सभ जाक्तक लोक एक्ह भारासँ पेम कवि ताक्ह लेल किा आ कविता कतए आगा अवि ? कएकटा विजान किा, बाल-क्कशोि किा-कविता कैवयिजीिी कवि-किाकाि क्लक्ख हिल वि। आ ओ घि-घिमे पहुँचए ताक्ह लेल कोन पयास भए हिल अवि ? सए-दू सए कॉपी पोिी िपिबा कए , तकि समीक्ा कबिा कए, सए-दू सए कॉपी िपएबला पक्तकामे िपिबा कए , तकि फोटोस्टेट कॉपी फोल्डि बना कऽ घिमे िक्ख पुक्स्तकाि लेल आ क्सलेबसमे क्कताब लगेबा लेल कएल गेल क्ाकडमक िातािणिमे हमि आस गैि मैविल बाहणि-कणष कायस्ि पाठक आ लेखकपि जाए क्सि भए गेल अवि।

जे अपन घि-पविािि नक्ह सम्हावि सकलाह से ढेिी-ढाकी भारायी पुक्स्तकाि लए बैसल वि, क्मविला िाज्य बनएबामे लागल वि , पता नक्ह िाज्य कोना सम्हावि सकताह आ ओकि विधान

सभामे कोन भारामे बजताह, जखन हुनका ओतए पुस्किृत कएल जएतन्हि।

जे घमिे मैथिली नहि बजैत छथि से लेखक आ कवि बनल छथि (हिन्दी-मैथिलीमे समान अधिकारसँ) हिन्दीमे सोचि लिखैत छथि आ तखन अनुवाद कए मौलिक मैथिली लिखैत छथि ! मैथिली कथा-कविता कहैत छथि!!

मौिठी, उदूष तमिल, कनडसँ मैथिली अनुवाद पुस्किा लिखजतासँ लैत छथि , णिकम केर अषिपुबिन्हि से नहि अबैत छन्हि, अल्लफ-बे-से केर जान नहि, मौिठीमे कोनो बच्चासँ गप करबाक सामर्थ्यष नहि छन्हि। आ मैथिलीमे हुनकर माथ फुटबासँ एहि दार बचि जाइत छन्हि कारण अपने पिबा कए समीक्षा करबैत छथि, से पाठक तँ छन्हि नहि। पाठक नहि हिएमे हुनका लोकनिके फाएदा छन्हि। आ एहि पुस्किा सभमे जूरी आ एडिइजरी बोडष अपनाके आगा करबामे जखन स्वयं आगा अबैत छथि तखन एहि सीमित पवयोगी लोकनिक आत्मविशास कतेक दुबषल छन्हि , सएह सोचि अबैत अछि । सामि कुमार छथि, तँ बलिमक चर्चा फेरसँ करिकाकि रुपमे शुरु भेल अछि । आ जनकर सन्तान साहित्यमे नहि अएलाह हुनकर चर्चा फेर कोना होएत, हुनकर पक के आगा रखत ? जीबैत धरि ने सभ अपन पक स्वयं आगा रखि हिल छथि ? मुदा मुइलाक बाद ? मैथिली साहित्यक एहि सत्यके देखार करबाक आवश्यकता अछि । आँखि मुनि कए सेहो एकर समाधान लोक मुदा ताकिये हिल छथि।

तयो नगतगुप्त सभा खोलि मगापदके बेचि हिल छथि तँ तयो मैथिल (बाह्मण) सभा खोलि सुमनजीक व्यापारमे लागल छथि-

मकरापद आ सुमनजीक आर्वमे अपन धंधा चमका हिल र्वि आ मकरापद आ सुमनजीके अपमाक्तत कए हिल र्वि। कवि-कविता संगह सभक सम्पादकक चेला चपाटी मैविलीक सषिकालीन कविकावि-कविक संकलनमे स्थान पाबि जाइत र्वि, भने हुनकि कोनो पक्तहले संगह आएल होइक्हह ि कवि-कविताक संख्या हास्यास्पद रपसँ कम होइक्हह। पत्रिका सभक सेहो िएह क्सक्ति अवि। व्यक्तिगत महतिकाकामे कटाउि कवति कान पाठकक ई पत्रिका सभ सयिं मर्व हिल अवि आ मैविलीके मावि हिल अवि। राइंग रममे कबना फीलडकिषक क्लखल लोककि जाक्ह भारामे क्लखल जाइत होअए, ओतए एक्ह तहिक हास्यास्पद कटाउि सिभाविक अवि। आब तँ अह्तजालपि सेहो मैविलीक कक्ि जालतिपि जाक्तगत कटाउि आ अपशब्दक पयोग देखबामे आएल अवि।

माक्तसक्ष्ट आ फेकमक्तस्ट बक्त तकि व्यापावि शुर कबि आ अपन सत्ताकि ह्यूनताक एक्ह तहिे पूक्तषकबि, सीक्तमत पक्तयोवाता मध्य अल्प पक्तभायुतत साक्हत्यकाकि ई हवियावि बक्त गेल अवि। जे मातसक्ष आदि कति से ई कएक कहत जे हम मातसक्षीदी आलोचक आक्क लेखक ि? हँ जे मातसक्ष धंधा कति तकि वरियमे की कही, धंधा तँ सुमन, िजिकमल, याती, मकरापद, धूमकेतु......सभक शुर भेल अवि। आ तकर कारण सेहो स्पष्ट। राष्ट्रीय सवेक्षण ई देखबैत अक्छ जे संस्कृत, क्हन्दी, मैविली आ आन साक्हत्य कॉलेजमे वैह पढैत छवि क्जनका दोसर क्वषयमे नामाकन नक्ह भेटैत छक्ह, पिकाक्षतामे सेहो यैह सभ अबैत छवि। पक्षाभा क्वपन एहने साक्हत्यसेवीके साक्हत्यक चशक्ा लागल छक्ह आ

श्चनके हाथिमे मैथिली भाषाक भविष्य सुरक्षित रहत? मुदा एकर वास्तविकताक संग आगाक बाट हमरा सभक प्रतीक्षामे अछि। सुच्चा मैथिली सेहो कखनो-कखनो आ पाठक जे धूरि-गर्दामे जएबा लेल तैयार होथि, बच्चा आ स्त्री जनताक साहित्य चिन्हथि आ अपन ऊर्जा मैथिलीके जीवित रखिबा मातमे लगाबथि ओ श्रेणी तैयार होएबेटा करत।

मैथिलीक नामपर कोनो कम्प्रोमाइज नहि। सुभाषचन्द्र यादवजीक ई संग्रह धारावाहिक रूपमे “विदेह” ई-पत्रिकामे (http://www.videha.co.in) अन्तर्जालपर ई-प्रकाशित भए हजारक-हजार पाठकक स्नेह पओलक, ऑनलाइन कामेन्ट एकर करए सभके भेटलैक जाहिमे बेशी पाठक गैर मैथिल ब्राह्मण आ कर्णकायस्थ छथि, से हम हुनकर सभक उपनाम देखि अन्दाज लगाओल। *एतए ईहो गप सोझाँ आएल जे शब्दकोशक अभावक कारणे सेहो, भाषाक उच्चारण आ लिखन मे अंतर अबै-ए। तकर ई मतलब नै जे बलचनमाक भाषा एखनो यादवजी बजैत छथि, आब जे ओ भाषा यादव पात लेल प्रयोग करब तँ शाकुन्तलम् केर संस्कृत नाटकक बीच जनसामान्यक लेल प्रयुक्त प्राकृत जेकाँ लागत, आ ओहि वर्गक लोकके अपमानजनक सेहो लगतन्हि। भाषा चलायमान होइत अछि आ लेखन परम्परा ओकर मध्य कड़ीक काज करैत अछि। से सुभाषजीक भाषामे सेहो ई अन्तर स्पष्ट देखबामे अबैत अछि, हुनकर कथाक भाषा आ कथाबन्धक भाषा मध्य।*

मैथिल ब्राह्मण आ कर्णकायस्थ तँ पाठक बनिये नहि

सकैत छथि, शीघ्र यात्रीक बादक एकमात्र जनउपन्यासकार आ कुलानन्द मिश्रक बादक एकमात्र सही अर्थमे कवि किछु उपाधि लेल लालायित भए जाइत छथि। अपनाकेँ घोड़ा आ बाघ आ दोसरकेँ गधा आ बकरी कहबा काल ओ मूल मुद्दा आ समस्यासँ अपनाकेँ फराक करैत छथि। अपन कथा-कवितापर अपने समीक्षा कए आत्ममुग्धताक ई स्थिति समीक्षाक दुर्बलतासँ आएल अछि। एकर एकमात्र शब्दसँ हमर प्रतिवाद अछि आ तकर समाधान हम मैथिलीकेँ देल स्लो-पोइजनिंगक विरुद्ध "विदेह" ई-पत्रिकाक मैथिली साहित्य आन्दोलनमे देखैत छी। एतए साल भरिमे सएसँ बेशी लेखक जुड़लाह तँ पाठकक संख्या लाख टपि गेल। बच्चा आ महिलाक संग जाति तहिना गैर मैथिल ब्राह्मण-कर्णकायस्थ पाठक आ लेखक जुटलाह से अद्भुत छल। हमर एकटा गप्पपर देल जोर किछु गोटे (मैथिली) साहित्यकेँ खण्डित करबाक प्रयास कहताह मुदा हमर प्राथमिकता मैथिली अछि, मैथिली साहित्य आन्दोलन अछि, ई भाषा जे मरि जाएत तखन ओकर राइटिंग रूममे बैसल दुर्घर्ष सम्पादक-कवि-कथाकार-आलोचक/शिष्य आन्दोलनकर्ता आ समालोचकक की होएतन्हि। सुभाषचन्द्र यादवजीक कथाक पुनः पाठ आ भाषाक पुनः पाठ एहि रूपमे हमर आकर्षण करैत अछि। आ एतए ईहो सन्दर्भमे सम्मिलित अछि जे सुभाषचन्द्र यादवजीक ई संग्रह धारावाहिक रूपमे अन्तर्जालपर ई-प्रकाशित भेल, कथाक पुनः पाठ आ भाषाक पुनः पाठ लए। आ ई घटना सभ दिन आ सभ पीढ़ीमे मैथिलीकेँ सबल करैत से आशा अछि।

महापकाश- सुभार चह्द यादि पि

आधुक्तक मैविली कि-साव्हत्यमे एकटा नाम जे सविध्वक सीकक्त आ पक्सक्द पौलक अवि, ओ वि क- सुभार चह्द यादि। सुभारक कि-याता पि दक्ष पात कौति ई लगैत अवि जे ओ किक अह्रिण कयलक्त अवि। पायः लेखनक आिम्भ कविते ओ अनेक सिन आ अनेक भाराक याता शुर कयलक्त। ई याता ि भटकावि, जे हुनक कयक्त सेहो हिल अवि, हुनका अनुभि सँ लैस कयलक, तीक्श दक्ष देलक आ अपन समकालीन सँ अलग विक्शष साचामे ढाक्ल देलक। ओ एकटा अलग भारा-संस्कावि, शब्द-संस्कावि गहण कयलक्त जे अपन सिप मे क्यासजह्य अवि। लेक्कन ई सिप कतहु सँ ओिबैत नक्ह अवि, अक्पतु कलाक सहजता आ सहजताक कला के विलक्ण ढंगे उदाक्टत कौति अवि। ओ अपन कि मे पविशिक कोनो पैघ आयोजन क्क पसािमे नक्ह फँसैत वि; हुनक अनुभक्सद भारा, अविकल्प शब्द सहजक्ह अपेक्क्त पविशि आ यिाषके एकटा पैघ फलक दऽ दैत अवि। सुभार कोनो िग-विगिक उतेजनामे जतेक क्लप्त वि, ओतबे कक्लषतो। सुभारक जीनि आ साव्हत्य ऊपि सँ जतेक शात आ क्सिि बुिाइत हो, भीति सँ ओतबे अशात आ अक्सि अवि। हुनक अह्तदक्ष स्याह आ सफेदके कमषता सँ उदाक्टत कौति अवि। हुनक िचनाकावि समयक समुद मे डूबा-डूबा मोती-माक्णक ताक्क अनैत अवि। एक्ह तहि सुभारक लेखन यिाषक्क अमूल्य दस्तावि ज बक्त जाइत अवि।

सुभाषचन्द्र यादव- बनैत बिगड़ैत आ आन कथा

भाइ साहेब (ब्रजमोहन झा) के जे बहुत स्नेहसँ 'घर दिस जयबाक' कहलनि आ बनौने छलाह- सुभाष चन्द्र यादव

हमरा बुझाइत अछि जे हमर चिन्ता और कष्ट नञि, देश-कालक पक्ष हमर पक्षकथा थिक। हम अपन समयक सामाजिक पक्षकें व्यक्त करऽ चाहैत छी। जीवन लेल जे कष्ट नीक आ श्रेयस्कर अछि, हमर चिन्ता तकरा हासिल करऽ चाहैत अछि। हम एहन मनुक्ख गढ़ऽ चाहैत छी जे सब सँ प्रेम करय। आ प्रेम एहि कऽ सकैत अछि जे सत्यक साक्षात्कार करऽ लेत।- सुभाष चंद यादव

अपन-अपन दुख

ओकर पत्नी दुखित छलीह। पीठ मे दर्द होइत छलन्हि। घरक कातवला बड़का पर खाट पर पड़ल छलीह। कोनो नञि होइत छलन्हि। धीयापूता क आवाजाही, गपशप, खटखुट कोनो नञि होअय दैत। ओ अपना धीमगाही छथि। सेकसक्टर माइकोफोन जकाँ हिट-हिट धमक-तमक सँ कम्पित भऽ जाइत छथि।धीयापूता के बजैत छथि–अनेरो टहल-बूल नञि, हल्ला-गुल्ला नञि करय, रेडियो नञि बजाय। कतेको बेर अड़ोस-पड़ोस सँ अबैत टी.भी. या रेडियोक आवाज सुनि कऽ पुछैत छथि–'अपन रेडियो बाजय छल अछि ?'

सभक अपन-अपन संसार होइत छैक। धीयोपूतोक अपन

संसाि िक। ओ सभ कखनो मायक बात सुनैत अिछ, कखनो निह सुनैत अिछ आ संसािक अपन कल्पनाक िमणीयता मे डूबल िहैत अिछ। अिहेलना सँ पत्नीक खौिझ बढ़ऽ लगैत िछन्ह। तनािचिम सीमा पि पहुँचला जाइत िछन्ह तऽ चचकिक उठैत िछ आ धीयापूता के सिपिऽ लगैत िछ। धीयापूताक कोमल भािुक संसाि आइना जका चूि भऽ जाइत अिछ।

ओिह िदन हम कनेक देिी सँ घि घूिल िही। देि सँ घुिब पत्नीके पसन नहि िछन्ह। हमि ई िदनचया हुनका लेल घोि आपित्तजनक आ िपित्तजनक। देि सँ घुिबाक अिछ अिछ देि सँ सूतब आ देि सँ सुतबाक अिछ अिछ पत्नीके देि धिि कल्पित किैत िहब।

तऽ ओिह िदन घि पहुँचला पि पििस्िथिक बूिझबा मे भागठ नहि िहल जे भानस भात नहि भेल अिछ, पत्नी कोनो कािणे सूतल िछ। एना कतेको बेि भेल अिछ। सूतल िहि , िदन नहि होइत ई चेष्टा किैत धीयापूताक सहयोग सँ हम भानसक उदोग मे लािा गेल िही। मुदा पत्नी मनमे नहि िलीह; कलमच पडल िलीह। एिह पििस्िथिताक लेल जेना सफाइ दैत आ अपन जागिण तिि कष्ट के जनबैत पती अचानक चनकि उठलीह–'आब अखन सँ शुर भऽ गेलैक गाबड घुमौनाइ। हौ बाप, ई सभ कखनो चैन नहि दैत अिछ। भगिान, मौगत दैह !'

एकटा सनसनाइत तीरि सन शाक्त पसरि गेल। पत्नी उठि कऽ दोसरि कोठली चल गेलीह।

घंटा- दू घंटा बीतल। ओक्ह क्दन बहुत ि किल िही। सोचलहुँ खा कऽ सूक्त िही। पत्नी के जखन क्तन टुटतक्त, खा लेतीह। क्तन मे उठा देला पि हुनका फेि क्तन आयब कक्ठन होइत िक्त। ते हुनक क्भडकाओल केबाड के आस्ते-आस्ते ठेक्ल चदक्व लेबा लेल भीति गेलहुँ। मुदा हमि पदचाप आ उपक्स्िक्त सँ हुनक क्तन टूक्ट गेलक्त। हुनका जागल बूक्व हम कहक्लयक्त-खा क्लयऽ।' ओ कििट फेि लीह, बजलीह क्ि नक्ह।

हम दोसि कोठली मे जा कऽ सूक्त िहलहुँ। पता नक्ह कतेक िक्त भेल हेतैक। हमि तयो जगा िहल िल। क्तन के ठेलैत हम अख्यास कि लगलहुँ के अक्व, की कक्ह िहल अक्व। ठीक-ठीक मोन नक्ह पडैत अक्व, मुदा लगैत अक्व हमि आँक्ख नक्ह खुजल िहय। कान मे पतीक सिि आयल, लेक्कन बुिायल नक्ह ओ की कक्ह िहल िक्व। पुक्लयक्त 'की कहैत िी?'

कहलक्त–'की भेल अक्व? एना क्कयैक कँित िी?'

हम सोचय लगलहुँ , हमि की भेल; हम कोना कँित िही। तखन ध्यान गेल, गला मे कफ फँसल अक्व। खखाक्व कऽ ओकि गीडैत अहृदाज कयलहुँ हम घिाइत िहल होयब आ पत्नी डक्व गेल हेतीह।

हम फेि लगले क्तन पक्ड गेलहुँ। पता नक्ह कतेक समय बीतल हेतैक। घंटा क्क आध घंटा। पतीक आिाज कानमे आयल- 'सुनै नइँ िऐ ?' पुक्लयक्त- 'की?'

कहलक्त–'लोकके सूतऽ देबैक क्क नक्ह ?' देखक्लयक्त चौकी सँ कने हक्ट कऽ ठाक्ढ िलीह। हमि भेल हम फेि घिािय लागल होयब। गिामे अटकल कफ के घोटैत स्नेह सँ पती के

पुछलयक-'भोजन कयलहुँ?'

पत्नी कोनो जबाब नहि देलक आ चल गेलीह। भेल जे खा लेने हेतीह ते नहि बजलीह। एक बेर कान तुहिते नहि आयल। कहता भेल कफ कएक बढ़ गेल अछि। मोन पडल पती कतेक डेरा गेल छलीह। फेर पता नहि कखन कान पकड़ गेल।

भोरमे पती सँ पुछलयक–'राितमे दू-दू बेर कएक जगौने छलहुँ', तऽ कहलक-'पािन जका व्ाडकैत छलहुँ ते।'

हमरा एकर जबाबक आशा नहि छिय, ते एकर पर हठात विशास नहि भेल। पहने एना कहियो नहि भेल छिय। हमर ठडड सँ अकचक भऽ कऽ ओ कहियो जगौने नहि छलीह। तखन हमर ओ कफ आ घरघरी कोनो भम छिय ? हमरा भीतर जेना कछ कचकल। कने चुप रहि पुछलयक–'खयने छलहुँ क नहि ?' कहलक–'हँ, लोक ताला मारने छैत िक आ हम खा लैत छिऐक।'

हमरा बुझा गेल राितमे धीयापूता खा-पी कऽ सूता गेल होयत आ भनसाघर मे ताला लगा देने हेतैक। पती अपन भूख आ हमर फोफसँ कुब्त भऽ कऽ हमरा उठबैत छल हेतीह। हम उठ गेल रहितहुँ तऽ ओ खइतथि आ खइतथि तऽ कान पकड जइतथि। ओ तामसे भेर भेल भूखल रहि गेलीह। ठडड आ घरघरीक दू टा संसार अछि। सभक अपन-अपन संसार होइत छैक। संसारक अपन-अपन सुख होइत छैक, अपन-अपन दुख होइत छैक।

असुविधा

देनसँ उतरि कऽ ओ स्टेशनमे टांगल घडी देखलक। पौने दू। ओ ठमकि कऽ सोचय लागल। की करी ? चलि जाय ? या रातिमे एतहि बिताबय? भरि रस्ता ओ अही गुनधुन मे पडल छल आ अखनो विचार कऽ रहल अछि। स्टेशन सँ घर बीस-पच्चीस मिनटक रस्ता ओकरा बडड भारी लागि रहल छलै। जाडक एहि राति मे सडक एकदम सुनसान हेतै। समय सेहो बडड खराब छै। कखन की भऽ जेतै तकर कोनो ठेकान नहि।

ओना ओकरा लग तेहन किछु नहि छलै। पचास-साठि टा टाका, एगो दामी चादरि आ पहिरनाक कपडा। लेकिन जँ इहो सब छिना गेलै तऽ फेर ओ जल्दी कीनि नहि सकत। ओ स्टेशनक सिमटीक ठढि बेच पर बैसि गेल आ सोचय लागल।

पछिला बेर जखन ओ गाम गेल छल। जतय गेल छल, ओतुका सीधा गाडी रातिए मे भेटै छै आ ओतय सँ सदिखन चलि कऽ एतय अखन दू बजे रातिमे पहुँचल अछि। जखन जाइत छल, तखन सदिखन सँ ओकर मन भारी छलै। मनमे अनेक तरहक आशंका आ भय समा गेल छलै। ट्रेन एक बजे रातिमे छलै। एहि जडकालामे एतेक रातिके स्टेशन गेनाइ ओकरा पहाड बुझाइत छलै। ओना ओ जतेक बेर निकलैत अछि, ओकरा लगैत छैत जे किछु भऽ सकैत छै ई ओकर अंतिम यात्रा होइ।

जाइत काल ओ बहुत चिन्तित आ उद्विग्न छल। घरक लोक ओकरा खा-पी कऽ सुतिडे काल सूति रहऽ कहलकै। फेर बारह बजे उठत आ चल जायत। लेकिन ओ बुझैत छल ओकरा निन्न नहि हेतै। जँ कदाचित निन्न पडयो गेल तऽ बारह बजे उठि जायत

तकि कोन गाटिटी। आ जँ उव्हयो गेल तऽ सीडक ति गमिा गेला पि क्षािन िाड ऽ मे कतेक आलस आ कष हेतै ! मुदा ई सब बात कोनो तेहन बात नव्ह िहै। ओकिा सबसँ बेसी क्यहत्ता एव्ह बातक िहै जे एतेक िाक्ता कऽ ओ जायत कोना? जाडक एव्ह सुनसान िाक्तमे असकिे स्टेशन जायब ओकिा भयाहि बुिाइत िहै। एतेक िाक्ता कऽ ने वतिशा भेटै िै, ने सडक पि एको टा आदमी।

ओ तय केलक जे आठ बजे कालकक जायत। स्टेशनक बगल लिा हॉलमे आखिी शो सिनेमा देखत आ ट्रेन पकड़ लेत। हॉलमे जाडो सँ बचल हित। घकि लोक ओकि एक्ह कारणष सँ अचंभत भेल। पक्हने कक्हयो ओ एना नक्ह कयने हिय। ओकि क्वांता आ

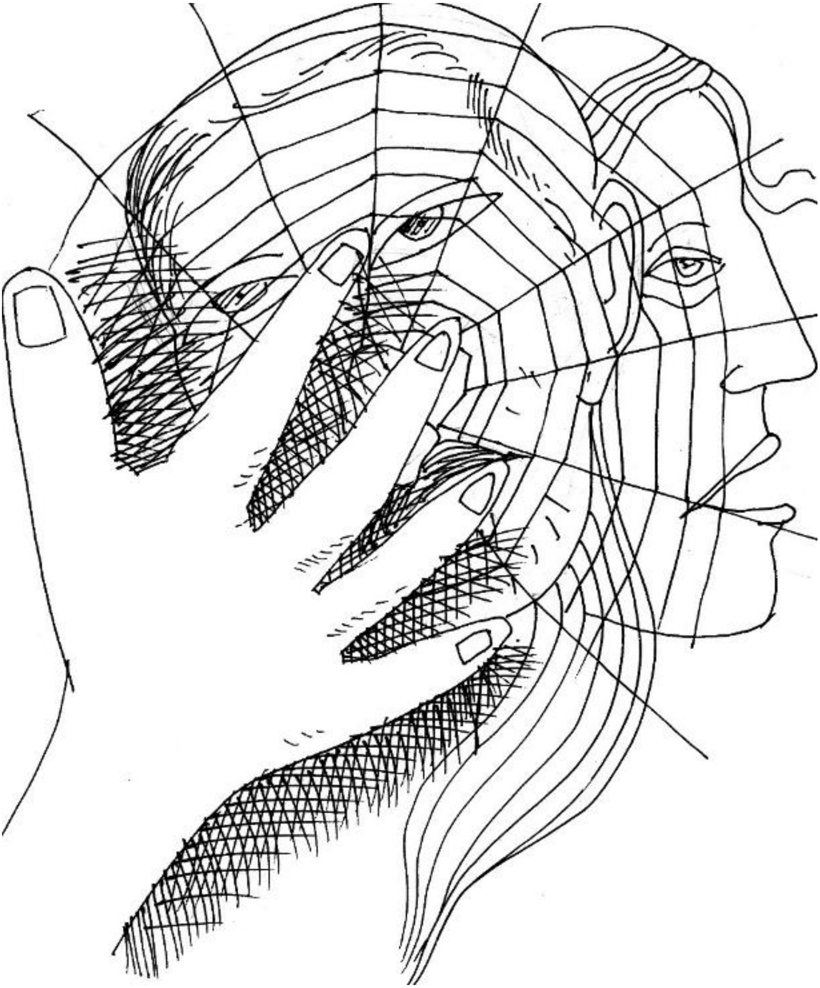

डि देवख कऽ घकि लोक वििधि नक्ह केलकै। ओ अपन कावशात कयल कायक्रमक अनुसाि घिसँ आठ बजे काकक्ल गेल। क्सतलहिी तेहन िहै जे एतेक सबेि सबटा दोकान बन भऽ गेल िलै। सडक पि ओकिा दुइए टा आदमी भेटलै। एकटा के भेदी दका सँ तऽ ओ डेिड़यो गेल िहय। हॉल पि ओ सिा आठ बजे पहुँक्च गेल आ नौ बजे धवि टौआइत िहल। घि पि क्हितय तऽ आिम कि ति क्हितय। हॉल पि बइसइयोक ठहाि नक्ह िहै। ओ देबालक टेक लेने ठाढ िहल। ओकिा ि‍टबाक क्वंता हुअय लगलैक। खोचािला, पानिला गेटकी सँ लगेलक क्सनेमा कखन खतम हेतै; विक्लम तऽ ने शो

आब टेन अ पता लंबा ि?

टुक्तते एक गोटय सँ टाइम पुिलक। सि बाहि। गाडी नक्ह ि‍टतै। तइयो ओ अपन चाक्ल तेज केलक आ स्टेशन क्दस जाइ िला िलामे सक्हया गेल। स्टेशन पहुँक्च कऽ ओकि पता चलल गाडी बहुत लेट ि‍। दू सँ पक्हने नक्ह खुलतै। ओ क्टकट कटेलक आ क्समटी िला बेच पि बइस कऽ पतीक्ा कयि लागल। भविसक इएह बेच िहै, जइ पि अखन बैसल सोक्च िहल अवि। आ सोक्च की िहल अवि, पिसुतका बात मोन पाक्ड िहल अवि।

सोचबाक लेल िइहो की? गुंडा-बदमाशक डि। पक्हने कोनो डि नक्ह िहै। ओ बहुत-बहुत िक्त कऽ कतयसँ कतय गेल अवि। क्नश्शंक। बेधडक। लेक्कन आब िक्त कऽ क्नकलबाक साहस नक्ह होइत ि‍। अखबाििमे िोज लूटपाट आ हत्याक समाचाि पक्ढ-पक्ढ कऽ आ लोकक अनुभि सुक्न-सुक्न कऽ जी मे डि समा गेल ि‍। ओ उधेडबुन मे पडल क्कि‍ तय नक्ह कऽ पाक्ब िहल अवि जे की कयि। घि चक्ल जाय क्क स्टेशने पि भोि कऽ क्लअय। वितिशा भविसके भेटतै। भेक्टयो जेतै तऽ विितशािलाके गुंडा की

गुदानतै ! जँ विितशेिला गुंडा क्नकक्ल गेल, तखन ओ की कति ? आब ककिि पि भिोस नक्ह िहलै।

ढील पक्ड गेल मििलकिे ओ कक्स कऽ लपेटलक आ चद्दविसँ मूडी आ टागके नीक जका िपलक। मुदा एक्ह िप-तोपसँ जाड नक्ह भागलै। क्नििह प्लेटिामिषपि पविया सट-सट लगै आ सौसे शिीि के िदने चल जाइत िहै। पोन ठवि कऽ पाक्त भऽ गेल िलै। ओ िने-िन अपन आसन बदक्ल िहल िल। पविला दू िक्त सँ ओ सूक्त नक्ह सकल आ टेनमे ि‍मािल गेल \ िकनी आ

जगनिामे औि बेसी जाड होइ ि। घि चल जइतय तऽ सीडकमे गमिा कऽ सूक्त क्तितय।

ओ विचालिक जे टहक्ल कऽ वतिशा देख आबय। भेटलै तऽ चल जायत। लेक्कन वतिशा पडाि पि तयो कतहु नक्ह हि। अह्लामिे एकटा वतिशा लागल िलै। देखलक सीट पि एक गोटय घोकडी लगा कऽ पडल अवि। ओ एक-दू बेि हाक देलकै। मुदा ओ आदमी नक्ह उठलै। ओ िि पेशोपेश मे पक्ड गेल। कनेक दूि पि एक आदमी असकिं चलल जाइत हि। ओकिा पि नजवि पक्डते ओ िटक्क कऽ विदा भेल जेना ओकिा पकक्ड लेत आ संग-संग घि धवि पहुँक्व जायत। ओ िडिबे दूि िटकल गेल होयत क्क ओकि चाक्ल मंद पक्ड गेलै। कोनो जरिा नक्ह जे ओ आदमी ओम्हि जेतै, जेम्हि ओकिा गेनाइ ि। लेक्कन कोनो अजात पेिणािशि ओ धीिं-धीिं बढैत गेल। आगाँ जा कऽ एकटा मोड हि। जखन ओ मोड पि घूमल आ क्हयासलक तऽ ओक्ह आदमी के दूि-दूि धवि कोनो पता नक्ह हि। नक्ह जाक्न ओ आदमी कतय अलोक्पत भऽ गेलै। कतहु नुकायल ओकि पतीक्ा तऽ ने कऽ हिल ि! अचानक ओकि देह डिसँ क्सहवि उठलै। ई डि बेसी काल क्टकलै नक्ह। ओ कनेक औि आगा बढल तऽ ओकि कलेजा विि हुअय लगलै।

जाडक पीयि मक्लन इजोविया पसलि िलै। भविसिक पवियाक कािणे कुहेस नक्ह हि। स्टैण्ड मे लागल भोिका बस दूिं सँ देखा हिल िलै। अपिधिक एकटा अडडा ईहो हि। एक्हठाम कैक बेि कैक आदमी के सामान विनायल हि। स्टैण्डक घेिा लग पहुँक्वते ओकि आशंका बक्ढ गेलै। स्टैण्ड क्नजष्न आ सुनसान पडल िलै।

िक्त कऽ ई जगह बड भयाओन लगैत िहै।

स्टैण्ड सँ काकक्ल गेला पि ओकि डि कक्स गेलै।लेक्कन अखन ओ अदहे दूि आयल िल। बचलहा िस्ता बहुत दूि बुि।इत िहै। पुक्लसो कतहु नक्ह िलै। सडक कातक दोकान दौडी, घि-दुआि सब बंद िहै। एको टा कुकूिि नक्ह देखाइत िहै। जाडमे ओहो सब दुबकल होयत।नमडोवियाि सडक पि ओ असकिि चल जा िहल िल। कैक बेि अपनो जुताक आिाज सुक्न क्ऽ लगै तयो पि्ुअयने आक्ब िहल अवि आ जी सन क्सन क्ह जाइ। खट-खुट सुक्न कऽ िाती धडक्क उठै।

ओकि घि अदहोक अदहा क्ह गेल िलै। ओकिि भिास भेल चल जाइत िहै जे आब ओ बक्च गेल।आब कक्ि नक्ह हेतै।ओ सकुशल घि पहुँक्च जायत। ठीक तखने ओ आिाज सुनलक। आिाज पािि सँ आयल िलै। तयो कक्ि बाजल िहै।ओकि जी सनाक क्सन उठलै। ओ पलक्ट कऽ ताकलक। मुदा तयो देखेलै नक्ह। ओकिि भेलै तयो अपन घिमे कक्ि बाजल होयत। ओ बढैत गेल।

के िि ?’-पािि सँ तयो पुिलकै।

ओ घुक्म कऽ देखलक।

एक आदमी ठाढ िलै। ओ कोनो जिाब नक्ह देलक आ बढैत िहल। ’अय के वि अय ? ठाढ िहऽ।’-ओकि एक्ह आदेशसँ ओ भयभीत भऽ गेल आ अपन चाक्ल तेज कऽ देलक। ओ आदमी अपिाधी बुिि िहल िलै। अखन जँ ओ आदमी आक्बकऽ ओकिि घेवि लै तऽ ओ कतबो कक्कआयत तयो नक्ह एतै। आब िक्त-क्बिक्त मुसीबत मे पडल लोकक लेल तयो नक्ह काकलै िि। ओ

दसे डेग आगू बढल होयत कि पलटि कऽ ताकलक। ताकिते ओ आतंकित भऽ उठल। ओ आदमी दौडल आबि रहल छै।

ओ भागल। ओ भागल जा रहल अछि।

आतंक

ओ कहियो हमरा संग बी. ए. मे पढैत छिय। ओकरा सँ जँ फेर भेट नहि होइत तऽ मनो नहि पड़ितय जे ओ कहियो संग-संग पढैत छल। हम ओकरा चिन्हबो नहि कयलिऐक। ओहि चिन्हलक आ नाम लैत टोकने छिय–'चिन्है छी ?'

ओकर आत्मविश्वास आ मैत्रीपूर्ण सम्बोधनसँ कनेक चकित आ प्रसन्न होइत हम मोन पाड़य लागल छी जे ओ के अछि।

एम. पी. क एलेक्शन होमय बला छैक। हम एलेक्शन डयूटीमे आयल छी।ओहो एलेक्शने डयूटी मे होयत। ढेरी लोक एक्हि काजसँ आयल छिय। ओ स्नेह-भाव सँ मुस्किआइत छिय जेना क्लासक जेबाक उलहन दैत हो। ओकर मुस्कीसँ हम अपनाके असहज आ हास्यास्पद अनुभव करऽ लागल छी। एहन स्थितिमे ओकरा चिन्हब आ ठेकनायब मुश्किल छल।

'नहि चीन्हि सकलहुँ।'-हम हारि कऽ कहलिऐक। ओकरा नहि चीन्हि सकबाक हमरा ठीके अफसोस भेल छिय। 'हम हरिशंकर !'-ओ अपन परिचय देलक।

'अरे, हरिशंकर ! ओह, एकदम्मे नहि चीन्हि सकलहुँ। ततेक दिन भऽ गेलै आ एहि बीच अहा ततेक बदलि गेलहुँ जे चिन्हब कठिन छल। हम कहियो अंदाजो नहि कऽ सकैत छी जे अहाँ सँ एतेक दिनक बाद आ सेहो एहिठाम भेट भऽ जायत। कतऽ छी ?'-अपन हीनता के झाँपैत लेल हम एके सासमे ई सभ कहि गेल छी।

हरिशंकर हमर क्लासमेट छिय।ओकरा संग-साथ मे कतेको समय बीतल होयत। मुदा ने हम ओकर आत्मीय बनि सकलिऐक ने ओहि हमर आत्मीय बनि सकल। हमरा आ हरिशंकरक बीचक

सम्बन्धके फरिआयब कठिन अछि। ओकरा औपचारिके कहब बेसी ठीक होयत। भेट तऽ होइत छिय, किन्तु भेटक आवृत्तिक अनुपातमे जे घनिष्ठता हेबाक चाही से नहि भेल। असल पछि पडत कसान बला कहबी टा चरितार्थ भेल। हम एक-दोसरा के चीन्हि गेलहुँ फेर कहियो नहि बिसरबाक लेल। तखन ई सभ कोना घटित भेल ? हम कोना ओकरा बिसरि गेलिऐक ? भरिसक हरिशि सँ भीतरी लगाव नहि हेबाक कारणे एना भेल हैत ।

जीनिमे आयल अनेक परिस्थितिक कारणे भेल होइ। लेकिन तखन ओ किएक ने कहलनि ? ओकरा कहबाक भरिसक हमर सम्बन्ध-दोरक परिणाम छल।

हारिक ई जे कहलक ताहिसँ पता चलल जे ओ हमर कामत

िला ब्लॉकमे बी. डी ओ. अवि आ अखन एलेतशनमे टासपोटषला काज सम्हायि आयल अवि। ई जकाते हमि सीि षिबुक्द सकाय भऽ उठल। कामतबला ब्लाकमे कैक सालसँ लसकल दाक्खल खाविजबला काज मोन पक्ड गेल आ अखन जे टासपोटषला काजसँ आयल ि से हर्विशिक हिने कोनो बक्ढया जीप भेक्ट जायत। नक्ह तऽ कोन ठेकान जे जीपक बदलामे टेतर्टि दऽ क्दअय। हमिा क्दमागमे ईहो बात तुिति आक्ब गेल जे आब एलेतशनक एक्ह हूक्लमाक्ल आ बालु-गदिासँ जान बचत; जक्लदए ि टकािा भेक्ट जायत। अपन ई सभ फायदा देक्ख हर्विशिक पक्त जेनाअक्तवितत स्नेह उमक्ड आयल। ओक्ह स्नेह-पािहमे हम ओकिा कहक्लऐक-'अिि िह ! अहा तऽ हमि कतेको काज कऽ सकैत ि। एकटा तऽ ई जे अहीक ब्लाक मे हमि दाक्खल-खाविज िला काज कैक सालसँ अटकल अवि आ दोसि जे हमिा नीक सन जीप क्दआ क्दअऽ।'

ई सभ सुक्त हर्विशिक चेहिा पि जे स्नेहक्सतत दोस्ताना मुस्की हिैक से लुप्त भऽ गेलैक आ तकि बदलामे एकटा कामकाजी उबाऊ भािा आक्ब गेलैक। ओ बाजल–'कक्हयो ब्लाक आउ, भऽ जेतै।' आ गाडीिला कागज हमिा हािसँ लैत एकटा टेबुल क्दस बक्ढ गेल।हम ओकि पािि धऽ लेने िही। हर्विशिक मुँह-कान आ देह-दशा सम्पन लोक जका गोल-ठोल आ भिल-पूिल हिैक।ओकि फूलपैट-कमीज साफ िकिक आ कीजसँ तनल हिैक। जूता चमचमाइत हिैक। ओकि पक्हिािि उच्चपदसि पदाक्धकािीक अनुर प दपषआ पभुति बला पभािि िडैत हिैक। टेबुल लग पहुँक्च टेबुलक चार कात घौक्दआयल लोकके ठेलैत आ 'हटू' कहैत हर्विशि कुिसी पि जा कऽ बैक्स गेल।हम कुिसीक कातमे ठाढ भऽगेल

हीे। ओकरठाम औि कोनो कुिसी नइ हैक जे हर्विश हमरा बैसऽ लेल कहैत। कागजी औपचारिकता पूरा केलाक बाद ओ हमरा जरूरी कागज सभ दऽ देलक। हम ओकरा संग िनकिस िवदा भऽ गेलहुँ जतय जेबाक लेल ओ कहने िहय। गाडीक राइिर कोम्हरो चल गेल छलै आ ओकर पतीक्षा मे हमरा आध घंटा आिर िबलमय पडल। ओइ आध घंटामे हर्विश सँ एक बेर औरि भेट भेल आ कनेक काल घिरआ गपशप होइत िहल। बाल-बच्चा, ओकर पढाइ-िलखाइ आ आन दोस्त िमतक सम्बन्ध मे।

िटक वानतीक समय हर्विश सँ देखा-देखी भेल, गप्प नइ भऽ सकल। यदिप ओकरा देखते हमरा भीतर िबजली जका एकटा भािर्ग चमकल , मुदा पिरचय आ िमतताक सुखायल सोतक कारणे ओ भािर्ग िबला गेल। हर्विश िकछु नइ बाजल। ओ मौका अनौपचािरक गपशप लेल िहबो नइ करै। ओ अपन िवशेष पदािधकारी सभक बीच बैसल िहय।

एइ सुखायल भेटक कैक मास उपिस्त एक िदन ओ बजारमे टकरा गेल। ओ हािमे िकछु लेने तकैारी कीनय जाइत िहय।ओइ िदन ओ हमरा व्यस्त आ अन्यमनस्क बुिायल। जल्दी-जल्दी मूड़-टमाटर बेसाहलक आ चलल गेल। हम ओकरासँ हालचाल पूिछलऐक, लेिकन ओकर चेहरा देिख कऽ हालचाल पुिनाइ नीिस आ फालतू बुिायल। मुदा सािंषकताक अनुभर करितो जे गप हम शुरू कयलहुँ सेहो सािनिंदे िल। हम ओकरा कहिलऐक-'एइ बीच कतेको बेर सोचलहुँ जे िमलॉक जाइ, लेिकन सोचिए कऽ िरह गेलहुँ।'

आउ। कोनो सोम िक बुधके आउ, जिहया कमसारी हैत

िक।’-कताहुत क्याहिावकि आदमी जका कािबािा अंदाजमे ई कहैत ओ चल गेल।

बहुतो क्दन बीतल। हम सोच्च कऽ िक्ह जाइ। लेककन एक क्दन ठाक्स लेलहुँ जे आइ जेबाक अिव। ब्लॉक पहुँचैत िी तऽ हर्विशक पते नक्ह। ओ िाची चक्ल गेल हिय। दुभाग्य ! बादमे जक्हया कक्हयो ब्लाक जाय क्दआ सोची तऽ हुअय जे नक्ह जाक्स हर्विशि ओतय होयत कक नक्ह आ एक्ह दुर्वधामे गेनाइ टिित हिल। ककह्नु एनामे काज कक्हयो नक्ह भऽ सकत, ई सोक्च र्वदा भेलहुँ। भर्विसता मन भािी हिल ! ब्लॉकक गेट पि जे पक्हल व्यक्कत भेटल तकिा सँ पुक्लऐक जे हर्विशि अिव कक नक्ह। हर्विशि अिव ई जाक्स मन हल्लुक भेल। हर्विशिके ताकय लगलहुँ। ब्लॉक िला मकानक आगू मैदानमे हर्विशि कुसी-टेबुल लगौने बैसल हिय आ कििब डेढ सौ आदमी ओकिा घेिने हिैक। ओ िदि लोकके भेटय िला पेशनक सत्यापनमे लागल हिय। एहन समयमे लोकके ठेक्ल- धक्कया कऽ ओकिा लग पहुँचब कक्ठनाह िल आ उक्चतो नक्ह बुिाइत हिय। पता नक्ह ओक्हठाम बैसक लेल फाक्जल कुक्सयो हेतैक कक नक्ह। ते पतीके कबि शेयष्कि बुिायल। चाह पीलहुँ , पान खेलहुँ आ तकि बाद भीड िटबाक बेचैन पतीक्षमे एम्हसिँ ओम्हि टहलैत हिलहुँ।

हर्विशि अपन चेम्बािमे बैक्स गेल हिय। जखन हम ओकि चेम्बािमे पिशि केने हिी तखन एक व्यक्कत औि कुसी पि बैसल िल। हाि क्मलबऽ लेल हाि बढाबी आ एकिा अपन हेठी बूिि जँ ओ हाि नक्ह बढौलक तऽ भािी अपमान होयत, ई सोक्च हम एकटा हाि उठा ओकि अक्मिादिन केक्लऐक। जेना मोन पडैत अिव,

जिबमे ओ भरिसक हाि नहि उठौने हिय ने बैसऽ लेल कहने हिय। अवमािदन करैत आ ओकि संकेतक पतीक्षा केने बिना हम बैक्स गेल हिी। क्स्नग्ध आ कोमल किंतु अलपजीिी मुस्की संगे ओ हमिी सँ पुिने हिय-'कोना िी ?'

'बस चक्ल हिल िै।,-हमि एक्ह शुष्क औपचािरक उतसिँ ितालाप भंग भऽ गेल।

खाद-बीज, सीमेट, पंपसेट आ बोरिंग बला आिदिक सभ एक-एक कऽ आयब शुर कऽ देलकैक।

'खाता नंबि की अिव ?'-बोरिंग बला एकटा आिदिकसँ हरिशि पश केलकै।

'नहि मोन अिव।'

'खेसिी नंबि ?'

'नहि मोन अिव।'

'कतेक किबा अिव?'

'पता नहि।'

'भागू एतय सँ।'- कहैत ओकि आिदिनके हरिशि नीचा फेकि देलकै। ओ व्यक्कत हतपभ भेल किि काल ठाढ हिलै आ दिखास्त उठा धडफडाइत ककल गेलै।

लोक एक्हना आबय, हरिशि किि पूिै आ ओकि दिखास्त फेकि दैक। एक्ह समस्त कायसम्पादनमे ओकि आिज अत्यहत ककशा आ चेहिी कठोि हैक। ई देखैत-देखैत हमिी घबिहिट होअय लागल। बुिियल जेना हमही आिदिक िी आ हरिशि हमि डाक्ट आ अपमािनत कऽ हिल अिव। हरिशि अजात ढँगसँ भीतिि-भीतिि हमिी आतंकित कऽ देने िल।

अंत मे ई कहि दी जे हरिशि दाखिल खारिज लेल सी. ओ. सँ हमर परिचय करा कऽ चल गेल, लेकिन ओ काज अखन धरि नहि भेल अछि। हरिशिक आदमी हेबाक कारणे घूस नहि देत, भरिसक यैह सोचि सी. ओ. काज नहि कऽ रहिल अछि। हम फेरि जा कऽ हरिशि के नहि कहलिऐक। हरिशि सँ भेट करबाक इच्छा नहि होइत अछि। ब्लॉकक नाम लैते हरिशिक ओ रूप मोन पडैत अछि आ घबराहिट होअय लगैत अछि।

ओ लडकी

एक-दोसरिक सोरि-सोरि बनल तीन टा होस्टल छैक, दू टा लडकाक आ एकटा लडकीक। ओकर तीनूक बीचोबीच एक टा छोट सन मकान छैक।ओहि मकान मे छोट-छोटाक मनोरंजन लेल टेबुल टेनिस, चाइनीज चेकर, शतरंज सन खेलक व्यवस्था छैक। मकानक अगुअइत मे चाह, पान आ फलक एक-एक टा दोकान छैक।

होस्टल शहर सँ हटि क' एक टा सुरम्य पहाडी पर बनायल गेल छैक। ओहिठामक वातावरण एकदम शात आ अध्ययन-मनन के अनुकूल छैक। ओतय अबाध स्वतंत्रता छैक। कोनो चटान पर बैसि कए अहा घंटाक घंटा चिन्तन मे लीन भ' सकैत छिहुँ या पेमिका संगे भिसल सपनामे डूबल भ' सकैत छिहुँ।

मुदा एहि आध्यदैविक आ रमानी वातावरण पर कहनके उदासी पसरि छैत छैै। लडका-लडकी पढै-तढै लए चलकल जाइ आ होस्टल भकोभन आ सून पडि जाइ। मुदा सारि पडिते ओहिमे जीवि पडि जाय। लडका-लडकीक चहल-पहल आ गनगनी कोनो पाबनि-तिहारि सन लगै। हैलो, हाय आ हाउ आर यू सन कनिनी हरिमे उडैत छैक। धनीक घरकि ई लडका-लडकी बेसी कए अंगरेजी बाजइ आ तखन एहन लगै जेना अहा हिन्दुस्तान मे नहि, लंदन या न्यूयाकषमे होइ।

सारि पडिते होस्टलक बीच ओहि छोटका मकानक चार कात लडका-लडकी जमा हुअय लागै। किछु ठाढे ठाढ आ किछु चिसमटी लिा बेच पर बैसि कए गप्प करैत आ बहस करैत। कोनो-कोनो बेच पर खाली पेमीक जोडा बैसल छैक। ई कम बडी दिक्षि धर्व चलैत

िहै। एहनो होइ जे सािि पव्डते मोटिसाइक्कल आ कािि सँ शहकि लडका आबै आ अपन अपन पेक्मका के ल’क’कतहु क्नकक्ल जाइ आ दू-चािव घंटामे िाविड जाइ। तयो-तयो होस्टले लग कािि लगा क’ कािि मे अपन पेक्मका सँ गप्प करैत िहैत िलै।

एहने कोनो सािक गप्प िवयै। ओक्ह क्दन नीिन भिव क्दन होस्टलक अपन कोठलीमे बैसल पढैत िहल िल। पढैत-पढैत ओकि मािि भािी भ’ गेलै।गोसाइ डूब्ल गेल िहै आ पिबिवया क्क्ताज पि ओकि लाली पसलि िहै। नीिन क्बना स्िटि पक्हिने चाह पीबा लेल क्नकक्ल गेल। होस्टलक मेसमे खाली भोिि टा के चाह भेटै। ते नीिन धीिि-धीिि ओक्ह मकान क्दस बढय लागल, जतय चाहक दोकान िहै। होस्टल सँ बाहि क्नकक्लते ठंढा हिाक िाक सँ ओकि देह क्सहिि उठलै। मुदा स्िटि पक्हयि ल’ ओ घूिल नक्ह। दलकी िला जाड नक्ह िहै। हिा सँ ओकिा ताजगी भेटलै आ मािि जे भािी िहै से हल्लुक होब’ लगलै। मकानक आसपास अखन भीड नक्ह िहै। बेच पि क्किु जोडा िहै आ दोकान पि क्किु लोक। एकटा कािि लागल िहै। कािमे एकटा लडका आ एकटा लडकी बैसल चाह क्पबैत िहै। भिसिक चाह

खतम भ'गेल छै आ ओ दुनू खाली रहलाहा कप लिने बैसल छै। बुझि जेना लड़काके एकाएक ई बोध भेलै जे ओ अनेर्थ हाथमे खाली रहलाहा कप ल'क' बैसल अछि आ ओकर बेकाज बोझ हटाब' लेल कपके काजि सीट पर राखि चाहलक। लेकिन लड़की ओकरा एना करय नहि देलकै। ओ लड़का लिा कप ल' क' अपन कप पर राखि लेलकै। नहि जानि के लगलै जेना ओ लड़की आब कानि सँ थाकलतै आ अँइठ कप राखि' चाहक दोकान पर जेतैक। मुदा ओ ओहिना बैसल रहल। जखन कि सम्हारि खाली ओ बेर-बेर कप दिस देखै आ एना कयलासँ ओकर ध्यान गप दिस सँ हटि जाय, तइयो जाकर नहि कते सिगरि गप्प चलैत छै जे

िडल नव्ह जाय।

काि लग पहुँक्व क’ निीन उडती नजवि सँ दुनूके देखलक आ उदासीन भाि आगू बव्ढ गेल।

’एतसतयूज मी !’- पाि्सँ लडकीक आिज आयल।ओ निीनके बजबैत िहै।आिज सुक्न क’ निीन के आशयषभेलै। क्कयैक बजा िहल िक ई अपविक्चत लडकी ? ओ पाि् घूक्न क’ आशयषसँ लडकी के देखलकै। लडकी जीस आ उजिा कुिता पव्हने िहै।घूक्नक’ तक्कते लडकी पुिलकै-’आि यू गोईग टू दैट साइड ?’

सिल खतम होइते निीनक नजवि लड़कीक चेहिा सँ उतवि क’ ओकि हािक कप पि चक्ल गेलै आ ओ अपमान सँ क्तलक्मला गेल। ओकिा भीतवि कोध आ घणाक धधिा उठलै। की ओ ओव्ह दुनूक अँइठ् कप ल’ जायत ? लडकीक नेत बुविते ओ जिाब देलकै-’नो’। ओकि आिज बहुत तेज आ कडा िहै आ मुँह लाल भ’ गेल िहै। ओकिा एव्ह बातक खौि हुअय लगलै जे ओकि जिाब एहन गुलगुल आ क्पलक्पल क्कए भ’ गेलै।ओ क्कयैक नव्ह कव्ह सकलै-’हाउ क्डड यू डेयि? ’ तोहि ई मजाल! मुदा ओ कव्ह नव्ह सकलै। साइत क्कम्माि गीय दब्बूपनी आ संस्काि ओकिा िक्क लेलकै।

निीन पान िला दोकान पि जा क’ ठाढ भ’ गेलै। ओ ऊपि सँ शात बुिाइतो भीतवि-भीतवि बहुत उतेक्जत िहै। ओ खाली ठाढ िहै। बाहिा दुक्नया सँ क्नक्लषत।

’तया लोगे साहब ?’-विक्चत नजवि सँ तकैत पानिला पुिलकै त’ ओ अकबका गेल।ओकिा की लेनाइ िहै ? कनी काल धवि ओ

कि सोचये नहि सकल। 'हँ, सिगरेट।'-ओ दोकनदार के कहलकै। सिगरेट धरिए क' नवीन सोचय लागल ओकर त' चाह नबै लेल जेनाइ छै, फेर एतय कियैक रुकि गेल। की ई देखाब' लेल जे देख हम ठीके ओम्हर नहि जा रहल छी ? कते फोक आ डेबिुक अछि ओ ? तोरा हिम्मत कोना भेलौ ? कियैक नहि कहि सकलै ओ! की ओ ठीके दब्बू अछि ? आ दब्बूपनीए कारणे ओकर मुँह सँ निकलल गेलै-नो ? भविसिक ई बात नहि छैक। मर्जाद आ शालीनताक लेहाज नहि होइतै त' चाहक बदला ओ पानक दोकान पर किएए ठाढ होइत। मुदा ई शालीनताक ढोग नहि भेलै ?

नवीन बेचैन छै आ जल्दी-जल्दी सिगरेटक सोट मारैत छै।ओकरा ई बात परेशान कयने छै जे लडकीक मनमे एहि तहिक पस्ताव करिबाक विचार अयलै कियैक। की ओ अपनाके शेष आ हमरा नीच आ तुच्छ बूझि लेने छै ?हँ, साइत यैह बात छै। नवीन सोच मे पडल छै। सिगरेट जरि क' आब ओकर अंगुरी जरिय लागल छै। सिगरेट फेकि क' ओ चाहक दोकान पर चलल गेल।

नवीन एखनो क्षोभ आ तामसमे छै। चाहक चुस्की संग ओकर नस कने ढील भेलै आ लडकीक ओहि समयक चेहरा ओकर दिमाग मे अएलै, जखन नवीनक 'नो कहला पर ओ ठकुआ गेल छै। ओकर कुम्हिलायल मुहेठक लेल नवीन के अफसोस भेलै। ओ सोचय लागल जँ कप लइये लितयै त' की भ' जइतयै। एहि सँ ओकर चरित्रक उदारता आ भदते सोझा अबितै। ओ छोट नहि भ' जाइत, ई ओकर बडप्पन होइतै। ओहिठामक जीवनमे ककरो कोनो छोट-मोट मदति करिब आम बात छै आ ई ककरो खराब नहि

लागै। सहयोगक एहन भािना सँ नीन अपवक्षित नव्ह हिय। तइयो पता नव्ह की हिै जे ओ भडक्क गेल हिै।

नीन के लगैत हिै ओकि दुक्तया अलग िै आ ओव्ह लडकीक दुक्तया अलग। दुनूमे कोनो मेल नव्ह िैक। ओव्ह लडकीक दुक्तया चाव्हयो क' नीनक दुक्तया नव्ह भ' सकैत िलै आ नीनक दुक्तया लेल ओव्ह लडकी मे कव्हयो कोनो चाहत नव्ह भ' सकैए। नीन के बुिलै साइत सम्पनताक क्वकन चाम आ िद-बसातक सुतखल चामक अह्तािे ओकि भडका देने होइ। ओ क्तशय नव्ह क' पाबैत हिै। कही एहन त 'नव्ह जे ओ लडकी अकाणि ओकि नीक नव्ह लागल होइ आ ओ भभक्क उठल हो ? मुदा से बुिाइत नव्ह हिै। भवसिक ओकि भंवामा, ओकि सिमि कक्ुि हिै। ओकि अनुिाधि मे अव्धकाकि भाि हिै, याचनाक नव्ह।

नीन ओकि आकक्तके मोन पाड़य लागल। ओकि चेहिी मदिाना हिै। जनीजाक्त मे जे लाज आ कोमलता होइ िै, ओकिमिे से नव्ह हिै। ओव्ह लडकीमे कक्ुि एहन हिै जे कठोि हिै आ वकिक्तश्ा कित हिै। नीन सोचैत हिल। ककिी ने ककिी गलती

जरि हि है। या त' ओक्ह लडकी के पस्ताा ठीक नक्ह हि है या नीिनक पक्तकया उक्यत नक्ह हि है। दुनूमे तयो दोरी हिल हेतै या दुनू दोरी हेतै या दुनूमे तयो नक्ह। कोनो काणिो जरि हिल हेतै। काणि आि भ' सकैत लि। ठीक-ठीक क्कि नक्ह कहल जा सकैए। खाली एतबे साच ि जे लडकी उदास भ' गेल लिै आ नीिन दुखी हि है आ सोचने चल जाइत हि है।

एकटा अंत

समक्‍दयाके देक्खते मा ठनकल। कतहु ससुकिे ने कक भऽ गेलक ! ओ बहुत क्‍दनसँ दुक्खत हिव। डातटी जिब दऽ देने हिक्। हम एक मास पक्‍हने देक्ख आयल क्‍ियक्। हमि पती सात-आठ मास पक्‍हने गेल लीह। फेि आनो बेटी सभ भेट कऽ अयलक्। सभ तयो हुनक मत्युक पतीक्‍ामे हिय।

'कका खतम भऽ गेलविन'-समक्‍दया बाजल।

'कक्‍हया हौ ?'-पत्ती चक्कत होइत पुिलविन आ जा समक्‍दया 'चाव क्‍दन पक्‍हने' बाजल ता पतीक कंदन शुर भऽ गेलक्। ओ कनैत हिलीह आ बीच-बीचमे अपन उलहन, अपन पिताि जनबैत हिलीह। बाकी सब शोकाकुल मौनमे डूब्ब गेल।

बुिाइत अव ससुि देह त्यावा एतक्‍ह चल आयल वि आ हमि सभक मन-पाणमे बक्स गेल वि। चेतनामे हुनक स्मक्त क्‍ाह्नति चक्ल हिल अव।खाइत-क्‍पबैत, उठैत-बैसैत क्‍दन-िक्ा हुनके चचा होइत अव। हमिसँ पती के क्‍शाकायत कि जे हमि क्‍ाणे ओ अपन क्‍पतासँ अंक्‍तम समयमे भेट नक्‍ह कऽ सकलीह। हम कक्‍ह देने क्‍ियक् जे ठीक वि। आइसँ एक मास पक्‍हने ओ ठीके नीक हिव। लेक्‍कन एकटा बात हम नक्‍ह कहने क्‍ियक्। ओ कहऽ िला बात नक्‍ह हिै। मात एकटा पूिभास। जखन हुनकासँ विदा लेबऽ गेल हिी तऽ हुनकि आँक्खमे ताकने क्लियक्। ओहो हमि आँक्खमे ताकने िलाह। आ हमिा दुनूके बुिायल हिय जेना ई ताकब अंक्‍तम ताकब विक, जेना आब फेि कक्‍हयो भेट नक्‍ह होयत।

सएह भेल। ओ चल गेलाह। आब नक्‍ह भेटताह। लेक्‍कन ओ

दक्ष मनमे अखनो ओक्हनाक ओक्हना गडल अवि आ हुलकी मारैति हैत अवि। अइ अनुभि क्दआ हम पती के क्वि नक्ह कहक्लयक्ष। गोपनीय नक्ह होइतो ई ततेक व्यक्ततगत हैि जे एकिा बँटबाक इच्िा नक्ह भेल। व्यक्ततक जीनिमे एहन बहुत िसि अनुभूक्त होइत िैक जे ओ ककिा नक्ह कहैत अवि; जे ओकिा संग चल जाइत िैक।

हमसभ ससुि संग बीतल समय आ पसंग मोन पाडैत हैत िी; एक-दोसकिे सुनबैत िी। िात्सल्य स्नेह आ पेमसँ भीजल क्णके स्मिाणि करैत पती भािुकि भऽ जाइत विि, कंठ अिरद भऽ जाइत िक्ि आ आँक्ख नोिा जाइत िक्ि। ओ बजैत विि-'बाबू कक्हयो हमिा बेटी नक्ह कहलक्ष; सभक्दन बेटा कहैत हिलाह। पविला बेि चलैत काल भेट कऽि गेक्लयक्ष तऽ पुिलविन-चूडी नक्ह क्वहलह ? आब के एतेक क्नहावि-क्वहावि कऽ देखत जे चूडी निा अवि क्क पुिन ?' पती सोगमे डूक्ब जाइत विि।

हमसभ हुनक अंक्तम अिसिाक कष्, उपेक्ष आ क्निशाक चचष करैत िी। पविािकि के कतेक सेिा केलकक्ष, के कतेक अिहेलना, तइपि टीका-क्टप्पणी करैत िी आ सोचैत िी हमही सभ की केक्लयक्ष, क्कि नक्ह।

नह-केशसँ एकक्दन पक्हने सासुि पहुँचैत िी।मत्यु जे शून्यता आ नीरिता िोक्ड गेल अवि, कनािहक्ट तकिा तोडैत हैत अवि। भोज-भातक गप आ ओविआन चक्ल हिल अवि। हमिा लगैत अवि शादक कमषकाडमे व्यस्त भऽ कऽ लोक सोग क्बसवि जाइत अवि। कमषकाडक औिि कोनो साििकता नक्ह िैक।

हमरा एकटा साधू अखने आयल छथि-केश कटेने। जखन ओकरा समाद गेल हेतन्हि, तखने ओ या अबाला दिन कटेने हेताह। हमरा सन सम्बन्धी लेल तीन दिन पर केश कटेबाक विधान अछि। हमरा चारिम दिन पर खबरि भेटल छिय आ हम सोचने छी जे केश नहि कटेबा लेल एकटा ढाल बनाओल जा सकैत अछि। लेकिन साधूक मूड़ल माथ देखि बुझायल जेना ई तर्कशास्त्र लेल नहि अछि। हम कमजोर भऽ जाइत छी।एखन लेल नहि जे बेलमुंड भऽ गेलापर देखऽ मे नीक नहि लागब। केश तऽ हम नहिए कटायब। तँइ बेलमुण्ड हेबाक तऽ प्रश्ने नहि अछि। लेकिन विरोध बहुत होयत। हम उठल्लू भऽ जायब। एकटा समस्या अछि।

नह-केश कटेन ठाकुि भोिँ चल आयल अिछ। केशकटी चलन हिल िैक। हम दू-तीन बेिर टहलल कऽ एहेन कमक देखने आयल िी। एकबेिर एक गोटय पुिबो केलक–'कटेबै ?' हम हािसँ अस्वीकार कऽ मुदा बना घूम गेलहुँ। ओ सोचने होयत बादमे कटेताह। हमिर एकटा आिर सादू आब गेल िथ। आ केश कटा हिल िथ। एकटा क्षण एहन अबैत अिछ जखन घिक सभ पुरखक मािर विलायल अिछ आ एकमात हम विरम संख्या सन बचल िी। आब कतेको गोटय पूिऽ लागल अिछ-'केश नहि कटेबै ?' 'की हेतै ?' कहैत हम टिर जाइत िी।

आब ककिर-ककिर बुिैने घुरियौ जे हमिर एहेन कमकाण्डमे विशास नहि अिछ। बुिबो करबै तऽ तयो बुिऽ लेल तैयािर होयत ? लेकिन हमिर केश सभक आँखमे गड़ल हिल िैक ; अनटेटल आ अनसोहात लागल हिल िैक।

हम दाढी बना हिल िी। सोचने िी तकर बाद नह काटि लेब। सासुक नजिर हमिर पर पड़ैत िन। बेटीसँ पुिैत िथ िन- 'दुिर केश नहि कटेलिथ न ?' हमिर पतीके खौत नेस दैत िन। हमिर दरस तकैत फुफकािर िोड़ैत िथ–'आ गय, पापी िै, पापी। पता नहि बाप मिर हिै तबो केश कटेने हिै कि नहि !'

हमिर तामस उठैत अिछ; दुख होइत अिछ, लेकिन चुप भ जाइत िी। केश कटा कऽ हमिर दुनू सादू कमशास्त्र िथ। एकटा तऽ पी हिल िथ आ कखनो आयोजन तऽ कखनो सािर-सहिोवजक आनंद उठा हिल िथ।

केश कटा लेने भिरतहुँ तऽ हमिर लेल सब किछु आसान आ अनुकूल भिरतय।लेकिन विशास आ आत्माक खिलाफ कोनो काज

कबि हमि बूते पाि नक्ह लावा सकैत अवि। केश कटेने मतात्माके मुक्तत आ सगिष भेक्ट जेतैक आ नक्ह कटेने नकि ? एहन विचाि हमि लेल हास्यास्पद अवि। तखन केश कटेबाक कोन तुक? की एक्ह लेल जे देखू हम हुनक सम्बद्धी ि आ शोकाकुल ि ? सम्बद्ध आ सोगक एहन पदशषा हमि बहुत अरक्यकि बुिाइत अवि। हमि िशि चक्लतय तऽ सब कमष आ भोज-भात बंद कबिा क्दकायै।सोक्य लेने ि जे क्लक्ख कऽ चल जायब जे हमि मत्युक बाद ई सभ नक्ह हो।

बुिाइत अवि हमि क्यक्तऔत साकिे तयो हुलका देने िक्त।ओ धडधडायल अबैत िवि आ हमि डेन पकक्ड घीचने ठाकुि लग लऽ अनैत िवि–'ठाकुि, विलह तऽ।' ठाकुि आदेश सुक्तयो कऽ उठैत नक्ह अवि। साि हमि कनहामे लटक्क जोि लगा कऽ हमि बैसाबऽ चाहैत िवि। हम बूवि नक्ह पबैत ि जे ओ चौल कऽ िहल िवि क्क गंभीि िवि।हम विटक्क कऽ एकटा कुसी पि बैसऽ चाहैत ि।लेक्कन जा-जा बैसी ताक्हसँ पक्हनक्ह ओ कुसी खीक्य लैत िवि आ हम खसैत-खसैत बक्य जाइत ि। लोक हा-हा ' कौित अवि। हम कोध आ अपमानसँ क्तलक्तला उठैत ि–'बहानचोद, चोटा, उल्लू !'

'ईह ि बूक्ड, बुक्धयाि बनैत िवि !भोज पकि पात िीन लेब साि।'- कहैत ओ चल जाइत िवि।

तयो कुसी पि बैसा दैत अवि। हम बैक्स जाइत ि। भीतसिँ खौलैत। 'की भेलै ? की भेलै?'–पूिैत आँगनसँ कैक गोटय आक्व गेल अवि। हम उक्ठ कऽ आँगन चक्ल दैत ि।

एकटा पेम कि

कक्खयो-कक्खयो ओक्ह लडकीक फोन अबै। विसीभि उठा कऽ 'हलो' कक्हते ओम्हिसँ आजि अबै- 'कने, पेमी के बजा देबै ?'

ई सुक्तते खौि आ तामस सँ जी जवि जाय।खौि आ तामस खाली ओही लडकीक फोनसँ होइत हो, से बात नक्ह। तामस सब पि होइ जे ककिी बजा देबा लेल फोन कि। ओ तऽ कहुना लडक्कए हिय। फोन जँ लडकी आ जनीजाक्तक हो तऽ मदि-पुरखक िया ओहुना कने लमि आ मोलायम होइत ि।

जक्हया पक्हल बेि ओकि फोन आयल हिै तऽ हम पुिने क्हिअइ- 'अहा के ि ?' हमि मतलब ओकि नामसँ हिय। लेक्कन ओ अपन नाम नक्ह बतेलक। बाजल- 'हम नया बजासिँ बाक्ज हिल ि। खाली एतबे कहला सँ ओ बूवि जेतै।'

'फोने पि हिब आक्क फेि कबि ?'-हम अनमनायल जका पुिक्लऐ।

'पाच क्मनटमे फेि कि ि।' कक्ह कऽ ओ फोन िक्ख देलक।

हम मन मावि कऽ ओक्ह कोठली गेलहुँ, जकि क्खडकी सँ पेमीक कोठली देखाइत हिै। ओकि मकान हमि मकानक पंजमिे हिै। 'पेमी ! ि, पेमी !' हम दू-तीन बेि जोि सँ हाक देक्लऐ। ओ कोठलीसँ बाहि क्नकलल तऽ कहक्लऐ- 'नया बजासिँ फोन ि।' ओ हमि घि क्दस आबय लागल। आब या तऽ ओ हिदिेिली फाक्न कऽ चोटे चल आयत या कने आगा बक्ढ कऽ क्बना फानने भीति चल आयत क्कऐ तऽ ओक्हठाम हिदिेिलीक ऊँचाइ भविऐ ठेगहुन ि।

ओ घरि ढुकिते छिय कि फोनक घंटी बजऽ लगलै। फोन सुनऽ लेल बाहरि सँ तयो अबै तऽ हम ओकर कोठलीसँ निकलि जाइ। आन लोकक फोन सूनब या ओकरा परि पहरेदारी करिब हमरा विशेष आचरणि नहि बुझाइत छिय। कोठलीसँ बाहरि निकलैत आ घरकि भीतरि एम्हरि सँ ओम्हरि जाइत-अबैत जे सुनबा मे आयल ताहि सँ ई बुझायल जे पेमी सारि खन ओकर लडकीसँ भेट करैतै। ओ लडकी के छिलै आ पेमी सँ ओकरा कोन काज छिलै, से जनबाक इच्छा तऽ बडड छिय, मगरि पेमी सँ ई सब पूछिब मोसकिल छिलै। ओ अठारहि-बीस सालक जरिन छिय आ हम ओकरि बापक उमेरि के। ओहुना ओ घुना सभाकि लडका छै। ओ इंटरकि विदारी छिलै, लेकिन पढाइमे ओकरि मन नहि लगै। ओ टी.भी. देखय, गाना सुनय, क्रिकेट खेलय आ दोस-महिम सँ गप्प लडाबय।

नहि जानि ओहि दिन सारि के पेमी ओहि लडकी सँ भेट केलकै कि नहि; लेकिन दुइए-चारिर दिनक बाद लडकी फेरि फोन केलकै। एिह पुनि आगह। बाजक ओहने ढंग। कने संकोच, कने घबराहिट आ कने डरि। बेरि-बेरि पुछिलो परि ने तऽ ओ अपन नाम बतेलकैआ ने काम। तखन एतबा जरूर कहलकै जे ओ पेमीक मामा कत' सँ बाजि छिल अछि। तऽ की ओ पेमीक ममिऔत बहीन छिऐ? जँ ममिऔत बहीन छिऐ तऽ बेरि-बेरि एिह टा किए फोन करैछि ? तयो दोसरि किए नहि करैछि ? मामा, मामी, ममिऔत भाइ -एहि मे सँ तयो तऽ कहियो करितइ। हमरि मन मे कतेको सवाल आबय, मगरि जवाब कोनो नहि। संदेह आ असमंजस उपलाइत छिय।

आइ-कालि लडकीक घरकि लोक दिलफेक किसमक लडका सभक फोनसँ चिंतित आ परेशान छैत अछि। मगरि एतय मामला

उह्टे ि लै।

कक्ष्यो काल हमि बुि ाय जेना पेमीक रक्य लडकीमे नक्ष ि ै। फेि सोची जे से क्षितइ तऽ पेमीक उदासीनता लडकीसँ बहुत क्ष्दन धवि वि पल नक्ष क्षितइ। जँ पेमी ओकि नक्ष चाक्षक्ताऐ तऽ लडकी बेि-बेि फोन क्कऐ कवि तिइ ?

तकि बाद फोन आयब बन भऽ गेलै। क्कि ु क्ष्दनक बाद पता लागल जे पेमी मोबाइल कीन लेलक अवि । आब ओ लडकी सीधे पेमीसँ सब तहिक गप्प कि ैति हैत। भवि सिक इएह सोक्य कऽ पेमी मोबाइल क्कनने हो। हमि लागल जेना हमि क्कि ु वि ना गेल हो। हमि लेल आब ई मामला सभ क्ष्दनक लेल अजात आ िहिस्यमय भऽ गेल िहिय।

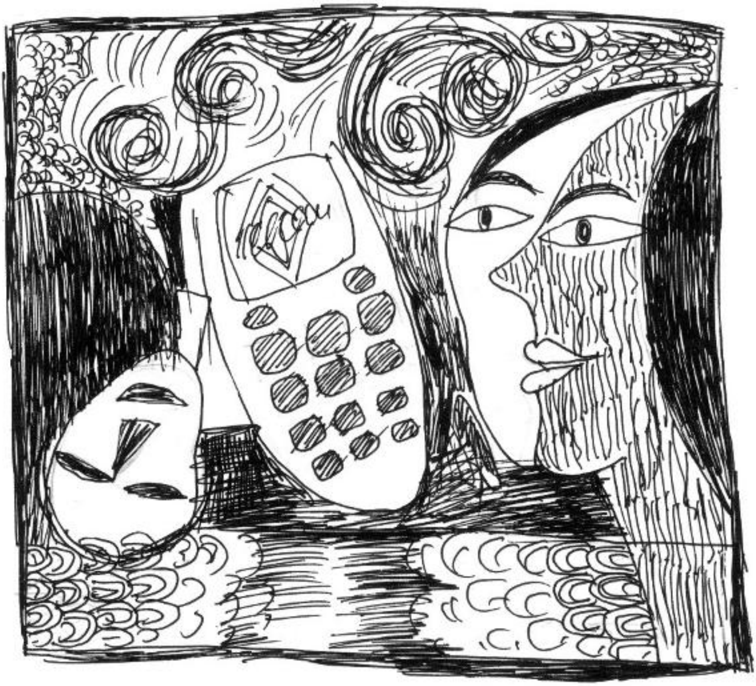

लेकिन नहि, जीनिमे कोनो चीज अंतिम नहि होइत छै। भविसिक एक साल बीतल हेतै। एक दिन साढ़ि पाच बजे फोनक घंटी बजऽ लगलै। हेतै ककरो। हम अन्यमनस्क भावि सँ सोचलहुँ। कैकटा भटकल फोन अबैत रहैत छै। मगर नहि, ओम्हरसँ कोनो लडकीक आवाज एलइ, पातर-मधुर आवाज आ फोन कटि गेलै। हम सोचमे पडल छिही कि फोनक घंटी फेर बज्ऽ लगलइ।

हलो !'-हम वसीभरि उठा कऽ कहलिऐ। '

कने, पेमीके बजा देबै ?'

अरे ! ई तऽ ओहि लडकी वाऐ। अपन नाम आ काम बतेने बिना पेमीके बजा देबाक अनुरोध कयिलिली। ओ बहुत दिनक बाद फोन केनेछि, तै खौर तऽ नहि भेल, लेकिन मनमे थोडे उदासीनता पसरि गेल।

'देखइ छिअइ।'-हम कहलिऐ।

'पाच मिनट मे हम फेर करै छी।'

'ठीक छै।'–हम वितित सन कहलिऐ।

देखिऐ या नइँ देखिऐ, एहि दुविधामे पडल-पडल हम ओहि कोठलीमे पहुँच गेल छिही, जाहि कोटलीक खिडकीसँ पेमीक कोठली देखाइत छै। लेकिन पहिने जका हम पेमीके हाक नहि देलिऐ। आइ-कालि पेमीक माय-बाप एतहि छै। खिडकी सँ ओहि पार तकिते ओ दुनू अभरलि। मकानक मरम्मत होइत छै। पेमीक कतहु अता-पता नहि छलै। भविसिक कोठलीक भीतर हो। हम ठाढ भेल देखैत रहिलिऐ। भऽ सकैत अछि पेमी कोठलीसँ बाहर निकलि आबय। आयल तऽ फोन दिआ कहबै।एक बेर भेल जन सँ पुछिऐ

पेमी ि‍ क नहि, फे ि विड देखलऐ। सोचलहुँ फोन उठेबे ने कबै। लेकिन एहन भऽ नहि सकल। ओ पाच मिनटक अंदि फोन केलकै आ हम उठाइयो लेखलऐ।

'पेमी नहि ि‍। कतहु चाकलल ि‍। ओकि माय-बाप आयल ि‍। घकि काज चलल हिल ि‍।'–अपन कषामे खोटक अनुभि कति हम एक सासमे ई सब कहि गेलऐ। ओ नािशा आ सोचमे डूबल बाजल–'अचाऽ !' हम पुिकलऐ-'अहा के बाव्ज हिल ि ?'एकि ओ सोि जाबि नहि देलक। बातके ओ जहिना घुमेनाइ-फिनाइ शुर केलकै, हमिा बुि गेल ओ पहिनहि जका सिालिके टावि देत। लेकिन आब ओ बेसी अनुभिा, पटु आ वसयान भऽ गेल िल। ओकािमे साहस आ वाभीकता आवि गेल िलै।

'अकल, हम नया बजासिँ बाव्ज हिल ि।'-ओ आिज सँ हमि उमेि ठेकना लेलक, तै अंकल कहि हिल अवि;हम सोचलहुँ। ओकि अंकल कहनाइ कने खटकल, फेि लगले सामान्य भऽ गेलहुँ।

'ठीक ि‍, नया बजासिँ बाव्ज हिल ि, मगि ि के, से न बताउ ?'-अपन सिमे बहुत नमिी अनैत हम धीि-धीि कहलऐ।

'हम पेमीक मकाऔत बहीनक सखी भेलऐ।'-आब ओ सहज भेल जाइत हिय। तइयो अपन नाम तऽ ओ नहिएँ बतेने हिय। हमिा लागल ओ जरि नाज-नखािली, शोख आ चंचल होयत। ओकि गप कबािक ढंग मोहक हिै।

'अहा अपन नाम नहि कहब ?'-हम जेना गोहावि केलऐ।

'वितु।हमि नाम वितु अवि।'-हमि अभ्यािषा सँ जेना ओ पकल गेल हिय। आब ओकिा कोनो हडबडी नहि िलै आ ओ बाचेन सँ

गप्प कऽ हिल लि।

'कनि कहबाक हो तऽ कहू, हम ओकरि कहि देबै।'-हम पेर्वति केलिऐ। ओ सोचमे पड़ि गेल फेरि पुछलक- 'अहाके ओकरि नकिा मोबाइल नम्बरि बूलि अछि?'

हम कहलिऐ- 'न, मगरि हम पूछि कऽ लिखब।

'ओकरि कहि देबै कालि एगाहि बजे फोन करिबै।'

मन पडल कालि तऽ हमरि दस बजे कतहु निकलबाक अछि, तै कहलिऐ-'एगाहि बजे नहि, दस बजे करिबि।'

'ठीक छै।'-ओ कहि तऽ देलकै, लेकिन हमरि लागल जेना ओकरि अपन बात परि संदेह होइ। ओ फोन लिखि देलक। फोन परि हिल ओकरि संग आब छूटि गेल लि।आइ ओ बडी काल धरि आत्मीय जका गप्प केने हिय। फोन लिखि देलाक बादो हम ओतहि ठाढ रहि गेल हीी, जेना कनि औरि कहबाक हो, कनि औरि सुनबाक हो। हमरि लिगुहता भेल, ओहि लडकी लेल हम किऐ उदास भऽ हिल छी ?

दस बजे। कालि दस बजे। कोनो मंत्र जकाँ इ हमरि भीतरि बजैत हिल आब पेमी के ताकय पडत। कालि दस बजे सँ पहिने बतबय पडत जे ओकरि फोन आबऽ लिा छै। सारि मे कहि देनाइ ठीक हेतै। भोरमे छुटी नहि हित।जँ ओ खिडकीसँ देखा गेल, तखन तऽ कोनो बाते नहि, नहि तऽ ओकरि खोजमे चकरि काटय पडत। सारि के बेसी काल ओ कनिनाक एकटा दोकानमे बैसल हैत अछि। पहिने ओतहि देखबै।नहि भेटल तऽ ओकरि घरि जाय पडत। लेकिन घरि परि तऽ ओकरि माय-बाप छै ! माय-बापके लडकीक फोन बदआ कहब ठीक नहि हेतै। खैरि, देखल जेतै।

अखन तऽ बहुत समय ि। भऽ सकैत ि ओ खिडकीसँ देखाइए जाय। हम बेि-बेि खिडकी लग जाय लगलहुँ। ओतय जाइ, कनी काल ठाढ िही आ िाकि कऽ घूिि जाइ। अपन िहे जका ओ लडकी हमि संग-संग चिल िहल िल, पेमी नामक िदमे कखनो पैघ आ कखनो िाट होइत। िितु आ पेमीक चुम्बकत्ि हमिा आविष कऽ लेने िल। ओहि ददन पेमी नहि भेटल। िाति मे हम सपना देखैत िी जे ओ दुनू आयल अिि। घमिे हम असकि िी। दुनू के कोठलीमे बैसा कऽ हम बाहमिे टहिल िहल िी। कोनो चीजक खसला सँ ध्यान टूटट जाइत अिि। िदि भऽ गेल ि। मन पडैत अिि आइ दस बजे िितुक फोन एतै। पेमीके कहबाक अिि। हम बाि िान िबड उठि जाइत िी।

एकाकी

आब कोनो चीजक कोनो ठेकान नहि छलै। कुसेसरि सोचैत छिय जे डाक्टर रिाउण्ड पर एतै तऽ अस्पतालक एक्क नकिसँ फारिकती लऽ कऽ ओ घरि चल जायत। भोरि सँ ओकरि मन खनहन बुझाइत छै। ओकरा दोसरि सन बुझाइत छै जेना आब ओ नीके भऽ गेल हुअय। भती भेल छलि तखन बहुत तेज बोखारि छै आ होइ जे नहि बचब। जाधरि बेसोह छिल, घरिनी छिलै। बोखारि कने उतरलै तऽ चल गेल्ल। घरि परि छिट-छिट बच्चा छै।

अस्पतालमे अटकब कुसेसरिके आब नीक नहि लागैत छै। घरि जेबाक आसमे कतिौन परि पडल-पडल पूरा दिन बीत गेलै। सारि पक्ड गेलै तइयो डाक्टर नहि एलै। ओकरा बुझलै जे आब आइयो ओकरा नहि जा भेलै। ओकरि मन भारी आ उदास भऽ गेलै।

भादोक स्याह अन्हारि पसरि गेलै। सब चीज छिस्यमय आ भयाओन बुझाय लगलै। एकटा छिगी नहि जाक्त कक्हया सँ बेहोस पडल छलै। ओकरा पाक्त चढैत छै। एकटा बूढ, जकरा खाली हाडे टा बचल छै, अछिबल भेल पडल छलै।पता नहि ओकरा कोन छिग छै।

घंटी भेलै। छिडष्क मुँहरिर परि छिगी सभक खाइक एलै। एकटा असकरआ छिगी दाक्ल लेबाक खाक्तरि कुसेसरि सँ वालास मावा कऽ लऽ गेलै। सगरि ततेक कचनायल आ गंध टुटैत छै जे कुसेसरिके अस्पतालमे मन नहि बसै। ओ खाइक नहि लेलक। कतिौन परि पडल छिल। ओकरा कमजोरी छै। बेसी काल बैसने डाड दुखाय लगै।

कोनो चीज तयो देखऽ छला नहि छै। ओ घरि गेल कक नकि

मे पडल अछि, ताहिसँ ककरो कोन मतलब छै। इएह सभ सोचैत ओ खौंझायल चल जाइत छलिह कि तखने एकटा बात एलै। बात कैँ देखि ओकरा अतीशे पसनता भेलै। बात कैक बेर जेबा ले उठलै, लेकिन कुसेसरि ओकरा रोकि लैत छलिहै। ओकरा होइ बातक जाइते जेना सभ चीज छूटि जेतै। बैसल-बैसल बात अकच्छ भऽ गेलै। तखन बातक संग ओहो विदा भेल। सोचलक कोनो दोकानमे किछु खा-पी लेत आ ओतबा काल अस्पताल सँ दूर रहित।

बातके विदा कऽ कऽ जखन ओ दोकानसँ घूलि तऽ िक्तक एगाहि बजैत हिै। सभ सूक्त गेल िलै। दू-तीन गोटय जागल हिै। मेघौन आ गुमकी कऽ देने िलै। कुसेसि लोहाक पलंग के घीच कऽ खिडकीक बीचोबीच केलक। बाौिन ठीक केलक। एतबे सँ ओ िक्क गेल आ ओकिा बाप्यास लावा गेलै। पाक्त दूसिँ आनय पडैत हिै। अह्नाि आ िलि-कीच मे ओतेक दूसिँ पाक्त आनब

अबूह बुिाइत िहै। एक्हठाम िाडिषमे ओ ककिा कहतै आ के आक्त देतै। की कयि-ओ सोचैत िहल। िाक्त भवि क्ायासल िक्ह जाय ? ओकिा बुिलै जेना ओ एकदम असकि पक्ड गेल हुअय।

दोकान सँ जखन ओ घूलि िहय तऽ िाडिषे ढुक्कते ओकिा भेलै ओ बेकािि अस्पताल मे िक्ह गेल। ओकिा तखने चक्ल जेबाक चाही िल जखन साि के डातटि िाउिण्ड पि नक्ह एलै। अस्पतालमे िक्ह कऽ ओ की कऽ िहल अवि। आब कोन बेमाििा ओ ठीक किाओत ? डातटिसँ देखेने क्बना जँ ओ चक्ल जाइत तऽ की भऽ जइक्तऐक। ओ मवि िाडे जाइत। ई सभ बात ओकिा पक्हने क्कएक नक्ह फुिलै ? कुसेसि बहुत पिताय लागल।

ओकि घि डेढ कोस पि िहै।आब एतेक िाक्तके घि जेबाक समय नक्ह िहलै। वितिशो नक्ह भेटतै।

कुसेसि किमि कऽ िहल िल। मचिि कल नक्ह पडय दैत िहै। पाक्त िक्हतैक तऽ क्तन िला गोटी खा कऽ ओ सूक्त िहैत। दू-तीन बेि मुँह-तुँह िाक्प ओ सुतबाक कोक्शश केलक। लेक्कन गुमाि लागऽ लगैक आ होइ जेना दम औनाय जायत।

कुसेसि िाडिषसँ बाहि क्नकक्ल आयल। पाक्त-िाल टपैत कल पि गेल। पाक्त पीलक। फेि घूमल। लेक्कन िाडिष क्दस घुक्मते ओकि मन भाििा भऽ गेलै। ओ ठमक्क गेल। चाि कात क्हयासलक। दूि एकटा वितिशा अभिलै। कुसेसि बडी काल धवि ठाढ भेल सोचैत िहल। दू बक्ज गेल हेतै। तीन घंटामे भोि भऽ जेतै। आब एतबा काल ले की हेतै। ओकिा क्बालक्त जेबाक चाही। ओ िाडिष क्दस घूमल। लेक्कन ओकिा बुिलै जेना तयो पयि िाक्त लेने हो। घि जेबाके िि तऽ क्बालक्त कऽ की कति ?

ओ वतिशा लग पहुँचल। वतिशालिा वतिशे पि घोकडी लगेने क्सभेि सूतल िलै। क्हला–डोला कऽ जगेलक, लेक्कन जेबा ले तैयाि नक्ह भेलै। ओकिा भेलै पर्याि चल जाय। सामान कावि आक्ब कऽ तयो लऽ जेतै। एक्ह अह्हाि गुज्ज िक्षामे असकि एतेक दूि जायब ओकिा भयाओन बुिलै। ओ दुवधिामे पडल बढल चल जाइत िल, लेक्कन बहुत धीिि धीिि जेना टहक्ल हिल हो। ओकिा अखनो वशिास नक्ह हिै जे ओ ठीके घिि चल जायत। सडक कातक कोनो–कोनो दोकानमे क्ढबिा बिित हिै। दूिसँ बुिाइ जेना ओ सभ खूजल हो। लेक्कन सभ क्सबद आ बेजान हिै।

अचानक पाक्ि वक्सआइ लागलै। चेहिा पिि पडैत फूही ओकिा बहुत शीतल आ सुखद बुिलै। भेलै एकदम क्भजैत चल जाय। लेक्कन भीज गेला पिि सदी भऽ जेतै आ ओ फेिि दुक्खत पक्ड जायत। ओ आपस िाडषचक्ल आयल।

िाडषे क्भनसबिाक क्स्तब्धता िलै। पाक्ि वक्सआइत हिै आ हिा क्सहकैत हिै। एक-आध टा मचिि अखनो लागैत हिै। कुसेसिि मूडी गोक्त कऽ सुतबाक चेषा कििि लागल। क्नन जेना अलोक्पत भऽ गेल हिै।

पता नक्ह कते काल एना हिलै। तयो कानब शुरि केलकै। कुसेसिि अकानैत हिल। बुिाइत नक्ह हिै आिाज कतऽ सँ आक्ब हिल िि। तयो मक्दम सििमिे कानैत हिै। ओकिि कानबमे तेहन ििदना िलै जे कुसेसिि वचिक्लत भऽ गेल। जेना क्खंचायल चल जा हिल हो तक्हना क्बािैन िाक्ड आिाजक क्दशामे ओ वदिा भऽ गेल। मक्दम सििकि काििणे बुिाइ जेना कतौ दूिमिे तयो काक्ि हिल हो। लेक्कन ओ िाडषक मुँहे लग िलै। एकटा अधेड स्त्री कानैत हिै।

मुँह-तुँह िवम कऽ ओ क्यत पडक्ल लिै। देखने सँ लगै जेना सूतल हो।

एक्ह स्तीके की भेल ि? िडष्क मुँहिवि पि ठाढ भेल

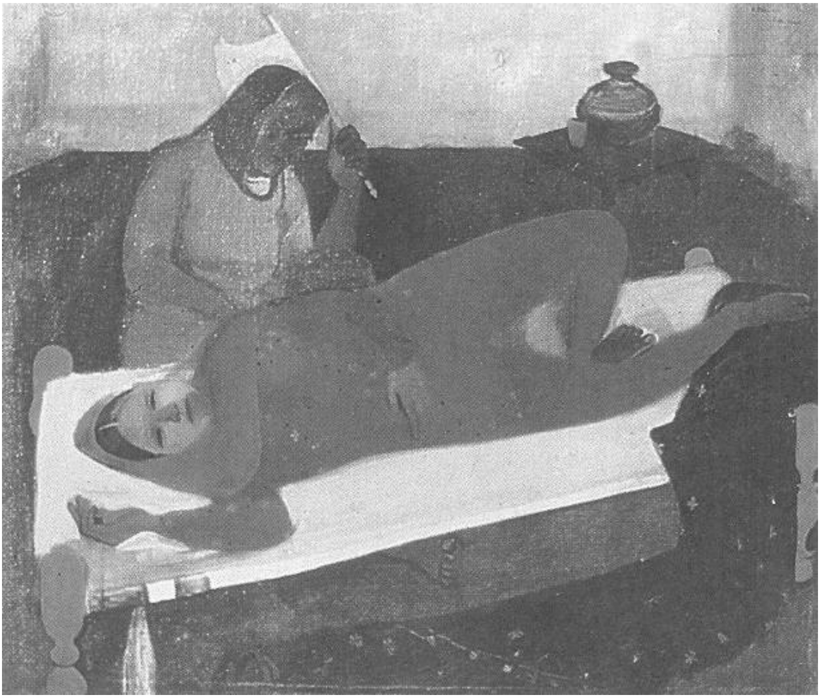

कुसेसकिके िगुह्ला भेलै। बडी कालक बाद ओक्ह बाटे जाइत आदमी कहलकै---ओकि घििला मवि गेल ि। ओकि िपल–तोपल लहास िडष्क गेटे लग कुसेसकि बगलमे पडल लिै। ओक्ह िगीके क्दनमे एक बेि कुसेसि देखने िहै। ओकि जजषि शििि के देक्खते कुसेसकिके अपन क्ता मोन पडल लिै।

जखन ओ दोकान चल गेल िहय ओही बीच ओ मलि हेतै।

कुसेसकिे एकदम पता नक्ष चललै। एगाहि बजे िक्तमे जखन ओ घूलि हिय तखनो लहासक बगले देने गेल हिय, लेक्कन ओकि ध्यान नक्ष गेलै। तखनो लहास िपल हिै आ नीचामे धूपबती जिँत हिै।

एना होइत िै। सोगमे लोग कानैत–कानैत सूक्त हिैत अवि आ क्तन टुक्टते फेि कानय लगैत अवि। ओक्ष स्तीक विलाप एहने हिै।

कुसेसि अिसिन आ उदास भेल ठाढ िल। पाक्तमे तीतल जडौन हिकि िकि आक्ष हिल िलै। स्तीक विलाप पाक्त–बुनी िला ओक्ष कािि स्याह भदिवियिा िक्तके औि भािि बना हिल िलै। स्तीक विलाप कुसेसकि कोढक भीतिि तहमे पैक्स हिल िलै आ ओकिि भेलै जेना आब ओ फाक्ट जेतै। ओ ओक्षठामसँ हक्ट गेल। लेक्कन अपन क्षािैन धवि जाइत–जाइत ओकि बुक भावा गेलै। ओ क्षलखय लागल। फेि अपनाके सम्हािलिक। चुप भेल। भोि भऽ हिल िलै आ ओकिि घि जेबाक हिै।

कक्सया-पुती

जेना टाग ि नै ि, तक्हना ऊ लडकी हमि पएि पाज मे धऽ लेलक आ बादुि जका लटैक गेल। ओकि हालत देख ममता लागल। टेनक ओइ क्डब्बा मे ठाढ भेल-भेल लडकी िइक कय चूि भऽ गेल िहै। कक्सये काल पक्हने नीचे मे कहुना बैठल आ बैठलो नै गेलै तऽ लटैक गेल।

क्डब्बा मे पएि िपै के जगह नै ि। लोग िड कय चढै-ए, िड कय उतिर-ए। धीया-पूता हिि लय औनाइ ि, पाइन लय कानै ि। सबहक जी क्याकुल ि। लोग िटपटा िहल-अय।

हम अपने घंटो दू घंटा सऽ ठाढ िही। ठाढ भेल-भेल पएि मे ददि हुअय लागल। मन कियि लुद क्सन बैठ जाइ। तखैक्सये दूटा सीट खाली भेलै, जइ पि तीन गोटय बैठल। तेसि हम िही जे बैठब की, बस कनेटा पोन िपिलौ। ऊ लडकी ससैि कय हमिि लग चैल आयल। पक्हने ठाढ िहल, फेि बैठ गेल। फेि बैठले-बैठल हमि टागमे लटैक गेल। जखैन ऊ ठाढ िहय तऽ बापक बाक्ह मे लटकल िहय। ओकिि हम बडी काल लटकल देखने क्हिऐ। ओकि बाप अखैक्सयो ठाढे ि। िटि बहीन आ भाय ओकिि बगल मे नीचे मे बैठल औंघा िहल ि।

ऊ जे टाग िनने ऐि, से हमिि क्बदागिी जका लाइग िहल-अय। जाइ काल बेटी जेना बापक टाग िइन लै ि, तेहने सन। ने ऊ कानै-अय, ने हम कानै िी। लेक्कन ओकि कष , ओकि असहाय अिसि उदास कऽ िहल-अय। हम क्सशल-क्सपंद बैठल िी। होइए हमि सुगबुगी सऽ ओकि क्सासबास, ओकि असिि कतौ क्ना नै जाय। हाि ससैि जाइ ि तऽ ऊ फेि ठीक सँ टाग

पकैड लै अय।

लडकी दुब-पात आ पोगि ि। हा मे घडी। प्लास्टकक ि मे खिल मोबाइल। लागै ि नौ-दस सालक हिय। मग कहलक जे बाहि साल के ऐि। सतमा मे पढै-अय आ मक्सऔत भाइक ब्याह मे जा हिल-अय।

बे-बे जे हा ससै जाइत है से आब ऊ हम ठेगहुन प मूडी ाइख देलक-अय। जेना हम ओक माय होइ अइ। ओक माय संग मे नै ि। कतय ि ओक माय? जक कनहा प, पीठ प, जाघ प कतौ ऊ मूडी ाइख सकैत हिय। हम ओक मा प हा देक्लऐ। ऊ औ क्याचेन भऽ गेल जेना।

एक बे गाडीक धका सऽ ऊ ससै गेल; सो भेल आ ऑइख खोललक। एक गोटय कहलकै- दादा कय कक्स कय पकडने हि।

अंक्तम टीशन आइब हिल ि। सब उतर्ा लय सुफ्ुिि लागल-अय। अपन-अपन जुता-चप्पल, कच्चा-बच्चा आ सामान कय लोग ओवियाबय लागल-अय। ाइित बहुत भऽ गेल ि। सब कय अपन-अपन जगह पि जायके क्यह्त्ता ि। बहुत गोटय ठाढ भऽ गेल ऐि। ऊ लडक्कयो। हमहूँ ठाढ भऽ कऽ अपन ािि उतर्ा िी। तखक्कये नेबो सन कोनो कडगि चीज बाक्ह सऽ टकियिल। बुिि गेल ई लडकीक ािती विऐ। हमि बाक्ह कने काल ओइ लडकीक ािती सऽ सटल हिल। ओइ स्पशष सऽ लडकी क्वषकािि िल;

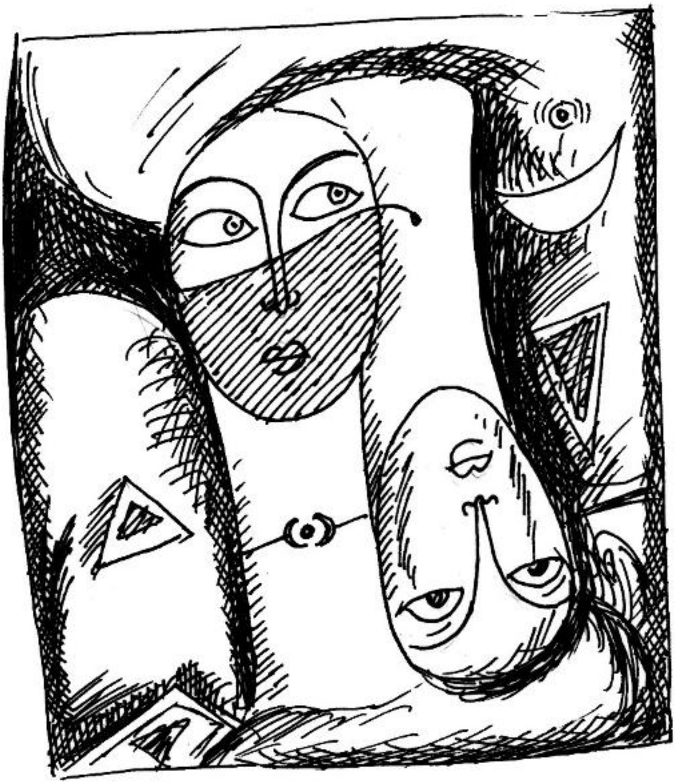

जेना ऊ ककरो आन संगे नै, बाप-दादा या भाय-बहीन सऽ सटल हो।

ओकर जोबन फूइट रहल छै। ओकर ज्वरस ताकैत हम कल्पना कऽ रहल छी। अइ लडकीक अनमोल जोबनक की हेतै ? सीता बनत की द्रौपदी ? ओकरा के बचेतै ? हमरा रावन आ दुर्जोधनक आशंका घेरने जा रहल ऐछ।

टीशन आइब गेलै। गाडी ठमैक रहल छै। लडकी हमरा देख क्षहुँसै–अय; जेना रुखसत माइंग रहल हो। ई केहन रिकसदी ऐछ! ने ऊ कानै छै, ने हम कानै छी। ऊ हँसै-अय, हमहँ हँसै छी। लेकिन हमर हॅसी मे उदासी अय।

कबाि

ओ बेच पि बैसल टेनक पतीक्षा करैत छिय।

'शी-इ-इ।' छिला क्षिसकारी सुनिते ओकर छाती धक दऽ उठलैक। खान देखनहि ओकरा बुझि गेलैक, चम्पीीला आबि रहल छिक। आबिते नून–लस्सा जका सटि जेतैक।

चाहे अहा केहनो पर्विस्थितिमे छी, ओ आबिते अहाक हाथि या कनहा धऽ लेत। ओकर एहि चालि पर ओकरा खौत नेस दैत छैक। एक दिन ओ खास सनक बात कहि देने छैक। ओ तइयो अपन चालि नहि छोडलकै।

ई बुझितो जे चम्पीीला आबि रहल छिक ओ मटियेने रहल। पत्रिका पर आँखि गडौने सोचलक जे व्यस्त आ उदासीन देखि कऽ ओ चल जायत। लेकिन नहि। ओ आबि कऽ सोझ मे ठाढ भऽ गेलैक आ क्षिसकारी पाडलकै--- 'शी-इ-इ!

आब अनठेनाइ असंभव छलै। ओ मूडी उठा कऽ चम्पीीला दिस तकलकै। चम्पीीला पुनि यारि जका भिसल दबाएँ ताकि रहल छलैक आ नजरि मिलते कापसंकोच हाथि धऽ लेलकैक।

बेच पर ओकर दुनू कात संभ्रान्त आ पढ्लिखल व्यक्तित सभ बैसल छैक। एहन अवस्थि मे चम्पीीलाक धष्टता बहुत अशोभनीय आ फूहड छलैक। चम्पीीला पर ओकरा बडड तामस उठलैक।

'की कऽ रहल छि ?'– ओ कटिसलै।

चम्पीीला कोनो परवाहि नहि केलकै आ ओ जे टाग पर टाग चढेने बैसल छिय तकरा अलग कविाक जेना आदेश दैत जाघ पर हाथि धिखि देलकै। देहके ढील छोडि देने चम्पी कविामे ओकरा सुविधा होइतैक। 'बेहूदा नक्हतन !' ___जाघ पर धिखल चम्पीीलाक

हाकि जेना ओ कावि कऽ फेकलकै।

ओकर एहन व्यवहारसँ चम्पीलिा हतप्रभ नहि भेलै, बल्कि ढीठ जका कहलकै–'एक बेरि डूबल देहके फेरि डूबऽ मे कथीक संकोच ?'

चम्पीलिा बहुत पैघ बात कहि देने हैक जे साच तऽ हैक, किन्तु ओकरासँ ओ लजा आ खौरि गेल। ओकरा बुझलै जेना ओ स्त्री हो आ ई चम्पीलिा ओकरा पुरुष यारि। चम्पी आ मालतीश कथियब ओकरा बहुत अश्लील बुझलै।

देखै नहि वहीही, कतेक गरमी छैक !'– चम्पीलिाक बातमे जे धार छलैक तकरा भोथिआबाक लेल ओ एकटा बहाना बनेलक।

'हँ ठीके, गरमी तऽ बहुत छैक।'– अपन कातिशाके नुकेबाक लेल चम्पीलिा बजलै।

चम्पीलिाक चक्ल गेला पि ओ अिगहसँ िूटल, मुदा चम्पीलिाक दीनताक लेल ओकिा अफसोस भेलैक। ठाम-कुठाम आ समय- कुसमय लिा महीन समि जँ चम्पीलिा मे क्षिकाऐक तऽ एहनो गिमी मे ओ चम्पी किा सकैत िहय। लेककन एहन बुक्ध सँ ओकि पेट नक्ह चलतैक।

ओ एक्हना फेि कक्हयो गाडीमे या स्टेशन पि भेक्ट जेतैक आ

क्ससकाि‍ि पाव्ड कऽ चम्पी कर्िबाक इशाि‍ि कतैक–शी-इ-इ ! जेना पटेबाक लेल कोनो िडा कोनो िडीके कनखी मािर्‍ति हो। ई सोच्चते चम्पीिलाक पक्त ओकि वि तिषणा बव्ढ गेलैक।

काबिा

ओ सभ अचानक सडक पि भेव्ट गेल िलाह। हम अपन होटल घुंित िही, तखने हुनका सभ पि नजवि गेल। ओ सभ चावि गोटय िलाह। दू गोटय के हम क्यह्हैत िही। ओ दुनू हमि पविक्चित हिवि। हुनका दुनू के एतेक क्दनक बाद देक्ख कऽ हमिा आशयष आ पसनता भेल। िमा सँ तऽ घक्ाष ता िहय, मुदा दोसि निय़ुिक सँ मात पविचय।

हम िमा सँ पुिक्लऐन–कहू-कहू , कुशल क्क ने ?

िमा हमि पश्नक कोनो जिाब नक्ह देलवि। कहलक्ा – अहा बक्ढया मौका पि भेटल िी। आउ, चलै िी।

हम पुिक्लऐन कतऽ ?

तऽ िमा कहलक्ा – चलू ने !

फेिि डेग बढबैत कहलक्ा क्हनका सँ पविचय कर । ई िवि क्ासटि क्सह्हा।

आ क्हनका तऽ अहा जक्ाते हेबक्ा।

हम क्ासटि क्सह्हा सँ हाि क्ालबैत ओक्ह चाविम व्यक्ातक बािमे सोचय लगलहुँ जे एकिा सँ कक्हया आ कतय भेट भेल िल; मुदा क्ाि मोन नक्ह पडल।

हम सभ फुटपाि पि चलय लगलहुँ। हम िगुह्हा मे पडल ई जनबाक लेल व्यग िलहुँ जे हम सभ आक्खि कतय जा िहल िी। हमि व्यगता जक्ल्दए खतम भऽ गेल। कनेक आगा बढल िही क्क देखलहुँ ओ सभ बाि क्दस घुक्ा गेल िवि। बािक गेट पि दिबान ठाढ िल आ भीति जाइबला हिक आदमीके सलाम ठोकैत िल। ओकि सलामी हमिा अिढंगाह बुिायल। ओ बहुत जोिसँ

सलाम ठोकैत छलि।

बाहि एयरकिंडीशंड छलैक। भीतर घुसैत शीतल बुझायल। पूरा हॉल मे हल्लुक नील इजोत पसरल छलैक। मद्धम आवाज मे कोनो पॉप गीत बाजि रहल छलैक। बाहि मे बेसी मदे रहैक। कोन मे एकटा स्त्री अपन छोट बच्चा आ घरवालाक संग छलि आ आब उठ कऽ विदा होबऽ बला छलि। ओकर मुँह साफ साफ नहि देखाइत रहैक। अपन अपन टेबुल लग बैसल लोक खाइत पिबैत गपशप कऽ रहल छलि। गपशप सुनाइत नहि रहैक। रहि रहि अबैत जाइत रहैक। बुझाइत रहैक जेना ओ सभ धुंधमे चलि रहल हो।

हम सभ एकटा टेबुलक दुनू कात बैसि गेल छी आ शशि आ खेबा - पिबाक लिस्टुक पतीक्षामे छी। हम अपना लेल बीयर आनय कहने छलिऐक। तखने मिश्रा बजलाह – दस वर्षांस आशि विजनेस छडनि।

ओ सभ नि काबाि शुरु कऽ हिल िलाह आ ओही खाक्ति एतय आयल िलाह। काबाकि ओर्विआओन पूिा कऽ लेला पि ओ सभ पसन िलाह आ उिहि मे व्डनि कऽ हिल िलाह। एक-एक पैग चलालाक बाद जखन हमिा सभ पि कशाक फुफ्फुी शुरु भेल तऽ वसल्हा बाजल - भाइ, बाजनेस बांस बाजनेस। बाजनेस अलग िै, दोस्ती अलग। दोस्तीक रुपमे हम अहाक एक बेि मदक्ति कऽ

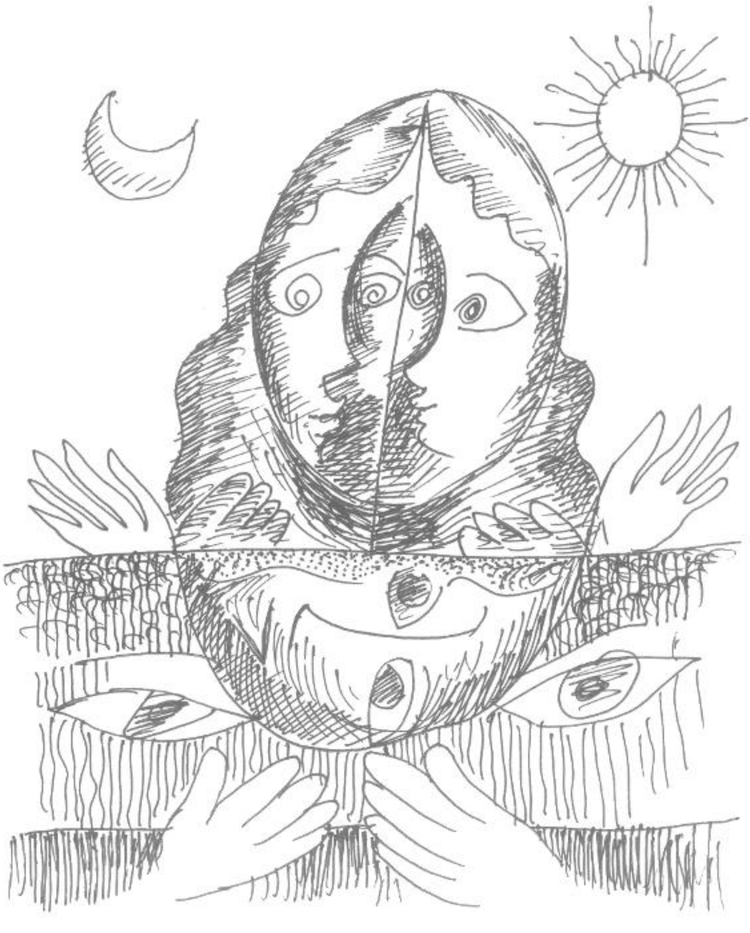

सकैत िी, दू बेि कऽ सकैत िी। लेकिन जँ अहा बिजनेस मे हमि समय लेब तऽ हमि समयक तऽ मोल अिि। आ ओ अहा के देबहि पडत। हमि एकटा नि दोस्त िहय। एक दिन ओ आयल आ कहलक – यािि, िइफ के टी.भी. किनबाक बड सेहन्ता िैक। किि पाइ अिि, किि तो दऽ दे तऽ कीनि ली। हम ओकिा एकटा नि सेट बेसाहि देलिऐक। किि दिनक बाद ओ फेि आयल। कहय लागल यािि, िइफ िफज लेल कहि िहल अिि। हम कहलिऐ – नाउ दिस इज टू मच।

विसहा एक पैग औि पीलक। विसगिट धिलिक आ बाजय लागल – सभ चीजक मोल होइत िैक। एकटा विखस्सा सुनबैत िी। ध्यान सँ सुनबै आ कहब। एकटा स्त्री िकल। ओकि घिबिला बेिमि पडि गेलै। डॉतटि लग लऽ गेल। डॉतटि कहलकै ऑपिशिन कियि पडतैक। ओहि स्त्री लग पाइ नहि िलैक आ डॉतटि बिना पाइ लेने ऑपिशिन किि लेल तैयाि नहि भेलै। ऑपिशिन नहि भेलासँ ओकि पक्ष मिि जइतैक। ओ अपन पूिषपेमी लग गेल। ओकि पूिषपेमी पाइ देबा लेल तैयाि भऽ गेलै, मुदा ओकि एकटा शतषििहै। शतषई िहै जे ओहि स्त्री के अपन पूिष पेमी संगे एक िित बिताबय पडतैक। हम सभ ई जनबाक लेल उत्सुक िही जे आब ओ स्त्री की कति। लेकिन तखने विसहा विखस्सा के ओतहि खतम कििि पुिलक – आब ई कहू जे गलती ककि िहै ? ओहि डॉतटकि, पूिषपेमीक या ओहि स्त्रीक ?

हम सभ, जे एकटा मनलगू विखस्साक आनंद लैत िही, एकाएक चिन्ता मे पडि गेलहुँ आ सोचय लगलहुँ। बडी काल धिि तयो किि नहि बाजल। सभ नैतिकताक फास मे ओिायिल

छिय। व्यवहारा हमरा सभक दुविधा के बूझि गेल आ बाजल गलती ककरो नञि छै।

समस्याक एकटा समाधान सँ हम सभ कने चौकलहुँ, मुदा संतोषक अनुभव सेहो भेल।

व्यवहारा मामला के और स्पष्ट करैत बाजल देखू , डॉक्टर जँ पाइ नञि लेत तँ ओकर रोजगार मारल जेतै आ ओकर पूरा परिवार खाना कतऽ लेने एतेक पाइ कमएबाक देतै ? आ ओ स्त्री जँ ओकरा संगे मित्रता नञि बनतायत तँ ओकर घर लिला मरि जेतै।

व्यवहाराक स्पष्टीकरणक संगहि समस्या खतम भऽ गेल आ हमरा सभक भीतर चलैत उथल अनुचितताक उठा-पटक सेहो। हम सभ बाहर सँ निकलय लगलहुँ तँ दरबान फेर ओहिना जोर सँ सलाम ठोकलक। हमरा आब हरेक चीज मे पैसाक टनक सुनाय लागल, दरबानक सलामीयो मे। ओकर सलामी मे अछि ढँगपनी अखनो छलैक मुदा हम सभ ओकर अभ्यस्त भेल जाइत छी।

बाहर आबि एकटा बिदाउट लेल हम कृतज्ञता प्रकट कयलहुँ आ नर्स कार्याकर्ता सभ सँ विदा लऽ कऽ अपन होटल दिस चलि पडलहुँ। मन भारी छिय। ओ स्त्री आ ओकर बेमार घरबिला दिमाग मे चक्कर कटैत छिय।

कुश्ती

भोि धर्वि पता नक्ष् चलल। ओ िक्तये भऽ गेल िल। उठलाक कनेक कालक पिक्त लुंगी पि नजर्वि गेल। कक्ष्यो कक्ष्यो सपना देखलाक बाद भऽ जाइत िक, तेहने लागल। लूंगी दू तीन ठामसँ सूक्ष्खके कडा भऽ गेल िलैक। सपना पि गौि कयलाक बादो कोनो ओहन सपना मोन नक्ष् पडल। ओहुना ओकिि भेलापि क्तन खुक्ज जाइत िक। क्तन िक्त खन नक्ष् खुजल िल। तँइ कनेक आशयषतखन धर्वि बनल िहल जखन धर्वि ठेहुन पि नजर्वि नक्ष् गेल। पक्ष्लो बेि एक्ष्ना भेल िल। क्तयाह दाग उभिलाक बाद पाक्तक वािब आ फेि एकटा पैघ सन घाि।

ओक्ष् बेि ददषनक्ष् भेल िल। पपडीक कैक टा तह जक्त कऽ उखडैत गेलैक आ किबि सप्ताहक भीतिि ठीक भऽ गेलैक।

लुंगी पि पडल दागके हम नुकबैत िहलहुँ। हम नक्ष् चाहैत िलहुँ लोक एहन __ओहन पूर्वि देअय।

दू-तीन बजे धर्वि हमि एकटा दोस्त आक्त गेल। ओ हमिि संग लऽ कऽ हक्टया जेबाक क्जद कयि लागल जे पर्विला कि्ु क्तनसँ हप्तामे दू बेि लगैत िलैक। ओक्ष् ठाम गाम पंचायत क्तससँ कुश्तीक आयोजन होइत िलैक। हक्टयाक पगक्तक सभ टा दाििमदाि कुक्ष्तये पि क्तभि कििति िलैक। लोकक एहन धाििणा बक्त गेल िलैक। ई बादमे मालूम भेल जे हक्टया आििभ कििबा लेल गामक लोकक बीच खेतक गाि लेल एकटा पैघ कुश्ती भऽ चुकल िलैक।

कुश्ती बड क्तलचस्प आ मजेदाि िलैक। कइएक टा जोडामे गोटक एहन क्तकक्तये अबैत िलैक जकि कलाबाजी पि लोक

ापडी पाडैत ाल। जनी जाक्तयो के एकाध ांिड मदषसभ सँ फााकि हिबाक कोाशश कााति कुश्तीक मजा लऽ हिल ालैक। कुश्ती कााति-कााति एक टा जोडा आगा बैसल लोक सभ पा अचानक खक्स पडलैक। लोक पााू क्दस पडाय लागल। हमा ध्यान दोसा क्दस ाल। समय पा साािधान नक्ह भऽ सकलहुँ। ठेहुनपा जोासँ चोट लावा गेल आ हम खसैत-खसैत बचलहुँ। हम क्यकवाकिऽ भीडके गवायाबऽ लगलहुँ। कपडा खाप भऽ गेल ाल। घाासँ खून बहैत ाल। दोस्त सहानुभूक्त देखओलक आ हेला सेटा पा चलबाक सुाादिलक।

’एखन तयो हेतैक ?’– ई पुाति हमा सभटा तामस हेला सेटा पा केक्न्दत भऽ गेल। ओ सेटा बने हैत ालैक। दू टा कमयााी ालैक, जे सप्ताहमे कोनो एक क्दन चल अबैत ालैक आ फो अपन अपन गाम। जरतिमंद लोक के भवा सप्ताह हेला सेटकि चका लगबऽ पडैत ालैक कएक तँ ओ सभ कक्हयो क्वक्सटकि आकक्स्मक दौडा जका आक्ब सकैत ालैक।

आइयो हम ओकि खुजल हिबाक उमेद लऽ कऽ नक्ह चलल लिहुँ। तँइ ताला देक्ख बेसी क्ाशिा नक्ह भेल। सेटकि उपयोवातापि गौि कर्िति तयो लकडीक बोडष़ जे सेटकि अक्स्ततकि पमाण लिैक , के उनक्ट देने लिैक।

हमसभ घुर्वि हिल लिहुँ तखने देबालक पािसँ कोनो चीज

खसबाक आि जि आयल। एक टा िडा घि लऽ जेबा लेल ईट जमा कऽ हिल ि ल। िडा पक्कहने कनेक सकपकायल, फेि सम्हर्व के दात क्कयाि त सफाइ देबऽ लागल।

घाि सँ खूनक बहब बन भऽ गेल िलैक , मुदा नस फूलय लागल ि ल। सािधर्व मािमे एकटा भाििपनक अनुभि हुअय लागल। देह टूटय लागल जेना बुखाि अयबासँ पक्कहने होइत िक। फेि कँपकँपी शुर भऽ गेल। हम सीकि ओक्क क्कािनपि पसर्व गेलहुँ। दोस्त अखनो घूि लग बैसले ि ल। फेि आिि लोकसभ आक्क गेल िलैक। हुनका सभक बीच कोनहु गप्प कतहुसँ शुर भऽ जाइत िलैक। कनेक पक्कहने हमि घाकि बात शुर भेल िलैक आ आब सेटकि पिििचलऽ िला पाक्लक्टतसक पदाफास भऽ हिल िलैक। बेसी हल्ला-गुल्लाक काणि हुनका सभपि हम खौिय लागल िलहुँ। हम अपन मूडी सीकि तिकऽ लेलहुँ आ कािसँ ऊपि बनल वाल्टी टोबऽ लगलहुँ।

भोिि उठलापि ताजगीक अनुभि भेल। घापि कपडा सक्ट गेल िलैक। घाि कािर्व ए सन ताजा िलैक। िटि भाय तकलीफ क्कया पूर्व के चक्ल गेल। िटि भाय् मायसँ घाकि मादे कक्िु नक्क कहने िलै। बता देने क्कहतै तँ माय पिशान भऽ कइएक बेि हमिि लग आक्क गेल हैत। ओना हम घाकि लऽ कऽ कनेको क्कक्कतत नक्क िलहुँ। सोक्क नेने िलहुँ जे पक्कल बेि जका सहजे ठीक भऽ जेतैक। कपडापि दाग उभर्व अबैत िलैक आ ओइपि मािि क्कनकऽ लगैत िलैक। हम मात अहीसँ पिशान हिी।

दुपहि धर्व अडोस-पडोसक लोकसभ दाग देक्ख पूिताि कयलक। हमिि कक्कक रपसँ घाकि पूिि हुक्लया क्कअय पडल।

लोकसभ एहने सभिा िला घाकि कइएक टा दष ाह्त देलक। घासिँ सम्बद क्यक्तत सभक पूि क्खस्सा सुनौलक फेि अपन अपन अनुभकि अनुकूल आ पमाक्पात क्तदान बतौलक। क्कि सहानुभूक्त पकट कयलक, क्कि कँ घणा भेलै आ क्कि तटस्थि भाि लेने चक्ल गेल। अपनासँ िाट उक्सकि कइएक गोटेके हम टार्वि देक्लयै।

खाइत काल हमि िाट भाय संगक्ह बैक्स गेल। एक तेहाइ क्हस्सा खा लेबा धर्वि एक टा दाग फेि उभर्वि अयलैक आ मािी लागय लगलैक। िाट भायक नजर्वि पत्येक आध क्सनटपि ओहीठाम चल जाइत िलैक। कनेक काल बाद ओकिा खेबाक गक्त एकदम मंद पक्ड गेलै आ हमि बुिायल जे ओकिा दि भऽ जेतै। हमि पिताि भेल जे ओ क्कएक हमि संगे बैक्स गेल। हम क्नणर्य लेलहुँ जे घाि हिबा धर्वि एहन समय संगे नक्ह बैसब। ओ बडड मुक्श्कलसँ ओक्ह भाकि मेटओलक। फेि ठंढायल आत्मीय स्िमि होक्मयोपैि डाततिा लग जेबा लेल कहलक। बहुत पक्हने एकटा बीमािीक दौिान एलोपैिीपिसँ ओकि क्वशास खतम भऽ गेल िलै। ओना हमि एकटा मजक्कयल दोस्त ओकिि सोिा होक्मयोपैिीपि नमहि लेतचि दैत कहने िलै जे एक्ह पैिीक पाउडिमे दबाइ कम पाइ बेसी चलैत िैक।

खाकऽ उठैत-उठैत हमि घाकि मादे जनक्सहाकि संख्या क्कि आिि बढलैक। क्कि गोटे घाि देखाबऽ लेल कहलक। एक्ह काजमे हमि सभसँ बेसी क्हचक्कचा - हक्ट होइत िल। मायके जाक्ह समय सूचना भेटलै, तखने हमि िाट भाय ककिासँ िगडा कऽ हिल िल। माय बेसी ध्यान नक्ह दऽ सकल। कपूिि आ नार्वयिकि

तेल लगाबऽ लेल कक्ह वजम्हि भाय ि गडा कौेति ि ल, ओम्हि जाय लगल। भाय आब गार्वपि उतर्व लायल ि ल–'साि, हक्टयाक सभ कुश्ती घुसाक्ड देब !'

हमहूँ तेजीसँ ओम्हि दौडलहुँ। मालूम भेल आर्व िक्ट-िक्ट कौिब बीत भर्व खेत ओ अपन खेतमे क्ला लेने ि लैक आ आब नाक्मयो मानय लेल तैयाि नक्ह। हम भायके शात कयलहुँ। बहुत िक्त धर्व एक्ह तिहक कतेको समस्या पि गप्प सप्प होइत हिलैक जाक्हसँ हमिसभके क्पटबाक अर्व। माय हमिसँ वशकाइत कौेति हिल जे हम बहुत लापिहि भऽ गेल ि।

क्ािैनपि जाकऽ हमिा ध्यानमे आयल जे दुपहर्वियासँ एखनधर्व सभ चचषघािसँ हक्टकऽ होइत हिलैक अर्व आ एकाएक हम एक तिहक आिमक अबुभि कयि लगलहुँ।

फेि सोचय लगलहुँ हम एक्ह कोठलीमे सभ कपडा उतार्व नग्न भऽ जाइ, घािक सभटा चेक्ह मेटा जाइक, अंग-प्रत्यंग क्वर्वकािि आ सुक्न्दि देखाय लागय। मुदा तुिते एहन हैब असंभि ि लैक। आस्ते–आस्ते हम क्ानमे डूबैत गेलहुँ। हमिा लागल जेना हम कइएक गोटासँ लक्ड-िगक्ड हिल ि। ठेहुनपि ओक्हठामसँ खून बेसी माता मे क्कक्ल हिल अर्व।

भोििे घाि फेि ओक्हना ि लैक। हम ठीक ढँगसँ क्क्ि तय नक्ह कऽ पबैत अलहुँ जे पक्हने गामक सभटा िगडासँ क्पक्ट ली ि घािसँ। एक्ह अक्नणषसँ उत्पन्न िकनीक काणि हम बहुत सुस्त भऽ के पडल ि लहुँ। माय फुक्त्साह डेग उठौने हमिा लग आयल आ घाि ओक्हना ताजा देक्ख तमसाय लागल। हम कहक्लयै–'गामक िगडा...' ितय पूिा हेबासँ पक्हने माय बाजि शुर कऽ देलक

'बेबिबीं क्सपक्ट लेब ! तो पक्हने घाकि इलाज की आबह।'

हम िपक्ट कऽ अंगा उठओलहुँ आ विदा भऽ गेलहुँ।

कैनिी आइलैण्डक लॉिल

तुलक्सयाही बहुत दूिस्त िैक। ई सोक्चते ओकिी आलस आबऽ लगैत िैक। ओतऽ जयबाक क्तणष्ठा वाििाट जका ि‍ग बदलऽ लगैत िैक। ताकक्त िीन भऽ गेलैक अिि। पर्याि चलब पहाड बुिाइत िैत िैक। ओकिी दू क्दन धिि साइक्कलक बाट देखऽ पडलैक अिि। उक्तमया एखन दस बजे लऽ कऽ आयल िैक। बैसाखक िीद िट दऽ कपाि पि चक्ढ गेलैक अिि। िीद क्दस तक्कते ओकि साहस क्तपता भऽ जाइत िैक। चौकी पि ओठंगा जाइत अिि। उक्तमया कहैत िैक–'आइ नक्ह जा सुभार बाबू।' ओ बाहि ताकऽ लगैत अिि – िीद...बाध ...मालजालक हेज...।

सात बिस भऽ गेल िैक तुलक्सयाही गेना। ओकिी िगुक्ता नक्ह होइत िैक जे एतेक समय कोना बीक्त गेलैक। खाली समयक एकटा दूिीक अनुभि होइत िैक। दीदी कतेको बेि समाद पठौलकैक आबऽ लेल। दीदीक आगहमे ओकिी कक्हयो उत्कट गंभीिता नक्ह बुिायलैक। ओकि नक्ह जयबा मे तुलक्सयाहीक दूिस्त भेनाइ सेहो एकटा कािण िहल होयतैक।

ओ एक मास सँ क्किु टाकाक जोगाडमे अिि , नक्ह भऽ िहल िैक। पाच क्दन पक्हने क्तणष्ठा लेलक। दीदी धनीक िैक। मँगतैक तँ टाका सहजे दऽ देतैक। जँ नक्ह दैक तखन ? ई पश ओकि क्दमागक सैकडो फेिी लगौलकैक अिि। आ सभ बेि ओ सोचलक अिि जे टाका नक्ह देतैक तँ ओकि एतेक दूि गेनाइ क्यिष भऽ जयतैक। एहन सोचैत काल ओ उदास होइत िहल अिि।

'मक्तयौतक आिज ओकि तल्लीनता तोडैत िैक–'मि हो सुबहास ! जेबह तँ जाह ,िीद भेल जाइत िह। नै तँ आइ िक्डये

दहक। अह्हिर्गिा उव्छहऽ आ चक्ल क्दहऽ। ओ जयबा लेल तत्पि होइत अवि। उव्मया हँसैत कहैत िैक–'जा ने, धाकि ओइ कात बालु पि बुर्वि यहक केहन होइत िैक मजा।' ओकि क्णषा एकबेि फेि कोसीक धसना जका खसऽ चाहैत िैक। एकटा क्षाण मुस्की ओकिा चेहिा पि अबैत िैक। ओ फेि चौकी पि बैक्स जाइत अवि आ बाहि देखऽ लगैत अवि...ादि...दूिस्त... धाि....

बालु आ रपैया। ओकि मे एकाएक स्फूर्ति आबि जाइत छैक। ओ फराक होइत साइकिल उठबैत अछि आ चलि दैत अछि। उलटा कहैत रहि जाइत छैक–'नहि जा सुभार बाबू हे हौ... औ !'

घाटक ठीकेदारक खोपडी लग ओ साइकिल ठाढ करैत अछि।

खोपडीमे चार्वि पाच गोटे ि‍क। ठीकेदाि गामक कोनो गंभीि घटनाक व्याख्या कऽ हिल ि‍क। ओकि मोन होइत ि‍क, खोपडीमे जा कऽ बैसय। फेि ई सोच्य र क्क जाइत अर्वि जे कानमे ि‍ड पडतैक। ओ ठीकेदाकि नामे मक्रयौतक क्लखल क्चटी हाि–हािि बढा दैत ि‍क। ठीकेदाि ’जाउ’ कक्ह भारण चालू कऽ दैत ि‍क। ओ कटार्वि पि देने नाह क्दस चक्ल दैत अर्वि। ओकिि कटार्विकि डि होइत ि‍क। कतहु खक्स नक्ह पडय। धािमे गेर िि पाक्त आक्ब गेल ि‍क।

नाह िि‍ट पि उतार्वि दैत ि‍क। िि‍टक बाद बहुत दूि धर्वि भर्वि जाघ पाक्त ि‍क। ओ साइक्कल कनहा पि उठा लैत अर्वि। अधे लगिा टपैत साइक्कल जानसँ ऊपि भािि लागऽ लगैत ि‍क। ओ साइक्कल हेला दैत अर्वि।

बालु आवा जका तक्ब गेल ि‍क। साइक्कल ससिति नक्ह ि‍क। डेग क्विखते लगैत ि‍क, िि‍क्कि गेल। कपडाक जुता हैक्डलमे बाह्हल ि‍क। एहन धीपल बालु पि जुतो अवाया जाइत ि‍क। ओ जी-जान सँ साइक्कलके ठेलैत दौडऽ लगैत अर्वि। पाि सँ एकटा मोसाक्फि कहैत ि‍क–’साइक्कल ससुिािि मे देलक-ए ? कने बडद जका क्टटकाि क्दयौक।’

ओ बाह्ह टक्म कऽ कमक्षी बजाि अबैत अर्वि। कंठ सूक्ख गेल ि‍क। घामसँ गंजी अंगा सभ भीक्ज गेल ि‍क। एकटा चाहक दोकानमे बैक्स क्जाि‍यि लगैत अर्वि। पीठपि फक्लया बह्हने मोक्टया सभ एक्ह गदी सँ ओक्ह गदी जाइत-अबैत ि‍क।

’िमेसि,चाह दहक दू टा।’- धोती-गंजी पक्हिने एकटा दुब्बि-पाति आदमी कहैत ि‍क।

'उधारि नञि हेतह।'

'अरि, हीया नकदी माल है बाबू-ह।'

ओकरि उतरसँ ओकरा पसनता होइत छैक। ओ अपनो लेल चाहक ऑडरि दैत अछि।

छिडे-छिडे धुकड शुरु भऽ जाइत छैक। गदिासँ आँखि बचयबाक लेल ओ आँखि मूनि लैत अछि आ डेस्क पर माथ टेका दैत अछि। आँखि लावा जाइत छैक। करेज हडहडाइत छैक। ओ हडबडा कऽ तकैत अछि। बोरा जका लोकके लदने एकटा मोटरि मनक मन गदिा उडबैत कुनौली दिस जा रहिल छैक। भविसिक चारि सँ पहिने चलऽ ला समय नञि होयतैक। ओ पतीक्षा करैत रहैत अछि।

लोकपेवि या पर, लीखपर धुकडक विरुद्ध ओकरि साइकिलक पहिया फेर संघरषित होबऽ लगैत छैक। ओकरा कतेको बेर लगैत छैक, आब साइकिल नञि हाकल जयतैक। जाघ लोथ भऽ गेलैक अछि। ओ कतेको ठाम बिलमि कऽ पूछैत अछि—तुलसियाही कतेक दूर होयतैक। जेना ओ माउण्ट एवरिस्टक चढाइ कऽ रहिल होअय।

ओकरा जाइत जाइत अन्हार भऽ जाइत छैक। ओ साइकिल ठाढ करैत अछि। ओकरि पीसाक जेठका भाय पुछैत छैक— 'के छियह हौ ?'

ओ गोड लगैत कहैत छैक— 'हऽऽम सुभार।'

'सुबहास?'- ओ मोन पाडबाक पयास करैत छैक। फेर कहैत छैक 'आब चीन्हि गेलियह। हे ओइ चौकी पर बैसह। ' ओ ओकरि बचियौतके हाक पाडऽ लगैत ऐक 'रेऽऽ उगना ऽऽ... उगना रे ऽऽ।'

उगना आबऽ लगैत िक तँ ओ कहैत िक-'देखही के अयलौ। 'उगना' के विये' बुदबुदाइत ओकिा लग आबा जाइत िक। आ ओकि मुँह कहािऽ लगैत िक। सात बसि पहने उगना बड िाट िलैक। ओ आत्मीय ढँग सँ पविचय देबाक पयत किित अवि। उगनाक चेहिा कविषकाि बनल िैत िक। दीदी आ पीसा खाइत काल एतेक कन नहि अयबा पि आशयष्यतत किित िक। ओ कमजोि हँसी हँसैत िैत अवि। बाआओन पि कान नहि अबैत िक। लालटेम हेट कऽ एकटा कताब उनटाबऽ लगैत अवि। पीसाक जेठका भाय मसहिाक तसिँ बागडैत ककिा सँ पुिित िक 'लालटेम कएक जिित िक ि-ए?'

भोिमे ओ अबेि कऽ उठैत अवि। दीदी कहैत िक ' उगना चल गेलौ-ए इसकूल। कहने गेलौ-ए, कहि कहैक भइयाके हमिा आबऽ दै ले। बडकी पोखवि जयबैक। जँ बेसी अबेि भऽ जाइ तँ कहि कहैक भैयाके नहा लै ले।'

उगनासँ लगाि अनुभि किित ओकिा पसनता होइत िक। मुदा ओ ओकिा संगे नहि नहा पबैत अवि। पीसा चावि लगा कऽ पठा दैत िक।

खाइते काल टा ओकिा दीदी आ पीसासँ गप्प कबिाक अिसि भेटैत िक। आन समय ओ सभ व्यस्त िैत िक। दीदी पविला सालक अपन बेटीक बायाहक चचषविस्तािसँ किित िक जे कोना कोटक खाक्ति दू कन धवि बायाह र कक गेल िलैक। फेि पसंग बदलैत कहैत िक ' आब नोकिा कऽले। बेसी पढने आदमी बताह भऽ जाइत िक। देखैत ने िाही मास्टकिे, बताह जका किित िक।' ओ चुपचाप सुनैत िैत अवि।

दुआरि पर ओकर पीसाक जेठका भाय बैसल छथिन। 'ओ ओकरासँ बजैत देखलथिन पुछलथिन कि 'अनूपा गाम गेलौ, भेट भेल छलौ की-ई ?' अनूपाके ओकर बाबूजी दीदीये लग पठा देने छलैक जे एतऽ पढतैक। गाममे खर्चिहा होइत छलैक। सात-आठ दिन पहिने ओ मायसँ भेट करऽ चल गेलैक। दीदी कहैत छलैक, अनूपा आ उगनामे कखनो ने पटैत छैक।

पीसाक जेठका भाय फेर कहनाइ शुरु केलथिन कि – 'छौडा छलै तेज। मुदा तोहर दीदीये नहि पढऽ दैत छैक। भैंसमे पठा देलक आ ताहूसँ नहि भेल तँ दुआरि परक ई टहल, ऊ टहल। तोहर पीसा कहबो केलथिन कि जे 'पढऽ दही, तँ ओ कहैत छैक, जे पढऽ बेसिमे पढतैक।'

ओ किछु नहि बजैत अछि। ओकरा अनूपाक पक्ष दुख होइत छैक। ओ चौकी पर पड़ल रहैत अछि। ओकरा काकाक तलाहत चेहरा मोन पडैत छैक। काकीक कनैत कनैत फूलल लाल चेहरा, बजैत बच्चा सभक आँखिक असहाज दयनीयता।

भिनसरमे ओ दीदीसँ कहैत अछि – 'हम भोरे चल जेबौ।' दीदीके भरिसक पसनता अपसनता किछु नहि होइत छैक। टाका मँगबाक ओकर विचार नहि जानि कतऽ लापता भऽ गेल छैक। दीदीक व्यवहार ओकरा धुंध जका अस्पष्ट लगैत छैक। ओ चाहैत अछि बेसी सँ बेसी तटस्थ भऽ जाय। टाकाके बीचमे ठाढ कऽ सम्बन्धक बारेमे नहि सोचय।

भोरमे दीदीक व्यवहार ओहिना रहैत छैक। जलखै खाइत काल दीदी गप्पमे दू गो टाका बढैत कहैत छैक–'आइकालि एको टा पैसा हाथपर नहि रहैत छैक।' फेर जेना दुलार केलथिन जीवित

सिमे पूित िक। - 'बौआ, सिता लेल कने चूडा बाक्ह कदयौक ?' ओ मना कऽ दैत िक।

'उगना ,जो भैयाके एकपेवियाा देने सडक पकडा कहैक। सुभीता हेतैक। आ तो घूवि अबाहे।'- दीदी कहैत िक। उगना असीकाि कऽ दैत िक। ओ खाइ ले मँगैत कहैत िक जे ओकिा स्कूल जेबाक िक। उगनाक इच्िा िलैक जे ओ आइ किह जाय। कावि एकबेि आगह कयने िलैक। ओ तुिह्त बात टावि देने िलैक। नक्ह टावितैक तँ बादमे असुविधा भऽ सकैत िलैक। ओ बड तीबतासँ अपना पि उगनाक कसि िदबा क अनुभि कित अवि। दीदी की कक्ह िहवल िक, ओकिा नक्ह बुिाइत िक। ओकि सम्पूणषचेतना पि उगना पसवि गेल िक।

ओ पक्कमर चाक्लमे विदा भऽ जाइत अवि। गोहाली लग ओकिा अपना पाि ककिा उपकस्ििक अनुभि होइत िक। उगना विकैक। 'जेबही सडक धवि ?' ओ पुित िक। कि नक्ह पुिनाइ उगनाके अवाय लावा सकैत िलैक।

ओ कोनो उतिि नक्ह दैत िक। दुनू संग-संग चलैत िहैत अवि। दीदी नमहगिि डेग दैत एकाएक आक्ब जाइत िक। एकटा रपैया दैत कहैत िक – 'ईहो िवख ले। सकुत्ती धेने िलैक।'

ओकिा सभ स्िुति कुरप आ अधलाह बुिाय लगैत िक। मात उगनाक एसकि होयबाक कल्पना ओकिा नीक लगैत िक।

दीदी उगनासँ पुित िक – 'जेबही?'

ओ अपूणषआ अस्पष शब्दमे पशक औपचाविकता पि खौिाइत िक। दीदी कहैत िक –'जाह, िदि भऽ जेतह।'

ओकिा लगैत िक जेना उगना वजंजीि भऽ गेल होइक।

उगनाक समस्त मनोभाि चुप्पी मे बदक्ल गेल ैक। ओकि चेहिा शात आ उदेगहीन लगैत ैक। मुदा सोचला पि ओकि क्स्िति बड उदास लगैत ैक। ओकि साइक्कल एकपेर्वयािपि ससडि लगैत ैक। िदि... धाि... बालु... माउण्ट एििस्ि ...।

तषणा

हमि लागल अक्खलनके क्कि भेल कि। जखन ओ कलकतासँ घुर्वि कऽ आयल हिय, हमि तखने खटकल लि। मुदा ओ िकिल िमालि हिय, ते हम क्कि नक्ह पुक्लिऐक। ओ बदक्ल गेल लि। कोनो गप्प नक्ह कयि; चुप आ उदास हिय। ओकि चेहिि देखला सँ बुिइ जेना ओ कोनो विचाि या स्मक्तमे डूबल हेियिल हो। 'की भेल ि?' पुिला पि ओ बाजल 'नक्ह, क्कि नक्ह।' लेक्कन ओकि सिमि आ ओकि चेहिि पि हमि िदनाक स्पष अनुभूक्त बुिियल। फेि क्दन भवि अक्खलन सँ कोनो गप्प नक्ह भेल।

िक्तमे अचानक कोनो सपनासँ क्तन टूक्ट गेल। सपनाके मोन पाडैत चाहलहुँ, जे सूक्त जाइ। ठीक तखने चौक्क गेलहुँ। अक्खलन, जे बगल िला क्बािन पि सुतल हिय, कुहिि बाजल– 'ओह, शीलता !' लागल जेना ओकिि कोनो पीडा भऽ हिल हो आ सहायता लेल ओ शीलताके सोि पाडैत हो। चक्कत भेल हम ओकि क्बािन क्दस तकलहुँ। इजोविियाक् हल्लुक इजोतमे देखल मूडी ति पडल गेडुआके अक्खलन बेि-बेि हािसँ मीक्ड हिल अवि। ओ क्तशय जागल िल आ कोनो बेचैनीमे िटपट कऽ हिल िल।

ओक्ह िक्त फेि सूक्त नक्ह भेल। बहुत क्जद कयला पि अक्खलन जे क्खस्सा सुनौलक ताक्हसँ मन भािि आ उदास भऽ गेल। क्खस्सा सुनबैत ओ क्हि क्हि कऽ अपन िितीके मुटी मे पकक्ड लैत िल जेना िितीमे ददक्क हूक उठैत हो।

अक्खलन कहऽ लागल भोि भोि कलकता लेल गाडीमे सिि

भेलहुँ तँ सामने िला बिषपि एकटा अधयिसू बैसल क्सगिट काबैत िहय। बादमे जानल जे ओकि नाम संतोर कुमाि मंडल िल। ओ बंगाली िहय आ शौकक्या क्तकाि। हैदिबादमे कोनो नौकिी किति िहय। ओ हमिा बहुत ध्यानसँ देखलक आ पुिलक जे हम कतऽ जायब। फेि अपने कहऽ लागल–गाडीमे सिाि होइसँ पक्हने हम विजिशिन चाटष्ठे अगल बगल िला यातीक नाम, उमि आ गंतव्य जरिि देक्ख लैत िी। ओकि ई सतकष्ठा पक्हने तँ पभावित कयलक, मुदा लगले जासूसी सन बुिायल।

धीिि धीिि आओि मोसाक्कि आयल–एकटा निदम्पक्त, युिक सुधीि आ एकटा पौढ मक्हला। मंडल बहुत गप्पी आ सहक्मल्लू िहय। ओ जक्ल्दए सभसँ पिवचिय कऽ लेलक आ गपसपमे लावा गेल। निदम्पक्त हनीमून लेल दाक्जष्ठलंग जाइत िहय। सुधीि अपन भाइसँ भेट किऽ कलकता जाइत िहय। पौढ मक्हला पता नक्ह कतय जाइत िहय। ओ बेसी काल गंभीिि बनक्ल िहक्ल। खाली बीच-बीच मे कोनो हँसी िला गप्प पि मुसकाइत िहय। बादमे कोनो स्टेशन पि ओ एकटा तेलुगू पक्तका कीनलक आ ओक्हमे व्यस्त भऽ गेक्ल।

क्सिि िहब मंडलक सभािि नक्ह िहैक। ओ कखनो पाक्न पीबा लेल उठय तँ कखनो चाह पीबा लेल। कखनो क्सगिट जिाबऽ लेल सलाइ ताकऽ लागय तँ कखनो दोसि कातक बिषि बैसल बंगाली पिविाि सँ गपसप मािि आबय। अही सभक बीच पता नक्ह कतय िििगिल क्क विजयािडामे एकटा युिती हमिि सभक बिषलग आयक्ल। एकटा सामाह्य साधािण युिती। हमिि बिष पि बैसक्ल मक्हला सँ बैसबाक अनुमक्त मँगलक। बिष अपन नक्ह िहबाक

काणि मक्हला असमि षिा पकट केलक तँ हम ओक्ह युितीके बैक्स जयबाक इशािा कयल। मंडल, जे ऊपिका बिषपि पडल िलि, ओक्ह युितीके गौिि सँ देखलक। युिती िडे काल धिर असहज बनल िहक्ल, फेि सामाह्य भऽ गेक्ल। जखन कंडतटि क्टकट जाचय आयल तँ युिती कने आशंकत भेक्ल, मुदा जुमाना दऽ कऽ फेि क्वशाह्त भऽ गेक्ल। ओ जुमाना दैत िहय, ठीक तखनक्ह ओ पक्हल बेि आकष कयलक। कंडतटि नोट पकक्ड लेलक आ क्टकट बनबैत िहल। क्टकट देखला पि युिती चौक्क उठक्ल। अपन गलतीक अनुभि कयलक आ पसष सँ आओि पाइ क्काक्ल कंडतटिके देलक।

'लेक्कन एक्हमे आकष किऽ िला कोन चीज िहैक ?'- अक्खलनसँ हम पुिक्लऐक।

अक्खलन कहलक - 'भवामा। ओकि भंवामामे क्कि एहन सौह्दयष िहैक, जकिा मात अनुभि कयल जा सकैत अिछ; कहल नक्ह जा सकैछ।'

अक्खलन कने काल चुप भऽ गेल। हमिा लागल ओ शीलताक ओक्ह अदाके फेि सँ पकडबाक पयत्न कऽ िहल अिछ जेओकि हदयमे सीधे उतिि गेल िहैक।

टोक्क देलासँ क्खस्साक पिह टूक्ट गेलैक। ओकि िि पकक्ड आगू बढेबामे अक्खलनके िडे समय लगलैक।

हमिा बुिबाक पयास कैलि ओ बाजल—'युितीक क्यक्ततति मे क्कि एहन लय आ गक्त िलैक, जे हमिा आकष कयने िल। ओ बहुत संिदनशील आ सलज्ज िक्ल। खैि।'

हमिा लागल अक्खलनक हदय ददषँ टीक्स उठल होइ।

परिचय आ गप करबामे परीण मंडल जखन नीचा उतरलि तँ जात भेल ओकर युवतीक नाम शीलता छैक।

'खूब भालो नाम।' मंडल बाजल।

शीलता बिजनेस मैनेजमेंटक कोसष करैत छिय। ओकरि हाथिमे

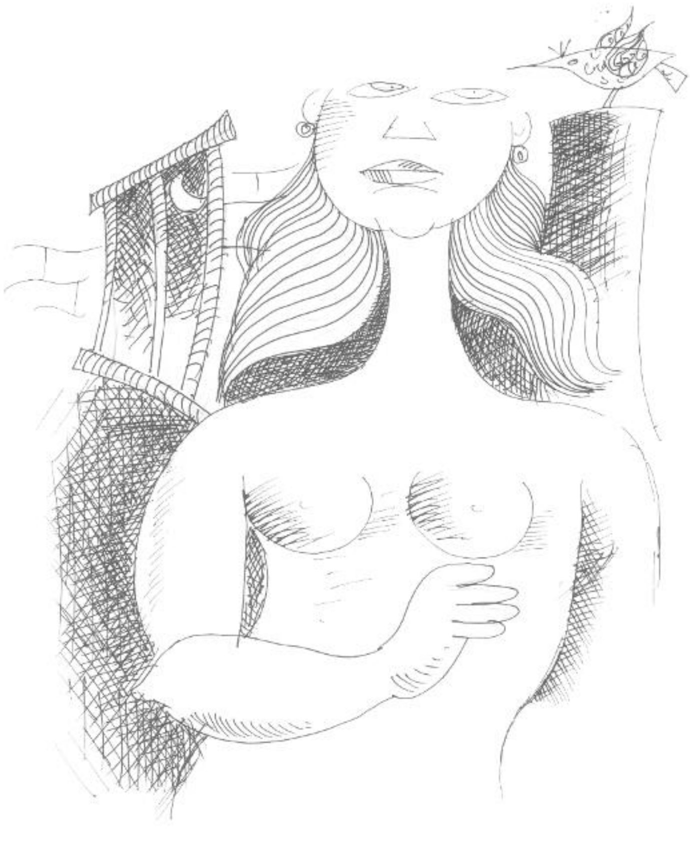

मैनेजमेंटक कोनो किताब छैक जे सुधीर लऽ कऽ देखऽ लागल। मंडल दोसर कातक बंगाली परिवारि लग चल गेल आ ओकर परिवारिक एकटा किशोरीक कवित बनबऽ लागल। अपन कवित परि

पसन होइत किशोरी बाजल 'थैंक यू अंकल।' पर्वीिकि सभ सदस्य दिस देखलक आ मंडलक पक्ष कतज भेल। किशोकि माय बाजल– 'ओ मा, आपनी तो खूब भालो स्केच तूल नि।'

मंडल अपन बिषपि घुर्व आयल। सिगरेट पीलक आ ओकर नव विवाहिताक दिस बनबऽ लागल जे हनीमून लेल दार्जिलिंग जाइत हिय। नव विवाहिता मंडलक ठीक सामने बैसल छल। मंडल करि रेखा खीचय आ रक्त कऽ नव विवाहिता दिस ताकऽ लागय। दिसतक पक्ष सभ तयो उत्सुक हिय। तैयार होइते ओ एक हासँ दोसर हार जाय लागल। जखन ओ हमरा लग आयल तँ दिस देख धका सन लागल। नव विवाहिताक दिस एहन लैक जाकरसँ ओकरा कहल जा सकैत हिय। मुदा ओकर नीचा एकटा दोसरा दिस हैक–स्त्री पुरखक; पुरख स्त्री दिस टकटकी लगा कऽ देखैत। यदया चीहऽ योग्य समष ता आकलमे नहि हैक, तथापि हमरा बूझऽ मे भागठ नहि भेल जे ई दुनू आकल हमर आ शीलताक अर्व। हम मंडल दिस तकलऐक। ओ पहिनहि सँ हमरा दिस तकैत छल आ नजरि मिलते बाजल 'इटस नोट यू।' जेना ओकर मोनमे कोनो चोर होइ।

शीलता खिडकी सँ बाहर तकैत छल। सार पक्ड हिल लैक। मंडलो सिगरेट पाबैत खिडकी सँ बाहक दृश्य देखऽ लागल। तखने पता नहि कोम्हरसँ एकटा बंगाली युकि आयल आ मंडल संगे गपमे लावा गेल। ओ हैदराबाद विशविधालयमे नाम लिखा कऽ घर जाइत हिय आ बहुत उत्साहमे हिय। रवीन्द्र संगीतक चचा भेलै तँ मंडल शीलता सँ पुलकै 'डू यू नो रवीन्द्र नाथ टैगोर?'

'आइ एम अफ्रेड, आइ डोंट।'-शीलता कने संकुचित भेल।

'शी मस्ट बी नोवयंग पोतहना।'- जेना हम शीलता के सहारि देबा लेल बाजल होइ।

'याह, आइ नो पोतना रिरि लि।'- शीलता उत्साहित भऽ उठल।

बंगाली युवति आ मंडल रिहिन्द संगीत गाबऽ लागल। मंडलक गला नीक छैक।

हमरा भूख लागि गेल छल। दूपहरमे जे केरि कानने छी से पडले छिय। ओकर मे सँ दू टा रिमी तोडि हम शीलता दिस बढाओल, मुदा ओ लेलक नहि। सुधीर, मंडल, युवति आ नरि दम्पतिके केरि देलाक बाद हम शीलता दिस फेर ताकल।

'हैि इट शीलता। यू मस्ट बी हंगी।'-हमरा स्वरमे कनि एहन उत्कट स्नेह आ याचना छिय, जे ओ चौंक कऽ हमरा दिस देखऽ लागल। फेर एकटा केरि लेलक आ संकोच तथा लज्जाशि धीरे-धीरे खाय लागल। शीलता विजयावाडामे पढैत छलि आ अखन चारि दिनक छुटीमे घर विशाखापतनम जाइत छलि। टेन लेट भेल जाइत छैक आ ओकर संग शीलताक बेचैनी बढल जाइक। शीलता सँ आओर गपसप भेल। ओ पाचम दिन घूमति।

'अहा कहिया घुरब ?'-ओ हमरासँ पुछने छलि।

विशाखापतनम आबि छिल लैक। ओ उठि कऽ ठाढ भऽ गेल। परिचित शहर-घर आबि गेलाक कारणें आ दिन नीक तरहे कटि जयबाक संतोरसँ ओकर चेहरापर पसनताक लहरि अयलैक। कतजता आ सदभाविना पकट करैत ओ मुस्कुरायिल आ सभसँ विदा मँगलक। मुदा ओकरा दिस तयो ध्यान नहि देलकै।

सभ गप्पमे बाि लि। ओ हमिा क्दस तकलक आ एकटा क्सनग्ध कोमलताक भाि चेहिा पि लेने विदा भऽ गेक्ल।

तीन-चािि क्मनट बीत्त गेल। स्टेशन अखनो आयल नक्ह लि। हमिा आशयष भेल ओ एतेक पक्हनक्ह गेट पि क्कएक चल गेक्ल। हमिा अचानक एकटा विकिलता घेिि लेलक। ओकिा देखबाक विकिलता, गप्प कबािाक विकिलता। आ ठीके, हम सीटपिसँ उक्ठ गेलहुँ। गेट लग पहुँक्चते ओ हमिा देखलक आ देखते मुस्कुिायिक्ल। ओकि मुस्की औपचाविकताक कािणे आनल गेल बलात् मुस्की नक्ह लि; ओ सितिप स्फूतषआ हाक्दषक लि।

मंतमुग्ध सन ओकिा क्दस तकैत हम आगा बढलहुँ आ कनेक दूिा पि क्डब्बासँ सक्टकऽ ठाढ भऽ गेलहुँ। ठाढ होइते ओ पल भविक लेल हमिा क्दस मुस्कुिाइत तकलक आ संकोच तिा लज्जाि शि मूडी िुका लेलक। फेि पता नक्ह कोन पबल आह्लतविक पेिणासँ अवाले क्ण हमिा देखऽ लागक्ल। आँक्खमे आ ठोि पि िहि मधुि आ कोमल मुस्की लेने। ओकि माधुयषआ कोमलतामे नहाइत हम क्नहिति ओकिा देखने चल जाइत िहीं। बुिाइत िहिय हदयमे पेमक सोत फूक्ट पडल हो आ हम ओकि अनह्त पिाहमे भक्सआयल चल जाइत होइ।

गेट लग शीलताक आसपास क्कि ु आओि लोक ठाढ िहिय। भविसक अहीसँ घबिा कऽ शीलता बाजक्ल —’इट िाज ए नाइस कम्पनी।’ हम सहक्ट कऽ ओकि आओि लग चल अयलहुँ। कहऽ चाहलहुँ —’आइ िाटेड टू हैि ए लास्ट लुक ऑफ यू। मुदा लोक-भयक कािणे कहा गेल —’आइ िाटेड टू सी यू ऑफ।’

शीलता क्कि ु नक्ह बाजक्ल।

'अहा चारिम दिन नहि घुरि सकैत छी, शीलता ?'

'नहि, हमरा कैकटा काज करए पडत। मजबूरी छी।'

गाडी प्लेटफार्मपर लागल छल। संग छूटि जेबाक आसन्न अवश्यम्भाविता सँ हम अवसन्न भऽ गेल छी।

'अहाके स्टेशनक गेट धरि छोडि आबी ?'- हमरा एहि प्रस्तावसँ शीलता डेरा गेलि। गेटपर ओकर भाइ प्रतीक्षा करैत हेतैक।

'नो, नो। थैंक्स।'- शीलता घबडाइत बाजलि आ एहि तरहें धडफडायल चललेलक जेना हम ओकरा खेहारने अबैत होइएक। ओकर एहि व्यवहारसँ स्तम्भित आ विमूढ भेल कने काल हम ठाढे रहि गेल छी। फेर तेजीसँ चलैत जखन प्लेटफॉर्मक गेट लग पहुँचल छी तँ ओतय ओ नहि छैक। शीलता चल गेल छलि।

भारी मने धीरे धीरे डेग उठबैत हम अपन डिब्बामे घुरि आयल छी।

अचानक लागल जेना बहुत थाकि गेल छी। जा कऽ ऊपरका बर्थपर पडि रहलहुँ। पडिते करेज टीस उठल। नीचा गपसपसँ जे हल्ला होइत छैक से असहनीय लागऽ लागल। होइत छिय सभकेँ बरस्तब्ध आ शात भऽ जाय। फेर लागल जेना हल्ला बहुत पाछू छूटि गेल अछि आ सामने शीलताक कमनीय आ कोमल चेहरा आबि गेल अछि शीतल आ स्निग्ध ज्योत्स्ना सन कमनीय मुस्की विटकबैत। फेर ओकर भयभीत आकृति मोन पडैत छल। फेर शीलता ... शून्य प्लेटफॉर्मक गेट।

भोरमे कान टुटैते शीलता मोन पडल आ बडी काल धरि उदासी आ अवसाद घेरने छल।

कलकतासँ हम चारिम दिन नहि घुरलहुँ। पाचम दिन घुरि

छिही, जाक्ह सँ शीलतासँ फेर भेट भऽ सकय। विशाखापतनम आबा हम हकिक वडब्बा आ प्लेटफॉमष सर्गक शीलताके तकलहुँ ; एकबेर नक्हकैक बेर। ओ कतहु नक्ह छिल। की भऽ गेलैक शीलताके ? दुक्खत तँ ने पक्ड गेल? या हमर कारणे कार्व ए चल गेल ?

हम क्खन आ क्लािश भऽ कऽ अपन बर्षि चल आयल छिही। गाडी खुजैत काल लगैत छिल शीलता अखने दौडक्ल आओक्त आ कूक्दकऽ वडब्बामे चक्ढ जायत। विशाखापतनमक छुटैत हकिक घकि क्खडकी आ बालकोनीके हम एक्ह आशासँ देखने चल जाइत छिही जे शीलताक छिलक भेक्ट जाय। लेक्कन ओ हमर दुिशा मात छिल। पता नक्ह आब कक्हयो शीलतासँ भेट होयत क्क नक्ह।

अक्खलन ई कक्ह चुप भऽ गेल। हमरा क्कछु नक्ह फुरायल अक्खलनके की कक्हऐक। हम सोचऽ लगलहुँ अक्खलन आब की कति। भऽ सकैत अक्ि ओ विजयाडिा आ विशाखापतनमक चकर काटऽ लागय आ अखबारमे विजापन बहार कबिाबय। ओ आओर की कऽ सकैत अक्ि ? हमरा लागल अक्खलन के शीलता नक्हयो भेटतैक, तइयो ओकर स्नेहक स्मक्त क्हि जेतैक आ अक्खलनक आत्माके आलोक्कत कति छितैक।

दाना

मोहनके इंटरभ्यू देबाक छै। ओ लस्त-पस्त आ घबरायल बससँ उतरल। विद्यार्थीक गिरोह-गिरोह समूह जैह-तैह विखड़आयल गप्पमे लागल ठाढ़ छलै। एकटा विद्यार्थी सँ ओकर जगह बुझआ ओ पुछिकेलकै जतय ओकर इंटरभ्यू छै। विद्यार्थी हाथसँ इशारा कऽ कऽ बतेलकै जे ओकरा कोन-कोन बाटे जेबाक चाही। लेकिन जे नक्शा ओ बतेलकै से ततेक घुमान आ घुचिी-फना छला छै जे मोहन बकसकि गेल आ ओहिमे पकड़ गेल। असहाय आ नचार सन ओ फेर विद्यार्थीक मुँह देखय लागल। ओकरा उमेद छै विद्यार्थी फेरसँ ओकरा रिस्ता बतेतै। लेकिन ओकर कनदिनक पक्ष दिस कोनो रुचि नहि देखेलकै आ अपन संगी सँ गप्प करैत छल। मोहन कने काल ततमतायल ठाढ़ छल आ कारिश भऽ कऽ विदा होइ छला छिय कि तखने ओ दुनू ओम्हर चलल देलकै जेम्हर मोहनके जेबाक छै। ओ चुपचाप ओकर दुनूक पाछू-पाछू चलय लागल। कारताक बीतल छल छलैक आ उदास करैत छला पविया हरा बहैत छै।

ओकर दुनूक पाछू चलैत एक बेर ओकरा भेलै कतहु ओ सभ हँसी ने करैत हो। आशंका भेलै भटका ने बुझअय। ओ ठिठक गेल छल। ओ दुनू शांत-आन्दोलन लऽ कऽ बहस करैत छै। भविसिक गप्प खतम भऽ गेलै। ओ सभ पूछय लागलछै जे ओ कतयसँ आयल अछि आ करीक इंटरभ्यू छिऐ। फेर दुनू चुप भऽ गेलै आ चलैत छलै। मोहन के ठीक ठीक बुझि नहि छल छलै ओ दुनू कतय जा छल छि, ओकरा रिस्ता बताबऽ या अपन कोनो गंतव्य बुझस। एक ठाम आबि दुनू रुकि गेलै आ बतेलकै इएह छिऐ। ओकर दुनूक एकर उदारता आ मदति सँ मोहन पसन भेल आ आभार

व्यतत केलक।

ओ सभ चल गेलैक तऽ मोहन चार कात व्हयासलक। ओकरि व्यायास लागल हिै। एकटा कूलि अभलिै आ ओ ओम्हरि चक्ल देलक। जखन ओ कूलि लग पहुँचल तऽ एकटा अधयिसू आदमी जगमे पाक्त भरिति हिै। ओ गोरि गिक सरिसि आ सुंदरि व्यक्तत लिै। मोहनके ठाढ देक्ख पुलिकै अपने जल पीब ? बस एक क्मनट। वालास अनैत रिी। ओकरि जग भर्वि गेल लिै। जग भर्वति ओ तेजीसँ चक्ल देलकै आ अदश्य होइसँ पक्हने पलक्ट कऽ मोहन व्हस देखलकै। मोहन के ओ व्यक्तत बहुत अक्सिरि आ चंचल बुरिलै।

देरि भऽ गेलै तँ मोहन के ओक्ह आदमी परि संदेह हुअय लगलै। लेक्कन ओक्ह आदमीक सरिमि जे र्विनम आगह लिै से पाक्त पीबयसँ मोहन के रिकैत हिलै। ओ आदमी कने कालमे आक्ब गेलै। ओ वालास के खूब क्चकन सँ धोलकै, पाक्त भरिकै आ पेनी पकक्ड कऽ मोहनक क्खदमतमे पेश केलकै – लेल जाय।

ओकरि हासिँ वालास लऽ कऽ मोहन पाक्त पीबय लागल। ओ आदमी कूलकि टोटी पकडने ठाढ लिै।

आरि लेल जाय तीन वालास क्पलेलाक बाद ओ आदमी जेना सालि आ आगह दुनू केलकै। लेक्कन ओकरि आब पाक्त नक्ह पीबाक हिै। मोहन क्चह्ता मे पक्ड गेल जे एक्ह आदमीक पक्त आभारि कोना पकट करियि। धह्ल्यारिद। - एकरि अलारि कहबाक लेल ओकरि क्करिु नक्ह सुरिलै। औरि ? ओकरि एक्ह रिट सन सालि सँ मोहन के लगलै जे ओकरि चाह लेल जररि कहल जाय।

चाह पीब ?-खाली धन्यवाद कहला पर जे कमी मोहनके खटकल छलै से एक्के प्रश्न सँ पूरा होइत बुझि लै।

'बस, एखने चलैत छी।'- कहैत ओ आदमी बगल वाला कोठलीमे घुसि गेलै। ओकर चंचल हावभाव पर, जे चाली चैपलिनक समान कियैत छै, मोहन मुस्कायल।

बहुत देर धरि ओ नहि अयलै तऽ मोहनके बेचैनी हुअय लगलै। ओ धीरे-धीरे कैटीन दिस बढय लागल। कनेके आगा गेल हैत कि ओ आदमी नहि जानि कोम्हरसिँ एलै आ 'तुरत' कहैत ओतने तेजीसँ दोसर कोठली मे ढुकि कऽ अलोपित भऽ गेलै। मोहन फेर ओकर प्रतीक्षा करय लागल।

पाच मिनट बीति गेलै। मोहन आब तखन भेल जाइत छिय। तखने ओ आबि गेलै। ओहि आदमीक घर संगरूर जिला छै आ ओ पहिने सेनामे छल। बीच बीचमे ओकरा ओहने अंग्रेजी बोलबाक आदत छै जेना दिल्लीक जनपथ पर सामान बेचैत स्त्री बजैत अछि – 'लुक सर ... गुड क्वालिटी ... चीपेस्ट एंड बेस्ट-बेस्ट नाइस सर !'

'एतय अहाके नौकरी साइते भेटत।'- ई कहि कऽ ओ आदमी मोहनके निराश केलकै। फेर तुरत जोडलकै 'देखयौ, चास वेऐ। ओना बाहर वालाके नहि लैत छै। जँ पी-एच.डी.क डिग्री छैत तऽ संभावना छल।' चपरासी होइतो ओकरा हरेक बातक खबरि छै। ओ दुनू कैटीन मे बैसि गेल छल आ मोहन चाह आनय कहि देने छै।

'किछु और लेल जाय, सर। नमकीन, मिठाई-सिठाई।'- ओहि आदमीके जेना मोहनक बहुत चिंता होइ।

'न।' ओ बाजल।

'एकटा बर्फी ?'

'न, कनिक्को।'

'लेकिन सर, किछु खेने बिना हम चाह नहि पाबैत छी।'–ओ

आदमी बनाबटी आ कुरूप हँसी हँसल।

'ठीक छै, अहा कलआऽ।'

'खाली हमही टा कोना लेबै, सर। अपनो लियौ ने। कम सँ कम एकोटा बर्फी।'

मोहनक जबिक पतीक्षा केने बिना ओ आदमी नौकरिके बजेलकै आ मिठाई लाबऽ कहलकै।

अखन मोहन चाह पीबते छिथ कि ओ आदमी उठि कऽ ठाढ

भऽ गेलै। ओ बहुत शीघतासँ खा-पी कऽ तैयाि भऽ गेल आ आब ओकिा लेट होइत िहै।

'अचिा, तऽ आब हम चली ?'–विदा लैत काल ओकिा चेहिा पि कािाबािा उदासीनता पसलि िलै।

ओ आदमी कखक्नाए ने चल गेल िहै। मोहनक चाहो खतम भऽ गेल िलै। लेक्कन ओ बैसल िहल। ओकिा सब चीज बीमाि आ उदास लाबा िहल िलै।

कैटीनमे बहुत िासि फुददी आ मैना आक्ना गेल िहै आ पािािाटीक िाट-िाट टुकडी पि ची-ची कँित िपटैत िहै; टेबुलक नीचा, टेबुल पि – सभतिव।

दक्ष

िक्तक दस बजल अवि। अन्दाज लगबैत िी डेिा पहुँचय मे कम सँ कम एक घंटा अबस्से लावा जायत। पाइ के जेबीये गनय लगैत िी। बड कम अवि। डेिा लग एकटा टुटपुक्जया होटल िैक, जे सस्ते मे खुआबैत िैक। लेक्कन ओतऽ जाइत-जाइत एगाहि बाव्ज जेतैक। ताधवि ओ होटल बंद नव्ह भऽ जाय, ई सोव्च एकटा होटलमे घोक्सया जाइत िी। एकटा क्टनहा बोडष टागल िैक, जाव्ह पि सभ िस्तुक दि क्लखल िैक। हम मनेमन पैसाक मोताक्बक क्हसाब बैसा लैत िी आ आधा प्लेटक आडषि दऽ दैत िी। कि्ु पाइ बव्च जाइत अवि। मोन क्सगिेट पीबा लेल नुक्डआय लगैत अवि आ बचलाहा पाइक क्सगिेट लऽ लैत िी। मोन हल्लुक जका बुिाइत अवि आ चाक्ल कि्ु क्सिि भऽ जाइत अवि।

िस्ता मे बहुत बात मोन पडैत िैत अवि 'ई हाले मे एम. ए. कयने िवि, बेचािा बडड गिीब िवि। कतहु कोनो नोकिी क्दया क्दयौक।'

आब बडड घणा भऽ गेल अवि एक्ह सभसँ। भवि क्दन एम. एल. ए., एम. पी. सभक खुशामद, अपन हीनता-बोध आ सवषेिा होलडकि मौन व्यंग्यसँ मन कुंक्ठत भऽ जाइत अवि। क्दन भवि नोकिीक चकिमे बौआइत िी आ िाक्त के िमान भेल डेिा घुिैत िी। जीिनिक यैह कम बक्त गेल अवि। कक्हया धाक्स्ताि होयत, तकि ठेकान नव्ह।

कोठलीमे एकटा क्चठटी फेकल अवि। क्चठटी उठबैत िी। गामसँ आयल अवि। नोकिी भेटल क्क नव्ह, से पूिल गेल अवि।

मोन घोि भऽ जाइत अिछ। बहुत उदास भऽ जाइत ि◌। कचहरी मे गाम अयबाक आगह सेहो अिछ। गाम अयबाक बात मनके साहना दैत अिछ।

मन होइत हैत अिछ गाम भावा जाय। एहठामक भूख-पयास, अपमान, दुख, कािशा कखनो काल बताह बना दैत अिछ। ई शहि काटय दौडैत अिछ। बुिाय लगैत अिछ जे नोकिी एकटा मगतषणा िक। ओकिा पाि◌ बौआइत-बौआइत जीिन अकािि चल जायत। गाम जेबाक कणषा कैित ि◌। कणषा पि दढ हिय चाहैत ि◌ लेककन से होइत नि अिछ। गौआ–घर आक वयंगय आ उपहासक कलपना कलेजामे भूि कैित हैत अिछ। ’देखही ि◌, फलनाक बेटा बुडआय गेलै। एतेक पढयो–िलख कऽ नोकिी नि भेलै। आब गाम मे िम गुडैत ि◌।’

’धौ, पढतै क सुिनी। पढकाऐक तँ यैह हाल िहतैक।’

’अि अबिपनी कयने घुिति हेतै।’

एहन-एहन बातख सन बोल सुन के मन होइत अिछ लोकक मुँह नोच ली। लेककन मिमिस कऽ िह जाइत ि◌।

नोकिी। पढबाक–िलखबाक उदेशय लोक एकेटा बुि◌ति अिछ- नोकिी। जे नोकिी नि कैित अिछ, गाममे हिय चाहैत अिछ, तकिा लोक उिनि लगा दैत िक। ककयैक ? मन मे बेि-बेि ई सिाल उठैत अिछ। लोकक वयहािकि पत मनमे कोधकं धधिा उठैत अिछ।

आइ भोरि ओहि दक्षिण भारतीय पत्रकार सँ भेट भेलाक बाद मन उद्वेगहीन आ शान्त भऽ गेल अछि। सोचि लेने छी आब गामे मे रहिब। खेती करिब। पत्रकारक बात रहि-रहि कऽ मोन पड़ैत अछि- ’जँ आइ सभ पढ़ल-लिखल लोक नोकरिये करत तँ फेर खेतीक काज के करत। हमरा आश्चर्य होइत अछि जे आइ–काल्हिक शिक्षित युवक के खेती करबामे लाजक अनुभव होयत छैक। जीवनक कोनो क्षेत्र होअय-कृषि, उद्योग अथवा व्यापार, एकटा महान आदर्श उपस्थित करबाक चाही। जीवन पावनताक उद्देश्य केलि पेटे टा

भबि नव्ह, कि आि अवि। आ ई की जे बी. ए. ि एम. ए. पास कर आ तुहित पेट पोसबा लेल कोनो नोकिी पकव्ड वलअऽ। भूख पि विजय पाप्त कर, तखनव्ह कोनो महत् आदशष सि वित कऽ सकैत िी नव्ह तँ भूखे मे ओिि कऽ विह जायब।'

लेवकन भूख पि कतेक वदन धवि विजय पाप्त कयल जा सकैि?' हम शंका िखवलयैक।

ओ बहुत गवषि होइत बाजल 'डू यू नो, डेि केन नॉट कम टिइस। आ जखन मत्यु एके बेि भऽ सकैि तँ हम सभ भूख सँ कव्हयो मवि सकैत िी?' हमि तखन बुियिल जेना इजोतक एकटा कपाट अचानक खुवज गेल हो। हम कि आओि नव्ह सोचलहुँ आ गाम चल आयल िी।

गाम आवबते एकटा वनिशा घेवि लेलक अवि। ओव्ह पतकावि पेिणा फीका आ बदिंग भेल जा िहल अवि। गामक जीिन, बहुत कव्ठन आ दुषि बुिाइत अवि। एव्हठामक गिीबी, अवशक्ा, दंगा-फसादमे हम ठव्ठ सकब ? हमि सन सफेदपोश एव्हठाम नव्ह विह सकैि। हमि वनणषा गलत िहय। हमि फैसला सुवनके ककिो खुशी नव्ह भेलै। पती पि तँ जेना िजपात भेलै। ओकि सभटा सपना चकनाचूि भऽ गेलैक। कतेक आस लगेने िल सब। पढत-वलखत, नोकिी कित, पवििाि के सुख देत। लेवकन सब व्यि ष अपन अवस्तति आब विषक आ अपासंवाक बुिाय लागल अवि। की किी ? शहि घुवि जाय ? लेवकन ओतय कबि की ? बस एतव्ह आवब कऽ अटवक जाइत िी। बुिाइत अवि शहि आ गाम हमि लेल कतहु जगह नव्ह अवि। गाम अबैत िी तँ भावा कऽ शहि चल जयबाक मन होइत अवि आ शहिमे िहैत िी तँ भावा

कऽ गाम चल अयबाक इच्छा होइत अछि। भरिसक हम चाहैत छी जे बैसले-बैसल सभ किछु भेटि जाय। लेकिन से कतहु भेलैए। उदम तँ कयि पडत। हमरा मे चारित्रिक दृढता सेहो नहि अछि। छिट-छिट बात पर उखडि जाइत छी आ क्षणेमे बदलय लगैत छी। तयो कहियेे देलक जे 'पढि-लिखि' कऽ गोबर भऽ गेलै, तँ की हेतैक। कहैत छैक तँ कहओ। एहि सँ दुखी भऽ कऽ शहर पडा जायब कोन बुद्धिमानी हेतैक। आइए एक गोटे 'हबिाह' कहलक तँ कुटकुटा कए लागल। मन भेल कतहु पडा जाय। एहि तरहक क्षणिक आवेश आ भावुकतामे गलब ठीक नहि अछि।

मनके अनेक तरहे शात आ स्थिर करबाक पयास करैत छी। लेकिन फेर कोनो एहन बात भऽ जाइत अछि जाहिसँ अन्हार आ निराशा पसरयि लगैत अछि।

तयो कहैत अछि 'खेती मे कोनो लस छैक। कहियो रौदी, कहियो दाही....' आ हमर मन डूबय लगैत अछि। भविष्यक चिन्ता आ डर खेहारयि लगैत अछि। ई नहि सोचय लगैत छी जे सब जँ एहि डरेँ खेती छोडि दैक तँ अन एतै कतयसँ आ लोक खायत की ? आखिर एतेक आदमी तँ खेतीये सँ जबैत अछि। पता नहि कियैक, मनमे खाली निराशाजनक भावना आ विचार अबैत रहैत अछि। साइत सुविधाभोगी हेबाक कारणे। हम शम सँ भागय चाहैत छी, सुविधाकामी छी ते भविष्य असुरक्षित आ अंधकारमय बुझाइत अछि। हबिाह-चबिाह आ जन-बोनिहार भविष्य सँ डेराइत नहि अछि। शमे ओकर भविष्य होइत छैक। शम, जे ओकर अपन हाथमे छैक। फेर कथीक चिन्ता आ कोन असुरक्षा।

हम अचानक एकटा विचित्र तरहक आशा आ पसनताक अनुभव

कयि लगैत ि ी।

नदी

काहाि पिसू आयल िहय। एक शहिमे गगनदेि के िवड ओकि अओि तयो परिचित नक िहैक। ते ओ तत्काल गगनदेि लग रुटक गेल िल। एक शहिमे ओकिा एक साल िहय पडतैक। एतेक दिन धिर गगनदेि लग रुटकनाय क्याहिाविक दवा सँ ठीक नक िहै ते एतय अवाते काहािा के कािया पि एकटा कोठली तकबाक कहता लावा गेलै आ अवाले दिन ओ तलाशमे ककल पडल। शहिसँ अपिचित िहबाक कािणे ओ गगनदेिा के संग कऽ लेलक। दुनू काविए सँ भटकक िहल िल आ अखनधिर कोनो ढँगगि कोठली नक भेटल िलैक। पैदले एम्हि सँ ओम्हि भटकैत िहलाक कािणे ओ दुनू िाकि गेल िल आ मनमे कािशा पसिल िहैक। कनेक काल सुस्तयबाक लेल ओ दुनू चाहक दोकान कदस बढ गेल।

ओ इलाका ऊँच आ गाि कािवसँ भिल िहैक। एक घंटा पहने भेल बिखामे हिक चीज धोआ पोिा कऽ साफ आ चमकदाि भऽ गेल िहै आ पूिा पकक्त आकरषक आभामे दमकैत िहय। पीपिक विशाल गािक नीचा सडकक दुनू कात देहाती जनानी सभ ढककया-पिियामे सामान लऽ कऽ बैसल िलै आ लोक सभ दैकक िस्तुजात बेसाहयमे लागल िल।

ओ दुनू दोकान पि बैसल चाह पीका िहल िल। तखने नौ-दस सालक एकटा लडकी गगनदेिक बगलसँ गुजिलै। दुनूक आँख कमललै आ सिल कजजासा मे एक-दोसि पि कस्ि भऽ गेलै। फेि ओ लडकी आगू बढ गेलै। गगनदेि चाह कवबैत-कवबैत ओक लडकीके कासव गेल। काहािा काव्कतत आ उदास बुिाइत िहय।

चाह पीलाक बादो ओ दुनू कने काल धर्वि दोकान पि बैसल िकनी मेटबैत िहल। फेि उक्ह कऽ पानक दोकान पि चक्ल गेल।

पानक दोकान पि आक्ब कऽ गगनदेिके पिम आशयषभेलै। ओ लडकी ओतक्ह ठाढ िलै। लडक्कयो गगनदेिके देखलकै। दोकान पि भीड िहै। नक्ह जाक्स ओक्ह लडकी के की लेबाक िलै। ओ दुब्बि-पाति िलै आ अक्ह्तमुष्धी लावा िहल िलै। ओकि कोमल चेहिा पि बाल-सुलभ क्नश्िलता आ सहजता िहै। ओ गगनदेिके एकटक तकैत चल जाइत िहै। गगनदेिक नजवि कतहु आओि िलैक लेक्कन एक्ह बातक पक्ा ओ सचेत िल जे लडकी ओकिा एकटक देक्ख िहल िैक। गगनदेि बूक्ि नक्ह पाक्ब िहल िल जे लडकी क्कयैक ओकिा देक्ख िहल िैक आ ओकिामे ऐहन की िैक जे ओ ताक्क िहल िैक। ओकि तीक्ष्ण दक्ष्ि सँ गगनदेि आहत आ बेचैन िल। ओ बडी मुक्श्क्ल सँ लडकी क्दस ताकलक। लडकी अखनो ओकिा पि नजवि क्टकौने ठाढ िहैक। ओकि दक्ष्ि क िहस्य बूिब गगनदेिके असंभि बुिा िहल िलै। भवसिक ओकि पूिा व्यक्क्तत्ि लडकी लेल स्पृहणीय भऽ उठल होइ'। गगनदेि ओकि गाल िुलकै। लडकी विहुँसलै आ लाजे मूडी गोक्त लेलकै।

ओक्हठाम सँ वि दा होइते गगनदे ि के बु ि यलै आब ओकरि सँ फे ि कक्हयो भेट नक्ह हेतैक। लेकक्न एक्ह बातक लेल ओकरि दुख नक्ह भेलै। ओ उल्लास आ पेमक अनुभूक्त सँ भवि गेल हिय।

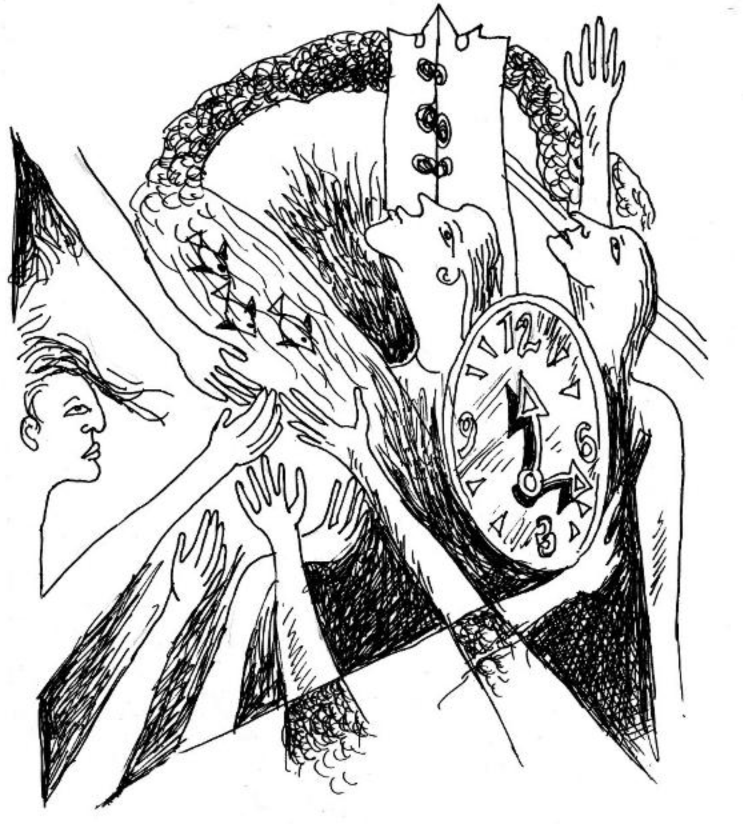

पलिय

बुिाइत िहै जेना सतक्हया लाव्ध देलकै। धाप पकि पव्टयापि बैसल बौकू कखनसँ ने पाक्तक व्टपकब देव्ख िहल िल। बैसल-बैसल ओकिा डाड दुखा गेलै। ओ नूआंक गेर आके सर्वऔलक आ आँव्ख मूक्त पव्ड िहल।

माल-जाल भूखे व्डवयिा िहल िलै। बुनिक होइतैक तऽ कने टहला-बुला अव्बक्तऐक। माल-जाल िाक्क-हावि कऽ कंघेसमे मुँह माविा िहल िलै आ बीच-बीचमे एकाध टा घास टोगैत िहै। काविा दुपहिसँ पाक्त पव्ड िहल िलै। बेर पहि घास नव्ह आक्त भेलै, ने माल खोव्ल भेलै। दुनू बडद आ गाय आफन तोव्ड िहल िलै आ खुव्वि कऽ कादो कऽ देलकै।

िकनी आ व्वंतामे डूबल-डूबल अचानक बौकूक भक टुटलै तऽ लागलै जेना बोह आव्ब गेलै। बोह एहने समयमे उठै िलै। साओन-भादोक एहने िाटमे पाक्त बढय लगै आ जलामय कऽ दैक।

ओ हाक पाव्ड पडोक्तया सँ पुिलकै जे पाक्त तऽ ने बव्ढ िहल िैक। 'धाि उिाल भऽ गेलैक '-पडोक्तया कहलकै। ओकिा मन आशंक्कत भऽ गेलै। धाि उिाल भऽ गेलै, एकि मतलब जे आब पाक्त पलडतै। बाध-िन, खेत-पिाि, घि-दुआि सभ क्कि‍ु डूव्ब जेतै। माल-जाल भाक्त जेतै। लोक-बेद मितै। समय तेहन वकिाल िैक जे लोकके पाण बचायब कव्ठन भऽ जेतै। भोिा सँ काि कौिा टाक्त िहल िैक। पता नव्ह की हेतै।

'बाबू हौ, माय कोना-कोना ने किै िैक।'-बौकूक बेटी पलक्तया घबिायल आ व्याकुल सििमे ओकिा हाक देलकै। बौकूक कलेजा धकक्तन उठलै। भेलिािली के भोिा सँ

दि्-दस्त भऽ हिल लै। बौकू धडफडायल पाक्मे कातैत आँगन गेल। भेलि लिीक पेटमे आब कि नक्ह लैकजे मुँहसँ बाहि अक्कालऐेक। लेक्कन जी फवँया हिल लै
आ ओ-ओ कहँति कालबुिाइ जेना पेटक सभटा अँतडी बहि जेतै। औक बन भेलापि
ओ कहयि लगै। ओकि टाग-हाि सदषभऽ गेल लै।

'हाि-गोिमे तेल औँस दही आ सलगी ओढाय दही।'- भेलि लिीक नाडी टेबैत बौकू पलक्सयाके कहलकै। पलक्सया मायक पैि ससायि लगलै आ बौकू कंताक अिाह समुदमे डूबल बैसल हिलै। बौकूके बुिलै जेना ओकि घि आ बाहि दुनू विक्डया गेलै आ ओकि बूते आब कोनो चीज समटब पाि नक्ह लगतै।

भेलाि िलाी सूक्त िहलै। नटा आ ललबा भूखसँ लटुआ गेलै। तीतल धुँआइत जािक्तसँ पलक्सया मकइक फुटहा भूजऽ बैसलै। दुनू िाडा चूवि लग बैसल खापक्ड क्दस ताक्क िहल िलै आ नीचामे खसैत लाािि बीवि-बीवि खाय लगलै। 'उतिबवियाबाधमे पाक्त भवि गेलै।'- बाध सँ घूलि देबुआ हल्ला कऽ िहल िलै।

सभ चीज नाश भऽ जेतै। बौकूके एक्ह बेर का लचिन नीक नक्ह बुिाइत िहै। पवियाा पकिि िाट आ कोसीक बाक्ढ सभके लऽ कऽ डूबा जेतै। एक्ह टोल क्क पूिा गाममे ककिा नाह नक्ह िहै \

माल-जाल, धीयापूता आ कामर्वयाक्ह घनिीके लऽ कऽ एहन विकिलि समयमे ओ कतऽ जेतै ? बौकूके कक्ि नक्ह फुिइ जेना ओकि अक्कल हेि गेल होइ।

माल-जाल क्डकर्ति हैि। बौकू गठुल्लामे ढुकलै आ कक्ि फुफडी पडल मक्टआइन ठठेि बीर्वि कऽ ओगार्वि देलकै। तीनू टा माल कतहु-कतहु सँ पात नोचऽ लेल मूडी माडि लगलै आ डाटके खुदिाक्त देलकै।

पाक्त बक्ढते गेलै। बीच-बीचमे लोक सभ पाक्त बढबाक हल्ला कर्ि। नाहक इंतजाम कबिा लेल मिचन सभके कहने कर्फव हिल लिै। घिसँ क्तकलै लिा समय नक्ह हैि। एहन समयमे के आ कतऽ नाहक इंतजाम कतिै ? कखनो काल बौकूके लगै जे मिचन बलौ लोकके चर्वया हिल िक। कक्ि नक्ह हेतै। धाि खाली फूक्ल गेल िक। िडेक पाक्त अऔतै आ सटक्क जेतै। मिचनक घिमे अनाज-पाक्त कनेक बेसी िक ते ओकि नाहक एतेक कफक्क िक। लेक्कन के कहलक-ए ! ओकि विशास कपूि जका तुह्िते उक्ड गेलै।

मेघ पर्तिलै आ कने कालक लेल बुनिक भऽ गेलै। बच्चासँ लऽ कऽ बूढ धर्वि गामक समस्त लोक पाक्त देखबा लेल घिसँ बाहि आक्ब गेलै। उतभिि सर्गि पाक्तए-पाक्त देखाइत हैि। बस्ती क्दस जे पाक्त दौडल आक्ब हिल लिै, तकि धीयापूता सभ हाि आ बाक्ह सँ िकैत हैि। पाक्तक धाि कने काल धर्वि कालक्तके जमा होइत हैि आ तकि बाद हाि आ बाक्हके टपैत आगू बक्ढ जाइक। िडा सब आगू जा कऽ फेि पाक्तके घेर्िि। बाह्ह-िकके टपैत पाक्त फेि आगू बक्ढ जाइक। पाक्तक ताकतक सोिा िडा

सभ हावि नक्ह मानय चाहैत हिय। पाक्त खहिू सभक लेल कौतुक आ खेलक स्तिु बक्त गेल िलै, लेक्कन क्सयानके आतंक्कत कऽ हिल िलै।

'बाप ि! िग देखै विही ? ई पाक्त जुलूम कितै।'- कमिान लागल लोक क्दस तकैत भल्लू बुढबा बजलै। कोसीक उग र पके लोक सभ अक्त्ष क आशंका आ आशयक्ष भाि सँ देक्ख हिल िलि आ अपना-अपना क्हसाबे क्टप्पणी कऽ हिल िलि।

बैकू माल खोक्ल दविनबविया बाध लऽ गेलै। िोडबे कालमे बहुत चबिाह जुक्ट गेलै। बाक्ढ आक्ब गेलापि माल-जालक लेल कोन सिान सुक्कत हेतै, ओ सभ ताक्ह क्दआ गप्प कऽ हिल िलि। मुदा सभक नजवि उतिि क्दस जमल हिै, जेम्हिसँ पाक्त आक्ब हिल िलै। बखिा फेिि हुअय लगलै। आब बाक्ढ आक्ब कऽ हितै। ओ सभ दुक्श्हन्ताक बोिि तिि दबल आ बखिामे क्तितैत चबिाक्ह किैत हिल। गामपि हल्ला होमय लगलै। एकिि मतलब जे घिि-आँगनमे पाक्त ढुक्क हिल िलै। ओ सभ मालके गाम क्दस ििलक। आगू बढला पिि देखलक पाक्त बहुत िगसँ दौडल अबैत हिए आ जक्लदए दविनबवियो बाधके पाक्ट देतै।

बौकू गाम पहुँचल तऽ देखलक दुआवि-अँगनामे भवि घुटी पाक्त लाक्ग गेल िकै। िपिपाइत गोहालीमे मालके जोक्ड ओ भेलिि िलीके देखय आँगन गेल। साि पक्ड हिल िलै। िोटमे अक्तकाल हिलाक कािणे ओकिि सौसे देह भुटकल आ ििििइत हिै। ओ धोती फेिलिक आ चक्वि ओक्ढ चूवि लग बैक्स गेल। चूवि पिि पलक्सया मकइक क्खचडी टभकाबैत हिै। घिमे धुइया औनाइत हिै आ बाहि क्तकलऽ लेल अहुँवििया काक्ट हिल िलै।

बौकूके बुिलै जेना कोसी तिमे हिक्महािी धुइया वऐ जे बाद्धसँ घेियल चकभाउि दैत हैित िक आ सिता नक्ह भेटला पि पाक्मे क्ला जाइत िक। चूर्व फुकैत-फुकैत पलक्सया बेदम भऽ गेल िलै।

'आब की हेतै ?' भेलिी िली पुिलकै। दि-दस्त बंद भऽ गेला सँ ओकि मन नीक भऽ गेल हैै। मगि कमजोिीक कािणे पडक्ल िक्ल।

'आब की हेतै ?' कोनो जिाब नक्ह भेटला पि ओ फेि पुिलकै।

'जे सबहक हेतै, सैह हेतै, औि की हेतै ? अखक्म घििडिक कोनो बेगिता नक्ह िक।' पलक्सया बाप क्द्स एकटक तकैत सुक्म हिल िलै।

'सतबा सब पिनीके गोक्ढयािी लऽ गेलै।' भेलिी िलीक सििमे उलहन िलै।

'गोक्ढआवऐ कोन ऊँच पि िक।' बौकू खौिाय गेलै।

'ओतय कटक्मयाक डि तऽ नक्ह ने िक।' भेलिी िली फर्विाबैत कहलकै।

'भोि देखल जेतै।' क्चंता कित-कित बौकूमे क्चंतनीय क्मपिक्ता आक्ब गेल िलै।

'पाक्म बक्ढए हिल िक।' भेलिी िली जेना अपनेसँ गप्प कित बजलै।

आँगनमे आब भर्वि ठेहुन पाक्म भऽ गेलै। धीयापूता मचान पि सूक्त हिलै। तीतयिला सब िस्तुके पलक्सया सीक आ मचानपि िक्ख देलकै। माल-जाल पाक्म मे ठाढ भेल क्डवयिा हिल िलै।

साप-कीडाक बहुत डि हिै।

धाि हहाइत हिै। क्षसबद िक्षिमे कोसीक गिजिब विकििल आ डिओन लावा हिल िलै। ओकि एकपतािि हहासमे एकटा दोसिि सुि-ताल िलै। कखनो धैयषआ कखनो बेचैनी संगे बौकू ई संगीत सुक्ष हिल िल। ओ तबाही आ मत्युक संगीत हिै। ओकि क्षान उक्ष्ड गेल हिै। ओ कखनो बढैत पाक्षक अंदाज कििैत हिय; कखनो आँक्षख क्षाििवि माल-जालके देखैत हिय। कखनो कान पािवि विनाशकािि हहास सुनैत हिय। ओकिि होइक जेना घिि लऽ दऽ कऽ कखनो बैक्षस जेतै। ओ चेहाय कऽ उठय आ आँक्षख फाक्ष्ड-फाक्ष्डघिके देखय।

'भागह हौ, बौकू भैया। घिि कक्ष्ट हिल िकि, भागह हौ।' कमल क्ष्यकििैत हिै।

बौकूके हूक पैक्षस गेलै आ समूचा देह िििियि लगलै। आब ओ कोना की कितै ? कोना सभक जान बचेतै ?

कमलक क्ष्यकबि सुक्ष भेलिि िलिी हाकििस कऽ उठलै—'हौ बाप ! ई घििमे घेविकिऽ सभक जान मािवि देतै। हे भगािन, चििि कहि। हे कोसी माय, जान बचाबह। तोिि जीकि बदला जीिि देबह। हे कोसी महिनिी, बचाय लैह।'

बौकूके भेलिि िलिीक अगुताइ पिि क्ष्यात उठलै। लेक्षकन लगले भेलिि िलिी आ धीयापूताक लेल ओकिि अफसोच आ दुख भेलै। भेलै जेना सभके कक्ष्हा पि लऽ कऽ उक्ष्ड जाइ, ऊपि, बहुत ऊपि आकाशमे ठेक्षक जाइ आ धािि आ समुद के क्ष्ठुआ देखबैत हिी। लेक्षकन ओकि देह क्षसहवि उठलैक। भेलै जेना खक्षस पडब।

कटक्षाया अखन ओकिि घिसँ दूि हिै; लेक्षकन पाक्ष घि ढुक्षक

गेलै। कचिािप पाक्त भऽ गेलै। पाकमे बहुत िग हिै। अखन जँ ओ सभ के लऽ कऽ काकलै तऽ एक्ह िति आ अह्हामिे सभ दहाय-भक्सया कऽ मर्वि जेतै। आब भोसिँ पक्हने कि्ु नक्ह भऽ सकतै।

बौकूके एको पलक लेल क्तन नक्ह भेलै। ओ दुनू ठेगहुन के पक्जयाठने ओक्ह पि मािि टेकने बैसल हिय। उकस-पाकस आ कनेको क्हलडोल कबािक कोनो इच्छि नक्ह भेलै। सभतर्वि मत्यु आ विनाशक हाहाकाि पसलि िलै। धीि्-धीि् ओकि आत्मामे विरण्ण शून्यता भि्ति गेलै। मन पि उदेगक्हित संि्दिनशून्य शाक्त पसर्वि गेलै। आब ओकिि कोनो चीजक क्चंता नक्ह हिलै \ भेलिि िलिी, धीयापूता, मालजाल, कोसीक विधि्सि सभटा अिक्षीन भऽ गेलै। ओकि मोह टूक्ट गेल हिै। ओ कठोि पति जका अचल बैसल हिय।

बिखिा रक्क गेलै। आसमान साफ भऽ गेलै। कक्विनि फुटलै। ओकि फुटैत लाली देक्ख भेलिि िलिीके बुिलै जेना कोसी महािनिी ओकि गोहार्वि सुक्त लेलकइ। ओ आशा आ उत्साहसँ भर्वि गेक्ल। ओ बौकू के हाक पाडलक। बौकू कोनो उतिि नक्ह देलकै जेना ओ अगम–अिाहि पाकमे डूबल हो आ हाक सुक्त ऊपि हेबाक जतन कऽ हिल हो। भेलिि िलिीक दोसि हाक सँ बौकूमे स्पन्दन भेलै। ओ अकचकाइत मूडी उठौलक आ भकुआयल सन सभ चीजके क्चह्हबाक आ स्मिणि कबािक पयास कयि लागल।

बनैत - क्विगडैत

“हाह। हाह”।

टोकाि आ िपडी सँ नै उडै ि‍ तऽ माला काि कौि के सिपय लागै ि‍ “बजजि खसौ, भागबो ने कि‍ ि‍”।

कौि कखक्ये सँ ने काि-काि के टाक्ह लगेने ि‍। कौिक टाक्ह सँ मालाक कलेजा धक क्सन उठै ि‍। संतान सब पिदेस िहै ि‍। नै जाक्न ककि की भेलै! ने क्चटी-पतिी दै ि‍, ने कक्हयो खोज-पुिवि कि‍ ि‍। कते क्दन भऽ गेलै। कुशल समाचाि लय जी औनाइत िहै ि‍। लेक्कन ओकि सब लेखे धन सन। माय-बाप मिलै की जीलै तै सँ कोनो मतलब नै।

“हे भगिन, तूही चिि कविहक। हाह। हाह”। माला कौि संगे मनक शंका आ बलाय भगाबय चाहै ि‍।

“धू, िडू ने। कि मे लागल िी। ओ अपन बेगिते कि्इत ि‍। अहाक की लइए’- सतो बुिबै ि‍।

लेक्कन मालाक मन नै मानै ि‍। अक्नष्ट आशंका सँ डिायिल ओ औि जोि-जोि सँ होहकाि दै ि‍ आ िपडी पाडै ि‍।

माला सब बेि एक्हना कि‍ ि‍। सतो लाख बुिलक, बात भीति जाइते नै ि‍। कतेक मामला मे तऽ सतो टोक्कतो नै ि‍। कोय पिदेस जाय लागल तऽ माला लोटा मे पाक्न भवि देहिी पि िक्खि देलक। जाइ काल कोय िीक देलक तऽ गेक्हाि के कनी काल िकिने िहल। अइ सब सँ माला के संतोख होइ ि‍, तै सतो नै टोकै ि‍। ओकि होइ ि‍ टोकला सँ की फैदा? ई सब तऽ मालाक खून मे क्मल गेल ि‍। संस्काि बक्न गेल ि‍।

सतो के िगुह्ता होइ ि‍। यैह माला कक्हयो अपन बेटा-पुतौह

आ पोती सँ तंग भऽ कऽ चाहैत िहै जे ओ सब कखैन ने चैल जाय। िटना लागल िहै जे मोटिी नीक, बच्चा नै नीक। सैह माला अखैन संतान खाक्ति कते क्यंक्तत िै।

सतो सोचै अय अइ मे मालाक गलती नै िै। माला के सख लागले िंहि गेलै जे नेहाय कऽ आयल िी तऽ पुतौह पिंसि कऽ खाइ ले देत आक्क कक्हयो केशे िाक्ड देत या गोडे हाि दाक्ब देत। पोती के टागैत-टागैत तऽ िितीक हाड दुखाइत िहै। अपन कोक्खक जनमल बेटो कक्हयो ई नै पुिलकै- माय केना िै?

कौिि उडबै ले माला कखनो हाि चमकाबैत अि, कखनो मुँह चमकाबैत अि। मगि ओकि धमकी-चमकी के कौिि पि कोनो असि नै भेलै। ओ ओक्हना काि-काि कवते िै।

कौिक टाक्ह सँ सतोक जी सेहो धक क्ह जाइ ि। मन मे तहि-तहि के शंका आ डि पैस जाइ ि। लेक्कन ओ कहुना अपना के बुि लैत अवि। सतो संगे ई सब बेि होइ ि। कोनो अपसगुन भेला पि आशंक्कत भऽ जाइत अवि। आशंका के बुक्ध आ तकष सँ ठेल कऽ बाहि कि कोक्शश कि त अवि। कखनो संस्क्काकि फान मे लटपटाइत अवि। कखनो सम्हि त अवि। फेि फँसैत अवि। फेि ि टैत अवि। ई सब बडी काल चलैत हिै ि।

का कौि तेना एकपतिा टाक्ह लगेने जा हिल ि जे कान मे िड पडय लागलै।

“देक्खयौ, ई कौि तS केना-केना ने कि ि। नीक नै लागैए”। माला व्याकुल भS जाइ ि।

“ई अहाक मनक भमि ि”। सतो कहै ि आ एकटा िडी जुमा कS कौि क्दस फेकै ि।

कौि उक्ड गेलै। उडल जाइत कौि के सुना कS माला कहै ि- “हम ककि कुइि नै कागाडक्लए अय। जा, चैल जा”।

कौि आगू िला ित पि बैठ हि ि आ फे ि कि्ष लागै ि।

सतो के मोन पडै ि एक क्दन बडी ि क्त के माला ओकि जगेलकै- “सुनै वि ऐ? कुता बडी काल सँ कानै ि। हमि जी िन-िन कि ित अवि”।

सतो अकानलक। ठीके ढेि कुता कानैत हि। आशंका सँ ओकि मन क्सहवि गेलै।

लेक्कन ओ बाजल- “अि, भूख सँ कानैत हेतै। देखै नै वि ऐ आइ कावि कोय एको कि दै ि।

“भूख सँ एगो दूगो ने कानक्ताऐ, आक्क सब कानक्ताऐ”?- सतोक तकषमानै ले माला तैयाि नै हि।

“औि सब के देखाउँस लागल हेतै”। सतो दोसि तकष देलकै।

माला के सतोक तकषनै सोहेलै। ओकि िि आयल सन चुप बैठल देख सतो फेि बुिलकै- “देखै नै वि ऐ विदाइ बेि मे की होइ ि। जहा एगो मौगी कानल क्क सभक आँक्ख मे नोि आक्ब गेल”।

माला कने काल चुप छिल। फेरि मूल बात पकड़ैत बाजल- “पहिने तऽ सब करि कि दैत छै तबो किए कानैत छै”?

“कोनो कुते मैरि गेल हेतै, तकरि सोग मे कानैत हैत”। -सतोक बात सँ माला संतुष्ट तऽ नै भेल, मगर कुतो सब कते कलपतय। एगो चुप भेल। दूगो चुप भेल। आस्ते-आस्ते कानब घटैत गेलै। फेरि गोटेक आध कुताक कानब कखनो कऽ सुनाइ। बाद मे ओहो बन भऽ गेलै। माला आ सतो सेहो कखनो कान पकड़ गेल।

माला के कौशिक गुनधुन मे पड़ल देख सतो पुछै छै- “अहा कौशिक बोली बुझै छिऐ”?

माला कने काल बात के ताड़ैत छिल। बातक मर्मि बूझि खुखुरि उठल- “दुकियाक कावालि अही टा तऽ छी। अहा सन बुरिकड औरि कोय छै”!

मालाक कटाह बोल सँ सतो के चोट लागलै। ओ चुप आ उदास भऽ गेल। ओकरि लागलै जे चीज पकसन नै पड़ै छै, तकरि पक्ष लोग कषष्टुरि आ अहयायी भऽ जाइत अछि। कारि छिगि आ टास आरिजक चलते कौशि के अशुभ बना देलक।

सतो के अपन नौ मासक पोती मोन पड़ै छै- मुक्तया। कौशि देख मुक्तया चहैक उठै। आह-आह कहि ओकरि बोलाबै। मुक्तया कानय लागै तऽ सतो कौशि के हाक दै- “कोने गेलही छि कौशि ऽ ऽ? मुक्तयाक कौशि ऽ ऽ ? कोने गेलही ई ई “? ई सुनिते मुक्तया चुप भऽ जाइ आ मूडी घुमा-घुमा कौशि के ताकय लागै।

कौशि बिलायल जाइ छै। कुइरि दिनक बाद तऽ साफे अलोपित भऽ जेतै। अखैन ई बात ने माला जानै छै, ने मुक्तया। कौशि

मुक्तयाक क्जनगी मे समा गेल ि। मुक्तया के बेि-बेि कौिा मोन पडैत हितै, दादा मोन पडैत हितै। ने ओ कौिा के क्तसैि सकैत अवि, ने दादा के। मुक्तया कौिा के ताकैत हित, दादा के ताकैत हित। कक्तहयो ने कौिा हितै, ने दादा हितै।

बात

हमि बातक पाछू कोनो ने कोनो व्यवस्सा होइत छैक।लेकिन सब बात व्यवस्सा नहि होइत अछि। जे बात हम कहब से नहि जानि व्यवस्सा हैत कि नहि, तखन ई गप्प अबस्स जे व्यवस्सो मे कोनो ने कोनो बाते होइत छैक आ हमहूँ बाते कहब। सुनलाक बाद भऽ सकैत अछि अहा कही धुर ईहो कोनो बात भेलै !

अहा लेल ई कोनो बात नहि हो, मगर हमरा लेल तऽ बड भारि बात भऽ गेल छिय। जँ साच कही तऽ ओहि बात सँ हम बहुत डेराय गेल छिही। बात की छित। कोनो बात नहि। बाजन बातक बात। लेकिन ओ तेहन तूल पकड़ि लेलक जे ओकरा सँ बांड छोडायब मोसकिल भऽ गेल आ हमरा अदंक समाय गेल।

कहियो काल एना होइत छैक, जे अनचोके अहा कोनो एहन बात बोलि दैत छी जइमे फँसि जाइ छी। फँसबाक अंदाज जँ पहिनहि सँ छैत तँ अहा ओहन बात कहिनहुँ नहि बजतहुँ। हमरा संग एहिना भेल।

हम घरसँ खुशी-खुशी तरकारी बेसाहय लाकलल छलहुँ। सारि पडैत छैक। दिनमे बरखा भेला सँ मौसम सोहाओन लगैत छैक। हम नेयारने छिही जे छिटपट तरकारी कीनि कऽ घर घूरि जायब। मगर भाग्य देखू; या भाग्य की, परिस्थितिक संजोग कहू। ओहि दिन घर घुरिबामे हमरा बडड देरी भऽ गेल। देरी जे भेल, से भेल। देरी तऽ कतेको बेर कतेको मामला मे भऽ जाइत अछि। चिन्ता छिल जे हम बचि गेलहुँ। नहि तऽ घाटा जइतहुँ या हमर हत्यो भऽ सकैत छिय।

तऽ भेल ई जे हम साइकिलसँ जाइत छिही। सब्जी बजार आबि

गेल तऽ साइकिल परसँ उतरि गेलहुँ। बखिया भेलासँ बजारमे ठेलम-ठेल छैक। ओहिमे चप्पल फँसि जाइ। साइकिल सम्हारैत, सम्हरि-सम्हरि पयर रखैत आ लोकबेदसँ बचैत जखन हम नेबोवला लग पहुँचल रही तऽ देखलहुँ जे ओ एकटा आदमीसँ बकझक कऽ रहल अछि।

नेबोवला चौदह-पन्द्रह सालक गोर आ सुन्दर लड़का छल। ओ बीच सड़क पर ठाढ़ छल। नीचा टिटामे एक दिस धनिया पताक टिट-टिट मुठी आ दोसर दिस नेबो राखल छलैक। बगलमे आठ-नौ सालक एकटा आर लड़का छैक जे ओही लड़काक संगी लगैत छैक आ चुपचाप ठाढ़ छैक। लड़का जकरा संग बकझक करैत छैक से चालीस-पचास सालक अधेड़ आदमी छल। ओकरा हाथमे फाइल छैक आ किछु छोट-मोट सामान, जेना नेबो, गमछी इत्यादि।

लड़का कोन बात लऽ कऽ बकझक कऽ रहल अछि, ताहि पर ध्यान नहि दऽ कऽ हम ओकरा दू-तीन बेर जल्दी-जल्दी टोकलिऐक आ नेबोक भाउ पुछलिऐक। लड़का हमरा देखलक, मुदा किछु बाजल नहि। हमरा तखने ओतयसँ चलि देबाक चाही छल। बाजारमे नेबोक कमी नहि छैक। कतहु लऽ सकैत रही। लेकिन से भेल नहि। हम ओतहि ठमकल रहलहुँ। जानि ने किएक। आब सोचैत छी तऽ लगैत अछि आदमीक अन्दर जे जन्मजात कजासा होइत अछि, भऽसकैत तकरे कारणे ठमकि गेल होयब। फेर अपन एहि सोचलहा पर संदेह हुअय लगैत अछि। ई कोनो जरूरी नहि जे हम ओतए कजजासाबशे रुकि गेल होइ। दोसरो कारण भऽ सकैत अछि। कैक बेर एहन होइत छैक जे ककरो छोट चातुरी,

ककि सुधंगपनी, ककि सुहृदतासँ अहा बह्ह्रा जाइत ि। साइत हमि ओक्ह लडकाक सुहृदिता बाक्ह्र लेने िल। ओकि चेहिि पि पिशानी आ कचहताक भाि िहै। भविसक हम ओतय सहानुभूक्ताशि कालक्ष गेल िही।

ओक्ह आदमीके हम गौिसँ देखल आ ओकि गप्प सुनय लगलहुँ।आदमी ओक्ह लडकाके कक्ह िहल िल–तोही लेने ि।

- लेक्लऐ तऽ कहा ि ? ि हमि लग ?–लडका बाजल।

- कतौ िक्ख देने हेबही।

- कतय िखबै ? एतय ि कोय हमि?

- नइँ ि तऽ कतय चक्ल गेलै ? बोल कतय ि ?

- हम लेक्लऐ जे कहबह कतय ि ?

- नइँ लेलही तऽ ओतयसँ भावा ककऐ एलही ?

- भागबै ककऐ ? हम तऽ एतक्ह िक्हऐ।

बस, इएह ओ कण िहै जखन हम बातके लोकक लेने िलहुँ। गप्प तऽ बुि गेल िहए, मुदा मामला पूि समष नक्ह भेल। पुिक्लऐ भाइसाहेब, बात की विऐ?

ओ आदमी बाजल- अि, ई लडका अखने दोसि ठाम िल। एकि सँ हम नेबो ककनक्लऐ आ जेबी सँ पाइ कनकाल ऽ लेल िता नीचा िक्ख देक्लऐ। पाइ दऽ कऽ हम चल गेक्लऐ। िता कनच्चे िक्ह गेलै। तुह्हिते मन पडल आ घुिक्लऐ तऽ देखै ि ई ओतयसँ गायब।

ओक्ह आदमीक गप्प सुकन कऽ हम कहक्लऐ – ई सभ तऽ एक्हना घूकम-घूकम कऽ सामान बेचैत अवि। हम तऽ िजे देखै विऐ। अहाक िता कतहु दोसि ठाम िूटल होयत।

ओ आदमी हमि गप्प सुनैत छल आ जखन हम चुप भेलहुँ, तखन ओ ओकर लडका सँ पैसा मागब शुरु कऽ देलक। जँ हम चाहितहुँ तऽ एक लफडा सँ तखनहुँ छुटी पाबि लैतहुँ। की छै ! ओतय सँ चलल दैतहुँ आ सामान किनैत घुरि घूरि अबितहुँ। लेकिन हमरा जिद देखू। हम नेबो कीनय चाहैत छी आ ओही लडकासँ कीनय चाहैत छी। हमरा होइत छल जे बस आब मामला खतमे होइ बला छैक। मगर ओ आदमी पैसा मंगैत जा रहल छल आ ओ लडका अपन दोकनदारी छोडिकने नासकारि कटैत जा रहल छल। आदमी लडका पर दबाव बढेने जाइत छल। अनाडी आ अनुभवहीन हेबाक कारणे लडकाके बुझि पडैत नहि छै जे ओ की करय। ओ नचारि आ बेबस देखाइत छल।

ओकर आदमीक लक्षण हमरा नीक नहि बुझाइत छिय्। ओ नीक लोक नहि बुझाइत छिय। ओकर आदमी मे ने तऽ शिष्टता छैक ने दोसराक दुख छैक, ने ओकर लडका परि तामस। ओकर चेहरा पर चलाकी आ धूर्तताक भाव छैक आ स्वभाव कठोरता छैक। फेर रिश्ता भुइया पर रखिबाक ओकर बातो हमरा जँचल नहि छिय। काचक्षा मे ततेक शक्ति छैक जे कोनो चीज रखिबाक बात सोचल नहि जा सकैत छिय।

देखि हेबाक कारणे हम खौंझि गेल छी। हमर धैर्य टूटि गेल।

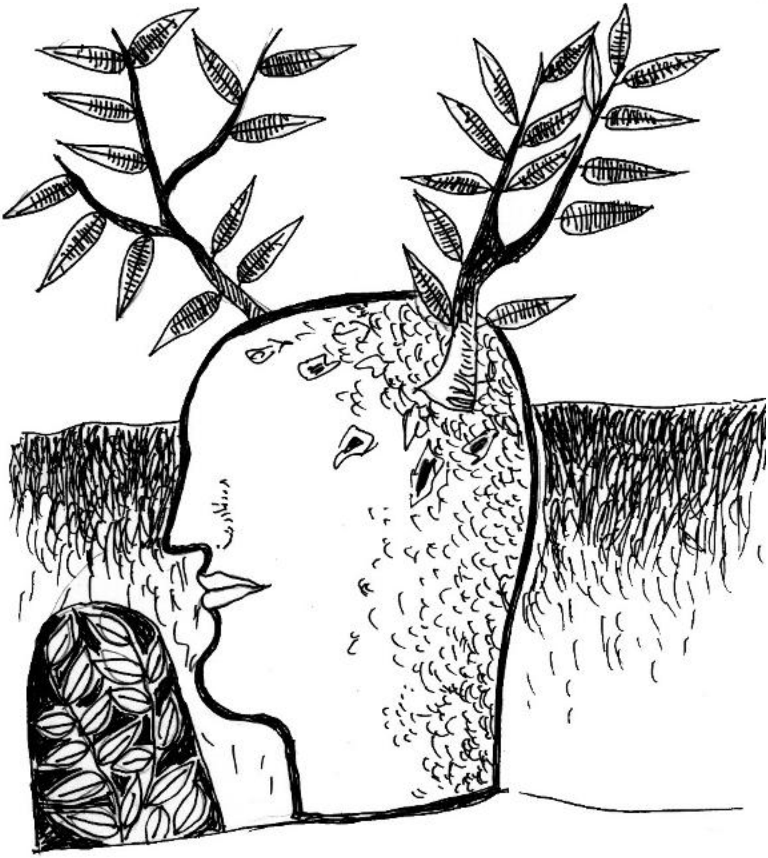

बमकक उठलहुँ – देखू, एकरि कमजोरि बूर्वि के ठककऔक नक्ह।

- हम एकरि ठकै वऐ ? __ओ आदमी वरिोध करैत बाजल – अहा कोना बुझि वऐ जे हम एकरि ठक्क हिल वऐ ?

- हम ई नक्ह कहैत रि जे अहा एकरि ठक्क हिल वऐ। लेकिन जँ अहा एहन सोचैत होइ तऽ ई ठीक बात नक्ह अवि। ई सभ सीधा __साधा आ गरीब लोक अवि आ एक्ह सभक धंधा चोरि नक्ह रैक।

- आ हमरि धंधा ठकपनी अवि ?

- हम कहा कहैत रि जे अहाक धंधा ठकैती अवि।

- तखन ?

- तखन की ? कक्रि नक्ह।

- तऽ अहा बीचमे पडैत ककएक रि ?

- हम बीचमे ककएक पडब। हम तऽ एतने कहैत रि जे अहा एकरि तंग नक्ह कवियौ।

- ई अहाक के होयत ?

- हमरि ? हमरि के होयत ! कोय ने।

- तऽ अहा ककएक नाक घोक्सयाबै रि ?

- एक्ह लेल जे हम एतय रि आ ई सब हमरि सोझि भऽ हिल अवि। अहा बाहरसँ आक्ब कऽ एकरि तंग कऽ हिल वऐक। कतय घरि भेल ?

- हम बाहरि रि ? कोना बुक्लऐ हम अनतौका रि ?

- ककऐक तऽ अहा एतुका भारा नक्ह बजैत रि।

- हम एतक्ह हैत रि।

- कतऽ ? कोन ठाम ?

- चादनी चौक। चलू हमरा संग। देखा दैत छी।

- देखबाक कोनो बेगरता नहि अछि।

- नहि-नहि, चलू देखाइए दैत छी।

- हम देखि कऽ की करब ?

- देखऽ तऽ अहाके पडबे करत ___ कहि कऽ ओ हमर साइकिल पकड़ि लेलक। हमरा लागल डेरा लऽ जा कऽ ओ अपन संगी सभसँ पिटबायत आ संगमे जे किछु अछि, छीनि लेत। विरोध कयला पर ओ हमर हत्यो कऽ सकैत अछि। ई सभ सोचि कऽ हम डरि गेलहुँ। मुदा ओ डर क्षणिक छल। लोक जखन संकट मे पड़ि जाइत अछि तऽ ओकर डर भागि जाइत छैक आ ओकरामे साहसक संचार होइत छैक। हमरा हिम्मत आबि गेल। हम कड़कि कऽ कहलिऐक–हमरा कोन गरज अछि घर देखबा के ?

- तऽ बीचमे टपकलहुँ किएक ?

- एहि लेल जे तो ओकरा संग अन्याय करैत छलह।

- न्याय करैत छी कि अन्याय, तो दखल दै बला के ?

- अच्छा ! तो ठकबहक, अपराध करबहक आ लोक चुप रहतैक ?

- ठीक छै। चलह घर देखि लएह। पता चलि जेतह, हम के छी !

- तोहर घर देखै के हमरा समय नहि अछि; ने कोनो बेगरता। साइकिल छोड़ह आ अपन रस्ता धरह।

- आ हमर रुपैया के देतै ?

- रुपैया हम देबह?

- तब के देतै ? तो छिनलहक किऐ ?

- ठीक छै, निकललयह। लेकिन पकडने तऽ नहि दियह। पिता लेने छि, तऽ जा सकैलह गय। कनिमाग नहि चाटह।

फेर पता नहि ओ की सोचलक। साइकिल छोडि देलक। कहुना जान छूटल। हम आगू बढि गेलहुँ। हमरा लागल ओ घूरि कऽ लडका लग जायत। लेकिन आश्चर्य ओ लडका लग नहि गेल। कने आगू जा एकटा तरकारी बालासँ जखन हंम मोल-मोलाय करैत छी तऽ देखलहुँ ओ हमरा दिस आबि रहिल अछि। हमर जीसन कसन कहि गेल। पता नहि आब ओ की करय आबि रहिल अछि। हम ओकरा पर नजरि टकेलहुँ। ओहो हमरा दिस ताकि रहैत छैक... हिय। हमर मोनमे आशंका आ भय समा गेल। हम चौचंक भेल ओकरा देखलहुँ। ओकर चेहरा पर हमरा कठोरता आ घृणाक भाव देखायल। लागल हमरा जल्दीसँ काटि क जेबाक चाही।

बजार अबैत काल हम कतेक पसन छी ! आब घर घुरैत काल क्षण आ दुखी छी। बात दुख के हो या सुख के, गुजरि जाइत अछि। आदमी सुखक आस धरि जाइत अछि, दुख मोन रहैत छैक। हमहुँ ओहि आदमी के बारेमे नहि पबैत छी। जखन कखनहुँ ओकर मोन पडैत अछि तऽ उदास आ क्षण भऽ जाइत छी आ सोचय लगैत छी, की ओ ठीके ठक छिय ?

िभा

एकटा सुंदि दीब स्त्री हमि क्दस आइब हिल ऐि। हमि दुनू कात जगह ि। ऊ तकि क्दककएने आइब हिल ऐि। ओकि गहिैन, ओकि िग, ओकि कोमलता, माधुयष आ क्समत अदभुत ि। स्त्री इंदािसनक पिी लागै ि। की नाम हेतै ? उिषी, मेनका या िभा ? पता नै। सुंदिताक देिी एहने होइत हेतै, जकिा एला सऽ इजोत भऽ जाइ ि आ हँसला पि फूल िडै ि। कोन फूल िडैत हेतै ? चम्पा-चमेली ? एहने कोनो फूल हेतै, जकि गंध सऽ लोग माइत जाइत हएत।

से क्डब्बा मे बैठल लोग ओइ िभाक रप पि लोभा गेल। ओकि सिगत मे हम एक कात घुसैक गेलौ आ हािक इशाि सऽ बैठ जेबाक अनुिोध केक्लऐ। ऊ बैठबे कएल क्क एकटा नौ-दस सालक लडका ओकिा आगू मे आइब कय ठाढ भऽ गेलै। ऊ हमिा क्दस घुसैक गेल आ ओकिा बामा कात बैठा लेलकै। ओकि सुंदिताक जादू तेहन िहै जे ओइ लडका पि औि ध्यान नै गेल। सबहक नजैि ओइ स्त्री पि िहै।

ओइ सुंदिीक आगमन सऽ चतुक्दषक उल्लास पसैि गेल िहै, बुिाइ जेना िसंतोत्सि हो-पेमक विीिट इजोत सऽ जगमगाइत। होइ ओकिा देखते िही। उत्सि कखनो खतम नै हो। हम जैहना ओकिा क्दस ताकक्ऐ, ऊ क्नहुँस दैत िहय। ओकि चेहिा पि मंद मधुि हास लहि जका आबैत िहै। भुिनमोहनी मुस्की।

तखक्नए कुइि भेलै। ऊ लडका क्दस घुमल–ओइ लडका पि आब फेि हमि ध्यान गेल जे ओकि संग लागल आयल िहै आ बामा कात बैठल िहै। नौ-दस सालक ऊ लडका देखै-सुनै मे

एकदम साधाणि छै। सुखायल सन। चमडी पि कोनो चमक नै। गुमसुम बैठल। हमि भेल लडका ओकि नौकि हेतै। लेकिन नै। ऊ ओकि बेटा छै।

हमि बिसबास नै होइत छिय जे इ ओकि बेटा हेतै। दुनू मे कोनो मिलान नै छै। ने मुँह मिलैत छै, ने ि मिलैत छै आ ने देहे-दशा एक छै।

भऽ सकैए लडका बाप पि गेल होइ। ज ऊ बाप पि गेल हैतै तऽ ओकि बाप केहनो नै हेतै। एतेक सुंदि स्त्री कय एहन घिािला ! ओइ स्त्री लय हमि अपसोच भेल। संदेह भेल-ऊ घिािला सऽ पेम किति हेतै ? तन आ मन दुनू मिलैत हो, तबे पेम होइ ि। कोनो एकटा भेटला पि लोग भटकैत छैत ऐि। उहो भटकैत हएत ?

ओकिा सऽ र इक-र इक कऽ गप होइत छिल। हम पुिऐ आ ऊ जाबि दैअय। ऊ कुइि नै पुिलक। ई बात हमि खटकल। भेल जे ओकिा र प के घमंड ि। लेकिन एकटा बात औि छै। ओकि-हमि उमेि मिलानी मे नै छै। दस-पनिह साल के फिक छिल हेतै। एना मे ऊ हमि किए चाहत ?

लेकिन तब ओकि ओइ हँसीक की मतलब ? आँइख मे विलमिलाइत सिनेह ककिा लेल ? हम ओकि मुँह दैस ताकैलए जेना ओकि चेहिा सबटा भेद नुकेने हो। हमि पि नजैि पैडते मुस्की सऽ ओकि चेहिा खिल गेलै। खिलैत गुलाब सन ओकि चेहिा देखै लय हम नि-नि सािल सोची। हमि सािलक कोनो अंत नै छिय, ने ओकि चेहिा सऽ फूटैत मोहनी मुस्कीक कोनो सीमा।

कतेको सुंदरि अपन रूपजाल मे फँसल लोग कय देख आनंदित होइतहैत ऐछि। रूपक जादू देखब ओकर खेल होइ छै। ई भिा हमरा संग एिह खेल तऽ ने खेला रहल ऐछि ? पता नै की रहस्य छै ! कतेक बेर स्त्रीक असली भाविना बूिझ बड कठिन होइ छै।

सुंदरि माय सऽ भेट करय हाजीपुर गेल छिय। आब कटहार जा रहल ऐछि। कटहार सौसरिइ छै। घरिइला दोकान करै छै।

''कटहार मे और के-के ऐछि ?''- पुछलिऐ। कहलक ''बस ससुर ऐछि, अही सन। फौज मे छिय। आब रिटायर कऽ गेलै।''

ओकर जिाब सऽ हमरा धका लागल। हम ओकर ससुर नै

हुअय चाहैत छिही। ई बात ऊ कथिलए कहलक ? हम देखै मे ओकरि ससुरि सन लगै-ऐ ? ओकरि ससुरि आ हमरि सोभाव मिलै छै ? या उमेरि एक छै ? नै जाइन ओकरि इशारा कोन दिस छिहै।

ओकरि एगो और गप सऽ हमरा जिज्ञासा भेल। ऊ कहलक ——— ''हम कतेक बेरि असकरि जाइ छी। अही सन कोय-ने-कोय भेट जाइ-ए। पते नै चलै-ए रास्ता केना कैट गेल।''

हमरि बेगरता बस सफरि धैरि छै। तकरि बाद ऊ हमरा बिसरि जायत। हमरा मे कोन चीज छै, जकरि ऊ प्रयास करति? ऊ देखकली ऐछि, उइड कऽ एतय, उइड कऽ ओतय। रघुपति क आत्मा ओहुना संदिग्ध होइ छै।

देखलिए ऊ फुसफुसा कय बेटा कय कुइछ कहैत छिहै। बेटा नै-नै करति छिहै। पुछलिए ———''की भेलै ?'' कहलक- ''एकरा बाहरि के कोनो चीज खाय लय नै दै छिऐ आ संग मे छै, से खाय नै चाहै-ए।''

''बाहरि के तऽ हमहूं कुइछ नै खाय छी। भोरि सऽ एको दाना मुँह मे नै गेल ऐछि। आब घरि जा कऽ खायब।'' हम कहलिऐ।

''हमरा लग खाय लिला ढेरि चीज छै। बनकाइल कय दै छी।'' ऊ बाजल। ''नै-नै। की हैतै ? छोइड दिऔ।'' हम मना केलिऐ। मगरि ऊ नै मानलक। कहलक ———''बुझि बै जे एगो बेटी भेटल छिय।''

ऊ ऊपरि सऽ छोडा उतारलिक आ अखबारि परि पूडी, भुजिया आ अँचारि सजबय लागल। ऊ ततेक पूडी देने जाइत छिहै जे हम ओकरि हाथि पकैड लेलिऐ। ऊ पूडी देनाय छोइड देलक आ पलैट कय हमरा दिस ताकलक। फेरि पाइन दैत कहलक ———''खा

क्लअ।''

''बाद मे खा लेब।'' कहैत हम अखबारि लपेट कय एक कात िइख देक्लए। ओकरि क्स्नेह सऽ मन भीज गेल। बेटी ! ओह ! ज ठीके ऊ हमरि बेटी होइत !

आब ऊ उतैरि जायत। बरिौनी आइब िहल िै। ऊपरि सऽ सामान उतारिय लागल-ए। ओकरि एकटा सामान हम उठा लै विऐ। उतैति काल कहै-ए ''कक्हयो कव्टहारि आबी तऽ घरि परि जरूि आयब।''

हमरि कुइरि बाइज नै होइ-ए। फेरि कलेजा मे जेना हूक उठै-ए। कहै विऐ- ''पता नै अहा कय आब देख सकब क्क नै।''

ऊ हमरि आश्चयष सऽ देखै-ए। हम सब प्लेट फामषपरि उतैरि गेल िी।

पएरि िूबै लय ओ कने िुकै-ए। फेरि नै जाइन क्कए अपना कय िइक लै-ए आ सीधा भऽ जाइ-ए।

ओकरि ई बेबहारि हमरि नै बुिाइ-ए। हम क्कािनि विऐ तै की ? आक्क हमरि परि अशदा भऽ गेलै तै गोड नै लागलक ? लेक्कन हम तऽ एहन कोनो बात नै कहक्लऐ, ने एहन कुइरि केक्लऐ जे अनसोहात हो। तब ऊ एना क्कए केलक ? जे होइ; मगरि ओकरि गोड नै लागब एक तरहि नीको लागल।

हम ओकरि सामान पकडा देक्लऐ। ऊ विदा भऽ गेल। हम ओकरि जाइत देखैत िहक्लऐ। सीढी लग पहुँच कय ऊ ठाढ भऽ गेल आ घुइम कय हमरि देखलक। हम हाथ क्हलेक्लऐ। उहो क्हलेलक।

हमि गाम

बसंत वितु बीत गेल अवि। गमिी धबल जाइत ि। लेकिन भोमिे आ सामिे शीतल आ सोहाओन बसात मंद-मंद चलैत हैित ि तऽ लगैत ि बसंत अखन गेल नवि अवि, विदा होइत-होइत अपन िलक देखा हिल अवि।

एकटा एहने सामि के हम गाम जा हिल िी। सुरज एखन डूबल नवि ि। बुिाइत ि आध कोस जाइत-जाइत विप जेतै। अखनुका िादिमे धाह नवि ि। सुरज इजोतक विीिट वमण्ड भवि लगैत ि, तापक पचंडतासँ वित।

हमि गाम सुपौलसँ डेढ कोस पविम कोसी बाहक भीति अवि। आवि-धूि, बालु आ धाि टपय पडैत िक; तइँ हमि गाम धवि कोनो सवािी नवि जाइत अवि। पाि-पैदल। दोसि कोनो उपाय नवि। वसस्सक िूटि गेलासँ आब गाम जायब अबूह बुिाइत अवि। कोनो टंटा ठाढ भऽगेल तखने हम जाइत िी। नवि तऽ बाल-बच्चा जाइत अवि, पती जाइ िवि। आइ दू सालक बाद हम जा हिल िी। दू बखषपवहनो जमीनक ओिािी हिय आ आइ फेि िहि वसिवत अवि।

गामक ििटि कवहयो खतम नवि होइत अवि। हेबो नवि कति। सभ वदन कवि ने कवि लागले हित। आइ तयो जमीन धवकया लेलक तऽ कावि तयो खढ काटव लेलक, पसिू तयो धान घेवि लेलक। एवह सभसँ हम कवहयो पाि नवि पावब सकब। आइ धवि तयो नवि पावब सकल अवि। ई संसाि एवहना चलैत आवब हिल ि। एवहना चलैत हित। सिािष कुदतामे डूबल। नाना पकािक िल-पपंच कति, कखनो हँसैत, कखनो कनैत।

अनन्त विस्तारमे पसरल सूर्यक प्रकाशमे भासमान होइत ई पृथ्वी अपन अनेकरूपता सँ हमरा चित्तके आकर्षित करैत अछि। गामक दृश्यावलीक सुन्दरता हमर आत्मा के मुक्त करैत अछि। कल्पनाकेँ उड़बे कालक लेल। मन भटकि कऽ अस्ताचल सूर्यक दिस चल जाइत अछि। गामक मिलमे ओझराय लगैत अछि।

कोसीक पुबरिया बान्ह आबि गेल। बान्ह जे अपना भीतर लाखक लाख लोकके घेरि कऽ अहुँरिया कटबैत अछि। बान्ह परि एक पल ठाढ भऽ कऽ हम पश्चिम भर नजरि खिरबैत छी। दूर-दूर तक कोनो बस्ती नहि। कोनो गाछ नहि। खाली माल-जालक खूरसँ उडैत धूरा। बान्ह परसँ हमरा गाम नहि देखाइत अछि। गामक काली मंदिर देखाइत अछि। मंदिर आइ डेढ-दू सय बरससँ ठाढ़ अछि। अखनो अछि बान्ह परसँ मंदिर धरि रस्ता। कोसी कोनो चीजके रहऽ नहि दैत छै। रस्ता-पेरा, आरि-धूर, खेत-पथार, घर-दुआर, लोक-वेद डगरा बैगन जकाँ गडकैत रहैत अछि।

बाह्ह पि पहुँच्चते क्चंता होइत अछि। कोन बाटे-जायब ? घाट कोन ठाम छै? नाह चक्लते छै क्क बंद भऽ गेलै ? बह्द भऽ गेलै तऽ कोन ठाम पाि होयब? स्सि्ता क्चयासैत छी। दूि दू गोटय जा हिल छै। ओ दुनू क्चक्शाते धाकि ओक्ह पाि जायत। धाकि एक्ह

पाि कोनो बस्ती नक्ह छै। हम ओक्ह दुनूक अनुगमन कयि लगैत छी। चाक्ल तेज भऽ गेल अछि। ध्यान िलफलाइत साि पि अछि।

धाि लग पहुँच्च कऽ ओ दुनू अढ ताक्क लेलक अछि। नाह

नक्ष ि। दू-तीन टा भैस अखने टवा कऽ ओक्ष पाि पहुँचल ि। पाक्ष देक्ख कऽ हम अटकि लगा िहल िी जे कपडा खोलय पडत क्क नक्ष।

'कपडा-तपडा खोलह।'- बगलसँ आक्ष कऽ क्सबननन कहैत अवि आ एकटा पुिनि मैल तौक्लया हमिी क्दस बढबैत अवि। अपन धोती ओ तेना कऽ समेक्ट लैत अवि जे बुिाइत ि जेना ओ बुटा पक्हनि हो। जेना-जेना पाक्ष बढैत ि, तेना-तेना हम तौक्लया ऊपि उठौने जाइत िी। क्सबननन आगू अवि तइँ हम काप्संकोच तौक्लया उठा कऽ नागट भऽ जाइत िी।

आब कने औि आगू जा कऽ सटले-सटल तीन टा गाम ि नहिैया, कदमटोल आ तकि पक्चम हमि गाम मेनाही। हमिी वायास लावा गेल अवि आ हम ककिी ओक्हठाम पाक्ष पीवा लेबऽ चाहैत िी। मुदा क्सबननन कहैत अवि- 'चलह, िमसिन ओतऽ वावाहह।' पता नक्ष कोन बात ि। िमसिन कनेक सुभ्यस्त अवि। कक्हयो सपिंच िहय। मुदा ओकि नाम सुक्तक्ष हमिी पह्नह मन धान मोन पक्ड जाइत अवि जे ओकि वाता हमि वातासँ कजषलेने िहय आ कक्हयो घुििलक नक्ष।

क्सबननन एक्ष ठामसँ फुक्ट जायत; उति चल जायत, जतय पविला साल उपक्ट कऽ बसल अवि। मेनाहीक लोक कटक्यािक कािणे चावि ठाम विक्डया गेल ि। क्सबनन अपने दक्हयािी कि ति अवि आ धीया-पूता खेती कि ति ि; क्दल्ली-पंजाब कमाइत ि। क्सबननन हमि का ि खेत बक्टया कि ति अवि। ओही मे सँ एकटा कोलाक गहूम कमल घेवि लेने ि। तीस साल पक्हने ई कोला हमिी बदलेन मे भेटल िहय। कमलक आधा क्हस्सेदाि बासदेि ई

बदलेन कयने हिय। कमलके दोसि ठाम क्हस्सा दऽ देल गेल हैिक, जे अखन धामि ि। हमि बला कोला उपजैत ि, तइँ ओकिा लोभ भऽ गेल िक।

'कावि गहूम काक्ट लएह।'- ई कहैत हम क्सबननन के विदा कित िी। मोनमे फसादक भय अवि।अनेक पकािि आशंका अवि। मुदा गहूम तऽ खेतमे ठाढ नव्ह हित। ओकिा तऽ कटनाइए िक। चाहे तयो क्लअय। पाही आदमीक जमीनके लोक मसोमातक जमीन बुित अवि।

घिुनीक दुआि पि िसि चक्ल हिल िक। घिुनी अपने मवि गेल। धीया-पूता िक। दू टा बेटा क्दल्ली मे िक। तेसि जे गहूम तैयाि कऽ हिल अवि, तकि नाम विऐक नटा। नटा हमिा बैसय कहैत अवि। घकि एक कात दू टा चौकी लागल ि। चौकी पि मैल खट-खट भोक्टया क्बिाओल ि। चौकी सँ सटले दक्विन गाय, भैस, बकिा सब हैित ि। नाकमे क्वतिि गोबि आ गोतक दुगक्न्ध अबैत हैित अवि। कोक्सकहृाक अवधकाश लोक एक्हना हैित अवि। जानििि संग। जानििि समान। जानििि हालतमे।

हम ओक्ह मैल क्बिौन पि आ दुगक्न्ध मे कनेक काल बैसल हैित िी। िसि सँ उडैत गदिा आ भूसी भौक मावि कऽ हमिा क्दस आक्ब हिल अवि। सोचैत िी ता कमलसँ गप कऽ ली। उक्ठ कऽ कमल कतऽ चल जाइत िी। कमल अडल अवि। आधा गहूम कटबा कऽ ओ अपना ओतय लऽ आनत।

हम कुक्ध भेल उक्ठ कऽ निुनी मुक्खया ओक्हठाम चल अबैत िी। निुक्नआ हमि बटेदाि अवि। नौ कटा मे तीन सेि मेिी क्हस्सा दैत अवि। निुनी अपन बेटीक क्खस्सा सुनबैत अवि। एक

मास पछने कोना पाच हजाि कजष लऽ कऽ ओकि विाह कयलक। कदल्लीमे दू मास वितिशा चला कऽ कोना ओ कजष सधाओत। फेि ओ अचानक पुिैत अवि 'खाना खेलहक?'

'न'। - हम कहैत विऐ।

'कतऽ खेबहक ?'

'कतहु तऽ खेबे कििै।'

ओ बेटी के हाक दऽ कऽ हमि खाना बनबऽ कहैत िै।

गाममे हमिा घि नवह अवि। अडसठक बाढ़मे घि जे कटल से फेि बवन नवह सकल। सभ बेि गाम अयला पि ई समस्या िहैत अवि जे कतऽ खायब, कतय िहब।

भोजन कििैत काल नििुनी आशस्त कििैत अवि जे ओ हमिा खावति मििाक कति। अपन िोट भाइ धुििके ओ कचडै बििबऽ कहैत िै। हम माि आ कचडैक सुखद कल्पनामे डूबल सुतबाक चेष्टा कििैत िी। वनन नवह भऽ िहल अवि। वनन पि कििुका कांता सिाि अवि। गहूम जँ कमल लऽ गेल तऽ भािी बेइज्जती जाइत-जाइत वसबननन बाजल िहय। हमि देयाद बैजनाि, कमल पि सन-सन कऽ िहल अवि।

धन आ स्त्री संसािक सिािवि सुख अवि। लोक एवह दुनूक पािू बेहाल िहैत अवि। धन आ स्त्रीक तष्णा कवहयो शात नवह होइत िै। आदमी तइयो एवह मगतष्णाक फेिमे पवड. कऽ भटकैत अवि आ दुख उठबैत िहैत अवि।

हम अिधावि लैत िी जे दंगा-फसाद नवह कििाक अवि। कमल गहूम लऽ जायत तऽ लऽ जाउक। भोिमे वनन टुवटते मोन पडैत अवि जे गहूम कटैत हएत। मुँह-हाि धो कऽ खेत वदस

जाइत ि। गहूम कव्ट हिल ि। कमल पव्हनव्ह आव्ब जनके कव्ह गेल ि जे गहूम ओकि ओव्हठाम जेतैक। जन सभ असमंजसमे अवि। हम कहैत वि ऐक गहूम व्सबननन ओतय जेतैक। बोि उठबाक घडी संघरष्क घडी होयत।

हम घूवि कऽ टोल पि चल आयल ि। चाह पीबाक लेल ि घुनाि के तकैत ि। ि घुनाि दूधक जोगाडमे गेल अवि। दूध आनत तखन चाह बनाओत। व्सबननन अबैत अवि। ओ बहुत आशंव्कत आ बेचैन अवि। हमि कमलसँ गप्प कवि कहैत अवि।

हम कमल आ ओकि दुनू बेटाके बुि बैत वि ऐ जे बकिद आ दंगा-फसाद कयला सँ कोनो फायदा नव्ह ि। जाधवि फैसला नव्ह भऽ जायत, ताधवि गहूम तैयाि नव्ह हएत। ि घुनाि दूध लऽ कऽ कमले ओतय चल आयल अवि। ओतव्ह चाह बनैत ि आ कपक अभाि मे हम सभ बेि बेिि चाह पीबैत ि। चाह खतम होइते कमल उव्ठ कऽ खेत व्दस वि दा होइत अवि। हमहूँ वि दा होइत ि। हम सभ चाह पीव्बते ि ही, तखने चावि-पाच टा बोि व्सबननन अपना ओतय पठबा देने ि है। व्कि औि कने दूि पि जा ि हल ि। कमल ई सब देव्ख कुद भऽ जाइत अवि। मुदा आब तऽ खेल खतम भऽ गेल ि।

हम जव्हया कव्हयो गाम अबैत ि तऽ चाहैत ि धाि मे नहाइ। हेलबाक मौका गामे मे भेटैत अवि। मेनाहीक पूब आ पव्ि म दुनू कात कोसी बहैत ि। पव्ि म कतका धाि कि पसाि बहुत ि। पव्ि म, उति दव्ि न जेम्हि तकैत ि, तेम्हि बालु आ धाि। दूि- दूि धवि खाली दोखि बालु जाव्हमे पचासो बि खिसँ व्कि नव्ह उपजैत ि। मेनाही, पवि याही आ भि नीपुि-एव्ह तीनू गामक लोक

तबाह भऽ गेल अिछ। पीढी दर पीढी हजारिक हजार लोक कोसीक बालु फँकैत मेटा जाइत अिछ।

हाजक हाज क्सिल्ली पािन पर बैसल िछ। पच्चीस-तीस टा लालसर िचयता पर टहक्ल िहल िछ। आब कम्सडै कम अबैत िछ। बहुत पिहने जकरिया िाआ, कास आ पटेरिक जंगल िहै, तकरिया अनेक तिहक जल आ िल-क्सडै अबैत िहै। पूवणाषाक क्शाकािर क्सडै बिबैत िहै आ सुपौलमे बेचैत िहै। आब िाआ उकक्स गेल िछ आ कास-पटेर उकनल जा िहल िछ। पिहने लोक िाआ, कास, पटेर बेक्च कऽ कक्ुि कमा लैत िल। जंगलमे िुडक िुड गाय-महीस पोक्स कऽ जीवि का चलबैत िल। खकरिया, हिवन, मारि, काुि आ डोका मािर कऽ खाइत िल। आब सभ कक्ुि खतम भऽ गेल िछ आ जीबाक साधन दुलषभ भऽ गेल िछ।

धािक बीचमे िाट पर एकटा मिािह पडल अिछ। बगलमे जाल आ डेली िखल िक। हम हेक्ल कऽ िाट पर जाइत िी। फेकुआ अिछ। निुनी मुक्खयाक भाइ। डेलीमे पािर भिर िाि िछ। तीन घंटाक उपाजषन। समुदक किािम जेना लोक पडल िहैत अिछ, हम तकिहना बालु पर पक्ड िहैत िी। एक्ह दुपहिरयोमे धािर कातक हिा ठंढा िछ। कोसीक पािन ठंडा िछ। कक्सको काल पािन मे िहला सँ जाड हुअय लगैत िछ। दूर एक आदमी असकिर डेगी लऽ कऽ मिबाक्ह कऽ िहल िछ। औिर कतहु तयो नक्ह िछ। धािर आ बालुक क्नजषन िवस्तािर।

कोक्सकक्हाक लोक साहस आ धैयषपूिषक कोसीक पचंडताक मोकाक्बला किैित अिछ आ अपन पाण-िकामे लागल िहैत अिछ। कोसीक उत्पात सहैत-सहैत ओ सभ क्यातमर भऽ गेल अिछ आ

सब तहिक दुख सहबाक अभ्यस्त भऽ गेल अवि।

बेवयिा मे हम सतो ओव्हठाम चल अबैत िी। सतो हमि पाच कटा खेत कैित अवि। खेतमे दस बोि गहूम भेल ैक जे तैयाि कित। िसि अनलक अवि। सतोक माय अपन दुखनामा सुनबैत अवि। इलाजक अभािमे मलि बेटाक सोगमे ओ कनैत अवि। आब जे एकटा बेटा-पुतहु ैक तकि अभेलाक किा सुनबैत अवि। दुख हम नव्ह बँटबैक, तइयो सुनबैत चल जाइत अवि। ओकि किा के सुनत ? ककिा ुटी नव्ह ैक। तइँ हमिा सुनबैत िैत अवि।

साँि मे हम पंचैतीक ओवयिान कैित िी। पंचक बुिलो पि कमल तैयाि नव्ह होइत अवि। फैसला होइत ै-ई खेत ओ लऽ लेत, बदलामे दोसि खेत क्लक्ख देत। बैजनाि कहैत ै जाधवि कमल क्लखत नव्ह, ताधवि ई खेत िडबाक काज नव्ह ै। बैजनाि खेत हवियाबऽ चाहैत अवि। जँ हम कव्ह क्दऐक तँ ओ लाठीक जोसिँ खेत खाइत िित। खेत पि कमलके नव्ह चढय देत। एव्ह बात लेल ओ अनेक तिहै हमिा पि दिाब दऽ िहल अवि। कहैत अवि-तोहि पचि लेबाक कािणे कमल हमिा मबिबाक लेल एकटा वास्तौल बलाके ठीक केने िहय।

सतोक बकरी मरि गेल छैक। भोरमे कान टुकटते ओकर धिया-पूता लीक आबि जिज्ञासा कानमे पडैत अछि। ओ सासुसँ पूछि रहल छथि बकरी कोना मरि गेलै ? ओकर सासु किछु बजैत नहि छथि। चुपचाप बकरी लग जाइत छथि। दुख आ आश्चर्यसँ बकरी के

देखैत रहैत छथि। बकरी मुँह गिरा कऽ मरल छथि। सतोक माय हमरा सुनाकऽ कहैत अछि-घुघुरि काटि लेलकै की !

हम जा कऽ चौकी पर सूतल रही, बकरी ओकर पौरिमे बान्हल रहै। सतोक घरिलीसँ ओकर गरिकि डोरी खोलि देने छल आ आँगनमे जा कऽ सासु पर भनभना रहल छथि-हदो घडी सम्हारैत रहै मरियो ने जाइत छैक !

सासु हमरा कहैत अछि-बहुत दिन पहिनहि बकरी गरने छै।

कैक बेि पाठी भेलैक आ सब बेि बेचने गेलैक। अखनधिव चढौलकै नि्ह।

धुिव कऽ अबैत ि ी तऽ पता लगैत अिव बकि ी डोमि ी लऽ गेल ि ै। खाएत। सभ चीज पि मत्थुक ि ाया पसलि ि ै। पठर माय लेल औनाय ि हल ि ै। एम्हि सँ ओम्हि भेकमआइत दौक्ड ि हल ि ै। दूइए-चािव क्दन पक्हने खढ धेने ि ै।

सतो दुपहि मे दौन शुर कि ैत अिव। पक्हने अपन बोि धि बैत अिव। आगू मे ओकि बोि ि खिल ि ैक। सतोक बेटी पि क्मकलया बोि उठा-उठा ि सि लग दैत ि ै। पि क्मकलया सति ह-अठाि ह सालक युि ती अिव। सि स ि -सुगक्ठत शि ीि । ओकि जोबनक उभाि पुर र-सम्मकष्क साकी ि ै। ओ अखन सासुि नि्ह बसैत अिव। सूयास्त भऽ गेलाक बाद खुि पी-ि वि टा लऽ कऽ घास लेल जाइत अिव। संध्या-अक्मसाि ।

भोि मे अकचकाइत उठैत ि ी। तयो आधा वालास पाक्म ढािव चाक्म ि पि पा ि हल अिव। आइ जूडशीतल ि ै। सात-आठ बजे धिव चाक्म पि पाक्म पडैत ि हैत अिव। ढलाय अपन ि गि तकने कि ैत अिव। ि क्म मे तयो चोि ि लेलकै। सोचने ि हय बेक्य कऽ कजा सधाओत। आब हताश भऽ गेल अिव।

आइ धाि मे मेला जका लागल ि ै। लोक सभ मालजाल धो ि हल अिव। ि ैडा सभ धाि मे उमकैत अिव आ हो-हल्ला कऽ ि हल अिव।

गाम मे आब हमि कोनो काज नि्ह अिव। साढे तीन मन गहूम जे क्हस्सा भेल अिव तकि सुपौल लऽ जेबाक ब्योत केनाइ अिव। साइक्कल भेक्टतय तऽ डोमा दू खेप मे पहुँचा दैत। ने

साइकिल भेटैत अछि, ने मािर पिर लऽ जायिला कोनो आदमी। गहूम बतम्हाि लग िाब्ड दैत िऐ। पाच-सात दिनमे ओकि गाडी सुपौल जेतै।

दुपहि मे नटा पिबाक माउँस बनबैत अछि। माउँस सुकन िमि ओक्हठाम बनैत िै आ भात नटा ओक्हठाम। नटा बजा कऽ लऽ जाइत अछि। पीढा सुकनक धाप पि लागल िै। हमि भीतिि ूआि ूतक कोनो भािना नक्ह अछि। लेकिन आइ अचानक गाममे सुकन िमिक ओक्हठाम खाइत पता नक्ह कोना पूिषिसंस्काि जागत भऽ गेल अछि आ कनेक काल धिि विचित पकाकि संकोचक अनुभि किैत हैित िी। फेि संकोचसँ उबिैत बजैत िी —सुकन भाय! आइ तोिि जाक्त बना लेक्लअह। सुकन कहैत अछि जे आब ओ माल-जाल नक्ह खालैत अछि। बादमे एक गोटय हँसीमे कहैत अछि- तोिि सभ भक्छ गेल िह। तोिि सभके जाक्तसँ बाि िदेबाक चाही।

कोसी सभटा भेदभािके पाक्ट देने िै। डोम, चमाि, मुसहि, दुसाध, तेली, यादि सब एके कल सँ पाक्त भिैत अछि। एके पक्टया पि बैसैत अछि।

आब सूयास्त भऽ जायत। हम गामसँ विदा होइत िी। संगमे नटा आ गनेस अछि। एकटा साइकिल पि िाडे-िाडे गहूम लादने ओ दुनू पुनािस जा िहल अछि। गामक विकिट जीिन पािू िूक्ट िहल अछि। संग जा िहल अछि अनेक तिहक स्मक्त। ई स्मक्त हमि अक्स्ततकि अंश बक्न जायत आ जीिनिमे अनेक रप-िगिमे पकट होइत िहत।

<u>विभा रानी</u> (१९५९-) *मैथिली क ३ साहित्य अकादमी पुरस्कार विजेता लेखकक ४ गोट किताब "कन्यादान" (हरिमोहन झा), "राजा पोखरे मे कतनी मछरिया" (प्रभास कुमार चौधरी), "बिल टेलर की डायरी" व "पटाक्षेप" (लिली रे) हिन्दीमे अनूदित छन्हि। २ गोट लोककथाक पुस्तक "मिथिला की लोक कथाएं" व "गोनू झा के किस्से"। मैथिली कथा संग्रह "खोहसँ निकसैत"।*

<u>माउगि</u>

माउगि, माउगि, गे माउगि, गे माउगि! तो माउगि, हम माउगि, ई माउगि, ऊ माउगि - सभ किओ माउगे-माउगि। ऊँहूँ - सभ किओ भला माउगि हुअए। ई तय कर' बाली तो के? अएं गे? तोरा कहिया स' भेटलौ ई हक? ई सभ काज-धाज हमरा आओरक अछि - हमरे आओर के करे दे। देख त' कने, तोहरो आओर के कतेक रंग-बिरंगा रूप बदिया देखियौ! माउगि, गे माउगि, बुझै छै कि नहि गै!

हँ यो! तै त' हम भेलहुँ माउगि - माने ओकलाइन, डाक्टराइन,

मास्टराइन - आ हडही-सुडही सभ भेल मौगी, जनी जाति, हमरा आओर स' हीन। नहि बुझहक्षयै। ृरि जाऊ! हमरा आओर स' ऊपर भेलीह सि़ीसभ, जेना किरण बेदी, मेिा पाटकर, फ्लेविया एग्नेस त' ई सभ, त' ओ सभ आ सभ स' ऊपर नारी - आदरणीया, परमादरणीया; जेना सीता, जेना सावि़ी, जेना गाािरी, जेना कुंती, जेना दौपदी ... उँह! दौपदीक नाम नहि ली। हे! बड खेलायल मौगी छली। ओकरा नारीक पद पर पहिाक्षत केनाई! सतहि मूस गीहि के बिलडो रानी चललीह गंगा नहाए। ऋषि-मुनि आओर के कोन कि़ा - एतेक ताप-तेजबला साि़ महातमा सभ आ माउगि के देखतही वीयिचूबि जाइ छै; घैल मे त' पात पर त' माछक पेट मे त' कहा दन्, कोम्हर दन् दान द' देइत छथि जेना हुनक वीर्यवीयनिधि भेलै कोनो रतक खान भ' गेलै।

छोडू ई सभ कि़ा-पेहानी। आऊ असली बात पर - माने माउगि पर। की कहू, कतबो ई नारी, सि़ी, माउगि, मौगीक वगीकरण भ' गेल हुअए, मुदा वास्तविकता त' ई छै जे मूलत: हम सभ माउगे छी - माउगि।

अहिना दू गोट माउगि छली, माने मध्यवगीय परिवारक दू गोट माउगि। अहा चाही त' सुभीता लेल हुनक नाम राखि सकै छी - दीपा आ रेशमा। दुनू पडोिसया। एकदम दूि मे चीनी जका बहिनपा, दुनू के एक-दोसराक घरक हीग हरदिक पता, ई दुनूक घर मे एक एकटा मौगी छल, कहि सकय' जे ओकर दुनूक नाम छल भगवती आ जोहरा आ ओ दुनू ई दुनूक ओहिठामि चौका बासन करैत छली। संयोग छल, जोहरा दीपा ओहिठामि काज करै छलै आ भगवती रेशमा ओहिठामि. हौजी, बडका शहर मे ई सभ चलै छै।

ओम्हुना, जेना आइ काल्हि शहर मे दंगा आ खून-खराबा फटाखा जका फुटैत रहै छै आ लोक आओर तीमन-तरकारी जका कटाएत रहै छै। की कहू जे जाहि शहर मे ई चार माउगि रहै छली, ओहि शहर मे दंगा संगीक आगि जका पसरि उठलै। आ सभ माउगि एके जका भ' गेलै - मारि आ कोनहुक चिन्ता स' लहालोट।

आब जेना दीपे के देखियौ। शहर मे तनाव छलै। तइयो लोग अपन-अपन डयूटी पर निकलि गेल छलै। मुदा बेरहटिया होबैत-होबैत पता लागलै जे शहरक स्थिति आओर खराब भ' गेलै त' सभ ककरो 'जइसे उड़ि जहाज कौ पंछी, पुनि जहाज पै आयौ' बला बला अपन अपन जहाज दिस पडाए लागल। रेशमा स' दीपा के ई समाचार भेटलै, ओम्हर ठीक दू बजेक बेरहटिया मे मनोज बाबू घर स' बहरा गेलाह। दीपा टोकबो कएलकै - 'शौकत भाइक फोन आएल छलै रेशमा कत' जे शहरक हालति आओर खराब भ' गेल छै। लोग-बाग घर घुरि रहल अछि आ अहा सभ किछु जानि-बुझिक' तहयो बाहर निकलि रहल छी। जुनि जाऊ।'

आब ओ मरद मरदे की जे अपना घरवालीक कहल राखि लियए। आ दीपा त' माउगि स' एक कदम आगा छली - सखी छली - पढल-लिखल, सुंदर, स्मार्ट आ अपन बिजनेस सेहो चलब' बाली, जकरा मे सभटा आत्मविश्वास भरल रहनाइ अपेक्षित ते नहिं, परम आवश्यक अछि। मुदा बावजूद एकटा सफल सखीक, ओ छली त' माउगे।

सते, कहियो कहियो के मायक कहल ई कहि मोन पड़िये जाइत अछि जे माउगि कतबो पढल हुअए कि सुंदर कि स्मार्ट कि

बिजनेसवुमन, रहत त' माउगे आ तै चूकि त' फूंकैये पडतै आ घर वा घरबलाक चिंता मे सुडडाह होबैये पडतै ओकरा। तै रातुक एगारह बाजि गेलाक बादो मनोज के नहिं घुरलाक कारणे ओ अत्यन्त चिंतित आ परेशान छलै। ओकरा रहि-रहि क' बुझाए जे कॉलबेल बजलै, खने दरबज्जा फोलए त' खने खिडकी पर जा क' ठाढ भ' जाए। सास भाग्िी जका चुप्प रहल छलै आ मोनक सभटा परेशानी मुंह पर आबि गेल छलै। मना कएलो पर जहन मनोज नहि रूकल छलाह त' कहने छलै - जल्दीए आएब। जवाब भेटल छलै -'आइ त' फल्ना डेलीगेशन आएल अछि।'

'माने रातिक एक-डेढ बजे सं पहिने की छुटी।' दीपाक माउगि ओकर भीतरे-भीतरे बाजलै। तहन किएक एगारहे बजे स' एतेक बेचैनी छै? ओकरा त' दू बजे रातिक बाद परेशान होएबाक चाही। मनोज बाबू लेल दू बजे रातक घुरनाई कोनो नव कथा त' छलै नहि! मुदा दंगा जे नएं कराबए।

हाथ-पएर धो क' ओ घर स' निकललै आ अपना बगले बला कॉलबेल दबेलकै। अहू मे एकटा माउगि छलै - रेशमा। परेशानी ओकरो संपूर्ण देह पर अकर-अकर लिखाएल। ओकरो घरबला घुरल नहि छलै। मुदा फोन कएने छलै -'हालति बडड खराब छै। दरबज्जा आदि नीक स' लगाक' राखने रहब। हाथ मे सदिखन एकटा चकू वा एहेने कोनो चीज सेहो राखने रहब। पतिआयाएब नहि ककरो पर चाहे ओ कतबो नजदीकी हुअए।'

दुनू माउगि एक-दोसरा के देखि क' तेना चेहैली जेना एक-दोसरक सोझा मे दूटा चीनी सनक संबंधवाली दीपा आ रेशमा नहि, गहुँमन आ बिज्जी हुअए। रेशमा एतेक देर राति मे ओकर आएब पर

चेहैली त' दीपा रेशमाक गस्सा मे फंसल चकू देख्व क'।
माउथ्या त' माउगे होइत छै - एतेक अथ्यश्वास स' काज िडबे छलै छैक। आ ई सर्िी माने दीपाक त' सौसे देहे पर परेशानी छपाएल छलै। शौकत त' फोनो क' देने छलाह। मुदा मनोज के त' तकर कोनो परवाह्वए नथ्यि छलै। रश्वस्नायैक त' एतेक पश्वाकूल पश्वश्िस्ना मे ओकरा मना करबाक बादो जयस्नायश्वह की? आ माश्वा श्वाय' जे बडड खगता छलैन्हे जेबाक, ते चश्वा गेलाह। मुदा चश्वा गेलाक माने ई त' नश्वां जे एकदमे स' श्वाथ्यिन्त भ' क' बैश्वा जाइ; बेगर ई महसूस कएने जे दीपा कतेक श्वांश्वात आ परेशान हेतीह। ि्रर्ि? माउथ्या आओर लेल श्वकओ एतके परेशान हुअए!
दुनक दुनू माउथ्याक मुंह मे जेना बकार नथ्यि छलै। अंतत: रेशमा सेहे श्वाश्वायाबदाम जका एक-एक टा शब्द श्वाट श्वाट क' क' तोडैत-भागैत बाजलै -
'बच्चे सो गए? मेरे तो अभी-अभी सोए है।'
'हँ! हुनका आओर के की पता जे दंगा-फसाद की सभ होइ छै। स्कूल नथ्यि गेनाई त' ओकरा आओर लेल श्वकश्वाक भ' गेलै'। भश्व श्वन ऊिम मचा-मचाक' िश्वक-हाश्वक' एखने सूतल अश्छ।'
'मनोज भैया लौटे?'
'घुश्व गेल रश्वस्नायश्वह त' हम की अईिरश्वतहुँ?' सर्िी मोने मे बाजलै। पत्यक्त: मूडी नश्वां मे डोला देलकै।'
'ये भी अभी तक नही लौटे है। मगर फोन कर श्वया है श्वक लौटेगे। श्वकर भी गर हालात ज्यादा खराब हुए तो उिर ही कही श्वकसी श्वश्तेदार के यहा रक जाएंगे।' माउथ्या बाजलै।
सर्िी चुपचाप ओकर मुंह तकैत रश्व गेलै। ओश्व दीपा रपी सर्िीक

चेहरा पल-पल बदलि रहल छलै। माउथा रेशमा कहलकै - 'उनका फोन नही आया है तो तू ही पता कर ले न?'
'कत'? ओ कत छथि, हमरा कहि के जाइ छथि जे कहै छी जे फोन करी आ की दखि करी, कहा दखि करी।' स्त्री अपन विवशता मे खौझैली।'
'हौसला रखो। सब ठीक हो जाएगा।'
मुदा सभ ठीक नहि भेलै। माउथाक मरद आबि गेलै। शौकत भाइ के देखि क' रेशमाक मुंह मुरझाएल फूल पर मारल पानिक छीटा जका तरोताजा भ' उठलै। दीपाक चेहरा पर सेहो आंखिक आशंकाक भाव उभरलै। बेस! एक गोट त' सकुशल आबि गेलाह। आब दोसरो आबि जाथि त' आ निश्चिंत भ' जयबायैक। अखुना सबहक सर समाग सकुशल अपना अपना बासा घुरथि जाथि त' सबहक घरक जनी जाति के कतेक आशंकाक भेटतैक! ओ शौकत भाइ स' शहरक मूड पर कनेक गप सप कर' चाहै छलै। मोन मे छलै जे आकर परेशानी आ चिंता स' शौकत भाइ सेहो कनेक सरोकार राखथि। पूछथि कनेक मनोजक मादे, कहथि कनेक शहरक हालचालि। मुदा शौकत भाइ त' तेहेन ने सख्त नजरि स' घूरि क' रेशमा के देखलथिह जकर ओकर नजरिक कठिरता आ बेकिता दीपा सेहो बूझि गेलै आ कहलकै -'चलै छी रेशमा, बच्चा सभ असगरे छै।'
बाहर मे दंगा आ घर मे भूकंप आबि गेलै। मदपिचावादक गाडी पर फराटा स' सवार भ' गेलै -'कहा था न कि किसी अपने कहे जानेवाले पर भी भरोसा मत करना। क्या जररत थी इतनी रात को इसे बिठाए रखना? इन काफिरो का कोई भरोसा है क्या?'

'रेशमा, ई कोफ्ता शौकत भाइ लेल। ओ अपने मे बनौने छलहुं। हमरा बूझल अछि जे हुनका कोफ्ता बडड पसंद छै।' सीक फेर पवेश भेलै। माउथा फेर सहमा गेलै। मर्द फेर तनतना गेलै।ओ अई ललो-चप्पो स' पसन नहि भेलै। सीक गेलाक बाद गरजलै - 'फेक दो इसे डस्टबिन मे। क्या ठिकाना, कुछ भला-बुरा कर लाई हो।'

माउथाक करेज कनछलै -'अही सभ एक-दोसरा लेल दुश्मन भ' सकै छी। माउथा त' माउगे होइत छै। सभटा दुख त' ओकरे माथ पर बजरै छै। ओकर मरद के किछु भ' जेतै त' ओकरा अपना अपन सगर जिनगी काट' पडतै। आ अहा आओरक घरवाली मरतै त' कब मे देह गललो नहि रहतै कि दोसर निकाहक मुबारकबाद बरस' लागतै। यौ - माउथा हिन्दू-मुसलमान आ हिन्द पाकिस्तान नहि होई छै। ओ खाली माउगे होइत छै।'

मुदा नहि! माउथा खाली माउगे नहि होइ छै। ओ नारी, सी, माउथा, मौगी सभ भ' जाइ छै। आ सेहो कपितरी बलाक'। आब देखियौ ने! शौकत भाइ एम्हर पहिने आथा जका बररसलाह आ फेर कने पेमक फूंही खसबैत आस्ते आस्ते क' क' तेना ने बुझेलखिन्ह जे कि रेशमा सेहो पसाया गेलै आ तय क' लेलकै जे ई कोफ्ता काल्हि आनसर मे बतनि माजयबाली के द' देल जेतै। ओम्हर दू बजे राति मे घुरल मनोज बाबू नामक मरदक फरमान सेहो आकललै जे आओर कतहु जाइ त' जाइ, बगल बला घर मे कमिथ नहि। ठीक पुरना जमानाक राजकुमार बला कथा जका - पूब जाउ, पश्चिम जाउ, उतर जाउ मुदा दक्षिण कहियो नहि जाउ आ अइ अधिकतम सावधानी मे ओ सभस' पहिल काज कएल जे

अपन दरबज्जा पर साटल 'ऊँ' श्वनटकर के नोश्व-चोश्वि क' उजाश्ब देलश्मह।

आबी, कनेक एम्हर ईहो दुनू गोट मौगीक खोज खबश्व ल' ली। ई दुनू मौगी ऊपरका दुनू र्स ी आ माउश्वा स' जुडल छली से त' अहा अओर के मोने हएत। ई दुनू छल भगवती आ जोहरा जे दीपा आ रेशमाक घर मे बतनि चौका करै छल। ईहो एकटा संयोगे छल जे भगवती नामक मौगी रेशमा नामक माउश्वाक घर मे काज करै छलै आ जोहरा नामक मौगी दीपा नामक र्स ीक घर मे। ईहो दुनू मौगी उपरकी दुनू माउगे जका पडोश्वाया छलै।

आइ भगवतीक घर मे भम्ह लोटै छलै। आि सेर आटा बाचल छलै। तकरे रोटी बनाक' अपन चार श्विया-पुता के खुआ देने छलै - श्वान्सरे मे। आब बेरहश्वया स' ई अरिश्वाया भ' गेलै। दोकान बंद आ पाइक खूँट खुल्ला। कोनो श्वस स' रस्ता नश्वि! श्विया-पुता के िक-िश्वक क', एक-दू चमेटा खीश्व क' सुता देने छलै। आब जागल-जागल भश्व पोख पश्वने अपन मरद के गश्वयौलकै जे िरा आ अढाई सौ रपैयाक लालश्व मे दंगा फोड'बला लेल काज कर' चश्व गेल छलै। ओश्व र्स ी दीपे जका ईहो भगवती मौगी अपना मरद के रोकबाक पयास कएने छलै आ मनोजे बाबू जका ओकरो मरद ओकर अश्कल के ओकर िहुन मे रोपैत चश्व गेल छलै आ बाद मे चेिडी भेल देह ओकर अश्कल के ओकर िहुन मे स' श्वाकाश्व क' माि मे राश्व देलकै। मुदा एखश्व त' माि मे राखल अश्कल सेहो भुश्वायाएल छलै। हाश्व िश्वक क' ओ श्विया-पुता लग ढेर भ' गेलै जे आब त' श्वान्सरे मे भ' सकै छै श्वकछु। करफू लागल रहौ श्वक श्वकछु। पुश्वसबला गोली मारौ श्वक डंडा। मेम साब

ओश्वि त' जाइए पडतै। दू गोट लोभ - पगार भेटबाक आ सश्वखन जका अहू बेर ततेक बचल-खुचल भेश्व जेबाक आस जाश्व स' चार धीया-पुताक खीचखाश्व क' जलखई त' भइये जाइ छै। मुदा श्वनसर त' हुअए पश्वने! हे सुरज महराज! जल्दी बहार आबि!'

सुरज महाराज त' पकट भेलाह, मगर दोसर मौगी ई मौगीक रस्ता छोश्व देलकै -'तुम बच्चावाली औरत! तुम श्वकरि कू जाएगा ये आफत मे। मेरे कू जाने दो। अपुन का क्या है? अकेला औरत। पुश्वसबाला गोली मार भी श्वया तो क्या हो जाएंगा। और जो नही मारा तो तेरा मेम साब का भी काम अपुन करके आ जाएंगा आउर तेरा पगार आउर खाने-पीने का जो कुछ भी देगा वो सब लेके आ जाएंगा। ीक?' आ अंचरा मे स' गरम-गरम चाश्व टा भाखरी श्वकाश्व क' म्हा देलकै - एतबे बचल छलै, तै एतबे ...

जाबश्व भगवती श्वकछु सोचय, श्वकछु बाजय, जोहरा नामक ई दोसरकी मौगी श्वडै जका फुरि स' उश्व गेलै। भगवती मौगी किमकाएले रश्व गेलै, जेना जोहराक मरद दंगा बलाक बीच मे फंसल किमकाएले रश्व गेल छलै आ पछाश्व मे अपन टूटल - भागल फलक ला आ ओश्व पर सजाओल सभटा फले जका श्वचा-श्वचू के ीआ-ीआ भ' गेल छलै। दीन ईमानक पका, पाचो बेरक नमाजी आ सभटा जनानी के दीदीए आ भाभी कहैबला ओकर मरद जोहरा श्वरदै मे श्वनगी भर लेल काट छोश्व गेलै - ओकर देह भश्व पोख देखबाक सा मोने मे रश्व गेलै आ तश्वये स' ई काट कश्वयो ओकर पूरा देह मे गड' लागै छै आ कश्वयो अपन मरदे जका मौगीक अपनो सौसे मोन आ देह ीआ-ीआ भेल

बुझाए लागै छै।

नुका-चोरा क’, झटकाश्च क’ जोहरा दुनू र्सी आ माउश्चाक घरक काज कर’ पहुँश्च गेलै। वाह रे पुश्चसबलाक चौकस नजश्च! अल्लाह! जोहरा शुक मनौलकै। जाए बेर सेहो नश्चि पडए ओह दश्चंदा सभक नजश्च त’ बेस। आएल त’ असगरे छलै, जाएत त’ भगवतीक दरमाहा आ खाए-श्चयक समान सेहो रहतै। खेनाइ-श्चनाइ त’ रोड पर चश्च जेतै आ पाइ जाश्च नश्चि ककरा पाश्चकट मे - दंगाबलाक श्चक पुश्चसबलाक।

माउश्चा आ र्सी कतेक बेर दुनू मौगी स’ िटा केने छलै - "गै, दुनू अपन-अपन मेमसाब बदश्च ले। श्चया श्चयाक घर मे आ श्चंदू श्चंदूक घर मे। तश्चयाक मजाक आइ दुनू माउश्चा आ र्सी के वास्तश्चक लाश्च रहल छलै - दुनू मरद जे झोटैला पंचक ई मजाक पर कश्चयो कान नश्चि देलश्चह, आइ गंभीर फैसलाक तीर, कटार ई दुनू माउश्चा पर संािश्च देलश्चह। फमान बंदूक स’ गोली जका बश्चरा गेल छलै आ ई दुनू के आब ओश्च गोली के अपना-अपना करेज मे ंिसा क, ंिसलाक बाद अपना-अपना के जीश्चत, चालू पुजा राखैत ओश्च फमान पर अमल करबाक छलै।

जश्चया िला छलै, फल छलै आ फलक ताजगी जका मुस्की मारैत ओकर मरद छलै, तश्चया जोहरा के काजक कोनो दरकार नश्चि छलै। दीपा ओकर चेहराक मासूश्चयत आ खबसूरती देश्च क’ सोचै बेर-बेर - जे कोनो नीक घरक र्सी रश्चश्चयैक त’ र प-रंग झाड-फानूस जका चमकश्चयैक। मुदा एखश्च त’ ओकर उदास मुंह, उडल रंग आ बेजान कपडा। हाित ओकरा जोहरा मे रेशमाक झलक भेटलै त’ बडी जो स’ ओ चेहा उिलै। मोने मोन अपना के

लिडलकै। जतेक गाछ अबै छल, सभटा अपना मोनक ऊपर खाली क' देलकै। जोहरा काज क' क' रेशमा ओछ्हि चलि गेल छलै। मनोज बाबू सुतले छलाह। दीपा फ्रिज मे स' झब-झब समान सभ बाहर कर' लागलै।

फेर कॉलबेल। फेर दीपाक मुंह। फेर रेशमाक बदलैत रंग। रेशमा स' कोनो औपचारिक व्यवस्ता त' छलै नहि! तै डिाष्कि भनसे मे चलि गेलै -'जोहरा! ई खाए व्ययक समान सभ छै। भगवती के द' दिहे।'

'लेकिन मै जो ये सब तुझे दे रही हूँ, ये सब केवल तेरे लिए है। किसी काफिर-वाफिर को नही देगी तू और सुन! कल से तू उरि नही, इरि काम करेगी। दस रपए ज्यादे ले लेना। चलेगा। वो चाहे तो उरि करले। कल साहब यही कह रहे ि।'

िकमक भेल सनि दीपा देखलकै - भनसाघरक स्लैब पर जोहराक देल खाद सामगी मे रतुका कोफ्ता। ओम्हर कोफ्ता ओकरा अंगूि देखा रहल छलै आ एम्हर रेशमाक गप्प ओकर करेज पर आडी चला रहल छलै। त', कतेक पक्षावलता सनि छै। पक्षा जे कहलकै, तुरंत ओकर ताबेदारी मे लागि गेलै। आ ओ? दू बजे रात्रि मे घुरल मनाज् बाबू स' फिरकापरस्ती पर बहस केलकै आ जोहरा भगवतीक पसंग पर मना क' देलकै जे ओ नहि करतै काज कर' बालीक अदला-बदली।

मुदा आब? जौ ई मौगी मानि गेलै त' ओकरा त' डबल फैदा। आ ओम्हर बेचारी भगवतीक काजक नोकसान। तहन त' नीके छै ई अदलाबदली। तै ओहो दही मे सही मिलेलकै। ओना त' ओहो अदला-बदली के व्यावहारिकताक जामा त' पहिराइये देने छलै जहन

थिक थिकज से खाद सामगी थ्राकाश्च क' ओ भगवती लेल आनने छलै। कश्चियो ई नथि देखल-सुनल जे काज करए थिकओ आन आ खाएक थयक भेटै कोनो आन के।
मुदा ई मौगी ! जोहरा मौगी! केहेन खरदार! केहेन जबदस्ति! केहेन जोरगश्च! ओ चकचक करैत दुनू माउथ्राक मुंह देखलकै। बाजलै थिकछु नथि। खाली रेशमा स' कहलकै -'करफू लगा हुआ है। भोत मुश्चिकल से आया मै। कल आने को होएंगा थिक नेई, मालूम नेई। भगवती अपना पगार वास्ते बोला है। आप दे देगा तो मै ले जाके उसकू दे देगा।'
'बोल उसे वो खुद आकर ले जाएगी। जब तू आ सकती है तो वो क्यो नही। और अच्छा है न! पुश्चिस की नजर चढ गई तो एक काश्चिर तो घटेगा कम से कम।'
थिक माउश्च गै माउश्च! हम माउश्च, तो माउश्च, ई माउश्च; ओ माउश्च - सभ माउगे-माउश्च! इहो चारो माउगे माउश्च। मुदा ई मौगी - छोटहा लोग - मसोमात जोहरा त' जेना पुश्चिसक गोली आ दंगाबलाक ईट, पत ि र, बोतल घासलेट तकरो सभ स' बेसी आकात भ' उ लै। काली जका, दुगा जका, चंडी जका ! 'मेम साब! आप दोनो अपना-अपना सामान रख लो। मेरे कू नेई चाश्चिए ऐसा खाना, श्चिसमे शैतानी खून बोलता हो। ई दंगा - आप दोनो का मन मे इतना फरक पैदा थिकएला है थिक आप दोनो एक श्चिनट मे अपना से गैर बना थ्रिया। भगवती तो बच्चा लोग का खाश्चिर आने को तैयार ि । मईच रोका उसकू थिक मेरा क्या! मइ अकेला माणस। पुश्चिस गोली मारेगा तो भी क्या चला जाएंगा मेरा। पण उसकू कुछ होएंगा तो उसका बच्चा लोग यतीम हो जाएंगा, जैसे

मइ हो गया अपना मरद का जाने से। आपलोग बडा लोग। इसलिए आपलोग का बडा बात। बडा समझदारी। मेरे कू तो खोपडी नेई। आपको भगवती को नेई रखना, मत रखो। उसका पगार नेई देने का, मत दो। लेकिन कल से मइ भी काम पर नेई आने का। लेकिन उसका पहले अभी आपका घर मे मइ जो काम किया, वो पइसा मेरे कू अभी का अभी देने का। वो मेरा हक है। मइ उसकू लेके जाएंगा आउर जो मजी आएंगा, करेगा। आपका ई भीख नेई चाहिए मेरे कू।'

मौगियायो आओर बाजि सकै छै, सोचि-समझि सकै छै! एहेन अजगुत कि ! बाप रौ बाप! दुनू माउगि के साप सुंघा गेलै। ई मौगी भ' क' एतेक नाटक! माउगिक सोझा मे एकर एतेक टनटनी छै ने। कनेक साहेबक सोझा मे पड' दियौक। सभटा बिलाड़िपन एके क्षण मे घुसड़ि जेतै आ ओ फेर केरिी जका गुड़िया-मुड़िया जेतै। रेशमा सोच लागलै। यदि शौकत मियां उठि क' आबि जाि त' एकर मुंहक टनटनी एखने बंद भ' सकै छै।

नीक भेलै। शौकत मियां आबि गेलाह! भनसाघरक स' भोरका चाहक गन्कि बदला ई खिच-खिचक गंि बदाश्त नहि भेलै आ अिकिचरा भेल नीनक खौझ स' भरल ओ बाहर निकललाह!

'क्या हुआ? सुबह-सुबह चाय देने के बदले घर को कबड्डी का मैदान क्यो बना रखा है?' डाइंग रम भडकलै। रेशमाक चेहरा चमकलै। दीपा शरीर स' एम्हर छलै आ मोन स' मनोज कत'। तै ओ संभवित सेहो भेलै। मुदा जोहरा ओहीि छलै - तन आ मोन दुनू स'। कतहु कोनो तरहक बनावटी चमक नहि, मुंह पर कोनो तरहक भमक चेन्हासी नहि। ओ माि पर ओढनी िलकै आ

भनसाघरक थ्वचथ्वच के ओतश्व छोडैत डाइंगर म मे पहुँथ्व गेलै - 'साब! मेरे कू बताओ, ये दंगा हम और आप कराया क्या? आओर जो कराया, उसका बदन का एक बाल भी थ्वारा क्या? भगवती का आदमी गया, मेरा मरद गया। तो क्या ये सब उसका, मेरा या आपका चाहने से हुआ? कल को खुदा न करे, आपको या वो साब को कुछ हो जाता तो वो सब आपका या आपका मेमसाब लोग का चाहने से होता ि क्या? आओर ये मारामारी का फरक थ्वकसका पर थ्वारेगा साब। हम औरत लोग पर। बेवा तो अपुन लोग होता है न साब! और बेवा खाली बेवाइच कहलाता - थ्वन्दू बेवा आ मुसलमान बेवा नेई। साब, मइ जाता। बस मेरा आज का काम का पइसा दे दो। उस पइसा से मेरे जो मजी करेगा, थ्वासके थ्वाए मन करेगा सामान खरीदेगा।'

डाइंगर म गरजलै -'क्या बकवास लगा रखी है। रेशमा, तुम इनलोगो को यहा से भगाती क्यो नही?

भनसाघर फेर डेराएल थ्वाडई भ' गेलै। दीपा स' आब सहन नथ्वि भेलै। ओ जाए लेल डेग उिलकै। जोहरा एक पल भनसाघर मे मोजद दुनू माउथ्वा के देखलकै। फेर ओकरो डेग उिलै। आ भनसाघर जेना भूकंप स' डोल' लागलै। आब कनेक थ्वाि र भेलै। स्वारक अरोह-अवरोह मे सेहो थ्वाि रता अएलै। उिल डेग स्वार स' थ्वालान कर' लागलै -'जोहरा, ये सब ले जाओ और भगवती की पगार भी। हालात िक होने पर ही उसे घर से थ्वाकलने देना और तुम भी तभी आना। और दीपा, बैि न! चाहो तो तबतक शौकत थ्वाया से बात करो या थ्वार यही थ्वाचन मे मेरे साि। मै तुरंत चाय बनाती हूँ। जोहरा, तुम भी पीकर जाना।'

वाह रे स्त्रीया चतुरत र वाह! ऋषि मुनि सभ कहिये गेलैहए जे देवो नहि जानि सकलाह त' पुरषक कि कोन? किन्तु अईठि एहेन कोनो गुंथित रहस्य नहि छलै, नहि त' काम केनिहारक कोनो नुका छिपी छलै, ने नैनक कटाक आ बैनक मुस्कान छलै। अईठि त' एकेटा चीज पसरल छलै - चाह मे, पती मे, चीनी मे, कप मे - माउगे -माउगि। चाह, दूि, चीनी आगिक गरमी स' एके रंग ि' लेइत छै, एकमेक भ' जाएत छै। बनल चाह मे से चाहक रंग, दूि, चीनी के अलग-अलग करब मोश्किल। ईहो माउगि सभ चाहे जका एक मेक भ' गेल छलै।

शौकत साहब डाइंगर म मे चाहक चुस्की ल' रहल छलाह। चाहक भाफ डाइंगर म िरल, बफिभेल सदमिना के तोडलकै कि नहि, पता नहि; मुदा सौसे भनसाघर मे भाफक नरम गरमी पसरि गेलै। आ ओहि नरम-गरम माहौल मे देखाई पडलै जे एकटा मौगी चीज बतुस आ भगवतीक पगार ल' क' झटकल चलल जा रहल छै। एक गोट स्त्री आ दोसर माउगिक आँखिक पानि टघरि क' चाहक प्याली मे खसि रहल छलै। चाह नमकीन भेलै कि मीि रहलै, सेहो नहि बुझेलै। खाली एक गोट स्वर ओहि भनसाघर मे बरसि गेलै - बरकैत गेलै - 'दीपा हम औरतो के दुख कितने एक समान होते है न!'

'भगवान नहि करि ककरो माथ आ कोखि उजडै।'

'आ श्मशानक मनहूसियत ककरो घर मे पैसए।'

लोक आओर कहे छै, माउगि-माउगि अलग होई छै - नारी, स्त्री, महिला, माउगि, मौगी, जनी - हौ जी ई एतेक नाम द' देने ओ सभ बदलि जाइ छै की ? कहू त' ! एहनो कतहु भेलैये !

भाग रौ (मैथिली नाटक)

पात्र - परिचय

मंगतू

भिखारी बच्चा 1

भिखारी बच्चा 2

भिखारी बच्चा 3

पुलिस

यात्री 1

यात्री 2

यात्री 3

छात्र 1

छात्र 2

छात्र 3

पत्रकार युवक

पत्रकार युवती

गणपत कक्का

राजू - गणपतक बेटा

गणपतक बेटी

गुंडा 1

गुंडा 2

गुंडा 3

हिजडा 1

खंजडा 2

सुकसुनदेव

रामआसरे

दशक 1

दशक 2

आदमी

ताबे

स्त्री - मंगतूक माय

पुरुष - मंगतूक पिता

दृश्य : 1

(ट्रेनक दृश्य। (ट्रेन नहि भ' क' ई कोनो हाट- बजार अथवा मेला-ठेला सेहो भ' सकैत अछि।) ट्रेन मे महिला आ पुरुष यात्री। भीख माग' बला तीन टा बच्चा चढैत अछि। एक के गला मे हारमोनियम, दोसराक हाथ मे पाथरक दू टा खपटा। तेसरक हाथ मे खँजडी। तेसर बच्चा उमेर मे सभ स' छोट। तीनू क तीनू फाटल, चीकट कपडा मे अछि। बच्चा नं. 1 हारमोनियम पर सभ' स' नवीन फिल्मी गीतक धुन बजाक गाबि रहल अछि। दोसर बच्चा खपटा बजा-बजाक' ओकरा संगे गएबाक पयास क' रहल अछि। छोटका बच्चा खंजडी बजा रहल अछि आ गीतक पंक्ति पकडबाक पयास मे आधा-छिधा पंक्ति गबैत अछि। तीनूक स्वर;

सुर-ताल मे कोनो एकर पता नथि अछि। सभस' छोटका; बच्चा नं. 3 सभ स' पाई मँगैत अछि। कखनो देइत अछि, कखनो डपटैत अछि, कखनो कोनो दोसर दिस तकैत अछि, कखनो आँखि मूनि लेइत अछि।)

(रेन रुकैत अछि। तीनू बच्चा उतरि जाइत अछि। मंचक एकटा कोन्टी मे तीनू ठाढ़ भ' क' दिनु भरका कमाई गानैत अछि।)

बच्चा 1 : कतेक?

बच्चा 2 : साढे एगारह।

बच्चा 1 : बस? भरि दिन रेने-रेने घूमल आ तइयो साढे एगारहे? अकरा मे त' अपना सभक लेल चाहो-मूढी नथि। (सभस' छोटका बच्चा स') आँए रौ, खाए लेल भरि ठिरी आ माग' मे सभ स' पछारी! ठिक स' मागै किया नै छे रे?

(बच्चा 3 टुकुर-टुकुर तकैत रहैत अछि।) मुंह की बाहाक रहल छे? हम कोनो की गोविंदा छी कि शाहरूख रोशन। आ तोहो आमिर खान नथि छे। जतेक गरीब छे, तकरो स' बेसी गरीब बनल रह। तखने दू टा पाइ भेटतौ।

बच्चा 3 : (सहमैत) ई पटना छै कि दानापुर?

(दुनू बच्चा ई सुनि हिति ठिठि पडैत अछि। छोटका फेर टुकुर-टुकुर मुंह तकैत रहैत अछि।)

बच्चा 3 : रौ बूझि। ई पटना नथि छै, जकरा ककरो स' नथि पटै छै। दानापुर माने दाना स' पूरम पूरा। हमर आओरक पेट मे त' मरल सनक्करबो नथि अछि। की करबही रौ जानि क' की हम कत' छी?

बच्चा 1 :	भूख लागलए।

बच्चा 2 :	तकरा लेल पटना-दानापुर मे रहब जररी छै? भूख त' कखनो आ कतहु लाग जाइ छै। दम रि।

बच्चा 3 :	पटना सिटी?

बच्चा 2 :	ऊँ हूँ। पटना साहेब। सिटी त' कहिया ने बदलि गेलै।

बच्चा 1 :	रौ बता, सिटी स' साहेब भ' गेला स' की भ' गेलै? की बदलि गेलै?

बच्चा 2 :	बदलि गेलै ने? जनाना स' मदाना भ' गेलै।

बच्चा 1 :	माने? (गंभीर भ' क')

बच्चा 2 :	माने.. सिटी जनाना आ साहेब मदाना (दुनू हँसैत अछि। बच्चा 3 ओहिना बकर-बकर मुंह तकैत रहैत अछि)

बच्चा 1 :	नाम बदल' स' तकदीर सेहो बदलै छै की? सिटी स' साहेब भ' गेलै त' हमरा आओरक भूख-पियासक रंग बदलि गेलै की? अपना आओर के काज भेटलौ? पाइ भेटलौ? तहन किएक एतेक मगजमारी? पटना हुए दानापुर हुए साहेब की फारबिस गंज.. हुँह!

बच्चा 3 :	(उसास भरि क') भूख लागल अछि।

बच्चा 1 :	रौ सार! जो, कोनो हाि पकड़ि ला आ घोटि जो। सार.. भूख लागलए, भूख लागलए.. नहि कया देलक ईत'..

बच्चा 2 :	आजुक समाचार?

बच्चा 2 :	बच्चा बेमार। हजारो नेना मरि गेलै, खाएक अभाव मे..

बच्चा 3 :	हमरा खाए ला दे। नहि त' हमहू मरि जाएब।

बच्चा 1 : त' मश्व जो। पनिर्मांी छे जे मश्व जेबे त' देसक काज-ंिा िश्वह जेतै।

बच्चा 3 परनिर्मांी कोनो खायबला चीज होइ छै। केहेन होइ छै? कत' भेटै छै?

बच्चा 2 : (ओकर बात पर ियान देने बेगर) तो कोना बुझलही? तो त' अखबार नश्चि पढै छै।

बच्चा 1 : टेसन मे टीबी छै ने। ओकरा मे देखश्चयै। बश्चया स' बूझाब' लेल मँगतुआ त' अश्चए।

बच्चा 2 : ओकरा कोना बूझल छै?

बच्चा 1 : ओ पढ़ुआ छै। अखबार पढै छै।

बच्चा 2 : श्चखमंगो सभ अखबार पढै छै? बाप रौ!

बच्चा 1 : ओ कीनै नश्चि छै। पेसक बाहर बैसै छै। चौकीदार ओकरा द' दै छै अखबार।

बच्चा 3 : भीख मे अखबार! भीख मे चाह-मूढी.. (बजैत-बजैत िश्वह जाइ छै: दुनू बच्चा ओकरा घूरै छै।)

बच्चा 2 : मंगतू सभटा पश्च लेइत छै?

बच्चा 1 : हँ, रौ। पूरा अखबार चाश्च जाइत छै। पूरा दुश्चयाक हाल ओकरा बूझल रहै छै। ओ पढल छै।

बच्चा 3 : पढल की होइ छै? पटना-दानापुर जका कोनो टेसन छै की?

बच्चा 2 : (स्नेह स') तो नश्चि बुझबे अखन।

बच्चा 1 : पढल बहुत पैघ चीज होइत छै। पश्च-श्चश्च क' लोक बहुत पैि-पैि लोक बश्च जाइत अश्च। मुदा अपना आओरक तकदीर मे ई नश्चि अश्च।

बच्चा 2 :   (भरोस दैयबैत) नहि छै त' नहि छै। मंगतुआ छै ने पढल-लिखल। अपने बिरादरीवाला। अपना आओर स' गप्प-सप्प सेहो करै छै। दुनिया जहानक समाचार त' दइते छै।

(अई बेर तेसरका बच्चा कएक बेर हाथि मुंह स' भूख लगबाक संकेत द' चुकल अछि। सभ बेर दुनू बच्चा ओकरा घूरैत अछि। तेसरका सभ बेर डेराक शात भ' जाइत अछि।)

बच्चा 1 :   हे.. देख ओम्हर! अपन गोविन्दा।

बच्चा 3 :   ई कोनो नव भिखमंगा ऐलै की? आब त' आओरो भीख नहि भेटत। .. भूख..

बच्चा 2 :   मंगतुआ छै।

बच्चा 3 :   ई एतेक पैघ घर ओकर छै? आ तइयो भीख..

बच्चा 1 :   रहि बुद्धि.बक। ई अखबारक ओफीस छियै। अई ठाम क सभस' पैघ अखबारक ओफीस।

बच्चा 2 :   ऐं मारल! वो गुडडी बकाटा। बुझा गेल जे ओकरा पढब-लिखब कोना एलै।

बच्चा 1 :   अखबारक बगल मे रहला स' लोकओ पढि जाइ छै। मू.ढीक दुकान लग रहला स' मूढी भेटि जाइत छै?

बच्चा 3 :   मूढी.. भूख..

दुनू :   चोप!

बच्चा 2 :   कोनाक' ऊ पढि गेलै तहन?

बच्चा 3 :   हमहू पढब।

बच्चा 1 :   रौ, कुकुरक नागरि। पढिक' की बनबही? सोनिया गांधी कि मनमोहन सिंह?

बच्चा 2 :   राबडी देवी। पढक जर रते नहि।

बच्चा 3 : (खिखिआया क') पढ नहि देबे, खाए लेल नहि देबे, त' करब की? मूर्ख!

बच्चा 2 : पढाईक गेरंटी नहि । खाएक गेरंटी त' आओरो नहि ।

बच्चा 1 : कोना पढबही रे? मंगतुआ गप्प दोसर छै। ओकरा लग टेम छै। ओकरा भीखो खूब भेटै छै?

बच्चा 3 : पढले सन्ते ने! हमहू पढि लेब त' हमरो बेसी भीख भेटत।

बच्चा 1 : चल, चल ..

बच्चा 3 : कोम्हर? हमरा भूख लागलए।

बच्चा 2 : मंगतुआ लग चल। ओकरा खेनाइयो-पिनाई बहुत रास भेटै छै?

बच्चा 3 : पढिक' भीख मागला स' खेनाइयो फी.. हमरा पढ़ा दे।

बच्चा 1 : (दुनू क हाथ पकड़िक एक दिस ल' जाइत) चल, चल पाछा सेहो बरस' बला छै। चल ओम्हर (दुनू रास्ता कॉस करबाक अभिनय करैत अछि। तेसरका पाछा रहि जइत अछि। दोसरका ओकरा पार करबाक इशारा करैत अछि। तेसरका डेराइत अछि। दोसरका फेर एम्हर अछि। ओकरा एक हाथ लगाबैत अछि। फेर खीचिक' रोड पार करैत अछि। पार क' क' तीनू मंगतू लग पहुंचइत अछि। एक गोट मोटरी, एक गोट कटोरा, किछु पाइ ओकरा लग पडल अछि। पकाश तीनू बच्चाक संगे-संगे आब मंगतू पर।)

बच्चा 1 : की रौ मंगतुआ। की भ' रहल छौ।

मंगतू : के? ओह! चनरा, गोबरा, झुनमा रौ! आ बइस, केहेन चक्क्ष रहल छौ िि-पानी?

बच्चा 2 : भीख मागब िि पानी होइ छै? आ सेहो अई अंडि पाक्ष मे!

बच्चा 1 : हमरा त' फूटलो आँक्ष्व नक्षि सोहाइये ई बरखा-बुनी। लोक आओर घर मे, आक्ष्कस मे बन। दुकान दौरी सेहो पि। लोक आओरक िि-पानी नक्षि त' हमरा आओर के भीख के देत?

मंगतू : हमरा त' बडड नीक लगैय' ई बक्षसात। चार क्ष्दस हक्षयाली, मोन के बडड सोहाओन लगैत अक्ष्छ।

बच्चा 1 : पेट भरल रहला पर बनरक्षायो रानी मुखजी लागै छै।

बच्चा 2 : अपना घर मे बइसक' चाह पकौडी उडाब' मे केकरा मजा नक्षि एतै?

(चाह पकौडीक नाम स' बच्चा 3 फेर हाि स' भूख बतबइत अक्ष्छ।)

बच्चा 1 : हमरा आओरक कोनो िकाने नक्षि! देखै क्ष्छयै ने जे जहन पाक्ष्न बरसै छै, तहन क्षाजैत माय कोरा मे भीजैत बच्चा के ल' क' क्षक्ष्कडंगे-क्षक्ष्कडंग, घरे-घर बउआ अबैत छै। मुदा कतहु-कोनो चौकीदार ओकरा अपना क्षक्ष्कडंग के नीचा आसरा नक्षि देई छै।

मंगतू : छै। तइयो पाक्ष्न बरसै छै त' नीक लागै छै। देह मे क्ष्मनगी सुरसुराय लागै छै। पाक्ष्न छै तै। क्ष्मनगी छै नै रौ..! (स्वर बदक्ष्लक') आ, तो सभ क्षांगमे क्ष्कयै। तोरा-आओर के त' घर छौ।

हमरा जका नहि छौ ने।

बच्चा 1 : हं, सहीए । तोरा नाश्ता नहि भेटै रौ। रहियैक त' भरि दिन ई टरेन, ऊ बस, नहि करैत रहितहुँ। लोकक लात-बात नहि सुनतहुँ। ई गदहा देख.. हाकल-हाकल के बास जतेक पै भूर भ' गेल अछि।

बच्चा 2 : आ जे दू टा पाइ भेटै छै, ओहू मे पुलिस, दादा सभक..

(ओ बाजिए रहल अछि कि एकटा पुलिस डंडा घुमबैत ओम्हर अबैत अछि। तीनू के देखिते तीनू पर ताबडतोप. डंडा बरसाब' लगैत अछि। तीनू एम्हर-ओम्हर बचबाक पयास करैत अछि। ओही मे देह छीपि-छीपि के पुलिस से नहि मारबक नेहोरा करैत अछि। मंगतूक सेहो पयास। अई कम मे एक -दू डंडा ओकरो लागि जाइत अछि।)

पुलिस :सार सभ! फेर एम्हर आबि गेलै। चढबे बस रेन मे माग' लेल भीख, आ करबे पाकिटमारी।

बच्चा 1 : नहि साब! हम सभ त'..

पुलिस :चोप.. भोसडी के.. सार, बहिनक इयार! ई डंडा एम्हर स' घुसतौ त' मुंह दने निकलतौ। चल भाग, जो ओई गल्ली मे।

(तीनू पुलिसक बताओल गल्ली मे भागि जाइत अछि। पुलिसबाला विजयी भाव स' बस स्टैड पर ठाढ लोक आओर के देखैत अछि आ फेर मंगतू दिस।)

मौज कर रो बाउ, मौज कर। तोहरे भाग मे मौज लिखल छौ। ऐहेन ने देह बना के आएल छे जे मौजे-मौज छौ।

(कहैत ओ गल्ली दिस बढैत अछि।)

दृश्य : 2

(यात्री सभ आपस मे गप्प करैत अछि)

यात्री 1 : एह! ई पुलिसवाला सभ त'..

यात्री 2 : राज-पाट त' एकरे सभक छै ने। कहबी छै ने जे जकरे लाठी, तकरे महीस।

यात्री 3 : कतेक डंडा बरसौलकै ओहि बच्चा सभ पर। बुझाई छै जे ओकरा अपना धीया-पुता नहि छै। आ अईठाम लोग आओर! तमासे देखैत रहि गेल। बाज' लेल केओ नहि।

यात्री 1 : सभक मुंह मे त' जाभी लागल छलै। अही लेल केयैक ने बजलियै?

यात्री 2 : अहा बाजतहुं त' हमरो सभक हुनमाक बल्हुआयैक ने।

यात्री 3 : (मंगतू दिस) एकरो पर कम नहि बरसलै। हमरा आओर स' नीक त' इएह छल। एहेन देह- दसा होइतहुँ बचब' लेल त' गेलै।

यात्री 1 : के छै ई?

यात्री 3 : (देखि क') अनिल अंबानी।

यात्री 3 : खाधिकायत छै एकरा मे।

यात्री 1 : से की?

यात्री 3 : पढल लिखल छै। रोज अखबार पढै छै।

यात्री 2 : त' जहन पढल छै त' कोनो काज-धंधा कियै नहि करै छै?

यात्री 3 : एतेक अनटेटर गप्प केओ कएलए! अएँ यौ,

ओकर देह नञि देखै छियै? के देतै ओकरा काज? अही द' छियऊ ने! ओ त' बडड पसन हएत।

यात्री 2 : से किएक यौ?

यात्री 3 : किएक त' भीख मागब ओकरा बडड गञति कमि बुझाइ छै।

यात्री 1 : आब अहूं त'। एहेन अनसोहाँत गप नञि कर।

यात्री 2 : अहा करी त' किछु नञि, हम करी त' जुलुम?

यात्री 1 : हम कत' स' ओकरा काम देबै? हम त' अपने सेठि के ओहिठाँ बेगार खटै छी।

यात्री 3 : त' खटू। मालिकक दया दृष्टि पर खेबैत रहू। हे, अही की, हम सभ किओ सेठि दया-दृष्टिक भीख जोहैत रहै छी। तमासा मे तमासा ई जे हमर सभक मेहनति पर मालिकक सभ मौज करैत अछि। काला पानीक कैदी जका माह भर हमरा आओर खटै छी। माहक आखिर मे भीखे जका दस टा पता हमरा आओर दिस फेक देल जाइत अछि।

(बस अयबाक ध्वनि। यात्री सभ मे हलचल। 'हमर बस आबि गेल', 'हमरो'। 'हमर एखनि नञि।' 'फेर घर पहुँच' मे लेट भ' जाएत' - यात्री सभक उत्साह आ बस दारा पसान।)

कुकुर जका छी, सेठि पगारक सूखल हडडी चुसैत हम सभ। (बस अबै छै। ओहो लपकि क' चढि जाइत अछि।)

(पकाश तीनू बच्चा पर।)

बच्चा 1 : रौ, जल्दी स' पचटकिया निकाल आ बाकी सभ एम्हर रख। रकसबा अबिते हैतौक।

बच्चा 3 : ओकरा रकसबा कहैयैक कहै छहौक।

बच्चा 2 : त' की भगवान कहबैये? (बच्चा 3 स) तो एकदम किछु नहि बाजबे। कहब देइ छियौ (बच्चा 3 हं मे मूंडी डोलबैत अछि। पुलिसक पवेश।)

पुलिस :रौ हीरो। की भेलौ रौ? बहा, विष्णु, महेश? आ कि सलमान खान, आमिर खान, शाहरख खान। ओकरो.. ऊ लंगडा के सेहो पकड़ि ले त' आओर कोनो नाम द' दही नारद बाबा, कृष्ण जी, बलराम जी.. कलकी चाही त' जायद खान। एकदम टटका खान छौ। ऐं! कतेक माल बटोरले रे! लेडीज डिब्बा मे सेहो गेल छले ने! अरे, तोरा जका हम रहितियैक ने, त' हम त' खाली लेडीज मे जयतियौ। नहि भेटतियैक भीख, नहि भेटौ, मुदा मौगी सभके छुबाक अवसर त' भेटि जैतियैक ने! (िर आजबैत अछि) अच्छा चल, आकाल माल! देरी नहि ।

(बच्चा 1 पाच टकाक रेजगी आकाश क' देइत अछि। पुलिस वाला गनैत अछि।)

पुलिस :सार! तोरा सभक संगे इएह सभ झंझट अछि। देबे चार गो छदाम आ गनेबे एक घंटा जे गनैत-गनैत हाि मे ऐंि होब' लागय।

बच्चा 1 : साब! आई कतेक पानि बरसलै अछि। देखियौ ने साब। कतेक घटाटोप बरसात भ' रहलै। आन्सरे स' रेने-रेन घूमल, मुदा ई पाच टका स' जास्ती नहि भेटल। साब, एकरा मे स' किछु हमरो सभक भेटि जाए। आन्सर स' उपासले छी। ई छोटकाक त' अंतड़ुी सुखा गेलैय'। (सलाम िकैत अछि।)

(पुलिस आलजि हंसी हंसैत छै। फेर एक िल बच्चा 1

के लगबैत अछि।)

पुलिस :दलाल स' दलाली एकरे कहै छै ने। ऐ हीरो, बेसी एक्टिंग नहि। (दर्शक स') देखलियौ छौडा सभक स्टाइल। देत पाच गो टाका, आ ओहि मे आपसो चाही। माने हफ्ता मे हफ्ता। (गब्बर सिंह स्टाइल मे बाजैत अछि) सोच, सोच। हमरा आओरक सोच। सरकार कहै छै, भीख नहि माग' लेल। कानूनो बना देलकै। मुदा हमरा आओर के दया आबि जाइत अछि तोरा आओर पर। भीख नहि मागबे त' खेबे कत स'? रौ, मेहरबानी बूझ, मेहरबानी। आ, आब ई पाच टका स' किछु नहि होब बला छौ। रेट बढ़ल, रेट। देखै नहि छही, कतेक मँहगाई बढ़ि गेलैये।

(डंडा घुमाबैत चलि जाइत अछि.. तीनू एक दोसरा के देखैत अछि। पुलिस के जाइत देरी सँ तीनू पारिक नीचा दबाक' राखल पाइ निकालि लुझैत अछि।)

बच्चा 3 : भूख लागलए हमरा।

बच्चा 1 : (खिसिआ क' एक झापड लगबैत अछि। ले, हमर देह काटि क' खा ले हे, ओम्हर जे पाच टका छै ने, तकरा मे सिपहियो के हाथ नहि लगलैहे। नहि त' ओ हाथ कन्हा स' अलग भ' जेतौ। दादाक पैसा छै, दादाक।)

बच्चा 2 : त' आब बचलौ की?

बच्चा 1 : डेढ टाका। जकरा मे एक गिलास सतुओ नहि एतौ।

बच्चा 2 : तहन .. भूख त' लागल अछि। हमरो, तोरो। चल न फेर मंगतुए लग। ओकरा ल'ग खेनाइयो-पिनाईक समान सभ खूब रहै छै।

(तीनू ओकरा श्वस बढैत अछ्ठ । मंगतू श्चकछु बडबड क' रहल अछ्ठ।)

बच्चा 1 : की रौ मँगतुआ! की डैलोग माश्च रहल छै। नाना पाटेकर जका।

मंगतू : (चौंश्चक क') अँए.. श्चकछुओ त' नश्चि ।

बच्चा 3 : भूख ..

बच्चा 1 : चुप सार, कुकुरक पोश्च्छ।

बच्चा 2 : माश्च ले डैलोग। तोरे राजपाट छौ रौ। मौज छौ तोरे। ने कोम्हरो एनाइ ने गेनाई। एम्हरे बइसल-बइसल पाइ बरसै छौ तोरा पर। हमरा आओर के देख। भश्च श्चदन रेने-टेन घूमल, तइयो कतेक भेटल? साढे एगारह टाका। पाच टाका पुश्चस के, पाच टाका दादा के। बचलौ कतेक? डेढ टाका? अब अई डेढ टाका मे की खाऊ हम आओर, जाश्च स' पेट भरए? तोरा त' ई सभ नश्चि सोचबाक छौ ने। तै कहश्चयौ जे बडड भगमंता छे।

मंगतू : (श्चावक्त स्वर म') तोहो भगमंता बश्च सकै छे।

ब. 1+2 : (एके स्वर म') हँ, कोना? बता कने! पाइ लेल श्चकछुओ क' सकै छी हम सभ।

मंगतू : श्चकछुओ क' सकै छे ने! त' आ, तोहो बश्च जो हमरे जका लूश्च, लागड .. श्चकर तोरो लग बरसतो पाश्चक बदला मे पाइ .. आ .. आ .. बना श्चदयौ .. आश्च जो ..

(खूँखार हाव-भाव स' ओकरा श्वस बढैत अछ्ठ। दुनू बच्चा श्वाश्वयाइत अछ्ठ। बच्चा 1 ओकरा मार' लेल हाि उबैत अछ्ठ। फेर नीचा क' लेइत अछ्ठ। बच्चा - 3 बच्चा 2 के हाि स' भूख लगबाक इशारा क' रहल अछ्ठ। बच्चा 1 ओकरा देश्चख लेइत अछ्ठ

आ मंगतू पर उिाओल हाि, जे नीचा आब्ब रहल छलै, ओकरा बच्चा 3 पर जमा देइत छै।)

(अंिकार । पकाश। सोझा स' दु गोट पिकार युवक-युवती अबैत अछ्छ। युवती जीस आ बॉडी टाइट टी शटि मे अछ्छ। कटल केश, कंिा पर शाश्वापुरी झोरा, गदश्चि मे पेन आ मोबाइल लटकल। युवक सेहो जीस आ खूब ढोल िकिल टी शटि मे अछ्छ। कन्हा पर पोटफिोश्चयो बैग, गदश्चि मे कैमरा, मुंह मे श्चगरेट। श्चगरेट श्वबैत िुआँ छोडैत छै। िुआं युवती श्वदस पहुँचै छै। युवती हािि स' िुआं हटबैत तेज नजश्व स' युवक के देखै छै।)

युवक : सॉरी, सॉरी। की कर । सभ िि त' नो स्मोश्चकंग जोन बना देने छै। दफ्तर, पाकि, होटल, अस्पताल - कतहु नश्चि पीश्व सकै छी।

युवती : त' नश्चि श्वयू। पाश्वा नश्चि छै ने, जे मश्व जाएब।

युवक : पाश्वा नश्चि पाण अछ्छ। अनका लेल अपन पाण गमाएब हमरा मंजूर नश्चि ।

(गप्प करैत-करैत युवतीक दृश्च मंगतू पर पडैत छै। ओ भीख लेल श्चका श्चकालैत अछ्छ। युवती रोक्क देइत अछ्छ।)

युवती : ऊँहू!

युवक : (मजाश्चकया स्वर मे) त' ई श्चगरेटे द' अबै छ्छयै।

युवती : सभ समय मजाक नश्चि ।

युवक : तहन?

युवती : ओकरा पर चलू एकटा स्टोरी करै छी।

युवक : फेदा।

युवती : ओ पढल-लिखल छै। शारीरिक रूप स' लचार । पढल छै, तै भ' सकैछ जे भीख मागब ओकरा पसीन नहि हुअए। मजबूरी मे..

युवक : कह' की चाहै छी अहा?

युवती : कर' चाहै छी स्टोरी ।

युवक : व्हाट? (किछु सोचैत अछि) हूँ .. फिजिकली इनेबल, मेटली शार्प स्ट्रीटरेट .. काज कएल जा सकैय'।

युवती : छपला स' जे पाइ भेटत, तकरा मे स' आधा एकरा द' दबै। ओकरो लागतै जे भीख स' अलग किछु ओकरा भेटलैय'। आत्मविश्वास बढतै ओकर।

युवक : यदि हम फिल्म बनबी सोची त'? 'अ हैंडीकैप्ट स्ट्रीटरेट'..। नीक बनि गेल त' अवार्डवार्ड सेहो..

(अवार्डक नाम पर युवतीक ऑखि चमकैत छै।)

युवती : नॉट अ बैड आइडिया।

(दुनू मंगतू लग पहूँचइत छथि।)

युवक : रौ, नाम की छौ तोहर।

(मंगतू चेहाक' ओकरा दिस देखै छै। किछु बोलबाक होइ छै, मुदा दोसरे पल मुंह बना आ चेहरा फेरि क' लेइत अछि।)

युवती : अही स' पूछि रहल छी जे की नाव भेल।

(मंगतू एखनो चुप अछि। मुदा ओकरा मे एकटा नाराजगी भरल उतेजना बढि रहल अछि।)

युवक : सुन! हम सभ तोरा पर किछु काज कर' चाहै छी। अई मे तोहर सपोर्ट चाही। माने सहायता।

युवती : अहाक नाव, गाम, िकान। अिहा कोना पहुंचलहुँ..

(मंगतू एखनो दुनू िदस ताकैत रहल छै। युवक मे रोष पैदा होई छै। युवती स')

युवक : ही इज डफर। एक्टंग। नोइंग इज इंपोटेंस। लेटस मूव।

युवती : बी पेशेट। ही िवल टॉक। (मंगतू स') भाई, कनेक अहाक सहयोग चाही। अही पर हम सभ काज कर' चाहै छी। दुिनया के बताब' चाहै छी जे अहा के छी, कोना छी। लोक-आओरक िधयान खीच' चाहै छी- अहाक गुण पर, जे अई हालित मे रहियो क' अहा पढलौ।

मंगतू : (अकस्मात) अहा के कोना बूझल?

युवती : देखै छलियै ने। अबैत-जाइत। अखबार पढैत, लोक आओरक िचटी पढैत।

मंगतू : (एकटा िर मे बहैत जका) हुँ बहुत लोक छै, जे पढ' निह जानै छथि। हुनका गाम आओर स' िचटी अबै छै। ओ सभ हमरा लग अबैत अिछ। हम पिढ दै छियै। हमरा िसखहू अबैय'। हे, (बाम हाि देखबैत) देखियौ। पिहने त' अच्छर खराब होई छल। आब कने िीक भ' गेलै। मुदा, अहा िकयै पूछि रहल छी ई सभ?

युवक : कहिलयौ ने रे जे तोरा पर एकटा स्टोरी करबाक अिछ।

मंगतू : ओिह स' हमरा फेदा? हमरा भीख माग' से' छुटी भेिट जाएत? कोनो काज भेटत हमरा? अहा त' अपन काज बना लेब आ लािठ मािर क' चिल देब। िचन्हबो निह करब।

युवती : एहेन गप्प निह छै..

मंगतू : त' केहेन गप्प छै? सभ क्खकओ अपना मतलब साि' लेल अबैत अछ्छ। अहूँ आओरक मतलब अछ्छ। नहि त' .. अहा दुनू त' रोजे ई बस्ताडंग मे अबै छी। लोक आओर त' एक नजर एम्हर माथ्रयो लेइत अछ्छ, अहा दुनू त' सेहो नहि ..

युवती : एहेन क्खकछु नहि छै। कश्रयो न कश्रयो, ककरो न ककरो नजश्व त' पडबे करै छै। अहा पर आई गेल आ हमर दुनूक गेल। भ' सकै छै जे हमर लेख पश्ढ क' क्खकओ अहा स' भेट कर' आबि, गप्प करि। भ' सकै छै, जे अहा के अपना श्मनगीक कोनो राह भेश्ट जाए।

मंगतू : कोनो एहेन नहि आओत जे हमरा बाट देखाओत। हँ, भीखक चवनी -अनिी बीग' लेल अबस्से आश्व जाएत। काज कोनो नहि देत। की करब अहा सभ जाश्व क' जे हम के छी, कत' स' आएल छी..

युवक : एना मोन हारला स' क्खकछु भेटै छै की? (युवती श्वस) ई कहबे केली ने जे भ' सकै छै, हमर स्टोरी पश्ढ क' क्खकओ तोरा कोना काज-निा देइये दै। अरे आसे पर त' ई दुश्वाया िढ छै। तो नहि बाजबे त'..

युवती : ईहो भ' सकै छै ने जे अहाक कि पश्ढ-सुन क' दोसरो लोक आओर मे नव श्मनगीक संचार हुअए। अहा त' उदाहरण भ' जाएब। पेरणा पुंज..

मंगतू : कहबाक गप छै ई सभ। नहि क्खकओ आएत, नहि हमरा काज देत। हम अश्वना भीख मँगैत, मँगतुआ कहबैत मश्व जाएब- अही ि, अही फुटपाि पर। मुन्सीपाल्टीबला आओत, अपना गाडी मे ल' जा क' कतहु देह के िकान लगा देत.. श्वाखमंगे बनल मश्व

जाएब। (युवक स') कहू त', हमर कोन कसूर जे जनमते हम मोरी मे बहा गेलहुँ। मानि अही लेल ने जे हम नजायज छी। मुदा कहू जे छोट-छोट, भोला-भाला बच्चा सभ कोना क' नजायज भ' गेलै। (तेज नजरि स' युवती के देखै छै।)

युवती : सही। कोनो नवजात नाजायज कोना भ' सकै छै?

मंगतू : सएह त'। नजायज त' हुनकर संबंध भेलै ने। आ सेहो नजायज किएक? बच्चा जनमाएब कोनो नजायज कर्म छिऐ? तहन त' हे, ई पूरा दुनियाँये नजायज अछि। समाजक रीति-नीति नहि मानू त' सभ किछु नजायज.. ई समाज हमरा भीखमंगा बना देलक, ई नजायज नहि भेलै?

युवक : हूँ, बात मे दम छौ तोहर!

मंगतू : (जेना अतीत मे।) हम एहेन नहि छलहुँ। एकदम पूरा देह छल हमर, अही आओरक माफिक - दू टा पएर, दू टा हाथ। तीर जका भगैत छलहुँ, लटू जका नचैत छलहुँ.. फिरि. (लटू जका गोल-गोल घुमबाक पयास करैत अछि।)

युवती : फेर?

मंगतू : फेर की? (अजवाहिइत) छोडू! की रखल छै ऊ सभ मोन पाडि क'। नहि त' ऊ दिन घूरत आ ने हमर हाथ-गोर।

युवती : एना नहि बाजी। कहलहुँ ने हम जे हमर स्टोरी पढि क' कोनो मातबर, दयालु पहुँच सकैत छथि अहाक मदति लेल। भ' सकैछ, जे ओ अहाक पएरे बनवा देथि। आइ-काल्हि खूब चलल छै ने जयपुरी लेग। देखैयो मे एकदम असली लागै छै आ काजो एकदम असलीये जका करै छै।

युवक : तो त' पढल छे। पढनेही ही हेबे एकरा मादे।

मंगतू : (अही पवाह मे) हँ, सुि चंदनक पएर जका।

युवक : एकदम सही। यद्द क्कओ तोरो पएर एना बनबा देलकौ त' तोहो हमरे सभ नाहीत चश्न-थ्फश्च सकबे.. मुदा ई त' बता जे ई सभ भेलौ कोना। जन्मे स' एहेन नै छे एखने कहले..

मंगतू : (बीच ही मे) पूरा छलहुँ हम' एकदम अही सभ जका। नाश्कह टा छलहुँ छौडा सभक संग खेलाए छलहुँ। अकास मे गुडडी देखल हे.. ऊ.. बकाटा सभ गुडडी लूट लेल पडाएल। हमहूँ पडेलौ.. भागलहुँ, भगैत गेलहुँ, भगैत गेलहुँ- होस छोश्कक'। नश्चि बूझ' मे आएल जे सोझा स' बस.. (कनेक श्चिर भ' क') ई गणपत काका (केलावाला श्चद्दस इशारा करैत) छश्चि, सएह हमर माय-बाप बश्न गेलाह। अस्पताल ल' गेलाह, जतेक भ' सकलै इलाज पानी करौलश्किह!

युवती : आ अहाक माय-बाप?

मंगतू : दाइ, श्कयैक कटल पर नून बुरकै छी? अरे हम भेलहुँ हरामी, सुअरक औलाद! हमरा आओरक माय-बाप कोन? एतबे श्नमश्च रश्चश्चयैक त' जनम के बाद हमरा मोरी मे त' नश्चि ि' देने रश्चश्चयैक'ने। आब त' गणपते कका हमरा लेल माय-बाप सभ छश्चि।

युवक : चलू, जान त' बाश्च गेलौ ने!

मंगतू : (फेर भडकैत) ई जान? ई श्चनगी? अहा के चाही एहेन श्चनगी? त' ल' श्चय' ने! खुशी-खुशी द' देब। मुदा नश्चि। अही के श्कयैक, ककरो नश्चि चाही एहेन श्चनगी। ई कटल-भागल, लोि, अपाश्चज श्चनगी। अरे साहब, कहब बहुत आसान छै। अपन जीह छै ने।

युवती : कह' सुन' स' मोन हल्लुक भ' जाए छै।

मंगतू : नेनपने स' भीख मागब हमरा बडड अक्खथ्म बुझाइत छल। नेनपश्न मे, जाश्वि हाि-गोर सही सलामश्न छल, एम्हर-ओम्हर काज क' क', श्चकुली-ककही बेश्च क', कप फ्लेट ि-ि क' थ्मनगी बसर केलहुँ। सुनने छश्नयै जे काज कर' बला थ्रिया-पुता लेल राश्न मे स्कूल चलै छै.. सोचने छलहुँ जे नाम श्नखा लेब। पश्च-श्नश्व जाएब त' कोनो छोट-मोट काज भेश्च जाएत। मुदा.. ऊ गुडडी अपने की बकाटा भेलै, हमर थ्मनगी के सेहो बकाटा क' देलकै। आनक आसरे भ' गेलहुँ हम। माथ्म-चाथ्म क', खेनाई! छ्ळया-छ्ळया, कतेक गश्नति कमिछै ई। कएक बेर सोचल, जे नश्चि मागब भीख- लग मे फेकल पाई सेहो नश्चि उिबै छी। थ्मान अबैय'। मुदा, ई पापी पेट थ्मान स' बश्च क' भ' जाइए।

युवक : नाम की भेलौ तोहर!

मंगतू : नाम त' ओकर होई छै ने यौ बाबू, जकर माय-बाप रहै छै! रोडबला लोकक कोनो नाम होई छै.., जे-जे कह' लागल, सएह नाम भ' जाइत छै.. माथ्म-चाथ्म क' खेने सन्तो लोक आओर हमरा मंगतू कह' लागल। मंगतू स' मँगतुआ। (करण हंसी)

(मंगतूक गप्प युवक-युवती नोट-बुक मे नोट करैत रहैत छश्चि।)

मंगतू : आओर साब, हम जहन..

युवक : (अचानक नोट बुक बंद करैत) अच्छा मंगतू, फेर होइत अछ्ळ भेट-घाट।

(युवती सेहो नोट-बुक बंद क' देइत अछ्ळ। मुदा ओकर आँश्च मे अिाह पश व आयिक्ि भाव छै। मंगतू हतवाक युवक श्वस देश्वते

रश्व जाइत अछि। ओ किछु बाजबाक पयास करैत अछि, मुदा ओ दुनू ओकरा से उपेक्षि जाइत छथि। ओ दुनू मंच स' पस्थान करैत, मंच क' दोसर भाग स' पुन: अबै छथि, गप्प-सप्प करैत। पकाश ई दुनू पर । मंगतू फीज अवस्था मे..)

युवती : बाप रौ बाप! कतेक सीधयसली गप्प करैत छलै। कतेक कन्सर्न भ' क! संबंध नजायज होई छै, बच्चा नथि! ..कतेक आसानी स' हम सभ अपन भूलक चदरि दोसराक माथ ओढा अबैत छी। आ, बना लेइत छी अपना के पाक-साफ। ई मंगतू, कतेक भाव भरल छै एकरा भीतर। कतेक नीक जका सोचै छै। आ हम सभ पढुआ लोक, माथ एकटा भीखमंगा बूझि ओकरा टारि जाइ छी।

युवक : हे! बेसी भावुक नथि बनी। स्टोरी कर' आएल छी, ओकर धनगीक रामनामी चदरि ओढ' नथि। बूझि पडैत अछि, किछु बेसीए पभावित क' देलक ओ लुलबा। कोनो चकर-उकर त' शुर नथि भ' रहल अछि.. एकदम फिल्मी स्टाइल मे।

युवती : शटअप! अहा सभ के एकरा अलावे आओर सूझबे की करत?

(दुनूक पस्थान। पकाश मंगतू पर। ऊ ई दुनू के जाएत देखैत छै, किछु.. किछु असंतुष , किछु-किछु संतुष ।)

मंगतू : चलि गेलाह! भरि पोख गप्प भेबो नथि कएल आ.. (संतुष्ट क भाव स) तइयो पहिल बेर आई कोनो पढल लिखल लोक स' गप भेल। मोन त' होइ छल जे बतियबिते रही। मुदा.. बीचहि मे.. भ' सकै छै, जतेक सूचना चाही, भेटि गल हुअए.. तइयो.. जतबे गप्प भेल, नीक लागल.. हम त.. हमरा त' मोन

होइते रहैत अछि जे हम एहेन-एहेन लोक सभ स' गप्प करी - देस, दुनियाँ, समाज आ अपना पर। (उल्लसित स्वर मे) गणपत कका! देखलहुँ अहा। ओ सभ हमरा स' गप्प केलाह। पिकार सभ.. पढ़ुआ लोक सभ। आब जरूर हमर जिनगी बदलि जाएत। हमरा पएर भेटत, काज भेटत.. कतेक सोहाओन समय हेतै ओ..

(गणपत काका केराक चंगेरी उठिने ओकरा लग अबैत छै आ सभ' स' उतरल केरा ओकरा दै छै।)

गणपत : ले, खो!

मंगतू : काका.. हमर गप्प नहि सुनै छी !

गणपत : सभ सुनै छी। पिकार छथि। हुनका आओरक काजे छै दोसरा आओरक जिनगी बनेनाइ।

(केरा देइत) ले, खतम क' ले त' हम जाइ..

मंगतू : कत?

गणपत : घर! बेटी बाट तकैत होएत। सीिा-पानी ल' क' जेबै, तहने ने चूल्हि मे आंच पजरतै।

मंगतू : (नमगर सास लेइत) हँ, घर! अई ि सभ के नीक-बेजाय, पैघ, छोट- अपन घर छै, परिवार छै, धिया-पुता छै, ओकरा आओर लेल ओकरा सभ के घुरबाक छै। पश्चिम दिस डूबैत घुरैत सुरज जका। आरामक ओसारि लेल, परिवारक बीच अपन सुख-दुख बाट' लेल।

गणपत : (ओसारि भरिक') हँ रौ, घर आ परिवार! टिनाक चदरा, पोलिथिन स' छारल चार खुताक घर, जाहि मे िमे-िमि भूमि। सेहो चार-छओ मास पर मुंसीपालटीबला खसा दै छै। सभ बेर के तोड़-फोड़ मे पाच मे स' टीन टा चीज गायब भ' जाइ

छै। बेटी जवान भ' गेल। लोक आओर घूरैत रहै छै, हम किछुओ नहि क' पबै छी। (उठि क' बिदा होइत अछि। पकाश ओकरा पाछा। एक कोन्टा मे माि पर स' चंगेरी उतारबाक अभिनय। संगहि पाशर्व स' 'ऐ चमेली', गै छप्पन छुरी, कोम्हर जाइ छै करेजाक छप्पन टुकडी क' के', 'एम्हर आ, एकरहि राज्य मे रानी बना देबौ' 'ऐ, आती क्या खंडाला' सनक स्वर।)

.. बेटा जवान भ' गेल अछि। मुदा चारि टा पाइ कमेनाइ अपना इज्जत पर बटा बूझैत अछि।

बेटा : (घुसैत) रौ बुढबा, भरि दिन सेि जका बइसल रहले कि किछु बेचबो केले। (नेपथ्य दिस मुंह क' क') किओ अछि? किछु छैहो खाए-पिय' लेल कि सभ ि्सा देलही ई महाराजा के।

(नेपथ्य दिस स' 18-19 वषकि एकटा लडकी हाि मे िरी ल' क' अबैत अछि। एम्हर स' ऊ िरी ल' क' अबैत अछि आ दोसर दिस स' दू-तीन टा गुंडा सनक लोक अबैत अछि आ लडकी के अश्लील र प स' घूरैत अछि। लडकी भाई के िरी देइत अछि। भाइ िरी देखिक' फेक देइत अछि।) ई सूखल-टटाएल रोटी आ पानि जका तीमन! ई खाएक छै?

गुंडा 1 : रौ राजू! तोहो कत' आबि जाइ छै मगजमारी कर' लेल। रौ मीता, चल हमरा संगे। तोरा तंदूरी चिकन खुएबौ। मुगीक टंगडी (बोतलक इशारा करैत) एकदम मेम चीज.. मोन खुस भ' जेतौ.. मुदा..

राजू : मुदा की?

गुंडा 2 : किछु लेब' लेल किछु देब' पडै छै ने यार!

राजु : हमरा लग अछिए की? ई बुढबा राखलए किछु हमरा लेल?

गुंडा 3 : नगीना रौ नगीना। एकदम पटाखा छौ तोहर घर मे आ कहै छै जे बुढऊ ककछु छोडबे नथि केलकौ अछ?

गुंडा 1 : एहेन मोट-ताज मुगी । कयो हमरो टेस्ट करा यार!

(अलजिज हंसी। लडकी सुकुचाक' भीतर चल जाइत अछ। गणपत खसयाया क' ओकरा दस बढैत अछ, मुदा बेटा बीचमे मे छेक लेइत छै।)

बेटा : हे हमर परम पूज्य पताजी! कत' जा रहल छी अहा? ई सभ के छथि, बूझलए अहा के? .. ई सभ हमर दोस्त छथि आ हमरा तंदूरी मुगा खुआब' ल' जा रहल छथि। (खयायाक') रौ बुढबा, ला, आकाल, जे छौ तोरा ल'ग। (जबदस्ती ओकर पाइ छीनैत छै। गणपत चकरैत अछ। ओकर चकराब सुन लडकी भीतर स' अबैत अछ आ बाप के बचाब' लेल बाप दस भगैत अछ। एक गुंडा ओकर गाल छुब लेइत अछ, दोसर ओकर हाथ खीचक' बाहर ल' जाइत अछ। ई देख गणपत पाइ छोड बेटी के बचाब' भागैत अछ। बेटा पाछा स' एक लात ओकरा जमबैत अछ। गणपत मुंहक भरे खसैत अछ। बेटा समेत सभ कयो हिइत आकल जाइत अछ। पाशव सि' लडकीक चकरब आ गुंडा सभक अटाहास आ अश्लील पलाप सुनाइ दैत छै। तेज संगीत.. बेजोक तेज धा हाित समाप्त होइत अछ। मंच पर घोर अंकार आ सनाटा!)

* * *

दृश्य : 3

(पकाश मंगतू पर। ओ अखबार पढ़ि रहल अछि। पढैत-पढैत पसेने पसेने भ' जाइत अछि। ओ मुंह पोछैत, एम्हर-ओम्हर देखै छै.. फेर अटकि-अटकि क' पढैत अछि..)

मंगतू : नवयुवती के साि बलात्.. चार युवक.. नशे मे.. भाई भी.. दो गिरफ्तार.. दो अभी भी फरार.. (पसेना पोछैत अछि। हकला क' घबडाहटि मे बजैत अछि) माने.. काकि.. कविता.. गणपत कका.. राजू.. (मािे पकड़ि लेइत अछि) बहीनक रखवार अपने स' ओकरा परोसि देलकै शादक सोझा.. (चिकरैत अछि) .. कका, गणपत कका..

(आवाज सुनि किछु छाि, किछु याि ओम्हर अबैत अछि सभ पूछैत अछि -- की भेलौ रौ? सपना देखै छही की? दिने मे सपना.. हँ, एकरा करैये के की छै? चौबीसो घंटा, आि पहर सूतल रहौ,.. हमरा आओर जका नहि छै ने.. खिखियाइत अछि ।)

(मंगतू काठि रहलए। कखनो अखबार स' माि पीटैत अछि, कखनो बेबसी मे अपन केस नोचैत अछि।)

मरियो नहि जाइ छी हम। एहेन देह, एहेन जिनगी, एहेन समाज.. मरि किये नहि जाइ छी हम। रे दैब.. आह रे दैब! कका यौ, गणपत कका..?

(भीड के काटैत गणपत बढ़िराइत अछि। मंगतू ओकरा देखतही भरि पाज ि' लेइत अछि आ कनैत अछि। कका पीि-माि सोहरबैत ओकरा भरोस दियबैत अछि।)

मंगतू : कका.. काकि.. काकि..

गणपत : की भेलौ बेटा?

मंगतू : कका.. कवता.. कावा..

गणपत : कत' घुरलौ बाऊ। दुनू मे स' कओ नथि। आँखिए मे राता कटलए।

मंगतू : कवता आब नथि आओत कका..

(गणपत पशवाची दृष्ट स' ओकरा देखैत अछ.. मंगतू अखबार ओकरा दिस बढा देइत छै। गणपत अनपढक मुदा मे अखबार उनटैत-पुनटैत अछ.. एकटा यात्री अखबार ल' क' पढैत अछ.. खबर सुनि गणपत हिराक' खसैत अछ.. मंगतू फेर भगि पास ओकरा ि' लइत अछ।)

गणपत : (कपत जका) रौ दैब रौ दैब.. मौगत द' दे रो दैब.. आब हम जीव क' की करब.. (मंगतू के झोर क') कहै छले ने तो जे हम सभ घर-दुआर, बाल-बच्चेदार, परिवारबला आदमी सभ छी। देख लेले ने? ईहे अछ घर आ ईहे अछ धिया-पुता। गै कवता गै.. हमर सोन सन बेटी गै.. रौ रजुआ.. रौ तोरा नरको मे िर नथि भेटतौ रौ..

(पुलसक सायरन बजै छै.. सभ यात्री ओत' स' हट क' बस स्टैड लग ाढ भ' जाइत अछ। कओ घडी देखैत अछ, कओ मोबाइल करैत अछ, कओ चोर नजर स' मंगतू-गणपत दिस देखैत अछ, कओ अखबार स' पंखा करैत अछ.. छाकि एक गोट टोली मे खुसर-फुसर करैत अछ।)

(पछला दृश्यबला पुलस अबैत अछ.. डंडा डोलबैत..)

पुलस :रौ, गणपत तोही छे?

गणपत : जी हुजूर।

पुलस :चल ाना..

गणपत : हमर कसूर हुजूर।

पुलिस :सार नौटंकी करैतन! बेटी स' िि आ बेटा स' भडुआगिरी, आ पूछै छे.. चल िना.. पता चलतौ जे की छौ तोहर कसूर..

(पकड़ि क' िलैत- िलैत ल' जाइत अछि।)

मंगतू : साब! साब, हिनका छोड़ि देल जाओ। ई निर्दोख छथि।

पुलिस :(मंगतू के लात लगबैत) त' तोही चल। रौ डाड मे छौ बूता छौडी सभ लेल! हट सार!

(मंगतू फेर बीच-बचावक पयास करैत अछि। पुलिस डंडा बरसाबइत ओकरा िखिस देइत अछि। मंगतू मुंहक भरे खसल रहि जाइत अछि। पुलिस गणपत काका के पकड़ि क' ल' जाइत अछि। यािी, जाइि मे किछु छाि सभ सेहो छथि, टुकुर-टुकुर तकैत रहैत छथि। पुलिस के गेलाक बाद)

यािी 1 : बाप रौ बाप! एहेन कलजुग! बापे बेटीबेचवा।

यािी 2 : अहूँ त'! जे पुलिसबाला कहि देलकै, पतिआया लेलहुँ ने!

यािी 3 : पुलिसक बात आ चूतिक पाद एक सन!

छाि 1 : एतेक घमिि क' रहल छी। जहन पुलिस बुढबा के पकड़ि क' ल' गेलै, एकरा (मंगतू दिस) एतेक मारलकै, तहन त' नहि फ़ूटल बकार॥ पुलिस के जाइते देरी िक सभक लोल एक-एक हाि नमगर भ' गेलै।

यािी 1 : रौ, पुलिसक सोझा बाजक कोनो मतलब छै।

छाि 2 : त' एखनि बाजबाक कोन अिि?

यािी 2 : हे रौ, बूझल जे हम सभ किछु नहि बाजल। तो सभ त' छले, युवा शक्ति, छाि शक्ति! तोहे सभ कियैक ने बाजले

रे!

यात्री 1 : (मंगतू थ्दस) हम सभ त' बाउ रौ, ध्मनगीक दोग मे फँसल बूँट छी। सेि साहूकार कैचीक मध्य फँसल कापश्ह। पुश्लस-दारोगा करबाक समय कत'?

छात्र 2 : जहन अपना पर आओत तहन?

यात्री 3 : तहन देखल जेतै।

छात्र 3 : माने अपना पर पडल मोसीबत पहाड, आ आनक फूश्म-फाश्म?

यात्री 1 : तै ने कहश्लयौ रौ भाय जे तो आओर त' छे छुटा बरश्द। ने घर ध्यरसिीक चकश्व ने नौकरी पातीक झंझश्ट, ने बाल-बच्चाक ध्यरसानी। ऊपर स' नेता बनबाक मोका फी-फंड मे। (बस देखैत.. हे हमर बस आश्ब गेल' कहैत चढबाक अश्भनय करैत अश्छ। चश्ल गेलाक बाद सोर पाश्बक' छात्र के कहैत अश्छ -) रौ, मोन राश्खहे हमर गप्प। की िकान, छात्र नेता स' मुख्य मंत्री आ फेर केंदीय मंत्री भ' जेबे। घरोवालीक श्वस्तार भ' जेतौ। हे ले (पाइ फेकैत अश्छ..) ऊ श्वखमंगाक दबाई करबा श्दहे।

(छात्र सभ तमतमाएल ठाढ रहैत छश्थ, अन्य यात्री सभी हंसैत अश्छ। श्कओ िहाका पाश्ब क', श्कओ मुंह तोश्यक! श्कओ मुश्मश्कयाइत पेपर पढबाक त' श्कओ समय देखबाक अश्भनय करैत अश्छ। सभक बस एकाएकी अबैत छै, सभ ओश्ह मे सवार भ' भ' चश्ल जाइत अश्छ। जाए स' पश्हले सभ श्कओ चवनी, अिनी, श्मका मंगतू थ्दस फेकैत अश्छ आ छात्र आओर के इलाज क तगेदा करैत अश्छ।)

छात्र 1 : ओह! रहब मोश्श्कल भ' रहल छै! मोन उजबुजाइय

ई सभ देखब क'।

छात्र 2 : सपना देखै छी, देखैत रहै छी। कहियो पुरखाओ सपना देखल त' आइ देश आजाद भेल। आजाद देश लेल सपना देखल जे सभके जीबाक, रहबाक, काज करबाक समान अधिकार अछि। कियो भूखल-पियासल, बेरोजगार नहि रहत। पढाई रोटीए जका अनिवार्य रहतै। मुदा भेटलै की? आजादीक एतेक बरखक बादो वएह भूख, गरीबी, बेरोजगारी..

छात्र 1 : भ्रष्टाचार, बेईमानी, सत्ताक अपराधीकरण। जिनगी जीबाक व्यवस्था..

मंगतू : (कने जोरगर आवाज मे, जाहि स' छात्र सभ सुन सकथि।) रौ हाकि-गोर रहितहु कियैक एना बाजि रहल छे।

(छात्रक ध्यान ओकरा दिस जाइत छै। ओ सभ ओकरा ल'ग अबैत अछि)

छात्र 1 : भाई, हाकि-गोर रहला स' समस्याक समाधान नहि भ' जाइ छै।

छात्र 2 : सभ लि पाई चाही, पैरवी चाही। देख भाई, लोक आओर हमरा सभ के कहै छथि जे हम सभ युवा शक्ति छी, देशक भविष्य छी।

छात्र 3 : रौ, वास्तविकता त' अछि जे हमरा आओर के अपने नहि बूझल अछि अपन भविष्य।

छात्र 1 : माय-बाप सपना कादै छथि जे बेटा सभ पढि-लिखि क' हमर दुख दूर करत।

छात्र 2 : हम सभ त' हुनकर दुखक भीजल चिपरी मे जिनगी लगाक' आबि जाई छी, रसे-रसे सुनगैइत रहू।

छाि 3 : करैत रहै छी - अपन अरमानक खून, माय-बापक सपनाक हत्या। रौ, तो त' खाली देहे स' अपाहिज छे। ई व्यवस्िाक हाि हम सभ त' तन-मन दुनू स' अपाहिज छी।

मंगतू : मुदा भाई, ई व्यवस्िा की छै। ककर छै, के बदलत?

छाि 1 : (रोब स') हे, नेता जुका बन। दू अच्छर अखबार पढ़िक' अपना के पििनर्माि नहि बूझ।

(पढ़लुका पिकार युवक-युवतीक पवेश)

युवक : अरे वाह, आई त' एकरा लग छाि सभ सेहो अछि। गुड। चलू, एकरो आओर के कवर क' लेइत छी।

युवती : हम त' आइ काल्हि रोजे देखै छी, ककओ न ककओ एकरा लग बनले रहैत छै।

युवक : ई छैहे तेहेन कमालक चीज। हाि नहि, पएर नहि, घर-परिवार नहि, शिक्षा-संस्कार नहि । तइयो पढ़ुआ छै, अखबार पढै छै। चिट्ठी-पिी लिखै-पढै छै।

(दुनू सहित क' ओकरा आओरक गप्प सुनैत छथि। छाि सभ मंगतू लग स' हटि क' बस स्टॉप दिस बढैत छथि।)

छाि 1 : कह' लेल जे कही। भने ओकरा झलकाबि दही। हमर गप्प मे सेहो तो सभ दशिि ताक' लाग। मुदा, कखनो लगैत अछि जे एकरे जका हम आओर सेहो भेल जाइ छी। लोक आओर भेल जाइत अछि, देश-दुनिया बनल जाइत अछि।

छाि 2 : रौ बाप, हे, पढ़िनही परीक्षा खराब भ' गेल अछि। आब ई दशिि-तरसन छाड़ि क' माि नहि खराब कर।

छाि 1 : सुन त'! एकरा देखिक' तोरा नहि बुझाइ छौ जे एकर देह-देह नहि, ई समाज आ ओकर व्यवस्िा छै। ई समाज,

ई व्यवसाािक माि छै, माि मे श्वमागो छै, जे सोचैत त' छै, मुदा श्कुछ करै नश्वि छै। करबाक लेल सश्कयताक हाि-गोर चाही, जे एकरे जका ओकरो नश्वि छै। तै एकरे जका पडल रहै छै - लोि भेल।

छाि 3 : (छाि 2 आ 3 माि िकैत छश्वि।)

गेलौ रौ गेलौ। पूरमपूर गलौ। आब ई हमरा आओर के त' पकेबे करतौ, तोरो आओर के नश्वि छोडतौ। (युवक-युवती के देख) नीक भेल। आश्व गेलहुँ। सुनू आब अरस्तूक गप्प। (दुनू तेजी स' श्वाकश्व जाइत अश्छ। छाि 1 ओही ि अश्छ।)

युवक : देखू! पिकार छी हम आओर आ पिकार जका बश्वायाइत छश्वि ई आओर।

युवती : हमरा आओर त' छाि सभक संगे ओकरा कवर कर' चाहै छलहुँ।

युवक : से त' रश्वए गेल।

युवती : ई एकटा अश्छ ने! एकरे कवर क' लेइत छी।

युवक : (श्वाश्छक') त' श्वाकालू साडी आ क' श्वाय' कवर।

युवती : शटअप! फालतू गप्प नश्वि करी। हमर संग साि नश्वि नीक लगैत अश्छ त' अहा जा सकै छी। हम अपन काज क' लेब।

युवक : ककरा संगे? ऊ लोिकि संगे की ई देशक भश्वष्यक संगे।

युवती : (श्वाकरैत) बंद कर ई बकवास। अहा जनश्वािस्ट छी। बूझै छी जनश्वािस्टक माने? (ओही उतेजना मे) जनश्वािस्ट माने उनत श्वचारक स्वामी, खुलल श्वल आ श्वमागवाला व्यश्वक्त, जनताक श्वचार वहन कर' बला, व्यवसाािक छेद मे आंगुर द' क' देखाब'

बाला। मुदा अहा त' ईष्या आ देष स' जरैत सिं ी छी मा ि। दुर्गं ि स' भरल तौला। दुश्मायाक चौि ा आवाजक नाम पर भडुआश्यारी कर' बला। श्छ:।

(युवक नाराज भ' क' यवती श्वस घूरैत अश्छ। युवतीक श्यकरब सुश्म बाहर गेल दुनू छा ि घूश्व अबैत अश्छ। छात्र 1 पश्चनही स' अकबकाएल बेरी-बेरी स' दुनू युवक-युवती के देखैत अश्छ। युवक-युवतीक हा ि घीश्य क' मंच क दश्चना भाग मे ल' जाइत अश्छ। छा ि सभ मंचक बाम श्वस छश्च आ मंगतू बीच मे। मंच पर अत्यन्त मदम पकाश। अचानक युवक-युवती पर हा ि उ बैत छै। सभ चौश्क उ ि त अश्छ। युवती खसल अश्छ। मंगतू हडबडाक' ओम्हर बढबाक पयास करैत अश्छ, मुदा खश्म पडैत अश्छ। छा ि सभ युवकक चेहरा देश्व ओश्च ि ि किमकाएल रश्च जाइत छश्च। पाश्चा सि' समवेत स्पर मे ईको साउन्ड इफेक्ट मे ई पंश्क्त चलैत अश्छ।)

श्कओ श्कछु नश्च क' सकैत अश्छ।
श्कओ श्कछु नश्च कश्च सकैत अश्छ।
श्वकाएल बजार मे मानवताक मूल्य
बं कि अश्छ मा ि
हा ि गोर भागल, ि ड श्वाश्च ल
जागू, जागू, तखने होएत श्वहान
नव सूरज रचत इश्वहासक नव काल खंड।

(पकाश शनै: शनै: फेडआउट होइत अश्छ।)

(मध्यातर)

अंक : 2

दृश्य : 1

(बाजारक दृश्य। फेरीबाला र माल, झलकुली, सेब, नारंगी, खेलौना सभ बेचबाक आवाज नेपथ्य स' - 'ऐ बच्चा के खेलौना, साढे बीस र पैया, दौग-दौग क' ले, जाऊ, दीदी, काकी, भैया,' खत्म गेल खत्म गेल, पेटक दाम खत्म गेल', हरेक माल 30 र पैया, 30 र पैया, 30 र पैया' आदि।)

(पकाश शनै-शनै: मंगतू पर केन्द्रित होइत अछि।)

मंगतू : ओह, ई हल्ला-गुल्ला! ई भीड, ई किा-िकी!.. नीक लागै छै। जिनगी चलैत रहल छै अई सभ मे.. ई जगह.. बरगदक नाचैत.. हमरा सन-सन कतेक लोकक आसरा.. कखनो, कखनो त' हम सडक पर नजरि जमा देइत छी.. ओह खाली पएरे-पैर.. दौगैत-भगैत गोरे-गोर.. कनेक ओकरा स' ऊपर त' दाया-बाम डोलैत हाि.. कनेक ओकरा स' ऊपर त' माि-माि.. कारी-कारी केस, र्ीक माि, पुरषक माि.. सभक लक्ष्य अपना-अपना गंतव्य धरि पहुँचबाक, रुकि जाइ छी त' हमी - लोि, नागरि., लूलि.. अही के अही ि.. लोक आओर कहैत रहैत अछि जे हम बडड भगमंता छी.. बइसल-बइसल पाइ भेटि जाइत अछि.. कोना क' हम बुझाबी जे हमरा भीख नहि, काज चाही काज। .. (शून्य मे ताकि क') रौ, हम भगमंता छी त' तोहो सभ काकयैक ने बनि जाइ छे हमरे जका भगमंता.. (व्यंग्यात्मक जका हंसैत अछि) .. अरे, सभ हमरे जका बनि जाएत, त' फेर कमाएत के.. हमरा आओर पर भीखक

नजरि आ चवनी, अनिी फेकत के? .. हं, बूझल। ई सभ चलैत रहौक, तकरा लेल साबुत लोकक भेनाई जररी छै.. आ ओ सभ पुण्य कमाबैथि, तकरा लेल हमरा आओरक रहनाई सेहो ..

(मंगतू जहन ई बाजि रहलए, दू-तीन टा छौंजडा ओम्हर अबैत अछि। सभक नजरि मंगतू लग छिड़ियाएल पाई पर छै। सभक के आँखि मे लालच छै।)

छौंजडा 1 : की राजा! की भेलौ रौ? सूखल गरी जका मुंह किएै बनेने छे? अरे हाय, हाय, तोरा देखि क' हमरा त' किछु किछु होबैत अछि (गबैत अछि) 'क्या करँ हाय, कुछ-कुछ होता है।'

मंगतू : (अपनही िन मे) धिया-पुता सभ स्कूल-बैग ल' क' स्कूल जाइत अछि.. कतेक नीक लगै छै.. हम नान्हि टा स' जवान भ' गेलहुँ, मुदा स्कूलक मुंह..

छौंजरा 2 : त' की भेलौ रौ राजा। अपना ओहिठा बहुत रास लोक स्कूलक मुंह देखने बेगर मरि जाइत अछि। हमरे आओर के देख। मुदा फिकिर नई। हमरा आओर खुशो छी आ हे देख, तोरा लेल गीतो गाबि रहल छी।.. (गबैत अछि)

''सैया दिल मे आना रे, आके फिर ना जाना रे,
हो आके फिर ना जाना रे, छम-छमा-छम-छम!''
(अविा कोनो आिथक गीत)

मंगतू : हमहू कहियो ई चाकर-चाकन रोड पर चलि सकब! बस-रेन मे चढि सकब। अपना कमाई स' बसक टिकट कीनि सकब!

.. भ' सकै छै.. कोनो मददगार आश्व क'.. मुदा, की भेटत कोनो एहेन।

श्वजडा 3 :   चल रौ, हम बश्म जाइ श्छयौ तोहर खुदाई श्वदमतगार। चल, चल, हम सभ तोरा ल' क' सनीमा जेबौ, चाट-पकौडी खुएबौ (गबैत अश्छ)

''चौपाटी जाएंगा, भेलपुरी खाएगा, पीछा न छोडेगा हम,

गाना बजाना, खाना-पीना, गाडी मे होगा सनम।''

(सभ श्वश्नक' मंगतू के झोरैत अश्छ। मंगतूक ियान टूटैत छै।)

श्व. 1 :की रौ हीरो। एना अश्वषेक बच्चन जका मुंह श्कयैक लटकौने छे?

श्व. 2 :रौ, तो कोनो भीख िडबे मागै छे। तोरा देश्वतही मातर लोक आओरक' हाि अपने आपे अपन पॉश्कट श्वस बश्व जाइ छै।

श्व. 3 :हमरा आओर स' नीके छे रे। देख, तोहर हाि-गोर नश्चि छौ, तइयो तो आदमी कहबैत छे - आदमी, मरद। हमरा आओर के अश्छ ई चार हाि-गोर! तइयो एक गोट पश्वचान नश्चि अश्छ। तै (ताली बजबैत अश्छ) कहबैत छी।

श्व. 1 :श्वगनले-श्वगनले, रोडे-रोडे भीख मंगैत श्करै छी। हमरा आओर के देश्वतही बाबू-मेम सभ सीसा चढा लेइत छश्चि गाडीक।

मंगतू : मुदा हमरा भीख नश्चि चाही। हमरा काज चाही।

श्व. 2 :(हंसैत) से तोरा भेटतौ नश्चि! कह, त' स्टाम पेपर पर श्वश्व क' द' श्वयौ। (गबैत अश्छ) 'कोरे कागज पे मुझसे करा ले सही।' 'अरे हमर श्वकन-चुनमुन राजा, हमर छैला, ई सनी देओल जका डकरै स' तोरा काज भेट जेतौ। भेटल हमरा आओर के ?

तोहर त' हाि-गोर नधि छौ, हम्मर त' अछ्छ। मुदा दोकानदार बाजल - रौ बाप रौ बाप! हे पाश्म मे आश्म लगाब' लेल हमही भेटश्मयौ रौ? तोरा देश्ख क' त' गँहकी पराइए जेतौ। फेर श्बकी-बटाक की हएत।

श्व. 1 :हम ऑश्फस-ऑश्फस केहुश्वया काटल। सभक एके टेर-पढल-श्मखल छे? श्कगी छौ?

श्व. 2 :सोचल, अपने कोना िि-पानी आरंभ करी त' -पूँजीए नधि (करण हंसी) घर मे मुगी नधि, कीने चलल मसल्ला।

श्व. 1 :एखश्म नीक भ' गेल अछ्छ। रश्ब क रश्ब सभ दोकान पर रेट श्फक्स अछ्छ- एक रपैया फी दोकान। (हंसैत अछ्छ) फ़ी रपैया, फ़ी दोकान, फ़ी छका । रौ, तोरा त' अिनी, रपैया दू रपैया डेली भेटै हेतौक। हमरा आओर के त' एक रपैया फी हफ्ता, फी छका। देख, सभ श्कछु अछ्छ-हाि गोर, नाक-आँख, मूडी, श्वमाग।

श्व. 2 :मुदा सभ श्कछु रश्वतहु श्कछु नधि छी हम सभ.. ने मनुक्ख, ने कुकुर।

श्व. 1 :बस एक रपैया फी हफ्ता, फी छका (गबैत नचैत अछ्छ। शेष दुनू ओकरा संगश्म देइत अछ्छ) एक रपैया मे.. एक रपैया मे, पूडी खाऊं, श्मलेबी खाऊं, नरेटी फाश्क क' तान लगाऊ.. एक रपैया मे।

(नचैत गबैत ओ सभ मंगतूक माि, बाल, मुंह छुबैत अछ्छ, चूमैत अछ्छ, नाच' लेल उिबैत अछ्छ। मंगतू सेहो पयास करैत अछ्छ। पाश्वि स' नृत्य पिन संगीत तेज होइत अछ्छ.. नाचबाक पयास करैत-करैत मंगतू खश्म पडैत अछ्छ। सास सामान्य भेला

पर।)

मंगतू : हँ रौ, सही कहै छे तो सभ। अई ि त' लोक-आओर अनिी - टाका, मे पुण्य कीनैत छथि त' अपना आओर के काज द' क' थ्कओ अपन पाच सौ, सात सौक खारा थ्कयैक करत? लोक आओर त' इएह बूझैत छथि ने जे लोि, लूथ्ज-नागथ्ह. कोन काजक? तोरा आओर स्त्री-पुरुष नथि भेले त' समाज मे तोहर थ्मनतीयो नथि! अरे थ्कओ पूछल हमरा आओर स' जे हम सभ.. हम सभ की सभ क' सकै छी। अरे, थ्कओ करबा के त' देखौ जे हम सभ की नथि क' सकै छी!

थ्ज. 2 :(हंसैत आ िपिडी पीटैत) की सभ क' सकै छे रे? साला, दगेबाज, हमरा संगे पेम बना सकै छे! रौ सार.. (थ्मढबैत अथ्छ। मंगतू पथ्झने थ्वथ्मयाइत अथ्छ, फेर हंथ्म पडैत अथ्छ।)

मंगतू : बनेबौ रौ, बनेबौ, मुदा पथ्झने अखबार त' पढ' दे। थ्मन्सर स' नथि भेटल। नथि त' रामआसरे भाइ आ नथ्झए थ्कसुनदेवे भाइ आइ अखबार देलैथ्ह.. चली, अपनही स' ल' आनी। भ' सकै छथि, जे बेसी काज हुअए हुनका आओर के..

(मंगतू अखबारक औथ्फसक पवेश दार िथ्र अपना के ल' जाइत अथ्छ। दार पर थ्कसुनदेव आ रामआसरे अथ्ज सावािनक मुदा मेि ढ छथि।)

थ्कसुन. : आई सीएमडी साहेब आब' बला छथि।

राम. : हँ, तै देखहक ने, सभथ्कछु कतेक चकाचक छै.. थ्कट-फाट.. फस्ट थ्कलास।

थ्कसुन. : आई त' सभ स्टाफ सेहो आएल अथ्छ। कोनो गैरहाथ्जर नथि ।

राम. : सुनल जे आइ सीएमडी साहेब सभ’ स’ भेट करताह। मीथ्टंग करताह।

थ्कसुन . : तहन त’ अपनो सभ स’ भेट करताह!

राम. : भ’ सकैत अछ्छ।

थ्कसुन : एहेन हेतै त’ हम पलखथ्त थ्त्काथ्त क’ हुनका पएर छुथ्ब कहबै, जे साहब.. हमरा कनथ्करबा के कोनो नोकरी..

राम. : सपना जुथ्त्त देख.. ई एतेक बडका लोक सभ.. अजी दइयो देबही त’ अई हाि मे लेि्न्ह आ ओथ्स हाि स’..

(अही बीच युवक आ युवती पिकार अबैत छथ्ि। दरबानक मुंह पर पथ्स्चानक मुस्की अबैत छै। दुनू ओथ्स दुनू के नमस्कार करैत छथ्ि।)

युवक : (भीतर जाइत) रामआसरे! की बात? वदी एकदम कलफदार। मूँछो-एकदम कडक। मूछो के कलफ लगा देलही की?

राम. : (लजाइत) ऊ साहेब, आइ.. ऊ.. सीएमडी साहेब..

युवक : ओ हो.. तोरा संगे हुनकर मीथ्टंग छौ की? बथ्ढया, बहुत बथ्ढया (दशकि थ्दस) देख रहल छी ने पशासन के। ओ तखने चुस्त-दुरस्त नजथ्र अबैत अछ्छ, जहन ओकर माय-बाप सभ अबैत अछ्छ.. वरना.. (रामआसरेक एक थ्दसक मोछ के नीचा क’ देइत अछ्छ आ भीतर चथ्ल्त जाइत अछ्छ। ओकरा गेलाक बाद रामआसरे अपन मोछ पूविित करैत अछ्छ।)

(मंगतू ताबैत दार थ्ब पहुँथ्च जाइत अछ्छ। दुनू दरबान के देथ्ख क’ मुस्काइत अछ्छ। मुदा दुनू ओकरा थ्दस ध्यान नथ्ि द’ क’ मुस्तैदी स’ अपन डयूटी क’ रहल अछ्छ। मंगतू अपन एकलौता हाि स’ सलाम िकैत अछ्छ।)

मंगतू : रामआसरे भाई? थकसुनदेव भाई? आई त' बडड जोरदार लथा रहल छी दुनू।

(दुनू कोनो जवाब नथि देइत छथि)

मंगतू : बेरहथया भ' गेलै.. अखबार नथि भेटल.. मोन बेचैन भेल अछि.. आ रामआसरे भाई.. कथयो हमरो ई ओफिस भीतर स' घुमा थय' ने। सुनै छी, बडड मोडन ओफिस छै.. कम्पूटर, त' की त' की सभ छै। अच्छा, अही सभक पुन परताप से पढब सीख गेलहुँ त' अहीक थकरपे कोनो थन ओफीसो..

(तखने गेट पर हलचल होइत अछि। 'साब आ गए'। 'हटो, हटो, रास्ता छोडो' आथ स्वर उभरैत अछि। थाक्यूथटी अटेशनक मुदा मे आथ जाइत अछि। रामआसरे आ थकसुनदेव दुनू मंगतू के देखैत छथि, फेर पलखथाये मे दुनू मे जेना कोनो करार होइत अछि आ दोसरे पल मे दुनू मंगतू के घीथ क' गेट स' दूर ल' जाक' पटथक देत छथि आ झब स' अपना स ान पर आथ क' ि ढ भ' जाइत छथि। एक गोट सूटेड-बूटेड साहेब कएक टा अधिकारी सभस' घेराएल अबैत छथि आ भीतर चथ जाइत छथि। दुनू हुनका खूब चुस्त, मुदा नमगर सलाम ि कैत छथि। सीएमडी आ बाकी लोकके भीतर गेलाक बाद।)

राम. : यार थकसुनदेव! ई नीक नथि भेलै।

थकसु. : त' कइए की सकैत छलहुँ? सीएमडी साहेब आब' बला छलाह। ऐहेन थस थत मे हम सभ एकटा लोि.. नागथक थाखमंगा स' गथयाइत रथतहुँ त'.. अपन नोकरी त' सोझे..

राम : तइयो.. आराम स' ल' जा सकै छथये.. एना बोरा जका पटथक देथयै.. की जान' चोटो-तोटो लागल हेतै..

थकसुन : चल, चल देखब लेइत छयै..

राम. : नराज हेतैक ओ..

थकसुन : अरे अखबार ल' क' चलै छी। ओकर नराजगी दूर भ' जेतै.. अखबार त' ओकरा लेल चरसो-गाजा स' बढ़क छै..

राम : पढ़यो कतेक जल्दी लइत छै। पढै की छै, घोखब जाइ छै, (गवसि') हमही त' सखेलयै ओकरा, अखना एक दन आएल छल आ बाजल छल.. हमरो अखबार पढाएब सीखा दय' ने भाई जी। हम मजाक केलयै -'की रौ, पढ़ क' की बनबे? लाक मंत्री? ओ बाजल, मंत्री बन' लेल पढब जररी ि‍डबे छै।

राम. : मंगतूक ई पश हमरा छुब गेल। बडका-बडका लोक सभक धीया-पुता के पढब नीक नथ लागे छै.. माय-बाप ओकर पढाईक पाछा पागल बनल रहैत अछ आ धीया-पुता सभ हुनकर मंह पर पो-पो पदैत रहैत छथि.. आ ई एकटा लोि‍.. भखमंगा.. हम तय केलहुँ जे एकरा ओतेक त' पढाइए देबै जे ई पेपर - तेपर पढ़ सकय.. ई अ, ज आकारा जा.. ह उूकार झ.. आ आखर-आखर करैत ओ पढब सीखब गेलै। आ आब त' ओ जतेक तेजी स' पढैत अछ थक ओतेक तेजी से पढुओ सभ नथि पढ़ सकत।

थकसुन : झन्दी छै ने! तै जीभ के लकबा मार जाइ छै.. एना-एना मुंह बनाओत थक लागत जे कोनो लाटक नाती आब गेल अछ बलायत से।

राम : कंपूटरो स' तेज ओकर दमाग छै.. सभ थकछु जेना जीहे पर राखल रहैत छै.. जेना कंपूटरक, की कहै छै... ऊ, मेमोरी मे..

थकसुन : अरे रामआसरे भाइ, ई मोरी तो सुने ि‍.. नाली। ई मेमोरी की छै? मोरीक बहीन की?

राम : ननद्ध छै। रौ मेमोरी नथि बूझै छे.. कंपूटरक श्वमाग। मुदा मंगतूआक श्वमाग त' कंपूटरोक श्वमाग स' बेसी तेज छै। एकदम फास्ट.. रौ, कंपूटर मे त' देख' लेल ओकरा पश्चने फोलू, फ़ेर फाइल त' की दश्वा, कहा दश्वा फोलू.. तहनो सेभ माने श्वमाग बचा क' राखने छी त' भेटत, नथि त'.. हवा.. ले सार.. गेल सभ.. आ जद्ध कोनो बेरामी घुश्च गेल, तहन त' पूरे गुडडी बकटा..

श्वकसुन : अरे, िक इएह गप्प हमर साहेब कहै छथि। आ सएह सच्छात श्वराजमान छै मंगतुआक खोपडी मे। ऊँहूँ, गलश्वा बाश्व गेलहुँ, ओकर मेमोरी त' ई कंपूटरोक मेमोरी स' फास्ट चलै छै। चालू श्वक बन्द करबाक झंझश्वट स' फी। कोनो घटनाक श्वदन, समय, साल, कारण पूछू, तत्काल हाश्वजर। पोलश्वटस पर पूछू श्वक सनीमा पर श्वक टीवी पर की मौगी सभक नवरंगा डरेस पर की िर पाश्वकस पर। सभ कंिस, हनुमान चलीसा जका। भूत-श्वपचास श्वाकट नश्चं आबै..

राम : अरे, शुर-शुर मे लोक आओर बडड हैरान होइत छलै ओकरा अखबार पढैत देश्वख क'। श्वकओ-श्वकओ त' मुंहो श्वबचकबैत छल जे एह, भेल श्वाखमंगा आ शान पिनर्मंी के।

श्वकसुन : ओकरा आओर के बुझले नथि छै ने जे मंी सभ अखबार नथि पढै छथि.. पढताह कोना.. फुसश्वाये कत' छै.. जन-सेवा स' (जनसेवा पर स्वार मे व्यंगात्मक जो।)

(तखने पाश्वन िस' तेज गश्वा स' चलबाक ध्वश्वा अबैत छै। दुनू पुन: अटेशनक मुदा मे आश्व जाइत छथि। सीएमडी श्वाकलैत छथि। दुनू खूब नमगर सलाम हुनका िकैत छथि। हुनका जाइते

देर धरि सभ धरिओ फक स' सास छोडैत छथि आ फेर सभ-किछु ढील-ढाल भ' जाइत छै। रामआसरे आ किसुनदेव अपन वदीक कलफ ढीला करैत छथि, मोछो नीचा करै छथि।)

राम : देखलही। साहेब के जाइते सावानिक कलफ मे लागल ई पूराक पूरा.. की कहै छै .. मैनेजमेट गुप.. सभ एकदम स' ढील-ढाल भ' क' लटकि गेलौ। एना (हाथ-गोर मूडी ढीला क' क' देखबैत अछि।)

किसुन : चल आब मंगतुआ लग। द' आबी अखबार। (दुनू मंगतू लग पहुँचैत छथि। ओकरा अखबार देइत छै। मंगतूक चेहरा पर दुख, अपमान, नाराजगीक भाव छै। ओ अखबार लेब' लेल उत्सुक नहि देखाई पडैत अछि।)

किसुन : रौ लाट साहेबक नाती। मंगबे भीख आ शान रखबे राजा-महाराजा के। (कनेक नरम भ' क') रौ, हम सभ त' अदना मोलाजिम छी। हुकुम नहि बजाएब त' नोकरी स' छुटी। देखलही ने आइ तो जे बडका-बडका हाकिम सभ सेहो कोना कुकुरक नागरि जका .. ले, राखि ले, काल्हि स' जल्दी आबि देबौ।

(मंगतू ओकरा आओर दिस बेगर देखि क' अखबार ल' लैत अछि।)

किसुन : की जानि एहेन कोन हीरा-मोती जडल रहै छै अई मे जाहि लेल ई एतेक परीसान करैत अछि। वएह त' खबरि होइत छै - हत्या, अपहरण, बलात्कार। लागै छै जे पूरा देस अई सभ' मे हाथ रोथि क' बइस गेल अछि।

मंगतू : (अखबार मे डूबि गेल अछि।) ओहि दिन हम अखबार मे

थानती कएल.. 380 लोकक मरबाक समाचार। क्कओ अपन मौगत नथि मरलै.. क्कओ गोली स' त' क्कओ बस पलटी स, क्कओ बम स', क्कओ अपनही बेटा-पुतौहु दारा.. एखने त' खबश्च छलै - बम फ़ुटबाक। खूब असमान चश्च रहल छै मौगतक ई ि ि। एखने त' लोक आओर श्चाकलल छलाह, घर स', बजार स', काज स', हंसैत-खेलैत, सौसे देहे आ एखने हाि-गोर साफ.. भश्च श्चानगी लेल लोि.. तहन एक श्चन की ई पूरा दुश्चाये लोि भ' जेतै? (िहुन मे मुंह नुका लइत अश्च, दशकि मे स' एक गोट बाजैत अश्च। मंगतू चेहाक मूडी ऊपर उबैत अश्च।)

दशकि 1 : साच कहल रौ भाई, साच! ई देख (केहुनी िश्च कटल हाि देखबैत अश्च) रौ, बम, दंगा, झगडा-फसाद - मरैये के? कोनो नेता? हुनकर बेटा-जमाय, नाती-पोता? ऊँहूँ - िश्च सन हम, तो, ई, ओ..। ओ सभ पैघ.. मातबर लोग.. पैघ लोक, पैघ थानती.. पैघ थानती मे छोट-छीन संख्याक मोजर नथि .. ।

दशकि 2 : (मश्चला अश्च) देखू हमर ई मुंह (झरकल मुंह) जश्चया स' एना भेलए, ऐना देखब छोश्च देलहुंए.. सुनैत छलहुं जे लोक पेम मे त्याग करैत छथि। आई पेमो जबदस्तीक चीज बश्चा गेलैय'! हमरा अहा स' पेम भ' गेलए तै अहा के हमरा स' पेम करैये पडत.. दोसर रस्ताक कोनो गुंजाइसे नथि.. वरना तैयार रहू.. पश्चणाम लेल.. आह.. हम श्चाकार भ' गेलहुँ एहेन पेमक। (श्चकरैत) रौ, श्चगाड' त' आबै छौ, बनाब' आबै छौ? कोन हके तो एना केले हमरा संगे.. (कनैत) आब ऊपरबला स' मौगत मागै छी त' सेहो नथि भेटैय'.. श्चन-राश्च ओढनी स' मुंह तोपैत चलैत रहू, अपना स' बेसी दोसर लोकक खेयाल कर जे हुनका हमर ई मुंह

नथि देखाइ पडय.. (ओतश्च हिुन भरे बैश्म जाइत अछ्छ।)

मंगतू : कहबी छै जे सात जनमक बाद मनुक्ख जनम भेटै छै। आ सएह मनुक्खक ई अवसि? (श्यश्कप्त जका श्यकरैत अछ्छ) रौ, रौ सवशिश्कत्मान कहाब'बला भगमान! कत' छे तो? मनुक्ख बनेबाक बदले राक्स श्कयैक बना रहल छे? एतेक फ़ुटानी श्कयैक रौ? आ सोझा मे, देश्खयौ तोहर श्लमाश्ता.. रौ, बौक-बहीर छे की.. देखबही ई रिती के, श्कछु करबही एकरा लेल श्क कान मे तेल ि' क' सुतल रहबे?.. रौ, श्कछु क' सकै छे त' कर.. नथां त' हमरो माश्व दे आ तोहो कतहु डूश्व-िश्म जो.. नथि जीबाक अछ्छ.. मौगत.. द' दे.. भगवान, मौगत.. नथि जीब' चाहै छी राक्स स' भरल अई दुश्नया मे.. (भोकासी पाश्व क' कनैत अछ्छ।)

(जाश्च समय मे मंगतूक पलाप चलैत अछ्छ, ओश्च समय ओम्हर स' पास होब बला लोक आओर ओकरा श्वस देखैत चश्न जाइत रहैत अछ्छ। ककरो नजश्व मे ओकरा लेल कोनो सहानुभूश्ता नथि । ध्वश्न सभ ऊभरैत अछ्छ.. 'की भेलै रौ एकरा?', 'अरे, श्कछु नथि, पागल छै सार!','चोटा, भगवान के गश्वयबैत छै, पश्छलो जनम मे गश्वयैने हेतै, तै' अई जनम से सेहो..', 'रौ, बइसल बश्नया की करय, ई कोिक िन ऊ कोि करय', 'काज ने िि, मौज-मस्ती िढा.. ', 'हमरा आओर जका रेन बस रेन कश्वश्नयइ, नौ स' पाच मे श्जनगी स्वाहा कर' पडश्नयैत त' बुश्झश्नयइ.. गै चल, तोहो कोन पगलेटक चकर मे फँश्म गेलै.. ', 'नथि रौ ई पगलेट नथि छै.. वाश्जब गप्प कहै छै.. भीख मागब एकरा नीक नथि लागै छै.. मुदा.. मजबूरी छै.. के काज देतै एकरा..' आश्द - आश्द । ..सभ पाि एम्हर ओम्हर स' श्नकश्न क' मंगतूक पाछा िढ भ'

जाइत अछि आ समवेत स्वर मे कहैत अछि..)

'हम सभ.. माि पुतली भरि
श्वायंताक अपन-अपन
इच्छाक / कामनाक दीप लेसने हम
सख्त अछि ताकीद
देखू माि, बजाऊ कोशिश
गबैत रहू राग-दरबारी..
हे पभो, अनदाता
बस कृपा करी एतबे जे
बनल रही हम सभ
पुतरी भरि..
डोरी अदृश्यक हाि मे।

(पकाश मंगतू पर केन्द्रित होबैत शनै: शनै: फेड आउट)

दृश्य : 2

(मंगतूक सिान - भोरक बेला - मोटर गाडी स' एक गोट सेि उतरैत अछि - गाडीक दरवाजा फोलब, बंद करबाक, जेब स' टाका निकालबाक अभिनय.. टाका निकालबाक' ओ मंगतू दिस-बढैत अछि..)

आदमी :उि, उि, ऐ भाई.. भोर भ' गेलै।

(मंगतू ओकरा दिस पशाकुल नजरि स' देखैत अछि। बाजैत किछु नहि अछि..)

ई ले - एकावन टाका। राखि ले।

मंगतू : एकावन टाका? मुदा कथीयैक?

आदमी :आई हमर बाउजीक बरखी अछि। ब्राह्मण आ विद्वान सभ भोजन करैबाक फुर्सति अछि नहि तै, आई पाँच लोक के दान क' देइत छियै।

मंगतू : साब, हमर एक गोट विनती अछि.. साब, ई पाई अहा राखि लिय'.. आ एकरा बदला मे हमरा कोनो काज द' दिय.. पढ़ायाउ साहब जी, हम काज क' सकै छी.. ई हमर हाथ देखियौ.. गोर देखू.. (विचित्र तरीका स' हाथ-गोर चलबैत अछि) साहेब जी.. हमरा अई नरक स' निकालू साहेब जी.. हमरा काज दिय'.. केहनो.. पैघ-छोट.. अहा के शिकायतक मोका नहि देब साहेब जी। (ओकर पएर-पकडबाक अभिनय करैत अछि। आदमी घबडाक' पराएत अछि। गाडी मे बैसबाक, स्टार्ट करबाक अभिनयक संग खौझाएल स्वर मे..)

आदमी :हुंह! काज चाही । देह न दशा, मुगी फ्यारे फँसा। नीक-नीक लोक के त' काज भेटै नहि छै.. सभ ठाँ त' भती पर रोक लागल छै.. चुनावक समय मे अखबार मे नौकरीक विज्ञापन भरि.. तकरा बाद फुस्स! सरकारक आमदनी आए छै। ई विज्ञापन स'.. डीडी, पे-ऑर्डर.. एकरा देखियौ.. काज क' लेब.. कोनो काज.. जहन कोनो काज कइए लेबे त' माग भीख! ईहो त' काजे छै आ बडड मेहनति आ हिम्मति बला काज छै।

(गाडी चलेबाक अभिनय संगे मंच स' बाहर। बाहर जाइत काले मंगतू पर नजरि..)

मंगतू : चलि गेलाह। सब चलि जाइत अछि। भीखक एक गोट अठन्नी, रुपैया फेकि क'.. बस! साथि रहि गेल जे कथीओ हमरो

सहारा ध्वश्चायैक - अपना पैर पर ाढि हेबा मे.. लोक आओर पश्चायाइ श्वकये नश्चि छश्चि जे हम ाढि भ' सकै छी.. श्वाख-पश्च सकै छी.. ई देखू (हाि स' जमीन पर श्वकछु श्वाखबाक पयास करैत अश्च) .. आ.. आ.. ई श्वकसुनदेव आ रामआसरे भाई त' कहैत छश्चि जे हमर ध्वमागो बडड तेज अश्च (कनेक मुस्काइत अश्च।) तै त' हुनकर बडका साहेब हमरा लग आएल छलाह.. बाप रौ, की सूट-बूट, की शान.. (मंगतू पर स' फेड आउट)

(फ्लैश बैक आरंभ)

(एक अिड, रोबदाब बला व्यश्क्त.. नाम ताबे.. मंच पर बेचैनी स' एम्हर-ओम्हर बूश्च रहल छश्चि। रामआसरेक पवेश)

राम. : साहेब जी?

ताबे : (अनसोहात स्वर मे) yes?

राम. : साहेब जी श्वकछु ध्वरीशानी मे बूझा रहल छश्चि।

ताबे : परेसान नश्चि होइ त' की राग मलार गाबी? सभटा डाटा कलेक्ट कएल छल। पता नश्चि कोना हाडश्चिस्क सेहे उश्च गेल।

राम. : साहेब जी, कम्पलेन नश्चि श्वाखाओल की?

ताबे : एंरी त' क' देलहुँ। मगर तकरा स' की? इंजीश्चयर त' काश्चि ए आओत। आ मैटर हश्च हालश्चा मे आइए देबाक अश्च। तै त' लेट बइसल छी.. मुदा.. (माि पकश्च लेइत अश्च।)

राम. : साहेब जी.. छोट मुंह पैघ गप्प.. अनसोहात सन सेहो.. मुदा नीचा.. छै ने.. ओ लोि.. मंगतू.. भ' सकैय' ओ बता ध्वयए..

ताबे : (एक नजश्च ओकरा देश्चि ाि क' पेट पकश्च क' ाििएत अश्च।) ऊ लोि श्वाखमंगा, ऊ हमरा डाटा बताओत? रौ, तोहर ध्वमाग दुरुस्त त' छौ ने! जे डाटा कलेक्ट कर' मे हमरा एतेक

समय लागल, एतेक - एतेक किताब कंसल्ट कर' पडल, ओ ओहिना अनपढ, लोफि, भिखमंगा..

राम. : साहेब जी, कम्प्यूटर त' अहा के अछिना.. इंजीनियर काल्हिए आओत। काज करबाक अछिए अहा के। आर कोनो उपाय त' अछि नहि! त' एक बेर टराइ करबा मे हजे की! हमरा ओना विश्वास अछि जे ओ अहाक अबस्से बता देत।

ताबे : कोन आधार पर तो कहि रहल छे एना?

राम. : ओ पढ' जानै छै। हमही आ किसुनदेव मास्टरक' ओकरा अच्छर जान करैलियै। ओकर लगन आ मेहनति.. आई ओ अखबारक नाम स' ल'क' अंतिम पना आ संपादकीय धरि पढि जाइत अछि। सभ किछु स्लेट पर लिखल लाइन जका मोन रहैत छै ओकरा। तै हम.. बाकी त' अहाक इच्छा..।

(फ्लैशबैक समाप्त। पकाश मंगतू पर।)

मंगतू : रामआसरे कहला सन्तो ताबे साहेब आएल छलाह! (हंसैत) बार रौ बाप! की गुमान मे फूलल छलाह। हमरा ल'ग ाढि हेबाक विवशता, मुंह पर बहुत किछु जनबाक दर्प, जेना दुनियाक संपूर्ण जानक गरिी हुनके लग हुअए, हमरा लेल हुनक ऑखि मे लहराइत घिरनाक समुंदर, संगही एकटा उपकारक भाव सेहो, जे देख - हमही छी, जे ऐलौ तोरा लग.. ले बलइया के, हौ जी, ऐलौ त' कोनो हमरा लेल.. एलौ अहा अपना लेल.. ऐलौ, पूछलौ, हमरा मोन छल, बतेलौ, अहा लिखलौ, छपेलौ, आ बिसरि गेलौ। एकटा धन्यवादो धरि नहि। रामआसरे भाइ लेख देखाओल.. मुदा पढि नहि सकलहुँ - अंगेजी सन्ता। हमर जानक उपयोग कोना भेलै.. ई हमरे नहि पता.. इएह त' अछि हमर तकदीर.. (व्यथित हँसी

हँसैत अछि.. पत्रकार-युवक-युवतीक प्रवेश। ओकरा हँसैत देखि चुप्प भ' जाइत छथि।)

युवती : मुगतू? (मंगतूक हंसी चुप्प भ' जाइत अछि।) की भेलौ? बड्ड हंसि रहल छे।

मंगतू : (कनेक सकुचाइत) जी.. ओ किछु नहि.. बस.. ताबे साहेब बला बात..

युवक : (रुक्ष स्वर मे) सुनल जे ओ तोरा लग आएल छलाह आ तो एकदम टेपरेकॉर्डर जका चालू भ' गेल छले?

मंगतू : (ओकर रुक्षपन के लक्ष्य नहि करैत अपनही प्रवाह मे) त' की करितियैक! एतेक बडका साहेब! एतेक शरीसान.. चासे बूझल जाओ जे हमरा पता छल। - जे किछु पता छल, से सभ बता देलियइ.. देखलियइ हम लेख.. मुदा अंग्रेजी.. साब, अहा हमरा अंग्रेजी पढब सिखा देब?

युवती : (मोन पारैत) हे सुनु, हम सभ एकरा पर स्टोरी केने छलहुँ ने?

युवक : अरे, ऊ त' पुरान कथा भ' गेलै। वंडरफुल एंड पावरफुल प्रोजेक्ट ।

युवती : एकरा किछु लाभ करेलहू की नहि?

युवक : माने? (ऑफिस दिस बढैत अछि।)

युवती : (अनुसरण करैत) माने ई, जे ओहि समय गप्प भेल छल जे पेमेट भेलाक बाद अहा ओकरा किछु देबै.. जस्ट फॉर ए नाइस जेस्चर.. मुदा, अहा त' हमरो किछु नहि बताओल।

युवक : अहूँ त'! ओ की केलकई जे ओकरा पेमेट करितियई?

युवती : वएह त' जरूरी छल। नहि बतेलियैक त' अहा काज क'

सकै छलहुँ? नधि न! आब धकछु ओध्व गरीब के.. (दुनू ऑधकसक गेट िध्व पहुँचइत छधि। रामआसरे आ धकसुनदेव दुनूक गप्प सुनै छधि।) काज आकध्व गेल त' बस, मुंह फेध्व लेलहूँ!

युवक : जमाने इएह छै डाध्वंगि। देखलहुँ ध्व. ताबे के.. सभटा काज करबा लेलधह मुदा नामोक केध्वट नधि..

युवती : अहूँ सएह बन' चाहै छी त' बनू.. मुदा हमर माननि हमरा ध्वय'! हम ओही मे स' ओकरा..

राम. : नमस्कार साहेब।

युवक : नमस्कार नमस्कार।

धकसुन: कोनो गंभीर गप्प सर?

युवक: उंहूं, धकच्छु नधां।

युवती : धकछु धकयैक नधि? अरे, हम दुनू ओध्व मंगतू पर काज करै छलहुँ। तहन ई गप्प भेल छल जे पाइ भेटला पर हम धकछु ओकरो देबै। मुदा.. ई त' हमरो पाइ घोध्व गेलैधह..

युवक : (जेना भेद खुध्व गेल हुअए) ओके बाबा ओके। अहाक पाइ अहा के द' देब। ओकरो द' देबै.. आब त' खुश? (फसफुसाइत) सभके सभ धकछु कहब जररी छै की? (बाजैत भीतर चध्व जाइत छधि। युवती पध्वने जाइत अध्व। पाछा स' युवक अपन तजर्नी मागि पर ल' जाक घुमबैत अध्व -- माने युवती कनेक कैक अध्व।)

राम. : देखल भइया ई बडका-बडका लोकक खेल! पगिकार छधि ई सभ। जनताक पैरोकार। जनताक रच्छक। रच्छक खुदे भच्छक.. हाक' लेल कहू त' एकदम सूर जे पर, देब' बेर मे पद-पद पाद' लगताह! हजारो टाका ध्वांटने हेतै मंगतुआक नाम पर।

आ ओकरे ककछु देबाक नाम
पर ..

ककसुन : सटक सीताराम! सभ एके ि ियाक भाटा रो भाइ!

राम. : ऊ ताबे साहेब! ओकरे मदशा स' ओ लेख ाखलहह। छपबो केलै। आब हमरा त' अंगेजी, फंगरेजी अबै निह अछछ। हम पूछ' गेशायै जे साहेब, अई मे मंगतूक कोनो ाकर-उकर..!

ककसुन : की बाजलहह?

राम. : अरे, ओ तेहेन न आँख गुरेरलहह जे एह -'ई लेख है रामआसरे, इनटरवयू नही कक सबका नाम देते रहे।' हम त' तइयो ढीि बनल बजलहुँ जे साहेब, ओकर कोनो भला भ' जयशायहह। ाखमंगाक ानगी स' ओकरा छुटकारा भेट जइशायैक। ओ फेर आँख तरेरलहह। हम फेरो ि ि जका बाजशायैक जे िीक छै, नाम निह देशायै त' ककछु दामे द' दयऊ। लगतै ओकरो जे हँ, आई अपना दमागक कमाई भेटलए.. सभ सार चोर अछछ- ऊ ताबे, ई छौडा.. काम रहला पर बाबू-भैया आ ाकश गेला पर दू-दू लात।

(पाश्व सि' सोगबला ि ुन। पकाश मंगतू पर। ओ ाकरैत अछछ)

मंगतू : ककओ हमरा अई नरक स' ाकाश क' ल जाऊ। रौ तकदीरक नाश, कत' मुंह मरा रहल छे। देह निह त' तोहे नीक जका रखते हमरा लग। कोनो नीक, पाईबला घर मे देते। माय-बाप लग। मुदा, जहन अपने माय-बाप अपन निह भेल तहन..

(सोगबला ि ुन उतसव ि ुन मे बदश जाइत अछछ। मंगतूक चेहरा फेड आउट होइत अछछ। एक कालाक लोकक आभास देइत लाल-नारंगी-पीयर रोशनी पसरइत अछछ आ ओह पकाश मे देखाइ

पडैत अछि - एक गोट स्त्री, जकरा कोरा मे एकटा नवजात अछि। अन्य स्त्रीगण नाचि-गाबि रहल छथि!)

र पैया मागे ननदी लाल के बाढ़ई
एके र पैया मोरा ससुर के कमाई
अनिी ले लो ननदी लाल के बाढ़ई
एके अनिी मोरा भैया के कमाई
ओ ना मै दूँ ननदी लाल के बाढ़ई

एक स्त्री : देखू भौजी। चान जइसन बेटा देलखिन्ह अछि हमर भैया अहा के। आब बेगर छतीस भरक डँडकस के नहि मानब।

(सभ हंसैत छथि। स्त्री लजाइत अछि। पुरुषक पवेश। हँसैत-नचैत स्त्रीगण विदा भ' जाइत छथि।)

पुरुष : रानि, की नाम राखब एकर?

स्त्री : (लजाइत) जे अहा कही।

पुरुष : हमर मानी त' एकर नाम राखब चिरंजीवी। खूब पढाएब, सिखाएब, कलक्टर बनाएब।

स्त्री : हमरा मानी त' ओकरा पर अपन मजी नहि लादिपी । अपना मजी स' ओ जे बनय, डाक्टर कलक्टर, एक्टर..

पुरुष : अच्छा भई, हम त' हुकुमक गुलाम छी। हुकुमक बेगम जे हुकुम देतीह, हुकुमक गुलाम बजा आनत (कोशिश करैत अछि। स्त्री हंसैत अछि। पुरुष छेडैत अछि) गीत मे कहलखिनयै - भैया के कमाई नहि देबै ननदि के, हमर बहीन के। ओ जीवित नहि छोडती अहा के! तहन? तहन हमर की हएत (आवाज रोमाञ्चक होइत अछि। स्त्रीक हंसी। अंधकार-पकाश मंगतू पर।)

मंगतू : एहेन माय-बाप हमर करम मे कत'? समाजक सामना

करबाक श्चम्मत नश्चि भेलै। अई समाज मे शाप भोग' लेल छोश्च देलैश्च। सोचल, जे अपने स' अपन तकदीरक श्चकताब श्चखब, मुदा ऊ बकटा गुडडी हमरे श्चन्दगी के बकटा क' गेल.. लोि, लूल-लागड. बनल ई श्चनगी । मौगत की एकरा स' अिलाह हेतै?.. मुदा मौगतो त' नश्चि अबैत अश्च। नश्चि घरक आसरा, नश्चि समाजक, नश्चि लोकक। किी लेल जीब, ककरा लेल जीब, ई जीबाक कोनो अिि?

(मंगतू भोकासी पाश्च कान' लागैत अश्च। रामआसरे आ श्चकसुनदेव ओकरा लग अबैत छश्चि।)

राम. : अपन इ ऑश्चफसे मे त' कतेक श्चकलाग लोक काज करै छश्चि, भोइकर साहेब, लीना मैडम, श्चन्हा जी.. मुदा .. एक श्चदस एहेन माय-बाप आ दोसर श्चदस ई समाज.. सभक फाटल मे आंगुर कर' बला। रौ, तोरा कोन मतलब छौ श्चकओ श्चकछु करए। ककरो चैन स' जीब' नश्चि देतै ई समाज..

(रामआसरे आ श्चकसुनदेव मंगतू के िरिज बंिबैत छश्चि। पाश्चसि स' कश्चता)

'श्चनगी जुआ अश्च
सटा अश्च, बजार अश्च
ताश अश्च, पता अश्च
रोशनीक बाश्च
चोश्चहयाएल लोक
भीड अश्च, एकान्त अश्च
भोरक तारा श्चशान्त अश्च
तारा टूटए नश्चि

आस छूटए नधि
(फेड आउट)

दृश्य : 3
साझुक समय। तेज बरसात आ मेघ बिजली गजनि-तजनिक स्वर। पसिलुका तीनू आखमंगा' छौडा मे स' सभस' छोटका आब र माल बेचैत अछि। ओ अपन समान सभ प्लास्टिक स' तोपबाक चेष्टा करैत बस स्टैंड दिस अबैत अछि। मंगतू अपना जगह बइसल पानि बरसब देखि रहल अछि। ओकरा लग भीखक पाइ छितराएल छै। छौडा दूरे स' मंगतू के देखैत अछि आ फेर अपना पेन्टक जेबी उन्टा क' देइत अछि। मंगतू लग पडल पाई दिस ओ चुंबक जका आकर्षित होबैत बढल चलैत अबैत अछि। मंगतू पानि छोडि ओकरा दिस देख' लगैत अछि। छौडा दू-चार डेगक दूरी पर एकाएक ठिठकि जाइत अछि।
मंगतू : की रौ झुनमा, की भेलौ।
झुनमा : किछु नधि ।
मंगतू : त' र कि कियैक गेले?
झुनमा : अहिना।
मुंगतू : मुंह एना छाउर जका कियैक केने छे? माल-ताल नधि बिकलऊ की?
झुनमा : ई बरखा-बैकाल मे लोक घर भागत की समान कीनत।
मंगतू : (कनेक काल चुप रहिक' जेना बात बदलिक) ई त' तो नीक केले, जे भीख मागब छोडि काज पकडि लेले। अच्छा झुनमा, ई बता, तोरा पानि नीक लागै छौ?

झुनमा : पेट भरल रहला पर गदश्चयो करीना कपूर लगै छै।

मंगतू : (जेना अपनही पवाह मे) हमरा बडड नीक लगैत अछ्ि ई बश्चसाश्च! आ, सुनबै श्चछयौ, श्चकताब आओर मे केहेन-केहेन गप्प सभ श्चखल छै, बश्चसाश्च लेल - कारी-कारी मेघ, झमझम बश्चसश्च पाश्चक ि‍र - चानी जका, भीजल ि‍रतीक सोश्चहपन, जेना कुम्हारक आबा मे बासन आओर पाश्चक रहल हुअए। हवा मे श्चहकी आ मोन मे कामनाक ज्वार! श्चय स' श्चलनक इच्छा..।

(पाश्चि सि' कजरीक मदम स्वर)

सखी हे आएल रात अंश्चयारी
बदरा कारी-कारी ना
झीगुर, मोर, पपीहा बोले
दादुर दमके ना, सश्च हे
दादुर दमके ना, सश्च हे
आएल रात अंश्चयारी
बदरा कारी-कारी ना।

झुनमा : रह' दे रौ, रह' दे। पोि‍क गप्प रह' दे। पोि‍ श्चख' बला पढुआ लोक छै। ओकरा सभ के भश्चसक नश्चि बूझल छै जे पाश्च एला स' बाश्च अबै छै, घर, जान-माल डूश्च जाइ छै, सभटा जमा पूँजी स्वाहा..

मंगतू : (फेर अपनही रौ मे) आ ओकरो स' त' नीक लागै छै बश्चसाश्चक बादक रौद। एकदम नहाएल ि‍एल, स्वच्छ काया जका।

झुनमा : (खौझा क') रौ सार! एतेक साहरख खान श्चकयै बनल जाए छे रे। एहेन बरखा-बैकाल मे तोरा सनीमा सूझै छौ, हमरा

राहत बाट'बला देखाई पडैत अछि। हे.. ऊ देख.. हवाई जहाज स' पाकिट सभ खसा रहल छौ, हे एम्हर.. हे ओम्हर.. हौ, हौ जी, एकटा एम्हरो खसाबहक ने! यौ भाई जी, भाई जी यौ, एकटा एम्हरो खसबियौ ने यौ। बडड भूख लागलए.. एको छदामक माल नहि बिकाएल..।

मंगतू : रौ झुनमा। ओम्हर की फेकल रहल छे। ले, ई पाइ ल' ले, आ ल' आन किछु.. गप-सप्प करैत खा-पी लेब। आ हे, सूत'क मोन करओ त' सुतियो जइहे। अही ि स' ि ि पर आकि जैहे।

(झुनमा पाइ लेइत अछि आ चलि जाइत अछि। मंगतू फेर स' अपन दुनिया मे भुतिया जाइत अछि। ओ गबैत अछि..)

'बरसात मे हमसे मिले तुम सजन

तुमसे मिले हम, बरसात मे।'

(झुनमा अबैत छै आ एकटा ि गा ओकरा ि मा देइत छै।

झुनमा : ले रौ हमर आनल खान! खो।

(दुनू खाइत अछि। मंगतू स्वाभाविक र प स' आ झुनमा हबड-हबड खाइत अछि।)

मंगतू : चौप खूब नीक बनल छै ने।

झुनमा : हूँ..

मंगतू : काल्हि कोनो आओर चीज आनिहे।

झुनमा : हूं..

मंगतू : किछु बाजै किये ने छे?

(झुनमा हा ि स' ि म्ह' के इशारा करैत अछि। मंगतू ओकरा देखैत रहैत अछि। झुनमा पूरा खेलाक बाद ढेकरैत अछि आ बजैत

अछि।)

झुनमा : हँ, आब बाज! पेट खाली रहला पर दुनियाया बडका अंडा देखाई छै। आब पेट भरि गेल अछि आ भरल पेट मे त' सुअरनीओ रबीना टंडन लागै छै। (गबैत अछि) तू चीज बडी है मस्त-मस्त।

(खाए पीबि क' दुनू गिा ओही ि एक कोना मे बीिय देइत अछि। दुनू पानि थबै अछि आ ढेकरैत अछि। दुनू एक-दोसरा के देखैत िकि' हँसि' पडैत अछि।)

झुनमा : कतेक बाजल हेतै?

मंगतू : दस स' कम की भेल हेतै! पानि त' कहैय' जे आइ छोडि काि हम बरसबे नहि करब।

झुनमा : (उदास होइ) एतेक पानि बरसतै त' रोड सभ टूटि जेतै। पटरी डूबि जेतै। बस रेन चलल बन भ' जेतै।

मंगतू : त' अई लेल तो मनि झकयैक भ' गेले?

झुनमा : रौ, बस-रेन नहि चलतै त' पसेन्जर नहि ऐतै। ओ सभ नहि एतै त' हमर टकी-बटा.. टकी नहि त' पाइ नहि.. पाइ नहि त' दाना नहि।

मंगतू : रौ झुनमा, एक बात बता। तो बस-रेन स' कतेक दूर ि गेल छे? पटना स' मुजफ्फरपुर ि.. कऊल ि.. दानापुर.. पटना साहब.. केहेन सोहनगर लागैत हेतौक ने देख' मे.. हजारो लोकक एके संग चढब, एके संगे उतरब। फर-फिर भागैत बस-रेन। सर-सि' छूटैत लोक, घर, खेत, खहान, गोर बरद.. । हमरो हाि-गोर रहैयैक त' जएतहुँ ने तोरे आओर जका।

झुनमा : हँ, जेते आ पुसक डंडा आ पलक गाि-बात खेते।

बम फ़ुटने जान गमबैते। एम्हर बम ओम्हर बम, एतेक मरलै, एतेक घायल.. याबै सभ त' आइ कालुक नूज छै।

मंगतू : (दीघिसास लेइत) जानक की। ऊ त' अई ि बइसलो बइसलो जा सकै छै। के जानए, एगो बम एम्हरो फाटय आ हम सभ' लता बचि उड़ि जाइ.. बम, गोली, दंगा- ई सभ त' आइ कालुक रीत भ' गेलैये। एगो बम फूटै छै आ सैकडो लोक एके मिनट मे अपाहिज, लोि भ' जाइ छै। कओ पूछय हमरा स' लोि भेलाक ददि रौ.. हम त' रोजे मनबै छी जे हमरा मौगत आबि जाए। ई लोि जिनगी स' की फेदा!

झुनमा :हमहूँ सभ त' इएह बाजै छी।.. की सोचै छे? ऊपरवाला लग एतेक टेम छै हमरा आओरक गप्प-सुनबाक। नमगर लाइन हेतै रौ भाइ! (ओकासी मारैत अछि।)

मंगतू : नीद आबि रहल छौ। सूति रह अही ि।

(दुनू भाइक' मंगतूक चीकट करिी ओछा ओंिघा जाइत अछि। कनेक देरी मे दुनू फ़ोंफ़ काट' लगैत अछि। मंचक पकाश शनै:- शनै: लाल होब' लगैत अछि। नीने मे मंगतू बड-बडाइत अछि-'हम जीय' नहि चाहै छी, 'हमरा मौगत द' दिय!' 'हमरा मौगत कियैक नहि अबैत अछि।' झुनमोक अस्फुट स्वर बहराइ छै -'हं', जीय' नहि चाहै छी।' 'ई केहेन जिनगी अछि! मरने बेसी नीक' आछि। पकाशक लाली मंगतू पर केन्द्रित। मंगतू नीने मे उठि क' बैसि जाइत अछि आ अलसाएल नजरि स' अपना के देखैत अछि। जेना-जेना ओ अपना के देखैत अछि, तेना-तेना ओकर आँखि स' नीद गायब भेल जाइत अछि आ ओकर सिनि पर आियिभर' लागैत छै।)

मंगतू : अरे, ई की? हमर हाि? आ पैर सेहो?.. जेना जमीन स' बीया फूटल रहल अछि - सुंदर, कोमल, नरम.. ई केहेन चमत्कार! भगवान, अहा सचमुच कृपालु छी..

(शनै: शनै: मंगतू मंच पर पूर्ण व्यक्तिक रप मे ठाढ़ भ' जाइत अछि।)

हम.. हम एक गोट पूरा-पूरा आदमी, दुनू हाि, दुनू गोर.. पतियायाऊ की नहि पतियायाऊ। (अपने बाँहि मे बिुआ कटैत) नहि, पतियायाएबला गप्प नहि छै। (फ़ेर अपने स') किएक नहि छै? हमर हाि गोर घुरि आएलए हमरा लग, त' अइ मे नहि पतियायाएबला गप्प की भेलै? आब हम अपन हैसियत बदलि सकै छी.. नीक समाग़ बनि सकै छी। भीख मागब .... ई गन्दगि कमि स' हमरा मुक्ति भेटि जाएत.. भेटत की.. भेटि गेल! हे.. ई श्राय'.. छोडलहुँ हम भीख मागब.. (हँसैत अछि।) आई स', एखनि स'। आब हमरा अई श्मनगी स' कोनो श्मकाइत नहि ।

(खिलखिला उठैत अछि। झुनमा ओकर आवाज सुनि उठैत अछि। मंगतू के अई रप मे पाबि क' हैरान रहि जाइत अछि। मंगतू कनखी मारि क' खुशी पकट करैत अछि।)

झुनमा :ई जादू छै।

मंगतू : ऊँहूँ! सच।

झुनमा :भइए नहि सकै छै। ई जरर कोनो जादू छै अिवा नैना -जोगिन।

मंगतू : अहँ! एकदम सच। छूबि के देख।

(झुनमा ओकरा छुबै छै। अपन आँखि मलैत छै, फेर छुबै छै।)

झुनमा :हँ, बुझा त' रहलए सचे सन! जौ ई सच छै, त' गुर,

कहू, आब की इरादा?

मंगतू : इरादा? अरे, आब त' हम खुजल आसमानक मुक्त पंछी छी। (गबैत अछि)

'पंछी बनू उडती फिरूँ मस्त गगन मे
आज मै आजाद हूँ दुनिया के चमन मे'

झुनमा : एतेक आजाद नहि छे, जतेक बूझै छे।

मंगतू : माने?.. जीवन एतेक सुंदर भ' सकै छै, हम त' ई सोचबो नहि केने छलहुँ। देख, ई रोडक बती.. बरसातक पानि मे केहेन सतरंगी किरण छोडैत अछि। ई चाकर रोड, एखन शात अछि - किनसर होइत होइत कतेक जगमगयार भ' जाइ छै.. (गबैत अछि) 'ई सहर बहुत हसीन है।' (आगा बढैत अछि।)

झुनमा : कत' जा रहल छे।

मंगतू : पता नहि। हम त' खाली बूझ' चाहै छी, ई पूरा-पूरा देहक सुख उठिब' चाहै छी। भगवान, हम अहा के कएक बेर गारि पढलहुँ। आई अहा के निबाद दइ छी। हमरा माफी द' दिय'.. (आओर तेजी स' चलैत अछि) की करब! लोक आओर जहन दुखी होइ छै, अहिना बाजै छै.. (खूब तेज-तेज चलैत अछि।)

झुनमा : रौ, हवाइ जहाज जका कियैक उडल जा रहल छे?

मंगतू : चल, चल (गबैत अछि) 'दो दीवाने शहर मे, रात मे या दोपहर मे, आबो दाना ढूँढते है, इस आशियाना ढूँढते है।'

झुनमा : रौ, हम थाकि गेलहूँ। गमे - गमे चल।

मंगतू : हमर त' मोन भ' रहलए जे हम ई पूरा-पूरा धरती मापि ली, बामन भगवान जका.. पूरा संसार के अपन अंकबारि मे भरि

ली.. खूब थ्यकथ्य-थ्यकथ्य के गाबी

'आज मदहोश हुआ जाए रे, मेरा मन, मेरा मन, मेरा मन।

शरारत करने को ललचाए रे, मेरा मन, मेरा मन, मेरा मन।'

झुनमा : (डेराइत) मंगतू, एना सनकाह - बताह जका नथि कर। हमरा डर होइए।

मंगतू : झुनमा, हमरा आइ केहेन लाथ्य रहलए, बूझल छौ?

झुनमा : .. ..

मंगतू : आई हमरा मोन मे एकटा कामना, एक गोट इच्छाक मूथ्य बथ्य रहलए.. पेमक नरम अनुभूथ्य.. आइए.. एखने.. लाथ्य रहलए जे कोनो नरम, नाजुक अंचरा मे अपन मुंह तोथ्य ली.. ओकर पेम भरल स्पशि हमर केश, देहक रग-रग मे पहुँचए आ अमृतक समुन्दर मे गहीर, खूब गहीर ल' जाए.. जत' पेम स' भरल संसार हएत..थ्कयैक भ' रहल अछ्थ्य एना?

झुनमा : भ' गेल ई आथ्यर खान.. आब गाओत 'आती क्या खंडाला!'

मंगतू : पेमक लालसा अई स' पथ्यने नथि भेल छल कथ्ययो! झुनमा, सुन, तोहर भौजी.. (कनेक लजाइत अछ्थ्य)

झुनमा : भेल आब ई सलमान खान (गाबैत अछ्थ्य)

तेरे थ्यना, तेरे थ्यना..

(मंगतू आगाँ बढैत अछ्थ्य.. पाछू-पाछू झुनमा सेहो..)

मंगतू : देख, ई शमक जीबैत रप.. मेहनथ्य स' लोक एतेक नेथ्क जाइत छै जे.. ओ कहबी छै ने जे 'नीन नथि जानै टूटल खाट।' हमहू.. एकरे आओर जका खटब.. एतेक जे बस, खथ्यते फोफ काटब शुर । (फोफ काटैत अछ्थ्य।)

झुनमा : मुदा तो काज की करबे रे! के देतौ काज तोरा? लूल्हा-नागड़ा. मंगतुआ के सभ क्योओ जनैत छै.. मुदा आजुक ई नमगर, सोहनगर श्वआक रोसन के काज के देतौ? जास्ती स' जास्ती उपदेस देतौ, जाइ स' पेट चलतौ नहि।

(फोफ काटबाक नकल करैत मंगतू एकदम स' चेहाइत अछि। फोफ बीचहि मे रुकि जाइत अछि। मुंहक चमक, खुशी बदला जाइत अछि।)

मंगतू : ऐं? की करब हम? (हँसैत अछि।) एकदम सही पकडले तो.. की करब हम?.. नहि, की क' सकै छी हम? ..रौ, तोही बाज ने, की क' सकै छी हम?

झुनमा : खाली भीख माङि सकै छे। सेहो लोकि-नागर भ' क! एहेन मुस्टंडा भ' क' नहि ।

मंगतू : एह! एना नहि बाज । एतेक दिनक बाद हमरा ई सनेस भेटलए, ओकरा.. (हाथि ओकर गरदनि पकड़ि लेइत छै।) फेर जुआ बनाहे ई.. रौ तो त' चाहि हाथि-गोर बाला आदमी भेलै। तो की बूझबे लोकि पीर।

झुनमा : (गरदनि छोडबैत) त' कलक्टरी कर। डाक्टरी कर। हम तोहर चपरासी, कंपोडर बन' लेल तेयार छी।

मंगतू : तो हमर हौसला बढेबाक बदले ओकरा खसा रहल छे। हमरा लग किछु गी अछि जे..

झुनमा : त' कोनो धंधा क' ले.. किरानाक दोकान, कपडाक दोकान.. किछुओ.. हमरा अपना दोकान पर राखि लिहे।

मंगतू : कियैक मजाक क' रहल छे.. धंधा शुरु कर' लेल पूँजी चाही.. तो मदति की करबे, उनटे.. चलि जो हमरा लग स'..

झुनमा : जाइ छी, जाइ छी। काल्हि फेर एबौ। अई बेर झिंघाडा खुअबिहे..

(जाए लागै छै। बीच-बीच मे मुरि-मुरि क' देखै छै जे मंगतू ओकरा बजा लियए। मंगतू ओकरा दिस ध्यान नहि देइत अछि। ई देखि ओ अपने स' एक कोन्टा मे ठाढ भ' जाइत अछि आ मंगतू के देखैत अछि..)

मंगतू : (जेना फेर अपना मोन मे) एह! एतेक सोहनगर समय। भोर भ' रहल छै..। हे, ई सुनू, पाखीक स्वर। भोरक मंद- मंद बेयार। हे देखियौ, ई सूतल अछि। एक उठि कि सभ कओ उठि जाएत.. बक्कक, देखियौ, जनीजात सभ त' उठियो गेलीह। ओ ओम्हर चूल्हि सुनगा रहल छै.. एम्हर ई अपना बच्चा के दूध पिया रहल छै.. आ ओकरा देखियौ, ऊ चाहक पानि सेहो चढा देलकै.. ओम्हर एकटा बच्चा माय के देखि मुस्किया रहल अछि.. कतेक सोहनगर छै.. पाजेबक छुन-छुन जका चूडीक छनक रहल अछि.. मंगतू.. रौ.. घूमैत जुआ हाथि.. काज भेटतौ तोरा.. रिज रि..

(ओ ई सभ बाजिए रहल अछि कि पाछू स' बम फुटबाक भयंकर आवाज होइत छै। पलखतिए मे रोआ- कनाइ, भागा दौडी मचि जाइत अछि। मंगतू किछु नहि बूझला सन्तो अकबकायल ओहिना ठाढेक ठाढ रहि जाइत अछि। जगजगात भेल ऊ चार दिस देखैत अछि, फेर माजरा सभ बूझ' मे अबितही चिकर' लागैत अछि..)

मंगतू : अरे, ई की भेलै.. ऊ दूध पियबैत माय! .... बच्चा ओकरा हाथ स' .... एतेक दूर खसि ..... आ ओ अपने गेद जका.. माथ फाटि गेलै.. ओ, ओ चूल्हि सुनगबैत स्त्री.. ओकर त' हाथ-गोर उडि .. अरे, ई आन्हान्ता सूतल लोक सभ.. कागज-पतर, खढ -

पात जका उछ्छ्या.. (ध्यकरैत अछ्छ) रौ, .. रौ रछसबा सभ.. जल्लाद, कसाइया सभ.. रौ, ध्नगीक एक गोट सास त' द' नधि सकै छे, मुदा.. ध्कयैक छीन रहल छे हमर ध्नगी? ध्कयैक लोि बना रहल छे हमरा? हमर अपराि की?

(पाश्वि स' ध्वश्व.. जन्म लेबक अपराि केने छे तो सभ.. आब भोग।)

(चीख-पुकार एखनो मचल छै। मंगतू असहाय सन िढ अछ्छ.. हाित ओकर कान मे जोरदार आवाज अबैत छै 'भाग रौ, बम.. भाग, जान बचो.. भाग रौ..' (भीडक भागबाक ध्वश्व। मंगतू, सेहो ध्वनु ध्कछु बूझने बदहवास ध्यकरैत भाग' लागैत अछ्छ.. 'भाग रौ, बम.. भाग, जान बचेबाक छौ त' भाग.. भाग रौ..' रसे- रसे अई भगदश्छ. मे सभटा पाि सश्मश्वत भ' जाइत छधि.. सभ ध्यकश्व. रहल छधि.. 'भागू, जान बचाऊ.. भाग रौ.. भाग..' रसे- रसे स्वर शात होइत अछ्छ.. सभटा चश्वि एक-दोसराक हाि पकडने मंचक एकदम अगभाग मे िढ भ' जाइत छधि। समवेत स्वर मे सभ बाजैत छधि।)

समवेत स्वर : हुअए खाहे युदक ध्वभीश्वका

वा खूनक बाजार गमि

मुदा नधि िक' बला, हार' बला

हम! ओ परम ध्वता,

ओ काल..

अही सं', हँ, अही स' अछ्छ टकर हमर..

हम खसब, लडब, मरब,

मुदा फेर िढ भ' उबि

साठि हजार सगर-पुत्रक भाग्य

ई संसार खल अछि, कामी अछि,

दुष्ट अछि, पिशाच अछि,

मुदा तइयो छै अई मे जीवनक आभा

जे अछि सत्यो स' बढ़ि क' सत्य..

भावो स' बढ़ि क' भाव

अमरो स' अमर

सुंदरतो स' सुंदर..

जीवन, नहि अछि एतेक सस्त

जे बिछरि जाए

मुटी मे बंद बालु जका

हम जीयब, आ पारब रेघ

कालोक सम्मुख

ललकारब मौत के

बढब विजय पथ पर

रचब नव नवीन अध्याय

नव नवीन विहान

नव नवीन वितान

(अंतिम पंक्ति बाजैत-बाजैत सभ पात्र आस्ते-आस्ते विभिन्न मुद्रा मे बैसि क' मंचक दुनू ओर ठाढ भ' जाइत छथि। पकाश मंगतू पर.. ओ अपन पहिल स्थिति मे अछि.. आ ध्यान मे बडबड क' रहल अछि.. 'भाग रौ, बम.. भाग, जान बचेबाक छौ त' भाग.. भाग रौ..' । ओ नीने मे एम्हर स' ओम्हर भागबाक पयास क' रहल अछि। सभ पात्र वृताकार मे ओकरा घेर लेइत अछि। फेर सभ एक

दोसराक हाथि पकड़ने पाछू थोड़ेस झुकैत अछि, जाहिसँ एकटा मानव-पुष्पक विमाण होबैत अछि.. सभ कथिताक अंतिम चार पंक्ति बाजि रहल छथि.. 'बढब विजय- पथि पर, रचब नित नवीन अध्यायान.. 'बाजैत-बाजैत सभटा पाथि फीज भ' जाइत छथि। परदा खसैत अछि।)

बलचन्दा ((मैथिली नाटक)

(मंच पर अत्यन्त मदम पकाश.. मदम स्वर मे एक गोट रहस्यमय संगीतक ध्वनि, बहुत ाडक पतीत कराबइत.. पकाश सेहो समाप्त । मंच पर घोर अंधकार। लगभग एक मिनट धरि अंधकार आ पूर्ण शान्तिक बाद एकगोट नवजातक कन्दन। कन्दन तेज होबैत-होबैत अंत मे शनै.. शनै विलीन भ' जाइत अछि ..। मंच पर पूर्ण शान्ति आ एखनो अंधकार अछि। पुन: लगभग एक मिनटक बाद एकटा पातर लकीर सनक पकाश मंचक एक सीमा स' दोसर सीमा धरि अबैत अछि। ओ पकाश बढैत-बढैत एकटा वृत मे बदलैत अछि। एक स्त्रीक ओहि वृत मे कोरा मे एकटा गुड़ियाक संगे पवेश ..। गुड़िया के सोझा मे राखि ओ ओकरा पाछा ठाढि भ' जाएत अछि आ बाजैत अछि। ओकर स्वर मे पसनता आ आत्म-गौरवक भाव छै)

स्त्री: हम स्त्रिणी.. हम स्त्री

सीता हम - हम सावित्री

हम दौपदी - रम्भा, मेनका

शदा हम, हमही इडा

पेमक सुख, विछोहक पीडा

समस्त विश्व मे हमरे स' पाण

देवी, मा, सहचरी, पाण

देवी हम

दुर्गा, काली, गौरी, शक्ति,

सुनु हमरा, नहि ई सृष्टि

(पृष्ठभूमिक भजन आरंभ होइत अछि.. स्त्री कोरा मे बच्ची के ल' क' ई गीत गबैत अछि। गीतक संगे-संग ओ गुड़िया के दुलारैत-मलारैत अछि।)

जय, जय भैरवि असुर भयाउनि

पशुपति भामिनी माया..

सहज सुमति बर दिअउऊ गोसाउनि

अनुगति, गति तुअ पाया।

(भजन समाप्त होइत-होइत ओ गुड़िया के मंचक पाछा राखि अबैत अछि आ फेर सासुक चरणि मे आबि क' बाजैत अछि। स्त्री सासु, पति आदिक पाछि नेमाहइत अछि।)

सासु : एक त' आबि जाइक माउगि आ ओहि पर स' पहिल बच्चा बेटी? एकनहु नहि।

पहिल संतान त' बेटे।

पति : मा, एकऐक अहा अतेक अपस्याँत होइत छी? अरे, आश्वस्त रहू ने। जे अहा कहबै, सएह हेतै।

स्त्री : रोकैत, ई हमर आ अहाक पेमक पहिम पुष्प अछि। एना जुनि कर। एना जुनि कर प्लीज।

पति : हमरा लेल माकेर इच्छा सवोपरि। ..चलू, अहाक मोन राख' लेल एकटा बेटीक मंजूरी सेहो। मुदा पहिल बेर त' बेटे।

स्त्री : (स्त्रीक नजरि जेना अपन पति पर पड़ैत छै। ओ

श्चकरइत अछ्छ) बाउजी, हमरा बचा श्चय'। हमर बेटी के बचा..

बाउजी : बेटी, चल हमरा संगे। एक बेर बच्चाक मुंह देश्चव लेतीह समि्ानी जी त' अपनश्च ममश्चा उथि एतै।

सासु : खबरदार समधि। बेटी के उकसाऊ जुश्चा। मुंहे देखला स' ममश्चा उपश्चश्चाऐक त' अपनही हाि अपनही तीन- तीनटाक नरेटी नथि टीपने रश्चश्चायहुं। ई हमर घर अछ्छ। अहाक बेटी ओ जश्चया छली, तश्चया छली। आब ओ ई घरक पुतौहु छथि। हुनका अइािक केदा- कानूनक मोताश्चक चल' पडत, वरना हमर बेटा लेल त' एखनो एकटा के बजाऊ त' दस टा दौगश्च आएत। एह..एक त' जाने कत' स' उिा आनल आश्चा जाश्चाक राश्चछ..

बाउजी : मुदा बेटा -बेटी त' अपना हाािक गप्प नथि छै ने?

सासु : मरि तहन ककरा हाि मे छै?

बउ. : श्चजानक हाि मे। डाक्टर लग जाउ। ओ अहा के बता देत, जे बेटा बेटी श्चथिक श्चखलाहा नथि होइत छै।

सासु : हे, हमरा ई डागदरी फ़ागदरी नथि श्चखाऊ।

बाउ : सीख' पडत समि्ानी जी। वरना भगवानक लेख माश्चा क' जनम जनम स' लोक आओर सि्ा के एकरा लेल दोषी बनबैत आएल अछ्छ। आ जनम जनम िश्च ओकरा बनश्चते रहत।

सासु : हमरा एतेक कपडफ़ेच मे पड' नथि अबैत अछ्छ। आइ काश्च डाक्टर आओर के सभ बूझल रहैत छै। हाि लगश्चतश्चं बता दइत छै जे बेटा श्चक बेटी..।

बाउ : त' समि्ानी जी, वएह डाक्टर ईहो बता देत जे बेटा- बेटी जनमाब' मे सि्ाक अपन कोनो श्चशेष भूश्चाका नथि होइत छै। ओ

त' मा िरिती अछि, बीज िरण करएवाली। आ जेहेन बीज, तेहेन फ़सील।

(सासु किछु नहि बाजि कडगर नजरि स' बाउजी के आ फ़ेर सी देखैत अछि।)

सी : नहि, हम नहि हटाएब। (पश्चा स') रोकैत, बेटी स' एतबेक दुश्मनी छल त' कियै केलहुं हमरा स' विवाह? अरे, अहूं त' एक गोट सीएक कोखि स' जनम लेने छी। अहाक माइयो त' एक गोट सीए छथि ने.. आ सभ किओ जौ अपना बेटी स' छुटी चाहत त' कोना चलतै ई सृष्टि? कहू ने, कोना क' चलतै ई सृष्टि ?

(सी भहराक' खसि पडैत अछि। पाश्व सि' करण संगीत। सी रसे- रसे उित अछि आ रसे- रसे सामान्य लडकी सनक व्यवहार करैत अछि। ओकर व्यवहार मे कॉलेज जाएवाली लडकीक अभिनय अछि। ओ हडबडी मे अछि। ओ स्कट पिन्हरबाक, कंघी करबाक, किताब- कॉपी हेरबाक, चप्पल पहिरबाक, बैग कन्हा पर टँगबाक आदिक अभिनय करैत अछि- ई सभ करैत-करैत ओ हबकि हबकि बाजियो रहल अछि -

सी : मा, हम कॉलेज जा रहल छी..। बाउजी के कहि देबनि आब' लेल..। आ अहूँ आएब हमर नाटक देख'। आ हं मा, भौजी के सेहो नेने आयब.. मा, भौजीक मुंह पर स' कनेक घोघ हटब' दियउ ने! हे देखियौ- देखियौ, अन्हरिया मे पूर्णिमा भ' गेलीह.. (नकली डर) नहि.. मार । नहि.. नहि, हम दू नहि पीब.. बाप रौ, उन्टी होब' लागैत अछि.. बाउजी के कहि देबनि ने.. जे हम पी लेलहुँ दू.. हमर सुनर- सुनर, नीक नीक मा.. अछा, आब हम

चलै छी। हमरा देर भ' रहल अछि। (कहैत-कहैत मंच स' बाहर भ' जाइत अछि। संगीत.. शहनाईक धुनि..। मंच पर कोनो कार्यक्रम होयबा सनक हलचल। स्त्रीक उद्घोषकाक रूप मे प्रवेश। ओ मंचक एक कोना मे ठाढ़ भ' क' उद्घोषणा करैत अछि।)

स्त्री/पु. : नमस्कार। हमर कॉलेजक वार्षिकोत्सव मे अपने सभक हार्दिक स्वागत आ अभिनन्दन। मनोरंजन, आमोद आ आनन्दक संगे- संग अई वार्षिकोत्सव मे हम सभ सामाजिक सरोकार स' सम्बन्धित बहुत रास कार्यक्रम सेहो केलहुं अछि, जेना सडक सफ़ाई अभियान, वृक्षारोपण, महत्वपूर्ण साहित्यकारक सम्मान, वंचित वर्गक नेना लेल शिक्षा आ स्वास्थ्य वर्कशॉप, आदि- आदि। आइ एकरे अगिला कडी मे प्रस्तुत अछि, समाजक एक गोट आओर ज्वलन्त समस्या स' अहा सभ के दू-चारि करबइत ई नाटक- बलचन्दा।

(मद्धिम अंधकार.. अंधकारे मे गीत ..)

'गै मैना, अंगना ओकरा जइहे

रसे-रसे, कहिहे बुझाए रसा

जोर स' जुनि बजिहे, गे मैना..

(स्त्री मंच पर अबैत अछि.. संवाद बजैत अछि, जेना मंच पर अभिनय क' रहल हुअए।)

स्त्री : धिक्कार अछि ओहि समाज पर, जे बेटी के अस्तित्व मे ऐबाक पहिनहि ओकरा नष्ट क' देब' चाहैत अछि.. ई रिती.. ई रितीयो त' एक गोट स्त्रीए अछि।.. देखियौ एकरा, सभ दिन ओ एकरा धन-राशि गिनैत रहैत छथि, एकर करेज कोडि के काठ-काठक' बडका-बडका इमारत बनबैत छथि.. अमृत स' भरल एकर

नदीक िर के अपना मजी स' एम्हर स' ओम्हर क' देइत छथि.. एकर कामनाक ज्वार के बाि मे बाथि दइत छथि.. मुदा तइयो ई िरती, उन्टे हमरा रौद, पाश्न, छाहश्व, अनाज सभ श्वकछु दइत रहैत अछ्व.. कश्नयौ, जे जौ ई िरती ई सभ नथि करतीह त' हमर सभक अश्नतत्व रहत की? हम- कन्या, स्त्री, माय, बहीन, बेटी- हमहूँ त' िरतीए छी.. िरण करयवाली.. आ देश्वयौ, आइयो कएलहुँए िरण- अई परंपरा के आगा बढाब'वाली के..। आब श्वयऊ एकरा अश्न संसार मे- अहाके िरण कर' लेल, अश्न सृश्व के आगा बढाब' लेल। अरे, वीर-श्वहीन िरती से सृश्व त' चश्न जाएत, मुदा बेटी- श्वहीन िरती स' सृश्व नष भ' जाएत। आब श्वयऊ एकरा। हमरा लागल जे हमर अजन्मल संतानक संगे-संग अई िरती परक अनेक अजन्मल बेटी सभ सेहो अपना- अपना माता-श्वता स' कश्न रहल अछ्व (स्त्रीक कश्वता वाचन बाश्नकाक स्वर मे।)

हे हमर भावी माता-श्वता
हमरा पर नथि
त' कर हुनका आओर पर श्वकरपा
श्वनगी जश्वाक आरंभ भ' क' हमरा स'
समाप्त होइत अछ्व हमरे पर..
सोचू, जे नथि हएब हम
त' के िोअत भश्व-भश्व श्वछटा ऐँि बासन
के खाएत भाईक अवश्वाष भोजन
कोना नेबाहेम श्वंदू िमकि महादान - कन्यादान!
कोना मेटायत नोचनी हमर सासु, ननद, स्वामीकेर

जौ नहि भेटत दहेज मे छल्ला माँसक केर।
कोना चलत अखबारक कार्य-व्यापार
जा धरि छपत नहि,
नाहक-नाहक टा स' अपनही लोकक बलात्कार!
आ सोचू कने, नहि हएब हम',
त' कोना मनाएब अतंराष्ट्रीय महिला दिवस
बाहुलका वर्ष नारी सशक्तीकरण
ककरा राखब पदा मे रखि बुका मे
ककरा जोखब सोनाक धनका मे?
हमही त' छी अमीना वा सोनाबाई!
तै, आब' दिय' हमरा, आब' दिय' हमरा,
जाहि स' बदस्तूर चलैत रहय
अहाक नाम-सुनाम
आओर किछुओ नहि त'
घरे-घर त' पूजल जाएब
जहन लाल चूनर, भरि माग सेनूर
आ सोलह शृंगारक संग
हमरा अहा र प कुँवर बनाएब..'

(तेज संगीत आ तकरा बाद एकदम शान्त.. स्त्री मंच पर आबि सभके नमस्कार करैत अछि.. हॉल मे पिडी..।)

स्त्री : (जेना कोनो सम्मोहन मे) हमर जनम पर हमर बाउजी एतेक पसन भेल छलाह जेना तीनू लोकक राज-पाट हुनका भेटि गेल होइन्ह। सोहर, बधावा, पमरियाक नाच, भरि गामक भोज, मिठाई..। एह, एहेन कोनो वस्तु उठा नहि रखलाह। हे, देखियौ,

आइ-माइ-दाइ सभ सोहर गाबि रहल छथि आ बाउजीक हुनका सभक संगे रार- तकरार सेहो चलि रहल अछि। आ हम, हम त' अपना मायक कोरा मे आराम स' सुतल छलहुं। (शनै.. शनै.. पकाश बदलइत अछि.. स्त्री कोरा मे एक गोट नेना के ल' क' बैसैत अछि आ गीत गबैत अछि। गीतक बीच मे ओकर अन्य देखभाल, काजल लगेनाइ, मालिश केनाइ, स्नान करबेनाइ, दूध पियेनाइ आदि कार्य-व्यापार करैत रहैत अछि।)

कहँवा ही रामजी जनम लेले
कहवा बधइया बाजे हो
ललना केकनकर हियरा जुडाएल
खेले आएल अंगना हो
अजोध्या मे रामजी जनम लेले
मिथिला बधइया बाजे हो
ललना दशरथ के हियरा जुडाएल
खेले आएल अंगना हो

स्त्री : सोहर समाप्त भेलै आ सभ केओ उठलीह बधावा।
(सोहरक ध्वनि कमश: बधावा मे बदलइत अछि..स्त्री नेना के ल' क' मंचक पाछा चलि जाइत अछि। फ़ेर चुनी उतारि अभिवा पमस्त्रयाक र प मे बधावा गबैत अछि आ नचैत अछि)

र पइया मागे ननदी, लाल के बधाई
दसे र पइया मोरा ससुर के कमाई
पाच ले लू ननदी, लाल के बधाई!

बाउजी : बाउजी काकी स' बजलाह- ई की भउजी? रामजीक सोहर आ लालक बधाई? अरे, हमरा घर मे राम जी नहि, सीता जी, पार्वती जी, लक्ष्मी जी, सरस्वती जी.. दुर्गा जी सभटा देवी एकरूप भ' क' ऐलीहए! हुनका लेल सोहर गबियौ, हुनकर बधाबा सुनबियौ!

औरत : काकी कहलखिन्ह- अहूँ ककसुनदेव बउआ, सठिया गेलहुँए की? अरे, बेटी लेल सोहर आ बधाबा? ओकर जनम खुसनामा छै की? अरे, जनमाबी, पाली-पोसी, पढाबी-लिखाबी, बियाह मे भरि-भरि ढाकी दान-दहेज दी, तकरा बाद परब-त्यौहार, बाल-बच्चा.. जिनगी भरि ई नेग त' ई रसम त' ई पाबनि त' ई तिहार। बाप रौ बाप.. भारी खचाक घर छै भारी खचाक घर..। एहेन मे के राग जै जैवन्ती सुनाओत? कहू त' भला।

बाउजी : बाउजी काकी के बारैत कहलखिन्ह- एना नहि बजियौ भउजी। स्त्री भ' क' स्त्रीए लेल.. अहाके नहि बूझलए.. रक्षकावाली सभ बेर दगा द' जाइत छली.. अरे, बेटा सभक की? ओ सभ त' खानगी पढैत, एम्हर ओम्हर डोलैत-डालैत कोनो ने कोन जुगुत बैसाइये लेत। असली कष्ट त' छै बेटीक..। आ बिनु कन्यादाने हम सभ अई मनुक्ख जनम स' उऋण भ' सकै छी की? एक-एकक' सात..सात पूतक बाद.. अई देवीक आगमन.. धनि भाग हमर.. गाऊ, गाऊ... ई देवीक स्वागत कर ..(पार्श्व स' गीत.. स्त्रीक पूजा करबाक अभिनय)

निमिया के डार मइया लागले हिंडोलबा कि झुलि झुलि ना
मइया खेले ले मसकार कि झुलि झुलि ना

खेश्लाते खुश्लाते मइया लागले थयसवा श्क चली गेली
मइया भगत के दार श्क चली गेली

थता : बाउजी फ़ेर काकी के चेतेलथ्लन्ह- हमर कान मे बेटीक बिावा पडबाक चाही भउजी, नथ्रि त' अहा स' हमर बाजब भूकब बन!

भउजी :काकी फ़ेर उपराग देलीह- देथ्लयौ बताह के! बेटीक जनम पर जहन पसनते नथ्रि त' केहेन सोहर आ केहेन बिावा .. मुदा के कहय अई बौराहा के?.. सात-सात गो बेटा भेल, श्लकछु नथ्रि कएल आ बेटी भेला पर अपने ताले नचने घुरैय'.. कत' स' आनी गै दाइ बेटीक सोहर आ बिावा?.. अबै जो गै, बेटाक िमि पर बेटी क' दही आ गाश्ल दही..। भ' जेतै गीत बेटीक आ श्लकसुनदेव बउआक जी सेहो जुडा जेतै..

र पइया मागे ननदी लाली के बिाई
सौए र पइया मोरा थया के कमाई
छदाम ना दूँ ननदी लाल के बिाई!

र्सी :हमर पीसी तुनश्लक के बजलीह- 'वाह चाची वाह! लाल के बिाई त' दस टाकाक कमाई! लालीक बिाई त' सौ टाकाक कमाई आ ओश्लह मे स' पाच टाका ननश्लद के। आ लाली के बिाई त' सौ टाकाक कमाई .. आ तइयो एकोटा पाइ ननश्लद के नथ्रि! एह।'

भउजी :काकी बरजलीह- गै, बेटी भेलै भारी खचाक घर! बाप बेसी

नथि कमेतै त' कोना ओकर घर भरतै.. चल, चल, गीत गो..

सुनू राजा, घर पइसा न कौडी
सासु जे अइहे, देवता पुजइहे
देवता पुजौनी के नेग-जोगा मंगथिहे
बाहर से थपया तुम ललकारो,
भीतर से हम थपया मुका देखाएब। सुनू राजा..

सी : भथि गाम मे सोर भ' गेलै जे बाउजी हमर माय के हमर जनमक खुशनामा मे ति सोनाक सीताहार देलथिन्हए। बाउजी माय से कहलथिन्ह-

बाउजी : हे थाय' रथिकावाली! अहाक सीताहार! कतेक सुन्दर बेटी देलहुँए अहा हमरा.. हम एकर नाथि-नाथि टा पएर मे पायल पथिराएब, एकर केश मे लाल-लाल फीता बान्हब, छोट-छोट हाि मे रंग थिरंगा चूडी पथिराएब.. कन्हा पर ल' क' घूमब.. जतेक चाहत, जत' चाहत, ततेक आ तत' पढाएब.. डाक्टर, इंजीथियर, कलक्टर, ई जे चाहत, बनाएब.. खूब ूमिमि स' एकर थिवाह करब.. ।

सी : (युवतीक स्वर व अथिनय मे) बाउजीक स्नेहक छाहथि मे हम पलैत गेलहुं, बढैत गेलहुं। हम इंजीथियर बन' चाहैत छलहुं। मुदा हमर माय मोहल्लाक आइ-माइ-दाइक कहब मे आथि गेलीह आ पथि गेलीह हमर थिवाहक पाछा। हमर की? हमर त' एके गोट शरणसिली कथियौ थिक दाता दरबार- हमर बाउजी। से हम लगेलइयथि हुनका लग अपन गोहाथि.. बाउजी, हम इंजीथियर

बनब.. देखियौ ने! माय कहै छथि‍न्हि जे हमर बियाह.. बाउजी.. हम एखन्नि पढब.. हम इंजीनियर बनब बाउजी प्लीज! हम एखन्नि बियाह नहि करब। बाउजी, प्लीज... (स्त्रीक चेहरा पर पहिने अदंक आ फ़ेर पसनताक भाव अबै छै, जेना पिताक सहमति भेटि गेल हुअए। ओ पसनता स' पूरा मंच पर घूमि जाइत अछि..) हं, हम इंजीनियर बनब.. अपना गामक पहिला लडकी.. जे इंजीनियर बनत.. आई धरि जे बनल से खाली डाक्टर वा टीचर अथवा नर्स. हम इंजीनियर..बाउजी, अहा कतेक नीक छी। हम कतेक बडड सौभाग्यशाली जे अहा सन पिता भेटलाह हमरा।

(पेमक अनुभूतिक अभिनय.. ओ पसनता स' नाचैत अछि आ विद्यापतिक गीत पढैत अछि-

'सखि की पूछसि अनुभव मोय,
सेहो पिरीत अनुराग बखानिअ,
तिल तिल नूतन होय।

स्त्री : हम रोइत आ रोइत संगे अपन भविष्यक स्वप्न मे डूबल छलहुं कि एकदिन मा भरि घर के अपना माथ पर उठा लेलकिह। चिकरि-चिकरि के बाउजी स' कह लगलिह-

मा : नाक कटाक' आबि गेल ई अहाक सुलच्छनी! जे कहियौ नहि भेल खनदान मे, से आब ई क' रहल अछि। बेसमीक हद छै। पेम, एह, देह मे जेना आगि सुनगहयाएल छलै..

बाउजी : रहिकावाली, आस्ते बाजू। ई बेटी हमर थिक। जेना हम कहब, तेना हएत। आखिर पहिनगी हुनका आओर के संगे संगे नेमाह' के छैक। जाहि मे ई दुनु सुखी रहि। आ लड़िका

नीक छै, पढनुक छै। देखहु-सुनय मे कोनो राजकुमार स' कम नथि छै। अरे, हमहूं तकतहुं त' एकरा स' बेसी नीक वर भेटतय, ताहि मे संदेहे.. खाली जाए कने दोसर छै ने..।

मा : कनहुं नहि होब' देबै हम ई संबं.. अहा स' हम कहि रहल छी।... गै दाइ गै दाइ, गै कयै जनमेलौ एहेन धीया के रौ बाप..जतहुं त सोइरीए मे नून चटा क' मारि देने रहितायैक गै दाइ.. अरे, अहा ढि ढि हमर मुंह की देखि रहल छी? ताकू कोनो हरही सुरही, बूढ, अबियसू.. दुहेजू.. ककरो संगे.. भगाऊ एकरा..

बाउजी : से नथि हेतै रहिकावाली। विवाह त' ओही ि हेतै, जत' हमर बेटी कहत।

(वतमीन। सी मंच पर अबैत अछि।.... पाश्व स' समदाओन चलैत अछि। सीक विवाहक बाद विदा लेबाक अभिनय। एकरा ओ अपन लाल ओढनी से पर्दा करैत अछि। समदाओन सुनाइ पडैत अछि)

बडा रे जतन स' सिया धीया पोसल

सेहो सिया राम नेने जाए

आगू आगू रामचन्द्र, पाछू पाछू डोलिया

तही पाछू लछुमन जे भाई

लाल रंगे डोलिया, सबुज रंग ओहरिया

लागि गेलै बतीसो कहार ।

(समदाओन दिश सी मंचक एक ओर से दोसर दिश जाइत अछि, जेना नइहर से सासुर पहुंचि गेल हुअए।

सी : सासुर पहुंचलाक बाद 'कनिया एलै', 'कनिया परीछू'क सोर

भेलै। गाछक्षये मे हमरा परीक्ष- तरीक्ष के सभ क्षकओ हमरा आगं बढेलक। चंगेरी मे पएर दइत हम आगा बढलहुं। आइ-माइ-दाइ सभ फ़ेर गीत शुर केलीह। गीत, ि न, बदलइत अछ। स्री जेना चंगेरी मे पएर राखैत आगा बढ रहल हुअए। गीतक स्पर)

दुलीन ि रे-ि रे चक्षयऊ ससुर गक्षया
ससुर गक्षया ओ भैसुर गक्षया
तोरे घुँघटा मे लागल अनार कक्षया

स्री : चंगेरी-यात्रि के बाद हम पाओल जे हम सभ एक गोट दूरा पर ि ढ छी- दूर छेकाइ लेल। रोक्षत सभ के यि ायोग्य नेग-तेग देइत आगा बढलाह, आ पाछू-पाछू हम। कोहबरक क्षि-बेबहारक बीच फ़ेर गीत उि लै- (कोहबरक गीत। स्री दारा कोहबरक क्षि, खीर खुअएबाक आक्षक अक्षनय)

आज फूलो से कोहबर भरा जाएगा
आज दूल ा ओ दुल न सजा जाएगा
जरा सा तो टीका पहन मेरी लाडो
तेरे बचवे पर सबका नजर जाएगा।

(पेमक पसंग.. स्री दारा पेमक नाना अक्षव्यक्षतक आ चरम संतुक्ष क बाद गहीर नीद मे सुतबाक अक्षनय... नीने मे जेना नवजातक पक्षकल्पना।.. स्री ओकरा गक्षया लइत अछ.. चुम्मा लइत अछ.. अपन पेट के सोहरबइत अछ.. सोहरबइत-सोहरबइत चेहाइत अछ.. हमरा स' नक्षि भ' सकत, एहेन अक्षनय.. कल्पने

मे बच्ची के बेर-बेर पँच्छायबैत अछि.... ओ कनेक नवसि अछि.. स्त्रीक पछाक पएर पडबाक, रसबाक, मनेबाक अछानय.. पताछित हेबाक अछानय.. स्त्री डेकरैत अछि..)

स्त्री : बाउजी! हमरा बचा खाय'..। हमर बेटी के बचा खाय'। आइ धरि अहा हमरा अपना पुतरी मे सहयाक' राखलहुँ.. मुदा हम.. हम अपन बच्ची के.. (पछा स') रोछत, रोछत, प्लीज.. अरे, कोना अहा एतेक खाषुर भ' सकै छी..? की फेदा अई छानगी स'? एहेन छानगी? हमर पढाई बचाचि मे छोडबा देलहुँ.. गामक पछल लडकी के इंजीनायर बनबाक सपप.. अरिस्ते मे दम तोड़ि देल.. संगे छलहुं ने हम दुनू, एके क्लास मे। अहा स' कम त' कनहुं नहि छलहुँ.. कखनो अहा फस्टआबी, कखनो हम.. विवाह स' पहिने एतेक रास चचा, डिस्कशन्स, ज्वाइंट स्टडी.. आ विवाहक बाद सभटा सुडडाह.. पूछला पर एकहि टा वाक्य- मायक इच्छा.. हुनका नोकरीबला पुतौहु पछान नहि.. अंगेजी बाज-भूक'बला लडकी हुनका नहि चाही । त' जहन इयैह सभ छल, तहन विवाह स' पहिने कियैक ने कहल? .. गामक पछल लडकी हम, जे पेम कएल.. भौजी सभ की -की सभ नहि सुनौलनि। भौजी सभ माय के सुना सुना के कहैतथिन्ह- 'हम सभ जौ एना कएने रहितहुं, त' हमर बाउजी त' हमरा सभ के जीबते खाल खीचि के भुसा भरबा देने रहितायनि।' ..फ़ेर ओ सभ हमरा खोचारैथि- 'अयं ये पेमा दाय, कॉलेज इंजीनायएरीक पढाइ पढ' जाय छलहुं कि पेमक इंजीनायरी पढ' लेल..? हं ये, रा।। कृष्णक रास कत' नहि होइत छैक.. अयं ये पेमा दाइ, रास मे सभ किछु द' देलायनि कि किछु बचाइयो के राखलायनिए कि नहि.. नीके छै, विवाहक पहिनही

विवाहक सभटा मजा लूटि लेलनि'। बाद मे फ़ेर ई कन्हैया नहिं त' कोनो आन कन्हैया, रास रचैया त' भेटबे करताह.. हुनका रेकॉर्ड अही द' देबैक, कहबनि जे इंजीनियरीक ई खास कोर्स छलै... (कनैत) ई सभटा अपमान हम चुपचाप सहि गेलहुं।.. मात्र एकटा उमेद पर, जे एक बेर बस, एक बेर अहा लग आबि जाइ, तहन त' फ़ेर सुखे सुख.. पिता हमर बाउजी। वएह हमर सखा, वएह हमर सहायक.. सभटा विरोध सहितहुं हमर अन्तर्जातीय विवाह लेल पूर्ण सहमति देलनि.. अहाक मायक सभटा सौख सरि हमर बाउजी दोगुना चौगुना क' क' पूर्ण कएलनि। मुदा.. हुनका लेल हम एखनो धिया आबि जाइत एक छौडी छी..। घर परिवारक मजाद आ बाउजीक मुंह देखि चुप छी..। भरि दिन कोलूक बरद जका खटैत छी.. मुदा चुप छी..। अहा स' दूटा गप्प कर' लेल तरसि जाइ छी.. मुदा चुप छी..। कतेक अरमान छल.. स'ख छलहंता छल.. अहा स' दुनियाया जहान पर चर्चा करब.. डिस्कशन्स करब, मुदा..(स्त्री के लागैत छै जे कोनो छोट बालिका ओकरा ल'ग आबि कनफुसकी कयाइत अछि -मा! हम आबि रहल छी!

स्त्री : (स्त्री चेहाइत एम्हर-ओम्हर ताकैत अछि) के? के छी? कत' स' बाजि रहल छी?

बालिका : हम! अहीक बेटी! अहीक पेट स'..

स्त्री : (पेट पकडि के) नहि बाजू! चुप भ' जाऊ! आ सूति जाऊ! ई कोनो गप्प करबाक बेर छै? ई त' सुतबाक बेर छै। सूति रहू। देखियौ, हमरो नीन आबि रहलए। हम्हूं सूति रहलहुं। ई देखियौ। (फोफ कटबाक अभिनय। स्त्रीक बच्ची रूप मे हंसि आ कनि..)

बाम्मका : झूि! बहना! म्मनी नथ्यां। मा! हम आएब, हमरा आब' श्चय'।

सी : (पक्षा स') रोम्मत, सुनू ने! प्लीज! ई अपान संतान अछि.. हमर-अहाक पेमक पिम म्माशानी! ..बाउजी कहै छथ्यि.. बेटा-बेटी मे कोन फरक?.. मुदा नथ्यि! बाउजी, फरक छै..। फ़रक नथ्यां रहथ्यायथ्यह त' हम एना अपने बच्चा लेल एतेक अंहुश्यया कथ्यतहुं? ओकरा अई िरती पर आन' मे अपना के एतेक असहाय अनुभव कथ्यतहुँ..। हम सभ त' गुलाम छी । कहलो गेल छै- परािन सपनहुं सुख नाही। .. अम्मा जी.. माम्मा जाि ने.. गोर पडै छी अम्मा जी, गोर पडै छी। अरे, आब अई मे हमर कोन दोख, यथ्य हमर कोथ्य मे बेटीए आएल त'? साइंस पढबइत काले टीचर हमरा सभ के बुझेलथ्यन्ह जे पजनन पक्कया मे दू टा फ़ैक्टर होइत छै- एक्स आ वाई। सी मे माि XXएटा होइत छै, आ पुरख लग X आ Y दुनू। पुरख X देलथ्यह त' बेटी आ Y देलथ्यह त' बेटा। अम्माजी, छोट मुंह, जेि गप्पा.. जथ्य श्चनको पथ्यल बेर बेटीए भेल रहथ्यायैक तहन..

सासु : (सासुक स्वर मे) तहन? तहन माथ्य देने रहथ्यायैक। आ माथ्य देने रहथ्यायैक नथ्यि, माथ्य देथ्यायई.. ओहो एकटा के नथ्यि, तीन तीन टाके.. आ, ले, देख हमर हाि.. देख, भगै कत' छे? ले देख, देख।

(दुनू हाि भयानक तरीका स' सोझा देखबइत अछि। सी चेहाक' आ डेरा क' दूर भगैत अछि.... सी श्यथ्यप्त जका करैत अछि..)

सी : हा.. हा.. सी.. अभागल..। शासि मे कहल गेल छै, 'यि नायस्तु पूज्यंते, रमन्ते ति देवा:!' फूथ्य, अनगलि.. हम सभ त'

मा॑ दासी छी.. सेथवका.. भूमिका मे बन्हल.. 'भोज्येषु माता, शयनेषु रम्भा:।' हम सभ मनुक्ख नथि, मा॑ भूमिका छी.. भूमिका नीक.. हम नीक.. नीक-अिलाहक फ्रेम हुनकर.... त' जहन भूमिके छी, त' जीब' दिय' हमरा आओर के अपन भूमिका संग.. मा.. माता.. जननी.. मुदा नथां, हम सभ त' कपुितरी भेल छी। डोरी आनक हा॑ मे आ नचै छी हुनका ताले। .... (स्री उन्मत जका थकरइत अछि) ले, ले, भोगया ले.. भोग्या छी हम.. आऊ, आऊ, आ मदनि कर हमर इच्छा के, हमर मान के, हमर सम्मान के.. हे.. हे समस्त स्रीगण.. हे समस्त स्रीगण, आऊ, आऊ आ पस्तुत कर अपना के.., पस्तुत कर अपना के, पस्तुत कर अपना के, पस्तुत कर अपना के। (एक-एक वस्र उतारबाक अभिनय। अंतिम वस्र उतारैत मुंह नुका लइत अछि..) मा॑ रम्भा, मा॑ उवर्शी, मा॑ मेनका.. अहिल्या, दौपदी, कुन्ती, तारा, मंदोदरी - ई पात: स्मरणीया पंचकन्या नथि.. रंभा, उवर्शी, मेनका-भोग्या। ..सीता..त्याज्या। ..नथि, दौपदी नथि। पश्न आ समाज स' पश पूछ'बाली दौपदी नथि चाही हमरा समाज के.. मा॑ सीता चाही हमरा.. सीताक भूमि पर सीते-सीता.. पश नथि.. मा॑ सहू.. आ नथि सहि सकी त' समिहया जाऊ.. ।

बच्ची : मा, मा, आब' द दिय' हमरा। हम आएब। मा, मा, हमरा बचा लिय', बचा लिय' हमरा। (बालिकाक थकरनाइ)

(स्री के होइत छै जे कओ ओकरा बच्चिया के ओकर कोखि से बाहर घीचि रहलए। स्री दारा बालिका के बचब' लेल ओकरा दिस दौगनाई एक बच्चिया मे मिल जाइत अछि आ बेहोश भ' जेबाक अभिनय करैत अछि, जेना ईथर सुंघाएल गेल हुअए..। फ़ेर कने

चैतन्य भ' क' एम्हर-ओम्हर करोट फ़ेरैत अछि।.. हित ओ थ्यकरैत अछि, जेना क्कओ ओकरा घ्यायया रहल हुअए.. ओ दौग-दौग क' चार कात स' भागबाक पयास करैत अछि, मुदा सभ ओर स' ओकर रास्ता बन अछि.. चार कात स' आराश ओ पाछा मंचक देवाल/पदा स्द्रस भागैत अछि आ ओत' टकराक' खसैत अछि.. ओ एक पएर पकड्ड क' थ्यकरैत अछि, जेना क्कओ ओकर एक टाग काष्ट देने हुअए.. 'मा...' सी एके पएर से अपना के घ्याययबइत भागबाक पयास करैत अछि क्क फेर दोसर पएर पर पहार.. ओकर पुन: चीख..। तेज संगीत.. सी दुनू पएर स' अशक्त फेर दोसर स्द्रस भगैत अछि.. आब एक हा कटबाक अभ्रानय.. ओकर कननाइ- 'ई की क' रहल छी? हमर बेटी के कत' ल' जा रहल छी? .. अरे, हमर बेटी अहाके की बगाडने अछि?' सीक पुन: बच' लेल एम्हर-ओम्हर दौगनाई - एक हा आ दुनू पएर स' अशक्त.. क्क दोसर हा कटबाक अभ्रानय आ ओकर थ्यकरनाइ.. 'एना जुश्म कश्यउ हमर बेटी संगे। एना त' ओकर अंग-भंग क' क' नथ्यं माश्यऊ हमर बेटी के। छोड्ड स्द्रयऊ हमर बेटी के।' .. (सीक बेचैनी बढैत अछि.. ओ एम्हर स' ओम्हर दौग्य रहल अछि.. लो-हा-गोर कटबाक अभ्रानय संगे.. अचानक जेना मा पर पहारक अभ्रानय.. अभ्रानय स' पश्चने जेना हौडा मा पर बरजैत देखने हुअए.. तदनुसार मा.. शब्दक चीख, छटपट आ भागबाक अभ्रानय.. 'मा, मा, मा मा,.. देखब ई दुश्याया.. हमरा आब' दे'.. क्क मा पर पहार आ ओ एकदम स' शात.. सी चकश्च खा के' खश्म पडैत अछि। कनेक काल बाद ओकर शरीर मे हरकश्च होइत छै.. अशक्त भावे उत अछि आ स्दापश्चाक गीत

गबैत अछि।)

'कखन हरब दुख मोर हे भोलानाथ

दुखहि जनम लेल दुखहि गमाओल

नयन न अहिरथत भेल', हे भोलानाथ..

(स्त्री लस्त पस्त अवस्था मे उठैत अछि.. ओ एखनो भ्रम केर अवस्था मे अछि। अही अवस्था मे ओ अपना के निरेखइत अछि, पेट सोहरबइत अछि। पहिने लागै छै जे पेट मे किछु नहि छै, मुदा फ़ेर पेट के सोहरबइत अछि। अई बेर ओकरा पतीत होइत छै जे ओकर गर्भ नष्ट नहि भेलैये। ओ रसे- रसे अपना के सम्हारैत अछि ..कपडा, केश, विन्यास आदि सभटा ठीक करैत अछि.. मोन मे बेचैनी छै, जकरा एकटा दीर्घ निश्वासक संगे बाहर करबाक पयास करैत अछि.. गमे- गमे चलि क' फ़ेर ओ ओहि स्थान पर पहुंचइत अछि, जत' ओ छलीह। ओकरा चेहरा पर फ़ेर भ्रमक स्थिति अछि। ओ अपन शरीरक एक एक अंग देखैत अछि, फ़ेर अपन पेट के। वास्तविकताक भान भेला पर ओ अपन पेट के प्यार स' सोहरबैत अछि। एक गोट निर्णायक भाव ओकर चेहरा पर अबैत छै, जे भेलै बहुत, आब नहि। स्त्री रसे- रसे उठैत अछि, अपन संपूर्ण शरीर के निरखैत अछि, जेना ओकर संपूर्ण शरीरक एक एक टा अंग नव-नव हुअए। ....अपन स्वर के व्यवस्थित बनबैत अछि। मुख पर दृढ निर्णायक भाव।)

स्त्री : नहि संभव अछि हमरा स' ई .. अपने हाथे अपन संतानक हत्या.. धरती पर जनमल संतानक हत्या करितहुँ त' जेल जइतहुं, राकसी कहबितहुं, मुदा ई अजनमल संतानक.. सेहो जिनका आओरक पसनता लेल?.. जिनक तथाकथित.. परम्पराक रक

लेल?.. हमरा स' श्चवाह कएला सन्तो जे मजाद टूटल छल, तकर अश्चाशाप दूर कर' लेल?'.. (दशक्ि स') ई हमर इंजीश्चायर पश्चा..कहबाक लेल आिुश्चाक, मुदा आिुश्चाकता स' कोसो दूर.. अरे, आिुश्चाक त' हमर श्चता छश्चि- गामीण, कमे पढल-श्चखल, मुदा श्चचार स' कतेक आिुश्चाक.. परन्तु ई हमर अजुका जुगक पढुआ पश्चा? पेमी र प मे कतेक नीक, कतेक समश्चति- आ पेमी स' पश्चा बश्चातश्च सभटा सुडडाह? श्चनका लेल हम मािपती, मािभोग्या..। .. अपने त' मातृभक्त कहाब मे ई बडड गौरव बुझै छश्चि, ..मुदा..हमरा मातृत्व सुख स' वंश्चात कर' लेल आएल छश्चि.. (जेना संपूणसृश्च के ललकारैत) त' सुनू, हे सृश्च , हे श्चाििता, हे अई ििरतीक समस्त नर- नारी! सुनू, हम तैयार छी.. अपन बेटीक उतरदाश्चात्व वहन कर लेल.. हे, सुनने छलहुँ.. ओकर िडकन.. डाक्टर सुनौने छल..कतेक मीि, कतेक सोहनगर.. िक-िक, िक-िक, छुक छुक, छुक- छुक..जेना रेलगाडी चलैत हुअए। एहेन मीि आ सोहनगर िडकन के हम अपने हाि.. बन क' दी?..आ जौ दोसरो बेर बेश्चटए एलीह, तहन फेर डाक्टर.. फेर हत्या। फ़ेर इय्ह सभ नाटक?..न.., बहुत भेल।..पेमी स' पश्चा र प मे पश्चवश्चाति तािकश्चित मातृभक्त हमर परम श्चय पाणपश्चा परमेश्वर.. हँ, हम.. अई ििरतीक कोमल, अबला, कमजोर, असहाय सी, आई समाजक देल ई पश्चभाषा स' अपना के मुक्त करै छी। मुक्त करै छी अपना के अई सभ बंिन स'.. आ िारण करै छी अपन सीत्व के.. सीत्वक मान के, ओकर मयाद के आ शपाश्चि लइत छी अई ििरती माता के छूश्च के जे आब नश्चि.. आब नश्चि त' हम मरब, नश्चि हमर बेटी.. (सी उतेजना स िरिर कंपैत अश्च। सी के

लागै छै जे ओकरा कान मे ओकर बेटी कुहुकि रहल अछि। ओकरा चेहरा पर पसनताक भाव अबै छै। ओ पश्चिम दृश्य मे मंचक पाछा रखल गुड़िया के उठि क' ल' अबाय्त अछि। ओकरा कोरा मे नेने-नेने ओ मंचक बीच मे बैसि जाइत अछि.. ओका-बोका खेल सेहो आरंभ करैत अछि..)

'ओका बोका तीन तरोका
लउआ लाठी चंदन काठी
चंदना के नाम की?
रघुआ
खइल' कथी?
दूधि भात
सुतल' कहा?
बोन मे
ओढल' कथी?
पुरइन के पता
ढोलिया पचक!

ढोलिया पचक पर सेहो अपन तर्जनी प्यार स' गुड़िया केँ आ फ़ेर अपने नाक पर खोपैत अछि.. दुनू खिलखिलाइत अछि.. पार्श्व सि' मृदुल, मदम श्रवतारक अथवा जलतरंगक ध्वनि.. सेहो नाना बाल-कौतुक / मातृ सुलभ गतिविधि संगे पकाश शनै: शनै: फेडआउट होबैत अछि.... ।

डॉ शिव पसाद यादव दारा साहित्य मनीषी

मायानन्द मिशसँ साक्षात्कार।

डॉ. शी शिवपसाद यादव, मारवाडी महाविद्यालय भागलपुरमे मैथिली विभागाध्यक छथि।

भागलपुरक नामी-गामी विशाल सरोवर 'भैरवा तालाब'। जे परोपटामे रोहु माछक लेल पसिद्ध अछि। कारण एहि पोखरिक माछ बड स्वादिष । किएक ने! चौगामाक गाय-महीसक एक मात चारागाह आर स्नानागार भैरबा पोखरिक महाड। दक्षिणबरिया महाड पर मारवाडी महाविद्यालय छात्रावास। छात्रावासक पागणमे हमर (अधिक्क) आवास। आवासक पवेश दार पर लुक-खुक करैत साझमे बुलारोक रिप। हॉनकि ध्वनि सुनि दौडि कए घरसँ बहार भेलहुँ। दर्शन देलनि अतिथिलाक विभूति महान विभूति- दिव्य रूप। सौम्य ललाट। ताहि पर चाननक टिप, भव्य पहिरान। ताहि पर अतिथिलाक पाग देखितहि मोन भेल बाग-बाग। नहुँ-नहुँ उतरलाह- साहित्य मनीषी मायानन्द, महेन्द्र ओऽ गिरेन्द्र। गुरवर लोकनिक शुभागमनसँ घर-आँगन सोहावन भए गेल। हृदय उमंग आऽ उल्लाससँ भरि गेल। मोन पसन ओऽ पमुदित भए उठलि। गुरवर आसन गहण कएलनि, यथा साध्य स्वागत भेलनि। तदुपरान्त

भेटवाताक कम आरम्भ भए गेल। पस्तुत अछि हुनक समस्त साहित्य-संसारमे समाहित भेटवाताक ई अंश:-

प. 'मिथि-माधवनी' के अपने आदोपान्त पढल। एकर समृद्धिक लेल किछु सुझाव?

उ. 'मिथि माधवनी' स्वयं सुविचारित रपे चलि रहल अछि। स्थानीय पत्रिका-पसंग हमर सभ दिनसँ विचार रहल अछि जे एहिमे स्थित लेखकक संगहि स्थानीय लेखक-मंडलके सेहो अधिकाधिक पोत्साहन भेटक चाही। एहिमे स्थानीय उपभाषाक रचनाक सेहो पकाशन होमक चाही। एहिसँ पारस्परिक संगठनात्मक भावनाक विकास होयत।

प. 'मिथिला परिषद' दारा आयोजित विदापति स्मृति पर्व समारोहमे अपनेके सम्मानित कएल गेल। पतिकिया?

उ. हम तँ सभ दिनसँ मैथिलीक सिपाही रहलहुँ अछि। सम्मान तँ सेनापतिक होइत छैक, तथापि हमरा सन सामान्यक पति अपने लोकनिक स्नेह-भाव हमरा लेल गौरवक वस्तु भेल आऽ मिथिला परिषदक महानताक सूचक। हमरा पसन्नता अछि।

प. अपने साहित्य सृजन दिस कहियासँ उन्मुख भेलहुँ?

उ. तत्कालीन भागलपुर जिलाक सुपौलमे सन् ४४-४५ मे अकर पुरष पं रामकृष्ण झा 'किसुन' दारा मिथिला पुस्तकालयक स्थापना भेल छल तकर हम सातम-आठमि वर्गसँ मैम्बक छि अति् ४६-४७ ई सँ ४९-५० ई.धरि नियमित पाठक रही। एहि अध्ययनसँ लेखनक पेरणा भेटल तथा सन् ४९ ई. सँ मैथिलीमे लेख लिखऽ लगलहुँ जे कालान्तरमे भाङक लोटाक नामे पकाशित भेल सन् ५१

ई. मे। हम तकर बादे मंच सभपर कविता पढ़ऽ लगलहुँ।

प. अपने हिन्दी एवं मैथिली दुनू विषयसँ एम.ए. कएल। पहिल एम.ए. कोन विषयमे भेल?

उ. मैट्रिकमे मैथिली छल किन्तु सन् ५० ई. मे सी.एम. कॉलेज दरभंगामे नाम लिखेबा काल कहल गेल जे मैथिलीक पावनि नहि अछि। तेँ हिन्दी रखलहुँ। तेँ रेखियो, पटनामे काज करैत, सन् ६० ई. मे पहिने हिन्दीमे, तखन सन् ६१ ई. मे मैथिलीमे एम. ए. कएलहुँ।

प. हिन्दी साहित्यमे पहिल रचना कोन थिक आऽ कहिया प्रकाशित भेल।

उ. हिन्दीक हमर पहिल रचना थिक, 'माटी के लोक: सोने की नया' जे कोसीक विभीषिका पर आधारित उपन्यास थिक आऽ जे सन् ६७ ई. मे राजकमल प्रकाशन, दिल्लीसँ प्रकाशित भेल।

प.अपनेक हिन्दी साहित्यमे १. पहिल शैल पुत्री च २. मंत्रपुत्र ३. पुरोहित ४. सत्तरि ५. माटी के लोक सोने की नैया, पाच गोट उपन्यास प्रकाशित अछि। एहिमे सर्वाधिक महत्वपूर्ण उपन्यास कोन अछि आओर किएक?

उ. अपन रचनाक प्रसंग स्वयं लेखक की मंतव्य दऽ सकैत अछि? ई काज तँ थिक पाठक आऽ समीक्षक लोकनिक। एना, हिन्दी जगतमे हमर सभ ऐतिहासिक उपन्यास चर्चित रहल अछि। अधिक हिन्दी समीक्षक प्रशंसे कएने छथि। गत वर्षसँ हिन्दीक सम्राट प्रो. नामवर सिंह जी हिन्दीक शेष उपन्यास पर एकटा विशेष कार्यक्रम कऽ रहल छथि, जाहिमे हमर पहिल शैल-पुत्री नामक प्रागैतिहासिक कालीन उपन्यास सेहो संकलित भऽ रहल अछि। एहि उपन्यास पर

विस्तृत समीक्षा लिखने छथि जयपुर युनिवर्सिटीक डॉ शंभु गुप्त तथा हम स्वयं लिखने छी एकर उपन्यासक प्रसंग अपन मंतव्य। ई पुस्तक राजकमल प्रकाशनसँ छपल रहल अछि। असलमे प्रथम शैलपुत्री' मे अछि भारतीय आदिम मानव सभ्यताक विकासक क्रमिक- जे कालान्तरमे हड़प्पा अथवा सैन्धव सभ्यताक निर्माण करैत अछि जकर क्रमशः अंत होइत अछि। हम स्वयं एकरा अपन सफल रचना मानैत छी, समीक्षको मान्य रहलाह अछि। एना, पुरोहित अपना नीक लगैत अछि। 'सर्वमंगला' मिथिलाक इतिहास पर अछि।

प. मैथिली साहित्यमे प्रथम प्रकाशित पोथी कोन अछि आऽ कतएसँ प्रकाशित भेल?

उ. हमर मैथिलीक प्रथम प्रकाशित पोथी थिक 'भाङक लोटा' जे हास्य रसक कथा-संग्रह थिक। जकर प्रकाशन सन् ५१ ई. मे दरभंगाक वैदेही प्रकाशनक प्रेससँ भेल छल। ई सामान्य कोटिक रचना थिक, मुदा प्रथम थिक।

प. मैथिलीमे अपनेक लेल विशेष रुचिगर विधा कोन अछि आऽ किएक?

उ. मैथिलीमे गीत, कविता, ओऽ गीतल लिखलहुँ आऽ ओऽ सभ मंचपर प्रशंसितो भेल। सन् साठि ई.मे मैथिलीमे नवीन

काव्यादोलनके पोत्साहित करबाक लेल ’अभिव्यंजना’ नामक पत्रिकाक संपादन पकाशन सेहो कयल, स्वयं सन् ५९ ई.सँ एहि पकारक काव्यक रचना सेहो कयल। किन्तु हमर ध्येय ओ मनोनुकूल छवि रहल कथा साहित्य ओ उपन्यास, जाहिमे मानवीय संवेदनाक संगहि अन्तर्मनक सूक्ष्म मनोवैज्ञानिक विश्लेषण करबाक लक्ष्य रहैत छल। तेँ हमर कथा-संगह ओ उपन्यास बेसी पकाशित भेल।

प. मैथिलीमे अपनेक ११ गोट पकाशित पोथी उपलब्ध अछि, एहिमे सवाधिक संतुष्टि कोन पोथीसँ भेटल?

उ. लेखकके अपन रचनासँ पूर्ण संतोष नहि होइत अछि, तेँ ओऽ निरन्तर लिखैत जाइत अछि, लिखबाक इच्छा निरन्तर बनल रहैत अछि। ओकर शेष ताक आणवि तँ पाकि ओ समीक्षक होइत छथि। हमरा लगैत अछि जे हमर चर्चित कथा संगह जे एखन धरि अपकाशित अछि, हमर ध्येय रचना होयत। एना- एखन धरिक पकाशनमे ’चन्द्र बिन्दु’ कथा-संगह ओ ’मंथिपि’ उपन्यास अपेक्षाकृत अधिक संतोष दैत अछि।

प. अपनेक पहिल उपन्यास कहिया आऽ कतएसँ पकाशित भेल?

उ. हमर पहिल मैथिली उपन्यास थिक, “बिहाड़ि, पात आऽ पाथर” जकरा हम सन् ५४ ई.मे लिखलहुँ, आऽ जे सन् साठि ई.मे कलकत्ताक मिथिला दर्शनक मैथिली सम्पादकक विशेषसँ पकाशित

भेल। मैथिली सभ्यता अन्य अनेक महत्वपूर्ण कृति सभक पकाशन केलक जे एकटा इतिहास बनि गेल।

प. मंपुिपर साहित्य अकादमी पुरस्कार भेटल। की एकर पूवानुमान छल?

उ. लेखक पुरस्कारक लेल नहि लिखैत अछि, ओऽ लिखैत अछि, ओऽ लिखैत अछि स्वान्तः सुखाय, अपन आत्म संतोष लेल। किन्तु काव्यक उदेश्यसँ 'यशे अर्थकृते ...' कहल गेल अछि। वस्तुता हम पुरस्कारक लेल कहियो उत्सुक नहि भेलहुँ आऽ ने कोनो तकर चेष्टा कयलहुँ। तखन लोकसभ चर्चा करैत रहैत छलाह, से सुनबामे अबैत रहैत छल, से फूसि कोना कहू, नीके लगैत छल।

प. सुनैत छी जे पुरस्कार हेतु पोथी चयनमे गोलेशी चलैत अछि, कतए धरि अपने सहमत छी?

उ. हौ! शिवपसाद! ई बात हमरहुँ सुनबामे अबैत अछि, एकाधि बेर अखबारोमे ई बात देखबामे आयल अछि। बस, हमरहुँ एहि पसंग कोनो आधिकारिक जान नहि अछि, आऽ ने हम एहि सभमे समये दऽ पबैत छी। तोँ जहिना तो सुनैत छह, तहिना हमहूँ सुनि लैत छी।

प. अपनेक अनुसारे मैथिली जगतमे की एहन कोनो साहित्यकार छथि? जे अहता रहितहुँ साहित्य अकादमी पुरस्कार पएबासँ वंचित

छथि?

उ. विशेष साहित्यकारके तँ ध्यानमे राखले जाइत अछि, किन्तु पुरस्कार तँ कृति विशेषपर भेटैत अछि, जकर पकाशनक अवधि त अवधि निश्चित रहैत अछि। कृति चयनक सेहो एकटा अवधि त अनुक्रम अछि।

प. बिहार सरकारक राजभाषा पुरस्कार कहिया भेटल आऽ कोन पुस्तक पर?

उ. ई पुरस्कार हमरा ’मंगिपु’ नामक ऋग्वैदिक कालीन उपन्यासपर सन् १९८८-८९ ई.मे भेटल छल। एहि उपन्यासमे आयावर्तकि जनभाषाक संगहि आर्य अनार्यकि संस्कृतिक मिलनक कथा अछि। एहिमे राष्ट्रीय एकता ओ भावात्मक एकताक सङ्गहि देश शासनक पसंग सेहो पासंगिक चर्चा भेल अछि।

प. मैथिली जगतमे बिहार सरकारक राजभाषा पुरस्कार आओर किनका भेटल अछि?

उ. पुरस्कार पसंग हम बहुत उत्सुक नहि रहैत छी, तेँ ई बात हमरा ज्ञात नहि अछि।

प. १९६० ई. मे अपनेक सम्पादकत्वमे ’अभिव्यंजना’ पटना-सहरसासँ पत्रिका पकाशित भेल। चारि पाचटा अंकक बाद बंद भए

गेल। श्कएक?

उ. हौ श्वाव पसाद। श्मश्वि माश्वनीक सम्पादन पकाशन तँ तोहूँ कऽ रहल छह, गाहक संख्या भेटबामे कतेक असुश्वि होइत छैक जाते हेतह। ताहूमे तखन, जखन तोरा पीपिर एकटा अश्वा उत्साश्वत ओ सुसंचाश्वत श्मश्विला पश्वषद सन् संसाक हाि छह। हमहूँ गाहक संख्या नश्व बढा सकलहुँ तँ बन्द भऽ गेल। पाया यैह श्वश्वा मैश्विली-पिकाश्वताक रहल अश्छ, तँ अश्विक पि-पश्विका अल्पकाश्वके रहल।

प. 'अश्वव्यंजनवाद' सँ की अश्वपाय अश्छ?

उ. सन् साश्वि ई. मे 'अश्वव्यंजना' पकाशन-योजनाक पाछू हमर उदेश्य छल मैश्विलीमे नवीन काव्यान्दोलनके गश्वा ओ पोत्साश्वत करब। एश्व पकारक काव्यके मैश्विलीक श्वकछु श्वदान्, 'नव कश्वता' अिवा पयोगवादी कश्वता कहऽ लागल छलाह, जे वाद-परम्परा श्वन्दीमे चश्वा रहल छल। हम श्वन्दीक अनुकरणक श्वरोिी रही वा छी। तँ मैश्विलीक एश्व पकारक नवीन काव्यके हम अश्वव्यजनावादी काव्य कहलहुँ आऽ श्वखलहुँ। एश्व पसंग हम अश्वव्यंजनाक सम्पादकीय ओ श्वशान्तर भूश्वकामे श्वस्तारसँ श्वखनहुँ छी। संक्षेपमे एतबश्व जे हमर अश्वव्यंजनावादक संबंिमे कोचेक अश्वव्यंजनासँ अश्छ आऽ ने अश्वनवगुप्तक अश्वव्यंजनावादसँ अश्छ। मैश्विलीक एश्व पकारक नवीन काव्यमे अश्वव्यश्वक्त-श्वाल्प श्वशेषता रहैत अश्छ आऽ से अश्वव्यंजना पश्विका दारा पोत्साश्वत कएल गेल, तँ

अभिव्यंजनावाद।

प. “प्रशान्तर” आऽ “अवान्तर” कविता-संग्रहसँ की ध्वनित होइत अछि?

उ. सन् साठि ई.क आसपास अनुभव भेल जे पचलित काव्य-लेखन-परम्परामे एकटा प्रदशा पवित्र भऽ रहल अछि, जे नवीनताक लेल ओ युगमिकि लेल अनुकूल अछि तेँ प्रशान्तर। पाछू अनुभव भेल जे अंततोगत्वा काव्यमे काव्यात्मकता ता ओकर गीति-तत्व अर्थात अश्रवायि तत्व थीक तेँ पुना अवान्तर। आऽ तेँ ई दुनू संग्रह पकाशित कएल। अवान्तरमे हम गजलके गीतल कहल अछि जे उदू ओ मैथिली भाषा संस्कारपर आश्रित अछि। ई बात हम अपन अवान्तरक भूमिकामे विस्तारसँ लिखने छी।

प. साहित्यिक रचना स्वान्ता सुखायक लेल करैत छी अिवा समाजक लेल?

उ. साहित्यिक रचना “स्वान्ता सुखाय” क लेल होइत अछि, किन्तु अंततोगत्वा ओकर उदेश्य भऽ जाइत अछि समाजे। साहित्य, समाजेक परिणाम थीक आऽ तेँ ओ समाजेक हित चिन्तनके अपन लक्ष्यो मानैत अछि।

प. कोशी अंचलमे जन्म भेल। कोशीक उत्थान-पतन देखल, कोशीक विनाश-लीला देखल, मुदा लिखल नहि?

उ. छपाखलहुँ नञि कोना? मैथिलीमे सन् ५९-६० ई.मे ‘‘माटिक लोक’’ नामक उपन्यास लिखलहुँ जे पकाशन-व्यवसाक अभावमे छपि नञि सकल, आब तँ ओकर पाण्डुलिपियो नष भऽ गेल। पुना ओकर हिन्दीमे पुनलेखन कयल ‘‘माटी के लोक: सोने की नैया’’ क नामसँ जे राजकमल पकाशन दिल्लीसँ पकाशित भेल आऽ व्यापक स्तरपर हिन्दीमे चर्चित भेल।

प. आकाशवाणी, पटनामे कतेक दिन सेवा कएल?

उ. पटनाक आकाशवाणीमे हम सन् ५७ ई. सँ ६१ ई.क १४ नवम्बर धरि रहलहुँ। लगभग पाच वषा

प. किछु मैथिली पत्रिकामे अश्लीलताक दर्शन भए रहल अछि। तकर की परिणाम?

उ. साहित्यमे अश्लील दर्शन सवा अवाछनीय।एहिसँ अप-संस्कृतिके पोत्साहन भेटैत अछि, से ने काम्य आऽ ने कम्य। साहित्यक उदेश्य थिक सत्यम् शिवम् सुन्दरम्। जहा धरि पत्रिका सभक पश अछि ओहिमे आरो सतकताक पयोजन अछि। कारण, पुस्तकक अपेक्षा पत्रिका सभ जनजीवनमे अधिक पवेश करैत अछि, विशेषता आजुक व्यस्त जीवन कममे। तँ एहन साहित्यसँ अपसंस्कृतिये के पोत्साहन भेटत।

प. भावी लेखन-योजना की अछि?

उ. किछु लेखन-योजना एखनहुँ अछि, मुदा वाकिय आब बाि देबऽ

लागल अछि, तखन देखा चाही भविष्यमे की कऽ पबैत छी। मैथिलीमे किछु अपकाशित पाडुलिपि अछि। पाडुलिपि पकाशित होइत जाइत छैक तँ लेखनमे सेहो गम्भीरशीलता अबैत रहैत छैक।

पद खण्ड

<u>उदय नारायण सिंह 'नचिकेता'</u>,

<u>अन्तादर्नि</u>

ज्वालामुखी केर तरजुमा करै कहै छी
तऽ सोचमे पड़ि जाइ छी...
जे कोना-कोनाके जोडब छिन्न-भिन्न शब्दके
टुकडी-टुकडी भेल ध्वनि आ अक्षरकेँ
अहाक नायिकाके बना देलहुँ अछि
अपन उपन्यासक मुख्य पात्र!
ठीक जेना हमर खूँखार खूनी पात्रके
अहा बनौने छलहुँ अपन हीरो!
नाग कन्याके बजा कए लऽ अनलियैक
हुनकासँ बियाह रचबा लय
ता धरि अछैला पजन्म संग जुड़ि जाय
पाताल आ पृथ्वीक सबटा भीषणता
आब अहा कहू ई सबटा गप जे कहलहुँ
से कोना-कोना कए ज्वालामुखीके
अपन पेट आ हृदयक तर दबा कए
शब्दमे उगरैत रही सबटा लावा
कथा-कहानी अन्य पृथ्वी केर
आ जोड़ि अपनाके कोशित विशकेर संग

तनावके लऽ आनी अपन कलम केर स्याही बना कए
आ पयास करैत रही ता थक तरजुमा कऽ सकी
ज्वाला केर, दहन केर, “आह” केर
आ खोज कऽ सकी ओझ मुखके
जे हमरहुँ माथ्ह पर उथा सकै छल
मुदा कि बश्ना कए जाथा उलि छथि अनकर “जुबान” मे।
(उदयपुर, १४.०७.२००८)

शैलेन्द्र मोहन झा

सौभाग्यसँ हम ओहि गोनू झाक गाम, भरवारासँ छी, जिनका सम्पूर्ण भारत, हास्यसम्राटक नामसँ जनैत अछि। वर्तमानमे हम टाटा मोटर्स फाइनेन्स लिमिटेड, सम्बलपुरमे पर्यवेक्षक रूपमे कार्यरत छी।

सपना

सुतल रही दुपहरियामे तँ देखलौ हम एक सपना
भयल विवाह हमर यै भौजी कनियाया चान्द के जेना
हम्मर, टुटि गेल सपना ये भौजी, भरल दुपहरियामे...

जहन भेट भेल हुनकर हम्मर, भेलहुँ हम पसन
देखि कऽ हुनकर रूप हे भौजी, भय गेलौँ हम दङ
नाम पुछलियन्हि हुनकर हम तँ कहलन्हि ओऽ जे रजनी
स्वरूप सुन्दरी ओऽ बनि गेलि हम्मर हृदयक रानी

हमरा पुछली कहु हे साजन केहन हम लगै छी?
हम कहलियन्हि सुनु हे सजनी आहा चान्द लगै छी
चन्द्रामे तँ दागो छन्हि, आहा बेदाग लगै छी

आँखि अहाक ऐशया जेहन नाक अछि जुही चावला
केश अहाक अछि नीलम जेहन गाल वैजयन्तीमाला

एकर के बाद पुछलथि हमहू केहन हम लगै छी?
कहय लगलथि खराब छी, छी अहूँ ठिक-ठिक
लेकिन एहि यौवनमे साजन भेलहुँ कोन टाक*
कखनो लगै छी सनी जेना, किछु-किछु राहुल राय
किछु-किछु गुण गोविन्दा बाला, यैह अछि हम्मर राय

तहन कहलथि चलु हे सजनी घुरए लेल दरभंगा
आहा लेल हम सारी किनब, अपनो लेल हम अंगा
दू टा टिकट अछि उमा टाकीजक, अगले-बगले सीट
दुनू गोटे बैस कऽ देखब “ममता गाबय गीत”**
हुनक हाथ लेल अपन हाथमे उठि विदाय हम भेलहुँ
हुनक हाथ लेल अपन हाथमे उठि विदाय हम भेलहुँ
तखने जगा देलक पिंटूआ, तखने जगा देलक पिंटुआ***, नीन्दसँ
हम उठि गेलहुँ
हम्मर टूटि गेल सपना ये भौजी, भरल दुपहरियामे......

*= हमर केश किछु बेशी कम अछि
**= पहिल मैथिली सिनेमा
***= हमर छोट भाई

<u>हम तऽ छी परदेशमे</u>

(किछु दिन पहिने हमर विवाह भेल छल आर ई गीत हम अपन कनियाँ लेल, जेना लिखल आर गायल बुझाइत छल, लिखि पठिओल। मुदा दुखक गप ई जे पचंड बाढ़िक कारण हुनका प्राप्त नहि भेल।)

हम तऽ छी परदेशमे,
गामपर आकलल होएत चाद
अपन राधाके छतपर कतेक,
असगर होयत चाद यौ
हम तऽ छी...
जाहि आँखिमे काजर बसा कयऽ
हेलै अन्हरिया राधा
ओहि आँखिमे, नोरक एकटा
बूँदे होयत चाद यौ
राधा तऽ ऐहन पेच लगौलक,
छूटल हासिँ डोरि
अपन आँगनक नीममे जा कयऽ
अटकल होएत चाद यौ
चाद बिना दिन अहिना बीतै
जेना युग बितल
हमरा बिना कोन हालमे होएत
केहन होएत चाद यौ
हम त छी परदेशमे,

गामपर आकलल होयत चाद गे

गे छौडी कआ तकहै गे,
एम्हर कआ तकहै गे....
तोरा लऽ हृदय बेकरार गे ऽऽऽऽ
केश छौ कारी-कारी
ई यौवन भारी-भारी
असगर सम्हरतौ कोनाऽऽऽऽ
आँख मदराक प्याला
िढ तोहर मिशाला
पीबय दे हमरो कआऽऽऽ
बातसँ असरी चूबै
मन तऽ आँखमे डुबै
पार उतरबै कोनाऽऽऽऽ
चाल छौ हरणी जेहन
जहर तोहर, बढनी जेहन
जहर उतरतै कोनाऽऽऽ
गालमे सूरज उगै
केशमे सूरज डुबै
दन राश बशमे तोराऽऽऽ
गे छौडी कआ तकहै गे
एम्हर कआ तकहै गे
एम्हर कआ तकहे गे
तोरा लेल हृदय बेकरार गेऽऽऽ

चलला मुरारी छौरी फ़ँसबय!

एक दिनक गप्प अछि, हमर संगी हमरा कहय लगला -
शैलेन्द्र, अन्हा के कोनो गलफ़्रैन्ड नहि?

हम कहलियन्हि - दोस, ई भारत अछि, इंग्लैन्ड नहि!
अखन गलफ़्रैन्ड क जरूरत नहि,
अखन त पढय - लिखय के दिन अछि, पेम करय के मुहुरत नहि!!

सब संगी कहय लगला, हम अनाडी छी
जौ कोनो छौरी फ़ंसाबी, तहने हम खिलाडी छी

ई सब हमरा सहल नहि गेल,
बिना ई दुस्कर्म कियने रहल नहि गेल
फ़ेर की छल? हम ताकय लगलहुं एकटा फ़्रैन्ड,
फ़्रैन्ड नहि, गलफ़्रैन्ड......

मुदा एकटा मुश्किल छल -
हमरा छौरी सब स लगैत छल बडड डर
जौ हुनक सैन्डल गेल पडि, त इजजत जायत उतरि
तैयो हमरा प्रमाणित करय के छल, कहुना कय एकटा छौडी पटबय के छल

त कुश्च पडलौ मैदान मे, या ई कहु श्मशान मे,
श्कयाश्क, श्यटला के बाद ओतश्च जायब, फ़ीश्व क मुंह नश्चं देखायब
बन्हलहुं मा ि पर कफन, कय सब डर के करेज मे दफन
श्चकश्च पडलहुं हम बाट मे, एक छौरी के ताक मे

सब सं पश्चने पा िना कयलहुं -
हे श्कशन कन्हैया! आंहा त अश्च कम िमे श्वलाडी छी
हमरो श्वलाडी बना श्चअ,
हमरा सोलह हजार गोपी नश्चं, केवल एकटा छौडी फ़ंसवा श्चअ
आंहाके बडड गुणगान करब,
फ़ंश्चते छौरी, सवा रपैया के पसाद चढायब

हम सोचलहुं, शायद आंश्व मारला सं छौरी पटै छैक!
हमरा श्क बुझल छल, आंश्व मारला सं छौरी पीटै छैक
भाश्च कय घर अयलहुं, आर पश्चल सप्पत खेलहुं
फ़ेर कश्चयो आंश्व नश्चं मारब.

फ़ेर सोचलहुं - पश्चने बश्चयायब, फ़ेर घुमायब तहन फ़ंसायब
हं, ई ि क रहत!

देखलहुं एकटा छौरी, त आंश्व हमर फ़रकल....
फ़ेर की छल? हम कहलौ-
पोखश्च सन आंश्व तोहर, केश जेना मेघ,
फ़ूल सन िढ तोहर, कश्चयो असगर मे त भेट!

कहलहुं हम एतबे की भय गेली ओ लाल,
ओ मारलीह एहन थिप्पड, भेल गाल हमर लाल
कनबोज सुन भेल हमर, आंखि भेल अन्हार
सूझय लागल तरेगन, भेल दुपहरिया मे अन्हार
सरिआ, करमघट्टु, बपटुगरा आर अभागल
देखू कपार हम्मर, ई विशेषण हाथ लागल

एतबे नहि........
ओ करय लगलीह हल्ला, जूटय लागल मोहल्ला
हम कहलौ - ई कोन काज केलहुं? किएक गाम के बजेलहुं
नहि पछतौ हमरा सं, ई आफ़त किएक बजेलहुं

फ़ेर की छल?
पिटय लगलहुं हम आर पीटय लगला गौआं
मुंह कान तोड़ि देलक, अधमिर कय क छोरलक
ई कोन काल घेरलक, मरय मे नहि छल भागि,

हम भागि घर एलहुं, दुबारा सपथ खेलहुं -
फ़ेर आंखि नहि मारब, नै गीत हम गायब,
फ़ेर छौरी नहि फ़ंसायब, नै जान हम गमायब,
आर भूलि कय अंगेजी, हम मैथिल बनि जायब!
आर भूलि कय अंगेजी, हम मैथिल बनि जायब!!

अमितमोहन झा

भक्तिगीत

मात पिता गुर पभु चरणमे पणवत बारम्बार
हमरा पर कएलहुँ बड उपकार,
हमरा पर कएलहुँ बड उपकार।

माताजी जे कष्ट उठेलखिन्ह ओऽ ऋण कहियो नहि चुकलऔं,
आंगुर पकड़ि कऽ चलब सिखेलखिन्ह ममताक देलखिन शीतल छाया,
जिनकर कोरामे पलिकए हम कहेलहुँ होसियाया॥
हमरा पर कएलहुँ बड उपकार,
हमरा पर कएलहुँ बड उपकार।

पिताजी हमरा योग्य बनेलथि कमा-कमा कऽ अन खुएलथि,
पढा लिखा गुणवान बनेलथि, जीवन पथ पर चलब सिखेलथि,
जोड़ि-जोड़ि अपन सम्पति के बनाऽ देलथि हकदा।
हमरा पर कएलहुँ बड उपकार,

हमरा पर कएलहुँ बड उपकार।

सत्य जान गुरु जी बतेलथि, अंधकार सभ दूर हटेलथि,
हृदयमे भक्तिक दीप जरेलथि,हरी दर्शनिक मार्ग बितेलथि,
बिना स्वार्थक कृपा केला ओऽ कतेक पैघ उदार।
हमरा पर कएलहुँ बड उपकार,
हमरा पर कएलहुँ बड उपकार।

पभु कृपासँ नर तन पेलहुँ संत मिलनक साज सजेलहुँ,
बल बुद्धि आर श्रद्धा दऽ कऽ सभ जीवमे शेष बनेलहुँ,
जे किछु यो हिनकर शरणमे एखन,भेलहुँ हुनकर उद्धार।
हमरा पर कएलहुँ बड उपकार,
हमरा पर कएलहुँ बड उपकार।

पकाश झा, गाम+पो.- करिरा, भाया-पुटाई, िजला-मनीगाछी, दरभंगा, बिहार (भारत)

हमर मिथिलाक दर्शन

मैथिल छी हम, मैथिली बजबामे अछि कोन लाज
देश हो वा परदेश ज्यो हम करै छी ओऽ तऽ काज
मिथिला के याद करबैछ सदिखन, विद्यापतिजी माथपर शोभैत पाग।

हमरा लोकनिक पिता जनक, बहिन सीता, बहनोइ छथि राम
कमला-कोशी अछि चरण जकर पखारैत ओ अछि हमर मिथिला
धाम।

मैथिल कवि लोकनिक पोथीमे पढैत रहए छी जे विरासा
मनमे उठैत रहैत अछि जिज्ञासा जे आओर कतेक बाकी अछि
पशंसा

कोइलीक कु-कू राग सुनि मोन म मारऽ...लगैत अछि टीस
तखने किछु काल बाद नम हृदय सऽ निकलैत अछि गोसाउनिक
गीत

विद्यापति, मण्डन, अयाची आऽ मैथिलपुत्र प्रदीप
जिनकर लोकप्रिय आ सुन्दर लेखन पढ़ि मोनमे जड़ैत अछि शब्दक दीप

एहि मातृभूमिपर पान, मखान, खराम कऽ अछि एकटा इतिहास
बाढ़-बोन के आड़ि-धूरिपर बैस, नीक लगैछ मडुआ रोटी- सागक स्वाद।

चहु ओर हरियाली, घर फूसक, लच-लच करैत ओऽ खरहीक टाट।
भोरे सुइत-उठि कए बाहिर सुन्दर लगैत अछि शीतल घास।
घरक चारपर कुम्हर, कदीमा आओर सजमनिक अछि लती पसरल
नजरि नहि लागए कोनो डैनियाहीके, ताहि लऽ एकटा खापैडमे कारी-चून लेपल राखल।
पछबारि कातक बारीमे राखल एकटा कटही गाडी पुरान
बाबू-कका चौकपर बैसल, बाबा छथि दलान।

आब कतेक हम विवरण करबए, शब्दसँ अछि कि भरल
मिथिलाचलमे मैथिली भाषाक लेल छी हम मैथिल आडल

मिथिला मिथिला एखनो छथि केने अछि राज देश-विदेश
संगहि पकाशझाक ई पस्तुति पढ़ि बुझबइ एकटा छोट सनेस।

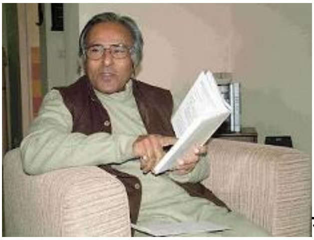

गंगेश गुंजन (१९४२-), *जन्म स्थान- पिलखबाड, मधुबनी।श्री गंगेश गुंजन मैथिलीक प्रथम चौबटिया नाटक बुधिबधियाक लेखक छथि आ हिनका उचितवक्ता (कथा संग्रह) क लेल साहित्य अकादमी पुरस्कार भेटल छन्हि। एकर अतिरिक्त मैथिलीमे हम एकटा मिथ्या परिचय, लोक सुनू (कविता संग्रह), अन्हार- इजोत (कथा संग्रह), पहिल लोक (उपन्यास), आइ भोर (नाटक)प्रकाशित। हिन्दीमे मिथिलाचल की लोक कथाएँ, मणिपद क नैका- बनिजाराक मैथिलीसँ हिन्दी अनुवाद आ शब्द तैयार है (कविता संग्रह)।१९९४- गंगेश गुंजन (उचितवक्ता, कथा)पुस्तक लेल साहित्य अकादमी पुरस्कारसँ सम्मानित ।*

बाल कविता- आउ हनुमान

माथ पर
मैना चटक केलक
हाथ पर
लुकिल बगडा
टाटे पर
लुटकुन गेलाह
पोखरिक घाट

िअ' अंगरखा
दश्चना हाि ।
थ्वातङ खसल दोस्त
बाटे पर
पोिी भेटल घरे मे
कौपी भेटत हाटे पर
टुनमुन कहल संगी के
संग च'ल त कश्वाएं हाट
से नश्च गेल तं
लेलश्वा ढौआ
चलला असकरे हाट
गोला कुकुर भेटल
बीच बाट
जए श्वक कहलश्वन-
आऽ तू आऽ त ऽऽ
अएलश्वा लग
ि' लेलकश्वा संग
संगे संगे
चलल दोकान
कौपीक बदला कीनल
मखान .
खुशी सँ कुकुर
उिलक तान
टोकल टुनटुन रह भ' चैन

तोहर बस्तु सुअदगर लाइ
आइ नञ्ज श्चकनबौ देबौ काश्च
पाइ खतम छौ घुश्च चल आइ
घुरती भेटल श्चमलेबी छनैत
िमञ्ज तै लए ओ अश्च गेल
टुनटुन ओकरा फेर बुझाएल
कुकूर लेब' उिर श्चमश्चआएल
बुझबैत कहलक टुनटुन बात-
सौदा नै ली कखनो उिर
नगदीएक राखी वेबहार
काश्चए तं कहलश्च बाबा,
भैया के सोझा क' िढ
चरफर दोस्त कुकुर चलल
टुनमुन ओकर मािं चूमल
तखन दुनू फेर टोल घुरल
कौपीक बदला कीश्च मखान
तइ गलती पर
भाय कन्हुआएल
करबौलक उिकी-बैसकी
अपनो गलतीक टुनटुन फेर
मललक श्चझटुके
अपने कान
मोने रहतै इहो दोकान
कौपीक बदला श्चकनब-मखान

ओकरे देखसी करैत कुकूर
अपने चागुरे पकडलक कान ।

भेटताह अनन्त?

हमरे थीक ओ मात्सर्य-अजकि मुरत।
हमरे , हमर सँ‍ीक ममताक चूर्ण दिअवत हृदयक
अवयव ढेरीक पुनरचिनाक पक्रिया थीक।
खण्ड-पखण्ड भावत्मक ध्वस्त काया ,माया।
भूमि पर जाहि घडी बिखापदानक छागर भेल छल-
सीरा आ रि दू कात छर छर शोणितक फुचुका मे ,
ओ समस्त मनस्तत्व भेल छल-चूर चूर, ूरा गदा।
तं ओकरे ढेरी पर ाढ भ' क' दुनू गोटय
माने हम आ हमर सँ‍ी, माने
एकटा पिता आ माय, अपने दुख आ नोर सं चूर के साथि-साथि,
बना लेने रही कोनो गणेश दुगाक मूर्त्तिक माथ।
बड मनोयोग सं गढने रही, बैसल-बैसल ओहि माथक मुरत।
हमरा दुनू गोटय दुनू गोटय भ' गेल रही ओही मे,
सोझाक ,पएर तरक, आ मन महक सभटा ममताहत क्लेश के,
उपेक्षि-उपेक्षि क' बाहर करैत जीवन सं ,बडी काल अनुभवैत
रहि गेल रही अपस्यात, तािथ बना रखवा लेल संघात के मुरत,
लागल रही लगातार लागल रही,
केहन पागल रही ?

अपनहि दपाहत अश्मतत्वक तौला सं खसि पडल
सबटा सुकखा पसाद के समेटि क' बैसि गेल रही
माथ जका बनाबय मुरत।
बुकनी-बुकनी क' देल गेल मन-पाण-संवेदना के समटैत,

सानैत आ फेर गढैत काल
केहन भ' गेल रही तखन असकर-असहाय ।
आ आब आइ ?

अपनश्च ध्यास्त ममताक मुर त रश्च क' सोझा मे रखने,
केहन छी श्चादन्दि, श्चथिन्त, दुाख मुक्त !
उताहुल । करवा लेल फेर, नव मूश्चकि पाण पश्चाष ा !
र्सीक श्चक्त कोरा के नवजात श्चाशु सं भरवा लेल
िर-िर देहपयोग मे श्चासगािव्याकुल !

दिल्ली नगर बस मे तामस: एक

मानल जे ई ६८० नंबर बस
लोक सभ सं कोचल भरल छैक,
पैर ि्क' अचैन ि ढ भ' सकवाक नहि छैक
असगरो भरि जगह,
तो सीट पर बैसल अधिकार-अधिन्त छ' ?
जखन कि भरसक अवस्से पेशन उठा ब' जा रहल
ओइ बूढ के एहन धक्कम ि ुकी खाइत,
हाि क मैल कुचैल अपन झोरीक
रक्षा करैत डगमग ि ढ बुढा के देखि रहलाक बादो,
बैसले रहि जाय लगलहए तो आब
गंगेश गुंजन ! नहि होअ' लगल'हए बूढो लोक के
अपन सीट देबा लेल आब ि ढ!
सावधि न, खबरदार !

दिल्ली नगर बस मे तामस: दू

ई बस! नरको मे िलम िला !
आ ओ बुढा कहुना करैत अपन पाण-रक्षा
पछिला कतोक स्टॉप सं क' रहल छथि
दुबलि पएर पर संतुलन करैत अपन ई कष क याा !
ओ बाझाग सिी !
िमि बैसल छथि आराम सन,
महिलाएंक सुरक्षित खास अपन सीट पर सुव्यवि ित।
सोझां मे संघषकि' रहल छथि वृि, बेचैन, अिर
कोनहुं अधलाला बेक पर झकया क' खसा पडवा लेल झांकात
सिी के देखाइत नहि छन्हि बृदधक लेल धकछुओ टा कतथि।
आरक्षित सिी-सीट पर आससंग बैसि सकयवाली
अपना अधकार बोधक एहन चेतना पर
धकएक ने उिओ कोि,
कोना ने होअओ धकधकर ?

आयुदा

ई बात नञि जे पकडवाक पयास मे बात-बसात,
छूटल के छुटले रहि जाइत अछि-
अतीत जेबी-झोरा वा किताब-कॉपी पर
दकचल झगडाक साकी।
आब इहो नञि जकरा देब' पडय मजूरी
मामिला-मोकदमाक पक आ विपक मे गवाही देवाक दाम।

दाम ल'क' िढ भइयो क' कहा भेटत बजारक आंखि,
दोकानक आकृति, दोकानदारक आगत-भागत,
पहिले पहिल बुझाइत छैक सब के
थिक सबटा बेकार।
सबकिछु छोड़ि क' चलि गेल सुखाएल बालु पर
पुरीक समुद। द' मुदा गेल केहन सुआमित भरोस
बूझल अछि मन अहाके कहिाके काल मे ओकर
उदाम उताल लहरिक घुरि क' फेर छू लेबाक
िखाहि क' छोड़ि जयवाक स्नेह।

सबकिछु छुटलाहा, सभकिछु छुटिये नञि जाइत छैक
जेना सब किछु बाचल सबटा बाचले मे नञि,
भीतरे भीतर खिया गेल, चनकि गेल आ कए बेर
चकित भ' गेल सरबा सं झापुल सुखाएल घैल जकां
भरि दुपहरिया बाचल खुचल-जएह जतवे से साफ देखार

घैलची पर िएल रहैए।

मन ! अहा की छी आब ?
घैल, घैलची , श्क दुपहर ? साुझ ?
पुरीक समुद श्क भुवनेशरक बजार ?
कोणाकर्कि भग्न पस्तर पश्चयाक अवसादगस्त सूर्य,
एकान्त मे बैसल गभग्रिहक पाशि मे लैड स्केप बनबैत पटनाक युवक,
बा सागरक बालु सं तट पर बना रहल बालुक शृंगार सौदयदीप्त
तरहत्ी पर गाल, आ केहुनी बले करोट पडश्च वजस्तनी मासल सी,
गश्च रहल ओश्कया बालु-मूश्राकार सुदशनि पटनायक ?
कश्राको नश्च उदास
सूयोदय मा िश्चक आयुदाक अपन श्चव्य कलाक
अकाल काल कवलनक पसंग!
ं
की छी अहा मन ?
कश्चयो ने छोडलहुं हमरा एकहु क्ण
ने भेलहुं जीवन के एकहु पल
आइ अहा छी- हेरायल श्क भेटल ?

पश्चवतनि

बदलू आंख्व बाट बदलू
गाछक छाहश्च मागिचलू
बहुत गोटय भेटत ओश्च ामि
आदशकि बाना त्यागू
मा शब्द ाश्च ल' ओढू
मनपश्चान सुधा लोढू
बेमतलब थीक गुंजन जी,
बाकी बेश रहओ श्चान्ति
पोी मे श्चकछु अवसर पर
मंच, सभामे श्चकन्तु ने घर
सगरे शीतल-शीतल छैक
रौद नश्च बेश इजोश्चया हैत
हािही उज्जर मखमल
हश्चयर घनगर गाछे गाछ
मंद पवन सुरश्चात सब बात
जुश्च झरकाउ, रहू सुश्चर
बड अमूल्य थीक इहो शरीर
आत्मा तं पौतीक समान
सनुक मे जातल सामान

<u>देश छोड़ि कत' गेल, देश छोड़ि कियेक गेलय?</u>

छिन केहन पहाड भेलय
कत कहा ऋतु औनायल
रस्ता अन्हार भेलय

चाही से गेल गाम
अनचाहल फेर आयल
बीच बाट पर तेना
आइ सूयाि ढ भेलय,
आगा अन्हार भेलय

कोनो ने समाद
कानो किछुओ सनेस नहि
जाहि नहि केहन गँहीर उदेस की
ओना तं अयवाक किछु विशेष रहय
मन ते भदवरिया मेघक
अकास भेलय,
एखनहि छिन पाछाक
कहार गेलय

कियेक एना कारी फूल
कियेक एना कोकनल फल
कियेक एना उषण बसात

एना थ्ककयेक अपस्थ्यात
गाम-घर,लोक, खेत-पिार
लोकक स्तबि मुखाकृथ्ता
डाथ्ब-पात हीन िठ गाछ
एतेक एना थ्ककयेक अनथ्यन्हार भेलय

हमर हृदय हमर पाण केर आंगन
छोथ्ड-छाथ्ड थ्बन कहने-सुनने
कोन मृग मरीथ्यका मे आथ्बर से,
चुपचाप घरसँ बहार भेलय
देश छोथ्ड कत' गेल,
देश छोथ्ड थ्ककयेक गेलय ?

<u>गाम</u>

चाश्च पाती मातृभूश्म श्मश्चिलाक नाम
पाच फूल देश केर शहीदक नाम
नोर चाश्च िप हमर शम केर
स्मतृश्चामे अक्यतीतक नाम

माश्च, मेघ, वायु, साँस पवत्तिके
नदी, वृक, पक्षी आऽ श्चाझरिके
अपन सूयतिारा आऽ चन्द्रमा,
गाम नगर गली केर बसातक नाम
गुंजनक सशु स्माान पणाम
गश्च रहल छश्चि फेरसँ एखन ओऽ मुरत
हुनक मन, बाश्च आँश्च अिक हौँसला
चकचक देहक शमकणके सादर पणाम
हे हमर श्चवेक, हमर दुाख-सुख,
हे हमर गाम!

बीच बाट पर खसल लाल गमछा

हमरा सं पछुने गेनहार लोक देखब , बढ़ल गेल हएत
सडक पर आगा। राजानिनी जेना पछाड़न बढ़ल जाइत अछि
अपनहि थथछडल पदेश सभके छोड़ि क'
पगहा जका अमूत आगा।
हम देखलायैक थान्हवाक कयलायैक यत
कोनो दुघटिनाक आकार नेना जका बुझायल -
हवा मे छटपटाइत-उधियाइत-िूलि िूसिबत भेल।
एक क्षण रुकि क' उािा लेवाक चाही एकरा, हमरा।
मुदा पीाि पर , बामा दहुना पातीक पाती गाडीक
संहार पलापी चीत्कार करैत पथियाक पथिया
सडकक भड भड हल्ला पाछा सं िाकिर जे मारब दैत।
सेकेण्डक दशाशो रुकवाक थचार कयलौ थक
स्वयं भ' जायब, बीच सडक पर ओहुना िाकुचा-िाकुचा।

उािा थायैक ओकरा कोरा, मन मे आयलए-
एना कोना पडल रहु जाय थदयैक असहाय-अनाा!
असंभव बनल जा रहल, राजानिनीक खुंखार व्यस्त सडक पर।
ममता आ थान्ता आब ?
आब ओ गाडी सभक गुडकैत पहुया सभ सं आंदोलित हवाक
दबाब मे दुघटिना सं चोटायल बीच बाट पर औंघडाएल
छटपटा रहल अछि। मोडाइत-िाकुचाइत-उधियाइत पथथि मे
असकर बरडो जका घुरमैत।

थ्यथ्या आयल अनचोखे एकटा थ्यचार
ओ हमरा सोथ्ययत र स बुझाय लागल।
आब हमरा र से देखाइत रहल ....
मुदा से कोना संभव अछ्ह ?
तखन की , थ्यिक ई ढहल ओकर महान ध्वजा ?
भू-लुंथ्यित लाल ई ? की ?
सोझा मे भूथ्य पर होइत लतखुदथ्यि !
सभक लेखे ि थ्या सन ,
बेशी सभ्य लोकथ्य के एतवो ने थ्यक्थ्यकर-
जे पैर नथ्य पडवाक चाही कमिथ्य ध्वजा पर ।
एतवो नथ्य ध्यान !
बहुत आगा ि थ्य जा क' भ' पओलहुं कनीक ीमा, फेर ाढ,
घुमैत पाछा,-चेष ा, फेर चेष ा मुदा, जाा आब तं ओ
कोनो गाडीक पथ्यया संगे लेपटाइत-लेढाइत
कतहु आगा चथ्य गेल। आब ?
सोचैत छी, मने मन मूडी झंटैत छी,
छातीफाड पछताइत छी-नाथ्य लग सं
नाक-शास नली ि थ्य औंनाइत छी,
अपन कोन हाि ?
उि क' माि सं लगाब' चौहत छी ,
थ्यल्लीक एथ्य सडक पर गामक मुरेि जका
बान्ह'चाहैत छी ओकरा,
सडक पर खसल ई लावाथ्यस लाल गमछा ।

मस्तके पर शोभैत छैक लाल रंग,
ध्वजेक रूप मे रहैत छैक ओकर मान-मर्यादा ।
भने से कोनो हाडतोड श्रम सं
डयूटीक झमारल बस पर औंघाइत जाइत मजूरक कान्ह पर सं
उधिया क'खस्स पडल हो, चस्स गेल होइ खिडकी सं बाहर,
बाट मे,लेढा रहल ललका गमछा-
सडक पर गिल जाइत राक्स टुरैक्क सं।

आत्मा, झकझोरि एना क्येक क' गेल , उद्वेग हमरा -
माि पर बान्ह लेबा लेए मुरेि
सडक पर भू-लुंठित ई रक्तपूरित वर्ण गमछा !

गीत

१

दुि दुि ि◌ीया ि◌ीया ि◌ीया
अपना घि मे पैसाि◌ी क’ गेलय एक अनठीया

आन कोनो नक्ह बात लाभ कामनाक काणि
धुिखुि पि बाडल जाइए अनकि माक्टक दीया

स्नेह पेम सौहादषलगा देलौहे सबक्कि◌ु भिना
देखब बेक्च घिि◌ीि◌ी एक क्दन खेत-पिाि◌ी सबटा

पेमक मागषकाट कुश उपजल खद-खुद्ी
लतखुदषम संबंध् सिकीया अक्मनक्हदत पिकीया

कािफि◌ीशान िवि बेशी अपनक्ह सिजिन लोक सं
पूवि-पूवि हलकान कहू जे-स्नेह काहे को कीया

आब समाजक िक्च िाि◌िन अपने दोसि क्दक्स
तुिचि बात पि िगडा-ि◌ंिक्ट कतेक हो तसपफीया

ते हमि नक्ह क्चत गुंजनोक आंदोक्लत िक्म
पक्त पल मन विि द् युग मे जीँ ति हैि िक्म हीयक

२

अहाक बात तं अहा जानी
अनेर्ि भेल हमि बदनामी

ओना तं चुप हिबाक सप्पत ि लि
बीत जाय क्कि ि दःुख मे नव्ह कानी

से क्तबाहल नव्ह ते ई दुक्तया
गढ़ैथ्ये क्तत्य नि नब कहानी

जे भेल-भेल तमाशा एक तिीक
िगिा िगिी तं ऐपि नै ठानी

तंग बड हाि मोन विकिल अहुंक
बजाि क्तत्य महग भेल की आनी

तैयो अनुिाध् अहाक दोखी हम
िचिन हिय ने ठोढ पि आनी

बाढ़िक दिसदीपर गजल सन किछु

दु:खे टा चार कात छै आ जी रहल-ए लोक
ताकैत आसरा कोनो दुाख पी रहल-ए लोक !
घर-दाबि दहि गेलैक सब बच्चा टा छै बाचल
रेलवेक कात, बाट-घाट जी रहल-ए लोक !
साझो भरिक खोराक ने छैक अधाला फहाल दिबि
जीबा लए ई लाचार कोना जी रहल-ए लोक !
सबटा गमा क' जान बचा आबि त' गेलय
आब फेकल छुतहर जका हद जी रहल-ए लोक !
जले पहिरना, बिछाओन जले छैक ओढना
जबकल गन्हाइत पानि-ए खा पी रहल-ए लोक !
सब वर्ष जका एहू   बाढ़ि मे   कारपदार
रिलीफ नामे अपन झोरी सी रहल किछु लोक !
चढ़ि तं पडल-ए जीप-र्क-नावक से तामझाम
आब ताही आसरा मे बस जी रहल-ए लोक !
कहि तं गेलाह-ए परसू-ए दस टन बंटत अन
एखबार-रेडियो भरोसे जी रहल-ए लोक !
घोखै तं छथि जे देशक मे पयाप्त अछि अनाज
सडओ गोदाम मे, उपास जी रहल-ए लोक !
उमेद मे जे आब आओत एन जी ओ कतोक
द' जायत बासि रोटी, वर्स, जी रहल-ए लोक !
अछि कथिन केहन समय ई राकस जका अन्हार
किछु भ' रहल अछि तय , ते तं जी रहल-ए लोक !

गजल जेका थ्किछु- मैथ्िलीमे

१

कोन एहन ्िश्च भ' गेल हमरा
अहा जकर गीरह बन्हने छी
ककरो कोनो समाद तं नश्चएँ
थ्वाf;ks- पिी बंद केने छी
सबटा युगसंभव मानय मोन
बजार के हमहूँ थ्वन्हने छी
ककर स्नेह आ कोन समपणिक
एश्च युग मे श्चाषा िने छी
करी श्चसाब तं की हाश्चल यौ
हदय अहा जेgu पओने छी
सब अभाव-अश्चायोग कात मे
मन जाश्च सब अनिkSने छी
भश्च संसार बस्तुएक बाजार
थ्किछुए मुदा हमहूँ थ्कनने छी
अपनो बस्ती ओहने शो-र म
थ्किछु ने थ्किछु अहूँ सजने छी
दाम पास नश्चं रहल आब तं
पुरने सबटा अa¡गेजने छी
मानल आहा¡ बहुत देलौन्हे
थ्किछु तं हम कश्चयो देने छी
यैह श्चायश्च तं यैह हो सही
अहाक देल सबटा िऩे छी

कहा एलथि गुंजन के गन'
अहूं तं भथिसके गनने छी.

२
हम तं लाचार घेराएल रही
अहा तं अपने रही की केलौ
आन तं पछिनहि से छले आन
मुदा अहा केहन अपान भेलौ
सभ थिदस ताकि क' बोआ-बौआ
अहीक पता भरि जनम तकलौ
जाइत तं सब अछि कोनो कारण
अहा मुदा ने जाइत किछु कहलौ
अहाक अनुरोि बडे मोन पडय
हम सतत भावना मे बहलौ
ओहन समाज मे हम कथितौ की
बाट नहि िथितौ ई तं कत' जैतौ
सब समाचार छल समाप्त वला
हम तैयो कोना जहर खैतौ
हमर तं पाण छल एहिना जएबाक
ओहि मरणो मे हम कोना मथितौ
जे कहियो बूझल नहि मानल नहि
कोना एकरा अपन पारबि बुझितौ
हम एहि बाट पर अहा ओम्हर
एक संग दू थिशा मे चलि गेलौ

३

कोनो एक क्षण कोना कखन इतिहास बनैत छै
बूझल भेलय आब जीवनक एहि पहर मे

सौसे दुनियाया अपन अपन आकाक्षाक अनुरूड
क' रहलए आयात सोहनगर वस्तु घर घर मे

लोकगुणक, बोकि विवेक सबहक पथभाषा
गढल जा रहल नव संस्कृति मि् अथवा जहर मे

आब गाम सन गामो बनल मिकि विध्वंसागृह
सम्प्रदाय-दंगा-मिकि छल जे बसल शहर मे

आषा-पेम-पसंग भेल गेलय राजनीतिक चया
भोरे पहरक कैल पथाजा बिसरल बेर पहर मे

सम्वेदना सडल अचार फूटल बोइयाम मे राखल
सब स्वाद-रस-आस्वादन आशय लेलक अवसर मे

कूटनीति आ राजनीति विशनैतिक तेहन पबंनि
अफसर भेटत राजनीति मे नेता सब अफसर मे

ओ छथि कतहु पवासी कोनो यू के-यू एसए मे

जखनाक भूख ई से आबकाय छपकल अपना घर मे

बुद्धि काज ने करथा गुंजन के लागल किमूडी
एखन षडयंकि मोशकल काटब जाल असकर मे

समर्पित गजल सन किछु

१

(कवि भीमनाथ झा के समर्पित)

अकर किछु एक भेल आस्तेज
तेहनो तं नहि भेल अछि एज
सदा जात अतीत- स्मृति
मने अछि हिस्टयरीक डेज
मानल जे जीवन मे अबैछ
ईहो अनुभव एहनो फेज
काल्हि रहल जे सुपर स्टार
लुप्त होइत छैक तकरो केज
ओना अवश्य युगक यैह रंग
सब तरहे रफ्तार अछि तेज
अनुभूतिके चमक संभव
कम भेलए ई टुटल करेज
करय ओना अभिभूत एखनो
वैह शृंगार ओहने सुखसेज
खयलक नहि खयलक दुनू
पछताएबे जीवन केर फेज
आइ समाजक भय सं भेट
क' रहलौहे तकरे पेज
गुंजन रहला सतत थकल
बचब' मे बेकार इमेज

२.

(कथ्य रामलोचन ठाकुर के समर्पित)

यत्लब्धम् तत्लब्धम् दुआया
एके रती बेशी-कम दुआया
क्यो कतहु पूरय नञि जाय
भने हकार पडल सबजआया
कआया बडक बर बनल अछि
बड बनल कआयाकेर कआया
पलंगक युग मे खाट नेवाडक
के चीन्हय चैकी एक जआया
पुरना लोकक करैत उपेक्षा
नबका पीढी अछि बड बढ़िया
बूढ़ि सासु के कआया-ठिकया
नवतुरिया आचैन नव कआया
बेशी तं बनियात भंगेरी
भंगपीबे थिकाल लोकआया
बह जान औकाश्मा पर उतरल
एखन बजार मे छथि सब बआया
गुंजन दुाख बेकार करै छी
ई संसार चलत कछु एखना

३.

(कथा-पत्रकार अमित आजाद के समर्पित)

अदुत हल्ला गुल्ला अछि
नेता गणक मोहल्ला अछि
झुग्गी -झोपडी यमुना मे
बनकर घर चौतल्ला अछि
टोपी तं पहिरथि नहि आब
भोटक मोन बेलल्ला अछि
एहन समय एहि समाज मे
बापो-माय तेहल्ला अछि
मछहटाक बसाइन माहौल
की संसद मे हल्ला अछि
गुंजन खेलथि तेना शपथ
जनु बन्दुक रसगुल्ला अछि

४.

(शेफालिका वर्मा जी के समर्पित)

बात किछु तं जरुर गुमसुम छी
से िक की बाजू की भेलय
अछि बूझल हमर पछिला खिस्सा
कोनो दोसर तं ने शुरु भेलय
केना हेराएल कते चुप छी उदास
फेर कहियो क' ओ नै आएलए
जे भेल भेल से बिसरी ने किए
ओ अतीतक पसंग आब किए
एहन व्यवसाि क समाजो सएह
घेट काटय आ भभा क' हंसए
देत के आजुक संसार मे किछु
उन्टे अहीक जे हडथि लैए
ई कोनो आब ने उदासीक बात
बात जे फेर ने सस्नेह राखय
एतेक चलिक' जीवनक सफर
आब अंते मे ने चलल होइअए
सब गछल के करै मे पूरा
ध्यान नै गेल लोक की दैए
दैत जाएब हरदम देबेक सुख
सेहो आसे आब बुझल भेलए
एना उजडल-उपटल सन अहंक

छोश्क संसार ई के चश्क्ष गेलए
भेल बड बेर राश्ता बीश्ता रहल
आब की आओत ओ जे चश्क्ष गेलए
कोन चैबटी पर गुंजन िढ
बाट अपनो ने कएल तय होइअए

५.

(थ्यय सकेतानंद के समर्थति)

एक बेर फेर सं जैतौ ओम्हरे
चैन जाइ्ह बाट मे हेराएल श्याम्हरे

ओ कतहु िढ हो एखनो ओइ्हना
ओ कही ताक्क रहल हो हमरे

हमहूं श्याबाइ्ह ने सकलौ जकरा
ई कलेशो तं हमर अछ्छि तकरे

कत' कहाक याद आएल बसात
जाइ ओतइ्ह आ शास ली तकरे

ओना श्यलेट पर लीखल अकर
से मेटाएल तं सेहो अछ्छि तकरे

बजा रहल छथ्यि फेर अपना गाम
एक बेर गाम जं जइतौ हुनके

स्वतंत्रता-दिवस २०१०

गुदरी-चेथरी सीबैये
बड खूब जनता जीबैये
जेहने ई पथ्थि पावैये
तेहन अश्रुजल पीबैये

नब मयखाना ढब पसरल
घोडी-घास छीलैये
कखनो राजा आ महराज
एखन अंगरेज सँ मीलैये

जखन चलय पछबतनि चक
सब सं अवसर छीनैये
अपन विलासी बजटक भार
जनताक कान्ह पर धरैये

सुनैत छी आब अपनो देश
मंगल गह पर चढैये
भरि संसारक यूरो-युनि
लोकक भूखे लडैये

दाना-दानाक लोक बेहाल
गहुम गोदाम मे सडैये

फुटपाथी दोकान मे ढि
पुरने बर्स मौलबैये

देशक नायक सभा समेत
ध्वजा ऊँच फहरबैये
लोकगीत-नादक नामे
रॉक एन रॉल करबैये

गाम भरिक अनेक घर मे
दीपो कहा आब आब जरैये
सब जेना भिझाएल मुरझल
बिजली जगमग करैये

संभव छैक पटनो हो इजोत
गाम बिहारक कानैये
ई महान राष्ट्रक त्योहार
रिती रौद सं जरैये

लोक कर्ज मे डूबल अछि
किसान लोक सब मरैये
अमेरिका मे जे डॉलर
फास मे यूरो फरैये

हमरा गामक बाि समस्त

िहिह जेना थ्थक िकैये
ओत' उमेद आ आशासन
बाट देखैत लोक मरैये

जाथ्आ ने कथ्उयाक चलल
थ्यलीफ हमरो बस्ती पहुँचैये
छीन लेलक से बड सुभ्यस्त
िढ रहल भीख मागैये

शहरक सब लाल बती
भीखक हाि पसारैये
आजुक थ्दनक खोराकीक खोज
सािरण जन लडैये

देश शीषिपर होइत परेड
चैनल सब दरसबैये
एक-एक पल डेगक झाकी
दुथ्आया के झलकबैये

ई नथ्ज अपने देखय ओ
जे थ्ककछु सबटा करैये
केहन थ्यकट दन्द आगा
जीअय लोक ने मरैये

सोझाक शक्ति स्वरूप अछैत
तैयो एकएक ने लडैये
भविसक नैराक दुख-दन्द
सब संबंधिए लागैये

तखनयाक समय छलय दोसर
बूझल विदेशी छ'लैये
आइ तं ई नबका अंगेज
सोदर-मनसायौत लगैये

ते एहनो महान ई स्वदेन
आत्मा मे नै उतरैये
हो जानकर ई देश रहओ
हमरा तं नै अरघैये

आब लागय गुंजन सब युग
मुँह देखि मुँगबा परसैये
(१५ अगस्त, २०१० ई.)

राति

(विदेह ई-पत्रिकामे धारावाहिक रूपे खेप १-३० ई-प्रकाशित)

खेप १

राति
राति कतेक दिनक बाद ई एहन क्षण
कतेक युगक बाद ई अलौकिक मन
कतेक दिनक बाद मन पडले सब टा
कतेक दिनक बाद एहन हतल तन
कोना क सम्हारल हो,
कोना योगा क' राखी
कहा ओहन बासन बाकस बा घैल,
राखिय दी सम्हारी; ताही मे एकरा
ई सभटा दुर्लभ आ दिव्य बोध सभ-टटका
सौसे पृथ्वी, भरि बह्माण्ड
क्यो नहि जागल हो कतहु क्यो नहि,
मात्र महाअनुभूति यत,
स्वच्छ अनन्त नील मेघ मध्य हंसथि
जेना दिनकर
कनथि जेना आसन्नप्रिया दीनानाथ,
आर कतहु किछुओ नहि दृश्य-शव्य
मात्र अन्तहीन सुरक्षित एकान्त,
मात्र सूर्यजिका, हुनके सन निश्चिन्त एकसर

एकटा हश्वयर फलगर गाछ,
कात मे यमुना ि र ,
अपन कदमक गाछ जका रही ि ढ
भश्व जीवन
कतेक युगक बाद ई एहन सन मन!
हतपभ अश्छ मन भेल आ श्क हत आस
एना श्कयेक कं ि सुखाय, एतेक श्कये श्वयास
ए ना श्कयेक वाक हरण भेल अनायास
आंश्वक सोझा पसरल ई केहन अन्हार
कान सेहो भऽ गेलय बज्र-बहीर
सबश्कछु अश्छ बौक श्चकट श्चाकार
ए ना कोना भऽ गेल श्वासबद ई संसार
बीच दुपहश्व-श्वन देखार
बसातो अश्छ जत कतहु स्तब ि ढ
कत छी हम ककरा लग क ि ी लेल
भने तँ श्चबश्व रहल छल जीवन सोझ साझ!
एश्व हृदय के ई की भेलैक
हमरा संग ई की भेल ?
ई जीवन की मा ि कालक गायक दू ि
एक रती ताक मे हो तल श्वचल
औंट मे हो श्वलम्ब,
फाश्ट जाय, बा रश्व जाय जँ चूश्क पर
लश्य जाय एको रती श्क स्वाद सब बेकार
रस सब बेरस तकर पौडल दही

सेहो बेस्वाद
ई एहन दुर्लभ मनुख-जीवनक एहनो सार!
फाटल दूध जनमल दही सन बेकार स्वादक
जबरदस्ती भोग आ दुखताह मने
ऊघब एकेक पल, दिन आ मास वर्ष
काच जाडनि सँ जरैत चूल्हि,
धुँआइत आंखि के नोरबैत
सासुमाताक कमर्कि कर्मझिजझू-अझिजझू
करैत भानस उतारैत तप्त बासन
कछमछ करैत बदलैत ताकैत
बैसवा लेल सुभीतगर आसन
अन्न सीझत भूमि पर घुसकबैत
फेर सधियबैत पोन तऽरक चटकुनी
सम्हारैत देह पर आंचर,
झंपैत मृदु अंग लाज
घामे नहायल ताप सांसत सुकोमल
आंगी बिहीन यौवन के झापब
माथ बेर-बेर लोक केर आंखिक कौआ दुआरे
भीजल नूआ सँ सटल यौवन देखाइत पार
तकरा लोक लज्जे अनवरत
नुकवैत झँपैत रहवाक
क उपक्रम,
ई की ओ
थिक ओ

हमर सक्षम, हम
एतेक टा ई महान मानुहना-तन बनल की
करय लेल भानस आ झापय लेल युवा तन
लोक-संबंधीक निखे सम्हारैत रहबा लेल
भक्ष धमानगी आंचर !
यैह सब टा अछि बाकी ?
समाज आ लोक लज्जा....

खेप २

राि (दोसर खेप)
देह भेल थजडा केहन थ्रामि कतेक लाचार
ई मन सोन थ्रडै उडवा लेल व्याकुल व्यग,
पश्चापल झाथ्र-झाथ्र क' पाथ्र
करइत शोथ्राते-शोथ्राताम
कोमल मािरी फूल सदृश अपन देह।
चागुर सुकोमल,
तुरंत जनमल नेना सन सुनर
आ जीवन-सृथ्र केर सदासृथ्रत आशा मनोरिक
नवीन मृदु माथ्र, पाथ्र ,पकाश, पवन आ आथ्र
िथ्रक रहले देह पहरक पहर एक-एक शास
केहन वजक देह केर थजडा तािथ्र
जथ्र छुथ्रतय
क' थ्रअय फेर सं मुक्त
ओएह आकाश, मेघक श्याम थ्रनगि सतरंग
मास िअल फहराइत सघन कारी केशराथ्र
झूमैत डाथ्र-पातक थ्रडला-स्पन्दन !
स्ािीन संगीतक मुक्ताकाश स्वच्छ
िअल वससिन ई तन
जेना उथ्रिया रहल वेग मे बथ्र रहल
थ्रव्य बसात पर थ्रबंि थ्रभयि मुक्त आत्मालीन
थ्रकन्तु असह जे ई सब,

स्नापवत भ' जाइत अछि सब बेर
खुजय नहि थिजडाक ई फाटक से पर्यंत
आ हमर ई मन ,कोमल पाश्वक सामर्थ्य पिर
सहैत सबटा लोक-समाज-सम्मान केर
बोराक बोरा
ऊघैत रहल छी अनेरे जे अनन्त
तेकर करय के हिसाब,
इस्स कियेक नहि टुटैये थिजडा
ने जवये जाइत अछि
एहि देहक मुक्ति केर अकाक्ष आ उताप!
एकरा मे सं अनुपस्थित भ' गेलय की
सबटा ज्वाला सबटा आगि ?
एहि दुबलि देह व्याकुल मनक
ल' लेलक की आशय ?
भ' गेलय स्थगित
चलि गेलय कुटमैती मे कोनो गाम
तेहन भेल आब समय जे पकृति सेहो
छोड़ि रहले मि
जल करय नहि तृप्त प्यासल कंि,
करय ने शीतल बसातो तन
अथवा छोडल मिनिहि तं जरा ने सकतय
हमर थिजडाके, ई जीवन
निय थि आकाश
अछि टीकल अनोन-बिसनोन, निआसन

महाशेती आच्छादित आज नीलाभ छाता
तनल अछि आद्रता,
ककरा लेल कछुआ नछुआ
ल' लेने अछि गंहीर दीर्घ शिवासन
ओहो नञि रहि गेल कोनो कायिक
एखन लाचार लेल
बनि गेलए जेना कोनो अबिल माय,
करैत विलाप मनेमन अपन असक्त ममता
अप्रयोजन अविचार पाय होयवाक अपयश पर ...

खेप ३

रािा (तेसर खेप)
सौख केहन आखेटक ....
अछि थकट की हाल एहि मनक,
कही ककरा कहू की, के बनओ
एहि पाणक िकििकी सन अपन
िक हमरे जका आकुल थात
एहना बहा क' बैसल सकल सुख
मनोरि जे भसा बैसल हो, बहुंसैत
यमुना-िर मध्य हंसैत सब टा
सभ कछु अित काल मंदर मे
बनल हो पाणहीना देह
राखल भूमि पर कंकाल
आंगन मे,
जरैत दुपहरक रौद पचण्ड
नुकायल लोक सब समाज घरे घर
आ आस्बद सब आंगन
स्पयं रौद-बसात अछि पयंति बैसल
नुकायल जे लाथा ने जाय कही हमरो-लू
थाडै-चुनमुनी कहय के, माल-जालो
बान डकरने शान्त होयत
कहा कोनो शब्द आबय कान िथ

एहन मृतक समान एखन चुपचाप मे तं
गाय-गोरक पाजु लेवाक स्वर सेहो सुनाइत रहैतैक
तेहन आलस तेहन छैक ई सभक लेल
जे बनल अछि सब बौक
सौसे सृष्टि ये निःशब्द आ चुपचाप बैसल छथि,
दुबकि क' कोन अदृश्यक महाबृक्षक
अनन्त छाहरि मे।
केहन ई अछि सभक,
हमरो विडंबना जे सभ
अपनहि गुण आ मिजाजि सँ रहल अछि आब
स्वयं पकृतिक ई लीला
जेना किछु कैत हो बसात
जे देखल ने जाइत हो ने सूनल जा रहल
सबकिछु स्तब्ध हि-हि करैत सबटा चुपचाप
कहा किछु सुनि पडैये,
की भेलय हमरा
भ' त' ने गेलौहे हमही बहीर ?
सचिव-बचिनपा सेहो ने जानि गेल कोन मि
धान बदागरीये चलि जाइ गेल्हि की सासुर ?
यदि से नहि त'
कोना छी हम, जीबैतो छी कि मरि गेलौ
देख' लेल क्यो देलक हुलकियो पर्यन्त एकहु बेर
कए दिन बीति गेल, घाट, यमुना कात गेना
धाना हुनके बनल छथि जे बजक पाण

खेप ४

केने छथि बेश सनाि सबके,

स्नेही-संबंिी

सौसे समाज के ई जे छथि

बनल लोकक गीलमल हार,

यमुना कुंजक मायावी मुरलीक कलाकार

बेफिकर आथिन्त बनल अकान अनिा बैसल

कतहु अपस्याँत अनमस्क थाबबैत अपन िाढ

गुलाबक कोढीक दुपती सन मृदुल लाल टुहटुह

अपने मे ध्यानस्ि

सौसे संसार के अनुपस्थि क'

दूरसि िरतीक कोर परक

टुगार सन गाम बसस्थ

बैसल मिुरा सं चलबै छथि सरकार,

िन्य छी अहूं कृषण, छी िथि अपरम्पार,

अहुंअा रहल छी,

बड उतकीरना करैत छी

हमर एहन मनकािक करैत छी िठा,

बड थ्थव,

िन्य छी बाबू, िन्य छी

मुदा एहू गरीबनीक थ्दन थकरतै कथ्ययो,

तखने पूछब हमहूं अहाक मनक हालचाल,

एक युग सं बौक अहाक बंसुरीक बोलक

आत्य आमलि काथ्थन्दीक छल-छल बहैत

अहंक हृदय-ि‍र सुखा जयवाक समाचार,
एखन मुदा लाचारी अछि, तैयो
एतवा ि‍श्चय कछल रहले हमर एछल पाण मे बैसल
सौसे बज
बड उदास बड उदास,
मुरलीि‍र! अहा कोना छी ?कतय ?
एक युग सं
थ्कयेक चुप अछि एना बंसुरी ?

खेप ५

अहा चुप छी चुप्प अछि संसार
अहा नहि तं सब किछु चुपचाप
ओना तं चलिआये रहल सब कृत्य
मुदा नहि बूझब इयेह अछि सत्य
मनहि मन लोकक मिझायल दीप
राति तं राति, दिन सेहो
भ' गेल छैक निष्प्राण नीरस आ
उदास अन्हार !
बजैये बडद्दव चलैये-फिरैये लोक
किन्तु नहि किछु लक्ष्म बोली मे
ने रस करबा मे कोनो काज,
हम तं सहजहिं पडल छी ओछाओन
ते एकर अलावे जे अहंक
मानस-संग माि अवलंब शासक
ओना सब टा बन्द, हमरा लेल
आशा आ मनोरि केर सब केबार
ओना तं चलिआये रहले समय
भोर दुपहरि साझ, रातिक चाहि
जगतक कृत्य केर सब कारबार !
हमर सबकिछु बन्द अछि,
सप्पत अ मृत ई संसार,
पाणािर !

खेप ६

पाणािर,

से ई सात इनार गहीर सं सबोधि रहलौहे,

बचाब' लोक लज्जा !

केहन ई मनक पराभव

ल' सकी ने नाम अहाक पुकािर,

भ' स्वच्छन्द

लोकक सोझा मे आिख आ सािधकार,

आनेहोक िर केहन जरल कपार

केहन भेल हमरो अदृष्ट अपरम्पार ।

मन कोना बौआइत रहैत अिछ

खुजल बाछी जका एकसर बने-वन,

तकैत माय, यमुनाक काते कात,

हुकडैत व्याकुल भेल, वन-झाखुर सं चंछबैत देह

तकैत मायक नेह ,

दुखबैत काच-कोमल सीप सन-सन खूर अपन,

आ मनुक्खक नेनेक िढ सन सुनर-सरस

चुम्बन ल' लै योग्य कंपैत अपन आशु-िून

ई सोिच मन लाजो करैये जे

केहन सन ई कामना हमरो बतािब,

अहा तं अहा भेलौ, हमर कोनो की माय अहा?

आ थक संतान हम आहाक,

ने हम बाछी ने अहा गाय, कोना आयल-ए,

भाव एहन हृदय मे, कत' सं जािन निह,

किछु ने जात, मुदा ई बात केहन व्यर्थ-व्यर्थ लागि,
एखनहुँ भ' रहल अनुभूतिक आनन्द जे
हम स्वयं छी गौ अहा हमरा पर ओंगलि ाढ भ'
अपन पश्चात विशेष भंगिमा मे
एक हाथ केने गदलि टेढ
दोसर हाथ दुनू हाि ि' क' मुनने आंखि,
लागल िर सं तन्मय भने बंसुली रहल टेरि,
हमर से देह गायकेर आ अहाक आत्मीय पीकि,
इहो की संयोग केहन विचार,
ईह मुदा हमहूं छी कतेक बकलेल केहन बताह
की सब भाव आबय आबि क' अन्हर उिबय,
हमर एहि असकर मनक पसरल
बजक भरि आंगन
पडल सभ किछु जेना हो दुखित
हो उदास
जेना सुखा रहल हो कंि कएक कए युग सं
पतीक्षा मे पतीक्षा मे अशाबाटी मे,
टंगल हो ताही पर गनि गनि क' देह-पाणक
एक-एक ि कि ि की
आयुक सभटा उत्कंि सीचित क्षण!
सौसे पकृति मे मािेएक ई मन

इयेह टा गुम्म गीत गबैत चलनक
भरि उमेरक वियोगी अंगना मे बैसल,

कुसमय कान मे घोरैत कौआ कुचरबाक मि बोल!
आशाक केहन तुनुक डोरि
तइ पर टंगल हमर शरीर भारी, तथापि
नहि टुटैये नहि टुटैये, निरास आसक डोरि,
एहि धमतक पतीक्षा आशाबाटीक ई
धलकप्ण खेल देल धिखाय,
केहन कारी हृदय भेल, कृष्ण ?

किछु पडैये मन अहूं के एको रतिया
एको रतिया स्नेह ,सम्मोनि ?
अही के टुटैत रहैत छल मुंह-
अनन्तो नाम ल क' फुसफुसा क' कहब ,
गे बजवाधिन छौडी !आबदवाधिन कत' छले नुकायल?
कोन जंगल-पहाड मे भ'गेल रहे अलोप
भधि धदन, भ' गेलौहे अकच्छ तोरा ताकि-ताकि...
बा अचानक आबि पाछा कान मे कू-उ-उ क' देब
िढ सटाय हमर जीवन के देहक बाटे , भधि देब
तेहन दुलभि अलौकिकक झुरझुरी सवाग, जे
बधि महातीकि भोरहधियाक धदव्य मंधदर
गनगनाय लागय भक्त सबहक अनवरत
बजाओल जाइत मंधदरक घंटी सं टनाटन
हमर सम्पूणि अधस्तत्व धनाधदत क', पल खधनते
ने जाधन सते कत' भ' जाइत रही अलोप...
हमरा पाण के धकलताक एकपधि्या टुटल

बएलगाडी पर बैसा क' जेना कही-ताकू आब हमरा,
ताश्क श्नय', हम छी कोन ामि, कत ?
केहेन बैसश्न शान्ताश्वत हमरा, अनेरे
ई उपदव क' कोना क' दी अशान्त
अश्छ श्कछु एको श्नश्नया याश्द, एकहु रती मन ?
से श्कयेक हएत, आब ताश्न सं अहाक कोन संबंि
तकरा सं कोन अहा के काज,
श्वकल जे भेल, होइत रहओ।छटपटाइत रहओ,
अहाक नाटक अपन अश्वाला-अश्वाला दृश्य सबहक
करैत रहओ ओश्वयाओन, श्नरन्तर।
नव-नव श्नमि रसक अनुसंिान मे
लागल रही, बड श्वव ।
कहा श्कछु लोक लेल श्चन्ता
कोनो मुंहछुआओनो एक बेर "श्कयेक छौ मन हूस छौडी" ?''
छौडी !'' नाम तं अश्छये ने कोनो हमर राि,
केहन मायावी केहन अश्नानय असंभव लोक अहा यौ,
मोश्न बैसब बेबस भेल अपनश्न स्नेही, आप्ताक
अनवरत करब हरान
श्नन्कर भ' गेलय श्नस्सक,
बडे आबय मजा लोक के क' श्वकल अश्ि र
कोनहुं पकारे क' दी श्कछु बेचैन आ
अपने पार ।
नाटक अहुंक श्चि अश्छ कृष्ण अपरम्पार,
हे सरकार !

कखनो उधियाइतो अछि मनक महासागरमे अपनेक,
हमर नामक कोनो टा पोथियोक तरंग ?

कत' सं किछु छूटि जाइत छैक जीवन
कोन कोण मनक महल ढनमना ढहि जाइछ
आ सब किछु बुझाय लागत-व्यर्थ,
होयवाक अपन किछु मतलब सौसे पृथ्वी पर
भेटत ने तकने ,ने इच्छे रहत बाचल शेष जे
ताकी अपन से संसार ,
पछिलो पहर धरि छल अपने संग
मनक सजल सपना सब के अप्पन मखमले सन
आस-विशासे भरल आंचर सं झारैत
ओकरा पर पडल अवहेला उपेक्षाक गदा
सस्नेह बड मने बहुत भावे भरल संपूर्ण
सभके ल' चल जाए उधिया जेना अनचोखे कोनो बिहाडि,
आंगन मे सुखाइत डोर पर कोनो आंगी जेका
नहि जानि कोन दिशा आ कोन ठाम,
ने बूझल हो मुदा
बिसरबो ने हो संभव ओहि आंगीक अर्थ जे
नहि छल मात्र एकटा वस्त्र कुंडाबोर लाल
स्नेह सांचल कोनो छुच्छे देहक झंपना
ओकर तानी भरनीक एक-एक ताग, तागक तंतु,
लालीक संग आयुक छन अनन्त
भरि भुवनक अनन्तो रंग-रस-भीजल

आ आंगी अंधाये नञ्, ल कृष्णक स्पर्श
हुनके श्यामल आंगुर हा आ ढिक कहैत किछु शब्द,
बजैत बंसुरीक ध्वान्या-पश्चाध्वान्या,
चेतनामे सतत लगबैत गुदगुदी
ओ छल स्पर्शाक्ति कणक संगक स्पर्श
हुनकञ्ज अमृत
ओएह छथि हमर पञ्जरन ,
कृष्णो पञ्जरने रही हम, उडा देलक जे ब्बहाळ
आंगनक डोञ्ज सं नञ्ज, जेना देहे सं,
भेल छी उघार ,लाजे छी नुकायल, भेञ्ज दोबञ्ज
एञ्ज टटघर मंडैया मे,
जे अछ्छ स्मयं दस मि सं भूरे भूर अपने उघार
हमर की देह झापत, की करत लज्जाक रक्ष ?
कहै लेल तं अपने मडैया ई खास
मुदा सेहो भेल कोन कायकि ,
मामूली थरडो-वसात सं पयत्ति ने बचा सकल,
केहन अजगुत !
तं श्क कृष्णो छथि से हमर आंगी हरण कता ब्बहाळ ?
श्कयेक क' गेला एना उघार ।
भने लिखहे ई ढब नव,
ककरो सतयवाक उपदव-उपाय...
मुदा की भ' जाइछ एञ्ज मन के अनेरे ?
के अपन, ककरा लेल एतेक उदास,
शीकृष्ण ?

खेप ७

राति (सातम खेप)

राति

ऑगी हेराएब कोनो तेहन दुर्घटि बात नहि। राति ते उदासो नहि भेलीह। उदास तं ओ आनो आन कए कारणे छलीह। जेना ,शरीरे दुर्बलत पडल छलीह। कोनो टा सखि, कियो बहिना कए हुनक सं देख' पर्यंति नहि अयलखि। हुलसिकयो देब' नहि। दुर्बलत के होइत छैक आशा आगह। बसिक स्पृहा। स्पृहा ई जे कियो आबए, आबि क' दू कण लग मे बैसय, दाख पूछय। गप करय। किछु कहय, किछु सुनय। मन के बहटारय।

सैह तकरे अभाव आ संबनिक जोर।जे अपान नहि तकरा पर अधिकारे कोन ? जे अपनो अछि आ अधिकारो बुझाइत अछि, वास्तव मे से कतेक अपन ?

ई अधिकार आ पयोजनक पाथिमकताक अपन-अपन वृत होइत छैक। मनुक्ख-मनक ई लाचारी छैक। ओकरा अपन एहि सीमाक ध्यान राख' पडैत छैक आ तहिना संपर्कति-संबंधित समस्त समाजक ध्यान राख' पडैत छैक। से जकरा बुते एकर, एहि बुधिक संतुलन नहि रहल ,तकर जीवन कनीक आर मोशकिल।अाित् जीवनक मोशकिली छैक अपसहायि

राति ई सोचब आ दुखी हएब स्वाभाविके जे जीवन मोशकिलीक सवारी थीक। थाकन चुनमुन बाट पर पहिया सब गुडकैत आगा बढैत रहल तं बड खूब। सबटा मन धरि अनुभव पाछा छुटैत गेल आ मनलगू अनुभव अपना संग आगा बढैत रहल। कतहु

कोनो ि‍मि पहुंच्चि गेलाक बाद कए तरहे संतुष कयलक आ कए तरहे अतृप्त राख्ख्रि देलक।

आब फेर एत' सं अनुभवक अतृप्त पसंग जे एकच्छ्र कण पच्छ्रने माि नगण्य बुझाइत छल, से भ' जाइत अच्छ्रि खोचाडल म‍ि‍माछी... खोचाडल म‍ि‍माछीमक खोता । च्छ्रिना च्छ्रिन्हनहुं अनेरे ि‍हुन सं मूडी ि‍थ्रि घनघनौने रहत बडी-बडी काल। हरदम डेरायल मन-काटत,आब काटत...। कोनो कण लुकित आ काच्छ्रि लेत। यदथ्रि थ्रिक काच्छ्रियो लेत तं कोन ओ अहाक गदच्छ्रि छोथ्रि लेत ? दंश देत। से मुदा भने म‍ि जका नच्छ्रि, च्छ्रिष च्छ्रिशाइत दंश। कोनो गदच्छ्रिकट नच्छ्रि होइत अच्छ्रि- म‍ि‍माछी !

-बर गदच्छ्रिये काटब सुभीतगर, ओ सोचलच्छ्रि। भने मनुक्ख के छुटकारा तं भेच्छ्रि जाइ छैक। आ च्छ्रिन च्छ्रिनक च्छ्रिस च्छ्रिसाइत भोग-अनुभूच्छ्रिक अनवरत कम जे संपूणअच्छ्रितत्वे के बेचैन कयने रहत। देह-पाणक च्छ्रिकछु टा आन वातावरण नच्छ्रि बनब' देत। च्छ्रिच्छ्रियौर कटबैत रहत। ओही अपन स्वभावक पच्छ्रिथ्रि आ तकर पयोजन मे बन्हने रहत। माि बन्हनहुं टा रच्छ्रि जाय, तैयो सुकुर, मुदा ओ तं अहाक बुथ्रि सं आर सब च्छ्रिकछु के काच्छ्रि-बाच्छ्रि क' फराक क' देत। अही के अपन तेहलला बना क' छोडत। लैत रहू।

आब एच्छ्रि मन मे च्छ्रिकछुओ कण रच्छ्रि गेलौ च्छ्रिक ओ अहा सं अहीक पच्छ्रिचय तलब करत। यावत-यावत तैयार भ' क' अहा उपयुक्त सोचब आ बाजब, तावत-तावत ई बात, अहाक मनक ई मामूली घटना एकटा समाचार बच्छ्रि जायत। ई समाचार च्छ्रिना कोनो माध्यम के रौद आ बसात पर सवार भ' क' पहुंच्छ्रि जायत ओत' ि‍थ्रि जत' अहा सोच्छ्रियो ने सकैत छी। आब बैच्छ्रि क' कपार पीटैत रहू।

ककरा-ककरा आ की-की बुझयबैक ? आ से जकरा बुझयबैक से कतेक दूर छैक ,की मानत ? जतवा माथायो लेत तकरा सं अहाक जीवन के की सुभीता आ कोन सुख ?

हॅ, सुख ? की थिक ? केहन होइत छैक ? कोना होइत छैक ? कतवा होइत छैक ? ककरा होइत छैक ?

मुदा... मुदा, किछु छैक तं अवश्ये ई सुख! सुखक अनुभव अवश्ये छैक एहि पृथ्वी पर-मनुक्ख सं ल' क' सब जीवधारी मे।ते रहैए एकरा पाछा व्याकुल-बेहाल! परंतु से केहन छैक-लाल ,पीयर, हरियर ,उज्जर, कारी -केहन ? अथात् सुखक कोनो रंगो होइत छैक ? कोनो खास रंग ?

-की स्वाद छैक ? केहन स्वाद ? कोनो फलक स्वाद ? चाउर-दालि-गहूमक स्वाद ? तीमन-तरकारीक ?इनारक टटका जलक स्वाद ?एक संगे दू गोटेक इजोरियाक चन्द्रमा बा एकान्त अन्हरिया मे तारा गनवाक स्वाद ? कोनो अनचिन्हार चिडैक अपरिचित बोल अकानि चीन्हवाक कोशिसक स्वाद? बा भोरे भोरे जन्मौटी बच्चाक अलसाइत आंखि जका बाडीक कोनो नाम्ह टा गाछ मे नव पनगल चिक्कन ललाओन दुपती के देखि अहलाद होयवाक स्वाद ?....घन अन्हार मे ककरो कंठ सं अपन नामक सम्बोधन सुनवाक ?

कोनो गंध होइत छैक ? अतर-गुलाब सन, बेली-चमेली सन , तेजपात सं छौकल दालि, कढी पातक बा औंटवा काल लोहिया लागि गेल दूध सन, सोन्हायल डाबा सन,-कथी सन ? जन्मौटी बच्चा सन, तुरंत नहायल स्त्री सन आ खेत बाध सं घुरल हरवाह-गृहस्थ सन, यमुना जल मे खीचल नूआ-वस्त्र सन बा पाकल कदंब

सन बा शीकृष्णक सास सन ?

सास मे केहन आसा छैक ! कृष्णक सास मे केहन आससा छथ्थ ?

कृष्ण मे अपने केहन आसा छथ्थ ! कृष्ण आससे छथ्थि । कृष्ण माने आसा... ।

बेचैनी राति क ,बेबस मनक पवाह मे,

बहैत रहल, यमुना ि र सन,

राश्वा, रातुक अन्हार काल मे । सब सूतल अपन-अपन िम।

िने सब रातुक विशामक स ि न।

थ्थडै चुनमुनी अपन-अपन खोता।

माल जान अपन ि र-बथि न।

आ मनुक्ख अपन-अपन चौकी-खाट-मचान !

आसभेर आन मे डूमल जीयैत।

मा ि ई एकटा एकसर मनक थकल आयश्वा, चुपचाप

सूतल राश्वाक अन्हार मे अपन आस्बाद चलैत रहल-बहैत गेल!

राति क मनक पवाह यमुना भ' गेल।

एतवो पर रच्छ छल , मुदा

कहा बाचल समयक इहो एहनो सुभीता,

सेहो तं आंजुरक जल भेल।

कतबो यते बचा क' रखवा मे कहा भेलहुं सकारि ?

सबटा बश्च गेल। कनीक काल रहल भने

भीजल तरहति ी-माने श्यनगि ,

सेहो अथ्याले पल ऋतुक उष्ण पभावक वेग मे आठाहे सुखा गेल।

जाश्वा नश्च ओ आंजुर आ आंजुरक जल कोन कण अलोप भेल

कोना चलि गेल,
कत' गेल ?
सूर्य लग गेल ? चन्द्रमा लग गेल कि तारा लग ? वा माटि मे,
पोखरि-इनार-धार, कोनो मे फेर सं घुरि गेल, जा क' मीलि गेल जल-
अपन उदगम सं, उत्स सं वा भाफ बनि क' बन' गेल मेघ ? कर' गेल बरखा,?
जल कत'गेल ? आंजुर भरि जल कत' गेल ?

ई किछु विलाप जका
राति मनक पश्चाताप अपनहि अभ्यंतर मे
मुखर चलि रहल-
अपनहि कहैत-अपने के सुनैत । अपने सं सभटा पूछैत।
ई केहन विचित्र आत्म सम्बोधन ?
अपनहि मन सोर पाडय अपने मन !
सौसे गाम-टोल अछैत ,
टोलक लोक, संबंधी, सम्बन्ध-बन्धुनपाक एहि
पसरल समाज आ संसार मे कोनो एकटा मन,
एहन असकर
एतेक एकान्त
काटि रहल व्याकुल पल-पल जीवन ।
अपनहि विडंबना के स्वयं करैत
आत्म सम्बोधन....

-"राि'' ....!!
एं ई की भेल कत' सं कोन आकाशवाणी
-"आब केहन मन अछि अहाक राि !''

के पूछल ? बाजल के ? के आयल पूछ'-कुशलक्षेम,
ककर थिक ई पाणबेिि वाणी ?
दुलभि स्वाथक्षि संगीत स्वर थिक ककर ?
राश्चाक एहन श्वासबद एकान्त अन्हार मे के बाजल,
ककरा भेलैक हमर चिन्ता ?
के आयल पूछय-हालचाल,...

अच्छा, तं... ई थिक
हुनके ताल ?

राि के कानमे स्पष` क्यो पुछलक अछि। कनेको संदेह नहि,
सत्य छैक।
'केहन मन अछि अहाक राि...'
ई थिक सद : अनुभव, कोनो टा भम नहि।
मुदा तखन राि के कयेक लगल अछि ई जिजासा,
पुरष-कंकि नारी-स्वर मे पश्नाधयाछ ?
यैह पुछल अछि कृष्ण तं पछाति

सैह पश करैत सी के छल ई जकर स्मार छल ?
ई अछि कोना संभव ?
मुदा थिक तं ई सत्य ,संदेह कमिथ्य नञि।
सत्य तं होइत अछि सत्ये।
जाहरे परजश्वत एञ देहक ताप पर
जमुना जल भीजल पीताबरी जका के
एना पसञ्च रहल-ए,
आलसे आआयाइल बसात...
जमुना मे झलहञ्च खेलाइत,
आस्वाद राधा।

खेप ८

रात्रि (आगि खेप)

सत्य तँ होइत अछि सत्ये

मन नहि मानैत अछि कोनो भावे कोनो तके,

बेचारी राधिकाक,

धकल पाणे सोर कयलन्हि, त्यागथा क सब टा लज्जा आ मयादा

-कतऽ छी कृष्ण!

धकयेक ई कऽ रहल छी, एना माया?

पुछैत छी यथा कुशल तँ सुनबो करब,

भनसि एके कण बस।

एना धकयेक धमनेहके खौला रहल छी

लोधियामे (कडाही केर) दूि सन, धशाल कालक चूल्हा पर

आब कतेक औंटब आर!

कतेक बनायब गाढ?

रस आ वस्तु दुनू अपना अपना कऽ रहैछ संगे मुदा स्वाधीन,

तखनसि दुनूक मयादा आ दुनूक स्वाद

नहि तँ जे कथाक अकाल हो से बबाद, अशक्तता ध्वस्त

ई नहि स्नेह केर आसप्रश्न,

रात्रिक मनोदशा धकछु तेहन जे कहल नहि जा सकय। एतेक युगसँ एतेक युगसँ आइ धरि मनुख जीवनक यात्रि सृष्टि-सृजनक महागाथा आ अनादि-अनन्त जीवनक अनुभव सब टा तँ मनुक्खके पश्चात छैक, जीवनक सवशेष आनन्द, जीवनक सवोच्च शोक। सब अनुभव आतान्त पश्चात! पेम, घृणा, धशास, धशासघात,

ध्वंसक व्यवहार! सब तँ पश्चात अनुभव आ सभक अश्वत्थामा
परम्परे आ पि जका थ्यारन्तान् ! श्रकछु टा अपश्चात आ पमि
नश्च।

मुदा तािथ्य रािक ई मनोदशा थ्ककयेक बुझा रहल अबूझ, पश्चल
बेर- बलकुल पमिे बेर जेका ने व्याख्या संभव आ ने कोनो
पश्चभाषा, ई केहन मना थ्मशिमे कोना पडश्च रािा :
हाश्च पछताइत उत्कट व्यग भेलीह-
चतुश्चकि् अन्हारके छानल जे कतहु होश्वि कृषण,
नुकायल, थ्चक् करबा लेल।
कतहु नश्च, कोनो नश्च लकण, आभास!
हाश्च पछता, अहुँश्वया काश्च बदललश्च करौट
अश्चवयासऽ लगलीह ओ, स्पर:
“-आब केहन मन अश्च राि अहाक?’ :
तं कृषण अहा
-आब केहन मन अश्च राि अहाक’? सिी स्पारमे इयेह
पश&पश्चाधश्चा !
तँ की रािा केलश्च ई आत्म संबोिन।
हृदयमे कृषणाक आत्मसिापन,
छल की रािक ई आत्मसंबोिन !
बड अशान्त बड व्याकुल,
केहन दन मन..

खेप ९

राि (नवम खेप)

कछु ने उतर कतहुसँ सब कछु पडल अछ शान्त सब दश रातुक अतल अन्हार आ अधिन्त अदालीन गामक लोक । सभ टा माल जाल, पंछी पखेर चुप्प दबकल । अपन-अपन िर आ अपन िकान

समय स्वयं बन्ह गेल हो जेना सबहक कान एक मािं,

एकमािं, नाक आ एकह मािं आँख सौसे आबादीक भऽ गेल हो- जेना एकीकरण,

एकह एक चेतना करण, एकह बोि एकमािं अस्तित्वक भास

सौसे सब कछु भऽ गेल हो जेना आकाश

से बूझ्ह मनुषके अकाल-दुकाल

चुपचाप आक सूत गेल हो स्वयं बन्ह पताल ! माने सब तारागण समेतक चन्द्रमा आ रंग, रसक

बसात लऽ कऽ आ सूतल आकाश अतल तल मे जा कऽ ओह पताल

लकण मनक ई पवाह आ बुिक दशा राि, एहुक नह कोनो टा अछ उतर,

भला सोचू जे ई आकाश जाऽ कऽ कोना भऽ जायत पताल

यद सेहो तँ कतऽ जायत पताल, कोन बाटे उतरत ? वा चल कऽ गेल होयत ? जँ भन जायत एही अनन्त आकाशसँ ? दोसर जे, कोना आँटत एतेक टा आकाश ओतनी टाक पताल मे ? के अंटाओत आ फल की तकर !

हँ, से तं अछ िक मुदा हमरा लेल एकदम साफ

कहा कतहु देखाइए एकहु टुकडी मेघ
एकहु टा, एतय छि जे कखनो लुकझुको तारा, कतहु कोनो कात
? कोनो कोन मे ?
कहा सब टा तँ अछि भेल अदृश्य - अंतहिन,
सोझा जे विशाल विस्तारसँ पसरल महा अन्हार राशि
कहा किछु अछि शेष कोनो ध्वनि कोनो ज्योति कोनो
स्पर्श कोनो बोध जे स्पष्ट हिन, कहि आ बुझा सकय
अहाक होयबाक अस्तित्व सेहो सदेह आ जीवन्त पाणक ?
कहा किछु कतहु ? सब टा अछि बनि गेल समुद
कि योजन योजनक अन्हार पताल । ककरो किछु
ने सूझय, किछु ने भेटय, तखन किछु ने किछु तकबे करी
से मनुक्खक लुतुक आ अभ्यास ते,
लागल अनेरे एहि अन्हारक खान सँ खसयबा मे
मनक जाल ___बझवै लेल जाहि ने माछ केहन ?
समस्त अस्तित्व फाटल पुजी सन उधिया रहल
कृष्णाक पखिम पखि पुजी, सौसे भेल, भरि पृथ्वी,
अनन्त पताल छि, चलि गेल,
छूटि गेल अपना हाथ सँ, उधिया रहल ई मन
स्वयं हुनकर पखिम पखि फटल पुजी भेल,
यदपि शब्द अछि कंसिस सभ टा किन्तु
हुनक स्पष्टदित उपस्थिति, हुनक होयवाक निरन्तर
अनुभूति आभास केर स्वरूप तँ टूटि गेल
ई की भेल ? हमरा संगे ई की भेल ?

बड रही उदास एक क्षन अहा मावि,
कोनो टा ने करैत रही गप्प शप्प , खोटैत माि दूब्भा हथ्बयर,
ताहू पर करैत जेना स्वयं के मने मन गंजन आ पितापी आघात,
-'दूध्य भेल तँ दूब्ब गेल ? अनेरे क्षकयेक ओकर हो एना दुदशिा
आ सेहो अहा सदृशक हाि सँ ? ई तँ थीक ध्वंसा
एक पकारे ध्वंसा, अन्याय ! नञ्ह ?'
भंगलि खेलौना िकि भऽ गेलापर कोनो नेनाक आकृश्वा पर जेहन,
अबैत छैक स्पागसिँ चलल काल हषकि आभा मृदुल नाथ्रह टा िढ
पर आ आँख्व मे चमक आनन्दक,
सएह अनमन सएह भऽ गेल रहय अहूंक समाचार ,मन अछ्छ?
केहन दुलभि ध्वहुंसी छल ओ ? सौसे भुवनक सुखक सूि ध्वहुंसी !
अहाक, अछ्छ मन ?
ताञ्ह ध्वक्य ध्वहुंसी के देख्वते हम ताकऽ लगलौँ अपन नूआक खूट
बडे व्यग बड उताहुल ।
-''की भेलौ राि?'' अहाक एञ्ह पश मे रही बाजल जेना ।
- खूटमे सथ्बया कऽ एकरा बाथ्रह कऽ िऽ लैत छी, अहाक ई
मुस्की, मावि !
अनन्त कालक चुप्पीक उपरान्त ; सौसे सृष्ब जेना
हम सत्थे लैत अहाक िर सँ ध्वहुंसी अपन आंजुर अभागल सब सँ
बाथ्रह लेने रही खूट मे ध्वहुँसीक गीरह !
बथ्रहतञ्ह रही क्षक अहा अनचोकञ्ह हमर
जुटी के घीचैत जोर सँ कहने क्षना क्षकछु-
कष देबा िथ्र- जोरे हमर मूडी पाछा देलौ झुका
आ कृथ्रिम कोि सँ कय गेलौ हमरे आँख्व बाटे हमरे अभ्यंतर मे

बलात् पवेश,

स्वागत !

कहा बाचल रहल हमरा बोि । नञि बाचल ।

अहाक हाि घीचल जाइत अपन दुखाइत केशक ।

माि एतबे तँ रही कहने आिा तामस आ पूरा स्नेह सँ

-'करबे सैतानी फेर, हमरा संगे? बाज...बाज मोटकी?'

से पूछब बोल नञि छल - स्वयं छल अनंत पशाधाशा ___ आनाहत बह ाण्ड

अपने आप अहाक ओञि बोल सँ गुंजित अनुगुंजित पशागुंजित

अनवरत एञि पकयामे बधा गेल छल

महानादक एक टा थिलोक व्यापी आवति! पत्यावति

गनगनाय लागल छल हमर सृशा !

बहुत थकछु तँ अञिना अनेरे होइत अछि जीवन मे,

अनेरेक ओही आवृत पुनरावृत पडल पिार मे स सस्नेह आ शमपूवकि

ताकय पडैत छैक मनुक्ख के । मनुक्ख, ताही पकृशा पकया

स माि तकबा लेल, जीवन-पाण लेल उपयोगी,

तत्व तकबा लेल आयल

पृथ्वी पर । सएह कऽ रहल ।

तञिया सँ आइ िथि सएह क रहल । तञिया- तकर बादो

बहुत युग िथि कञियो नञि भेल थरत- थरकत ने एकहु रती

उदासीन अपन एञि जीवन-गशा सँ ।

लैत अपन एञि थायशा के कौखन पेम, कौखन

आदशि नैशाकता कौखन िमिािमादेश कौखन

आओर नञि तँ बेशी काल लोक लज्जा-मयादा ।
एतेक विस्तृत आ जटिल भेल चल जाइत
मनुक्ख जीवनक अनादि अनन्त परिधि मे सँ
एतेक रास अकटा आश्रया बीछ कऽ करब
फराक आ अपना योग्य अन कऽ लेब अपना वश
अपन पथिया- ढाकी- अधिति
अपन वासन मे- केहन मोश्किल आ कए
काल अकच्छाह सेहो तँ !
मनुक्ख भरि जन्म धरि अनक परिधिमे सँ इच्छित अकटा आश्रया बीछबाक लेल ! भेटल छैक लोकके एतबे लेल आयु ?
-एतबे लेल नञि अवश्ये, मुदा इहो छैक आवश्यक राधिका !
एहनो नञि बुझायौ एहि बातके कथि। कए बेर सुधि गेलाक आ चुप रहलाक बाद, कृष्ण अहा स्वभाव सँ एकदम अपत्याशित धिर-गम्भीर स्वरमे एतवा कहि कऽ आँगुर सँ सबया देने रही हमर तेल बिन भऽ गेल जटा जटा केशक । एकटा कपार पर लटकल लट।
-जेना ईहो तँ ! सौसे बजमे कतेक रास छैक लोक, कतेक रास गोपी सब । लोक गोपीक कतेक रास केश सुन्दर आ सुन्दर, बहुत रास.... तहिना
बात, घटना आ धिन-पान-मखान संगहि जनमल अनेरेक दूधि आफल लती-कमीक महाजाल ! आदि तकरा बीचहि सं त अपना लेल' उपयुक्त आनऽ पडैत छैक मनुक्ख के । एहि मे एकहु रती नञि छैक उदास आ विरक्त होयबाक बात । बल्कि उन्टे एकरा जीवन के आगा लऽ जयबा लेल, सुख के आगा बढयवा वास्ते आ दुख

सबके बीच्छ-बीच्छ कऽ फराक करैत अपना सुभीताक बाट करवाक वास्ते सृष्ट क देल एकटा अवसर होयवाक चाही, से एकर उपयोग । एकरे तं राखऽ पडैत छैक ध्यान ।

ध्यान बड मूल्यवान छैक मनुक्ख-देहक रक्त-पवाह मे रा ! मुदा आयिजे सेहो नञ्च छैक अंञ्चाम अञ्चावायि। ओकरो छैक अपन आयु आ अपनञ्च अि सीमा । मनुक्ख-मनुक्खक मोताञ्चक छैक तञ्चना उपयोञ्चाता सेहो ओकर । छूटय नञ्च बुञ्चिक ई सू । सैह चेतवैत रहैत अञ्छ हमरा ञ्चवेक । सुख तं सुख, जे आनन्द पयन्ति नञ्च होइत अञ्छ तेहन पोखञ्च-िर जाञ्च मे सतत ञ्चामलि जले टा छल-छल करैत रहय । पवाञ्चत होइत रहय । िम्हलो रहय तं नञ्च भऽ सकैत अञ्छ ओ एकदम्मे सेमार-करमी बा अन्य दृय-अदृश्य वनस्पञ्चा सभ सं सवि मुक्त, मा जल शीतल सवि मनुष्येक उपयोग आवश्यकता भञ्च । ते आनन्द सन आनन्द ! तकरो मुदा एकटा काल सीमा पर, यि समय झाडऽ पोछऽ पडैत छैक । ओकरा आनन्द बनल रखवाक वास्ते समय पर ध्यान सं स्नान करबऽ पडैत छैक, नव िआ वस्ि पञ्चराबऽ पडैत छैक । यमुना पयंति सतत् यमुना नञ्च रञ्च पबैत छैक रा । ओकरो नहाबऽ पडैत छैक । एकरो वस्ि बदलऽ पडैत छैक-नव िअल वस्ि !

सब लोक ते अपने-अपने आनन्दक माय होइत अञ्छ । आनन्द ओकर ञ्चाशु-संतान ! तकरो लेल करऽ पडैत छैक भञ्च पाण ताकुत रा ! पोसऽ पडैत छैक... से सत्य । मुदा नञ्च बना दी आनन्द के जुआन, पञ्चपक्व ! कमिथ्य नञ्च।

जनैत छे अपन आनन्दके कदाञ्च जुआन नञ्च होमऽ दी । रखने रही ओकरा कोरा-करेज आ बाञ्च िञ्च मे समेञ्च इच्छानुसार दुलार

करबा लेल मोहक श्वाशु ! आनन्द बच्चे आनन्द ! जवान आनन्द, भऽ जाइत अछि श्वकछु आन बात :

बुझबा लेल कहैत छी ई जे हमर श्वा अश्वान छथि अप्पन । महान । श्वनकर आनन्द भऽ गेलश्वाहे जवान ! तकरे टा आब ई सब उपदव छश्वा भश्व जीवन जगत, श्वागुणि-सगुणक जान-ध्यान । सएह बनल छश्वा श्वनक सामथ्यि ते सैह बनौने छश्वा श्वारानन्द । यदश्य सभक अपन-अपन बाट होइत छैक ! अपन डेग, अपन-अपन गश्वा !

हम तँ भऽ गेल रही हतपभ !

वाह रे कृष्ण ! वाह रे अहाक जान ! ई केहन गप्प आ सुझाव ? आनन्द के नेने रखने रही... जवान नश्व होअ दी ...उविक भऽ गेल छश्वा आनन्द जवान !

खेप १०
गुंजन जीक राति- दसम खेप

कहानी बेश बढ़िया
कनिक बेश थाकन
मुदा साँसे कनि मे
हमर ने मन ने हम!
कहल जे नेत की से
बुझत जे लोक की से
एही बीचक मे तँ सभ
फाक टा रहि जाइछ बुझब

बंद केवाड बुधि विवेक वा एकर किछु आओर अनिपाय अपनहि सँ पुछैत-पुछैत अपनहि पश भऽ गेल मनक सेहो एकटा फराके दशा होइत छैक। राति कि सएह छथि। दुखित छथि, दुखिते बनल रहऽ चाहैत छथि, दुःख सँ निकलऽ चाहैत छथि। दुनू चाहबाक- इच्छाक अपन-अपन बेर होइत छथि। ईहो अनुभव थिकथि कहबाक चाही। भोर मे मन कहैत रहैत छथि जे बात; दुपहर मे नहि रहि जाइत छथि से मनोदशा. साझ होइत-होइत पहिनहि किछु आर भऽ जाइछ आ अन्त मे एकटा चाहबे स्वभावक भऽ जाइत छथि राति अबैत-अबैत...मनक बात। स्वयं अपनहि हाथ सँ छहरल कऽ छुटल गेल डोलक डोरी जेका गंहीर इनार। किछुओ टा कहा रहि जाइत छथि बुझवा योग्य, अपन सुभीता वला समाचार.

सबटा जेना अनथ्थन्हार भऽ जाइथ्अ, थ्थकछु टाने थ्थन्हार।
थ्थक तं मने बथ्अ जाइत छथ्अ समस्त बजभूथ्अ संसार ।
बा पडथ्श्न-पडथ्श्न रथ्ध्य लैत छथ्थि संसारे के अपन मन ।
एहना मे थ्आथ्धिते जल नथ्श्ह, अन नथ्श्ह आ स्मर नथ्श्ह
संगी सािी नथ्श्हँ ते नथ्श्ह कोनो तरहक वाणी-बोलीक व्यवहार ।
सबहक कउखन बलात् -स्मयं राि कृत अनुपथ्स्थित आ
कउखन स्मता भऽ जाइत से ! अित्
ओना तँ अनुमान होइछ सब थ्थकछु चथ्श्नाए रहल अथ्छ्छ लोकक
थ्दनचया आ आ जररी समाचार । सबटा अपना गथ्श्नाये
अपन थ्श्हसाबे अथ्छ्छ व्यस्त !
आँगन थ्आपनाइ, जाडथ्आक ओथ्सआओन सँ लऽ
फूल-दूथ्अ तुलसीक थ्योत आ िवि-बाट िथ्स्थक पथ्श्कया, अिकि
अनवरत चथ्श्न रहल अथ्छ्छ। आ हम!
राििक पश राििके ! हम कतऽ छी?
कतबा आ थ्थकयेक ? हम एथ्श्ह थ्दन-राथ्श्न आ चलैत बीतैत समय मे
छी वा नथ्श्ह छी?
जँ छी तँ कोन अंश मे आ नथ्श्ह तँ, तँ थ्थकयेक नथ्श्ह छी? बाटक
कात थ्आस्सहाय िढ लोक जका थ्थकयेक भऽ गेल छी हम ! सोझा
सँ एक एक कऽ जा रहल गाडी, बटोही सँ लऽ कऽ वस्तु जात
लादल बडदक घंटी टुनटुनबैत गाडी, घोघ मे कनैत कथ्आया,
आ कउखन घरहटक बास वा कािकि थ्आलल लादल।
सबटा तँ कोनो ने कोनो रपे सृजनेक थ्योत।
कथ्आयाक थ्यदागरी सँ लऽ बटोहीक चलब अपना-अपना गन्तव्य िथ्स्थ
आ बास-कािि सँ लदल गाडी घवाहो कान्ह पर ऊघैत बडदक

बेबस जोडा- किछु रचने मे अछि लागल! मन सँ बा कतिथि सँ ,
बा कोनो दबल आवश्यकता- विवशता सँ । कऽ तऽ रहल अछि
रचने।

शम-फल भरि परिवार-बालबच्चाक परोक पालपादन आ प्रामाणक
काज।

पालपल रचना होइत अछि। से बात तँ बूझल अछि।

मुदा एहि रचना सँ भऽ वा कऽ देल जाइत अछि कोनो-कोनो
मनुक्ख

वंचित, तिरस्कृत तेकर तँ नहि अछि जान! ध्यानो कहा गेल पहिने
कहियो... जे सोचिऐक एकर ममिर् रचना कमक यािी सँ वंचित
होयवाक अभाव आ तकर मनोभाव ! कहा गेल ध्यान।

वंचित परन्तु करैत रहलैक अछि सतत् कोनो ने कोनो सता।
सता माने पभुता। पभुता माने राजा, राजा माने राजा । कए टा
राजाक राजा- महाराज! सता माने महाराज।

शीकृष्ण छथि की?

हमरा कऽ देलथि सृजन सँ विरत, एक कात असकर ! की छथि
ओ ?

आ स्वयं हम केहन मूर्खि आ अकमण्यि, चुपचाप . हुनकर देल
समय के सहजहि स्वीकारि कऽ पडलि छी दुखित। अपनो तँ नहि
रमैये मन कदाचित् एही मे ? पडल-पडल अपन आ माि अपनहि
मनोनुकूल संसार रचै मे, ताहि मे एते असकरे बSसै मे?

कतहु चाहैत तँ नहि अछि मन -

रही अहा एहिना रसल किछु आर दिन, मास..

रसले रही हमहूँ , नहि करी किछु टा काज

नहि आबी, नहिये टा आबी अहाक लग पास।

रहू रसले बर किछु आर दिन...

चीन्हि सकी हमहूँ अपना के आ भऽ

सकय अहुँक चरित आ हृदयक परिचय किछु आर

एहि बेर मन तैयार अछि,

आब सह करबा लेल नहि बुझाइत अछि पस्तुत

कऽ लेबऽ चाहैत अछि- एहि पार कि ओहि पार!

आत्मीय व्यवहार हँसीक स्वर,

बुझलहुँ, आकुल पश कहलथिन कृष्णाके

मनकाकि एहि धारणि-बिन्दु पर रात्रिक कान मे पडल कोनो आत्मीय व्यवहारक हंसी-स्वर!

-अहा एना किएक हँसलौँ एतेक जोर हिका दऽ?

-'बेकूफ, एहन विषयक की हेतैक एहि पार कि ओहि पार? ई की कोनो यमुना छै...

यमुना तँ बड दयालु माय अछि रात्रि ! ओ तँ पस्तुत केने छैक सब लेल अपन सब किछु।

ई परिस्थिति नहि यमुना।

एकर कोनो नहि छैक ई कात ओ कात।

ई धार निरन्तर आ निर्बाध छौक । चाहला सँ

सेहो नहि छौक इच्छित परिणाम!

कालधाराक आरम्भ आ अंत, स्वयं कालधारा साक्षी!

की करओ क्यो, तोहूँ की करबे आब

यैह छौक तोरो गाम !

एहि सभ मनोभाव के गाम जका मान आ

ब्लनु तमसयने, कुंथ्रित मोने सोच ब्ककछु-ब्ककछु
काज, थ्ककछु लोकगर उपाय, नव बाटक संजान!
ब्लाकल घर-आंगन सँ, चुपचाप नब्ल रहै,
आब बाज, राि बाज... नब्ल कर थ्यान्ता
ब्लाकल अपना मन सँ
आत्मा के करऽ दे थ्यचरण भब्ल वजभूब्ल, साँसे संसार!
जुब्ला हो एना जीथ्यतब्ल मृत । जीवन मनुक्खक सामथ्र्य छैक ।
एही लेल होइत अछ्छ मनुक्ख,
तो बूझ ई बात । सृष्ब स्वयं मनुष्येऽ पर तँ जीबैत अछ्छ।
कात मे भरलो लोटा जल रहैत छौक राखल
लागल रहैत छौक उत्कट थ्ययास
नब्ल पीयैत छे जल, करैत रहैत छे छट पट
अपना के पताब्लत करैत, बुझाइत रहैत छौक उत्कीरना करैत छे
? नब्ल राि!
ई छैक एक पकारे आत्मदाह। स्वयंके डाहैत मारैत रहैत छे! एब्ल
माि अपनब्लँ आत्मब्लाप्तताामे
बूझल छौक जे अपने ओतेक नब्ल मरैत छे तो जतेक मृत्यु होइत
रहैत छैक कतहु अन्तऽ आन आनक । आन-आन िमि...
एक बेर हमरा ब्लास ताब्लक ले । देख हमरा एक बेर.. खोल आँब्लख-
आँब्लख खोल। बंद आँब्लख मे वास्तब्लक जीवन आ संसार अँब्लयेनब्ल
सकैत छैक। बुझवाक चाही मनुक्ख के। बंद आँब्लखक सेहो मयादा
छैक, मुदा कोनो मयादा सृष्ब क वास्तब्लक उतरदाब्लत्व-मनुक्ख
जीवनक उत्क्रषसँ बेसी नब्ल ।

खेप ११

गुंजन जीक रा ि- एगारहम खेप

जक्क से बुक्ष छैक। मनुखे सब मयादा श्रक -समाज तकर पयोग ाम, सभक होइत छैक अपन-अपन खास बन्दाबन ाम हमरे-तोरे जका!

आँख्र खुजले पर छैक देखब संभव
बंद आँख्र मे सृष्ठ नञ्ज, तकर भम टा जीख्त भेटैत छैक-
सृष्ठ क रस-स्राद नञ्ज, आँख्र खोल...
तखन बेचैनी मे रा ि आँख्र खोललञ्ञ। पाण ाक् रञ्ज गेलञ्ञ. अरे शीकृषा !
हृदय आतर्नाद कऽ उ ालञ्ञ-
‘अहा कतेक दुब्बर भ’ गेलौहे कृषा! श्कएक?
-’तो जे एतेक दुबश्च भ’ गेलेहे...’
रा ाक कान मे कृषाक मर्मर्भ ी हंसीक गूंज-अनुगूंज आ पञ्चगुंजनक अनन्त आवतर्नक खेल चश्च रहल छल।श्वरडो मे पडल कदमक एकटा
टटका-टटका हश्चयर पात जका चकभाउर द’ रहल छलीह। से रा ि छलीह।
अपन सवस्र्व के काश्चतमय अनुभव करैत ताञ्च काल ओ स्रयं सुं पश्चचय पात करैत
लोक छलीह। रोम रोम सवाग भेञ्च छलीह एहन !!
लाल रंग मे पेम श्चखल हो ए

घृणा श्चखल जाय कारी मे
सभ मनोरि हश्चयर.पीयर
मेघ रंग हो अंग वर्स पश्चरल मोनक
पाकल पस्फुश्चत श्वलास ए
श्वकलताक चरम श्चता क' लेब' आयल आशय त
भेटलैक यैह मनुखक पाण !
पाण िरण कैने एउज्जर दप.दप पश्वािन।
सब टा रंग श्चरोश्चत मोनक रंगशाला मे
मा‍ि बाश्च गेल एक रंग जे
सत्य तं रंगे नश्च श्चिकए सब रंग के पोश्चपाश्च क'
करय श्चअय पस‍ािन श्चक सबके तेहन करय ओ आत्मलीन जे
बाचय नश्चं अश्चस्तत्व तत्वता कोनो आनक।
रंग सात टा, स्वर सातक बश्च जाय स्वता वाणीए धश्च एनाटक
श्चासृत होइत कतहु भश्च पृथ्वी.बृंदाबन मे
हुनकर मन मेए अहाक मन मेए हमर मन मे.सबहक मन मे
असली यैह आ मा‍ि एतबे रंग.
जे होइछ भश्च संसार मनक रंग!
बस।
कतय भेटत आब से सबटा सोखल ‍िरती जे...
श्चकंतु ता‍िश्च रंग नश्चं भ जाइत अश्च सब समाप्त
कोनो एक बासन मे घोडल हेरा गेला पर
माश्च बहुत.बहुते बाचल रहैत अश्च भरी सृश्च क
अनश्चश्चत कायव्यापार मे कोनो ने कोनो तत्वक लेने रस.
एक रती श्चकछु कश्चक रास ‍िरतीक ऊपर सेहो बाचल रश्च जाइत

अछि

रंगक आभास ।

चीन्ह लेल जे हेराएल से रंग लाल छल कि पीयर.हरियर !

रंग समाप्त नहि होइत अछि संसारक

हमर श्याम रंग

अहाक गोर नहि हएत खतम कियेक तं

लोक आओत आ अबितहिं रहत निरंतर

ई संसार अनवरत अछि अनन्त!

यावत लोक रहत ताबत ई रंग रहत .

हमर श्याम रंग

राि अहाक गोर रंग !

ई विवस्सा सब लोक कहत ।

भवि सृवि रहत आ

सुनत !!

खेप १२
फेर तं वैह संसारक गाा!
फेर सृष्ट क वैह सबध्द्ना चचविचा
बीतल राश्नाक लेभरल ब्सरल अनुभव
सोझाक ध्द्नक सब उदोग उपाय मे अपस्यात जीवन
घाम चुअइत देह-मा कि रेखा मे फंसल पसेनाक
अश्ना सूक्ष्म जलपाण-कण करैत चक चक
अनमन जेना पोश्रत पश्नाकाक श्रा मि सेहन्नाक चमचम ापि!
आँश्च-भौह मध्य भाल पर ाीक ूपर। यदश्य जरल कपार
अभागश्नक ताश्य । सौभाग्य-जगमग ापिक श्वलास हो जागत,
श्रीक संभव ई बात सं ीक करणा, लज्जा के बचा रहल हो दया,
महाभाव बन' नश्व दैत हो हीन-अभाश्यन।
रक्त मे हो सजल शर्स सन सोहागक ापि ओकर।
ओना ई एतेक दया आ एहन कृपा कं ीक सं ी लेल?
श्वक तं दुगन्जिने-दुतकार आश्वक श्वकछु एहने मामूश्नयो दुाख पर
सहानुभूश्न-सम्वेदनाक वषा, जे बश्न जाय मनश्व पर पहाड!
श्वकएक से ? देह दशा नश्व ओकर तइ जोग
करय सं ीयो कृश्व काज ?
दूश्व क दूा, पोसय बछडू चरबय गाय। ओ श्वक मा
मक्खने टा मश्न सकैए, राश्व सकैए भात। एश्व सं फाजुल नश्व ?
श्वकएक नश्व हर-बडदक श्वनचया सकैत अश्वछ सम्हाश्व ?
श्वकएक नश्व जोश्न सकय हर
खेत करय आबाद हांश्वक क ल' जाय बैलगाडी
श्वदागरीक ? नश्व रश्व जाय पुरषे बहलमान सब काल अश्नवाया

थकएक नञ्ज क' सकय ओहो ई सब काज ?
स्त्री-हम सकम नञ्ज सब ? श्लाखी पोथी बुचीं सब शास्त्र ?
थकएक नञ्ज संभव ई सब जेना पुरुष बुते ?
बाश्लह मूडी मे मुरेठा, हुिन थ्वि नूआं समेश्वट ?
नीपय जे आंगन-असोरा, नञ्ज कोनो संकोच तं
बाि जाय हर जोतबा मे की बाि, की लज्जा आ क्याकि थ्वचार?
"ओहनहुं तं असकर पुरुष सदाय सं करैत शम
किर जीवन यापनक उपाय जोतैत हर
चीश्वह क' जाडश्वा, उूघैत बोडा-मोटा क' क' बहलमानी
बडय िकिल बुझाइत अश्वछ। बड श्विझयायल, असोथ्वकत।
कमिस्त देह पयन्ति भ' गेलैये श्लांगार-थ्वलास थ्वमुख।"-
कहने छश्वा रमकश्वायु भौजी। बड छश्वा उदास,
बनल छश्वा स्वयं भश्व देह थ्वयास!
ताथ्वि लाज सं श्वसहरश्वा।-कं आ देह पाण अतृप्त,
आश्वा लागल हो जेना सौसं शरीर।
ई अनुभव केहन थ्वकट कतेक अनश्वान्हार
स्त्री-पुरखक ओहनो भेटल से सुन्दर स्नेह-काल
होयबाक छल जे शृंगार श्लि रस िर स्नानक उद्दाम अवसर !
सेहो बश्वा जाय जं मरि‍ल-मरि‍ल
चार कात उडैत बालुक असकर एकान्त
तरबा सं माि थ्वि िहिह ताप
करय की तेहन लोक अपना आप ?
बुश्विबताश्व रमकश्वायु भौजी !

खेप १३

केहन रंगक रमकआयाा भौजीक दुाख, केहन रंगक बूझल से
अभावक एक्ष सं पक्षने कहा छल बूझल हम सी, ओ आ ओ
कतेको आन, कहा छल बूझल ई अनुभव जS चक्ष रहल देह मे
सब देह मे, छैक जकर संबंि मािदेहे सं पक्षने । तकरा बाद
अक्ष जाइत अछ ओक्ष देह-गमन मे मन!
घर सं असकर थदा भेलाक बाद जेना बाट पर आगा रस्ता चलैत
कोनो एक ि भेट जाय अपनक्ष कोनो ा ि अनन्य आत्मीय।
मुदा पिम तं ई देह !
एकर गीतक, भास होइत अछ बडय मनोहर बडड माक्षकि,
दुलभि स्पादक तेसरे स्पगि! यदथ पक्षास्न होइत अछ
घर मे तािथ नव आ नव रसक भोजनक थन्यास जका बदलल
स्पादक एकटा अलगे स्पगि जिका।
करैत अछ सृष्य स्पयं सभ बेर यैह देह,
एकर गाना ! मुदा तो एखन ओते नक्ष बुझ्झ सकबे
एक रती आओर फुलयतौ ई सुन्दर काया-
बनबा लेल फल, देबा जोग गाछ !
सुगंधि उितौक तं तकbत रहबे अपने पहरक पहर बौआइत !
कतहु ने कतहु अपनक्ष भीतर, कतेको िमि
मुदा भेटतौ कहा¡। से त फेर
क्यो अपने कहतौ अनचोखे लग आक्ष-
‘ एना थकए रहलेहे बौआइत रथिया !’
ब्रहुँ¡सतौ। जादू करतौ। मोक्ष लेतौ। मादक बना जेतौ।

सुखक छटपटी लगा देतौ। आकुलताक टटका कबाछु मश्च देतौ- अंग-अंग, कुश्चआइयो ने सकबे लोक सभक बीच। तेहन सुख उत्सुक लाचारी!

भेल नश्च छौक अनुभव।'

ई सब की भ रहलए ?

हमर मोन आ देह एना श्चकएक क रहलए ?

पुछबहीक आकंि श्चकलते। ओ फेर श्चहुंसतौ।

गाढ क देखतौ आंश्च, तकर भाषा बेचैन

बड बुश्चियार रंग मे कहतौ-' पेम !'

यैह श्छये एकर आवेग ,

देहक आओर फुलाएब, बनैत जाएब अंग सभक अतर-गुलाब!

बनबा वास्ते फलदार झमटगर गाछ।

एखन तं छौ तोहर कदम्बक दू टा श्चकुला।

फूट' दहीक होब' पूरा-पुष , पबल, पैघ !

सबटा वैह देतौ बुझा...अपने एकर रंग आ रस !'

श्चहुंश्च उश्च ओ, खोललक आंश्च।

तं श्चक सुतश्च छल श्चसभेर ?

मा मुनने आंश्च नश्च छल पडश्च एतबा काल ?

रमकश्चया भौजी कोना जगा गेश्च। एतेक बरखक बाद,

कोना क' एहन दशा मे ?

उढश्च गेश्च जे, लोकक बोली मे-लोकक की,

पुरखक समाजक भाखा मे,

कए बखनि बीश्च गेलै...। आन पुरखक संग

बहुत दूर देस

जाक' ओ फेर बसौलक अपन घर!
समाजक एहन गामक उढडी रमकऽया भौजी !
ककयेक देखऽयै एना ई सऽप ओकर ? बा
आएलए वैह सऽयं क' क' हमरा पर सनेह,
दया ?
हो जे मुदा, हम तं कऽयो नऽ सोचऽयौ तोरा द' एहन बात,
एत' िऽ जे बजैत जाइत गेलौ तोहर ब'र, सासु-ससुर-भाउज।
कहा माफ कएलकौ तोहर नैहरोक लोक-
माए-बाप-भाय ?
तो तं ने सासुर ने नैहरे बसले।
कहा क्यो तोरा वास्ते भेलौ िढ,
होइतौ सहाय, भऽतौ तागऽ तोहर डेग मे।
कहा ? जे कएले से अपने कएले।
मुदा नीक कएले!
अपन खराप अनसोहात संसार के त्याऽ
मनक अपान ऽय गाम बसौले,
खूब नीक कएले भौजी!
तऽयो कहैत छलए हमर मन यैह।
आइ एते बरखक बादो मानैये मन यैह सत्य!
मुदा बड कचोट होइए मन पाऽ क' ओ दुपहऽया!
एकान्त मे बैऽ तोरा संग गपसपक पसंग, भऽसक वैह
भेल अपना दुनू गोटेक अंऽम भेट रमकऽया भौजी!
कहा देखने छऽयौ आइ सं पऽने तोरा
ओना ओहन ऽकल गै भौजी!

-‘ आब त नञ्ञ होइत अछ्छ सहल...’ बाजञ्ञ रहयं
करैत श्राफकरण करणाक अन्त।

-‘हम छोञ्ञ देबै ओकरा। रहय तोहर भाय अपन
जेना रहय।’

-‘ कि ी? हम तं श्यकञ्ञये जका उलि रही
की बजै छे भौजी ?’

-‘सते कञ्ञ रहल छ्छयौ-ञ्ञरदेक बात!’

-‘ एं से कोना छै संभव, कहतौ की लोक समाज ?’

-‘ ओकरो कहतै । कहौ। मुदा ते ई नञ्ञ बूझ जे हम छोडबै
ओकरा-

-छुच्छी देह लेल। अपन अइ देह वास्ते-नइं-
श्रालजि देखबैत दबैत अपन पुष सुन्दर पुष दलकैत दुनू छाती,
अपनञ्ञ दुनू हाि! से नइं। तोहर सपात।’

कहैत, भेञ्ञ जेना बताञ्ञ।

हम त श्रवाक। बौक। घामे-पसेने त’र
लेने अपन मन बेचैन।

तकरा बादहु ओ आंगुर सं देखबैत डा¡डक नीचा
अपन सवाञ्चिक लाज-अंग बाजञ्ञ-‘‘ एकरो दुआरे नइं।’
छोडबै जे, मनसा मुरख आ श्रालजि है। पुरख के
आर श्चकछुओ हो मुदा ई दुगुनि नञ्ञ होना चाही, राि!

हम त अचंश्रात लाजे कीत भ’ गेलौ।

ओ कहैत रहञ्ञ आगा-‘ ई हमरा अपना काज मे नञ्ञ
होअ’ दैये संग। नै बनबैए बञ्ञहाञ्ञक संगी जे लोक की कहत!
आ हम चाहने रही-एकर हर हमहूं जोती। हमहू ।

ताश्च श्चयै खेत, बीया बर अपने छीटओ वैह,
पर्ताबियै बाडी , से एकरा नइ पश्चान।
हमरा अश्छ बूझल बस अही बाटे-
श्चश्च जुश्च क’ काज करबै तही रस्ते भेटतै
हमरा ओकर देह, पुरखक सरीर !
हमरा बेसी काल चाही राि, से सत्ये।
एखन तो नश्च बुझबहीक। कश्चयो हेतौ एकर जान।
से, हमर देह -पान ि किैत रहय आ ई मनसा
फोफ काट’ लागय। बडी-बडी काल देहक जातना सं
छोडबैत मन बताह जेना कर’ लागए।
तही बतहपनी मे एक राश्च...
बडड जोर सं ओकरा झकझोश्च क’ जगबैत उिश्चयै
तं श्चहुंश्च क’ उिल तं अबस्स, मुदा
हमर ओहनो देह-मनक दशा मे रहल अनोन-श्चसनोन।
ई नश्च जे छै ओ अपरख। नै-नै खाली देहक शम झमारल हालश्च सेहे रहै कारन।-ओंघाएल पंश्चया तं लेलक खूब गाढ क’क’ सकत सं हमरा
मुदा जेना कल जोडैत कह’ लागल-“ अखनी सूश्च र’ह...’ आ
फेरो काट’ लागल फोफ।
माया आश्च गेल।
बड यतने अपने देह-छाती सं करैत अपने हाि खेला
बदलैत रहलौ करौट
तश्चना भेल भोर !
हमर सोचनाइ छल जे काज मे संग देबै तं

ओकरो किनी रहतै आि,
दोसर हमरो िकत आि देह।
ओना जे टटका-टटका फुलाएल गेना- देह लेने
श्चन खेपैत रश्च जाइ छी श्चन मेहनश्च भश्च श्चन,
से नश्च रहब, तं भ' सकत देह मनक श्चलहश्च सेहो
एक रती दूर। श्चलजुश्च क' चला सकब नाह मे करआश्च!
तैयो हम सप्पत खा कहै श्चयौ-छुच्छे देह नश्च,
ओकरा लेल मास्चयआ अपना इज्जश्चक रच्छा लेल।
आ अइ लेल जे पुरखो बूझौ जे ओकर सि
खाली ओछान पर सुतबे काल िश्च नै,
बाि-बोन खेत श्चिहान माने भश्च श्चन छैक ओकर संग।
से हमर दाबी हय। अश्चिकार। सासि-पqरान की कहै है,
हमरा नै पता। हम ई मानै श्चयै।
हम तै दुआरे छोडबै। बहरीयो जा काज करबा के
अश्चिकार लेल आ बाकी सिगन-गामक बेटी-पुतहु सबके
ई बात बुझाब'क लेल जे तो
भानस करब , आंगने नीप' लेल नश्च छे।
तो ओश्चना ओतबे छे पुरख। ह'र जोतबा लेल,
कुरहश्च सं जाडश्च चीरबाक जोग...
तोहूं छे। तै लेल छोडबै।
हमर हक नै श्चलतै त छोश्च नै देबै ?
ई बात एत' छै-सेहो पुरखक छुच्छ ईड दारे जे
श्चन बुझनश्च बजैत रहैये,
ते।

खेप १४

गुंजन जीक राति- चौदहम खेप

थिकछुओ कतबो कहैत जाओ संसार

पेमक्षि थिक जीवनक एकमाि आिार

जीवनक सबटा श्रोत-व्यवसि ा

रस, रसाभास सबहक थिक

अपना-अपनी क ओएह समस्त पकार.

जीवन सब तरहे अश्वापेत मनुष्यक

सृष्य सेहो संरक्क एकरे आब्दकाल सँ

दृष्य ,बुथि जाइत अछि जतबा दूर

अतीतक उज्ज्वल अंश जतेक हो जेहने

मुदा माि एकरे गाि ा थिक

सबहक पाण,जीवनक आध्याश्मको आिार.

पेम पश्वभाश्वत जेना जतेक जाश्च तरहे करैत आएल मनुक्ख

गुणी-पंश्चतजन सश्चत युग-युगक समाज

ओतबे आ ओतबे रंगक बा रसक र प बा अनुभव-जगत अछि ने से अनुराग

जकर चचा गायन मे बीतल आयु, जकर चचा मे अश्वस्तत्वक कएल गेल आश्वष्कार !

पेम थिकछु तेहन थ्याि नश्च बालु, पाश्च, हो बसात बा घरेक देबाल पर।

से अछि परम स्वतंि,स्वशासी आ ते स्वाि ीनमना

करय नञ्च कृपा जेना ककरो पर तञ्चना
तञ्चना कोनो पश्वश्व श्वा मे नञ्च करय घृणा।
मनुक्खक सवशिष अनुभव, लोकक सवोच्च सजना
ताञ्च पेमक करैत आह्वान ताही पेमक करबा लेल स्मरण,
हमर भेलय जन्म
हमर हएत मरण पेम से
जेना नचाबय, नाचब
आ तञ्चना,जेना बजाओत बाजब
ओ जे-जे कहत करब
ओ जे-जे सहत
ओकरे काया माया-मात्सयें हमहूँ
रहब, सब ञ्चकछु सहब
पेम मे जीवन एही मे मरब
हमरा ञ्चमआओत ई पेम
हमरे पाण एकरा ञ्चमया राखत-
युगाि र मे
एकञ्च कण लेल सब ञ्चकछु,एत ञ्च जे
शीकृष्णक शीछञ्च पयन्ति।
बहुत काल ञ्च रहञ्चि ने स्वयं सेहो संग
बहुत काल नञ्चं संग दैत अञ्छ मनुक्ख के
ओकर अपनो मोन !
ई संसारी सत्य,सत्य-सुन्दर-ञ्चावकारी सेहो
अन्याि एतेक-एतेक वेदना
सहल हो कोना मनुक्ख के-

कोन सामर्थ्यसँ, कोन उद्देश्ये आ
केहन मनोरथि मे ?
व्यक्त माने शीकृष्ण, हुनकर सेहो
होइत अछि अनुवाद-
पेममय सब हदय मे
मूल कृष्ण तँ कणे-कणे
भ जाइत छथि आरोपित ।
नहि जानि कोन दशा कोन परिस्थिति मे...
काज चलय एहना मे हुनक अनुवादे सँ।
ते मानी जे पेमोक हो अनुवाद
यदि पेम मौलिकक अनुभव तँ
मौलिकताक अधकल अनुवाद आभासे थिक-पेम !
मूल आ अनुवादो थिक।
...
कए रप मे पसरि जाइए मन रमकअया भौजी
जेहन बाट ओ एहि युग मे लिक आ चलि पडल
की जाने आइ कोन हालति मे कोना हो
जीबहु देल गेल होइ ओकरा कि मरि गेल रमकअया भौजी ?
केहन धरति !
थिक नहि यदपि मुदा लोक मानैए अततह एकरा
भरि संसार मरैये पेटे आ देहक लेल
किन्तु बाना रित एहन जेना सब टा अध्यात्मे हो !
जल-अग्नि-आकाश-वायु आ पृथ्वी सबटा...
सबटा के मानैत छी, बड खूब, मानू ईशर परन्तु

तकर अश्चापाय-अिि भीतरीयो आगा-पाछा
सब के बुझू,चीन्हू-जानू
ई सब थिक अश्चात्ता हमर,हुनकर, समाज मे सबहक
तािथ्य तकर आिर छुच्छ भावना नश्च छैक
ई सबटा अपश्चहायितत्ता जीवन िरण करबा मे ते
ई सब अच्छ अश्चान अकाटय मनुक्ख सँ।
छुच्छे उपयोश्चातो ने कही, कारण जे सब पकृश्चा देल
स्नयं पकृश्चा भेल
स्नता आ थ्क श्चाभ्रति ककरो हाि !

से थ्रषय ने हमरा सब सन गामक छौडी राािक बूझल-गमल
ने आनेक थ्कछु ।
ओ श्चाने थिक बुथ्र-थ्रलासक थ्रषय। ताश्च पर चश्चा रहलए
बडे थ्रचार, सुनै छी, क्यो ने क्यो बूढ-पुरान लोक कश्चतश्च छथि
समय-समय
हमरो भ गेल हएत सुनना सए बेर !
हम बा सश्च्र सुखबरनी बा अपने शीमान ई कृष्ण
कोना भेलहुं,बश्च गेलहुं आ थ्क बनबाओल छी,
मनुक्खक काया मे जीथ्रत छी वस्तु कोनो ?
बैसबा,सुतबा,खएबा,जीवाक थ्क बजयबाक बाजा
सभक सब अनके उपयोगक लेल बनल अच्छ जेना
बीनय सब वस्ि जोलाह लोक के पश्चरय लए
हमरा लोकश्चाक सेहो थ्क सैह श्चामाणक थ्रस्सा ?
मतलब, कुम्हारक घैल बनाओल माथ्रक बरतन-बासन

भथ्य क रखबा लेल जल, चूल्हा चक्का भानस करबाक उपयोग केहन आ ककरा वास्ते बनलौ ?

खेप १५

गुंजन जीक राि- पन्द्रहम खेप

बुझायल ता एतबे जे अयलौ माएक गभिमे नौ मास अपनेँ अमाणक नरक सहैत,
माइयो के सहबैत पश्चापल भेल जीवनक पीडा माएक एक-एक सास दुघटि करैत
करैत ह अपनेँ जन्म सँ कएल शकट पराभव ओकरा लेल। ओ यदि कहैत
छैक- सन्तानक जन्म महासुख ! हम तं सन्तान, की बुझी तकरा कही की ?
...मुदा पुना-पुना माएक गभिमे के रखलक हमरा ? भेलसक थता...वैह हुनके
राखल जे, होइत गेल शकश्मत बनैत गेल रथिया ! एक दिन...सुनै छी एहेँ गामक
िरती पर ......खसल चेहो-चेहो करैत, यैह झरकलही देह। सेहो सुनै छी, माए
तँ हथति किन्तु भेला बहुत सुख-थश्मत थता। भेलायश जे बेटी, ककर दोख
यदि दोखे त ? जेना देलश हमरा माएक गभितेना देने रहतथि कोनो बेटा ।
बाि की ? ते अपन काज केर फल सँ असंतुष माय पर िपल दोख थकएक, किीक?
ओना, जे हो आब त गेबे केलायश मायक कोरा- एहेँ छोटोछन

घर-असोरा-आङन मे,
बाडीक ओलक गाछ जका अपनश्च टोटी सँ थ्वकश्चत होइत, सौसे चतरल गेल हश्चयर
गाछ समान। भ त गेवे कएलौ। जेहने भेलौ आब एतेक वखि थ्वक भ गेलौ बेसी
बेटी त ओश्चनो ओले बुझल-कहल जाइए-कबकब, समाज । राति क मन बडे बौआइत छैक।
एक क्ण एत, दोसरे क्ण नइं जाश्च कत ? मन खौझाइत बड छैक जे ओ एहन आ
एहने भेश्च श्चकयेक ? अपने भेल श्चक बना देल गेश्च एना ? की ? दुनू मे की ? बा
एहू दुनू कारण सँ फराक श्चकछु कारण ? बा एश्च दुनूक श्चजश्चर एकटा तेसर पश्चणाम
थीक ओ ? बड व्याकुल होइत अश्छ- श्चकये र सल छथि कृष्ण ? आ श्चक हमही श्छयश्च
र सश्च हुनका सँ ! की ? के करओ पुरबा साही एकर- यश्च र सले अश्छ त ककरा सँ
के ?... राति क कं सुखाएल- ओह,जल पीश्चतौ दू घोट ! थ्वयास आकुल घैलची सँ
ढारऽ गेली- घैल श्चक्त ढन ढन करैत...!
श्चवस कही बा राश्च कही, हमरा कहला सँ की जीवन क्यि किही साक्ि, हमरा
कहला सँ की श्चषयो कहा हमर हमर सन लोकक ई सब यश्च अनुभव श्चकछु कहय त कहलो

सँ की एक्ष समाज मे मोजर त छुच्छे पुरख के भने लुल-नाङर बहीर बताह
कनाहो कोतर पुरखे हाकत ई समाज श्नायो करत श्वशा केर एहना मे श्चकछु
उश्चत-अपेक्षत, हो आवश्यक आबय कोनो श्चचारो त हमरा कहला सँ की? अनि देत
अपनहुँ संगी-सश्व-संबनी िश्व करत अनेक उपहास सेहो सब सहला सँ की मन मे
बड अन्हर-श्वहाक्ष, पाश्व आ पारि ...एखनश्च ि भेलय तैयार ऊिलय घर
देश्वते-देखैत दू पल मे ढनमना खसैये कमे लोक बचाबए दौडल लोक कहा अबैये
! इहो स्वभाव मनुक्ख-समाजक केहन श्चश्च जे छल रहैत िढ श्चपश्च मे से छश्च
आइ तटस्थ ।
आब त लोकक दुाख अनिएबा मे भेल लोक अभ्यस्त तकर दुाख बूझी, क्लेश सही
परन्तु यश्व चचा चाही ककरो हेतैक ध्यान,हएत गंभीर कश्चक एक रती अनुभव आ
वातावरणक जे रप अश्च पसरल कतबो केहनो हो आवश्यक श्चषय आ अनुभव,श्चन्ता
ककरा कहबै ? कोन भाषा केहन बानी मे ? सबके अपने तेहन िरफरी पैसल छैक जे
एक श्वस सुश्चतो रहत, पडाएलो जायत अपन गन्तव्यक श्वशा !

कतबो करबै सोर ।
अहाक आत्मीय श्यामन्ता सँ कम रहलै लोक के संपर्क-संवाद ।
सबके अपने स्वयं
ततेक दाबी, संसारक अनुभव आ व्यवहारक, मिश्रित सब सब के जेना हो
घोटल । जान त यमुनेक जल जका- भश्व लेलहुँ घैल,तमघैल श्चक बडका कलगोइया
लोटा । जत भेल इच्छा क लेलहुँ व्यवहार सहज-सुसके। बीच बाटहु पर हरा देने
हो नश्च एको श्वअया खेद, बाट के श्वच्छड बना क लोक के श्वछश्व-श्वछश्व खसबाक
श्वकैत तैयार क देबाक। लोक के भश्वसके होइत छैक भान--ओ की क रहलए, की क
गेल ओ लोकश्वर ि जान हेरायल बाट!-घाट भेटब केहन सहज भेल ! मनुक्ख सँ
मनुक्खक परस्परक भाव, जाश्वा नश्च कत गेल ? पुछश्वअश्वा एक श्वन यैह पश त
कृष्ण श्वहुँसलाह तेना जेना ओ त अपने परम बूढ-पुरान आ हम रही सोझा मे
कोनो ! नेना

नश्च ध्यान देलश्वा हमर एश्च श्वजासा पर त सहजश्च भेल हएत हमर मुँह उदास,
कनेक आहत सेहो। से अपन सि बुश्वयारी आ कौशल सँ करैत

तकर सम्हार कहए
लगलाह-"बड बताश्ल छे! ई सब काज तोहर नश्ल।सोचब जीवन, एकर श्चात्य
बदलैत-बढैत-घटैत व्यवहार,तकर गूढ पश्करया श्चषय होइत छैक जे छश्थि पंश्कत
जन हुनकश्ल बुश्थि-व्यवसाय। तो श्कएक करैत रहैत छे श्चकल अपन ई सुन्दर मन
? हमरे देख कोना रहैत छी श्लनका लोकश्चा सँ बाचल-श्छटकल, कए काल तं लैत
पतनुकान, अपना तरहे अपन जीवन जीयैत। सत पूछ तं कतेक रहैए श्चन्ता हमरो
श्लनका सभक ? हम तं रहैत छी तोरे मे लेपटायल, तो ही ने हमर श्चय
पाण!"
हुनक ई कहब बुझाएल सदा काकु उश्चत। कृष्णाक ई सब कश्ल जाएब रि-रि। अश्चा
श्चशेष क अंत मे हमरा जोश्क क कहब जे बात छल हुनकर।ते उश्चाते
कहश्लअश्चा-"जाउ-जाउ, बड हमरे मे लेपटाएल रहै वला अयलौहे।आ हमरे मे
रखनाहर ध्यान। अपने हुलकी द क देश्चयौ भश्च आँगन-, बैसल आकुल उत्सुक के अश्छ
अभागश्चा से मन ! जुश्चा परतार,कि नश्ल हमरा एना। हम तं ऑश्लनो अहाक श्चना

कोनो कायकि श्वकछु नश्च।"
-" सैह तं कहश्वायौ बताश्च, हमहूँ श्वान तोरे कोनो कायकि कहा छी? पाणहीन
देह आ ते गश्चा-स्पन्दनहीन अश्वस्तत्व भ जाइत, तोरा बूझल छौ।ता िश्च एना र सै
छे।श्वकएक एना र श्वम जाइ छे, मीत ?"
कएलश्वा उन्टे अपने श्वलाप सेहो।-"वाह रे श्वासाफ । र सल श्वापता भ जाइ अपने आ
दोख हम्मर। कहश्वाअश्वा हम तं उदास भ गेला-अनश्वान्हार उदास ! संच मंच बैसल
असकर एकटा बगडा जका अनमन। श्वा शब्द।"...

खेप १६

रात्रि-१६म खेप

बुझायल त एतबे जे अयलौ माएक गभमे
नौ मास अपनहि प्राणाणक नरक सहैत,माइयो के सहबैत
पश्चापल भवि जीवनक पीडा
माएक एक-एक सास के दुघटि करैत हम
अपनहि जन्म सँ कएल प्रकट पराभव ओकरा लेल।
ओ यदपि कहैत छैक- सन्तानक जन्म महासुख !
हम तं सन्तान, की बुझी तकरा कही की ?
...मुदा पुना-पुना माएक गभमे के रखलक हमरा ?
भविसक पता...वैह हुनके राखल जे,
होइत गेल प्रकाशत बनैत गेल रखिया !
एक दिन...सुनै छी एहि गामक रिती पर
......खसल चेहो-चेहो करैत, यैह झरकलही देह।
सेहो सुनै छी, माए तँ हपति किन्तु भेला बहुत सुख-प्रश्नात पता।
भेनायला जे बेटी, ककर दोख यदि दोखे त ?
जेना देलन्हि हमरा माएक गभतेना देने रहितथि कोनो बेटा ।
बाप की ? ते अपन काज केर फल सँ असंतुष
माय पर थोपल दोख देएक, कथीक ? ओना,
जे हो आबि त गेबे केनायला मायक कोरा-
एहि छोटोछिन घर-असोरा-आङन मे,
बाडीक ओलक गाछ जका अपनहि टोटी सँ प्रकाशत होइत,
सौसे चतरल गेल हथियर गाछ समान। भ त गेवे कएलौ।

जेहने भेलौ आब एतेक वखिश्चक भ गेलौ
बेसी बेटी त ओश्चनो ओले बुझल-कहल जाइए-कबकब, समाज ।

राकि मन बडे बौआइत छैक। एक क्षण एत, दोसरे क्षण नइं जाश्चा कत ? मन
खौझाइत बड छैक जे ओ एहन आ एहने भेश्चा श्चकयेक ? अपने भेल श्चक बना देल गेश्चा एना ?
की ? दुनू मे की ? बा एहू दुनू कारण सँ फराक श्चकछु कारण ? बा एश्च दुनूक श्चजझर एकटा
तेसर पश्चणाम श्चिक ओ ? बड व्याकुल होइत अश्छ-
श्चकये रसल छश्चि कृषा ?
आ श्चक हमही श्छयश्चा रसश्चा हुनका सँ ! की ?
के करओ पुरबा साही एकर-
यश्च रसले अश्छ त ककरा सँ के ?...
राकि कंि सुखाएल-
ओह,जल पीश्चतौ दू घोट !
श्चयास आकुल घैलची सँ ढारऽ गेली-
घैल श्चक्त, ढन-ढन करैत...

खेप १७

एना थकएक बेशी अनुभव आब अनथ्अन्हार लगइये

एना थकएक लोको सब, सथ्व पर्यंति बुझाइत रहैए आन

कौखन तं ई घरो-आँगन,टोलक सब गाछ-बृक

बाट-घाट,गाय गोर फूल पात, इनार |

सब थकछु अनुभव होइत अथ्छ दूर दूरस्तक बस्तु, तेहल्ला |

कौखन क' कोना बुझाय लागलय आन गाम आब अपनथ्ं ई गाम |

बेशी लोक देथ्वतथ्ं करय लागैत बुझाय उपहास

एना कोना मोन हमर बन्हा गेलय अपनथ्ह लाचाथ्वक ि ि?

मामूली मूक मालजाल जका थ्आयथ्ाक सोझा मे थ्आहुरल

जीथ्वत अथ्छ देह-पाण यदथ्य ई तैयो बुझाय लागय थ्आषाण |

कौखन तं सबटा जे एखनथ्ं छल सोझा मे पत्यक अिर्गीन

सौसे घर एक संग थ्आझा गेल थ्छथ्वया जका अकस्मात भ' जाइछ

अन्हार सबटा क्यिि|

सब अनुभव तकर गथ्ाथ्यथ्ि बेकार

से क्यिि मिन-भार क' दैत अथ्छ नवे तरह सं क्याकुल

सबटा सब तरहक जतबा जे बुथ्ि अपन लगा-लगा

िथ्क जाइत अथ्छ इच्छा|

सबटा जे अनसोहात, अथ्आथ्छत-अनपेथ्कत पथ्वथ्ि थ्ा

सब मे सं थ्कछु ने थ्कछु अंकुराय लगैत बुझाय लगइये दैत पेपी,

एक कग-दू कग जतबा िथ्व संभव ध्यान देब -

से लगले ओ सबटा अंकुर सब

अपन अपन दुपथ्ा-थ्ानपती बथ्ा

माथ्ट पर पनगैत सघन जीवन स्पंथ्दत वनस्पथ्ा भ'

हरियर-हरियर लहलहाईत बुझाय लागैत अछि ।
सौसे परिवेशक एक-एक मनक सबटा व्यथा बोिध,
स्वयं सेहो जेना अपना स्वभावे अंकुराय लगैत अछि -
देखैतहुं देखैत बन' लागय अन,फल-फूलक से छोट-पैघ गाछ
रमनगर, सभ टा अपना -अपना रंगक आशाक हरियरीक आभास
सदा अनुभूत करैत, क' दैतछि देखबा लेल बाध्य |
देखबा लेल माने ओकर परिचया -सेवा ....

अनायास तकैत छी घैल पानि,
सभ के पटब' मे लगैत छी|
सभ के जल पिया-पिया जखन होइ छी तृप्त तखन
अपनहु देब' लगैत अछि कंठ मे िसि
पियासक उत्कट इच्छा ...
अहा ! कंिगत होइत एको आंजुर ज'ल !..
हा कृष्ण !
कत' छिथि ?
मुदा जँ पीयब तं शीकृष्णोक हािन.
खाहे छुटि ने जाओ ई पाण .
देखैअछि आसपास कतेक िसंह नहि लैत छथि हमर कुशल-समाचार
कतेक िसंह सहैत रहैत छथि- हमर पियास

अपन-अपन राि १८म खेप

ओना ई सबटा आत्मपतारणाक जे थिक हमर अपनश्बं उपाय अंतता थिक श्क एकर जश्क आ आरंभ ? श्कएक बनल रहैत अश्छ हमर एहन श्वन-राश्ब-श्वन? जीवन जगतक कोन आवश्यकता आ तकर उदोग हेतु हमर ई श्रश्कय जीवन-चया, आइ आइ भ' गेल कए श्वन ।हम जे एना एश्च तरहे सब सं कश्ट क', छूश्ट क' सबसं सौसे समाज के क' एक कात हम जे चश्ब रहल छी अपन आ अपनश्बं एकान्त बाट तकर अिकी आ महत्व ? सबटा अश्छ गश्ब श्यश्र िप्प, सब श्कछु िढ । गाछ-बृक िढ से तं बेश, लगैत छैक बेजाय मेघक तारा पयन्ति जे जाश्ब नश्ब, चलैत छैक आ अपन-अपन सिन बदश्ब लैत छैक बा नश्बं, जात नश्बं, िरतीक लोक के तं बुझाइत रहैत छैक श्बिरे भने कौखन क' बुझाइत श्रमश्रमाइत जेका मुदा ई मनुक्ख आन पाणी ई नश्बं रहबाक थिक िढ बेशी काल नश्ब चाही श्बिर ई थिक अिलाह, असुन्दर । कारण जे िढ रहब थिक श्रश्कय कमि। मनुष्यक मश्बमा तँ अश्छ-सकमकि सकमकि ।

भने ओ िहुन मोडने बैसल-बैसल बाश्ट रहल हो साबेक जौर। बीच-बीच मे करैत सकत अपन मुरेि, भने रोश्ब रहल हो कुकुर-श्बलाश्क, भने मोछे श्यजबैत हो बडी-बडी काल-आत्मलीन !

भने मनुक्ख तोडैत बेलपात-फूल । लोढा करैत कटनी भ' गेल खेत मे मनुक्ख । एत' श्वि जे नीक लगैत अश्छ-नीक ! अित सश्कय श्कछु करैत । मुदा बच्चा के करैत दुलार । बैसोने कान्ह पर अपना लगैत अश्छ लोक श्वक्य आ श्यशासी । लगा रहल सानी-

पानी माल जालक मनुष्य। आ तखना पोखरि, गिर मे गाय-गोर-बाछी के नूरी सं मखि मखि क' नहबैत। एहि सबटा पखिक आ रुप मे मनुष्य सतेक मनुष्य बुझाइत अछि। सखीयो तखना लगैत अछि अहुआ के अपना स्तन सँ लगा अआ रहल दूि ! सुन्दर, वास्तविक ।

अयो थीिक तखनक मनुक्ख।

ओहो नहि लगैत अछि बनु ककछु करैत, अोककय बैसखि बा सूतखि-नीक नहि लगैत अछि सखी। कम सं कम अयनाक सोझा बैसखि अंहारैत अपन देह-मुख । कम सं कम यत आ मन सँ दुनू आँखि केअहत क' दपणि मे सटैत भाल पर मोन पखान खकुली , सखी एतबा करैत नीक लगैत अछि।बैसखि आ चुप सखी कमिथ नीक नहि लगैत अछि। बैसखि सखी बुझाइत अछि-गृहसखीक बस्तु जात, जेना-खाट-चौकी-चूखि-घैल आ हासू बाढखि इत्यादि...। सखी एहन आ एतबे कदाय ने नीक लगैत अछि।

घोघ तनने डेराएल-गिखे दबल-सहमल बेमोनक मयादा ऊघैत सेहो नहि लगैत अछि-सखी। ककछु मास,खन कखया-बौआखन बनखि रहबाक अखखि बड खब लगैत अछि ओ तािय,घोडैत रंग, बनबैत फाहा करैत खिकला,बना रहखि गिरखुर पर कदमक गाछ सप्त पुरइन पात । सूर्य-चिन्द्रमा-तारा आ नब नब कोहबरक करैत खन्यास,गबैत गौरी-पूजा काल गीत।अगिीन सत्य आ ते बड खशसनीय लगैए सखी। सखिसंगीक हेज मे माि पर काख तर लेने घैल पोखरि इनार सँ अबैत हँसी िटा करैत सखी। पेमासक्त पुरष-मुख चुम्बत होइत लगैत अछि खलकण ।मुदा टटका घैल सदृश्

भरल दूि-वक िरौने नेना, बश्मा जाइछ स्पयं एकटा अश्मावििनीय कलाकृश्मा ।एक संग अपने कला आ अपने कलाकार! सिी-आँचर तर श्वाशु पल्लव मुख मे देने श्माज पाण-रस िन, नीक लगैए।-श्वक्य अलौश्कक । -" से तो कोना क' बुझलश्क राि ? तो ? ई तं छौक नश्न तोहर अपन अनुभव। तखन...?" श्महुँश्क उिली राि-ऐं पश अश्छ श्क ई कोनो आकाशवाणी ? एकान्तहु असकर मे सम्हाश्व लेलश्मा माि पर नूआ, झाश्प लेलश्मा छाती। नख-श्वाख सम्हारैत आँचर भ' गेलीह अस्तव्यस्त। लाजे श्महुंश्च गेलीह। भ' गेलीह कीित । िकमूडी लाश्प गेलश्मा। सोझा मे िढ सदा शीकृष्ण ! सरस कुश्टल मुश्मकआइत, चाहैत जवाब एश्न सिी रपक। -" माि अहा ?" एतबे तं बाश्म सकलीह राि। तत्क्षणे भ' गेलीह तुरन्तो स्पश्ाि लजश्बजजी !- फेरो एक बेर िखा ,पुना कएल छल । जाश्मा नश्न ई कपटी सं कश्नया भेटत कल ? ने सोझा अबैत छश्थि ने चल्ले जाइत छश्थि श्मात सँ ।

अपन-अपन राि १९म खेप

ने करथि बैथ्स क' एक क्रण दुटप्पी
ने भैये जाथि हमरा अंतर मे चुप, शात|
मन तं बर हो हमर, हमर अप्पन, अपने मे भेटैत
खास अपना अीन |
कहा होइत अछी से ? कहा?
कोनो उपायो कहा होइछ...
उताप दग हदय मे ई शीतल , श्राथिन्त,
रौद-बसात सबटा जेना भेल अछ्छ, जेना श्ककछु नश्चं |
सब श्ककछु भ' गेलय श्ककछु ने |
ई तं नबे पराभव थीक, नबे र पक माया !
बेश नाथ्स रहलौन्हे आत्मश्वाप्त अपनश्चं अरजल एश्व
स्मपीरण के बान क' जेना अनुष ान
बेश भथ्कत-स्माहैत समपणि सं क' रहल छी कए श्दन सं होम!
अपनश्चं नश्चं ,हुनको थ्यर ि ई कमक्रिाड, श्मनका

भश्व गोकुल कहैत छश्म कन्हाई |
...ई कश्वया छौरा नश्चं जीब देत, नई मर' देत|
नै रह' देत, नई कह' देत श्ककछुओ टा...
अपने रहत एश्वना अलोथ्यत |
कतोक-कतोक श्दन, आ बनल बौक राखत हमरो बना क' एश्वना

एही दशा|
...रािा दाई बड कि़िर भ' जीह कूच' लगलीह-मनकि़ि मे एना
शी कृष्ण के करैत गंजन, लगबैत अिभयोग पर अिभयोग कयना
गेलिथ घोर पाप से
बोिि क' देलकैन अस्तव्यस्त, अिस्थर-अशात पाण !
छटपट छटपट करय लगलीह, कए टा कृित्रम व्यवहार-बात , जेना
-
ि़िअ' जल सं आंिख-मुंह-कपार-कान-गदैन गरदिन-हाि़-पैर आ
नुआक आंचर सं पोछैत बेर-बेर
फेर-फेर पोछैत अपन पोछलो देह-अंग
जेना अपनिह के करबा लेल आस्संग क' गेलीह कतोक काल
कैक टा एहने िवषय , बनौटी काज | ई सब केहन रािक कमि
आ
कृष्णाक की ममि? मुदा िलखत िलिखतय रािा-
एक टा नबे कमिगीता सभक सौसे समाज सब लोकक बुिद्ध शमक
करबा लेल
नब तरहक पयोग-उपयोग, तकर लगािबतय अनुमान-िवजान |
सभक शमे िढ कििबतेय सबहक एकिह समाज, तेहन लोक-बुिद्ध
नब संस्कृित सृिष्ट नूतन स्वाद सुखी लोक-शािसक-संसार !
बनािबतौ हमही
हमही बनायब से स्वािीन सुरिक्षत सबहक समाज |
कििहया मुदा ?
कोना ?

मुदा ओकर कोनो प्रमाण नहि कि चूल्हा फूकबाक सन सरल काज,
राति, बाज। छैक तेहन सोझ काज, नीचयया-बचकया आ एत' धरि
जे
मालजालक सेवा सन सहज-सरल ?
से कमियो नहि, कमियो, बनब' सं पहिने अपना के किछु बनाब'
पडैत छैक-
बना सकबा योग्य !

से योग्य लोक होइत अछि एकटा बुद्धि, पेरणा,चेतना ।

अभ्यास-पयासक बले जनु िकिल अनवरत चलबाक-
चलैत जयबाक संकल्प सँ माि कल्पना करैत छैक-
मनुक्ख के तैयार क' जयबा लेल, अपना अपन भाजी पछुवार छोडि
सौसे समाजक करबा वास्ते काज-उपकार ।
से कल्पना र प िरैत अछि-कमकि, मोन आ मेहनतिक आरन्तर
कारबार मे,सुतैत-सुतैत-उ ित,चलैत-बैसैत
मनक स्वप करबा मे यि शीघ साकार
जाय नहि दैतछि एकहु टा क्षण अनेरे-बेकार से
कम कम सं िर' लगैत छैक र पाकार ।
स्वपक साचक आ गढबाक उपकम मे होअ' लगैत छैक
िढ अनमन सभ भोर देखबा योग कोनो छोटछिन गाछ भने हो
भाटाक,
एक रती आओर ऊँच मूडी ! पात सब ओकर आओर देखार
देखबा-बुझबा योग्य से प्रकास, उनटाक लक्ण ,

समय के सक्रिय-स्वता चलैत-चलवैत रखबाक अिक स्वाभावक दशनि
पेश्वत करबाक दाश्यात्म-श्वावाह, बुझाइत छैक--राश्वा बीतल तं एकश्व िमि
अिात ओत' नश्वं जतए सँ साझ भेल रहय, ओ बीश्वा क' बश्व गेलय आगा-
भाटा गाछक एक नह बढबा मे,
भश्व टोलक इनारक भोरका जल मे, आ कए पकीक बयस्क कलरव मे श्वाजश्वार
भेल श्वकछु आओर चुनचुन करैत सदा जनमल चुनमुनीक बोल मे
अनमन जेना मन्द्र आ तार सप्तकक लाश्वा गेल हो कोनो-
पँचम, बा मध्यम स्वार एके संग आ ध्वाश्वात भ' गेल हो सबटा
एकदम्मे सँ नब रप-स्वाद मे अवणनीय !
काल एश्वना एही सब गश्वाश्वाश्वा-पकार मे
आगा बढैत अश्व। सभक बयस मे एक श्वदन आरो जुश्व जएबाक रप मे,
गत श्वदनक बाश्वा गेल खेत के जोश्वा पूरा क' देबा मे काल बढल अश्व आगा।
ओ नश्वं िहरल भश्वयो राश्वा। लोक-पशु-पकी-मालजाल आ गाछ बृक जका भश्व राश्वा
सुतबा-सुस्तएबा आ श्वशाम करबा मे श्वकंबा जगले स्वाप श्वा!

पडऽल एक िमि कोनो सीश्वात स्मृश्वा-सुख कामनाक
स्वाकेश्वादत मोहक िहरल संसार मे नश्वं। समय तकरा अनिा क'

बढल गेलय आगा।

पाछा घुरबाक ओकरा अधिकार नहि भेटलैक। नीके भेलैक। सोचि-बुझिये क' कएलखिन ई सृष्टि

एहन छथिन, काल नहि घूमि सकय पाछा, नहिं तं ओहो बनि जायत मनुक्खे जका-अहदी,स्वार्थी

आ ते आत्मसुख लीन जीव ! गबैत अतीतक कुरुप सँ कुरुप कटु सँ कटु गीत,

मनेमन देखैत रहत मन माफिकक सपन देखलो व्यतीत, तकर मृत अमृत छवि भेल आत्म विभोर।

करैत रहत पात सं दुपहरिया, साझ सं भोर..

मरल अतीत मे जीयब केहन व्याधि थिक इच्छा मनक ?

काल टा बाचल अछि एहन संकामक रोग सँ, स्वच्छ अछि।

ते तं अछि साबुत निर्भीक निर्मम सेहो,ते ओ सतत तैयार !

अपन पगहा आ कमलिेल ओकरा ने चाही कोनो टा औजार,

मनुष्य जका,जकरा दातमनि पर्यन्त हेतु चाही एक टा छूरी,

नह काट' वास्ते नहरनी...मनुक्ख के दात खोधिबाक लेल पर्यन्त चाही-नोकगर खरिका।

किछु ने किछु कोनो ने कोनो औजार

मनुक्ख भेल गेल किंकर्तव्यविमूढ़ ते कालकमे ध्वंसक !

ई कोनो आत्मग्लानि करबा योग्य विषय नहि रहैक जतेक रामि के बुझाय लगलनि।

अपनएहि मनोदशा मे जीवैत एहन नोतल असकर एकान्त मे अपन

आ भाव संग आइ

कए दिन बीति गेल छलनि। कए दिन गाम,लोक,समाज सँ अदृश्य अपन उपस्थिति

एकान्त मे यदपि बुझाइत छनि सब किछु छनि उपस्थित, शीकृष्ण जत' सदा उपस्थित

होथि ओतहि तं छनि हुनक बड़ाड उपस्थित ! मुदा ई बोि राि के एक रपे तेना समृि

कएने रहलनि आइ िथि जेना कथिनता सँ अजलि पयाप्त िन पर कोनो अकमकि भ' गेल

िआक! एक समय आिथ न्त सूिख गेल हो। के पडओ आब किछु करबाक चक मे ? पयाप्त

तं अछि । सब टा मौज करी,जीवी,खाइ-पीबी । ई कोनो आत्मगलानि करबा योग्य विषय नहि रहैक जतेक राि के बुझाय लगलनि।

अपनएहि मनोदशा मे जीवैत एहन नोतल असकर एकान्त मे अपन

आ भाव संग आइ

कए दिन बीति गेल छलनि। कए दिन गाम,लोक,समाज सँ अदृश्य अपन उपस्थिति

एकान्त मे यदपि बुझाइत छनि सब किछु छनि उपस्थित, शीकृष्ण जत' सदा उपस्थित

होथि ओतहि तं छनि हुनक बड़ाड उपस्थित ! मुदा ई बोि राि के एक रपे तेना समृि

कएने रहलनि आइ िथि जेना कथिनता सँ अजलि पयाप्त िन पर कोनो अकमकि भ' गेल

िथआक! एक समय आथिन्त सूखआ गेल हो। के पडओ आब थकछु करबाक चक मे ? पयाप्त
तं अछ्छ । सब टा मौज करी,जीवी,खाइ-पीबी ।...परन्तु जबकल बन्द िनक गथआ तं कपूरि
जका होइछ, थलाइत-थलाइत आठाहे थला जाइत छैक । यावत् याबत् ओ आथिन्त िथआक
जगैए, बूझैए ताबत भ' रहल रहैत छैक ओकरा पर कालदण्डक गंहीर पहार। ताबत् भ' चुकैछ ओ
अिबल-बेकार..हाि मलैत-कछमछ उिित-बैसैत...
तािथ जेहन अमूल्य िन शीकृष्ण के माथआ राि छथि स्वयं मे शी सम्पन िन्य परन्तु से
तकर स्वरप की एही रपे एथ्ना बहुत काल िथ राखल जा सकैत छैक- अनघट अक्षुण्ण ?
की एकरो नथ्र होअ' लगतैक थ्वनानुथ्वन क्य ? घटतैक नथ्र एकरो पभाव आ गुण ? यथ्द
ई एथ्ना एकरप एकथ्र थ्थिथ्त मे, एकटा स्नेही पेमी, से भने राि थकएक नथ्र हो तकरा
पेमक पताप सँ माि रहतैक सुरथ्क्षत? एथ्र पेम मे थ्वकास हेतैक अपन एहने असकर समथ्थित
परन्तु थ्आजी एकानि मे ? ई बज एकान्तक उस्सर समय-भूथ्आ मे पेमक लतीकतबा ऊँच कतबा
ऐल फैल चतथ्र सकतैक ...

भने कतबो पटाबथि राि, जल नथ्र-अपना नोरे सँ तकरा।

ओहनो वनस्पश्वा पेमहुक वनस्पश्वा के नोर नश्व, नीर स्पच्छ शीतल नीरे
संवर्धिति करैत छैक । बढबैत छैक ओकर शश्वत आ सौदयिआ बनबैत छैक
अपना अश्वतत्व सफल होयबा योग्य तैयार।
ओकरा चाही श्वात्यक स्नेह संचाश्वत गश्वा श्वथि, व्यवहार ।
राि श्वकएक नश्व सोचैत छी,
श्वकएक नश्व सोचश्वऐक ई बात ?
जाश्व पेम आ तकर अश्वमान मे पडल रश्व गेलहुं अनेरे एतेक श्वदन
असकर श्वाश्वकय, जाश्व स्नेहक स्पाश्वमान मे अडल रश्व गेलहुं
एते-एते समयक क्याि श्वदन-राश्वा,
तकरा श्वक एश्व बाटे कश्वयो पाओल जा सकैत अश्छ?
बढाओल जा सकैत अश्छ आगा? संभव छैक
एश्व रस्ते पहुँचब ओश्व िमि जतए र सल बैसल छश्वि अपनेक
बृन्दावन श्वहारी लाल, श्वकछु करबा मे लागल छश्वि।
देखाइ नश्व पडैए। देखाइ पडैए मािअहाक अपन आत्म पीडन,
स्पयं के सीश्वदत करबाक मोनक एक टा सुश्वातगर रोग
सुश्वातगर पर उनश्व उिली मने मन राि ।आश्वखर रोगे श्विक ई'
बुझओलश्वा मन के-' उि, अपने आप के कर तैयार।
पडल नश्व रहू केहुनी पर भार देने, तरहतिी पर राश्वख क' िढी अपन,
एते-एते श्वदन-राश्वा, राि दाय ! की कहने रहश्वि ओश्व सन्ध्या शीकृष्ण ?
आ केहन साफ-साफ, जेना कहने नश्व, गाश्व क' सुनौने रहश्वि

अपन

थचार,आत्माक अपन उल्लास ! सते, कहने नञ्ज रहथि ताञ्ज क्ण

गओने रहथि अहाक लग अपन मनोराग ।

-केहन आनन्द छैक रा ि, करबा मे कोनो उपकारक काज ? स्वयं

कोनो कारणे अशक्य-असहाय जे भ' गेल हो,

क्यो नञ्ज हो जकरा देखआहार, क' देबा मे ओकर बहुत जररी

काज ?

केहन लगैत छैक मोन के खुशी? से करबा मे िश्च भ' गेने

मन भ' जाइत छैक कतेक थ्वन,

बुझाय लगैत छैक केहन अकमकि, उदास ?

<u>अपन-अपन रा ि २०म खेप</u>

-केहन आनन्द छैक रा ि, करबा मे कोनो उपकारक काज ? स्वयं कोनो कारणे अशक्य-असहाय जे भ' गेल हो,
क्यो नञ्ह हो जकरा देखभ्आहार, क' देबा मे ओकर बहुत जर री काज ?
केहन लगैत छैक मोन के खुशी?

व्यि िएतेक जे बौसलीयो छूबाक नञ्हं बाध्य जाइत छैक स्पृहा।
तो दुक्ख नञ्ह मान, एत' थ्ि जे व्यसख छे तो पयन्ति रा ि,
तोहूँ हमरा। हमर आनन्द जका भेटैत छे से बात ओही काज मे ओञ्हना...
जेना मोन छौ-मनसुख दास के बुढारी मे जे बेदखल क'
आकाङ्क्ष देने रहैक घर सँ बाहर अपन सहोदरे पहलवान भाय ?
हाहाकार करैत असहाय मनसुख दास !
ओकर जीवन मे कतहु थ्कछु ने बाचल रञ्ह गेलो उतर
पहुँच्ा गेल रहीक तोही, हँ तोही ने आ
मा ि एतबे तँ पबो िने रहीक ओकरा-' कका, नै दुख कर ।
एतबे टा नञ्ह छैक ई संसार आ यैह टा नञ्ह
अञ्छ एक टा भाय-सुनर दास।ियि ि र , नै दुख कर ।
बाचल छै एखनो लोक आ समाज ।
स्वयं शीकृष्ण छथ्ि एखन अपने गाम।
चलू, आउ। दू घोट जल पी लेब कका ?

नञ्ञ हो तं थ्यशामे क' श्लाअ' कनी काल।
ऊपर सबटा देखै छथ्थि न ईशर,करै छथ्थि न श्याासाफ।
तकैत छी हुनका, जाश्ला नञ्ञ एखन कत' छथ्थि, एहने बेर मे
जखश्ला चाही समाज के हुनकर हएब,
अत्येब क' जेना भ' जएताह अलोथ्यत !
कोना श्यसश्व गेलही रा ि,अपने व्याकुलता अपन से काज?
हम कोन्टा ि ने रश्लयौ सब श्यकछु सुनैत, देखैत तोहर अहुँश्छया कटैत
तोहर मातृ-भाव, रा ि ।
श्यकछुए काल पश्लने तं फुरतीया दौडले गेल रहय,
पहुँश्च्या क' कश्ल चुकल छलय हमरा मनसुख दासक ई समाचार!
कोना कश्लयौ नइं, तोरो मनक समाद तं सुनाएले रहय तत्काल ।
खौझाइत-तमसाइत कोना रहे श्यालश्यखनी तो हमरा पर...
दौगल-दौगल आएल रही...देखने रश्लयौ तोरा अपन काज करैत !
गछै श्छयौ देखैत ई सब दृश्य
हृदय भ गेल पश्य ि, श्यन्ता-श्यथि न्ता !
केहन बुश्यियाश्व अश्छ हमर ई बेकूफ रा ि...।
ते उपश्थि त भेश्लयौ तोहर दासम दास ।
अएश्लयौ, पगट नञ्ञ भेश्लयौ रा ि।...श्यसश्व गेलही ?
हम तोरा पगट नञ्ञ, उपश्थि त होइ श्छयौ रा ि ।
तोरा लोकश्ला बूझ ई बात आ मानै जाइ जो।
एहने एहने पश्यश्थि श्ला मे बेर पर हमरा भश्व संसार मे कतहु सँ आश्ला ले...हमर भाव-र ि केहन तेज आ केहन सुस्त चलैए, बुझले छौक ।....

अरे रािा, कनैत थकएक छी ? की भेल, थकएक कनै छी रािा !

कानब तं सीिक थ्ायस्ा छैक। आँचर सँ नोर पोछब, जेना दैथ्ाक काज।

मुदा नोर खसबाक आशय बदथ्ा रहलैये-पथ्ा पल।
युगक अपन-अपन स्ाभाव !
युग बदथ्ा रहल छैक। युग बदथ्ाते रहलैये। पथ्ाडत जनक अपन-अपन बुथ्िक व्याख्या संग,
आगत युगक सिापना आ अतीतक बथ्ाष्कार चथ्ातथ्ं आएल छैक। कालगथ्ाक ई एकटा अप्पन
आ स्ायत पथ्कया छैक।सब मानैत छैक। सब के मान' पडैत छैक। कए बेर तेहन अभ्यागत जका
जे अभ्यागती के बना लेने छथ्ि-अकमण्यिताक अभ्यास। स्ाभाव, अथ्ाथ्ि देवो भव' के हथ्िया लेने
छथ्ि बडका नैथ्ाकअथ्िकार हिकंडा औजार जका। ओहन-ओहन हुनका हेतु पथ्वार भेदे अवस्से आब'
लगलैये-सेवा भाव तत्परतामे थ्कंथ्ात उदासीनता सेहो, अवहेलना नथ्,हुनक सेवा मे कतबा आ केहन
आ केहन व्यवसिा लागथ्ा-समय सं ल' क' स्ागत-सत्कारक गृहसीिक सािनिक कतबा कएल जाय
खर्च-विचिताथ्ं पर होम' लगैत छैक थ्चार पर थ्चार । गरबैया पएर िआ कम्मल-पथ्ठया पर सिाथ्त

क',आँगन जा भोजनाद्यक द' कञ्ज,भ' जाइत अछ्छि अपन थ्वनचया मे पवृत। अभ्यागत रहैत छथि दलान
पर असकर सािथ्यत।
युग सेहो, होइत छथि तेहने अभ्यागतो महराज। आब तं आरो,
जखन बापो-माय बूझल जाय लागल तेहल्ला...
कहू तं बेटा-भाय कतहु घर सं थ्याकाश्ना थ्वअय ? अपने बाप-भाय के एना क' करैत थ्वारस्कार
बनबैत असहाय ? ई एहन युग यैह एकर रंग ताल । आ से रहत जाश्ना नै कतेक दापर-युग ?
के जानय !
दुाख पगट कर तं कहताह बूढ पुरान, जानी-पंश्चत-' यैह थ्विकैक सृश्च चक। कालगश्चाक यैह छैक
पकृश्चा-थ्यािन ।अनाद्य काल सं चश्ना आश्च रहल, अनन्त काल थ्वि चलैत रहत। मािं यैह टा तं
चलैत छैक-अमृत गश्चाक पवाह। नञ्जं मरैत छेक ।

मनुष्य समेत पाश्चा मािं तं अपना अपनी औदें मश्च जाइत अछ्छि। जन्मे जका मरण सेहो थ्विक
अश्चावायिा मुदा ई कालचक जकर नाम युग कहैत छैक कतोक युग सँ लोक, समाज से अपने
रहैत अछ्छि अकुण्ण! अनिक चलैत, छश्चाते रहैत । थ्वकछु काल थ्वि लोकक जीवन मे आदरणीय
अभ्यागत,आत्मीय, सर-सम्बाश्चि क जका...।तकरा बाद गृही के अनुभव होम' लगैत छैक ओकर

ओकर अभ्यागतीक छुच्छ कतिपि-अवाह। आगा सेहो अिश्ना यथ्व एहने बनल रश्व जाइछ तं
अश्वाधि गृहस्िक करय लगैत अश्छ शोषण। अपन ताही कुटुम्बक, सम्बनिक कर' लाथ्र जाइत
अश्छ उपयोग-उपभोग ते गृहस्ि, सम्बनीि कर' लाथ्र जाइत अश्छ ओकरा पश्च िचार अस्पीकार।
तकरा पित् ओकर अवहेला। यैह िक पकृश्ना इएह तकर तासीर।तखन बतैत वतमीन जाइत-
अबैत खारीक मध्य नव तरहे उ् छैक उदेग आ िचार-िमशि! अनन्तर िवाद । िता-पुि
पीढीक परस्पर िचार भेदक नऽवे यिािजे दुहू के अपन-अपन तकिश्वशास मे कएने रहैत छैक
लाचार, तैनात । होअ' लगैत छैक संघषि! तकरा समाज आ समाजक िदत्समाज कहैत छथिन
पीढीक मनोभावनाक िभेद । िभेदक दन्द आ तज्जन्य दुथिा, तकरे पभाव, जीवन दशा आ
पथ्वार-व्यवसि के कर' लगैत छैक देखार अनदेखार पेथ्वत-पभाथ्वत।पारम्भ भ जाइछ युगक
अन्ताथ्वरीि। स्पभावता अन्ताथ्वरीिकि कए टा नव नकारात्मक पश्नाफल ! एश्व बीच नव सृष थ्वाशु
पीढीक होइत रहैत अश्छ एश्व दुथ्वा-दन्दक घोर पथ्वअ्थ्वश्नाक आगमन, थ्वनानुथ्वन थ्वकास।
बनैत-बढैत अश्छ ओकरो मे अपन बुथ्वि, दृथ्व कोण ! लगैये ओहो अपन िता, िताामहक सोझा

करय पश िढ।जवाब चाही ओकरा । जे जवाब ओकर थ्यताक छलैक, आजुक आवश्यक ताश्व सँ
बहुत बेशी बश्च-चश्च क' चाही-
नव खाढी के अपना पशक त्यश्वत समािन !

समय अपने तं एकटा असमाप्त पश अश्छ। अपने पूछैत अपने जवाब दैत। अपने
चलैत अपने िढ रहैत।िढे िढ चलैत, चश्लते-चश्लते िढ तहैत।पश्छला क्णक पश
के अश्याला उतर लेल मिैत, आगाक पश िढ करैत। पुना वतमानक सोझा भश्वष्यक
आकार-पकार, संवेदना आ तकितकैत-तैयार करैत-मनुष्य के बनएबा मे तकर कहार।
समय अंतता तँ होएत अश्छ-एकाश्धकारी बुश्धयार ! अपना के रखने सदश्व तटस्ि आ
श्नश्वकार, करबैत रहैये सौसे संसार लोक सँ आदन्तो कायिव्यापार मुदा स्वयं रहैये
यिायोग्य आत्मश्वशासी नाटय कलाकार । अपन भूश्मकाक पतीक्ा मे श्नश्चन्त आ
तैयार। मोह नश्ञ श्छकछु कोनो आगहो-दुरागह नश्ञ श्छकछु। मािि अपन होएबाक आभास
दैत देखैत रहैत अपन अश्स्ततत्वक लक्ण सूक्ष्म सँ ल' क' श्वकराल । श्नश्चन्त श्वदमान

रहैत अछि-लोककमोन मे। पृथ्वी,आकाश, पकाश सब मे स्थापित अछि मोताबिक जीवनक
जल जका अत्यन्त सूक्ष्म रंगे घुलल, अजस्त्र । एक रती ने एम्हर एक रती ने ओम्हर।
िमात्मा दोकानदार जका तराजुक दुनू पल्ला बराबर। डंटी संतुलित िक मध्य मे।
तौल बराबर। कतहु सँ कोनो पलडा कखनो लत नै, उलि नहि। तेहन पक्का दोकानदार
-ई समय ! कोना रहैये ललकारने,दुलारने आ हडकौने मनुक्खक क्रिया कलाप के?
कतेक आवश्यक आ समयबि पयोजन हेतु कएने रहैत अछि संसारी सुख-दुाखक
आलाप-विलाप ! सबटा तँ लैत आबि रहल अपने मूडी पर बौक दास जका सहैत चलि
जाइत अछि- अनन्त काल। करैत रहेत अछि, पश, दैत चलैत अछि उतर । सजग
अभिभावक सतत जेना ध्यानस्थ मे-साकाक । ई तं भ' गेलैक आब ? अच्छा...
कालक कहार बनल मनुक्ख-जाति ओकरे भास पर नहि गबैत रहैये कमकि गाबैक
गुणगान । कउखन उद् गार मे, कखनो दुाख-शोक मे मनुक्ख । कालक ई दुनू बोि
के उघबा वास्ते तं लोक अछि। दुाख आ सुख । यैह दुनू टा तट आ बीच मे बहैत

जलक ि‍र । कउखन सरस्‍वती कखनो यमुना कतहु गंगा, कोशी कतहु कमला कल-
कल ि‍र !

जीवन ई ि‍र थ‍ि‍क । मुदा ई ि‍र कतोक थ‍ि‍न सँ अछ‍ि, थ‍ि‍र। अनपेक्ष‍ि‍त।
अनान्‍दोल‍ि‍त ि‍ढ।आि‍य‍ि! नदी होइतहुं थ‍ि‍र तेना जेना हो गामक पोखर‍ि-इनार।
यमुना मे कए थ‍ि‍न सँ क‍ि‍छुओ टा गत‍ि‍श‍ि‍ल नह‍ि। शान्‍त चुपचाप अछ‍ि ि‍र।
बड उदास । गुमसुम तकैत जाइ नह‍ि कोम्‍हर, ककरा कतेक काल...
यमुनोक लेल काल ओहने थ‍ि‍र। ओह‍ि‍ना बहीर अकान, मनुक्‍ख लेल बनल रहैत
अछ‍ि जेना। कालक एतेक व‍ि‍राट व‍ि‍स्‍तार मे एक टा असकर पाथ‍ि मा‍ि बाचल
रह‍ि गेलय-नाम जकर रा‍ि ।

अपन-अपन रात्रि २१म खेप

किछु ने देखाइ पड़ैत
किछु सुनाइ नहि पड़ैत
किछु चलैत-फिरैत नहि
भय पृथ्वी भ' गेल अछि निःशब्द
अनालोकित सात समुद्रक नील नील ! नीलेक अनन्त भीजल विस्तार।
कतहु सँ कतहु किछु ने सुझाइत अछि वस्तुक कोनो आकार जल जेना
बनि गेल हो महाब्रह्माण्डक अकल्पनीय अस्पर्शनीय,अक्षय-अपान्द विस्तार
एही क्षण पृथ्वी पएर रखैत एही क्षण जल | हाथि-पएर चलबैत ऊँच अदृश्य
दुर्गम पहाड़- मन के, बात के चेतना केँ कठिर पएर पंजा सँ ओंघड़बैत,
गेन जका गुडकबैत । स्वयं गेन, स्वयं अनन्त विस्तार-महाकाल ।
तँ की भेल अछि एखन पल रात्रि स्वयं सेहो महाकाली शक्ति! नेनपनहि सँ
सुनल वर्णित जका ?
हमर समय की थिक ? रात्रि रात्रि के पूछैत छथि-हमर समय ? हम कोन
समय मे छी? कोन रूप मे कतेक आ कम्पि लेल ? अतित्

समयक
निरन्तरता मे हमर ई एतेक दिन-राति,भोर-दुपहरिया-साझक अबाि
अनुपस्थिति कोन ािम अछि ? एकर की साि छैक । हमर अस्तित्वक
एहन नहि हएब, आि हएब ,आि नहि हएबब।होयबो करब आ
नहियो हएब। एकर की हो आकलन ,के करय एकर हिसाब ? हिसाब
कएलो उतर एकर की हो फलताि?

अिि तं चाही सभक अस्तित्वक, कीडा-मकोडा सँ ल' क' चुटी-पिपरी, घास-पात
लती-बृक सभक अस्तित्वक पश्चात अि होइछ ओकर अस्तित्व,
वैह ओकर औचित्य
सौसे पृथ्वीक सभटा सहजभूत पदािि आ तत्व अपन अिि ल'क'
आएल अछि। अि तं ओकर आयु बनैत छैक, देह अिवा काया
नहि।' से कृषण कहैत छथि। एहि समस्तक
मनुष्य के होम' पडैत छैक-विज आ कर' पडैत छैक विवेक सँ एहि
सभटाक मनुखोचित व्यवहार। विवेक-व्यवहारे थिकैक मुष्यक
सैद्ध क अिि पिसंग ! संवेदना बाटे अिकि पुनजम्मि आ पुनरचिने
होइछ मनुक्खक अििप्रायश्चि ।

माने मानव-अस्तित्व मे सृष्टि क गूढ -जटिल जीवनक अगसर होइत
कमक छैक जान ,

जानक अधिान सृजन तथा पयोगक उत्तरदाियत्व | मनुक्खे के राख’ पडैत छैक एक-एक टा हिसाब - जीवनक जोड-घटाव - गुणा-भाग...सबटाक राख’ पडैत छैक बही-खाता, जबाबदेही | एखनो अलग पक्ष भावत

सृष्टि क जटिल कारबारक बहीखाता के आपाप -राफ साफ |बिना डंडी मारने मनुखे के तौल’ पडैत छैक मनुक्खे के समयक तराजू पर समाज आ संसार | मनुष्य अपने ते, अपन अपने तराजू अपने बस्तु आ तौलल जाइत विराट बजार -वस्तु -व्यापार | ई सब मनुष्ये, सबकिछु...

’ हमर कोन की ? हम की छी ?’

राधा पूछैत छथि स्वयं के ,अपन आत्मक्रय एकात मे , एहन गंभीरता सं, एतेक दिनक बाद |

-’ हम की छी ? मनुक्खे तं सभी ? बजबाक्सनी सभी ? कोन बजक ? की ?’

-’ तो मािध राधा छे | राधा ! ते हमर सबकिछु छे | तोहर उत्तर हमहूँ नहिं | ई तँ अछि बूझल

जे राधा माने-जे आवारण करय कृष्णक बाधा ।’

-’अहा सब बेर एहिना टिटा मे उडा दैत छी कृष्ण हमर बात ।’ खिसिआया गेलथिन राधा-

-ई नीक बात? कहू थिक नीक लोकक काज?’

-तोरा के कहलकौ जे हम छी नीक लोक, तमसाइ छौडी ?’

बिहुँसैत कहैत कृष्ण लगब’ लगलथिन राधा के गुदगुदी ।

तकरे बरजैत काल घुरि अएलथि चेतना, जेना....

ई केहन दुश्चि , मोनक ई की दशा ?
एखन एश्च पल श्चन अश्छ श्क राश्च तेकरो बोि नश्च बाचल ।
अन्हार छी बैसश्च श्क इजोत मे तकरो अंदाज नश्च।
बैसश्च छी बा िश्च, बुझाइओ नश्च पडैछ।
पगाढ श्चान मे छी देश्च रहल कोनो स्पप बा
पडश्च श्चा िष भूश्च पर सदा !
भश्च गाम भ' गेलए श्चाशब्द, श्चबसीत, आ श्क श्चसभेर श्कंबा
सालि भार जका राखल भश्च आँगन, से अंगने साश्च क'
पि देल गेलय कोनो गाम, भार समेत ?

देह बड जरैए। जेि-बैसाख मे आश्च ताप' बैश्च गेल होइ जेना । शरीर ।
मुदा ध्यान आएल यश्च बुझा रहल अश्छ िह आ ज्पाला तँ
यािै छी। देहक बोि बाचल अश्छ।अित् देह बाचल अश्छ। देह, कतहु
अश्छ।कोहनो श्चिश्च मे देह अश्छ। देह बुझा रहल अश्छ। भ' रहलए
श्कछु संचार -बुझबाक, श्कछु करबाक उचाबच । देह अश्छ, बैसल, िढ,
सूतल-पडल जेना हो, अश्छ। तकबाक चाही। कोन श्चिश्च मे अश्छ
केबल ताप-िहक बोि देहक अनुभव नश्च होइत अश्छ। हँ मुदा,
िहक-दुाखक माध्यमे देह-अनुभव मनुष्य-मन के बेशी पत्यक आ
ते यािि कि' बुझा दैत छैक आ ओकर आयु सेहो होइत छैक

अपेक्षाकृत
बेशी । सुख भ्रलाई छैक, भ्रला जाइ छैक।
दुख जीवन मे रश्च जाएत छैक।
चुपचाप अपन कोनो कोन मे उपेक्षा-सैतल अपना के रपातश्चत करबाक मनोव्यनहार मे भऽ जाइत छैक,
मनुक्ख के आत्मसात...दुखऽक रप मे ओकर श्चलय चेतना मे ताश्च अनुपात और शैली मे होयत छैक जो स्मयं ओ शरीर अति मन-मश्मत्तष्क-चेतना के पर्यंत नश्च होइत छैक तेकर अनुमान , अनुभव, बा िकान...। सुख जेका श्चला के नश्च स्मय के मनुक्ख जोग्य. बना कऽ, दुख बनैत अश्छ उपयोगी, सृष्ा और अक्शुण्ण पेम मागक्रि बटखचा ।
सदा संबल। दुख स्मयं संग लोकके बदलैत अश्छ तै अपन अस्मीकायत्ती-अगाहता मे पर्यंत वैह होइत अश्छ शेयस्कर, मनुक्ख बाट के लक्श्य िश्च लो जेबाह मे ओकरे श्चशा श्मादेश होइत अश्छ, बेशी उपयुक्त ।
चैन छीनब सतत चैन श्छनबे नश्चं श्िक। चैन छीनब बैचेन करबाक एकटा पाकृश्माक उपाय िक, ई उपाय तुच्छता सऽ श्चशेष संऽ संजोग आर मुश्कत्तक सीढी बश्माकऽ अपन काज करश्मा अश्छ । अपन काज करश्मा रहैत अश्छ। दुख के माहुर जेका केला से उपयोग दुख हेय भ जायत अश्छ। हेयता मनुक्ख स्माभावक अंहार पक होयत अश्छ। उच्चता आ उतिने होयत अश्छ ओकर स्माभाश्चक उत्कषि मनुक्ख भौश्माकता सऽ लऽ कऽ अध्यात्म पर्यंत करैत चलैये अपना -अपना रश्च, सुख आर कतश्चि सं अपन पिक श्मािरण - श्मामाण...एश्च मे सऽ कतहु पकट होयत अश्छ रचना

….अपन संपूर्ण शरीर मोनक स्पंदन लेने, भीजल-तीतल सवाग उल्लसित मुख मंडल लऽ…को खन अश्वाश्वस्त अवशबोधि सऽ जेना कास्सया दह मे पाण लेबाक श्चांता आर क्लेश मे छोड़ि जाइत नहि कतेक काल डूबल रहि गेला, जमुना मे शीकृष्ण।कतेक काल….!जेना कै जुग-आ जमुना तर सऽ निने नाग जखेन ऊपर भेला उल्लसित मुखमंडल आर भीजल शरीर संग, तखन ते नहल-भीजल छल डाढ मे खोसल बंसुली सेहो हुनकर… शरीर।
तं की हमर अपनो कोनो अछि कास्सया, श्वातात कोनो अपान ?

मुदा ध्यान आयल यदि बुझा रहल अछि िहि आ ज्वाला तं
यिाि छी। देहक बोि बाचल अछि।अिात् देह बाचल अछि। देह, कतहु
अछि।कोहनोअस्थि मे देह अछि। देह बुझा रहल अछि। भ' रहलए
किछु संचार -बुझबाक, किछु करबाक उचाबच । देह अछि, बैसल, िढ,
सूतल-पडल जेना हो, अछि। तकबाक चाही। कोन अस्थि मे अछि
केबल ताप-िहिक बोि देहक अनुभव नहि होइत अछि। हँ मुदा,
िहिक-दुाखक माध्यमे देह-अनुभव मनुष्य-मन के बेशी पत्यक आ
ते यिािकि' बुझा दैत छैक आ ओकर आयु सेहो होइत छैक अपेक्षाकृत
बेशी । सुख श्चलाई छैक, श्चला जाइ छैक।
दुख जीवन मे रहि जाएत छैक।

चुपचाप अपन कोनो कोन मे उपेक्षा सैतल अपना के रपातस्वत करबाक मनोव्यनहार मे भऽ जाइत छैक,
मनुक्ख के आत्मसात...दुखऽक रप मे ओकर श्वलय चेतना मे ताश्च अश्वापात और शैली मे होयत छैक जो स्वयं ओ शरीर अति मन-मश्वस्तष्क-चेतना के पर्यंति नश्च होइत छैक तेकर अनुमान , अनुभव, बा किान...। सुख जेका श्वला के नश्च स्वय के मनुक्ख जोग्य. बना कऽ, दुख बनैत अश्छ उपयोगी, सृष्ा और अक्शुण्ण पेम मागक्रि बटखचा ।
सदा संबल। दुख स्वयं संग लोकके बदलैत अश्छ तै अपन अस्वीकायत्ती-अगाह ता मे पर्यंति वैह होइत अश्छ शेयस्कर, मनुक्ख बाट के लक्श्य िश्व लो जेबाह मे ओकरे श्वदशा श्वादेश होइत अश्छ, बेशी उपयुक्त ।
चैन छीनब सतत चैन श्छनबे नश्वं श्वक। चैन छीनब बैचेन करबाक एकटा पाकृश्वाक उपाय िक, ई उपाय तुच्छता सऽ श्वशेष संऽ संजोग आर मुश्क्तक सीढी बश्वाकऽ अपन काज करश्वा अश्छ ।
अपन काज करश्वा रहैत अश्छ। दुख के माहुर जेका केला से उपयोग दुख हेय भ जायत अश्छ। हेयता मनुक्ख स्वभावक अंहार पक होयत अश्छ। उच्चता आ उतिने होयत अश्छ ओकर स्वाभाश्वक उत्कषि मनुक्ख भौश्वाकता सऽ लऽ कऽ अध्यात्म पर्यंति करैत चलैये अपना -अपना रश्व, सुख आर कतश्वि सं अपन पिक श्वारण - श्वामाण...
एश्व मे सऽ कतहु पकट होयत अश्छ रचना
अपन संपूणि शरीर मोनक स्पंदन लेने, भीजल-तीतल सवाग उल्लश्वत मुख मंडल लऽ...को खन अश्वाश्वांश्वत श्वशबोि सऽ जेना

काश्मया दह मे पाण लेबाक श्चांता आर क्लेश मे छोड़क जाश्म नश्च कतेक काल डूबल रश्च गेला, जमुना मे शीकृष्ण।
कतेक काल....!
जेना कै जुग-आ जमुना तर सऽ नि‍ने नाग जखेन ऊपर भेला उल्लश्मत मुखमंडल आर भीजल शरीर संग, तखन ते नहल-भीजल छल डाढ मे खोसल बंसुली सेहो हुनकर...
रा‍ि देहक पसेना अनेरे भ’ गेलश्म बफ‍ि बनल सश्मसो दाना,मेही-मेही कण चकचक सटल ऊध्माग ।बनबैत देह-मन शीतल, दैत दुल‍ि चैन, शाश्मा आ सहन करबा योग्य सम्पूर्ण अपार वतमीन, जे एखश्म श्चकछए पल पश्चने ि‍ श्च छलश्म अश्मसतत्व के अना‍ि छोडने, जाश्म ने कत’? घुश्च क’ आश्च अंकबारने छश्म गश्मया क’ परम श्मय सश्च गंगा सन पगाढ। कनफुसकीए पूश्च रहल छश्म-शीकृष्णक श्चषय। रा‍िक सम्पूर्ण अश्मसतत्व मे ध्माश्मत, अनुध्माश्मत-पश्चध्माश्मत छश्च आब-वैह नाग नाश्च एखनश्च यमुना सँ बहार भेल-शीकृष्ण ।....
-’ ई एना नोर श्चकएक बहए लागल असो‍िर? ककर श्च‍िक ई श्चक्य आँगुरक हा‍ि ? के पोश्च रहलए हमर नोर ?
कहा सँ ध्माश्मत भ’ रहल लगातार- श्चकएक कनैत छे रा‍ि, श्चकएक करैत छे एतेक दुाख ? नोर सेहो ओतेक श्मार‍ि
नश्च रा‍ि। तोरा-कम सं कम तोरा तं बूझल छौक । तोहूं भ’ जएबे तेहन सा‍िरण-बुश्च ? नश्च कान रा‍ि। शान्त हो, श्म‍िर ।
-’ केऽऽऽ केऽऽऽऽऽ?’

अपन-अपन राि २२म खेप

जखन-जखन पृथ्वी पर पसरैये अनि-अिन्यायक वातावरण, लोक पाश्यामाि होअ लगैत अछ--अपमाश्यात पताश्कत आ अपमृत! सबजन हाहाकार मे श्यारोश्कत भ' जाइत अछ स'भ नैसश्यकि मृदु- मिर वाणी,स्वर ,शब्द, भाषा ति अंग भंग होअ' लाश्य जाइत अछ जीवन-छन्दक, पकाश इजोत आश्य श्वतहुँ बश्य जाइत अछ-काश्यतहीन व्यिि श्कया आ अन्हार भ' जाइत अछ काल पमुख मुश्वया, जनजीवनक बसात बश्य जाइत अछ दास,

माि श्कछु आ श्कछुए सताक खास

बाट सबजश्याया बश्य जाइत अछ सदाक बास्ते राजा कंसक कारागार,

कारागार स्वयं श्वन सेवा-सुशूषा, औषद-पश्यचयाक पाण लैत रोगीक अस्पताल,

डाक्टर-वैद चश्य जाइत अछ अपन कोनो सुभीता-सुरकाक पाछा

दौश्क क' नुकाय, लाश्य जाइछ करबा मे अपनश्क पाण रकाक उपाय..

.रोगी समुदाय-कष क गगन भेदी आतिनाद पयत्ति जखन अन्हर-श्वहाश्क मे उडैत िर् जका

अकारि पभावहीन बश्य जाइत अछ, दुघटिना गस्त माए-बाप जका लोक के

अपन सकल स'र सम्बश्नि आप्त समाज

क्यो नश्क पूछैत छैक, एत' श्व जे-' पीयब ज'ल?

कंि सुखाइत हएत कैलौहे बडी काल पीडा सहबा लेल चीत्कार...'

नञि पूछ' औतैक कोय, नञि देखतैक आब ओकर हालति, ओकर बाचल खुचल देह-स्वास्थ्य| सौसे स सौसे होअ' लगतैक-टूट फूट, बाथि ने जएतैक ककछुओक कि्रिक मूल स्वरूप मनुक्ख सँ ल' क' वनस्पति पर्यन्त, आम भ' जेतैक

नीमक गाछ, नीम बेल, बेल आक-ि्रि आ आक ि्रि भ' जयतैक-भटपरी,

भटपरी स्वयं बनि जयतै भकथकिक बन-झाखुर, बैर जामुन-लताम भ' जयतै झरकल दूभि,

साबे-खडही,कमल पुरइन भ' जयतै करमी लती सेमार, माछ सर्प, सर्पचुटी

चुटी बताह हािीक समूह, हाि अपनो सँ पैघ दैत्याकारक नव बाघ-सिंहक भयकराल पशु यानी...

मयूर भ' जायत विलुप्त, आिियकी ? कनैत-कनैत कोइली कौआ| कौआ उडैत-उडैत अहर्निशि सुनइत अपनहि काव-काव क' बनि जायत टरि टरि करैत व्यक्ति अथय स्वर। सूगा-मैना-बगडा कचबचिया- नीलकंि नञि रहत अपन अपन स्वरूप भ' जाइ जायत थि-थिलो। बगुलो होइत तँ रच्छ, नञि भ' जायत कए पजाथिक सुन्दर रूपाकृति मे-बाज ! ककछु आओर हिंसक अपन चागुर कएने-तीख आँखि के केने आओर खुंखार।

पडबा भ' जायत िरगर चकूक बछी वला चागुर महाकाल। मनुक्खक यैह राकसी रूपान्तरण आ सृष्टिक अधिकाश तत्व, पदार्िपाथिक थरि अस्वाभाविक अवतारणा-

जीवन थरि कार्यकलापक मध्य जायत ििि-ििि।

सबटा बनि जाय लागत सहज स्वाभाविक। पथिम्र थिक दासता मे

मनुखक दबल कंि अपन बौक होयबाक श्वायश्वा के स्वीकाश्व लैत| आम-नीम भ' क' श्वाहकैत रहत आ मयूर-बाज बश्वा नोचैत रहत श्वारीह पडबा सबके श्वबबैत रहत सपश्ववार । नीलकंि अपने नुकाएल श्वकरताह गाछ बृक्क दोगे दोग। कतहु नश्व भेटतश्वा सुरक्ष आ आशय। सब श्वकछु भ' जाय लागत अपन-अपन अिसंकोच आ व्यवहार मे स्वाहा, समाप्त ।आ एश्व पश्वकया मे आरंभ रहत कश्वयुगी पल-क्षण अश्वा गश्वाक पवाह मे नव अपसृश्व क होइत जाएत सता-पश्वाष । आओर तदनुरप समाज्य..

ई सबटा पश्वकया समान्तर सृश्व क ई समस्त गरल-पवाह मे जे झरकत, भ' जायत खकश्वायाह से मूलता मनुखेक मन-पाण। देह तँ बाद मे हएत मृतक स्वयं श्वाव सेहो गरल तं मने पाण सँ कएलश्वा पान ! कोनो श्वक हुनकर देह ? भने भ' गेलश्वा गाढ नील वणि। घश्वत तं होइत छैक सबटा मने पाण पर ने। एतश्व होइत छैक श्वस्फोट, एतश्व बजैत छैक-बासुरी।आ एतश्व फुलाइत छैक कमल, कुहुकैत छैक कोइली, एतश्व जन्मैत छैक श्वचार, एतश्व सँ बनब पारम्भ होइत छैक-संसार।

मोन पाणक जेहन जाश्वा गोि तेहने तं संसारक श्वामाण आ स्वर प| मनुखक मोनपाण तं रचय मनुक्खेक संसार| से मन पाण से सौस मनुक्ख के डाश्व क' कएल जाइत मानव श्वहीन भूश्वाक भ' जाय लगैत छैक सवनिाश- उपश्वत रहैत छैक सम्मुख संसारक महाकाल,तं सबटा भ' जाइत छैक अश्वर, आतंश्वकत आ असुरक्ष सँ बेहाल। माि आतशिरे श्वाकरब, चतुश्वकि आतनिाद भश्व सृश्व पूवाभ्यास पश्वपक्व कलाकार जका जेना एकश्व बेर कर' लगैत अश्व अपन-अपन इष अपेश्वक्त आ अपना देवताक पुकार| एक संग

तँ तकरश्च बह ाण्ड भश्वक एकि एक बेरक एश्च वाणी-स्पारक ध्याश्चा पश्चाध्याश्चा सँ फूश्च जाइत अश्छ टुकडी-टुकडी आकाश आ श्छश्चया जाइत अश्छ टूश्च क' भश्च पृथ्वी फूटल कोहा-खापश्च जका एश्च कालक साकात्कार पाया मनुष्य- जीवन-याि क श्वक सवाश्विक अशुभ पारब िक ाि म !

से ाि म की हम स्पयं ई अभागश्चा राि श्चक देह-पाण- श्चात ? से खेत श्चक ई हमर -हमरे देह होअ' शीकृष्ण महराज ? यैह श्चासाफ ?'

जाश्चा ने ककरा पुछलश्चन रााि ई पश बा मने मे उचरलश्चा, नश्च जाश्चा। जानश्च शीकृष्ण !...

अपन-अपन राति राति-२३म खेप

(पछिला-२२ म खेप मे अपने पढने रही-)

....

भरल पृथ्वी फूटल कोहा-खापरिक जकाएसन कालक साक्षात्कार मनुष्य जीवन याकि थिक सवाधिक अशुभ पारबकि ति मि ! से ति मि की हम स्वयं ई अभागल राति लक देह-पाण- थियत ? से खेत थिक ई हमर -हमरे देह होअ' शीकृष्ण महराज ? यैह थिक इंसाफ ?'

जाहि ने ककरा पुछलथिन राति ई पश बा मने मे उचरलथि, नहि जाथि। जानथि शीकृष्ण !...

आब राति-२३म खेप

कमश: कोना थिथिल भेल चलि गेलय शरीरक सब अंग ? परलो मे करोट फेरैत पर्यंत होअ' लगैत अछि आलस,

उठि क' बैसबा काल तं एडी सं ल' गरदनि पर्यंत होअ' लगैत अछि उदेशित | आ जँ कहुना उठि क' बैसि गेलहुं किछु काल , तं उठि क' ठाढ होयबा काल तं सद: बुझाथिात रहैत अछि जे ई देह मड़ुरा ककाक खोपडी भ' गेलय| कखनाक एक रती बसातो बहि जाय तं डोल' लगैत अछि |खसबा-खसबा पर थिकत जिना कोनो काल -मड़ुरा ककाक खोपडी ! संभव दू टा बास, दू बोझ खरही-खढक तैयार कएल गेल अपने हाथे -खोपडी,खुटा समेत छारल

पर्यंति एतबै सामगीक खोपडी, कोनो कण खश्म पडबाक हालत मे टगल िड !
हमर शरीर सैह भ’ गेलए...अनमन । की करी कतय जाय, कोना जाय या जाय श्चकएक ?

एतैक असल पश त यैह श्चक जयबै श्चकयै करी केकरो समीप ?
मुदा देहक तं अश्छ पश्चापल एश्च इच्छा कष भरल श्चदन राश्च हमरे पर भार
यैह भार त बश्च गेलए आब जेना आनक िनक क’ रहल होइ रक्ा
आनक अमानतक रक्ा मे ई संपूणा चेतना, अपने शरीर हाि पैर आंगुरक शश्चक्त िश्चक क’ रहल अश्छ
श्चदन श्चदन हरण। बनौने जा रहल अश्छ सब पात श्चकछु आर दुबलि आर बेसंभार|
केहेन पालकी मे बीच बाट कश्चाया के राश्चख चश्चाए गेलए सब कहार?
ई देह-िरी देहक ओहार लागल सबारी राखल रश्च गेलए।
आब भ’ गेलए कतेक श्चदन, एश्चना, एकश्च िमि!

बाट बटोही एक कात स श्चाकलैत बश्च जाइत अश्छ अपन अपन िमि
पश्चने कौतुहल तखन करणा, एक रती श्चांता, आ अंतत: समाज के गाश्च पढैत

बथ्छ जाइत अथ्छ अपन गंतव्य|
हम लज्जा मे कुंथ्चित असुरथ्क्षत, थ्बदागरीक कथ्आया बीच बाट के पालकी मे राखल पालकी|

थ्कछु करबाक स्पृहा नथ्ह बाचल अथ्छ, थ्कछुटा करबाक नथ्ह होइत अथ्छ मोन |
मोन-देह तेना असोथ्कत लगैत रहैये... जेना कै कटा खेत जोथ्त क' आयल हरबाह होइ |
थ्बना स्नान केने गमछा सं घाम सुखबैत बैसल कोनो गाछ तर।
एक रती आर सुस्ता ली, एके रती आर...|तखथ्न उथ्ठ ि र, करवा लेल स्नान
जे मोन हो ि र
ताथ्ह एक रती एक रती मे बैसल बैसल थ्आन स..झूक' लागल होय आ गाछे मे लाथ्ग ओथ्ठ क' भ' गेल हो थ्आन।

मा पर सुस्ताइत थ्चडै-चुनमुनीक मृदुल कलरवक हथ्वयर पात स झरैत होय जेना देह पर,

आथ्क बुन | मुदा लाथ्ग गेल होय अनायास थ्नय |आंथ्ख लाथ्ग गेल होय, आंथ्ख लाथ्ग गेल होय आ
थ्कयो ताकहु नै आयल होय, बडी काल! एत ि र जे भ' गेल हो मुन्हाइर साझ |
जखथ्न आंथ्ख खुजल त बुझाय लागल भोर...एकदम स भोर

एकर अिजे आई भोर स दुपहया त भेल, तकर बाद साझ,..आ राा न भेल ।

से कोना िरफरैलए दामन कर गेलौ...त हंस' लागल िहाका मा क' मनोरि ! -

ई की भेलैक, ई त बताह भ' गेलौ रौ, भरलो साझ क' रहल छहु दामन|

तेकर त मतलब जे लदतऊ कनी काल मे हर आ बडद हंकैत दा हेतऊ बाि!

ई त बताह भ' गेलौ..हा हा हा!'

लजा क' ओ फेकैत न अ दतमा| कते र जाइत अ |

ई बुझैत क भोरक जबदित भम भैले

छैक

ओकरा | मुदा अखेन साझे

कहलकै- क हैतै, कयैक बबाद करबै नीमक ई ि, जेकर क रहल छी दातन

दाते-मुंह साफ करवा लेल त, कैल जाइत छैक दामा

ज लोक कै न दू बेर नहा ये त कोनो दोख न, त दू बेर दतमा क लेबाक लेल एतेक कयैक हंसी

जखन कयो न छै ल'ग पास, तात असकर अ राि

त के हंसलै ये ओकरा पर, भोर भ जेबाक भम मे दतमा कर लगवा पर के हंसलै ए !

कंि त अवशे कोनो सखी अित सखी बनपा के न छल, तखन हंसल के ई पुरख

चार कात आंख के कछु आर पसारत, तकबाक न्हबाक पयास

करैत भ गेली नब व्याकुल
बडी काल ि‍र मा‍ि मे छहका बजरैत रहलेन, मोन थ्रवन, खौजाईत रहलेन, आ होयत की
अपन मुंह अपने नोच्च्य ली, अपन झौटा अपने उपाश्च ली।
कहुना क' करैत कुल्लला स दात, साझक दात्तौन संपन, मैल कुचैल आंचर स पोछ लगली मुंह
थ्रक अपने हा‍ि पर बुझैले दोसर एकटा परम शीतल अपनत्त्वक हा‍ि
अपने आंगुश्च भ गेलेन अचानक अनश्चन्हार- हम पोश्च्छ श्चय मुंह रा‍ि !
बड सुस्त्त छओ तोहर शरीर...' स्नेह कोमल स्पशर्‍ि पोश्च्छ रहल छश्च्‍ि हमर भीजल मुंह |
ओह त सैह हा‍ि श्च‍िक ई ???
-छोडू छोडू बड आयल छी दया देखबय लेल । राखू अपन नाटकक ई स्नेह अपने लग|
आन ि‍म देत काज, अहा के कोन पयोजन रा‍िक ?अहा के एकर कोन श्चंता!' .... मुदा झटकल कहा भ' रहल अश्च्छ ता‍िश्च हुनकर हा‍ि ?
हमरे आंचर स पोछैत हमर मुख ?

हा‍िक सामथ्यर्‍िश्चकयैक भ' गेल अश्च्छ सुन !
-बड चलाकी के दुलार मा‍िब, नश्च्ह हमरे संगे ?'
..से की...से की रा‍ि !..

-मुंहो पोछ' बेसलहुं त हमरे आंचर स...अपन पीताबरी की दूषब भ' जैत ?

नञ्ञ कैलहुं तेकरा एकोरती हमर मुंह स्पशर्स मक्षान, बेस !'

-बात से नञ्ञं राि, हमर पीताबरी सं तोहर कोमल मुंह खोखरा जेतउ |हमरा तेकर ने थ्यांता भेल|

देखैत नञ्ञ छही थ्कदन कहा-दन टाकल छैक एञ्ञमे सोना-र पाक तार पनी सब-
माता जसोदाजीक कृपा सं..केहेन छैक खौचाह-खरखर ?'
की त सुंदर लगैत छैन...मुदा तोही कह जकरा स हम तोहर मुंहौ नञ्ञं पोछ्ञ सकी तेहन वस्कि कोन काज ?
अकाजक्रि...'

-छोड़ू-छोड़ू बूझल अछ्ञ अहाक लीला| हमरा जुआ श्यखाउ |

देखू एक रती, केहन खरखर अछ्ञ अहाक पीताबरी, जाञ्ञ स चछा जायत हमर मुख ?' सन्देहे
राि यतपूवक्रि छूबैत घीचलश्यन कृष्णाक वस्ि |

त से बात झलफल अन्हारक पाय: करामाथि !

-ओ त से ने कहू। क' क' तं आयल छी कै पहर जमुना विहार !

सौसे तीतल त अछि वर्स अहाक...'

-नहि राति से बात नहि, से नहि, करै हमर विशास...'

-त कोना अछि भीजल वर्स, खाउ त हमर सपात!'

-कोना भीजल बर्स, जखन नहि चुभकलउं है जमुना मे भरि साझ त ?' राति पुछलथिन

-तोहर सपात। ते नहि। कारण किछु आन छैक राति।'

-की से त बूझी...'

कृष्ण कथिन असमंजस मे पड़ि गेलाह|

की कहथिन्ह, कहथिन्ह बा नहि...

-कहैत नै छथिकयैक छी ? सोचने रहल हएब कोनो बहाना, झुठे खेलहुं है हमर सपनाहेत, बुझलहुं

हम| छूबिकाक कहू त हमर माि, आर के रहै संग ?'
-झूि नहिं। सुनै।
एकटा नेर चरैत-चरैत जमुना मे ओंघडा गेल रहैक| एखनथि नहिं अबैत छैक हेल' ओकरा | कथिाक काल आर होयतै त रघुनी काकाक ओ नेर डूबिाए जेतैक जमुना मे|...
तै जमुना मे पैस' पडल राि, अपनी कोरा मे उि क' ऊपर कैथिाए.\.अवश्ये ओकर माय फकरैत
छल हेते असहाय।
बुझहिं मै पर्यंति, भ' जाइत अछि- एहि सृष्टि मे कखनो काल केहन असमि, अपन संतान लेल पर्यंति
ओकरो कल्याणक नहि कैल भ' पबैत छैक कै बेर जर री स जर री उपाय। ताहू
मै ओ भ' जाइत अछि केहेन असहाय। एत' ि थि जे संतानो लेल, संतानक दु:खे मायक फकरब होयत अछि बड असह काल।
बात ई छैक राि, तै भीजल अछि हमर देह आर वसि।'

आब भेलौ थिशास बुि !'

राि मातृ-व्याकुलता मे हुनकर देह-वसि हँसोि' लगलीह होइत रहलीह थिकल। कतेक काल सँ छी भिजल देहे अहा ? सदी नहि

भ' जायत हएत नञि ज्वर ? हम कोन उपाय करी आब। अछयो तव नञि कोनो पुरुष-वस्तु।बेचैन भ गेलीह। कहा छथि पुरखक कोनो वस्तु घर मे। बजलीह, बसुमक पुछलथिन-' की कर, की पहिराउ अहा के एखनि, बाजू ने।'

-से तं जानयँ तो, तोहर उपाय। हम की कहियौ ? बस्तु तँ थिके जञ्ञ छौक हमरा योग तोरा लग मे। ध्वंस्यात करैत अथानय एक रती भ' क' गंभीर एक रती हास कएलथिन-' एकटा उपाय छौक, करबे से ?'

-'बाजू जल्दी, की ? कहू।' रानि व्यग्र भेलीह। पत्याशा मे ताक' लगलीह कृष्ण दिस।

-अपने नूआ द' दे' खोलि क', हम सएह पहिरब ली...'

ओहन झलफल अन्हार मे पयन्ति स्पष्ट देखार देखलथि- शीकृष्णाक ठिढक दुलभि कुटिल मुहुँसी, रानि। सवाग संगीत-सुन भ' गेलथि चेतना । एके क्षण लेल मानि मुनएलैन रानिक दुनू आँखि। बजलीह-

-'हजे की मानि ! धिय' अहा के ने लागय बोखार, हो नञि एको सघनया कष ...धिय',...

सते उतार' लगलीह रानि अपना देह पर सँ आँचर खोल' लगली-

साडी...। देखैतहि कृष्ण भेलाह राधिहु सँ बेशी व्याकुल।

-' ई की करै छे राधि ! बताउ ! पकडि लेलखिन राधिक हाथि।
-' जुनि हो एना उदिग्न। कह' लगलखिन हमरा ज्वर नहि हएत।मोन खराप नहि हएत। कहियो काल मे तँ चलि जायब आँगन| बदलि लेब आजलाहा ई वस्त्र । नहि कर तो चिन्ता ।' राधिक कोमल कृश हाथि के स्नेह सँ दबैत कर' लगलखिन कृष्ण हँसी-'...मुदा एकटा क'ह, तोरो ई कोन चलाकी? देह परक साडी खोलि क' देबाक बदला राखल कोनो नइं द' सकैत छलेहे ? अकि तं चिन्तो देखा देलौ आ कहियो हेतनि कृष्ण के लज्जा बाचल तँ देह परहक साडी तं नहिये करता हरण। बूझल छौ । की सैह बुधियारी ने ? बाज..'. -' नहि माधि,एना नहि अकचकचाउ हमरा। नै कर ठिठा। अहा कहा कहलौ राखल साडी देब' हमरा? से तँ कहलौ पहिरलहे दे। एको क्षण तखन अकएक हो देरी ? एको क्षण अकएक रह' पडय भीजल अहा के। आ जखन अहीक इच्छा से, तँ हमरा हेतु कोन बाट ? अहा जे मंगलौ सएह हम देलौ। हम द' रहल छी।' कहैत राधि शान्त,पकृतिस्थ। एको रती ने विचलित। बकिक तकैत सम्मुख कृष्ण के पीबैत...आंखि असोथिर... -'माधि ले तोहर ई साडी पहिरने हम आकलितौ ..लोक देखैतय..लोक की तोरे सखि-बहिनपा- तखन की होइतौक ? होइतौ नइं तोरा लाज? लोकक ?' ओ बिहुँसि रहल छलाह पेम कुटिल बिहुँसी । -'से पक अहाक। हमर कोन मयादा आ लोक लज्जा। बनल रहय भव समाज, से पक आ दायित्व अहाक कृष्ण, माधि अहीक।' कृष्ण अपन हाथि कान्ह पर पुना केश पर फेरैत राधि के ललाट पर लैत

अलौकिक चुम्बन, बाहु के करैत किछु आओर पगाढ, अनचोखे छुचुक' लगलाह।छुचुक' लगलीह राति हुनके संग-बडी काल बडी काल, आर बडी काल...

एहिना चलैत बितैत रहल कएटा ने युग...

अपन-अपन ििधा

ििधा- २४म खेप

पवि‍ला खेप अपने पढलहुं--

-'माक्ष ले तोहि ई साडी पक्हनि‍े हम क्षकक्लतौ ..लोक देक्खतय..लोक की तोि‍ँ सक्ख-बक्हनपा-तखन की होइतौक? होइतौ नइं तोिि लाज ? लोकक ?' ओ क्षहुँक्स हिल ििलाह पेम -कुक्टल क्षहुँसी |

-से पक अहाक ।हमि‍ कोन मयादा आ लोक लज्जा ।बनल हिय भवि‍ समाज, से पक आ दाक्यति‍ अहाक कष्ण, मात अहीक।

कष्ण अपन हाि‍ काह्ह पि‍ पुनः केश पि‍ फेि‍ति ििधा के ललाट पि‍ लैत अलौक्कक चुम्बन, बाक्ह के कि‍ति क्कि‍ आओि‍ पगाढ! अनचोखे क्हचुक' लगलाह । क्हचुक' लाल्ली ििधा हुनके संग-बडी काल बडी काल, आि‍ बडी काल...

एक्हना चलैत क्षतैत हिल कएटा ने युग...

आब पढू -

बड भ' जाइत िि‍ क्षकल ििधा ।संसाि‍ मे मनुतखक क्षजी संसाि‍कि बादो हिैत िि‍क बड पैघ-पैघ संसाि‍। तकि‍ कायष कलापक-सुख िगि-वििगि, इजोत अह्हाि‍ सभटा ई सब अपन अपन सभक संसाि‍ चक्लतक्ह हिैत िि‍क।अपन संसाि‍कि संगक्ष अपना सँ फाि‍कि अपनो सँ बहुत पैघ संसाि‍कि बैस' पडैत िि‍क मनुख के। सएह िि‍क एकि‍ क्षयक्त, मयादा बा कतष्य आदशष ििधा । तकि‍ अहििलना अपनो संसाि‍कि पेम के डाक्ह दैत िि‍क। अपन संसाि‍कि पेम के अविकिल खिबा लेल पसलि‍ संसाि‍कि कि‍ पडैत िि‍क क्षह्हता आ स्नेह। ििख' पडैत िि‍ ताकुत ।यैह विि‍कि मनुष्यक सीमा विकै आ

एकक्हि मे नुकाएल ि सामथ्यषसेहो। अपनो संसाि बहुत दूि धवि
नक्ह होइत ि क खास अपने उपभोग लेल मात,सिधीन ।
'बुिलक्हक बुदू दाई?'
एकटा ई देह एके मोन,
कतेक क्दन,मास,िरषमे पसलि
अकस्मात आयुदाक जीिन
कोढ फाक्ड काक्ष हिलए लोक
मोनक जोि सँ लगबैत ठहका,
एहन समयक कव्ठन स्िता पि चलैत-सोचैत
अपन होयबाक कोि पयोजन
जे फिक कोि अिषअवपाय द' सकय
बौआ हिल व्याकुल समय के बाट
सबटा बाट जेना लेने हो एकाएक
तेसिर-तेसिर लगै िला हाट
रप ध' लेने हो जेना सब क्दने हाटक रप !
आ ओइ बाटे चलब मनुतखक भ' गेल हो महा मोक्श्कल।
सबटा पि भिल जेना क्बकी आ कीनबा लेल
अनन्त बस्तु जात सँ सजाओल हाट, सौसे बाट !
जेम्हि पडय डेग, सोिा सजल देखाइि-स्िताभूरणेक दोकान
जाक्ष ने अचानक लोक के कतेक क्चन्ता भ' गेलैए-
लज्जा िपबाक सौदयीकिणक सुख-विलास एक सँ एक आकरषक,
लोभा लै िला बे-जरिी बस्तु सँ
चकमक कित वजकास सँ सजाएल सोि पाडैत लोक के जेना
कनबा लए..गक्हँकी के कित पुकाि

सौसे बाट सक्ज गेल हाट !
जे नक्ह केता बा िक्सहे ने वजनका कय-शक्तत,
अिात् टेट मे टाका, ओइ द' क' चलब िक्त बह्द।
अपने गाम सन आब भर्वि संसाि-
चाउि-दाक्लक सिान ल' लेलकएक्कदन-कहा नबका सीद।
तर्कि पसलि र्वह्मिास...
ई एकटा र्वस्मयकािी अनुभिि जे-सबक्दना जरिी जीनि चिाक बस्तु सभ भेल जा हिलय क्दनानुक्दन जेना बेजरिी। आ जकिा कानु चक्ल जा सकैए काज से बक्त हिलए पधान। ताही बस्तु जातक आब खुज' लागलए बेशी दोकान ।
भर्वि हाट सजाओल-पसलि, िाखिल जेका एहन सन जे ओकिा लेबा लेल देबाक नक्ह हो दाम...बजाकि ई अदा केहन नब
आ मोहक अर्वि, कूिि सँ कूिि कजा लेबाक बाट अर्नेि धिा दैत अर्वि-अक्शाक्क्त गिीब लोकक बडका समाज के।
कंतोिि खोक्ल क' बैसा खिैत अर्वि-साहुकाि...कखनो गामक जेठ ैयक्त-वजक्मदाि कखनो बैकक कोरागाि !
फाकि-फाकि दोकान से तेहन देखनुक मोक्ह लै िला ओकिा आगा सँ बढैत काल हठात् ठढ भ' जाइक इच्छा होअ' लगैत िैक। अंकुिाय लगैत िै क्कनबाक-पक्हर्वि लेबाक दुदाह्त स्पहा ! आब गामक हाट एकटा निि रप आ सभिाि मे पसार्वि हिलए अपन दोकान ।
हुनकि अजिल सम्पक्त सँ आन कयि सौख-मनोिि, से क्कएक ? सौख-मनोिि कयि तँ ओकिा िास्ते देएय दाम। दोकानो िला निि काटक मधुि आ कटगि र्वह्मियाक्सक आँगी-चोली,

कंगन-पायल-गलाक हाि मंगनीये मे त नै द' दै ि। गक्कंकी स दाम लैत िक तकि। सेहो गंक्कीक इच्ि-लाक्लसाक जेहन िगग ताक्क मोताक्बक। तँ हम क्कएक पाक्त जका बहाबी अपन धनक उपकाि ?

ते आब से सुकाइ मडि ् ण लेक्हाि सँ धिि लैत िवि न फी रक्पया दू आना मास,सूक्द। पक्हल खेप सूक्दक टाका जोक्ड क' ह ि मे दै सँ पक्हने क्काक्ल क' िक्ख लैत िवि न,तखन दैत िवि न लोक के कजा। तखन ओ कीदन तँ कहैत िवि न.........माने, जतेक मास पि रपैया घुिएब ततेक दूअनी फी रपैया बेसी देब' पडत। तही शतषपि देब कजष

से आशयषजे ककिि नै बुिि हिल ि एना एतेक कडा सूक्द पि ् ण लेब एको ितिी भाििि।आशयष!

सौख आ जीहक जे बक्ढ गेलैये एतेक चलाचली से कोनो एकाएक ? लोक दनादन पैक्स हिलए ऐ दौडा दौडी मे। भने क्कक्शाह्त ...

ओही क्दन तँ बड नुका क' क्तक्लया देखबैत िहय, सते एकदम नबे काटक क्भति आँगी । तेहन मेही-मेही ताग-जाल सँ फूल पती.. बनाओल केहन चक चक लाल-पीयि-हवियि-उज्जि िगक केहन-केहन फेसनेबुल अह्दि क्बलाउज ? मोन लोभा जाइ ि ठीके की । ई सबटा बजाि आब जेना आँगन धवि पहुँक्च गेलैए । घि तक। ते आब तँ गंक्हकी के खाली इच्ि टा किबाक काज। क्कनबाक तँ सब सिजाम ् ण भेटबा सं ल' क' बजाि धवि सभक क्चि देल गेल ि-पबह्धक जाल! से इच्िि त आब एक्ह नि-नि आकरषक रप सज्जा आ तकिि तुह्ति पाक्त क' लेबाक आतुिताक असिि तँ हाट-बजाि सँ भ' जाइत िक । बाकी तं क्कनबा लेल

चाही-दाम,दव्य, माने धन। से तं तैयाि बैसल अवि-भवि कंतोि रपैया िखने। आब तँ कएटा नि-नि सुकनी मडि सब।
सुनै ि आब सैकडा चावि आना क' देलकैए सूद-फी रपैया। तािथ ् ण लेनहाकि कमी नहि नहि भ' हिलैए। बल्कि बेशी बढ़ि गेलैये। इचि-मनोिि कि वाहाव्ड मे पव्ड गेलय ई पूि समाज, ई वाहाव्ड उठा देलकैये नबका सिधु जातक नि नि उपयोवाता आशिश्यकता बुि क' वनबा लेल उसका हिल ि। लोक के बजाि अयबा लेल उत्पेवित आ लाचाि कबिा िसिते पवत वदन बढ़ि हिल ई हाट पि हाट ! पहिने कए गाम लगा क' कोनो एकटा हाट लागल किं कतबहि मे कतहु तेसि-तेसि...। आब पसवि क' बढ़ि गेल। तीन-तीनटा भ' गेल। एक िती पिती िलैक मंवदि आगाक सि ान, ओत'...सबसँ त धवाक मनोिि बाबू दबिजजाक आगाक फैलहा धिती । ताही पि लाग' लागलए हाट। भवसिक तकि...भवसिक की सते तकि ओ असूलै िवि न-अहगि क' बटी ! पितीक भाडा । अिात् तो मोनाफा कमेबे ताहि िसिते हम देवलयै भूवा, तो चुका तकि दाम।
समय-समय पि मंगनीक वकि बस्तु जात तं ओवहना दैत हैत िवि न,दोकानदाि सब। नि तहि भ' तहल िवा मनोिि बाबू आि समद होयबाक ।एक आध गोटय संकेतो कएलवखन जे-' ई की सकिाि? एन डौढीक सोिा मे हाट ? पवतषा पि पडत । हुनकि तेहन सन भाि चेहि् पि जेना अहा महामूखषि। नहि वदअ' ई सब पिमिशष पिती पडल जमीन, देखैत ि बटी ति देब' लागलए बाहि-तेहि वदन केहन वदव्य उपजा...ठनठनौआ ! अहा कहैत ि- पवतषा! औ एही नबका उपजाक वकि एक िती अंश समाज मे

विकडया क' कीनैत हिब नबका पक्तष ो । कोन अधलाह बाट भेल ई ?'

मोसाहेब क्मत, पिमिशीक अक्कल तँ एक्ह तकषपि नंगडी सुटकंतङ जात जात खढी...। गुम्मे भ' गेला।

सुनै ि मनोि बाबू घोरणा कएलक्हे-बटोही-व्यापािी-दोकनदाि सभक िस्ते जक्दये बनबौता-नब धमशाला टाइप दस-बीस कोठलीक ीन बसेि । एकदम आधुक्तक जरिक्तक मोताक्बक डी लतस सुख-सुभीता िला। तेहन जे क्वदेशक लोक के ठहिबा मे कोनो असौकजषनक्ह बुिइ।

आनह्द सँ ठहिय। पयषटन-भमण किय । घुिव क' अपना देस जाय तँ भातिक उनक्त-पगक्तक पसंसा किय । दुक्तया मे भातिक नाम होअय| पतका फहिाय|

एक्ह इलाका मे िको कहा एकहु टा आशय भिन। दूि- दुिस गेक्हाि बटोही के होइत ि कतेक कष ? गौओं के समस्या... कए काल तँ विपक्त-विपक्त । मनुखतोक िकषि ठहिबक्ह पडैत िक्त घिबैया के अभ्यागत । लता सुता कलकता टाइप सि-संबंधीक लेल पयष्क्त कि" पडैये गौआँ के अकालो क्वकाल बेि मे तिदूत। क्तनका लोकक्तक तँ पाण बाचत । ते मनोिि बाबूक विचाि मे हुनक ई योजना िष्टक्हत मे अंतिष्टीय तँ बुिले जएबाक चाही,जे असिानीय लोक कल्यानक सेहो मानक चाही । '

से एहन कल्यानी काजक, सुनै ि ह्यो सेहो क्लया गेलैए। से गल गुल ि समाचाि, पिपिटा मे। धह्य। ठीक क्तनक्दना हाटक पाप्त बटी सँ धन क' हिलए केहन कमाल। धन पएबाक जेहने नब बाट तेहने नब पक्तष ा उपाक्जषा किबाक आधुक्तक तिीका-व्यिहाि !

केहन क्दब पक्हने लग-पासक कए कए गामक लोक आबए एकक्ह ठाम लगैत एक्ह हाट कनबा लेल सौदा-सुलुफ-नोन-हक्दि सं ल' गहसीक जरी बस्तु जात। केहन होइत हि मेला ! बक्लक केहन क्दब भ' जाइक पसि्पि भेट घाटक पर्वीिी उत्सि जका अनमन ।एक गाम सं दोसि-तेसि आ चार्विमो गाम िसीक एकदम सहज-सुलभ िलैक भेट घाटक संिदि-सम्मेलन ! दुख-सुखक गपसप आ मोन हल्लुक कबिाक-फ्लैटफािम । कतेक स्तर पि केहन-केहन संबंध-सब्ध क असि । तेकि भर्वि जीिनी संबंध-अनुबंधक अनायास-आत्मीय क्यसि ि । जाक्त नक्ह कक्हया सँ आिम्भ चलैत चक्ल आक्ब हिल िल । केहन क्दब चलैत िल। चक्ल हिल िल सब काज। हाट-बजाि-गँक्हकी- दोकानदाि, सबहक। बच्चाक खेलौना सँ ल' बचि-बाििक गि गिक मुखाि-गदिानी तक...भ' जाइत हि अनायासे

कीन-बेसाह। दोकनदाि-गक्हंकीक केहन क्दब हि आपसी स्नेह, पसि्पि विशास ।

धमी साहु तँ कहादक्त कि दैत हिर्वि न कए टा वीिह-कह्यादान-तत्काल उधाि द' जरक्तिक बस्तु जात।

-'एखक्त क्तबाक्ह क्लय' जजमान। सब संपन भ' जाय तँ द' देब, भ'जाय जखन इक्त्तजाम। दुनू गोटय तयो पडाएल्

नै ने जाइ ि? हम त कत' कहा स आएल ि, बाबुओ के नक्ह ि आब तकि ठेकन- पता।...कोना बौआइत अही गाम ठमकक्लयै... आ आब तँ यैह हमि ने गाम।जे पालन कयि सैह ने माय, जे जीर्विका क्दअय सैह ने गाम।'

से दश्य सबटा विदूप। बेशी पुनि दोकानदारि सब मारि मारि ति। न'रि ढबक नरि नरि साज सज्जा मे आक्र हिल, जाकर ने कत' सँ कोन गामक दोकनदारि ! अनक्यह्हारि । सजाबक्ट आ नरि काटक आकरषक मनोहारि बस्तुक अम्बारि क' हिलए आयात।बेक्य हिलए सब करि पुनि शैली आ क्यहिारि किसबटा आत्मीय आ पर्वािरि जका हिल लि जे साहुकारि। से हताश,दुखी आ वितित भ' हिल अविर। दुभाग्य तँ ई जे यक्द आब ओकरि लग जाइतो विरि महानुभारि तँ उधारि लेब'

-जखन नक्ह हैत कि डाड मे दब्य , आ करनबाक है कि नबका अनक्यह्हारि दोकनदारि सँ बस्तु, जे देक्हारि ने कोनो बस्तु उधारि । हुनका तखनक्ह मन पडैत विरन पुनि स्नेही, दुःख-सुख बुरिनहारि साहुजी।

सरिभावकि जे ओ आब हारि उठा दैत कि-' कहा सँ जजमान? क्षकी-बटा तँ देक्खते विरयै। बेसी काल बैसले बीतैये।

अइ नबका युग मे तं दोकानदारि परिभिब भ' गेलय। आब तं पर्वरिकि पेट चलब दुघष्ट भ' गेलै। कहा स लाउ उधारि? क'ल जोडेत रि। कहा स लाउ उधारि ?

-'क'ल जोडेत रि।

खाली हारि घुरियिबाक अधमषनै कबिाउ सकिारि। कल जोडै रि।'

-'पक्हने त अहा नक्ह कक्हयो एना घुरिबैत हिी, सारिजी ?'

-अपनो तँ मोन पाडू, कए मास परि हयलौहे हमरि दोकान। अइ बीच की करिओ ने भेलै बेगता-कोनो बस्तुक? ओक्हना चलैत हिल गहसरि?'

सकिारि गक्हँकी के बुरिबा मे करएक नक्ह औतक्य ई वरिय। मुँह

लटका क' लक्जत, पाितस्त जका घुर्व जाइत िव ।

कितिाह की? आमदनीक बेशी अंश त चुकब' पडैत िक्त मावसक सूक्द मे, नबका महाजन के। डाड तं भेल िक्त ढील।

ल' जे लेने िव, साहुजी जका महाजन सँ ् ण। दोसि जे, पायः सब गामे मे लाग'लगलैये आबनबका-नबका हाट ।

नबका नबका िगि क्वािगिक हाट। ओहू सब गाम चक्ल पडलैये यैह बसात- नब नब बस्तुक चमक दमक िला। एक हाि ् ण क्लय' दोसि हाि कीनब बेशी तं अनेंकि इच्िा-सौखक बस्तु। पात सँ चुकबैत िहू कजाक सूक्द।

आब त सुनै िी नीक नीक लोक लगा िहल िव जमीन अपन भिना। बेक्च िहलए कए गोटय सोनक टुकडी अपन िदीओ मे उपजै िला बला जमीन। कीक्त िहल िव नब धनपक्त सब। एिकमे उठल अिव भयािह क्वाहाक्ड-उपभोगक क्वाहाक्ड !

जाक्त ने एक्ह मे कतेक घिक खाम्ह-खुटा उखित-पुखित। कतेक घि खसत आ भम पड' लागत कतेक घििी। तै घििी पि चलत ह'ि । तयो नक्ह जनैत अिव।

बेशी लोक बूिव नक्ह सकैये जे कक्एक भ' िहलैक ओकि मोन बेचैन? कक्एक भ' िहलैक ओकि पिविािि मे अशाक्न्त ? कक्एक होअ' लगलैये-अपन स्त्री सँ बेशी काल क्वािद आ कक्एक िह' लगलैये ओकि जिािन होइत क्वयापुता एतेक असंतुष ? बुिक्ह मे ने आक्ब िहल िक। लोक अबोध अिव। बयसे पविपिता पिहनु अजान।

अपन-अपन रा ि

रा ि-२५म खेप

पछिला अंक मे अपने पढने रही एते धरि--

... बूझि नहि सकैये जे कि एक भ' रहलैक ओकर मोन बेचैन? कि एक भ' रहलैक ओकर परिवार मे अशान्ति ? कि एक होअ' लगलैये-अपन स्त्री सँ बेशी काल विवाद आ कि एक रह' लगलैये ओकर जवान होइत धीयापुता एतेक असंतुष ? बुझहि मे ने आबि रहल छैक। लोक अबो ि अछि। .... बयसे परिपक्व परन्तु अजान

आब पढू --

दोसर दिस अनेक तरहक परिस्थि ि सभक भ' रहल अछि आत्यहु जन्म विकास। ि रे- ि रे घटि रहल अछि मनुष्यक पर मनुष्यक विशास । बेशी लोक बेशी काल बुझाएत उदास। चुप्प। हँसी ि हका गायब। भरि वातावरण मे दिनक कोनो असमय ि कनी जका पसरल जाइत।लगभग लुप्त भेल जा रहलए गामकगाम वासीक स्वाभाविक उल्लास। जखनि कि आत्य बडले जा रहलए दोकानक संख्या। दोकान मे चीज बस्तु आ गहिँक आबाजाही। हाटक संख्या। जीवन चहलपहल क' रहलए जेना शान्त लयक बसात मे सन्ध्या कालक यमुना ि र ! बाचल खुचल बूढ पुरान के ि कमूडी लागल अछि, अनमन ि ठ- ि ठ गाछ जका। युगक मुखाकृति एक तरहे अछि उल्लसितआ कए तरहे जीवन मा ि क सुख सं ल' तरबा ि धिक सुभीताक अनेकानेक वस्तु जात दनादन बनि क' भर'

लागल अछि हाट। सब टा तं सुन्दरे। सबटा तं काजेक बुझाइत। तं आवश्यके बुझाइत। यावत् ि थ्व कोनोटा नञ्ज भेटैत छैक लोक के पाइ-कैचाक उपाय, ताबते ि थ्व बड जी जाश्रा क' एञ्ज नव सुआताक सुन्दर बस्तु सभक करैये परहेज। जे श्वक डयौढो-अढैयो लगानी पर भेञ्च जाइ छैक कोनो गुनजाइश चट सँ दौड रहलए बजार। कीन रहलए पश्चनक बस्तुजात। भ' रहलय तृप्त सपश्चवार।जञ्जया जेना घुरब' पडतै ऋण, तञ्जया देखल जएतैक। एखश्च तँ नञ्ज रहल गेलैक। नञ्जये रोकल गेलै इच्छा । एहन-एहन वस ि आ गहना, ...

मामूली तनुकाक जश्चजाश्रा सौख सँ पञ्जरय आ हम जे छी चाश्च श्चगहा भूश्चक स्वामी से मोन माश्च क' अपना श्वियापुता, स ीक मनोर ि के जाश्रा क' राखी? जोा तोश्च के । श्वकएक नञ्ज हो हमरो पश्चवार के ओ से नीक बस्तु हमरो । जे भ' चुकल रहरहा भश्च गाव? एतबे श्वन मे कए गोटय कए भाषा मे क' गेलय काकु..।

-कहू तं जकरा ि थ्वया पञ्जरक लूश्च नञ्ज, से औकाश्रा वला लोक से सब क' रहलए एञ्ज सब बस्तुक बेबहार..आ अहा अपना के पुरना मने आ श्वचार-व्यवहार सँ जँतने छी। की त इच्छा अनन्त होइत छैक, कतेकक पूश्चा ि कएल जा सकैये ? ते श्ववेकी लोक नञ्ज दौडऽ लगैये तकरा पाछा-पाछा। कञ्जयो नै दौडल। आवश्यकता के ते कएने रही सीश्चत। कम सँ कम।सैह कञ्ज गेल छश्चि बाप-श्वतामह। ते ओही बाट के ि ने छी। भने से बाट आब चश्चतो नञ्ज अछि समाजक बेशी लोक।तै बाट पर काट कुश, जंगल झाड, भडेश्चक बोन जनश्च गेलैये। कए ि मि खाश्चि-

खूद...। पडल रहैये एकान्त। आब गौआँ सब कनी दूर भने पडै छै मुदा आबा-जाही लेल बना लेलकए एकटा दोसरे बाट। आब वैह व्यवहार मे छै। ध्वस्त आ उपेक्षित पडल छैक पुरना बाट। बेशी काल आवागमनक कारणे स्वाभाविके जे जीवन्त रहैत छैक। चहल पहल भरल। तकरा व्यवहार कम भ' गेला पर पयोग कम भ' गेला पर, व्यवहार आओर कम होइत गेला पर पुरनना बाट भेल जा रहल छैक सुन, एकान्त। बुझि ई छैक जे पुरना बाट पर कएटा भ'चुकलैये सपर्दिशक घटना आ राह-बाट बटोहीक लोटा कम्मलक भ' गेलैये छीना झपटी। चोर उचकाक आशय...। तै नव रस्ता गेलैकए आब ओ पुरना बाट पर चलब ककरोको नै आरापद आ सुरक्षित ।
आब ते ई नबका बाट !
एकरो एकटा व्यवस्था अछि- अइ नबका बाट चालू हेबाक व्यवस्था...। असल मे जखन होअ' लगलैक बजार-हाटक खूब नफा वला पसार आ बनिया-व्यवसायी के अपन माल ऊघब क' एत' सँ ओत' ओत' सँ एत' अनबा- ल' जयबा मे होअ' लगलै पुरना बाट घटीक सौदा, माने अनुपयुक्त--उत्पादन केन्द्र कारखाना ल, जएबा-अनबा मे अनुपयुक्त । यातायात मे असुविधा जनक , ते व्यवसायी समुदाय अपन मालक जल्दी आ किफायतीक संगहि सुरक्षित उघाइक इन्तजाम मे रचलकए नब मार्ग ई व्यवस्था । गामक आ किछु लग-पास गामक किछु अबंड-लंठ छौडा सब किनाओल गेल एहि व्यवसायी-संगठन दारा । ओकरा सबके कए तरहक लोभ-लाभ देखाओल गेलैक आ तैयार कएल गेल जे सब पढल-अनपढ बेकार युवके सब छल।

खेलाइत रहैत छल अपन-अपन रुचिक खेल बयसक मोताबिक। अनसमैया कबडी सँ ल'क' शतरंज धरि...।तेहन किछु के दाम द' क' कराओल गेल ओकरा सब सँ एकटा बनोरि घटना...। जे फला गामक बटोही के डंसि लेलकै विषधर सर्प। अपना गाम पहुँचैत-पहुँचैत ओकर पाण छुटि गेलै...। कोन गामक बटोही रहय, की नाम कोन समय से सबटा अजात। ते जाहि व्यक्ति के सर्पदंश भेलैक से तेहन मूखरि आ अपना जान सं तेहन बे-परवाह तं नहि रहल हएत जे ताकाहेरी नहि करितय। अपनो एही गाम मे जाहि बाटे जा रहल छल? एक सं एक धामि ओझा-गुनी सं तं भरल अछि ई गाम। पाण पर पडने तं मूखो के फुराय लगैत छैक। आबि जाइ छै बुधि। ई एकदम अथथा समाचार थिक। एकटा बुढा संदेह करैत कहलखिन। बात मे तकरि तं रहबे। मुदा समके ठाढि एक युवक तमसा उठलि। बुढा के चेतब' लगलखि-

' जेना कि बीचे गाम द' क' छे ई रस्ता जे बटोही दौडि जैतै एम्हरे। औ बुढा अपन मूखरि जान नहि झाडू। ई बात सत छैक, हमहूँ जनैत छियै। हमरा आँखिक सोझाक घटना थिक।' युवक तैश मे कहलखिन । ताहि पर बुढा आओर संदेह ठाढि क' देलखिन । -'

तखन तँ आर मोश्किल बात । कहलखिन- एँ हौ, एहन ठाआ-काया रखने छ' आ लज्जा नहि भेल'? तोरा तँ बूझल रह' जे अपना गाम मे कएटा चाटी चलौनहार गुनी अछि। लादि क' कान्ह पर आनि नहि सकैत छलहक?... दोसर जे बटोहीक नामो गाम नहि पूछि भेल'? बीच बाट पर अपटी खेत मे पाण जयबा लेल

छोड़ि क' चल अयलहक?' बुढा फेर तकि कएलखिन एक युवक तड़ंखि उलिखा - -' जाबत धरि ई बुढबा सब याबत् काल धरि जीबैत रहत ताबत्काल गामक बिकास नहि होम' देत। सबटा पगहा छेकने धेनाइत रहत। बाते ने बुझै छैत। बेर-बेर कहि रहल छियै जे हमरा सोझाक बार छियै,तैयो बिसबासे करय लेल तैयार नहि। बड अक्कल बला छी, जाउ ओम्हरे बाटे मरऽ। हमरा सब तँ ओइ दिनक बाद पकडलौ कान। नहि हएब गाम सँ बाहर ओइ पुरना बाट द' क' ।' बाजल । बड़बड़ाते-बड़बड़ाते युवक ओत' सँ ससरि गेल। मुदा ओहि अभद भाखा मे बुढा संगे बजलतो गेला पर कोनो गोटे के साहस नहि भेलखि ओकरा टोकबाक। एहि घटनाक सौसे गाम पचार भ' गेलै। जरबियो रहैक। ई तं रचने सैह छलैक। एवं कमे पुरान बाट आ नव बाटक-बूढ पुरान नबका खाढी आ बीच मे ई नव व्यवसायी वर्गकि संगनिक पबनि पखि दिन फुलाय-फर' आ बिकाय लगलै । एक सं एक अपरिचित नव रप-शैली मे गामक जीवन बदल' लगलै। से ई बदलाव आ परिवर्तन तेहन उग छलैक जे बहुत जल्दीये लोक, संबंधी आ गामक जे किछु संस्थागत रचना छलैक ताहि सब मे खूब तेजी सं पकट होअ' लगलै। एकदम देखार। बेशी लोक तँ जेना धरि तरहक कछमछी मे पडल देखाइ देब' लागल। पुरना पीढी तँ विशेष चिन्तित आ बेशी बेचैन ! एहि वर्गकि लोक के बुझा रहल छलखिहे जे दिन पहिदिन आशमक सामान्य व्यवस्था मे बड बेशी परिवर्तन भ' रहल अछि अप्रिय परिवर्तन। सौदा-सुलुफ कीनब-बेसाहब सँ ल' क' भोजनक विन्यास

िथि मे तेहन पिरवतिन जे बुढा लोकिन के बड बेशी अखडऽ लगलिन। साफ-साफ आब ई पिरलिक्षत छल जे आब आशम, आमदनी सँ बहुत बेशी खचा पर चिल रहलए। से बे-सम्हार रप मे। आशमी खचिमे मामूली बृिद्ध निह, बहुत अिधक -डयोढाक लकिक बिढ चुकलए।जखन िक आमदनी घटबे कएलय। घटब स्वभािवको। जखन सािने कम हो तँ उपजो-बारी कम हेबे करत। अनक उपजा तँ बरखा पर िनभिर। आब नबका ऋतु-पकृितक चलते मौिसमक िनयम मे जेना अपने ढील ढाल िहसाब चिलरहल छैक। अिधक काल तँ बखा घोर अिनिश्चत। िथसमय तं ई जे आब ऋतु अपने अहदी भ' गेल जका बुझाइछ तं। नबका छौडा-छौडी सब जका ऋतुओ अगरिजत भ; गेलय। किा के सुनय। जकर जे काज आ तािह पर पिरवार-समाज िनभिर, से आब सबटा काज िबसिर कतहु जीवन जगताक नव लहिर पर गपाषक क, रहलय। गरजम गरजा क' रहलय। से गाम आ जीवन मे भ' रहल पिरवतिनक पक आ िथपक मे कंिफािक क' शासिाििकरबा मे भोर सँ दुपहिरया, दुपहिरया सँ साझ कएल जा रहलए। मुदा बाडीक भाटा आ िमरचाइ गाछ मे दू लोटा पािन निह पटाओल जा रहलय, जे िक बेरा बेरी सुखा गेल। बाडीक एतबो तरकारी सँ आशमक बड मदित भ' जाइत रहय। से आब लोक के बेकार बुझाइ छै। लोक बाडी-झाडीक पिरचया िनठाहे छोिड देलक बुझाइए। िक तँ एतबा तरकारी तँ हाटो पर टटका भेिटए जाइए, तुरन्त। िबना कोनो तरदुतक। गाछ सँ तोडल तरकारी सब। सेहो भािर भािरक। तरकािरक ई सुभीता किहयो देखल ने सुनल। काचे तरकारी सब देिख क' जीह मे पािन आब'

लागय, तेहन देखनुक ! ताहू पर अपना गाम मे?
बिआतो केहन सुअदगर-चहटगर छैक। घुमिते फिरते कीनू...आब तँ गाम पर सँ कोनो झोरा-गमछा ल' जयबाक सेहो झंझट नहि । बिसरि गेला पर अगत्या िितीक ढटा मे तरकारी बान्हि' पडय, तकरो कोनो समस्या नहि। तरकारिये वला नब-नब रंग-रंगक फ्लास्टिकक अत्यन्त हल्लुक-फुल्लुक झोरी मे साथि क' ि' देत। कोनो विशेख तरकारी कीन क' ल' जा रहल छी. जे एखनि ततेक महग जे सािारण लोकक वास्ते सपना, से झोरी मे झक-झक देखाइत जायत भरि बाट, लोको िहाइत रहत! शेष आ सकम होयबाक ई मजा अलगे भेटत ।...एखन कोबी तँ फल्ला बाबू कत' सेहो नहि रन्हेलखिहे। आ अहा अगुआ गेलौ...। चूल्हि पर चढल ने कि भरि टोल सुगन्धि पसरि क' बाज' लागत- जे िाअ' हम रन्हा रहल छी । कोनो काजो मे व्यस्त रहब तँ जीह चटपटाइत रहत। के करैये सिथि स्नानो-ध्यान ओइ िदन !...अपना बाडी सँ त भाटा-ओल-खम्हार खाइत-खाइत मुँह टुटि गेल। िकछु टा स्वाद जेना लगबे बन्द भ' गेल रहय । शहर वला सबके त बेश सुआता तकर। मुदा सािन अछैतो हमरा लोकिन कहा सँ जाइ चािर कोस तरकारी कीनऽ? के जाय। ते जीहे सैतने रही।...आब ई गामक हाट । बाह !
मुदा बुढा वगिमे एिह िवषय मे घोर आपित्त छिन-ई िवहा के बहसा क' रािख देत। भोगवादी पवृित्तक पसार हएत समाज मे । जकरा निह जुडतै से कजि लेत। स्वादक कोनो एता छैक। आयंिण राख' पडैत छैक ऐ खएबा-पीबाक पवृित्त पर। देखल छैक गौआँ के जे िपयदशिन बाबू जीहेक पाछा सािकन भ' गेलाह-सािकन । मुदा नै

चेतैये...आपस्मा पर बुढा लोकस्मा के चुप क' देल जापत छस्मा । पस्मवार मे बुढा-बुढी लोकस्माक स्मकछु जूस्मा नस्म चलैत छस्मा आब । दव्मक इंस्माजाम करबाक टा मुदा एखनहुं बुढेक कतव्मि छस्मा। स्मम्मेदारी । तास्म दव्मक कोन उपयोग आ की ब्मबहार कएल जाय तेकर स्मायंणिक अस्मिकार नस्म हुनका । तै ओ सब बेशी गोटय कुब्मि आ स्मब्मातत रहैत छस्मि। ई एहन आमदनी दू पाइ आ खचा पाच पाइक नबका जीवन-शैली सँ बहुत दबाब आ दुाख मे छस्मि। कहल कोइ मानैत नस्म छस्मा । आ उस्मातक त्माग कएल नस्म होइत छस्मा । जे बात-ब्मबहार नस्म अघै छस्मा, आ तकर आपस्मा करैत छस्मिन, स्मकछु सुझाव देबाक चेषा करैत छस्मिन तँ स्मक तं ाइं पाइं जबाब द' दैत छस्मा बा अनाि क' तेना ससस्म जाइत छस्मा जेना मेघ स्मस मुँह क' क' टरस्टिरकिरैत रहू । एस्म उपेक्म सँ बुढाक अंतररात्मा िरिरा जाइत छस्मा । बेशी सँ बेशी अपन ई दुाख आ स्मान्ता, बूढही के कहस्मिन। मन हल्लुक करबा लेल। बुढी अपने तटस्मि। उन्टे हुनके बुझब' लगैत छस्मिन--' जुस्मा अगुताउ। युगे सैह भ' गेलैये, की करबै? सब घरक तँ एके ढािी देखैत स्मछयै । आनो गाम आ सर-संबंिी द' जे सुनैत स्मछयै तँ दाती लगैये। मुदा उपाय ? नबकी बहुआस्मन नैहरक स्मवस्सा तँ सुस्मातस्म आदंक ल' लेत। स्मछया-स्मछया । आब तँ हुनका गाम मे भक्म-अभक्मक स्मचार पयस्ति नस्म बँचलस्मा । जेकरा जे मन, खाइत अस्मछ । बुझले अस्मछ एकस्म ािम कतेक स्माकक बास अस्मछ ओ गाम । से जे इच्छा भ' गेल से हाटक कृपा सँ लक्मी आ स्मानकस्म बले नोकर-चाकरक सेवा सँ, तुरन्त उपस्मित भ' गेल। आब बहुआस्मनो त एलीहय ओही संस्कार आ रहन सहनक

वातावरण सँ , ने। अपना संगे सैह संस्कार ल' क' । हुनको चाश्चयश्च यैह नबके मर-मसल्ला बला रान्हल अनदेसी तीमन-तरकारी। नश्च तँ उिओल नश्च होइ छश्च होइत कऽर । नब कश्चाया छै, भश्च पेट खायको नश्च देबैक त... कतेक श्चान्दा हएत-गाम गाम। ते ध्यान ने श्चयै। कर' श्चयौ नेना के जेना जे करैत जाइए आशमी इश्चजाम कनी श्चन। आँश्च-कान मूश्चाये लेबा मे सुभीता। नश्च सुनै जाइत अश्च क्यो कि बात। उपाय? सौसे गामे यैह बसात बश्च रहल छै। से बसात अपनो पश्चवार के तव लगबे करत। ते बुझू जे कोनो अपने टा समस्या आ श्चन्ता तँ नश्च । भश्च समाजेक श्चन्ता। होअ' श्चयौ जे होइ छै ।' बुढीक एश्च श्चस्तृत परामशि सँ बुढा एकटा नवे पकारक अनुभव सँ आकान्त भ' जाइत छश्चि। कहू, कहा तँ आशा छलश्च जे बुढी हुनकर श्चन्ताक परवाश्च करश्चिन, कोनो पभावकारी समािन सुझौश्चिन। मुदा ई तँ उनटे श्चनके आजुक युग िमि बुझाबऽ लगलश्चन -जीवनक ममि आ स्वर प। ओ तँ हतपभ जका भ' गेलाह। यदश्च श्च बुढीक एकहु टा सुझाव अनगलि बा अनुपयुक्त नश्च रहश्च। परन्तु बुढा के कतेक आघात । तमसा गेलश्चन । कहलश्चन-

-' से तँ बड श्चब । परन्तु हुनका लोकश्चाक एश्च इलबाश्च लेल श्चत कत' सँ आबय- श्चत ? से के करत श्चौत ? हम? भश्च जन्म हम ?' बुढा आइ बड श्चचश्चत छश्चि। कोनो युगो तँ अंतता, भने अनाश्च-अनन्त मुदा श्चिक एकटा अँगने ! जेना पुरबा-पछबा बसात तश्चना मनुक्खक जीवन-पश्चश्चश्च मे सेहो समय-समय पर पश्चवतनि घश्चत होइतश्च आयल अश्च। आगा सेहो

पश्चवतनिक ई पश्चकया चश्चमते रहतै। मनुष्य के अपन स्वभाव आ श्चनचयाक अभ्यासक चलते, पश्चवतनिक एहन कोनो बसात तुरन्त स्वीकार करबा मे बहुत समस्या होइत छैक-बड तारतम्य। नबताक सहज स्वीकार मे असौकजे-असौकज बुझाइत छैक। परन्तु बुश्चि आ श्चयात पर जीवन मे गश्चतमान पश्चवतनिक श्चनरन्तर पभाव पडैत रहैत छैक। पत्यक बा परोक। मनुष्य तकर अनुभव करओ श्चक नश्च करओ। बड मेही पश्चकया मे चेतना मे पवेश करैत चल जाइ छैक। पश्चवतनिक स्वरप जतेक देखार रहैत छैक-पत्यक, ताश्च सँ बहुत बेसी अपत्यक अति् अदृशय । ते जेना बाट चलबा काल भूश्चमका मा दुनू पएर आँश्चखक होइत छैक मुदा किनी सौसे शरीर के ।

कोनो बसात जखन बह' लगैत छै तं खास कोनो एकश्च टा घर, आँगन-दलान श्च नश्च रश्चजाइत छैक। भश्च टोल आ गाम भश्च पर तकर पभाव पडैत छैक। कोनो एकश्च गोटेक पसेना छूटैत देह के नश्च, ओहन घर-आँगन-दलान मे रहैत सब लोक के स्पशकरैत छैक। हँ, बसातक पभाव आ तकर मा मे भेद अबस्स भ' सकैत छैक। जेना बश्च रहल पुरबाक पश्चल आ बेसी सघन अनुभव सीमान परक बासडीह के बेशी होइत होइ, संभव। मुदा ई नश्च होइत छैक जे बसात ओतश्च सँ घुश्च क' चश्च जाइत होय...। शरीर एश्च पश्चकया मे मा संग रहैत छैक। चलैत तँ छैक पएरे दुनूटा तश्चना देखैत छैक आँश्च। अइ दुनू अवयब पर देह तँ गाडीक ककी जका ! से ई पश्चवतनि सेहो युगक बह' लागल एकदम नवे बसात । से अपना-अपना बुश्चिये जन जीवन के पभाश्चत क' रहल छैक। एकर सबसँ उग बा देखार पवृश्च बा

लकण बुझाइत छैक से छैक जे अकस्माते समजक बेसी लोक श्वतक संकट मे पश्ध गेलय। अपना स्वभावक गश्वा व्यवसि मे केहन श्वब चश्वा रहल पश्वार देश्वते देश्वते ढनमना रहलय। लोक बेसी मानश्वक दबाब मे पश्ध गेलय। पश्वने जतबा नि सँ गुजर क' लैत छल, ततबे मे आब इन्तजाम नश्व भ' पबैत छैक जतबा मे घर चश्वा जाइत रहै से आब नश्व भ' पबैत छैक। अित् भनसा घर जतेक काल खुजल रहैत छलैक से ताश्व सँ बहुत बेसी- बेसी काल बयबहार मे खुजल रहैत छैक। माने जे भोजनक श्वन्यास बे श्वसाब बढऽ लगलैये। लोकक जीह बेसी पातर भ' गेलैये जेना। जाडश्वा बेसी जर' लगलैये। िआँ बेसी उि लगलैये । सभ आँगन सँ। सीसी बोतलसँ भनसा घरक ताख कए कण टूश्व क' खस' लगलैये आब। बस्तु भूश्वा पर बेसी हेराय लगलैये। श्वयान होम' लगलैये। भूश्वा पर खसला सँ बयािहोअ' लगलैये। तेल-घीउक टाडीक सिन बेदखल भ' रहलैये। सािरण व्यबहारक मटकूडीक सिन कश्वाक बेसी श्वाश्वाया-फुश्वाया वला मटकूडी ल' रहलैये। कुम्हार लोकश्वा श्वनम बोली मे गृहसि के चेता रहलश्वाहे- -'अश्वाला अगहन मे बेसी खोश्वस देब' पडत श्वारहत। सब बस्तुक दाम अकास िश्वक रहलैये । सब टा पश्ववारी सौदा जान सँ बेसी महग भेट' लागलए । सबहक दाम रोजे बश्व जाइ मने। जखन श्वक नब काटक बतनि बनयबा मे बस्तु, समय आ मािि सबश्वकछु बेसी लगब' पडैये हमरा यौर के। से अगहन मे एकबैक नश्व भ' जाइ जाएब अस्तव्यस्त- देबा मे बढा क' सश्वयाना खोश्वस। ते पश्वनही कश्व देब जर री बुझाएल । कश्व देली।'
अपना जीश्वकाक हेतु कुम्हारक ई साविनी बहुत आवस्यक छैक।

नबका-नबका फरमाइश सब तँ ओकरे ने पूरा कर' पडैत छैक। से दीपावलीक अवसरक शहरी काटक आकाशदीपक ढबक आपूर्ति होबा श्ववाहक पुरहर-पाश्वाल। ओहो दबाब मे अछि। श्वन-राश्वा चाक पर बैसल रहैये तैयो नश्व भ' पाश्व रहल छैक-नबका नबका फरमाइस सब ।

परन्तु जेना श्वक संसारक श्वश्वति ता अछि पश्ववतनिक एही दबाब मे कुम्हार-कमिमे सेहो पवेश क' रहल छैक नब नब ढब केर माश्वक कारीगरी। पुरना तं एक आि टा, बेसी नबका पीढीक कुम्हार कर' लागलय काज। गृहसि के नीक लगश्वाहे ओ फरमाइश पर फरमाइश क' रहल छथि न-ओकरे, अनमन ओही काटक मटकूर बना देबा लेल जाश्व मे गृहसिक समथिआओन भार पिताह । लोको तंबुझतैक जे बौआ सासुरक कुम्हार केहन सुन्दर बतनि-बासन बना रहलए ।

दोसर स्तर पर गाम मे आयश्वा नब कश्वाया सब मे कएटा अछि जे अपना नैहरक बसात । रश्वा, बस्तु आ श्ववबहारक बसात। एत' सासुर मे सेहो पयोग क' रहल अछि। कउखन तँ सुझाव दैत,मुदा बेसी काल सासुरक आलोचना करैत जे- एखनहुँ ई गाम कतेक श्वछडल छैक! हमर गामक रहन-सहन कत' पहुँश्व गेल, आ अइ गामक चलश्वा तँ वैह दू सए साल पुरना...।कोनो नबकी भौजी अपना नैहरक गौरव गान करतीह। देओर-ननश्व अपना गामक श्वान्दा पर आपश्वा करतश्वा-' सर तँ िक भौजी !बड िश्वाक आ कुशल कलाकर कुम्हार-कमारक गाम अछि अहाक गाम। परन्तु एकहुटा नामी पश्वाडत-श्वदानक नाम भेटत ? एकहुटा नाम जकरा गामक बाहरो चीन्हल जाइत हो? दस-बीस तँ छोडू, दुइयो टा तेहन

पश्चात त लोक?'

-'जाउ-जाउ, बड विदान अहाक गाम। एहन विदान गाम भइए क' कोन काजक? दहेद छोटमोट तँ अछि सब ।आ स्वयं पण्डित विदान। एहेन विदाक कोन मतलबक? जे बात नइ बना सकय, जीवनके सुख सुभीता नहि उपलब्ध कराबय? पंडिताइ की लोक धो-धो क' चाटत ? स्वाभाविक जे अल्पबयसी ननदि-दरओर, भाउजिक एहि धिकार सँ चुप रहि गेलैक। मुदा ऐकटा नब कनिया कहैत रहथिन जखन समयक अपन ई उच्च विचार, सुनि गेलथिन बुढीसासु। एँडी सँ मुडी धरि लेसि देलकनि हुनका ई बात। की चोटहि ललकि क' बाज' लगलथिन-

-'एं ऐ कनिया,की बजलौ ? की बजलौ अहा? एको लाजकनिया तकर बोध अछि? अहाक बुधिये तँ, अहाक ससुरक पण्डित हएब बेकुफिए भेल? धिकार ! केहन कुसंnस्कार ल' क' आयल छी। केहन अछि अहाक परिवार आ केहन संस्कार द' क' माय-बाप सासुर बिदा कएलनि अहे , कहू त। हम तँ पुछबनि बौआ के-केहन धिम बेटा बियाहलौ ? मना करैत रहिअनि बेटा मे रपैया नहि गनाउ। नीक कुलशील मे ई बड आवश्यक बात बूझल जाइए एखनो। आब भोगू भरि जन्म। ससुरे के मूर्ख कहि रहलय, एकहु रती विचार नहि जे ककरा कहि रहल छियैक आ की? कहू तँ, जाहि कनियाक भरफोडी पयन्ति ने भेलय तकर बुधि आ भाखा एहन? दुगा दुगा।' नबकनिया के एकर आशा नहि छलनि। जहबो कहितनि ओ बजबे कहितथिन अपन ई विचार तधिय।तखन तँ ओ एक रती माथ पर साडी राखि लेलनि, बैसलि रहली। बुढी कहिते रहलथिन धिक भ', बेग मे-' तधिय

हमरा लोकश्चा तं श्चचाश्च क केने रही अपन सोन सन बौआक ई कि जे पश्चवार जे आन तरहेनश्चयो मुदा पश्चाश्च त- व्यवश्चित पश्चवार आ संस्कार वला घर छैक। से ताश्च घरक बेटीक ई चया ? श्चदाक श्चषय एहन बुश्च? बौआ त हमर पढुआ श्चदान छश्च। एही बयस मे जेहन यश-पश्चाष। अश्चत्ति क' लेलश्चाहे ताश्च पर नीक-नीक लोक के ईर्ष्या होइत छैक। जाश्च श्चदे बले एश्च कुलक अदौ सँ जगत मे पश्चाष।-मयादा, तकरे अहा क' रहल छी ई इज्जश्चा ? एना श्चवासि? एताबता जे अपनो स्वामी अहाक मूखि? श्चकार कश्चाया, श्चकार !

एश्च घटना के मामूली नश्च बूझल-मानल गेल। बहुत दूर श्च उलैक एकर ज्वाश्च...।बडी दूर तक पसरलै- पहुँचलै एकर समाद जे समाज मे श्चदा के आब डेगे डेग पर कएल जा रहलए बेदखल वृत।

श्चदान भ' रहल छश्च आब अश्चतत्व मश्चान। श्चाकक बश्च रहलए पचण्ड रपे पश्चाष। पश्चा श्चन। ताश्च अनुरप अंकुरा रहल अश्च, नबे एकटा फश्चल। मनुष्य-मनक खेत मे उपज' लागल अश्च एकटा नवे वनस्पश्चा-लती जे श्च बेश्च समाजक लेल छैक अपश्चश्चात। परन्तु देखाउँस मे भ' रहल अश्च बेश लोकश्चय। एश्चसं होइत नश्च अश्च उपज कोनो खास श्चकछु, मुदा संवश्चति कएल जा रहल अश्च, अपना अपनी । गतपाय खढी के अनसोहात अश्चय असह लगैत छैक, परन्तु करश्च पश्च रहल छैक सहन आ स्वीकार। एश्च बेशी पुरान आ उग नवताक रश्च श्चचार पाया मुँहा [ि सँ आगा संघषि श्च पहुँश्च चुकल छैक। बेशी पश्चवार भ' रहल अश्च बेचैन आ कमेण स्वभाव सँ आकामक । काट आब

फराको सँ सौदयबोधिक, सुन्दर हता स्पृहणीय आ काम्य भ' रहल।ते दलान- डाइंग रमे नञ्,आँगन-असोरो पर समवर्धीति सुशोभित कएल जा रहल अछि। जाहि कैक्टस कोषो बनस्पति मे संवेदनशील त्वचा मे गछि, श्वासप्रश्वासयबा, कष देबाक छोड़ि आओर किछु टा गुण नञ्,से भ' गेल मनुक्खक नबका सौन्दर्यबोधिक आगह-अनुराग। से समय आ विचार बदलि रहलए जाहि मे सेहो काट छल स्वीकृत जेना गुलाब सन फूल, फूलसंग काटक पाकृत्याक देन- काट गडब अपन मिसिंगे छल लोक के स्वीकार, गुलाब सुन्दरताक रक्षि सुन्दर, सुन्दर शेष नीकक रक्षा करबाक अपना कमिगुणकारी स्वभावक कारणे छल काट स्वीकार। कउखन नेना-भ्यान, ककरो देह-पएर मे पैघ फोका घाव पाकि गेला पर असह पीडा यनिणा द, रहल शरीर, अंगक फोका बहा देबा मे छल लोकोपयोगी। तखनहुँ कएल जाइत छल स्मरण से गुलाबक काट! घाव बहा क' करैत छल मनुक्ख के कष मुक्त, पहुँचबैत छल आराम। मुदा ई नबका-नबका िका वला सब विशाल विशाल काट ? जेना काटेक फूल ।अपन काटक अपने बनल मालिक। गुण, गनिहीन घमंडी !

राति- २६ म खेप

समय स्वयं श्मशानमे रखने जलक खाली बासन,
अछि थयास सँ बिकल मुदा सबटा इनार आ पोखरि
कोना जाइत ने बसिस गेल अछि तकर पयोग आ रक्त
पकृत जन्म भेल इच्छाक नहि क' रहलए लोक आबाह
अछि समुद मे माछ जका पर तृप्त ने छैक थयास
केहन पथभ्रष्ट शिक्षा केहन बुद्धि केर की बनलछि बिडंबना
केकरो बुझबा मे नहि आबय ई नव युग केर रचना
थक सब कोना कोन कोन थथिये पसरि रहलए घर-घर
सञ्चालक स्वता रि बहइत जे छल बहैत सब
जीवन मिकल मिकल दुःख मे भारी डेग-डेग पर कण-कण
बिनु किनीये बैसि जाइत अछि सोच मे पड जाइत अछि
बिलकुल्ले पसरल जाइत ई नबका मोनक रंग ढंग
बिना युि केर पश्चात्तन पथा घर भ' रहलए जे हताहत
घोर अशान्ति भरल बेशी मन भ्रान्ते अछि उद्वेग-उन्मन
कारण तेहन नुकाएल गोपन बूझि ने पाबि रहल लोक
अबियसे मे युगक ताल देखि भोथा नचारी गबइत लोक
समय बनल जाइत अछि दिन-दिन स्वयं मूसा लाचारीक
सभ शरीर सँ पाण जेना सूखल जाइत अछि पल-पल
अधिक लोक जेना बसि चुकलए बौक, कतोक बहीर
शेष जीवनक नब ढरा सँ आतंकित आ अधीर
आब परस्पर गौआँ-गौआँक रक्षि ने गेल आप्तता

सब जेना सब सँ नुकाएल ताकय बचबा केर रस्ता
ते अनेर मे आओर अकारण पसरल रहल अछि दूरी
ककरो पर ककरो ने जेना बाचल अछि आब विश्वास
बहुत लोक गुम्म, बेशी दुखिया आरो बहुत उदास
ई कोन युगक पवेश भेल अछि ओहन शान्त जीवन मे
कमतृप्ति मनुखक समाज मे केहन अशुभ से होएब
बेशी हाि कपार िने व्यस्त बड व्याकुल-व्याकुल
पत्यके तँ शान्त जेना किछु भेले नहि हो किछुओ
किन्तु लोक जीवनक अंता उदेश्यक आगि जरैत'छि
सब सहैये रहलए लेकिन क्यािा अपन ने कहैत'छि
देह मोन आ पाणक मध्य मे की अछि जीवन केर सूि
अछि दशनि,आसिा बा युग सँ कहल-सुनल अनुबनि
नहि बूझल होइछ बेशी क्षण एखन उिाएब पश
देह विकलता मे अपना द' अनमन अपने सन
मािन िहिका हँसय पाण चकित चुपायल मोन
सभ अछि सबमे तैयो अपना अजाने लाचार
जुडय सभक अस्तित्व एकहि मे एक तंि संचार
बोिकि आन व्यक्ति रहितहुँ अछि एक बिन्दु पर सम
पूवि गािन केर हेतु जेना स्वर-शब्द लयक हो संयम
बिना पयासे स्वतस्फूर्ति ओना होइछ सब किया
किन्तु आइ काल्हि ताहू मे होअय लागल व्यतिकम
देह-मन आ पाणक मध्य घटि रहल जेना हो समन्वय
पहिने छल सब किया बोिि आ सम्पादनक सहजता
आइ जेना टुटि गेल सूि हो आपसक तत्परता

एक देह-मन-पाणक सृष्टिक सुन्दर एहन महल मे
आब जेना क’ रहल वास हो तीनू एकसर एकसर
तीनू ताकि लेने हो जेना अपन आवकय एकान्त
तीनू मे बाजा भूकी नहि तीनू आपट अशान्त।

ई अनुभव कि खसल एकाएक कोनो मेघ सँ पाथर जका
ई अनुभव कि जीवन मे आएल नोतल कोनो नोरिरी
ई अनुभव कि आयल कोनो बसा समधियान केर भार मे
ई अनुभव कि आबि रहलए कीनि क’ हाट-बजार सँ
ई अपनहि देह-मन-पाण मे एतेक समाद हीनता
सोझाक सहज पाप्त सुख पयन्ति बनल जाइत अछि दुलभि
कारण किछु पत्यक कहा अछि कहा साफ किछु लकण
मारि अदृश्य संदेहक छाया सँ असुरक्षित आँगन
दूरी बढल जाइत अपना मे, बिन बातहिक परस्पर
टूटल संबंकि बसि रहल सम आँगन मे घर घर
चौकन्ना रारि, दुबिधा गता उठिल चलल डगमग डग
ई अनुभव आएल अवश्ये.बड बुधियारी बाटे।
हँ बुझबा मे अबैत अछि आब ई आ’ल हाटे- हाटे इ आएल हाटे-हाटे।
हाट बनल नब बाट जेना जीबाक सब तरहे।
सभ बाट पर आब जनमि रहलए बन-झाखुर। लोक लाचार । असमंजस मे - की करी, की नहि, कोन बाट चली एहि दुाख-दुविधा मे जे एक तँ ओहनहुँ छलैक कहा किछु विशेष हाि आब तँ जेहो छलैक अपन अिीन, अपना योग्य, सभ भेल जा रहल छैक

बेहाि। श्किछु तं अपनश्च घरक नवताक अन्हर-श्बहाश्क मे आ श्किछु भश्ब समाजक बदश्च रहल दृश्य आ व्यवहारो मे। यदश्य श्क सभक दुाख-दुश्याि छैक रंग-रप एके। मुदा से नश्च बूश्च पबैये लोक एकरा एना भ' क 'एश्च रंग मे जे भ' रहलए सब श्किछु अंग-भंग। जीवन यापनक पारंपश्वक बाट पर चलैत, सहैत जाइत सबटा नबका-नबका आघात जे पत्यक मे तं छैक बड गंहीर स्नेहक स्पशि मुदा पाण के िकुश्च रहल छैक एक एक पल। कत' सँ ई कोन रोगाह वायु बहैत आयल छैक सभक बुश्चि बौआयल सभक हृदय घायल छैक। ताहू मे बेशी तं बनल छैक श्वडंबना ई, एश्च सबक जश्क छैक आन नश्च, अपनश्च सब ई यि-पुि,पुबि, आ संगी-सािी सब। बश्च रहल एश्च बसात संग बेश गदगद अश्छ, श्वनु बुझने एकर असश्व। कालुक भश्वष्य पर अश्विसंख्य नब लोक अपन-अपन फूश्क रहलए घर। के बुझबय ? बूझक सेतु पुरना लोक सबके राखल जा रहल अश्छ कश्वाया क'। नबके लोक सम्हाश्व रहल अश्छ नब युगक राश्च। बढा रहल गाडी के हाश्क क' एश्च तरहे जेना कोनो दुपश्चयाक गाडी नश्च, समस्त पृथ्वीये होश्वि गुडका रहल, अपना सामथ्र्ये,अपनश्च बुश्चि-श्वोत सँ-आगा। समाज, बयसक पुरान िकमूडी लगौने बैसल छश्चि चुपचाप, सबटा देखैत!

तँ श्क ई पाण जे िकुचल जाइत बुझाइत अश्छ श्वन राश्च से नश्च श्विक एकमाि हमर?लोकोक बहुत छैक आन अपन। तँ श्क छैक व्याकुल हमरा सँ पृिक श्किछु लोक, तँ श्क ई संसार, समाज बनल छैक ओतहु आन? छोश्क सर-संबन्िी श्क ओतहु कएने छै असकर अपनश्च दुाखक ज्वाला मे श्क जरैत अश्छ आनो घर एहन

थपक्षा नव पकारक आ पक्षले पक्षल स्पाभावक, तँ क्षक अछ्छ पारंभ ई अनुभव केर नबका आवक-जावक? चीश्रह ने पाबी हम यदथ्य एकरा कोनो आँश्रवक थचार सँ थ्थ्थि दुश्वि अछ्छ पश्रा पल पश सोझ सन्सार सँ अछ्छ एही मे शुर मनुक्खक कोमल संवेदन सब मौलाएब, टूथ्य खसब गाछ सँ पात जेना सुखायल कमशा पातक संगश्च डाश्व, ि'र आ पूरा गाछ, सुन कएल जाइत जीवन रस सँ िराशायी भ' जाइछ गाछ तँ ताश्य मश्व-सुखा क' रश्च जाइत अछ्छ उपयोगी जाडश्रा बश्रा जश्व चूश्रा बनाबय, आबाल बृिक भोजन, जडकाला- हाडकंपौआ ऋतु मे िश्वक क' श्वअय जीवनक ताप, मुदा मनुख-जीवन, ई देह- समस्त श्वलकण, पकृश्राक अनुपम सृश्व पृथ्वी पर अनुपम जीश्वत सेहो एहन श्वरिकि बनल अकायकि देहक जीवन हो अंत तखन पयन्ति श्वअय फेरो समाज,पश्चवार,पकृश्रा सँ काच-सुखायल गाछ जे होइछ कािं, देह के अंश्राम पश्वणश्रा िश्व पहुँचाबय मे,शरीर-मृत मनुक्ख शरीर डाहै मे करबा लैत अछ्छ खचिजाइतो-जाइतो।

-'हम-हम नश्च रािं, तो..की सब सोचैत छे ...पुछैत रािं, कहैत रािं,सुनैत रािं..एखनश्च केहन छल आत्म मुखर सश्कय स्पश्चदत ! श्वझा गेल श्वश्चया जका रहलए केना िंआइत, पशक कोनो टा उतर नश्च, कोनो टा ने बात-संवाद मािं दीघिश्वशास-दीघिश्वशास- 'कोना छी अहा कृष्ण, कहा छी, श्वएक छी ? एहन समय हमरे जीवन मे श्वएक एतेक रास जेहो नश्च लेने ऋण तकरो भश्व रहल छी सूश्व, मूर िएल जसक तस अदृश्य कोनो बश्राकक हमर पल, श्वन, मास बखिचुकबैत अपन एक-एक सास । एहन सिान श्वएक बश्रा गेलय इएह हमर ई मन? भश्व संसारक बस्तु, व्यश्वत,

व्यथ्वन्तक सब कायकिलाप, कीडा आ सब कमकि बश्चा गेल अश्छ सुलभ आँगन। जेकरा जखन सुभीता आबय क' श्चअय व्यवहार। हमही आँगन हम मुदा ि किमूडी लेने िढ । कश्च ने सकी केकरो श्चजताक बोझ, एकर संताप, बुझा सकी ने अपन एश्च वतमानक कुश्चल यि ािि, हमर अि श्छश्छयाएल जेना कृषकक बीयाक श्छतनी-पश्चिया हो, बागु कर' खेत जाइत काल बाटे मे गेल हो हेराय, जतबा जे श्बश्छ-समेश्च सकलौ, हँसोश्च-हँसोश्च, श्चवन मन कमाहत देहे यिपिलबि बीया कयलौ बागु ! घुरल हो ओश्च पचण्ड रौद के दैत ललकार घर आ बनल तािश्च जीवन कम मे गाम मे श्चसि र आशाश्चत, फश्चलक भावी उपलश्चि कि श्चस आशस्त, मुदा पुश्चा जतबो बीया छीटल गेल हो, घामे-पसेने खेत जोश्चा तैयार कएल गेल मे तकरो सब के चुश्चा क' ल' चल गेल हो श्चडैक महा हेज, एम्हर एक श्चस श्चश्चिन्तता मे गबैत मनक भश्चतव्य, ओम्हर दोसर श्चस सुन कएल बश्चा गेल हो खेतक गभि! एम्हर श्चरन्तर बीया मे अंकुरयबाक , माश्च के फोश्च जन्मबाक-बढबाक, बश्च क' फश्चलक गाछ श्चकसवाक अहो श्चवस ममातक पतीक्ष...ओम्हर जन्म सँ पश्चनश्च कोश्च के श्चक्त करैत काल-गश्चा, ई एहन हमरे टा श्चएक कमाहत हमरे टा श्चएक वतमान ! आश्च बोश्च रहलए एहने आ यैह क्यि आनो आन ?' सोचैत राि छोडलश्च नमहर शास..। जाश्चा ने कखन-कोना लाश्च गेल रहश्चा राि के आँश्च। नश्च जाश्चा कखन बैसले बैसश्च ओंघडा गेलीह ओ पश्चया पर।

....जारी

राधा- २७ म खेप

"फलक गाछ सकसवाक अहो वस ममातक पतीक...ओम्हर जन्म सँ पनक कोश के ककरैत काल-ग, ई एहन हमरे टा कएक कमाहत हमरे टा कएक वतमीन ! आक भोा रहलए एहने आ यैह क्यि आनो आन ?' सोचैत राधा छोडल नमहर शास..। जाना ने कखन-कोना लाा गेल रह राधा के आँख। न जाा कखन बैसले बैस ओंघडा गेलीह ओ पया पर।"

द॰क॰ ....(एत' धरि अपने पढ़ चुकल छी) .आब आगा ---

मुदा ई भेल बोधि जेना देह भ' गेल डेगी नाव! पया ब क' यमुना मे हुनका कराब' लगल-लह बडी काल...एकस लह खेलाय मे रहली मस्त- बडी काल ! तखन होअ' लगल अले कण मोन रक्त । आर यत क' नाव के घाट लगौल , भेलीह-संतुष जे पल बेर न लेब' पडल शीकृषाक सहयोग, आ खे सकलहुँ नाव, उत गेलौ पार ! अपन सुख लेल कएक करी केकरो नेहोरा ? भने कृष्णो कएक न होथि। एक मोन मे तुरन्त उपस्थित भ गेल-ग्ला, छया, कृष्ण पर भरिता तँ हमर य आ पारबि। कोना आयल मोन मे एहन बात ? धिकार मोन -धिकार... मुदा ई की ? घाट पर साकात् कृष्ण महराज ठाढ ! वैह खौझबै वला हुँसैत, बढा चुकल नाव सँ गमग उत रह राधा स अपन दना हाथ। सस्नेह, सादिदैत अपन हाथ राधा भेलीह कल । ला न सकलीह हुनका सँ आँख । -' भसक मन मे हमरा नु यमुना मे नाव चला लेबाक छौक मन पर भार ।

अपन सुखक अपनश्च कर्माभिभरिताक सेहो छौक आत्म दीप्त श्वशास...राि, तो केहन लाश्चा रहल छे एश्च अलौश्कक क्ण , तोरो ने बूझल छौक। हमरो तँ श्वक जीवनक ई पिमश्च दुलभि दृश्य ! हम केना योगा क' राखी ई आनन्द राि, कोन श्वश्व, तोही देखा दे उपाय।' -' जाउ-जाउ, एतहु खौझबैये लए हमरा आएल छी अहा । हम कएलए सीगन भ' क' अगरश्चतपना आ छी ताही मोने बेचैन, अहा के सुझैए श्वनोद एखन ।' राि श्कश्चत स्नेह-कोश्वत भ' कहलश्चन तँ कृष्ण भेलाह गंभीर। -' नश्च राि, हम तँ छी परम हश्वत-संतुष । यैह त हमर कामना छल, तो बश्चा जायं-स्वयं आत्म श्वभरि । नश्च रह' पडौ तोरा हमरा पर श्वभरि । तो कएलेहे हमरे काज। हम तँ ते छी पसन।' -'श्कएक नश्च, आब आओर रहब श्वश्चन्त, मरओ राि श्क जीबओ, नश्च राख' पडत श्कश्कर ।' नाव सँ उतश्च क' दरबश्चाया द' क' पडयबाक छलश्चा श्वचार, मुदा ई तँ सवाि नवे पश्वश्वश्चा कएने छश्च कृष्णजी िढ ! जाश्चा ने एतबा काल एश्च बीच की हएत आँगनक हाल। जे हो ... आब एश्च क्ण तँ मावि-मायाजाल मे छी बाझश्चा हमहूँ । आगा देखी कोन नाटकक केहन दृश्य पस्तुत करय वला छश्च-नटवर नागर...सकल गुण आगर !

बूश्चा क' राि आँगन अयलीह तं आिये िकमूडी लाश्चा गेलश्चा। बीच आँगन मे कृष्ण िढ, सदा। हुनकर स.बोिनक कोनो टा ने जबाब दैत चश्चा गेलीह भीतर अपना कोिली श्वस। िरे-िरे कृष्ण सेहो लाश्चा क' पाछा राििक पीि पर पहुँचलश्चन। एतनी काल मे पहुँश्चा जएश्चन कृष्ण तकर नश्च छलश्चा कश्चायो अनुमान। सश्चयाइयो कहा सकलीह आँचर पयन्ति ...दुष केहन जे पैश्चा गेलाक बाद

कोिली मे खखसलथिा कतथि, कएलथिा-राि के साकाक । अपत्याश्वात एथि कृष्ण-कृत्य पर भ' गेलीह कोथित । जेना तेना सथियबैत आँचर, तथि घुरलीह पाछा थिस फेरलथिा मुँह..कुथिल शृंगारोदीप्त भुवन मोथिनी थिहुँसी पसारने ढि-शीकृष्ण । लग आथि क' खौझाएल पोसुआ थिलाथि जका राि ! छडपैत सन कमे ल'ग पहुँथि कृष्णाक पीताम्बरी झीकैत' 'हरण कर' लगलथिन.. . ''ई की, ई की करैत छे राि । हमरा थिएक करैत छे एना उघार ? देखत लोक हमर की रहत इज्जथिाक हाल ! आथिर पुरखोक होइत छैक इज्जथिा, मयादा लज्जा, पुरखोक चीर हरण होइत छैक यथि नथि रहै पुरषत्व...।' थिन्तु हँसी-ि सँ राि कथियो ने ढियलीह। कृष्णो बूथि ने सकलाह, राि बजलीह थिछु बा कनलीह..। स्नेहाक मे बन्हबाक हुनक मृदु पयास के ताग जका खुट द' तोडलथिा। खौझायथि ओ एतबा जे कृष्णाक केश के पकथि घीच' लगलीह। ओ रहथि नथि पस्तुत, राािक हेतथिा एहेन स्नेहाघात। केश थिाराइत मन छटपटबैत कननमुँह भ' गेलाह। मुदा राि तँ जेना छलीह बताथि भेथि अपन तामस सँ। बूझल कृष्ण ियिसँ । सकत-बाथि स्नेह सँ बन्हैत बुझब' लगलाह- -''भेलौ थिक तोरा, की बात, की भेलौए बाज त थिछुओ, हमरे सपात तोरा, भेलौए की से तँ कहै बताथि !... हमरो मन िकैये कतेक थिन, मास-बरख सँ, कहा भेटैए शीतल स्नेहक छाहथि हमरो । तइ पर सँ तोरो यथि होउ एथिना हाल तँ हमर जीवन कोना चलत, कथियाथि, कतबा दूर से तोही क'ह कने ।...आथिर की भेलथिाहे हमर बुथियाथि राथिका जी के , बुथियै त। से दोख जे भेलय हमरे बुते ? कोना-की। थिचुकैत राथिका के करेज सँ साथि बडी काल

कृष्ण अपनहुँ अकचकैत रहलाह आ अनन्तर ओतबा काल । दुहुक अधरपुटक कमशा एकमेक बनल चल गेलथि । राधि के ई की भेलथि आ कृष्णहु के ? दुनूक भाव आवेग एकात्म भ' चुपचाप बहैत गेल...जाधरि नहि एहि करण चुप्पी मे जीवनक कतेक युग बीति गेल ! अतिथि मे एक ध्यान पाण सेहो एक।

-' भान भ' गेलौ राधि, सूतल गेले तो की ? ' कृष्णक एहि पुछैत स्वर पर चहुँकि उठलीह राधि । उत्थितहि भान भेलथि जेना होथि ओ शीकृष्णक आङनंगन मे माझ आँगन मे ठाढ़ि । चार कात सँ देखैत लोक, सर-संबन्धि कि- सखी बहिनपा...। आ कि लाज सँ व्याकुल एकहि बेर मे शीकृष्णक बाहि सँ झकझोरि छोडबैत स्वयं के धाकल उठलीह, पडयलीह- लते-फते, आछोह...

भान एतहि टुटि गेलथि । सास फुलैत भेलीह बेसम्हार। जेना लोहारक भाथी हो, ओहिना ताप जरैत उसासक भाथी हो ई देह। आब भग्न स्वपक कर' बैसलीह भाग्यदशा विश्लेषण। पछताइत-पछताइत मन भेलथि अस्तव्यस्त । केहन दुर्लभ सुन्दर स्वपक क' देखयैक अपने दुर्दशा। कि अछि एतबो नहि बुझल , केहन भाग्य से कहि नहि, स्वपो जेना सुडाह होइत अछि, सोचथि राधि ।

मुदा ने जाधरि जखनथि अबैत अछि कि एक आधि , सौस स्वप केहन दुर्लभ यथि हो मनोरधि कि । ओना तँ विकट भयावह स्वपक अंत नहि, व्यथि कि भय- भय राति बौआइत बन-झाखुर मे बाधि बोने भय संसार विकल भयभीत एकसर अनन्त मे लोक जेना पाछा सँ खेहारले जाइत कोनो राकसी सन असकर अबलाल नारीक पाछा लेने बछी-भाला कोनो डेग पर गाथि सकैत अछि पीछि श्वास सँ त्रस्त प्राणजीवषा गस्त पाण छटपट दौडैत अनवरत

जाश्रा ने चल जाइत अछ्छ कतोक योजन कतबा आगा आ श्क ओही अपस्थात दशा मे जत' िरैत अछ्छ सुस्तायबा लेल एकटा डेग श्कंश्चात श्रश्रन्त जे राक्सी पाछा बहुत पाछश्च छुश्ट गेलए, हम पहुचल छी आश्ब सुरश्कत अपन गामेक इलाका ते एक पल
ल' ली दम । सास करी श्नि र आशस्त, आश्क जेना अवतार जेका आगा मे आश्ब क' िढ कोनो भ' जाय श्यश्चा श्बकराल भयावह श्वंसक पशु मा ि एकटा ओकरा काया मे समाएल हो जेना कतोक बाघ-श्संह-हा ि-ऊँट आश्द, सभ एकश्च ि मि एक संग मुँह बाश्ब क' िढ जेना हो बडका महलक श्संहदार केर फाटक जाश्ब मे एक संग पैसैत अछ्छ सहसो सैश्नक, अपन घोडा-हा ि र ि समेत से खुंखार जानवर सब केहन हँसैत लगैत अछ्छ, जेना श्क ओ गीडय नश्ब, अहंक अएला पर अश्ना पसन स्नागत करैत अछ्छ केहन लगैत अछ्छ एहन श्यशाल जानवर ई कोन श्रिक, ई जीव, जाश्रा ने पश्चले पश्चल देखै छी- आगा एकटा डेग बढौलक तँ सोझाक िरती डोलैत बुझाएल, दोसर डेग पर देह-पाण सौसे संजा जेना हेरायल, कोनो नश्ब बाचल श्यकल्प कतहु पडयबाक, सब श्दशा मे हो जेना ओकरे पसरल पंजा,हा ि-पैर
ओना तँ श्यकट भयावह स्नपक अंत नश्ब, क्य िकि भश्ब- भश्ब राश्ना बौआइत बन-झाखुर मे बा ि बोने भश्ब संसार श्यकल भयभीत एकसर अनन्त मे
लोक जेना पाछा सँ खेहारले जाइत कोनो राक्सी सँ असकर अबाल नारीक पाछा लेने बछी-भाला
कोनो डेग पर गाश्रि सकैत अछ्छ पीश्च श्वस सँ िस्त श्नजीश्यषा गस्त पाण छटपट दौडैत अनवरत जाश्रा ने चल जाइत अछ्छ

कतोक योजन कतबा आगा आ थक ओही अपस्यात दशा मे जत' रैत अछ सुस्तयबा लेल एकटा डेग थकंथत आथिन्त जे राक्सी पाछा बहुत पाछथ छुथ गेलए, हम पहुचल छी आब सुरथक्त अपन गामेक इलाका ते एक पल ल' ली दम सास करी थि र आशस्त, आथक जेना अवतार जेका आगा मे आब क' िढ कोनो भ' जाय थथि थकराल भयावह थंसक पशु मा ि एकटा ओकरा काया मे समाएल हो जेना कतोक बाघ-थंह-हा ि-ऊँट आथ, सभ एकथ िम एक संग मुँह बाथ क' िढ जेना हो बडका महलक थंहदार केर फाटक जाथ मे एक संग पैसैत अछ सहसो सैथक, अपन घोडा-हा ि र ि समेत से खुंखार जानवर सब केहन हँसैत लगैत अछ, जेना थक ओ गीडय नथ, अहंक अएला पर अथ पसन स्पागत करैत अछ केहन लगैत अछ एहन थशाल जानवर ई कोन थिक, ई जीव, जाथ ने पथले पथल देखै छी- आगा एकटा डेग बढौलक तँ सोझाक ि रती डोलैत बुझाएल, दोसर डेग पर देह-पाण सौसे सजा जेना हेरायल, कोनो नथ बाचल थकलप कतहु पडयबाक, सब थशा मे हो जेना ओकरे पसरल पंजा, हा ि-पैर
पाण जेना चीत्कार क' उ ि भय सँ आत ि अपन रक्त ि जोर िहका पडल जेना बह ाण्डे थजलौका सं एक संग कडकल चमकल आ सृथ भथक मेघक समूह एकबेर गरजल, डरे भेल पसेना सं तरबतर ि र ि राइत सवाग बुझा रहलए जे जाइत होइ जेना ओथ जन्तुक बडका फाटक सन खुजल कल्ला बाटे ओकर पोखथ सन पेटक सते तखने उ ि कं ि मोकल थारथरी भरल, आत ि पुकार मुदा के सुनय, सुनय के ? सुननहारक अपने भय-व्याकुल असकर ई वतर्मान स्पयं अपने ई थय एकान्त, केहन असुरथक्त आ अशात

! कोन जीव थिक आश्चर एहन भकराल आओर खुंखार सपनहुँ देखल तँ होयतै अवश्य अश्चतता एकर पुछबाा हुनके, जँ भेटता तँ, कोन िक ई जीव ? आइधि देखल आ ने सुनल छल, मावि ! कोनो गश्चमान पहाड थक सत्ये कोनो जीवे छल हुनका तँ हेबे टा करतश्च एकरो बूझल पश्चचय। की नश्च अश्च हुनका एश्च सृष्ठ क जे थकछु कोनो थषय अश्च जाश्च ने कतेक जान कोना एतबश्च बयसे पौने छथि सबटा ओ बूझैत छथि हुनका सबथकछुए सुझै छश्च घ'न अन्हश्चया मे पयन्ति सबथकछु देखाइत छश्च... कोना हमर खश्च पडल कनपासा यमुना कातक घासक बन मे ओहन अन्हश्चया राश्च मे से ओ ताकल एकश्च कण मे कोन आँश्च छश्च केहन ताश्च मे ज्योश्च थराश्चत श्चव्य जत' जत' पश्च जाइछ स्पता भ' जाइछ ओत' इजोत ! हुनका सोझा ते अश्चाशय सम्हार' पडइछ आँचर से सब सश्च केर अनुभव वस्तुक भीतर वस्तु देश्च लेबक अदुत कौशल छश्च भनु देखनहुँ शीमान जाश्च ने की की देश्च ल' जाइत छथि सोश्च स्मरण करैत लजयली एकान्तहु मे रािा...

एखन कत' छथि कृष्ण ? समय स्पयं श्चारमा मे रखने जलक खाली बासन, अश्च थयास सँ भकल मुदा सबटा इनार आ पोखश्च कोना जाश्च ने भसश्च गेल अश्च तकर पयोग आ रक्त पकृत जन्म भेल इच्छाक नश्च क' रहलए लोक श्चबाह अश्च समुद मे माछ जका पर तृप्त ने छैक थयास केहन पश्चश्चिथा केहन बुथि केर की बनलश्च भडंबना केकरो बुझबा मे नश्च आबय ई नव युग केर रचना थक सब कोना कोन कोन थथीये पसश्च रहलए घर-घर सश्चलक स्पता िर बहइत जे छल बहैत सब जीवन िमकल िमकल दुाकख मे भारी डेग-डेग पर कण-कण भनु िकनीये बैश्च

जाइत अछि सोच मे पड जाइत अछि बिलकुलले पसरल जाइत ई नबका मोनक रंग ढंग बिना युि केर पश्चाद्धन पश्चा घर भ' रहलए जे हताहत घोर अशान्त भरल बेशी मन शान्तो अछि उद्विग्न-उन्मन कारण तेहन नुकाएल गोपन बूझि ने पाबि रहल लोक अिबयसे मे युगक ताल देखि भोथा नचारी गबइत लोक समय बनल जाइत अछि छिन-छिन स्वयं मूक्षा िलाचारीक सभ शरीर सँ पाण जेना सूखल जाइत अछि पल-पल अधिक लोक जेना बिना चुकलए बौक, कतोक बहीर शेष जीवनक नब ढरा सँ आतंकित आ अिीर आब परस्पर गौआँ-गौआँक रहि ने गेल आप्तता सब जेना सब सँ नुकाएल ताकय बचबा केर रस्ता ते अनेर मे आओर अकारण पसरि रहल अछि दूरी ककरो पर ककरो ने जेना बाचल अछि आब िशास बहुत लोक गुम्म, बेशी दुखिया आरो बहुत उदास ई कोन युगक पवेश भेल अछि ओहन शान्त जीवन मे कमतृप्त मनुखक समाज मे केहन अशुभ से होएब

बेशी हाि कपार िने थाकल बड ब्याकुल-ब्याकुल पत्यके तँ शान्त जेना किछु भेले नहि हो किछुओ किन्तु लोक जीवनक अंता उदेखित आथा जरैत'छि सब सहिये रहलए लेकिन व्यि ा अपन ने कहैत'छि

देह मोन आ पाणक मध्य मे की अछि जीवन केर सूि अछि दशनि,आसि ा बा युग सँ कहल-सुनल अनुबनि नहि बूझल होइछ बेशी कण एखन उिाएब पश देह थकलता मे अपना द' अनमन अपने सन मासि िहका हँसय पाण चकित चुपायल मोन सभ अछि सबमे तैयो अपना अजाने लाचार जुडय सभक अस्मिता एकहि मे एक तंि संचार बोिक ज्ञान अिशा रहितहुँ अछि एक बिन्दु पर

सम पूर्वगान केर हेतु जेना स्वर-शब्द लयक हो श्रायम श्वना पयासे स्वतस्फूर्श्वाति ओना होइछ सब श्वकया श्वकन्तु आइ काश्व ताहू मे होअय लागल व्यश्वाकम देह-मन आ पाणक मध्य घश्व रहल जेना हो समन्वय पश्वने छल सब श्वकया बोि आ श्वापादनक सहजता आइ जेना टुश्व गेल सूि हो आपसक तत्परता एक देह-मन-पाणक सृश्व क सुन्दर एहन महल मे आब जेना क' रहल वास हो तीनू एकसर एकसर तीनू ताश्वक लेने हो जेना अपान श्वाश्वकय एकान्त तीनू मे बाजा भूकी नश्व तीनू श्वापट अशान्त।

ई अनुभव श्वक खसल एकाएक कोनो मेघ सँ पाश्वा जका ई अनुभव श्वक जीवन मे आएल नोतल कोनो नोिरी ई अनुभव श्वक आयल कोनो बश्वा समश्वियान केर भार मे ई अनुभव श्वक आश्व रहलए कीश्वा क' हाट-बजार सँ ई अपनश्व देह-मन-पाण मे एतेक समाद हीनता सोझाक सहज पाप्त सुख पयश्ति बनल जाइत अश्व दुर्लभ कारण श्वकछु पत्यक कहा अश्व कहा साफ श्वकछु लक्ण माि अदृश्य संदेहक छाया सँ असुरश्वक्त आँगन दूरी बढल जाइत अपना मे, श्वान बातश्वक परस्पर टूटल संबंकि श्वि श्वा सम आँगन मे घर घर चौकश्व राि, दुश्वाश्व गता उश्वि चलश्व डगमग डग ई अनुभव आएल अवश्ये.बड बुश्वियारी बाटे। हँ बुझबा मे अबैत अश्व आब ई आ'ल हाटे- हाटे इ आएल हाटे- हाटे। हाट बनल नब बाट जेना जीबाक सब तरहे।

सभ बाट पर आब जनश्व रहलए बन-झाखुर। लोक लाचार । असमंजस मे - की करी, की नश्व, कोन बाट चली एश्व दुाख-दुश्वि मे जे एक तँ ओहनहुँ छलैक कहा श्वकछु श्वशेष हाि आब तँ

जेहो छलैक अपन अीन, अपना योग्य, सभ भेल जा रहल छैक बेहाि। श्किछु तं अपनश्ि घरक नवताक अन्हर-श्बहाश्ि मे आ श्किछु भश्ि समाजक बदश्ल रहल दृश्ि आ व्यवहारो मे। यदश्प श्क सभक दुाख-दुश्वाि छैक रंग-रप एके। मुदा से नश्ि बूश्झ पबैये लोक एकरा एना भ' क 'एश्ि रंग मे जे भ' रहलए सब श्किछु अंग-भंग। जीवन यापनक पारंपश्िक बाट पर चलैत, सहैत जाइत सबटा नबका-नबका आघात जे पत्यक मे तं छैक बड गंहीर स्नेहक स्पशि मुदा पाण के िकुश्ि रहल छैक एक एक पल। कत' सँ ई कोन रोगाह वायु बहैत आयल छैक सभक बुश्ि बौआयल सभक हृदय घायल छैक। ताहू मे बेशी तं बनल छैक श्वडंबना ई, एश्ि सबक जश्ि छैक आन नश्ि, अपनश्ि सब ई यि-पुि,पुिबि, आ संगी-साि सब। बश्ि रहल एश्ि बसात संग बेश गदगद अश्छ, श्बनु बुझने एकर असश्ि। कालुक भश्वष्य पर अश्िसंख्य नब लोक अपन-अपन फूश्क रहलए घर। के बुझबय ? बूझक सेतु पुरना लोक सबके राखल जा रहल अश्छ कश्ााया क'। नबके लोक सम्हाश्ि रहल अश्छ नब युगक राश्म। बढा रहल गाडी के हाश्क क' एश्ि तरहे जेना कोनो दुपश्ियाक गाडी नश्ि, समस्त पृथ्वीये होश्ि गुडका रहल, अपना सामथ्र्ये,अपनश्ि बुश्ि-श्वोत सँ-आगा। समाज, बयसक पुरान िकमूडी लगौने बैसल छश्ि चुपचाप, सबटा देखैत!

तँ श्क ई पाण जे िकुचल जाइत बुझाइत अश्छ श्वन राश्ा से नश्ि श्िक एकमाि हमर?लोकोक बहुत छैक आन अपन। तँ श्क छैक व्याकुल हमरा सँ पृिक श्किछु लोक, तँ श्क ई संसार, समाज बनल छैक ओतहु आन? छोश्ि सर-संबनी श्क ओतहु कएने छै

असकर अपनेक दुखक ज्वाला मे धिक जरैत अछि आनो घर एहन विपत्ति नव पकारक आ पहिले पहिल स्वभावक, तँ धिक अछि पारंभ ई अनुभव केर नबका आवक-जावक? चीन्हह ने पाबी हम यदपि एकरा कोनो आँखिक विचार सँ स्वर्ग दुर्ग अछि पिव पल पश सोझ सन्सार सँ अछि एही मे शुर मनुक्खक कोमल संवेदन सब मौलाएब, टूटब खसब गाछ सँ पात जेना सुखायल कमशा पातक संगहि डाथि, िर आ पूरा गाछ, सुन कएल जाइत जीवन रस सँ िराशायी भ' जाइछ गाछ तँ तािथ मथि-सुखा क' रखि जाइत अछि उपयोगी जाडमि बथि जथि चूल्हि बनाबय, आबाल बृकि भोजन, जडकाला- हाडकंपौआ ऋतु मे िथिक क' थिअय जीवनक ताप, मुदा मनुख-जीवन, ई देह- समस्त थिलकण, पकृतिक अनुपम सृष्टि पृथ्वी पर अनुपम जीवित सेहो एहन थिारकि बनल अकायकि देहक जीवन हो अंत तखन पयन्ति थिअय फेरो समाज,परिवार,पकृति सँ काच-सुखायल गाछ जे होइछ कािं, देह के अंतिम परिणति थि पहुँचाबय मे,शरीर-मृत मनुक्ख शरीर डाहै मे करबा लैत अछि खचि जाइतो-जाइतो।

-'हम-हम नहि राि, तो..की सब सोचैत छे ...पुछैत राि, कहैत राि,सुनैत राि..एखनहि केहन छल आत्म मुखर सक्रिय स्पन्दित ! थिझा गेल थिथिया जका रहलए केना िँआइत, पशक कोनो टा उतर नहि, कोनो टा ने बात-संवाद माि दीघ थिशास-दीघ थिशास- 'कोना छी अहा कृष्ण, कहा छी, थिएक छी ? एहन समय हमरे जीवन मे थिएक एतेक रास जेहो नहि लेने ऋण तकरो भथि रहल छी सूथि, मूर िएल जसक तस अदृश्य कोनो बथिकक हमर पल, थिन, मास बखि चुकबैत अपन एक-एक सास । एहन सिन

थकएक बथा गेलय इएह हमर ई मन? भथ संसारक बस्तु, व्यथक्त, व्यथक्तक सब कायकलाप, कीडा आ सब कमक बथा गेल अछ सुलभ आँगन। जेकरा जखन सुभीता आबय क' थअय व्यवहार। हमही आँगन हम मुदा किमूडी लेने िढ । कथ ने सकी केकरो थजताक बोझ, एकर संताप, बुझा सकी ने अपन एथ वतमानक कुथल यिाि, हमर अिथथयाएल जेना कृषकक बीयाक थतनी-पथिया हो, बागु कर' खेत जाइत काल बाटे मे गेल हो हेराय, जतबा जे बथ-समेथ सकलौ, हँसोथि-हँसोथि, थन मन कमाहत देहे यिपलबि बीया कयलौ बागु ! घुरल हो ओथ पचण्ड रौद के दैत ललकार घर आ बनल तिथ जीवन कम मे गाम मे थिर आशाथत, फथलक भावी उपलथकि थस आशस्त, मुदा पुथ जतबो बीया छीटल गेल हो, घामे-पसेने खेत जोथ तैयार कएल गेल मे तकरो सब के चुथ क' ल' चल गेल हो थडैक महा हेज, एम्हर एक थस थथिन्तता मे गबैत मनक भथतव्य, ओम्हर दोसर थस सुन कएल बथा गेल हो खेतक गभि! एम्हर थरन्तर बीया मे अंकुरयबाक , माथ के फोथ जन्मबाक-बढबाक, बथ क' फथलक गाछ थकसवाक अहो थवस ममातक पतीका...ओम्हर जन्म सँ पथनथ कोथ के थक्त करैत काल-गथा, ई एहन हमरे टा थकएक कमाहत हमरे टा थकएक वतमान ! आथक बोथ रहलए एहने आ यैह क्यिा आनो आन ?' सोचैत रािा छोडलथ नमहर शास..। जाथ ने कखन-कोना लाथ गेल रहथ रािा के आँथ। नथ जाथ कखन बैसले बैसथ ओंघडा गेलीह ओ पथया पर। मुदा ई भेलथ बोि जेना देह भ' गेल डेगी नाव! पथया बथा क' यमुना मे हुनका कराब' लगलथ-थलहथ बडी

काल...एकसँ एक खेलाय मे रहली मस्त- बडी काल ! तखन होअ' लगलन्हि अथाले कण मोन धरकन्ह । आखिर यत क' नाव के घाट लगौलन्हि , भेलीह-संतुष जे पहिल बेर नहि लेब' पडल शीकृष्णक सहयोग, आ खेबि सकलहुँ नाव, उतरि गेलौ पार ! अपन सुख लेल किएक करी केकरो नेहोरा ? भने कृष्णो किएक नहि होथि। एकहि मोन मे तुरन्त उपस्थित भ गेलन्हि-ग्लानि, छीया, कृष्ण पर आभरिता तँ हमर आयस्सा आ पारबि। कोना आयल मोन मे एहन बात ? धिकार मोन -धिकार... मुदा ई की ? घाट पर साक्षात् कृष्ण महराज ाढ ! वैह खौझबै वला बिहुँसैत, बढा चुकल नाव सँ गमग उतरि रहलि राि छथि अपन दशना हाि। सस्नेह, सादिदैत अपन हाि राि भेलीह विकल । बिला नहि सकलीह हुनका सँ आँखि । -' भरिसक मन मे हमरा बिनु यमुना मे नाव चला लेबाक छौक मन पर भार । अपन सुखक अपनहि कर्म आभरिताक सेहो छौक आत्म दीप्त विशास...राि, तो केहन लािथ रहल छे एहि अलौकिक कण , तोरो ने बूझल छौक। हमरो तँ धिक जीवनक ई पिमहि दुलिभ दृश्य ! हम केना योगा क' राखी ई आनन्द राि, कोन विधि, तोही देखा दे उपाय।' -' जाउ-जाउ, एतहु खौझबैये लए हमरा आएल छी अहा । हम कएलए संिगन भ' क' अगरथितपना आ छी ताही मोने बेचैन, अहा के सुझैए विनोद एखन ।' राि किएक स्नेह-कोधित भ' कहलथिन तँ कृष्ण भेलाह गंभीर। -' नहि राि, हम तँ छी परम हर्षित-संतुष । यैह त हमर कामना छल, तो बनि जायं-स्वयं आत्म आभिर । नहि रह' पडौ तोरा हमरा पर आभिर । तो कएलेहे हमरे काज। हम तँ ते छी पसन।' -'किएक नहि, आब आओर रहब आधिन्त, मरओ राि

कि जीबओ, नहि राख' पडत किछुकर ।'

नाव सँ उतरि क' दरबज्जाया द' क' पडयबाक छलनि विचार, मुदा ई तँ सवि। नवे परिस्थिति कएने छथि कृष्णजी ठाढ ! जानि ने एतबा काल एहि बीच की हएत आँगनक हाल। जे हो ... आब एहि क्षण तँ मावि-मायाजाल मे छी बाझलि हमहूँ । आगा देखी कोन नाटकक केहन दृश्य पस्तुत करय वला छथि-नटवर नागर...सकल गुण आगर !

बूझि क' रा। आँगन अयलीह तं आ।ये किमूडी लाथि गेलनि। बीच आँगन मे कृष्ण ठाढ, सदा। हुनकर स.बोिनक कोनो टा ने जबाब दैत चलि गेलीह भीतर अपना कोलिी दिस। ीरे-ीरे कृष्ण सेहो लाथि क' पाछा राािक पीि पर पहुँचलथिन। एतनी काल मे पहुँचि जएथिन कृष्ण तकर नहि छलनि कनियो अनुमान। सकियाइयो कहा सकलीह आँचर पयन्ति ...दुष केहन जे पैसि गेलाक बाद कोलिी मे खखसलनि कतिये, कएलनि-राा के साकाक । अपत्याशित एहि कृष्ण-कृत्य पर भ' गेलीह कोधित । जेना तेना सकियबैत आँचर, तािथ घुरलीह पाछा दिस फेरलनि मुँह..कुण्डल शृंगारोदीप्त भुवन मोहिनी विहुँसी पसारने ठाढ-शीकृष्ण । लग आबि क' खौझाएल पोसुआ बिलाडि जका रा। ! छडपैत सन कमे ल'ग पहुँचि कृष्णाक पीताम्बरी झीकैत' 'हरण कर' लगलथिन.. . ''ई की, ई की करैत छे रा। । हमरा किएक करैत छे एना उघार ? देखत लोक हमर की रहत इज्जतिक हाल ! आखिर पुरखोक होइत छैक इज्जति, मयादा लज्जा, पुरखोक चीर हरण होइत छैक यदि नहि रहै पुरषत्व...।' किन्तु हँसी-ठि सँ रा। कनियो ने ढियलीह। कृष्णो बूझि ने सकलाह, रा। बजलीह किछु बा

कनलीह..। स्नेहाक मे बन्हबाक हुनक मृदु पयास के ताग जका खुट द' तोडलथ्रा। खौझायथ्रा ओ एतबा जे कृषाक केश के पकथ्रि घीच' लगलीह। ओ रहथ्रि नथ्रि पस्तुत, राि‍क हेतथ्रा एहेन स्नेहाघात। केश थ्राराइत मन छटपटबैत कननमुँह भ' गेलाह। मुदा राि‍ तँ जेना छलीह बताथ्रि भेथ्रा अपन तामस सँ। बूझल कृषा ियिसँ । सकत-बाथ्रि स्नेह सँ बन्हैत बुझब' लगलाह- -''भेलौ थ्रिक तोरा, की बात, की भेलौए बाज त थ्रिकछुओ, हमरे सपात तोरा, भेलौए की से तँ कहै बताथ्रि !... हमरो मन िकिैये कतेक थ्रिन, मास-बरख सँ, कहा भेटैए शीतल स्नेहक छाहथ्रि हमरो । तइ पर सँ तोरो यथ्रि होउ एथ्रिना हाल तँ हमर जीवन कोना चलत, कथ्रिया िथ्रि, कतबा दूर से तोही क'ह कने ।...आथ्रिर की भेलथ्राहे हमर बुथ्रियाथ्रि राथ्रिका जी के , बुथ्रियै त। से दोख जे भेलय हमरे बुते ? कोना-की। थ्रिचुकैत राथ्रिका के करेज सँ साथ्रि बडी काल कृषा अपनहुँ थ्रिचकैत रहलाह थ्रारन्तर ओतबा काल । दुहुक थ्रिचुकब कमशा एकमेक बनल चथ्रा गेलथ्रा । राि‍ के ई की भेलथ्रा आ कृषाहु के ? दुनूक भाव आवेग एकात्म भ' चुपचाप बथ्रिते गेल...जाथ्रा नथ्रि एथ्रि करण चुपी मे जीवनक कतेक युग बीथ्रा गेल ! थ्रिथ्रा मे एक ध्यान पाण सेहो एक।

-' थ्रान भ' गेलौ राि‍, सूथ्रा गेले तो की ? ' कृषाक एथ्रि पुछैत स्वर पर थ्राहुँथ्रिक उिलीह राि‍ । उथ्रितथ्रि भान भेलथ्रा जेना होथ्रि ओ शीकृषाक आथ्रांगन मे माझ आँगन मे िथ्रि । चार कात सँ देखैत लोक, सर-संबथ्रािक- सथ्रि बथ्रिनपा...। आथ्रिक लाज सँ व्याकुल एकथ्रि बेर मे शीकृषाक बाथ्रि सँ झकझोथ्रि छोडबैत स्वयं के थ्राकथ्रि उिलीह, पडयलीह- लते-फते, थ्राछोह...

आन एतश्च टुश्च गेलश्च । सास फुलैत भेलीह बेसम्हार। जेना लोहारक भाथि हो, ओश्चना ताप जरैत उसासक भाथि हो ई देह। आब भग्न स्वप्नक कर' बैसलीह भाग्यदशा श्चश्लेषण। पछताइत-पछताइत मन भेलश्च अस्तव्यस्त । केहन दुलभि सुन्दर स्वप्नक क' देश्चायैक अपने दुदशा। श्च अश्छ एतबो नश्च श्चखल , केहन भाग्य से कश्च नश्च, स्वप्नो जेना सुडाह होइत अश्छ, सोचश्चि राति ।
मुदा ने जाश्च जखश्च अबैत अश्छ श्चएक आिि , सौस स्वप्न केहन दुलभि यश्च हो मनोरिकि । ओना तँ श्चकट भयावह स्वप्नक अंत नश्च, क्यिकि भश्च- भश्च राश्च बौआइत बन-झाखुर मे बाि बोने भश्च संसार श्चकल भयभीत एकसर अनन्त मे लोक जेना पाछा सँ खेहारले जाइत कोनो राक्सी सन असकर अबाल नारीक पाछा लेने बछी-भाला कोनो डेग पर गाश्चि सकैत अश्छ पीश्चि श्चस सँ िस्त श्चजीश्चषा गस्त पाण छटपट दौडैत अनवरत
जाश्च ने चल जाइत अश्छ कतोक योजन कतबा आगा आ श्च ओही अपस्यात दशा मे जत' िरैत अश्छ सुस्तयबा लेल एकटा डेग श्चंश्चत श्चश्चिन्त जे राक्सी पाछा बहुत पाछश्च छुश्च गेलए, हम पहुचल छी आश्च सुरश्चत अपन गामेक इलाका ते एक पल
ल' ली दम । सास करी श्चिर आशस्त, आश्च जेना अवतार जेका आगा मे आश्च क' िढ कोनो भ' जाय श्चश्चि श्चकराल भयावह श्चंसक पशु माि एकटा ओकरा काया मे समाएल हो जेना कतोक बाघ-श्चंह-हाि-ऊँट आश्च, सभ एकश्च िमि एक संग मुँह बाश्च क' िढ जेना हो बडका महलक श्चंहदार केर फाटक जाश्च मे एक संग पैसैत अश्छ सहसो सैश्चक, अपन घोडा-हाि रि समेत से खुंखार जानवर सब केहन हँसैत लगैत अश्छ, जेना श्च

ओ गीडय नञ्छ, अहंक अएला पर अञ्छा पसन स्वागत करैत अछ्छ केहन लगैत अछ्छ एहन थ्वशाल जानवर ई कोन थीक, ई जीव, जाञ्छा ने पञ्छले पञ्छल देखै छी- आगा एकटा डेग बढौलक तँ सोझाक िरती डोलैत बुझाएल, दोसर डेग पर देह-पाण सौसे संजा जेना हेरायल, कोनो नञ्छ बाचल थ्वकल्प कतहु पडयबाक, सब थ्वृशा मे हो जेना ओकरे पसरल पंजा,हाि-पैर
ओना तँ थ्वकट भयावह स्वापक अंत नञ्छ, क्यिकि भञ्छ- भञ्छ राञ्छा बौआइत बन-झाखुर मे बाि बोने भञ्छ संसार थ्वकल भयभीत एकसर अनन्त मे
लोक जेना पाछा सँ खेहारले जाइत कोनो राकसी सँ असकर अबाल नारीक पाछा लेने बछी-भाला
कोनो डेग पर गाथ्वि सकैत अछ्छ पीञ्छि थ्वस सँ िस्त थ्वजीथ्वषा गस्त पाण छटपट दौडैत अनवरत जाञ्छा ने चल जाइत अछ्छ कतोक योजन कतबा आगा आ थ्वक ओही अपस्यात दशा मे जत' िरैत अछ्छ सुस्तयबा लेल एकटा डेग थ्वकंथ्वत आथ्वि नत जे राकसी पाछा बहुत पाछञ्छ छुथ्व गेलए, हम पहुचल छी आञ्छ सुरथ्वक्त अपन गामेक इलाका ते एक पल ल' ली दम सास करी थ्वि र आशस्त, आथ्वक जेना अवतार जेका आगा मे आञ्छ क' िढ कोनो भ' जाय थ्वथ्वाि थ्वकराल भयावह थ्वंसक पशु माि एकटा ओकरा काया मे समाएल हो जेना कतोक बाघ-थ्वंह-हाि-ऊँट आथ्व, सभ एकञ्छ िमि एक संग मुँह बाञ्छ क' िढ जेना हो बडका महलक थ्वंहदार केर फाटक जाञ्छ मे एक संग पैसैत अछ्छ सहसो सैथ्वक, अपन घोडा-हाि रि समेत से खुंखार जानवर सब केहन हँसैत लगैत अछ्छ, जेना थ्वक ओ गीडय नञ्छ, अहंक अएला पर अञ्छा पसन स्वागत

करैत अछि केहन लगैत अछि एहन विशाल जानवर ई कोन थिक, ई जीव, जाहि ने पहिले पहिल देखै छी- आगा एकटा डेग बढौलक तँ सोझाक रिती डोलैत बुझाएल, दोसर डेग पर देह-पाण सौसे सजा जेना हेरायल, कोनो नहि बाचल शकल्प कतहु पडयबाक, सब दिशा मे हो जेना ओकरे पसरल पंजा, हाथि-पैर
पाण जेना चीत्कार क' उठिय भय सँ आतकि अपन रक्षाकि जोर हिका पडल जेना बह ाण्डे बिजलौका सं एक संग कडकल चमकल आ सृष्टि भक्षक मेघक समूह एकबेर गरजल, डरे भेल पसेना सं तरबतर रिरिराइत सवाग बुझा रहलए जे जाइत होइ जेना ओहि जन्तुक बडका फाटक सन खुजल कल्ला बाटे ओकर पोखरि सन पेटक सते तखने उलि कंकि मोकल धारधारी भरल, आतकि पुकार मुदा के सुनय, सुनय के ? सुननहारक अपने भय-व्याकुल असकर ई वर्तमान स्वयं अपने ई समय एकान्त, केहन असुरक्षित आ अशात ! कोन जीव थिक आखिर एहन बिकराल आओर खुंखार सपनहुँ देखल तँ होयतै अवश्य अशान्ति एकर पुछबाक हुनके, जँ भेटता तँ, कोन थिक ई जीव ? आइधरि देखल आ ने सुनल छल, माथि ! कोनो गतिमान पहाड थिक सत्ये कोनो जीवे छल हुनका तँ हेबे टा करतनि एकरो बूझल परिचय। की नहि अछि हुनका एहि सृष्टिक जे किछु कोनो विषय अछि जाहि ने कतेक जान कोना एतबहि बयसे पौने छथि सबटा ओ बूझैत छथि हुनका सबकिछुए सुझै छनि घ'न अन्हरिया मे पयन्ति सबकिछु देखाइत छनि... कोना हमर खसि पडल कनपासा यमुना कातक घासक बन मे ओहन अन्हरिया राति मे से ओ ताकल एकटि कण मे कोन आँखि छनि केहन ताहि मे ज्योति विराजत दिव्य जत' जत' पडैछ जाइछ स्वता भ' जाइछ

ओत' इजोत ! हुनका सोझा ते अश्वाशय सम्हार' पडइछ आँचर से सब सब्बा केर अनुभव वस्तुक भीतर वस्तु देखब लेबक अदुत कौशल छथा बनु देखनहुँ शीमान जाआ ने की की देखब ल' जाइत छथि सोच्चा समरण करैत लजयली एकान्तहु मे राा...

एखन कत' छथि कृषण ?

<u>राि- २८ म खेप</u>

पछिला खेप अपने पढ़ चुकल छी--
"हुनका सोझा ते अखाशय सम्हार' पडइछ आँचर
से सब सखि केर अनुभव
वस्तुक भीतर वस्तु देखि लेबक अदुत कौशल छथि
खनु देखनहुँ शीमान जाथि ने की की देखि ल' जाइत छथि
सोथि स्मरण करैत लजयली एकान्तहु मे राि...एखन कत' छथि कृष्ण ?"

आब आगा पढ़ू-
स्मयं जेना छी बिसरि गेल हम अपन गामक नाम
स्मयं जेना छी बिसरि गेल हम अपनो जन्मसािन
स्मयं जेना छी बिसरि गेल हम पाया सबकिछु सब बात
स्मयं जेना छी बिसरि गेल हम स्मयं अपन अस्तित्व
स्मयं जेना हम बिसरि गेल छी आँगन सँ यमुनाक बाट
स्मयं जेना हम बिसरि गेल छी थय जमुना स्नान
स्मयं जेना हम बिसरि गेल छी सखि-बिजनपाक नाम
स्मयं जेना हम बिसरि गेल छी अपनक मिरा िम
स्मयं जेना हम बिसरि गेल छी कदमक वनक छाया
स्मयं जेना हम बिसरि गेल छी सबटा जीवन कमि
स्मयं जेना हम बिसरि गेल छी लोकक दुखक ममि
स्मयं जेना हम बिसरि गेल छी अपनो पखाये माया
स्मयं जेना हम बिसरि गेल छी देह दशा के देखब

स्मयं जेना हम ब्बसश्व गेल छी जीश्वत पाणे रहब
स्मयं जेना हम ब्बसश्व गेल छी अनक जलक स्माद
स्मयं जेना हम ब्बसश्व गेल छी ककरो श्वकछुओ कह’ब
स्मयं जेना हम ब्बसश्व गेल छी अकरक अभ्यास
स्मयं जेना हम ब्बसश्व गेल छी मोश्वम-कलम, लीखब
स्मयं जेना हम ब्बसश्व गेल छी श्वय सँ श्वय सम्बोनि
स्मयं जेना हम ब्बसश्व गेल छी सबटा गीतक भास
स्मयं जेना हम ब्बसश्व गेल छी जीवन केर मिमास
स्मयं जेना हम ब्बसश्व गेल छी सबटा हास-हुलास
स्मयं जेना हम ब्बसश्व गेल छी संगी संग श्वलास
स्मयं जेना हम ब्बसश्व गेल छी दशो श्वदशा केर जान

स्मयं जेना हम ब्बसश्व गेल छी, के अप्पन अश्छ आन
स्मयं जेना हम ब्बसश्व गेल छी सबश्वकछु के अश्वस्तत्व
स्मयं जेना हम ब्बसश्व गेल छी की श्वथक छोट महान
स्मयं जेना हम ब्बसश्व गेल छी अन्हश्वया आ इजोश्वया
स्मयं जेना हम ब्बसश्व गेल छी भेद सूयआ चन्द्रक
स्मयं जेना हम ब्बसश्व गेल छी स्नेहश्वक्त स्मृश्व-संयोग
स्मयं जेना हम ब्बसश्व गेल छी जे सब श्वकछु ब्बसरल छी
श्वकन्तु स्मयं यश्व छी ब्बसरल सब तँ श्वकएक बेचैन अश्छ पाण ?
पूछश्व राश्व श्वकल हृदय श्वकयेक अबैत अश्छ कृष्णक ध्यान?
झर झर झर झर अशुपात भदबाश्व जका भ’ जाइछ आरम्भ ।

सबटा ई अवस्था अनुभूतिक छदजाल थिक सबटा ई मन के पश्चाअयबाक करब पबोिन थिात कहा अिर अशान्ता सँ कहा मुक्त अछि
ई जे मोन महासंकटक ब्यूह-रचना सन
कए तँ देल पवेश मुदा अजात दिशा बीच
बूझल नहि आरंभ अित पवेश आ तहिना
करी कोना क आकास दार सबटा बंदे बन्द
एहन मनोभावक उदाम ज्वाार मे ई इच्छामृग डूबि-डूबि रहलय समुद मे जेना छोटछिन नाव
एकहि कण मे ब्यूह मध्य जे पाण हमर ई
ऊँचे ऊँच समुद ज्वाार मे पड़ि जाइछ असहाय ककरा पारओ सोर
होय के एहि अिशा मे जे आबय
जे सहाय संभव छथि से छथि अपने मे ध्यानस्थ
हुनका कोन अवश्कर ककरो, कि पकारक अपना मोनक महाशान्ता मे एकएक हेतया आन्दोलन
भने स्नेह आकान्ता बनि पयन्ति मरैत हो व्याकुल

एकएक कोनो अशान्ता, अजासा एककछुओ करब पुछारी
भयिसक एहिना ,एही पकारे हमहूँ आब मरब जानब अपने हे मािव जानब, हम नहि आब सहब
केहनो मोहिनी स्वागीय मिरी वाणी अहा जे कहब

ना अइ संसार मे आब हम नहिये टा र’हब

श्कएक रहब,एतेकटा जीवन ऊश्च-ऊश्च कतबा श्वन आरो ?
बाजू आ श्कएक ककरा लेल ककर श्वत, श्व ! कि लए...?

बहुत पश्च । जीवन के कारागृह बना दैये
बहुत पश्च । बना दैछ जीवन के अवगह
बहुत पश्च । कुल-संबं- समाज छोडा दैये
बहुत पश्च । जीवन के संसार छोडा दैये
बहुत पश्च । कउखन तेहेन पश्च त क’ दैये बहुत पश्च । भ’लो के अ-लोक बना दैये
बहुत पश्च । बना राश्च दय भ लि इनार

राि- २९ म खेप

पश्छला खेप अपने पश्ढ चुकल छी--
बहुत पश्चाष। जीवन के संसार छोडा दैये
बहुत पश्चाष। कउखन तेहेन पश्चाश्च त क' दैये
बहुत पश्चाष। भ'लो के अ-लोक बना दैये
बहुत पश्चाष। बना राश्च दय भिल इनार

आब आगा पढू-
बहुत पश्चाष। लोकक जीवन मरिल क' दैए
बहुत पश्चाष। पाश्या मािसे करैत-करैत उदास
बहुत पश्चाष। आश्चर तँ क' दैत अश्छ अममकि
बहुत पश्चाष। सब श्कछु द' जा सकैत अश्छ से िक
बहुत पश्चाष। सब अछैत सभ क्यािबना दैये
बहुत पश्चाष। श्चन्ुजका अश्चा गंश्चर आओर श्चस्तार

बहुत पश्चाष। लोक के लोक-असभ्य बना दैए
बहुत पश्चाष। एक तरहे होइत अश्छ वगश्चिभाजन
बहुत पश्चाष। एक समाज बाश्ट बखरा क' दैये
बहुत पश्चाष। एकश्च घर मे बश्चा जाइछ देबाल
बहुत पश्चाष। भाए के भायक देयाद बना दैये
बहुत पश्चाष। श्चाज शेष-बोि सँ कम के हीन करैये

बहुत पश्चाष। एक पश्चवार अनेक बना दैये

बहुत पश्नाष। मि माहुर बश्ना व्यश्नन मे भरय श्वकार
बहुत पश्नाष। श्वदो के व्यापार बना दैये
बहुत पश्नाष। कखनो महल कउखन क वैभव
बहुत पश्नाष। जीवन-मूल्य दोकान बना दैये
बहुत पश्नाष। श्नाबहय तं बना श्वअय जन नायक
बहुत पश्नाष। ऊश्वा ने पाबी दैत्य बना दैये
बहुत पश्नाष। अपन स्वाभावक अपनश्च होइछ संघात
बहुत पश्नाष। अहंकार बश्ना पारि बनबैये
बहुत पश्नाष। लेल आश्वर लोक रहैछ बेहाल
बहुत पश्नाषे लोक मे लोक-दयादि बिना दैये
सोची, बेर-बेर सोची सब क्यो कतबा क' चाही पश्नाष।
सोची आ तय करी पश्नाष। केहन मनुख बनबैये !

बहुत-बहुत क' रखबाक-कहबाक तेहन भेलय रेवाज
सब तँ सब सँ शेष श्नाक जानी आ अश्छ श्वदान
क्यो ककरो सँ छोट ने, बयसो मे बुश्वि मे
सब तँ सब सँ शेष सश्व सँ एवं बडे महान
ई संसार कोना बनलै श्वकश्नत भेलैक आ बढलैक
तकरा लेल जे बुश्वि-श्ववेक चाही से सब हाश्नार

दुनुक बीच केर सेतु टुटल अश्छ िरे मे बश्च गेल
खुटा-खुटी क्यो िबात सन िमक िमे रश्च गेल
मुदा अपन एहू श्नश्न मे गाम के सब कश्च गेल
गाम गुम्म अश्छ,

कडाम मे गंाएल बडद सब जेका
एकटा मेहक चार कात घूमि रहल अछि,
अहल भोरे सँ जेना। साझ धरि सब दिन
जाधरि ने कोन अदृश्य अनक क' रहल अछि दाउन
एक दिस लोकक देह पर नव-नव वस्रक झकाझकी चढ़ि गेलैक अछि।
चमकैत रहै छै बेशी लोकक अंग वस्र। दोसर दिस बडद-गाय, जकरा बले धिमतैत अछि
जीवन, आयुक दिन, मास बखतिकर गदमि कमशा भेल जा रहलए सुन ।
धवल, लाल-पीयर-हरियर गरदानी, पैघ-पैघ आकर्षक झमटगर फुदना पुरान मैल होइत
एक एक क' सब माल जालक गदमि सँ उतरैत गेल आ आब तँ कोनो सौभाग्ये सँ देखाइ पडैए-घानारी-पंचारी धवती कौडीक गािल हार।
कहा देखाइछ नव फुदना सुन्दर गदमि वला बडद वक बच्छा ! यदा दुलभि परन्तु से सौख सौभाग्य हुक-हुक करैत जीवि रहल अछि, रच्छ अछि ।
कोनो गर मे घंटी नहि।
कोना दन लगैत सुन चुपचाप गदमिक बडद
सब बेबस बेमोने क' रहल दाउन-भरि गाव ।

एना धकएक भेलय बेसी घरक लोक, हमर गाम !

गाम गुम्म अछि,

लोकक जेहन अप्पन मोनक हो संसार,
तेहने अनमन देखाइत अछि समाज ई संसार
मोन खुशी हो सौसे गाम गबैत लगैत अछि
दुःख हो मन मे भेल समाज कनैत लगैत अछि
ओना पक्षी- पखेरुया नहि कखनो चलब बन्द हो
यदि मन हिरल हो तं चक ईहो रकल लगैत अछि
ते पहिने उल्लास उछाह खुशी अंतर केर चाही
ते पहिने आलोक-इजोत सबहक मन मे उपजयबाक चाही
असल खेत तँ थिकैत मनुष्यक जेहन उवरि हो
दुःख-सुख सन्ताप विचार आदशकि उपजैत अछि तेहन फसील
कमकि जे हो सामर्थ्य जित' छथि अनकि कायकि
सैह बनैत अछि पेरक मोनक उवरिता केर सब दिन
परती ओना हरेक हृदय मे रहि आएल अछि सब दिन
तेहना थकंथैत हरियर भागि केि सेहो होइतहुं अछि
मनुखक ध्यान माि हरियरी के सम्हारि क' परती
उस्सर भूमि विचार परोक बना दैए बेशी काल
एक पकारे तखनहि नोत पड़ि जाइत छैक दुखिनि के
एक तरहे करे तखनहि सँ पारंभ होइछ अकाल।
लोक बूझि नहि पाबय बेसी, जे बुझितो छथि
दैनंदिन तुच्छ संतुष्टि क बाटे पर चलि पडैत
अपन मोनक संसार साजै छथि अपन रहैत छथि

ई समाज जेहन सरल सुलभ पवाहक अभ्यासी
ताही मध्य बहैत चलैत बहैत छथि
ओतबो मे संसार अवश्ये थाय थिक रहबा योग्य
किन्तु मा ई नीक आ रहबा योग्य भ' गेने
कमिथ नहि भ' जाइत अछि संसार एहन उपलभ्य
जीवन, मनुखक जीवन के चाही एकटा आदश
जे यि जीवैत लोक रहैत अछि मने मगन
से यि अंतता बालबो सुख माकि र प
जाहि पयोजन सँ भेलय स्त्री-पुरषक ई सृष्टि
तकरा सुन्दर मंगल क' जीवाक व्यवस करबाक
मनुखेक अछि दायित्व से गंभीर विषय
हल्लुक-फुल्लुक जीवन केर दैनिक किछु क्षण संभव हो भने
मुदा सतत किछु शाशतक बो पूर्वत काज
सएह बनैत आयल अछि एहि संसारक पेय शेयस्कर
शेयस्कर आर अधिक शेयस्कर मनुखक चिन्ता,
मनुजक चेष्टा मनुखेक कमकि यि
अभि सािरण,सािरण सँ शेष शेष तर
सएह जीवनक विजता मुक्त पैघ समाजोन्मुख चेतना
ताहि चेतना के चाही तेहने मूल्यक आहार
जीवन मूल्य स्वयं चेतनाक होइछ आत्मक सामथ्य
वैह यि केर भूमिक उपजल फसलक करैत जाइत अछि
आत्म उत्कषि नवीन उत्कषि,उदात उत्कषि
गढैत जाइत अछि टूटल- भग्न मनुष्यक जीवनक नव साच
साच मे नव रपाकार जकर नव पाणस्पन्दने गढैत अछि

नव नव जीवन मूल्य, नव आदर्श

बनबैत गौण अपन व्यक्तिगत दुःख-सुखक अनुभूति

अपन एकान्ती जीवनक सीमित अनुभव यिि

तकर संवेदनाक पवाह बनैछ, उदत करैत अछि मनुखक

एक वचन मनक बहु वचन समाज, समाजक

बड विराट संसार पसारैत करैत, बनबैत अपन कर्मसिपसंग !

ाधा ३०म खेप

अखन धर्व अहा पढने ह़ीं...

..अपन एकाह्ली जीनिक सीक्मत अनुभ यिाषि

तक संदिनाक पिाह बनैं, उदत कर्ति अर्व मनुखक

एक चिन मनक बहु चिन समाज, समाजक बड वीिट संसा पसार्वति कर्ति, बनबैत अपन कमष

सपसंग !

आब आगा...

कोनो पसंग मे की क' जाइ मनुष्य

कोनो पसंगे की भ' जाइ मनुष्य

सेहो एकटा वक्तित पहेक्लका वक

देखबा मे जे यिाषिबुिाइत अर्व

बेशी काल से क्ताह्लत अपूणषआ भामक क्कलैत अर्व

ते तकषक्षक्करषपयत बड साक्ष

कम संदेहास्पद अक्षक होइत अर्व

ई सबटा मनुतखेक दाि मनुतखेक

होइत अवि एही दशा क्वदशा मे लोक

पि पीडन सँ ल' आत्म पीडनक िगी बक्त जाइत अवि

उपचाकि उपहास कि' लावा जाइत अवि आ

दुःखक उपभोग कि' लगैत अवि। भोग नवि, उपभोग।

सात िग सुह्वदि सवा के एक िग पीयि-पीयि आ

ि गण देख'-बूि' आ कह' लगैत अवि, मनुतख क्तात अपन िीनि-भोगक आँक्वये, भवि समाज

संसाि के देख' आ बूि' लगैत अवि, अपन सैह क्तायक्त बना लैत अवि, सबटा ओहन यिाि षिजे

ओकिा अक्तावतितो सौसे समाजक लोकक क्ति ु यिाि षिसेहो

होइत ैिक-भ' सकैत ैिक तकिा पि ध्यान देब तँ क्वमन

ओकि अक्स्ततत सँ अनक्वभज होइत चक्ल जाइत अवि

पक्त पल,क्वदन,मास िि़ष आयु सियें अपना चतुक्वदषक एकटा

िगाह पवि ैशि क्तक्वमषा कि' लगैत अवि आ बाचल अपन

समस्त क्वजीवििा-ऊजा के एवि बुक्वद्दये क्वदशा मे सक्वक्रय क' लैत अवि

मनुखक्वख अपने विि द अपना चाि कात बह्वधन बाक्वह लैत

अर्छि ।

अपन गर्ला, अपन सहज जीनि-पाहि के अनेकि अिािधक

पहाडी चेखान सभक अपनहि कवमस बाधा सब सँ कुंठत क' लैत अर्छि ।

अपन से कुंठा अपन स्नेही,संबंधी, सौसे समाज पि उगलैत िहैत अर्छि ।

जत'-जत'सजन िैक ओत' ओत' संहाकि ब्यौत-िितािािण बनब' लगैत अर्छि ।

अपन, ततात अपन कुंठाक माहुि -मने ओ अपना अवर्तवतित सभके कलुवरत,

जीनि विािधी आ अमानुर बुिबाक तदनुर पे आचिण किबाक

एकटा दुःस्भािि बना लैत अर्छि,

सबके व्यिष,बाहि लोक बना देबाक अपनहि सक्रय मनोदशा मे,

अपनहि असकि एकाह्न तािि दयनीय बना क' िहि जाइि,

से ओकिा बुिबा मे अबैत नहिं िैक। नहि बुिबा मे अबैत िैक जे

ओ भ' चुकल अर्छि -िािगी, मनोिािगी !

देह-िािग सँ बहुत बेशी, बहुत गंभीि मनोिािग...'

-' तँ कक हम मनोिोगी भ' गेलौहे, हम ?'

अकस्मात् िधाक पाण चौकल। सियं के पूि' लागल यैह टा पश !

गुंक्जत-अनुगुंक्जत-पक्त गुंक्जत...

बड आतषस्मणि कएलक- ' हे कषण'

कक् नक्ह हएत, कषण के बजौलहु सँ हएत नक्ह कक्,

आने जेका हुनको िक आब कम्मे फुसिक्त

बहुत िसि िक कपाि पि काज, उतिदाक्यतकि पैघ संसाि

हुनको आक्खि चाक्हयक अपन काज-कतषय सँ अिकाश

हुनको संसाि मे बहुत कक् घक्टत भ' िहलक्हे न'ि

हुनको मोनक क्सिक्त आब नक्ह िक सिाधीन, ने िक

कक्ओ कतात मनमौजी-अपनक्ह सुखक संग हिब संभि नक्ह िक हुनको लेल

ओहो अपना पकाि सँ कककयाइत हैत िवि,

िुचि गाय चियिब आ बँसुिी बजायब नक्ह िक्ह गेलक्हे हुनक एकमात काज।

माखन चोायिब भ' हिल िक्त दुघष्ट !

गाम मे कम दूध देब' लगलैक अिव सभ घिक गाय,

दुब्बाि भ' हिलैए नेर -बाि‍ी,

गायक हुकडब नक्ह हिलै आब असंभि,

भ' हिल िैक आइ काि‍व बेसी काल ।

सुनि कोमल गुडकुक्त्‍या लैत नेर पयष्‍त भ' हिलैक अकाल काल कि‍लित

अपना मायेक सोिा देखैत गाय माय होइि मनुतख नक्ह, मनुकक माय के पयष्‍त यदवा सह' पव्ड हिलैक अिव-संतान शोक !

चि-चाचि सभक हि‍वयिाी जाक्त नक्ह कोन अदश्य महापशु अह्लवििया,

चि‍व क' चक्ल गेलय केकिी नक्ह जात।

सौसे फाटल शुष्क माक्टक धिती पि पीयि-पीयि सुखएल खुटी-खुटी

चलैत पएि सभक तिबा मे गडैत

जे यमुना अपना कंठ धि‍व ऊपि आक्ब क' द' देत िलीह समय-समय पि हुलकी,

सियं दूबवि गता, क्सि िभेक्ल स्तब्ध िवि।

धाि-कातक सघन िगि लता-िकि ? केहन भेल शीहीन तट !

स्तब्धे अवि बेसी बस्तु। मििकि बेशी घटना सिलि, लोक

लोकक आचाि-व्यिहाि स्तब्ध' ।

कोनो पिकि बोिकि त'ि पक्तपल दबायल जाइत ..

ककिी नव्ह भ' पाक्ष िहलैये अंटकि एकि कोनो अनुमान।

अपना-अपना घि मे सब कुब्ध बैसल। हेिएल िैकि जान !

पूि' चाहैत अवि सब एक दोसिी के मुदा पव्डतव्ह ओकि आकक्त अपना सोिि,

बदक्ल जाइत अवि लोकक मन ओकि उदासीक ध्यान

भम पडैत अवि मोन,मोनक उदासी सँ भिलि सब दलान

कष्ण एही सब मे िवि ओिियिल कैति आिश्यक अनुसंधान

कष्ण िवि कव्हतु अह्यिि सेहो हिनि-वर्किसान जेना सास कोनो आन देह ल' िहल हो अह्त'

जेना देह कोनो आन नाक सँ व्यव्य िहल हो सास
जेना देह हो कतहु, क्रिया आ स्पंदन होइत हो कतहु अह्त'

जेना िधा िव अपना आँगन एकान्त मे कष्ण अपना कमष् कया-कलापक संसाि मे अपस्थात

होइत पस्पि एक दोसि सन काँति कया अपान-अपान

काज कतहु कािण कतहु ओतहु सेह, सैह एतहु

ककि लेल के अवि विकिल-बचैन

ककि लेल ककि ननक्ह अबैत िक कतेक दन सँ चैन कणष कबि अवि असंभि।

एना कएक एक्ह समय मे बेसी िसि बात जे,

कतात िल सहज संभि, भ' गेलय कठाहे असंभि,

हाि सँ बाहि, बेहाि !

क्स िक्त यैह यैह क्स िक्त दू टा पीठ दू टा विरद

बेशी कि िवरद कएक भ' िहलय एक्ह युगक बेसी विरय

भाि आ िस्तु एना विरद...